CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

- Title – श्री भागवत गीता (गूढार्थदीपिका)
- Accession No – Title –
- Accession No –
- Folio No/ Pages –
- Lines-
- Size
- Substance Paper –
- Script Devanagari – देवनागरी
- Language – प्राकृत – ब्रजभाषा
- Period – 1867
- Beginning –

- End –

- Colophon-
- Illustrations -
- Source -
- Subject - भागवतगीता की टीका
- Revisor -
- Author - स्वामी चिद्घनानंदगीरि कृत ~~भाषा~~
- Remarks- बारह अध्याय ~~पूर्ण~~ पर्यन्त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्री भागवत गीता
क्र. ४
पृष्ठ - ७३०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

Cham

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रथम ६ से ६ तक

अथ स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाटीकासहितभगवद्गीताप्रारंभः

यह पुस्तक सन् १८६७ का ऐक्ट २५ केबमूजब रजिष्टरी करके छापनेका हक सत्त्वाधिकारीनें अपने स्वाधीन रक्खाहै.

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रस्तावना ॥

श्रीपरमात्मनेनमः ॥ अथप्रस्तावना ॥ गुजरातदेशके मध्यवर्त्ती श्रीभावनगरसहरविषे श्रीस्वामीचिद्घनानंदगिरिनैं सर्वमुमुक्षुजनोंके हितार्थ यहगीतागूढार्थदीपिकानामक प्राकृतटीका करीहै ॥ इसटीकाविषें श्रीकृष्णभगवान्ने उक्तगीताशास्त्रकेगुह्य अर्थोंकूं निरूपणकियेहै ॥ यातैं इसटीकाकानाम गीतागूढार्थदीपिका रक्खाहै ॥ और इसटीकाविषे प्रथमतो मूलश्लोककीउत्थानिका लिखीहै ॥ तिसतैं अनंतर मूलश्लोकलिख्याहैं ॥ तिसतैं अनंतर तिसश्लोकके भिन्नभिन्न पदच्छेदकरिकै लिखेहैं तिसतैं अनंतर तिसएकएकपदका अन्वयपूर्वक संक्षेपतैं अर्थ लिख्याहै ॥ तहां मूलश्लोकके पदोंऊपरि तथातिनपदोंकेअर्थऊपरि १ । २ । ३ । ४ । इसप्रकारके अन्वयपूर्वक अंक राख्ये हैं ॥ तिनअंकोंकूं देखिकरिकै सामान्यबुद्धिवालेपुरुषकूंभी मूलश्लोकके पदोंका अन्वयपूर्वकअर्थका निश्चयहोइसकेहै ॥ तिसतैंअनंतर टीकाविषें तिसी पदोंका अर्थ शंकासमाधानपूर्वक अत्यंत विस्तारतैं कथनकऱ्याहै ॥ और तिस टीका विषें जोजोमूलश्लोकका वचन आवैहै ॥ तिसवचनकूं ( ) इसप्रकारके चिन्हकेभीतर राख्याहै ॥ और मूलश्लोककेटीकाकी समाप्तिके अंतविषे* इसप्रकारकाचिन्ह राख्याहै ॥ और* इसप्रकारके चिन्हकेआगे अ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गलेश्लोककीउत्थानिकाजाणनी इति ॥ और इस गीताकीप्राकृतटीकाविषे तथाप्राकृतआत्मपुराणविषे तथा अन्यभीप्राकृतग्रंथोंविषे न्यायशास्त्रकेपदार्थ बहुतस्थलोंविषे प्रकरणवशतैं लिख्ये हैं ॥ परंतु आदितैंलैके अंतापर्यंत तिनसर्वन्यायकेपदार्थोंका आनुपूर्वी किसीभी प्राकृतग्रंथविषे विस्तारतैं निरूपण करयानहीं ॥ किंतु जिसजिसपदार्थका जहांजहां दृष्टांतरूपकरिकै उपयोग है अथवा खंडनीयत्व रूपकरिकै उपयोगहै तिसतिसपदार्थमात्रका तहांतहां संक्षेपतैं निरूपणकऱ्याहै ॥ और आदितैंलैके अंता पर्यंत आनुपूर्वी विस्तारपूर्वक तिनसर्वन्यायपदार्थोंके ज्ञानतैंविन भाषाकेपठनकरणेहारेअधिकारीपुरुषोंकूं तिनन्यायपदार्थोंका निःसंदेहनिर्णय होइसकतानहीं ॥ इसकारणतैं कितनैंकभाषापठनकरणेहारे अधिकारीजनोंकीप्रार्थनातैं श्रीस्वामीचिद्घनानंदगिरिनैं प्राकृतहिंदुस्थानीभाषाविषे न्यायप्रकाशनामग्रंथ कऱ्याहै ॥ तिसन्यायप्रकाशग्रंथविषे कणादमुनिकृत वैशेषिकशास्त्रके द्रव्यादिकसप्तपदार्थोंका तथा गौतममुनिकृत न्यायशास्त्रके प्रमाणप्रमेयादिक षोडशपदार्थोंका विस्तारतैं निरूपणकऱ्याहै ॥ और तिसतिसप्रसंगविषे वेदांतशास्त्रके तथा मीमांसाशास्त्रके तथासांख्यशास्त्रकेतथा योगशास्त्रके तथा बौद्धादिक आगमोंके पदार्थभी निरूपणकऱ्येहैं ॥ सो न्यायप्रकाशनामग्रंथ मुंबईमें निर्णयसागरनामकछापखानामें छपगयाहै ॥ तथा आत्मपुराणभी दूसरेवार छपगयाहै यह सर्वअधिकारजनोंकूं विदितहोणेकेवास्तेसूचना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लिखीहै ॥ किंवा श्रीस्वामीचिद्घनानंदगिरिकृत यहगीतागूढार्थदीपिकानामकटीका सर्वदेशोंविषे स्थित श्र
द्धावान् सर्वमुमुक्षुजनोंकूं पठनपाठनकरणेकरिकै उपयोगविषेआवै इसप्रकारका आपणेमनविषेविचारक
रिकै श्रीभावनगरविषेस्थित श्रीब्रह्मनिष्ठनागर गौरीशंकरउदयशंकरनें भावनगरसहरविषे श्रीमहाराजत
खतसिंहके छापखानामे संमत् १९३८ छपाइकै यहटीका प्रथमप्रकटकरीथी ॥ तथा दूसरीवार यहटीका छा
पणेकेवास्ते श्रीस्वामीचिद्घनानंदागीरिजीकी आज्ञालैके मारवाडी हरिप्रसादभगीरथ और गंगाविष्णु
श्रीकृष्णदासजीनें मुंबईमें निर्णयसागर छापखानामें संमत् १९४० छपाइवै प्रगटकरीथी ॥ अब तीसरीवार
श्रीकृष्णदासाङ्गज—गंगाविष्णु, खेमराजनें आपणे श्रीवेंङ्कटेश्वर नामक छापखानामें छपाइकै यह
टीका प्रगटकरीहै ॥ प्रथम द्वितीय आवृत्तिविषे यत्किंचित् जा वर्णमात्रादिकोंकी अशुद्धिरहीथी
सा अशुद्धि ग्रंथकर्त्तानैंहीं सुधारके यह तृतीय आवृत्ति छपायाहै ॥ संवत् १९४७ शके १८१२ ॥ ॥

सूचना— अबी इसगीता १८ अध्यायविषे तीन षट्क किये है जैसे—एक अयायसे ६ अध्यायांत एक षट्क ७ वे
से १२ अन्ततक दूसरा षट्क और १३ से १८ अंततक तीसरा षट्क ऐसे जानण।

श्रीस्वामी चिद्घनानंदकृत न्यायप्रकाश और गीता गूढार्थ दीपिका भाषाटीका श्रीवेङ्कटेश्वर छापखानामें मिलेगा.

श्रीकृष्णदासात्मज गङ्गाविष्णु खेमराज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वरायनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ ॥ श्रीशङ्कराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ श्लोक ॥ शंकरंशंकराचार्यंव्यासंनारायणात्मकं ॥ सरस्वतींचब्रह्माणंप्रणमामिपुनःपुनः ॥ १ ॥ प्रकाशितंब्रह्मतत्त्वंप्रकृष्टगुणशालिनं ॥ प्रणवस्योपदेष्टारंप्रणमाम्यनिशंगुरुं ॥ २ ॥ श्रीकृष्णचरणद्वंद्वंप्रणिपत्यपुनः पुनः ॥ प्रायःप्रत्यक्षरंकुर्वेगीतागूढार्थदीपिकां ॥ ३ ॥ अर्थयह ॥ श्रीशंकररूप जो श्रीशंकराचार्यहैं तिनोंकूं तथानारायणरूपजोव्यासभगवान्हैं तिनोंकूं तथासरस्वतीदेवीकूं तथासरस्वतीकेभर्त्ताब्रह्माकूं मैं वारंवार नमस्कारकरताहूंइति ॥ १ ॥ और जिनश्रीगुरुवोंनैं हमारेहृदयविषे ब्रह्मतत्त्व प्रकाशकरयाहै ॥ तथा जेगुरु विवेकवैराग्यादिकउत्तमगुणोंकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा जेगुरु हमअधिकारीजनोंकेप्रति प्रणवमंत्रका उपदेशकरणेहारेहैं ॥ ऐसेश्रीगुरुवोंकूं मैं वारंवार नमस्कारकरताहूंइति ॥ २ ॥ और यागीताशास्त्रकाकर्त्ता जोश्रीकृष्णभगवान् है ताश्रीकृष्णभगवान्के दोनोंचरणकमलोंकूं वारंवार प्रणामकरिकै मैं मुमुक्षुजनोंकेप्रति श्रीगीताजीके प्रतिअक्षरोंकाअर्थ निश्चयकरावणेवासतै श्रीशंकराचार्यकृतभाष्य तथास्वामीशंकरानंदकृतटीका तथास्वामीमधुसूदनकृतटीका तथानीलकंठपंडितकृतटीका याच्यारोंकेअभिप्रायकूंलैके यहगीतागूढार्थदीपिकानामाटीका करताहूंइति ॥ ३ ॥ तहां इसलोकविषे महान तप बल तेज शक्ति करिकैसंपन्न तथासर्वविद्यावोंकासमुद्र तथासंपूर्णसर्वज्ञोंकाभूषणरूप तथासाक्षात्नारायणरूप तथापरमकृपालु ऐसैजोश्रीव्यासभगवान्हैं ॥ सोव्यासभगवान् आगेउत्पन्नहोणेहारेअधिकारीजनोंके बुद्धिकीमंदताकूंदेखिकरिकै तिनअधिकारीजनोंकेप्रति धर्मादिकसर्वपुरुषार्थकीप्राप्तिकरणेवासतै तापुरुषार्थकीप्राप्तिकेसाधनोंकूंकथनकरणेहारेवेदराशिका ऋग् यजुष् साम अ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ १ ॥

थर्वण याभेदकरिकै च्यारिप्रकारकाविभाग करताभया ॥ तथा तिनऋगादिकच्यारिवेदोंविषेस्थित जेऐतरेयादिक अनेकशाखाहैं ॥ तिनशाखावोंविषे एकएकशाखाकूं आपणेपैलवैशंपायनादिकशिष्यप्रशिष्यादिद्वारा वधावताभया ॥ इसप्रकारतिनऋगादिकवेदोंकेप्रवृतहूएभी तिनवेदोंकाअर्थ परमसूक्ष्महै तथाअत्यंतगूढहै तथाअत्यंतदुर्विज्ञेय है ॥ यातैं तावेदअर्थकेजानणेविषे जिनअधिकारीपुरुषोंकीबुद्धि समर्थनहींहैं ॥ ऐसे अधिकारीपुरुषोंऊपरि अनुग्रह करिकै सोश्रीव्यासभगवान् तिनअधिकारीपुरुषोकेप्रति धर्मादिकसर्वपुरुषार्थोंकीप्राप्ति करणेवासतै तिनधर्मादिकसर्व पुरुषार्थोंकेसाधनोकूंकथनकरणेहारी तथाशतसहस्त्र १००००० श्लोकोंकरिकैयुक्त एकभारतनामासंहिताकूं रचता भया ॥ और जैसे सर्वनक्षत्रमालाकेमध्यविषे चंद्रमंडल स्थितहोवैहै ॥ तैसे ताभारतनामासंहिताकेमध्यविषे सोश्री व्यासभगवान् केवलमुमुक्षुजनोकेप्रति कार्यप्रपंचसहित अनादिअविद्याकीनिवृत्तिद्वारा विदेहकैवल्यरूपफलकीप्रा प्तिवासतै जीवब्रह्मकेअभेदकूंप्रतिपादनकरणेहारी तथा श्रीकृष्णभगवान् अर्जुनकासंवादरूप तथा अद्वैतरूपअमृतकी वर्षाकरणेहारी तथासप्तशत ७०० श्लोकरूप गीताउपनिषदनामाब्रह्मविद्या स्थापनकरताभया ॥ तागीतारूपब्रह्म विद्याका अज्ञानसहितसर्वप्रपंचकाअभावरूप तथासत्चित्आनंदस्वरूप तथाजीवतैं अभिन्न अद्वितीयब्रह्मरूपमोक्ष हीं परमप्रयोजनहै ॥ तिसीअद्वितीयब्रह्मरूपमोक्षकूं शास्त्रोंविषेविष्णुकापरमपद कहेहैं ॥ और तिसीअद्वितीयब्रह्मरूप मोक्षकीप्राप्तिवासतै सृष्टिकेआदिकालविषे सर्वज्ञईश्वरनैं कर्म उपासना ज्ञान यातीनकांडोंकरिकैयुक्त ऋगादिकवेद उत्पन्नकरेहैं ॥ और यहअष्टादशअध्यायरूपभगवत्गीताभी ऋगादिवेदरूपहै ॥ यातैं यहभगवत्गीताभी षट्षट्

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अध्यायरूपतीनषट्कोंकरिकै यथाक्रमतैं कर्म उपासना ज्ञान यातीनकांडरूपहै ॥ तहां षट्अध्यायरूपप्रथमषट्क विषेतौं कर्मनिष्ठा कथनकरीहै ॥ और षट्अध्यायरूपद्वितीयषट्कविषेतौं भगवत्भक्तिनिष्ठारूपउपासना कथनकरीहै ॥ और षट्अध्यायरूपतृतीयषट्कविषेतौं ज्ञाननिष्ठा कथनकरीहै ॥ तहां मध्यकेषट्कविषेस्थित जा भगवत्भक्तिनिष्ठा है ॥ साभगवत्भक्तिनिष्ठा कर्मनिष्ठाकीप्राप्तिविषे तथाज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिविषेप्रतिबंधक जेपापरूपविघ्नहैं तिनसर्व विघ्नोंकूंनाशकरणेहारीहै ॥ यातैं साभगवत्भक्तिनिष्ठा कर्मनिष्ठाविषे तथाज्ञाननिष्ठाविषे दोनोंविषे अनुगतहै ॥ या कारणतैंहीं साभगवत्भक्तिनिष्ठाकर्ममिश्रा शुद्धा ज्ञानमिश्रा याभेदकरिकै तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां यागीताके प्र थमषट्कविषेस्थित साभगवतभक्तिनिष्ठा कर्ममिश्रा कहीजावैहै ॥ और द्वितीयषट्कविषेस्थित साभगवत्भक्तिनिष्ठा शुद्धा कहीजावैहै ॥ और तृतीयषट्कविषेस्थित साभगवत्भक्तिनिष्ठा ज्ञानमिश्रा कहीजावैहै ॥ तहां कर्मनिष्ठाकरिकै मिलीहूई भगवत्भक्तिनिष्ठाकानाम कर्ममिश्राहै ॥ और ज्ञाननिष्ठाकरिकै मिलीहूई भगवत्भक्तिनिष्ठाकानाम ज्ञान मिश्राहै ॥ और केवलभगवत्भक्तिनिष्ठाकानाम शुद्धाहै ॥ इसप्रकार यहभगवत्गीता ऋगादिकवेदोंकीन्यांई तीन कांडरूपहै ॥ तहां यागीताके प्रथमषट्करूपकर्मकांडविषे कर्मोंके तथातिनकर्मोंकेत्यागके निरूपणरूपमार्गकरिकै अनेकप्रकारकीयुक्तियोंसैं त्वंपदकार्थरूप कूटस्थशुद्धआत्माका निरूपणकरयाहै ॥ और द्वितीयषट्करूप उपासनाकां डविषे भगवत्भक्तिनिष्ठाकेवर्णनरूपमार्गकरिकै तत्पदार्थरूपपरमात्मादेवका निरूपणकरयाहै ॥ और तृतीयषट्करू पज्ञानकांडविषे तिनशोधिततत्त्वंपदार्थोंकाअभेदरूप महावक्योंकाअर्थ निरूपणकरयाहैं ॥ इसप्रकारसैं तीनषट्करू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पतीनकांडोंका परस्परसंबंध संभवैहै ॥ और पूर्वपूर्वअध्यायकेअर्थका उत्तरउत्तरअध्यायकेअर्थसाथि जिसजिसप्रकारकासंबंध संभवैहै सोसोसंबंध तिसतिसअध्यायकेनिरूपणकालविषे कथनकरैंगे ॥ अब याअष्टादशअध्यायरूपभगवत्गीताविषे जेजे मोक्षकेसाधन विस्तारकरिकै निरूपणकरेहैं ॥ तिनसर्वसाधनोंका प्रथम संक्षेपतैं निरूपणकरेहैं ॥ यहअधिकारीपुरुष प्रथम स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिकरणेहारे काम्यकर्मोंकापरित्यागकरिकै तथानरकादिकदुःखोंकीप्राप्तिकरणेहारे हिंसादिकनिषिद्धकर्मोंका परित्यागकरिकै फलकीइच्छातैंरहित केवलनिष्कामकर्मोंकूंकरै ॥ तिननिष्कामकर्मोंविषेभी परमेश्वरकेनामोंकाजप तथास्तुतिआदिक परमधर्मरूपहैं ॥ तानिष्कामकर्मोंकरिकै तथापरमेश्वरकेजपस्तुतिआदिकोंकरिकै याअधिकारीपुरुषकाचित्त प्रतिबंधकरूपसर्वपापोंतैंरहितहोइकै विचारकरणेयोग्यहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषविषे नित्यअनित्यवस्तुकाविवेक उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसविवेकतैंअंतरइसलोककेविषयसुखोविषे तथास्वर्गादिकलोकोंकेविषयसुखोंविषे दोषदृष्टिपूर्वक वशीकारनामावैराग्य उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसवैराग्यकीप्राप्तितैंअनंतर शम दम श्रद्धा समाधान उपरति तितिक्षा याषट्संपत्तिकीप्राप्तिकरिकै सर्वकापरित्यागरूपसंन्यासप्राप्तहोवैहै ॥ तासंन्यासतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छारूपमुमुक्षुता प्राप्तहोवैहै ॥ तामुमुक्षुताकीप्राप्तितैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजावैहै ॥ तिसतैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष ताब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवणकरेहै ॥ तथा ताश्रवणकरेहूएअर्थका मननकरेहै ॥ ताश्रवणमननविषेहीं सर्वउत्तरमीमांसाशास्त्रका उपयोगहै ॥ ताश्रवणमननकोपरिपक्कतातैंअनंतर यहअधिकारीपुरुष निदिध्यासनकूं प्राप्तहोवैहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तानिदिध्यासनविषेहीं संपूर्णयोगशास्त्रका उपयोगहै ॥ तहां श्रवणकरिकै वेदांतशास्त्ररूपप्रमाणगत असंभावना
कीनिवृत्तिहोवैहै ॥ औरमननकरिकै आत्मारूपप्रमेयगत असंभावनाकी निवृत्तिहोवैहै ॥ और निदिध्यासनकरिकै देहा
दिकोंविषे आत्मत्वबुद्धिरूपविपरीतभावनाकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतरताअसंभावनादिकदोषोंतैंरहितचित्तविषे गु
रुउपदिष्टमहावाक्यतैं ब्रह्मात्माकासाक्षात्कार उत्पन्नहोवैहै ॥ ताब्रह्मात्मसाक्षात्कारकेउत्पन्नहूए याअधिकारीपुरुषके
अविद्याकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ ताआवरणशक्तिप्रधानअविद्याकेनिवृत्तहूएतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषके भ्रम तथासंशय
निवृत्तहोवैहैं ॥ तथा भावीजन्मोंकीप्राप्तिकरणेहारे सर्वसंचितकर्म नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और ताआत्मसाक्षात्कारकेप्र
भावतैं आगामीकर्मोंकी उत्पत्तिहींहोवैनहीं ॥ परंतु प्रारब्धकर्मरूपविक्षेपकेवशतैं याअधिकारीपुरुषकीवासना निवृत्त
होवैनहीं ॥ जिसकारणतैं सावासना सर्वतैंबलवान्है ॥ ऐसीबलवान्वासनाभी संयमरूपउपायकरिकै निवृत्तहोवैहै ॥
तहां धारणा ध्यान समाधि याभेदकरिकै सोसंयम तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तासंयमकीप्राप्तिवासतेहीं प्रथम यम नि
यम आसन प्राणायाम प्रत्याहार यापांचोंका उपयोगहोवैहै ॥ और याअधिकारीपुरुषकूं ईश्वरकेप्रणिधानतैं सास
माधि शीघ्रहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तासमाधिकरिकै याअधिकारीपुरुषका मनोनाश होवैहै ॥ तथा वासनाक्षयहोवैहै ॥ और तत्त्व
ज्ञान मनोनाश वासनाक्षय यातीनोंका एककालविषेअभ्यासकीयेतैं याअधिकारीपुरुषकूं जीवन्मुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै ॥
इसीजीवन्मुक्तिकीप्राप्तिवासतै श्रुतिविषे विद्वत्संन्यासका कथनकरयाहै ॥ और पूर्वसविकल्पसमाधिकरिकै निरोधकूं मूलरूपकरि
प्तभयाजोचित्तहै ॥ तानिरुद्धचित्तविषे तीनभूमिकावाला निर्विकल्पसमाधि उत्पन्नहोवैहै ॥ तहां प्रथमभूमिनशोकमोहादिकअसु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हविद्वान्पुरुष आपणीइच्छातैं उत्थानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और द्वितीयभूमिकाविषे सो विद्वानपुरुष दूसर. पूर्वभूमिकाकेसिद्धहू
नकरयाहूआ उत्थानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तृतीयभूमिकाविषे सोविद्वान्पुरुष आपणीइच्छाकरिकै तथाकिसीदूसरेकीप्रेरणातैंविना
कै उत्थानकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सर्वकालविषे ताकीब्रह्माकारवृत्तिरहेहै ॥ ऐसेनिर्विकल्पसमाधिवान्पुरुषकूंहीं शा
स्त्रविषे ब्राह्मण कहेहैं ॥ तथा ब्रह्मविद्वरिष्ठ कहेहैं ॥ तथा गुणातीत कहेहैं ॥ तथा स्थितप्रज्ञ कहेहैं ॥ तथा विष्णुभक्त कहेहैं
तथा अतिवर्णाश्रमी कहेहैं ॥ तथा जीवन्मुक्त कहेहैं ॥ तथा आत्मरति कहेहैं ॥ ऐसाजीवन्मुक्तपुरुष कृतकृत्यभावकूं प्रा
प्तभयाहै ॥ यातैं शास्त्रभी ताजीवन्मुक्तपुरुषतैं निवृत्तहोवै है ॥ तात्पर्ययह ॥ ताजीवन्मुक्तपुरुषऊपरि शास्त्रका कोईभी
विधिनिषेधनहींहै ॥ किंवा ॥ यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाः प्रकाशंतेमहात्मनः ॥ अर्थयह ॥
जिसअधिकारीपुरुषकी मरमात्मादेवविषे परमभक्तिहै ॥ और जैसी परमात्मादेवविषे परमभक्तिहै ॥ तैसीहीं गुरुविषे
परमभक्तिहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकेबुद्धिविषेहीं यहशास्त्रप्रतिपादितअर्थ प्रकाशमान होवैहैंइति ॥ याश्रुतिप्रमाणतैं
शरीरमनवाणीकृतभगवत्भक्तिका सर्वअवस्थावोंविषे उपयोगसिद्धहोवैहै ॥ तहां पूर्वपूर्वभूमिकाविषे करीहूई साभग
वत्भक्ति उत्तरउत्तरभूमिकाकीप्राप्तिकरेहै ॥ ताभगवत्भक्तितैंविना विघ्नोंकीबाहुल्यतातैं फलकीप्राप्तिहोणी अत्यं
तदुर्लभहै ॥ यहवार्त्ता (पूर्वाभ्यासेनतेनैवह्रियतेह्यवशोपिसः अनेकजन्मसंसिद्धः) इत्यादिकभगवान्केवचनोंतैंहींसिद्ध
होवैहै ॥ किंवा ॥ पूर्वपूर्वजन्मोंविषेउत्पन्नभयेजेसंस्कारहैं तेसंस्कार अचिंत्यशक्तिवालेहैं ॥ तिनपूर्वसंस्काररोंकेप्रभावतैं
जोकोईपुरुष आकाशफलपातकीन्यांईं पूर्वहींकृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसपुरुषकेवासतैभी शास्त्रकाआरंभ करया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जावैनहीं ॥ जिसवासतै पूर्वसिद्धिसाधनोंकेअभ्यासतैं भगवत्कृपा अत्यंतदुर्विज्ञेयहै ॥ इसप्रकार पूर्वभूमिकाकेसिद्धहू एभी उत्तरउत्तरभूमिकाकेप्राप्तिवासतै यहअधिकारीपुरुष भगवत्भक्तिकूं अवश्यकरिकैकरै ताभगवत्भक्तितैंविना साउत्तरभूमिकासिद्धहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ जैसे पूर्वअवस्थाविषे ताभगवत्भक्तिकेफलकीकल्पनाहोवैहै ॥ तैसे जीवन्मुक्तिदशाविषे ताभगवत्भक्तिकेफलकीकल्पनाहोवैनहीं ॥ किंतु ताजीवन्मुक्तविद्वानपुरुषविषे जैसे अद्वेष्टृत्व अदंभित्व आदिकधर्म स्वभावभूतहो कैरहेहैं ॥ तैसे साभगवत्भक्तिभी स्वभावभूतहोइकैरहेहै ॥ यहवार्त्ता (तेषांज्ञानीनित्य युक्तएकभक्तिर्विशिष्यते) इत्यादिकवचनोंकरिकैश्रीभगवान्नैं प्रतिपादनकरीहै याकारणतैं सोजीवन्मुक्तविद्वानपुरुषहीं मुख्यप्रेमभक्त कह्याजावैहै ॥ इत्यादिकसर्वमोक्षकेसाधन श्रीकृष्णभगवान्नैं यागीताशास्त्रविषे कथनकरेहैं ॥ तिनमोक्षकेसाधनोंकूंदेखिकरिकै श्रीमत्शंकराचार्यनैं तथा स्वामीशंकरानंदनैं तथास्वामीमधुसूदननैं तथानीलकंठपंडितनैं बहुतउत्साहपूर्वक यागीताऊपरि संस्कृतटीका करीहैं ॥ तिनसंस्कृतटीकावोंतैं यद्यपि व्याकरणादिकसाधनसंपन्नमुमुक्षुजनोंकूं यागीताशास्त्रके [illegible] हैं तथापितिनसंस्कृतटीकावोंतैं व्याकरणादिकसाधनोंतैंरहित केवलभाषाकेपठनकरणेहारे [illegible] मुक्षुजनोंकूं यागीताशास्त्रकेअर्थकाबोध होइसकैनहीं ॥ यातैं तिनमुमुक्षुजनोंकेप्रति यागीताशास्त्रकेअर्थकाबोधक [illegible] वासतै हम तिनसंस्कृतटीकावोंकेअभिप्रायकूंलैके इसगीतागूढार्थदीपिकानामा प्राकृतटीकाका आरंभकरेहैं इति ॥ तहां निष्कामकर्मोंकाजोअनुष्ठानहै तिसकूंहीं शास्त्रविषे मोक्षकामूलरूपकरिकैकथनकस्याहै ॥ और शोकमोहादिकपापरूपअसुर तामोक्षकीप्राप्तिविषेप्रतिबंधकहैं ॥ काहेतैं तिनशोकमोहादिकअसु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रोंकीप्राप्तितैंहीं यहपुरुष आपणे वर्णआश्रमकेधर्मतैं भ्रष्टहोवैहै तथा शास्त्रनिषिद्धकर्मविषे प्रवृत्तहोवैंहै तथा फलकी इच्छापूर्वक अहंकारसहित नानाप्रकारकीक्रियाकूंकरैहै ॥ इसप्रकार शोकमोहादिकपापरूपअसुरोंकरिकैनित्यहींयुक्त हूआ यहपुरुष मोक्षरूपपुरुषार्थकूंनप्राप्तहोइकै जन्ममरणादिकअनेकदुःखोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोदुःख स्वभावतैंहीं सर्व प्राणीयोकेद्वेषकाविषयहै ॥ यातैं तादुःखकीनिवृत्तिवासतै तादुःखकैसाधनरूपशोकमोहादिक अवश्यकरिकै त्याग करणेयोग्यहैं ॥ और याअनादिसंसारविषे अनेकजन्मोंकरिकै तेशोकमोहादिक दुःखकेकारण दृढताकूंप्राप्तहूएहैं ॥ यातैं तिनशोकमोहादिकोकात्यागकरणा अत्यंतकठिनहै ॥ और तिनशोकमोहादिकोंकीनिवृत्तितैंविना मोक्षकीप्राप्ति होवैनहीं ॥ यातैं तेहमारेशोकमोहादिक किसउपायकरिकैनाशकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ इसप्रकारकीउत्कटइच्छावान्जोमुमुक्षु जनहै ॥ ताकेबोधकरणेवासतै श्रीकृष्णभगवान् यागीताशास्त्रकूं कथनकरताभयाहै ॥ तागीताशास्त्रविषे (अशोच्यानन्व शोचस्त्वं) इत्यादिकश्लोकोंकरिकै शोकमोहादिकअसुरोंकीनिवृत्तिकेउपायकाउपदेशकरिकै आपणेवर्णआश्रमकेधर्मों केअनुष्ठानतैं तुम मोक्षरूपपुरुषार्थकूंप्राप्तहोवो याप्रकारका जोभगवान्काउपदेशहै ॥ सोउपदेश सर्वमुमुक्षुजनोंकेप्रति साधारणहै ॥ केवलएकअर्जुनकेप्रति सोउपदेशनहींहै ॥ शंका ॥ श्रीकृष्णभगवान्का जोकदाचित् सर्वमुमुक्षुजनों केप्रति साधारणहींउपदेशहोवै ॥ तौं यागीताशास्त्रविषे श्रीकृष्णभगवान्का तथाअर्जुनका संवादरूपआख्यायिका किसवासतैंरखीहै ॥ समाधान ॥ जैसे उपनिषदोंकाउपदेश सर्वमुमुक्षुजनोंकेप्रति साधारणहूआभी तिनउपनिषदों विषे जो जनकयाज्ञवल्क्यादिकोंकासंवादरूपआख्यायिकाहैं ॥ तेआख्यायिका तिसतिसउपनिषदरूपब्रह्मविद्याके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्तुतिवासतैंहैं ॥ तैसे यागीताशास्त्रविषे जोश्रीकृष्णभगवान्अर्जुनकासंवादरूपआख्यायिकाहै ॥ साआख्यायिकाभी यागीतारूपब्रह्मविद्याकीस्तुतिवासतैंहै ॥ तास्तुतिकायहप्रकारहै ॥ सर्वलोकविषेप्रसिद्धहैमहानभावजिसका ऐसाजोअर्जुनहै ॥ सोअर्जुन राज्य गुरु पुत्र मित्र आदिकपदार्थोंविषे मैंइनोंकाहूं यहमेरेहैं याप्रकारकोबुद्धिकरिकै स्नेहकूंप्राप्तहोताभया ॥ तास्नेहकरिकैउत्पन्नभयाजोशोकमोह ताशोकमोहकरिकै नष्टहोइगयाहैविवेकविज्ञानजिसका ऐसासो अर्जुन पूर्व स्वभावतैंहीं क्षत्रियोंकेधर्मरूपयुद्धविषेप्रवृत्तहूआभी ताशोकमोहकेप्रभावतैं ताधर्मयुद्धतैं उपरामहोताभया ॥ तथा संन्यासीयोंकाधर्मरूपजोभिक्षावृत्तितैंजीवनहै ॥ तेभिक्षाजीवनादिकधर्म यद्यपि क्षत्रियराजावोंकूं शास्त्रकरिकैनिषिद्धहैं ॥ तथापि सोअर्जुन ताशोकमोहकेवशतैं ताभिक्षाजीवनरूपपरधर्मकेकरणेवासतै प्रवृत्तहोताभया ॥ इसप्रकार सोअर्जुन ताशोकमोहकेवशतैं महान्अनर्थविषेमगनहोताभया ॥ ऐसाअर्जुन श्रीकृष्णभगवान्केउपदेशतैं यागीतारूपब्रह्मविद्याकूंप्राप्तहोइकै ताशोकमोहतैंरहितहोइकै पुनःआपणेयुद्धरूपधर्मविषे प्रवृत्तहोताभया ॥ ताकरिकै सोअर्जुन कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ ऐसेमहान्प्रयोजनकीप्राप्तिकरणेहारी यहगीतारूपब्रह्मविद्याहै ॥ यातैं यहगीतारूपब्रह्मविद्या अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ याप्रकार यागीतारूपब्रह्मविद्याकीस्तुतिकरणेवासतै श्रीकृष्णभगवान्अर्जुनका संवादरूपआख्यायिका यागीताशास्त्रविषेस्थितहै ॥ यातैं अर्जुनशब्दकरिकै यागीताशास्त्रकेउपदेशकाअधिकारीमात्र कथनकर्याहै ॥ याकारणतैंहीं युद्धरूपस्वधर्मविषे पूर्वअर्जुनकोप्रवृत्तिहूएभी तायुद्धरूपस्वधर्मतैंनिवृत्तिकाकारणरूप शोकमोह (कथंभीष्ममहंसंख्ये) इत्यादिकवचनोंकरिकै अर्जुननैं दिखायेहैं ॥ याप्रकार आगेकथनकरैंगे ॥ तहां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

युद्धरूपस्वधर्मविषे विवेकतैंविनाहीं अर्जुनकी किसनिमित्ततैंप्रवृत्तिभईहै याप्रकारकीजिज्ञासाकेहूए (दृष्ट्वातुपांडवानीकं) इत्यादिकवचनकरिकै परसैनाकीचेष्टाहीं ताप्रवृत्तिविषेनिमित्त कथनकरयाहै॥ तिसअर्थकीसिद्धिवासतै (धर्मक्षेत्रे) इत्यादिश्लोककरिकैधृतराष्ट्रकाप्रश्न संजयकेप्रतिहै॥ और धृतराष्ट्रउवाच यहवैशंपायनकावचन जनमेजयकेप्रतिहै ॥ तहां पूर्व पांडवोंके जयके अनेकप्रकारकेकारणोंकूंश्रवणकरिकै आपणेपुत्रोंकाराज्यतैंभ्रष्टपणेतैंभयभीतहूआ सोधृतराष्ट्र आपणेपुत्रोंकेजयकीइच्छाकरताहूआ याप्रकार संजयसैं पूछताभया॥

धृतराष्ट्रउवाच ॥ ॥ धर्मक्षेत्रेकुरुक्षेत्रेसमवेतायुयुत्सवः ॥ मामकाःपांडवाश्चैवकिमकुर्वतसंजय ॥ १ ॥

धर्मक्षेत्रे । कुरुक्षेत्रे । समवेताः । युयुत्सवः । मामकाः । पांडवाः । च । एव । किं । अकुर्वत । संजय ॥ १ ॥ इतिपदच्छेदः॥

हेसंजय धर्मक्षेत्ररूप कुरुक्षेत्रविषे एकठेहूए तथायुद्धकीइच्छाकरतेहूए
मेरेपुत्र तथा पांडुराजाकेपुत्र क्या करतेभये ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ जैसे उत्तमभूमिरूपक्षेत्र व्रीहियवादिकअन्नकेउत्पत्तिका तथावृद्धिका कारणहोवैहै ॥ तैसे पूर्वअविद्यमानधर्मकेउत्पत्तिका जोकारणहोवै ॥ तथा पूर्वविद्यमानधर्मकेवृद्धिका जोकारणहोवै ॥ अथवा धर्मकेक्षयतैंजोरक्षाकरणेहाराहोवै ॥ ताकानाम धर्मक्षेत्रहै ॥ और कुरुदेशकेअंतरजोस्थितहोवै ताकानाम कुरुक्षेत्रहै ॥ इसप्रकार निवा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समात्रकरणेकरिकै धर्मकी तथाधर्मकेफलकी प्राप्तिकरणेहारा जोधर्मक्षेत्ररूपकुरुक्षेत्रहै ॥ सोश्रुतिस्मृतिआदिकसर्व
शास्त्रोंविषेप्रसिद्धहै ॥ तहांश्रुति ॥ यदनुकुरुक्षेत्रंदेवानांदेवयजनंसर्वेषांभूतानांब्रह्मसदनंइति ॥ अर्थयह ॥ जोकुरुक्षेत्र
सर्वदेवतावोंका देवयजनरूपहै ॥ तथा सर्वभूतप्राणीयोंकूं ब्रह्मरूपमोक्षकेप्राप्तिकास्थानरूपहैइति ॥ यहश्रुति जा
बालउपनिषदविषे बृहस्पतिनैं याज्ञवल्क्यकेप्रति कथनकरीहै ॥ और कुरुक्षेत्रंदेवयजनं यहश्रुति शतपथब्राह्मण
विषे कथनकरीहै ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतिप्रमाणकरिकैसिद्धजोकुरुक्षेत्रहै ॥ ताधर्मक्षेत्ररूपकुरुक्षेत्रविषे युद्धकोइच्छाक
रिकै एकठेहूए जेदुर्योधनादिकमेरेपुत्रहैं ॥ तथा युधिष्ठिरादिकपांडवहैं ॥ तेसर्व क्याकार्य करतेभये ॥ शंका ॥
युयुत्सवः याविशेषणकरिकै धृतराष्ट्रतैं आपणेपुत्रोंविषे तथापांडवोंविषे युद्धकरणेकीइच्छा कथनकरी ॥ और यालो
कविषे यहनियमहै ॥ जिसपुरुषकूं जिसकार्यकरणेकी पूर्वइच्छाहोवै है ॥ सोपुरुष तिसइच्छाकेअनुसार तिसीकार्यविषेप्र
वृत्तहोवैहै ॥ अन्यकार्यविषेप्रवृत्तहोवैनहीं ॥ यातैं तापूर्वयुद्धकीइच्छाकेअनुसार तिनदुर्योधनादिकोंकी युद्धरूपकार्यवि
षेहीं प्रवृत्तिहोवैंगी ॥ अन्यकिसीकार्यविषे तिनोंकीप्रवृत्तिहोवैंगीनहीं ॥ यातैं तिनोंका परस्पर किसप्रकारकायुद्ध हो
ताभया याप्रकारकाप्रश्नहीं ताधृतराष्ट्रकूं करणेयोग्यथा ॥ ताप्रश्नकापरित्यागकरिकै मेरेपुत्र तथापांडव क्याकार्य क
रतेभये यहजोधृतराष्ट्रनैंप्रश्नकरयाहै सोअसंगतहै ॥ समाधान ॥ ताधृतराष्ट्रकेप्रश्नका यहअभिप्रायहै ॥ तेहमारेदुर्यो
धनादिकपुत्र तथायुधिष्ठिरादिकपांडव पूर्वउत्पन्नहूई युद्धकोइच्छाकेअनुसार युद्धकूंहीकरतेभये ॥ अथवा ॥ किसीनिमि
त्तकरिकै तायुद्धकीइच्छाकेनिवृत्तहूए कोईदूसराहीं कार्यकरतेभये ॥ तहां युद्धकीइच्छाकेनिवृत्तिविषे दोप्रकारकाकारण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संभवैहै ॥ एकतौं दृष्टभय दूसराअदृष्टभय ॥ तहां भीष्मअर्जुनादिकमहानसूरवीरोंकेदर्शनतैंउत्पन्नभयाजोभयहै ॥ सो
दृष्टभयरूप युद्धकेनिवृत्तिकाकारण प्रसिद्धहींहै ॥ यातैं सोदृष्टभयरूपनिमित्त ताधृतराष्ट्रनैं कथनकरयानहीं ॥ और दूस
रेअदृष्टभयरूपकारणकेकथनकरणेवासतै ताधृतराष्ट्रनैं कुरुक्षेत्रका धर्मक्षेत्र यहविशेषणदीयाहै ॥ ऐसेधर्मक्षेत्ररूप
कुरुक्षेत्रविषेप्राप्तहूए जो युधिष्ठिरादिकपांडवहैं तेपांडव पूर्वहींधर्मात्माहोणेतैं जोकदाचित् दोनोंपक्षोंविषेहोणेहारीहिं
साजन्यअधर्मतैंभयभीतहोइकै तायुद्धतैंनिवृत्तहोइजावैंगे ॥ तौं हमारेदुर्योधनादिकपुत्र अवश्यकरिकै राज्यकूंप्राप्तहो
वैंगे ॥ अथवा पूर्वस्वभावतैंहींपापात्मा जेहमारेदुर्योधनादिकपुत्रहैं ॥ तिनहमारेपुत्रोंका ताधर्मक्षेत्ररूपकुरुक्षेत्रकेप्र
भावतैं जोकदाचित् अंतःकरण शुद्धहूआहोवैंगा ॥ ताचित्तकीशुद्धिकरिकै पश्चात्तापकूंप्राप्तहूए ते हमारेपुत्र पूर्वकपटक
रिकैलीयेहूएराज्यकूं जोकदाचित् तिनपांडववोंकेताईं देदेवैंगे ॥ तौं तेहमारेपुत्र युद्धतैंविनाहीं नाशकूंप्राप्तहूए ॥ इसप्र
कार आपणेपुत्रोंकूं राज्यकीप्राप्तिविषै तथापाडवोंकूं राज्यकीअप्राप्तिविषे अत्यंतदृढउपायकूंनहींदेखताहूआजोधृ
तराष्ट्रहै ॥ ताधृतराष्ट्रका सोमहानउद्वेगहीं ताप्रश्नकाबीजहै ॥ तहां (हेसंजय) यासंबोधनकरिकै ताधृतराष्ट्रनैं यहअर्थ
बोधनकर्या ॥ रागद्वेषादिकदोषोंकूं जोभलीप्रकारकरिकैजयकरेहै ताकानाम संजयहै ॥ ऐसेरागद्वेषतैंरहितआपहो ॥
यातैं पक्षपाततैंरहितहोइकै आप हमारेप्रति सर्ववृत्तांत कथनकरो ॥ ईहां यद्यपि (मामकाःकिमकुर्वत) याप्रकारकेवच
नमात्रकरिकैहीं ताधृतराष्ट्रकेप्रश्नकीसिद्धिहोइसकेहै ॥ काहेतैं तेयुधिष्ठिरादिकपांडवभी ताधृतराष्ट्रकेहींसंबंधीहैं ॥ यातैं
(पांडवाः) यहकहणाव्यर्थहै ॥ तथापि (पांडवाः) याशब्दकेभिन्नकहणेकरिकै ताधृतराष्ट्रनैं तिनपांडवोंविषेममत्वका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अभावदिखाइकै तिनपांडवोंविषे आपणेद्रोहकूंसूचनकरयाइति ॥ १ ॥ ❋ ॥ हेजनमेजय ॥ इसप्रकार कृपारूप नेत्रोंतैंरहित तथालोकप्रसिद्धनेत्रोंतैंरहित तथाआपणेपुत्रोंकेस्नेहमात्रकरिकैयुक्त ऐसाजोधृतराष्ट्रहै ॥ ताधृतराष्ट्रकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै तथाताधृतराष्ट्रकेअभिप्रायकूंजाणिकरिकै सोधर्मात्मासंजय ताधृतराष्ट्रकेप्रति यहवचन कहताभया ॥

संजयउवाच ॥ ॥ दृष्ट्वातुपांडवानीकंव्यूढंदुर्योधनस्तदा ॥
आचार्यमुपसंगम्यराजावचनमब्रवीत् ॥ २ ॥

दृष्ट्वा । तु । पाँडवानीकं । व्यूढं । दुर्योधनः । तदा । आँचार्यं । उपसंगम्य । राजा । वचनं । अब्रवोत् ॥ २ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेधृतराष्ट्र तांसंग्रामकेआरंभकालविषे राजा दुर्योधन व्यूहरचनायुक्त पाँडवोंकीसैनाकूं देखिकरिकै द्रोणाँचार्यके समीपजाइकै यांप्रकारकावचन कहताभया ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका ॥ तहां युधिष्ठिरादिकपांडवोंविषे भीष्मादिकवीरपुरुषोंतैं दृष्टभयकी संभावनामात्रभीहोवैनहीं ॥ और बाधवोंकीहिंसाजन्यपापरूपअदृष्टतैं जोअर्जुनकूं भयप्राप्तहूआथा ॥ सोकेवल भ्रांतिकरिकैहूआथा ॥ सोअर्जुनकाअदृष्टभयभी श्रीभागवाननैं ब्रह्मविद्याकेउपदेशतैं निवृत्तकरया ॥ याप्रकार पांडवोंकीउत्कृष्टताबोधनकरणेवासतै संजयनैं (दृष्ट्वातु) यहतुशब्द कथनकरयाहै ॥ तहां हमारे दुर्योधनादिकपुत्र धर्मक्षेत्ररूपकुरुक्षेत्रकेप्रभावतैं शुभबुद्धिवालेहोइकैपांडवोंकेतांई राज्य समर्पणकरैंगे याप्रकारकीशंकाकरिकै तूं गिलानिकूंमतप्राप्तहोउ याप्रकार ताधृतराष्ट्रकेसंतोषकरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वणेवासतै सोसंजय प्रथम तादुर्योधनकेदुष्टस्वभावकावर्णनकरेहै ॥ (दृष्ट्वेति) हेधृतराष्ट्र धृष्टद्युम्नादिकशूरवीरपुरुषों नैं व्यूहरचनाकरिकै स्थापनकरीजापांडवोंकीसैनाहै ॥ तासैनाकूं सोदुर्योधनराजा आपणेनेत्रोंसैंप्रत्यक्षदेखिकरिकै धनुर्विद्याकेसंप्रदायकीप्रवृत्तिकरणेहारे द्रोणाचार्यकेसमीप आपहींजाइकै यहवक्ष्यमाणवचन कहताभया ॥ ताद्रोणाचार्यकूं आपणेसमीपबुलाइकै सोवचन नहींकहताभया ॥ तहां सोदुर्योधनराजा ताद्रोणाचार्यकेसमीप आपहींजाताभया याकहणेकरिकै तादुर्योधनविषे पांडवोंकीसैनाकेदर्शनतैं उत्पन्नभयाभय सूचनकरया ॥ तहां सोदुर्योधन यद्यपि भयकरिकै आपणीरक्षावासतै ता द्रोणाचार्यकेसमीप जाताभया ॥ तथापि सोदुर्योधन राजनीतिविषे बहुतकुशलहै ॥ यातैं आचार्यकेसमीप शिष्यनैं आपहींचलिकेजाणा याप्रकार आचार्यकीमहानताकेव्याजकरिकै आपणेभयकूं गुह्यराखताभया ॥ याप्रकारकेअर्थकेबोधनकरणेवासतै संजयनैं दुर्योधनका राजा यहविशेषणदीयाहै ॥ यद्यपि द्रोणाचार्यकेप्रति सोराजादुर्योधन कहताभया इतनैंकहणेमात्रकरिकैहीं निर्वाह होइसकैहै ॥ वचन यापदकेकहणेका कछुप्रयोजन नहीं है ॥ तथापि वचन यापदकेकहणेकरिकै तावाक्यविषे संक्षिप्तत्व बहुअर्थप्रतिपादकत्व इत्यादिकअनेकगुणवत्त्व कथनकरया ॥ अथवा सोदुर्योधनराजा केवलवचनमात्रहीं कहताभया ॥ किंचित्मात्रभीअर्थ नहींकहताभया यहअर्थ वचनपदकरिकैसूचनकरया इति ॥ २ ॥ ※ तहां जिसप्रकारकावचन तादुर्योधननैं द्रोणाचार्यकेसमीपजाइकै कथनकरयाथा ॥ तावचनका (पश्यैतां) इसतैंआदिलैकै (तस्यसंजनयन्हर्षं) इसतैंपूर्वग्रंथकरिकै विस्तारतैंनिरूपणकरे हैं ॥ तहां याद्रोणाचार्यके अत्यंतप्रियशिष्यजेपांडवहैं ॥ तिनपांडवोंविषे याद्रोणाचार्यकाअत्यंतस्नेहहै ॥ या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तैं यहद्रोणाचार्य हमारेपक्षविषेस्थितहोइकै तिनपांडवोंकेसाथि युद्धनहींकरैंगा ॥ याप्रकारकीसंभावना आपणेमन विषेकरिकै सोदुर्योधनराजा तिनपांडवोंऊपरि ताद्रोणाचार्यकाक्रोधउत्पन्नकरणेवासतै ताद्रोणाचार्यकेसमीप तिन पांडवोंकीअवज्ञाकूं कथनकरताहूआ याप्रकारकावचन कहताभया ॥

पश्यैतांपांडुपुत्राणामाचार्यमहतींचमूं ॥ व्यूढांद्रुपदपुत्रेणतवशिष्येणधीमता ॥ ३ ॥

पश्य । एतां । पांडुपुत्राणां । आचार्य । महतीं । चमूं । व्यूढां । द्रुपदपुत्रेण । तव । शिष्येण । धीमता ॥३॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेआचार्य पांडुराजाकेपुत्रोंकी इस महान सैनाकूं तूं देख जासैना
तुमारे बुद्धिमान सिष्य द्रुपदपुत्रनैं व्यूहरचनायुक्तकरीहै ॥३॥ इतिपदार्थः

॥ टीका ॥ हेआचार्य आपसरीखेमहानभावपुरुषोंकीभीअवज्ञाकरिकै तथाभयतैंरहितहोइकै अत्यंतसमीपस्थित जा यहपांडवोंकीसैनाहै ॥ सासेना अनेकअक्षौहिणीसंख्यावालीहोणेतैं महानहै ॥ याकारणतैंहीं सासैना निवृत्तकरणेकूं अशक्यहै ॥ ऐसीपांडवोंकीसैनाकूं आप नेत्रोंकरिकैप्रत्यक्षदेखो ॥ मैं आपकाशिष्यहूं ॥ यातैं मैं केवलआपकेआगे प्रार्थनाकरताहूं ॥ कोईआपकूं आज्ञानहींकरता ॥ ताहमारीप्रार्थनाकूंअंगीकारकरिकै जबी आप तापांडवोंकीसैनाकूं देखोंगे ॥ तबी तिनपांडवोंके अवज्ञाकूं आपहीं निश्चयकरौंगे ॥ शंका ॥ तिनपांवोंनैंकरीजोहमारी अवज्ञाहै ॥ सा अवज्ञानिवृत्तकरणेकूंअशक्यहै ॥ यातैं साअवज्ञा हमारेकूं सहारणीहीं उचितहै ॥ याप्रकारकीद्रोणाचार्यकीशंका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

केहूए ॥ तिसअवज्ञाकेनिवृत्तकरणेकाउपाय आपकूं अत्यंतसुगमहै याप्रकारकाउत्तर सोदुर्योधन ताद्रोणाचार्यकेप्रति कथनकरेहै ॥ (व्यूढांतवशिष्येणइति) हेआचार्य ॥ तुमारेतैंधनुर्विद्यासिख्याहूआ जोद्रुपदराजाजाकापुत्र धृष्टद्युम्ननामा तुमारा बुद्धिमान्शिष्यहै ॥ ताद्रुपदपुत्रनैं यहपांडवोंकीसैना शकटाकार तथापद्मादिआकार करीहूईहै ॥ और शिष्यकीअपेक्षाकरिकै गुरुविषे अधिकताहींहोवैहै ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकशास्त्रविषेप्रसिद्धहै ॥ यातैं आपकूं तिनोंकी अवज्ञाकेनिवृत्तकरणेकाउपाय अत्यंतसुगमहै ॥ ईहां धृष्टद्युम्ननैं सापांडवोंकीसैना व्यूहरचनायुक्तकरीहै याप्रकारकावचन नहींकथनकरिकै द्रुपदपुत्रनैं सासैना व्यूहरचनायुक्तकरीहै याप्रकारकावचन जोदुर्योधननैंकथनकऱ्याहै ॥ सोद्रोणाचार्यकेप्रति द्रुपदराजाकापूर्वलावैर सूचनकरिकै क्रोधकीउत्पत्तिकरणेवासतै सोवचन कथनकरयाहै ॥ और ताद्रुपदपुत्रका बुद्धिमान यहजोविशेषण दुर्योधननैं कथनकऱ्याहै ॥ सो ताद्रुपदपुत्रकी आपनैं उपेक्षा कदाचित्भी नहींकरणी याप्रकार ताकीउपेक्षाकेअभावकाबोधनकरणेवासतै दीयाहै ॥ यातैं हेआचार्य दूसरे सर्वकार्योंकापरित्यागकरिकै आप शीघ्रहींचलिकै तासैनाकूंदेखो ॥ अथवा याश्लोककेपदोंकीइसप्रकार योजनाकरणी (पांडुपुत्राणां) यापदका (आचार्य) यापदकेसाथि तथा (चमूं) यापदकेसाथि संबंधकरणा ॥ इसप्रकार तिनपदोंकीयोजनाकरणेतैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ हेपांडुपुत्रोंकेआचार्य तिनपांडवोंकीसैनाकूं तूं देख ॥ तिनपांडवोंविषेहीं तुमाराअत्यंतस्नेहहै ॥ यातैं तिनपांडवोंकाहीं तू आचार्यहैं ॥ हमारा तूं आचार्यनहींहैं ॥ और तुमारेशिष्यद्रुपदपुत्रनैं यहसैना व्यूहरचनायुक्तकरीहै ॥ याकहणेकरिकै तादुर्योधननैं यहअर्थ सूचनकरया ॥ तुमारेनाशकरणेवासतैउत्पन्नहूआभीयहद्रुपदपुत्र ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तुमनैंहीं इसकूं धनुर्विद्यापढाई ॥ यातैं यहतुमारीमूढताहीं हमारेअनर्थकाकारणहै ॥ और सोद्रुपदपुत्र बुद्धिमान्है याकहणेकरिकै तादुर्योधननैं कहअर्थसुचनकरया ॥ इसद्रुपदपुत्रनैं आपणेशत्रुवोंतैंहीं तिनशत्रुवोंकेमारणेकाउपायरू पधनुर्विद्या ग्रहणकरीहै ॥ याकारणतैं यहद्रुपदपुत्र अत्यंतबुद्धिमान्है ॥ हेअचार्य ऐसेआपणेसिष्योंकीसैनाकूंदेखि करिके आपकूंहीं आनंदहोवैंगा ॥ जिसकारणतैं आप भ्रांतियुक्तहो ॥ भ्रांतितैंरहितदूसरेकिसीकूं तासैनाकेदर्शनतैंआ नंदहोवैंगानहीं ॥ जिसकूं यहपांडवोंकीसैना मैं दिखावों ॥ यातैं आपहीं चलिकै तिननपांडवोंकीसैनाकूंदेखो ॥ इसप्र कार ताद्रोणाचार्यकूं पांडवोंकीसैनादिखावताहूआ सोदुर्योधन ताआचार्यविषे आपणेगूढद्वेषकूं बोधनकरताभया ॥ इतनैंकहणेकरिकै संजयनैं ताधृतराष्ट्रकेप्रति यहअर्थबोधनकरया ॥ धर्मक्षेत्रविषेप्राप्तहोइकैभी जिनतुमारेदुर्योधना दिकपुत्रोंकूं आपणेआचार्यविषेभी ऐसीद्वेषबुद्धिहूईहै ॥ तेदुर्योधनादिक ताधर्मक्षेत्रकेप्रभावतैं पश्चात्तापकूंप्राप्तहोइकै तिनपांडवोंकूंयुद्धकरे तैंविनाहींराज्यदेदेवैंगे याप्रकारकीसंभावना तुमनैं कदाचित्भीनहींकरणी इति ॥ ३ ॥

॥ शंका ॥ सर्वशूरवीरोंविषेअप्रसिद्ध ऐसाजोद्रुपदपुत्रहै ॥ ताएकद्रुपदपुत्रकरिकै व्यूहरचनायुक्तकरीहूई जायहपांड वोंकीसैनाहै तापांडवोंकीसैनाकूं हमसर्वोंविषे कोईएकसाधारणशूरवीरभी जयकरिलेवैंगा ॥ तुम तिनपांडवोंकीसै नातैं किसवासतै भयकरतेहो ॥ ऐसीद्रोणाचार्यकीशंकाकेहूए ॥ सोदुर्योधनराजा (अत्रशूराः) इत्यादिकतीनश्लोकों करिकै तिनपांडवोंकीसैनाविषेस्थितशूरवीरोंकेनाम वर्णनकरेहै ॥

अत्रशूरामहेष्वासाभीमार्जुनसमायुधि ॥ युयुधानोविराटश्चद्रुपदश्चमहारथः ॥४॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धृष्टकेतुःश्चेकितानःकाशिराजश्चवीर्यवान् ॥ पुरुजित्कुंतिभोजश्चशैब्यश्चनरपुं
गवः ॥ ५ ॥ युधामन्युश्चविक्रांतउत्तमौजाश्चवीर्यवान् ॥ सौभद्रोद्रौपदेयाश्चस
र्वएवमहारथाः ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥

अत्र । शूराः । महेष्वासाः । भीमार्जुनसमाः । युधि । युयुधानः । विराटः । च द्रुपदः च । महारथः ॥ ४ ॥ धृष्टकेतुः चेकितानः । काशिराजः । च । वीर्यवान् । पुरुजित् । कुंतिभोजः । च । शैब्यः । च । नरपुंगवः ॥ ५ ॥ युधामन्युः । च विक्रांतः । उत्तमौजाः । च । वीर्यवान् । सौभद्रः । द्रौपदेयाः । च । सर्वे । एव । महारथाः ॥ ६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

इसपांडवोंकीसैनाविषे युद्धविषे भीमअर्जुनकेसमान तथामहान्धनुषोंवाले ऐसेशूरवीर बहुतवि
द्यमानहैं तिनोंकेयहनामहैं महारथीरूप युयुधाननामाराजा तथा विराटनामाराजा तथा द्रुपद
नामाराजा ॥ ४ ॥ तथा विशेषपराक्रमवाला धृष्टकेतुनामाराजा तथाचेकितानननामाराजा तथा
काशिराजा तथासर्वमनुष्योंविषेश्रेष्ठ पुरुजित्नामाराजा तथा कुंतिभोजनामाराजा तथा शैब्यना
माराजा ॥ ५ ॥ तथा विशेषपराक्रमवाला युधामन्युनामाराजा तथा वीर्यवाला उत्तमौजानामा
राजा तथा सौभद्रनामाराजा तथाद्रोपदीकेपंचपुत्र यहसर्व हीं महारथी हैं ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेआचार्य यापांडवोंकीसैनाविषे केवलएक धृष्टद्युम्ननामा द्रुपदपुत्रहीं शूरवीरनहींहै ॥ जिसकरिकै यापां
डवोंकेसैनाकी हम उपेक्षाकरिदेवैं ॥ किंतु यापांडवोंकीसैनाविषे दूसरेभीबहुतशूरवीरहैं ॥ यातैं तिनोंकेजयकरणेवा
सतै हमारेकूं अवश्यकरिकै प्रयत्नकरयाचाहीये ॥ तिनोंकीउपेक्षाकरणी योग्यनहींहै ॥ अब तिनशूरवीरोंकेविशेषणों
का कथनकरेहैं (महेष्वासाःइति) इषुनाम बाणोंकाहै ॥ तेबाणरूपइषु चलाइयेंजिनोंकरिकै तिनोंकानाम इष्वासा
है ॥ ऐसैधनुष्हैं ॥ तेधनुषरूपइष्वासाः महानहैंजिनशूरवीरोंके तिनशूरवीरोंकानाम महेष्वासाःहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ते
शूरवीर बाणोंकरिकै दूरसैंहीं षरसैनाकेभगावणेविषेकुशलहैंइति ॥ शंका ॥ तेशूरवीर महानधनुषोंवालेतौंहै परं
तु तिनोंविषे युद्धकरणेकीकुशलतानहींहोवैंगी ॥ ऐसीद्रोणाचार्यकीशंकाकेहूए सोदुर्योधनराजा उत्तरकहेहै (भीमा
र्जुनसमायुधिइति) हेआचार्य सर्वलोकविषेप्रसिद्धहैपराक्रमजिनोंका ऐसेजोभीमअर्जुनहै ॥ ताभीमअर्जुकेसमानहीं
जिनशूररवीरोंका युद्धविषेपराक्रमहै ॥ शंका ॥ ऐसेपराक्रमवाले कौनकौनशूरवीरहैं ॥ ऐसीद्रोणाचार्यकीशंकाकेहूए
सोदुर्योधनराजा ताद्रोणाचार्यकेप्रति तिनशूरवीरोंकेनामोंकाकथनकरेहै ॥ (युयुधानइति) अतिशयकरिकैजोयुद्धकूं
करेहै ताकानाम युयुधानहै ऐसा सात्यकिनामाराजाहै ॥ और शत्रुवोंकूं जोविशेषकरिकैभ्रमणकरावैहै ताकानाम
विराटहैं ॥ और द्रुनाम वृक्षकाहै ॥ पदनाम चिन्हकाहै ॥ तावृक्षकाहैध्वजाविषेचिन्हजिसके ताकानाम द्रुपदहैं ॥ यह
तीनों महारथीहै ॥ ४ ॥ और शत्रुवोंकूंभयकीप्राप्तिकरणेहारेकानाम धृष्टहै ॥ केतुनामध्वजाकाहै ॥ भयकाकारणहै
ध्वजाजिसकी ताकानाम धृष्टकेतुहै ॥ और चिकिताननामाराजाकाजोपुत्रहोवै ताकानाम चेकितानहै ॥ और काशी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

काजोराजाहोवै ताकानाम काशिराजहै ॥ तेतीनोंराजे वीर्यवान्हैं ॥ तेजबलकरिकैयुक्त शत्रुवोंकूंभी जोविविधप्रकार तैंभगगाइदेवै ताकानाम वीरहै ॥ तिसवीरपुरुषकाजोकर्महोवै ताकानाम वीर्यहै ॥ सोवीर्य जिसविषेवर्त्तमानहोवै ताकानाम वीर्यवान्है ॥ और पुरुनाम बहुतोंकाहै ॥ तिनबहुतशूरोंकूं जोजयकरेहै ताकानाम पुरुजित्है ॥ और कुंतीकेपिताकानाम कुंतिभोजहै ॥ और शिबिनामाराजाके कुलविषेजोउत्पन्नहोवै ताकानाम शैब्यहै ॥ तेतीनोराजे नरपुंगवहैं ॥ सर्वनरोंविषेजोश्रेष्ठहोवै ताकानामनरपुंगवहै ॥ ५ ॥ और युधानाम युद्धकाहै और मन्युनाम क्रोधकाहै ॥ युद्धविषेहैक्रोधकावेगजिसका ताकानाम युधामन्युहै ॥ यहयुधामन्यु पंचालदेशकाराजाहै ॥ सोयुधामन्यु विक्रांतहै ॥ विशेषकरिकैजाकेविषेपराक्रमरहेहै ताकानाम विक्रांतहै ॥ और ओजस्नाम बलकाहै उत्तमहैओजस्जिसका ताकानाम उत्तमौजाःहै ॥ सोउतमौजाःनामाराजाभी पंचालदेशकाराजाहै ॥ कैसाहैसोउत्तमौजाःनामाराजा वीर्यवान् है ॥ अथवा वीर्यवान् नरपुंगव विक्रांत यहतीनोविशेषण युयुधानादिकसर्वराजोंकेजानणे ॥ और सुभद्राकाजोपुत्र होवै ताकानाम सौभद्रहै ऐसाअभिमन्युहै ॥ और द्रोपदीकेजोप्रतिविंध्यादिकपंचपुत्रहैं ॥ तिनोंकानाम द्रौपदेयहै ॥ और (द्रौपदेयाश्च) यापदविषेस्थितजोचकारहै ताचकारकरिकै पुर्वउक्तराजावोतैंभिन्न पांड्यराजा घटोत्कच आदिकसर्वराजोंकाग्रहणकरणा ॥ और युधिष्ठिरादिकपंचपांडव अत्यंतप्रसिद्धहैं ॥ यातैं दुर्योधननैं तिनपंचपाडवोंकीगिणतीकरीनहीं ॥ अथवा (भीमार्जुनसमायुधि) यावचनकरिकै तादुर्योधननैं युयुधानादिकसर्वशूरवीरोंविषे भीमअर्जुनकीउपमादेईहै ॥ यातैं भीमार्जुन यहपद पांचोंपांडवोंका उपलक्षकहै ॥ इसप्रकार युयुधानराजातैं आदिलैके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

द्रोपदीकेपंचपुत्रोंपर्यंत कथनकरेजेसप्तदशराजे ॥ तिनोंतैंभिन्न दूसरेभीतिनोंकेसंबंधीशूरवीरबहुतहैं ॥ तेसर्वशूरवीर महारथीहैं ॥ रथी अथवा अर्धरथीइनोंविषेकोईहैनहीं ॥ ईहां (महारथाः) याशब्दकरिकै अतिरथीकाभीग्रहणकरणा ॥ तहां महारथी अतिरथी रथी अर्धरथी याच्यारोंका शास्त्रविषे याप्रकारकालक्षण कथनकर्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ एकोदशसहस्राणियोधयेद्यस्तुधन्विनां ॥ शस्त्रशास्त्रप्रवीणश्चमहारथइतिस्मृतः ॥ अमितान्योधयेद्यस्तुसंप्रोक्तोऽतिरथस्तुसः ॥ रथस्त्वेकेनयोयोद्धातद्न्युनोऽर्धरथःस्मृतः ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष एकलाहीं धनुषवालेदशसहस्रशूरवीरोंके साथि युद्धकरेहै तथा शस्त्रशास्त्रविषेअत्यंतकुशलहोवैहै तापुरुषकूं महारथीकहेहैं ॥ और जोपुरुष एकलाहीं असंख्यातशूरवीरोंकेसाथि युद्धकरेहै तथा शस्त्रशास्त्रविषेअत्यंतकुशलहोवैहै तापुरुषकूं अतिरथीकहेहैं ॥ और जोपुरुषएक शूरवीरकेसाथिहीं युद्धकरेहै ताकूं रथीकहेहैं ॥ और जोपुरुष तारथीतैंभी न्यूनबलवालाहोवैहै ताकूं अर्धरथीकहेहैं ॥ इति ॥ ६ ॥ ॥ शंका ॥ हेदुर्योधन इनपाडवोंकीसैनाविषे महान्शूरवीरोंकूंदेखिकै जोकदाचित् तुमारेकूं भय होताहोवै तौं इनपांडवोंकेसाथि शत्रुपणेकापरित्यागकरिकै तुम मित्रताकरो ॥ याप्रकारकारकेद्रोणाचार्यकेअभिप्राय कीआशंकाकरिकै सोदुर्योधन ताद्रोणाचार्यकेप्रति आपणीसैनाविषेस्थितशूरवीरोंकेनामोंकावर्णनकरेहै ॥

अस्माकंतुविशिष्टायेतान्निबोधद्विजोत्तम ॥
नायकाममसैन्यस्यसंज्ञार्थंतान्ब्रवीमिते ॥ ७ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अस्माकं । तु । विशिष्टाः ये । तान् । निबोध । द्विजोत्तम । नायकाः । मम । सैन्यस्य । संज्ञार्थं । तान् ब्रवीमि । ते ॥ ७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेसर्वब्राह्मणोंविषेश्रेष्ठआचार्य हमसर्वोंकेमध्यविषे जे श्रेष्ठयोद्धाहै तिनयोद्धावोंकूं आप निश्चयक रो मेरी सैनाके जेप्रधाननायकहैं तिनोंविषे यत्किंचित नायकोंकूं नामतैंउच्चारणकरिकै मैं तुमारेतांई कथनकरताहूं ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेआचार्य ॥ हमारीसैनाविषे जेयोद्धा विद्याबल पौरुष कुल शील इत्यादिकगुणोंकरिकै श्रेष्ठहैं ॥ तथा जेयोद्धा हमारीसैनाकूं तिसतिसस्थाननिषेलेजाणेहारे मुख्यनायकहैं ॥ तेसर्वयोद्धा यद्यपि असंख्यातहैं ॥ तथापि तिनसर्वयोद्धावोंकूं यत्किंचितयोद्धावोंकूं नामतैंउच्चारणकरिकै तिनोंतैंभिन्नसर्वयोद्धावोंकेलखावणेवासतै मैं आपके प्रति कथनकरताहूं ॥ तेसर्वयोद्धा आपकूं पुर्वहींज्ञातहैं ॥ यातैं किसीअज्ञातयोद्धावोंकेजनावणेवासतै मैं आपकेप्रति तिनयोद्धावोंकेनाम कथनकरतानहीं ॥ किंतु पुर्वहींज्ञातयोद्धावोंके स्मरणकराणेवासतै मैं तिनोंकेनामोंकूं कथनकर ताहूं ॥ ईहां (अस्माकंतु) यापदविषेस्थितजो तु शब्दहै ॥ ता तुशब्दकरिकै तादुर्योधननैं अंतरउत्पन्नहूएभयकाबा हरि नहींप्रगटकरणा याप्रकारकी आपणीढीठता बोधनकरी ॥ और (हेद्विजोत्तम) याविशेषणकेकहणेकरिकै सोदू र्योधन ताद्रोणाचार्यकीस्तुतिकरताहूआ आपणेयुद्धरूपकार्यविषे ताद्रोणाचार्यकीप्रवृत्तिकूं संपादनकरताभया ॥ और ताद्रोणाचार्यकेद्वेषपक्षविषेतौं सोदुर्योधन (हेद्विजोत्तम) याविशेषणकरिकै यहअर्थ बोधनकरताभया ॥ तूं ब्राह्मणहो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

णेतैं युद्धविषेकुशलहैनहीं ॥ यातैं जोकदाचित् तूं हमारेतैंविमुखहोइकै पांडवोंकेपक्षविषेभीजावैगा ॥ तौंभी भीष्मादिकश्रेष्ठक्षत्रिय हमारेपक्षविषे विद्यमानहैं ॥ यातैं तुमारेतैंविना हमारी किंचित्मात्रभी हानिहोवैंगीनहीं ॥ और (संज्ञार्थंतान्ब्रवीमिते) याकहणेकरिकै तादुर्योधननैं यहअर्थ सूचनकरया ॥ आपणेप्रियशिष्यपांडवोंकीसैनाकूं देखिकै हर्षकरिकैव्याकुलहूआहैमनजिसका ऐसाजोतूंहैं ॥ तिसतुमारेकूं आपणेभीष्मादिकशूरपुरुषोंकी विस्मृतिमतहोवै ॥ याकारणतैं आपणीसैनाके भीष्मादिकशूरपुरुषोंकीस्मृतिकरावणेवासतै मैं यत्किंचित् तिनशूरवीरोंकेनाम तुमारेप्रति कथनकरताहूं इति ॥ ७ ॥ ❋ अब सोदुर्योधनराजा ताद्रोणाचार्यकेसमीप आपणीसैनाविषेस्थितशूरवीरोंकी गिणतिकरेहै ॥

भवानभीष्मश्चकर्णश्चकृपश्चसमितिंजयः ॥
अश्वत्थामाविकर्णश्चसौमदत्तिर्जयद्रथः ॥ ८ ॥

भवान् । भीष्मः । च । कर्णः । च । कृपः । च । समितिंजयः । अश्वत्थामा । विकर्णः । च । सौमदत्तिः । जयद्रथः ॥ ८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

आपद्रोणाचार्य तथा भीष्मपितामह तथा कर्ण तथा संग्रामकूंजयकरणेहारा कृपाचार्य तथा अश्वत्थामा तथा विकर्ण तथा सौमदत्ति तथा जयद्रथ ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेआचार्य हमारीसैनाविषे प्रथमतौं आप महान्शूरवीरहो ॥ तथा भीष्मपितामहहै ॥ तथा कर्णहै ॥ तथा संग्रामकूंजयकरणेहारा कृपाचार्यहै ॥ शंका ॥ द्रोणाचार्यकापुत्रजोअश्वत्थामाहै तिसकी कर्णतैंअनंतर गिणतिकरणेतैं द्रोणाचार्यकूं मनविषेक्रोधहूआहोवैंगा ॥ याप्रकार ताद्रोणाचार्यकेक्रोधकीशंकाकरिकै ताक्रोधकीनिवृत्तिकरणेवासतै सोदुर्योधन यहअश्वत्थामादिकच्यारितौं हमारीसैनाविषे सर्वशूरवीरोतैंश्रेष्ठनायकहैं याप्रकारकेअभिप्रायतैं तिनच्यारोंकीगिणतीकरेहै (अश्वत्थामाइति) हेआचार्य आपकापुत्र जोअश्वत्थामाहै तथा हमाराछोटाभ्राता जोविकर्णहै ॥ तथा सोमदत्तराजाकापुत्र जो सौमदत्तिहै ॥ जाकूं भूरिश्रवाः कहेहैं ॥ तथासिंधुदेशकाराजाजोजयद्रथहै ॥ यहच्यारों महानशूरवीरहैं ॥ ईहां जैसे दुर्योधननैं भीष्मादिकोंकीअपेक्षाकरिकै द्रोणाचार्यकीजोप्रथमगिणतिकरीहै ॥ सो ता द्रोणाचार्यकेप्रसन्नताकरणेवासतैकरीहै ॥ तैसे विकर्णादिकोंकोअपेक्षाकरिकै जोद्रोणाचार्यकेपुत्रअश्वत्थामाकी प्रथम गिणतिकरीहै ॥ सोभी ताद्रोणाचार्यकीप्रसन्नताकरणेवासतै करीहै ॥ यालोकविषे आपणीउत्कृष्टताकूं तथाआपणे पुत्रकीउत्कृष्टताकूं श्रवणकरिकै सर्वलोक प्रसन्नहोवैहैं ॥ ईहां (जयद्रथः) यापदकेस्थानविषे किसीपुस्तकमैं (तथैवच) यहपाठभीहोवैहै इति ॥ ८ ॥ ॥ शंका ॥ हेदुर्योधन तुमारीसैनाविषे क्या इतनैंहींशूरवीरहैं ॥ ऐसीद्रोणाचार्यकीशंकाकेहूए ॥ सोदुर्योधन हमारीसैनाविषेदूसरेभीबहुतशूरवीरहैं ॥ याप्रकारकाउत्तर कथनकरेहै ॥

॥१२॥

अन्येचबहवःशूरामदर्थेत्यक्तजीविताः॥ नानाशस्त्रप्रहरणाःसर्वेयुद्धविशारदाः॥९॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अन्ये । च । बहवः । शूराः । मदर्थे । त्यक्तजीविताः । नानाशस्त्रप्रहरणाः । सर्वे । युद्धविशारदाः ॥ ९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेआचार्य हमारीसैनाविषे पूर्वउक्तशूरवीरोंतैं दूसरे भी बहुत शूरवीरहैं कैसेहैंतेशूरवीर मेरेजयरूपप्रयोजनवासतै आपणेजीवनेकीआशाकूंभीजिनोंनैंपरित्यागकरयाहै तथानानाप्रकारकेशस्त्रहैंयुद्धकेसाधनजिनोंके तथा तेसर्वशुरवीर युद्धविषेबहुतकुशलहैं ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेआचार्य केवलपुर्वउक्त भीष्मादिकहीं हमारीसैनाविषेनहींहैं ॥ किंतु तिनभीष्मादिकोंतैंभिन्न दूसरेभी शल्य कृतवर्मा भगदत्त इत्यादिकबहुतशूरवीरहैं ॥ कैसेहैंतेशूरवीर ॥ आपणेप्राणोंका परित्यागकरिकैभी यादुर्योधनकाजय हम संपादनकरैंगे याप्रकारकेनिश्चयकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा शूल चक्र गदा खडग इत्यादिकनानाप्रकारकेशस्त्रहैंयुद्धकेसाधनजिनोंके ॥ याकारणतैंहीं तेसर्वशूरवीर युद्धविषेबहुतकुशलहैं ॥ ईहां (शूराः) इत्यादिकविशेषणोंकरिकै तादुर्योधननैं आपणीसैनाविषे पांडवोंकीसैनातैं बाहुल्यता कथनकरी ॥ तथा आपणेविषे तासैनाकीअनन्यभक्ति कथनकरी ॥ तथा आपणीसैनाकीशौर्यता तथायुद्धविषेअत्यंतउद्यम तथाअत्यंतकुशलता कथनकरी ॥ ऐसीहमारीसैना इनपांडवोंकीसैनातैं अधिकबलवानहै इति ॥ ९ ॥ * ॥ शंका ॥ हेदुर्योधन जैसे तुमारीसैनाविषे शस्त्रअस्त्रविद्याविषेकुशल भीष्मादिकअनेकशूरवीरहैं ॥ तैसे पांडवोंकीसैनाविषेभी शस्त्रअस्त्रविद्याविषेकुशल अनेक शूरवीरहैं ॥ यातैं तेदोनोंसैना समानहींहैं ॥ ऐसीद्रोणाचार्यकीशंकाकेहूए ॥ सोदुर्योधनराजा दूसरेप्रकारतैंभी तिन पांडवोंकीसैनातैं आपणीसैनाधिकता वर्णनकरेहै ॥ ॥ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपर्याप्तंतदस्माकंबलंभीष्माभिरक्षितं ॥ पर्याप्तंत्विदमेतेषांबलंभीमाभिरक्षितं॥ १०॥

अपर्याप्तं । तत् । अस्माकं । बलं । भीष्माभिरक्षितं । पर्याप्तं । तु । इदं । एतेषां । बलं । भीमाभिरक्षितं ॥ १०॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेआचार्य हमारी सो सेना अनंतहै तथाभीष्मंकरिकैसर्वओरतैंरक्षणकरीहै और यापांडवोंकी यह सैनातौं न्यूनहै तथाभोमंकरिकैरक्षणकरीहै ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेआचार्य यहहमारीसैना एकादशअक्षोहिणीसंख्यावालीहै ॥ तथा सर्वलोकविषेप्रसिद्धहैमहिमाजिसका तथाअत्यंतसूक्ष्महेबुद्धिजिसकी ऐसाजोभीष्महै ताभीष्मकरिकै साहमारीसैना सर्वओरतैंरक्षणकरीहै ॥ यातैं साहमारीसैना तिनपांडवोंकीसैनातैंप्रबलहै और यहपांडवोंकीसैनातौं सप्तअक्षौहिणीसंख्यावालीहोणेतैं हमारीसैनातैंन्यून है ॥ तथा अत्यंतचपलबुद्धिवाले दुर्बलभीमसेनकरिकै सर्वओरतैंरक्षणकरीहूईहै ॥ यातैं यहपांडवोंकीसेना हमारीसैनातैंअत्यंतदुर्बलहै ॥ अथवा अपर्याप्तं तत् अस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितं पर्याप्तं तु इदं एतेषां बलं भीमाभिरक्षितं ॥ यादशमेश्लोककेपदोंका याप्रकारतैं योजनाकरणी ॥ सो पांडवोंकीसैना हमारेपराजयकरणेवासतै समर्थनहीं है ॥ जिसवासतै सापांडवोंकीसैना भीष्माभिरक्षितहै अर्थात् महानपराक्रमवाला तथासूक्ष्मबुद्धिवाला जोभीष्महै ॥ सोभीष्मपितामह हमोनैं स्थापनकरयाहैजिसपांडवोंकीसैनाकेनिवृत्तकरणेवासतै ॥ याकारणतैं सापांडवोंकीसैना भीष्माभिरक्षितहै ॥ और यह हमारीसैनातौं इनपांडवोंके पराजयकरणेविषेसमर्थहै ॥ जिसकारणतैं यहहमारीसैना भी

34

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

माभिरक्षितहै ॥ अर्थात् अत्यंतदुर्बलहैहृदयजिसका तथाअत्यंतस्थूलहैबुद्धिजिसकी ऐसाजोभीमसेनह ॥ सोभीमसेन इ
नोंनें स्थापनकरयाहैजिसहमारीसैंनाकेनिवृत्तकरणेवासतै ॥ याकारणतैं यहहमारीसैना भीमाभिरक्षितहै ॥ यातैंऐसीदुर्ब
लपांडवोंकीसैनातैं हमारेकूं किंचित्मात्रभी भयहैनहीं ॥ ईहां प्रथमव्याख्यानविषे भीष्मेणअभिरक्षितं भीष्माभिरक्षितं
तथा भीमेनअभिरक्षितं भिमाभिरक्षितं यातृतीयातत्पुरुषसमासकरिकै भीष्माभिरक्षितं यहदुर्योधनकीसैनाकाविशे
षणहै ॥ और भीमाभिरक्षितं यह पांडवोंकीसैनाकाविशेषणहै ॥ और दूसरेव्याख्यानविषेतौं भीष्मः अभिरक्षितो
यस्मै तत् भीष्माभिरक्षितं तथा भीमःअभिरक्षितोयस्मै तत् भीमाभिरक्षितं याप्रकारकेबहुव्रीहिसमासकरिकै भीष्मा
भिरक्षितं यह पांडवोंकीसैनाकाविशेषणहै ॥ और भीमाभिरक्षितं यह दुर्योधनकीसैनाकाविशेषणहै इति ॥ १० ॥ *

॥ शंका ॥ हेदुर्योधन यापांडवोंकेसैनाकोअपेक्षाकरिकै आपणीसैनाकूंप्रबलजानिकै जोतूं भयतैंरहितहैं ॥ तौं
किसवासतै तूं बहुतकल्पनाकरताहैं ॥ ऐसीआशंकाकेहूए ॥ सोदुर्योधनराजा कहेहै ॥

अयनेषुचसर्वेषुयथाभागमवस्थिताः॥ भीष्ममेवाभिरक्षंतुभवंतःसर्वएवहि॥ ११॥

अयनेषु । च । सर्वेषु । यथाभागं । अवस्थिताः । भीष्मं । एव । अभिरक्षंतु । भवंतः सर्वे । एव । हि । ॥ ११ ॥
इतिपदच्छेदः ॥

जिसकारणतैं द्रोणाचार्यादिकतुम सर्वयोद्धा व्यूहरचनायुक्तसैनाकेसर्व प्रवेशमार्गोंविषे आपणे
आपणेस्थानविषे स्थितहूए यांभीष्मपितामहकूं ही सर्वओरतैंरक्षणकरो ॥ ११ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका (अयनेषुच) यापदविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोचकार पूर्वकर्त्तव्यकीअपेक्षाकरिकैकर्त्तव्यविशेषकाबोधकहै ॥ युद्धकेप्रारंभकालविषे योद्धापुरुषोंके यथायोग्य युद्धभूमिविषे पूर्वउत्तरादिकदिशावोंकेविभागकरिकै जोस्थितिकेस्थान नियमकरयेजावैहैं तिनस्थानोंकानाम अयनहै ॥ और सर्वसैनाकापतितौं तासर्वसैनाकूंआपणेआश्रितकरिकै तासर्वसैनाकेमध्यविषेस्थितहोवैहै ॥ सोइसहमारोसैनाकापति भीष्मपितामहहै ॥ सोभीष्मपितामह युद्धकेअत्यंतअभिनिवेशतैं आपणेसन्मुखदेशकीतरफ तथाआपणेष्टष्ठदेशकीतरफ तथाआपणेवामभागदक्षिणभागकीतरफ देखतानहीं ॥ यातैं द्रोणाचार्यादिकतुमसर्वयोद्धा आपणेभिन्नभिन्नरणभूमिकूंनपरित्यागकरिकै आपणेआपणेयथायोग्यस्थानविषेस्थितहूए याभीष्मपितामहकाहीं सर्वओरतैंरक्षणकरो ॥ जिसकरिके कोईपरसैनाकाशत्रु किसीमार्गद्वाराआइकै याभीष्मपितामहकाहनन नहींकरै ॥ इसप्रकार सावधानहोइकै रक्षणकरो ॥ जबी तुमसर्वयोद्धा याभीष्मपितामहकारक्षणकरौंगे ॥ तबी ताभीष्मपितामहकीकृपातैं हमसर्वोंकारक्षणहोवैंगा इति ॥ ११ ॥* ॥ शंका ॥ हेसंजय याप्रकारकेवचन जबी तादुर्योधनराजानैं कथनकरये ॥ तिसतैंअनंतर तेभीष्मादिकयोद्धा क्याकार्यकरतेभये ॥ याप्रकारकी ताधृतराष्ट्रकीशंकाकेहूए ॥ कोईहमारीस्तुतिकरो अथवा कोईहमारीनिंदाकरो इसदुर्योधनराजाकेवासतैं यहहमारादेह अवश्यकरिकैपतनहोवैंगा याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै सोभीष्मपितामह तादुर्योधनकेचित्तविषेहर्षउत्पन्नकरताहूआ सिंहनादकूं तथाशंखकेशब्दकूं करताभया याप्रकारकाउत्तर सोसंजय ताधृतरष्ट्रकेप्रतिकथनकरेहै ॥ ॥१४॥

तस्यसंजनयन्हर्षंकुरुवृद्धःपितामहः॥ सिंहनादंविनद्योच्चैःशंखंदध्मौप्रतापवान्॥ १२ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तस्य । संजनयन् । हर्षं । कुरुवृद्धः । पितामह । सिंहनादं । विनद्य । उच्चैः । शंखं । दध्मौ । प्रतापवान्॥१२॥इतिपदच्छेदः

हेधृतराष्ट्र महानप्रतापवाला तथाकुरुवंशविषेवृद्ध ऐसाभीष्मपितामह तिसदुर्योधनराजाके हर्ष कूं उत्पन्नकरताहूआ सिंहनादकूं करिकै उच्चैस्वरतैं शंखकूं बजावताभया ॥ १२॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र ॥ पांडवोंकीसैनाकूंदेखिकरिकै उत्पन्नहूआहैभयजिसकूं ॥ तथा ताभयकीनिवृत्तिकरणेवासतै कपटकरिकैताद्रोणाचार्यकेशरणकूंप्राप्तहूआ ॥ तथा इसकालविषेभी यहदुर्योधन हमारेसाथिकपटकरेहै याप्रकारकेअसंतोषतैं वाणीमात्रकरिकैभी जिसका आचार्यनैं आदरनहींकरया॥तथा ताद्रोणाचार्यकीउपेक्षाकूंजानिकै (अयनेषुचसर्वेषु) इत्यादिकवचनोंकरिकै भीष्मपितामहकीस्तुतिकरीहैजिसनैं ॥ ऐसाजोदुर्योधनराजाहै ॥ तादुर्योधनकेभयकी निवृत्तिकरणेहारा तथातादुर्योधनराजाकेजयकासूचनकरणेहारा ऐसाजोबुद्धिविषेस्थित उल्लासरूपहर्षहै ताहर्षकूंउत्पन्नकरताहूआ सोभीष्मपितामह महान्सिंहनादकूंकरिकै ऊच्चैस्वरतैं शंखकूंबजावताभया ॥ ईहां संजयनैं भीष्मके कुरुवृद्ध पितामह प्रतापवान् यहतीनविशेषणदीयेहैं॥ तहां (कुरुवृद्धः) याप्रथमविशेषणकरिकैतौ ताभीष्मविषे द्रोणाचार्यके तथादुर्योधनराजाके अभिप्रायकाज्ञान सूचनकरया॥ जिसवासतै लोकविषे वृद्धपुरुषोंविषेहीं पुत्रादिकोंकेअभिप्रायकाज्ञानहोवैहै ॥ और (पितामहः) याद्वितीयविशेषणकरिकै जैसे द्रोणाचार्यनैं यादुर्योधनादिकोंकीउपेक्षाकरीहै ॥ तैसे हमारेकूं इनोंकीउपेक्षाकरणीयोग्यनहींहै याप्रकारका अभिप्राय सूचनकरया ॥ और तीसरे (प्रतापवान्) याविशेषणकरिकै यहअर्थ सूचनकरया ॥ ऊच्चैःस्वरतैंसिंहनादपूर्वक जोभीष्मनैं शंखकूंबजायाहै ॥ सोभीष्मकेशंखकाश

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ब्द पांडवोंकेसैनाकूं अवश्यकरिकैभयकी प्राप्तिकरैंगा इति ॥ १२ ॥ * ॥ अब तासैनापतिभीष्मकीप्रवृत्तितैं

अनंतर जिसप्रकार सर्वयोद्धावोंकीप्रवृत्तिहोतीभई ताकूं संजय निरूपणकरेहै ॥

ततःशंखाश्चभेर्यश्चपणवानकगोमुखाः॥सहसैवाभ्यहन्यंतसशब्दस्तुमुलोभवत्॥१३

तंतः। शंखाः। च। भेर्यः। च। पणवानकगोमुखाः। सहसा। एव। अभ्यहन्यंत। सः। शब्दः। तुमुलः। अभवत् १३ इतिप०

हेधृतराष्ट्र तासैनापतिभीष्मकीप्रवृत्तितैंअनंतर तादुर्योधनकीसैनाविषे अनेकशंख तथा अनेकभेरी तथा अनेकपणव तथा अनेककनक तथाअनेकगोमुख शीघ्र हीं बजतेभये सो शंखादिकों काशब्द महान् होताभया ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र तासैनापतिभीष्मकेशंखकेशब्दकूंश्रवणकरिकै उत्पन्नहूआहैयुद्धकरणेकाउत्साहजिनोंविषे ऐसे जेद्रोणाचार्यादिकयोद्धाहैं ॥ तेसर्वयोद्धा आपणेआपणेशंखोंकूं शीघ्रहीं बजावतेभये ॥ तथा दूसरेसैनाचरपुरुष भेरी पणव अनक गोमुख इत्यादिकवादित्रोंकूं शीघ्रहीं बजावतेभये ॥ तिनशंखभेरीआदिकोंका सोध्वनिरूपशब्द महान्हो ताभया ॥ तामहान्शब्दकूंश्रवणकरिकैभी तिनपांडवोंकूं किंचित्मात्रभीक्षोभ नहींहोताभया ॥ ईहां पणवनाम मृदंगकाहै ॥ अनकनाम नगारेकाहै ॥ गोमुखनाम रणसिंहाकाहै इति ॥ १३ ॥ * ॥ इसप्रकार दुर्योधनराजा कीसैनाकेप्रवृत्तिकूंकथनकरिकै अब पांडवोंकीसैनाकेप्रवृत्तिकूं सोसंजय कथनकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ततःश्वेतैर्हयैर्युक्तेमहतिस्यंदनेस्थितौ ॥ माधवःपांडवश्चैवदिव्यौशंखौप्रदध्मतुः॥ १४॥

ततः। श्वेतैः। हयैः। युक्ते। महति। स्यंदने। स्थितौ। माधवः। पाण्डवः। च। एव। दिव्यौ। शंखौ। प्रदध्मतु॥४॥इतिप०

हेधृतराष्ट्र भीष्मादिकोंकेशंखादिकोंकेशब्दश्रवणतैंअनंतर श्वेतवर्णवाले अश्वोंकरिकै युक्त तथामहान्ऐसेर थविषे स्थित जोश्रीकृष्णभगवानहै तथा अर्जुनहै तेदोनों दिव्य शंखोंकूं बजावतेभये॥ १४॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ याश्लोककेअक्षरोंकाअर्थ स्पष्टहींहै ॥ ताकाभावार्थ यहहै ॥ यद्यपि पांडवोंकीसैनाविषे अर्जुनकीन्यांई तथाभगवान्कीन्यांई दूसरेभीसर्वयोद्धा आपणेआपणेरथोंविषेहीं स्थितथे ॥ यातैं केवल अर्जुनका तथाकृष्णभगवान्काहीं रथस्थत्वरूपविशेषण संभवैनहीं ॥ तथापि (ततःश्वेतैर्हयैर्युक्ते) इत्यादिकविशेषणयुक्तरथविषे जोअर्जुनकी तथाभगवान्की स्थितिकथनकरीहै ॥ सोदूसरेथोंतैं ताअर्जुनकेरथकी उत्कृष्टतावोधनकरणेवासतै कथनकरीहै ॥ यातैं अग्निदेवतानैं अर्जुनकेतांई दीयाजोरथहै ॥ सोरथ किसीभीशत्रुकरिकै चलायमानहोइसकैनहीं ॥ ऐसेमहान्रथविषेस्थित जोअर्जुन तथाकृष्णभगवान्है ॥ तेदोनों किसीभीशत्रुकरिकै जीत्येजावैनहीं इति॥ १४॥

अब सोअर्जुन तथाश्रीभगवान् जिनशंखोंकूंबजावतेभयेहैं तिनशंखोंकानाम तथाभीमादिकोंकेशंखोंकानाम दोश्लोकोंकरिकैवर्णनकरेहैं ॥

पांचजन्यंहृषीकेशोदेवदत्तंधनंजयः॥ पौंड्रंदध्मौमहाशंखंभीमकर्मावृकोदरः॥ १५॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पांचजन्यं । हृषीकेशः । देवदत्तं । धनंजयः । पौंड्रं । दध्मौ । महाशंखं । भीमकर्मा । वृकोदरः ॥ १५ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

श्रीकृष्णभगवान् पांचजन्यनामाशंखकूं बजावताभया तथाअर्जुन देवदत्तनामाशंखकूं बजावताभया और लोकोंकूंभयकीप्राप्तिकरणेहारेहैंकर्मजिसके तथावृककीन्यांईहैउदरजिसका ऐसाभीमसैन पौंड्रनामा महा शंखकूं बजावताभया ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ पंचजनोंतैंजोउत्पन्नहोवै ताकूंपांचजन्यकहेहैं ॥ तापांचजन्यनामाशंखकूं हृषीकेश बजावताभया ॥ और देवतावोंनैं दीयाहूआजोशंखहै ताकानाम देवदत्तहै ॥ तादेवदत्तनामाशंखकूं धनंजय बजावताभया ॥ ईहां संजयनैं श्रीकृष्णभगवानूकूं जोहृषीकेशनामकरिकैकथनकरयाहै ॥ ताका यहअभिप्रायहै ॥ हृषीकेश यानामविषे हृषीक ईश यहदोपदहैं ॥ तहां हृषीकनाम इंद्रियोंकाहै ॥ ईशनाम प्रेरककाहै ॥ तेदोनोंपद मिलिकै सर्वइंद्रियोंकूं आपणेआप णेकार्यविषेप्रवृत्तकरणेहारे अंतर्यामीईश्वरकूं कथनकरेहैं ॥ ऐसा सर्वकाअंतर्यामीकृष्णभगवान् जिनपांडवोंकीसहा यताविषेहै ॥ तिनपांडवोंकूं तुमारेदुर्योधनादिकपुत्र जयकरिकैगेनहीं ॥ और तासंजयनैं अर्जुनकूं जोधनंजयनाम करिकैकथनकरयाहै ॥ ताका यहअभिप्रायहै ॥ सर्वदिशावोंकेजयकालविषे सर्वराजावोंकूंजीतिकरिकै अर्जुन धनकूंले आवताभयाहै ॥ याकारणतैं ताअर्जुनकूं धनंजयकहेहैं ॥ ऐसामहानपराक्रमवालाअर्जुन तुमारेपुत्रोंतैं जीत्याजावैंगा नहीं ॥ और तासंजयनैं भीमसेनका जोवृकोदर यहविशेषणदीयाहै ॥ ताकायहअभिप्रायहै ॥ वृककीन्यांई ताभीम सेनविषे बहुतअन्नके पचावणेकासामर्थ्यहै यातैं सोभीमसेन अत्यंतबवानहै इति ॥ १५ ॥ ॥१६॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनंतविजयंराजाकुंतीपुत्रोयुधिष्ठिरः ॥ नकुलःसहदेवश्चसुघोषमणिपुष्पकौ॥ १६॥

अँनंतविजयं । राँजा । कूंतीपुँत्रः । युँधिष्ठिरः । नँकूलः । सँहदेवः । चँ । सुँघोषमणिपुष्पकौ॥ १६॥ इतिप० ॥
कुंतीकापुत्र राँजा युँधिष्ठिर अँनंतविजयनामाशंखकूं बजावताभया और नँकुल तँथा सँहदेव यहदोनों यथाक्रमतैं सुँघोष मणिपुष्पक यादोनोंशंखोंकूं बजावतेभये ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ नाशतैंरहित विजय प्राप्तहोवैजिसतैं ताकानाम अनंतविजयहै ॥ ऐसेअनंतविजयनामाशंखकूं कुंतिकापुत्र राजायुधिष्ठिर बजावताभया ॥ ईहां कुंतीमातानैं महान्तपकरिकै धर्मराजाकाआराधनकर्याथा ॥ ताधर्मराजातैं कुंतीकूं युधिष्ठिरपुत्रकीप्राप्तिभईथी ॥ यातैं यहयुधिष्ठिरराजा महाबलवान्है ॥ याप्रकार तायुधिष्ठिरकेप्रभावकाबोधन करणेवासतै संजयनैं तायुधिष्ठिरका कुंतीपुत्र यहविशेषणदीयाहै ॥ और सो युधिष्ठिर राजसूययज्ञकाकरताहै ॥ यातैं राजाशब्दकीमुख्यअर्थता इसयुधिष्ठिरविषेहींघटेहै ॥ याप्रकारकेअर्थकाबोधनकरणेवासतै संजयनैं तायुधिष्ठिरका राजायहविशेषणदीयाहै ॥ और युद्धविषे जयरूपफलकाभागीहूआ जोस्थितहोवै ताकूं युधिष्ठिरकहेहैं ॥ तायुधिष्ठिरपदकरिकै संजयनैं यहअर्थसुचनकर्या ॥ यासंग्रामविषे जयरूपफलकाभागीहूआ यहयुधिष्ठिरहीं स्थितहोवैंगा ॥ ताकेप्रतिपक्षी दुर्योधनादिक ताजयरूपफलकेभागीहूए यासंग्रामविषेस्थितहोवैंगेनहीं इति ॥ ईहां दोश्लोकों करिकै पांचजन्य देवदत्त पौंड्र अनंतविजय सुघोष मणिपुष्पक यहषट्शंखोंकेनाम कथनकर्ये ॥ ताकरिकै संजयनैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यहअर्थबोधनकरया ॥ यापांडवोंकीसैनाविषे आपणेआपणेनामोंकरिकैप्रसिद्ध इतनेंशंखहैं ॥ और दुर्योधनराजाकीसैनाविषेतौं आपणेनामकरिकैप्रसिद्ध एकभीशंखनहींहै ॥ यातैं यहपांडवोंकीसैना तुमारेदुर्योधनादिकपुत्रोंकीसैनातैं अत्यंतप्रबलहै इति ॥ १६ ॥ ※ ॥ अब धृतराष्ट्रकूं जाआपणेपुत्रोंकेजयकीआशाहै ॥ ताआशाकेनिवृत्तकरणे वासतै सोसंजय तापांडवोंकेपक्षविषेवर्त्तमान दूसरेराजावोंकीएकसंमतिकूं दोश्लोकोंकरिकैकथनकरेहै ॥

42

काश्यश्चपरमेष्वासःशिखंडीचमहारथः॥ धृष्टद्युम्नोविराटश्चसात्य
किश्चापराजितः ॥ १७ ॥ द्रुपदोद्रौपदेयाश्चसर्वशःपृथिवीपते ॥
सौभद्रश्चमहाबाहुःशंखान्दध्मुःपृथक्पृथक् ॥ १८ ॥

काश्यः। च ।परमेष्वासः। शिखंडी । च। महारथः। धृष्टद्युम्नः। विराटः। च । सात्यकिः । च। अपराजितः ॥१७॥ द्रुपदः। द्रौपदेयाः। च सर्वशः। पृथिवीपते। सौभद्रः। च। महाबाहुः। शंखान्। दध्मुः। पृथक् पृथक् ॥१८॥ इतिप० हेपृथिवीकापतिधृतराष्ट्र महानधनुषवाला जोकाशीकाराजाहै तथा महारथो जोशिखंडीहै तथाधृष्टद्युम्नजोहै तथा विराटराजाजोहै तथा शत्रुवोंकरिकैनहींजीत्याहूआ जोसात्यकिराजाहै ॥ १७॥ तथाद्रुपद राजाजोहै तथा द्रौपदीकेजेपंचपुत्रहैं तथा महान्बाहुवाला जोसुभद्राकापुत्रहैं यहसर्वयोद्धा भिन्न भिन्न अपणेआपणेशंखोंकूं बजावतेभये ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र श्रीकृष्णभगवान्सहित अर्जुनादिकपंचपांडवोंकीप्रवृत्तिकूंदेखिकरिकै तिनपांडवोंकेपक्षपाति का
शीराजा तथाशिखंडी तथाधृष्टद्युम्न तथाविराटराजा तथासात्यकिराजा तथाद्रुपदराजा तथाद्रौपदीकेप्रतिविंध्यादि
कपंचपुत्र तथासुभद्राकापुत्रअभिमन्यु यहसर्वयोद्धा भिन्नभिन्नआपणेशंखोंकूं बजावतेभये ॥ ईहां मुखविषेस्थित श्म
श्रुरूपवालोंतैंरहितपणेकानामशिखंडहै ॥ सोशिखंड जिसविषेहोवै ताकानाम शिखंडीहै ॥ सोशिखंडी पंचालदेशका
राजाहै ॥ और धृष्टद्युम्न यानामविषे धृष्ट द्युम्न यहदोपदहैं॥ तहां शत्रुवोंकूंपीडाकरणेहारेकानाम धृष्टहै ॥ और द्यु
म्ननाम बलकाहै ॥ शत्रुवोंकूंपीडाकरणेहाराहैबलजिसका ताकूं धृष्टद्युम्नकहेहैं ॥ और सत्यकनामाराजाकाजोपुत्रहोवै
ताकानाम सात्यकिहै ॥ और जानुपर्यंत जिसकीबाहुविशालहोवैं ताकूं महाबाहु कहेहैं ॥ तहां (परमेष्वासः) यहवि
शेषण काशीराजाकाहै॥ और (महारथः) यहविशेषण शिखंडीराजाकाहै ॥ और (अपराजितः) यहविशेषण सा
त्यकिराजाकाहै ॥ और (महाबहुः) यहविशेषण सुभद्राकेपुत्रकाहै ॥ अथवा परमेष्वासः महारथः अपराजितः
महाबहुः यहच्यारोंविशेषण काशीराजातैंआदिलैके सर्वराजावोंकेजानणे इति ॥ १८ ॥ ॥ ताअर्जुनादिकपां
डवोंके शंखोंकेशब्दकूंश्रवणकरिकै तिनदुर्योधनादिकोंकी किसप्रकारकीस्थितिहोतीभई ॥ याप्रकारको धृतराष्ट्रकी
शंकाकेहूए संजय कहेहै ॥

सघोषोधार्त्तराष्ट्राणांहृदयानिव्यदारयत्॥नभश्चपृथिवींचैवतुमुलोव्यनुनादयन्॥ १९॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सः। घोषः। धार्त्तराष्ट्राणां। हृदयानि। व्यदारयत्। नभः। च। पृथिवीं। च। एव। तुमुलः। व्यनुनादयन्॥ १९॥इतिप०॥

सो महान् शंखोंकोंशब्द आंकाशकूं तथा पृथिवीकूं आंपणेप्रतिध्वनिरूपशब्दकरिकैपूर्णकरताहूआ धृतराष्ट्रकेपुत्रपौत्रादिकसंबंधीयोंके हृदयोंकूं विदारणकरताभया॥ १९॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र तुमारेदुर्योधनादिकोंकीसैनाविषेभी सोशंखादिकोंकाशब्द यद्यपि महान्होताभया ॥ तथापि सोशंखादिकोंकाशब्द तिनपांडवोंकूं किंचित्मात्रभी क्षोभकीप्राप्तिनहींकरताभया ॥ और पांडवोंकीसैनाविषेस्थित जे पांचजन्य देवदत्त पौंड्र इत्यादिकशंखहैं ॥ तिनशंखोंकेबजावणेतैं उत्पन्नभयाजोध्वनिरूपशब्दहै ॥ सोध्वनिरूप महान्शब्द आपणीप्रतिध्वनिरूपशब्दकरिकै आकाशकूं तथापृथिवीकूं तथापूर्वादिकदिशावोंकूं तथापर्वतकीगुहावों कूं पूर्णकरताहूआ तुमारेसंबंधीदुर्योधनादिकोंके तथासैनापतिभीष्मादिकोंके हृदयोंकूं भेदनकरताभया ॥ तात्पर्यय ह ॥ जैसे शस्त्रकरिकै हृदयदेशकेभेदनकीयेतैं पीडाहोवैहै ॥ तिसीप्रकारकीपीडाकूं सोशब्द उत्पन्नकरताभया ॥ ईहां (पृथिवींचैव) यामूलश्लोककेपदविषेस्थित जोचकारहै ॥ ताचकारकरिके पूर्वादिकसर्वदिशावोंका तथापर्वतकेगुहा वोंका ग्रहणकरयाहै ॥ (एव) यहशब्द श्लोककेपादपूर्णतावासतैहै इति ॥ १९ ॥ ॥ पूर्वश्लोकविषे धृतराष्ट्र केपुत्रपौत्रादिकसंबंधीयोंविषे भयकीप्राप्ति कथनकरी ॥ अब पांडवोंविषे तिनदुर्योधनादिकोंतैंविपरीत निर्भयता कानिरूपणकरेहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अथव्यवस्थितान्दृष्ट्वाधार्त्तराष्ट्रान्कपिध्वजः ॥ प्रवृत्तेशस्त्रसंपाते
धनुरुद्यम्यपांडवः॥२०॥ हृषीकेशंतदावाक्यमिदमाहमहीपते ॥

अथ । व्यवस्थितान् । दृष्ट्वा । धार्त्तराष्ट्रान् । कपिध्वजः । प्रवृत्ते । शस्त्रसंपाते । धनुः । उद्यम्य ।
पांडवः ॥ २० ॥ हृषीकेशं । तदा । वाक्यं । इदं । आह । महीपते ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेपृथिवीकेपतिधृतराष्ट्र ताभयकोउत्पत्तितैंअनंतरभी युद्धकेउद्यमकरिकैस्थित धृतराष्ट्रकेसंबंधीयोंकूं देखिं करिकै तिसकालविषे शस्त्रप्रहारके प्रवर्त्तमानहूए कपिध्वंज अर्जुन गांडीवनामाधनुषकूं हाथविषेउठाइके श्रीकृष्णभगवान्केप्रति यह वक्ष्यमाणवचन कहताभया ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र पांडवोंकेशंखोंकेमहानशब्दोंकूंश्रवणकरिकै तुमारेदुर्योधनादिकोंकेचित्तविषे उत्पन्नभयाजोभय है ॥ ताभयकरिकै यद्यपि तिनदुर्योधनादिकोंकूं तायुद्धतैंभागणाहीं प्राप्तभयाथा ॥ तथापि तेदुर्योधनादिक आपणे ढीठस्वभावतैं तायुद्धतैंनहींभागतेभये ॥ उलटा युद्धकेउद्यमकरिकैयुक्तहूए तारणभूमिविषेहीं स्थितहोतेभये ॥ ऐसे दुर्योधनादिकोंकूं नेत्रोंसैंदेखिकरिकै तांकालविषे सोकपिध्वजअर्जुन युद्धकरणेवासतै गांडीवनामाधनुषकूं आपणे हस्तविषेउठाइके आपणेसारथीहृषीकेशभगवान्केप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ ईहां सर्वलोकविषेप्रसिद्धहै पराक्रमजिसका ऐसाजोहनुमान्है ताकूं कपिकहेहैं ॥ सोहनुमानकपिहैध्वजाविषेजिसके ताकूंकपिध्वजकहेहैं ॥ ताक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पिध्वजविशेषणकेकहणेकरिकै संजयनैं यहअर्थ बोधनकरया ॥ जिसहनुमान्कीसहायताकरिकै श्रीरामचंद्रनैं रावणादिकसर्वअसुरोंकूंहननकरयाहै ॥ ऐसाहनुमान् जिसअर्जुनकीध्वजाविषेस्थितहै ॥ तिसअर्जुनकूं किसीभीयोद्धातैं भयहोवैंगानहीं ॥ और नेत्रादिकसर्वइंद्रियोंकाप्रवर्त्तकहोणेतै सर्वअंतःकरणकीवृत्तियोंकाजोज्ञाताहोवै ताकूंहृषीकेश कहेहैं ॥ ऐसेअंतर्यामीश्रीकृष्णभगवानकेप्रति सोअर्जुन याप्रकारकावचन कहताभया ॥ ताकृष्णभगवान्कीसंमतितैं विना सोअर्जुन तिसकालविषे स्वतंत्रहोइकै किंचित्मात्रभीकार्यकूं नहींकरताभया इहां ॥ (हेमहीपते) यासंबोधन करिकै संजयनैं धृतराष्ट्रकेप्रति यहअर्थ सूचनकरया ॥ यहअर्जुनादिकपांडव जिसजिसकार्यकाआरंभकरतेहैं ॥ सोप्रथम विचारकरिकैहींकरतेहैं ॥ विचारतैंविना किसीकार्यविषेभी प्रवृत्तहोतेनहीं ॥ यातैं यहपांडव राजनीतिविषे तथा धर्मविषे अत्यंतकुशलहैं ॥ और तुमोंनैं जोइनपांडवोंकाराज्यलीयाहै ॥ सो विचारकीयेतैंविनाहीं लीयाहै ॥ यातैं तुमारेविषे राजनीति तथाधर्म दोनोंनहींहैं ॥ यातैं तुमारा कदाचित्भी जयहोणेहारानहींहै ॥ किंतु नीतिधर्मवाले इन पांडवोंकाहीं जयहोवैंगा इति ॥ २० ॥ * ॥ अब अढाईश्लोककरिकै ताअर्जुनकेवचनका निरूपणकरेहैं ॥

अर्जुनउवाच ॥ सेनयोरुभयोर्मध्येरथंस्थापयमेऽच्युत ॥ २१ ॥

सेनयोः । उभयोः । मध्ये । रथं । स्थापय । मे । अच्युत ॥ २१ ॥ इतिपदच्छेदः

हेअच्युत दोनों सेनावोंके मध्यभागविषे मेरे रथकूं स्थापनकरो ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेश्रीकृष्णभगवान् यहजोहमारीसैनाहै ॥ तथाहमारेप्रतिपक्षीदुर्योधनादिकोंकीजोयहसैनाहै ॥ तिनदोनों सैनावोंकेमध्यदेशविषे याहमारेरथकूं आप स्थितकरो ॥ याप्रकारकोआज्ञा सोअर्जुन श्रीभगवान्केप्रति करताभ या ॥ इतनैंकहणेकरिकै यहअर्थ सूचनकरया ॥ परमेश्वरकेजे अनन्यभक्त हैं तिनभक्तोंकूं यालोकविषे कोईभीकार्य दुर्घटनहींहै ॥ जिसकारणतैं साक्षात्परमेश्वरभी तिनभक्तोंकेआज्ञाकूं अंगीकारकरेहै ॥ यातैं इनपांडवोंका निश्चयक रिकैजयहोवैंगा इति ॥ शंका ॥ हेअर्जुन यादोनोंसैनावोंकेमध्यविषे जोमैं तुमारेरथकूंस्तापनकरौंगा ॥ तौं यहदुर्यो धनादिकशत्रु हमारेकूं रथतैंनीचैगिडाइदेवैंगे ॥ याप्रकारकी श्रीकृष्णभगवान्कीशंकाकेहूए अर्जुनकहेहै (अच्यु तइति) हेभगवन् सर्वदेशविषे तथासर्वकालविषे तथासर्ववस्तुविषे जोनाशकूंनहींप्राप्तहोवैहै ताकूं अच्युत कहेहैं ॥ ऐसेअच्युतआपहो ॥ ऐसेआपकूं कौनपुरुष नीचैगिडावनेमैंसमर्थहै ॥ किंतु ऐसाकोईभीपुरुष समर्थनहींहै ॥ ईहां (हेअच्युत) यासंबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीकृष्णभगवान्विषे निर्विकारताबोधनकरी ॥ और निर्विकारविषे क्रोधादि कविकार संभवैनहीं ॥ यातैं मेरेरथकूं आप स्थापनकरो याप्रकारकीआज्ञाकरणेकरिकै श्रीभगवान्विषे संभावनाकरया जो अर्जुनऊपरिक्रोधहै ताक्रोधकूंभी अच्युतयासंबोधनकरिकै अर्जुननैं निवृत्तकरया इति ॥ २१ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन यादोनोंसैनाकेमध्यविषेतौं मैं तुमारेरथकूंलेजाताहूं ॥ परंतु तहां रथकेलेजाणेकरिकै तुमारा कौनप्रयो जन सिद्धहोवैंगा ॥ सोआपणाप्रयोजन तूं हमारेप्रति कथनकर ॥ जिसवासतैं प्रयोजनतैंविना मंदपुरुषोंकोभीप्रवृत्ति होवैनहीं ॥ तौं बुद्धिमानपुरुषोंकी प्रयोजनतैंविना किसप्रकारप्रवृत्तिहोवैंगी ॥ किंतु नहींहोवैंगी ॥ ऐसी श्रीकृष्णभ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गवान्कीशंकाकेहूए ॥ अर्जुन ताकाप्रयोजन कथनकरेहै ॥

यावदेतान्निरीक्षेहंयोद्धुकामानवस्थितान् ॥कैर्मयासहयोद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे ॥२२

यावत्। एतान्। निरीक्षे। अहं। योद्धुकामान्। अवस्थितान्।[10] कैः। मया। सह। योद्धव्यं। अस्मिन्। रणसमुद्यमे॥२२॥

हेभगवन् जितनैंदेशविषेस्थितहोइकै मैंअर्जुन युद्धकीकामनावाले तथारणभूमिविषेस्थित इनभीष्मादिक योद्धावोंकूं भलीप्रकारदेखौं तितनैंदेशविषेहमारेरथकूंलेजाइकैस्थितकरो ॥ इस युद्धरूपव्यापारविषे मैं नैं किनोंके[10] साथि युद्धकरणायोग्यहै॥ २२॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् हमारेसाथि युद्धकरणेकीहैकामनाजिनोंकूं ऐसेजेयुद्धभूमिविषेस्थित यहभीष्मद्रोणादिकवीरपुरुष हैं ॥ तिनभीष्मद्रोणादिकसर्वयोद्धावोंकूं जितनैंदेशविषेजाइकै मैं देखणेविषेसमर्थहोवौं॥ तितनैंदेशविषे याहमारेरथकूं आप स्थितकरो ॥ अथवा (यावत्) यहपद कालकावाचकहै ॥ अर्थात् जितनैं कालपर्यंत इनभीष्मादिकसर्वयोद्धावोंकूं मैंभलीप्रकारसैंदेखौं ॥ तितनैंकालपर्यंत याहमारेरथकूं दोनोंसैनावोंकेमध्यविषे आप स्थितकरोइति ॥ ईहां (योद्धुकामान्) याविशेषणकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकरया ॥ यहभीष्मद्रोणादिक केवलयुद्धकीहींकामनावालेहैं॥ यातैं हमारेसाथि कदाचित्भी यह मित्रभावकरैंगेनहीं॥ और (अवस्थितान्) याविशेषणकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकरया॥ हमारेभयकरिकै यहभीष्मद्रोणादिक यारणभूमितैं कदाचित्भी चलायमाननहींहोवैंगेइति ॥ शंका॥ हेअ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्जुन तूंतौं युद्धकेकरणेहाराहैं ॥ कोईयुद्धकेदेखणेहारा तूं नहींहैं ॥ यातैं भीष्मद्रोणादिकयोद्धावोंकेदेखणेकरिकै तुमा
रा कौनप्रयोजनसिद्धहोवैंगा ॥ ऐसी भगवान्कीशंकाकेहूए ॥ सोअर्जुन तिनोंकेदेखणेकाप्रयोजन कथनकरेहै ॥
(कैर्मयासहयोद्धव्यंइति) ईहां (सह) यापदका (कैः मया) यादोनोंपदोंकेसाथि संबंधसंभवैहै ॥ ताकरिकैयहअर्थ
सिद्धहोवैहै ॥ बांधवोंकाहीं परस्पर युद्धकाउद्यमहूआहैजिसविषे ऐसीजोयहरणभूमिहै ॥ तिसविषेस्थित जेयह ह
मारेप्रतिपक्षीभीष्मद्रोणादिकहैं ॥ तिनोंविषे किसयोद्धाकेसाथि हमारेकूं युद्धकरणायोग्यहै ॥ तथा तिनभीष्मद्रोणा
दिकसर्वयोद्धावोंविषे किसयोद्धाकूं हमारेसाथि युद्धकरणेयोग्यहै ॥ याप्रकारका एकमहानकौतुकहै ॥ ताकौतुककाज्ञा
नहीं यादोनोंसैनावोंकेमध्यविषे रथस्थितकरणेकाप्रयोजनहै इति ॥ २२ ॥ * ॥ शंका ॥ हेअर्जुन यहभीष्म
द्रोणादिकबांधवहीं युद्धकेसंकल्पकापरित्यागकरिकै तुमदोनोंका परस्पर मित्रभावकरावैंगे ॥ तूं युद्धकासंकल्प कि
सवासतैंकरताहैं ॥ ऐसी श्रीकृष्णभगवान्कीशंकाकेहूए ॥ सोअर्जुन कहेहै ॥

योत्स्यमानानवेक्षेहंयएतेऽत्रसमागताः॥धार्त्तराष्ट्रस्यदुर्बुद्धेर्युद्धेप्रियचिकीर्षवः॥२३॥

योत्स्यमानान्।अवेक्षे।अहं।ये एते अत्र।समागताः।धार्त्तराष्ट्रस्य।दुर्बुद्धेः।युद्धे।प्रियचिकीर्षवः॥२३इतिपद०॥
दुर्बुद्धिवाले धृतराष्ट्रकेपुत्र दुर्योधनकेयुद्धविषे प्रियकीइच्छाकरतेहूए जे यहभीष्मद्रोणादिक योंकुरुक्षेत्रभूमिवि
षे प्राप्तहूएहैं तिनयुद्धकीकामनावालेभीष्मद्रोणादिकयोद्धावोंकूं मैंअर्जुन भलीप्रकारदेखौं ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेभगवन् आपणीरक्षाकरणेहारेउपायकाअज्ञानरूपजादुर्बुद्धिहै ॥ तादुर्बुद्धिकरिकैयुक्त जोयह धृतराष्ट्रकापुत्रदुर्योधनहै ॥ तादुर्योधनकेकेवलयुद्धकरिकैहीं प्रियकीइच्छाकरतेहूएजेयहभीष्मद्रोणादिकयोद्धायाधर्मक्षेत्ररूपकुरुक्षेत्रविषे प्राप्तहूएहैं ॥ तिनयुद्धकीइच्छावान्भीष्मद्रोणादिकोंकूं जैसे मैं भलीप्रकारतैंदेखौं ॥ तैसे मेरेरथकूं आप स्थित करो ॥ ईहां (युद्धेप्रियचिकीर्षवः) याविशेषणकेकहणेकरिकै अर्जुननैं यहअर्थसूचनकरया ॥ यहभीष्मद्रोणादिकवृद्ध पुरुषभी केवलयुद्धकरिकैहीं यादुर्योधनकेहितकीइच्छाकरतेहैं ॥ तादुर्योधनके दुर्बुद्धिआदिकोंकोनिवृत्तिकरिकै यादुर्योधनकेहितकीइच्छाकरतेनहीं ॥ ऐसेभीष्मद्रोणादिकोंनै हमदोनोंकीमित्रता क्याकरावणीहैइति ॥ और (योत्स्यमानान्) याविशेषणकेकहणेकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सुचनकरया ॥ याभीष्मद्रोणादिकोंकूं केवल हमारेसाथि युद्धकरणेकीहींइच्छाहै ॥ कोईहमारेसाथिमित्रभावकरणेकीइनोंकूंइच्छाहैनहीं ॥ यातैं इनोंकेसाथि युद्धकरणेवासतै हमारेकूं प्रथम इनोंकादेखणाउचितहै इति ॥ २३ ॥ ※ ॥ शंका ॥ इसप्रकार अर्जुनकरिकैप्रेरणाकरयाहूआ सोश्रीकृष्ण भगवान् अहींसारूपपरमधर्मकूंआश्रयणकरिकै ताअर्जुनकूं अवश्यकरिकै तायुद्धतैंनिवृत्तकरैंगा ॥ याप्रकारके धृतराष्ट्रकेअभिप्रायकीशंकाकरिकै ॥ ताशंकाकेनिवृत्तकरणेकीइच्छावान् सोसंजय ताधृतराष्ट्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ याप्रकारकावचन वैशंपायन जनमेजयकेप्रति कथनकरेहै ॥

॥२१॥

संजयउवाच ॥ एवमुक्तोहृषीकेशोगुडाकेशेनभारत ॥ सेनयोरुभयोर्मध्येस्था

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पयित्वारथोत्तमं ॥ २४ ॥ भीष्मद्रोणप्रमुखतःसर्वेषांचमहीक्षितां ॥ उवाच पार्थपश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥ २५ ॥

एवं । उक्तः । हृषीकेशः । गुडाकेशेन । भारत । सेनयोः । उभयोः । मध्ये । स्थापयित्वा । रथोत्तमं ॥ २४ ॥ भीष्मद्रोणप्रमुखतः । सर्वेषां । च । महीक्षितां । उवाच । पार्थ । पश्य । एतान् । समवेतान् । कुरून् । इति॥२५॥इति० हेधृतराष्ट्र इसप्रकार गुडाकेशअर्जुनकरिकै कह्याहूआ हृषीकेशभगवान् दोनों सैनावोंके मध्यदेशविषे भीष्मद्रोणदोनोंकेसन्मुख तथा सर्व राजावोंके सन्मुख तौउत्तमरथकूं स्थापनकरिकै हेपार्थ इन एकठेहूए कौरवोंकूं तूं देख यांप्रकारकावचन कहताभया॥ २५॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ (हेभारत) यहधृतराष्ट्रकासंबोधनहै॥ तासंबोधनकरिकै संजयनैं यहअर्थसूचनकरया ॥ तुमारी भरतराजाकेवंशविषे उत्पत्तिहूईहै ॥ ताआपणेभरतवंशकीमर्यादाकूंविचारकरिकैभी तुमारेकूं आपणेसंबंधीयोंकाद्रोह परित्याग करणेयोग्यहैइति ॥ ईहां अर्जुनकूं गुडाकेशनामकरिकै कथनकरया॥ तागुडाकेशशब्दका यहअर्थहै॥ गुडाकायाःईशः गुडाकेशः अर्थयह ॥ गुडाकानाम निद्राकाहै तानिद्राकाजोईशहोवै अर्थात् जिसनैं निद्राकूंआपणेवश करयाहोवै ताकानाम गुडाकेशहैइति ॥ अथवा गुडावत्केशाः यस्य सगुडाकेशः ॥ अर्थयह अंगुष्ठतर्जनीयोगोगुडानाम्नीतुमुद्रिका ॥ याशास्त्रकेवचनतैं हस्तकेअंगुष्ठका जोतर्जनीअंगुलीकेसाथिसंबंधहै ताकानाम गुडामुद्रिकाहै ॥ तागुडामुद्रि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

काकेपरिमाणहैंअग्रकेशजिसके ताकानामगुडाकेशहैइति ॥ अथवा गुडंअकतिव्याप्नोतीतिगुडाकःशिवःसशिवःईशो यस्य सगुडाकेशः॥ अर्थयह ॥ गुडोगोलेक्षुपाकयोः याकोशकेवचनतैं गुडशब्द गोलकावाचकहै ॥ तथा लोकप्रसिद्धगुडकावाचकहै ॥ तहां जैसे अग्निकरिकैतप्येहूएलोहपिंडकूं सोअग्नि अंतरबाहरि व्याप्यकरिकैरहेहै ॥ तैसे याब्रह्मांडरूपगोलकूं अंतरबाहरि व्याप्तकरिकैजोस्थितहोवै ताकानाम गुडाकहै ॥ ऐसा शिवभगवान्है ॥ तहांश्रुतिः ॥ विश्वस्यैकंपरिवेष्ठितारंज्ञात्वाशिवं ॥ अर्थयह ॥ सर्वविश्वकूंव्याप्तकरणेहारा जोएकशिवहै ॥ ताशिवकूंआपणाआत्मा रूपजानिकै यहपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसागुडाकनामाशिवहैईशजिसका ताकानाम गुडाकेशहैइति ॥ अथवा गुडवन्मधुस्सन्भक्तान्अकतिप्राप्नोतीतिगुडाकः शिवः सशिवःईशोयस्य सगुडाकेशः॥ अर्थयह ॥ जैसे यहलोकप्रसिद्धगुड ॥ मधुरहोवैहै ॥ तैसे मधुरहूआ जोभक्तजनोंकूंप्राप्तहोवै॥ ताकानाम गुडाकहै ॥ ऐसा शिवभगवान्हैं ॥ तहांश्रुति ॥ स्वादुष्किलायंमधुमानुतायंइति ॥ ऐसाशिवभगवान्हैईशजिसका ताकानाम गुडाकेशहैइति ॥ और हृषीकनाम इंद्रियोंकाहै ॥ तिनसर्वइंद्रियोंकूं जोआपणेआपणेकार्यविषेप्रवृत्तकरै ताकानाम हृषीकेशहै ॥ ऐसेहृषीकेशभगवान् केप्रति जबी तागुडाकेशअर्जुननैं दोनोंसैनाकेमध्यविषे रथकेस्थापनकरणेकीआज्ञाकरी ॥ तबी सोकृष्णभगवान् यहअर्जुन हमाराभृत्यहोइकै मैंस्वामीकूं नीचकर्मरूपसारथीपणेविषे प्रेरणाकरताहै याप्रकारकादोषआरोपणकरिकै ताअर्जुनऊपरिक्रोध नहींकरताभया ॥ जिसवासतै सोकृष्णभगवान् सर्वदाभक्तजनोंकेअधीनरहेहै ॥ तथा ताअर्जुनकूं युद्धतैंनिवृत्तभी नहींकरताभया ॥ किंतु ताअर्जुनकेवचनकूंमानिके तिनदोनोंसैनावोंकेमध्यदेशविषे भीष्मद्रोणदोनों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

केसन्मुख तथासर्वराजावोंकेसन्मुख ताअर्जुनकेउत्तमरथकूं स्थापनकरताभया ॥ ईहांयद्यपि सर्वराजावोंकेसन्मुख ता रथकूंस्थापनकरताभया इतनैंमात्रकहणेकरिकैहीं भीष्मद्रोणादिकसर्वराजावोंकाग्रहणहोइसकैहै यातैं भीष्मद्रोणका पृथक्कहणाअनुचितहै ॥ तथापि सर्वराजावोंविषे ताभीष्मद्रोणकीअत्यंतप्रधानताबोधनकरणेवासतै तिनदोनोंका पृथक्ग्रहणकर्‍याहै ॥ तहां रथकूंस्थापनकरताभया इतनैंकहणेकरिकैहीं यद्यपिनिर्वाहहोइसकैहै ॥ तथापि दूसरेसर्वर थोंतैं तारथविषेउत्कृष्टताबोधनकरणेवासतै तारथका उत्तम यहविशेषणदीयाहै ॥ तारथकीउत्कृष्टताविषे यहहेतुहै ॥ एकतौं सोरथ अग्निदेवतानैंदीयाहै ॥ और दूसरा साक्षात्श्रीकृष्णभगवान् तारथकेचलावणेहारासारथीहै ॥ और तीसरा साक्षात्अर्जुन जिसरथविषेस्थितहै ॥ और चतुर्थ हनुमान्जिसरथकीध्वजाविषेस्थितहै ॥ इतनैंहेतुवोंकरि कै तारथविषे सर्वरथोंतैंउत्कृष्टताहै ॥ ऐसेउत्तमरथकूं दोनोंसैनावोंकेमध्यविषेस्थापनकरिकै सर्वकेअंतरगुह्यअभि प्रायकूंजानणेहारा सोश्रीकृष्णभगवान् याअर्जुनकूं इनसंबंधीयोंकेदर्शनतैं शोकमोहकीप्राप्तिभईहै याप्रकारजानिकै उपहाससहितताअर्जुनकेप्रति याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेपार्थ कुरुवंशविषेहैउत्पत्तिजिनोंकी ऐसेजेयहभीष्मादि कएकठेहूएहैं ॥ तिनोंकूं तूं भलीप्रकारतैंदेख ॥ ईहां (हेपार्थ) याप्रकारकेसंबोधनकरिकै भगवान्नैं यहअर्थसूचनकर्‍या ॥ पृथानामा माताकाजोपुत्रहोवै ताकानाम पार्थहै ॥ सापृथा आपणेस्त्रीस्वभावतैं सर्वदाशोकमोहकरिकैयुक्तहै ॥ ता पृथाका तूं पुत्रहैं ॥ यातैं तुमारेविषेभी सोशोकमोह प्राप्तभयाहै ॥ याप्रकार अर्जुनकेउपहासकूं पार्थ याशब्दकरि कैसूचनकरताहूआ श्रीभगवान् आपणेविषे हृषीकेशशब्दकाअर्थरूपअंतर्यामीपणा बोधनकरताभयाइति ॥ अथ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वा (हेपार्थ) यासंबोधनकरिकै भगवान्नैंअर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकरया ॥ हमारेपिताकीभगिनीजापृथाहै ॥ तिसपृथाका तूं पुत्रहैं ॥ यातैं तूं हमारासंबंधीहैं ॥ यातैं यहकृष्णभगवान् हमारेसारथीपणेकूंछोडिकै दुर्योधनकेपक्षविषेस्थितहोवैंगा याप्रकारकीचिंता तुमनैं कदाचित्भीनहींकरणी ॥ किंतु हमारेसारथीपणेविषे तूं निश्चित होइकै इन भीष्मद्रोणादिकोंकूं निःशंकहोइकैदेख ॥ ईहां इनभीष्मद्रोणादिकोंकूं तूंदेख यावचनपर्यंत जोभगवान्काकहणाहै ॥ ताका यहअभिप्राहै ॥ मैं तुमारेसारथीपणेविषे अत्यंतसावधानहूं ॥ और तूंतौ अबीहीं शोकमोहकेवशतैं रथोपणेकापरित्यागकरयाचाहताहैं ॥ यातैं यासैनाकेदर्शनकरिकै तुमाराकौनप्रयोजनसिद्धभया ॥ याप्रकार ताअर्जुनकूं धैर्यकी प्राप्तिकरणेवासतै सोवचन भगवान्नैं कथनकरयाहै ॥ अन्यथा सोभगवान् दोनोंसैनावोंकेमध्यविषे रथकूंस्थापनकरताभया इतनाहींवचनकहणायोग्यथा इति ॥ २४ ॥ २५ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ तादोनोंसैनावोंकेमध्यविषेस्थित होइकै सोअर्जुन क्यादेखताभया ॥ याप्रकारकी धृतराष्ट्रकोशंकाहेहूए सोसंजयकहेहै ॥

तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथपितामहान् ॥ आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्
पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा ॥ २६ ॥ श्वशुरान्सुहृदश्चैवसेनयोरुभयोरपि ॥

तत्र । अपश्यत् । स्थितान् । पार्थः । पितॄन् । अथ । पितामहान् । आचार्यान् । मातुलान् । भ्रातॄन् । पुत्रान् । पौत्रान् । सखीन् । तथा ॥ २६ ॥ श्वशुरान् । सुहृदः । च । एव । सेनयोः । उभयोः । अपि ॥ इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यासैनाकूंदेखो ऐसीभगवानकीआज्ञाकेहूए सोअर्जुन दोनों सैनावोंविषे स्थित पितृव्योंकूं तथा पि
तामहोकूं तथाआचार्योंकूं तथामातुलोंकूं तथाभ्रातावोंकूं तथापुत्रोंकूं तथापौत्रोंकूं तथा सखावोंकूं
॥ २६ ॥ तथाश्वशुरोंकूं तथा सूहृदोंकूं हीं देखंताभया ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र ताकृष्णभगवान्नैं युद्धकेआरंभकरावणेवासतै जबी ताअर्जुनकेप्रति सैनादेखणेकीआज्ञाकरी ॥ तबी सोअर्जुन दोनोंसैनावोंविषेस्थितजेयोद्धाहैं तिनोंकुंदेखताभया ॥ तहां परसैनाविषे सोअर्जुन आपणे भूरि श्रवादिकपितृव्योंकूंदेखताभया ॥ तथा भीष्म सोमदत्त आदिकपितामहोंकूंदेखताभया ॥ तथा द्रोण कृप आदिकआ चार्योंकूंदेखताभया ॥ तथा शल्य शकुनि आदिकमातुलोंकूंदेखताभया ॥ तथा दुर्योधन आदिकभ्रातावोंकूंदेखताभया ॥ तथा लक्ष्मणआदिकपुत्रोंकूंदेखताभया ॥ तथा तिनलक्ष्मणादिकपुत्रोंकेपुत्रोंकूंदेखताभया ॥ तथा आपणेसमानअ वस्थावाले अश्वत्थामा जयद्रथ आदिकसखावोंकूंदेखताभया ॥ तथा कृतवर्मा भगदत्त आदिकसूहृदोंकूंदेखताभया ॥ ईहां (सुहृदः) याशब्दकरिकै दूसरेभी जितनैंकीउपकारकरणेहारे मातामहादिकहैं तिनसर्वोंकाग्रहणकरणा ॥ इ सप्रकार जैसे परसैनाविषे सोअर्जुन आपणेपितृव्यादिकसंबंधीयोंकूंदेखताभया ॥ तैसै आपणीसैनाविषेभी तिन पितृव्यादिकसंबंधीयोंकूंहीं देखताभया ॥ ईहां आपणेपिताकेभ्राताकानाम पितृव्यहै ॥ और आपणीमाताके भ्राता कानाम मातुलहै ॥ माताकेपिताकानाम मातामहहै इति ॥ २६ ॥ ❋ ॥ इसप्रकार सर्वसंबंधीयोंकेदर्शनहूएतैं अनंतर यहसंबंधीयोंकीहिंसा महान्अधर्मरूपहै याप्रकारकोमोहरूपविपरीतबुद्धिकरिकै नष्टहूआहैविवेकजिसका त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

था यहयुद्धविषेस्थितहिंसा शास्त्रविहितहोणेतैंधर्मरूपहै याप्रकारकेयथार्थज्ञानकाप्रतिबंधकरणेहारा तथाममताबुद्धि हैकारणजिसका ऐसाजोशोकमोहरूप चित्तकावैक्लव्यहै ताकरिकैनिवृत्तहोइगयाहैविवेकजिसका ऐसाजोअर्जुनहै ॥ ताअर्जुनकूं पूर्वआरंभकरेहूए युद्धरूपस्वधर्मतैं उपरामहोणेकीइच्छा महान्अनर्थकेदेणेहारी उत्पन्नहोतीभई ॥ या अर्थकूं अब निरूपणकरेहैं ॥

तान्समीक्ष्यसकौंतेयःसर्वान्बंधूनवस्थितान् ॥
कृपयापरयाविष्टोविषीदन्निदमब्रवीत् ॥ २७ ॥

तान्[1] । समीक्ष्य[2] । सः[1] । कौंतेयः[2] । सर्वान्[3] । बंधून्[4] । अवस्थितान्[5] ॥ २७ ॥ कृपया[6] । परया[7] । आविष्टः[8] । विषीदन्[11] । इदं[12] । अब्रवीत्[13] ॥ इतिपदच्छेदः ॥

सो[1] कूंतीकापुत्रअर्जुन[2] ताउयुद्धभूमिविषे स्थित तिनैं[3] सर्व[4] बांधवोंकूं[5] भलीप्रकारदेखिकरिकै परम[7] कृपा करिकै व्याप्तहूआ[8] विषादकूंप्राप्तहूआ[11] याप्रकारकावचन[13] कहताभया ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र तिनसर्वबांधवोंकूंदेखिकरिकै स्वतःसिद्धकृपाकरिकैव्याप्तहूआसोअर्जुन उपतारूपविषादकूं प्राप्तहूआ याप्रकारकावचन श्रीभगवान्केप्रति कहताभया ॥ ईहां ताअर्जुनविषे स्वतःसिद्धकृपाकेबोधनकरणेवास तै ताकृपाका परा यहविशेषणदीयाहै ॥ अथवा ॥ (कृपयापरयाविष्टः) यावचनविषे कृपया अपरया आविष्ट याप्र

॥२४॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कारकापदच्छेदकरणा ॥ यापक्षविषे तावचनका ऐसाअर्थकरणा ॥ आपणीसैनाविषेतौं ताअर्जुनकी पूर्वभीकृपाहो तीभई ॥ और तिसकालषिषेतौं ताअर्जुनकीकौरवोंकीसैनाविषेभी अपरानामादूसरी कृपाहोतीभई ॥ ईहां (विषीद न्निदमब्रीत्) यावचनकरिकै विषाद वचनउच्चारण यादोनोंविषे समानकालपणाकथनकरया ॥ ताकरिकै तावचन उच्चारणकालविषे गद्गद्कंठता तथाअश्रुपात इत्यादिकविषादकेकार्योंकीस्थितिबोधनकरी ॥ काहेतैं यालोकविषे वि षादवान्पुरुषकेवचनविषे यहवार्त्ता प्रसिद्धदेखणेविषेआवैहै ॥ और (कौंतेयः) यापदकाअभिप्रायतौं पूर्वश्लोकविषे कहेहूए पार्थपदकेअभिप्रायकीन्यांई जानिलैणा ॥ कूंतीकुहीं पृथानामकरिकैकथनकरेहैं इति ॥ २७ ॥ ※

अब श्रीकृष्णभगवान्केप्रति सोअर्जुनकावचन (अर्जुनउवाच) इसतैंआदिलैकै (एवमुक्त्वार्जुनःसंख्ये) इसवाक्यतैंपू र्वग्रंथकरिकै संजय कथनकरेहै ॥ तहां स्वधर्मविषेप्रवृत्तिकाकारणरूपजोतत्त्वज्ञानहै ॥ तातत्त्वज्ञानकाप्रतिबंधक जो आपणेशरीरविषे तथापरशरीरविषे यहमेरेहैं याप्रकारका आत्मीयत्वअभिमानहै ॥ ताअभिमानकरिकैयुक्त तथाके वलअनात्मपदार्थोंकूंजाणजानणेहारा तथा इसयुद्धकरिकै हमारा तथाइनबांधवोंका अवश्यनाशहोवैंगा याप्रकारदेखणे हारा ऐसाजोअर्जुनहै ॥ ताअर्जुनकूं महान्शोक प्राप्तहोताभया ॥ ताअर्जुनकेशोककूं ताशोककरिकैव्याप्तलिंगोंकेक थनपूर्वक तीनश्लोकोंकरिकै निरूपणकरेहैं ॥

अर्जुनउवाच ॥ दृष्ट्वेमंस्वजनंकृष्णयुयुत्सुंसमुपस्थितं ॥ २८ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सीदंतिममगात्राणिमुखंचपरिशुष्यति ॥ वेपथुश्चशरीरेमेरोमहर्षश्चजायते ॥२९॥

दृष्ट्वा । इमं । स्वजनं । कृष्ण । युयुत्सुं । समुपस्थितं ॥ २८ ॥ सीदंति । मम । गात्राणि । मुखं । च । परिशुष्यति । वेपथुः । च । शरीरे । मे । रोमहर्षः । च । जायते ॥ २९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेकृष्ण यारणभूमिविषेप्राप्तहूए तथायुद्धकीइच्छावाले इन बांधवोंकूं देखिकरिकै हमारे हस्तपादादिक अंग व्यथाकूंप्राप्तहोवैहै तथा मेरामुखभी सूकैताजावैहै तथा हमारे शरीरविषे कंप उत्पन्नहोवैहै तथा हमारेरोमां च खडेहोवैहैं ॥ २९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेश्रीकृष्णभगवान् युद्धकीइच्छाकरिकै यारणभूमिविषेप्राप्तभयेजे यहभीष्मादिकहमारेबांधवहैं ॥ तिनोंकूं देखिकरिकै हमारेचित्तविषे उत्पन्नभयाजोशोकहै ॥ ताशोककरिकै यहहमारेहस्तपादादिकअंग बहुतव्यथाकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा यहहमारामुखभी सूक ताजावैहै ॥ तथा याहमारेशरीरविषे कंप उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा हमारे रोमांच खडे होवै हैं ॥ ईहां यद्यपि (मुखंचशुष्यति) इतनैंकहणेकरिकैहीं निर्वाहहोइसकेहै ॥ तथापि श्रमादिकनिमित्तोंतैं जोमुखकाशोषणहोवैहै ॥ तिसकीअपेक्षाकरिकै शोकजन्यमुखकेशोषणविषे अधिकताकथनकरणेवासतै (परिशुष्यति) ईहां परि याशब्दकाकथनकर्‍याहै इति ॥ २८ ॥ २९ ॥ ※ ॥ किंच ॥

गांडीवंस्रंसतेहस्तात्त्वक्चैवपरिदह्यते ॥ नचशक्नोम्यवस्थातुंभ्रमती

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वचमेमनः॥ ३० ॥ निमित्तानिचपश्यामिविपरीतानिकेशव ॥

गांडीवं । स्रंसते । हस्तात् । त्वक् । चं । एव । परिदह्यते । नं । चं । शक्नोमि । अवस्थातुं । भ्रमति । इव । चं । मे । मनः॥ ३० ॥ निमित्तानि । चं । पश्यामि । विपरीतानि । केशव । इतिपदच्छेदः ॥

हेकेशव मेरेहस्ततैं गांडीवधनुष नीचैपडिजावैहै तथा मेरीत्वचा दाहकूंप्राप्तहोवैहै तथा मेरा मनभी भ्रमण करेहै यातैं आपणेशरीरकेस्थितकरणेकूंभी मैं नहीं समर्थहोवोहूं ॥ ३० ॥ तथा मैं विपरीत निमित्तों कूंभी देखताहूं ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् ताशोककरिकैयहगांडीवधनुषभी हमारेहस्ततैंनीचैपडिजाताहै ॥ तथा हमारीत्वचाभी अत्यं तदाहकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ईहां हमाराधनुषनीचैपडिजावैहै यावचनकेकहणेकरिकै अर्जुननैं आपणा अधैर्यरूपदौर्बल्य ता बोधनकरी ॥ और मेरीत्वचा दाहकूंप्राप्तहोवैहै यावचनेककहणेकरिकै अर्जुननैं आपणेअंतरकासंताप सूचनक रया ॥ और इसकालविषे मैं आपणेशरीरकेस्थितकरणेविषेभी समर्थनहींहूं ॥ इतनैंकहणेकरिकै अर्जुननैं आपणे मूर्छाअवस्थाकूं सूचनकरया ॥ जिसकारणतैं मुर्छाअवस्थाविषेहीं यहपुरुष आपणेशरीरकेस्थितकरणेविषेसमर्थनहींहो वैहै ॥ अब तामूर्छाअवस्थाकीप्राप्तिविषेहेतुकहेहै ॥ (भ्रमतीवचमेमनइति) यहमेरामन भ्रमणकरतापुरुषकीन्यांई भ्रमणकरेहै ॥ सोभ्रमणकरतापुरुषकीसादृश्यतारूप जोमनकाकोईविकारविशेषहै ॥ जिसकूं (इव) याशब्दकरिकै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कथनकरयाहै ॥ सोईहींविकारविशेष मूर्छाकीपूर्वअवस्थाहोवैहै ॥ (नचशक्नोमि) यावचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ सो हेतुकावाचकहै ॥ ताकायहअर्थहै ॥ जिसवासतै हमारामन तामूर्छाकेपुर्वअवस्थाकूंप्राप्तभयाहै ॥ इसवासतै मैं या आपणेशरीरकूं अबीस्थितकरणेविषेसमर्थनहींहूं ॥ अब ताशरीरकेस्थितकरणेकाअसामर्थ्यविषे दूसराभीनिमित्त कथनकरेहैं ॥ (तिमित्तानीति) हेभगवन् थोडेहींकालविषेदुःखकीप्राप्तिकूंसूचनकरणेहारे जेवामनेत्रकास्फुरणादि कविपरीतनिमित्तहैं ॥ तिनोंकूंभी मैं अनुभवकरताहूं ॥ इसकारणतैंभी मैं स्थितहोणेकूंसमर्थनहींहोता ॥ ईहां अठा वीसवेंश्लोकविषे (दृष्ट्वेमंस्वजनंकृष्ण) यावचनविषेस्थितजो (कृष्ण) यहसंबोधनहै ॥ ताकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकरया ॥ मैंअर्जुन अनात्मवेत्ताहोणेतैं दुःखीहूं ॥ याकारणतैं मैं शोकजन्यक्लेशकूं अनुभवकरताहूं ॥ और कृषि र्भूवाचकःशब्दोण्यश्चनिर्वृतिवाचकः ॥ तयोरैक्यंपरंब्रह्मकृष्णइत्यभिधीयते ॥ अर्थयह ॥ कृष्धातु सत्ताकावाचकहै ॥ और ण्यप्रत्यय आनंदकावाचकहै ॥ तासत्ताआनंददोनोंकाएकताभावरूपपरब्रह्म कृष्ण यानामकरिकैकह्याजावैहै इति ॥ याशास्त्रकेवचनतैं आपसत् आनंद रूपहोणेतैं शोकमोहादिकविकारोंतैंरहितहो ॥ तात्पर्ययह ॥ आपणेबांध वोंकादर्शन जैसे हमारेकूंभयाहै ॥ तैसे आपकूंभी तिनबांधवोंकादर्शनभयाहै ॥ परंतु हमारेन्यांई आपकूं शोकमोहा दिकविकार प्राप्तहूएनहीं ॥ यहआपविषे महान्विशेषताहै ॥ यातैं आपकोन्यांई हमारेकूंभीशोकतैंरहितकरो ॥ यह सर्वअर्थ ताअर्जुननैं (हेकृष्ण) यासंबोधनकरिकै सूचनकरया ॥ तहां तुमारेशोककेनिवृत्तकरणेका हमारेविषे सामर्थ्यन हींहै ॥ ऐसीभगवानकोशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै सोअर्जुन (हेकेशव) यासंबोधनकरिकै ताभगवान्विषे आपणेशो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कनिवृत्तकरणेकासामर्थ्य सूचनकरताभया ॥ तहां केशौवातिअनुकंप्यतयागच्छतीतिकेशवः ॥ अर्थयह ॥ जगतकूंउ
त्पन्नकरणेहारेब्रह्माकानाम क है ॥ और जगतकेसंहारकरणेहारेरुद्रकानाम ईशहै ॥ तिनदोनोंकूं आपणेअनुग्रहका
पात्रजानिकरिकै जोप्राप्तहोवै ताकानाम केशवहै ॥ ऐसेआपकूं हमारेशोककेनिवृत्तकरणेविषे किंचित्मात्रभी प्रयत्न
नहींहै ॥ अथवा (कृष्ण) यासंबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्विषे भक्तजनोंकेदुःखकानिवर्त्तकपणाबोधनकरया ॥
और (केशव) यासंबोधनकरिकै केशीआदिकदुष्टदैत्योंकीनिवृत्तिकरिकै सर्वदाभक्तजनोंकीप्रतिपालकता सूचनकरी
॥ ऐसाआपकास्वभावहै ॥ यातैं हमारेकूंभी शोककीनिवृत्तिकरिकै अवश्य पालनकरौंगे इति ॥ ३० ॥ ※
तहां समीचीन प्रवृत्तिकाकारणरूपजोतत्त्वज्ञानहै ॥ ता तत्त्वज्ञानकाप्रतिबंधक जोशोकहै ॥ ताशोकका पूर्व मुखशोष
णादिकलिंगोंद्वारा तीनश्लोकोंकरिकै निरूपणकरया ॥ अब ताशोककरिकैजन्य जोविपरीतप्रवृत्तिकाकारणरूप विप
रीतबुद्धिहै ताविपरीतबुद्धिका निरूपणकरेहैं ॥

नचश्रेयोनुपश्यामिहत्वास्वजनमाहवे ॥ ३१ ॥

नच । श्रेयः । अनुपश्यामि । हत्वा । स्वजनं । आहवे ॥ इतिपदच्छेदः ॥

इसयुद्धविषे आपणेबांधवोंकूं हननकरिकै मैं आपणेश्रेयकूं नहीं देखताहूं ॥ ३१ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् इसयुद्धविषे इनभीष्मादिकबांधवोंकेमारणेकरिकै मैं आपणेश्रेयकूंदेखतानहीं ॥ ईहां पुरुषार्थ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कानाम श्रेयहै ॥ और यहपुरुष जिसपदार्थकेप्राप्तिकीप्रार्थनाकरैहैं ॥ तापदार्थकानाम पुरुषार्थहै ॥ सोपुरुषार्थरूप श्रेय दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं दृष्टश्रेयहोवैहै ॥ और दूसरा अदृष्टश्रेयहोवैहै ॥ तहां इसलोककेजेराज्यादिकसुख हैं तिनोंकानाम दृष्टश्रेयहै ॥ और स्वर्गादिकसुखोंकानाम अदृष्टश्रेयहै ॥ तादोनोंप्रकारकेश्रेयकीप्राप्ति इनबांधवोंकेमारणेकरिकै मैं देखतानहीं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन इसयुद्धविषे स्वजनोंकेमारणेकरिकै श्रेयकीप्राप्तितौंहोवैहै ॥ परंतु साश्रेयरूपफलकीप्राप्ति बहुतविचारकीयेतैंअनंतर प्रतीतहोवैहै ॥ थोडेविचारकीयेतैं प्रतीतहोवैनहीं ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै अर्जुननैं (अनुपश्यामि) यावचनविषे (अनु) यहशब्द कथनकरयाहै ॥ ताअनुशब्दका पश्चात् यहअर्थहोवैहै ॥ और पूर्ववृत्तांतकीअपेक्षाकरिकैहीं पश्चात् कह्याजावैहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ बहुत विचारकीयेतैंपश्चात्भी मैं बांधवोंकेमारणेकरिकै आपणेश्रेयकूंदेखतानहीं ॥ और (स्वजनं) याकहणेकरिकै अर्जुननैं यहअर्थसूचनकरया ॥ जेआपणेसंबंधीनहींहैं ॥ तिनोंका युद्धविषेहननकरिकैभी मैं आपणेश्रेयकूंदेखतानहीं ॥ काहेतैं शास्त्रविषेयहकह्याहै ॥ श्लोक ॥ द्वाविमौपुरुषौलोकेसूर्यमंडलवर्त्तिनौ ॥ परिव्राट्योगयुक्तश्चरणेचाभिमुखोहतः ॥ अर्थ यह ॥ इसलोकविषे दोप्रकारकेपुरुषहीं सूर्यमंडलविषेस्थितहोवैहैं ॥ एकतौं योगकरिकैयुक्तसंन्यासी ॥ और दूसरा युद्धविषे सन्मुखहूआ जोपुरुष मरणकूंप्राप्तहूआहैइति ॥ इत्यादिकशास्त्रकेवचनकरिकै युद्धविषेमृत्युकूंप्राप्तहूएयोद्धाकूंहीं स्वर्गादिकश्रेयकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ हननकरतापुरुषकूं किंचित्मात्रभी श्रेयकीप्राप्ति शास्त्रनैं कथनकरीनहीं यातैंआपणेअस्वजनोंकेमारणेकरिकैभी जबी श्रेयकीप्राप्तिनहींहोवैहै ॥ तबी आपणेस्वजनोंकेमारणेकरिकै ताश्रेयकी

62

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राप्ति कैसेहोवैंगी ॥ किंतु नहींहोवैंगी ॥ यहसर्वअर्थ अर्जुननैं (स्वजनं) याशब्दकरिकैसूचनकर्‌या ॥ और सिद्धसाध
नरूपदोषकीनिवृत्तिकरणेवासतै अर्जुननैं (आहवे) यहपदकथनकर्‌याहै ॥ काहेतैं (आहवे) यहयुद्धकावाचकपदजोन
हींकहते ॥ तौं युद्धतैंविना बांधवोंकीहिंसाकरिकै श्रेयकीप्राप्ति कोईभी शास्त्रवेत्तापुरुष अंगीकारकरतानहीं ॥ तिसीअर्थ
कूं अर्जुननैंभीसिद्धकर्‌या ॥ यातैं सिद्धअर्थकासाधनरूप सिद्धसाधनदोष अर्जुनकूं प्राप्तहोता तादोषकीनिवृत्तिकरणेवा
सतै अर्जुननैं (आहवे) यहपद कथनकर्‌याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ युद्धतैंविना संबंधीयोंकेमारणेकरिकै श्रेयकीप्राप्तिकूं कोईभी
पुरुष अंगीकारकरतानहीं ॥ और मैंतौं युद्धविषेभी संबंधीयोंकेमारणेकरिकै श्रेयकीप्राप्तिदेखतानहीं इति ॥ ३१ ॥ ※ ॥
॥ शंका ॥ हेअर्जुन युद्धविषे आपणेस्वजनोंकेमारणेकरिकै स्वर्गादिरूपअदृष्टप्रयोजनकीप्राप्तितौं मतहोवै ॥ परंतु
युद्धविषे तिनस्वजनोंके मारणेकरिकै तुमारेकूं विजय राज्य विषयसुख यादृष्टप्रयोजनकीप्राप्तितौं निर्विवादहै ॥ ऐसी
भगवान्‌कीशंकाकेहूए अर्जुनकहेहैं ॥

नकांक्षेविजयंकृष्णनचराज्यंसुखानिच ॥
किन्नोराज्येनगोविंदकिंभोगैर्जीवितेनवा ॥ ३२ ॥

नँ[3]। कांक्षे[4]। विजयं[2]। कृष्ण[1]। नँ। चँ। राज्यं[5]। सुखानि। चँ। किं[13]। नः[11]। राज्येन[12]। गोविंद[10]। किं[15]। भो[14]गैः। जीवितेनँ[16]। वा[16]॥ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेकृष्ण मैं विजयकूं नहीं चाहता तथा राज्यकूंभी नहीं चाहता तथा सुखोंकूंभी नहींचाहता हे गोविंद हमारेकूं इसराज्यकरिकै क्याफलहोवैंगा तथाविषयसुखोंकरिकै क्याफलहोवैंगा तथा विजयकरिकै क्याफलहोवैंगा किंतु तिनोंकीप्राप्तिकरिकै किंचित्मात्रभीफल नहींहोवैंगा ॥ ३२ ॥ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेकृष्णभगवान् आपणेबांधवोंकीहिंसाकरिकै प्राप्तहोणेहाराजोविजयहै ॥ तिसविजयकेप्राप्तिकी मैं इच्छा करतानहीं ॥ तथा ताविजयतैंपश्चात्प्राप्तहोणेहाराजोराज्यहै ॥ ताराज्यकेप्राप्तिकीभी मैं इच्छाकरतानहीं ॥ तथा ता राज्यकीप्राप्तितैंपश्चात् प्राप्तहोणेहारेजेविषयजन्यसुखहैं ॥ तिनविषयसुखोंकेप्राप्तिकीभी मैं इच्छाकरतानहीं ॥ इत नैंकहणेकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकरया ॥ यालोकविषे तिसतिसफलकीइच्छावान्पुरुषहीं तिसतिसफलकीप्राप्ति केउपायविषेप्रवृत्तहोवै है ॥ फलकीइच्छातैं रहितपुरुष ताफलकेउपायविषेप्रवृत्तहोवैनहीं ॥ जैसे भोजनरूपफलकेप्राप्ति कीइच्छावान्पुरुषहीं ताभोजनरूपफलकीप्राप्तिकेउपायरूपअन्नपाकविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ भोजनकीइच्छातैंरहितपुरुष ताअन्नकेपकावणेविषे प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ तैसे विजय राज्य विषयसुख इनफलोंकेप्राप्तिकी जिसपुरुषकूं इच्छाहोवै ॥ सोपुरुष तिनविजयादिकफलोंकीप्राप्तिकेउपायरूपयुद्धविषे प्रवृत्तहोवै ॥ और हमारेकूंतौं तिनविजयराज्यादिकफलों केप्राप्तिकीइच्छाहैनहीं ॥ यातैं इसयुद्धरूपउपायविषे हमारीप्रवृत्ति संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन अन्यदुर्योधनादिकों केइच्छाकाविषयरूप जेयह विजय राज्य सुख आदिकहैं ॥ तिनोंविषे तुमारेकूं इच्छाकाअभाव किसवासतैंहूआहै ॥ ऐ सीभगवान्कीशंकाकेहूए अर्जुनकहेहै (किन्नोराज्येनेति) हेगोविंद धर्मअधर्मकेस्वरूपकूं नहींजानणेहारे जेयहदु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

योंधनादिकहैं ॥ तिनोंकूं इनराज्यसुखादिकोंविषेइच्छाहोवो ॥ परंतु धर्मअधर्मकेस्वरूपकूंजानणेहारेजोहमहैं ॥ तिनहमा
रेकूं याप्रसिद्धराज्यकरिकै तथाविषयसुखोंकरिकै तथाजीवनकासाधनरूप विजयकरिकै किसप्रयोजनकीप्राप्तिहोवैं
गी ॥ किंतु तिनराज्यादिकोंकरिकै हमारा किंचित्मात्रभी प्रयोजनसिद्धनहींहोवैंगा ॥ तात्पर्ययह ॥ विजय राज्य भो
ग इनतीनोंकीप्राप्तितैंविनाहीं वनविषेनिवासकरणेहारेजोहमहैं ॥ तिसहमारा ॥ तिससंतोषकरिकैहीं याजगतविषे कीर्ति
पूर्वक जीवनहोवैंगा ॥ यातैं इनराज्यादिकोंकेप्राप्तिकी हमारेकूंइच्छाहैनहीं ॥ ईहां (हेगोविंद) यासंबोधनकरिकै अर्जुननैं
यहअर्थ सूचनकरचा ॥ गोनामइंद्रियोंकाहै ॥ तिनइंद्रियोंकूं अधिष्ठानरूपकरिकै जोनित्यहींप्राप्तहोवै ॥ ताकानाम गोविं
दहै ॥ ऐसेअंतर्यामीस्वरूपआप हमारे इसलोककेराज्यादिकफलोंतैं वैराग्यकूं भलीप्रकारजाणतेहो इति ॥ ३२ ॥ *
॥ शंका ॥ हेअर्जुन धर्मशास्त्रविषे यहवचनकह्याहै ॥ श्लोक ॥ वृद्धौचमातापितरौभार्यासाध्वीसुतःशिशुः ॥ अप्यका
र्यशतंकृत्वाभर्त्तव्यामनुरब्रवीत् ॥ अर्थयह ॥ आपणे वृद्धजोमातापिताहैं ॥ तथा पतिव्रताजोस्त्रीहै ॥ तथा बाल्य
अवस्थावालेजेपुत्रहैं ॥ यहसर्वबांधव इसपुरुषनैं नकरणेयोग्यअनेककार्योंकूंकरिकैभी भरणपोषणकरणेयोग्यहैं ॥
यहवार्त्ता मनुभगवान् कहताभयाहै इति ॥ इत्यादिकशास्त्रोंकेवचनतैं वृद्धमातापितादिकसंबंधीयोंकेभरणपोषण
वासतै करचाहुआभीअधर्म यापुरुषकेदोषवासतैहोवैनहीं ॥ यातैं जोकदाचित् तुमारेकूं इनराज्यसुखादिकोंतैं वैरा
ग्यभीहोवै ॥ तौंभी इनआपणेसंबंधीयोंकेराज्यसुखादिकोंवासतैं तुमारेकूं इसयुद्धविषेप्रवृत्तहोणाचाहीये ॥ ऐसी
भगवान्कीशंकाकेहूए अर्जुनकहेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

येषामर्थेकांक्षितंनोराज्यंभोगाःसुखानिच ॥
तइमेवस्थितायुद्धेप्राणांस्त्यक्त्वाधनानिच ॥ ३३ ॥

येषां । अर्थे । कांक्षितं । नः । राज्यं । भोगाः । सुखानि । च । ते । इमे । अवस्थिताः । युद्धे । प्राणान् । त्यक्त्वा । धनानि । च ॥ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेभगवन् हमारेकूं जिनबांधवोंके वासतै राज्य तथाविषय तथा सुख अपेक्षितहैं ते यहबांन्धव आपणेप्राणोंकीआशा कूं तथा धनकीआशाकूं त्यागकरिकै इसयुद्धविषे स्थितहूएहैं ॥ ३३ ॥ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् एकाकीपुरुषकूंतौं यहराज्यादिक अपेक्षितहोवैनहीं ॥ और जिनबांधवोंकेवासतै हमारेकूं यह राज्य अपेक्षितहै ॥ तथा सुखकेसाधनरूपविषय अपेक्षितहैं ॥ तथा विषयजन्यसुख अपेक्षितहैं ॥ तेयहहमारेबांधव आपणेप्राणोंकीआशाकूंछोडिकरिकै तथा धनकीआशाकूंछोडिकरिकै मरणेवासतै इसयुद्धभूमिविषे स्थितहूएहैं ॥ यातैं आपणेस्वार्थवासतै तथाआपणेसंबंधीयोंकेस्वार्थवासतै इसयुद्धरूपकार्यविषे हमारीप्रवृत्तिसंभवतीनहीं ॥ ईहां पूर्वश्लोकविषे यद्यपि भोगशब्दकरिकै विषयजन्यसुखकाग्रहणकरयाथा ॥ तथापि इसश्लोकविषे भोगोंतैं सुखकूंभिन्नग्रहणकरयाहै ॥ यातैं ईहां भोगशब्दकीलक्षणावृत्तिकरिकैसुखकेसाधन रूपस्पर्शादिकविषयोंकाग्रहणकरणा ॥ ओर (प्राणांस्त्यक्त्वाधनानिच) यावचनविषे प्राणोंकात्याग तथाधनकात्याग कथनकरयाहै ॥ सोजीवतअवस्थाविषे प्राणोंका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्याग तथाधनकात्याग संभवतानहीं ॥ यातैं प्राणशब्दकीलक्षणावृत्तिकरिकै प्राणकीआशाका ग्रहणकरणा ॥ और धनशब्दकीलक्षणावृत्तिकरिकै धनकीआशाकाग्रहणकरणा ॥ तिनप्राणादिकोंकेआशाकापरित्याग जीवतअवस्थाविषेभी संभवहोइसकेहै ॥ तहां आपणेप्राणोंकेत्यागहूएभी आपणेबांधवोंकेसुखवासतै धनकीआशा संभवहोइसकेहै ॥ याशंकाकीनिवृत्तिकरणेवासतै प्राणोंतैभिन्न धनकाग्रहणकर्‍याहै इति ॥ ३३ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन जिनबांधवोंकेसुखवासतै तुमारेकूं यहराज्यादिकअपेक्षितहैं ॥ तेतुमारेबांधव इसयुद्धविषेआएनहीं ॥ ऐसीभगवान्‌कीशंकाके निवृत्तकरणेवासतै सोअर्जुन तिनबांधवोंका विशेषकरिकैवर्णनकरेहै ॥

आचार्याःपितरःपुत्रास्तथैवचपितामहाः ॥
मातुलाःश्वशुराःपौत्राःश्यालाःसंबंधिनस्तथा ॥ ३४ ॥

आचार्याः । पितरः । पुत्राः । तथा । एव । च । पितामहाः । मातुलाः । श्वशुराः । पौत्राः । श्यालाः । संबंधिनः । तथा ॥ इतिप०

हेभगवन् इसयुद्धभूमिविषे कोईतोंहमारे आचार्यहैं तथाकोईपितरहैं तथा कोईपुत्रहैं तथा कोईपितामहहैं तथाकोईमातुलहैं तथाकोईश्वशुरहैं तथाकोईपौत्रहैं तथाकोईश्यालेहैं तथा कोईसंबन्धीहैं ॥ ३४ ॥ इतिपदार्थः ॥ ॥ टीका ॥ इसश्लोककाअर्थ स्पष्टहींहैं ॥ ताकाअभिप्राययहहै ॥ इसयुद्धभूमिविषे जितनैंकीयोद्धा एकठेहूएहैं ॥ तेसर्व योद्धा हमारेसंबंधीहींहै ॥ तिनसंबधीयोंतैंभिन्नकोईहैनहीं ॥ तेसर्वसंबंधीतौं अबी मरणेकूंत्यारहूएहैं ॥ यातैं किससं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बंधीकेराज्यसुखादिकोंवासतै मैं इसयुद्धविषे प्रवृत्तहोवौं इति ॥ ३४ ॥ * ॥ शंका ॥ हेअर्जुन जोकदाचित् कृपाकरिकै तूं इनभीष्मद्रोणादिकोंकूं नहींहननकरैंगा ॥ तौंभी यहभीष्मद्रोणादिक राज्यकेलोभकरिकै तुमारेकूं अवश्यहननकरैंगे ॥ यातैं तुमहीं इनभीष्मद्रोणादिकोंकूंहननकरिकै राज्यकूंभोगो ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहूए अर्जुनकहेहै॥

एतान्नहंतुमिच्छामिघ्नतोपिमधुसूदन॥अपित्रैलोक्यराज्यस्यहेतोःकिंनुमहीकृते॥३५

एतान्। नं। हंतुं। इच्छामि। घ्नतः। अपि। मधुसूदन। अपि। त्रैलोक्यराज्यस्य। हेतोः। किंनु। महीकृते ॥३५॥ इतिप०

हेमधुसूदन मेरेकूंहननकरतेहूए भी इनआचार्यादिकोंकूं मैं तोनलोककेराज्यकी प्राप्तिवासतै भी हनकरणेकूंनहीं इच्छाकरता तौंइसपृथिवीमात्रकेराज्यकीप्राप्तिवासतै मैं इनोंकेहननकीइच्छा कैसेकरौंगा ॥ ३५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेमधुसूदनभगवान् तीक्षणशस्त्रोंकरिकै हमारेकूं हननकरणेहारेभी जेयह पूर्वउक्तआचार्यादिकहै ॥ तिनोंकेहननकरणेकीइच्छामात्रभी मैं नहींकरता ॥ तौं तिनआचार्यादिकोंकूंमैं तीक्षणशस्त्रोंकरिकै किसप्रकार हननकरौंगा ॥ किंतु नहींहननकरौंगा ॥ किंवा तिनआचार्यादिकोंकेहननकरणेकरिकै जोकदाचित् हमारेकूं भूमि स्वर्ग पातालयातीनलोकोंकेराज्यकीभीप्राप्तिहोइजावै ॥ तौंभी मैं इनआचार्यादिकोंकेहननकीइच्छाकरतानहीं ॥ तौं इसपृथिवीमात्रकेराज्यकीप्राप्तिवासतै मैं इनआचार्यादिकोंकूंनहींहननकरौंगा याकेविषेक्याकहणाहै ॥ ईहां (हेमधुसूदन) यासंबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्विषे वैदिकमार्गकाप्रवर्त्तकपणा सूचनकरया ॥ ऐसेवैदिकमार्गकेप्रवर्त्तकहोइकै आप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हमारेकूं अचार्यादिकोंकेहननविषे किसवासतैप्रवर्त्तकरतेहोइति ॥ ३५ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन आचार्यादिकों केमारणेविषे जोतूं दोषमानताहैं ॥ तौं तिनआचार्यआदिकोंकूंछोडिकै दूसरे धृतराष्ट्रकेदुर्योधनादिकपुत्रोंकूं तुम हन नकरो ॥ काहेतैं इनदुर्योधनादिकोंनैं तुमारेकूं लाक्षागृहविषेदाहादिकोंकरिकै बहुतप्रकारकेदारुणदुःखोंकीप्राप्तिक रीहै ॥ यातैं तिनदुर्योधनादिकोंकेहननकरणेविषे तुमारीप्रीति संभवैहै ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहूए अर्जुन कहेहै ॥

निहत्यधार्त्तराष्ट्रान्नःकाप्रीतिःस्याज्जनार्द्दन ॥
पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥ ३६ ॥

निहत्य । धार्त्तराष्ट्रान् । नः । का । प्रीतिः । स्यात् । जनार्द्दन । पापं । एव । आश्रयेत् । अस्मान् । हत्वा । एतान् । आततायिनः ॥

हेजनार्द्दन इनदुर्योधनादिकोंकूं हननकरिकै हमारेकूं कौन प्रीति होवैंगी किंतु कोईभीप्रीति नहींहोवैंगी उल टा इन आततायियोंकूं हननकरिकै हमारेकूं पाप हीं आश्रयणकरैंगा ॥ ३६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेजनार्द्दन धृतराष्ट्रकेपुत्र जेयहदुर्योधनादिकहैं ॥ ते हमारेभ्राताहैं ॥ तिनभ्रातावोंकूंहननकरिकै हमारेकूं कौनसुखहोवैंगा ॥ किंतु तिनोंकेहननकरिकै हमारेकूं किंचित्मात्रभीसुखकीप्राप्ति नहींहोवैंगी ॥ तात्पर्ययह ॥ मूढज नोंकेप्रीतिकाविषय जोक्षणमात्रवर्त्ति सुखाभासहै ॥ तासुखाभासकेलोभकरिकै बहुतकालपर्यंत नरककेप्राप्तिकाहेतु रूप यहबांधवोंकीहिंसा हमारेकूंकरणेयोग्यनहींहै ॥ ईहां जो सुखरूपतातैंरहितहोवै तथा सुखकीन्यांईप्रतीतहोवै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ताकूं सुखाभासकहेहैं ॥ ऐसेविषयजन्यसुखहैंइति ॥ और (हेजनार्दन) यासंबोधनकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकरया ॥ हेभगवन् यहदुर्योधनादिक जोकदाचित् मारणेहींयोग्यहोवैं ॥ तौंभी आपहीं इनोंकूंहननकरो ॥ जिसकारणतैं प्रलय कालविषे सर्वजनोंकेहननकरिकैभी आपकूं किंचित्मात्रभीपापकास्पर्शहोतानहीं इति ॥ शंका ॥ हेअर्जुन शास्त्र विषेयहवचनकह्याहै ॥ श्लोक ॥ अग्निदोगरदश्चैवशस्त्रपाणिर्धनापहः ॥ क्षेत्रदारापहारीचषडेतेआततायिनः ॥ अर्थ यह ॥ अग्निकेदेणेहारा तथाविषकेदेणेहारा तथाशस्त्रजिसकेहाथविषेहै तथापरधनकेहरणकरणेहारा तथापराएक्षेत्र के हरणकरणेहारा तथापरस्त्रीकेहरणकरणेहारा यहषट् आततायीकहेजावैंहैंइति ॥ और इनदुर्योधनादिकोंविषेतौं सो षट्प्रकारकाहीं आततायीपणाहै ॥ और दूसरेशास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ श्लोक ॥ आततायिनमायातंहन्यादेवाविचार यन् ॥ नाततायिवधेदोषोहंतुर्भवतिकश्चन ॥ अर्थयह ॥ अकस्मात्तैंआयाहूआजोआततायीपुरुषहै ॥ तिसआततायी पुरुषकूं यहबुद्धिमान्पुरुष तिसीकालविषेहीं हननकरै ॥ ताकेहननकरणेविषे किंचित्मात्रभीविचारनहींकरै ॥ जिस कारणतैं तिसआततायीपुरुषकेहननकरणेविषे ताहननकरणेहारेपुरुषकूं किंचित्मात्रभीदोषहोवैनहीं इति ॥ याशास्त्र केवचनतैं आततायीकेमारणेकरिकै दोषाभावप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं यहदुर्योधनादिकआततायी तुमारेकूं अवश्यहननक रणेयोग्यहैं ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहूए अर्जुनकहेहै ॥ (पापमेवेति) इनदुर्योधनादिकआततायीयोंकूंभी हननकरि कैस्थितहूएहमारेकूं पाप अवश्यआश्रयणकरैंगा ॥ अथवा ॥ इनोकेहननकरिकै हमारेकूं केवलपापहीं ॥ आश्रयणकरैं गा ॥ दूसराकोईदृष्टप्रयोजन तथाअदृष्टप्रयोजन प्राप्तहोवैंगानहीं ॥ और आततायिनंहन्यात् यहपूर्वउक्तवचन यद्यपि

70

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आततायीपुरुषोंकेहननकाविधानकरेहै ॥ तथापि सोवचन अर्थशास्त्रकाहै ॥ धर्मशास्त्रका सोवचनहैनहीं ॥ ताअर्थशास्त्रतैं धर्मशास्त्र बलवान्होवैहै और धर्मशास्त्रतौं प्राणीमात्रकेहिंसाकरणेकानिषेधकरेहै ॥ सोधर्मशास्त्र यहहै ॥ सएवपापिष्ठतमोयःकुर्यात्कुलनाशनं इति ॥ नहिंस्यात्सर्वभूतानि इति ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष आपणेकुलकानाशकरेहै ॥ सोईहींपुरुष अत्यंतपापिष्ठजानणा ॥ और यहबुद्धिमान्पुरुष सर्वभूतप्राणीयोंकीहिंसानहींकरैइति ॥ यहधर्मशास्त्र पूर्वउक्तअर्थशास्त्रतैंबलवान्है ॥ यातैं इनबांधवोंकाहननकरणा हमारेकूंयोग्यनहीं है ॥ अथवा (पापमेवाश्रयेत्) इत्यादिकअर्द्धश्लोकका याप्रकारतैं दूसराव्याख्यानकरणा ॥ शंका ॥ हेअर्जुन दुर्योधनादिकोंकेहननकरणेविषे यद्यपि तुमारेकूंप्रीतिनहींहै ॥ तथापि तुमारेकूंहननकरणेविषे इनदुर्योधनादिकोंकूंप्रीतिहै ॥ यातैं यहदुर्योधनादिक तुमारेकूं अवश्यकरिकैहननकरैंगे ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहूए अर्जुनकहेहै ॥ (पापमेवेति) पापं । एव । आश्रयेत् । अस्मान् हत्वा । एतान् । आततायिनः ॥ अर्थयह ॥ हमारेकूं हननकरिकै स्थितहूएइनदुर्योधनादिक आततायीयोंकूं केवल पाप हीं आश्रयणकरैंगा ॥ दूसराकोईसुख इनोंकूंप्राप्तनहींहोवैंगा ॥ तात्पर्ययह ॥ यहदुर्योधनादिक पूर्वतौंआततायीहैंहीं ॥ और नहीं युद्धकरणेहारेहमारेकूंहननकरिकै अबीभी यहदुर्योधनादिकहींपापीहोवैंगे ॥ इसविषे हमारेकूं कोई पापकासंबंधहैनहीं ॥ यातैं हमारेकूं किंचित्मात्रभी हानिकी प्राप्तिनहीं इति ॥ ३६ ॥ ※ तहां अन्यप्राणीयोंकीहिंसाकरणेविषे कोईफलहैनहीं ॥ उलटा अनर्थकोहींप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं किसीभीप्राणीकीहिंसाकरणेयोग्यनहींहै ॥ यहवार्त्ता (नचश्रेयोनुपश्यामि) इसवचनतैंआदिलैके अबपर्यंत अर्जुननैं कथनकरी ॥ अब तावार्त्ताकीसमाप्तिकरेहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तस्मान्नार्हावयंहंतुंधार्त्तराष्ट्रान्स्वबांधवान् ॥ स्वजनंहिकथं
हत्वासुखिनःस्याममाधव ॥ ३७ ॥ ॥ ॥

तस्मात् । नँ । अर्हाः । वयं । हंतुं । धार्त्तराष्ट्रान् । स्वबांधवान् । स्वजनं । हि । कथं । हत्वा । सुखिनः । स्याम । माधव ॥ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेमाधव तिसकारणतैं हम आपणेबांधव धृतराष्ट्रकेदुर्योधनादिकपुत्रोंकूं हननकरणेकूं नहीं योग्यहैं जिसकारणतैं आपणेबांधवोंकूं हननकरिकै हम कैसे सुखी होवैंगे किंतुनहींसुखीहोवैंगे ॥ ३७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ ईहां (तस्मात्) यातत्शब्दकरिकै पूर्वकथनकरयाजो बांधवोंकोहिंसाकरणेविषे अदृष्टरूपफलकाअभाव तथाअनर्थकोप्राप्ति तिनदोनोंकाग्रहणकरणा ॥ ताकरिकै यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ जिसकारणतैं बांधवोंकीहिंसाकरिकै स्वर्गादिरूपअदृष्टफलकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा महान्अनर्थकोप्राप्तिहोवै है ॥ तिसकारणतैं हम आपणेदुर्योधनादिकबांधवोंकेहननकरणेकोइच्छाकरतेनहीं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन बांधवोंकेहननकरिकै स्वर्गादिरूपअदृष्टसुखकीप्राप्तिमतहोवो ॥ तथापि इसलोककादृष्टसुखतौं तुमारेकूं अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैंगा ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकरिकै अर्जुनकहेहै (स्वजनंहीति) हेमाधव आपणेसंबंधीयोंकेसुखवासतैहीं श्रेष्ठपुरुषोंकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं आपणेसंबंधीयोंकूंहीं हननकरिकै हम किसप्रकार सुखकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ किंतु उलटा दुःखकूंहीं प्राप्तहोवैंगे ईहां (हेमाधव) यासंबोधनकरिकै अर्जु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ननैं यहअर्थ सूचनकरया ॥ मानाम लक्ष्मीकाहै धवनाम पतिकाहै ॥ लक्ष्मीकाजोपतिहोवै ताकानाम माधवहै ॥ ऐसाल
क्ष्मीकापतिहोइकै आप हमारेकूं लक्ष्मीतैंरहित बांधवोंकीहिंसारूपनिंदितकर्मविषे प्रवर्त्तकरणेयोग्यनहींहो इति
॥ ३७ ॥* ॥ शंका ॥ हेअर्जुन युद्धविषे आपणेबांधवोंकीहिंसाकरिकै जोकदाचित् किसीदृष्टअदृष्टसुखकीप्रा
प्ति नहींहोतीहोवै ॥ उलटा दोषकीहींप्राप्तिहोतीहौवै ॥ तौं इनभीष्मादिकमहानपुरुषोंकी ताकुलकेक्षयकरणेविषे त
थास्वजनोंकीहिंसाकरणे विषे किसवासतै प्रवृत्तिहोतीहै ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहूए अर्जुन कहेहै ॥

यद्यप्येतेनपश्यंतिलोभोपहतचेतसः ॥ कुलक्षयकृतंदोषंमित्रद्रोहेचपातकं ॥ ३८ ॥

यद्यपि । एते । न । पश्यंति । लोभोपहतचेतसः । कुलक्षयकृतं । दोषं । मित्रद्रोहे । च । पातकं ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेभगवन् लोभग्रस्तचित्तवाले यहभीष्मादिक यद्यपि कुलकेनाशकृत दोषकूं तथा मित्रोंकेद्रोहविषे पातककूं
नहीं देखंते ॥ तथापि हम ताकूंदेखतेहैं ॥ ३८ ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ हेभगवन् प्राप्तहूएपदार्थकेत्यागकूंनहींसहारणेकानाम लोभहै ॥ तालोभकरिकैइनभीष्मादिकोंकाचित्त ग्र
स्तहोइरह्याहै ॥ याकारणतैं यहभीष्मादिक कुलकेनाशकरणेकरिकैप्राप्तहोणेहारेदोषकूं तथाआपणेमित्रोंकेसाथिद्रो
हकरणेकरिकै प्राप्तहोणेहारेपातककूंयद्यपि विचारकरिकैदेखतेनहीं ॥ तथापि हम तादोषकूं तथापातककूं भलीप्र
कारजाणतेहैं ॥ यातैं इनभीष्मादिकोंकीतौं यद्यपि युद्धविषेप्रवृत्ति संभवैहै ॥ तथापि तायुद्धविषे हमारीप्रवृत्ति संभ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वतीनहीं ॥ इतनैंकहणेकरिकै अर्जुननैं याशंकाकीनिवृत्तिकरी ॥ साशंकायहहै ॥ हेअर्जुन यहभीष्मादिकजेशिष्टपुरुषहैं ॥ तिनोंकी आपणेबांधवोंकेहननविषे प्रवृत्ति देखणेमैंआवैहै ॥ और जोजोशिष्टपुरुषोंकाआचारहोवैहै ॥ सोसो वेदमूलकहींहोवैहै ॥ जैसे श्राद्धादिककर्मोविषेप्रवृत्तिरूप शिष्टपुरुषोंकाआचार वेदमूलकहोवैहै ॥ और ताशिष्टपुरुषोंकेआचारकेअनुसारहीं दूसरेपुरुषोंकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं इनभीष्मादिकशिष्टपुरुषोंकी आपणेबांधवोंकेहननविषेप्रवृत्तिकूंदेखिकरिकै तुमारेकूंभी तिसीविषेप्रवृत्तहोणाचाहीये याभगवान्केशंकाकी अर्जुननैं (लोभोपहतचेतसः) याविशेषणकेकहणेकरिकैनिवृत्तिकरी ॥ काहेतैं जिसशिष्टपुरुषोंकेआचारविषे लोभादिकदोष कारणनहींहोवै ॥ किंतु केवलधर्मबुद्धिहीं कारणहोवै ॥ तिसीआचारविषे वेदमूलकता कल्पनाकरीजावैहै ॥ और सोईहींशिष्टपुरुषोंकाआचार इतरजीवोंकूं अंगीकारकरणेयोग्यहोवैहै ॥ औरजिसशिष्टपुरुषकेआचारविषे केवललोभादिकदोषहीं कारणहोवैं ॥ ताशिष्टपुरुषकेआचारविषे वेदमूलकता कल्पनाकरीजावैनहीं ॥ और सोलोभादिपूर्वकशिष्टपुरुषोंका आचार इतरपुरुषोंकूं अंगीकारकरणेयोग्यभीनहींहै ॥ और इनभीष्मादिकोंका जोबांधवोंकेहननकरणेविषेप्रवृत्तिरूपआचारहै ॥ ताकेविषेभी केवललोभादिकदोषहीं कारणहैं ॥ यातैं सोइनभीष्मादिकोंकाआचार वेदमूलकनहींहै ॥ ऐसेइनभीष्मादिकोंकेलोभमूलकआचारकूंग्रहणकरिकै हमबांधवोंकेहननकरणेविषे कैसेप्रवृत्तहोवैंगे ॥ किंतु हम ताकेविषे कदाचित् भीनहींप्रवृत्तहोवैंगे इति ॥ ३८ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन यद्यपि यहभीष्मादिक लोभतैं युद्धविषेप्रवृत्तहूएहैं॥ तथापि धर्मशास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ आहूतोननिवर्तेतद्यूतादपिरणादपि इति ॥ विजितंक्षत्रियस्यइति ॥ अर्थयह ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्षत्रियराजाकूं जोकोईपुरुष जुवाखेलणेवासतै तथायुद्धकरणेवासतै आइकैंबुलावै ॥ तौं सोक्षत्रिय ताजूवातैं तथा युद्धतैं निवृत्तनहींहोवै ॥ किंतु तापुरुषकेसाथि जूवा तथायुद्ध अवश्यकरिकैकरै ॥ और युद्धकरिकैएकठाकरयाहूआजोधनहै ॥ सोधनहीं क्षत्रियका धर्म्यधनहैइति ॥ इत्यादिकधर्मशास्त्रकेवचनोंकरिकै क्षत्रियराजाका युद्धधर्म सिद्धहोवैहै ॥ तथा युद्धकरिकैएकठाकरयाहूआधनहीं धर्म्यधन सिद्धहोवैहै ॥ और तुमारेकूं इनभीष्मादिकोंनैं युद्धकरणेवासतै बुलायाहै ॥ यातैं तुमारेकूं इसयुद्धविषे अवश्यप्रवृत्तहोणाचाहीये ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहूए अर्जुनकहेहै ॥

कथंनज्ञेयमस्माभिःपापादस्मान्निवर्त्तितुं॥कुलक्षयकृतंदोषंप्रपश्यद्भिर्जनार्दन॥३९॥

कथं। नं। ज्ञेयं। अस्माभिः। पापात्। अस्मात्। निवर्त्तितुं। कुलक्षयकृतं। दोषं। प्रपश्यद्भिः। जनार्दन। इतिपद०॥

हेजनार्दन कुलकेनाशकृत दोषकूं जानणेहारे हमोनैं पापकेहेतुरूप इसयुद्धतैं निवृत्तहोणेवासतै कैसे नहीं विचारकरणायोग्यहै किंतु अवश्यविचारकरणायोग्यहै ॥ ३९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेजनार्दन आपणेकुलकेनाशकरणेतैं उत्पन्नहोणेहारा जोदोषहै॥ तादोषकूंभलीप्रकारतैं जानणेहारेजोहमहैं तिनहमोनैं पापकीप्राप्तिकरणेहारेइसयुद्धतैं निवृत्तहोणेवासतै क्या नहींविचारकरणायोग्यहै ॥ किंतु तायुद्धतैंनिवृत्तहोणेवासतै हमारेकूं अवश्यविचारकरणायोग्यहै॥ और किमकार्यंदुरात्मनां ॥ अर्थयह ॥ दुरात्मपुरुषोंकूं कौनका र्यकरणेयोग्यनहींहै ॥ किंतु दुरात्मापुरुषोंकूं सर्वकरणेयोग्यहै यान्यायकूंअंगीकारकरिकै यहदुर्योधनादिक जैसे रा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ज्यकेलोभकरिकै आपणेकुलकानाशकरेहैं ॥ तथा आपणेमित्रोंकेसाथि द्रोहकरेहैं ॥ तैसे हमारेकूं करणायोग्यनहींहै ॥ और आहूतोननिवर्त्तेत यहजोधर्मशास्त्रकावचन आपनैं पूर्वकह्याथा ॥ सोवचन केवललोभमूलकहै ॥ यातैं सोवचन सएवपापिष्ठतमोयःकुर्यात्कुलनाशनं यावचनकरिकैबाधितहै ॥ यातैं तालोभमूलकवचनकूंअंगीकारकरिकै हमारी युद्धविषेप्रवृत्ति संभवैनहीं ॥ ईहांयहतात्पर्यहै ॥ जिसपुरुषकूं जिसकार्यविषे यहकार्य हमारेश्रेयकासाधनहै याप्रकार काज्ञानहोवैहै ॥ सोपुरुषहीं तिसकार्यविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ श्रेयसाधनताज्ञानहीं पुरुषोंकाप्रवर्त्तकहै ॥ और जिसकेसाथि कदाचित्भी अश्रेयकासंबंधनहींहोवै ताकानाम श्रेयहै ॥ जोऐसानहींअंगीकारकरीयेतौं ॥ शत्रुकेमारणेवासतैं करयाजोश्येनयज्ञहै ताश्येनयज्ञकूंभी धर्मरूपताहोणीचाहीये काहेतैं शत्रुकेमरणरूपश्रेयकीसाधनता ताश्येनयज्ञविषेभीहै ॥ परंतु सोशत्रुकामरणरूपश्रेय अश्रेयकाअसंबंधीनहींहै ॥ किंतु श्येनयज्ञकरिकैशत्रुकूं मारणेहारेपुरुषकूं नरकरूपअश्रेयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं सोशत्रुकामरणरूपश्रेय नरकरूपअश्रेयकेसंबंधवालाहींहै ॥ यातैं ताश्येनयज्ञविषे धर्मरूपतासंभवैनहीं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ फलतोपिचयत्कर्म नानर्थेनानुबध्यते ॥ केवलप्रीतिहेतुत्वात्तद्धर्मइतिकथ्यते ॥ अर्थयह ॥ जोकर्म आपणेफलकीप्राप्तितैंभी अनर्थकेसाथि संबंधवालानहींहोवै किंतु केवल सुखकाहींहेतुहोवै ताकर्मकूं धर्म यानामकरिकैकथनकरेहैंइति ॥ यातैं जैसे श्येनयज्ञ यद्यपि श्येनेनाभिचरन्यजेत इत्यादिकशास्त्रकरिकैविधानकरयाहै ॥ तथापि ताश्येनका शत्रुकामरणरूपफल नरकरूपअश्रेयकेसंबंधवालाहै ॥ यातैं श्रेष्ठपुरुषोंको ताश्येनयज्ञविषेप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे यहयुद्धभी आहूतोननिवर्त्ते

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त इत्यादिकशास्त्रकेवचनोंकरिकै यद्यपि विधानकरयाहै ॥ तथापि तायुद्धका विजयराज्यादिकफल सएवपापिष्ठतमो यःकुर्यात्कुलनाशनं इत्यादिकवचनोंकरिकैकथनकरयाजो कुलकेनाशतैंपापहै तापापरूपअश्रेयकेसंबंधवालेहींहै ॥ यातैं तेविजयराज्यादिकफल श्रेयरूपनहींहैं ॥ ऐसेविजयराज्यादिकोंकीप्राप्तिवासतै हमारेकूं इसयुद्धविषेप्रवृत्तहोणायोग्य नहींहैइति ॥ ३९ ॥ ❋ ॥ तहां युद्धकाफलरूप जेविजयराज्यादिकहैं ॥ ते अश्रेयरूपहोणेतैं हमारीइच्छाकेविषय नहींहैं ॥ यातैं तिनविजयराज्यादिकोंकीप्राप्तिवासतै हमारेकूं इसयुद्धविषेप्रवृत्तहोणा योग्यनहींहै ॥ यहअर्थ पूर्वश्लोकविषेकथनकरया ॥ अब तिसीअर्थकूं पुनः दृढकरणेवासतै सोअर्जुन तिनविजयराज्यादिकोंविषे अनर्थकासंबंधीपणा कथनकरिकै अश्रेयरूपतावर्णनकरेहै पंचश्लोकोंकरिकै ॥

कुलक्षयेप्रणश्यंतिकुलधर्माःसनातनाः॥धर्मेनष्टेकुलंकृत्स्नमधर्मोभिभवत्युत॥४०॥

कुलक्षये। प्रणश्यंति। कुलधर्माः। सनातनाः। धर्मे। नष्टे। कुलं। कृत्स्नं। अधर्मः। अभिभवति। उत॥ इतिपद०॥

हेभगवन् कुलकेनाशहूए परंपरासैंप्राप्त कुलकेसर्वधर्म नाशकूंप्राप्तहोवैहैं और धर्मके नाशहूए बाकीरहेसर्व हीं कुलकूं अधर्म आपणेवशकरिलेवैहै ॥ ४० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ आपणेवंशपरंपराकरिकैप्राप्त तथाआपणेकुलकेअनुसार तथाजातिकेअनुसार करणेयोग्य ऐसेजेअग्निहोत्रादिकधर्महैं ॥ तिनधर्मोंकीप्रवृत्तिकरणेहारे जेवृद्धपुरुषहैं ॥ तिनवृद्धपुरुषोंकाजबी नाशहोवैहै ॥ तबी तिन करता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुरुषोंकेअभावहोणेतैं तेअग्निहोत्रादिक सर्वकुलकेधर्म नाशकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ और तिनवृद्धपुरुषोंकेनाशकरिकै तिनस
र्वधर्मोंकेनाशहूएतैंअनंतर शिक्षाकरणेहारेवृद्धपुरुषोंकेअभावतैं बाकीरहेहूए स्त्रीबालकादिरूपकुलकूं अनाचाररूपअ
धर्म आपणेवशकरिलेवैहै इति ॥ ४० ॥ किंच ॥

अधर्माभिभवात्कृष्णप्रदुष्यंतिकुलस्त्रियः॥स्त्रीषुदुष्टासुवार्ष्णेयजायतेवर्णसंकरः॥४१

अधर्माभिभवात्। कृष्ण। प्रदुष्यंति। कुलस्त्रियः। स्त्रीषु। दुष्टासु। वार्ष्णेय। जायते। वर्णसंकरः॥ इतिपदच्छेदः॥
हेकृष्ण ताअधर्मकेवशपणेतैं कुलकीसर्वस्त्रीया व्यभिचारिणीहोवैंहैं हेवार्ष्णेय तिनव्यभिचारिणी स्त्रीयोंविषे
वर्णसंकरपुत्र उत्पन्नहोवैंहैं ॥ ४१ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेकृष्ण ताअधर्मकीवृद्धितैंअनंतर ॥ हमारेपतियोंनै धर्मकाउल्लंघनकरिकै जोकुलकानाशकर्याहै ॥ तौं
हमारेकूं पतिव्रताधर्मकाउल्लंघनकरिकै व्यभिचारकरणेविषे कौनदोषहोवैंगा ॥ याप्रकारकीकुतर्ककरिकैयुक्तहूईयां ते
कुलकीस्त्रीयां व्यभिचारकर्मविषेप्रवृत्तहोवैंहैं ॥ अथवा धर्मशास्त्रविषे पतिकेधर्मअधर्मकाफल स्त्रीकूंभीकथनकर्याहै ॥
यातैं कुलकेनाशकरणेकरिकैपापकूंप्राप्तहूएजेपतिहैं ॥ तिनपतितपतियोंकेसंबंधतैं तिनस्त्रीयोंकी व्यभिचारकर्मवि
षेप्रवृत्तिहोवैहै ॥ तिनव्यभिचारिणीस्त्रीयोंविषे ऊचजातिवालेपुरुषोंकेसंबंधतैं अथवा नीचजातिवालेपुरुषोंकेसंबंधतैं
वर्णसंकरपुत्र उत्पन्नहोवैंहैं इति ॥ ४१ ॥ * ॥ किंच ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संकरोनरकायैवकुलघ्नानांकुलस्यच ॥ पतंतिपितरोह्येषांलुप्तपिंडोदकक्रियाः॥४२॥

संकरः।नरकाय। एव। कुलघ्नानां। कुलस्य। च। पतंति। पितरः। हि। एषां। लुप्तपिंडोदकक्रियाः॥ ४२॥ इतिपद०॥

किंच कुलका संकर कुलकेनाशकरणेहारेपुरुषोंके नरकवासतै हीं होवैहै तथाइनकुलकेनाशकरणेहारेपुरुषोंके पितरभी पिंडजलक्रियातैंरहितहूए नरकविषेपडेहैं ॥ ४२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् कुलविषेउत्पन्नभयाजोवर्णसंकरहै ॥ सोवर्णसंकर कुलकेनाशकरणेहारेपुरुषोंकूं नरककीप्राप्ति वासतैहींहोवैहै ॥ किंवा ॥ सोवर्णसंकर केवल कुलकेनाशकरणेहारेपुरुषोंकेनरकवासतैनहींहोवैहै ॥ किंतु तावर्णसंकरकरिकै तिनोंकेपितरोंकूंभी नरककीप्राप्तिहोवैहै ॥ याअर्थकूंकहेहैं ॥ (पतंतीति) आपणेपितरोंवासतै पिंडक्रियाके करणेहारे तथाजलक्रियाकेकरणेहारे जेपुत्रहैं ॥ तेपुत्र पीछेरहेनहीं ॥ यातैं निवृत्तहोइगईहैपिंडक्रिया तथाजलक्रिया जिनोंकी ऐसेजेकुलकेनाशकरणेहारेपुरुषोंकेपितरहैं ॥ तेपितर नरककीप्राप्तिवासतै स्वर्गतैंनीचैपडेहैं ॥ ईहां यद्यपि इतिहासपुराणादिकोंविषे यहवार्त्ता कथनकरीहै ॥ एककालविषे परशुराम सर्वक्षत्रियोंकूंहननकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर तिनक्षत्रियोंकीस्त्रीयां ब्राह्मणोंतैंपुत्रोंकूंउत्पन्नकरतीयांभयां ॥ जोकदाचित् अन्यपुरुषतैंउत्पन्नहूए पुत्रकी दईहूई पिंडक्रिया तथाजलक्रिया पिताकूंनहींप्राप्तहोतीहोवै ॥ तौं तेक्षत्रियराजावोंकीस्त्रीयां ब्राह्मणोंतैंपुत्रोंकूं किसवासतै उत्पन्नकरतीयांभईयांहैं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ जैसे स्त्रीरूपक्षेत्रविषे वीर्यरूपबीजकीप्राप्तिकरणेहारे बी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जपतिपुरुषकूं तापुत्रकेदीयेहूएपिंडादिक प्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे तास्त्रीरूपक्षेत्रकेपतिपुरुषकूंभी तापुत्रकेदीयेहूएपिंडादिकप्राप्तहोवैहैं ॥ तथापि श्रुतिविषे बीजपतिपुरुषकूंहीं तापुत्रकेदीयेहूएपिंडादिकोंकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ क्षेत्रपतिपुरुषकूं तापुत्रकेदीयेहूएपिंडादिकोंकीप्राप्ति कथनकरीनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ नशेषोअग्नेअन्यजातमस्ति ॥ अर्थयह ॥ हे अग्नि आपणीस्त्रीविषे अन्यपुरुषतैंउत्पन्नहूआजोपुत्रहै सोपुत्रहोवैनहींइति ॥ किंवा ॥ यहवार्त्ता यास्कमुनिनैंभी कथनकरीहै ॥ अन्योदर्योमनसापिनमंतव्योममायंपुत्रःइति ॥ अर्थयह ॥ आपणीस्त्रीविषे अन्यपुरुषतैंउत्पन्नभयाजो पुत्रहै ॥ तापुत्रकूं याक्षेत्रपतिपितानैं यहहमाराहींपुत्रहै याप्रकार मनकरिकैभीनहींजानणाइति ॥ किंवा ॥ श्रुतिविषे आपणेवर्त्तमानपिताका संशयभीकथनकरयाहै ॥ तहांश्रुति ॥ येयजामहेइति योहमस्मिससन्यजेइति ॥ अर्थयह ॥ जे हमहैं ॥ तेहम यजनकरतेहैं ॥ हम ब्राह्मणहैं अथवा अब्राह्मणहैं यहवार्त्ता हमजाणतेनहीं ॥ काहेतैं लोकप्रसिद्धवर्त्तमानजोयहपिताहै ॥ सोपिता इसीपितातैं मैं उत्पन्नभयाहूं अथवा किसीअन्यपितातैं मैं उत्पन्नभयाहूं याप्रकारकेसंशयकरिकैग्रस्तहै ॥ यातैं यहहींहमारापिताहै याप्रकारकानिश्चय संभवैनहीं ॥ यातैं जेहमहैं तेहम यजनकरतेहैं इति ॥ इत्यादिकश्रुतिवचनोंकरिकै बीजपतिपिताकूंहीं पिंडादिकोंकीप्राप्ति सिद्धहोवैहै ॥ क्षेत्रपतिपिताकूं पिंडादिकोंकीप्राप्तिसिद्धहोवैनहीं ॥ और स्त्रीरूपक्षेत्रविषे अन्यपुरुषतैंपुत्रकीउत्पत्तिकूंकथनकरणेहारेजेस्मृतिआदिकशास्त्रोंकेवचनहैं ॥ तिनवचनोंका इसलोकविषेवंशकेस्थापनकरणेविषेतात्पर्यहै ॥ कोई क्षेत्रपतिपुरुषकूं तापुत्रकेदीयेहूएपिंडादिकोंकीप्राप्तिविषे तिनवचनोंका तात्पर्यनहींहै ॥ यातैं वर्णसंकरपुत्रोंकेउत्पन्नहूए तेकुलनाशकरणेहारेपुरुषोंकेपि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तर पिंडादिक क्रियातैंरहितहोइकै अवश्य नरकविषपडेहैं ॥ यह यद्यपितैंआदिलैकेसर्वअर्थ (पतंतिपितरोह्येषां) यावचनविषे स्थित हि याशब्दकरिकै अर्जुननैं सूचनकरया इति ॥ ४२ ॥ * ॥ किंच ॥

दोषैरेतैःकुलघ्नानांवर्णसंकरकारकैः ॥ उत्साद्यंतेजातिधर्माःकुलधर्माश्चशाश्वताः॥४३॥

दोषैः । एतैः । कुलघ्नानां । वर्णसंकरकारकैः । उत्साद्यंते । जातिधर्माः । कुलधर्माः । च । शाश्वताः ॥ ४३ ॥ इतिपदच्छेदः

हेभगवन् कुलकेहननकरणेहारे पुरुषोंके वर्णसंकरकेकरणेहारे इन दोषोंनैं परंपरातैंप्राप्त जातिकेधर्म तथा कुलकेधर्म नाशकरीतेहैं ॥ ४३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् जेपुरुष यहकार्य हमारेकूंकरणेयोग्यहै तथा यहकार्य हमारेकूंनहींकरणेयोग्यहै याप्रकारके विचारकापरित्यागकरिकै कामक्रोधलोभादिकोंकेवशहूए कुलधर्मोकेप्रवर्तकपुरुषोंकाहननकरेहैं ॥ तिनपुरुषोंकानाम कुलघ्नहै ॥ तिनकुलघ्नपुरुषोंकेवर्णसंकरकीउत्पत्तिकरणेहारे जेपूर्वउक्तदोषहैं ॥ तिनदोषोंनैं श्रुतिस्मृतिमूलक तथापरंपरातैं प्राप्त जेक्षत्रियत्वादिकजातिप्रयुक्तधर्महैं तथाकुलकेजे असाधारणधर्महैं तेसर्वधर्म नाशकरीतेहैं इति ॥ ४३ ॥ किंच ॥

उत्सन्नकुलधर्माणांमनुष्याणांजनार्द्दन ॥ नरकेनियतंवासोभवतीत्यनुशुश्रुम ॥४४॥

उत्सन्नकुलधर्माणां । मनुष्याणां । जनार्द्दन । नरके । अनियतं । वासः । भवति । इति । अनुशुश्रुम ॥ इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेजनार्दन नष्टकरेहैंकुलजातिआदिकोंकेधर्मजिनोंनैं ऐसेमनुष्योंका नरकविषे अवधितैंरहित निवास होवैहै इसप्रकार हम आचार्योंकेमुखतैं श्रवणकरतेभयेहैं ॥ ४४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेजनार्दन जेपुरुष लोभकेवशहोइकै आपणेकुलकाहननकरिकै आपणेकुलकेधर्मोंकूं तथाजातिकेधर्मोंकूं नष्टकरेहैं ॥ तिनपुरुषोंका युगमन्वंतरादिकअवधितैंरहित रौरवादिकनरकोंविषे निवासहोवैहै ॥ यहवार्त्ता हम केवल आपणीबुद्धिकीकल्पनातैंनहींकहते ॥ किंतु पूर्वआचार्योंकेमुखतैं तथामहान्ऋषियोंकेमुखतैं यहवार्त्ता हम श्रवणकरते भयेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ प्रायश्चित्तमकुर्वाणाःपापेष्वभिरतानराः ॥ अपश्चात्तापिनःपापान्निरयान्यांतिदारुणान् ॥ अर्थयह ॥ जेपुरुष पापोंविषेप्रीतिवालेहैं ॥ तथा तापापकीनिवृत्तिवासतै प्रायश्चित्तकूंकरतेनहीं ॥ तथा पश्चात्तापकूंभी नहींकरते ॥ तेपुरुष तापापकेवशतैं दारुणनरकोंकूंप्राप्तहोवैहैंइति ॥ इत्यादिकअनेकवचन पापीपुरुषोंकूंनरककीप्राप्तिकथनकरेहैं ॥ ईहां (नरकेनियतं) यावचनविषे ककारकेउत्तर अकारकालोपमानिकै अनियतं ऐसापदच्छेदकरयाहै ताअनियतपदका पूर्वअर्थ कथनकरया ॥ और जोअकारकालोप तहां नअंगीकारकरीये ॥ तौं नियतं याप्रकारकापदच्छेदकरणा ॥ तानियतपदका अवश्यकरिकै यहअर्थकरणा ॥ अर्थात् ऐसेमनुष्योंकूं नरकविषे अवश्यकरिकैनिवासहोवैहै इति ॥ ४४ ॥ ※ ॥ तहां आपणेबाधवोंकीहिंसाविषेहैपरिअवसानजिसका ऐसाजोयुद्धकरणेकानिश्चयहै ॥ सोनिश्चयभीसर्वप्रकारतैं अत्यंतपापिष्ठहै ॥ तौं यहयुद्धरूपकर्म अत्यंतपापिष्ठहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ याअर्थके कहणेवासतै तायुद्धकेनिश्चयकरणेकरिकै आपणेकूंधिक्कारकरताहूआ सोअर्जुनकहेहै ॥

82

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अहोबतमहत्पापंकर्तुंव्यवसितावयं ॥ यद्राज्यसुखलोभेनहंतुंस्वजनमुद्यताः ॥४५॥

अहो । बत । महत्पापं । कर्तुं । व्यवसिताः । वयं । यत् । राज्यसुखलोभेन । हंतुं । स्वजनं । उद्यताः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

बडाआश्चर्यहै बडाखेदहै जोहम महान्पापकूं करणेवासतै निश्चयवालेहूएहैं जो हम राज्यसुखकेलोभकरिके आपणेबांधवोंकूं हननकरणेवासतै उद्यमवालेहूएहैं सोईहीं महान्पापहै ॥ ४५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् यहहमारेकूं बडाआश्चर्यहोताहै तथाबडाखेदहोताहै ॥ जोहम विचारवान्होइकेभी इसमहान्पापके करणेवासतै प्रयत्नवालेहू हैं ॥ सोकौनपापहै जिसकेकरणेवासते तुम प्रयत्नवालेहूएहो ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाक रिकै अर्जुनकहेहै ॥ (यदिति) राज्यकीप्राप्तिकरिकैप्राप्तहोणेहारा जोक्षणभंगुरविषयसुखहै ॥ ताविषयसुखविषे जो लंपटतारूपलोभहै ॥ तालोभकरिकै जोहम आपणेभ्रातापुत्रादिकबांधवोंकूं तीक्षणशस्त्रोंकरिकै हननकरणेवासतै उद्य मवालेहूएहैं ॥ सोईहीं महान्पापहै इसतैंपरेदूसराकोईपापहैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोतुमारीऐसीबुद्धिहै तौं युद्धकाअभि निवेशकरिकै तूं ईहां किसवासतैआयाहैं याप्रकारकावचन आपनैं कहणानहीं ॥ काहेतैं विचारतैंविनाहीं कार्यकूंकर णेहाराजोमैंहूं ॥ तिसहमनैं यहबहुत उद्धतपणा कर्याहै इति ॥ ४५ ॥ * ॥ शंका ॥ हेअर्जुन तुमारेकूं यद्यपि युद्धादिककोंतैंवैराग्यहूआहै ॥ तथापि भीमसेनादिकोंकूं तायुद्धकरणेकीबहुतउत्कटइच्छाहै ॥ यातैंबांधवोंकानाशतौं अव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्यकरिकैहोवैंगा ॥ पुनः तुमारेकूं क्याकार्यकरणेयोग्यहै ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकरिकै अर्जुनकहेहै ॥

यदिमामप्रतीकारमशस्त्रंशस्त्रपाणयः॥ धार्त्तराष्ट्रारणेहन्युस्तन्मेक्षेमतरंभवेत्॥ ४६॥

यदि। मां। अप्रतीकारं। अशस्त्रं। शस्त्रपाणयः। धार्त्तराष्ट्राः। रणे। हन्युः। तत्। मे। क्षेमतरं। भवेत्॥ इतिप०॥

जबी प्रतीकारतैंरहित तथाशस्त्रोंतैंरहित हमारेकूं यहंशस्त्रोंवाले धृतराष्ट्रकेपुत्रादिक इसयुद्धभूमिविषे हननक रैंगे सोहनन हमारा अत्यंतक्षेमरूप होवैंगा॥ ४६॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् आपणेप्राणोंकीरक्षावासतै करेहूएकीजाप्रतिक्रियाहै ताकानाम प्रतीकारहै ॥ जैसे आपणेप्राणोंकीरक्षाकरणेवासतै ताडनकरणेहारेपुरुषकूं जोताडनकरणाहै ताकानाम प्रतीकारहै ॥ ताप्रतीकारतैंरहितकानाम अप्रतीकारहै ॥ अथवा ॥ इनबांधवोंकूंमैंहननकरौंगा याप्रकारकेनिश्चयमात्रकरिकै प्राप्तभयाजोपापहै ॥ तापापकीनिवृत्तिकरणेहारा जोशरीरकेनाशतैंविना अन्यप्रायश्चित्तहै ताप्रायश्चित्तकानाम प्रतीकारहै॥ ताप्रतीकारतैं जोरहितहोवै ताकानामअप्रतीकारहै ॥ ऐसाअप्रतीकारजोमैंहूं ॥ याकारणतैंहीं मैं शस्त्रोंतैंरहितहूं ॥ ऐसेप्रतीकारतैंरहित तथाशस्त्रोंतैंरहित मेरेकूं जोकदाचित् शस्त्रहैंहाथविषेजिनोंके ऐसेयह धृतराष्ट्रकेदुर्योधनादिकपुत्र इसयुद्धभूमिविषे हननकरैंगे ॥ तौंसोहमाराहनन हमारा अत्यंतहितरूपहोवैंगा॥ काहेतैं अहिंसापरमोधर्मः इत्यादिकवचनोंकरिकैकथनकरयाजो स

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्वभूतप्राणीयोंकीअहिंसारूपधर्महै ॥ सोअहिंसारूपधर्म आपणेप्राणोंतैंभी उत्कृष्टहै ॥ काहेतैं इनप्रा...ोंकेधारणतैं अनेक
प्रकारकेपापकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और ताअहिंसाधर्मतैं कोईपाप उत्पन्नहोवैनहीं ॥ उलटा महान्पुण्यउत्पन्नहोवैहै ॥
यातैं इसजीवनकीअपेक्षाकरिकै सोहमारामरणहीं अत्यंतहितरूपहै ॥ और आपणेबांधवोंकेमारणेकेसंकल्पकरिकै
उत्पन्नभयाजोपापहै ॥ तापापकीनिवृत्तिकरणेहारा दूसराकोईप्रायश्चित्तहैनहीं ॥ किंतु यहहमारामरणहीं तापापकेनि
वृत्तिका प्रायश्चित्तहै ॥ याकारणतैंभी यहहमारामरणहीं हमारा अत्यंतहितरूपहै ॥ ईहांकिसीपुस्तकविषे (तन्मेप्रि
यतरंभवेत्) याप्रकारकापाठभीहोवैहै ॥ तापाठकाभी यहपूर्वउक्तअर्थहीं जानिलेणा ॥ अथवा ॥ (तन्मेक्षेमतरंभवेत्)
यावचनका इसप्रकारकाअर्थकरणा ॥ सोमरण हमारेकूं क्षेमकीप्राप्तिवासतैंहींहोवैंगा ॥ काहेतैंशास्त्रविषे क्षेमका यह
स्वरूप कथनकरयाहै ॥ अप्राप्तप्रापणंयोगःक्षेमस्तुस्थितरक्षणं ॥ अर्थयह ॥ अप्राप्तवस्तुकीजोप्राप्तिहै ताकानाम यो
गहै ॥ और पूर्वस्थितवस्तुकाजोरक्षणहै ताकानाम क्षेमहैइति ॥ और ...तैंभी जोअधिकक्षेमहोवै ताकानाम क्षेमत
रहै ॥ सोईहांप्रसंगविषे यहक्षेमतरहै ॥ आपणेकुलकेनाशकरणेतैंउत्पन्नहोणेहाराजोदोषहै ॥ तथा तादोषकारकै प्रा
प्तहोणेहारीजानरककीप्राप्तिहै ॥ तथा इसलोकविषेप्राप्तहोणेहारीजाअपकीर्त्तिहै ॥ इत्यादिकसर्वअनर्थोंकीनिवृत्ति
पूर्वक जोपूर्वकृतपुण्यकर्मोंकेनाशकाअभावहै सोईहींक्षेमतरहै ॥ सोक्षेमतर हमारेकूं इसमररणतैंहींप्राप्तहोवैंगा ॥ या
तैं इनबांधवोंकेसाथि युद्धकरणेतैं हमारामरणहींश्रेष्ठहै इति ॥ ४६ ॥ * ॥ तिसतैंअनंतर क्यावृत्तांतहोताभ
या ऐसीधृतराष्ट्रकीशंकाकरिकै संजयकहेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ संजयउवाच ॥ ॥ एवमुक्त्वार्जुनःसंख्येरथोपस्थउपाविशत् ॥
विसृज्यसशरंचापंशोकसंविग्नमानसः ॥ ४७ ॥

एँवं । उक्त्वाँ । अर्जुनः । संख्ये । रथोपस्थे । उपाँविशत् । विसृँज्य । सँशरं । चाँपं । शोकसंविग्नमानसः ॥ इतिप० ॥

हेधृतराष्ट्र शोकंकरिकैपीडितहैमनजिसका ऐसाअँर्जुन संग्रामविषे इसँप्रकारकावचन कहिंकरिकै शरंसहित धनुँषकूं परित्यार्गकरिकै रथंकेऊपरि बैठँताभया ॥ ४७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र आपणेबांधवोंकेविनाशरूपनिमित्ततैं उत्पन्नभयाजोशोकहै ॥ ताशोककरिकै पीडितहैमनजिसका ऐसासोअर्जुन तासंग्रामविषे कृष्णभगवान्केप्रति तापूर्वउक्तवचनकूंकहिकरिकै तथाशरसहितधनुषकापरित्यागकरिकै तारथकेऊपरि स्थितहोताभया इति ॥ ४७ ॥ इतिश्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीमत्स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥ १ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इदं श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतया गूढार्थदीपिकानाम्न्या भाषाटीकयासमेतायांश्रीमद्भगवद्गीतायां
प्रथमषट्कं श्रीकृष्णदासाङ्गजाभ्यांगङ्गाविष्णु-खेमराजगुप्ताभ्याम् मुम्बय्यां
स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" नाम्निमुद्रणयन्त्रालयेऽङ्कितम्।
संवत् १९४७ शके १८१२ खि०सन् १८९१

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायांप्रथमोऽध्यायः॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ अथ श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायांद्वितीयोध्यायः ॥ २ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ॐ श्रीगणेशायनमः॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ अथ द्वितीयाध्यायप्रारंभः ॥ तहां सर्वप्राणीयोंकीअहिंसा तथाभिक्षाअन्नकाभोजन यहहीं हमारा परमधर्महै ॥ याप्रकारकीबुद्धिकरिकै अर्जुनकोयुद्धतैंविमुखताकूंश्रवणकरिकै आपणेदुर्योधनादिकपुत्रोंकेराज्यकीअचलताकूंनिश्चयकरिकै स्वस्थहूआ है चित्तजिसका ऐसाजोधृतराष्ट्रहै ताधृतराष्ट्रकी हर्षकरिकैउत्पन्नभईजा तिसतैं अनंतर क्यावृत्तांतहोताभया याप्रकारकीआकांक्षाहै ॥ ताआकांक्षाकेनिवृत्तकरणेकीइच्छावान् सोसंजय ताधृतराष्ट्रकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ यहवार्त्ता वैशंपायन जनमेजयकेप्रतिकहेहै ॥

॥ संजयउवाच ॥ तंतथाकृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ॥ विषीदंतमिदंवाक्यमुवाचमधुसूदनः॥ १ ॥

। तं[द्वि] । तथा[१] । कृपया[२] । आविष्टं[३] । अश्रुपूर्णाकुलेक्षणं[२] । विषीदंतं[द्वि] । इदं[२] । वाक्यं[२] । उवाच[१] । मधुसूदनः । इतिपदच्छेदः ॥ हेधृतराष्ट्र पूर्वउक्त कृपानैं व्याप्तकऱ्याहूआ तथाअश्रुकरिकैपूर्णतथाआकुलहैनेत्रजिसके तथाविषादकूंप्राप्तहूआ ऐसाजोअर्जुनहैं ताकेप्रति श्रीकृष्णभगवान् यहवक्ष्यमाण वचन कहताभया ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ ॥ यहभीष्मदुर्योधनादिक हमारेसंबंधीहैं याप्रकारकाव्यामोहहैकारणजिसविषे ऐसाजोस्नेहविशेषहै ॥ ता स्नेहकानाम कृपाहै ॥ ताकृपानैं व्याप्तकऱ्याहूआजोअर्जुनहै ॥ ईहां (कृपयाविष्टं) इतनैंकहणेकरिकै अर्जुनविषे व्याप्ति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूपक्रियाका कर्मपणाकथनकऱ्या ॥ और तास्नेहरूपकृपाविषे ताऱ्याप्तिरूपक्रियाका कर्तापणाकथनकऱ्या ॥ ताकहणेक
रिकै ताकृपाविषे आगंतुकपणा निवृत्तकऱ्या ॥ ऐसीस्वभावसिद्धकृपानैं सोअर्जुनऱ्याप्तकऱ्याहै ॥ याकारणतैंहीं सोअ
र्जुन विषादकूंप्राप्तहूआहै ॥ तहां स्नेहकेविषयरूपजेआपणे बांधवहैं ॥ तिनबांधवोंकेनाशकोशंकाहैकारणजिसका ऐ
साजोशोकरूप चित्तऱ्याकुलीभावहै ताकानाम विषादहै ॥ ईहां (विषीदंतं) याशब्दकरिकै ताविषादविषे प्राप्ति
रूपक्रियाका कर्मपणा कथनकऱ्या ॥ और अर्जुनविषे ताप्राप्तिरूपक्रियाका कर्त्तापणा कथनकऱ्या ॥ ताकहणेकरिकै
तिसविषादविषे आगंतुकपणा सूचनकऱ्या ॥ कदाचित्उत्पन्नहोणेहारेपदार्थकूं आगंतुककहेहैं ॥ ऐसेआगंतुकवि
षादकेवशतैं अश्रुरूपजलकरिकैपूर्णहूएहैंनेत्रजिसके तथावस्तुकेदर्शनकीअसामर्थ्यतारूपआकुलताकरिकैयुक्तहैंनेत्र
जिसके ऐसाजोअर्जुनहै ताअर्जुनकेप्रति सो मधुसूदनभगवान् अनेकप्रकारकीयुक्तियोंसहित यहवक्ष्यमाणवचन
कहताभया ॥ ताअर्जुनकी सोभगवान् उपेक्षानहींकरताभया ॥ ईहां संजयनैं कृष्णभगवान्काजो (मधुसूदनः) यहना
मकथनकऱ्याहै॥ताकरिकै संजयनैं धृतराष्ट्रकेप्रति यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ मध्वाख्यंअसुरंसूदयतीतिमधुसूदनः॥अर्थयह॥
मधुनामाअसुरकूंजोनाशकरैहैं ताकूं मधुसूदनकहेहैं ॥ ऐसादुष्टोंकेसंहारकरणेहाराकृष्णभगवान् आपणेस्वभावकेअनुसार
ताअर्जुनकेप्रतिभी तुमारेदुर्योधनादिकदुष्टपुत्रोंकेहननकरणेकाहीं उपदेशकरैंगा ॥ अथवा आपणेमधुसूदननामसेसार्थ
ककरणेवासतै सोकृष्णभगवान् अर्जुनकूंनिमित्तमात्रकरिकै आपहीं तुमारेदुष्टपुत्रोंकूंहननकरैंगा॥यातैं तुमनैं आपणेपुत्रों
केजयकीआशा कदाचित्भी नहींकरणी इति ॥ १ ॥ ॥ अब ताकृष्णभगवान्केवचनका दोश्लोकोंकरिकै कथनकरेहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रीभगवानुवाच ॥ कुतस्त्वाकश्मलमिदंविषमेसमुप
स्थितं॥ अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्त्तिकरमर्जुन ॥ २ ॥

कुतः । त्वा । कश्मलं । इदं । विषमे । समुपस्थितं । अनार्यजुष्टं । अस्वर्ग्यं । अकीर्त्तिकरं । अर्जुन । इतिप० ॥ हेअर्जुन इसभययुक्तस्थानविषे तुमारेकूं यह कश्मल किंसहेतुतैं प्राप्तभयाहै कैसाहैसोकश्मल श्रेष्ठपुरुषोंकरिकैअसेवितहै तथास्वर्गकाविरोधीहै तथाअकीर्तिकरणेहाराहै ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥ टोका ॥ (श्रीभगवानुवाच) यावचनविषेस्थितजो भगवान्पदहै ॥ ताभगवान्पदका शास्त्रविषे यहअर्थकथनकर्याहै ॥ श्लोक ॥ ऐश्वर्यस्यसमग्रस्य धर्मस्ययशसःश्रियः॥ वैराग्यस्याथमोक्षस्य षण्णांभगइतींगना॥ अर्थयह ॥ संपूर्णजो ऐश्वर्यहै १ तथासंपूर्णजोधर्महै २तथासंपूर्णजोयशहै ३तथासंपूर्णजोश्रीहै ४ तथासंपूर्णजोवैराग्यहै५ तथासंपूर्णजोज्ञानहै ६ याषटोंकानाम भगहैइति॥ तेऐश्वर्यादिकषट्भग प्रतिबंधतैं रहित नित्यहींजिसविषेरहैं ताकानाम भगवान्है ॥ अथ वा भगवान्शब्दका यहअर्थहै ॥ श्लोक ॥ उत्पत्तिंचविनाशंच भूतानामागतिंगतिं॥ वेत्तिविद्यामविद्यांच सवाच्योभगवा निति ॥ अर्थयह ॥ जोसर्वज्ञपुरुष सर्वभूतोंकेउत्पत्तिकूं तथाताउत्पत्तिकेकारणकूं जानैहै ॥ तथा तिनसर्वभूतोंके ना शकूं तथातानाशकेकारणकूं जानैहै ॥ तथा जोसर्वज्ञपुरुष सर्वभूतोंकेसंपदारूपआगतिकूं तथासर्व भूतोंके आ पदारूपगतिकूं जानेहै ॥ तथा जोसर्वज्ञपुरुष विद्याकूं तथाअविद्याकूं जानेहै ॥ सोसर्वज्ञपुरुष भगवान् या नामक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रिकैकहणेयोग्यहैइति ॥ ऐसाश्रीकृष्णभगवान् अर्जुनकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया हेअर्जुन स्नेह रूप कृपा तथापूर्वउक्तविषाद तथाअश्रुपात यहतीनोंहैंकारणजिसके तथाशिष्टपुरुषोंकरिकैनिंदितहोणेतैंअत्यंतमलिन हैस्वरूपजिसका ऐसा जोयह युद्धरूपस्वधर्मतैंनिवृत्तिरूप कश्मलहै ॥ सोकश्मल इसयुद्धभूमिविषे सर्वक्षत्रियोंतैंश्रेष्ठतुमारेकूं किसहेतुतैंप्राप्तभयाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सोयुद्धरूपस्वधर्मतैंनिवृत्तिरूपकश्मल तुमारेकूं मोक्षकीइच्छारूपहेतुतैंप्राप्तभयाहै ॥ अथवा स्वर्गकी इच्छारूप हेतुतैं प्राप्तभयाहै ॥ अथवा कीर्त्तिकीइच्छारूपहेतुतैं प्राप्तभयाहै इति ॥ अब यातीनोंहेतुवोंकूं यथाक्रमतैं अनार्यजुष्टं अस्वर्ग्यं अकीर्तिकरं यातीनविशेषणोंकरिकै श्रीभगवान् निषेधकरैहै ॥ (अनार्यजुष्टं) इत्यादिकअर्धश्लोककरिकै ॥ हेअर्जुन आपणेवर्णआश्रमकेधर्मोंकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा मोक्षकी इच्छाकरणेहारे जेअशुद्धअंतःकरणवाले मुमुक्षुजनहैं ॥ ऐसेमुमुक्षुजनोंनैतौं यहस्वधर्मतैंनिवृत्तिरूपकश्मल कदाचित् भी सेवनकरणेयोग्यनहींहै ॥ और सर्वकर्मोंकेसंन्यासकाअधिकारीतौं शुद्धअंतःकरणवालाहींहोवैहै ॥ यहवार्त्ता आगेकथनकरैंगे ॥ यातैं मोक्षकीइच्छारूपहेतुतैं ताकश्मलकीप्राप्ति संभवैनहीं ॥ और यहस्वधर्मतैंनिवृत्तिरूपकश्मल स्वर्गकीप्राप्तिकरणेहारेधर्मकाविरोधीहै ॥ यातैं स्वर्गकीइच्छावान्पुरुषनैंभी सोकश्मल सेवनकरणेयोग्यनहींहै ॥ और सोकश्मल इसलोकविषे कीर्त्तिकाअभावकरणेहाराहै ॥ अथवा अपकीर्त्तिकरणेहाराहै ॥ यातैं इसलोककेकीर्तिकीइच्छावान्पुरुषोंनैंभी सोकश्मल सेवनकरणेयोग्यनहींहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ मोक्षकीइच्छावान्पुरुषोंनैं तथास्वर्गकीइच्छावान्पुरुषोंनैं तथाकीर्त्तिकीइच्छावान्पुरुषोंनैं यहस्वधर्मतैंनिवृत्तिरूपकश्मल सर्वथा परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ और

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तूंतौं मोक्षकी तथास्वर्गकी तथाकोर्त्तिकी इच्छावान्हूआभी इसकश्मलकूं सेवनकरताहै ॥ यातैं यहतुमारा बहुतअनुचितव्यवहारहै इति ॥ २ ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् आपणेबांधवोंकीसेनाकेदेखणेकरिकैउत्पन्नभयाजोअधैर्यहै ॥ ताअधैर्यकेवशतैं धनुष्मात्रकूंभीधारणकरणेविषेअसमर्थजोमैंहूं ॥ तिसहमारेकूं अबी क्याकरणेयोग्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै ॥

क्लैब्यंमास्मगमःपार्थनैतत्त्वय्युपपद्यते॥क्षुद्रंहृदयदौर्बल्यंत्यक्त्वोत्तिष्ठपरंतप ॥३॥

क्लैब्यं । मास्मगमः । पार्थ । नैतत् । त्वयि । उपपद्यते । क्षुद्रं । हृदयदौर्बल्यं । त्यक्त्वा । उत्तिष्ठ । परंतप ॥ इतिपद०

हेपृथाकेपुत्र तूं क्लीबभावकूं मतप्राप्तहोवो तैंअर्जुनविषे यहक्लीबभाव नहीं बनिसकताहै हेपरंतप याक्षुद्र हृदयकेदौर्बल्यकूं परित्यागकरिकै तूंयुद्धवासतै उठिखडाहोउ ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेपृथाकापुत्र ओजतेजआदिकोंकाभंगरूपजोअधैर्यहै ॥ ताअधैर्यरूपजोक्लीबभावहै ॥ ताक्लीबभावकूं तूं मतप्राप्तहोउ ॥ ईहां (हेपार्थ) यासंबोधनकरिकै भगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ पृथामातानैं देवताकाआराधनकरिकै तादेवताकेप्रसादतैं तुमारेकूंपायाथा ॥ यातैं तुमारेविषेबलकीअधिकता अत्यंतप्रसिद्धहै ॥ ऐसा पृथाकापुत्रतूं इसक्लीबभावकेयोग्यनहींहै ॥ अब अर्जुनपणेकरिकैभी ताक्लीबभावकीअयोग्यता निरूपणकरेहैं ॥ (नैतदिति) साक्षात्महेश्वरकेसाथिभी युद्धकरणेहारा तथासर्वलोकविषेप्रसिद्धमहान्प्रभाववाला ऐसाजोतूं अर्जुनहैं ॥ तिसतुमारेविषे यह अधैर्यरूपक्लीबभाव कदाचित्भी बणतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ (नचशक्नोम्यवस्थातुंभ्रमतीवचमे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मनः) अर्थयह ॥ मेरामनभ्रमणकरताहै यातैं मैं आपणेशरीरकेस्थितकरणेविषेभी समर्थनहींहूं ॥ यह आपणावृत्तां त पूर्वहीं मैंनैं आपकेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ यातैं अबोहमारेकूं आप वारंवार किसवासतैकहतेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशं काकेहूए श्रीभगवन्कहेहै (क्षुद्रंइति) हेअर्जुन जिसकूं हृदयकादौर्बल्यकहेहैं ऐसाजोमनकाभ्रमणादिरूपअधैर्यहै ॥ सोअधैर्य स्वाश्रयपुरुषकेक्षुद्रपणेकाकारणहोणैतैं क्षुद्ररूपहै ॥ अथवा सोभ्रमणादिरूपअधैर्य सुगमहींनिवृत्तकऱ्याजावै है ॥ यातैं क्षुद्ररूपहै ॥ ऐसेक्षुद्रअधैर्यकूं विचारकेबलतैं शीघ्रहीं परित्यागकरिकै इसस्वधर्मरूपयुद्धकेकरणेवासतै तुम सावधानहोवो ॥ ईहां (हेपरंतप) याअर्जुनकेसंबोधनकहणेकरिकै भगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यह अर्थ सूचनकऱ्या ॥ परंशत्रुंतापयतीतिपरंतपः ॥ अर्थयह ॥ आपणेशत्रुवोंकूं जोसंतापकीप्राप्तिकरै ताकानाम परंतपहै ॥ ऐसापरंतप होइकैंभी अत्यंतक्षुद्रअधैर्यरूपशत्रुकानाशनहींकरणा यहबहुतआश्चर्यकीवार्त्ताहै ॥ यातैं आपणे परंतपनामकेसार्थ ककरणेवासतै तुमारेंकूं ताअधैर्यरूपशत्रुकानाश अवश्यकरणेयोग्यहै इति ॥ ३ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसयु द्धका जोमैं परित्यागकरताहूं ॥ सोकोई शोकमोहादिकोंके वशतैं नहींकरताहूं ॥ किंतु इसयुद्धविषे धर्मरूपताहैनही उल टा अधर्मरूपताहै ॥ याकारणतैं मैं इसयुद्धकापरित्यागकरताहूं ॥ याप्रकारकेअर्जुनकेअभिप्रायंकूंसंजयकथनकरेहै ॥

॥ अर्जुनउवाच ॥ ॥ कथंभीष्ममहंसंख्येद्रोणंचमधु
सूदन ॥ इषुभिःप्रतियोत्स्यामिपूजार्हावरिसूदन ॥ ४ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कथं । भीष्मं । अहंसंख्ये । द्रोणं । च । मधुसूदन । इषुभिः । प्रतियोत्स्यामि । पूजार्हौ । अरिसूदन ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेमधुसूदन हेअरिसूदन इसरणभूमिविषे मैं अर्जुन पूजाकेयोग्य भीष्मकूं तथा द्रोणकूं
बाणोंकरिकै किसप्रकार हननकरौंगा किंतु नहीहननकरौंगा ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् हमारेकुलविषेवृद्ध तथागुणोंकरिकैवृद्ध जोयहभीष्मपितामहहै ॥ तथा धनुर्विद्याकागुरु जोयह द्रोणाचार्यहै ॥ यहदोनों आपणेपिताकीन्यांई पुष्पचंदनअक्षतादिकोंकरिकै पूजनकरणेयोग्यहै ॥ ऐसेभीष्मद्रोणादि कवृद्धोंकेसाथि क्रीडास्थानविषे आनंदकीप्राप्तिवासतै लीलायुद्धकरणाभी हमारेकूंउचितनहीहै ॥ तौं इसरणभूमिवि षेतीक्षणशस्त्रोंकरिकै तिनभीष्मद्रोणादिकोंकाहननकरणा हमारेकूं किसप्रकार उचितहोवैंगा ॥ किंतु तिनभोष्मा दिकोंकाहननकरणा हमारेकूं उचितनहीहै ॥ ईहांयहतात्पर्यहै ॥ यहदुर्योधनादिक भीष्मपितामहकूं तथाद्रोणाचार्यकूं छोडिकरिकैतौं हमारेसाथि युद्धकरैंगेनहीं ॥ किंतु भोष्मद्रोणकूंसन्मुखकरिकैहीं हमारेसाथि युद्धकरैंगे ॥ तहां भीष्म द्रोणाचार्यकेसाथियुद्धकरणा धर्मतौंहैनहीं ॥ काहेतैं वेदकरिकैविधानकऱ्याहूआ जोफलवान् अर्थहै ताकानाम धर्महै ॥ याप्रकारकाधर्मकालक्षण जैसे भीष्मद्रोणादिकोंकेपूजनविषेघटेहै ॥ तैसे तिनोंकेसाथि युद्धकरणेविषे सोलक्षण घटतानहीं ॥ यातैं सोयुद्ध धर्मरूपनहींहै ॥ शंका ॥ हेअर्जुन जैसे वृद्धपुरुषोंकेसाथियुद्धकरणेका शास्त्रविषेविधाननहींकऱ्याहै ॥ यातैं सोयुद्धविषे धर्मरूपतानहींसंभवती ॥ तैसे तायुद्धका शास्त्रविषेनिषेधभीतौंनहींकरयाहै ॥ यातैं तायुद्धविषे अधर्म रूपताभीनहीसंभवती ॥ शास्त्रकरिकैनिषिद्धही अधर्महोवैहै ॥ समाधान ॥ हेभगवन् शास्त्रविषेयहकह्याहै ॥ ॥ श्लो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क ॥ गुरुंहुंकृत्यतुंकृत्य वप्रान्निर्जित्यवादतः ॥ श्मशानेजायतेवृक्षः कंकगृध्रोपसेवितः ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष आपणेगु
रुकेप्रति हुंकारशब्दकहेहै ॥ तथा तुंकारशब्दकहेहै ॥ तथा साधुब्राह्मणोंकूं विवादतैंजयकरेहै ॥ सोपुरुष मरिकरिकै
श्मशानभूमिविषे कंकगृध्रआदिकपक्षीयोंकरिकैसेवित वृक्षशरीरकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ इत्यादिकशास्त्रोंकेवचनोंनैं शब्दमात्र
करिकैभी गुरुकाद्रोह निषेधकऱ्याहै ॥ जबी शब्दमात्रकरिकैगुरुकाद्रोहभी अधर्मरूपहूआ॥ तबीतिनभीष्मद्रोणादिकगुरु
वोंकेसाथि तोक्षणशस्त्रोंकरिकैयुद्धकरणा अधर्मरूपहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ ईहां (हेमधुसूदन हेअरिसूदन) यहदोसं
बोधन भगवान्के जोअर्जुननैंकहेहैं ॥ तिनदोनोंकाअर्थ एकहीहै ॥ काहेतैं मधुनामाअसुरकूंजोहननकरे
है ताकूं मधुसूदनकहेहैं ॥ और शत्रुरूपअरियोंकूंजोहननकरेहै ताकूं अरिसूदनकहेहैं ॥ यातैं एकवारकेहहूएअर्थका
पुनः कथनकरणेविषे यद्यपि अर्जुनकूं पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तथापि सोअर्जुन तिसकालविषे शोककरिकै
व्याकुलथा ॥ यातैं ताअर्जुनकूं पूर्वउत्तरअर्थकास्मरणरह्यानहीं यातैं पुनरुक्तिदोषकोप्राप्तिहोवैनहीं ॥ स्वस्थचित्तवाले
पुरुषविषेहीं सोपुनरुक्तिदोषदीयाजावैहै ॥ अथवा मधुसूदन अरिसूदन यादो संबोधनोंकरिकै अर्जुननैं भगवानकेप्र
ति यह अर्थ सूचनकरया ॥ हेभगवन् आपभीतौं मधुअसुरादिकशत्रुवोंकूंहीं हननकरतेहो ॥ आपणेमित्रोंकूं हननकरते
नहीं ॥ यातैं पूजाकेयोग्यभीष्मद्रोणादिकगुरुवोंकूं तुम हननकरो याप्रकारकावचनकहणा तुमारेकूंउचितनहींहैइति
॥ ४ ॥ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन भीष्मपितामह द्रोणाचार्य कृपाचार्य इत्यादिकोंविषे जापूज्यताहै ॥ सापूज्यतागुरुपणे
करिकैहै ॥ ता पूज्यतागुरुपणेतैंविना तिनोंकीपूज्यताविषे दूसराकोईकारणहैनहीं ॥ सोगुरुपणा यद्यपि पूर्वकालवि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by eGangotri

षे तिनभीष्मद्रोणादिकोंविषेरह्याथा ॥ तथापि इसकालविषे तिनभीष्मद्रोणादिकोंकूं गुरुरूपकरिकैअंगाकारकरणा तुमारेकूं उचितनहींहै ॥ काहेतैं धर्मशास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ श्लोक ॥ गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः ॥ उत्पथं प्रतिपन्नस्य परित्यागोविधीयते ॥ अर्थयह ॥ जोगुरु अहंकारादिकदोषोंकरिकैउन्मत्तभावकूंप्राप्तभयाहै ॥ तथा जोगुरु शास्त्रविहितकरणेयोग्यअर्थकूं तथाशास्त्रनिषिद्धअकरणेयोग्यअर्थकूं जाणतानहीं ॥ तथा जोगुरु शास्त्रनिषिद्धमार्ग विषेप्रवृत्तहोवैहै ऐसेगुरुका शिष्यनैं परित्यागहीं करणाइति ॥ यहसर्वलक्षण इनभीष्मद्रोणाचार्यादिकोंविषेघटेहै ॥ काहेतैं यहभीष्मद्रोणादिक युद्धकेगर्वकरिकै महान्उन्मत्तभावकूंप्राप्तहूएहैं ॥ और इनभीष्मद्रोणादिकोंनैं कपटकरिकैराज्यकाग्रहणकरयाहै ॥ तथा आपणेशिष्योंकेसाथिद्रोहकरयाहै ॥ यातैं यहभीष्मद्रोणादिक कार्य अकार्यकेज्ञानतैंभोरहितहैं ॥ याकारणतैंहीं शास्त्रनिषिद्धमार्गविषेवर्त्तणेहारेहैं ॥ ऐसेभोष्मद्रोणादिकोंका हननकरणाहींश्रेष्ठहै ॥ ऐसेभगवान्कोशंकाकेहूए अर्जुन कहेहै ॥

गुरूनहत्वाहिमहानुभावान्श्रेयोभोक्तुंभैक्ष्यमपीहलोके ॥हत्वा
र्थकामांस्तुगुरूनिहैवभुंजीयभोगान्रुधिरप्रदिग्धान् ॥ ५ ॥

गुरून्[3]। अहत्वा[4]। हि[1]। महानुभावान्[2]। श्रेयः[5]। भोक्तुं[6]। भैक्ष्यं[7]। अपि[8]। इह[9]। लोके[10]। हत्वा[14]। अर्थकामान्[11]। तु[12]। गुरून्[13] इह[15]। एव[16]। भुंजीय[17]। भोगान्[18]। रुधिरप्रदिग्धान्[19]। इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेभगवन् जिसकारणतैं महानुभाव गुरुवोंकूं नहननकरिकै इस लोकविषे भिक्षाअन्नकूं भोजनकरणा भी श्रेष्ठहैइन अर्थकामवाले भी गुरुवोंकूं हननकरिकैं मै इसलोकविषे हीं रुधिरलिप्त विषयोंकूं भोगोंगा ॥ ५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् भीष्मद्रोणाचार्यादिकगुरुवोंकूंनहननकरिकै हमारा परलोकतौं अवश्यकरिकै सिद्धहोवैंगा ॥ और इसलोकविषेतौं तिनभीष्मद्रोणादिकगुरुवोंकूंनहननकरिकै राज्यतैंरहितहूएहम राजावोंकूं शास्त्रनिषिद्ध भिक्षाअन्न भी भोजनकरणेंकूं अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ परंतु तिनभोष्मद्रोणादिकगुरुवोंकूंहननकरिकै हमारेकूं यहराज्यभोश्रेष्ठनहींहै ॥ काहेतैं शास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ श्लोक ॥ अकृत्वापरसंतापमगत्वाखलमंदिरं ॥ अक्लेशयित्वाचात्मानंयदल्पमपितद्बहु ॥ अर्थयह ॥ दूसरेप्राणीयोंकूंसंतापकीप्राप्तिनकरिकै तथावेदविरुद्धनास्तिकोंकेमंदिरकूंनजाइकरिकै तथाआपणेंआत्माकूं क्लेशकीप्राप्तिनहींकरिकै इसपुरुषकूं जोअल्पपदार्थकीभीप्राप्तिहोवै ॥ साअल्पपदार्थकीप्राप्तिभी इसपुरुषनैं बहुतकरिकै मानणीइति ॥ यातैं इनभोष्मद्रोणादिकोंकेमारणेकरिकैप्राप्तहोणेहाराजोराज्यहै ॥ ताराज्यतैं हम इनभोष्मादिकोंकूंन मारिकै या भिक्षान्नकूंहीं बहुतकरिकैमानतेहैं ॥ यहसर्वअर्थ अर्जुननैं (हि) याशब्दकरिकै सूचनकर्या ॥ शंका ॥ हे अर्जुन गुरोरप्यवलिप्तस्य यापूर्वउक्तवचनकरिकै इनभोष्मद्रोणादिकें विषे गुरुपणेकाअभाव हम कथन करिआयेहैं ॥ यातैं वारंवार तूं इनोंविषेगुरुबुद्धि किसवासतै करताहैं ॥ ऐसोभगवान्कोशंकाकेहूए सो अर्जुनकहेहै ॥ (महानुभावानिति) हेभगवन् श्रवण अध्ययन तप आचार इत्यादिकश्रेष्ठगुणोंकरिकै महान्हैप्रभावजिनोंका ऐसेजे यहभीष्मद्रोणादिकहैं ॥ जिनभीष्मादिकोंनैं कालकामादिकभी आपणेवशकरेहैं ॥ ऐसेमहान्पुण्यवालेभीष्मादिकों

102

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कूं पूर्वउक्तक्षुद्रपापकर्मका स्पर्शमात्रभीहोवैनहीं ॥ यातैं यत्किंचित् अनुचितकर्मकूंदेखिकरिकै ऐसेमहानुभावपुरुषोंवि-
षे गुरुत्वबुद्धिकापरित्यागकरणा हमारेकूं योग्यनहींहै अथवा (हिमहानुभावान्) यहएकहींपदहै ॥ ताकायह
अर्थकरणा ॥ हिमंजाड्यमपहंतीति हिमहाआदित्योअग्निर्वा तस्येवअनुभावःसामर्थ्ययेषां ते हिमहानुभावाःतान्
॥ अर्थयह ॥ जडतारूपजोहिमहै ॥ ताहिमकूं जोनाशकरै ताकानाम हिमहाहै ॥ ऐसा सूर्यभगवान्है अथवा अग्निहै ॥
तासूर्यभगवान्के तथाअग्निके समानहैसामर्थ्यजिनोंका तिनोंकानाम हिमहानुभावहै ॥ ऐसेअतितेजस्वीभीष्मद्रोणा
दिकोकूं ते पूर्वउक्तक्षुद्रपाप दोषकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै ॥ श्लोक ॥ धर्मव्यतिक्रमो
दृष्टईश्वराणांचसाहसं ॥ तेजीयसांनदोषायवन्हेःसर्वभुजोयथा ॥ अर्थयह ॥ ईश्वरपुरुषोंका ॥ शीघ्रहीं धर्ममर्यादाकाउ
ल्लंघन देखणेविषेआवताहैं ॥ सोधर्ममर्यादाकाउल्लंघन तिनतेजस्वीपुरुषोंकूं दोषकीप्राप्तिवासतै होवैनहीं जैसेशुद्धअ
शुद्धसर्वपदार्थोंकूंभक्षणकरणेहारा जोअग्निहै ॥ तिसअग्निकूंसोअशुद्धवस्तुकाभक्षणदोषकीप्राप्तिवासतै होवैनहींइति
॥ तैसे इनभीष्मद्रोणादिकतेजस्वीपुरुषोंकूं तेपूर्वउक्तअनुचितकर्म दोषकीप्राप्तिवासतै होवैनही ॥ शंका ॥ हेअर्जुन
यहभीष्मद्रोणादिक जबी आपणेअर्थकेलोभकरिकै इसयुद्धविषेप्रवृत्तहोवैंगे ॥ तबी वेचाहैआपणाआत्माजिनोंनैं ऐ
सेइनभीष्मद्रोणादिकोंविषे सोपूर्वउक्तमहात्म किसप्रकारसभवैंगा ॥ यहवार्त्ता भीष्मपितामहनैं आपही युधिष्ठिरके
प्रति कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ अर्थस्यपुरुषोदासोदासस्त्वर्थोनकस्यचित् ॥ इतिसत्यंमहाराजबद्धोस्म्यर्थेनकौ
रवैः ॥ अर्थयह ॥ हेमहाराजयुधिष्ठिर यहपुरुष आपणेअर्थकाहीदासहोवैहै ॥ और सोअर्थ किसीभीपुरुषका दासहोता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नही यहजोवार्ता शास्त्रविषेकहीहै ॥ सावार्ता सत्यहै ॥ याकारणतैंहीं मैं आपणेअर्थकेलोभकरिकै इनकौरवोंकेसा थिबांध्याहूआहूंइति ॥ यातैं अर्थकेलोभवालेइनभीष्मद्रोणादिकोंविषे सोपूर्वउक्तमहात्म संभवतानही ॥ ऐसोभगवान्कीशंकाकेहूए सोअर्जुन कहेहै (इत्येति) हेभगवन् तेभीष्मद्रोणादिक यद्यपि अर्थकीकामनावालेहैं तथापि तेभीष्मद्रोणादिक हमाराअपेक्षाकरिकैतौं गुरुहींहैं यहअर्थ अर्जुननैं पुनःगुरुशब्दकेकथनकरिकै सूचनकरया ॥ ऐसेअर्थकामनावालेभी गुरुवोंकूं हननकरिकै मैं केवल विषयोंकूंहींभोगैंगा ॥ तागुरुवोंकेमारणेकरिकै मैं मोक्षकूतौंप्राप्तहोवौंगानहीं ॥ तेविषयभोगभी केवल इसलोकविषेहीं हमारेकूं प्राप्तहोवैंगे ॥ परलोकविषे तेविषयभोग हमारेकूं प्राप्तहोवैंगेनहीं ॥ इसलोकविषेभी श्रेष्ठपुरुषोकरिकैअनिंदित तेविषयभोग हमारेकूं प्राप्तनहीहोवैंगे ॥ किंतु अयशरूपोरुधिरकरिकैव्याप्तहोणेतैं अत्यंतनिंदित तेविषयभोग हमारेकूं प्राप्तहोवैंगे ॥ तात्पर्ययह ॥ इनभीष्मद्रोणादिकगुरुवोंकेमारणेकरिकै जबीइसलोकविषेभी हमारेकूं इसप्रकारकादुःखहोवैंगा ॥ तबी परलोककेदुःखका मैं क्यावर्णनकरौं ॥ अथवा (अर्थकामान्) यहविषयरूपभोगोंका विशेषणजानणा ॥ तापक्षविषेयहअर्थकरणा ॥ इनभीष्मद्रोणांदिकगुरुवोंकूंहननकरिकै मैं केवल अर्थकामरूपविषयोंकूंही भोगौंगा ॥ परंतु तिनोंकेमारणेकरिकै हमारेकूं कोईधर्मकी तथामोक्षकी प्राप्तिहोवैंगीनहीं इति ॥ ५ ॥ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन भिक्षाअन्नकाभोजनकरणा क्षत्रियोंकूं शास्त्रकरिकैनिषिद्धहै ॥ और युद्धकरणातौं क्षत्रियोंकूं शास्त्रकरिकैविधानकरयाहै ॥ यातैं स्वधर्महोणेतैं युद्धही तुमारेकूं श्रेयकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ ऐसीभगवान्काशंकाकेहूए अर्जुनकहेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नचैतद्विद्मःकतरन्नोगरीयोयद्वाजयेमयदिवानोजयेयुः ॥ यान
वहत्वानाजिजीविषामस्तवस्थिताःप्रमुखेधार्त्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥

नच । एतत् । विद्मः । कतरत् । नः । गरीयः । यद्वा । जयेम । यदिवा । नः । जयेयुः । यान् । एव ।
हत्वा । न । जिजीविषामः । ते । अवस्थिताः । प्रमुखे । धार्त्तराष्ट्राः ॥ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेभगवान् हमारेकूं भिक्षायुद्धदोनोंकेमध्यविषे कौनधर्म श्रेष्ठहै इसवार्त्ताकू हम नहीं जानतेहैं औरयुद्धविषे प्रवृत्तहूएभी क्यां हम जीतेंगे अथवा हमारेकूं यहकौरव जीतेंगे ॥ किंवा जिनभीष्मादिक बांधवोंकूंहननेक रिकै हम जीवनेकीभीइच्छा नहींकरतेहैं ते भीष्मद्रोणादिकबांधव हीं हमारेसन्मुख स्थितहूएहैं ॥६॥ इतिप०

॥ टीका ॥ हेभगवन् भिक्षाअन्नकाभोजन तथायुद्ध यादोनोंधर्मोविषे हमारेकूं कौनधर्म श्रेष्ठहै ॥ क्या हिंसातैंरहितहो णेतैं भिक्षाकाअन्नहीं श्रेष्ठहै ॥ अथवा स्वधर्महोणेतैं युद्धहीं श्रेष्ठहै ॥ यावार्त्ताकूं हम जानिसकतेनहीं ॥ शंका ॥ हेअ र्जुन भिक्षाअन्नकाभोजन तथायुद्ध यादोनोंधर्मोविषे स्वधर्महोणेतैं युद्धहीं तुमारेकूं श्रेष्ठहै ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाके हूए अर्जुनकेहै ॥ (यद्वेति) हेभगवन् जोकदाचित् हमयुद्धविषेप्रवृत्तभीहोवैं ॥ तौंभी हमहीं इनभीष्मद्रोणादिको कूंजयकरैंगे अथवा यहभीष्मद्रोणादिकहीं हमारेकूं जयकरैंगे ॥ इसवार्ताकूंभी हम जाणतेनहीं ॥ जोकदाचित् यहभीष्मद्रोणादिकहीं हमारेकूं जीतैंगे ॥ तौं अंतविषे हमारेकूं भिक्षामागिकैहीं भोजनकरणापडेगा ॥ अथवा हमारा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मरणहोवैंगा ॥ इनदोनोंवार्त्तावोंविषे एकवार्त्तातौं अवश्यकरिकैहोवैंगी ॥ यातैं तायुद्धतैंप्रथमहीं भिक्षामागिकैभोजन करणा हमारेकूंश्रेष्ठहै ॥ शंका ॥ हेअर्जुन हमारा जयहोवैंगा अथवा इनभोष्मद्रोणादिकोंका जयहोवैंगा याप्रकारका संशय तूं किसवासतैकरताहैं ॥ मैंकृष्णभगवान्तुमारीसहायताविषेहूं यातैं तुमाराहींनिश्चयकरिकैजयहोवैंगा ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहूए अर्जुनकहेहै (यानेवेति) हेभगवन् जोकदाचित् आपकीसहायताकरिकै हमारा जयभी होवै ॥ तौंभी सोजय अंततैं हमारा पराजयहीहै ॥ काहेतैं जिनभीष्मद्रोणादिकबांधवोंकूंहननकरिकै हम आपणेजीवनमात्रकीभीइच्छानहींकरते ॥ तौं तिनोंकूंहननकरिकै हम विषयभोगोंकीइच्छा कैसेकरैंगे किंतु नहीकरैंगे ॥ तेभोष्मद्रोणादिकहीं हम युद्धविषेमरैंगे याप्रकारकयानिश्चयकरिकै हमारे सन्मुखस्थितहूएहैं ॥ ऐसेप्रियबांधवोंकूं नाशकरिकै जोजयहोणाहै ॥ सोजयभी पराजयरूपहीहै ॥ यातैं भिक्षाअन्नकेभोजन तैंइसयुद्धविषेश्रेष्ठतानहीहैइति ॥ ईहां किसी टीकाकारनैं (नचैतद्विद्मःकतरन्नोगरीयो) याप्रथमपादका यह अर्थ कथनकऱ्याहै ॥ हमारेमध्यविषे कौनसैना अधिक है यावार्त्ताकूंहमजानते नहीं ॥ सोयहअर्थसंभवतानहीं ॥ काहेतैं इसश्लोकतैंअगलेश्लोकविषे (पृच्छामित्वांधर्मसंमूढचेताः) यावचनकरिकै अर्जुननै धर्मविषेहीसंशयदिखायाहै ॥ तावचनकेअनुसार इसश्लोकविषेभी भिक्षाअन्न युद्ध यादोनोंधर्मोंविषेही अर्जुनकासंशयसंभवैहै ॥ सैनाकीअधिकताविषे संशयसंभवैनहीं ॥ किंवा (नचैतद्विद्मः) यावचनकरिकै जो सैनाकेअधिकताकासंशय अंगीकारकरोये ॥ तौं तासैनाकेअधिकताकेसंशयकरिकैही जयकासंशयसिद्धहोइसकेहै ॥ यातैं (यद्वाजयेमयदिवानोजयेयुः) याद्वितीयपादकरिकैकथनकऱ्याजो जयकासंशयहै सोव्यर्थहोवैंगा ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

याकारणतैं प्रथमव्याख्यानहीं बहुतटीकाकारोंकूंसंमतहै इति ॥ ६ ॥ ॥ ईहां पूर्वग्रंथकरिकै संसारकेदोषों का निरूपणकऱ्या ॥ ताकरिकै अधिकारीपुरुषकेविशेषण कथनकऱ्ये ॥ तहां (नचश्रेयोनुपश्यामि हत्वास्वजनमाहवे) ३१ इसवचनविषे रणविषेमरणकूंप्राप्तहूएशूरवीरकूं योगयुक्तसंन्यासीयोंकेसमान योगक्षेमकीप्राप्ती कथनकरी ॥ ता कहणेकरिकै अन्यत्श्रेयोऽन्यदुतैवप्रेयः याकठवल्लीश्रुतिकरिकैसिद्ध मोक्षरूपश्रेयकाकथनकऱ्या तामोक्षरूपश्रेयतैइत रपदार्थोविषे अर्थतैं अश्रेयरूपताकथनकरी ॥ ताकहणेकरिकै नित्यअनित्यवस्तुकाविवेकदिखाया ॥ और (नकांक्षे विजयं कृष्ण) ३२ इसश्लोककरिकै इसलोककेविषयजन्यसुखतैंवैराग्यदिखाया और (अपित्रैलोक्यराज्यस्येहेतोः) ३५ यावचनकरिकै स्वर्गादिकलोकोंकेविषयजन्यसुखतैंवैराग्यदिखाया ॥ और (नरकेनियतंवासोभवति) ४४ यावचनकरिकै यास्थूलशरीरतैंभिन्नकरिकै आत्माकास्वरूपदिखाया ॥ और (किंनोराज्येनगोविंद) ३२ यावचनक करिकै मनकानिग्रहरूपशम दिखाया ॥ और (किंभोगैर्जीवितेनवा) ३२ यावचनकरिकै इंद्रियोंकानिग्रहरूपदम दि खाया ॥ और (यद्यप्येतेनपश्यंति) ३८ यावचनकरिकै निर्लोभतादिखाई ॥ और (तन्मेक्षेमतरंभवेत्) ४६ यावच नकरिकै तितिक्षादिखाई ॥ इसप्रकार यागीताशास्त्रकेप्रथमअध्यायकाअर्थ संन्यासकेसाधनोकासूचनकरेहै ॥ और इसद्वितीयअध्यायविषेतौं (श्रेयोभोक्तुंभैक्ष्यपीहलोके) ५यावचनकरिकै भिक्षाअन्नकेभोजनकरिकैउपलक्षितसंन्यासका निरूपणकऱ्या ॥ अब ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै श्रुतिनैंकथनकऱ्याजो ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीप शिष्यकागमनहै ता का निरूपणकरेहैं ॥ काहेतैं जिसपुरुषनैं संसारकेसर्वदोषोंकूंजान्याहै ॥ तथा जो जोपुरुष इसलोकके तथापरलोकके वि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

षयजन्यसुखोंतैं अत्यंतवैराग्यकूंप्राप्तभयाहै ॥ तिसतैंअनंतर जोपुरुष विधिपूर्वक ब्रह्मवेत्तागुरुकेशरणकूंप्राप्तभयाहै ॥ ऐसेसाधनसंपन्नपुरुषकूंहीं ब्रह्मविद्याकेग्रहणकरणेकाअधिकारहै ॥ तहां पूर्वग्रंथविषे भीष्मद्रोणादिकोंकेसंकटकेवशतैं व्युत्थायाऽथभिक्षाचर्यंचरंति याश्रुतिकरिकैसिद्धभिक्षाचर्याविषे अर्जुनकीअभिलाषादिखाई ॥ अब विधिपूर्वकब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीप अर्जुनकागमनभी तिनभीष्मद्रोणादिकोंकेसंकटकेव्याजकरिकैहीं निरूपणकरेहैं ॥

108

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावःपृच्छामित्वांधर्मसंमूढचेताः ॥ यच्छ्रे
यःस्यान्निश्चितंब्रूहितन्मेशिष्यस्तेहंशाधिमांत्वांप्रपन्नं ॥ ७ ॥

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः । पृच्छामि । त्वां । धर्मसंमूढचेताः । यत् । श्रेयः । स्यात् । निश्चितं ।
ब्रूहि । तत् । मे । शिष्यः । ते । अहं । शाधि । मां । त्वां । प्रपन्नं ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेभगवन् कार्पण्यदोषकरिकैतिरस्कारकूंप्राप्तहूआहैस्वभावजिसका तथाधर्मविषयकसंशयकरिकैव्याप्तहूआ हैचित्तजिसका ऐसामैंअर्जुन तुमारेप्रति श्रेय पूछताहूं यातैं जोंनिश्चित श्रेयहोवै सोंहमारेप्रति कथनकरो मैं तुमारा शिष्यहूं यातैं तुमारे शरणकूंप्राप्तहूए हमारेकूं आप शिक्षाकरो ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ इसलोकविषे जोपुरुष यत्किंचित्धनकेहानिकूंभी नहींसहारिसकेहै तापुरुषकूं कृपणकहेहैं ॥ ताकृपणपुरुषकेसमानहोणेतैं मोक्षरूपपुरुषार्थकोप्राप्तितैंरहित सर्वअनात्मवेत्ताअज्ञानीपुरुष कृपणहैं ॥ तहांश्रुति ॥ योवाएतदक्षरं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गार्ग्यविदित्वाऽस्माल्लोकात्प्रैतिसकृपणः ॥ अर्थयह ॥ हेगार्गी अधिकारीमनुष्यशरीरकूंप्राप्तहोइकै जोपुरुष इसअक्षरआत्माकूंनजानिकरिकै इसलोकतैं जावैहै ॥ सोअज्ञानीपुरुष कृपणहींहैइति ॥ तहांस्मृति ॥ कृपणोऽजितेंद्रियः ॥ अर्थयह ॥ जिसपुरुषनैआपणेइंद्रियोंकूंनहींजीत्याहै ॥ सोपुरुष कृपणहींहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंकेप्रमाणतैं अज्ञानीपुरुषोंविषेहीं कृपणरूपतासिद्धहोवैहै ॥ ऐसेकृपणपुरुषोंविषेहरणेहाराजो देहादिकअनात्मपदार्थोंकाअध्यासहै ॥ ताअध्यासकानाम ॥ कार्पण्यहै ताकार्पण्यकरिकैउत्पन्नभयाजो इसजन्मविषे यहहींहमारेबांधवहौंतिनोंकेनाशहूए हम जीविकरिकैक्याकरेगैं याप्रकारकाअभिनिवेशरूप ममतालक्षणदोषहै ॥ तादोषकरिकै तिरस्कारकूंप्राप्तहूआहैयुद्धकाउद्यमरूपस्वभावजिसका ऐसाजोंमैंअर्जुनहूं ॥ तथा धर्मविषे निर्णयकरणेहारेप्रमाणके अदर्शनतैं क्या इनभीष्मद्रोणादिकोंकाहननकरणाही हमाराधर्महै अथवा इनभीष्मादिकोंकापालनकरणा हमाराधर्महै तथा क्यापृथिवीकापरिपालनकरणा हमाराधर्महै अथवा पूर्वप्राप्तवनविषेनिवासहीं हमाराधर्महै इत्यादिकअनेकसंशयोंकरिकैव्याप्तहैचित्तजिसका ऐसाजो मैं अर्जुनहूं ॥ सोमैंअर्जुन तुमारेप्रति आपणाश्रेय पूंछताहूं ॥ यातैं जोपरमपुरुषार्थरूपश्रेय एकांतिकरूप तथाआत्यंतिकरूप निश्चयकरिकैहोवै ॥ सोश्रेय आप हमारेप्रति कथनकरो ॥ तहांस्वसाधनोंतैअनंतर अवश्यभावीपणेकानाम एकांतिकपणाहै ॥ और एकवारउत्पन्नहूएका पुनःकदाचित्भोनाशनहींहोणायाकानाम आत्यंतिकपणाहै ॥ जैसेलोकविषे औषधकेकोयेहूए कदाचित् रोगकीनिवृत्तिनहींभीहोवैहै ॥ और जोकदाचित् ताऔषधकरिकैरोगकीनिवृत्तिहोवैभीहै ॥ तौंभी पुनःरोगकोउत्पत्तिकरिकै सारोगकीनिवृत्तिनाशहोइजावैहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसप्रकार यागकेकीयेहूएभी किसीप्रतिबंधकेवशतैं स्वर्गकीप्राप्तिनहींभोहोवैहै ॥ और तायागकरिकैप्राप्तहूआभीस्वर्ग दुःखकरिकैमिश्रितहींहोवैहै ॥ तथा नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं रोगकोनिवृत्तिविषे तथास्वर्गकीप्राप्तिविषे सो एकां तिकपणा तथाआत्यंतिकपणा संभवतानहीं ॥ और ब्रह्मात्मसाक्षात्कारतैंअनंतर सोपरमपुरुषार्थरूपश्रेय अवश्य करिकैप्राप्तहोवैहै यातैं ताश्रेयविषे एकांतिकपणाभीहै ॥ और एकवार प्राप्तहूआसोश्रेय कदाचित्भी नाशकूंप्राप्त होवैनहीं ॥ यातैं ताश्रेयविषे आत्यंतिकपणाभीहै ॥ ऐसेश्रेयका हमारेप्रति उपदेशकरो ॥ ॥ शंका ॥ ॥ हेअर्जुन श्रुतिवि षेयहकह्याहै ॥ नापुत्रायाशिष्यायवैपुनः ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष पुत्रभावतैं तथाशिष्यभावतैं रहितहोवै ॥ तापुरुषके प्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशनहींकरणाइति ॥ और तूंतौं हमारासखाहै ॥ हमाराशिष्य तूंहैंनहीं ॥ यातैं तुमारेप्रति मैं कैसेश्रेयकाउपदेशकरौं ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहूए अर्जुनकहेहै (शिष्यस्तेहमिति) हेभगवन् आपकीशिक्षाकेयोग्य होणेतैं मैं आपकाशिष्यहींहूं ॥ मैं आपकासखानहींहूं ॥ काहेतैं समानज्ञानवालेपुरुषोंकाहीं परस्पर सखाभावहोवैहै न्यूनअधिकज्ञानवालेपुरुषोंका परस्पर सखाभावहोवैनहीं ॥ और मैं तुमारीअपेक्षाकरिकैअत्यंतन्यूनज्ञानवालाहूं ॥ यातैं मैं आपकासखानहींहूं ॥ किंतु शिष्यहूं ॥ यातैं तुमारेशरणकूंप्राप्तहूआजोमैंहूं ॥ तिसमैंशिष्यकूं आप कृपाकरि कै श्रेयकाउपदेशकरो ॥ शिष्यभावतैंरहितपणेकीशंकाकरिकै आप हमारीउपेक्षा मतकरौ ॥ इतनैंकरिकै ब्रह्मवेत्ता गुरुकेसमीप शिष्यकेगमनकूंबोधनकरणेहारी इनदोनोंश्रुतियोंकाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ तेदोनोंश्रुतियहहैं ॥ तद्विज्ञा नार्थंसगुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिःश्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठंइति भृगुर्वैवारुणिर्वरुणंपितरमुपससारअधीहिभगवोब्रह्मेति ॥ अ ॥ ४८ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्थयह ॥ ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै यहअधिकारीपुरुष आपणेहस्तोविषे समिदादिकभेटाकूंलेकरिकै श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजावैइति ॥ और वरुणकापुत्र भृगुऋषि ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै आपणेवरुणपिताकेसमीपजाता भया ॥ तहांजाइकै हेभगवन् हमारेप्रतिब्रह्मकाउपदेशकरौ याप्रकारकाप्रश्नकरताभयाइति ॥ यहवरुणभृगुकासंवादआ त्मपुराणकेदशमअध्यायविषे हम विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैं ॥ इति ॥ ७ ॥ * ॥ शंका ॥ हेअर्जुन तूंसर्वशास्त्रोंकावेत्तापं डितहैं ॥ यातैं तूंआपहीं श्रेयकाविचारकर ॥ तूं हमाराशिष्य किसवासतैहोताहैं॥ऐसीभगवान्कीशंकाकीहूएअर्जुनकहेहै ॥

नहिप्रपश्यामिममापनुद्याद्यच्छोकमुच्छोषणमिंद्रियाणां ॥ अ
वाप्यभूमावसपत्नमृद्धंराज्यंसुराणामपिचाधिपत्यं ॥ ८ ॥

नहिँ । प्रपश्यामि । मम । अपनुद्यात् । यत् । शोकं । उच्छोषणं । इंद्रियाणां । अवाप्य । भूमौ । असपत्नमृद्धं । राज्यं । सुराणां । अपि । च । आधिपत्यं ॥ ८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेभगवन् जोश्रेय हमारे इंद्रियोंके संतापकरणेहारे शोककूं निवृत्तकरे तिसश्रेयकूंमैंनहीं देखताहूं इसभूमिविषे शत्रुवोंतैंरहितथा धनधान्यकरिकैयुक्त राज्यकूं प्राप्तहोइकै तथा देवतावोंके अधिपतिपणेकूं भी प्राप्तहोइकै मैं ताश्रेय कूं नहीदेखताहूं ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् जोश्रेय प्राप्तहोइकै हमारेशोककूंनिवृत्तकरै ॥ ताश्रेयकूं मैं जानतानहीं ॥ याकारणातैं हमारेप्रति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आप ताश्रेयकाउपदेशकरो ॥ इतनैंकहणेकरिकै अर्जुननैंयाश्रुतिकाअर्थ सूचनकऱ्या॥सोहंभगवः शोचामितंमांभगवा
न्छोकस्यपारंतारयतुइति ॥ अर्थयह हेभगवन्सनत्कुमार आत्मवेत्तापुरुष शोककूंतरेहै यहवार्त्ताहमनैं आपसरी
खेविद्वान्पुरुषोंकेमुखतैंश्रवणकरीहै ॥ और मैंनारदतौं शोककूंप्राप्तहोताहूं ॥ यातैं मैं आत्मवेत्तानहींहूं ॥ ऐसेमैंना
रदकूं आप शोककेपारकूंप्राप्तकरौ ॥ तात्पर्ययह ॥ ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरिकै हमारेशोककूं आप नाशकरोइति ॥
यहसनत्कुमारनारदकासंवाद आत्मपुराणकेत्रयोदशेअध्यायविषे हम विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैं॥ शंका ॥ हेअ
र्जुन ताशोककेनहींनिवृत्तहूएभी तुमारीक्याहानिहै ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकरिकै अर्जुन ताशोककाविशेषणकहेहै
(इंद्रियाणामुच्छोषणमिति) हेभगवन् सोशोक सर्वकालविषे हमारेइंद्रियोंकूंसंतापकीप्राप्तिकरणेहाराहै ऐसेशोक
केविद्यमानहूए हमारीमहान्हानीहै ॥ यातैं ताशोककी निवृत्ति अवश्यकरीचाहीये ॥ शंका ॥ हे अर्जुनजोतूं इसयुद्ध
विषेप्रवृत्तहोवैंगा ॥ तौं तुमारेशोककीनिवृत्ति अवश्यकरिकैहोवैंगी॥ तहां इसयुद्ध विषे जो तुमाराजयहोवैंगा॥ तौं रा
ज्यकोप्राप्तिकरिकै तुमारेशोकोनिवृत्तिहावैंगी ॥ और जोतूं युद्धविषेमृत्युकूंप्राप्तहोवैंगा ॥ तौ स्वर्गकीप्राप्तिकरिकै
तुमारेशोककीनिवृत्तिहोवैंगी ॥ यातैंइसयुद्धकूंछोडिकै शोकनिवृत्तिवासतैं तूं दुसराउपाय किसवासतैखोजताहैं ॥
ऐसीभगवान्कीशंकाकेहूए अर्जुनकहेहै ॥ (आवाप्यभूमाविति) हेभगवन् याभूमिविषे शत्रुवोंतैंरहित तथाधनधान्या
दिकपदार्थोंकरिकैयुक्त ऐसेराज्यकूंप्राप्तहोइकै तथा इंद्रतैंआदिलैके हिरण्यगर्भपर्यंत सर्वदेवताओंकेऐश्वर्यकूंप्राप्तहोइ
कै जोकदाचित् मैं स्मितहोवौं तौंभी जोश्रेयहमारेशोककूंनिवृत्तकरणेहाराहै ॥ ताश्रेयकूं मैं देखतानहीं यातैं सो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शोककेनिवृत्तकरणेहाराश्रेय इसयुद्धतैंकोईभिन्नहीहै ॥ तात्पर्ययह ॥ इसलोककेविषयभोगोंविषे तथास्वर्गादिकलोको
केविषयभोगोंविषे श्रुतिप्रमाणकरिकै तथायुक्तिरूपअनुमानप्रमाणकरिकै अनित्यताहीसिद्धहोवैहैं ॥ यातैं तिनअनि
त्यभोगोंतैं शोककीनिवृतिसंभवैनही ॥ उलटतेभोग तीनकालविषे यापुरुषकूं शोककीहीप्राप्तिकरिहैं ॥ तहां नप्राप्तहू
एतेभोग आपणीइच्छाकरिकै यापुरुषकूं शोककीप्राप्तिकरेहैं ॥ और प्राप्तिकालविषे ते भोग पराधीनताकरिकैतथाना
शकाभयकरिकै यापुरुषकूं शोककोप्राप्तिकरेहैं ॥ और आपणेनाशकालविषें तेभोग वियोगकरिकै यापुरुषकूं शोक
कोप्राप्तिकरेहैं ॥ ऐसेशोककेकरणेहारे अनित्यभोगोंकरिकै शोककानिवृत्तिसंभवैनही तहांश्रुति ॥ तद्यथेहकर्मचि
तोलोकःक्षीयते एवमेवामुत्रपुण्यचितोलोकःक्षीयतेइति ॥ अर्थयह ॥ जैसे कर्मकरिकैप्राप्तहोणेतैं इसलोककेपदार्थ
नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे पुण्यकर्मोकरिकैप्राप्तहोणेतैं स्वर्गादिकलोकोंकेपदार्थभी नाशकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ याश्रुति
करिकै सर्वभोगोंविषेअनित्यताहींसिद्धहोवैहै ॥ और इसलोकके तथापरलोकके सर्वपदार्थ अनित्यहोणेकूंयोग्यहैं
कार्यहोणेतैं जोजोकार्यहोवैहै सोसोअनित्यहींहोवैहै जैसे प्रसिद्धघटादिकपदार्थहै ॥ याप्रकारकेअनुमानरूपयुक्ति
करिकैभी तिनसर्वभोगोंविषे अनित्यताहींसिद्धहोवैहै ॥ और इसलोककेपदार्थोकानाशतौं सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्षहींप्रतीत
होवैहै ॥ ऐसेअनित्यपदार्थोकीप्राप्तिकरिकै शोककीनिवृत्तिसंभवैनहीं ॥ यातैं शोककीनिवृत्तिवासतै हमारेकूं युद्धकरणा
योग्यनहींहै ॥ इतनैंकरिकै इसलोकपरलोकनेभोगोंकावैराग्य अधिकारीकाविशेषणरूपकरिकै वर्णनकऱ्या इति ॥ ८ ॥
॥ हेसंजय इसप्रकारकेवचनोंकूंकहिकरिकै सोअर्जुन क्याकरताभया ॥ ऐसीधृतराष्ट्रकीआकांक्षाकेहूए संजयकहेहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संजयउवाच ॥ ॥ एवमुक्त्वाहृषीकेशंगुडाकेशःपरंतपः ॥
नयोत्स्यइतिगोविंदमुक्त्वातूष्णींबभूवह ॥ ९ ॥

एँवं । उँक्त्वा । हृँषीकेशं । गुँडाकेशः । पँरंतपः । नँ । योँत्स्ये । ईँति । गोँविँदं । उक्त्वाँ । तूँष्णीं । बँभूव । ह । इतिप०

हेधृतराष्ट्र शँत्रुवोंकूंसंतापकरणेहारा तथानिँद्राकूंजीतणेहारा अर्जुन हृँषीकेशभ
गवान्केप्रति इसँप्रकारके वचन कँहिकरिकै अंतविषे मैं नँहीं युँद्धकरौंगा याप्र
कारकावचन तागोंविंदकेप्रति कथनँकरिकै तूँष्णींभावकूं प्राँप्तहो नाभया ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ गुडाकानामनिद्राकाहै तानिद्राकूंजोआपणेवशकरेहै ॥ ताकूं गुडाकेशकहेहैं ॥ दूसरेगुडाकेशशब्दकेअर्थ प्र
थमअध्यायविषेकथनकरिआयेहैं ॥ ऐसानिद्रारूपआलस्यतैंरहित तथाआपणेशत्रुवोंकूं संतापकीप्राप्तिकरणेहारा जो
अर्जुनहै ॥ सोअर्जुन हृषीकनामाइंद्रियोंकेप्रवर्त्तक अंतर्यामीकृष्णभगवान्केप्रति तेपूर्वउक्तवचन कहिकरिकै अंतविषे
मैं इनभीष्मद्रोणादिकोंकेसाथि कदाचित्भी युद्धनहींकरौंगा याप्रकारकावचन तागोविंदकेप्रति कहिकरिकै तूष्णीं
भावकूंप्राप्तहोताभया ॥ ईहां गोविंदशब्दका याप्रकारकाअर्थ शास्त्रविषेकथनकर्याहै ॥ गोभिर्वेदांतवाक्यैरेवाविंदतेल
भ्यतेइतिगोविंदः ॥ अर्थयह ॥ गोशब्द तत्वमसिअहंब्रह्मास्मि इत्यादिवेदांतवाक्योका वाचकहै ॥ तिनवेदांतवा
क्योंकरिकैहीं जोप्राप्तहोवै ताकूं गोविंदकहेहै ॥ अथवा गांवेदलक्षणांवाणींविंदतीतिगोविंदः ॥ अर्थयह ॥ ऋग यजु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ष् साम अथर्वण या च्यारिवेदरूपवाणीकूं जोभलीप्रकारतैंजानैहैं ताकूं गोविंदकहेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै सर्ववेदोंका उपादानकारणत्वरूपकरिकै कृष्णभगवान्विषे सर्वज्ञतासूचनकरी ॥ और इसश्लोककेआदिविषे (एवमुक्त्वा) याव चनकरिकै सोअर्जुन (कथंभीष्ममहंसंख्ये) इत्यादिकवचनोंकरिकै युद्धकेस्वरूपकोअयोग्यता कथनकरताभया ॥ औ र तिसतैंअनंतर (नयोत्स्ये) यावचनकरिकै सो अर्जुन तायुद्धकेफलकेअभावकूं कथनकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सो अर्जुन तूष्णीभावकूंप्राप्तहोताभया ॥ तात्पर्ययह ॥ युद्धकरणेवासतैं अर्जुननैं जोपूर्व नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंका दर्शनादिरू पव्यापारकर्‌याथा ॥ तासर्वव्यापारकीनिवृत्तिकरिकै निर्व्यापारहोताभया॥यहहीं अर्जुनकातूष्णीभावजानणा ॥ केवल वा णीमात्रकानिरोध तूष्णीभाव नहींजानणा ॥ ईहां (बभूवह) यावचनविषेस्थितजो ह शब्दहै ॥ ताहशब्दकरिकै यह अर्थ सूचनकर्‌या ॥ स्वभावतैंहीं आलस्यतैंरहित तथासर्वशत्रुवोंकूंसंतापकरणेहारा जोअर्जुनहै॥तिसअर्जुनविषे आगंतुक आ लस्य तथाशत्रुवोंका अतापकत्व कदाचित् भी नहींरहितसकैगाइति ॥ और सर्वज्ञताकूंसूचनकरणेहाराजोगोविंदपदहै ॥ तथासर्वशक्तिसंपन्नताकूंसूचनकरणेहारा जोहृषीकेशपदहै ॥ तादोनोंपदोकरिकै ताकृष्णभगवान्विषे अर्जुनकेशोकमो हकोनिवृत्तिकरणेमैं आयासकाअभावसूचनकर्‌या ॥ तात्पर्ययह ॥ सर्वशक्तिसंपन्नसर्वज्ञकृष्णभगवान्कूं अत्यंतअल्पशो कमोहकीनिवृत्तिकरणेविषे क्यापरिश्रमहोवैहै इति ॥ ९ ॥ ❋ तहां युद्धकोउपेक्षावान्अर्जुनको भगवान्नैभी उपेक्षाहींकरीहोवैंगी याप्रकारकीजाधृतराष्ट्रकीदुराशाहै ॥ तादुराशाकेनिवृत्तकरणेवासतैंसोसंजय ताधृतराष्ट्रकेप्रति युद्धविषेअर्जुनकीउपेक्षादेखिकरिकैभी सोकृष्णभगवान् ता अर्जुनकोउपेक्षानहीं करताभया याप्रकारकावचनकहेहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तमुवाचहृषीकेशः प्रहसन्निवभारत ॥ सेनयोरुभयोर्मध्येविषीदंतमिदंवचः ॥ १० ॥

तँ । उवाच । हृषीकेशः । प्रहसन् । इव । भारत । सेनयोः । उभयोः । मध्ये । विषीदंतं । इदं । वचः । इतिपदच्छेदः

हेधृतराष्ट्र सोकृष्णभगवान् दोनों सेनावोंके मध्यविषे विषादकूंप्राप्तहूए तिसँअर्जुनकेप्रति
प्रहासकरतेहूएकीन्यांईं यहवक्ष्यमाण वचन कहताभया ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभरतवंशविषेउत्पन्नहूआ धृतराष्ट्र पूर्वयुद्धकाउद्यमकरिकै दोनोंसेनावोंकेमध्यविषेआइकै ताउद्यमकेविरोधीमोहरूपविषादकूंप्राप्तभयाजो अर्जुनहै ॥ ताअर्जुनका सोअनुचितआचरणप्रगटकरिकै लज्जारूपसमुद्रविषेडुबावतेहूएकीन्यांईसोअंतर्यामीभगवान् ताअर्जुनकेप्रति परमगंभीरहैअर्थजिसका तथाअनुचितआचरणकूंप्रकाशकरणेहारा जोअशोच्यान् इत्यादिकवक्ष्यमाणवचनहै तावचनकूंकहताभया ॥ ईंहां (प्रहसन्इव) यावचनविषेस्थितजो (इव) यहशब्दहै ॥ ताका यहअभिप्रायहै ॥ अन्यपुरुषका अनुचितआचरणप्रगटकरिकै ताके लज्जाकूंउत्पन्नकरणा याकानाम प्रहासहै ॥ और सालज्जा दुःखरूपहींहोवैहै ॥ यातैं जोपुरुष जिसपुरुषके द्वेषकाविषयहोवैहै ॥ सोपुरुषहीं तिसपुरुषकेप्रहासका मुख्यविषयहोवैहै ॥ और अर्जुनतौं भगवान्केद्वेषकाविषयहैनहीं ॥ किंतु सोअर्जुन भगवान्के कृपाकाविषयहै ॥ और अर्जुनकेअनुचितआचरणकाजोप्रकाशकरणाहै ॥ सोभी ताअर्जुनकेलज्जाकेउत्पत्तिकाहेतुनहीं है ॥ किंतु सोअनुचितआचरणकाप्रकाश ताअर्जुनकेविवेककेउत्पत्तिकाहेतुहै ॥ यातैं अर्जुनविषे सोप्रहास गौणहै मु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूयनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे कोईपुरुष आपणेशत्रुकेलज्जाकीउत्पत्तिकरणेवासते ताके अनुचितआचरणकाप्रकाश करेहै ॥ तैसे सोश्रीकृष्णभगवान्भी अर्जुनकेविवेककीउत्पत्तिकरणेवासतै ताअर्जुनकेअनुचितआचरणकूंप्रकाशकर ताभया ॥ और लज्जाकीउत्पत्तितौं अनुचितआचरणकेप्रकाशतैंअनंतर अवश्यहींहोवैहै ॥ यातैं सालज्जाकीउत्पत्ति होवो अथवा नहींहोवो ॥ परंतु तालज्जाकीउत्पत्तिकरणेविषे भगवान्कातात्पर्यनहींहै ॥ केवलविवेककीउत्पत्तिविषेहीं भगवान्कातात्पर्यहै ॥ यासर्वअर्थकाइवशब्दकरिकैसूचनकऱ्या ॥ और (सेनयोरुभयोर्मध्येविषीदंतं) यहजोअर्जुनका विशेषणकह्याहै ॥ ताका यह अभिप्रायहै ॥ युद्धकेआरंभतैंपूर्वहीं ॥ आपणेगृहविषेस्थितहूआतूं जोकदाचित् युद्धकीउपे क्षाकरता ॥ तौं यहतुमारा अनुचित्आचरण नहींकह्याजाता ॥ परंतु तूंतौंमहान्उत्साहपूर्वक इसयुद्धभूमिविषेआइकै इसयुद्धकीउपेक्षाकरताभयाहैं ॥ यातैं यहतुह्मारा बहुतअनुचितआचरणकह्याजावैहै इति ॥ यहवार्ता अशोच्यान्इत्या दिकवचनोंविषे आगेस्पष्टहोवैंगी इति ॥ १० ॥ तहां अर्जुनकी युद्धरूपस्वधर्मविषे पूर्वस्वभावतैंउत्पन्नहू ईभीप्रवृत्ति दोप्रकारकेमोहकरिकै तथातामोहजन्यशोककरिकै प्रतिबद्धहोतीभई ॥ यातैं पुनः तायुद्धरूपस्वधर्मविषे अर्जुनकीप्रवृत्तिकरावणेवासतै ताअर्जुनका सोदोप्रकारकामोह अवश्यकरिकैदूरकरणेकूंयोग्यहै ॥ तहां सर्वसंसारध- र्मोतैंरहित स्वप्रकाशपरमानंदस्वरूपआत्माविषे स्थूलसूक्ष्मदोनोंशरीर तथातिनदोनोंशरीरोंकाकारणरूपअविद्या यातीनोंउपाधियोंकेअविवेककरिकै जोमिथ्यारूपसंसारविषे सत्यत्व तथाआत्मधर्मत्व आदिकप्रतीतिहै ॥ सो प्रथम मोहहै ॥ सोमोह सर्वप्राणीमात्रविषेरहेहै ॥ यातैं सोमोह साधारणहै और युद्धरूपस्वधर्मविषे हिंसादिकोंकीबाहु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ल्यताकरिकै जोअधर्मत्वकीप्रतीतिहै ॥ सोदूसरामोहहै ॥ यहदूसरामोह करुणादिकदोषकरिकै केवलअर्जुनकूंहींप्राप्तभयाहै ॥ यातैं दूसरामोह असाधारणहै ॥ तहांस्थूल सूक्ष्म कारण यातीनउपाधियोंकेविवेककरिकैप्राप्तभयाजो शुद्धआत्मस्वरूपकाबोधहै ॥ सोबोध प्रथममोहकानिवर्त्तकहै ॥ यातैं सोबोध सर्वप्राणीमात्रकूंसाधारणहै ॥ और युद्धविषयद्यपिहिंसादिकहोवैहैं ॥ तथापि सोयुद्ध क्षत्रियराजावोंका स्वधर्महै ॥ यातैं तायुद्धविषे अधर्मरूपतानहींहै ॥ याप्रकारकाजोबोधहै ॥ सोबोध दूसरेमोहका निवर्त्तकहै ॥ यहदूसराबोध केवल अर्जुनकेप्रतिहींहै ॥ यातैं यहदूसराबोधअसाधारणहै ॥ इसप्रकार दोप्रकारकेबोधकरिकै जबी दोप्रकारकेमोहकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी तामोहरूपकारणकेनिवृत्तहूए तैंअनंतर ताकेशोकरूपकार्यकी आपेहींनिवृत्तिहोईजावैहै ॥ ताशोककीनिवृत्तिविषे किसीदूसरेसाधनकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै सोकृष्णभगवान्तादोनोंप्रकारकेमोहका कथनकरताहूआ ताअर्जुनकेप्रति कहेहैं ॥

118

श्रीभगवानुवाच ॥ अशोच्यानन्वशोचस्त्वंप्रज्ञावादांश्च भाषसे ॥ गतासूनगतासूंश्चनानुशोचंतिपंडिताः ॥ ११ ॥

अशोच्यान्।अन्वशोचः।त्वं।प्रज्ञावादान्।च।भाषसे।गतासून्।अगतासून्।च।न।अनुशोचंति।पंडिताः ॥ ११ ॥ इतिपद०

हेअर्जुन शोककरणकेअयोग्यभीष्मद्रोणादिकोंकूं तूंशोककरताहैं तथा बुद्धिमान् पुरुषोंकरिकैनहींकहणेयोग्यवचनोंकूं तूं कथनकरताहैं और पंडितपुरुषतौ प्राणोंतैंरहितबांधवोंकूं तथा प्राणयुक्तबांधवोंकूं नहीं शोककरते ॥ इतिपदार्थः

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुनआत्मदृष्टिकरिकैतथाशरीरदृष्टिकरिकै शोककरणेकेनहींयोग्य जोयहभीष्मद्रोणादिकहैं तिनोंका तूं पंडितहोइकैभी शोककरताहैं ॥ तेभीष्मद्रोणादिक हमारेनिमित्त मृत्युकूंप्राप्तहोतेहैं तिनभीष्मद्रोणादिकोंतैंविना मैं रा ज्यसुखादिकोंकूंक्याकरौंगा याप्रकारकाशोक (दृष्ट्वेमंस्वजनंकृष्ण) इत्यादिकवचनोकरिकै तूं करताभयाहैं ॥ सोशोक करणा तुमारेकूंउचितनहींहै ॥ काहेतैं शोककरणेकेआयोग्यपदार्थविषे शोचत्वबुद्धिरूपभ्रम पशुपक्षीआदिकासबप्राणी मात्रविषेसाधारणहै ॥ और तूंतौं अत्यंतपंडितहोइकैभी तिसभ्रमकूंप्राप्तभयाहैं ॥ यातैं तुमारेकूंयहभ्रमहोणा अत्यंत अनुचितहै ॥ और(कुतस्त्वाकश्मलमिदं) इत्यादिकमेरेवचनोंकरिकैतुमारेकूंयहहमनैंबहुतअनुचितकर्याहै याप्रकारके विचारकीप्राप्तिहोणीचाहीतीथी॥और तूंआपभीबुद्धिमान्हैं ॥ ऐसाबुद्धिमानहूआभीतूं बुद्धिमानपुरुषोंकरिकैनहींकहणे योग्य(कथंभीष्ममहंसंख्ये)इत्यादिकवचनोंकूंकथनकरताहै॥ परंतुलज्जाकरिकै तूष्णीभावकूंतूं प्राप्तहातोनहीं॥इसतैंपरेदू सराक्याअनुचितव्यवहारहोवैहै॥ यातैंयुद्धतैंनिवृत्तिरूपअधर्मविषे जाधर्मत्वबुद्धिरूपभ्रांतिहै॥ तथा युद्धरूपधर्मविषे जा अधर्मत्वबुद्धिरूपभ्रांतिहै ॥ साअसाधारणभ्रांति तैंअत्यंतपंडितकूं उचितनहींहै अथवा (प्रज्ञावादांश्चभाषसे) यावचनका यहअर्थकरणा ॥ देहतैंभिन्नकरिकैआत्माकूंजानणेहारेजोप्रज्ञावान्पुरुषहैं ॥ तिनप्रज्ञावान्पुरुषोंके (न रकेनियतंवासः पतंतिपितरोह्येषां) इत्यादिकवचनमात्रोंकूंहीं तूं कथनकरताहैं ॥ परंतु तिनप्रज्ञावानपुरुषोंकीन्याई ति नवचनोंकेयथार्थतात्पर्यकूं तूंजाणतानहीं ॥ जोतूं शास्त्रकेवचनोंका यथार्थतात्पर्यजाणता ॥ तौंतूं शोकमोहकूंप्राप्तनहींहो ता ॥ शंका ॥ हेभगवन् वसिष्ठादिकजेमहान्पुरुषहूएहैं ॥ तिनोंनैंभी आपणेपुत्रादिकबांधवोंकेमरणेकरिकै महान्शो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ककऱ्याहै ॥ यातैं आपणेबांधवोंके मरणेविषे शोककरणा अनुचितनहींहैं ॥ किंतु शिष्टाचारकरिकैप्राप्तहोणेतै सोशोक करणा उचितहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए भगवान् कहेहैं ॥ (गतासूनिति) हेअर्जुन विचारकरिकैउत्पन्नभयाहै आत्माकेवास्तवस्वरूपकाज्ञानजिनोंकूं ऐसेजोपंडितहैं ॥ तेपंडितपुरुष प्राणोंतैंरहितबांधवोंकेशरीरोंका तथाप्राणयुक्त बांधवोंकेशरीरोंका शोककरतेनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ मृत्युकूंप्राप्तहूए यहहमारेबांधव सर्वपदार्थोंकापरित्यागकरिकैजा तेभयेहैं ॥ तेहमारेबांधव अबीक्याकरतेहोवैंगे तथा किसस्थानविषेस्थितहोवैंगे ॥ और यहजीवतेहूएहमारेबांधव तिनमरेहूएसंबंधीयोंकेवियोगकरिकै कैसैजीवैंगे ॥ याप्रकारकेव्यामोहकूं तेपंडितपुरुष प्राप्तहोतेनहीं ॥ काहेतैं ति नब्रह्मवेत्तापंडितपुरुषोंकूं समाधिकालविषेतौं तिनबांधवोंकीप्रतीतिहींनहींहोवैहै ॥ और समाधितैंउत्थानकालविषे यद्यपि तिनब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं बांधवोंकीप्रतीति होवैहै ॥ तथापि तेब्रह्मवेत्तापुरुष ताव्युत्थानकालविषे तिनबांधवोंकूं मिथ्यारूपकरिकैनिश्चयकरेहैं ॥ और जैसै रज्जुरूपअधिष्ठानकेसाक्षात्कारकरिकै सर्पभ्रमकेनिवृत्तहूएतैंअनंतर तासर्प भ्रमजन्यभयकंपादिक आपेहींनिवृत्तहोइजावैं ॥ और जैसे पित्तदोषयुक्तरसनइंद्रियवालेपुरुषकूं कदाचित् गुडविषे तिक्तरसकीप्रतीतिहूएभी तागुडविषेमधुररसकेनिश्चयकूंबलवान्होणेतैं तिक्तरसकोइच्छाकरिकै तापुरुषको गुडविषेप्र वृत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे शोककेअविषयपदार्थोंविषे जोशोचत्वबुद्धिरूपभ्रमहै ॥ सोभ्रमभी अधिष्ठान आत्माकेअज्ञानकरिकै करयाहूआहै ॥ जबी अधिष्ठानआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै ताअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी ताअज्ञानकाकार्यरूप शोच त्वभ्रम आपेहींनिवृत्तहोइजावै ॥ और वसिष्ठादिक महान्पुरुषोंनैं प्रारब्धकर्मकोप्रबलतातैं जेशोकमोहादिककरयेहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तेशोकमोहादिक शिष्टाचाररूपकरिकै ग्रहणकरयेजावैंनहीं॥काहेतैं शिष्टपुरुषोंनैंधर्मबुद्धिकरिकैअनुष्ठानकरयाजोअलौकिक व्यवहारहै ॥ सोईहीं शिष्टाचारकह्याजावैहै ॥ यहशिष्टाचारकालक्षण तिनवसिष्ठादिकोंकेशोकमोहादिकोंविषेघटतानहीं ॥ काहेतैं तेशोकमोहादिक पशुपक्षीआदिकसर्वप्राणीयोंविषे स्वभावतैंहीप्राप्तहैं ॥ यातैं तिनोंविषे अलौकिकरूपतासंभवैनही ॥ और तिनवसिष्ठादिकोंनैं कोईधर्मबुद्धिकरिकै शोकमोहादिककरयेनही ॥ यातैं तिनशोकमोहादिकोंविषे शिष्टाचाररूपतासंभवैनहीं ॥ और याप्रकारकेशिष्टाचारकेलक्षणकापरित्यागकरिकै जोसामान्यतैंशिष्टपुरुषोंकेव्यवहारमात्रकूंहीं प्रमाणमानिये ॥ तौं शिष्टपुरुषोंकीजामलमूत्रादिकोंकापरित्यागरूप स्वाभाविकचेष्टाहै ॥ सास्वाभाविकचेष्टाभी शिष्टाचाररूपकरिकैग्रहणकरोचाहीये ॥ और तास्वाभाविकचेष्टाकूं कोईभीबुद्धिमान्पुरुष शिष्टाचाररूपकरिकैग्रहणकरतानहीं ॥ यातैं वसिष्ठादिकोंकेशोकमोहकूंदेखिकरिकै तुमारेकूं शोकमोहकरणायोग्यनहींहैं इति ॥ ११ ॥ अब (नत्वेवाहं) इत्यादिकओगणीश १९ श्लोकोंकरिकै (अशोच्यानन्वशोचस्त्वं) इसवचनकाअर्थ विस्तारतैंनिरूपणकरेहैं ॥ और तिसतैंअनंतर (स्वधर्ममपिचावेक्ष्य) इत्यादिकअष्टश्लोकोंकरिकै (प्रज्ञावादांश्चभाषसे) इसवचनकाअर्थविस्तारतैं निरूपणकरैंगे ॥ काहेतैं साधारण असाधरण यहपूर्वउक्तदोप्रकारकामोहभिन्नभिन्नप्रयत्नकरिकैहीनिवृत्तहोवैहै ॥ एकप्रयत्नकरिकैनिवृत्तहोवैनहीं ॥ तहां स्थूलशरीरतैंआत्माकाभेदसिद्धकरणेवासतै प्रथम आत्माविषे नित्यत्वसिद्धकरेहैं ॥

नत्वेवाहंजातुनासंनत्वंनेमेजनाधिपाः॥ नचैवनभविष्यामःसर्वेवयमतःपरं॥१२॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नतुएवअहंजातुनआसंनत्वंनइमे । जनाधिपाः ।नचएव न । भविष्यामः । सर्वे ।वयं । अतः । परं ।इतिप०
हेअर्जुन मैंकृष्णभगवान् इसतैंपूर्व कदाचित्भी नहीं होताभयाहूं यह नहींकह्याजावैहै तथातूंअर्जुन इसतैंपूर्व
कदाचित्भी नहींहोतभयाहैं यहभीनहींकह्याजावैहै तथा यह सर्वराजे इसतैंपूर्व कदाचित्भी नहींहोतेभयेहै
यहभीनहींकह्याजावैहै किंतु मैं तूं यहसर्वराजे पूर्वहोतेहींभयेहैं तथा इसतै आगे हम सर्व नहीं होवैंगेयहभीनहीं
कह्याजावैहै किंतु हमसर्व आगेभीहोवैंगे ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे सर्वजगत्काकारण मैं कृष्णभवान् इसतैंपूर्व कदाचित्भी नहींहोताभयाहूं यहकह्याजावैन
हीं ॥ किंतु इसतैंपूर्वभी मैंहोताभयाहूं ॥ तैसे तूंअर्जुन तथायहभीष्मद्रोणादिकसर्वराजे इसतैंपूर्व कदाचित्भी नहीं
होतेभयेहैं यहकह्याजावैनहीं ॥ किंतु तूं अर्जुन तथायहभीष्मद्रोणादिकसर्वराजे इसतैंपूर्वभीहोतेभयेहैं इतनैंकहणेक
रिकै आत्माविषे प्रागभावका अप्रतियोगीपणा दिखाया ॥ और मैकृष्णभगवान् तथातूं अर्जुन तथायहभीष्मद्रोणादि
कसर्वराजे इसतैंआगै कदाचित्भी नहींहोवैंगे यहकह्याजावैनहीं ॥ किंतु इसतैंआगेभी हमसर्व होवैंगेहीं ॥ इतनैंकह
णेकरिकै आत्माविषे प्रध्वंसाभावका अप्रतियोगीपणा दिखाया ॥ याकहणेतैंयहअर्थ सिद्धभया ॥ भूतकालविषे तथाभ
विष्यत्कालविषे तथावर्त्तमानकालविषे जोविद्यमानहोवैहै ॥ ताकूं नित्यकहेहैं ॥ यहनित्यकालक्षण आत्माविषेहींघटेहै
यास्थूलदेहविषेघटतानहीं ॥ यातैं यहआत्माहीं नित्यहै ॥ नित्यहोणेतैं यहआत्मा स्थूलशरीरतैंविलक्षणहींसिद्धहोवैहै॥
इसीविलक्षणताकूं (नत्वेवाहं) यावचनविषेस्थित तु याशब्दकरिकैसूचनकऱ्याहै इति ॥ १२ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन्

॥ ५४ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चेतनताधर्मकरिकैविशिष्टजोयहस्थूलदेहहै ॥ सोस्थूलदेहहीं आत्माहै याप्रकार चार्वाकनास्तिक मानेहैं ॥ यास्थूलदेहकूं आत्मामानणेमैं तिनोंकेमतविषे मैंस्थूलहूं मैंगौरहूं मैं चलताहूं इत्यादिकज्ञानोंकीप्रामाण्यताभी बाधतैं रहितसिद्धहोवैहै ॥ यादेहतैंजोआत्माकूंभिन्नमानिये ॥ तौं यहसर्वज्ञान अप्रमारूपहोवैंगे ॥ यातैं यास्थूलदेहतैंआत्माभिन्ननहींहै॥ किंतु स्थूलत्व गौरत्व आदिकधर्मोवाला यहस्थूलदेहहींआत्माहै ॥ किंवा यास्थूलशरीरतैं जोआत्माकूंभिन्नभीअंगीकारकरीये ॥ तौंभी ताआत्माविषे जन्ममरणकाअभावसंभवैनहीं ॥ काहेतै देवदत्तनामापुरुष जन्मकूंप्राप्तभयाहै तथादेवदत्तनामापुरुष मरणकूंप्राप्तभयाहै याप्रकारकीप्रतीति सर्वजनोंकूंहोवैहै ॥ यातैं देहकेजन्मसाथिआत्माकाभीजन्मसंभवैहै ॥ तथादेहके मरणसाथि आत्माकाभीमरणसंभवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहै ॥

देहिनोस्मिन्यथादेहेकौमारंयौवनंजरा ॥ तथादेहांतरप्राप्तिर्धीरस्तत्रनमुह्यति ॥ १३ ॥

देहिनः । अस्मिन् । यथा । देहे । कौमारं । यौवनं । जरा । तथा । देहांतरप्राप्तिः । धीरः । तत्र । न । मुह्यति । इतिपदच्छेदः ।

हेअर्जुन जैसे देहीआत्माकूं इस देहविषे कौमार यौवन जरा यहतीनअवस्थाप्राप्तहोवैहैं तैसे दुसरेदेहकी भीप्राप्तिहोवैहै तिसविषे धीरपुरुष नहीं मोहकूंप्राप्तहोवैहै ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ भूत भविष्यत् वर्त्तमान यातीनकालोंविषेस्थित जितनैंकीजगतमंडलवर्त्तिदेहहैं ॥ तैसर्वदेह जिसकेहोवैं ताकूंदेहीकहेहैं ॥ सोएकहींदेहीआत्मा विभूहोणेतैं सर्वदेहोंकेसाथि संबंधवालाहै ॥ यातै ताएकचेतनआत्माकरिकैही सर्वशरीरीविषे नानाप्रकारकीचेष्टा सिद्धहोइसकेहैं ॥ देहदेहविषे आत्माकेभेदमानणेमैं किंचित्मात्रभी प्रमाणनहीहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

याअर्थकेसूचनकरणेवासतैहीं (देहिनः) यापदविषे एकवचनकाकथनकऱ्याहै ॥ ओर पूर्वश्लोकविषेजो (सर्वेवयं) यह बहुवचन कथनकऱ्याथा ॥ ताबहुवचनका शरीरोंकेभेदविषेतात्पर्यहै ॥ कोईआत्माकेभेदविषे ताबहुवचनका तात्पर्य नहींहै ॥ यातैं पूर्वउत्तरवचनोंकाविरोधहोवैनहीं ॥ ऐसे एकदेहीआत्माके जैसे इसवर्त्तमानस्थूलदेहविषे बाल्यअवस्था यौवनअवस्था वृद्धअवस्था यहपरस्परविरुद्ध तीनअवस्थाहोवैहैं ॥ तिनबाल्यादिकतीनअवस्थावोंकेभेदकरिकै तादेहीआत्माकाभेदहोवैनहीं ॥ काहेतैं जोमैं पूर्वबाल्यअवस्थाविषे आपणेमातापिताकूं अनुभवकरताभयाहूं ॥ सोईहीमैं अबी वृद्धअवस्थाविषे आपणेपुत्रपौत्रादिकोंकाअनुभवकरताहूं ॥ याप्रत्यभिज्ञाज्ञानकेबलतैं बाल्यअवस्थाके आत्माका तथावृद्धअवस्थाकेआत्माका अभेदहींसिद्धहोवैहै ॥ और बाल्यअवस्थाकेशरीरका तथावृद्धअवस्थाकेशरीरका भेदतौं सर्वकूंप्रत्यक्षहींप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं देहकेभेदकरिकै आत्माकाभेदहोवैनहीं ॥ इसीप्रकार जन्मादिकविकारोंतैंरहितआत्माकूं इसशरीरतैंअत्यंतविलक्षणशरीरकीप्राप्ति स्वप्नविषे तथायोगकेप्रभावजन्यऐश्वर्यविषेहोवैहै ॥ तहां तिसतिसदेहोंकेभेदकीप्रतीतिहूंएभी सोईहींमैंहूं याप्रकारकेप्रत्यभिज्ञाज्ञानकेबलतैं आत्माकी एकताहींसिद्धहोवैहै ॥ जोकदाचित् यहस्थूलदेहही आत्माहोवै ॥ तौं बाल्ययौवनादिकअवस्थावोंकेभेदकरिकै देहकेभेदसिद्धहूए सोईमैंहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान नहीहोनाचाहीये ॥ काहेतैं अन्यविषेरहेहूएसंस्कार अन्यपुरुषकेप्रत्यभिज्ञाज्ञानकेकारण होवैनहीं किंतु एकअधिकरणविषेवर्त्तमानहूए संस्कारोंका तथाप्रत्यभिज्ञाज्ञानका परस्पर कारणकार्यभावहोवैहै ॥ किंवा ॥ बाल्य यौवन वृद्ध यातीनअवस्थावोंकेभेदहूएभी तिनअवस्थारूपधर्मोकाआश्रयजोदेहहै ॥ सोदेह बाल्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अवस्थातैंलैकेवृद्धअवस्थापर्यंत एकहीरहेहै ॥ तादेहकीएकताकूंही ॥ सोप्रत्यभिज्ञाज्ञान विषयकरेहै ॥ आत्माकेएक ताकूं सोप्रत्यभिज्ञाज्ञान विषयकरैनही ॥ याप्रकारकावचन जो सोचार्वाकवादीकाहै ॥ सोसंभवैनही ॥ काहेतैं स्वप्नविषे जाग्रतकेदेहतैंभिन्नहीदेहहोवैहै ॥ औरयोगकेप्रभावतैं योगीपुरुष अनेकदेहोकूंरचेहै ॥ तहां धर्मीरूपदेहोंकाहीभेदहै ॥ यातैं तहां सोइहीमैंहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान नहीहोणाचाहीये ॥ और सोईहीमैंहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानतौं स्वप्नद्रष्टापुरुषकूं तथायोगीपुरुषकूंभी होवैहै ॥ यातैं देहोंकीएकताकूं सोप्रत्यभिज्ञाज्ञान विषयकरैनही ॥ इसोअभिप्राय करिकैबाल्यादिकअवस्था तथास्वप्नद्रष्टायोगीपुरुषकेदेह यहदोप्रकारकेदृष्टांतदीयेहैं ॥ यातैं जैसे मरुमरीचिकादि कोंविषे जलादिकोंकीबुद्धि भ्रांतिरूपहोवैहै ॥ तैसे मैंस्थूलहूं मैंगौरहूं मैंचलताहूं इत्यादिकबुद्धियांभी भ्रांतिरूपहीहैं ॥ काहेतैं अधिष्ठानवस्तुकेज्ञानतैं तिनदोनोंबुद्धियोंकाबाधहोइजावैहै जिसकाअधिष्ठानकेज्ञानकरिकैबाधहोवैहै ॥ सो भ्रांतिहीहोवैहै ॥ यहवार्ता (नजायते) इत्यादिकवचनोंविषेआगेस्पष्टहोवैंगो ॥ इतनैंकहणेकरिकै देहतैं भिन्नहूंआभीआ त्मातादेहकेउत्पन्नहूए तादेहकेसाथि उत्पन्नहोवैहै तथादेहकेनाशहूए तादेहकेसाथि नाश होवैहै यहचार्वाकादीकापक्षभी खंड नहूआजाणना ॥ काहेतैं तापक्षविषे यद्यपि बाल्ययौवनादिकअवस्थावोंकेभेदहूएभी सोइहीमैंहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञा ज्ञान धर्मीरूपदेहकीएकताकूंलैकै संभवहोइसकैहै ॥ तथापि जिसस्वप्नविषे तथायोगजन्यऐश्वर्यविषे धर्मीरूपदेहोंकाहीं भेदहोवैहै ॥ तिसस्थलविषे सोईहीमैंहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान तावादीकेमतविषे नहीसंभवैगा ॥ और तहांभी सोप्रत्यभिज्ञाज्ञानतौंहौवैहै ॥ यातैं देहकेउत्पत्तिनाशकेसाथि आत्माकाउत्पत्तिनाशमानणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ अथवा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(देहिनोस्मिन्) याश्लोकका यहदूसराअर्थकरणा ॥ जैसे जन्मादिकविकारोंतैंरहित एकहीआत्माकूं कौमारादिकती
नअवस्थावोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे इसदेहतैंप्राणोंकेउत्क्रमणतैंअनंतर दूसरेदेहकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तहां जैसे बाल्यादि
कअवस्थावोंकीप्राप्तिकालविषे सोईहीमैंहू याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञानहौवैहै ॥ तैसे मरणतैंअनंतर दूसरेदेहकेप्राप्त
हूए सोईहींमैंहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान होवैनहीं ॥ यातैं सोईहींमैंहूं याप्रकारकेप्रत्यभिज्ञाज्ञानकरिकै यद्यपि त
हां पूर्वउत्तरदेहोंविषे आत्माकीएकतासिद्धहोवैनहीं ॥ तथापि युक्तिकरिकै तहां आत्माकीएकतासिद्धहोइसकेहै ॥ सा
युक्तियहहै ॥ माताकेउदरतैंबाहरिनिकस्याहूआजोबालकहै ॥ तीसबालककूं उसीकालविषे हर्ष शोक भय आदिकों
कीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिन हर्षशोकादिकोंकीप्राप्तिविषे दूसरातौंकोईकारणसंभवतानहीं ॥ किंतु केवल पूर्वजन्मकेसंस्का
रहीं तिनहर्षशोकादिकोंकेकारणहैं जोकदाचित् पूर्वजन्मसंस्कार नहींअंगीकारकरोयें ॥ तौं माताकेउदरतैंबाह
रिनिकस्याजोबालकहै ॥ ताबालकी उसीकालविषे माताकेस्तन्यपानादिकोंविषेप्रवृत्तिहोवैहै ॥ सा नहींहोणोचाहीये
॥ काहेतैं चेतप्राप्तीयोंकी जाजाप्रवृत्तिहोवैहै ॥ सासाप्रवृत्ति यहवस्तु हमारेइष्टकासाधनहै याप्रकारकेइष्टसाधनता
ज्ञानकरिकै जन्यजहोवैहै ॥ इष्टसाधनताज्ञानतैंविना कोईभीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं बालककी जोमाताकेस्तन्यपानवि
षे प्रथमप्रवृत्तिहै ताप्रवृत्तितैंपूर्व यहस्तन्यपान हमारेइष्टकासाधनहै याप्रकारकाइष्टसाधनताज्ञान ताबालककूं
अवश्यमान्याचाहीये ॥ और ताजन्मकालविषे ताबालककूं सोइष्टसाधनताज्ञान अनुभवरूपतौंसंभवतानहीं ॥ किंतु
सोइष्टसाधनताज्ञान स्मृतिरूपमानणाहोवैंगा ॥ और जोजोस्मृतिरूपज्ञानहोवैहै ॥ सोसो पूर्वअनुभवजन्यसंस्कारों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तैंहींहोवैहै ॥ संस्कारोंतैंविना स्मृतिज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं ताबालककूं पूर्वजन्मोंविषे यहमाताकास्तन्यपान हमारेक्षु धाकीनिवृत्तिरूपइष्टकासाधनहै याप्रकारकाअनुभव बहुतवारहूआहै ॥ ताअनुभवजन्यसंस्कारोंतैंहीं ताबालककूं ज न्मकालविषे सोस्मरणरूपइष्टसाधनताज्ञानहोवैहै यहअंगीकारकरणाहोवैंगा ॥ और तेसंस्कारभी अनुद्बुद्धहूए स्मृ तिज्ञानकूंउत्पन्नकरैनहीं ॥ किंतु उद्बुद्धहूएहीं तेसंस्कार स्मृतिज्ञानकूंउत्पन्नकरेहैं ॥ जो अनुद्बुद्धसंस्कारोंतैंभी व स्तुकीस्मृतिहोतीहोवै ॥ तौं सर्वकालविषे तावस्तुकोस्मृतिहोणीचाहीये ॥ यातैं जन्मकालविषे ताबालककेपूर्वजन्म केसंस्कारोकाउद्बोधनकरणेहारा पुण्यपापरूपअदृष्टतैंविना दूसराकोईसंभवतानहीं ॥ किंतु जिनपूर्वजन्मोंके पुण्य पापरूपअदृष्टोंनैं यहवर्तमानशरीरदीयाहै ॥ तेपुण्यपापरूपअदृष्टहीं ताजन्मकालविषे पूर्वजन्मकेसंस्कारोंकूं उद्बुद्धक रेहैं ॥ और तेपूर्वजन्मकेसंस्कार तथापुण्यपापरूपअदृष्ट आत्मारूपआश्रयतैंविना स्वतंत्ररहैंनहीं ॥ यातैं पूर्वजन्म विषे आत्माकीविद्यमानता अंगीकारकरीचाहीये ॥ याप्रकारकीयुक्तिकरिकैहीं पूर्वउत्तरशरीरविषे आत्माकोएकता सिद्धहोवैहै इति ॥ अथवा ॥ (देहिनोस्मिन्) याश्लोककायहतीसराअर्थकरणा ॥ जैसे तैंएकहीदेहीआत्माका क्रमतैं देहकेबाल्यादिकअवस्थावोंकोउत्पत्तिविनाशहूएभी नित्यहोणेंतैं भेदनहींहोवैहै ॥ तैसे विभुहोणेंतैं तैंएकहीआत्माकूं एकहीं कालविषे सर्वदेहोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तहां आत्माकूं जोदेहादिकोंकीन्यांई मध्यमपरिमाणवालामानिये तौं आ त्माविषे देहादिकोंकीन्यांई अनित्यताप्राप्तहोवैगी ॥ और आत्माकूं जोअणुपरिमाणवालामानिये तौं सर्वशरीरविषे व्यापकसुखदुःखकीप्रतीतिनहींहोणीचाहीये ॥ तिनदोनोंदोषोंकीनिवृत्तिकरणेवासतैं आत्माकूं विभुमान्याचाहीये ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और सर्वशरीरोंविषे अहंअस्मि अहंअस्मि याप्रकारकीएकाकारप्रतीति देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं सर्वशरीरोंविषे तूं एकहींआत्मा व्यापकहैं ॥ इसप्रकार सर्वशरीरोंविषे आत्माकीएकताकेसिद्धहूएभी यहभीष्मद्रोणादिक वध्यहैं और मैंअर्जुन इनोंका घातकहूं याप्रकारकीभेदकल्पनाकूंकरिकै जोतूं मोहकूंप्राप्तभयाहैं ॥ ताकेविषे तुमारा अविद्वान्पणा हींहेतुहै ॥ और जोविद्वान्पुरुष सर्वशरीरोंविषे आत्माकीएकताकूंजानेहैं ॥ तेविद्वान्धीरपुरुष ताकेविषे मोहकूंप्राप्त होवैनहीं ॥ काहेतैं मैइनोंकाहननकरणेहाराहूं और हमारेकरिकै यहहननहोवैंगे याप्रकारकाभेददर्शन ताविद्वान्पुरुष कूंहोतानहीं ॥ याकहणेकरिकै भगवान्नैं यहअनुमानसूचनकर्या ॥ वादीयोंकेविवादकाविषयरूप जेयहभीष्मद्रोणादि कसर्वदेहहैं ॥ तेसर्वदेह एकभोक्ताआत्मावालेहैं देहत्वधर्मवालेहोणेतैं तुमारेबाल्ययौवनादिकदेहोंकीन्यांईइति ॥ तहांश्रु तिभीकहेहैं ॥ एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः सर्वव्यापीसर्वभूतांतरात्माइति ॥ अर्थयह ॥ एकहींआत्मादेव सर्वभूतप्राणीयोंविषे व्यापकहै ॥ तथा काष्ठोंविषेअग्निकोन्यांईं गुह्यहै ॥ तथा सर्वभूतप्राणीयोंका अंतरआत्माहैइति ॥ इतनैंकहणेकरि कै आत्माविषे नित्यपणा तथाविभुपणा सिद्धकर्या ॥ ताकरिकै इतनैंमत खंडनकर्ये ॥ तहां चार्वाकनास्तिकतौं यास्थू लदेहकूंहीं आत्मामानेहैं ॥ और तिनचार्वाकोंकेएकदेशीयोंविषे कोइकतौं इंद्रियोंकूंहीआत्मामानेहैं ॥ और कोइक म नकूंहींआत्मामानेहैं ॥ और कोइक प्राणोंकूंहींआत्मामानेहैं ॥ और सौगततौं क्षणिकविज्ञानकूंहीआत्मामानेहैं ॥ और दिगंबरतौं देहतैंभिन्न तथास्थिरस्वभाववाला तथादेहकेसमानपरिमाणवाला आत्माकूंमानेहैं ॥ और मध्यमपरिमा णवालेविषे नित्यतासंभवैनहीं यातैं नित्यतथाअणुपरिमाणवाला आत्माहै याप्रकार दिगंबरोकेएकदेशीमानेहैं सि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वांतमैं आत्माकूं नित्यतथाविभुमानणेविषे तेसर्वमत खंडनहोईजावैहैं इति ॥ १३ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् आत्मा नित्यहै तथाविभुहै याअर्थविषेतौं हम विवाद करतेनहीं ॥ परंतु सर्वदेहोंविषेआत्माएकहै याअर्थकूं हम नहीं सहारिसकतेहैं ॥ काहेतैं बुद्धि सुख दुःख इच्छा द्वेष प्रयत्न धर्म अधर्म संस्कार यानवगुणोंवाला नित्यविभुआत्माहो वैहै ॥ सोआत्मा शरोरशरोरविषे भिन्नभिन्नहोवैहै ॥ याप्रकार वैशेषिक अंगीकारकरेहैं ॥ इसीहींपक्षकूं दूसरेतार्किक मीमांसक आदिकभीअंगीकारकरेहैं ॥ और आत्माकूंनिर्गुणमानणेहारे सांख्यशास्त्रवालेतौं आत्मा सुखदुःखादिकगु णोवालाहै याअर्थविषे यद्यपि विवादकरेहैं ॥ तथापि शरीरशरीरविषे आत्मा भिन्नभिन्नहै याअर्थविषे तेसांख्यशा स्त्रवालेभी विवादकरतेनहीं ॥ जोकदाचित् सर्वशरोरों विषे एकहीं आत्मा अंगीकारकरीये तौं एकशरीरविषेसुखकीप्रा प्तिहूए सर्वशरीरोंविषेसुखकोप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ तथा एकशरीरविषेदुःखकीप्राप्तिहूए सर्वशरीरोंविषेदुःखकीप्राप्ति होणीचाहिये ॥ और एकशरोरविषे सुखदुःखकीप्राप्तिहूए सर्वशरोरोंविषेसुखदुःखकोप्राप्ति देखणेविषेआवतीनहीं ॥ यातैं शरोरशरीरविषे भिन्नभिन्नआत्मामान्याचाहिये ॥ इसप्रकारआत्माकेभेदसिद्धहुए भीष्मद्रोणादिकोंतैंभिन्नमैंआ त्मा यद्यपि नित्यहूं तथाविभुहूं तथापि मैंआत्मा सुखदुःखादिकगुणोंवालाहूं ॥ यातैं तिनभीष्मद्रोणादिकबांधवोंके देहकेनाशहूएहमारेविषेसुखकावियोगतथादुःखकासंबंधअवश्यकरिकैहोवैंगा ॥ यातैंहमारेकूंशोकमोहकरणा अनुचित नहींहै ॥ किंतुउचितहै ॥ इसप्रकारकेअर्जुनकेअभिप्रायकोशंकाकरिकैसोभगवान्लिंगदेहकोविवेककरणेवासतैकहैहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

130

मात्रास्पर्शास्तुकौंतेयशीतोष्णसुखदुःखदाः ॥ आ
गमापायिनोनित्यास्तांस्तितिक्षस्वभारत ॥ १४ ॥

मात्रास्पर्शाः।तु। कौंतेय। शीतोष्णसुखदुःखदाः। अगमापायिनः। अनित्याः। तान्। तितिक्षस्व।भारत। इतिप०
हे कुंतिकेपुत्र हे भरतवंशविषेउत्पन्नहूआ अर्जुन अनियतस्वभाववालेजो इंद्रियोंकेविषयोंकेसाथिसंबंधहैंते उत्पत्ति
नाशवान्अंतःकरणकूंही शीतोष्णकीप्राप्तिद्वारासुखदुःखकीप्राप्तिकरणेहारेहैं तिनोंकूं तूं सहनकर॥१४॥इतिप०॥

॥ टीका ॥ जिनोंकरिकैविषयजान्येजावैहैं तिनोंकानाम मात्राहै ॥ ऐसेनेत्रादिकइंद्रियहै ॥ नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकैही रूपादिकविषय जान्येजावैहैं ॥ तिननेत्रादिक इंद्रियोंके जेरूपादिकविषयोंकेसाथि यथायोग्यसंबंधहैं ॥ तिनोंकानाम मात्रास्पर्शहै ॥ अथवा ॥ नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकैजन्य जेतिसतिसविषयाकार अंतःकरणकापरिणामरूपवृत्तियांहैं तिनोंकानाम मात्रास्पर्शहै ॥ अथवा ॥ कौषितकिउपनिषद्विषे वागादिकदशइंद्रियोंकूं प्रज्ञामात्राकह्याहै ॥ और नामादिकदशविषयोंकूं भूतमात्राकह्याहै ॥ तिनवागादिकदशइंद्रियोंका तथानामादिकदशविषयोंका ईहां मात्राशब्दकरि कैग्रहणकरणा ॥ तिनइंद्रियविषयरूपमात्रावोंके जेपरस्परविषयविषयीभावसंबधहैं ॥ तिनोंकानाम मात्रास्पर्शहै ॥ अथवा ॥ मात्रा यहतृतीयाविभक्त्यंत प्रमाताकावाचक भिन्नपदजानणा ॥ तात्रमाताकेसाथि जेविषयइंद्रियोंकेसंबंधहैं तिनोंकानाम मात्रास्पर्शहै ॥ और आगमनाम उत्पत्तिकाहै ॥ और अपायनाम नाशकाहै ॥ सोआगम तथा

॥ ५८ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपाय जिनकाहोवै ताकानाम आगमापायीहै ॥ ऐसेआगमापायीअंतःकरणकूंहीं तेमात्रास्पर्श शीतउष्णादिकोंकी प्राप्तिद्वारा सुखदुःखकीप्राप्तिकरेहैं ॥ सर्वत्रव्यापकनित्यआत्माकूं तेमात्रास्पर्श सुखदुःखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ काहेतैं सोनित्यआत्मा निर्गुणहै तथानिर्विकारहै ॥ तहांश्रुति ॥ साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च ॥ अर्थयह ॥ यहआत्मादेव सर्व कासाक्षीहै तथाचेतनहै तथाअद्वितीयहै तथानिर्गुणहै तथानिष्क्रियहैइति ॥ ऐसेनिर्विकारनित्यआत्माकूं अनित्यअं तःकरणकेसुखदुःखादिकधर्मोंकोआश्रयतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं धर्म धर्मी यादोनोंकाअभेदहींहोवैहै ॥ अभेदतैंविना दू सराकोईतिनोंकासंबंधसंभवतानही ॥ सोनित्यअनित्यकाअभेदकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातैं तेसुखदुःखादिक आ त्माकेधर्मनहींहै ॥ और सुखदुःखादिरूपसाक्ष्यपदार्थोविषेसाक्षिआत्माकाधर्मपणा कदाचित्भी संभवैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ सुखदुःखादिकधर्मोंकाआश्रयकेवलअंतःकरणहींहै ॥ आत्मा तिनसुखदुःखादिकधर्मोंकाआश्रयन हींहै ॥ सोअंतःकरण शरीरशरीरविषे भिन्नभिन्नहै ॥ ताअंतःकरणकेभेदकूं अंगीकारकरिकैहीं कोईसुखीहै कोईदुःखी हैं इत्यादिकव्यवस्थासंभवहोइसकैहै ॥ यातैं सुखदुःखादिकोंकीव्यवस्थाकेअनुपपत्तितैं शरीरशरीरविषे आत्माकाभे दमानणा अत्यंतअसंगतहै ॥ किंवा सर्वजगतकाप्रकाशकरणेहारा तथाजन्मादिकविकारोंतैंरहित जोआत्माहै ॥ सा आत्मा सत्रूपकरिकै तथास्फुरणरूपकरिकै सर्वपदार्थोविषेअनुगतहूआ प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं तासत्तास्फुरणरूप आत्माकेभेदविषे कोईभीप्रमाणनहींहै ॥ उलटा एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः इत्यादिकअनेकश्रुतियां आत्माकेअभेदविषे हीप्रमाणहैं ॥ किंवा ॥ सुखदुखादिकोंकीउत्पत्तिविषेअंतःकरणकूंकारणताहै ॥ यहवार्ता नैयायिकोंकूं तथासिद्धांतीकूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दोनोंकूंअंगीकारहै ॥ तहां नैयायिकतौं मनरूपअंतःकरणकूं सुखदुःखादिकधर्मोंका निमित्तकारणमानेहैं ॥ और आत्माकूंसुखदुःखादिकोंकासमवायिकारणमानेहै ॥ और सिद्धांतविषे अंतःकरणकूंहींसुखदुःखादिकोंकाउपादानकारण मान्याहै ॥ तहां साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च इत्यादिकश्रुतियोंनैं आत्माकूंनिर्गुणकह्याहै ॥ यातै निर्गुणआत्माविषे गुणकीसमवायीकारणताकहणीश्रुतितैंविरुद्धहै ॥ और अंतःकरणतैंविना दूसरेकिसीपदार्थविषे सुखदुःखादिकोंकीसमवायीकारणतासंभवैनहीं ॥ और निमित्तकारणताकीअपेक्षाकरिकै समवायीकारणता श्रेष्ठभाहोवैहै ॥ यातैं नैयायिकोंनैंभी अंतःकरणकूंहीं सुखदुःखादिकोंकासमवायीकारणमान्याचाहीये ॥ किंवा ॥ केवलयुक्तिकरिकैहीं अंतःकरणविषे सुखदुःखादिकधर्मोंकोउपादानकारणतासिद्धनहींहै किंतु श्रुतिप्रमाणकरिकैभीसिद्धहै ॥ तहांश्रुति ॥ कामःसंकल्पोविचिकित्साश्रद्धाअश्रद्धाधृतिरधृतिर्ह्रीर्धीर्भिरित्येतत्सर्वंमनएवेति ॥ अर्थयह ॥ इच्छा संकल्प संशय श्रद्धा अश्रद्धा धैर्य अधैर्य लज्जा वृत्तिज्ञान भय यहसर्वमनरूपहींहैंइति ॥ यहश्रुति कामादिकविकारोंका मनकेसाथि अभेदकथनकरतीहूई मनकू तिनकामादिकविकारोंकाउपादानकारणत्व कथनकरैहै ॥ ताश्रुतिविषे कामादिकविकार सुखदुःखादिकधर्मोंकेभी उपलक्षकहैं ॥ और आत्माकूंतो स्वप्रकाशज्ञानआनंदरूपताकरिकै अनेकश्रुतियोंनैं कथनकऱ्याहै ॥ यातैं आत्माकूं तिनसुखदुःखादिकधर्मोंकोआश्रयता संभवैनहीं ॥ यातैं नैयायिकादिकोंनैं जोआत्माविषेविकारीपणा यथाभेद अंगीकारकऱ्याहै ॥ सो केवल भ्रांतिकरिकैअंगीकारकऱ्याहैं ॥ हेअर्जुन आगमापायीहोणेतैं तथादृश्यहोणेतैंनित्यद्रष्टाआत्मातैंभिन्न जोयहअंतःकरणहै ॥ ताअंतःकरणविषे सुखदुःखकीउत्पत्तिकरणेहारे जेमात्रास्पर्शहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तेमात्रास्पर्श नियतस्वभाववालेनहींहैं ॥ किंतु अनियतस्वभाववालेहैं ॥ काहेतैं एककालविषे सुखकूंउत्पन्नकरणेहारेजे शीतउष्णादिकहै ॥ तेहींशीतउष्णादिक अन्यकालविषे दुःखकूंहींउत्पन्नकरेहैं ॥ इसीप्रकार किसीकालविषे दुःखकूं उत्पन्नकरणेहारे जेशीतउष्णादिकहैं ॥ तेहींशीतउष्णादिक अन्यकालविषे सुखकूंहीं उत्पन्नकरेहैं ॥ यातैं तेमात्रास्प र्श अनियतस्वभाववालेहैं ॥ ईहां शीतउष्णकाग्रहण आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैविक यातीनप्रकारकेसुख दुःखकेग्रहणकाभी उपलक्षकहै ॥ तहां ज्वरादिकव्याधियोंकरिकैअंतःकरणविषेउत्पन्नभयाजोदुःखहै ताकूं आध्यात्मि कदुःखकहेहैं ॥ और सिंहसर्पादिक भूतोंकरिकैउत्पन्नभयाजोदुःखहै ताकूं आधिभौतिकदुःखकहेहै ॥ और जल अग्नि ग्रहादिकोंकरिकैउत्पन्नभया जोदुःखहै ताकूं आधिदैविकदुःखकहेहैं ॥ इसप्रकार सुखकेभी तीनभेदजानिलेणे ॥ यातैं हे अर्जुन अत्यंतअस्थिरस्वभाववाले तथातैंनिर्विकारआत्मातैंभिन्नविकारोअंतःकरणकुंसुखदुःखकीप्राप्तिकरणेहारे ऐ सेजे भीष्मद्रोणादिकोंकेसंयोगरूप मात्रास्पर्शहैं ॥ तिनमात्रास्पर्शोकूं तूं सहनकर ॥ तात्पर्ययह ॥ यहमात्रास्पर्श मैंअ विकारोआत्माको किंचित्मात्रभीहानिकरतेनहीं याप्रकारकेविवेककरिकै तूं तिनमात्रास्पर्शोकोउपेक्षाकर ॥ दुःखादिकध र्मवालेअंतःकरणकेतादात्म्यअध्यासकरिकै तूं आपणेआत्माकूंदुःखीमतमान ॥ यहहीं तिनमात्रास्पर्शोका सहनहै ॥ ईहां (हेकौंतेय हेभारत) यादोनोंसंबोधनोंकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ मातृकुलतथा पितृकुल यादोनोंकुलोंकरिकैअत्यंतशुद्ध जोतूं अर्जुनहैं ॥ तिसतुमारेकूं याप्रकारकाअज्ञान उचितनहींहै इति और किसीटीकाविषे (आगमापायिनः) यहविशेषण मात्रास्पर्शोकाही कथन ऱ्याहै ॥ आगमापायीहोणेतैं तेमात्रास्पर्शअनित्यहैं याप्रकार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ताकाअर्थकऱ्याहै ॥ परंतु इसव्याख्यानविषे (शीतोष्णसुखदुःखदाः) यावचनकरिकै कथनकरीजासुखदुःखकीप्राप्ति सासुखदुःखकीप्राप्ति तेमात्रास्पर्श किसकूंकरेहैं याप्रकारकीजिज्ञासाकेहूए अंतःकरणकूंसुखदुःखकीप्राप्तिकरेहैं याप्रकार अर्थतैंअंतःकरणकाग्रहणहोवैहै ॥ और पूर्वव्याख्यानविषे (अगमापायिनः) यहशब्द अंतःकारणकाहींवाचकहै यातैंताश ब्दतैंहींअंतःकरणकीप्राप्तिहै इति ॥ १४ ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् अंतःकरणकूंजोसुखदुःखकाआश्रय अंगीकारकरौंगे ॥ तौं तिस अंतःकरणकूंहीं कर्त्ताभोक्तापणेकीप्राप्तिकरिकै चेतनरूपता अंगीकारकरणीहोवैंगी ॥ ताअंतःकरणकूंहीं जबी चेत नरूपतासिद्धहूई तबी ताअंतःकरणतैंभिन्न तथाअंतःकरणकूंप्रकाशकरणेहारेभोक्ताआत्माविषेकोईप्रमाणहैनहीं ॥ यातैं केवलनाममात्रविषेविवादसिद्धहोवैंगा ॥ तिननामोंकेअर्थविषे कोईविवादहोवैंगानहीं ॥ किसीवादीनैं तिसकूं अंतःकरण नामकरिकैकथनकऱ्या ॥ किसीवादीनैं तिसकूं आत्मानामकरिकैकथनकऱ्या ॥ और ताअंतःकरणतैंभिन्न जोचेतनआ त्माअंगीकारकरौंगे ॥ तौंवेदांतसिद्धांतविषेअंगीकारकरी जाबंधमोक्षदोनोंकीसमानाधिकरणताहै सासिद्धनहींहोवैंगी॥ किंतुताबंधमोक्षका भिन्नभिन्नअधिकरण सिद्धहोवैंगा ॥ तहांसुखदुःखआश्रयहोणेतैं अंतकरणतौं बंधकाअधिकरणहोवैंगा ॥औरताअंतःकरणतैंभिन्नआत्मामोक्षकाअधकिरणहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान्कहेहै ॥

यंहिनव्यथयंत्येतेपुरुषंपुरुषर्षभ ॥ समदुःखसुखंधीरं सोऽमृतत्वायकल्पते ॥ १५ ॥

यं[३]। हि[७]। न[८]। व्यथयंति[९]। एते[६]। पुरुष[५]। पुरुषर्षभ[१]। समदुःखसुखे[२]। धीरं[४]। सः[१०]। अमृतत्वाय[११]। कल्पते[१२] ॥ १५ ॥इतिपद०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेपुरुषोंविषेश्रेष्ठअर्जुन समानहैंदुःखसुखजिसकूं ऐसेजिस धीरं पुरुषकूं यहमात्रास्पर्श जिंसकारणतैं
नहीं व्यथाकरते तिसकारणतैं सोंधीरपुरुष मोक्षकीप्राप्तिवासतै योग्यहोवैहै ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अत्रायंपुरुषःस्वयंज्योतिर्भवति अर्थयह इसस्वप्नअवस्थाविषे सूर्यादिकज्योतियोंकेअभावहूए य
हआत्मापुरुषहीं स्वयंज्योतिहैइति ॥ याश्रुतिप्रमाणतैं स्वप्नकाशरूपकरिकैसिद्धजोचेतनआत्माहै ॥ सोचेतनआत्मा आ
पणेपरिपूर्णरूपकरिकै सर्वशरीररूपपुरियोंविषेनिवासकरेहै ॥ याकारणतैं श्रुतिभगवती ताचेतनआत्माकूं पुरुष या
नामकरिकैकथनकरेहै ॥ अथवा ॥ अष्टपुरोंविषेजोनिवासकरेहै ताकानाम पुरुषहै ॥ तेअष्टपुरयहहे ॥ श्लोक ॥ कर्मे
द्रियाणिखलुपंचतथापराणि ज्ञानेंद्रियाणिमनआदिचतुष्टयंच॥प्राणादिपंचकमथोवियदादिकंच कामश्चकर्मचतमःपुनर
ष्टमीपूरिति ॥ अर्थयह ॥ वाकादिकपंचकर्मइंद्रिय १ तथाश्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय २ तथामनादिकअंतःकरणचारि
३ तथाप्राणादिकपंचप्राण ४ तथाआकाशादिकपंचभूत ५ तथाकाम ६ तथाकर्म ७ तथातम ८ याअष्टोंकानामपु
रहै ॥ ईहां तमशब्दकरिकै कारणअज्ञानकाग्रहणकरणाइति ॥ तहांश्रुति सवायंपुरुषःसर्वासुपूर्षुपुरिवाशयः ॥ अर्थ
यह ॥ यहचेतनआत्मा शरीरादिरूपसर्वपुरियोंविषेनिवासकरताहूआ पुरुषसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ ऐसेस्वयंज्योति
आत्माकूं अनात्मअंतःकरणकेधर्मरूपकरिकै तथादृश्यरूपकरिकै यहदुःखसुख समानहींहैं ॥ याकारणतैं ताआत्माकूं
समदुःखसुखकहेहैं ॥ ईहां दुखःसुखकाग्रहण पूर्वउक्तअंतःकरणकेकामसंकल्पादिकसर्वधर्मोंकाउपलक्षकहै ॥ तहां
श्रुति ॥ एषनित्योमहिमाब्राह्मणस्यनवर्धतेकर्मणानोकनीयान् ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मयहब्राह्मणका यहनित्यमहिमाहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जोपुण्यकर्मकरिकै सुखरूपब्रह्मादिकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ और पापकर्मकरिकै दुःखरूपकनिष्ठताकूंनहींप्राप्तहोवैहैइति ॥ याश्रुतिनैं आत्माविषे सुखदुःखदोनौंधर्मोकानिषेधकरयाहै ॥ ताकरिकै कामसंकल्पादिकसर्वधर्मोकानिषेधभीजानिलेणा ॥ और सोस्वयंज्योतिआत्मा आपणेचिदाभासद्वारा बुद्धिकेसाथितादात्म्यअध्यासकूंप्राप्तहोइकै ताबुद्धिकूं शुभअशुभकार्यविषे प्रेरणाकरेहै ॥ यातैं ताबुद्धिकेप्रेरकसाक्षीआत्माकूं धीर यानामकरिकैकथनकरेहै ॥ धियमीरयतीतिधीरःइति ॥ तहांश्रुति ॥ सधीःस्वप्नोभूत्वेमंलोकमतिक्रामति ॥ अर्थयह ॥ बुद्धिरूपउपाधिवालायहआत्मादेव स्वप्नकूं प्राप्तहोइकै इसजाग्रतकापरित्यागकरैहैइति ॥ इतनैंकहणेकरिकै आत्माविषे बंधकीप्रसक्तिदिखाई ॥ जिसअधिकरणविषे जोवस्तु स्वभावतैंहोवैनहीं तिसअधिकरणविषे तिसवस्तुकाआरोपकरणा याकानाम प्रसक्तिहै ॥ यहवार्त्ता दूसरेशास्त्रविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ यतोमानानिसिद्ध्यंति जाग्रदादित्रयंतथा ॥ भावाभावविभागश्च सब्रह्मास्मीतिबोध्यते ॥ अर्थयह ॥ जिसस्वयंज्योतिआत्मातैं प्रत्यक्षादिकसर्वप्रमाण सिद्धहोवैहैं ॥ तथा जाग्रतादिकतीनअवस्था सिद्धहोवैहैं ॥ तथा यहभावपदार्थहै यहअभावहै इत्यादिकभेद सिद्धहोवैहै ॥ सोसाक्षीआत्माहो ब्रह्मास्मि इत्यादिकमहावाक्योंनैं बोधनकरीताहैइति ॥ ऐसेसमदुःखसुखधीरपुरुषकूं पूर्वउक्तसुखदुःखकेदेणेहारेमात्रास्पर्श जिसकारणतैं वास्तवतैंव्यथाकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ काहेतैं सोस्वयंज्योतिपुरुष सर्वविकारोंकाप्रकाशकहोणेतैं तिनविकारोंकेयोग्यनहींहैं ॥ तहांश्रुति ॥ सूर्योयथासर्वलोकस्यचक्षुर्नलिप्यतेचाक्षुषैर्बाह्यदोषैः ॥ एकस्तथासर्वभूतांतरात्मा नलिप्यतेलोकदुःखेनबाह्यइति ॥ अर्थयह ॥ जैसे सर्वलोकोंकाचक्षुजोसूर्यभगवान्है ॥ सोसूर्यभगवान्चक्षुकेविषयबाह्यदोषोंकरिकै लिपाय ॥६१॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मानहोवैनहीं ॥ तैसे एकअद्वितीयरूपसर्वभूतोंकाअंतरआत्मा लोकदुःखोंकरिकैलिपायमानहोवैनहींइति ॥ इसका
रणतैंसोधीरपुरुष आपणेस्वरूपभूतब्रह्मात्माकेएकताज्ञानकरिकै सर्वदुःखोंकेउपादानकारणरूपअज्ञानकोनिवृत्ति पू
र्वक अद्वितोयस्वप्रकाशपरमानंदरूपमोक्षकीप्राप्तिवासतैयोग्यहोवैहै ॥ जोकदाचित् यहस्वयंज्योतिआत्मा आरोपित
बंधकाआश्रयनहींहोवै॥किंतुस्वाभाविकबंधकाआश्रयहोवै ॥तौंधर्मीकोविवृत्तितैंविनास्वाभाविकधर्मोकीनिवृत्तिहोवैनहीं
जैसे अग्निरूपधर्मीकीनिवृत्तितैंविना ताकेउष्णतादिकस्वाभाविकधर्मोकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे आत्मारूपधर्मीकीनिवृ
त्तितैंविनातास्वाभाविकबंधरूपधर्मकी कदाचित्भी निवृत्तिनहींहोवैंगी ॥ और आत्मातौंनित्यहै॥ यातैंताआत्माकी कदा
चित्भी निवृत्तिसंभवैनहीं ॥ यातैं आत्मा कदाचित्भीमुक्तनहींहोवैंगा ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै ॥ तहां
॥ श्लोक ॥ आत्माकर्त्रादिरूपश्चेन्माकांक्षीस्तर्हिमुक्ततां॥नहिस्वभावोभावानां व्यावर्त्ततौष्ण्यवद्भवेः ॥ अर्थयह ॥ आत्मा जो
कदाचित् स्वभावतैंहीं कर्तृत्वभोक्तृत्वादिरूपबंधवालाहोवै तौं हेशिष्य तूं मुक्तपणेकीइच्छामतकर ॥ काहेतैं भावपदार्थो
का जोस्वाभाविकधर्महोवैहै ॥ सोधर्म ताभावपदार्थरूपधर्मीकोनिवृत्तितैंविना कदाचित्भी निवृत्तहोवैनहीं ॥ जैसे सूर्य
का स्वाभाविकधर्मजोउष्णताहै ॥ सोउष्णतारूपधर्म सूर्यरूपधर्मीकोनिवृत्तितैंविना निवृत्तहोवैनहींइति ॥ किंवा आ
त्माविषे स्वाभाविकबंधकेअंगीकारकिये किसीकूंभी मोक्षकीप्राप्तीनहींहोवैंगी ॥ सोयहवार्त्ता विमुक्तश्चविमुच्यते ज्ञा
नादेवतुकैवल्यं इत्यादिकज्ञानतैंमोक्षकोप्राप्तिकूंकथनकरणेहारी अनेकश्रुतियोंतैंभीविरुद्धहै॥ शंका ॥ आत्माविषे जो
कदाचित् स्वाभाविकबंध हम अंगीकारकरैं ॥ तौंयहपूर्वउक्तदोष हमारेकूंप्राप्तहोहै ॥ परंतु ताआत्माविषेसोबंध ह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

म स्वाभाविकअंगीकारकरतेनहीं ॥ किंतु ताआत्माविषे बुद्धिआदिकउपाधिकृतबंधहै ॥ तहांश्रुति ॥ आत्मेंद्रियमनो
युक्तंभोक्तेत्याहुर्मनीषिणः ॥ अर्थयह ॥ देह इंद्रियमनरूपउपाधिकरिकैयुक्तआत्माकूंभोक्ता याप्रकार बुद्धिमानपुरुष
कथनकरेहैंइति ॥ इसप्रकार आत्माविषेउपाधिकृतबंधकेअंगीकारकीयेहूए आत्मारूपधर्मीकैविद्यमानहूएभी ताऔ
पाधिकबंधकीनिवृत्तिकरिकै मुक्तिकीप्राप्तिहोइसकहै ॥ समाधान ॥ हेवादी यातुमारेकहणेकरिकैयहअर्थासद्धहोवैहै ॥
जोवस्तु आपणेधर्मोकूं अन्यवस्तुविषेस्थितरूपकरिकै प्रतीतकरावैहै तावस्तुकानाम उपाधिहै ॥ जैसे रक्तवर्णवाला
जपाकुसुम आपणेरक्तवर्णकूं समीपवर्त्तिस्फटिकमणिविषेस्थितरूपकरिकै प्रतीतकरावैहै ॥ यातैं ताजपाकुसुमकूं उ
पाधिकहेहैं ॥ तैसे यहबुद्धिआदिकभी आपणेसुखदुःखादिकधर्मोकूं आत्माविषेस्थितरूपकरिकै प्रतीतकरावैहैं ॥ यातैं
यहबुद्धिआहिकभी उपाधिहैं ॥ और जोधर्म उपाधिकृतहोवैहै ॥ सोधर्म असत्यहींहोवैहै ॥ जैसे जपाकुसुमरूपउपा
धिकृत जास्फटिकमणिविषेरक्तताहै सारक्तता असत्यहींहै ॥ तैसे बुद्धिआदिकउपाधिकृत जोआत्माविषेकर्तृत्वभोक्तृ
त्वादिकबंधहै सोबंधभीअसत्यहीहोवैंगा ॥ इसप्रकार बंधविषे औपाधिकतामानिकरिकै असत्यरूपताकूंअंगीकार
करणेहारातूंवादी हमारेसिद्धांतरूपमार्गविषेहीं प्राप्तभयाहैं ॥ यातैं तूं हमारेअनुकूलहैं प्रतिकूलनही ॥ यातैं यहअ
र्थसिद्धभया ॥ वास्तवतैं कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकसर्वसंसारधर्मोकेसंबंधतैंरहित आत्माविषेभी अंतःकरणादिकउपाधिके
वशतैं जोतिनसंसारधर्मोकेसंबंधकोप्रतीतिहै यहही आत्माविषेबंधहै ॥ और आपणेवास्तवस्वरूपकेज्ञानकरिकै जबी
आपणेस्वरूपकेअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै तथाताअज्ञानकेकार्यरूपबुद्धिआदिकउपाधियोंकोनिवृत्तिहोवैहै तथाताउपा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धिकृतसर्वभ्रमकीनिवृत्तिहोवैवै ॥ तबी सर्वदृश्यप्रपंचकेसंबंधतैंरहितहोणेतैं शुद्धरूप तथास्वप्रकाशपरमानंदरूपता करिकै सर्वत्रपरिपूर्णरूप जोआत्माहै ताआत्मादेवका स्वतःही कैवल्यरूपमोक्षहोवैहै ॥ यातैं बंध मोक्ष यादोनोंका भिन्नभिन्नअधिकरणनहींहै ॥ किंतु एकहींआत्मा दोनोंकाअधिकरणहै ॥ याकहणेतैं अंतःकरण आत्मा याप्रकारके नाममात्रविषेहींविवादहै तिनदोनोंनामोंकाअर्थएकहींहै यहजोपूर्ववादीनैंकह्याथा सोभी खंडनहूआजानणा ॥ काहेतैं प्रकाश्य प्रकाशक यादोनोंकीएकतासंभवैनहीं ॥ जैसे प्रकाश्यजोघटादिकपदार्थहैं तथाप्रकाशकजोदीपकादिकहैं तिन दोनोंकीएकतासंभवैनहीं ॥ तैसे प्रकाश्यरूपजोअंतःकरणादिकहैं तथाप्रकाशजोसाक्षीआत्माहैं तिनदोनोंकोभी ए कतासंभवैनहीं ॥ किंतु प्रकाश्यपदार्थ प्रकाशकतैंभिन्नहींहोवैहैं ॥ जोकदाचित् एकहींपदार्थकूं प्रकाश्यरूप तथाप्रका शकरूप मानीये ॥ तौं एकहींपदार्थविषे प्रकाशरूपक्रियाकाकर्त्तापणा तथाकर्मपणा प्राप्तहोवैंगा ॥ सो अत्यंतविरु द्धहै ॥ एकहींवस्तुविषे एकक्रियानिरूपितकर्त्तापणा तथाकर्मपणा कहांभी देखणेविषेआवतानहीं ॥ शंका ॥ एकहीं वस्तुविषे जोप्रकाश्यता तथाप्रकाशकता नहींहोवै तौं आत्मा विषेभी साप्रकाश्यता तथाप्रकाशकता कैसेसंभवैगी ॥ समाधान ॥ स्वयंज्योतिआत्माविषे हम केवल प्रकाशकताहींअंगीकारकरतेहैं ॥ घटादिकपदार्थोंकीन्यांई आत्माविषे प्रकाश्यता हम अंगीकारकरतेनहीं ॥ और आत्माविषे जोअंतःकरणादिकोंकाप्रकाशकपणाहै ॥ सो स्वप्रकाशज्ञा नरूपतातैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु सोप्रकाशपणा स्वप्रकाशज्ञानरूपताहींहै ॥ ऐसाप्रकाशकपणा आत्मातैंभिन्नअंतःक रणादिकोंविषे संभवतानहीं ॥ शंका ॥ बुद्धिकीवृत्तियोंतैंभिन्न दूसराकोईज्ञानहैनहीं ॥ यातैं बुद्धिकीवृत्तियांहीं ज्ञानरू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पहैं ॥ समाधान ॥ ज्ञान सर्वदेशविषे तथासर्वकालविषे अनुगतहै तथाभेदकरणेहारेधर्मोतैंरहितहै यातैं सोज्ञान विभुहै तथानित्यहै तथाएकहै ॥ और बुद्धिकापरिणामरूपवृत्तियांतौं परिच्छिन्नहैं तथाअनित्यहैं तथाअनेकहै ॥ ऐसेविभुनित्यएकज्ञानकूं परिच्छिन्नअनित्यअनेकवृत्तिरूपता संभवैनहीं ॥ शंका ॥ ज्ञानकूं जोनित्य तथाएक अंगीकारकरौंगे ॥ तौं हमारेविषे पूर्वलाघटज्ञान नाशहूआ अबी पटज्ञान उत्पन्नभयाहै याप्रकारकीप्रतीति ज्ञानकेउत्पत्तिनाशकूं तथाभेदकूं विषयकरणेंहारी असंगतहोवैंगी ॥ समाधान ॥ साप्रतीति ज्ञानकेउत्पत्तिनाशकूंविषयकरतीनहीं ॥ किंतु तासाक्षीआत्मारूपज्ञानका जोघटादिकविषयोंकेसाथि वृत्तिद्वारा संबंधहै तासंबंधकेउत्पतिनाशादिकोंकूं साप्रतीति विषयकरेहै ॥ जोऐसानहींअंगीकारकरिये तौं तिसतिसज्ञानकी उत्पत्ति तथानाश तथाभेद आदिकोंकीकल्पनाकरणेविषे अत्यंत गौरवदोषकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ यातैं सोसाक्षीआत्मारूपज्ञान नित्यहै तथाविभुहै तथाएकअद्वितीयरूपहै ॥ तहांश्रुति ॥ नहिद्रष्टुर्दृष्टेर्विपरिलोपोविद्यतेऽविनाशित्वात् आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः महद्भूतमनंतमपारंविज्ञानघनएव तदेवब्रह्मापूर्वमनपरमनंतरमबाह्यमयमात्माब्रह्मसर्वानुभूरिति ॥ अर्थयह ॥ द्रष्टाआत्माका स्वरूपभूतजाज्ञानरूपदृष्टिहै सादृष्टि नाशतैंरहितहै यातैं तादृष्टिकाकिसोभीअवस्थाविषे अभावहोवैनहीं ॥ और यहज्ञानस्वरूपआत्मा आकाशकीन्यांई सर्वत्रव्यापकहै तथानित्यहै और यहज्ञानस्वरूपआत्मा महानरूपहै ॥ तथाआनंतहै तथाअपारहै तथाविज्ञानघनहै ॥ और यहज्ञानस्वरूपब्रह्मकारणतैंरहितहै तथाकार्यतैंरहितहै तथाअंतरपणेतैंरहितहै तथाबाह्यपणेतैंरहितहै यहज्ञानस्वरूपआत्माब्रह्मरूपहैइति ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतियां आत्माकूंविभुनित्यस्वप्रकाश

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ज्ञानरू..रिकै कथनकरेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै अविद्यारूपकारणउपाधितैंभी आत्माकाभेदसिद्धहूआ ॥ यातैं यह
अर्थसिद्धभया ॥ स्थूलसूक्षमकारणरूपअसत्यउपाधियोंकरिकैंक्याहूआजो आत्माविषेबंधभ्रमहै ॥ ताबंधभ्रमकी ज
बी आत्माकेज्ञानकरिकैनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी यास्वयंज्योतिपुरुषकूं मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याहमारेसिद्धांतविषे पूर्वउ
क्तकिंचित्मात्रभीदोषकीप्राप्तिहोवैनही ॥ ईहां (हेपुरुषर्षभ) यासंबोधनकरिकै भगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यह अर्थ सूच
नकऱ्या ॥ स्वप्रकाशचैतन्यरूपताकरिकै जोतुमारेविषेपुरुषपणाहै तथापरमानंदरूपताकरिकै जोतुमारेविषे सर्वद्वैतप्र
पंचकीअपेक्षाकरिकैश्रेष्ठतारूपऋषभपणाहै ॥ ताआपणेपुरुषपणेकूं तथाऋषभपणेकूं नहीजानताहूआहीतूं शोककूं
प्राप्तहूआहैं ॥यातैं ताशोककेनिवृत्तिका कोईदूसराउपायहैनहीं किंतु ताआपणेस्वरूपकेज्ञानतैंहीं तुमारेशोककी निवृत्ति
होवैंगी ॥ तहांश्रुति ॥ तरतिशोकमात्मवित् ॥ अर्थयह ॥ आत्मवेत्तापुरुष शोकतैंरहितहोवैहै इति ॥ याश्लोकविषे (पुरुषं)
इसएकवचनकरिकै सांख्यशास्त्रकेमतकाखंडनकऱ्या ॥ काहेतैं तेसांख्यशास्त्रवाले अनेकपुरुषोंकूं अंगीकारकरेहैं इति ॥
॥ १५ ॥ ॥ शंका हेभगवन् यद्यपिचेतनआत्मापुरुषएकहींहै ॥ तथापि तापुरुषविषे सत्यरूपजडपदार्थोंकाजोद्रष्टापणा
रूपसंसारहै सोसंसार असत्यनहींहै ॥किंतु सोसंसारसत्यहै ॥तासंसारकेसत्यहूएशीतउष्णादिकसुखदुःखकेकारणोंकेविद्य
मानहूए तासुखदुःखकाभोगभी अवश्यकरिकैहोवैंगा ॥ और सत्यवस्तुकीज्ञानतैंनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ जोसत्यवस्तुकीभीज्ञा
नतैंनिवृत्तिहोतीहोवै तौं सत्यआत्माकीभी ज्ञानतैं निवृत्तिहोणीचाहीये ॥ यातैं पूर्वकथनकरीहूई मात्रास्पर्शोंकीतितिक्षा
कैसेसंभवैगी ॥ तथा यहपुरुषमोक्षकीप्राप्तिवासतै कैसेयोग्यहोवैगा ॥ समाधान ॥ हे अर्जुन जैसे शुक्तिविषेकल्पितजो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रजतहै तारजतकीशुक्तिरूपअधिष्ठानकेज्ञानतैं निवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे यासर्वद्वैतप्रपंचकू आत्माविषेकल्पितहोणेतैं ताअधिष्ठानआत्माकेज्ञानकरिकै ताकल्पितप्रपंचकीनिवृत्ति बनिसकेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवत् जैसे आत्माकीप्रतीतिहोवैहै तैसे अनात्मप्रपंचकीभीप्रतीतिहोवैहै ॥ यातैं आत्माअनात्मादोनोंकी तुल्यप्रतीतिकेहुए आत्माकीन्यांई अनात्मजगतभी सत्य किसवासतैंनहींहोवै ॥ तथा अनात्मजगतकीन्यांई आत्माभी असत्य किसवासतैनहींहोवै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीकृष्णभगवान् तिनदोनोंविषे विशेषतावर्णनकरेहै ॥

142

नासतोविद्यतेभावोनाभावोविद्यतेसतः ॥उभ
योरपिदृष्टोंतस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ १६ ॥

नाऽसतः । विद्यते । भावः । नाऽभावः । विद्यते । सतः ।उभयोः ।अपि । दृष्टः । अंतः । तु । अनयोः ।तत्त्वदर्शिभिः ॥ इतिपद०

हेअर्जुन असत्वस्तुकी सत्ता नहीं संभवैहै तथासत्वस्तुका अभाव नहीं संभवैहै इन सत्असत्दोनों को भी मर्यादा तत्त्वदर्शीपुरुषोनैं देखीहै ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ कालकृतपरिच्छेद देशकृतपरिच्छेद वस्तुकृतपरिच्छेद यातीनप्रकारकेपरिच्छेदोंवाला जोपदार्थहोवैहै ॥ सोपदार्थ असत् कह्याजावैहै ॥ ऐसेघटादिकअनात्मपदार्थहैं ॥ तहां प्रागभावका तथाप्रध्वंसाभावका जोप्रतियोगीपणा है ताकानाम कालपरिच्छेदहै ॥ जैसेघटाकीउत्पत्तितैंपूर्वताघटका मृत्तिकाविषे प्रागभावरहैहैं ताप्रागभावकाप्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तियोगीपणा ताघटविषेहै ॥ और ताघटकेनाशतैं अनंतरताघटकाप्रध्वंसाभाव ताघटकेकपालोंविषेरहेहै ताप्रध्वंसा
भावकाप्रतियोगीपणा ताघटविषेहै ॥ यातैं सोघट कालकृतपरिच्छेदवालाहै ॥ घटकेनाशहूएतैं अनंतर जेठीकेरहेहैं
तिनोंकानाम कपालहै और अत्यंताभावकाजोप्रतियोगीपणाहै ताकानाम देशपरिच्छेदहै ॥ जैसे जिसदेशविषेघट
रहेहै तादेशकूंछोडीकै अन्यसर्वदेशविषे ताघटकाअत्यंताभावरहेहै ताअत्यंताभावकाप्रतियोगीपणा ताघटविषेरहेहै
॥ यातैं सोघट देशकृतपरिच्छेदवालाहै ॥ तहां वेदांतसिद्धांतविषे यद्यपि जोपदार्थ कालकृतपरिच्छेदवालाहोवैहै सोप
दार्थ नियमकरिकै देशकृतपरिच्छेदवालाभीहोवैहै ॥ यातैं कालकृतपरिच्छेदकेग्रहणकरणेकरिकैही देशकृतपरिच्छेद
काभी ग्रहणहोइसकैहै ॥ तादेशकृतपरिच्छेदकाभिन्नग्रहणकरणासंभवैंनहीं ॥ तथापि नैयायिक पृथिवी जल तेज वायु
याच्यारोंकेपरमाणुवोंकूं तथामनकूं मूर्त्तद्रव्यमानेहैं तथानित्यमानेहै ॥ यातैं तेनैयायिक तिनपरमाणुवोंविषे तथामन
विषे केवल देशकृतपरिच्छेदही अंगीकारकरेहैं ॥ कालकृतपरिच्छेद अंगीकारकरैनहीं ॥ याकारणतैं ईहां कालकृतप
रिच्छेदतैं देशकृतपरिच्छेद भिन्नग्रहणकऱ्याहै ॥ और सजातीयभेद विजातियभेद स्वगतभेद यातीनप्रकारकेभेदकानाम
वस्तुकृतपरिच्छेदहै ॥ जैसे एकवृक्षका दूसरेवृक्षतैंजोभेदहै ताभेदकूं सजातीयभेदकहेहैं ॥ और तिसीवृक्षका पाषाणा
दिकोंतैंजोभेदहै ताभेदकूं विजातीयभेदकहेहैं ॥ और तिसीवृक्षका आपणेपत्रपुष्पफलादिकोंतैंजोभेदहै ॥ ताभेदकूं
स्वगतभेदकहेहैं ॥ अथवा जीवईश्वरकाभेद १ जीवजगत्काभेद २ जीवोंकापरस्परभेद ३ ईश्वरजगत्काभेद ४
जगत्कापरस्परभेद ५ यापंचप्रकारकेभेदकानाम वस्तुपरिच्छेदहै ॥ यद्यपि वेदांतसिद्धांतविषे जोपदार्थ कालकृतप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रिच्छेदवाला तथादेशकृतपरिच्छेदवालाहोवैहै ॥ सोपदार्थ नियमकरिकै वस्तुपरिच्छेदवालाभीहोवैहै ॥ यातैं कालकृत देशकृत परिच्छेदकेग्रहणकीयेतैं वस्तुकृतपरिच्छेदकाभी ग्रहणहोइसकेहै ॥ तावस्तुकृतपरिच्छेदका भिन्नग्रहणकरणाउ चितनहींहै ॥ तथापि नैयायिकोंकेमतविषे आकाश काल दिशा यहतीनोंनित्यहैं तथाविभुहैं ॥ यातैं तिनआकाशादि कोंविषे तेनैयायिक कालकृतपरिच्छेद तथादेशकृतपरिच्छेदमानतेनहीं ॥ परंतु तिनआकाशादिकोंविषे तेनैयायिक व स्तुपरिच्छेदतौं अंगीकारकरेहैं ॥ याकारणतैं कालकृतपरिच्छेद देशकृतपरिच्छेद यादोनोंपरिच्छेदोंतैं वस्तुकृतपरिच्छेद कूंभिन्नग्रहणकऱ्याहै ॥ इसप्रकारके तीनपरिच्छेदोंवालाहोणेतैंअसत्रूपजो शीतउष्णादिकसर्वप्रपंचहै॥ताअसत्प्रपंच कासत्तारूपभाव संभवैनहीं ॥ ईहांसत्ताशब्दकरिकै तीनपरिच्छेदोंतैंरहिततारूप पारमार्थिकपणेकाग्रहणकरणा ॥ जैसे घटत्व घटत्वकाअभाव यहदोनोंधर्म परस्परविरोधिहोणेतैं एकअधिकरणविषे कदाचित्भीरहतेनहीं ॥ तैसे प रिच्छिन्नत्वरूपअसत्व तथाअपरिच्छिन्नत्वरूपसत्त्व यहदोनोंधर्मभी परस्परविरोधीहोणेतैं एकअधिकरणविषे कदाचि त्भी रहैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ अनात्मरूपजितनाकीदृश्यप्रपंचहै ॥ सोदृश्यप्रपंच सर्वत्रअनुगतहैनहीं ॥ यातैं कि सीकालविषे तथाकिसीदेशविषे तथाकिसीवस्तुविषे तादृश्यप्रपंचका अनिषेधहोवैनहीं ॥ किंतु तादृश्यप्रपंचका सर्व देशकालवस्तुविषे निषेधहींहोवैहै ॥ जैसे घटका आपणीउत्पत्तितैंपूर्वकालविषे तथानाशतैंउत्तरकालविषे तथाआपणे अधिकरणकूंछोडिकैअन्यसर्वदेशविषे तथापटादिकवस्तुवोंविषे घटोनास्ति याप्रकारकानिषेधहींहोवैहै ॥ और जोस त्स्वतुहै सोसर्वत्रअनुगतहै ॥ यातैं तासत्वस्तुका किसीकालविषे तथाकिसीदेशविषे तथाकिसीवस्तुविषे कदाचित्

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भी निषे होवैनहीं॥ यातैं जैसे एकहींरज्जुविषे प्रतीतभये जेसर्प दंड जलधारा माला आदिकहैं ॥ तिनकल्पितस
र्पादिकोंविषे सारज्जुतौं अयंसर्पः अयंदंडः याप्रकार इदंरूपकारिकै अनुगतहूई प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सारज्जु तिनक
ल्पितसर्पदंडादिकोंविषेअनुगतहै ॥ और तासर्पकोप्रतीतिविषे दंडकोप्रतीतिहोवैनहीं ॥ और तादंडकीप्रतीतिविषे
सर्पकीप्रतीतिहोवैनहीं यातैं तेकल्पितसर्पदंडादिक परस्परव्यभिचारीहोणेतैं अनुगतनहींहै ॥ याकारणतैंहीं तेअ ननुग
तसर्पदंडादिक ताअनुगतरज्जुविषे कल्पितहैं॥ तैसे सन्घटः सन्पटः याप्रकार सर्वपदार्थोंविषे सत्वस्तुतौंअनुगतहोइ
कैप्रतीतहोवैहै॥ यातैं सोसत्वस्तु सर्वत्रअनुगतहै॥ और घट पटनहींहै तथापट घटनहींहै याप्रकार घटपटादिकपदार्थ
परस्परव्यभिचारीहोणेतैं अननुगतहैं याकारणतैं यहअननुगतघटपटादिकप्रपंच ताअनुगतसत्वस्तुविषे कल्पितहै
॥ शंका॥ हेभगवन् अनुगतपणेतैंरहित व्यभिचारीवस्तुकूं जोकल्पितमानौंगे॥ तौं सत्वस्तुभो कल्पितहोवैंगा॥ काहेतैं
सोसत्वस्तुभी शशशृंगवंध्यापुत्रादिकतुच्छपदार्थोंतैंव्यावृत्तहोणेतैं व्यभिचारीहींहै॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवा
न् कहेहै॥ (नाभावोविद्यतेसतःइति) हेअर्जुन सत्अधिकरणविषेरहणेहाराजोभेदहै ताभेदकेप्रतियोगीपणेकानामहीं
वस्तुपरिच्छेदहै ॥ जैसे घटरूपसत्वस्तुविषेरहणेहारा जोपटकाभेदहै ताभेदकाप्रतियोगोपणा तापटविषेहै ॥ यह
हीं तापटविषेवस्तुपरिच्छेदहै ॥ और शशशृंगवंध्यापुत्रादिकअसत्पदार्थोंविषे सत्रूपताहैनहीं ॥ यातैं तिनशशशृं
गादिकअसत्पदार्थोंतैं सत्वस्तुकाभेदअंगीकारकीयेहूएभी तासत्वस्तुविषे वस्तुपरिच्छेदकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और
स्वप्रकाशनित्यविभुरूपएकहींसत्वस्तु सर्वत्रव्यापकहै ॥ यातैं तासत्वस्तुविषे किसीभीसत्व्यक्तिकाभेद संभ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैनहीं ॥ काहेतैं घटःसन् पटःसन् इत्यादिकप्रतीति सर्वलोकोंकूंहोवैहैं ॥ यातैं सत्वस्तुविषे घटादिकपदार्थों विषेरहणेहारेभेदकाप्रतियोगीपणा संभवतानहीं ॥ ऐसे देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितसत्वस्तुका देशकालवस्तु कृतपरिच्छिन्नत्वरूप अभाव संभवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे घटत्व घटत्वकाअभाव यहदोनोंधर्म परस्परविरोधीहो णेतैं एकअधिकरणविषेरहतेनहीं तैसे परिच्छिन्नत्व अपरिच्छिन्नत्व यहदोनोंधर्मभी परस्परविरोधीहोणेतैं एकअ धिकरणविषेरहैंनहीं ॥ शंका ॥ जिसविषे देशकालवस्तुपरिच्छेदकानिषेधकरतेहो ॥ ऐसीकोईसत्वस्तुहैनहीं ॥ किंतु सत्तानामा एकपराजातिहै ॥ सासत्ताजाति द्रव्य गुण कर्म यातीनपदार्थोंविषेतौं समवायसंबंधकरिकैर हेहै ॥ और तिनद्रव्यादिकोंविषेरहणेहारेजे सामान्य विशेष समवाय यहतीनपदार्थहैं तिनोंविषे सासत्ताजाति सामानाधिकरण्यसंबंधकरिकैरहेहै ॥ याकारणतैंहीं तिनद्रव्यादिकषट्पदार्थोंविषे द्रव्यंसत् गुणःसन् इत्यादिकस त्व्यवहारहोवैहै ॥ यातैं उत्पत्तितैंपूर्ववर्त्तमानप्रागभावकेप्रतियोगीहोणेतैं असत्रूपजेघटादिकहैं तिन असत्घटादिकोंकाहीं कुलालदंडचक्रादिककारणोंकेव्यापारतैं सत्त्वहोवैहै ॥ और तिनसत्रूपघटादिकोंकाहीं मृत्तिका दिककारणोंकेनाशतैं अभावभीहोवैहै ॥ यातैं असत्पदार्थका भावनहींहोवैहै और सत्वस्तुका अभावनहींहोवैहै याप्र कारका आपकावचन संभवतानहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (उभयोरपीति) हेअर्जुन सत्वस्तु का तथाअसत्वस्तुका जोअंतहै ॥ अर्थात् ॥ जोसत्वस्तुहोवैहै सोसर्वकालविषेसत्हींहोवैहैं कदाचित्भी असत्होवैनहीं और जौअसत्वस्तुहोवैहै सोसर्वकालविषेअसत्हींहोवैहै कदाचित्भी सत्होवैनहीं याप्रकारकानियमरूप जामर्यादाहै॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सोमर्यादारूप अंत वस्तुकेयथार्थस्वरूपकूंजानणेहारेब्रह्मवेत्तापुरुषोंनैंहीं विचारपूर्वक श्रुतिस्मृतियुक्तियोंकरिकै निश्चय
करयाहै ॥ कुतार्किकनैयायिकादिकोंनैं सोमर्यादारूप अंत निश्चयकरयानहीं ॥ईहां श्रुतिस्मृतिप्रमाणतैंविरुद्धतर्ककाना
म कुतर्कहै ॥ तिनकुतर्कोंकूंकथनकरणेहारेवादीयोंकूं कुतार्किककहेहैं ॥ ऐसेकुतार्किकपुरुषोंविषे सोपूर्वउक्ताविपरीतभ्रम
संभवहोइसकैहै ईहांश्लोकविषे (अंतस्तु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ ता तुशब्दका निश्चयरूपअवधारण अ
र्थहै ॥ तिस तुशब्दका (अंतः) यापदकेसाथिजोअन्वयकरिये ॥ तौं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ सत्वस्तु सत्हींहोवैहै और अस
त्वस्तु असत्हीहोवैहै याप्रकार तासत्असत्कानियमहीं तत्त्वदर्शीपुरुषोंनैंदेख्याहै ॥ तासत्असत्वस्तुका अनियमदे
ख्यानहींइति ॥ और तिस तुशब्दका (तत्वदर्शिभिः) यापदकेसाथिजोअन्वयकरीये ॥ तौं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ तत्वद
र्शिपुरुषोंनैंहीं तासत्असत्वस्तुकानियमदेख्याहै ॥ अतत्त्वदर्शिपुरुषोंनैं सोनियमदेख्यानहींइति ॥ तहांश्रुति ॥ सदेव
सौम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयमिति ऐतदात्म्यमिदंसर्वंतत्सत्यंसआत्मातत्त्वमसिश्वेतकेतोइति ॥ अर्थयह ॥ हेप्रियद
र्शन यहदृश्यमानप्रपंच आपणींउत्पत्तितैंपूर्व सत्वस्तुरूपहींहोताभयाहै॥सोसत्वस्तु एकअद्वितीयरूपहीहोताभयाइति॥
याप्रकार छांदोग्यउपनिषदकेषष्ठअध्यायकेआदिविषेकथनकरिकै ताकेअंतविषे यहकह्याहै ॥ यहसर्वजगत् आत्मास्वरू
पहींहै सोआत्माहीं सत्यरूपहैं॥हेश्वतकेतु सोसत्वस्तुआत्मातूंहैंइति ॥ यहश्रुति सजातीय विजातीयस्वगत भेदतैंरहित
एकअद्वितीयवस्तुकूंहींकथनकरेहै ॥ और वाचारंभणंविकारोनामधेयंमृतिकेत्येवसत्यं ॥ अर्थयह ॥ घटशरावादिकविकार
केवलवाणीमात्रहोणेतैंमिथ्याहैं ॥ तिनघटशरावादिकविकारोंकाकारणरूपमृत्तिकाहीं सत्यहैइति ॥ यहश्रुति ॥ परस्परव्य

147

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भिचारीरूपघटशरावादिकविकारोंविषे मिथ्यापणे कूंही कथनकरेहै ॥ तथा अन्नेनसौम्यशुंगेनापोमूलमन्विच्छ अद्भिःसौम्यशुंगेनतेजोमूलमन्विच्छ तेजसासौम्यशुंगेनसन्मूलमन्विच्छ सन्मूलाःसौम्येमाःसर्वाःप्रजाःसदायतनाःसत्प्रतिष्ठाइति ॥ अर्थयह ॥ हेप्रियदर्शनश्वेतकेतु यापृथिवीरूपकार्यकरिकै तूं जलरूपकारणकूंनिश्चयकर ॥ तथा जलरूपकार्यकरिकै तूं तेजरूपकारणकूंनिश्चयकर ॥ तथा तातेजरूपकार्यकरिकै तूं सत्वस्तुरूपकारणकूंनिश्चयकर ॥ हेश्वेतकेतु यहसर्वप्रजा तासद्वस्तुतैंहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा तासत्वस्तुविषेहीस्थितहोवैहै तथातासत्वस्तुविषेही लयकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥यहश्रुति॥ तासत्वस्तुविषेही पृथिवीआदिकसर्वविकारोंकाकल्पितपणा कथनकरेहै ॥ सदेवसौम्येदमग्रआसीत् इत्यादिकसर्वश्रुतियोंकाअर्थ आत्मपुराणकेद्वादशेअध्यायविषे हम विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ किंवा॥द्रव्यंसत् गुणःसन् इत्यादिकप्रतीतियोंकाविषयजासत्ताहै सासत्ता पराजातिरूपहै याप्रकारकावचन जोनैयायिकोंनैं कथनकरयाहै ॥सोतिनोंकाकहणा अत्यंतअसंगतहै ॥ काहेतैं सन् सन् यहसत्ताकूंविषयकरणेहारीप्रतीति द्रव्यादिकसर्वपदार्थमात्रविषेसमानहोवैहै ॥ केवल द्रव्य गुण कर्म यातीनपदार्थोंविषे साप्रतीतिहोवैनहीं ॥ यातैं सन् सन् याप्रकारकोप्रतीतिकरिकै द्रव्य गुणकर्ममात्रविषेरहणेहारी सत्ताजातिकीकल्पनाहोइसकेनहीं ॥ और एकरूपप्रतीति एकरूपविषयकरिकैहीं सिद्धहोवैहै ताएकरूपप्रतीतिविषे संबंधकाभेद तथास्वरूपकाभेद कल्पनाकरणाअनुचितहै ॥ जैसे अनेकघटोंविषें अयंघटःअयंघटःय प्रकारकीजा एकरूपप्रतीतिहै साएकरूपप्रतीति घटत्वरूप एकरूपविषय करिकैहीं सिद्धहोइसकेहै ॥ यातैं घटव्यक्तियोंविषे ताघटत्वधर्मकेसंबंधकाभेदकल्पनाकरणा अनुचितहै ॥ तैसे सन् सन् यहएकरूपप्रतीति द्रव्य गु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ण कर्म यातीनपदार्थोंविषेतौं समवायसंबंधविशिष्टसत्ताकूंविषयकरेहै और सामान्य विशेष समवाय यातीनपदार्थो
विषे सामानाधिकरण्यसंबंधविशिष्टसत्ताकूंविषयकरेहै याप्रकार संबंधकाभेदकल्पनाकरणाउचितनहींहै ॥ और वि
षयकीएकरूपताकेअभावहूएभी जोकदाचित् प्रतीतिकीएकरूपताअंगिकारकरौंगे ॥ तौं तुमारेमतविषे किसीभीजा
तिकीसिद्धिनहींहोवैंगी ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ नैयायिकोंनैं अंगीकारकरीजासत्ताजातिहै ॥ सासत्ताजाति घटःसन्प
टःसन् इत्यादिकसत्व्यवहारोंका साधकनहींहै ॥ किंतुज्ञातअज्ञातअवस्थाकूंप्रकाशकरणेहारातथास्वतःस्फुरणरूप
एकहीसत्वस्तु आपणेतादात्म्यअध्यासकरिकै सर्वपदार्थोंविषे सन् सन् याप्रकारकेसत्व्यवहारका साधकहोवैहै ॥
किंवा ॥ सन्घटः सन्पटः इत्यादिकप्रतीतियां घटपटादिकव्यक्तियोंविषे सत्ताव्यक्तिकेअभेदमात्रकूंविषयकरेहैं ॥
तिनघटपटादिकव्यक्तियोंविषे सत्ताजातिकेसमवायिपणेकूं तेप्रतीतियांविषयकरैनहीं ॥ काहेतैं अभेदकूंविषयकरणे
हारीजाप्रतीतिहै ताप्रतीतिका भेदघटितसमवायसंबंधकरिकै निर्वाहहोइसकैनहीं ॥ इसप्रकार द्रव्यंसत् गुणःसन्
इत्यादिकप्रतीतियोंकरिकै ताएकसत्वस्तुका द्रव्यादिकसर्वपदार्थोकेसाथिअभेदसिद्धहूए ताएकसत्वस्तुकेसाथिअ
भिन्नहोणेतैं तिनद्रव्यगुणादिकपदार्थोकापरस्परभी भेदसिद्धहोवैनहीं ॥ तिनद्रव्यादिकोंकेभेदकेअसिद्धहूए तिनद्रव्यगु
णादिकधर्मीयोंविषे सत्ताजातिरूपधर्मभी कल्पनाकर्याजावैनही ॥ यातैं सत्वस्तुरूपधर्मीविषे द्रव्यगुणादिकपदार्थो
का अभेदहीअंगीकारकरणेयोग्यहै ॥ सोजडचेतनकाअभेदहैं वास्तववैंतौंसंभवैनहीं किंतु आध्यासिकअभेदहीसं
भवैहै ॥ किंवा ॥ नैयायिकोंनैं विभुरूपकालपदार्थका सर्वपदार्थोकेसाथिसंबंध अंगीकारकर्याहै ॥ ताकालकेसंबंधकूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ग्रहणकरिकैंही घटःसन् पटःसन् इत्यादिकसर्वव्यवहार संभवहोइसकेंहै ॥ ताकालसंबंधतैंभिन्न सत्ताजातिरूपपद
थैंकेमानणेविषेकोईप्रमाणहैनही ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे किसीदेशविषे तथाकिसीकालविषे अघटरूपजेप
टादिकपदार्थहैं ॥ तिनपटादिकपदार्थोंकूं अन्यदेशविषे तथाअन्यकालविषे घटरूपसत्ताहोवैनहीं ॥ और जैसे किसीदे
शविषे तथाकिसीकालविषे घटरूपकरिकैंस्थितजोघटहै ॥ ताघटकी अन्यदेशविषे तथाअन्यकालविषे अघटरूपता
साक्षात् इंद्रकरिकैंभी सिद्धहोइसकेनही ॥ तैसेकिसीदेशविषे तथा किसीकालविषे असत्रूपकरिकैंविद्यमानजोपदार्थ
है ताअसत्पदार्थका अन्यदेशविषे तथाअन्यकालविषे सत्त्व सिद्धहोइसकैनहीं ॥ तैसे किसीदेशविषे तथाकिसीका
लविषे सत्रूपकरिकैंविद्यमानजोपदार्थहै तासत्पदार्थका अन्यदेशविषे तथाअन्यकालविषे असत्त्व सिद्धहोइसकेन
हीं ॥ यातैं सत् असत् दोनोंका नियतरूपही अंगोकारकरणेकूंयोग्यहै ॥ यातैं एकहीसत्वस्तु मायाकल्पितअसत्
कीनिवृत्तिकरिकै मोक्षरूपअमृतकीप्राप्तिकेयोग्यहोवैंहै ॥ तथा सत्वस्तुमात्रकीदृष्टिकरिकै पूर्वउक्तितिक्षाभी संभ
वहोइसकेहै इति ॥ १६ ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वकथनकरयाजो देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितसत्वस्तुहै
सोसत्वस्तु ज्ञानरूपस्फुरणतैं भिन्नहै अथवा अभिन्नहै ॥ तहां प्रथमभेदपक्षतौंसंभवैनही ॥ काहेतैं तासत्वस्तुकूं जो
ज्ञानरूपस्फुरणतैं भिन्नअंगीकारकरौंगे ॥ तौं सोसत्वस्तु भेदरूपवस्तुपरिच्छेदवालाहोवैंगा ॥ तापरिच्छिन्नताकीप्रा
तिरूपदोषकोनिवृत्तिवासतै सोसत्वस्तुज्ञानरूपस्फुरणतैंअभिन्नहै यहदूसरापक्ष अंगीकारकरणाहोवैंगा ॥ और जै
सेअयंसर्पः याप्रतीतिकरिकै रज्जुविषे जोसर्पकाअभेदप्रतीतहोवैहै सोअभेद वास्तवतैंहैनही किंतु सोअभेद आध्या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सिकहै ॥ तैसे तासत्वस्तुविषे ज्ञानरूपस्फुरणका जोआध्यासिकअभेद अंगीकारकरौंगे ॥ तौं ताज्ञानरूपस्फुरणतैं वास्तवतैंभिन्नहूआ सोसत्वस्तु घटादिकपदार्थोंकीन्यांई जडहोवैंगा ॥ यातैं ताजडतादोषकीनिवृत्तिवासतैं तासत् वस्तुविषे ज्ञानरूपस्फुरणका वास्तवअभेदअंगीकारकरणाहोवैंगा ॥ तावास्तवअभेदकेअंगीकारकीयेहूएभी तासत्व स्तुविषे पुनः देशकालवस्तुपरिच्छेदकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ काहेतैं हमारेविषे पूर्वलाघटकाज्ञान नाशहूआहै अबी पटकाज्ञा न उत्पन्नभयाहै ॥ याप्रकारकीप्रतीति सर्वलोंकोंकूंहोवैहै ॥ ताप्रतीतितैं ज्ञानरूपस्फुरणका उत्पत्ति तथा नाश सिद्ध होवैहै ॥ और अहंघटंजानामि अर्थयह मैं घटकूं जानताहूं याप्रकारकीप्रतीतिभी सर्वलोकोंकूंहोवैहै ॥ याप्रतीतितैं अहंशब्दकेअर्थविषे ताज्ञानरूपस्फुरणकी आश्रयतासिद्धहोवैहै ॥ और घटविषे ताज्ञानरूपस्फुरणकी विषयतासि द्धहोवैहै ॥ यातैं सोज्ञानरूपस्फुरण देशकालवस्तुपरिच्छेदवालाहींसिद्धहोवैहै ॥ ऐसेपरिच्छिन्नज्ञानरूपस्फुरणतैं जबी तासत्वस्तुका वास्तवतैंअभेदहूआ ॥ अबी तासत्वस्तुविषेभी सोदेशकालवस्तुपरिच्छेदप्राप्तहोवैंगा यातैं सोसत् वस्तु देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै यहआपकावचन संभवतानहीं ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहैं ॥

अविनाशितुतद्विद्धियेनसर्वमिदंततं ॥ विनाशमद्वयस्यास्यनकश्चित्कर्तुमर्हति ॥ १७ ॥

अविना[६]शि । तु[७] । तत्[५] । विद्धि[८] । येन[१] । सर्वं[३] । इदं[२] । ततं[४] । विनाशं[११] । अव्ययस्य[१०] । अस्य[९] । न[१४] । कश्चित्[१२] । कर्तुं[१३] । अर्हति[१५] । इतिपद० हेअर्जुन जिस[१]सत्रूपस्फुरणनैं यह[२]सर्व[३]दृश्यप्रपंच व्याप्त[४]कऱ्याहै तिस[५]सत्रूपस्फुरणकूंतूंपरिच्छेदरूप[६] विनाशतैंरहितहीं[७]जा[८]

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नजिसकारणतैइसैअपरिच्छिन्नैं सत्रूपस्फुरणका परिच्छिन्न तारूपविनाशकूं कोईभी करणेकूं नहीं समर्थहै॥१७॥इतिप०

॥ टीका ॥ देशकृतपरिच्छेद कालकृतपरिच्छेद वस्तुकृतपरिच्छेद यातीनप्रकारकेपरिच्छेदोंकानाम विनाशहैं ॥ सोविना श जिसकूंप्राप्तहोवै ताकानामविनाशिहै ऐसेपरिच्छिन्नपदार्थहैं ॥ तिनविनाशिपदार्थोंतैंजोविलक्षणहोवै ताकानाम अ विनाशिहै ॥ अर्थात् तीनप्रकारकेपरिच्छेदतैंरहितवस्तुकानाम अविनाशिहै ॥ हेअर्जुन तासत्वस्तुरूपस्फुरणकूं तूं इसप्र कारकाअविनाशिजान ॥ कैसाहैसोसत्वस्तुरूपस्फुरण ॥ जिस एकअद्वितीयनित्यविभुरूपस्फुरणनैं स्वतःसत्तास्फूर्त्ति तैंरहितयहसर्वदृश्यप्रपंच व्याप्तकऱ्याहै ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठाननैं आपणेइदमअंशकरिकै कल्पितसर्पदंडजलधारादि क व्याप्तकरीतेहैं ॥ तैसे जिससत्वस्तुरूपस्फुरणनैं आपणीसत्तास्फूर्तिकेअध्यासकरिकै यहसर्वदृश्यप्रपंच व्याप्तक ऱ्याहै ॥ ऐसे सत्वस्तुरूपस्फुरणकूं तूं परिच्छिन्नतारूपविनाशतैंरहितहींजान ॥ काहेतैं परिच्छेदरूपनाशतैंरहित तथा सर्वदाअपरोक्षरूप ऐसाजोसर्वत्रव्यापक सत्रूपस्फुरणहै ॥ तासत्वस्तुरूपस्फुरणके परिच्छिन्नतारूपविनाशकूं को ईआश्रय अथवा कोईविषय अथवा कोईइंद्रियअर्थकासंबंधरूपहेतु करणे विषेसमर्थहोवैनहीं ॥ काहेतैं कल्पितवस्तु अकल्पितवस्तुकेपरिच्छेदकूंकरिसकैनहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पितसर्पदंडादिक अकल्पितरज्जुकेपरिच्छेदकूंकरिसकैन हीं ॥ तैसेसत्वस्तुरूपस्फुरणविषेकल्पितजेविषयइंद्रियादिकहैं तेविषयइंद्रियादिक ताअकाल्पितस्फुरणकेपरिच्छेदकूं करिसकैनहीं ॥ और जोवादी तासत्वस्तुरूपस्फुरणविषे परिच्छिन्नपणेकाआरोप अंगीकारकरै सोऔपाधिकपरिच्छि न्नपणा हमारेकूंभी अगीकारहै ॥ परंतु तास्फुरणविषे वास्तवतैंपरिच्छिन्नपणाहैनहीं ॥ किंवा ॥ अहंघटंजानामि अ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्थयह मैं घटकूंजानताहूं याज्ञानविषे अहंकारतौं आश्रयरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ और घट विषयरूपकरिकैप्रतीत होवैहै ॥ और उत्पत्तिनाशवाली कोईअंतःकरणकीवृत्तितौं सर्वत्रव्यापकसत्रूपस्फुरणका अभिव्यंजकतारूपकरि कैप्रतीतहोवैहै ॥ ताअभिव्यंजकवृत्तिरूपउपाधिकेउत्पत्तिनाशकरिकैहीं तावृत्तिउपहितसत्रूपस्फुरणविषे उत्पत्ति नाश प्रतीतहोवैहै ॥ वास्तवतैं तासत्रूपस्फुरणका उत्पत्तिनाशहोवैनहीं ॥ अथवा ॥ आत्मामनकासंयोग ज्ञानका कारणहोवैहै यहनैयायिकोनैंभीअंगोकारकऱ्याहै ॥ तासंयोगरूपउपाधिके उत्पत्तिनाशकरिकैहीं तासंयोगउपहितस त्रूपस्फुरणविषे सोउत्पत्तिनाशप्रतीतहोवैहै ॥ वास्तवतैं तास्फुरणका उत्पत्तिनाशहोवैनहीं ॥ जैसे मीमांसकोंकेम तविषे स्वभावतैंउत्पत्तिनाशतैंरहितजोवर्णात्मकशब्दहै ॥ ताशब्दविषे ध्वनिरूपउपाधिकेउत्पत्तिनाशकाआरोपहोवै है ॥ और जैसे नैयायिकोकेमतविषे वास्तवतैंउत्पत्तिनाशतैंरहितजोआकाशहैं ताआकाशविषे घटरूपउपाधिकेउत्प त्तिनाशकाआरोपहोवैहै ॥ तैसे वेदांतसिद्धांतविषेभी वास्तवतैंउत्पत्तिनाशतैंरहितजो ज्ञानरूपस्फुरणहै तास्फुरणविषे अंतःकरणकोवृत्तिरूपउपाधिकेउत्पत्तिनाशकाआरोपहोवैहै ॥ अथवा आत्मामनकासंयोगरूपउपाधिकेउत्पत्तिनाश का तास्फुरणविषे आरोपहोवैहै ॥ वास्तवतैं तासत्वस्तुरूपस्फुरणका उत्पत्तिनाशहोवैनहीं ॥ और यद्यपि तासत्व स्तुरूपस्फुरणविषे यहअहंकार कल्पितहै ॥ यातैं ताकल्पितअहंकारविषे तास्फुरणकोआश्रयतासंभवैनहीं ॥ तथा पि ताअहंकारकीवृत्तिकेसाथि तास्फुरणका तादात्म्यअध्यासहै ॥ याकारणतैं तावृत्तिकेआश्रयरूपअहंकारकेआश्रि तहूआ सोस्फुरण प्रतीतहोवैहै ॥ वास्तवतैं सोअहंकार तास्फुरणकाआश्रयनहींहै ॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे ता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अहंकारकेअभावहूएभी ताअहंकारकेसूक्षमवासनायुक्तअज्ञानकूंप्रकाशकरणेहाराचैतन्य स्वतःहींस्फुरणहोवैहै ॥ जोक
दाचित् सुषुप्तिअवस्थाविषे सोचैतन्य स्वतःस्फुरणरूपनहींहोवै ॥ तौं इतनैंकालपर्यंत मैं किंचित्मात्रभी नहींजानता
भया याप्रकारका अज्ञानविषयकस्मरण जोसुषुप्तितैंउठेहूएपुरुषकूंहोवैहै सोनहींहोणाचाहीये ॥ और याप्रकारका
स्मरणतौं सर्वपुरुषोंकूंहोवैहै ॥ यातैं यहजान्याजावै ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषेअज्ञानकूंप्रकाशकरणेहारा चैतन्यस्वतः
स्फुरणरूपहै ॥ तास्फुरणरूपअनुभवकरिकैहीं जाग्रत्अवस्थाविषै सोअज्ञानविषयकस्मरणहोवैहै ॥ किंवा ॥ केवल
जाग्रत्अवस्थाकेस्मरणकीअनुपपत्तितैंहीं सुषुप्तिअवस्थाविषे चैतन्यरूपस्फुरणकीसिद्धिनहींहोवैहै ॥ किंतु ॥ साक्षात्
श्रुतिप्रमाणकरिकैभी ताज्ञानरूपस्फुरणकीसिद्धिहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ यद्वैतन्नपश्यति पश्यन्वैतद्द्रष्टव्यंनपश्यति
नहिद्रष्टुर्दृष्टेर्विपरिलोपोविद्यतेऽविनाशित्वात् ॥ अर्थयह ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे यहआत्मादेव द्वैतप्रपंचकूंजोनहींदेख
ताहै सो आपणेचैतन्यरूपस्फुरणकेअभावहूएतैं नहींदेखताहै यहवार्त्ताकहीजावैनहीं ॥ किंतु तासुषुप्तिअवस्थाविषे
यहआत्मादेव आपणेचैतन्यरूपस्फुरणकरिकै देखताहूआभी तहां द्वैतप्रपंचकाअभावहोणेतैं ताद्वैतप्रपंचकूंदेखतान
हीं ॥ काहेतैं ताद्रष्टाआत्माकास्वरूपभूतजोस्फुरणरूपदृष्टिहै सादृष्टि नाशतैंरहितहै यातैं तास्फुरणरूपदृष्टिका कि
सीभीअवस्थाविषेअभावहोवैनहींइति ॥ यहश्रुति सुषुप्तिअवस्थाविषे स्वप्रकाशरूपस्फुरणकेसद्भावकूं तथानित्यता
कूंकथनकरेहै ॥ किंवा ॥ जैसे अहंकारादिक ताज्ञानरूपस्फुरणविषे कल्पितहैं ॥ तैसे घटादिकविषयोंकेअज्ञातअव
स्थाकूंप्रकाशकरणेहाराजो सत्वस्तुरूपस्फुरणहै तास्फुरणविषे तेघटादिकविषयभीकल्पितहै ॥ काहेतैं जोघट हम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नैं पूर्वनहींजान्याथा सोईहींघट अबीहमनैंजान्याहै याप्रकारकेअनुभवकरिकैहीं साघटकीअज्ञातअवस्था सिद्धहोवैहै ॥ ओर जोज्ञान अज्ञातवस्तुकाप्रकाश करैहै सोज्ञानहीं प्रमाज्ञानहोवैहै ॥ याप्रकार अज्ञातअर्थकाज्ञापकत्वरूप प्रमा ज्ञानकालक्षण सर्वशास्त्रवालेअंगीकाकरेहैं ॥ याकारणतैंहीं नैयायिकोंनैं यथार्थानुभवःप्रमा याप्रमाकेलक्षणविषे पूर्वज्ञातअर्थकूंविषयकरणेहारीस्मृतिकेनिवारणकरणेवासतै अनुभव यहपदकथनकरयाहै ॥ तहां घटादिकविषयोंविषजोअज्ञातपणाहै सोअज्ञातपणा नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै जान्याजावैनहीं ॥ काहेतैं ताअज्ञातपणेकेजानणेविषे नेत्रादिकइंद्रियोंकासामर्थ्यहैनहीं ॥ और सोघटादिकोंकाअज्ञातपणा अनुमानप्रमाणकरिकैभीजान्याजावैनहीं ॥ काहेतैं जैसे पर्वतविषेस्थितअग्निकेजनावणेहारा धूमरूपलिंगहोवैहै ॥ तैसे ताअज्ञातपणेकेजनावणेहारा कोईलिंगहैनहीं ॥ तहां जोवादी ताअज्ञातपणेकीसिद्धिवासतै याप्रकारकाअनुमानकरै ॥ यहघट पूर्वअज्ञातथा इदानींकालविषेज्ञातहोणतैं ॥ सोयाप्रकारकेअनुमानकरिकैभी सोघटकाअज्ञातपणा सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं जहांएकहींघटविषे व्यवधानतैरहित अयंघटः अयंघटः याप्रकारकेअनेकज्ञानहोवैहैं ॥ तहांप्रथमज्ञानकूंछोडिकै द्वितीयतृतीयआदिकज्ञानोंकाविषयजोघटहै ताघटविषे इदानींकालविषेज्ञातपणारूपहेतुतौंरहेहै ॥ परंतु पूर्व अज्ञातपणारूपसाध्य रहैनहीं ॥ काहेतैं तास्थलविषे पूर्वपूर्वज्ञानकरिकैज्ञातघटकूंहीं उत्तर उत्तरज्ञान विषयकरेहैं ॥ यातैं साध्यकेअभाववालेघटविषेरहणेहारा सोहेतु व्यभिचारीहै ॥ ताव्यभिचारीहेतुतैं पूर्वअज्ञातत्वरूपसाध्यकीसिद्धिहोइसकैनहीं ॥ किंवा ॥ इदानींज्ञातत्वरूप हेतुका पूर्वअज्ञातत्वरूपासाध्यतैं भेदसिद्धहोवैनहीं ॥ काहेते जोपूर्वअज्ञातहूआ इदानींकालविषेज्ञातहोवैहै ताकूंहीं इ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दानींकालविषेज्ञातकहेहैं ॥ और जोहेतु आपणेसाध्यतेअभिन्नहोवैहै ॥ सोहेतु सिद्धसाधनतादोषवालाहोवैहै ॥ याका
रणतैंभी तादुष्टहेतुतैं अज्ञातत्वरूपसाध्यकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ घटादिकोंकीअज्ञातअवस्थाकेज्ञानतैंविना
तिनघटादिकोंविषे स्वविषयकप्रत्यक्षज्ञानकेप्रति कारणता ग्रहणकरीजावैनहीं ॥ काहेतैं जिसवस्तुविषे जिसकार्यतैं
नियमकरिकैपूर्ववर्तिपणेकाज्ञानहोवैहै ॥ तिसीवस्तुविषे ताकार्यकीकारणताग्रहणकरीजावैहै ॥ जैसे मृत्तिकाविषे घट
रूपकार्यतैं पूर्ववर्त्तिपणेकेज्ञानहूएतैंअनंतरहीं तामृत्तिकाविषे घटकेकारणताज्ञानहोवैहै ॥ पूर्ववर्त्तिपणेकेज्ञानतैंवि
ना कारणताज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं ताघटकेप्रत्यक्षज्ञानतैंपूर्वताघटकेअज्ञातअवस्थाकाज्ञान अवश्यअंगीकारकऱ्या
चाहीये ॥ किंवा ॥ ताघटकेअज्ञातअवस्थाकाज्ञान जोनहींहोताहोवै ॥ तौं मैंघटकूंनहींजानताहूं याप्रकारकेसर्वलो
कोंकेअनुभवकाविरोधहोवैंगा ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ अज्ञातरूपस्फुरण आपणे स्वयंज्योतिरूपकरिकैप्रकाशमा
नहूआ आपणेविषेकल्पितघटादिकपदार्थोंकूंभी प्रकाशकरेहै ॥ यातैं ताअज्ञातरूपस्फुरणविषेहीं तिनघटादिकपदा
र्थोंकाकल्पितपणासिद्धहोवैहै ॥ जोकदाचित् सोअज्ञातरूपस्फुरण तिनघटादिकपदार्थोंकूं प्रकाशनहींकरताहोवै ॥ तौं
तिनघटादिकपदार्थोंकूं स्वभावतैंजडहोणेतैं तिनघटादिकोंकाअज्ञातपणा तथाताअज्ञातपणेकाज्ञान दोनोंनहींसिद्ध
होवैंगे ॥ और तासत्वस्तुरुपस्फुरणविषे जोअज्ञातपणाहै सोआपणेविषेकल्पितअज्ञानकरिकैहींहै ॥ यहवार्त्ता (अ
ज्ञानेनावृतंज्ञानंतेनमुह्यंतिजंतवः) यावचनकरिकै श्रीभगवान् आपहीं आगेकहैंगे ॥ इतनैंकहणेकरिकै तासत्वस्तु
रूपस्फुरणविषे विभुपणासिद्धकऱ्या ॥ तहांश्रुति ॥ महद्भूतमनंतमपारंविज्ञानघनएवेति सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्मइति ॥ अर्थ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह ॥ सोसत्वस्तुरूपस्फुरण महान्रूपहै तथाअनंतहै तथाअपारहै तथाविज्ञानघनहै तथासत्यहै तथाज्ञानरूपहै तथाअनंतहैइति ॥ यहश्रुति तासत्वस्तुरूपस्फुरणविषे महत्पणा तथाअनंतपणा कथनकरेहै ॥ तहां ताज्ञानरूप स्फुरणविषे कल्पितजोयहसर्वजगत्है तासर्वजगत्केसाथि तास्फुरणकाजोकल्पिततादात्म्यसंबंधहै यहहीं तास्फुरणविषेमहत्पणाहै ॥ और देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंजोरहितपणाहै यहहीं तास्फुरणविषेअनंतपणाहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै शून्यवादीयोंकामतभीखंडनकऱ्या ॥ काहेतैं अधिष्ठानवस्तुतैंविना कोईभीभ्रमहोवैनहीं ॥ तथा अधिष्ठानतैंविना ताभ्रमकाबाधभीहोवैनहीं ॥ और शून्यवादीयोंकेमतविषे कोईसत्वस्तुअधिष्ठानहैनहीं ॥ यातैं तिनोकामतअसंगतहै ॥ तहांश्रुति ॥ पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागगतिः ॥ अर्थयह ॥ स्वयंज्योतिरूपपुरुषतैंपरेकोईभीवस्तुहैनहीं ॥ किंतु सोस्वयंजोतिपुरुषहीं यासर्वजगतकाअवधिरूपहै तथापरागतिरूपहैइति ॥ यहश्रुति सर्वजगत्केबाधकाअवधिरूपकरिकैतास्वयंज्योतिपुरुषका कथनकरेहै ॥ यहवार्त्ता भगवान्भाष्यकारोनैंभी कथनकरीहै ॥ सर्वंविनश्यद्वस्तुजातंपुरुषांतंविनश्यति पुरुषोविनाशहेत्वभावान्नविनश्यति ॥ अर्थयह ॥ यास्थूलप्रपंचतैंआदिलैके अव्याकृतपर्यंत जितनैंकीनाशवान्वस्तुहैं ते सर्ववस्तुचैतन्यरूपपुरुषपर्यंत नाशकूंप्राप्तहोवैहैं और तिसपुरुषकेनाशकरणेहाराकोईकारणहैनहीं ॥ यातैं सोपुरुष नाशकूंप्राप्तहोवैहैंनहींइति ॥ इतनैंकहणेकरिकै क्षणिकविज्ञानवादीयोंकामतभीखंडनकऱ्या ॥ काहेतैं जोकदाचित् आत्मा क्षणिकहोवै ॥ तौं जोमैं बाल्यअवस्थाविषे आपणेमातापिताकूंअनुभवकरताभया सोईहोमैं अबीवृद्धअवस्थाविषे तामातापिताकूं स्मरणकरताहूं याप्रकारकाप्रत्यभिज्ञाज्ञान सर्वप्राणीयोंकूंहोवैहै सोनहींहो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

णाचाहोये ॥ काहेतैं जोपुरुष जिसवस्तुकूंदेखेहै सोईहींपुरुष कालांतरविषे तिसवस्तुकूंस्मरणकरेहै॥ अन्यपुरुषक रिकैदेखीहूईवस्तुका अन्यपुरुषकूं स्मरणहोवैनहीं ॥ यातैं सोआत्मा क्षणिकनहीं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ सर्वत्र व्यापक तथाअद्वितीयरूप जोस्वप्रकाशस्फुरणरूपसत्वस्तुहै ॥ सोस्फुरणरूपसत्वस्तु पूर्वउक्तदेशकालादिकस र्वपरिच्छेदतैंरहितहै ॥ यातैं सत्वस्तुकाअभाव कदाचित्भीनहींहोवैहै ॥ यहजोश्रीभगवान्नैकह्याहै सोयथार्थकह्या है इति॥ १७ ॥※ ॥ शंका ॥ पूर्व आपनैं स्फुरणरूपसत्वस्तुकूं अविनाशीकह्या ॥ सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं जैसे पान काथा चूना सुपारी याच्यारोंकासमुदायरूपजोतांबूलहै तिसतांबूलविषे रक्ताउत्पन्नहोवैहै ॥ तैसे पृथि वी जल तेज वायु याच्यारिभूतोंकासमुदायरूप जोयहस्थूलशरीरहै तास्थूलशरीरविषे एकचैतन्यताधर्मउत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं सोचैतन्यरूपस्फुरण यास्थूलशरीरकाहींधर्महै ॥ और यहस्थूलशरीरतौं क्षणक्षणविषे नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैंताशरीररूपधर्मीकेनाशहूए॥ ताज्ञानरूपस्फुरणकाभी अवश्यकरिकैनाशहोवैंगा ॥ याप्रकारकी भूतचैतन्यवादी योंकीशंकाकेहूए तिनभूतचैतन्यवादीयोंकेखंडनकरणेवासतै श्रीभगवान् (नासतोविद्यतेभावो) यापूर्वकहेहूएवचनका अर्थ अबीविस्तारतैंनिरूपणकरेहैं॥

अंतवंतइमेदेहानित्यस्योक्ताःशरीरिणः॥ अनाशिनोऽप्रमेयस्यतस्माद्युध्यस्वभारत १८ ॥ ७२ ॥

अंतवंतः । इमेदेहाः । नित्यस्योक्ताः । शरीरणः । अनाशिनः । अप्रमेयस्य । तस्मात् । युध्यस्व । भारत । इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेभारत नित्य तथाशरीररूपउपाधिवाला तथानाशतैंरहित तथाप्रमेयभावतैंरहित ऐसाजास्फुरणरूपआत्मा है ताएकआत्माकेहीं यह नाशवान् सर्वदेह कथनकरेहैं तिसकारणतैं तूं युद्धकर ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ वृद्धिक्षयवालेहोणेतैं शरीरनामकरिकैप्रसिद्ध तथानाशरूपअंतवाले जेयहप्रत्यक्षदेहहैं ॥ ईहां ॥ (देहाः) या बहुवचनकरिकै स्थूलसूक्ष्मकारणरूप जितनैंकी विराट् सूत्र अव्याकृत नामा समष्टिव्यष्टिशरीरहैं तिनसर्वशरीरों काग्रहणकरणा ॥ और नित्य तथाविनाशतैंरहित तथाआध्यासिकसंबंधकरिकैशरीरवाला ऐसाजोस्वप्रकाशस्फुरण रूपआत्माहै ॥ ताएकहींआत्माके तेस्थूलसूक्ष्मकारणरूपसर्वशरीर दृश्यरूपहैं तथाभोग्यरूपहैं ॥ यातैं श्रुतिभगव तोनैं तथाब्रह्मवेत्तापुरुषोंनैं तेसर्वदेह दृश्यत्वरूपकरिकै तथाभोग्यत्वरूपकरिकै ताएकहींआत्माके संबंधीकथनकरेहैं ॥ तहां तैत्तिरीयकश्रुतिविषे अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यापंचकोशोंकीकल्पनाकरिकै तिनसर्व कोशोंकाअधिष्ठानरूप तथाअकल्पित पुच्छप्रतिष्ठारूपब्रह्म कथनकऱ्याहै ॥ तहां पंचीकृतपंचमहाभूतजोंहै तथातिनपं चमहाभूतोंकाकार्यरूप जोसर्वमूर्त्तपदार्थोंकासमुदायरूपविराट्है ॥ सोअन्नमयकोशहै यहस्थूलतासमष्टिहै ॥ और ता स्थूलसमष्टिकाकारणरूप जेअपंचीकृतपंचमहाभूतहैं तथातिनअपंचीकृतभूतोंकाकार्यरूप जोसर्वअमूर्त्तपदार्थोंका समुदायरूप सूत्रनामाहिरण्यगर्भहै सोसूक्ष्मसमष्टिहै ॥ तहां त्रयंवाइदंनामरूपंकर्मेति याबृहदारण्यकउपनिषदकी श्रुतिनैंतासूक्ष्मसमष्टिकूं नाम रूप कर्म यहतीनरूपकह्याहै ॥ तहांसोसूक्ष्मसमष्टि आपणेविषेस्थितकर्मरूपताक रिकै जबीक्रियाशक्तिमात्रकूंग्रहणकरेहै तबी प्राणमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सूक्ष्मसमष्टि आपणेविषेस्थितनाम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूपताकरिकै जबी ज्ञानशक्तिमात्रकूंग्रहणकरेहै तबी मनोमयसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और सोसूक्ष्मसमष्टि आपणेविषे स्थितरूपस्वरूपताकरिकै तिसीक्रियानामदोनोंकाआश्रयहोणेतैं जबी कर्तृत्वमात्रकूंग्रहणकरैहै तबी विज्ञानमय संज्ञा कूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकार सोएकहींहिरण्यगर्भनामा लिंगशरीररूपकोश प्राणमय मनोमय विज्ञानमय यहतीनको शरूपहोवैहै ॥ और ताहिरण्यगर्भरूपलिंगशरीरकाभोकारणरूप तथासर्वप्रपंचकेवासनारूपसंस्कारोंकाआश्रयरूप ऐसाजो आव्याकृतामा मायाउपहितचैतन्यआत्माहे॥सो आनंदमयकोशहै ॥ तेअन्नमयादिकसर्व एकहींआत्माकेशरी र श्रुतिनैंकहेहैं ॥ तहांश्रुति ॥ तस्यैषएवशारीरआत्मायः पूर्वस्येति ॥ अर्थयह ॥ पूर्वअन्नमयकोशका जोसत्यज्ञानअनं तरूप शारीरआत्मा कथनकऱ्याहै ॥ तिसप्राणमयकोशकाभी सोईहींशारीरआत्माहै शरीरविषेजोविद्यमानहोवै ता कानाम शारीरहैइति ॥ याप्रकारकाश्रुतिवचन मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यातीनकोशोंविषेभीजानिलेणा ॥ य हपंचकोशोंकीप्रक्रिया आत्मपुराणकेदशमअध्यायविषे हम विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ अथवा (अंतवंतइमेदेहाः) याश्लोककेपदोंकी याप्रकारतैंयोजनाकरणी ॥ तीनलोकविषेवर्त्तमान सर्वप्राणीयोंकेसंबंधोजोस्थावरजंगमरूपदेहहैं तेसर्वदेह एकहीस्वयंज्योतिआत्माके श्रुतिनैंकथनकरेहैं ॥ तहांश्रुति ॥ एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः सर्वव्यापीसर्वभूतांतरा त्मा कर्माध्यक्षःसर्वभूताधिवासः साक्षी चेताकेवलोनिर्गुणश्च ॥ अर्थयह ॥ एकअद्वितीयआत्मादेव सर्वशरोरोंविषे गू ढहोइकैस्थितहै तथासर्वव्यापीहै तथासर्वभूतोंकाअंतरआत्माहै तथापुण्यपापकर्मोंकाफलप्रदाताहै तथासर्वभूतोंका अधिष्ठानहै तथाबुद्धिआदिकसर्वसंघातकासाक्षीहै तथाचैतन्यरूपहै तथाअद्वितीयरूपहै तथानिर्गुणहै तथानिष्क्रियहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इति ॥ यहश्रुति स्थावरजंगमरूपसर्वशरीरोंकेसंबंधवाले एकनित्यविभुआत्माकूंकथनकरेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जि
तनैंपर्यंत यहकालरहेहै तितनैंपर्यंत स्थायिहोणा याकानाम नित्यपणाहै ॥ सोयहनित्यपणा कालकेसाथिआत्मा
कानाशअंगीकारकीयेहूएभी अविद्यादिकोकीन्यांई ताआत्माविषे संभवहोइसकेहै ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहूए श्रो
कृष्णभगवान्कहेहै ॥ (अनाशिनःइति) हेअर्जुन देशकालवस्तुपरिच्छेदवालेजेअविद्यादिकहैं ॥ तेअविद्यादिक अधिष्ठा
न आत्माविषेकल्पितहोणेतैं यद्यपि अनित्यहैं ॥ तथापि तिनअविद्यादिकोंविषे सोयावत्कालस्थायित्वरूप गौणनित्यप
णा प्रतीतहोवैहै ॥ तोनकालविषे अबाध्यत्वरूप मुख्यनित्यत्व तिनअविद्यादिकोंविषेहैनहीं ॥ और देशकालवस्तु
परिच्छेदतैंरहितहोणेतैं अकल्पितजोआत्माहै ताआत्माकेनाशका कोईकारणहैनहीं ॥ यातैं ताआत्माविषे मुख्यहीं कू
टस्थरूपनित्यत्वहै ॥ अविद्यादिकोंकीन्यांई परिणामिरूपनित्यत्व तथायावत्कालस्थायित्वरूपनित्यत्व ताआत्मावि
षेहैनहीं ॥ शंका ॥ ऐसेसर्वदेहोंकेसंबंधवालेचैतन्यआत्माविषे कोईप्रमाणहै अथवा नहींहै ॥ तहां ताचैतन्यआत्मावि
षे कोईप्रमाणनहींहै यहद्वितीयपक्षतौं संभवैनहीं ॥ काहेतैं जोवस्तु किसीप्रमाणजन्यज्ञानकाविषयनहींहोवैहै ॥ सो
वस्तु असत्यहींहोवैहै ॥ जैसे वंध्यापुत्र तथाशशशृंग किसीप्रमाणजन्यज्ञानकेविषयनहींहै यातैं असत्यहींहै ॥ तैसे
प्रमाणजन्यज्ञानकाअविषयहोणेतैं सोचैतन्यआत्माभी असत्यहींहोवैंगा ॥ तथा ताआत्माकेसाक्षात्कारवासतै जोशास्त्र
का आरंभहै सोभीव्यर्थहींहोवैंगा ॥ इत्यादिकसर्वदोषोंकीनिवृत्तिकरणेवासतै तादेहीआत्माविषे कोईप्रमाणहै यह प्र
थमपक्ष अवश्यकरिकैअंगीकारकरणाहोवैंगा ॥ किंवा ॥ शास्त्रयोनित्वात् यासूत्रकेव्याख्यानाविषे भगवान्भाष्यका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रोनैंभी ताआत्माकीसिद्धिविषे एकउपनिषद्रूपशास्त्रहींप्रमाणकह्याहै ॥ तथा तंत्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि याश्रुतिनैं भी ताआत्माकीसिद्धिविषे उपनिषद्रूपप्रमाणकथनकर्‌याहै ॥ यातैं प्रमाणकाविषयहोणेतैं ताचैतन्यरूपआत्माविषे सोभेदरूपवस्तुपरिच्छेद अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्‌कहेहै ॥ (अप्रमेयस्येति) हे अर्जुन जैसे घटपटादिकसर्वपदार्थोंकूंप्रकाशकरणेहाराजोसूर्यभगवान्‌है तासूर्यभगवान्‌कूं आपणेप्रकाशवासतै घटादिकपदार्थोंकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ तैसे प्रमाणप्रमेयादिकसर्वजगत्‌कूंप्रकाशकरणेहारा जोस्वप्रकाशचैतन्यरूपआत्माहै ता चैतन्यआत्माकूं आपणेप्रकाशकरणेवासतै प्रमाणादिकोंकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ याकारणतैं सोआत्मादेव अप्रमेयहै ॥ तहांश्रुति ॥ एकधैवानुद्रष्टव्यमेतदप्रमेयंध्रुवमप्रमेयं नतत्रसूर्योभाति नचंद्रतारकं नेमाविद्युतोभांति कुतोयमग्निःतमेवभांतमनुभातिसर्वं तस्यभासासर्वमिदंविभाति येनेदंसर्वंविजानाति तंकेनविजानीयात् विज्ञातारमरेकेनाविजानीयात् ॥ अर्थयह ॥ यहचैतन्यआत्मा एकप्रकारकरिकैहींदेखणेयोग्यहै तथायहआत्मादेव अप्रमेयहै तथाकूटस्थहै तथाअप्रमेयहै ॥ और तास्वयंज्योतिआत्माविषे सूर्यभी प्रकाशकरैनहीं तथाचंद्रमातारागणभी प्रकाशकरैनहीं तथाविद्युत्‌भी प्रकाशकरैनहीं तथायहअग्निभी प्रकाशकरैनहीं ॥ और तास्वयंज्योतिआत्माकेप्रकाशकूंआश्रयणकरिकैहीं पश्चात् यहसूर्यचंद्रमादिकसर्वपदार्थ प्रतीतहोवैहैं तथा ताआत्मादेवकेस्वयंज्योतिप्रकाशकरिकैहीं यहसूर्यचंद्रमादिकसर्वजगत् प्रकाशमानहोवैहै ॥ और जिसस्वयंज्योतिआत्माकरिकै यहलोक इनसर्वपदार्थोंकूं जानेहैं ॥ तिससर्वकेद्रष्टाविज्ञाताआत्माकूं यहजीव किसप्रमाणकरिकैजानिसकेगा ॥ किंतु किसीभीप्रमाणकरिकै जानिसकैनहीं इति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऐसेस्वयंज्योतिआत्माकूं आपणेप्रकाशवासतै किसीभीप्रमाणकीअपेक्षाहैनहीं ॥ किंतुआपणेविषेकल्पितजोअज्ञान है तथाताअज्ञानकाकार्यहै ताकार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिवासतै तास्वयंज्योतिआत्माकूं कल्पितवृत्तिविशेषकीअपेक्षाहैं ॥ काहेतैं जैसायक्षहोवैहै तैसाहींतिसकाबलिहोवैहै याशास्त्रकेन्यायतै कल्पितवस्तुकाकल्पितवस्तुहींविरोधी सिद्धहोवैहै ॥ यातैं कल्पितअंतःकरणकीवृत्तिकरिकै कल्पितकार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिसंभवैहै ॥ और कल्पितसर्वप्रपंचकीनिवृत्तिकरणेहारी साअंतःकरणकीवृत्तिविशेष केवल तत्त्वमसिआदिकवाक्यमात्रतैंहीं उत्पन्नहोवैहै प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैउत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं तावृत्तिविशेषकीउत्पत्तिवासतै शास्त्रकाआरंभभी सफलहै ॥ और सोचैतन्यस्वरूपआत्मादेव सर्वकालविषे स्वतःहीं प्रकाशमानहै तथासर्वकल्पनाकाअधिष्ठानहै तथासर्वदृश्यप्रपंचका प्रकाशकहै ॥ ऐसेस्वप्रकाशअधिष्ठानआत्माविषे वंध्यापुत्रशशशृंगादिकोंकीन्यांई असत्यरूपतासंभवैनहीं ॥ और एकमेवाद्वितीयं सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म इत्यादिकशास्त्र अद्वितीयब्रह्मतैंभिन्नसर्वजगतविषे कल्पितपणेकूंकथनकरताहूआ आपणेविषेभी कल्पितरूपताकूंबोधनकरेहै ॥ जोकदाचित् सोशास्त्र आपणेविषेकल्पितपणेकूंनहीं बोधनकरैंगा ॥ तौं सोशास्त्र सद्वितीयब्रह्मकूंअद्वितीयरूपकरिकैबोधनकरताहूआ आपहीं अप्रमाणरूपहोवैंगा ॥ और कल्पितवस्तु अकल्पितवस्तुकैपरिच्छेदकूंकरेनहीं यहवार्त्ता पूर्वकथनकरिआयैंहैं ॥ यातैं तास्वप्रकाशआत्माविषे भेदरूपवस्तुपरिच्छेदकीभीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा ॥ सर्वकालविषे आत्माकीस्वप्रकाशता केवलश्रुतिप्रमाणकरिकैहींसिद्धनहींहै ॥ किंतु भगवान्भाष्यकारोनैं युक्तितैंभी साआत्माकीस्वप्रकाशता सिद्धकरीहै ॥ सायुक्तियहहै ॥ जिसपुरुषकूं जिसवस्तुविषे सं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शय विपर्यय व्यतिरेकप्रमा यातीनोंविषेएकभीनहींहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं तिसवस्तुविषे तिनसंशयादिकोंकाविरोधी ज्ञान अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ याप्रकारकानियम सर्वत्रदेखणेविषेआवैहै ॥ जैसे जिसपुरुषकूं जिसघटविषे घटहै अथवानहींहै याप्रकारकासंशय तथाघटनहींहै याप्रकारकाविपर्यय तथाघटनहींहैं याप्रकारकीव्यतिरेकप्रमा यातीनों विषेएकभीनहींहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं तहां तिनसंशयादिकतीनोंकाविरोधी घटोअस्ति याप्रकारकाज्ञान अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ जोकदाचित् सोविरोधीज्ञान तहांनहींहोवै ॥ तौं तिनसंशयादिकतीनोंविषे कोईएक अवश्यहोणाचाहीये और आत्माविषे तौं किसीभीपुरुषकूं मैंहूंअथवानहींहूं याप्रकारकासंशय तथामैंनहींहूं याप्रकारकाविपर्यय तथामैं नहींहूं याप्रकारकीव्यतिरेकप्रमा यातीनोंविषेएकभीहोवैनहीं ॥ यातैं तिनसर्वपुरुषोंकूं सर्वकालविषे तिनसंशयादिकोंकाविरोधी आत्माकेवास्तवस्वरूपकाज्ञान अवश्यकहणाहोवैंगा ॥ जोकदाचित् सोआत्माकेस्वरूपकाज्ञान नहींहोवै तौं तिनसंशयादिकतीनोंविषे कोईएक अवश्यकरिकैहोणाचाहीये ॥ और आत्माविषे तेसंशयादिकहोतेनहीं ॥ यातैं सोआत्मा सर्वकालविषे स्वप्रकाशरूपहैइति ॥ किंवा ॥ वेदांतसिद्धांतविषे सोस्वप्रकाशज्ञान आत्माकेआश्रितरहैनहीं ॥ किंतु तास्वप्रकाशज्ञानरूपहीआत्माहै ॥ जोकदाचित् आत्माकूं ताज्ञानकाआश्रयमानिये ॥ तौं जोवस्तु जिसज्ञानका आश्रयरूपकर्त्ताहोवैहै सोईहींवस्तु तिसज्ञानका विषयरूपकर्महोंवैनहीं ॥ किंतु ज्ञानका कर्त्तातथाकर्म भिन्नभिन्नहोवैहै ॥ यातैं ताज्ञानकरिकैआत्माकीसिद्धिनहींहोवैंगी ॥ किंवा ॥ आत्माकूं जोज्ञानतैंभिन्नमानीये ॥ तौं जोजोपदार्थ ज्ञानतैंभिन्नहोवैहै सोसोपदार्थ जडहीहोवैहै ॥ जैसेज्ञानतैंभिन्नहोणेतैं घटादिकपदार्थ जडरूपहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तैसे ज्ञानतैं भिन्नहोणेतैं आत्माभी जडरूपहोवैंगा ॥ और जोजोपदार्थ जडहोवैहै सोसोपदार्थ कल्पितहोवैहै ॥ जैसे जडहोणेतैं घटादिकपदार्थ कल्पितहैं ॥ तैसे जडहोणेतैं आत्माभी कल्पितहोवेगा ॥ आत्माकेकल्पितहूए शून्यवा दकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ यातैं आत्मा ज्ञानतैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु आत्मा स्वप्रकाशज्ञानस्वरूपहींहै ॥ ऐसास्वप्रकाशज्ञान स्वरूपहूआभीयहआत्मा अविद्यारूपउपाधिकेसंबंधतैं साक्षीकह्याजावैहै ॥ औरवृत्तिमत्अंतःकरणरूपउपाधिकेसं बधतैं प्रमाताकह्याजावैहै ॥ तिसीप्रमाताके यहचक्षुआदिकइंद्रिय करणहोवैहैं ॥ और सोईहीप्रमाता तिनचक्षुआ दिकइंद्रियोंद्वारा अंतःकरणकेवृत्तिरूपपरिणामकेसाथि बाह्यघटादिकपदार्थोंकूंव्याप्यकरिकै तिनघटादिकोंकेआका रहोवैहै ॥ तिसअंतःकरणकेएकहींवृत्तिरूपपरिणामविषे घटावच्छिन्नचैतन्य तथाअंतःकरणावच्छिन्नचैतन्य दोनों एक ताभावकूंप्राप्तीहोवैहैं ॥ जैसे गृहविषे घटकेप्राप्तहूए तागृहाकाशकी तथाघटाकाशकी एकताहोवैहै ॥ तैसे वृत्तिरूपउ पाधिके तथाघटरूपउपाधिके एकदेशविषेस्थितहूए तावृत्तिउपहितचेतनकी तथाघटउपहितचेतनकी एकताहोवैहै ॥ तिसतैं अनंतर सोघटावच्छिन्नचैतन्य प्रमाताचैतन्यकेअभेदतैं आपणे अज्ञानकूंनाशकरताहूआ अपरोक्षहोवैहै ॥ और आपणाउपाधिरूपजोघटहै ताघटकूं आपणेतादात्म्यअध्यासतैं सोचैतन्यप्रकाशकरैहै ॥ और अत्यंतस्वच्छजोअं तःकरणकापरिणामरूपवृत्तिहै तावृत्तिकूं तावृत्तिउपहितचतन्य प्रकाशकरेहै ॥ इसप्रकार अंतःकरण वृत्ति घट या तीनोंकीअपरोक्षताहोवैहै ॥ अहंजानामिघटं यहतीनोंकेअपरोक्षताकाआकारहै ॥ इसप्रकार अंतरबाहरिस्थितसर्व अनात्मपदार्थोंकूंप्रकाशकरणेहाराचैतन्य यद्यपि एकरूपहै तथापि घटादिकबाह्यपदार्थोंकेप्रकाशकरणेविषे ताचै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तन्यकूं अंतःकरणकेवृत्तिकीअपेक्षारहेहै ॥ याकारणतैंहीं ताचैतन्यविषे प्रमातापणाह ॥ और अंतःकरणकं तथाता अंतःकरणकीवृत्तियोंके प्रकाशकरणेविषे ताचैतन्यकूं किसीवृत्तिकीअपेक्षाहैनहीं ॥ याकारणतैंहीं ताचैतन्यविषे साक्षीरूपताहै ॥ जोकदाचित् सोचैतन्य अंतःकरणकेवृत्तिकूं घटादिकोंकीन्यांई दूसरीवृत्तिकीअपेक्षाकरिकै प्रकाशकरैंगा ॥ तौं दूसरीवृत्तिकूं तीसरीवृत्तिकीअपेक्षाकरिकै प्रकाशकरैंगा ॥ तातीसरीवृत्तिकूं चतुर्थवृत्तिकरिकैप्रकाशकरैंगा ॥ याप्रकारवृत्तियोंकीधारामानणेविषे अनवस्थादोषकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ यातैं सोसाक्षीआत्मा आपणेस्वरूपतैंहीं अंतःकरणकूं तथाताकेवृत्तियोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ तिनोंकेप्रकाशविषे वृत्तिकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जिसकारणतैं पूर्वउक्त श्रुतियुक्तियोंकरिकै यहस्वप्रकाशस्फुरणरूपआत्मा सर्वदानित्यहै तथासर्वत्रव्यापकहै तथाजन्ममरणरूपसंसारतैंरहितहै तथासर्वपदार्थोंकाप्रकाशकहै तथासर्वदाएकरूपहै ॥ तिसकारणतैं ऐसेअविनाशी आत्माकेनाशकीशंकाकरिकै आपणेयुद्धरूपधर्मविषेपूर्वप्रवृत्तहूएतुमारेकूं तिसयुद्धतैंउपरामहोणा योग्यनहींहै ॥ याप्रकारकावचन श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रतिकहेहै ॥ (तस्माद्युद्ध्यस्वभारतइति) तात्पर्ययह ॥ स्वप्रकाशज्ञानरूपआत्मातौं कदाचित्भीनाशहोवैनहीं ॥ और यहभीष्मद्रोणादिकशरीरतौंमिथ्यारूपहैं तथाअनित्यहैं ॥ यातैं तेशरीर आपेही नष्टहूएजैसैंहैं ॥ ऐसेअनित्यशरीरोंकेहननतैं निवृत्तहोइकै तूं आपणे स्वधर्मकूंनाशमतकरइति ॥ ईहां (युद्ध्यस्व) यावचनकरिकै भगवान्नैं अर्जुनकेप्रति युद्धरूपकर्मकाविधाननहींकऱ्या ॥ किंतु तावचनकरिकै भगवान्नैं पूर्वप्राप्तयुद्धका अनुवादमात्रकऱ्याहै ॥ काहेतैं आत्माज्ञानकेउपदेशप्रसंगमैं तायुद्धरूपधर्मकीविधि संभवैनहीं ॥ किंतु भगवान्केउ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पदेशतैंविनाहीं सोअर्जुन पूर्वयुद्धविषेप्रवृत्तहूआथा ॥ परंतु शोकमोहकेवशतैं सोअर्जुन तायुद्धतैंनिवृत्तहोताभया ॥ सोशोकमोह भगवान्केउपदेशजन्यज्ञानतैं निवृत्तहोताभया ॥ यातैं ॥ अपवादाऽपवादेउत्सर्गस्यस्थितिः ॥ यान्यायकरिकै (युद्धयस्व) यहभगवान्का वचन अनुवादरूपहींहैं विधिरूपनहीं ॥ ईहां पूर्वप्राप्तयुद्धका शोकमोहअपवादहै ॥ और ताशोकमोहका विचारजन्यज्ञान अपवादहै ॥ ताशोकमोहरूपअपवादके विचारजन्यज्ञानरूपआपवादकेविद्यमान हूए तहां पूर्वप्राप्तयुद्धरूपउत्स्वर्गकीहींस्थितिहोवैहै ॥ जैसेभोजनकरणेविषेप्रवृत्तहूआ क्षुधावान्पुरुष किसीअशुद्धि आदिकोंकीशंकाकरिकै ताभोजनतैंनिवृत्तहोइजावै ॥ और कोईधर्मात्मापुरुष ताकेशंकाकीनिवृत्तिकरिकै तापुरुषके प्रति तूंभोजनकर याप्रकारकावचनकहै ॥ ईहां तूंभोजनकर याप्रकारकावचन विधिरूपनहींहै॥ किंतु पूर्वप्राप्तभोजनका अनुवादरूपहै ॥ पूर्वअप्राप्तअर्थकेबोधनकरणेहारावचनहीं विधिरूपहोवैहै और कोईकग्रंथकारतौं (युद्धयस्व) यावचनकूंविधिरूपमानिक मोक्षकीप्राप्तिविषे ज्ञानकर्मदोनोंकासमुच्चय अंगीकारकरेहै ॥ सोतिनोंकाकहणा असगतहै ॥ काहेतैं (युद्धयस्व) यावचनतैं मोक्षकीप्राप्ति ज्ञानकर्मदोनोंकेसमुच्चयतैंहोवैहै यहअर्थप्रतीतहोवैनहीं औरन ज्ञानकर्मकासमुच्चय आगे विस्तारतैंखंडनकरैंगे इति ॥ १८ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् (अशोच्यानन्वशोचस्त्वं) इत्यादिकवचनोंकरिकै भीष्मद्रोणादिकबांधवोंके नाशजन्यशोककेनिवृत्तहूएभी तिनभीष्मद्रोणादिकोंकेनाशकरणेतैं उत्पन्नहोणेहाराजोपापहै तापापकेनिवृत्तकरणेका कोईउपायहैनहीं ॥ और जोआप यहकहो जहां शोकनहींहोवैहै तहां पापभीनहींहोवैहै ॥ सोयहनियमसंभवतानहीं ॥ काहेतैं किसीपुरुषनैं आपणेशत्रुब्राह्मणकाहननकरया ॥ तहां ता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शत्रुब्राह्मणकेहननकरणेविषे तापुरुषकूं शोकतौंहोवैनहीं ॥ यातैं तापुरुषकूं ताब्रह्महत्याजन्यपापभीनहींहोणाचाहीये ॥ और शोककेनहींहूएभी तापुरुषकूं पापतौंअवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यातैं भीष्मद्रोणादिकोंकूंहननकर्त्ता जोमैंअर्जुनहूं तथातिनोंकेहननकरणेविषे हमारेकूंप्रेरणाकरणेहारेजोआपहो तिनहमदोनोंकूंहीं तावांधवोंकोहिंसातैं पाप अवश्यक रिकैहोवैंगा ॥ यातैं तूंयुद्धकर यहजोवचन पूर्वआपनैं कथनकर्याहै सोअसंगतहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभ गवान् कठवल्लीउपनिषदकेमंत्रकरिकै ताशंकाकीनिवृत्तिकरेहै ॥

यएनंवेत्तिहंतारंयश्चैनंमन्यतेहतं ॥ उभौतौनविजानीतोनायंहंतिनहन्यते १ ९ ॥

यः१ । एनं२ । वेत्ति३ । हंतारं४ । यः५ । चं६ । एनं७ । मन्यते८ । हतं९ । उभौ१० । तौ११ । नं१२ । विजानीतः१३ । नं१४ । अयं१५ । हंति१६ । नं१७ । हन्यते१८ । इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जोपुरुष इसआत्माकूं हननकर्त्ता जानेहे तथा जोपुरुष इसआत्माकूं हननहूआ मानेहै तेदोनोंपुरुष आ त्माकूं नहीं जानतेहैं काहेतैं यहआत्मा किसीकूं भी नहीं हननकरेहै तथाआपभी नहीं हननकूंप्राप्तहोवैहै ॥ १ ९ ॥ इ० प०

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वहमनैं कथनकर्याजो अविनाशीअप्रमेयरूप देहीआत्माहै ॥ ताआत्माकूं जोपुरुष मैंइसवस्तु काहननकरणेहाराहूं याप्रकार हननरूपक्रियाकाकर्त्ताजानेहै ॥ और जोपुरुष इसआत्मादेवकूं देहकेहननकरिकैमैं हननहूआहूं याप्रकार हननक्रियाकाकर्मरूपजानेहै ॥ तेदोनोंपुरुष देहाभिमानिहोणेतैं कर्त्ताकर्मभावतैंरहित अवि कारीआत्माकूं शास्त्रप्रमाणतैं देहादिकोंतैंभिन्नकरिकै जानतेनहीं ॥ क्युंनहींजाणते जिसकारणतैं यहआत्मादेव किसी भीप्राणीकूंहननकरतानहीं ॥ तथा आपभी किसीकरिकैहननहोतानहीं ॥ ऐसेहननक्रियाकेकर्त्ताकर्मभावतैंरहितआ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्मादेवकूं जेमूढपुरुष ताहननक्रियाकाकर्त्तारूप तथाकर्मरूप मानेहैं ॥ तेमूढपुरुष आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजानतेनहीं ॥ ईहां यद्यपि (यएनंवेत्तिहंतारंहतंवा) इतनैंवचनमात्रकहणेकरिकैहा तापूर्वउक्तअर्थकोसिद्धिहोइसकेहै ॥ यातै (यएनंवेत्तिहंतारं यश्चैनंमन्यतेहतं) यहदोवारपदोकीआवृत्तिकरणी निष्फलहै ॥ तथापि सा पदोकीआवृत्ति वाक्यकेअलंकारवासतैहैइति ॥ अथवा (यएनंवेत्तिहंतारं) यावचनकरिकै नैयायिकोंकाकथनकर्याहै ॥ काहेतैं तेनैंयायिकआत्माकूंहीं हननादिकक्रियावोंकाकर्तामानेहैं ॥ और (यश्चैनंमन्यतेहतं) यावचनकरिकै चार्वाकोंकाकथनकर्याहै काहेतैं तेचार्वाकादिक शरीरादिरूपआत्माकूं नाशवान्मानेहैं ॥ तेनैयायिक तथाचार्वाक दोनों आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजानतेनहीं ॥ याप्रकार तिनवादियोंकेभेदजनावणेवास्तै सा दोवारपदोकीआवृत्ति करीहैइति ॥ अथवा ॥ जोपुरुष आत्माकूं हननक्रियाकाकर्ताजानेहैं ॥ तेपुरुष अत्यंतशूरवीरहैं ॥ और ॥ जेपुरुष ताआत्माकूं हननक्रियाकाकर्ममानेहैं ॥ तेपुरुष अत्यंतकायरहैं ॥ याप्रकारकेभेदजनावणेवासतै सा दोवारपदोकीआवृत्तिकरीहैइति ॥ ईहां (यएनंवेत्तिहंतारंयश्चैनंमन्यतेहतं) याश्लोकेपूर्वार्द्धविषे हंताचेन्मन्यतेहंतुंहतश्चेन्मन्यतेहतं याकठवल्लीश्रुतिकेपूर्वार्द्धकाअर्थ निरूपणकर्या ॥ श्रुतिका तथाश्लोकका उत्तरार्द्ध एकसरीखाहींहै इति ॥ १९ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहआत्मादेव ताहननरूपक्रियाका कर्तारूप तथाकर्मरूप किसकारणतैंनहींहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ यहआत्मादेव जन्मादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै यातैं ताहननरूपक्रियाका कर्त्तारूप तथाकर्मरूप होवैनहीं याप्रकारके उत्तरकूं श्रीभगवान् ताकठवल्लीउपनिषदकेद्वितीयमंत्रकरिकै कथनकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नजायतेम्रियतेवाकदाचिन्नायंभूत्वाभवितावानभूयः ॥ अ
जोनित्यःशाश्वतोयंपुराणोनहन्यतेहन्यमानेशरीरे ॥ २० ॥

नं । जायते । म्रियते । वा । कदाचित् । नं । अयं । भूत्वा । भविता । वा । नं । भूयः । अजः । नित्यः । शाश्वतः । अयं । पुराणः । नं । हन्यते । हन्यमाने । शरीरे । इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन यहआत्मादेव नहीं जन्मेहै तथा नहीं मरेहै तथा यहआत्मा कदाचित्भी पूर्वनहीं कोइकरिकै पुनः उत्पत्तिमान् नहींहोवैहै जिसकारणतैं यहआत्मादेव अजहै तथानित्यहै तथाशाश्वतहै तथापुराणहै ऐसाआत्मा शरीरके हननहूएभी नहीं हननहोवैहै २० इतिपदा०

॥ टीका ॥ ॥ जन्म अस्ति वृद्धि विपरिणाम अपक्षय विनाश यहषट्भावविकार शास्त्रविषेकथनकरेहैं ॥ तिनषट्विकारों विषे आद्यकेजन्मरूपविकारका तथाअंतकेनाशविकारका श्रीभगवान् खंडनकरेहै ॥ (नजायतेम्रियतेवेति) हेअर्जुन यहआत्मादेव जन्मकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं यहआत्मादेव किसीभीकालविषे पूर्वनहींहोइकै पश्चात् उत्पत्तिवालाहोतानहीं ॥ जोपदार्थ पूर्वनहींहोइकै पश्चात् होवैहै ॥ सोपदार्थहीं उत्पत्तिरूपविक्रियाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ पूर्वनहींहोइकै पश्चात् होवैहैं ॥ यातैं तेघटादिकपदार्थ उत्पत्तिरूपविकारवालेभीहैं ॥ और यहआत्मादेवतौं पूर्वकालविषेभीविद्यमान है ॥ यातैं यहआत्मादेव उत्पत्तिरूपविकारकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव अजहै ॥ और यहअत्मादेव मरणरूपविकारकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं यहआत्मादेव पूर्वकालविषेविद्यमानहोइकै ॥ कहाचित्भी उत्तरकालविषे अविद्यमा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहोवैनहीं ॥ जोपदार्थ पूर्वकालविषेविद्यमानहोइकै उत्तरकालविषे नहींविद्यमानहोवैहै ॥ सोपदार्थहीं मरणरूपविकारकूं
प्राप्तहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ पूर्वकालविषेविद्यमानहोइकै उत्तरकालविषे अविद्यमानहोवैहैं ॥ यातैं तेघटादिकपदार्थ
नाशरूपविकारकूंभी प्राप्तहोवैहैं ॥ और यहआत्मादेवतौं ताउत्तरकालविषे भीविद्यमानहै ॥ यातैं यहआत्मादेव मरणरूपवि
कारकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव नित्यहै अर्थात्विनाशहोणेकेयोग्यनहींहै॥ ईहां (नजायतेम्रियतेवा) या
वचनकरिकै आत्माके जन्ममरणकेअभावकीप्रतिज्ञाकरी ॥ और (कदाचिन्नायंभूत्वाभवितावानभूयः) यावचनविषेस्थितप
दोंकीदोप्रकारतैंयोजनाकरिकै ताप्रतिज्ञाकाउपपादनकऱ्या ॥ और (अजोनित्यः) यावचनकरिकै ताप्रतिज्ञाकाउपसंहार
कऱ्या॥ ईहां जन्मादिकषट्विकारोंविषे जन्मरूपजोआदिकाविकारहै तथामरणरूपजोअंतकाविकारहै तिनदोनोंविकारों
केनिषेधकरिकै ॥ यद्यपि तिन दोनोंविकारोंकेमध्यवर्त्ति तथातिनदोनोंविकारोंकेव्याप्यजेच्यारिविकारहैं ॥ तिनोंकानिषेध
होइसकेहै॥तथापि ईहां नहींकथनकरेजेगमनआगमनादिकविकारहैं तिनसर्वविकारोंकेनिषेधकेजनावणेवासतै श्रीभगवा
न् अपक्षय वृद्धियादोनोंविकारोंका शाश्वत पुराण यादोनोशब्दोंकरिकैनिषेध करेहै (शाश्वतइति) तहां यहआत्मादेव कूट
स्थतारूपनित्यवालाहै ॥ यातैं याआत्मादेवका स्वरूपतैंअपक्षयहोवैनहीं ॥ और यहआत्मादेव निर्गुणहै ॥ यातैं याआत्मा
देवकागुणतैंभी अपक्षयहोवैनहीं ॥ याकारणतैं यहआत्मादेवशाश्वतहै ॥ जोवस्तु अपक्षयअपचयतैंरहितहूआ सर्व
कालविषेविद्यमानहोवैहै तावस्तुकानाम शाश्वतहै ॥ ऐसा यहआत्मादेवहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहआत्मादेव अ
पक्षयकूंतौं मतप्राप्तहोवै तौंभी वृद्धिकूं किसवासतैनहींप्राप्तहोवै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए भगवान्कहेहै (पुराणइति)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन यहअत्मादेव इसतैपूर्वभीनवीनहींथा ॥ कोईइसकालविषे यहअत्मादेव नवीनअवस्थाकूंप्राप्तभयान हीं ॥ यातैं यहआत्मादेव पुराणहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सर्वकालविषे यहआत्मादेव एकरूपहैइति ॥ और यालोकविषे जोपदार्थ किसीउपचयरूपनवीनअवस्थाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोपदार्थहीं वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे शरीरादिकपदार्थहैं ॥ और यहआत्मादेवतौं सर्वकालविषे एकरूपहींहै ॥ यातैं यह आत्मादेव अपचयकूं तथा उपचयकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ या कारणतैं यहआत्मादेव वृद्धिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ ईहां ज्वरादिकरोगोंकरिकै जोशरीरकेअवयवोंकीक्षीणताहै ताकानाम अपचयहै ॥ और अन्नादिकोंकेभक्षणकरिकै जोशरीरकेअवयवोंकीवृद्धिहै ताकानाम उपचयहै ॥ ईहां अस्ति विपरि णाम यहदोनोंविकार जन्म नाश यादोनोंविकारोंकेअंतरभूतहैं ॥ यातैंतिनदोनोंविकारोंका पृथक्निषेधकस्यानहीं ॥ ताजन्ममरणकेनिषेधकरिकै अस्ति विपरिणाम यादोनोंकानिषेधभीजानिलैणा ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं यहआत्मा देव जन्मादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ तिसकारणतैं शस्त्रादिकउपायोंकरिकै याशरीरकेहननहूएभी ताशररीकेकल्पि तसंबंधवालाहूआभी यहआत्मादेव किसीभीउपायकरिकै हननकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जैसे घटरूपउपाधिकेनाशहूएभी आकाशकानाशहोवैनहीं ॥ तैसे देहादिकउपाधियोंकेनाशहूएभी आत्माकानाशहोवैनहीं ॥ तहां श्रुति ॥ अविनाशीवा अरेऽयमात्मा ॥ अर्थयह ॥ हेमैत्रेयी यहआत्मादेव विनाशतैंरहितहै इति ॥ २० ॥ ॥ पूर्व(यएनंवेत्तिहंतारं)याश्लोकविषे (नायंहंतिनहन्यते) यावचनकरिकै आत्मा नहींतौं किसीकूंहननकरताहै और नहींकिसीकरिकैहननहोताहैयाप्रकारकी प्रतिज्ञाकरीथी ॥ तहां आत्मा किसीकरिकैभी हननननहींहोताहै याप्रतिज्ञाकातौं पूर्वश्लोकविषेविस्तारतैंउपपादनकस्या ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अब आत्मा किसीकूंभी हननहींकरताहै याप्रतिज्ञाका उपपादनकरताहूआ श्रीभगवान् पूर्वप्रसंगकाउपसंहारकरेहै ॥

वेदाविनाशिनंनित्यंयएनमजमव्ययं ॥ कथंसपुरुषःपार्थकंघातयतिहंतिकं ॥ २१ ॥

वेद । अविनाशिनं । नित्यं । यः । एनं । अजं । अव्ययं । कथं । सः । पुरुषः । पार्थ । कं । घातयति । हंति । कं । इतिपद०

हेपार्थ जोपुरुष इसआत्मादेवकूं अविनाशीरूप नित्यरूप अजरूप अव्ययरूप जानेहैं सो पुरुष किसकूं हननकरेहै तथाकिसप्रकारकरिकै हननकरेहै और सोपुरुष किसकूं हननकरावैहै तथाकिसप्रकारकरिकै हननकरावैहै किंतु सोपुरुष नकिसीकूंहननकरेहै तथानकिसीकाहननकरावैहै ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ विनाशहोणेकानहींहैस्वभावजिसका ताकूं अविनाशीकहेहैं ॥ ऐसाविनाशरूपअंतःकरणतैंरहितजोआत्माहै ताकेअविनाशीपणेविषेहेतुकहेहैं (अव्ययंइति) नहींविद्यमानहै अवयवोंकाअपचयरूप तथागुणोंकाअपचयरूप व्यय जिसविषे ताकानाम अव्ययहै ॥ यालोकविषे पटादिकपदार्थोंका तंतुआदिकअवयवोंकेअपचयकरिकै तथारूपादिकगुणोंकेअपचयकरिकै विनाशदेखणेविषेआवैहै ॥ और यहआत्मादेवतौं निरवयवहोणेतैं अवयवोंके अपचयतैंरहितहै तथानिर्गुणहोणेतैं गुणोंकेअपचयतैंरहितहै ॥ यातैं याआत्मादेवका कदाचित्भी विनाशसंभवैन हीं ॥ याकहणेतैं यहअनुमानसिद्धभया ॥ आत्मा अविनाशीहोणेकूंयोग्यहै अव्ययहोणेतैं जोपदार्थ अविनाशी नहींहोवैहै सोपदार्थ अव्ययभीनहींहोवैहै जैसे पटादिकपदार्थहैं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् आत्मा विनाशीहे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

णेकूंयोग्यहै जन्यहोणेतैं घटादिकोंकीन्यांई याप्रकार जन्यत्वहेतुकरिकै आत्माविषे विनाशीपणेकाअनुमानभीहो
इसकैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् आत्माविषे ताजन्यत्वहेतुकीअसिद्धि कथनकरेहै ॥
॥ ८० ॥ (अजंइति) जोकदाचित्भी जन्मकूंनहींप्राप्तहोवै ताकानाम अजहै ॥ ऐसा जन्मरूपआद्यविकारतैंरहित आत्माहै ॥ 174
ताअजपणेविषे हेतुकहेहैं (नित्यंइति) जोसर्वकालविषे विद्यमानहोवै ताकानाम नित्यहै ॥ और यालोकविषे जोप
दार्थ पूर्वनहींविद्यमानहोवैहै तापदार्थकाहींजन्मदेखणेविषेआवैहै ॥ जैसे घटपटादिकपदार्थ आपणीउत्पत्तितैंपूर्व न
हींविद्यमानहूएहीं पश्चात् जन्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और यहआत्मादेवतौं सर्वकालविषेविद्यमानहै ॥ यातैं याआत्मादेव
का कदाचित्भी जन्मसंभवैनहीं याकहणेकरिकैयहअनुमानसिद्धभया ॥ आत्मा जन्मतैंरहितहोणेकूंयोग्यहै नित्यहो
णेतैं जोपदार्थ जन्मतैंरहितनहींहोवैहै सोपदार्थ नित्यभीनहींहोवैहै जैसे घटादिकपदार्थहैंइति ॥ अथवा ॥ अविना
शीयापदकरिकै बाधतैंरहितसत्यवस्तुकाग्रहणकरणा ॥ और नित्य याशब्दकरिकै सर्वत्रव्यापकवस्तुकाग्रहणकरणा ॥
ताकेविषेहेतुकहेहै ॥ (अजं अव्ययंइति) ईहां जन्मतैंरहितवस्तुकानाम अजहै ॥ और नाशतैंरहितवस्तुकानाम अ
व्ययहै ॥ और यालोकविषे जोपदार्थ उत्पत्तिमान्होवैहै तथानाशवान्होवैहै सोपदार्थ सत्यरूप तथासर्वत्रव्यापक
होवैनहीं ॥ जैसे उत्पत्तिनाशवान्घटादिकपदार्थ सत्यरूपनहींहैं ॥ तथासर्वत्रव्यापकभीनहींहैं ॥ और यहआत्मादे
वतौं उत्पत्तिनाशतैंरहितहै यातै यहआत्मादेव सत्यरूपहै तथासर्वत्रव्यापकहै ॥ याकहणेकरिकैयहअनुमानसिद्धभया ॥८०॥
आत्मा अविनाशी तथानित्यहोणेकूंयोग्यहैं अज तथाअव्ययहोणेतैं जोपदार्थ अविनाशी तथानित्यनहींहोवैहै सो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पदार्थ अज तथाअव्ययभीनहींहोवैहै जैसे धटादिकपदार्थहैंइति ॥ इसप्रकार अविनाशीरूप तथानित्यरूप तथाअ
जरूप तथाअव्ययरूप जोयहआत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवकूं जोपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं मैं जन्मादिकसर्वविकारों
तैंरहितहूं तथाबुद्धिआदिकसर्वपदार्थोंकाप्रकाशकहूं तथासर्वद्वैतप्रपंचतैंरहितहूं तथापरमानंदबोधरूपहूं याप्रकार
साक्षात्कारकरेहै ॥ सोविद्वान्पुरुष किसकूंहननकरेहै तथाकिसप्रकारकरिकै हननकरेहै ॥ किंतु सोविद्वान्पुरुष कि
सीकूंभीहननकरतानहीं ॥ तथा किसीप्रकारकरिकैभी हननकरतानहीं ॥ और सोविद्वान्पुरुष किसकूं हननकरावैंहै
तथा किसप्रकारकरिकै हननकरावैंहै ॥ किंतु सोविद्वान्पुरुष किसीकूंभी हननकरावतानहीं ॥ तथा किसीप्रकारकरि
कैभीहननकरावतानहीं ॥ काहेतैं जन्मादिकसर्वविकारोंतैंरहित तथाकर्त्तापणेतैंरहित जोविद्वान्पुरुषहै ताविद्वान्पु
रुषकूं ताहननरूपक्रियाविषे साक्षात्कर्त्तापणा तथाप्रयोजककर्त्तापणा संभवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ आत्मानंचेद्विजानीया
दयमस्मीतिपूरुषः किमिच्छन्कस्यकामाय शरीरमनुसंज्वरेत् ॥ अर्थयह ॥ यहविद्वान्पुरुष जबी परिपूर्णअद्वितीयब्र
ह्ममैंहूं याप्रकार आत्माकूंजानेहै ॥ तबी यहविद्वान् पुरुष किसवस्तुकीइच्छाकरताहूआ किसकेप्रयोजनवासतैयाशरीर
कूंसंतापकरैंगा ॥ किंतु नहींकरैंगाइति ॥ यहश्रुति शुद्धआत्माकेजाननेहारेविद्वान्पुरुषविषे कर्तृत्वभोक्तृत्वआदिक
संसारकेअभावकूंबोधनकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ शुद्धआत्माकेज्ञानकरिकै याविद्वान् पुरुषके अज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ ता
अज्ञानकेनिवृत्तहूए अहंममअध्यासकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ ताअध्यासकेनिवृत्तहूए रागद्वेषादिकोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ ता
रागद्वेषादिकोंकेनिवृत्तहूए कर्तृत्वभाक्तृत्वआदिकोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार आत्माकाज्ञानहीं सर्वअनर्थोंकेनिवृ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्तिकाकारणहैं ॥ ईहां इसश्लोकविषे श्रीभगवान्का यहअभिप्रायहै ॥ वास्तवतैंविचारकरिकैदेखीयेतौं यहआत्मादे
व सर्वविकारौंतैंरहितहै यातैंकोईभी किसीकार्यकूंकरतानहीं तथाकरावतानहीं ॥ तथापि यहमूढपुरुष अज्ञानकेवश
तैं स्वप्नकीन्यांई आपणेआत्माविषेकर्तृत्वादिकधर्ममानेहै ॥ यहवार्ता (उभौतौनविजानीतः) यागीताकेवचनकरिकै
पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ तहांश्रुतिभी ॥ ध्यायतीवलेलायतीव ॥ अर्थयह ॥ वास्तवतैंसर्वविकारौंतैंरहित यहआत्मादेव
बुद्धिरूपउपाधि जबीध्यानकरेहै तबी ध्यानकरताकीन्यांई प्रतीतहोवैहैं ॥ और बुद्धिरूपउपाधि जबी चलायमानहोवै
है तबी चलायमानहूएकीन्यांई प्रतीतहोवैहैइति ॥ इसीकारणतैं सर्वशास्त्र अविद्वान्अधिकारीकेवासतैंहींकथनकरेहैं ॥
विद्वान्पुरुषकेवासतैं कोईभीशास्त्रहैनहीं ॥ काहेतैं सोविद्वान्पुरुषतौं आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानरूपमूलसहितअध्यास
केनिवृत्तहूए आत्माविषे कर्तृत्वादिक मानतानहीं ॥ जैसे स्थाणुकेवास्तवस्वरूपकूंजानणेहारापुरुष तास्थाणुविषे चौ
रपणा मानतानहीं ॥ तसे आत्माकेअकर्तृत्वादिकवास्तवस्वरूपकूंजानणेहारा सोविद्वान्पुरुष ताआत्माविषे कर्त्ता
पणामानतानहीं ॥ यातैंयहसिद्धभया ॥ सर्वविकारोंतैंरहितहोणेतैं तथाअद्वितीयरूपहोणेतैं सोविद्वान्पुरुष हननादि
कक्रियाकूंनकरताहै नकरावताहै ॥ तहांश्रुति ॥ आनंदंब्रह्मणोविद्वान्नबिभेतिकुतश्चनेति ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मकेस्वरू
पभूतआनंदकूंजानणेहारा विद्वान्पुरुष किसीतैंभीभयकूंप्राप्तहोवैंनहींइति ॥ ईहां भयकानिषेध सर्वविकारोंकेनिषेध
काउपलक्षकहै ॥ इसप्रकार वास्तवतैं आत्माविषेकर्तृत्वादिकोंकेअभावहूएभी सोअर्जुन आपणेविषे ताहननरूप
क्रियाकाकर्त्तापणा आरोपणकरिकै तथाश्रीभगवान्विषे ताहननरूपक्रियाका प्रयोजककर्त्तापणा आरोपणकरिकै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आपणेविषे तथाभगवान्विषे ताहिंसाजन्यदोषकीशंकाकरताभया ॥ और श्रीभगवान्भी ताअर्जुनकेअभिप्रायकूंजानि
करिकै ताअर्जुनविषे हननरूपक्रियाकेकर्त्तापणेका निषेधकरताभया ॥ और आपणेविषे ताहननरूपक्रियाके प्रयोज
ककर्त्तापणेका निषेधकरताभया ॥ तहां जोपुरुष आपतौं तिसक्रियाकूंकरेनहीं और तिसक्रियाविषे दूसरेकूंप्रेरणाक
रेहै तापुरुषकूं प्रयोजककर्त्ताकहेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ यहआत्मादेव वास्तवतैं सर्वविकारोंतैंरहितहै ॥ यातैं आपणेविषे
ताहननरूपक्रियाकाकर्त्तापणाआरोंपणकरिकै तथाहमारेविषे ताहननरूपक्रियाका प्रयोजककर्त्तापणाआरोपणकरि
कै तुमनैं पापकेप्राप्तिकोशंका कदाचित्भीनहींकरणीइति ॥ ईहां श्रीभगवान्नैं आत्माविषै अविक्रियता दिखाइकै
कर्तृत्वकानिषेधकऱ्या ॥ तिसतैंयहजान्याजावैहै ॥ श्रीभगवान्का सर्वकर्मोंकेनिषेधविषेतात्पर्यहै ॥ केवल हननरूपक्रि
याकेनिषेधविषेतात्पर्यनहींहै ॥ यातैं मूलश्लोकविषे जोकेवल हननक्रियाकानिषेधकऱ्याहै सोनिषेध सर्वकर्मोंकेनिषे
धकाउपलक्षकहै ॥ पूर्वप्रसंगविषे हननरूपक्रियाहीं प्राप्तहै ॥ याकारणतैं भगवान्नैं ताहननरूपक्रियाकानिषेधक
ऱ्याहै ॥ परंतु ताहननरूपक्रियाकेनिषेधकरिकै सर्वकर्मोंकानिषेधहीं भगवान्कूंसंमतहै ॥ काहेतैं अविक्रियत्वरूपहेतु
आत्माविषे जैसे हननरूपक्रियाकानिषेधकरेहैं ॥ तैसे दूसरेसर्वकर्मोंकाभीनिषेधकरेहै ॥ केवल हननरूपक्रियाका
निषेधकरैनहीं ॥ याकारणतैंहीं (तस्यकार्यंनविद्यते) यावचनकरिकै श्रीभगवान् आपहीं सर्वकर्मोंकानिषेध आगेक
थनकरैंगा ॥ याकहणेकरिकै याप्रकारकोमूढजनोंकीशंकाकाभीखंडनहूआजानणा ॥ साशंकायहहै ॥ (कंघातयतिहं
तिकं) यावचनकरिकै भगवान्नै केवल हननरूपक्रियाकानिषेधकऱ्याहै दूसरेकर्मोंकानिषेधकऱ्यानहीं ॥ यातैं ताहन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नरूपकर्मतैंभिन्न दूसरेकर्मतौं भगवान्कूंभी कर्त्तव्यतारूपकरिकैअंगीकारहैंइति ॥ सोयहवादीकीशंकासंभवैनहीं ॥ का हेतैं (तस्माद्युद्ध्यस्वभारत) यावचनकरिकै हननरूपकर्मकातौं भगवान्नैं आपहींविधानकऱ्याहै ॥ यातैं (कंघातयति हंतिकं) यावचनका आत्मा वास्तवतैंहननक्रियाकाकर्त्तानहींहै यहअर्थहीं अंगीकारकरणाहोवैंगा ॥ सोआत्माविषे वास्तवतैंकर्त्तापणेकाअभाव जैसे हननरूपक्रियाविषेहै तैसे दूसरेकर्मौंविषेभी समानहै इति ॥ २१ ॥ ※ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वउक्तश्रुतियुक्तियोंकरिकै यद्यपि आत्माविषेतौं अविनाशीपणाहींसिद्धहोवैहै ॥ तथापि यास्थूलशरीरोंविषे सोअविनाशीपणा हैनहीं ॥ किंतु यहशरीर नाशवान्हैं ॥ और तिनशरीरोंकेनाशकरणेकासाधन यहयुद्धहै ॥ यातैं अनेकपुण्यकर्मोंकेसाधन रूप जेयह भीष्मद्रोणादिकोंकेशरीरहैं तिनशरीरोंका युद्धकरिकैनाशकरणा हमारेकूंकैसेउचितहोवैंगा ॥ किंतु तिनभीष्म द्रोणादिकोंकेशरीरकानाशकरणा हमारेकूं उचितनहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

वासांसिजीर्णानियथाविहायनवानिगृह्णातिनरोपराणि ॥ त
थाशरीराणिविहायजीर्णान्यन्यानिसंयातिनवानिदेही ॥२२॥

वासांसि ॥ जीर्णानि । यथा । विहाय । नवानि । गृह्णाति । नरः । अपराणि । तथा ॥ शरीराणि । विहाय । जीर्णानि । अन्यानि । संयाति । नवानि । देही ॥ २२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जैसे यहपुरुष जीर्ण वस्त्रोंकूं परित्यागकरिकै दूसरे नवीनवस्त्रोंकूं ग्रहणकरेहै तैसे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यहदेहीभी इनजीर्ण शरीरोंकूं परित्यागकरिकै दूसरे नवीनशरीरोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥
टीका ॥ हेअर्जुन जैसे विक्रियातैंरहितहूआहीं यहपुरुष पूर्वले निकृष्टजीर्णवस्त्रोंकापरित्यागकरिकै दूसरे उत्कृष्टनवीनव
स्त्रोंकाग्रहणकरेहै॥ तैसे उत्तमधर्मोंकूंकरणेहारे यहभीष्मद्रोणादिकदेहीभी अवस्थाकरिकै तथातपकरिकै कृषहूए याभीष्मा
दिकनामोंवालेशरीरोंकापरित्यागकरिकै पूर्वसंपादनकरेहूएपुण्यकर्मोंकेफलभोगणेवासतै सर्वतैंउत्कृष्टदेवतादिकशरीरों
कूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ अन्यन्नवतरंकल्याणतरंरूपंकुरुतेपित्र्यंवा गांधर्ववा दैवंवा प्राजापत्यंवा ब्राह्मंवाइति ॥ अर्थय
ह ॥ यहजीवात्मा पूर्वलेशरीरकापरित्यागकरिकै पुण्यकर्मोंकेवशतैं पितृलोकविषे अथवा गंधर्वलोकविषे अथवा देवलोक
विषे अथवा प्रजापतिलोकविषे अथवा ब्रह्मलोकविषे दूसरेउत्कृष्टदेवताशरीरकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ इतनैकहणेकरिकैयहअ
र्थसिद्धभया ॥जीवतकालपर्यंत कस्याजोधर्मकाअनुष्ठान ताअनुष्ठानजन्यक्लेशकरिकैअत्यंतकृषशरीरवालेहूए जेयहभोष्म
द्रोणादिकहैं ॥ तेभीष्मद्रोणादिक इसवर्त्तमानशरीरकेनाशतैंविना ताधर्मानुष्ठानकेफलभोगणेविषे समर्थहोइसकैनहीं ॥
किंतु तिनस्वर्गादिकसुखोंकीप्राप्तिविषेप्रतिबंधक जेयहवर्त्तमानशरीरहैं तिनवर्तमानशरीरोंकेनाशतैंअनंतरहीं तेभीष्मद्रो
णादिक तिनस्वर्गादिकसुखोंकेभोगणेविषे समर्थहोवैंगे ॥ यातैं धर्मयुद्धकरिकै जबी तूं इनभीष्मद्रोणादिकोंकेवर्तमानश
रीरकूंनाशकरैंगा ॥ तबी यहभीष्मद्रोणादिक याजीर्णशरीररूपप्रतिबंधतैंरहितहोइकै स्वर्गादिकलोकोंविषेदिव्यशरीरकूं
प्राप्तहोइकै नानाप्रकारकेसुखोंकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ सोयह तिनभीष्मद्रोणादिकोंऊपरि तुमारा महान्उपकारहै ॥ यातैं तिन
भीष्मद्रोणादिकोंका महान्उपकारकरणेहारा जोयहयुद्धहै तायुद्धविषे तिनभीष्मद्रोणादिकोंकाअपकारत्वबुद्धिरूपभ्रमकूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नूं मतकरइति ॥ याप्रकारकाभगवान्काअभिप्राय (अपराणि अन्यानि संयाति) यातीनपदोंकेकहणेतैंजान्याजावैहै ॥ और किसीटीकाविषेतौं याश्लोकका यहअभिप्राय वर्णनकरयाहै ॥ जैसे यहदेवदत्तादिनामवालापुरुष पूर्वलेजीर्णवस्त्रोंका परित्यागकरिकै दूसरेनवीनवस्त्रोंकाग्रहणकरैहै ॥ तैसे यहदेहीआत्माभी पूर्वलेजीर्णशरीरोंकापरित्यागकरिकै दूसरेनवो नशरीरोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां जैसे आगमन तथानिर्गमन तथानामरूपादिकोंकीविचित्रता तथाशिथलता इत्यादिक सर्वविकार तिनवस्त्रोंविषेहींहोवैहैं ॥ तापुरुषविषे तेविकारहोवैंनहीं ॥ तैसे उत्पत्तिनाशादिकसर्वविकार याशरीरोंविषेहीं होवैहैं ॥ निरवयवआत्माविषे तेउत्पत्तिनाशादिकविकारहोवैंनहीं ॥ इतनैंकहणेकरिकै आत्माविषे देहइंद्रियादिकोंतैंभिन्न पणा तथा सर्वविकारोंतैं रहितपणा तथानित्यपणा सूचनकरया इति ॥ २२ ॥ ॐ शंका ॥ हेभगवन् जैसे अग्निक रिकैगृहकेदाहहूए तागृहविषेस्थितपुरुषकाभी दाहहोइजावैहै ॥ तैसे यास्थूलदेहकेनाशहूए तादेहकेभीतरस्थितआ त्माकाभी नाशहोवैंगा ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥

नैनंछिंदंतिशस्त्राणिनैनंदहतिपावकः ॥ नचैनंक्लेदयंत्यापोनशोषयतिमारुतः ॥ २३ ॥

नैं । एंनं । छिंदंति । शस्त्राणि । नैं । एंनं । दहति । पावकः । नैं । चं । एंनं । क्लेदयंति । आपः । नैं । शोषयति । मारुतः । इतिप०

हेअर्जुन इस आत्माकूं खड्गादिकशस्त्रभी नहीं छेदनकरेहैं तथाइसआत्माकूं अग्निभी नहीं दाहकरेहैं तथा इसआत्माकूं जलभी नहीं गालसकेहै तथाइसआत्माकूं वायुभी नहीं शोषणकरैहै ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे खडगादिकतीक्षणशस्त्र यास्थूलशरीरकूं छेदनकरेहैं ॥ तैसे इसआत्माकूं तेतीक्षणशस्त्रभी छेदनकरिसकतेनहीं ॥ और जैसे अत्यंतप्रज्वलितअग्नि याशरीरकूं भस्मकरेहै ॥ तैसे सोप्रज्वलितअग्नि याआत्माकूं भस्मकरिसकैनहीं ॥ और जैसे अत्यंतवेगवालाजल याशरीरकूं गीलाकरिकै ताकेअवयवोंकीशिथलतारूप क्लेद न करेहै ॥ तैसे सोअत्यंतवेगवालाजलभी याआत्माकूं क्लेदन करिसकैनहीं ॥ और जैसे अत्यंतप्रबलवायु याशरीरादिकों का नीरसतारूपशोषणकरेहै ॥ तैसे सोअत्यंतप्रबलवायुभी याआत्माकूं शोषणकरिसकैनहीं ॥ ईहां यद्यपि जितनैं कीनाशकरणेहारेपदार्थहैं तिनसर्वपदार्थोंका आत्माविषेनिषेध वांछितहै ॥ यातैं केवलशस्त्रादिकोंकानिषेधकरणा उचितनहींहै ॥ तथापि युद्धकेसमयविषे तेशस्त्रादिकहींप्राप्तहैं ॥ यातैं भगवान्नैं तिनशस्त्रादिकोकाहींनिषेधकर्‍याहै ॥ सोशस्त्रादिकोंकानिषेध नाशकरणेहारेसर्वपदार्थोंकेनिषेधकाउपलक्षकहै ॥ अथवा ॥ यालोकविषे पृथिवी जल अग्नि वायु याच्यारोंविषेहीं नाशकीकारणता देखणेमैंआवैहै ॥ आकाशविषे किसीभीपदार्थकेनाशकीकारणता देखणेविषे आवतीनहीं ॥ यातैं ईहां पृथिवी जल तेज वायु याच्यारिभूतोंकाहींकथनकर्‍याहै आकाशका कथनकर्‍यानहीं ॥ और यालोकविषे जितनैंकीनाशकेकारणहैं तेसर्व पृथिवी आदिकच्यारिभूतोंकेअंतरभूतहींहै ॥ यातैं पृथिवी आदिकच्यारिभूतोंकेनिषेधकरिकै नाशकरणेहारेसर्वपदार्थोंकानिषेध सिद्धहोइसकेहै ॥ तहां खड्गादिकशस्त्र पृथिवीविशेषकाविकाररूपहोणेतैं पृथिवीरूपहींहैं इति ॥ २३ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् आत्माकूं शस्त्रादिक नाशनहींकरिसकते याप्रकारकीप्रतिज्ञामात्रकरिकै अर्थकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ किंतु किसीहेतुतैंहीं अर्थकीसिद्धिहोवैहै ॥ यातैं आत्माकूं तेश

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्रादिक नाशनहींकरिसकतें याप्रतिज्ञाविषे कौनहेतुहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् तिनशस्त्रादिकोंकूं आत्माकेनाशकरणेकीअसामर्थ्यताविषे तथाआत्माकूं तिनशस्त्रादिजन्यनाशकीअयोग्यताविषे हेतुकहेहैं ॥

अच्छेद्योयमदाह्योयमक्लेद्योशोष्यएवच ॥ नित्यःसर्वगतःस्थाणुरचलोयंसनातनः२४॥

अच्छेद्यः१ । अयं२ । अदाह्यः३ । अयं४ । अक्लेद्यः५ । अशोष्यः६ । एव । च । नित्यः७ । सर्वगतः८ । स्थाणुः९ । अचलः१० । अयं११ । सनातनः१२ ॥ इतिप० ॥

हेअर्जुन यह१ आत्मा अच्छेद्यहै तथायह२ आत्मा अदाह्यहै तथा३ अक्लेद्यहै तथा४ अशोष्यहै तथायं हआत्मा नित्यहै तथा७ सर्वगतहै तथा८ स्थाणुहै तथा९ अचलहै तथा१० सनातनहै ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं यहआत्मा छेदनकरणेकूंअशक्यहै तिसकारणतैं याआत्माकूं खडगादिकशस्त्र छेदनकरिसकतेनहीं ॥ और जिसकारणतैं यह आत्मा दाहकरणेकूंअशक्यहै तिसकारणतैं याआत्माकूं अग्नि दाहकरिसकतानहीं ॥ और जिसकारणतैं यहआत्मा क्लेदनकरणेकूंअशक्यहै तिसकारणतैं याआत्माकूं जल क्लेदनकरिसकतानहीं ॥ और जिसकारणतैं यहआत्मा शोषणकरणेकूंअशक्यहै तिसकारणतैं याआत्माकूं वायु शोषणकरिसकतानहीं ॥ इसप्रकार यथाक्रमतैं अच्छेद्यादिकच्यारिहेतुवोंकी पूर्वश्लोकउक्तप्रतिज्ञाविषे योजनाकरणी ॥ ईहां (एवच) यावचनविषेस्थितजो एव यहशब्दहै ॥ सोएवशब्द अच्छेद्यत्वादिकच्यारोंकेसाथि संबंधकूंप्राप्तहूआ आत्माविषे छेद्यत्वादिकधर्मोंकीव्यावृत्तिकरेहै ॥ अर्थात् आत्मा अच्छेद्यहींहै नतुछेद्यहै ॥ इसप्रकार अदाह्यत्वादिकधर्मोंविषेभीजानि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लेणा ॥ और च यहशब्द तिनअच्छेद्यत्वादिकच्यारोकेसमुच्चयकरावणेवासतैंहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिनअच्छेद्यत्वादि
कहेतुवोंकेबलतैं आत्माविषे शस्त्रादिकृतच्छेदनादिकोंकाअभाव सिद्धकरतेहो ॥ तेअच्छेद्यत्वादिकहेतु आत्माविषेरह
तेनहीं ॥ यातैं तिनअच्छेद्यत्वादिकहेतुवोंकरिकै आत्माविषे छेदनादिकोंकाअभाव किसप्रकार सिद्धहोवैंगा ॥ ऐसी अर्जु
नकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् तिनअच्छेद्यत्वादिकहेतुवोंकीसिद्धिकरणेवासतै श्लोककेउत्तरार्द्धकरिकै हेतुकाकथनकरेहै ॥
(नित्यःइति) हेअर्जुन जोपदार्थ पूर्वअपरभाववालाहोवैहै ॥ सोपदार्थ अनित्यहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ पूर्वअपरभा
ववालेहैं यातै अनित्यहैं ॥ और यहआत्मादेवतौं पूर्वअपरभावतैंरहितहै यातैं अनित्यहै ॥ नित्यहोणेतैंहीं यहआत्मादेव
उत्पत्तितैंरहितहै ॥और जोपदार्थ सर्वत्रव्यापकनहींहोवैहै सोपदार्थ अनित्यहींहोवैहैं ॥ जैसे घटादिकपदार्थ सर्वत्रव्यापक
नहींहैं यातैं अनित्यहीहैं ॥ तैसे यहआत्मादेवभी जोकदाचित् सर्वत्रव्यापकनहींहोवैंगा तौं अनित्यहींहोवैंगा ॥ यद्यपि
नैयायिकोनैं पृथिवीआदिकोंकेपरमाणुवोंकूं अव्यापकमानिकैभी नित्यहींमान्याहै ॥ यातैं जोअव्यापकहोवैहै ॥ सोअनित्य
हींहोवैहै याप्रकारकानियमसंभवैनहीं ॥ तथापि वेदांतसिद्धांतविषे तेनित्यपरमाणु अंगीकारनहींहै ॥ यातैं ता
नियमकाभंगहोवैनहीं ॥ और यहआत्मादेवतौं अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै सर्वत्रव्यापकहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादे
व नित्यहै ॥ याकहणेकरिकैयहअनुमानसिद्धभया॥यहआत्मा नित्यहोणेकूंयोग्यहै सर्वत्रव्यापकहोणेतैं जोपदार्थनित्यनहीं
होवैहै सोपदार्थ सर्वत्रव्यापकभीनहींहोवैहै जैसेघटादिकपदार्थहैं इति ॥ सर्वत्रव्यापकहोणेतैं यहआत्मादेव प्राप्तिकावि
षयभीनहींहै और यालोकविषे जोजोपदार्थ विकारीहोवैहै ॥ सोसोपदार्थ सर्वत्रव्यापकहोवैंनहीं जैसे घटादिकपदार्थ वि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कारीहैं यातैं सर्वत्रव्यापकभीनहींहैं ॥ तैसे यहआत्मादेवभी जोकदाचित् विकारीहोवैंगा तौं सर्वत्रव्यापकनहींहोवैंगा ॥ और यहआत्मादेवतौं स्थाणुहै अर्थात् अविकारीहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव सर्वत्रव्यापकहै याकहणेतैंयहअनुमानसिद्धभया ॥ यहआत्मा सर्वत्रव्यापकहोणेकूंयोग्यहै अविकारीहोणेतैं जोजोपदार्थ सर्वत्रव्यापकनहींहोवैहै सोसोपदार्थ अविकारीभीनहींहोवैहै जैसेघटादिकपदार्थहैंइति॥इतनैंकरिकैआत्माविषे विकार्यत्वकानिषेधकऱ्या॥औरयालोकविषे जोजोपदार्थ चलरूपक्रियावालाहोवैहै सोसोपदार्थ विकारीहींहोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ चलनरूपक्रियावालेहैं यातैं विकारीहैं॥तैसे यहआत्मादेवभी जोकदाचित् चलनरूपक्रियावालाहोवैंगा॥तौंविकारीहींहोवैंगा॥और यहआत्मादेवतौं ताचलनरूपक्रियातैंरहित अचलहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव विकारीभीनहींहै ॥ याकहणेकरिकै यहअनुमानसिद्धभया ॥ यहआत्मा अविकारीहोणेकूंयोग्यहै अचलहोणेतैं जोजोपदार्थ अविकारीनहींहोवैहै सोसोपदार्थ अचलभीनहींहोवैहै जैसे घटादिक पदार्थहैंइति ॥ इतनैंकहणेकरिकै आत्माविषे संस्कार्यत्वकानिषेधकऱ्या ॥ ईहां पूर्वअवस्थाकापरित्यागकरिकै जोदूसरीअवस्थाकीप्राप्तिहै ताकानामविक्रियाहै ॥ और अवस्थाकेएकहूएभी जोचलनमात्रहै ताकानाम क्रियाहै॥यातैं अविक्रियत्वरूपसाध्यकी तथाअचलत्वरूपहेतुकी एकतासिद्धहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं यहआत्मादेव नित्य सर्वगत स्थाणु अचलरूपहै ॥ तिसकारणतैं यहआत्मादेव सनातनहै अर्थात् सर्वदाएकरूपहै किसीभीक्रियाका कर्मरूपनहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपदार्थ क्रियाजन्यफलवालाहोवैहै तापदार्थकानाम कर्महै ॥ सोक्रियाजन्यफल उत्पत्ति प्राप्ति विकृति संस्कृति याभेदकरिकै च्यारिप्रकारकाहोवैहै ॥ ताच्यारिप्रकारकेफलकेयोगतैं यथाक्रमतैं सोकर्मभी उत्पाद्य प्राप्य विकार्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संस्कार्य याभेदतैंच्यारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां यहआत्मादेव नित्यहै यातैं उत्पाद्यरूपकर्मभीनहींहै ॥ अनित्यघटादि
कहीं उत्पाद्यरूपहोवैहैं ॥ और यहआत्मादेव सर्वत्रव्यापकहै यातैं प्राप्यरूपकर्मभीनहींहै ॥ परिच्छिन्नग्रामादिकहीं
प्राप्यरूपहोवैहैं ॥ और यहआत्मादेव स्थाणुरूपहै यातैं विकार्यरूपकर्मभीनहींहै ॥ स्थाणुभावतैंरहित विक्रियावालेक्षी
रादिकहीं विकार्यरूपहोवैहैं और यहआत्मादेव चलनरूपक्रियातैंरहितअचलहै यातैं संस्कार्यरूपकर्मभीनहींहै ॥ क्रि
यावालेदर्पणादिकपदार्थहीं संस्कार्यरूपहोवैहैंइति ॥ तहांश्रुति ॥ आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः वृक्षइवस्तब्धोदिवितिष्ठ
त्येकः निष्कलंनिष्क्रियंशांतंइति ॥ अर्थयह ॥ यहआत्मादेव आकाशकीन्यांई सर्वत्रव्यापकहै तथानित्यहै तथामहान्
वृक्षकीन्यांई अचलहूआस्थितहै तथाआपणेस्वप्रकाशरूपविषेस्थितहै तथाएकअद्वितीयरूपहै तथानिरवयवहै त
थाक्रियातैंरहितहै तथाशांतस्वरूपहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतियांया आत्मादेवकूं नित्य सर्वगत स्थाणु अचल रूपकरिकै
कथनकरेहैं ॥ तथा यःपृथिव्यांतिष्ठन्पृथिव्याअंतरोयोऽप्सुतिष्ठन्नद्भ्योंतरो यस्तेजसितिष्ठंस्तेजसोंतरो योवायौति
ष्ठन्वायोरंतरःइति ॥ अर्थयह ॥ जोआत्मादेव पृथिवीविषेस्थितहूआ तापृथिवीतैंभो अंतरहै ॥ तथाजोआत्मादेव
जलोंविषेस्थितहूआ तिनजलोंतैंभीअंतरहै ॥ तथा जोआत्मादेव अग्निरूपतेजविषेस्थितहूआ तातेजतैंभीअंतरहै ॥
तथा जोआत्मादेव वायुविषेस्थितहूआ तावायुतैंभीअंतरहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतियां सर्वत्रव्यापकआत्माकूं सर्वका
अंतर्यामिरूपकरिकैकथनकरतीयांहूइयां ताआत्माविषे शस्त्रादिकृतछेदनादिकोंकीअविषयता कथनकरेहैं ॥ तात्पर्य
यह ॥ जोपदार्थ तिनशस्त्रादिकोंकेअंतरनहींस्थितहोवैहै ॥ तिसपदार्थकूंहीं तेशस्त्रादिक छेदनादिक करेहैं ॥ और य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हआत्मादेवतौं तिनशस्त्रादिकजडपदार्थोंकूं सत्तास्फूर्तिदेणेहाराहोणेतैं तिनशस्त्रादिकोंकाभी प्रेरकअंतर्यामीहै ॥ यातैं इसअत्मादेवकूं तेशस्त्रादिक किसप्रकार छेदनादिक करैंगे ॥ किंतु नहींकरैंगेइति ॥ इसअर्थविषे । येनसूर्यस्तपतितेजसेद्धः ॥ इत्यादिकश्रुतियांभी प्रमाणरूपजानिलेणीयां ॥ इसअर्थकूं यागीताकेसप्तमअध्यायविषे श्रीभगवान् आपहींप्रगटकरैंगा इति ॥ २४ ॥ ॥ किंवा ॥ इसआत्माविषे छेद्यत्व दाह्यत्व आदिकोंकूंविषयकरणेहाराकोईप्रमाणभीहैनहीं ॥ याकारणतैंभी इसआत्माविषे तिनछेद्यत्व दाह्यत्व आदिकोंकाअभावहै ॥ याप्रकारकेअर्थकूं अव्यक्तोयं इत्यादिकअर्द्धश्लोककरिकै श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

अव्यक्तोयमचिंत्योयमविकार्योयमुच्यते ॥ तस्मादेवंविदित्वैनंनानुशोचितुमर्हसि २५

अव्यक्तः।अयं।अचिंत्यः।अयं।अविकार्यः।अयं।उच्यते। तस्मात्। एवं। विदित्वा। एनं। न।अनुशोचितुं।अर्हसि। इतिप० ॥

हेअर्जुन वेदभगवान्नैं यहआत्मा अव्यक्त कह्याहै तथायहआत्मा अचिंत्य कह्याहै तथायहआत्मा अविकार्य कह्याहै तिसकारणतैं तूं इसआत्माकूं इसप्रकारका जानिकरिकै शोककरणेकूं नहीं योग्यहैं ॥ २५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ जोपदार्थ नेत्रादिकइंद्रियजन्यज्ञानकाविषयहोवैहै सोपदार्थ प्रत्यक्ष कह्याजावैहै ॥ प्रत्यक्षहोणेतैं सोपदार्थ व्यक्त कह्याजावैहै ॥ जैसे रूपादिगुणोंवालेघटादिकपदार्थहैं ॥ और यहआत्मादेवतौं रूपादिकगुणोंतैंरहितहोणेतैं नेत्रादिकइंद्रियजन्यज्ञानकाविषयहैनहीं ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव अप्रत्यक्षहै ॥ अप्रत्यक्षहोणेतैं यहआत्मा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देव अव्यक्त कह्याजावैहै ॥ याकारणतैं प्रत्यक्षप्रमाण ताआत्माकेछेद्यत्वादिकोंकूंग्रहणकरिसकैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् आत्माविषे प्रत्यक्षप्रमाणकेअप्रवृत्तहूएभी अनुमानप्रमाण प्रवृत्तहोवैंगा ॥ ऐसोअर्जुनकीशंकाके हूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं (अचिंत्योयंइति) जोपदार्थ अनुमानप्रमाणजन्यज्ञानकाविषयहोवैहै सोपदार्थ चिंत्य कह्याजावैहै ॥ जैसे पर्वतादिकोंविषेस्थित अग्निआदिकपदार्थ अनुमानजन्यज्ञानकेविषयहोणेतैं चिंत्य कहेजावैहैं ॥ और यहआत्मादेवतौं तिनअग्निआदिकअनुमेयपदार्थोंतैं विलक्षणहै अर्थात् अनुमानजन्यज्ञानकाविषयनहींहै ॥ यातैं यहआत्मादेव अचिंत्य कह्याजावैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपदार्थ किसीभीस्थानविषे प्रत्यक्षहोवैहै ॥ तिसपदार्थकाहीं अन्यस्थानविषे अनुमानहोवैहै ॥ सर्वथा अप्रत्यक्षपदार्थका अनुमानहोवैनहीं ॥ जैसेगृहादिकस्थानोंविषेप्रत्यक्षजोअग्निहै ताअग्निकी धूमविषेव्याप्तिनिश्चयकरिकै यहपुरुष पर्वतविषेधूमकूंदेखिकरिकै यहपर्वत अग्निवालाहै याप्रकारकाअनुमानकरेहै ॥ और जोपदार्थ किसोभीस्थानविषे प्रत्यक्षनहींहोवैहै तापदार्थकेव्याप्तिकाज्ञानहीं संभवतानहीं ॥ यातैं तापदार्थका अनुमानभीहोवैनहीं ॥ और याआत्माकातौं नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकैप्रत्यक्षहोवैनहीं ॥ यातैं अनुमानप्रमाणकरिकैभी ताआत्माकेच्छेद्यत्वादिकोंकाग्रहणहोईसकैनहींइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोपदार्थ किसीभीस्थलविषे प्रत्यक्षहोवैहै ॥ तापदार्थकाहीं अन्यस्थलविषे अनुमानहोवैहै ॥ सर्वथाअप्रत्यक्षपदार्थका अनुमानहोवैनहीं यहजोआपनैंनियमकह्या सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं नेत्रादिकइंद्रियोंका तथाधर्मअधर्मका किसीभीस्थलविषेप्रत्यक्षहोतानहीं ॥ परंतु तिनोंविषेभी अनुमानकीविषयतातौं देखणेमैआवतीहै ॥ ताअनुमानका यहप्रकारहै ॥ रूपादिकोंकोप्र

187

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तीति करणकरिकैसाध्यहोणेकूंयोग्यहै क्रियाहोणेतैं जाजाक्रियाहोवैहै सासा करणकरिकैसाध्यहोवैहै जैसे छेदनरूप क्रिया कुठाररूपकरणकरिकैसाध्यहैइति ॥ याप्रकारकेअनुमानतैं रूपादिकोंकीप्रतीतियोंका करणरूपकरिकै नेत्रादिकइंद्रियोंकीसिद्धिहोवैहै ॥ तथा यहपुरुष धर्मवान्है सुखीहोणेतैं ॥ तथा यहपुरुष अधर्मवान्है दुःखीहोणेतैंइति ॥ याअनुमानतैं धर्मअधर्मकोसिद्धिहोवैहै ॥ तैसे सर्वथा अप्रत्यक्षआत्माविषेभी अनुमानकीविषयता बनिसकेहै ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै (अविकार्योयंइति) हेअर्जुन नानाप्रकारकीविक्रियावालेजे इंद्रियादिकपदार्थहैं ॥ तेइंद्रियादिकपदार्थहीं आपणेकार्यकीअन्यथाअनुपपत्तिकरिकैकल्प्यमानहूए अर्थापत्तिप्रमाणका तथा अनुमानप्रमाणका विषयहोवैहै ॥ और यहआत्मादेवतौं सर्वविक्रियातैंरहितहै ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव अर्थापत्तिप्रमाणका तथा अनुमानप्रमाणका विषयहोवैनहीं ॥ और अनुमानकीन्यांई लौकिकशब्दभी प्रत्यक्षादिप्रमाणपूर्वकहींहोवैहै ॥ यातैं ताप्रत्यक्षप्रमाणकेनिषेधहूए तालौकिकशब्दकाभी अर्थतैंहींनिषेधसिद्धहोवैहैंइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् प्रत्यक्ष अनुमान अर्थापत्ति लौकिकशब्द यहच्यारोप्रमाण ताआत्माविषे छेद्यत्व दाह्यत्व आदिकोंकूं मत ग्रहणकरैं ॥ तथापि वेदप्रमाण तिनछेद्यत्वादिकोंकूंग्रहणकरैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥ (उच्यतेइति) हेअर्जुन वेदभगवान्नैंतौं यहआत्मादेव अच्छेद्यअव्यक्तरूपकरिकै प्रतिपादनकरीताहै ॥ यातैं लक्षणावृत्तिकरिकै निर्विकारआत्माकूं प्रतिपादनकरणेहारा सोवेदभगवान् ताआत्माकेछेद्यत्वादिकधर्मोंकूं कैसे प्रतिपादन करैंगा किंतुनहींप्रतिपादनकरैंगा ॥ यातैं आत्माविषे छेद्यत्व दाह्यत्व आदिकधर्मोंकूंविषयकरणेहारा कोईभीप्रमाण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैनहीं ॥ याकारणतैं यहआत्मादेव अच्छेद्य अदाह्यरूपहैइति ॥ ईहां (नैनंछिंदंतिशस्त्राणि) इसश्लोककरिकै शस्त्र अग्निआदिकोंविषे आत्माकेनाशकरणेकाअसामर्थ्य कथनकऱ्या ॥ और (अच्छेद्योयमदाह्योयं) इसश्लोककरिकै ता आत्माविषे छेदनदाहादिरूपक्रियाके कर्मपणेकीअयोग्यता निरूपणकरी ॥ और (अव्यक्तोयमचिंत्योयं) याअर्द्धश्लो ककरिकै ताआत्माविषे छेद्यत्वादिकोंकूंग्रहणकरणेहारेप्रमाणोंकाअभाव कथनकऱ्या ॥ याकारणतैं ईहां पुनरुक्तिदोष कीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ और (वेदाविनाशिनंनित्यं) इत्यादिकश्लोकोंविषे भगवान्भाष्यकारोंनैं अर्थतैं तथाशब्दतैं पुनरुक्तिदोषकोनिवृत्तिकरोनहीं ॥ ताकेविषे भाष्यकारोका यहअभिप्रायहै ॥ यहआत्मादेव अत्यंतदुर्बोधहै ॥ यातैं श्रीकृष्णभगवान् वारंवार प्रसंगकूंपाइकै तिसीआत्मादेवकूं शब्दांतरकरिकैनिरूपणकरेहै ॥ काहेतैं याअधिकारीपुरु षोंकेसंसारकीनिवृत्तिकरणेवासतैंयह आत्मवस्तु किसीप्रकारकरिकैभी जो इनअधिकारीपुरुषोंकेबुद्धिविषेआरूढहोवै तौंश्रेष्ठहैइति ॥ यातैं दुर्विज्ञेयआत्मवस्तुके पुनःपुनःकथनकरणेविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ लोकप्रसिद्धवस्तु के पुनःपुनःकथनकरणेविषेहीं पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैहैइति ॥ ईहां किसीटीकाविषे अव्यक्त अचिंत्य अविकार्य यातीनोंपदोंका याप्रकारकाअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ प्रत्यक्षप्रमाणकाविषयजोयहस्थूलशरीरहै ताकानाम व्यक्तहै ॥ तास्थू लशरीरतैं यहप्रत्यक्आत्मा भिन्नहै ॥ यातैं यहप्रत्यक्आत्मा अव्यक्त कह्याजावैहै ॥ और रूपादिकोंकेप्रकाशरूपका र्यकरिकैअनुमानकरणेयोग्य जोचक्षुआदिकोंकासमुदायरूपलिंगशरीरहै तालिंगशरीरकानाम चिंत्यहै ॥ तालिंगश रीरतैंभी यहआत्मादेव भिन्नहै ॥ यातैं यहआत्मादेव अचिंत्य कह्याजावैहै ॥ और स्थूलसूक्ष्मरूपकार्यभावकरिकै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्थितहोणेयोग्य जोत्रिगुणात्मकमूलाअज्ञानरूपकारणशरीरहैं ॥ जोअज्ञानरूपकारणशरीर केवलसाक्षीकरिकैहींग म्यहै ॥ ताकारणशरीरकानाम विकार्यहै ॥ ताकारणशरीरतैंभी यहआत्मा भिन्नहै ॥ यातैं यहआत्मादेव अविकार्य कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार गुरुशास्त्रनैं अधिकारीपुरुषकेप्रति स्थूलसूक्षमकारणशरीरकेनिषेधमुखकरिकै यहआत्मा देव उपदेशकरीताहै ॥ कोई गोशृंगग्राहिकान्यायकरिकै इसप्रकारकायहआत्माहै याप्रकार विधिमुखकरिकै कथन करीतानहीं ॥ तहां किसीनैंपूछा हमारीगौकौनहै आगेतैं किसीपुरुषनैं तागौकूंशृंगतैपकडिकरिकै यहतुमारीगौहै याप्रकारगौदिखाई ॥ याकानाम गोशृंगग्राहिकान्यायहैइति ॥ इसप्रकार पूर्वउक्तअनेकप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै आत्माको नित्यता तथानिर्विकारताकेसिद्धहूए तुमारेकूं शोककरणाउचितनहींहै याप्रकारकाउपसंहार श्रीभगवान् करे है (तस्मादेवं) इत्यादिकअर्द्धश्लोककरिकै ॥ हेअर्जुन यहजोपूर्व हमनैं तुमारेप्रति नित्यनिर्विकारआत्माकास्वरूप कथनकरयाहै ॥ ताआत्माकेस्वरूपकासाक्षात्कारहीं शोककेकारणरूपअज्ञानका निवर्त्तकहै ॥ ऐसेआत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तहूए तुमारेकूं सोशोककरणा उचितनहींहै ॥ कारणकेनिवृत्तहूए ताकेकार्यकीभी अवश्यकरिकैनिवृत्तिहोवैहै ॥ तात्पर्य यह ॥ ऐसेनिर्विकारनित्यआत्माकूं नजाणिकरिकै जोतूं पूर्वशोककरताभयाहैं सो तुमारेकूंयुक्तथा ॥ परंतु अबी हमारेउपदेशतैं आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजानिकरिकै तुमारेकूं शोककरणा उचितनहींहैं ॥ तहांश्रुति ॥ तरतिशोकमात्मवित् ॥ अर्थयह ॥ आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंजानणेहारा विद्वान्पुरुष सर्वशोकोंतैंरहितहोवैहैइति ॥ २५ ॥ * ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे आत्मा जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहै याकारणतैं तूं शोककरणेकूंयोग्यनहींहै यहवार्त्ता भ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गवान्नैं अर्जुनकेप्रति कथनकरी ॥ अब ताआत्माविषे जन्ममरणादिकविकारकूंअंगीकारकरिकैभी तूं शोककरणे
कूंयोग्यनहींहै याअर्थकूं श्रीभगवान् दोश्लोककरिकै प्रतिपादनकरेहै ॥ तहां आत्मा विज्ञानस्वरूपहै तथाक्षणक्षणवि
ष विनाशकूंप्राप्तहोवैहै याप्रकारकाआत्मा सौगत मानेहैंइति ॥ और यहस्थूलदेहहीं आत्माहै ॥ सोस्थूलदेहरूपआ
त्मा स्थिरहूआभी क्षणक्षणविषेपरिणामकूंप्राप्तहोवैहै तथाजन्मकूंप्राप्तहोवैहै तथानाशकूंप्राप्तहोवैहै तथाप्रत्यक्षप्रमा
णकरिकैसिद्धहै ॥ याप्रकारकाआत्मा लोकायतिक मानेहैंइति ॥ और आत्मा देहतैंभिन्नहूआभी देहकेसाथिहीं ज
न्मेहै तथादेहकेसाथिहीं नाशहोवैहै ॥ याप्रकारकाआत्मा कोईकदूसरे मानेहैंइति ॥ और सृष्टिकेआदिकालविषे जै
से आकाशकाउत्पत्तिहोवैहै ॥ तैसे आत्माकीभीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और देहोंकेभेदहूएभी सोआत्मा कल्पपर्यंत स्थिर
रहेहै ॥ इसकल्पकेअंतविषे सोआत्मानाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकाआत्मा कोईदूसरे मानेहैं इति ॥ और आत्मा
नित्यहै सोनित्यहींआत्मा जन्मकूं तथामरणकूं प्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकाआत्मा तार्किक मानेहैं ॥ तिनतार्किकोंकाय
हअभिप्रायहै ॥ अपूर्वदेहइंद्रियादिकोंकेसंबंधकानाम जन्महै ॥ और पूर्वदेहइंद्रियादिकोंकेसंबंधकीनिवृत्तिकानाम
मरणहै ॥ यहजन्ममरणदोनों धर्मअधर्मकरिकैजन्यहैं ॥ यातैं ताधर्मअधर्मकाआधाररूपजोनित्यवस्तुहै तानित्यवस्तु
केहीं यहजन्ममरण मुख्यहैं ॥ और शरीरादिकअनित्यवस्तुविषे जोधर्मअधर्मकीआधारतामानिये तौं ताआश्रयके
नाशतैं ताधर्मअधर्मकाभीनाशहोवैंगा ॥ यातैं करेहूएकर्मोकी फलकेभोगतैंविनाहींनिवृत्तिरूप कृतहानिदोष तथान
करेहूएकर्मोकाफलभोगरूप अकृताभ्यागमदोष यादोनोंदोषोंकीप्राप्तिहोवैगी ॥ यातैं अनित्यवस्तुविषे ताधर्मअध

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्मकीआधारतासंभवैनहीं ॥ यातैं शरीरादिकअनित्यवस्तुके तेजन्ममरण मुख्यनहींहै किंतु गौणहैं ॥ याप्रकारकाआत्मा तार्किक मानेहैं ॥ और कोईकशास्त्रवालेतौं यहमानेहैं ॥ जैसे श्रोत्ररूपनित्यआकाशका कर्णशष्कुलीरूपउपाधिकेजन्मतैं जन्महोवैहै ॥ और ताकर्णशष्कुलीरूपउपाधिकेनाशतैं नाशहोवैहै ॥ तेजन्ममरणदोनों औपाधिकहोणेतैं अमुख्यहैं ॥ तैसे नित्यआत्माकाभी देहरूपउपाधिकेजन्मतैं जन्महोवैहै ॥ तथा देहरूपउपाधिकेमरणतैं मरणहोवैहै ॥ तेजन्ममरणरूपदोनों औपाधिकहोणेतैं अमुख्यहैं मुख्यनहींइति ॥ इसप्रकारकेईकवादी आत्माकूं अनित्यमानेहैं ॥ और केईकवादी ताआत्माकूं नित्यमानेहैं ॥ तहां आत्मा अनित्यहै यापक्षविषेभी श्रीभगवान् आत्माकेशोककानिषेधकरेहै

192

अथचैनंनित्यजातंनित्यंवामन्यसेमृतं ॥ तथापित्वंमहाबाहोनैवंशोचितुमर्हसि ॥ २६ ॥

अथ । च । एनं । नित्यजातं । नित्यं । वा । मन्यसे । मृतं । तथापि । त्वं । महाबाहो । न । एवं । शोचितुं । अर्हसि । इतिपदच्छेदः

अनित्यपक्षविषे भी जोतूं इसआत्माकूं नित्यहींजन्म्याहूआ तथा नित्यहीं मर्‌याहूआ मानताहोवैं तथापि हेमहाबाहोअर्जुन तूं इसप्रकारका शोककरणेकूं नहीं योग्यहैं ॥ २६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहआत्मादेव अत्यंतदुर्बोधहै ॥ यातैं वारंवार ताआत्माकेश्रवणहूएभी ताआत्माकेनिश्चयकरणेकी असामर्थ्यतातैं पूर्वकथनकरेहूएहमारेपक्षका नहींअंगीकारकरिकै जोतूं किसोदूसरेपक्षकाअंगीकारकरताहोवैं ॥ तादूसरेपक्षविषेभी आत्मा अनित्यहै याअनित्यपक्षकूंआश्रयणकरिकै जोतूं इसआत्मादेवकूं नित्यहीं जन्म्याहूआ

॥ ८९ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तथा नित्यहीं मऱ्याहूआ मानताहोवैं ॥ तहां विज्ञानरूपआत्मा क्षणिकहै याक्षणिकपक्षविषेतौं नित्य याशब्दका प्र
तिक्षण यहअर्थकरणा ॥ अर्थात् आत्माकूं क्षणक्षणविषे जोतूं जन्म्याहूआ तथामऱ्याहूआ मानताहोवैंइति ॥ और
ताक्षणिकपक्षतैंभिन्न दूसरेपक्षौंविषेतौं तानित्यशब्दका आवश्यकहोणेतैं नियत यहअर्थकरणा ॥ अर्थात् यहदेवदत्तना
मापुरुष जन्म्याहै तथायहदेवदत्तनामा पुरुष मऱ्याहै याप्रकारकी लौकिकप्रतीतिकेवशतैं नियमकरिकै जोतूं आ
त्माका जन्ममरण कल्पनाकरताहोवैं ॥ तथापि हेमहाबाहोअर्जुन (अहोबतमहत्पापंकर्त्तुंव्यवसितावयं) याप्रकारके
शोककरणेकूं तूंयोग्यनहींहैं ॥ काहेतैं जैसे भीष्मद्रोणादिकआत्मा नित्यहींजन्ममरणवालेहैं ॥ तैसे तूंआपभी नित्य
हींजन्ममरणवालाहैं ॥ ईहां [हेमहाबाहो] यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकाउपहाससूचनकऱ्या ॥ जैसे या
लोकविषे जोकोईपुरुष किसीनिकृष्टकर्मकूंकरेहै ॥ तिसकालविषे तापुरुषकेमातापितादिकवृद्धपुरुष तापुरुषकेप्रति तूं
हमारेकुलविषेबहुतसुपुत्रउत्पन्नहूआहैं याप्रकारकावचनकहेहैं ॥ सोवचन तापुरुषकेउपहासकूंहींसूचनकरेहै ॥ तैसे
अत्यंतबहिर्मुखपुरुषोंनैं अंगीकारकऱ्याजोआत्माकाअनित्यपणाहै ॥ ताअनित्यपणेकूं सोअर्जुन अंगीकारकरताभया
॥ ताकालविषे श्रीभगवान्नैं (हेमहाबाहो) यहअर्जुनकासंबोधनदियाहै ॥ यातैं (हेमहाबाहो) यासंबोधनकरिकै
भगवान्नैं अर्जुनकाउपहाससूचनकऱ्याहैइति ॥ अथवा (हेमहाबाहो) यासंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जु
नऊपरि आपणोकृपा सूचनकरी ॥ अर्थात् सर्वपुरुषोंविषेश्रेष्ठ जोतूं अर्जुनहै तिसतुमारेविषे आत्मा अनित्यहै याप्रका
रकीकुदृष्टि संभवतानहींइति ॥ तहां विज्ञानरूपआत्मा क्षणिकहै इसपक्षविषे तथायहस्थूलदेहहीं आत्माहै यापक्षविषे

193

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तथादेहकेसाथिहीं आत्मा जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै यापक्षविषे दूसरेजन्मकातौंअभावहींहै ॥ यातैं इनतीनोंपक्षों विषे पापकाभय संभवतानहीं ॥ और पापकेभयकरिकैहीं तूं शोककूंकरताहैं ॥ इनतानोंपक्षोंविषेभी आत्मा क्षणिक है यापक्षविषेतौं दृष्टदुःखभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जिसबांधवोंकेनाशकेदर्शनतैं सोदृष्टदुःखहोवैहै ॥ सोबांधवोंकेनाश कादर्शन ताक्षणिकआत्माविषेसंभवताहींनहीं ॥ यहक्षणिकपक्षविषे दूसरेपक्षोतैंअधिकताहै ॥ और ताक्षणिकपक्षतेभि न्न दूसरेपक्षोंविषेतौं दृष्टदुःख तथाताद्दष्टदुःखजन्यशोक संभवहोइसकेहै ॥ याअर्थकेजनावणेवासतैहीं श्रीभगवान्नैं (एवं) यहशब्दकथनकऱ्याहै ॥ अर्थात् तापक्षविषे दृष्टदुःखजन्यशोककेसंभवहूएभी अदृष्टदुःखजन्यशोककरणा सर्वप्र कारतैं तुमारेकूं उचितनहींहैइति ॥ २६ ॥* ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वउक्तीनपक्षोंविषे यद्यपि शोककरणा उ चितनहींहै ॥ तथापि जिसपक्षविषे सृष्टिकेआदिकालतैंलैके प्रलयपर्यंत आत्मा स्थिररहेहै ॥ तथा जिसतार्किकके पक्षविषे आत्मा सर्वदा नित्यहै ॥ तिनदोनोंपक्षोंविषे दृष्टदुःखतथाअदृष्टदुःख यहदोनोंप्रकारकादुःख संभवैहै ॥ यातैं ता दृष्टअदृष्टदुःखकेभयकरिकै मैं शोककरताहूं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् द्वितीयश्लोककरिकै ताकाउत्तरकहेहै

जातस्यहिध्रुवोमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच॥तस्मादपरिहार्येऽर्थेनत्वंशोचितुमर्हसि ॥ २७ ॥

जातस्य । हि । ध्रुवः । मृत्युः । ध्रुवं । जन्म । मृतस्य । च । तस्मात् । अपरिहार्ये । अर्थे । न । त्वं । शोचितुं । अर्हसि । इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जिसकारणतैं जन्मकूंप्राप्तहूएआत्माका अवश्यकरिकै मृत्युहोवैहै तथा मरणकूंप्राप्तहूएका अवश्यकरिकै जन्महो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैहै तिसकारणतैंनिवृत्तंकरणेकूंअशक्य जन्ममरणरूपअर्थविषे तूं शोककरणेकूं नहीं योग्यहैं ॥ २७ ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ पूर्वजन्मोंविषेकरयेजेपुण्यपापरूपकर्महैं ॥ तिनकर्मोकेवशतैं प्राप्तभयाहैशरीरइंद्रियादिकोंकासंबंधरूपज
न्मजिसकूं ऐसाजोस्थिरस्वभाववालायहआत्माहै ॥ ताआत्माका तिनप्रारब्धकर्मोकेनाशतैंअनंतर तिनदेहइंद्रिया
दिकोंकेसंबंधकोनिवृत्तिरूपमरण अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ काहेतैं यालोकविषे जिनजिनपदार्थोंका कर्मकेवशतैंसंयो
गहोवैहै तिन तिनपदार्थोंकाअंतविषे अवश्यकरिकैवियोगहोवैहै ॥ और जिसआत्माका सोमरणहोवैहै ॥ तिसआ
त्माका पूर्वशरीरविषेकरयेहूएपुण्यपापकर्मोकेफलभोगणेवासतै अवश्यकरिकै जन्महोवैहै ॥ ईहां यद्यपि मृत्युकूंप्राप्त
हूएका अवश्यकरिकै जन्महोवैहै याप्रकारकेनियमका जीवन्मुक्तपुरुषविषे व्यभिचारहोवैहै ॥ काहेतैं जीवन्मुक्तपुरुष
का मृत्युतोंहोवैहै ॥ परंतु ताजीवन्मुक्तपुरुषका पुनःजन्महोवैनहीं ॥ तथापि संचितकर्मवालेपुरुषका मरणतैंअनंतर
अवश्यकरिकै जन्महोवैहै ॥ याअर्थविषे श्रीभगवान्का तात्पर्यहै ॥ जीवन्मुक्तपुरुषकेज्ञानरूपअग्निकरिकै सर्वसंचि
तकर्म भस्महोजावैहैं ॥ यातैं ताजीवन्मुक्तपुरुषकूं मरणतैंअनंतर पुनःजन्मकीप्राप्तिहोवैनहींइति ॥ तिसकारणतैं निवृ
त्तकरणेकूंअशक्य ऐसाजोयहजन्ममरणरूपअर्थहै ताअर्थविषे तूंविद्वान् शोककरणेकूंयोग्यनहींहैं ॥ यहवार्त्ता श्रीभग
वान् (ऋतेपित्वांनभविष्यंतिसर्वे) यावचनकरिकै आगेकथनकरैंगे ॥ तात्पर्ययह ॥ जोकदाचित् तुमनैं युद्धकरिकैनहीं
हननकऱ्येहूए यहभीष्मद्रोणादिक जीवतेहींरहैं ॥ तौं तिनभीष्मद्रोणादिकोंकेसाथि युद्धकरणेविषे तुमारेकूं शोककर
णा उचितहोवै ॥ परंतु यहभीष्मद्रोणादिकतौं तुमारेयुद्धतैंविना आपेहीं कर्मकेक्षयतैं मृत्युकूंप्राप्तहोवैगे ॥ तिनभीष्म

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

द्रोणादिकोंके मृत्युकेनिवृत्तकरणेविषे तुमारासामर्थ्यहैनहीं ॥ यातैं तुमारेकूं दृष्टदुःखजन्यशोककरणा उचितनहींहै इति ॥ इसप्रकार अदृष्टदुःखजन्यशोककीशंकाविषेभी (तस्मादपरिहार्येर्थेनत्वंशोचितुमर्हसि) यहहींउत्तरजानिलेणा ॥ ईहां इसलोकविषे बांधवोंकेमरणजन्यजोदुःखहै ताकानाम दृष्टदुःखहै ॥ और परलोकविषे पापकर्मजन्यजोदुःखहै ताकानाम अदृष्टदुःखहै ॥ तहां अदृष्टदुःखजन्यशोकपक्षविषे (अपरिहार्येर्थे) यावचनका यहअर्थकरणा ॥ जैसे ब्राह्मणकूं अग्निहोत्रादिककर्म नियमसैंकरणेयोग्यहैं ॥ तैसे क्षत्रियराजाकूं युद्धरूपकर्मभी नियमतैंकरणेयोग्यहै ॥ और जैसें ज्योतिष्टोमादिकयज्ञोविषेपशुवोंकीहिंसाकरणेतैं दोषहोवैनहीं ॥ तैसेयुद्धविषेभी बांधवादिकोंकीहिंसाकरणेतैं दोषहोवैनहीं ॥ तहांगौतमस्मृति ॥ नदोषोहिंसायामाहवेइति ॥ अर्थयह ॥ युद्धविषे हिंसाकेकरणेतैंदोषहोवैनहींइति ॥ यहसर्ववार्त्ता (स्वधर्ममपिचावेक्ष्य) इसश्लोकविषे आगेस्पष्टहोवैंगी ॥ यातैं जैसे वेदनैं विधानकरयेजे अग्निहोत्रादिककर्महैं ॥ तिनविहितकर्मोकेनकरणेतैं ब्राह्मणकूं प्रत्यवायकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं तेअग्निहोत्रादिककर्म परित्यागकरणेकूं अशक्यहैं ॥ तैसे वेदविहितहोणेतैं परित्यागकरणेकूंअशक्य जोयहयुद्धरूपअर्थहै ॥ तायुद्धरूपअर्थविषे तूं अदृष्टदुःखकेभयकरिकै शोककरणेकूंयोग्यनहींहैइति ॥ किंवा ॥ अग्निहोत्रादिकनित्यकर्मोकीन्यांई जोकदाचित् युद्धकूंनित्यकर्मरूप नहींअंगीकारकरिये ॥ किंतु तायुद्धकूं केवल काम्यकर्मरूपहीं अंगीकारकरीये ॥ तहांयाज्ञवल्क्यस्मृति ॥ यआहवेषुयुद्ध्यंतेभूम्यर्थमपराङ्मुखाः ॥ अकूटैरायुधैर्यांतितेस्वर्गंयोगिनोयथा ॥ अर्थयह ॥ जेयोद्धापुरुष भूमिकेराजकीप्राप्तिवासतै युद्धविषे कपटतैंरहितशस्त्रोंकरिकैयुद्धकरेहैं ॥ तथा तायुद्धतैंविमुखहोतेनहीं ॥ तेयोद्धापुरुष योगीपुरुषों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कीन्यांई स्वर्गकूंप्राप्तहोवैहैंइति ॥ यावचनकरिकैयुद्धविषे काम्यकर्मरूपताप्रतीतहोवैहै ॥ तथा (हतोवाप्राप्स्यसिस्व
र्गंजित्वावाभोक्ष्यसेमहीं) याभगवान्केवचनतैंभी तायुद्धविषे काम्यकर्मरूपताहीं प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि प्रारंभकरया
हूआ काम्यकर्मभी अवश्यकरिकैसमाप्तकरणेयोग्यहोवैहै ॥ यातैं सोप्रारंभकरयाहूआ काम्यकर्मभी नित्यकर्मकेतुल्य
हींहोवैहै ॥ और यहयुद्धरूपकर्मभी पूर्वतुमनैं प्रारंभकरयाहै ॥ यातैं इसयुद्धविषे काम्यकर्मरूपताकेअंगोकारकीयेहूए
भी नित कर्मकीन्यांई यहयुद्धरूपकर्म तुमारेकूं परित्यागकरणेकूंअशक्यहैइति ॥ अथवा ॥ (अथचैनंनित्यजातं) यह
श्लोक तथा (जातस्यहिध्रुवोमृत्युः) यहश्लोक यहदोनोंश्लोक आत्माकेनित्यत्वपक्षविषेहींहैं ॥ आत्माकेनित्यत्वप
क्षविषे तेदोनोंश्लोकनहींहैं ॥ काहेतैं परमआस्तिकजोअर्जुनहै ॥ ताअर्जुनविषे वेदबाह्यनास्तिकोंकेमतकाअंगीकार
करणा संभवतानहीं ॥ यापक्षविषे ताश्लोककेअक्षरोंकी याप्रकारतैं योजनाकरणी ॥ जोवस्तु वास्तवतैंनित्यहूआहीं
देहइंद्रियादिकोंकेसंबंधकेवशतैं जन्म्येहूएकोन्यांई प्रतीतहोवै ताकानाम नित्यजातहै ॥ ऐसेवास्तवतैंनित्यहूएआत्मा
कूंभी जोतूं जन्म्याहूआमानैं ॥ तथा वास्तवतैंनित्यहूएआत्माकूंभी जोतूं मर्याहूआमानैं ॥ तौंभी तूं शोककरणेकूंयोग्य
नहींहैइति ॥ इसप्रकारकीप्रतिज्ञा प्रथमश्लोकविषेकरिकै ताप्रतिज्ञाकीसिद्धिकरणेवासतैं द्वितीयश्लोककरिकै हेतुक
हेहैं ॥ (जातस्यहिइति) यद्यपि नित्यवस्तुका जन्ममरणसंभवैनहीं ॥ तथापि उपाधिकेजन्ममरणतैं तानित्यवस्तुवि
षेभी जन्ममरणकाव्यवहार पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ दूसरासर्वअर्थस्पष्टहींहैंइति ॥ २७ ॥ * ॥ तहांपूर्वप्रसंगविषे सर्व
प्रकारतैं आत्माकेअशोच्यत्वका निरूपणकर्‍या ॥ अब आत्माकूंशोककाअविषयहूएभी भूतोंकासमुदायरूपइनभीष्मद्रो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

णादिकशरीरोंकाउद्देशकरिकै मैं शोककरताहूं याप्रकारकीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् ताशंकाकीनिवृत्तिकरेहै ॥

अव्यक्तादीनिभूतानिव्यक्तमध्यानिभारत॥अव्यक्तनिधनान्येवतत्रकापरिदेवना॥२८

अव्यक्तादीनि। भूतानि। व्यक्तमध्यानि। भारत। अव्यक्तनिधनानि। एव। तत्र। का। परिदेवना॥ २८ ॥इतिप०

हेभारत यहशरीर आदिकालविषेअव्यक्तहै तथामध्यकालविषेव्यक्तहैं तथामरणकाल विषेभीअव्यक्तहींहैं ऐसेशरीरोंविषे दुःखजन्यप्रलाप क्याकरणाहै ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभारत पृथिवीआदिकपंचभूतोंकासमुदायरूप जेयह भीष्मद्रोणादिकनामवाले स्थूलशरीरहैं ॥ तेयहशरीर आपणोउत्पत्तितैंपूर्व प्रतीतहोवैंनहीं ॥ और यहशरीर जन्मतैंअनंतर तथामरणतैंपूर्व मध्यकालविषे प्रतीतहोवैहैं ॥ और मरणतैंअनंतरभी यहशरीर प्रतीतहोवैंनहीं ॥ यातैं यहशरीर आदिकालविषे तथाअंतकालविषेतौं अव्यक्तहैं तथामध्यकालविषेव्यक्तहैं ॥ नहींप्रतीतहोणेकानाम अव्यक्तहै और प्रतीतहोणेकानाम व्यक्तहै ॥ जैसे स्वप्नकेपदार्थ तथाइंद्रजालकेपदार्थ तथारज्जुसर्पादिक आपणोप्रतीतिकेसमानकालविषेहींस्थितहोवैहैं ॥ आपणीप्रतीतितैं पूर्वउत्तरकालविषे स्थितहोवैंनहीं ॥ तैसे यहशरीरभी केवलमध्यकालविषेहीं प्रतीतहोवैहैं ॥ पूर्वउत्तरकालविषे प्रतीतहोवैंनहीं ॥ और आदावंतेचयन्नास्तिवर्त्तमानेपितत्तथा॥ अर्थयह ॥ जोपदार्थ आदिकालविषे तथाअंतकालविषे नहींहोवैहै ॥ सोपदार्थ मध्यकालविषेभी नहींहोवै ॥ जैसे स्वप्नादिकोंकेपदार्थ आदिअंतकालविषेनहींहैं ॥ यातैं म

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ध्यकालविषेभीनहींहैं ॥ तैसे यहशरीरभी आदिकालविषे तथाअंतकालविषे हैनहीं ॥ यातैं मध्यकालविषेभी नहींहैं ॥ ऐसेमिथ्यारूप अत्यंततुच्छशरीरोंविषे दुःखजन्यप्रलापकरणा तुमारेकूं उचितनहींहै ॥ जैसे स्वप्नविषे आपणेबांधवोंकूं तथाधनकूं प्राप्तहोइकै जाग्रतअवस्थाविषे तिनबांधवधनादिकोंकेनाशकरिकै कोईमूढपुरुषभी शोककरतानहीं ॥ तैसै याअनित्यभीष्मद्रोणादिकशरीरोंकाउद्देशकरिकै तुमारेकूं शोककरणायोग्यनहींहैइति ॥ अथवा ॥ भूतशब्दकरिकै आकाशादिकपंचमहाभूतोंकाग्रहणकरणा ॥ तापक्षविषे याश्लोककेपदोंको इसप्रकार योजनाकरणी ॥ अव्याकृतनामा जोअविद्याउपहित चैतन्यहै ताकानाम अव्यक्तहै ॥ सोअव्यक्तहैपूर्वअवस्था जिनआकाशादिकभूतोंकोतिनआकाशादिकभूतोंकानाम अव्यक्तादिहै ॥ तथा नामरूपकरिकैप्रगटरूपहैंस्थितिअवस्था जिनआकाशादिकभूतोंकी तिनआकाशादिकभूतोंकानाम व्यक्तमध्यहै ॥ और जैसे घटशरावादिककार्योंका मृत्तिकारूपउपादानकारणविषे लयहोवैहै ॥ तैसे अव्यक्तरूपआपणेकारणविषे निधन क्याप्रलयहैजिनआकाशादिकभूतोंका तिनआकाशादिकभूतोंकानाम अव्यक्तनिधनहै ॥ तहांश्रुति ॥ तद्वेदंतर्ह्यव्याकृतमासीत्तन्नामरूपाभ्यामेवव्याक्रियतइति ॥ अर्थयह ॥ यहआकाशादिकप्रपंच आपणीउत्पत्तितैंपूर्व अव्याकृतरूपहोताभया ॥ सोअव्याकृतरूपप्रपंच सृष्टिकालविषे नामरूपकरिकैप्रगटहोताभयाइति ॥ इत्यादिकश्रुति मायाउपहितचैतन्यरूपअव्यक्तकूंहीं आकाशादिकसर्वप्रपंचकाउपादानरूप तथाआधाररूपकथनकरेहैं ॥ और ताउपादानरूपअव्यक्तकूं याआकाशादिकप्रपंचकेलयकीस्थानरूपतातौं अर्थतैंहींसिद्धहोवैहै ॥ काहेतैं कार्यका आपणेउपादानकारणविषेहीं लयदेखणेमैंआवैहै ॥ उपादानकारणकूंछोडि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कै किसीअन्यपदार्थविषे कार्यकालयहोवैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ अज्ञानकरिककौल्पतहोणेतैं अत्यंततुच्छ जेयहआकाशादिकपंचभूतहैं ॥ तिनभूतोंकाउद्देशकरिकैभी जबी तुमारेकूं शोककरणा उचितनहींभया ॥ तबी तिन आकाशादिकभूतोंकाकार्यरूप जेयह भीष्मद्रोणादिकशरीरहैं तिनशरीरोंकाउद्देशकरिके शोककरणाउचितनहींहै याकेविषेक्याकहणाहैइति ॥ अथवा ॥ आकाशादिकपंचभूत तथातिनोंकेकार्यशरीरादिक आपणेअव्यक्तरूपकरिकै सर्वदा विद्यमानहैं ॥ किसीभीकालविषे तिनोंकानाशहोवैनहीं ॥ यातैं तिनोंकाउद्देशकरिकैप्रलापकरणा तुमारेकूंउ चितनहींहै ॥ ईहां (हेभारत) यासंबोधनकरिकै भगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ तूं शुद्धवंशविषेउत्पन्न हूआहैं ॥ यातैं तूं शास्त्रकेअर्थकूंनिश्चयकरणेयोग्यहैं ॥ ताशास्त्रकेअर्थकूं तूं क्यूंनहींनिश्चयकरताइति ॥ २८॥ ※ ॥ शं का ॥ हेभगवन् यालोकविषे शास्त्रकेअर्थकूंजानणेहारे बहुतविद्वान्पुरुषभी शोककरतेहूए देखणेविषेआवतेहैं ॥ यातैं तूंविद्वान्होइकै शोक किसवासतैकरताहैं याप्रकारकाउपालंभ वारंवार हमारेकूं आप किसवासतेदेतेहो ॥ किंवा शास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ वक्तुरेवहितज्ञाड्यंश्रोतायत्रनबुद्ध्यते ॥ अर्थयह ॥ जहां श्रोता बोधकूंनहींप्राप्तहोवै तहां वक्ता की हीं जडताजानणी इति ॥ यातैं तुमारेवचनकेअर्थकानहींबोधहोणाभी हमारेकूंदोषनहींहै ॥ समाधान ॥ हेअर्जुन जैसे तु मारेकूं आत्माकेअज्ञानतैंहीं शोकहूआहै ॥ तैसे अन्यभीविद्वानोंकूं जोशोकहोवैहै सोभी आत्माकेअज्ञानतेहीं होवैहै ॥ और जैसे अन्यपुरुषोंकूं आत्माकेप्रतिपादकशास्त्रोंकेअर्थका जोनहींबोधहूआहै सो आपणेअंतःकरणकेदोषतैं नहींहूआहै ॥ कोईवक्तापुरुषकेदोषतैंनहीं ॥ तैसे तुमारेकूं जोहमारेवचनकेअर्थकाबोधनहींभयाहै ॥ सोभीआपणेअंतःकरणकेदोषतैंन

200

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हींभयाहै ॥ याकेविषे कोईहमारादोषनहींहै ॥ यातैं तुमारे पूर्वउक्तदोनोंदोष संभवतेनहीं ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकैश्री भगवान् आत्माकेदुर्विज्ञेयताकूं निरूपणकरेहै ॥

आश्चर्यवत्पश्यतिकश्चिदेनमाश्चर्यवद्वदतितथैवचान्यः ॥ आ श्चर्यवच्चैनमन्यःशृणोतिश्रुत्वाप्येनंवेदनचैवकश्चित् ॥ २९ ॥

आश्चर्यवत्। पश्यति। कश्चित्। एनं। आश्चर्यवत्। वदति। तथा। एव। च। अन्यः। आश्चर्यवत्। च। एनं। अन्यः। शृणोति। श्रुत्वा। अपि। एनं। वेद। न। च। एव। कश्चित् ॥ २९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन कोईकपुरुष इसआत्माकूं आश्चर्यवत् देखेंताहै तथा अन्यकोईपुरुष इसआत्माकूंआश्चर्यवत् हीं कथनकरेहै तथा अन्यकोईपुरुष इसआत्माकूं आश्चर्यवत् श्रवणकरेहै तथा कोईकपुरुष इसआत्माकूं श्रवणकरिकै भी नहीं जानेहै ॥ २९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ (एनं) यापदकरिकैकथनकरयाजो आत्मारूपकर्महै ॥ तथा (पश्यति) यापदकरिकैकथनकरीजादर्शनरूपक्रियाहै ॥ तथा (कश्चित्) यापदकरिकैकथनकरयाजो अधिकारीपुरुषरूपकर्त्ताहै ॥ यातीनोंकाहीं (आश्चर्यवत्) यह विशेषणहै ॥ तहां प्रथम आत्मारूपकर्मविषे आश्चर्यवत्रूपता निरूपणकरेहैं ॥ हेअर्जुन यहआत्मादेव आश्चर्यवत् है अर्थात् अद्भुतपदार्थकेसमानहै ॥ तथा अविद्याकरिकैकल्पित नानाप्रकारकेविरुद्धधर्मवालाहूआ प्रतीतहोवैहै ॥ या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कारणतैं यहआत्मादेव वास्तवतैंसर्वदाविद्यमानहूआभी अविद्यमानहूएकीन्यांई प्रतातहोवैहै ॥ तथा यह आत्मादेव वास्तवतैंस्वप्रकाशचैतन्यरूपहूआभी जडकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ तथा यहआत्मादेव वास्तवतैंआनंदरूपहूआभी दुःखीहूएकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ तथा यहआत्मादेव वास्तवतैंसर्वविकारोंतैंरहितहूअभी विकारवान्कीन्यांई प्रतोतहोवैहै ॥ तथा यह आत्मादेव वास्तवतैंनित्यहूआभी अनित्यकीन्यांई प्रतीतहोवैहै तथा यह आत्मादेव वास्तवतैंप्रकाशमान्हूआभी अप्रकाशमान्कीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ तथा यहआत्मादेव वास्तवतैंब्रह्मतैंअभिन्नहूआभी भिन्नहूएकीन्यांई प्रतोतहोवैहै ॥ तथा यह आत्मादेव वास्तवतैंसर्वदामुक्तहूआभी बद्धहूएकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ तथा यह आत्मादेव वास्तवतैंअद्वितीयरूपहूआभी सद्वितीयकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकीआश्चर्यवत्रूपता आत्माविषेहै ॥ ऐसेआश्चर्यवत्आत्माकूं शमदमादिकसाधनसंपन्न तथाअंत्यशरीरवाला कोईकपुरुषहीं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं अविद्यारचितसर्वद्वैतप्रपंचकानिषेधकरिकै परमात्माकेस्वरूपमात्रकूंविषयकरणेहारी तथा महावाक्यरूपवेदांतकरिकैजन्य तथासर्वपुण्यकर्मोकाफलरूप ऐसीअंतःकरणकीवृत्तिविषे साक्षात्कारकरेहै ॥ अब दर्शनरूपक्रियाविषे आश्चर्यवत्रूपता निरूपणकरेहैं ॥ (पश्यति) याशब्दकाअर्थरूप जाआत्माकादर्शनरूपक्रिय है ॥ सादर्शनरूपक्रियाभी आश्चर्यवत्है ॥ काहेतैं जोअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञान स्वरूपतैंमिथ्यारूपहूआभी सत्याआत्माका अभिव्यंजकहै ॥ तथा जोज्ञान अविद्याकाकार्यरूपहूआभी ताअविद्याकूंनाशकरेहै ॥ तथा जोज्ञान अविद्यारूपकारणकूंनाशकरताहूआ ताअविद्याकाकार्यहोणेतैं आपणेकूंभी नाशकरेहै ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकीआ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्चर्यवत्रूपता ताज्ञानरूपदर्शनविषेहैइति ॥ अब तादर्शनरूपक्रियाके विद्वान्रूपकर्त्ताविषे आश्चर्यवत्रूपता निरूपणकरेहैं ॥ (कश्चित्) याशब्दकरिकैकथनकस्याजोआत्मसाक्षात्कारवान्पुरुषहै ॥ सोविद्वान्पुरुषभी आश्चर्यवत्है ॥ काहेतैं यहविद्वान्पुरुष आत्मसाक्षात्कारकरिकै अविद्यातैं तथाअविद्याकेकार्यतैं रहितहूआभी प्रारब्धकर्मकीप्रबलतातैं अज्ञानीपुरुषकीन्यांई व्यवहारकरेहै ॥ तथा यहविद्वान्पुरुष सर्वदा समाधिविषेस्थितहूआभी व्युत्थानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा यहविद्वान्पुरुष व्युत्थानकूंप्राप्तहूआभी पुनःसमाधिकूंअनुभवकरेहै ॥ इसतैंआदलैके अनेकप्रकारकोआश्चर्यवत्रूपता तादविद्वान्पुरुषविषेहैइति ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जोआत्मा तथाजिसआत्माकाज्ञान तथाजिसआत्माकेजानणेहारापुरुष यहतीनों आश्चर्यरूपहैं ॥ तिसपरमदुर्विज्ञेयआत्माकूं तूं विनाहींप्रयत्नतैं किसप्रकारजानिसकैगा ॥ किंतु प्रयत्नतैंविना ताआत्माकाजानणा अंत्यतकठिनहैइति ॥ इसप्रकार उपदेशकरणेहारेब्रह्मवेत्तापुरुषकेअभावतैंभी आत्मा दुर्विज्ञेयहै ॥ काहेतैं जोविद्वान्पुरुष आप आत्माकूं अपरोक्षजानेहै ॥ सोविद्वान्पुरुषहीं दूसरेअधिकारीपुरुषकेप्रति तिसआत्माकाउपदेशकरिसकेहै ॥ और जोपुरुष आपहीं आत्माकूंनहींजानता ॥ सोअज्ञानीपुरुष दूसरेकिसीकेप्रति आत्माकाउपदेशकरिसकैनहीं ॥ और जोविद्वान्पुरुष आत्माकूं अपरोक्षजानेहै ॥ सोविद्वान्पुरुष विशेषकरिकैतौं समाधियुक्तहींहोवैहै यातैं सोसमाधिविषेजुड्याहूआब्रह्मवेत्तापुरुष दूसरेअधिकारीपुरुषोंकेप्रति किसप्रकार आत्माकाउपदेशकरैंगा ॥ किंतु नहींकरैंगा ॥ जिसकारणतैं चित्तकीबाह्यवृत्तितैंविना उपदेशकरणासंभवतानहीं ॥ और जिसब्रह्मवेत्तापुरुषकाचित्त तासमाधितैंव्युत्थानकूंप्राप्तहूआहै ॥ सोब्रह्मवेत्तापुरुष यद्यपि अधिकारी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जनोंकेप्रति आत्माकेउपदेशकरणेविषे समर्थहै ॥ तथापि सोब्रह्मवेत्तापुरुष दूसरेअधिकारीपुरुषोंकूं जानणाकठन है ॥ और जोकदाचित् यहअधिकारीपुरुष जिसोकिसीप्रकारकरिकै ताब्रह्मवेत्तापुरुषकूंजानैंभी तौंभी सोब्रह्मवेत्तापुरुष लाभ पूजा ख्याति आदिकप्रयोजनकोअपेक्षाकरैनहीं ॥ याते सोब्रह्मवेत्तापुरुष ताअधिकारीपुरुषकेप्रति आत्माकाउपदेश नहींकरेगा ॥ और सोब्रह्मवेत्तापुरुष जोकदाचित् जिसोकिसीप्रकारतैं कृपामात्रकरिकै ताअधिकारीपुरुषकेप्रति आत्माकाउपदेशकरैभी ॥ तौंभी ऐसाकृपालुब्रह्मवेत्तापुरुष ईश्वरकीन्यांई अत्यंतदुर्लभहै ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कहेहैं (आश्चर्यवद्वदतितथैवचान्यःइति) हेअर्जुन इसआत्मादेवकूं अन्यपुरुष आश्चर्यवत् कथनकरेहै ॥ ईहां (अन्यः) याशब्दकरिकै सर्वअज्ञानीजनोंतैं विलक्षणपुरुषकाग्रहणकरणा ॥ कोईआत्माकेदेखणेहारेपुरुषतैं भिन्नपुरुषकाग्रहणनहींकरणा ॥ काहेतैं जोपुरुष जिसवस्तुकूंजानेहै ॥ सोपुरुषहीं तिसवस्तुका कथनकरेहै ॥ तिसवस्तुकेज्ञानतैंविना तिसवस्तुका कथनसंभवैनहीं ॥ यातैं आत्माकेजानणेहारेपुरुषतैंभिन्नपुरुषका जोअन्यशब्दकरिकैग्रहणकरीये तौंवदतोव्याघातदोषकीप्राप्तिहोवैगीइति ॥ ईहांभी (एनं) याशब्दकरिकैकथनकऱ्याजोआत्मारूपकर्महै ॥ तथा (वदति) याशब्दकरिकैकथनकरीजा वदनरूपक्रियाहै ॥ तथा (अन्यः) याशब्दकरिकैकथनकऱ्याजो तावदनरूपक्रियाकाकर्ताहै ॥ यातीनोंकाहीं आश्चर्यवत् यहविशेषणजानणा ॥ तहां आत्मारूपकर्मविषे तथाविद्वान्पुरुषरूपकर्त्ताविषे आश्चर्यवत्रूपता इसीश्लोकविषे पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ सो ईहांभीजानिलेणी ॥ अब वदनक्रियाविषे आश्चर्यवत्रूपता निरूपणकरेहैं ॥ हेअर्जुन सर्वशब्दोंकाअवाच्यजो

204

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आत्मादेवहै ॥ ताआत्मादेवकाजोकथनहै सोकथनभीआश्चर्यवत्है ॥ तहांश्रुति ॥ यतोवाचोनिवर्त्ततेअप्राप्यमनसासह ॥ अर्थयह ॥ मनसहितवाणी जिसआत्माकूंनप्राप्तहोइकै जिसआत्मातैंनिवृत्तहोइआवैहैइति ॥ तात्पर्ययह ॥ अविद्याअं तःकरणादिकविशिष्टअर्थविषेहैशक्तिजिनोंकी तथाभागत्यागलक्षणाकरिकैकल्पितहैसंबंधजिनोंका ऐसेजे तत् त्वं आदिकशब्दहैं ॥ तिनशब्दोंकरिकै सर्वधर्मोंतैंरहितशुद्धआत्माका जोनिर्विकल्पकसाक्षात्काररूपप्रतिपादनहै सोअ त्यंतआश्चर्यरूपहै ॥ जिसकारणतैं लोकविषे किसीजातिगुणादिकधर्मोंकूंअंगीकारकरिकैहीं शब्द आपणेअर्थकूंबोध नकरैहै ॥ जातिगुणादिकधर्मोंतैंविना किसीभीअर्थकूं शब्द बोधनकरतानहींइति ॥ अथवा ॥ सुषुप्तपुरुषकेउठावणे हारेवचनकीन्यांई इनतत्त्वमसिआदिकवाक्योंनैं शक्तिरूपसंबंधतैंविनाहीं तथालक्षणारूपसंबंधतैंविनाहीं तथाअन्य किसीसंबंधतैंविनाहीं जोशुद्धात्माकाप्रतिपादनकरीताहै सो अत्यंतआश्चर्यवत्है ॥ जिसकारणतैं शब्दकासामर्थ्य कि सीपुरुषतैंभी चिंतनकर्याजावैनहीं ॥ शंका ॥ शक्तिलक्षणादिकसंबंधतैंविनाहीं सोशब्द जोकदाचित् आपणेअर्थका बोधनकरताहोवै ॥ तौं तिसशब्दतैं किसीदूसरेपदार्थकाभीबोधहोणाचाहीये ॥ ताशब्दकेसंबंधकाअभाव सर्वपदार्थों विषेतुल्यहींहै ॥ समाधान ॥ यहदोष लक्षणाअंगीकारपक्षविषेभी तुल्यहींहै ॥ काहेतैं शक्यअर्थकेसंबंधकानाम ल क्षणाहै ॥ साशक्यसंबंधरूपलक्षणाभी अनेकपदार्थोंविषेरहैहै ॥ यातैं तिनसर्वपदार्थोंकाबोधहोणाचाहीये ॥ जैसे गं गाविषेग्रामहै यावचनविषेस्थितजोगंगापदहै ॥ तागंगापदको तीरविषेलक्षणाहोवैहै ॥ तहां गंगापदकाशक्यअर्थ जोजलकाप्रवाहहै ॥ ताजलकेप्रवाहका जैसे तीरकेसाथि संयोगसंबंधहै तैसे ताजलविषेरहणेहारे मत्स्यनौकादिक

205

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनेकपदार्थोंकेसाथि संयोगसंबंधहै ॥ शंका ॥ यद्यपि शक्यअर्थकासंबंध अनेकपदार्थोंकेसाथिहोवैहै ॥ तथापि जि
सअर्थकेबोधकरावणेविषे वक्तापुरुषका तात्पर्यहोवैहै ॥ तिसीहींअर्थका ताशब्दतैंबोधहोवैहै ॥ तिसतैंअन्यअर्थकाबोध
होवैनहीं ॥ समाधान ॥ सोवक्तापुरुषकातात्पर्यभी सर्वश्रोतापुरुषोंकेप्रति तुल्यहींहै ॥ यातैं तिनसर्वश्रोतापुरुषोंकूं
तावक्ताकेतात्पर्यतैं तिसीअर्थकाबोधहोणाचाहीये ॥ सोऐसादेखणेविषेआवतानहीं ॥ शंका ॥ तिनसर्वश्रोतापुरुषों
विषें कोईएकश्रोताहीं तावक्तापुरुषकेतात्पर्यविशेषकूं निश्चयकरेहै ॥ तेसर्वश्रोतापुरुष तिसतात्पर्यकूंनिश्चयकरिस
कैनहीं ॥ समाधान ॥ यातुमारेकहणेतैंयहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ ताश्रोतापुरुषविषेस्थितजोकोईनिर्दोषत्वरूपविशेषधर्म
है ॥ सोधर्महीं तावक्तापुरुषकेतात्पर्यकानिश्चयकरावणेहाराहैइति ॥ सोतात्पर्यकानिश्चायक निर्दोषत्वरूपविशेषधर्म
हमारेमतविषेभी किसीतैंनिवृत्तकरयाजावैनहीं ॥ यातैं जिसशुद्धअंतःकरणवालेअधिकारीपुरुषकूं वक्ताकेतात्पर्यनिश्चय
पूर्वक भागत्यागलक्षणाकरिकै तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यकेअर्थकाबोध तुमोनैं अंगीकारकरीताहै ॥ तिसीशुद्धअं
तःकरणवालेअधिकारीपुरुषकूंहीं तत्त्वमसिआदिशब्दविशेष शक्तिलक्षणादिरूपसंबंधतैंविनाहीं अखंडचैतन्यवस्तु
कासाक्षात्कार उत्पन्नकरेहैं ॥ यातैं इसहमारे शक्तिलक्षणादिकसंबंधकेअनंगीकारपक्षविषे किंचित्मात्रभी दोषकी
प्राप्तिहोवैनहीं ॥ उलटा इसहमारेपक्षविषे यतोवाचोनिवर्त्तंते याश्रुतिकाअर्थभी संकोचतैंविनाहींसिद्धहोवैहै ॥ और
लक्षणाअंगीकारपक्षविषेतौं याश्रुतिका जिसआत्माकूंशक्तिवृत्तिकरिकैवचनबोधननहींकरेहैं याप्रकारकासंकोचकर
णाहोवैहैइति ॥ यहहींभगवान्काअभिप्राय वार्तिककारसुरेश्वराचार्यनैंभी ॥ अगृहीत्वैवसंबंधमभिधानाभिधेययोः ॥ हि

206

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्वानिद्रांप्रबुध्यंतेसुषुप्तेर्बोधिताःपरैः ॥ इत्यादिश्लोकोंकरिकै वर्णनकऱ्याहै ॥ तिनश्लोकोंकायहअभिप्रायहै ॥ शब्द कीअचिंत्यशक्तिहोवैहै ॥ यातैं जैसे सुषुप्तिकूंप्राप्तहूएपुरुषोंकूं ताकालविषे शब्द अर्थ यादोनोंके शक्तिलक्षणादिकसंबं धोंकाज्ञानहैनहीं ॥ तथापि तेसुषुप्तपुरुष अन्यपुरुषोनैं हेदेवदत्त इत्यादिकशब्दोंकरिकैबोधनकरयेहूए तासुषुप्तितैं जा ग्रतकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे यहशुद्धअंतःकरणवालेअधिकारीपुरुषभी शक्तिलक्षणादिकसंबंधकेज्ञानतैंविनाहीं तत्त्वमसि आदिकवाक्योंतैं अद्वितीयब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरेहैं ॥ इसतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकी आश्चर्यवत्रूपता तावदनरूप क्रियाविषेहैइति ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ वचनकाविषयआत्मा तथातावचनकावक्ताविद्वान्पुरुष तथासावचनरू पक्रिया यहतीनों अत्यंतआश्चर्यरूपहैं ॥ याकारणतैं सोआत्मादेव अत्यंतदुर्विज्ञेयहैइति ॥ अबश्रोतापुरुषकीदुर्ल भताकूं कथनकरिकैभो ताआत्माकीदुर्विज्ञेयतानिरूपणकरेहैं (आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोतिश्रुत्वाप्येनंवेदइति) हेअर्जु न आत्माकूंसाक्षात्कारकरणेहारा तथाआत्माकाकथनकरणेहारा जोमुक्तपुरुषहै ॥ तामुक्तपुरुषतैंभिन्नजोमुमुक्षुजनहै सोमुमुक्षुजन समिधपाणिहोइकै विधिपूर्वकब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै जोइसआत्माकूंश्रवणकरेहै अर्थात् सर्ववेदां तवाक्योंकेतात्पर्यकाविषयरूपकरिकै निश्चयकरेहै ॥ सोभी अत्यंतआश्चर्यवत्है ॥ और ताब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैंआ त्माकाश्रवणकरिकैभीमननंनिदिध्यासनकीपरिपक्वताकरिकै जोआत्माकासाक्षात्कारकरणाहै सोभी आश्चर्यवत्है ॥ सोसाक्षात्कारकीआश्चर्यरूपता (आश्चर्यवत्पश्यतिकश्चिदेनं) यावचनकरिकैपूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ और पूर्वकी न्यांई ईहांभी श्रवणकाविषयआत्मा तथा श्रवणरूपक्रिया तथाश्रवणकर्त्तापुरुष यातीनोंकाहीं आश्चर्यवत् यहविशे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

षणजानणा ॥ तहां आत्माविषे तथाश्रवणरूपक्रियाविषेतौं पूर्वउक्तआश्चर्यवत्रूपताहीं जानिलेणी ॥ और श्रवणक
र्त्तापुरुषविषेतौं यहआश्चर्यरूपताहै ॥ पूर्वअनेकजन्मोंविषे अनुष्ठानकऱ्येजेपुण्यकर्महैं ॥ तिनपुण्यकर्मोकरिकै निवृत्त
होइगयाहैपापरूपमल जिसकेमनका ॥ तथा गुरुशास्त्रकेवचनोंविषे अत्यंतहैश्रद्धाजिसकी ॥ ऐसेउत्तमअधिकारीपुरु
षोंकीजाइसलोकविषेदुर्लभताहै ॥ सादुर्लभताहीं ताश्रोतापुरुषविषे आश्चर्यरूपताहै ॥ यहवार्त्ता श्रीभगवान् आप
हीं (मनुष्याणांसहस्रेषुकश्चिद्यततिसिद्धये ॥ यततामपिसिद्धानांकश्चिन्मांवेत्तितत्त्वतःइति) याश्लोकविषेआगेकथनकरैं
गे ॥ तहांश्रुतिभी ॥ श्रवणायापिबहुभिर्योनलभ्यः शृण्वंतोपिबहवोयंनविदुः आश्चर्योवक्ताकुशलोऽस्यलब्धा आ
श्चर्योज्ञाताकुशलानुशिष्टःइति ॥ अर्थयह ॥ यहआत्मादेव बहुतपुरुषोंकूंतौं श्रवणवासतैभीनहींप्राप्तहोता ॥ और ब
हुतपुरुषतौं श्रवणकरतेहूएभी इसआत्माकूं जानिसकतेनहीं ॥ और इसआत्मादेवका वक्तापुरुषभी बहुतआश्चर्य
रूपहै ॥ और इसआत्मादेवकूंप्राप्तहोणेहारापुरुषभी बहुतकुशलहै ॥ और ब्रह्मवेत्ताकुशलगुरुकरिकैउपदेशकऱ्याहूआ
इसआत्माकेजाननेहाराविद्वान्पुरुषभीआश्चर्यरूपहैइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोअधिकारीपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमु
खतैं वेदांतशास्त्रका श्रवणमननिदिध्यासनकरैंगा ॥ सोअधिकारीपुरुष ताआत्माकूं अवश्यकरिकैसाक्षात्कारकरै
गा ॥ याकेविषेक्याआश्चर्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्उत्तरकहेहैं (नचैवकश्चित्इति) यावचनविषे
स्थितजोचकारहै ॥ सोचकार पूर्ववचनविषेस्थित एनं वेद यादोनोंकेअनुषंगवासतेहै ॥ पूर्ववचनविषेस्थितपदका
उत्तरवचनविषेसंबंधकरणेकानाम अनुषंगहैं ॥ यातैंयहअर्थासिद्धभया ॥ कोईकपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं श्रवणादिकों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कूंकरताहूआभी किसीप्रतिबंधकेवशतैं इसआत्माकूंजानिसकतानहीं ॥ जबीश्रवणादिकोंकूंकरताहूआभी कोईकपुरुष इसआत्माकूंनहीं जानिसकेहै ॥ तबी श्रवणादिकोंकूंनहींकरणेहारेपुरुष इसआत्माकूंनहींजानेहैं याकेविषेक्याकहणा है ॥ यहवार्त्ता वार्तिककारभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ कुतस्तज्ज्ञानमितिचेत्तद्धिबंधपरिक्षयात् ॥ अ सावपिचभूतोवाभावीवावर्त्ततेऽथवाइति ॥ अर्थयह ॥ सोआत्माकाज्ञान किसतैंप्राप्तहोवैहै ऐसीशिष्यकीशंकाकेहूए ॥ सोआत्माकाज्ञान प्रतिबंधकेनाशतैंप्राप्तहोवैहै ॥ सोप्रतिबंधभी भूतप्रतिबंध भावीप्रतिबंध वर्त्तमानप्रतिबंध यहती नप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां श्रवणादिकालविषे पूर्वदृष्टअनात्मपदार्थोंका वारंवार स्मरणहोणा याकानाम भूतप्रतिबंधहै ॥ और जन्मादिकोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोकोईप्रबलअदृष्टविशेषहै ताकानाम भाविप्रतिबंधहै ॥ और विषयासक्ति मंद बुद्धि कुतर्क विपरीतअर्थविषेदुराग्रह यहच्यारिप्रकारकावर्तमानप्रतिबंधहैइति ॥ यातीनोंप्रतिबंधोंविषे एकप्रति बंधभी जिसअधिकारीपुरुषविषेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष श्रवणादिकोंकूंकरताहूआभी आत्माकूंजानिसकैनहीं ॥ जैसे वामदेवकूं भावीप्रतिबंधकेवशतैं श्रवणादिकोंकरिकै तिसजन्मविषेज्ञानहूआनहीं ॥ किंतु दूसरेजन्मविषे माताकेउद रमै ताप्रतिबंधकेनाशहूएतैं तावामदेवकूं आत्मज्ञानकोप्राप्तिहूईहै ॥ यहवार्त्ता आत्मपुराणकेप्रथमअध्यायविषे हम विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ और ॥ ज्ञानमुत्पद्यतेपुंसांक्षयात्पापस्यकर्मणः ॥ यास्मृतिनैं पापकर्मरूपप्रतिबंधकेनाशतैं अनंतरहीं याअधिकारीपुरुषोंकूं ज्ञानकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ और तिनसर्वप्रतिबंधोंकानाशहोणा अत्यंतदुर्लभहै ॥ याकारणतैं यह आत्मादेव दुर्विज्ञेयहैइति ॥ ईहां (श्रुत्वाप्येनंवेदनचैवकश्चित्) यावचनका जोयहपूर्वउक्तअर्थ नहीं

209

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करिये ॥ किंतु इसआत्मादेवकूंश्रवणकरिकैभी कोईभीपुरुष जानिसकतानहीं याप्रकारकाजोअर्थकरीये ॥ तौं । आश्च
र्योज्ञाता कुशलानुशिष्टः ॥ याश्रुतिकेसाथि यागीताकेवचनकी एकवाक्यतासिद्धनहींहोवैंगी ॥ तथा ॥ यततामपिसिद्धा
नांकश्चिन्मांवेत्तितत्त्वतः ॥ याभगवान्केवचनकाभी विरोधहोवैंगाइति ॥ अथवा (नचैवकश्चित्) याअंत्यकेवचनका क
श्चित्एनंनपश्यति कश्चित्एनंनवदति कश्चित्एनंनशृणोति कश्चित्श्रुत्वापिएनंनवेद याप्रकारसर्वत्रसंबंधकरणा ॥ ता
करिकैयहपंचप्रकार सिद्धहोवैंहैं ॥ कोईकपुरुष इसआत्मादेवकूं केवलजानेहींहै कथनकरिसकैनहीं ॥ १ ॥ और कोईकपु
रुषतौं इसआत्मादेवकूं जानैभीहै तथाकथनभीकरेहै ॥ २ ॥ और कोईकपुरुषतौं वचनकूंश्रवणभीकरेहै तथातावच
नकेअर्थकूंभीजानेहै ॥ ३ ॥ और कोईपुरुष वचनकूंश्रवणकरिकैभीताकेअर्थकूंजानतानहीं ॥ ४ ॥ और कोईकपुरुष
तौं दर्शन कथन श्रवण इनसर्वतैंबहिर्भूतहोवैहै ॥ ५ ॥ तहां अविद्वान्पक्षविषे असंभावनाविपरीतभावनाकरिकैप्र
तिबद्धहोणेतैंहीं तादर्शनवदनश्रवणविषे आश्चर्यरूपताहै ॥ दूसरासर्वअर्थस्पष्टहैइति ॥ और किसोटीकाविषेतौं (आ
श्चर्यवत्पश्यति) याश्लोककायहअर्थकर्याहै ॥ पूर्वश्लोकविषेकथनकर्याजोभूतभौतिकप्रपंचहै ॥ ताप्रपंचकूं कोईकब्रह्म
वेत्तापुरुष आश्चर्यवत्देखेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ स्वप्नऐंद्रजालिकपदार्थोंकेतुल्यदेखेहैइति ॥ और अन्यविद्वान्पुरुष इस
प्रपंचकूं आश्चर्यवत्कथनकरेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सत्असत्तैंविलक्षण याप्रपंचकूं लोकअप्रसिद्धअनिर्वचनीयरूपकरि
कैकथनकरेहैइति ॥ और अन्यपुरुषइसप्रपंचकूं आश्चर्यवत्श्रवणकरेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अनात्मरूपकरिकैप्रसिद्धजोयह
प्रपंचहै ताप्रपंचविषे ॥ इमेलोकाइमेदेवाइमेवेदाइदंसर्वंयदयमात्मा ॥ इत्यादिकश्रुतिकरिकै जोप्रत्यक्आत्मरूपताका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रवणहै सोभी आश्चर्यरूपहैइति ॥ और कोईकपुरुषतौं इसप्रपंचकाश्रवणकरिके तथास्वप्नादिकदृष्टांतोंतैं कथनकरिकै तथासाक्षात्कारकरिकैभी वास्तवतैंजानतानहीं इति ॥ २९ ॥ * ॥ पूर्वश्लोकोंविषेकथनकऱ्याजो सर्वप्राणीयोंकेप्रति साधारणभ्रमकोनिवृत्तिकासाधनरूपविचार ताविचारकीअबीसमाप्तिकरैहैं ॥

211

देहीनित्यमवध्योयंदेहेसर्वस्यभारत ॥ तस्मात्सर्वाणिभूतानिनत्वंशोचितुमर्हसि ॥ ३० ॥

देही । नित्यं । अवध्यः । अयं । देहे । सर्वस्य । भारत । तस्मात् । सर्वाणि । भूतानि । न । त्वं । शोचितुं । अर्हसि । इतिपद०

हेभारत सर्वप्राणीयोंके देहकेनाशहूएभी यह देही आत्मा नाशहोवैनहीं यहवार्ता जिसकारणतैं नियतहै तिसकारणतैं तूं अर्जुन इनसर्व भूतोका शोककरणेकूं नहीं योग्यहैं ॥ ३० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ब्रह्मातैंआदिलैकेचीटीपर्यंत जितनैंकीप्राणीहैं ॥ तिनसर्वप्राणियोंके देहकेनाशहूएभी यहलिंग देहरूपउपाधिवालाआत्मा नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जैसे घटरूपउपाधियोंकेनाशहूएभी तिनघटोंविषेस्थितआकाश नाशहोवैनहीं ॥ तैसे तिनदेहोंकेनाशहूएभी यहआत्मादेव नाशहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं यहवार्त्ता नियमपूर्वकहै ॥ तिसकारणतैं भीष्मद्रोणादिकभावकूंप्राप्तहूए जेयह स्थूलसूक्ष्मरूप आकाशादिकसर्वभूतहैं तिनभूतोंकाउद्देशकरिकै तूं शोककरणेकूंयोग्यनहींहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ इसस्थूलशरीरकातौ अवश्यकरिकैनाशहोवैंगा ॥ तानाशकेनिवृत्तकरणेविषे कोईभी समर्थनहींहै ॥ याकारणतैं इसस्थूलशरीरकाशोककरणा तुमारेकूं उचितनहींहैं ॥ और सूक्ष्मलिंग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देहतौ आत्माकीन्यांई शस्त्रादिकोंकरिकै नाशहोतानहीं ॥ यातैं तालिंगदेहकाभी शोककरणा तुमारेकूंउचितनहींहैं ॥ यातैं स्थूलदेह लिंगदेह आत्मा यातोनोंकाशोककरणा संभवतानहीं इति ॥ ३० ॥ ※ ॥ इसप्रकार स्थूलशरीर तथासूक्षमशरीर तथातिनदोनोंशरीरोंकाकारणरूपअविद्या यातीनउपाधियोंकेअविवेककरिकै मिथ्यारूपसंसारविषे सत्यत्व तथाआत्मधर्मत्व आदिकोंकीप्रतीतिरूप तथासर्वप्राणीयोंकासाधारण जोअर्जुनकाभ्रमहै ॥ ताअर्जुनकेभ्रम कीनिवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान् ताअर्जुनकेप्रति स्थूल सूक्षम कारण यातीनउपाधियोंतैंभिन्नकरिकै आत्माका स्वरूप कथनकरताभया ॥ अबी युद्धरूपस्वधर्मविषे हिंसादिकोंकीबाहुल्यताकरिकै अधर्मत्वबुद्धिरूप तथाकरुणादि कदोषोंकरिकैजन्य ऐसाजो अर्जुनकाअसाधारणभ्रमहै ॥ ताअसाधारणभ्रमकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् ताअ र्जुनकेप्रति ताहिंसाप्रधानयुद्धविषेभी स्वधर्मताकरिकै अधर्मपणेकाअभाव कथनकरैहै ॥

212

स्वधर्ममपिचावेक्ष्यनविकंपितुमर्हसि।धर्म्याद्धियुद्धाच्छ्रेयोन्यत्क्षत्रियस्यनविद्यते३१

स्वधर्मं। अपि। च। अवेक्ष्य। नो।विकंपितुं। अर्हसि।धर्म्यात्। हि। युद्धात्।श्रेयः। अन्यत्। क्षत्रियस्य।न। विद्यते।इ०प०

हेअर्जुन आपणेक्षत्रियकेधर्मकूं देखिकैंरिकै भी तूं युद्धतैंचलायमानहोणेकूं नहीं योग्यहैं जिसकारणतैं क्षत्रियराजाकूं धर्मरूप युद्धतैं दूसरा श्रेयकासाधन नहीं विद्यमानहै ॥ ३१ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तरीतिसैं केवल परमार्थतत्त्वकाविचारकरिकैहीं तूं युद्धतैंनिवृत्तहोणेकूंयोग्यनहीं ॥ किंतु क्ष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्रियराजावोंकाजो युद्धतैंपीछेनहींहटणा याप्रकारका अपराङ्मुखत्वधर्महै ॥ ताअपराङ्मुखत्वरूपस्वधर्मकूं शास्त्र
तैंविचारकरिकैभी तूं तास्वधर्मरूपयुद्धतैं अधर्मत्वकीभ्रांतिकरिकै निवृत्तहोणेकूंयोग्यनहींहै ॥ यातैं (यद्यप्येतेनपश्यं
ति) इसवचनतैंआदिलैके (नरकेनियतंवासोभवति) इसवचनपर्यंत तिनसर्ववचनोंकरिकै जोतुमनैं युद्धविषे पापकी
कारणताकथनकरीथो ॥ तथा (कथंभीष्ममहंसंख्ये) इत्यादिकवचनोंकरिकै जोतुमनैं युद्धविषे गुरुवोंकेवधकरणेका
तथाब्राह्मणोंकेवधकरणेका निषेधकऱ्याथा ॥ सोयहसर्ववार्त्ता तुमनैं धर्मशास्त्रकेअविचारतैं कथनकरीथो ॥ काहेतैं जि
सकारणतैं अपराङ्मुखत्वरूपधर्मसहितजोयुद्धहै तायुद्धतैं क्षत्रियराजाकूं दूसराकोई श्रेयकासाधनहैनहीं ॥ किंतु य
हयुद्धहीं पृथिवीकेजयद्वारा प्रजाकारक्षण तथाब्राह्मणोंकीशुश्रूषा इत्यादिकक्षत्रियोंकेधर्मकानिर्वाहकरणेहाराहै ॥ या
तैं क्षत्रियराजावोंकूं सर्वधर्मोतैं सोयुद्धहीं श्रेष्ठधर्महैइति ॥ यहवार्ता पराशरऋषिनैंभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ क्षत्रि
योहिप्रजारक्षन्शस्त्रपाणिःप्रदंडवान् ॥ निर्जित्यपरसैन्यानिक्षितिंधर्मेणपालयेत् ॥ अर्थयह ॥ क्षत्रियराजा आपणेप्र
जाकारक्षणकरै ॥ तथा शस्त्रोकूंहस्तविषेधारणकरै ॥ तथा दुष्टजनोंकूंदंडदेवै तथा अन्यशत्रुवोंकेसैन्योंकूंजीतिकरिकै
धर्मकरिकैपृथिवीकापालनकरैइति ॥ यहवार्ता मनुभगवान्नैंभीकहीहै ॥ तहांश्लोकद्वयं ॥ समोत्तमाधमैराजाचाहूतः
पालयन्प्रजाः ॥ ननिवर्तेतसंग्रामात्क्षात्रंधर्ममनुस्मरन् ॥ १ ॥ संग्रामेष्वनिवर्त्तित्वंप्रजानांचैवपालनं ॥ शुश्रूषाब्राह्म
णानांचराज्ञःश्रेयस्करंपरं ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ आपणेप्रजावोंकापालनकरताहूआ यहक्षत्रियराजा आपणेसमानजा
तिवालेक्षत्रियोंनैं तथाउत्तमजातिवालेब्राह्मणोंनैं तथाअधमजातिवालेवैश्यादिकोंनैं संग्रामकरणेवासतैंबुलायाहूआ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आपणेक्षत्रियकेधर्मकूंस्मरणकरताहूआ तासंग्रामतैंनिवृत्तनहींहोवै ॥ १ ॥ और संग्रामतैंनवृत्तनहींहोणा तथाप्र
जाकापालनकरणा तथाब्राह्मणोंकोशुश्रूषाकरणी यहतीनोंधर्म राजाके परमश्रेयकेकरणेहारेहैं ॥ २ ॥ इत्यादिक
स्मृतिवचनोंतैं क्षत्रियराजाका युद्धहीं श्रेष्ठधर्मसिद्धहोवैहै ॥ ईहां यद्यपि युद्धतैंभिन्नदूसरेभीअनेकधर्म क्षत्रियके श्रेय
केसाधनरूपहैं ॥ यातैं युद्धतैंभिन्नदूसराकोईधर्म क्षत्रियकेश्रेयकासाधननहींहै ॥ याप्रकारकाकहणासंभवतानहीं ॥
तथापि क्षत्रियराजाकेसर्वधर्मोंविषे तायुद्धरूपधर्मकीश्रेष्ठताकहणेवासतैश्रीभगवान्नैं सोवचन कथनकऱ्याहै ॥ कोई
दूसरेधर्मोंकेनिषेधकरणेवासतै सोवचन भगवानैं नहींकह्या ॥ इतनैंकहणेकरिकै युद्धतैंभीअत्यंतश्रेष्ठ कोईदूसराध
र्महै यातैं ताधर्मकेकरणेवासतैं युद्धतैंनिवृत्तिसंभवहोइसकेहै याप्रकारकेशंकाकोभीनिवृत्तिकरी ॥ तथा (नचश्रेयोनु
पश्यामिहत्वास्वजनमाहवे) याप्रकारकेअर्जुनकेवचनकाभी खंडनकऱ्या इति ॥ ३१ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन्
यद्यपि क्षत्रियराजाकाधर्महोणेतैं सोयुद्ध अवश्यकरिकै हमारेकूं करणेयोग्यहै ॥ तथापि भीष्मद्रोणादिकगुरुवोंकेसा
थि सोयुद्धकरणा हमारेकूंउचितनहींहै ॥ जिसकारणतैं आपणेगुरुवोंकेसाथियुद्धकरणा अत्यंतनिंदितकर्महै ऐसी अर्जु
नकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

यदृच्छयाचोपपन्नंस्वर्गद्वारमपावृतं॥सुखिनःक्षत्रियाःपार्थलभंतेयुद्धमीदृशं ॥३२॥

यदृच्छया । च । उपपन्नं । स्वर्गद्वारं । अपावृतं । सुखिनः । क्षत्रियाः । पार्थ । लभंते । युद्धं । ईदृशं । इतिपदच्छेदः ॥

214

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेपार्थ प्रयत्नतैंविना हीं प्राप्तहूआ तथाप्रतिबंधतैंरहित स्वर्गकासाधनरूप इसप्रकारके
युद्धकूं जेक्षत्रियराजे प्राप्त होवैहैं तेक्षत्रिय सुखकूंहींप्राप्तहोवैहैं ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेपृथाकेपुत्रअर्जुन तुम हमारेसाथियुद्धकरो याप्रकारकीप्रार्थनारूपप्रयत्नतैंविनाहीं प्राप्तभयाजोयहयुद्धहै ॥ कैसाहैयहयुद्ध ॥ भीष्मद्रोणादिकवीरपुरुष प्रतिपक्षीहोइकैंजिसयुद्धकेकरणेहारेहैं ॥ तथा जोयुद्ध कीर्ति राज्यकीप्राप्ति इत्यादिकदृष्टफलोंकासाधनहै ॥ ऐसेयुद्धकूं जेक्षत्रियराजे प्राप्तहोवैहैं ॥ तेक्षत्रियराजे परमसुखकूंहींप्राप्तहोवैहैं ॥ काहेतैं तायुद्धकरिकै जोकदाचित् जयहोवैहै ॥ तौं विनाहींप्रयत्नतैं इसलोकविषे यशकी तथाराज्यको प्राप्तिहोवैहैं ॥ और जोकदाचित् तायुद्धतैं पराजयहोवैहै ॥ तौं अत्यंतशीघ्रहीं स्वर्गकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याहीअर्थकूंश्रीभगवान्कथन करेहै (स्वर्गद्वारमपावृतंइति) कैसाहैयहयुद्ध ॥ प्रतिबंधतैंरहित स्वर्गकेप्राप्तिकासाधनरूपहै अर्थात् व्यवधानतैंविनाहींस्वर्गकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ यद्यपि ज्योतिष्टोमादिकयज्ञभीस्वर्गकेप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ तथापि तेज्योतिष्टोमादिकयज्ञ स्वर्गरूपफलकीप्राप्तिविषे इसवर्त्तमानशरीरकेनाशकी तथाप्रतिबंधकेअभावकी अपेक्षाकरेहैं ॥ यातैं तेज्योतिष्टोमादिकयज्ञ चिरकालकेपोछेहीं तास्वर्गरूपफलकीप्राप्तिकरेहैं ॥ युद्धकीन्यांई शीघ्रहीं स्वर्गकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ ईहां (स्वर्गद्वारमपावृतं) इसवचनकरिकै भगवान्नैं जैसे श्येनयज्ञकेकरणेतैं प्रत्यवायहोवैहै तैसे युद्धकेकरणेतैंभी प्रत्यवायहोवैंगा याप्रकारकीअर्जुनकोशंका निवृत्तकरी ॥ तहां (श्येनेनाभिचरन्यजेत) इत्यादिकवचनोंकरिकै यद्यपि तेश्येनयज्ञादिकविधानकरेहैं ॥ तथापि तेश्येनयज्ञादिक आपणेफलकेदोषकरिकै दुष्टहैं ॥ काहेतैं तिनश्येनयज्ञादिकों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

काफलरूप जोशत्रुकामरणहैं ॥ सोशत्रुकामरणरूपफल (नहिंस्यात्सर्वाभूतानि ब्राह्मणंनहन्यात्) इत्यादिकशास्त्रकरि कैनिषिद्धहै ॥ यातैं सोशत्रुकाहननरूपफल प्रत्यवायकाजनकहै ॥ और ताश्येनयज्ञकेफलविषे कोईविधिवचनभीहैनहीं ॥ यातैं विधियुक्तअर्थविषे निषेधकाअवकाशहोवैनहीं याप्रकारकेन्यायकीभी तहांप्राप्तिहोवैनहीं ॥ औरयुद्धकाफल जोस्वर्गहै ॥ सोस्वर्ग किसोशास्त्रकरिकैनिषिद्धहैनहीं ॥ किंतु सोस्वर्ग शास्त्रकरिकैविहितहै ॥ यहवार्त्ता मनुभगवान्नैं भी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ आहवेषुमिथोन्योन्यंजिघांसंतोमहीक्षितः ॥ युद्ध्यमानाः परंशक्त्यास्वर्गंयांत्यपराङ्मुखाः ॥ अर्थयह ॥ युद्धविषे परस्पर हननकरणेकोइच्छावाले जेक्षत्रियराजेहैं ॥ तेक्षत्रियराजे यथाशक्तिपरिमाण परस्पर युद्धकरतेहूए तथातायुद्धतैंपोछेमुख नहींकरतेहूए स्वर्गकूंप्राप्तहोवैहैंइति ॥ किंवा ॥ जैसे (अग्निषोमीयंपशुमालभेत) यावचननैं विधानकरीजायज्ञविषेपशुकीहिंसा॥ताहिंसाकूं (नहिंस्यात्सर्वाभूतानि) यहनिषेध स्पर्शकरिसकैनहीं ॥ तैसे यहयुद्धभी शास्त्रकरिकैविधानकरयाहै ॥ यातैं तायुद्धकूंभी सोनिषेध स्पर्शकरिसकैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ (नहिंस्यात्सर्वाभूतानि) यहतौं सामान्यशास्त्रहै॥और (अग्निषोमीयंपशुमालभेत) यहविशेषशास्त्रहै ॥ तहां सामान्यशास्त्रकोअपेक्षाकरिकै विशेषशास्त्र बलवान्होवैहै ॥ यातैं ताविशेषशास्त्रकरिकै सामान्यशास्त्रका संकोचकरयाजावैहै ॥ यातैं शास्त्रविहितयुद्धयज्ञादिकोंतैंभिन्नस्थलविषे किसीभीप्राणीकीहिंसाकरणानहीं याप्रकार तासामान्यशास्त्रकासंकोचकरणा संभवैहै॥जोकदाचित् (नहिंस्यात्सर्वाभूतानि) यासामान्यशास्त्रकेअर्थका इसप्रकारकासंकोच नहींकरीये ॥ तौं (अग्निषोमीयंपशुमालभेत) इत्यादिकसर्ववचन व्यर्थहोवैंगे ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे अग्निषोमायपशुकीहिंस.

216

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शास्त्रविहितहोणेतैं प्रत्यवायकाजनकहोवैनहीं ॥ तैसे युद्धविषेस्थितहिंसाभी शास्त्रविहितहोणेतैं प्रत्यवायकाजनकहोवैं नहींइति ॥ और युद्धविषेभी भीष्मद्रोणादिकगुरुवोंकेहननकरिकै जोदोषकथनकऱ्याथा ॥ सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं यह भीष्मद्रोणादिक यद्यपि तुमारे गुरुहैं ॥ तथापि तेभीष्मद्रोणादिक आततायीहैं ॥ यातैं तिनोंकेहननकरणेतैं दोषहोवै नहीं ॥ यहवार्त्ता मनुभगवान्नेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ गुरुंवाबालवृद्धौवाब्राह्मणंवाबहुश्रुतं ॥ आततायिनमा यातंहन्यादेवाविचारयन् ॥ नाततायिवधेदोषोहंतुर्भवतिकश्चन ॥ अर्थयह ॥ आपणागुरुहोवै अथवा बालकहोवै अ थवा वृद्धहोवै अथवा शास्त्रवेत्ताब्राह्मणहोवै परंतु आततायिहोवै ॥ सोआततायिपुरुष जिसकालविषे आपणेसन्मुख प्राप्तहोवै ॥ तिसकालविषे यहबुद्धिमान्पुरुष विचारतैंविनाहीं आततायिपुरुषकूं हननकरै ॥ ताआततायिकेह ननकरणेतैं इसपुरुषकूं दोषकोप्राप्तिहोवैनहींइति ॥ आततायिकालक्षण प्रथमअध्यायविषेकथनकरिआयेहैं ॥ यातैं इनभीष्मद्रोणादिकोंकेहनन करिकै तुमारेकूं किंचित्मात्रभी दोषकोप्राप्तिहोवैंगीनहीं ॥ ईहां (सुखिनःक्षत्रियाः) याव चनकरिकै युद्धकर्त्तापुरुषकूं सुकखीप्राप्तिकथनकरी ॥ ताकरिकै (स्वजनंहिकथंहत्वासुखिनःस्याममाधव) अर्थयह आपणेबांधवोंकुं मारिकै मैं सुखकूंनहींप्राप्तहोवौंगा याअर्जुनकेवचनका खंडनकऱ्या इति ॥ ३२ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसपूरुषकूं जिसकर्मकेफलकीइच्छाहोवैहै ॥ सोपुरुषहीं तिसफलकोप्राप्तिवासतै तिसकर्मविषे प्रवृत्तहोवैहै फलकोइच्छातैंविना किसीकीभीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकविषेप्रसिद्धहै ॥ और हमारेकूं तायुद्धकेफलकीइ च्छाहैनहीं ॥ याकारणतैंहीं (नकांक्षेविजयंकृष्ण अपित्रैलोक्यराज्यस्य) याप्रकारकावचन पूर्वहम कथनकरि आयेहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यातैं फलकीइच्छातैंरहित हमारेकूं सोयुद्धकरणा उचितनहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताअर्जुनके प्रति तायुद्धकेनहींकरणेकरिकै दोषकीप्राप्तिकाकथनकरेहै ॥

अथचेत्त्वमिमंधर्म्यंसंग्रामंनकरिष्यसि॥ततःस्वधर्मंकीर्त्तिंचहित्वापापमवाप्स्यसि३३

अथ। चेत्[1]। त्वं[2]। इमं[3]। धर्म्यं[4]। संग्रामं[5]। न[6]। करिष्यसि[7]। ततः[8]। स्वधर्मं[9]। कीर्त्तिं[11]। च[10]। हित्वा[12]। पापं[13]। अवाप्स्यसि[14]। इतिप०॥

हेअर्जुन जोकदाचित् तूं इस धर्मरूप संग्रामकूं नहीं करैगा तौं तिससंग्रामकेनहींकरणेतैं तूं आपणेधर्मकूं तथा कीर्त्तिकूं परित्यागकरिकै पापकूं प्राप्तहोवैंगा ॥ ३३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ पूर्व युद्धकीकर्त्तव्यताकथनकरी ॥ तायुद्धकीकर्त्तव्यतारूपप्रथमपक्षकीअपेक्षाकरिकै युद्धकूंनहींकरणा यह दूसरापक्षहै ॥ तादूसरेपक्षकेबोधनकरणेवासतै इसश्लोककेआदिविषे (अथ) यहशब्दकथनकरयाहै ॥ तहां भीष्मद्रोणादिकवीरपुरुषहैंप्रतियोगीजिसके ऐसाजोयहसंग्रामहै ॥ सोयुद्धरूपसंग्राम हिंसादिकदोषोंतैंरहितहै यातैं धर्म्यरूपहै ॥ अथवा श्रेष्ठपुरुषोंकेधर्मतैंअविरुद्धहै यातैं धर्म्यरूपहै ॥ श्रेष्ठपुरुषोंकेधर्म मनुभगवान्नैं यहकहेहैं ॥ यहक्षत्रियराजा रणभूमिविषेयुद्धकरताहूआ कपटतैंरहितआयुधोंकरिकै शत्रुवोंकूंहननकरै ॥ तथा रथतैंविना समानपृथिवीविषेस्थितशत्रुकूंभी नहींहननकरै ॥ तथा नपुंसकशत्रुकूंभी नहींहननकरै ॥ तथा जोशत्रु मैंतुमाराहूं याप्रकारका वचनकहै तिसकूंभी नहींहननकरै ॥ तथा जोशत्रु निद्राविषेसोयाहोवै ॥ तथा जोशत्रु वस्त्रोंतैंरहितनग्नहोवै ॥ तथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जोशत्रु आयुधोंतैंरहितहोवै ॥ तथा जोदूसरेकेसाथि केवलयुद्धदेखणेवासतै आयाहोवै ॥ तथा जोपरीक्षाकरणेहाराहो वै ॥ तथा जोरोगीहोवै ॥ तथा जोपुरुष भययुक्तहोवै ॥ तथा जोपुरुष युद्धतैंपीछेभागाहोवै ॥ इत्यादिकशत्रुपुरुषोंकूं यहयोद्धापुरुष हननकरैनहीं ॥ इत्यादिक श्रेष्ठपुरुषोंकेधर्मोंका उल्लंघनकरिकै जोपुरुष युद्धकरेहै ॥ सोपुरुष तायुद्ध के स्वर्गादिकफलकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सोपुरुष केवल पापकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ और तूंअर्जुनतौं दुर्योधनादिकशत्रुवों नैं युद्धकरणेवासतैंबुलायाहूआभी जोसत्धर्मकरिकैयुक्तइसयुद्धरूपसंग्रामकूं नहींकरैंगा ॥ अर्थात् धर्मतैं अथवालोकतै भयभीतहूआ जोतूं इसयुद्धतैंपीछेफिरैंगा॥तौं (निर्जित्यपरसैन्यानिक्षितिंधर्मेणपालयेत्) इत्यादिकशास्त्रकरिकै विधान कर्‌येहूएयुद्धकेनहींकरणेतैं आपणेधर्मकात्यागकरिकै ॥ अर्थात् आपणेधर्मकानहींअनुष्ठानकरिकै तथायहअर्जुन साक्षात् महादेवादिकईश्वरोंकेसाथिभी युद्धकरताभयाहै यातैं यहअर्जुन महान्प्राक्रमवालाहै याप्रकारकीआपणीकोर्तिकाप रित्यागकरिकै (ननिवर्त्तेतसंग्रामात्) इत्यादिकशास्त्रकरिकैनिषिद्ध जोसंग्रामतैंनिवृत्तिरूपआचरणहै तानिषिद्धआ चरणजन्यपापकूंहीं तूं केवलप्राप्तहोवैगा ॥ किसीधर्मकूं अथवाकिसीकीर्त्तिकूं तूं प्राप्तहोवैंगानहींइति ॥ अथवा (स्व धर्मंहित्वापापमवाप्स्यसि) यावचनका यहदूसराअर्थकरणा ॥ पूर्वअनेकजन्मोंविषे तुमनैं एकठेकर्‌येजेपुण्यरूपधर्महैं तिनधर्मोंकापरित्यागकरिकै तूं केवल राजकृतपापकूंहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ तात्पर्ययह ॥ जोकदाचित् तूं इसयुद्धतैंपीछै फिरैंगा ॥ तौंभी यहदुर्योधनादिकदुष्ट अवश्यकरिकै तुमाराहननकरैंगे ॥ और इसयुद्धतैंपीछेहटिकरिकै जोतूं इनदु र्योधनादिकोंकेहस्ततैं मरैंगा ॥ तौं बहुतजन्मोंविषेएकठेकर्‌येहूए आपणेपुण्यकर्मोंकापरित्यागकरिकै इनदुर्योधनादि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कौनैंकरयेहूएपापकर्मोकूंहीं तूं प्राप्तहोवैगा ॥ सोऐसाकरणा तुमारेकूं उचितनहींहै ॥ यहवार्त्ता मनुभगवान्नैंभीकथन करीहै ॥ तहांश्लोक ॥ यस्तुभीतःपरावृत्तःसंग्रामेहन्यतेपरैः ॥ भर्त्तुर्यद्दुःकृतंकिंचित्तत्सर्वंप्रतिपद्यते ॥ १ ॥ यच्चास्य सुकृतंकिंचिदमुत्रार्थमुपार्जितं ॥ भर्त्तातत्सर्वमादत्ते परावृत्तहतस्यतु ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ संग्रामविषे भयभीतहोइकै पीछेहट्याहूआ जोपुरुष शत्रुपुरुषोंनैं हननकरताहै ॥ सोपुरुष हननकरणेहारेपुरुषकेसर्वपापोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ १ ॥ और युद्धतैंपीछेफिरिकैहननकूंप्राप्तहूए तिसपुरुषनैं स्वर्गादिकोकीप्राप्तिवासतै जितनैंकीपुण्यकर्मकऱ्येथे ॥ तेसर्वपुण्यकर्म सोहननकरणेहारापुरुष लेजावेहै ॥ २ ॥ यहवार्त्ता याज्ञवल्क्यमुनिनैंभीकहीहै ॥ राजासुकृतमादत्तेहतानांविपलायिनां ॥ अर्थयह ॥ युद्धतैंपीछैफिरिकैहननकूंप्राप्तहूएजेयोद्धाहैं ॥ तिनयोद्धापुरुषोंके सर्वपुण्यकर्मोकूं सोहननकरणेहारा राजा लैजावैहैइति ॥ इतनैंकहणेकरिकै पूर्वअर्जुननैंजो (पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥ एतान्नहंतुमिच्छामिघ्नतोपिमधुसूदन) याप्रकारकेवचनकहेथे ॥ तिनसर्ववचनोंका खंडनकऱ्या इति ॥ ३३ ॥ ❋ ॥ इसप्रकार पूर्व श्लोकविषे युद्धकेपरित्यागकरणेकरिकै अर्जुनकूं कीर्तिरूपइष्टकी तथाधर्मरूपइष्टकी अप्राप्तिकथनकरी ॥ तथा पाप रूपअनिष्टकीप्राप्ति कथनकरी ॥ तहांपापरूपअनिष्टतौं बहुतकालतैंपिछै परलोकविषे दुःखरूपफलकीप्राप्तिकरेहै ॥ और शिष्टपुरुषोंनैं करीजोनिंदाहै सोनिंदारूपअनिष्टतौं अबीहीं दुःखरूपफलकीप्राप्तिकरेहै ॥ तथा बुद्धिमान्पुरुषोंनैं सोनिंदाजन्यदुःख सहनकरणेकूंभीअशक्यहै ॥ यहवार्त्ता श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कथनकरेहै ॥

अकीर्तिंचापिभूतानिकथयिष्यंतितेव्ययां ॥ संभावितस्यचाकीर्त्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अकीर्तिं। च। अपि। भूतानि। कथयिष्यंति। ते। अव्ययां। संभावितस्य। च। अकीर्तिः। मरणात्। अतिरिच्यते ॥ इतप०
हेअर्जुन तथा देवऋषिमनुष्य तुमारी दीर्घकालपर्यंत अकीर्त्तिकूं भी कथनकरैंगे
औरगुणवान्पुरुषकी अकीर्त्ति मरणतैंभी अधिकहै ॥ ३४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोतूं इसयुद्धतैंनिवृत्तहोवैंगा ॥ तौं देवता ऋषि मनुष्य इसतैंआदिलैके जितनैंकीभूतप्राणीहैं ॥ ते सर्वप्राणी परस्पर कथाप्रसंगविषे यहअर्जुन धर्मात्मानहींहै तथाशूरवीरभीनहींहै याप्रकारकी तुमारीअकीर्त्तिकूं दीर्घकालपर्यंत कथनकरैंगे ॥ ईहां (च अपि) यहदोनोपद पूर्वकथनकरेहूए कीर्तिकेनाशका तथाधर्मकेनाशका समुच्चय करावणेवासतैंहैं ॥ ताकरिकैयहअर्थसिद्धहोवैंहै ॥ इसयुद्धतैंनिवृत्तहोणेकरिकै तूं कीर्तिधर्मदोनोंकापरित्यागकरिकै केवल पापकूंहींप्राप्तनहींहोवैंगा ॥ किंतु अकीर्त्तिकूंभी तूं प्राप्तहोवैंगा ॥ तथा केवल तूंहीं ताअकीर्तिकूंप्राप्तनहींहोवैंगा ॥ किंतु दूसरे देवऋषिमनुष्यादिकप्राणीभी तुमारीअकीर्त्तिकूं कथनकरैंगेइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् युद्धविषे आपणेमरणेकासंदेहरहेहै ॥ यातैं तामरणकेनिवृत्तकरणेवासतै आपणीअकीर्त्तिभी सहारणेकूंयोग्यहै ॥ जिसकारणतैं आपणेआत्माकीरक्षाकरणी अत्यंतअपेक्षितहै ॥ यहवार्ता महाभारतकेशांतिपर्वविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ सान्नादानेनभेदेनसमस्तैरुतवापृथक् ॥ विजेतुंप्रयतेतारीन्नयुद्ध्येतकदाचन ॥ १ ॥ अनित्योविजयोयस्मात्दृश्यतेयुद्ध्यमानयोः ॥ पराजयश्चसंग्रामेतस्माद्युद्धंविवर्ज्जयेत् ॥ २ ॥ त्रयाणामप्युपायानांपूर्वोक्तानामसंभवे ॥ तथायुद्ध्येतसंयत्तोविजयेतरिपून्यथा ॥ ३ ॥ अर्थयह ॥ साम दान भेद यातोनउपायोंकरिकै अथवा एकएकउपायकरिकै यहबुद्धिमान्पुरुष

221

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आपणेशत्रुवोंकेजयकरणेवासतै प्रयत्नकरै ॥ १ ॥ जिसकारणतैं युद्धकरणेहारेपुरुषोंका संग्रामविषे नियमतैंजय देखणेविषेआवतानहीं ॥ किंतु बहुतस्थलविषे पराजयहीं देखणेमेआवताहै ॥ तिसकारणतैं यहबुद्धिमान्पुरुष युद्धकूंनहीं करै ॥ २ ॥ और पूर्वकथनकऱ्येजे साम दान भेद यहतीनउपाय ॥ तिनतीनोंउपायोंका जहां असंभवहोवै ॥ तहां यहपुरुष ऐसासावधानहोइकै युद्धकरै जिसकरिकै आपणेशत्रुवोंकूंजयकरिलेवै ॥ ३ ॥ यातैं मरणतैंभयकूंप्राप्तहूएपुरुषकूं अकीर्तिजन्यदुःखक्याकरैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताशंकाकीनिवृत्तिकरेहै (संभावितस्यइति) हेअर्जुन यहपुरुष अत्यंतधर्मात्माहै तथाअत्यंतशूरवीरहै इत्यादिकअनेकगुणोंकरिकै जिसपुरुषकूं लोकोनैं श्रेष्ठमान्याहै ॥ तिसपुरुषकानाम संभावितहै ॥ ऐसेसंभावितपुरुषकी जालोकविषेअकीर्तिहै ॥ साअकीर्ति मरणतैंभीअधिकहै॥यातैं तिसअकीर्तितैं तासंभावितपुरुषका मरणहींश्रेष्ठहै ॥और तूं अर्जुनभो धर्मनिष्ठाकरिकैतथामहादेवादिकईश्वरोंकेसाथियुद्धकरिकै लोकविषे बहुतसंभावितहै ॥ यातैं तूं अकीर्तिजन्यदुःखकूं नहींसहनकरिसकैंगा ॥ और पूर्वकथनकऱ्याजोशांतिपर्वकावचनहै ॥ सोवचनतौं अर्थशास्त्ररूपहै ॥ यातैं (ननिवर्तेतसंग्रामात्) इत्यादिकधर्मशास्त्रतैं सोवचन दुर्बलहै इति ॥ ३४ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् यालोकविषे शत्रुमित्रभावतैंरहित जेउदासीनपुरुषहैं ॥ तेउदासीनपुरुष हमारेकूं युद्धतैंविमुखहूआदेखिकै हमारीनिंदाकरैंगे सोकरतेरहैं ॥ परंतु यहभाष्मद्रोणादिकजेमहारथीपुरुषहैं ॥ तेभीष्मद्रोणादिकपुरुष हमारेकूं युद्धतैंनिवृत्तहूआदेखिकै यहअर्जुन बहुतकरुणायुक्तहैयाप्रकार हमारीस्तुतिहींकरैंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भयाद्रणादुपरतंमंस्यंतेत्वांमहारथाः ॥ येषांचत्वंबहुमतोभूत्वायास्यसिलाघवं ॥ ३५ ॥

भयात्। रणात्। उपरतं। मंस्यंते। त्वां। महारथाः। येषां। च। त्वं। बहुमतः। भूत्वा। यास्यसि। लाघवं। इतिप०

हेअर्जुन यहभीष्मद्रोणादिकमहारथीतुमारेकूं भयतैं रणतैं उपरामहूआ मानैंगे तथा जिनभीष्मद्रोणादिकोंकूं तूं बहुतगुणयुक्तहोताभया ऐसाहोइकै तिनभीष्मादिकोंकेहीं लाघवताकूं प्राप्तहोवैंगा ॥ ३५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोतूं युद्धकूंनहींकरैंगा ॥ तौ यहभीष्मद्रोणादिकमहारथी यहअर्जुन कर्णादिकशूरवीरोंकीभयतैंयुद्धतैंनिवृत्तहूआहै कोईदयाकरिकैयुद्धतैंनिवृत्तनहींभयाहै याप्रकार तुमारेकूं मानैंगे ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेभीष्मद्रोणादिक पूर्व हमारेकूं धर्म प्राक्रम धैर्य इत्यादिकगुणोंकरिकै श्रेष्ठमानतेहैं ॥ यातैं अबी तेभीष्मद्रोणादिक हमारेकूं कर्णादिकशूरवीरोंकीभयकरिकैयुद्धतैंनिवृतिहूआकैमेमानैंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै (येषांचत्वंबहुमतःइति)हेअर्जुन जिनभीष्मद्रोणादिकोंनैं पूर्व तुमारेकूं यहअर्जुन धर्म प्राक्रम धैर्य इत्यादिकअनेकगुणोंकरिकैयुक्तहै याप्रकारमान्याहै ॥ तेभीष्मद्रोणादिकमहारथीहीं अबीतुमारेकूं कर्णादिकोंकीभयकरिकै युद्धतैंउपरामहूआमानैंगे ॥ यातैं जिनभीष्मद्रोणादिकोंनैं पूर्व तुमारेकूं श्रेष्ठकरिकैमान्याथा ॥ अबी इसयुद्धतैंनिवृत्तहोइकै तूं तिनभीष्मद्रोणादिकोंकेहीं अनादररूपलाघवकूंप्राप्तहोवैंगा इति ॥३५॥ ※ ॥शंका ॥ हेभगवन् हमारेकूं युद्धतैंनिवृत्तिहूआदेखिकै यहभीष्मद्रोणादिकमहारथी हमारेकूं श्रेष्ठमतमानैं ॥ परंतु हमारीयुद्धतैंनिवृत्तिहोणी हमारे दुर्योधनादिकशत्रुवोंकूं बहुतअनुकुलहै ॥ यातैं तेदुर्योधनादिकशत्रुतौं हमारेकूं युद्धतैंनिवृत्तहूआदेखिकै श्रेष्ठकरिकै मानैंगे ॥ ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अवाच्यवादांश्चबहून्वदिष्यंतितवाहिताः॥निंदंतस्तवसामर्थ्यंततोदुःखतरंनुकिं ॥३६॥

अवाच्यवादान्। च। बहून्। वदिष्यंति। तव। अहिताः। निंदंतः। तव। सामर्थ्यं। ततः। दुःखतरं। नु किं। इतिपद०

हेअर्जुन तुमारे दुर्योधनादिकेशत्रु भी तुमारे सामर्थ्यकूं निंदतेहूए नहींकहणेयोग्य अने कप्रकारकेवचनोंकूं कथनकरेंगे तिसतेंपरे अधिकदुःख क्याहै ॥ ३६ ॥ इतिपदार्थः ॥

टीका ॥ हेअर्जुन जबीतूं इसयुद्धतैंनिवृत्तहोवैंगा ॥ तबी सर्वलोकविषेप्रसिद्धजोतुमारासामर्थ्यहै तासामर्थ्यकीनिंदाकरतेहूए यहदुर्योधनकर्णविकर्णादिकतुमारेशत्रुभी नहींकथनकरणेकूंयोग्यजे अनेकप्रकारकेधिक्कारशब्दहैं तिनशब्दोंकूंकथनकरेंगे ॥ शंका ॥ हेभगवन् भीष्मद्रोणादिकोंकेनाशहोणेकरिकै उत्पन्नहोणेहाराजो अत्यंतकष्टरूपदुःखहै तादुःखकूंनहींसहनकरताहूआ इसयुद्धतैंनिवृत्तहूआ मैंअर्जुन तिनशत्रुवोंनैंकरोहूईजाहमारेसामर्थ्यकीनिंदाहै तानिंदाजन्यदुःखकूं सहारिसकौंगा ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् उत्तरकहेहै (ततोदुःखतरंनुकिंइति) हेअर्जुन लोकनिंदातैंप्राप्तभयाजोदुःखहै तादुःखतैं कौंनअधिकदुःखहै ॥ किंतु तानिंदाजन्यदुःखतैंअधिक कोईभीदुःखनहींहै ॥ यातैं तानिंदाजन्यदुःखकूं तूं नहींसहारिसकैंगा इति ॥ ३६ ॥* ॥शंका॥ हेभगवन् जोमैं इसयुद्धविषे भीष्मद्रोणादिकगुरुवोंकूंहननकरौंगा ॥ तौं मध्यस्थपुरुष हमारीनिंदाकरेंगे ॥ ओर जोमैं इसयुद्धतैंनिवृत्तहोवौंगा ॥ तौं यह दुर्योधनादिकशत्रु हमारीनिंदाकरेंगे ॥ यातैं इसयुद्धकेकरणेपक्षविषे तथा युद्धकेनहींकरणेपक्षविषे तानिंदाजन्यदुः

224

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

खकीप्राप्तितुल्यहींहै ॥ ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् जयपक्षविषे तथापराजयपक्षविषे तुमारेकूं निश्चयक
रिकै लाभकोहींप्राप्तिहै यातैं युद्धकरणेवासतैहीं तुमारेकूं उठ्याचाहीये याप्रकारकावचन अर्जुनकेप्रति कथनकरेहै ॥

हतोवाप्राप्स्यसिस्वर्गंजित्वावाभोक्ष्यसेमहीं॥तस्मादुत्तिष्ठकौंतेययुद्धायकृतनिश्चयः॥

हतः३ । वा२ । प्राप्स्यसि१ । स्वर्ग४ । जित्वा५ । वा६ भोक्ष्यसे७ । महीं८ । तस्मात्९ । उत्तिष्ठ१० । कौंतेय११ । युद्धाय१२ । कृतनिश्चयः१३ । इतिप० ॥

हेकुंतीकेपुत्रअर्जुन जोकदाचित् तूं युद्धविषेमृत्युहोवैंगा तौं स्वर्गकूं प्राप्तहोवैंगा अथवा इनशत्रुवोंकूंजीति
कैतूं इसपृथिवीकूं भोगैंगा तिसकारणतैं निश्चययुक्तहोइकै तूं इसयुद्धवासतै उठिखडाहोउ ॥ इतिप० ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसयुद्धविषे जोकदाचित् तूं इनदुर्योधनादिकशत्रुवोंतैंमृत्युकूंप्राप्तहोवैंगा ॥ तौंतूं अवश्यकरिकै स्वर्गकूंप्राप्तहोवैंगा ॥ और जोकदाचित् तूं इनदुर्योधनादिकशत्रुवोंकूंजीतैंगा ॥ तौंतूं शत्रुरूपकंटकोंतैंरहित इसपृथिवीकेराज्यकूंभोगैंगा ॥ जिसकारणतैं पराजयपक्षविषे तथाजयपक्षविषे यादोनोंपक्षाविषे तुमारेकूं लाभकीहींप्राप्तिहै ॥ तिसकारणतैं कैतौंमैं इनदुर्योधनादिकशत्रुवोंकूंजीतौंगा कैतौंमैं मृत्युकूंप्राप्तहोवौंगा याप्रकारकादृढनिश्चयकरिकै तूं इसयुद्धकरणेवासतै उठिखडाहोउ ॥ इतनकहणेकरिकै अर्जुनके (नचैतद्विद्मःकतरन्नोगरीयः) इत्यादिकसर्ववचनों का खंडनकऱ्या इति ॥ ३७ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोकदाचित् मैं स्वर्गकीप्राप्तिवासतै इसयुद्धकूंकरौंगा ॥ तौं ज्योतिष्टोमादिकयज्ञोंकीन्यांई इसयुद्धकूं नित्यकर्मरूपता नहींसंभवैगी ॥ किंतु ॥ काम्यकर्मरूपताहोवैंगी ॥ और जोकदाचित् मैं इसपृथिवीकेराज्यकीप्राप्तिवासतै इसयुद्धकूंकरौंगा ॥ तौं तायुद्धकेविधानकरणेहारेशास्त्रकूं अर्थशास्त्ररू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पता प्राप्तहोवैंगी ॥ ताकरिकै तिसशास्त्रविषे धर्मशास्त्रकीअपेक्षाकरिकै दुर्बलतासिद्धहोवैंगी ॥ यातैं काम्यकर्मरूप युद्धकेनकरणेकरिकै हमारेकूं कैसेपापहोवैंगा किंतु नहींहोवैंगा ॥ तथा राज्यरूपदृष्टअर्थकीप्राप्तिकरणेहारे तिनगुरु ब्राह्मणोंकेहननरूपयुद्धविषे कैसेधर्मरूपताहोवैंगी किंतु नहींहोवैंगी ॥ यातैं (अथचेत्त्वमिमंधर्म्यं) यापूर्वश्लोककाअर्थ असंगतहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥

226

सुखदुःखेसमेकृत्वालाभालाभौजयाजयौ॥ततोयुद्धायय़ुज्यस्वनैवंपापमवाप्स्यसि३८

सुखदुःखे। समे। कृत्वा। लाभालाभौ। जयाजयौ। ततः। युद्धाय। युज्यस्व। नैं। एवं। पापं। अवाप्स्यसि॥इतिप०

हेअर्जुन सुखदुःखदोनोंकूं तथालाभअलाभदोनोंकूं तथाजयअजयदोनोंकूं समान करिकै तिसतैंअनंतर तूं युद्धकरणेवासतै त्यारहोउ इसप्रकारयुद्धकरताहूआतूं पापकूं नहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ ३८ ॥ इतिप० ॥

॥ टीका ॥ इष्टअनिष्टपदार्थोंकोप्राप्तिविषे जोरागद्वेषतैरहितहोणाहै याकानाम समताभावहै ॥ तहां सुखविषे तथा तासुखकेकारणरूपलाभविषे तथातालाभकेकारणरूपजयविषे रागकूंनकरिकै ॥ इसप्रकार दुःखविषे तथातादुःख केकारणरूपअलाभविषे तथाताअलाभकेकारणरूपअजयविषे द्वेषकूंनकरिकै ॥ तूं इसयुद्धकरणेवासतै त्यारहोउ ॥ इसप्रकार सुखकीकामनाकापरित्यागकरिकै तथादुःखकेनिवृत्तिकीकामनाकापरित्यागकरिकै केवल स्वधर्मबुद्धिकरिकै जो तू इसयुद्धकूंकरैंगा ॥ तौं इनगुरुब्राह्मणोंकेहननजन्यपापकूं तथा नित्यकर्मकेनहींकरणेजन्यपापकूं तूं प्राप्तहोवैंगानहीं ॥ ॥१०६॥

और जोपुरुष इसलोककेफलकी अथवा परलोककेफलकी कामनाकरिकै युद्धकूंकरैहै ॥ सोपुरुष गुरुब्राह्मणादिकोंकेनाश

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जन्यपापकूं अवश्यप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष तायुद्धकूंनहींकरैहै ॥ सोपुरुष तानित्यकर्मकेनकरणेजन्यपापकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं फलकीइच्छातैंविना केवल स्वधर्मजानिकै युद्धकेकरणेतैं यहपुरुष तादोनोंप्रकारकेपापकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और (हतोवाप्राप्स्यसिस्वर्गंजित्वावाभोक्ष्यसेमहीं) यावचनकरिकै जोहमनैं पूर्व युद्धकेफलकाकथनकर्‍याहै॥सो आनुषंगिकफलकाकथनकर्‍याहै ॥ यातैं तापूर्ववचनकाभीविरोधहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता आपस्तंबऋषिनैंभी कथनकरीहै ॥ तद्यथाऽऽम्रेफलार्थेनिर्मित्तेछायागंधइत्यनूत्पद्येते एवंधर्मंचर्यमणमर्थाअनूत्पद्यंते नोचेदनूत्पद्यंतेनधर्महानिर्भवतीति ॥ अर्थयह ॥ जैसे इसलोकविषे आम्रफलोंकीप्राप्तिवासतै लगायाहूआजोआम्रकावृक्षहै ॥ तावृक्षकी छाया तथासुगंध अवश्यकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ तहां छायासुगंधकोप्राप्ति तावृक्षका आनुषंगिकफलहै ॥ तैसेयहधर्म हमारेकूं अवश्यकरणेयोग्यहै याप्रकार स्वधर्मबुद्धिकरिकैकर्‍याहूआजोधर्महै॥ताधर्मकरिकै राज्यस्वर्गादिकअर्थभी अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ परंतु तेराज्यस्वर्गादिकपदार्थ ताधर्मका आनुषंगिकफलरूपहैं ॥ जोकदाचित् तेराज्यस्वर्गादिकअर्थनहींभीप्राप्तहोवैं ॥ तौंभी ताकरयेहूएधर्मकीहानिहोवैनहींइति ॥ यातैं युद्धकूंविधानकरणेहाराशास्त्रअर्थशास्त्ररूपनहींहै ॥ किंतु धर्मशास्त्ररूपहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं (पापमेवाश्रयेदस्मान्) इत्यादिकअर्जुनकेवचनोंकाखंडनकर्‍याइति ॥ ३८ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् स्वधर्मबुद्धिकरिकै युद्धकरणेहारेपुरुषकूंजोआपनैं पापकाअभाव कह्या सोसत्यहै ॥ तथापिहमारेप्रति युद्धकरणेकाउपदेशकरणा आपकूं उचितनहींहै ॥ काहेतैंपूर्वआपनैं (यएनंवेत्तिहंतारं कथंसपुरुषःपार्थ कंघातयतिहंतिकं) इत्यादिकवचनोंकरिकै विद्वान्पुरुषविषे सर्वकर्मोकानिषेधकथनकर्‍याहै॥ और अकर्त्ताअभोक्ताशुद्धस्वरूपमैंहूं तथा इसयुद्धकूंकरिकै मैंता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

केफलकूंभोगौंगा याप्रकारकाज्ञानभीसंभवतानहीं॥जिसकारणतैं अकर्तृत्वबुद्धिका तथाकर्तृत्वबुद्धिका परस्परविरोधहै॥ए कअधिकरणविषे एककालमैं तेदोनोंबुद्धिहोवैनहीं॥ और जैसे प्रकाश तथा अंधकार यादोनोंका समुच्चयहोवैनहीं॥ तैसे ज्ञान तथाकर्म यादोनोंकाभी समुच्चयहोवैनहीं॥ यहअर्जुनकाअभिप्राय (ज्यायसीचेत्) याश्लोकविषे आगेस्पष्टहोवैंगा॥ यातैं एकहीमैंअर्जुनकेप्रति ज्ञानकाउपदेश तथाकर्मकाउपदेश संभवतानहीं॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए॥ श्रीभगवान् विद्वत्अवस्थाके तथाअविद्वत्अवस्थाके भेदकरिकै एकहींपुरुषकेप्रति ज्ञानकाउपदेश तथाकर्मकाउपदेश संभवहोइसकै है याप्रकारकाउत्तरकहेहै॥

एषातेभिहितासांख्येबुद्धिर्योगेत्विमांशृणु॥बुद्ध्यायुक्तोययापार्थकर्मबंधंप्रहास्यसि ३९

एषा॥ते२। अभिहिता। सांख्येबुद्धिः। योगे।तु।इमां।शृणु।बुद्ध्या।युक्तः।यया। पार्थ। कर्मबंधं।प्रहास्यसि। इतिपद०॥

हे अर्जुन हमनैं तुमारेतांई यहपूर्वउक्त बुद्धि ब्रह्मविषे कथनकरी अबीकर्मयोगविषे इसवक्ष्यमाणबुद्धिकूं तूं श्रवणकर जिस बुद्धिकरिकै युक्तहू आतूं कर्मबंधकूं परित्यागकरैंगा॥ ३९॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ देहादिकसर्वउपाधियोंतैंभिन्नकरिकै परमात्माकावास्तवस्वरूप प्रतिपादनकरियेजिसकरिकै ताकानाम संख्यहै ऐसाउपनिषद्रूपशास्त्रहै॥ ताउपनिषद्कारिकै जोवस्तुप्रतिपादनकरिये तावस्तुकानाम सांख्यहै ऐसाजो वकावास्तवस्वरूपपरमात्मादेवहै॥ ऐसेसांख्यनामापरमात्मादेवविषे (नत्वेवाहंजातुनासं) इसश्लोकतैंआदिलैकै (स्वधर्ममपिचावेक्ष्य) इसश्लोकतैंपूर्व एकविंशति २१ श्लोकोंकरिकै ज्ञानरूपबुद्धि हमनैं तुमारेप्रति कथनकरी॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कैसीहैसाबुद्धि जन्ममरणादिकसर्वअनर्थोंकेनिवृत्तिकाकारणहै ॥ ऐसीआत्मज्ञानरूपबुद्धि जिसअधिकारीपुरुषकूं प्रा
प्तभईहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषकेप्रति कदाचित्भी हमनैं कर्मोंकेकर्त्तव्यताकथनकरीनहीं ॥ काहेतैं (तस्यकार्यंनविद्य
ते) यावचनकरिकै तिसविद्वान्पुरुषविषे सर्वकर्मोंकेकर्त्तव्यताकाअभाव आगे हमनैं कथनकरणाहै ॥ जो कदाचित्
अबीतौंमैं ताविद्वान्पुरुषविषे कर्मोंकोकर्त्तव्यताकाकथनकरौं ॥ और आगे ताविद्वान्पुरुषविषे सर्वकर्मोंकीकर्त्तव्यता
काअभावकथनकरौं ॥ तौं हमारेपूर्वउत्तरवचनोंका विरोधहोवैंगा ॥ यातैं विद्वान्पुरुषविषे कर्मोंकोकर्त्तव्यतामैं हमारा
तात्पर्यनहींहै किंतु हमारायहतात्पर्यहै ॥ इसप्रकार आत्माकेउपदेशकीयेहूएभी जोकदाचित् आपणेचित्तकेदोषतैं
तुमारेकूं साब्रह्मात्माकारबुद्धि नहींउत्पन्नहोवै ॥ तौं ताचित्तकेदोषकोनिवृत्तिकरिकै आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै
तुमारेकूं निष्कामकर्मयोगहीं अनुष्ठानकरणेयोग्यहै ॥ तिसकर्मयोगविषेकरणेयोग्यजा (सुखदुःखेसमेकृत्वा) याश्लो
कविषेकथनकरीहूई फलकीइच्छात्यागरूपबुद्धिहै ॥ ताबुद्धिकूं अबीमैं विस्तारकरिकैकथनकरताहूं ॥ तूं तिसबुद्धि
कूं श्रवणकर ॥ ईहां (गोगेतु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वकथनकरीहूईज्ञानरूपबुद्धिविषे
कर्मयोगविषयत्वकेअभावकूं सूचनकरेहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जिसअधिकारीपुरुषकाअंतःकरणशुद्धहूआहै ॥
ताअधिकारीपुरुषकेप्रतितौं आत्मज्ञानकाहीं उपदेशकरणायोग्यहै ॥ और जिसपुरुषकाअंतःकरण शुद्धनहींभयाहै॥
तापुरुषकेप्रतितौं कर्मकाहींउपदेशकरणायोग्यहै ॥ यातैं ज्ञान तथाकर्म यादोनोंकेसमुच्चयकोशंकाकरिकै विरोधकोप्रा
प्तिहोवैनहींइति ॥ अब फलकाकथनकरिकै ताकर्मयोगविषयकबुद्धिकीस्तुतिकरेहैं (बद्ध्यायुक्तोययाइति) जिसव्यव

229

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सायात्मकबुद्धिकरिकै तिननिष्कामकर्मोविषेजोड्याहूआ तूं कर्मजन्यअंतःकरणकीअशुद्धिरूपबंधकूं परित्यागकरैंगा ॥ ईहां यहतात्पर्यहै ॥ पापकर्मजन्यजो अंतःकरणकीअशुद्धिरूपज्ञानकाप्रतिबंधहै ॥ सोप्रतिबंधतौं धर्मरूपकर्मकरिकै हींनिवृत्तिहोवैहै ॥ दूसरेकिसीउपायकरिकै सोप्रतिबंधनिवृत्तहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति (धर्मेणपापमपनुदति) अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष निष्कामकर्मरूपधर्मकरिकै पापकूंनिवृत्तकरेहैइति ॥ और श्रवणमननादिरूपजोविचारहै ॥ सोविचारतौं पापकर्मरूपप्रतिबंधतैरहितपुरुषके असंभावनाविपरीतभावनारूपप्रतिबंधकूं निवृत्तकरेहै ॥ यातैं पापकर्मरूपप्रतिबंधकीनिवृत्तिकरणेवासतै सोश्रवणादिरूपविचार उपदेशक-याजावैनहीं ॥ और इदानींकालविषे तुमाराअंतःकरण अत्यंतमलिनहै ॥ यातैं अबीतुमनैं बहिरंगसाधनरूपकर्महीं करणेयोग्यहै ॥ इसकालविषे तुमारेमैं श्रवणादिकोंकीयोग्यताभी उत्पन्नभईनहीं ॥ तौं ज्ञानकीयोग्यता तुमारेविषे किसप्रकारहोवैंगी ॥ किंतु इसकालविषे ज्ञानकीयोग्यता तुमारेमैंहैनहीं ॥ यहहींवार्त्ता (कर्मण्येवाधिकारस्ते) याश्लोकविषे आगेकथनकरैंगे ॥ इतनैंकहणेकरिकै सांख्यबुद्धिके श्रवणादिरूपअंतरंगसाधनोंकूंछोडिकै भगवान्नैं अर्जुनकेप्रति कर्मरूपबहिरंगसाधन किसवासतैंउपदेशकरीतेहैं याप्रकारकोशंकाकाभीखंडनक-याइति ॥ ३९ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेनइति) याश्रुतिनैं विविदिषाकीप्राप्तिवासतै तथाज्ञानकीप्राप्तिवासतै यज्ञ ानतपादिककर्मोका विधानक-याहै ॥ तहां यज्ञदानादिककर्मोकरिकै साक्षात्तौं विविदिषाकी तथाज्ञानकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तावविविदिषाकी तथाज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याकारणतैं आपनैं

230

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हमारेप्रति कर्मोंकाअनुष्ठान विधानकरीताहै ॥ और श्रुतिनैंतौं कर्मकेफलकूं नाशवानकह्याहै ॥ तहांश्रुति (तद्यथेह कर्मचितोलोकःक्षीयते एवमेवामुत्रपुण्यचितोलोकःक्षीयते) अर्थयह ॥ जैसे इसलोकविषे कर्मकरिकैजन्यहोणेतैं य हगृहादिकपदार्थ नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे परलोकविषे पुण्यकर्मकरिकैजन्यहोणेतैं स्वर्गादिकपदार्थभी नाशकूंप्राप्त होवैहैंइति ॥ किंवा ॥ जैसे स्वर्गकोप्राप्तिवासतै कऱ्येहूएजे ज्योतिष्टोमादिकयज्ञहै ॥ तेयज्ञ काम्यकर्मरूपहींहोवैहैं ॥ तैसे ज्ञानकीप्राप्तिवासतै अथवा ज्ञानकीइच्छारूपविविदिषाकोप्राप्तिवासतै कऱ्येहूएजे यज्ञदानादिककर्महैं ॥ तेकर्म भी काम्यकर्मरूपहींहोवैंगे ॥ और जोजोकाम्यकर्महोवैहै ॥ सोसो सर्वअंगोंकोसंपूर्णतापूर्वक अनुष्ठानकऱ्याहूआहीं फलकाहेतुहोवैहै ॥ किंचित्अंगकोवैगुण्यताकरिकै सोकाम्यकर्म फलकोप्राप्तिकरैनहीं ॥ यातैं यत्किंचित्अंगोंकोन्यू नअधिकताकरिकै तिनयज्ञदानादिककर्मोंविषे वैगुण्यदोषकोप्राप्तिभो संभवैहै ॥ और (यज्ञेनदानेन) याश्रुतिनैं विधा नकऱ्येजेयज्ञदानादिककर्महैं ॥ तेसर्वकर्म एकपुरुषनैं आपणेशतवर्षआयुषकीसमाप्तिपर्यंतभो करणेकूंअशक्यहैं ॥ या तैं (कर्मबंधंप्रहास्यसि) यावचनकरिकै आपनैं कथनकऱ्याजोकर्मयोगकाफलहै ॥ ताफलकेप्राप्तिकोआशा हमारेकूं हो तीनहीं ॥ ऐसोअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥

नेहाभिक्रमनाशोस्तिप्रत्यवायोनविद्यते ॥स्वल्पमप्यस्यधर्मस्यत्रायतेमहतोभयात्४०

नाइह। अभिक्रमनाशःअस्तिाप्रत्यवायः। न। विद्यतेास्वल्पं।अपि।अस्य।धर्मस्य।त्रायते।महतः।भयात्। इतिप०॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन इसनिष्कामकर्मयोगविषे कर्मकेफलकानाश नहीं होवैहै तथाप्रत्यवायभी नहीं होवैहै तथा इस निष्कामधर्मका यत्किंचित्धर्म भी इसपुरुषकूं महान् भयतैं रक्षाकरैहै ॥ ४० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ यज्ञदानादिककर्मोनैं जिसफलकाप्रारंभकरीताहै ताफलकानाम अभिक्रमहै ॥ तहां (तद्यथेह) याश्रुतिवचनकरिकैकथनकर्याजो ताफलकानाशहै ॥ सोफलनाश इसनिष्कामकर्मरूपयोगविषे कदाचित्भी होवैनहीं ॥ काहेतैं (तद्यथेहकर्मचितो) याश्रुतिनैंतौं कर्मकरिकैप्राप्तलोककानाश कथनकर्याहै ॥ तहां लोकशब्द केवलभोग्यपदार्थोंकाहीं वाचकहै ॥ और निष्कामकर्मरूपयोगकाफलरूपजा चित्तकीशुद्धिहै ॥ साचित्तकीशुद्धि पापोंकाक्षयरूपहै ॥ यातैं ताचित्तकीशुद्धिरूपफलविषे तालोकशब्दकोअर्थरूपताहैनहीं ॥ याकारणतैं ताचित्तशुद्धिरूपफलका स्वर्गादिकोंकी न्यांई क्षयसंभवैनहीं ॥ किंवा ॥ तत्त्वसाक्षात्कारपर्यंतरहणेहारीजाविविदिषाहै ॥ साविविदिषाहीं तिनयज्ञदानादिककर्मोंकाफलरूपहै ॥ और सोसाक्षात्कार व्यवधानतैंविनाहीं अज्ञानको निवृत्तिरूपफलकाजनकहै ॥ जैसे सूर्यादिकोंकाप्रकाश व्यवधानतैंविनाहीं अंधकारकीनिवृत्तिकरेहै ॥ यातैं सोतत्वसाक्षात्कार अज्ञानकीनिवृत्तिरूपफलकूंनउत्पन्नकरिकै नाशहोवैनहीं ॥ किंतु अज्ञानकीनिवृत्तिरूपफलकूं उत्पन्नकरिकैहीं सोतत्वसाक्षात्कार नाशहोवैहै ॥ जैसे सूर्यादिकोंकाप्रकाश अंधकारकूंनाशकरिकैहीं निवृत्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेअभिप्रायकरिकैहीं श्रीभगवान्नैं (नेहाभिक्रमनाशोस्ति) याप्रकारकावचनकह्याहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (तद्यथेहेतियानिंदा साफलेनतुकर्मणि ॥ फलेच्छांतुपरित्यज्यकृतंकर्मविशुद्धिकृत्) ॥ अर्थयह ॥ (तद्यथेहकर्मचितोलोकःक्षीयते) ॥ याश्रुतिवचन

232

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नैं कथनकरीजानिंदाहै ॥ सानिंदा स्वर्गादिकफलविषयकहींहै ॥ कोईयज्ञदानादिककर्मविषयक सानिंदानहींहै ॥ जि
सकारणतैं फलकीइच्छाकापरित्यागकरिकैकरयेहूए तेयज्ञदानादिककर्म याअधिकारोपुरुषकेअंतःकरणकीशुद्धिकरणेहा
रेहैंइति ॥ तथा तिनयज्ञदानादिककर्मोकेअंगोंकोन्यूनअधिकतारूपवैगुण्यकरिकै कऱ्याहू आजो तिनकर्मोकावैगुण्यरूप
प्रत्यवायहै ॥ सोप्रत्यवायभी इसनिष्कामकर्मरूपयोगविषेहैनहीं ॥ काहेतैं (तमेतंवेदानुवचनेन) याश्रुतिनैं यज्ञदाना
दिकनित्यकर्मोकाहीं प्रतिबंधकपापोंकीनिवृत्तिद्वारा विविदिषाविषेउपयोगकथनकऱ्याहै ॥ तिननित्यकर्मोविषे सर्वअं
गोंकीसंपूर्णताकानियमहोवैनहीं ॥ और (तमेतंवेदानुवचनेन) याश्रुतिनैं यज्ञदानादिककाम्यकर्मोकाभी ताविविदि
षाविषेउपयोगकथनकऱ्याहै यापक्षकेअंगीकारकीयेहूएभी ॥ फलकीइच्छातैंरहितहोणेतै तिनयज्ञदानादिककाम्यकर्मो
कूंभीनित्यकर्मकहींतुल्यताहै ॥ काहेतैं काम्यकर्मरूपजे अग्निहोत्रहै ॥ तथा नित्यकर्मरूपजोअग्निहोत्रहै ॥ तिनदोनोंअ
ग्निहोत्रोंविषे स्वरूपतैंतोंकोईविशेषताहैनहीं ॥ किंतु जोअग्निहोत्र स्वर्गादिकफलकीइच्छापूर्वक कऱ्याजावैहै ॥ ताअग्नि
होत्रविषे काम्यकर्मरूपताका व्यवहारहोवैहै ॥ और जोअग्निहोत्र स्वर्गादिकफलकीइच्छातैंविनाकऱ्याजावैहै ॥ ताअग्नि
होत्रविषे नित्यकर्मरूपताका व्यवहारहोवैहै ॥ इसप्रकार स्वर्गादिकफलकीइच्छाकरिकै तथाताइच्छाकेअभावकरिकै
हीं ताअग्निहोत्रविषे काम्यकर्मरूपता तथानित्यकर्मरूपता सिद्धहोवैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ स्वर्गादिकफलकी
प्राप्तिवासतै कऱ्येहूएजेयज्ञदानादिककर्महैं ॥ तिनसकामकर्मोविषेतौं यथाविधिपूर्वक सर्वअंगोंकीपूर्णताकरणेकाहीं
नियमहै ॥ जोकदाचित् यहसकामपुरुष यथाविधिपूर्वक तिनकर्मोकेसर्वअंगोंकीपूर्णतानहींकरैंगा ॥ तौं तेयज्ञदाना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दिककर्म वैगुण्यभावकूंप्राप्तहूए ताफलकोप्राप्तिनहींकरैंगे ॥ और फलकोइच्छातैंरहितहोइकै केवलअंतःकरणकीशुद्धि
वासतै करयेहूएजेयज्ञदानादिककर्महैं ॥ तिनयज्ञदानादिकनिष्कामकर्मोकीतौं यजमानरूपकर्त्तातैंभिन्न प्रतिनिधिआ
दिकोंकरिकैभी समाप्तिहोइसकेहै ॥ यातैं तिननिष्कामकर्मोविषे अंगोंकीवैगुण्यजन्य प्रत्यवाय होवैनहीं ॥ ईहां य
जमानपुरुष किसीरोगादिकनिमित्ततैं जिसकर्मकेकरणेविषे समर्थनहींहोवै ॥ तिसकर्मकूं जिसब्राह्मणद्वारा समाप्तक
रावैहै ॥ ताब्राह्मणकानाम प्रतिनिधिहैइति ॥ किंवा (तमेतंवेदानुवचनेन) याश्रुतिनैं विधानकरयेजे अंतःकरणकीशु
द्धिवासतै यज्ञदानादिकधर्महैं ॥ ताधर्मकेमध्यविषे संख्याकरिकै अथवा अंगोंकरिकै अत्यंतस्वल्प जोधर्म भगवत्के
आराधनवासतै अनुष्ठानकरयाहै ॥ सोस्वल्पधर्मभी याअधिकारीपुरुषकूं जन्ममरणरूपसंसारकेमहान्भयतैं रक्षाकरेहै ॥
यहवार्त्ता स्मृतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक (सर्वपापप्रसक्तोपिध्यायन्निमिषमच्युतं ॥ भूयस्तपस्वीभवतिपंक्तिपावन
पावनः)अर्थयह ॥ सर्वपापकर्मोविषेप्रीतिवालाहूआभी यहपुरुष अनन्यहोइकै एकनिमेषमात्रभी अच्युतपरमात्मादेवका
ध्यानकरताहूआ ताध्यानकेप्रभावतैं पुनःतपस्वीहोवैहै ॥ तथा पंक्तिकेपवित्रकरणेहारेपुरुषोंकाभीपवित्रकरणेहारा होवैहै
इति ॥ और (तमेतंवेदानुवचनेन) याश्रुतिवचनविषे सर्वकर्मोंकेसमुच्चयकाविधानकरणेहारा कोईवचनहैंनहीं ॥ यातैं
अंतःकरणकेअशुद्धिकोन्यूनअधिकताकरिकै तिनयज्ञदानादिककर्मोकेअनुष्ठानकीन्यूनअधिकताभी संभवहोइसकैहै ॥
यातैं (कर्मबंधंप्रहास्यसि) यहहमारावचन यथार्थहै इति॥४०॥ ※ ॥ अब इसपूर्वश्लोकविषेकथनकरयेहूएअर्थकेस्पष्टकर
णेवासतै (तमेतवेदानुवचनेन) याश्रुतिनैंविधानकरयेजे यज्ञदानादिककर्महैं तिनकर्मोविषे एकअर्थतानिरूपणकरेहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व्यवसायात्मिकाबुद्धिरेकेहकुरुनंदन ॥ बहुशाखाह्यनंताश्चबुद्धयोव्यवसायिनां ॥४१॥

व्यवसायात्मिका । बुद्धिः ॥ एका । इह । कुरुनंदन । बहुशाखाः । हि । अनंताः । च । बुद्धयः । अव्यवसायिनां ॥ इतिप० ॥
हेअर्जुन इस श्रेयकेमार्गविषे आत्मतत्त्वकानिश्चयरूप बुद्धि एकहीं विवक्षितहै
और सकामपुरुषोंकी बुद्धियांतौं बहुतशाखावालीहैं तथा अनंतहैं ॥४१॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसमोक्षरूपश्रेयकेमार्गविषे अथवा (तमेतंवेदानुवचनेन) इसश्रुतिवचनविषे ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास याचारिआश्रमोंकूं आत्मतत्त्वकानिश्चयरूपबुद्धि एकहीं सिद्धकरणेकूं विवक्षितहै ॥ काहेतैं वेदानुवचनेन यज्ञेन दानेन तपसा अनाशकेन यापदोंकेअंतविषस्थितजोतृतीयाविभक्तिहै ॥ तातृतीयाविभक्तिनैं तिनवेदानुवचनादिकोंविषे परस्पर निरपेक्षसाधनरूपता बोधनकरोतीहै ॥ तहां गुरुकेमुखतैंवेदोंकेअध्ययनकरणेकानाम वेदानुवचनहै ॥ सोवेदोंकाअध्ययन ब्रह्मचारीकेसर्वधर्मोविषे प्रधानधर्महैं ॥ यातैं तावेदानुवचनकरिकै ब्रह्मचारीकेसर्वधर्मोकाग्रहणकरणा ॥ तथा यज्ञ दान यहदोनों गृहस्थकेसर्वधर्मोविषे प्रधानधर्महैं ॥ यातैं तायज्ञदानकरिकै गृहस्थकेसर्वधर्मोकाग्रहणकरणा ॥ और कृच्छ्रचांद्रायणकानाम तपहै ॥ सोतप वानप्रस्थकेसर्वधर्मोविषे प्रधानधर्महै ॥ यातैं तातपकरिकै वानप्रस्थकेसर्वधर्मोकाग्रहणकरणा ॥ तहां मृत्युकाकारणजोअनशनव्रतहै ताकोनिवृत्तिकरणेवासतै तिसतपका अनाशक यहविशेषणदीयाहै ॥ इसप्रकार सर्वभूतप्राणीयोंकूंअभयदान तथाप्रणवादिकमंत्रोंकाजप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इत्यादिकसंन्यासीकेधर्मभीजानिलेणेइति ॥ और भगवान्भाष्यकारोंनेंतौं याश्लोककायहव्याख्यानकऱ्याहै ॥ सांख्य विषयक तथायोगविषयक जाबुद्धिहै ॥ साबुद्धि एकहींफलकाजनकहोणेतैं एकहै ॥ और साबुद्धि निर्दोषवेदवाक्यों तैंजन्यहोणेतैं व्यवसायात्मिकाहै अर्थात् सर्वविपरीतबुद्धियोंकाबाधकहै ॥ और अव्यवसायोअज्ञानीपुरुषांकीजेब हुतशाखावाली अनंतबुद्धियांहैं ॥ तेसर्वबुद्धियां विपरीतहोणेतैं ताव्यवसायात्मिकबुद्धिकरिकैबाध्यहैंइति ॥ और कि सीटीकाविषेतौं यहअर्थकऱ्याहै ॥ परमेश्वरकेआराधनकरिकैहीं मैं इससंसारसमुद्रकूंतरौंगा याप्रकारकीनिश्चयरूपा एकनिष्ठाबुद्धिहीं इसकर्मयोगविषेहोवैहैइति ॥ सर्वप्रकारतैं ज्ञानकांडकेअनुसारकरिकै (स्वल्पमप्यस्यधर्मस्यत्राय तेमहतोभयात्) यावचनकाअर्थ भलीप्रकारतैंसिद्धहोवैहै ॥ और कर्मकांडविषेतौं तिर्सातिसस्वर्गादिकफलकीका मनावाले अव्यवसायीपुरुषोंकीबुद्धियांतौं बहुशाखावालीहोवैहैं ॥ अर्थात् कामनावोंकेअनेकभेदतैंतेबुद्धियांभी अनेक भेदवालीहोवैहैं ॥ तथा कर्मफल गुणफल आदिकोंकूंविषयकरणेहारीउपशाखावोंकेभेदतैं तेबुद्धियां अनंतहोवैहैंइति ॥ तहां (अनंताहि) यावचनविषेस्थितजो हि यहशब्दहै ॥ सोहिशब्द तिनसकामपुरुषोंकेबुद्धियोंविषे अनंतरूपता कीप्रसिद्धिबोधनकरणेवासतेहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ अंतःकरणकीशुद्धिकरणेवासतै जेनिष्कामकर्महैं ॥ तिन निष्कामकर्मोविषे सकामकर्मोकीअपेक्षाकरिकै महान्विलक्षणताहै इति ॥ ४१ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे निष्कामअधिकारीपुरुषोंकूं साव्यवसायात्मिकाबुद्धि प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सकामपुरुषोंकूं साव्यवसायात्मिकाबुद्धि क्युं नहींप्राप्तहोती ॥ किंतु तिनसकामपुरुषोंकूंभी साव्यवसायात्मिकाबुद्धि प्राप्तहोणीचाहीये ॥ जिसकारणतैं शास्त्ररूप

236

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रमाणतौं तिनदोनोंकूं तुल्यहींप्राप्तहै ॥ ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् प्रतिबंधकेवशतैं तिनसकामपुरुषोंकूं साव्यवसायात्मिकाबुद्धि नहींप्राप्तहोवैहै याप्रकारकाउत्तर तीनश्लोकोंकरिकैकथनकरेहै ॥

यामिमांपुष्पितांवाचंप्रवदंत्यविपश्चितः॥वेदवादरताःपार्थनान्यदस्तीतिवादिनः॥४२॥
कामात्मानःस्वर्गपराजन्मकर्मफलप्रदां॥क्रियाविशेषबहुलांभोगैश्वर्यगतिंप्रति॥४३॥
भोगैश्वर्यप्रसक्तानांतयापहृतचेतसां॥व्यवसायात्मिकाबुद्धिःसमाधौनविधीयते ४४॥

यां। इमां। पुष्पितां। वाचं। प्रवदंति। अविपश्चितः। वेदवादरताः। पार्थ। नान्यत्। अस्ति। इति। वादिनः॥४२॥
कामात्मानः। स्वर्गपराः। जन्मकर्मफलप्रदां। क्रियाविशेषबहुलां। भोगैश्वर्यगतिं प्रति॥४३॥
भोगैश्वर्यप्रसक्तानां। तया। अपहृतचेतसां। व्यवसायात्मिका। बुद्धिः। समाधौ। न। विधीयते॥४४॥ इतिपद०॥

हेअर्जुन तेविचारहीनपुरुष जिस प्रसिद्ध कर्मकांडरूपवाणीकूं कथनकरेहैं कैसीहैसावाणी अविचारतैंरमणीकहै तथाजन्मकर्मफलकेदेणेहारीहै तथाभोगऐश्वर्यकेप्राप्तिग्रासतै अग्निहोत्रादिककर्मोकूंविस्तारतैंप्रतिपादनकरणेहारीहै ऐसीवाणीकूंकहणेहारेतेविचारहीनपुरुषकैसेहै वेदकेअर्थवादोंविषेप्रीतिमान्है तथा कर्मकेफलतैभिन्नकोईज्ञानकाफल नहीं है याप्रकार कथनकरणेहारेहैं तथाकामरूपहैं तथास्वर्गहींहैउत्कृष्टजिनोंकूं तथाभोगऐश्वर्यविषेहैआसक्तिजिनोकी तथा तांवाणीकरिकै आच्छादितहूआहैचित्तजिनों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का ऐसेबहिर्मुखपुरुषोंके अंतःकरणविषे साव्यवसायात्मिका बुद्धि नहीं होवैहै ॥ ४४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन (स्वाध्यायोऽध्येतव्यः) अर्थयह याअधिकारीपुरुषनैं वेद अध्ययनकरणाइति ॥ याअध्ययनविधि तैंप्राप्तहोणेकरिकै अत्यंतप्रसिद्धजायहकर्मकांडरूपवाणीहै ॥ कैसीहैसावाणी ॥ जैसे निर्गंधपुष्पोंकरिकैयुक्तपलाशका वृक्ष दूरसैंरमणीकलागेहै ॥ तैसे जावाणी अविचारतैंहीरमणीकलागेहै ॥ काहेतैं तावाणीकरिकै केवल स्वर्गादिकफ लोंका तथायज्ञादिकसाधनोंका तथातिनदोनोंकेपरस्परसंबंधकाहीं ज्ञानहोवैहै ॥ कोईनिरतिशयआनंदरूपफलकीप्रा प्तिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताकर्मकांडरूपवाणीतैं निरतिशयआनंदरूपफलकीप्राप्तिनहींहोती याकेविषेक्या कारणहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (जन्मकर्मफलप्रदांइति) अपूर्वशरीरइंद्रियादिकोंकासंबंधरू पजोजन्महै ॥ तथा ताजन्मकेअधीन तिसतिसवर्णआश्रमकेअभिमानजन्य जेअग्निहोत्रादिककर्महैं ॥ तथा तिनक र्मोंकेअधीन जेपुत्रपशुस्वर्गादिरूपनाशवान्फलहैं ॥ताजन्मकर्मफलतीनोंकूंहीं घटीयंत्रकीहींन्यांई बिच्छेदतैंरहित यह कर्मकांडरूपवाणी प्राप्तकरेहैइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सावाणी तिनजन्मादिकोंकीहीं प्राप्तिकरेहै ॥ यहवार्त्ता कैसे जानोजावै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (भोगैश्वर्यगतिंप्रति क्रियाविशेषबहुलांइति) अमृतकापान तथाउर्वशीआदिकअपसरावोंकेसाथिविहार तथापारिजातवृक्षकासुगंध इत्यादिकपदार्थोंकीप्राप्तिजन्यजोभोगहै ॥ तथा ताभोगकाकारणरूप जोदेवतादिकोंकास्वामिपणास्वरूपऐश्वर्यहै ॥ ताभोगऐश्वर्यदोनोंकीप्राप्तिकेप्रति साधनभूत जेअग्निहोत्र दर्शपौर्णमास ज्योतिष्टोम इत्यादिकक्रियाविशेषहैं ॥ तिनक्रियाविशेषोंकरिकै जावाणी बहुतविस्तारकूं

238

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राप्तहोइरहीहै ॥ अर्थात् भोगऐश्वर्ययादोनोंकेसाधनभूतक्रियाविशेषोंकूं जावाणी अत्यंतविस्तारतैंप्रतिपादनकरणेहा
रीहै ॥ सोकर्मकांडविषे ज्ञानकांडकोअपेक्षाकरिकै अत्यंतविस्तारपणा सर्वत्रप्रसिद्धहींहै ॥ ऐसीकर्मकांडरूपवाणीकूं
परमार्थरूपस्वर्गादिकफलपरता अंगीकारकरेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताकर्मकांडरूपवाणीकूं स्वर्गादिरूपफलपरता
कौंन अंगीकारकरेहैं ॥ ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (अविपश्चितःइति) जेपुरुष विचारजन्यतात्पर्य
ज्ञानतैंरहितहैं ॥ तेपुरुषहीं तावाणीकूं स्वर्गादिरूपफलपरतामानेहैं ॥ याकारणतैंहीं तेसकामपुरुष वेदविषेस्थितजे
(अक्षयंहवैचातुर्मास्ययाजिनःसुकृतंभवति) अर्थयह चातुर्मास्ययज्ञकेकरणेहारेपुरुषकूं अक्षयसुकृतहोवैहै इत्यादिकअर्थ
वादहैं तेअर्थवाद यथार्थहींहैं याप्रकारकामिथ्याविश्वासकरिकै संतोषकूंप्राप्तहूएहैं ॥ याकारणतैंहीं तेसकामपुरुष या
प्रकारकेवचनकहेहैं ॥ कर्मकांडकीअपेक्षाकरिकै कोईज्ञानकांडभिन्ननहींहै ॥ किंतु सोज्ञानकांड कर्मकांडकाहींशेषरूपहै
॥ तहांज्ञानकांडविषेस्थित जेतत्पदार्थकेबोधकवचनहैं ॥ तेवचनतौं देवताकेस्वरूपकूंबोधनकरेहैं ॥ और त्वंपदार्थके
बोधकजेवचनहैं ॥ तेवचनतौं कर्मकर्त्तायजमानकेस्वरूपकूंबोधनकरेहैं ॥ और तत्त्वंपदार्थकेअभेदकूंबोधनकरणेहा
रेजेवचनहैं ॥ तेवचनतौं कर्मकर्त्तापुरुष साक्षात्ईश्वररूपहै याप्रकार ताकर्मकर्त्तापुरुषकोस्तुतिकरेहैं ॥ इसप्रकार सं
पूर्णवेद कर्मपरहींहैं ॥ और कर्मकाफलरूपजेस्वर्गादिकहैं ॥ तिनस्वर्गादिकोंकोअपेक्षाकरिकै दूसराकोईज्ञानका नि
रतिशयआनंदरूपफलहैनहीं ॥ इसप्रकार तेसकामपुरुष अनेकप्रकारकीकल्पनाकरिकै सर्वप्रकारतैं ज्ञानकांडतौंवि
रुद्धअर्थकेहींकहणेहारेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेबहिर्मुखसकामपुरुष निरतिशयआनंदरूपमोक्षविषे किसवासतैं द्वेष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करेहैं ॥ ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् कहेहै (कामात्मानःइति) हेअर्जुन कामनावोंकेविषयरूपजेअनेक प्रकारकेविषयहैं ॥ तिनविषयोंकरिकै जिनोंकाचित्त सर्वदा व्याकुलहोइरह्याहै ॥ याकारणतैं तेकाममयपुरुष साक्षात्मोक्षविषेभीद्वेषकरेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेसकामपुरुष जैसे दूसरेविषयोंकीकामनाकरेहैं ॥ तैसेनिरतिशयआनंदरूपमोक्षकीकामना किसवासतैनहींकरते ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् कहेहै (स्वर्गपराःइति) हेअर्जुन उर्वशी नंदनवन अमृत इत्यादिकअनेकविषयोंकरिकैयुक्तजोस्वर्गहै ॥ सोस्वर्गहींहै सर्वतैंउत्कृष्टजिनोंकूं ॥ तास्वर्गतैं भिन्नदूसराकोईपुरुषार्थहैनहीं ॥ इसप्रकारमानणेहारेभ्रांतपुरुषोंविषे विवेकवैराग्यादिकसाधनोंकाअभावहै ॥ यातैं तेभ्रांतपुरुष मोक्षकीकथामात्रकूंभी सहारिनहींसकते ॥ तौं तिनमूढपुरुषोंविषे मोक्षकीइच्छा कहांतैंहोणीहैइति ॥ इसप्रकार पूर्वउक्तभोगऐश्वर्यदोनोंविषे क्षयपणा सातिशयता इत्यादिकदोषोंकेअदर्शनकरिकै अत्यंतआसक्तहूआहैअंतःकरणजिनोंका ॥ तथा ताकर्मकांडरूपवाणीकरिकै आच्छादितहोइगयाहैविवेकज्ञानजिनोंका ॥ तथा (अक्षयंहवै) इत्यादिकअर्थवादवचन केवलस्तुतिपरहैं प्रमाणांतरकरिकैअबाधित जोतात्पर्यकाविषयभूतअर्थहै ताअर्थविषेहीं वेदोंकूंप्रमाणरूपताहै याप्रकारकेप्रसिद्धअर्थकूंभी जेपुरुष जानणेविषेसमर्थनहींहै ॥ ऐसे सकामपुरुषोंके समाधिनामाअंतःकरणविषे साव्यवसायात्मिकाबुद्धि नहींहोवैहै ॥ अथवा समाधियाशब्दकरिकै परमात्माकाग्रहणकरणा ॥ तापर मात्माविषयक साव्यवसायात्मिकाबुद्धि तिनपुरुषोंकीहोवैनहींइति ॥ (समाधीयतेऽस्मिन्सर्वंससमाधिः) याप्रकारकी व्युत्पत्तिकरिकै अंतःकरणविषे तथापरमात्माविषे तासमाधिशब्दकीअर्थरूपतासंभवहोइसकैहै ॥ और किसीटीका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कारनैंतौं समाधिशब्दका यहअर्थकऱ्याहै ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेस्थितिकानाम समाधिहै ॥ तासमाधिकेनिमित्त तिनपुरुषोंको साव्यवसायात्मिकाबुद्धि नहींउत्पन्नहोवैहैइति ॥ ईहांयहअभिप्रायहै ॥ यद्यपि स्वर्गादिकफलकोप्राप्ति करणेहारेजेकाम्यअग्निहोत्रादिकहैं ॥ तेअग्निहोत्रादिककर्म अंतःकरणकीशुद्धिवासतैकरणेयोग्यअग्निहोत्रादिकोतैं विलक्षणनहींहै ॥ तथापिस्वर्गादिकफलकीइच्छारूपदोषकेवशतैं तेकाम्यअग्निहोत्रादिककर्म अंतःकरणकेशुद्धिकूंसंपादनकरैनहीं ॥ यद्यपि भोगोंकेअनुकूलजाअंतःकरणकोशुद्धिहै ॥ साअंतःकरणकोशुद्धि तिनसकामकर्मोतैंभोहोइसकेहै ॥ तथापि साअंतःकरणकीशुद्धि आत्मज्ञानकाउपयोगीहैनहीं ॥ इसोअर्थकेबोधनकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं (भोगैश्वर्यप्रसक्तानां) यहवचन पुनःकथनकऱ्याहै ॥ और फलकीइच्छातैंविना करेहूएजेअग्निहोत्रादिककर्महैं ॥ तेनिष्कामकर्मतौं आत्मज्ञानकेउपयोगी अंतःकरणकेशुद्धिकूंहींसंपादनकरेहैं ॥ यातैं निष्कामविपश्चितपुरुषोंकेफलविषे तथासकामअविपश्चितपुरुषोंकेफलविषे महान्विलक्षणतासिद्धहोवैहै ॥ इसोवार्त्ताकूं आगेविस्तारकरिकैनिरूपण करैंगे इति ॥ ४२ । ४३ । ४४ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनसकामपुरुषोंकूं आपणेअंतःकरणकेदोषतैं साव्यवसायात्मिकाबुद्धि मतप्राप्तहोवै ॥ परंतु ताव्यवसायात्मिकाबुद्धिकरिकै अग्निहोत्रादिककर्मोंकूं करणेहारेजेनिष्कामपुरुषहैं ॥ तिननिष्कामपुरुषोंकूं तिनअग्निहोत्रादिककर्मोंकेस्वभावतैं स्वर्गादिकफलकीप्राप्ति अवश्यहोवैंगी ॥ यातैं आत्मज्ञानकाप्रतिबंध सकामनिष्कामदोनोंविषे समानहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥

त्रैगुण्यविषयावेदानिस्त्रैगुण्योभवार्जुन ॥ निर्द्वंद्वोनित्यसत्वस्थोनियोगक्षेमआत्मवान्

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्रैगुण्यविषयाः । वेदाः । निस्त्रैगुण्यः । भव । अर्जुन । निर्द्वंद्वः । नित्यसत्वस्थः । निर्योगक्षेमः । आत्मवान् । इतिपद०

हेअर्जुन यहकर्मकांडरूपवेद त्रैगुण्यकूंविषयकरणेहारेहैंतूं तिसत्रैगुण्यतैंरहित होउ तथाद्वंद्वधर्मोतैंरहितहोउ तथानित्यसत्वस्थितहोउ तथायोगक्षेमतैंरहितहोउ तथाआत्मवान्होउ ॥ ४५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ सत्त्व रज तम यातीनोंगुणोंकाजोकार्यहोवै ताकानाम त्रैगुण्यहै ॥ ऐसा यहकाममूलकसंसारहै ॥ सोका ममूलकसंसारहै प्रकाश्यतारूपकरिकैविषयजिनोंका तिनोंकानाम त्रैगुण्यविषयहै ऐसे यहकर्मकांडरूपवेदहैं ॥ अर्थात् जोपुरुष जिसफलकेप्राप्तिकीकामनावालाहै तिसपुरुषकेप्रति यहवेद तिसीफलकाबोधनकरणेहारेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपुरुष जिसफलकीइच्छाकरिकै जिसकर्मकाअनुष्ठानकरेहै ॥ तिसपुरुषकूं सोकर्म तिसीफलकीप्राप्तिकरेहै ॥ तिसतिसफलकीकामनातैंविना कोईभीकर्म तिसतिसफलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ यातैं अन्वयव्यतिरेककरिकै यापुरुषकीकामनाहीं फलकीप्राप्तिविषेकारणहै ॥ यातैं हेअर्जुन तूं निस्त्रैगुण्यहोउ अर्थात् स्वर्गादिकफलकीकामनातैंरहितहोउ ॥ ताफलकीकामनातैंरहिततुमारेकूं संसारकीप्राप्तिहोवैंगीनहीं ॥ इतनैंकहणैंकरिकै निष्कामपुरुषोंकूंभी अग्निहोत्रादिककर्मोकेस्वभावतैंहीं स्वर्गादिकसंसारकोप्राप्तिहोवैंगो ऐसीअर्जुनकोशंकाकाखंडनकऱ्याइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् शीतउष्णादिकोंकीनिवृत्तिकरणेंवासतै वस्त्रादिकपदार्थोंकीअपेक्षा अवश्यसंभवैहै ॥ ताअपेक्षाकेविद्यमानहूए निष्कामताकैसेहोवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान्कहेहै (निर्द्वंद्वःइति) ईहां (निस्त्रैगुण्योभव) यावचनविषे स्थतजो भव यहशब्दहै ॥ ताभवशब्दका उत्तरपदोंविषे सर्वत्रसंबंधकरणा ॥ हेअर्जुन (मात्रास्पर्शास्तु) याश्लोक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषे पूर्वकथनकरीजायुक्तिहै ॥ तायुक्तिकरिकै शीतउष्ण सुख दुःख मानअपमान शत्रुंमित्र इत्यादिकसर्वद्वंद्वधर्मौंतैं तूं रहितहोउ ॥ अर्थात् तिनसर्वद्वंद्वधर्मोंकेसहनस्वभाववाला तूं होउइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् नहीं सहारणेयोग्यजोदुःखहै ॥ सोदुःख किसप्रकार सहाऱ्याजावैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (नित्यसत्वस्थःइति) नित्य क्या अचल ऐसाजोधैर्यनामासत्वहै तासत्वविषेजोस्थितहोवै ताकानाम नित्यसत्वस्थहै ॥ ऐसानित्यसत्वस्थ तूं होउ ॥ तात्पर्ययह ॥ जिसपुरुषका सोसत्व रजतमदोनोंकरिकै तिरस्कारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोपुरुष शीतउष्णादिजन्यपीडाकरिकै मैं अबीमरौंगा याप्रकारकाआपणेकूंमानताहूआ स्वधर्मतैंविमुखहोवैहैं ॥ तूं अर्जुनतौं तारजतमदोनोंकातिरस्कारकरिकै केवल तासत्वधर्मकूं आश्रयणकरइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् शीतउष्णादिकोंकेसहनकियेहूएभी क्षुधातृषाकीनिवृत्तिकरणेवासतै पूर्वनहींप्राप्तहूएअन्नादिकपदार्थोंकेप्राप्तिवासतैं तथा पूर्वप्राप्तहूएअन्नादिकपदार्थोंके रक्षणकरणेवासतै अवश्यप्रयत्नकरणाहोवैंगा ॥ ताप्रयत्नकेविद्यमानहूए सोनित्यसत्वस्थपणा कैसेहोवैंगा ॥ किंतु नहींहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (निर्योगक्षेमःइति) हेअर्जुन पूर्वअप्राप्तवस्तुकीजाप्राप्तिहै ताकानाम योगहै ॥ और पूर्वप्राप्तवस्तुकाजोरक्षणहै ताकानाम क्षेमहै ॥ तायोग क्षेमदोनोंतै तूं रहितहोउ ॥ अर्थात् चित्तकेविक्षेपकाहेतुजोपदार्थोंका परिग्रहहै तापरिग्रहतैं तूं रहितहोउ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तायोगक्षेमतैं जोमैं रहितहोवौंगा ॥ तौं मैं किसप्रकारजीवौंगा ॥ किंतु हमाराजीवन नहींहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् तूं आपणेजीवकीचिंता मतकर सर्वकाअंतर्यामीपरमेश्वरही तुमारे योगक्षेमादिकोंकानिर्वाहकरैंगा याप्रकारकाउत्तर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कहेहै ॥ (आत्मवान्इति) आत्मा क्या परमात्मा ध्येयतारूपकरिकै तथायोगक्षेमादिकोंकानिर्वाहकरतारूपकरिकै विद्यमानहैजिसपुरुषका ताकानाम आत्मवान्है ॥ ऐसाआत्मवान् तूं होउ ॥ अर्थात् सर्वकामनावोंकापरित्यागकरिकै परमेश्वरकाआराधनकरणेहाराजोमैंहूं तिसहमारे देहकीयात्रामात्रवासतैं अपेक्षितजेअन्नवस्त्रादिकपदार्थहैं तिन सर्वपदार्थोंकूं सोअंतर्यामीईश्वरहीं संपादनकरैंगा याप्रकारकानिश्चयकरिकै तूं निश्चितहोउइति ॥ अथवा आत्मवा न्होउ अर्थात् अप्रमत्तहोउइति ॥ ४५ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् स्वर्गादिकफलविषयक सर्वकामनावोंकापरि त्यागकरिकै कर्मोंकूंकरताहूआ मैंअर्जुन तिसतिसकर्मकरिकैप्राप्तहोणेयोग्यजेस्वर्गादिकआनंदहैं तिनसर्वआनंदोंतैं रहितहोवौंगा ॥ जिसकारणतैं कामनातैंविना स्वर्गादिकआनंदोंकीप्राप्तिहोतीनहीं यहवार्ता पूर्वआप कथनकरि आयेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ब्रह्मानंदकेप्राप्तहूएतेसर्वआनंदप्राप्तहोवैहैं याप्रकारउत्तर कहेहै ॥

यावानर्थउदपानेसर्वतःसंप्लुतोदके ॥ तावान्सर्वेषुवेदेषुब्राह्मणस्यविजानतः ॥ ५६ ॥

यावान् । अर्थः । उदपाने । सर्वतः । संप्लुतोदके । तावान् । सर्वेषु । वेदेषु । ब्राह्मणस्य । विजानतः ॥ ४६ ॥ इतिपद० ॥

हेअर्जुन जैसे अल्पजलवालेस्थानोंविषे जितनाको स्नानपानादिरूपप्रयोजन सिद्धहोवैहैं सर्वओरतैं महान्ज लवालेतलावविषे तेस्नानपानादिकसर्वहींप्रयोजन सिद्धहोवैहैं तैसे सर्व वेदउक्तकाम्यकर्मोंविषे जितनेको हिरण्य गर्भकेलोकपर्यंत आनंदप्राप्तहोवैहैं तितनेसर्वआनंद ब्रह्मसाक्षात्कारवान् ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं होवैहैं ॥ ४६ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हे अर्जुन जैसे पर्वततैंनिकसेहूएजे अनेकंजलकेझरणेहैं ॥ तेसर्वजलकेझरणे किसानीचीभूमविषेजाइकैं एकठेहोवैंहैं ॥ ताकीतलावसंज्ञाहोवैहै ॥ तहां एकएकझरणेकेजलतैं यथाक्रमतैंसिद्धहोणेहारेजे स्नान पान वस्त्रप्रक्षालन आदिकप्रयोजनहैं ॥ ते स्नानपानादिकसर्वप्रयोजन तिनझरणोंकेजलोंकेसमूहरूपमहान्तलावविषे सिद्धहोवैहैं काहेतैं तिनसर्वझरणोंकेजलोंका तिसतलावविषेहीं अंतर्भावहै ॥ तैसे वेदोंविषेकथनकऱ्येहूए जितनैंकी अग्निहोत्र ज्योतिष्टोम अश्वमेध आदिककाम्यकर्महैं ॥ तिनअग्निहोत्रादिककाम्यकर्मोकरिकै इससकामपुरुषकूं क्रमतैंप्राप्तहोणेहारेजे स्वर्गलोकतैंआदिलैकेब्रह्मलोकपर्यंत विषयजन्यआनंदहैं ॥ तेसर्वआनंद इसब्रह्मसाक्षात्कारवान् ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं एकहींकालविषे प्राप्तहोवैहैं ॥ काहेतैं भूमिलोकतैंआदिलैकैब्रह्मलोकपर्यंत जितनैंकीविषयजन्यक्षुद्रआनंदहैं ॥ तेसर्वआनंद ब्रह्मानंदकाअंशरूपहैं ॥ यातैं तेसर्वक्षुद्रआनंद ताब्रह्मानंदकेअंतर्भूतहींहैं ॥ तहांश्रुति (एतस्यैवानंदस्यान्यानिभूतानिमात्रामुपजीवंति) अर्थयह ॥ ब्रह्मातैंआदिलैकेसर्वप्राणिमात्र इसब्रह्मानंदकेअंशमात्रकूंअंगीकारकरिकै आनंदपूर्वकजीवतेहैंइति ॥ यद्यपि एकअद्वितीयब्रह्मानंदविषे अंशअंशीभावसंभवतानहीं ॥ तथापि जैसे एकहींआकाशविषे घटादिकउपाधियोंकेवशतैं अंशअंशीभावव्यवहारहोवैहै ॥ तैसे एकहींब्रह्मानंदविषे अविद्याकृतअंतःकरणादिकउपाधियोंकेवशतैं अंशअंशीभावव्यवहारहोवैहै ॥ वास्तवतैं सोअंशअंशीभावहैनहीं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ निष्कामकर्मोकरिकै जबो तुमाराअंतःकरणशुद्धहोवैंगा ॥ तबी तुमारेकूं आत्मज्ञानकोप्राप्तिहोवैंगी ॥ ताआत्मज्ञानकरिकै तुमारेकूं ब्रह्मानंदकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ ताब्रह्मानंदविषेहीं हिरण्यगर्भादिकसर्वआनंदोंकाअंतरभावहै

245

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यातैं ताब्रह्मानंदकीप्राप्तिकरिकै तुमारेकूं तिनसर्वआनंदोंकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ यातैं तिनविषयजन्यक्षुद्रआनंदोंकी प्राप्तिवासतैं तुमारेकूं तिनकाम्यकर्मोंकेकरणेका कछुप्रयोजननहींहै ॥ यातैं ताब्रह्मानंदकीप्राप्तिकरणेहारे आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतैं तूं निष्कामकर्मोंकूंकरइति ॥ और किसीटीकाकारनैंतौं इसश्लोककेपदोकी इसप्रकारयोजनाकरिकै यहअर्थकऱ्याहै ॥ (यावान्। अर्थः। उदपाने। सर्वतः। संप्लुतोदके। तावान्। सर्वेषु। वेदेषु। ब्राह्मणस्य। विजानतःइति) जैसे सर्वओरतैं महान्जलवाले महान्तलावविषे इसपुरुषके स्नानपानादिकसर्व प्रयोजन एकघटमात्र जलकरिकैहीं सिद्धहोवैहैं ॥ कोई तामहान्तलावकेसर्वजलकेखरचकरणेतैं तेस्नानपानादिकसर्वप्रयोजनसिद्धहोवैनहीं इसप्रकार शुद्धचित्तवाले मुमुक्षुजनका सोसर्वप्रयोजन सर्व वेदोंविषे उपनिषद्रूप वेदकेएकदेशकेश्रवणमात्रकरिकैहीं सिद्धहोवैहै ॥ तिनमुमुक्षुजनोंकूं ताआपणेप्रयोजनकोसिद्धिवासतै कोईसर्ववेदोंकेअर्थकेअनुष्ठानकोअपेक्षारहैनहीं ॥ जिसकारणतैं एकजन्मकरिकै सर्ववेदोंकेअर्थकाअनुष्ठानकरणा संभवतानहींइति ॥ यादोनोंव्याख्यानोंविषे प्रथमव्याख्यान बहुतटीकाकारोंकूं संमतहैं ॥ और यहदूसराव्याख्यान किसीएकटीकाकारनै कऱ्याहै ॥ परंतु ताप्रथमव्याख्यानविषे श्लोककेपूर्वार्द्धविषे अनेकस्मिन् यथा तथा भवति याच्यारिपदोंकाअध्याहार करणाहोवैहै ॥ और श्लोककेउत्तरार्द्धविषेस्थित दार्ष्टांतिकभागविषे पूर्वार्द्धतैं यावान् तावान् यादोनोंपदोंकाअनुषंगकरणाहोवैहै ॥ सोपदोंका अध्याहार तथाअनुषंग इसदूसरेव्याख्यानविषेकरणाहोवैनहीं ॥ तहांपूर्वअश्रुतपदकाजो वाक्यविषेसंबंधकरणाहै याकानाम अध्याहारहै ॥ और पूर्ववाक्यविषेस्थितपदका उत्तरवाक्यविषेसंबंधकरणा याकानाम अनुषंगहै इति ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ शंका ॥ हेभगवन् तेनिष्कामकर्म स्वतंत्रहोइकैतौं ताब्रह्मानंदकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ किंतु अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानकासंपादनकरिकैही तेनिष्कामकर्मताब्रह्मानंदकोप्राप्तिकरेहैं ॥ यातैं जिसआत्मज्ञानकरिकैसाक्षात्हीं ब्रह्मानंदकी प्राप्तिहोवैहै ॥ सोआत्मज्ञानहीं हमारेकूं प्रथम संपादनकरणेयोग्यहै ॥ ताआत्मज्ञानकूं छोडिकै बहुतप्रयत्नकरिकैसिद्धहोणेहारे तथाबहिरंगसाधनरूप ऐसेनिष्कामकर्मोंकेकरणेका कछुप्रयोजननहींहै ॥ ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् अबीतुमारेकूंतिननिष्कामकर्मोंविषेहीं अधिकारहै याप्रकारकाउत्तर कहेहै ॥

कर्मण्येवाधिकारस्तेमाफलेषुकदाचन ॥ माकर्मफलहेतुर्भूर्मातेसंगोस्त्वकर्माणि ॥४७॥

कर्मणि । एव । अधिकारः । ते । मा । फलेषु । कदाचन । मा । कर्मफलहेतुः । भूः । मा । ते । संगः । अस्तु । अकर्मणि ॥ इतिप०

हेअर्जुन तुमारा कर्मविषे हीं अधिकार होवो कर्मकेफलोंविषे कदाचित्भी तुमाराअधिकारमतहोवो तूंकर्मोंकेफलकाउत्पादक मत होउ तथा कर्मकेनहींकरणेविषे तुमारी प्रीति मत होवै ॥ ४७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥टीका॥ हेअर्जुन आत्मज्ञानकोउत्पत्तिकेअयोग्य अशुद्धअंतःकरणवाला जोतूंहैं॥तिसतुमारेकूं अबी अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारे निष्कामकर्मोंविषेहीं अधिकारहोवो॥अर्थात्हमारेकूं अबी यहनिष्कामकर्महींकरणेयोग्यहैं याप्रकारकाबोधहोवो ॥ ज्ञाननिष्ठारूपवेदांतवाक्योंकेविचारविषे सोकर्त्तव्यताकाबोध अबी तुमारेकूं मतहोवो ॥ इसप्रकार कर्मोंकेकरणेहारेतुमारेकूं तिनकर्मोंकेस्वर्गादिकफलोंविषे तिनकर्मोंकेअनुष्ठानतैंपूर्वकालविषे तथातिनकर्मोंकेअनुष्ठानकेउत्तरकालविषे तथाति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नकर्मोंकेअनुष्ठानकालविषे कदाचित् भी अधिकार मतहोवै ॥ अर्थात् इनकर्मोंकेस्वर्गादिकफल हमनैं भोगणेहैं याप्रकार
काबोध कदाचित् भी तुमारेकूंमतहोवै ॥शंका ॥ हेभगवन् हमनैं इसकर्मकेस्वर्गादिकफलकूंभोगणाहै याप्रकारकोबुद्धिकेअ
भावहूएभी तेकर्म आपणेसामर्थ्यतैंहीं स्वर्गादिकफलोंकीप्राप्तिकरैंगे ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् फलकीकाम
नातैंविनातेकर्म ताफलकीप्राप्तिनहींकरेहैं याप्रकारकाउत्तर कहेहै(माकर्मफलहेतुर्भूःइति) हेअर्जुनफलकीकामनाकरिकै
तिनकर्मोंकूंकरताहूआ यहपुरुष तिनफलोंकाउत्पादकहोवैहै ॥ और तूंअर्जुनतौं ताफलकीकामनातैंरहितहोइकैताकर्म
केफलकाउत्पादक मतहोउ॥जिसकारणतैं निष्कामपुरुषोंनैंभगवत्अर्पणबुद्धिकरिकैकरयेहूएकर्मस्वर्गादिकफलकीप्रा
प्तिकरतेनहीं यहवार्त्ता पूर्वकथनकरिआयेहैंइति ॥शंका ॥ हेभगवन् जोकदाचित् तेकर्म आपणेसामर्थ्यतैंफलकीप्राप्तिन
हींकरतेहोवैं॥तौं ऐसेनिष्फलकर्मोंकेकरणेकाहींक्याप्रयोजनहै॥ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूएश्रीभगवान्कहेहै (मातेसंगोस्त्व
कर्मणिइति)जोकदाचित् स्वर्गादिकफलकेप्राप्तिकीइच्छानहींहोवैतौं दुःखरूपकर्मोंकेकरणेकाहींक्याप्रयोजनहै याप्रकार
की तिनकर्मोंकेनकरणेविषेतुमारीप्रीतिमतहोवैइति।४७॥ ॥अबइसपूर्वकथनकरयेहूएअर्थकाहीं विस्तारतैंनिरूपणकरेहैं

योगस्थःकुरुकर्माणिसंगंत्यक्त्वाधनंजय ।सिद्ध्यसिद्ध्योःसमोभूत्वासमत्वंयोगउच्यते

योगस्थः । कुरु । कर्माणि । संगं । त्यक्त्वा । धनंजय । सिद्ध्यसिद्ध्योः । समः । भूत्वा । समत्वं । योगः । उच्यते ॥४८॥इतप०

हेअर्जुन तूं योगविषेस्थितहूआ फलकोइच्छाकूं परित्यागकरिकै तथा फलकाप्राप्तिअप्राप्तिदोनोंविषे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हर्षविषादतैंरहित होइकै कर्मोंकूं करै सोहर्षविषादतैंरहितपणांही योग कह्योंजावैहै ॥ ४८ ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ हेअर्जुन तूं योगविषेस्थितहोइकै स्वर्गादिकफलकोइच्छारूपसंगकापरित्यागकरिकै तथा मैं इसकर्मका कर्त्ताहूं याप्रकारकेकर्तृत्वअभिनिवेशका परित्यागकरिकै कर्मोंकूंकर ॥ अब तासंगकेत्यागकाउपाय कथनकरेहैं (सिद्ध्यसिद्ध्योःसमोभूत्वाइति) हेअर्जुन तिन वेदउक्तकर्मोंके स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिविषे तूं हर्षकापरित्यागकरिकै तथा तिनस्वर्गादिकफलोंकोअप्राप्तिविषे विषादकापरित्यागकरिकै केवलईश्वरआराधनबुद्धिकरिकै तिनकर्मोंकूंकर ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वआपनैं योगशब्दकरिकै कर्मोंकाकथनकर्याथा ॥ और अबीआपनैं योगविषेस्थितहोइकै तूं कर्मोंकूंकर याप्रकारकावचनकह्याहै ॥ यातैं आपके पूर्वउत्तरवचनोंकाअभिप्राय मैं जानिसकतानहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं (समत्वंयोगउच्यते) हेअर्जुन कर्मोंकेफलकीप्राप्तिविषे तथाकर्मोंकेफलकीअप्राप्तिविषे जोहर्षविषादतैंरहितपणारूपसमत्वहै ॥ सोसमत्वहीं ईहां (योगस्थःकुरुकर्माणि) यावचनविषेस्थित योगशब्दकरिकैकथनकर्याहै ॥ तायोगशब्दकरिकै कोईकर्मोंकाकथनकर्यानहीं ॥ यातैं पूर्वउत्तरवचनोंकाविरोधहोवैनहींइति ॥ तहांपूर्व (सुखदुःखेसमेकृत्वा) याश्लोकविषे जयअजयदोनोंकीसमताकरिकै केवल युद्धमात्रकीकर्त्तव्यता कथनकरीथी ॥ जिसकारणतैं पूर्वप्रसंगविषे युद्धकीहींकर्त्तव्यताप्राप्तथी ॥ और ईहांतौं दृष्टअदृष्टरूपसर्वफलोंकापरित्यागकरिकै आपणेवर्णआश्रमकेसर्वकर्मोंकीकर्त्तव्यता कथनकरीहै ॥ यातैं पूर्वउत्तरवचनोंविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ ४८ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् क्या केवलकर्मोंकाअनुष्ठानहीं पुरुषार्थरूपहै ॥ जिसकारणतैं सर्वकाल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषे निष्कामकर्मोंकूंहीं पुरुषनैं करणा याप्रकारकाउपदेश वारंवार आपनैं करीताहै ॥ किंवा (प्रयोजनमनुद्दिश्यमंदो पिनप्रवर्त्तते) अर्थयह ॥ किंचित्फलरूपप्रयोजनकूंनउद्देशकरिकै मूढपुरुषभी किसीकार्यविषेप्रवर्त्तहोवैनहींइति ॥ इसलोकप्रसिद्धन्यायतैंभी तिननिष्कामकर्मोंविषे प्रवृत्तिसंभवैनहीं ॥ यातैं फलकीकामनातैंविना निष्फलकर्मोंकेकरणेतैं फलकीकामनाकरिकै कर्मोंकाअनुष्ठानकरणाहीं श्रेष्ठहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

250

दूरेणह्यवरंकर्मबुद्धियोगाद्धनंजय ॥ बुद्धौशरणमन्विच्छकृपणाःफलहेतवः ॥ ४९ ॥

दूरेण । हि । अवरं । कर्म । बुद्धियोगात् । धनंजय । बुद्धौ । शरणं । अन्विच्छ । कृपणाः । फलहेतवः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जिसकारणतैं निष्कामकर्मतैं सोसकामकर्म अत्यंतदूरताकरिकै अधमहैतिसकारणतैं परमात्मबुद्धि निमित्त निष्कामकर्मयोगकेकरणेकूं तूं इच्छाकर जेपुरुष फलकीकामनावालेहैं तेपुरुष कृपणहैं ॥ ४९ ॥ इतिपदा० ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं आत्मज्ञानरूपबुद्धिकासाधनरूप जोनिष्कामकर्मयोगहै ताकानाम बुद्धियोगहै ॥ ताबुद्धियोगतैं सोजन्ममरणकाहेतुरूपसकामकर्म अत्यंतदूरताकरिकै अधमहै ॥ अथवा परमात्माविषयक जोबुद्धिरूपयोगहै ताकानाम बुद्धियोगहै ॥ ताबुद्धियोगतैं यहसंपूर्णकर्म अधमहैं ॥ तिसकारणतैं सर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिकरणेहारी जापरमात्माविषयकबुद्धिहै ॥ ताबुद्धिकीप्राप्तिवासतै प्रतिबंधकपापकर्मोंकीनिवृत्तिद्वारा जोनिष्कामकर्मयोगहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ताकेकरणेकीतूंइच्छाकर इति ॥ हेअर्जुन स्वर्गादिकफलकीकामनावाले जेपुरुष तिनसकामकर्मोकूंकरेहैं ॥ तेपुरुष कृपणहैं ॥ अर्थात् तेसकामपुरुष सर्वदा जन्ममरणादिरूपघटीयंत्रकेभ्रमणकरिकै नानाप्रकारकीदीनदशावोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तहांश्रुति (योवाएतदक्षरंगार्ग्यविदित्वाऽस्माल्लोकात्प्रैतिसकृपणः) अर्थयह ॥ हेगार्गी इसभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूंपाइकै जोपुरुष इसअक्षरपरमात्मादेवकूंनजानिकरिकै इसमनुष्यलोकतैंजावैहै ॥ सोपुरुष कृपणहीजानणाइति ॥ हेअर्जुन ऐसेअधिकारीमनुष्यशरीरकूंपाइकै तूंभी ऐसाकृपणमतहोउ ॥ किंतु जन्ममरणादिकसर्वअनर्थोंकानिवृत्तिकरणेहाराजोआत्मज्ञानहै ॥ ताआत्मज्ञानकूं अंतःकरणकोशुद्धिद्वारा उत्पन्नकरणेहाराजो निष्कामकर्मरूपयोगहै ॥ तानिष्कामकर्मयोगकूंहीं तूं कर ॥ ईहां (कृपणाः) यापदकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ जैसे इसलोकविषे केईककृपणपुरुष अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंसहनकरिकै तथानानाप्रकारकेछलकपटकरिकै धनकूंएकठाकरेहैं ॥ तेकृपणपुरुष इसलोककेयत्किंचित्विषयजन्यसुखकेलोभकरिकै ताधनकादान करतेनहीं ॥ याकारणतैं तेकृपणपुरुष ताधनकेदानादिकोंकरिकैजन्य महान्सुखकूं अनुभवकरिसकतेनहीं ॥ किंतु ताधनकेएकठेकरणेविषेकऱ्येजेपापकर्महैं ॥ तिनपापकर्मोकेनरकादिकदुःखोंकूंहीं तेकृपणपुरुष अनुभवकरेहैं ॥ यातैं तेकृपणपुरुष आपणीहानि आपहींकरेहैं ॥ तैसे यहसकामपुरुषभी महान्दुःखोंकूंसहनकरिकै तिनकर्मोकूंकरेहैं ॥ परंतु स्वर्ग धन पुत्र पशु इत्यादिकअल्पफलोंकेलोभकरिकै तेसकामपुरुष तिनकर्मोंकरिकै मोक्षरूपपरमानंदकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु अनेकदुःखोंकरिकैमिल्येहूए तिनस्वर्गादिकतुच्छफलोंकूंहींप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैं तेसकाम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुरुष आपणीहानि आपहींकरेहैं ॥ ऐसेसकामपुरुषोंको दौर्भाग्यताका तथामूढताका बुद्धिमानपुरुषोंकूं बहुतशोक होवैहै ॥ यहसर्वअर्थ श्रीभगवान्नैं कृपणवदकरिकैसूचनकऱ्याइति ॥ ४९ ॥ * ॥इसप्रकार ताबुद्धियोगकेअभावहूए दोषकानिरूपणकऱ्या ॥ अब ताबुद्धियोगकेविद्यमानहूए गुणकानिरूपणकरेहैं ॥

252

बुद्धियुक्तोजहातीहउभेसुकृतदुष्कृते॥तस्माद्योगाययुज्यस्वयोगःकर्मसुकौशलं॥५०॥

बुद्धियुक्तः। जहाति। इह। उभे। सुकृतदुष्कृते। तस्मात्। योगाय। युज्यस्व। योगः। कर्मसु। कौशलं ॥इतिपद०॥

हेअर्जुन जिसकारणतैं इनकर्मोंविषे समत्वबुद्धियुक्तपुरुष पुण्यपाप दोनोंकूं परित्यागकरेहै तिसकारणतैं तासमत्वबुद्धिरूपयोगकेवासतैं तूं उद्यमवालाहोउ जिसकारणतैं सोयोगहीं तिनकर्मोंविषे कुशलपणाहै ५०इतिपदा० ॥ ॥ टीका ॥ हेअर्जुन शास्त्रनैंविधानकऱ्येजेअग्निहोत्रादिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंकेफलकोप्राप्तिविषे तथाफलकीअप्राप्तिविषे हर्षविषादतैंरहिततारूप समत्वबुद्धिकरिकैयुक्तजोअधिकारीपुरुषहै ॥ सोअधिकारीपुरुष जिसकारणतैं पुण्यपाप दोनोंकूं अंतःकरणकोशुद्धिज्ञानकोप्राप्तिद्वारा परित्यागकरेहै ॥ तिसकारणतैं तासमत्वबुद्धिरूपयोगकीप्राप्तिवासतैं तूं दृढउद्यमवालाहोउ ॥ जिसकारणतैं सोसमत्वबुद्धिरूपयोगहीं तिनकर्मोंविषे प्रवर्त्तमानपुरुषका कुशलपणाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ वास्तवतैं बंधकेहेतुरूपजेकर्महैं ॥ तिनकर्मोंकाभी जोसमत्वबुद्धिरूपयोग मोक्षविषे उपयोगसिद्धकरे है यहहीं तासमत्वबुद्धिरूपयोगविषे महान्कुशलताहैइति ॥ इतनैकहणेकरिकै भगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सूचनकरया ॥ समत्वबुद्धिकरिकैयुक्तजोकर्मयोगहै ॥ सोकर्मयोग आपकर्मरूपहूआभी आपणेसजातीयदुष्टकर्मोंकानाशकरेहै ॥ यातैं सोकर्मयोग महान्कुशलहै ॥ और तूंअर्जुनतौं चेतनरूपहूआभी आपणेसजातीय दुर्योधनादिकदुष्टोंकानाशकरतानहीं ॥ यातैं तूं कुशलनहींहैइति ॥ अथवा इसश्लोकका यहदूसराअर्थकरणा (बुद्धियुक्तः । जहाति । इह । उभे ॥ सुकृतदुष्कृते । तस्मात् । योगाय । युज्यस्व । योगः । कर्मसु । कौशलं इति) समत्वबुद्धियुक्तकर्मोंकेकीयेहूए अंतःकरणकोशुद्धिद्वारा परमात्मसाक्षात्कारकरिकैयुक्तहूआयहपुरुष जिसकारणतैं पुण्यपाप दोनोंकूं परित्यागकरेहै तिसकारणतैं तूं समत्वबुद्धियुक्तकर्मयोगकोप्राप्तिवासतैं उद्यमवालाहोउ जिसकारणतैं सर्वकर्मोंकेमध्य विषे सोसमत्वबुद्धियुक्तकर्मयोग दुष्टकर्मोंकोंनिवृत्तकरणेविषे बहुतचतुरहै इति ॥ ५० ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इस अधिकारोपुरुषकूंपापकर्मकीनिवृत्तितौं अपेक्षितहै ॥ परंतु पुण्यकर्मोंकोनिवृत्ति अपेक्षितहैनहीं ॥ जोपुण्यकर्मोंकोभीनिवृत्तिहोवैंगा ॥ तौंपुरुषार्थकोहींहानिहोवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् स्वर्गादिकतुच्छफलके त्यागकोयेतैं परमपुरुषार्थकीप्राप्तिरूपफलका कथनकरेहै ॥

कर्मजंबुद्धियुक्ताहिफलंत्यक्त्वामनीषिणः।जन्मबंधविनिर्मुक्ताःपदंगच्छंत्यनामयं५१

कर्मजं । बुद्धियुक्ताः । हि । फलं । त्यक्त्वा । मनीषिणः । जन्मबंधविनिर्मुक्ताः । पदं । गच्छंति । अनामयं ॥ इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन जिसकारणतैं तेसमत्वबुद्धियुक्तपुरुष कर्मजन्य फलकूं त्यागिकरिकै आत्मसाक्षात्कारवाले होवैहै तथा जं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न्मरूपबंधनतैंरहितहूए अविद्यादिकरोगोंतैंरहित मोक्षरूपपदकूं प्राप्तहोवैहैं तिसकारणतैं तूंभी ऐसाहोउ॥५१॥इतिप०

॥ टीका ॥ हे अर्जुन तासमत्वबुद्धिवालेपुरुष अग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकैजन्यस्वर्गादिरूपफलकूं परित्यागकरिकै केवल ई श्वरकेआराधनवासतैं तिनकर्मोंकूं करतेहूए अंतःकरणकोशुद्धिद्वारा तत्त्वमसिआदिकवाक्यजन्य आत्माकारबुद्धिरूपमनी षावालेहोवैहैं ॥ इसप्रकार आत्मज्ञानरूपमनीषाकूंप्राप्तहोइकै तेअधिकारीपुरुष जन्मरूपबंधतैंअत्यंतमुक्तहूए कार्यसहित अविद्यारूपरोगतैंरहित तथासर्वभयतैंरहित जोपरमआनंदस्वरूपब्रह्मरूपमोक्षहै तामोक्षरूपपुरुषार्थकूं अभेदकरिकै प्राप्तहोवैहैंइति ॥ ईहां श्रीभगवान्कायहअभिप्रायहै॥ जिसकारणतैं फलकोकामनाकापरित्यागकरिकै तासमबुद्धिकरिकै आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकाअनुष्ठानकरणेहारेपुरुष तिननिष्कामकर्मोंकेप्रभावतैं शुद्धअंतःकरणवालेहोवैहैं ॥ ताअंतःक रणकीशुद्धितैंअनंतर तेअधिकारीपुरुष तत्त्वमसिआदिकप्रमाणोंतैंउत्पन्नहूएआत्मज्ञानकेप्रभावत कार्यसहितअविद्य तैंरहितहूए सर्वअनर्थकोनिवृत्तिपूर्वक परमानंदकोप्राप्तिरूपमोक्षकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ जिसमोक्षकूं शास्त्रविषेविष्ण कापरमपदरूपकरिकैकथनकरयाहै ॥ तिसकारणतैं तूंअर्जुनभी (यच्छ्रेयःस्यान्निश्चितंब्रूहितन्मे) इसपूर्वउक्तवचनतैं मोक्षरूपश्रेयकीइच्छावाला प्रतीतहोताहैं ॥ यातैं तूंभी तामोक्षकीप्राप्तिवासतै इसप्रकारकेनिष्कामकर्मयोगकूंकर इति ॥ ५१ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार निष्कामकर्मोंकेअनुष्ठानकरतेहूए किसकालविषे हमारेअंतःकरणकीशुद्धि होवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए॥ श्रीभगवान् ताकेविषे कालकनियमकाअभाव कथनकरेहै॥

254

यदातेमोहकलिलंबुद्धिर्व्यतितरिष्यति ॥ तदागंतासिनिर्वेदंश्रोतव्यस्यश्रुतस्यच॥५२॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यदा । ते । मोहकलिलं । बुद्धिः । व्यतितरिष्यति । तदा । गंतासि । निर्वेदं । श्रोतव्यस्य । श्रुतस्य । च । इतिप०
हेअर्जुन जिसकालविषे तुमारा अंतःकरण अविवेकरूपकालुष्यकूं परित्यागकरैंगा तिसकालविषे श्रवण
करणेयोग्यकर्मफलके तथा श्रवणकऱ्येहूएकर्मफलके वैराग्यकू प्राप्तिवाला तू होवैंगा ॥५२॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ हेअर्जुन तिननिष्कामकर्मोकेकरतेहूए इतनैंकालनैंपाछैंअंतःकरणकीशुद्धिहोवैहै याप्रकारकेकालकानियम
ईहांनहींहै ॥ किंतु तिननिष्कामकर्मोकेकरतेहूए जिसकालविषे तुमाराअंतःकरण यहमैंहूं यहमेरेहैं इत्यादिकअहंममअ
भिमानरूपअविवेकरूपकालुष्यकूं परित्यागकरैंगा अर्थात् रजोगुणतमोगुणरूपमलकूंपरित्यागकरिकै केवल शुद्धस
त्वभावकूंप्राप्तहोवैंगा तिसकालविषे अबोश्रवणकरणेयोग्यअग्निहोत्रादिककर्मोकेस्वर्गादिकफलोंकेवैराग्यकूं तथा पू
र्वश्रवणकऱ्येहूएकर्मोकेस्वर्गादिकफलोंकेवैराग्यकूं तूं प्राप्तहोवैंगा ॥ अर्थात् तिनस्वर्गादिकफलोंकूं मिथ्यारूपजानिकै
तिनोंकेप्राप्तिकोतृष्णातैं तूं रहितहोवैंगा ॥ तहांश्रुति (परोक्ष्यलोकान्कर्मचितान्ब्राह्मणोनिर्वेदमायात्) अर्थयह
॥ ब्रह्मकेप्राप्तिकीइच्छावान्अधिकारीपुरुष कर्मोकरिकैरचितस्वर्गादिकलोकोंकूं अनित्यदुःखरूपजानिकै तिनोतैं वै
राग्यकूंप्राप्तहोवै इति ॥ ईहांभगवान्कायहतात्पर्यहै ॥ अशुद्धअंतःकरणविषे वैराग्यहोवैनहीं ॥ किंतु ॥ शुद्धअंतःक
रणविषेहीं सोवैराग्यहोवैहै ॥ यातैं जिसकालविषे तुमारेकूं इसलोककेविषयसुखोंविषे तथास्वर्गादिकलोकोंकेविष
यसुखोंविषे दोषदृष्टिपूर्वक तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तिसीकालविषे तावैराग्यरूपफलकरिकै तुमनैं आपणेअंतः
करणकीशुद्धिजानणी ॥ जबपर्यंत तिनविषयोंतैंवैराग्यनहींभया ॥ तबपर्यंत तुमनैं आपणेअंतःकरणकूं मलिनहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जानणा इति ॥ ५२ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिननिष्कामकर्मोंकेअनुष्ठानतैं अंतःकरणकीशुद्धिकरिकै उत्पन्नहूआहैवैराग्यजिसकूं ऐसाजोकोईकअधिकारीपुरुषहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकूं किसकालविषे आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहैं ॥

256

श्रुतिविप्रतिपन्नातेयदास्थास्यतिनिश्चला ॥ समाधावचलाबुद्धिस्तदायोगमवाप्स्यसि

श्रुतिविप्रतिपन्ना । ते । यदा । स्थास्यति । निश्चला । समाधौ । अचला । बुद्धिः । तदा । योगं । अवाप्स्यसि ॥

हेअर्जुन पूर्वनानाफलोंकेश्रवणकरिकैसंशयकूंप्राप्तहूई तुमारी बुद्धि जिसकालविषे परमात्मादेवविषे निश्चलहूई तथाअचलहूई स्थितहोवैंगी तिसकालविषे तूं जोवैब्रह्मकेअभेदज्ञानकूं प्राप्तहोवैंगा ॥ ५३ ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नहींविचारकऱ्याहैवास्तवतात्पर्यजिनोंका ऐसेजे स्वर्गादिकनानाप्रकारकेफलोंकेश्रवणहैं ॥ तिन श्रवणोंकरिकै प्राप्तहूएजे नानाप्रकारकेंसंशयविपरीतभावनाहैं ॥ तिनसंशयविपरीतभावनावोंकरिकै पूर्व विक्षेपकूं प्राप्तहूईजातुमारीबुद्धिहै ॥ सातुमारीबुद्धि जिसकालविषे अंतःकरणकीशुद्धितैंप्राप्तहूए विवेकजन्यपदार्थोंविषेदोषदर्शनकरिकै ताविक्षेपकापरित्यागकरिकै अंतरपरमात्मादेवविषे निश्चलहूई अर्थात् जाग्रतस्वप्नदर्शनरूपविक्षेपतैंरहितहूई ॥ तथा तापरमात्मादेवविषे अचलहूई अर्थात् सुषुप्तिमूर्छास्तब्धभाव इत्यादिकलयरूपचलनतैंरहितहूई ॥ स्थितहोवैंगी अर्थात् लयविक्षेपरूपदोनोंकापरित्यागकरिकै जबी तापरमात्मादेवविषे एकाग्रभावकूंप्राप्तहोवैंगी ॥ अथवा ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(निश्चला अचला) यादोनोंपदोंकायहअर्थकरणा (निश्चला) क्या असंभावनाविपरीतभावनातैंरहितहूई ॥ तथा (अंचला) क्या दीर्घकाल आदर निरंतर सत्कार इनच्यारोंकेसेवनकरिकै विजातीयवृत्तियोंकरिकैनहींदूषितहूई ॥ ऐसीसाबुद्धि जिसकालविषे वायुतैंरहितदीपककीन्यांई तापरमात्मादेवविषेस्थितहोवैंगी ॥ तिसीकालविषे तत्त्वमसिआदिकवाक्योंतैंजन्य जीवब्रह्मकेअभेदसाक्षात्काररूपयोगकूं तूं प्राप्तहोवैंगा ॥ तिसज्ञानकालविषे दूसराकोईकर्त्तव्यहैनहीं ॥ यातैं तिसकालविषे तूं कृतकृत्यहोवैंगा ॥ तथा स्थितप्रज्ञहोवैंगा इति ॥ ५३ ॥ * ॥ तहां इसप्रकारकेअवसरकूंप्राप्तहोइकै सोअर्जुन जीवन्मुक्तपुरुषकेजेलक्षणहैं तेहींलक्षण मुमुक्षुजनोंकेमोक्षकाउपायरूपहैं याप्रकार मानताहूआतास्थितप्रज्ञकेलक्षणकेजानणेवासतै याप्रकारकाप्रश्न करेहैं ॥

अर्जुनउवाच ॥ स्थितप्रज्ञस्यकाभाषासमाधिस्थस्यके
शव ॥ स्थितधीःकिंप्रभाषेतकिमासीतव्रजेतकिं ॥ ५४ ॥

स्थितप्रज्ञस्य । का । भाषा । समाधिस्थस्य । केशव । स्थितधीः । किं । प्रभाषेत । किं । आसीत । व्रजेत । किं । इतिप० ॥ हेकेशव समाधिविषेस्थित स्थितप्रज्ञपुरुषका लक्षण क्याहै तथा समाधितैंउठ्याहूआ सोस्थितप्रज्ञकिसप्रकार भाषणकरेहै तथा किसप्रकार बाह्यइंद्रियोंकानिग्रहकरेहै तथा किसप्रकार विषयोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ५४ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ निश्चलहूईहै मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकीप्रज्ञाजिसकी ताकानाम स्थितप्रज्ञहै ॥ सोस्थितप्रज्ञपुरुष दोप्रका
रकीअवस्थावालाहोवैहै ॥ एकतौं समाधिविषेस्थितहोवैहै ॥ और दूसरा तासमाधितैंउत्थानहूएचित्तवालाहोवैहै ॥
याकारणतैंहीं तास्थितप्रज्ञपुरुषका समाधिस्थ यहविशेषणकथनकऱ्याहै ॥ ऐसे समाधिविषेस्थित स्थितप्रज्ञपुरुष
का कौंन लक्षणहै ॥ अर्थात् सोसमाधिविषेस्थित स्थितप्रज्ञपुरुष किसलक्षणकरिकै दूसरेपुरुषोंनैं जानीताहै ॥ इति
प्रथमप्रश्नः ॥ १ ॥ और तासमाधितैंव्युत्थानकूंप्राप्तहू आहैचित्तजिसका ऐसोदूसरोअवस्थावाला सोस्थितप्रज्ञपुरु
ष आपणी स्तुतिविषे तथानिंदाविषे हर्षपूर्वक तथाद्वेषपूर्वक वचनकूं किसप्रकार कथनकरेहै ॥ इतिद्वितीयप्रश्नः ॥
॥ २ ॥ और तासमाधितैंउत्थानकूंप्राप्तहूएचित्तकेनिग्रहकरणेवासतैं सोस्थितप्रज्ञपुरुष नेत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकेनिग्रह
कूं किसप्रकार करेहैं ॥ इतितृतीयप्रश्नः ॥ ३ ॥ और तिनबाह्यइंद्रियोंकेनिग्रहकेअभावकालविषे सोस्थितप्रज्ञपुरुषकिस
प्रकार विषयोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इतिचतुर्थप्रश्नः ॥ ४ ॥ तात्पर्ययह ॥ ताव्युत्थानचित्तवाले स्थितप्रज्ञपुरुषके भाषण आ
सन व्रजन यहतीनों अज्ञानीपुरुषोंकेभाषणादिकोंतैं किसप्रकारकेविलक्षणहैंइति ॥ इसप्रकार अर्जुनकेच्यारिप्रश्न
सिद्धहोवैहैं ॥ तहां समाधिविषेस्थित स्थितप्रज्ञाविषेतौं प्रथमएकप्रश्नहै ॥ और समाधितैंउत्थानचित्तवाले स्थितप्रज्ञ
विषे तीनप्रश्नहैं ॥ तहां (हेकेशव) यासंबोधनकेकहणेकरिकै अर्जुननैं यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ सर्वकाअंतर्यामीहोणेतैं
आपहीं इसरहस्यअर्थकेकहणेवषे समर्थहो इति ॥ ५४ ॥ * ॥ अब श्रीभगवान् इनच्यारिप्रश्नोंके यथाक्रमतैं
उत्तरोंकूं इसद्वितायअध्यायकोसमाप्तिपर्यंत कथनकरेहै ॥ तहां एकश्लोककरिकै प्रथमप्रश्नकाउत्तरकहेहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रीभगवानुवाच ॥ प्रजहातियदाकामान्सर्वान्पार्थमनोगता
न् ॥ आत्मन्येवात्मनातुष्टःस्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ ५५ ॥

प्रजहाति । यदा।कामान् । सर्वान् । पार्थ। मनोगतान्।आत्मनि । एव । आत्मना।तुष्टः । स्थितप्रज्ञः।तदा । उच्यते॥इतिप०
हेअर्जुन जिसकालविषे सोसमाधिस्थपुरुष आपणेमनविषेस्थित सर्व कामोंकूं परित्यागकरेहै तथा आत्माविषे
आत्माकरिकैहीं तृप्तहोवैहै तिसकालविषे सोसमाधिस्थपुरुष स्थितप्रज्ञ कह्याजावैहै ॥ ५५ ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ हेअर्जुन कामसंकल्पआदिक जेमनकोवृत्तियांविशेषहै ॥ जिनकामसंकल्पादिकवृत्तियोंकूं अन्यशास्त्रवि
षे प्रमाण विपर्यय विकल्प निद्रा स्मृति याभेदकरिकैपंचप्रकारकाकथनकरयाहै ॥ तिनकामसंकल्पादिकसर्ववृत्तियोंकूंजि
सकालविषे यहविद्वान्पुरुष कारणकेबाधकरिकै परित्यागकरेहै ॥ अर्थात् जिसकालविषे तिनकामसंकल्पादिकसर्ववृत्ति
योंतैंरहितहोवैहै ॥ तिसकालविषे सोसमाधिस्थविद्वान्पुरुष स्थितप्रज्ञ कह्याजावैहै ॥ अब तिनकामसंकल्पादिकोंविषे अ
नात्मवस्तुकीधर्मरूपताकथनकरिकै परित्यागकरणेकोयोग्यतानिरूपणकरेहैं (मनोगतान्इति) हेअर्जुन तेकामसंकल्पा
दिकसर्वधर्म मनकेहींहैं॥ आत्माकेधर्महैंनहीं ॥ जोकदाचित् तेकामसंकल्पादिक आत्माकेहीं स्वाभाविकधर्महोवैं ॥ तौं जैसे
अग्निकास्वाभाविकधर्मजोउष्णताहै ॥ सोउष्णताधर्म अग्निकेविद्यमानहूए कदाचित्भी निवृत्तहोवैनहीं ॥ तैसे आत्माके
विद्यमानहूए तेकामसंकल्पादिकधर्म कदाचित्भी निवृत्तहोवैंगेनहीं ॥ यातैं तेकामसंकल्पादिक आत्माकेधर्मनहींहैं ॥ किं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तु मनकेहींधर्महैं ॥ यातैं ताकारणरूपमनकेपरित्यागकरिकै तेकामसंकल्पादिकधर्म परित्यागकरणेकूंशक्यहैं ॥ तेकामसं
कल्पादिक मनकेहींधर्महैं याअर्थविषे (कामःसंकल्पोविचिकित्सा) इत्यादिकश्रुतिहींप्रमाणरूपहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै
बुद्धि सुख दुःख इच्छा द्वेष प्रयत्न धर्म अधर्म इनअष्टोंकूं आत्माकाधर्ममानणेहारेनैयायिकोंकामतभी खंडनकऱ्याइति॥शं
का ॥ हेभगवन् तासमाधिस्थस्थितप्रज्ञविद्वान्कामुख प्रसन्नहूआप्रतीतहोवैहै ॥ और सामुखकीप्रसन्नता अंतरकेसंतो
षतैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं तामुखकीप्रसन्नतारूपहेतुतैंतास्थितप्रज्ञपुरुषका संतोषविशेष अनुमानकऱ्याजावैहै ॥ सोसंतो
षविशेष सर्ववृत्तियोंकेपरित्यागकीयेहूए किसप्रकारसंभवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥ (आत्मन्ये
वात्मनातुष्टःइति) हेअर्जुन सोविद्वान्पुरुष परमानंदस्वरूपआत्माविषेहीं परमपुरुषार्थकीप्राप्तितैं तृप्तिकूंप्राप्तहूआहै
॥ कोईअनात्मतुच्छपदार्थोंविषे सोविद्वान्पुरुष तृप्तिकूंप्राप्तहूआनहीं ॥ तापरमानंदस्वरूपआत्माविषेभी स्वप्रकाशचैत
न्यरूपकरिकैभासमानआत्माकरिकैहीं तृप्तिकूंप्राप्तहूआहै कोईमनकीवृत्तिविशेषकरिकैतृप्तिकूंप्राप्तहूआनहीं ॥ यातैंता
स्थितप्रज्ञपुरुषविषे मनकीवृत्तितैंविनाभी सोसंतोषविशेष संभवहोइसकेहै ॥ तहांश्रुति (यदासर्वेप्रमुच्यंतेकामायेस्यहृ
दिश्रिताः॥अथमर्त्योऽमृतोभवत्यत्रब्रह्मसमश्नुते) अर्थयह ॥ इसपुरुषके मनाविषेस्थित जेकामसंकल्पादिकहैं ॥ तेसर्वका
मसंकल्पादिकजिसकालविषे निःशेषतैंनिवृत्तहोवैहैं ॥ तिसकालविषे यहजीव अमृतभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा इसीशरीर
विषे आनंदस्वरूपब्रह्मकूं अनुभवकरेहैइति ॥ यातैंयहअर्थासिद्धभया ॥ सोसमाधिविषेस्थित स्थितप्रज्ञपुरुष इसप्रकारके
लक्षणवाचकशब्दोंकरिकै कथनकऱ्याजावैहै यहप्रथमप्रश्नकाउत्तरसिद्धहूआ इति ॥ ५५ ॥ * ॥ अब समाधितैंउ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्थानकूंप्राप्तहूए स्थितप्रज्ञके भाषण आसन गमन यातीनोंविषे मूढपुरुषोंकेभाषणादिकोंतैं विलक्षणताकूंकथनकरताहू आ श्रीभगवान् (किंप्रभाषेत) याद्वितीयप्रश्नकेउत्तरकूं दोश्लोकोंकरिकैकथनकरेहै ॥

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाःसुखेषुविगतस्पृहः॥वीतरागभयक्रोधःस्थितधीर्मुनिरुच्यते॥५६॥

दुःखेषु। अनुद्विग्नमनाः।सुखेषु। विगतस्पृहः। वीतरागभयक्रोधः। स्थितधीः। मुनिः। उच्यते ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन दुःखोंविषे नहींउद्वेगकूंप्राप्तहूआहैमनजिसका तथा विषयसुखोंविषे निवृत्तहूईहैस्पृहाजिस की तथा निवृत्तहूएहैंरागभयक्रोधजिसके ऐसामननशीलपुरुष स्थितप्रज्ञ कह्याजावैहै ॥ ५६ ॥ इतिपदार्थः ॥ टीका ॥आध्यात्मिकदुःख आधिभौतिकदुःख आधिदैविकदुःख यहतीनप्रकारकेदुःखहोवैहैं॥तहां शोकमोहादिकआधियोंकरिकैजन्यजेदुःखहैं तथाज्वरशूलादिकव्याधियोंकरिकैजन्यजेदुःखहैं तिनदुःखोंकूं आध्यात्मिकदुःखकहेहैं ॥ और व्याघ्रसर्पादिकोंकरिकैजन्यजेदुःखहैं तिनदुःखोंकूं आधिभौतिकदुःखकहेहैं और अतिवायु अतिवृष्टि अग्निआदिकों करिकैजन्यजेदुःखहैं तिनदुःखोंकूं आधिदैविकदुःखकहेहैं ॥ तेसर्वदुःख रजोगुणकापरिणामरूप तथासंतापरूप अंतःकरणकीवृत्तिविशेषरूपहोवैहैं ॥ तथा पापकर्मरूपप्रारब्धकरिकैंप्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसेदुःखोंकीप्राप्तिविषे तिनदुःखोंकेनिवृत्तकरणेकीअसामर्थ्यताकरिकै नहींप्राप्तहूआहैउद्वेगकूंमनजिसका ताकानाम अनुद्विग्नमनाहै ॥ और जेअविवेकीपुरुषहैं॥ तिनअविवेकीपुरुषोंकूंतौं तादुःखकीप्राप्तिकालविषे याप्रकारकाउद्वेगहोवैहै ॥ मैंबहुतपापात्माहूं ऐ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सेदारुणदुःखोंकूंभोगणेहारे मैंदुरात्माकूं धिक्कारहै ॥ ऐसेमेरेदुःखकूं कौंननिवृत्तकरैंगाइति ॥ इसप्रकारकाअनुताप रूपजाभ्रांतिहै ताभ्रांतिरूप जोतमोगुणकापरिणामरूपअंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम उद्वेगहै ॥ सोउद्वेग तिनअविवेकीपुरुषोंकूं दुःखरूपफलकोप्राप्तिकालविषे जैसेहोवैहै ॥ तैसे जोकदाचित् सोउद्वेग तिनअविवेकीपुरुषों कूं पापकर्मोंकेकरणेकालविषेहोता ॥ तौं तिनपापकर्मोंकेप्रवृत्तिकाप्रतिबंधकहोणेतैं सोउद्वेग सफलहोता ॥ परंतु ति नपापकर्मोंकेकरणेकालविषे तिनअविवेकीपुरुषोंकूं सोउद्वेगहोतानहीं ॥ और तिनपापकर्मोंकेदुःखरूपफलकेभोग कालविषे उत्पन्नहूआभीसोउद्वेग जैसे गृहकूंअग्निकेलागेहूए ताअग्निकेशांतिकरणेवासतै कूपकाखोदणा निष्फलहो वैहै तैसे निष्फलहींहोवैहै ॥ काहेतैं तिसपापरूपकारणकेविद्यमानहूए सोदुःखरूपकार्य अवश्यकरिकैउत्पन्नहोवैहै ॥ ताकालविषे उद्वेगमात्रकरिकै तादुःखकीनिवृत्तिहोइसकैनहीं ॥ और तादुःखकेपापरूपकारणकेविद्यमानहूए भी हमारेकूं किसवासतैदुःखउत्पन्नहोवैहै याप्रकारकाजोंअविवेकहै ॥ सोअविवेक भ्रमरूपहै ॥ यातैं सोभ्रमरूपअ विवेक तास्थितप्रज्ञपुरुषविषे संभवतानहीं ॥ और ताविद्वान्पुरुषकाशरीरभो पुण्यपापकर्मोंकरिकैरचितहै ॥ यातैं तेप्रारब्धपापकर्म ताविद्वान्पुरुषकूं केवलदुःखमात्रकीहींप्राप्तिकरेहैं ॥ परंतु तादुःखकोप्राप्तिकेउत्तरकालविषे ता अविवेकरूपभ्रमकीप्राप्तिकरैंनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् दुःखकीप्राप्तितैंउत्तरकालविषेउत्पन्नभयाजो अविवेकरूपभ्र महै ॥ सोअविवेकरूपभ्रमभी दूसरेदुःखकाकारणहोवैहै ॥ यातैं सोअविवेकरूपभ्रमभी दूसरेप्रारब्धकर्मोंकरिकैहीं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं विद्वान्पुरुषकूंभी ताप्रारब्धकर्मकेवशतैं सोअविवेकरूपभ्रम अवश्यहोवैंगा ॥ समाधान ॥ हेअ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्जुन ताभ्रमकाउपादानकारणजोअज्ञानहै ॥ सोअज्ञान तास्थितप्रज्ञपुरुषका नाशहोइगयाहै ॥ यातैं तास्थितप्रज्ञ पुरुषविषे सोअविवेकरूपभ्रम संभवतानहीं ॥ तथा ताविद्वान्पुरुषविषे ताभ्रमजन्यदुःखकीप्राप्तिकरणेहारेप्रारब्ध कर्मभीहैनहीं ॥ और जिसीकिसीप्रकारतैं ताविद्वान्पुरुषकेदेहकी यात्रामात्रकानिर्वाहकरणेहारा जोप्रारब्धकर्मोका फलहै ॥ ताफलकाभोग भ्रमकेअभावहूएभी बाधितानुवृत्तिकरिकै ताविद्वान्पुरुषविषे संभवहोइसकेहै ॥ यहवार्त्ता आगेविस्तारकरिकैकथनकरैंगेइति ॥ किंवा सोविद्वान्पुरुष जैसे दुःखोंकोप्राप्तिविषे उद्वेगतैंरहितहोवैहै ॥ तैसे सु खोंकोप्राप्तिविषे स्पृहातैंभीरहितहोवैहै ॥ तहां सत्वगुणकापरिणामरूप जाअंतःकरणकी प्रीतिरूपवृत्तिविशेषहै ता कानाम सुखहै ॥ सोसुखभी दुःखकीन्यांई आध्यात्मिकसुख आधिभौतिकसुख आधिदैविकसुख याभेदकरिकैतीन प्रकारकाहोवैहै ॥ तहां प्रियवस्तुकेध्यानकरिकै तथापांडित्यादिकोंकेअभिमानकरिकै जन्यजोसुखहै तासुखकूं आ ध्यात्मिकसुखकहेहैं ॥ और स्त्रीपुत्रमित्रादिकोंकरिकैजन्यजोसुखहै तासुखकूं आधिभौतिकसुखकहेहैं ॥ और मंदमं दपवनवृष्टिआदिकोंकरिकैजन्यजोसुखहै तासुखकूं आधिदैविकसुख कहेहैं ॥ अथवा इसोगीताशास्त्रकेअष्टादशेअध्या यविषेकथनकरोरीतिसैं सात्विक राजस तामस याभेदतैंसोसुख तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ अथवा अन्यशास्त्रउक्तरीति सैं वैषयिक आभिमानिक मानोरथिक आभ्यासिक याभेदकरिकै सोसुख च्यारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां विषयकेसंबं धतैं जोसुख उत्पन्नहोवैहै ताकूं वैषयिकसुखकहेहैं ॥ और राज्यपांडित्यादिकोंकेअभिमानकरिकै जोसुख उत्पन्नहो वैहै ताकूं आभिमानिकसुख कहेहैं ॥ और प्रियविषयोंकेध्यानकरणेतैं जोसुख उत्पन्नहोवैहै ताकूं मानोरथिकसुखक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेहैं ॥ और सूर्यभगवान्केनमस्कारादिकोंकरिकै जोसुख उत्पन्नहोवैहै ताकूं आभ्यासिकसुखकहेहैं ॥ याप्रकार अ
नेकप्रकारकेसुखोकेजनावणेवासतै श्रीभगवान्नैं (सुखेषु) यहबहुवचन कथनकर्याहै ॥ तेसर्वसुख पुण्यकर्मरूपप्रार
ब्धतैंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिनसर्वसुखोंविषे सोविद्वान्पुरुष स्पृहातैंरहितहोवैहै ॥ तहां तिसतिससुखकेअनुभवकालविषे
तिसतिससुखकेसजातीयदूसरेसुखकोप्राप्तिकरणेहाराजोधर्महै ताधर्मकानहींअनुष्ठानकरिकै तिसतिससुखकेप्राप्ति
कोआकांक्षारूप जोतामसोअंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम स्पृहाहै ॥ सा स्पृहा भ्रांतिरूपहै ॥ ऐसीभ्रांति
रूपस्पृहा अविवकीपुरुषोंविषेहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ विवेकीपुरुषोंविषे साभ्रांतिरूपस्पृहा उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं यह
अर्थसिद्धभया ॥ जैसे पापकर्मरूपकारणकेविद्यमानहूएभी दुःखरूपकार्य हमारेकूं मतप्राप्तहोवै याप्रकारकीव्यर्थ
आकांक्षारूपउद्वेग विवेकीपुरुषविषे संभवतानहीं ॥ तैसे पुण्यकर्मरूपकारणकेनहींविद्यमानहूएभी सुखरूपकार्य ह
मारेकूं प्राप्तहोवै याप्रकारकीव्यर्थआकांक्षारूपजास्पृहाहै जिसस्पृहाकूं तृष्णाकहेहैं सातृष्णारूपस्पृहाभी तावित्रेकीपुरुष
विषे संभवैनहीं ॥ और प्रारब्धपुण्यकर्मतौं तावित्रान्पुरुषकूं केवलसुखमात्रकीहींप्राप्तिकरेहैं ॥ कोई ताभ्रांतिरूपस्पृहाको
प्राप्तिकरैनहींइति ॥ अथवा ॥ हर्षरूपजाअंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम स्पृहाहै ॥ तहां जिसहमारेकूं ऐसाउत्कृष्टसुख
प्राप्तभयाहै सोमैंधन्यधन्यहूं ॥ तीनलोकोंविषे हमारेसमानसुखवाला कोईभीप्राणीनहींहै ॥ किसीभीउपायकरिकै यहह
मारासुख नाशकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ इत्यादिरूपजाउत्फुल्लारूप अंतःकरणकीतामसीवृत्तिविशेषहै ताकानाम हर्षहै ॥ साह
र्षरूपस्पृहाभी भ्रांतिरूपहींहै ॥ यहहींस्पृहाशब्दकाअर्थ श्रीभगवान् (नप्रहृष्येत्प्रियंप्राप्यनोद्विजेत्प्राप्यचाप्रियं)याश्लो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कविषेआगेकथनकरैंगे ॥ सोहर्षरूपभ्रांतिभी ताविद्वान्पुरुषविषेसंभवेनहीं ॥ पुनःकैसाहैसोविद्वान्पुरुष निवृत्तहोइगयेहैं रागभयक्रोधजिसके ॥ तहां यह विषय बहुतसुंदरहै याप्रकारकेशोभनबुद्धिरूपअध्यासकरिकैजन्य जारंजनरूपअंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै जिसकूं अत्यंतअभिनिवेशकहेहैं ताकानाम रागहै ॥ और तारागका विषयजोपदार्थहै तापदार्थकेनाशकरणेहारेकिसीकारणकेप्राप्तहूए ताकारणकेनिवृत्तकरणेविषेआपणेकूं असमर्थमानणेहारेपुरुषकी जादीनतारूप अंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम भयहै ॥ और तारागकेविषयरूपप्रियवस्तुकेनाशकरणेहारे किसीकारणकेप्राप्तहूए ताकारणकेनिवृत्तकरणेविषेआपणेकूंअसमर्थमानणेहारेपुरुषकी जाप्रज्वलनरूपअंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम क्रोधहै ॥ तेरागभयक्रोधतोनों भ्रमरूपहींहैं ऐसेभ्रमरूप रागभयक्रोधतीनों निवृत्तहोइगयेहैंजिसतैं ताकानाम वीतरागभयक्रोधहै इसप्रकारका मननशीलसंन्यासी स्थितप्रज्ञ कह्याजावैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ इसप्रकारकास्थितप्रज्ञपुरुष आपणेअंतरअनुभवकूंप्रगटकरिकै आपणेशिष्योंकेप्रति शिक्षाकरणेवासतै उद्वेगतैंरहितपणेकूं तथास्पृहातैंरहितपणेकूं तथारागभयक्रोधतैंरहितपणेकूं कथनकरणेहारेजेवचनहै तिनवचनोंकूंहीं कथनकरेहै ॥ अर्थात् हमारेन्यांई दूसराभीमुमुक्षुदुःखोंविषेउद्वेगनहींकरै तथासुखोंविषे स्पृहानहींकरै तथारागभयक्रोधतैंरहितहोवैइति ॥ ५६ ॥ ※ ॥ किंच

यःसर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्यशुभाशुभं ॥ नाभिनंदतिनद्वेष्टितस्यप्रज्ञाप्रतिष्ठिता ॥५७॥

यः१ सर्वत्र२ । अनभिस्नेहः३ । तत्४ । तत्५ । प्राप्य६ । शुभाशुभं७ । न८ । अभिनंदति९ । न१० । द्वेष्टि११ । तस्य१२ । प्रज्ञा१३ । प्रतिष्ठिता१४ ॥ इतिप०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन जोविद्वान्पुरुष देहादिकसर्वपदार्थोंविषे स्नेहतैंरहितहै तथा तिसं तिसंप्रियअप्रियविषयकूं प्राप्तहोइकै नहीं प्रशंसाकरेहै नहीं द्वेषकरेहै तिसंविद्वान्पुरुषकी प्रज्ञा स्थितहोवैहै ॥ ५७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ जोविद्वान्मुनि आपणेदेहजीवनादिकसर्वपदार्थोंविषे अनभिस्नेहहै ॥ ईहां जिसकेविद्यमानहूए अन्यवस्तुकीहानितथावृद्धि आपणेविषेआरोपणकरीजावै ऐसोजा ताअन्यवस्तुविषयक अंतःकरणकीतामसीवृत्तिविशेषहै जिसकूंप्रेमकहेहैं ताकानाम स्नेहहै ॥ तास्नेहकेवशतैंहीं यहलोक आपणेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंकीहानिवृद्धिकूं आपणे विषेमानैंहैं ॥ तास्नेहतैं सर्वप्रकारतैंजोरहितहोवै ताकानाम अनभिस्नेहहै ॥ ऐसाअनभिस्नेहविद्वान्पुरुषभी परमानंदस्वरूपआत्मादेवविषेतौं सर्वप्रकारतैं स्नेहवालाहोवै ॥ काहेतैं देहादिकअनात्मपदार्थोंकेस्नेहकाजोपरित्यागहै सो अंतरआत्माकेस्नेहवासतैंहींहै ॥ आत्माकेस्नेहतैंविना बाह्यपदार्थोंकेस्नेहकापरित्यागकरणा निष्फलहै इति ॥ और जोविद्वान्पुरुष पुण्यकर्मरूपप्रारब्धनैंप्राप्तकऱ्येजेसुखकेकारणरूपविषयहै तिनप्रियविषयोंकूं प्राप्तहोइकै हर्षविशेषपूर्वक तिनविषयोंकी प्रशंसानहींकरेहै ॥ औरपापकर्मरूपप्रारब्धनैं प्राप्तकऱ्येजे दुःखकेकारणरूपविषयहै तिनअप्रिय विषयोंकूंप्राप्तहोइकै सोविद्वान्पुरुष असूयापूर्वक तिनअप्रियविषयोंकीनिंदानहींकरेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अज्ञानीपुरुषोंके सुखकेहेतुरूपजेआपणेस्त्रीपुत्रादिकपदार्थहैं तेपदार्थ तिनअज्ञानीपुरुषोंकेप्रति शुभविषयहैं ॥ तिनशुभविषयोंके गुणकथनकरणेविषेप्रवृत्तकरणेहारी जातिनअज्ञानीपुरुषोंकेअंतःकरणकी भ्रांतिरूपतामसीवृत्तिविशेषहै ताकानाम अभिनंदनहै ॥ तहां तिनस्त्रीपुत्रादिकपदार्थोंकेगुणोंकाकथन अन्यपुरुषोंकेप्रतिवासतैंहैनहीं ॥ यातैं व्यर्थहींहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इस प्रकार अन्यपुरुषकेजोविद्याप्रतिष्ठादिकगुणहैं तेविद्यादिकगुण ईर्षाकोउत्पत्तिद्वारा तिनअज्ञानीपुरुषोंकेदुःख केहींकारणहैं ॥ यातैं ते अन्यपुरुषकेविद्यादिकगुण तिनअज्ञानीपुरुषोंकेप्रति अशुभविषयहैं ॥ तिनअशुभविषयोंकी निंदादिकोंविषेप्रवृत्तकरणेहारीजा तिसअज्ञानीपुरुषकेअंतःकरणकीभ्रांतिरूपवृत्तिविशेषहै ताकानाम द्वेषहै ॥ सो द्वेषभी तमोगुणकाहींपरिणामहै ॥ औरताअज्ञानीपुरुषनैं करीजानिंदाहै सानिंदा ताअन्यपुरुषकेविद्यादिकउत्कृष्ट ताकूं निवारणकरिसकैनहीं ॥ यातैं सानिंदा व्यर्थहींहै ॥ यातैं सो अभिनंदन तथाद्वेष दोनों भ्रांतिरूपहैं तथातमोगुणकापरिणामहैं ॥ ऐसाअभिनंदन तथाद्वेष दोनों ताभ्रांतितैंरहित तथाशुद्धअंतःकरणवाले स्थितप्रज्ञपुरुषविषे कैसेसंभवैंगे ॥ किंतु नहींसंभवैंगे ॥ और तेद्वेषादिकतामसोवृत्तिहीं अंतःकरणकूंचलायमानकरणेहारीहैं ॥ तिनद्वेषादिकों केअभावहूए तास्नेहतैंरहित तथाहर्षविषादतैंरहित विद्वान्मुनिकी साआत्मतत्त्वविषयकप्रज्ञा प्रतिष्ठितहींहोवैहै अर्थात् मोक्षरूपफलविषेपरिअवसानवालीहोवैहै ॥ सोईहींमुनि स्थितप्रज्ञ कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार दूसराभीमुमुक्षु सर्वपदार्थोंविषे स्नेहतैंरहितहोवै ॥ तथाप्रियविषयोंकूंप्राप्तहोइकै तिनोंकीप्रशंसानहींकरै ॥ तथाअप्रियविषयोंकूंप्राप्तहोइकै तिनोंकीनिंदानहींकरै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे अज्ञानीपुरुष शुभअशुभपदार्थोंकी प्राप्तिकालविषे प्रशंसारूपवचनोंकूं तथानिंदारूपवचनोंकूं कथनकरेहै ॥ तैसे सोविद्वान्पुरुष ताशुभअशुभपदार्थोंकी प्राप्तिकालविषेप्रशंसारूपवचनोंकूं तथानिंदारूपवचनोंकूंकथनकरतानहीं ॥ किंतु ताशुभअशुभदोनोंकीप्राप्तिविषे सोविद्वान्पुरुष उदासीनहींरहेहै इति ॥ ५७ ॥ * ॥ अब (किमासीत) यातृतीयप्रश्नकेउत्तरकूं श्रीभगवान् षट्श्लोकोंकरिकैकथन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करेहै ॥ तहा प्रारब्धकर्मकेवशतैं समाधितैंउत्थानकरिकै विक्षेपकूंप्राप्तभयेजेइंद्रियहैं ॥ तिनइंद्रियोंकूं पुनःअंतरमुख करिकै समाधिवासतैहीं तास्थितप्रज्ञपुरुषकीस्थितिहोवैहै याअर्थकेनिरूपणकरणेवासतै श्रीभगवान् कहेहै ॥

यदासंहरतेचायंकूर्मोंगानीवसर्वशः॥इंद्रियाणींद्रियार्थेभ्यस्तस्यप्रज्ञाप्रतिष्ठिता॥५८॥

268

यदा। संहरते। च। अयं। कूर्मः। अंगानि। इव। सर्वशः। इंद्रियाणि। इंद्रियार्थेभ्यः। तस्य। प्रज्ञा। प्रतिष्ठिता।

हेअर्जुनजैसे कूर्म आपणे शिरपादादिकअंगोंकूं संकोचकरेहै तैसे यहविद्वान्पुरुष जिसकालविषे आपणे सर्व इंद्रियोंकूं शब्दादिकविषयोंतैं पुनः संकोचकरेहै तिसकालविषे तिसविद्वानपुरुषकी प्रज्ञा स्थितहोवैहै ॥५८॥ इतिप०

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे कूर्म दूसरेकेभयतैं आपणेशिरपादादिकसर्वअंगोंकूं आपणेशरीरविषेहीं संकोचकरिलेवैहै ॥ तैसे समाधितैंउत्थानकूंप्राप्तहूआ यहविद्वानपुरुष जिसकालविषे रागादिकदोषोंकीप्राप्तिकेभयतैं तथासमाधिके विघ्नोंकेभयतैं आपणेश्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंकूं शब्दादिकसर्वविषयोंतैं पुनः संकोचकरिलेवैहै ॥ तिसकालविषे तिस विद्वान्पुरुषकी साप्रज्ञा प्रतिष्ठितहोवैहै ॥ तहां पूर्वलेदोश्लोकोंकरिकै समाधितैंव्युत्थानदशाविषेभी ताविद्वान्पुरुष विषे सर्वतामसवृत्तियोंकाअभाव कथनकऱ्या ॥ और अबीइसश्लोककरिकै पुनः समाधिअवस्थाविषे तिनसकलवृत्ति योंकाअभाव कथनकरयाहै ॥ इतनीपूर्वतैंईहांविलक्षणताहै इति ॥ ५८ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् शब्दादिकविषयोंतैं जाश्रोत्रादिकइंद्रियोंकीनिवृत्तिहै ॥ सानिवृत्ति जोकदाचित् स्थितप्रज्ञताकाहेतुहोवै तौं रोगादिकनिमित्तके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वशतैं मूढपुरुषोंकेश्रोत्रादिकइंद्रियोंकीभी शब्दादिकविषयोंतैंनिवृत्ति देखणेविषेआवेहै ॥ यातैं तेरोगादिकोंवालेस
र्वमूढपुरुष स्थितप्रज्ञ होणेचाहीये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

विषयाविनिवर्तंतेनिराहारस्यदेहिनः ॥ रसवर्जंरसोप्यस्यपरंदृष्ट्वानिवर्तते ॥ ५९ ॥

विषयाः । विनिवर्तंते । निराहारस्य । देहिनः । रसवर्जं । रसः । अपि । अस्य । परं । दृष्ट्वा । निवर्त्तते ॥ ५९ ॥

हे अर्जुन इंद्रियोंकरिकैविषयोंकेग्रहणकरणेविषेअसमर्थ रोगीपुरुषके शब्दादिकविषय
निवृत्तहोइजावैहैं परंतु तिनविषयोंकारागनिवृत्तहोवैनहीं और इसस्थितप्रज्ञपुरुषकातौं प
रब्रह्मकूं साक्षात्कारकरिकै सोराग भी निवृत्तहोइजावैहै ॥ ५९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै शब्दादिकविषयोंके ग्रहणकरणेविषेअसमर्थ ऐसाजो देहाभिमानवाला रोगीमू
ढपुरुषहै ॥ अथवा काष्ठकीन्याई सर्वइंद्रियोंकीचेष्टातैंरहित जोतपस्वीहै ॥ तिनरोगीआदिकमूढपूरुषोंकेभी तेशब्दादि
कविषय निवृत्तहोइजावैहैं ॥ परंतु तिनअज्ञानीपुरुषोंका तिनशब्दादिकविषयोंकाराग निवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु सो
विषयोंकाराग तिसकालविषेभी तिनअज्ञानीपुरुषोंकूं बन्यारहेहै ॥ और इसस्थितप्रज्ञविद्वान्पुरुषकातौं परमानंद
स्वरूपब्रह्मभैंहूं याप्रकारकेसाक्षात्कारकरिकै तेशब्दादिकविषय तथातिनविषयोंकाराग दोनों निवृत्तहोइजावैहैं ॥
यहवार्त्ता (यावानर्थउदपाने) याश्लोकविषे पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ यातैं रागसहितविषयोंकीनिवृत्तिहीं तास्थितप्र
ज्ञकालक्षणहै ॥ तालक्षणकी रोगादिग्रस्तमूढपुरुषविषे अतिव्याप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जिसकारण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तैं परमात्मादेवकेयथार्थसाक्षात्कारतैंविना रागसहितविषयोंकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ तिसकारणतैं यहअधिकारीपुरुष तिनरागसहितविषयोंकेनिवृत्तकरणेहारी तथायथार्थज्ञानरूप जाप्रज्ञाहै ताप्रज्ञाकीस्थिरताकूं अवश्यकरिकैसंपादनकरै इति ॥ ५९ ॥ ※ ॥ तहां तिसप्रज्ञाकीस्थिरताविषे बाह्यइंद्रियोंकानिग्रह तथाअंतरमनकानिग्रह यह दोनों असाधारणकारणहैं ॥ तिनदोनोंकेअभावहूए ताप्रज्ञाकानाश देखणेविषेआवेहै ॥ इसअर्थकेकहणेवासतैं प्रथम बाह्यइंद्रियोंकेनहींनिग्रहकरणेविषे दोषकावर्णनकरेहैं ॥

270

यततोह्यपिकौंतेयपुरुषस्यविपश्चितः ॥ इंद्रियाणिप्रमाथीनिहरंतिप्रसभंमनः ॥ ६० ॥

यततः । हि । अपि । कौंतेय । पुरुषस्य । विपश्चितः । इंद्रियाणि । प्रमाथीनि । हरंति । प्रसभं । मनः ॥६०॥इतिपदच्छेदः॥

हेकुंतीकेपुत्रअर्जुन यत्नकरणेहारे विवेकी पुरुषके मनकूं भी यहअत्यंत बलवान् श्रोत्रादिकइंद्रिय बलात्कारतैं विकारकूंप्राप्तकरेहैं ॥ ६० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वारंवार शब्दादिकविषयोंविषे दोषदर्शनरूपयत्नकूंकरणेहारा जोअत्यंतविवेकीपुरुषहै ॥ ताविवेकीपुरुषके क्षणमात्रनिर्विकारकीयेहूएमनकूंभी यहश्रोत्रादिकइंद्रिय नानाप्रकारकेविकारोंकीप्राप्तिकरेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताविकारकाविरोधीजोविवेकहै ॥ ताविवेककेविद्यमानहूए तिसविवेकीपुरुषकेमनकूं तेइंद्रिय विकारकीप्राप्ति नहींकरिसकैंगे ॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् तिनइंद्रियोंकाप्रभाव कथनकरेहैं (प्रमाथीनिइति) हे अर्जुन यहश्रोत्रादिकइंद्रिय अत्यंतबलवान्हैं ॥ यातैं यहइंद्रिय ताविवेककेपराभवकरणेविषे समर्थहैं ॥ यातैं ताविचा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रवान्पुरुषरूपस्वामीकेदेखतेहूए तथा ताविवेकरूपरक्षककेविद्यमानहूएभी तिनसर्वोंकापराभवकरिकै यहश्रोत्रादि कइंद्रिय ताविवेकजन्यप्रज्ञाविषेप्राप्तहूएमनकूं ताप्रज्ञातैंनिवृत्तकरिकै आपणेशब्दादिकविषयोंविषेहीं बलात्कारतैं प्राप्तकरेहैं ॥ ईहां (यततोहि) यावचनविषेस्थितजो हि यहशब्दहै ॥ ताहिशब्दकरिकै भगवान्नैं यहलोकप्रसिद्धि बोधनकरी ॥ यहवार्त्तालोकविषेभीप्रसिद्धहैं ॥ जैसे कोईबलवान्शत्रु धनीपुरुषोंकूं तथाताधनकेरक्षकपुरुषोंकूं तिरस्कारकरिकै तिनोंकेदेखतेहूएहीं बलात्कारसैं तिनोंकेधनादिकपदार्थ लेजावैहै ॥ तैसे यहश्रोत्रादिकइंद्रियभी शब्दादिकविषयोंकेसमीपताकूंप्राप्तहोइकै तिनविवेकादिकोंकापराभवकरिकै बलात्कारसैं मनकूं तिनविषयोंविषेलेजावैहैं इति ॥ ६० ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेश्रोत्रादिकइंद्रिय जोऐसेबलवान्हैं ॥ तौं तिनइंद्रियोंकानिरोधहमारेसैं कैसेहोइसकैगा ॥ ऐसोअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् तिनइंद्रियोंकेनिरोधकाउपाय कथनकरेहै ॥

तानिसर्वाणिसंयम्ययुक्तआसीतमत्परः ॥ वशेहियस्येंद्रियाणितस्यप्रज्ञाप्रतिष्ठिता ६१

तानि । सर्वाणि । संयम्य । युक्तः । आसीत । मत्परः । वशे । हि । यस्य । इंद्रियाणि । तस्य । प्रज्ञा । प्रतिष्ठिता । इतिपद० ॥

हेअर्जुन हमाराअनन्यभक्त तिनै सर्वइंद्रियोंकूं वशकरिकै निगृहीतमनवालाहूआ स्थितहोवै जिस पुरुषके यहइंद्रिय वशवर्त्तिहैं तिसपुरुषकी सोप्रज्ञा स्थिररहोवैहै ॥ ६१ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ ज्ञानकेसाधनरूप जोश्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियहैं ॥ तथा क्रियाकेसाधनरूप जेवाकादिकपंचकर्मइंद्रियहैं ॥ ति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नसर्वइंद्रियोंकूं आपणेवशकरिकै अर्थात् शब्दादिकविषयोंतैं तिनइंद्रियोंकानिरोधकरिकैयहविवेकीपुरुष मनकेनिग्रहवा लाहूआस्थितहोवै अर्थात् बाह्यअंतरसर्वव्यापारोंतैंरहितहूआ स्थितहोवै ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्व आपनैं तिनइंद्रियोंकूं महान्बलवान्कह्याथा॥ऐसेबलवान्इंद्रियोंकूं आपणेवशकरणा कैसेसंभवैंगा॥ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहे है(मत्परःइति)हेअर्जुन सर्वप्राणीमात्रकाआत्मारूपजोमैंवासुदेवहूं॥सोमैंवासुदेवहींसर्वतैंउत्कृष्टहूं जिसपुरुषकूं तापुरुषकानाम मत्परहै॥ऐसा मेराअनन्यभक्तही तिनइंद्रियोंकूं आपणेवशकरेहै॥तहांश्लोक॥(नवासुदेवभक्तानामशुभंविद्यतेक चित्) अर्थयह ॥ सर्वप्राणीमात्रकाआत्मारूपजोवासुदेवहै॥तावासुदेवकेअनन्यभक्तोंकूं किसीभीकार्यविषे अशुभकीप्राप्ति होवैनहीं ॥ किंतु सर्वकार्य ताके निर्विघ्नसमाप्तहोवैहैं इति ॥ यहवार्त्ता लोकविषेभीप्रसिद्धहै ॥ जैसे इसपुरुषनैं जबपर्यंत किसीबलवान्महाराजाका आश्रयनहींलीयाहै ॥ तबपर्यंतहींतिसपुरुषकूं अन्यशत्रु दुःखकीप्राप्तिकरेहैं ॥ और यहपुरुष जबी ताबलवान्महाराजाकेआश्रयकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहपुरुष अबीमहाराजाकेआश्रयकूंप्राप्तभयाहै याप्रकार मानिकरिकै तेशत्रु आपहीं तिसपुरुषकेवशहोइजावैहैं ॥ तैसे यहअधिकारीपुरुषभी जबपर्यंत सर्वांतर्यामीईश्वरकेशरणकूंप्राप्तनहींभयाहै॥ तबपर्यंतहीं यहश्रोत्रादिकइंद्रिय ताअधिकारीपुरुषकूं बहिर्मुखकरेहैं ॥ और यहअधिकारीपुरुष जबी ताअंतर्यामीईश्वरकेशरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहअधिकारीपुरुष अबीअंतर्यामीईश्वरकेशरणकूंप्राप्तभयाहै याप्रकार मानिकरिकैते इंद्रिय आपेहीं ताअधिकारीपुरुषके वशभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यहसर्वअर्थ (वशेहि) यावचनविषेस्थित हि याशब्दकरिकै भगवान्नैं सूचनकऱ्या ॥ ऐसेभगवद्भक्तिकेमहान्प्रभावकूं आगेविस्तारकरिकैनिरूपणकरैंगे ॥ अब श्रीभगवान् तिनइं

272

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

द्रियोंकेवशकरणेकाफल कथनकरैहै ॥ (वशेहिइति) हेअर्जुन जिसविद्वान्पुरुषके तेश्रोत्रादिकइंद्रियवशहोवैहैं ॥ तिसी विद्वान्पुरुषकी साशास्त्रजन्यप्रज्ञा स्थिरताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं (किमासीत) यातृतीयप्रश्नका यहउत्तरसिद्धभया ॥ सो विद्वान्पुरुष श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंकूं ॥ आपणेवशकरिकैस्थितहोवैहै इति ॥ ६१ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् मन विषेजोअनर्थकीकारणताहै सोबाह्यइंद्रियोंकीप्रवृत्तिद्वाराहींहै ॥ स्वभावतैं मनविषे अनर्थकीकारणताहैनहीं ॥ यातैं जिसपुरुषनैं श्रोत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकानिग्रहकऱ्याहै तिसपुरुषकूं दांतोंतैंरहितकऱ्येहूएसर्पकीन्यांई मनकेनहींनिग्रहकी एहूएभी किसीअनर्थकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु बाह्यप्रवृत्तिकेअभावकरिकैहीं सोपुरुष कृतकृत्यहोवैहै ॥ यातैं पूर्वश्लोकविषे (युक्तआसीत)यावचनकरिकै आपनैं कथनकऱ्याजो मनकानिग्रहहै सोव्यर्थहीं कथनकऱ्याहै॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए॥ श्रीभगवान् सर्वइंद्रियोंकेनिग्रहवान्पुरुषकूंभी मनकेनहींनिग्रहकीयेहूए सर्वअनर्थोंकीप्राप्ति दोश्लोकोंकरिकैकथनकरेहै॥

ध्यायतोविषयान्पुंसःसंगस्तेषूपजायते ॥ संगात्संजायतेकामःका मात्क्रोधोभिजायते ॥ ६२ ॥ क्रोधाद्भवतिसंमोहःसंमोहात्स्मृति विभ्रमः ॥ स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशोबुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ ६३ ॥

ध्यायतः । विषयान् । पुंसः । संगः । तेषु । उपजायते । संगात् । संजायते । कामः । कामात् । क्रोधः । अभिजायते ॥ ६२ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्रोधात्।भवति।संमोहः।संमोहात्।स्मृतिविभ्रमः।स्मृतिभ्रंशात्।बुद्धिनाशः।बुद्धिनाशात्।प्रणश्यति ६३ इतिपद० हेअर्जुन शब्दादिकविषयोंकूं मनकरिकैध्यानकरतेहूए पुरुषका तिनविषयोंविषे संग उत्पन्नहोवैहै ता संगतैं काम उत्पन्नहोवैहै ताकामतैं क्रोध उत्पन्नहोवैहै ॥ ६२ ॥ ताक्रोधतैं संमोहहो वैहै तासंमोहतैं स्मृतिका विभ्रंशहोवैहै तास्मृतिकेभ्रंशतैं बुद्धिकानाशहोवैहै ताबुद्धिकेनाशतैं नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ६३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष आपणेश्रोत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकूं शब्दादिकविषयोंतैंनिरोधकरिकैभी मनकरिकै वारंवा रतिनशब्दादिकविषयोंकाचिंतनकरेहै ॥ तिसपुरुषका तिनविषयोंविषे अवश्यकरिकै संगउत्पन्नहोवैहै ॥ ईहां यहवि षय हमारेसुखकेसाधनहै याप्रकारका शोभनअध्यासरूपजाप्रीतिविशेषहै ताकानाम संगहै ॥ और तासुखसाधन ताज्ञानरूपसंगतैं तिसपुरुषका तिनविषयोंविषे काम उत्पन्नहोवैहै ॥ ईहां यहविषय हमारेकूं कबप्राप्तहोवैंगा याप्र कारकीतृष्णाविशेषकानाम कामहै ॥ और किसीअन्यपुरुषकरिकैहननकूंप्राप्तहूआजो सोतृष्णारूपकामहै ॥ तिस कामतैं ताहननकरणेहारेअन्यपुरुषविषयक अभिज्वलनरूपक्रोध उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताअभिज्वलनरूपक्रोधतैं कार्यअकार्यकेविवेककाअभावरूप संमोह उत्पन्नहोवैहै ॥ और तासंमोहतैं गुरुशास्त्रकरिकैउपदिष्टअर्थकाअनुसंधा नरूपस्मृतिका विभ्रंशहोवैहै ॥ और तास्मृतिकेविभ्रंशतैं अद्वितीयआत्माकारमनकीवृत्तिरूपबुद्धिका नाशहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ विपरीतभावनाकीवृद्धिरूपदोषकरिकै प्रतिबंधहोणेतैं ताबुद्धिकोउत्पत्तिहींनहींहोवैहै ॥ तथा उत्पन्नहू ईताबुद्धिका फलकीप्राप्तिकरणेविषेअयोग्यताकरिकै विलयहोइजावैहै ॥ यहहीं ताबुद्धिकानाशहैइति और ताबुद्धिके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाशतैं सोपुरुष नाशकूंप्राप्तहोवैहै अर्थात् सर्वपुरुषार्थकेअयोग्यहोवैहै काहेतैं इसलोकविषेभी जोपुरुष पुरुषार्थके अयोग्यहोवैहै ॥ सोपुरुष यहमरयाहूआहै याप्रकारकेलोकोंकेव्यवहारकाविषयहोवैहै ॥ तैसे सर्वपुरुषार्थकेअयोग्यहू आयहपुरुष मृत्युहूआहींजानणा ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जोपुरुष मनकेनिग्रहकूंनकरिकै केवलबाह्यइंद्रियोंका हींनिग्रहकरेहै ॥ तिसपुरुषकूंभी जबी महान्अनर्थकोप्राप्तिहोवैहै ॥ तबी मन इंद्रिय दोनोंकेनिग्रहतैंरहितपुरुषकूं महान्अनर्थकीप्राप्तिहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहैं ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष महान्प्रयत्नकरिकैभी तामनकानिग्रहकरै ॥ तामनकेनिग्रहतैंविना केवल बाह्यइंद्रियोंकेनिग्रहमात्रकरिकै सास्थितप्रज्ञता प्राप्तहोवैनहीं इति ॥ ६३ ॥

ॐ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे बाह्यइंद्रियोंकेनिग्रहकीयेहूएभी मनकेनहींनिग्रहकीयेहूए दोषकीप्राप्तिकथनकरी ॥ अब मनकेनिग्रहकीएहूए बाह्यइंद्रियोंकेनहींनिग्रहहूएभी तादोषकीप्राप्तिहोवैनहीं याअर्थकूंकथनकरताहूआ श्रीभगवान् (किंव्रजेत) याचतुर्थप्रश्नकेउत्तरकूं अष्टश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै ॥

रागद्वेषवियुक्तैस्तुविषयानिंद्रियैश्चरन् ॥ आत्मवश्यैर्विधेयात्माप्रसादमधिगच्छति ६४

रागद्वेषवियुक्तैः । तु । वियान् । इंद्रियैः । चरन् । आत्मवश्यैः । विधेयात्मा । प्रसादं । अधिगच्छति ॥ ६४ ॥ इतिपद० ॥

हेअर्जुन मनकेनिग्रहवालापुरुष तौं रागद्वेषतैंरहित तथामनकेअधीन ऐसे इंद्रियोंकरिकै विषयोंकूं ग्रहणकरताहूआभी चित्तकेस्वच्छताकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ ६४ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ जिसपुरुषनैं मनकानिग्रह नहींकरयाहै ॥ सोपुरुष बाह्यश्रोत्रादिकइंद्रियोंकानिग्रहकरिकैभी रागद्वेषयुक्तमनकरिकै शब्दादिकविषयोंकाचिंतनकरताहूआ जैसे पुरुषार्थतैंभ्रष्टहोवैहै ॥ तैसे मनकेनिग्रहवालापुरुष तापुरुषार्थतैं भ्रष्टहोवैनहीं ॥ याप्रकारकीविलक्षणताबोधनकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं (रागद्वेषवियुक्तैस्तु) यावचनविषेस्थित तु यहशब्दकथनकरयाहै ॥ हेअर्जुन जिसपुरुषनैं आपणेमनकानिग्रहकरयाहै ॥ सोपुरुषतौं तावशीकृतमनकेअधीनवर्त्तणेहारे तथारागद्वेषतैंरहित ऐसेंश्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै शास्त्रविहितशब्दादिकविषयोंकूंग्रहणकरताहूआभी प्रसादकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ ईहां परमात्माकेसाक्षात्कारकीयोग्यतारूपजा चित्तकीस्वच्छताहै ताकानाम प्रसादहै ॥ जेइंद्रिय रागद्वेषकरिकैयुक्तहोवैहैं ॥ तेइंद्रियहीं दोषकेकारणहोवैहैं ॥ और यहविद्वान्पुरुष जबी मनकूंआपणेवशकरेहै ॥ तबी रागद्वेषदोनों निवृत्तहोइजावैहैं ॥ और तिसरागद्वेषकेअभावहूए तारागद्वेषकेअधीनइंद्रियोंकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ और प्रारब्धकर्मोंकेविद्यमानहूए तिनशब्दादिकविषयोंकोप्रतीति निवृत्तकरीजावैनहीं ॥ यातैं शास्त्रविहितशब्दादिकविषयोंकोप्रतीतिमात्र ताविद्वान्पुरुषकूं दोषकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ इतनैंकहणेकरिकै याशंकाकोभीनिवृत्तिकरी ॥ तिनशब्दादिकविषयोंकास्मरणमात्रभी जबी अनर्थकाकारणहै तबी तिनशब्दादिकविषयोंकाभोगतौं महान्अनर्थकाकारणहोवैंगा ॥ यातैं आपणेप्राणोंकीरक्षाकरणेवासतै तिनशब्दादिकविषयोंकूंभोगताहूआ सोविद्वान्पुरुष ताअनर्थकूंक्युंनहींप्राप्तहोवैंगा ॥ किंतु सोविद्वान्पुरुषभी अवश्यकरिकैअनर्थकूंप्राप्तहोवैंगाइतिशंका ॥ यातैं (किंव्रजेत) याचतुर्थप्रश्नका यहउत्तरसिद्धभया ॥ रागद्वेषतैंरहित तथाआपणेवशवर्त्ति ऐसेश्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै सोविद्वान्पुरुष शा ॥ १३१ ॥

276

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्रविहितशब्दादिकविषयोंकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ ६४ ॥* ॥ तहांपूर्वश्लोकविषे सोमनकेनिग्रहवालापुरुष प्रसादकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता कथनकरी ॥ तहां ताचित्तकीस्वच्छतारूपप्रसादकेप्राप्तहूए कौंनफल प्राप्तहोवैहै ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताप्रसादकेफलकाकथनकरेहै ॥

प्रसादेसर्वदुःखानांहानिरस्योपजायते ॥ प्रसन्नचेतसोह्याशुबुद्धिःपर्यवतिष्ठते ॥ ६५ ॥

प्रसादे । सर्वदुःखानां । हानिः । अस्य । उपजायते । प्रसन्नचेतसः । हि । आशु । बुद्धिः । पर्यवतिष्ठते ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन ताप्रसादकेप्राप्तहूए इसविद्वान्संन्यासीके सर्वदुःखोंका नाश होवैहै जिसकारण तैं तास्वच्छचित्तवालेसंन्यासीकी बुद्धि शीघ्रहीं स्थिरहोवैहै ॥ ६५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ ताचित्तकीस्वच्छतारूपप्रसादकेप्राप्तहूए इसविद्वान्संन्यासीके अज्ञानजन्य आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैविक सर्वदुःखोंकानाशहोवैहै ॥ जिसकारणतैं तास्वच्छचित्तवालेसंन्यासीकी ब्रह्म आत्मा यादोनोंकेअभेदकूंविषयकरणेहारीबुद्धि शीघ्रहीं स्थिरहोवैहै ॥ काहेतैं असंभावना तथाविपरीतभावना यहदोनोंहीं ताबुद्धिकोस्थिरताविषेप्रतिबंधकहोवैहैं ॥ तेअसंभावनाविपरीतभावनादोनों ताविद्वान्पुरुषविषेहैनहीं ॥ यातैंप्रतिबंधतैंरहितहूई साबुद्धि शीघ्रहीं स्थिरभावकूंप्राप्तहोवैहै॥ ईहांयद्यपि चित्तकोस्वच्छतारूपप्रसादकेप्राप्तहूएभी साक्षात् आध्यात्मिकादिकदुःखोंकीनिवृत्ति होवैनहीं॥किंतु परंपराकरिकै तिनदुःखोंकीनिवृत्तिहोवैहै॥तहां चित्तकेप्रसादतैंबुद्धिकीस्थिरताहोवैहै॥ताबुद्धिकीस्थिरतातैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ताबुद्धिकेविरोधीअज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तिसअज्ञानकी निवृत्तितै ताअज्ञानकेकार्यरूपसकलदुःखोंकीहानिहोवै है ॥ इसप्रकारकीपरंपराकरिकै तिनदुःखोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं चित्तकेप्रसादहूए सर्वदुःखोंकानाश कथनकरणा संभवतानहीं ॥ तथापिताचित्तकेप्रसादकीप्राप्तिवासतै प्रयत्नकीअधिकताबोधनकरणेवासतै ताचित्तकेप्रसादविषे सर्वदुःखोंकेनाशकीकारणताकथनकरीहै ॥ यातैं किंचित्मात्रभीविरोधकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ ६५ ॥ ※ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषेअन्वयमुखकरिकैकथनकरयाजोअर्थहै तिसीअर्थकूं अब व्यतिरेकमुखकरिकै दृढकरेहैं ॥

278

नास्तिबुद्धिरयुक्तस्यनचायुक्तस्यभावना ॥नचाभावयतःशांतिरशांतस्यकुतःसुखं६६

नँ । अँस्ति । बुँद्धिः । अँयुक्तस्य । नँ । चँ । अँयुक्तस्य । भँावना । नँ । चँ । अँभावयतः । शँांतिः । अशँांतस्य । कँुतः । सँुखं । इतिप०

हेअर्जुन चित्तकेजयतैंरहितपुरुषकूं बुँद्धि नँहीं उत्पँन्नहोवैहै तँथा ताअयुक्तँपुरुषकूं भँावना नँहींउत्पन्नहोवैहै तँथा ताभँावनातैंरहितपुरुषकूं शँांति नँहींउत्पन्नहोवैहै ताशांतिरहितपुरुषकूं सँुख कँहांतैंहोवै ॥ ६६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ जिसपुरुषनैं आपणेचित्तकूंनहींवशकऱ्याहै तापुरुषकानाम अयुक्तहै ऐसेअयुक्तपुरुषकूं श्रवणमननरूपवे दांतविचारकरिकैजन्य आत्मविषयकबुद्धि उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और ताबुद्धिकेअभावहूए तिसअयुक्तपुरुषकूं विजातीय वृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहरूपनिदिध्यासनरूपभावना उत्पन्नहोवैनहीं ॥ औरतानिदिध्या सनरूपभावनातैंरहितपुरुषकूं कार्यसहितअविद्याकेनिवृत्तकरणेहारी तथातत्त्वमसिआदिकवेदांतवाक्योंतैंजन्य तथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जीवब्रह्मकेअभेदकूंविषयकरणेहारी साक्षात्काररूपशांति नहींउत्पन्नहोवैहै ॥ और ताआत्मसाक्षात्काररूपशांतितैंर
हितपुरुषकूं मोक्षानंदरूपसुख प्राप्तहोवैनहींइति ॥ ६६ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताअयुक्तपुरुषविषे साबुद्धि
तिसकारणतैंनहींउत्पन्नहोती ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताबुद्धिकीनउत्पत्तिविषे कारणकथनकरेहै ॥

279

इंद्रियाणांहिचरतांयन्मनोनुविधीयते ॥ तदस्यहरतिप्रज्ञांवायुर्नावमिवांभसि ॥ ६७ ॥

इंद्रियाणां । हि । चरतां । यत् । मनः । अनुविधीयते । तत् । अस्य । हरति । प्रज्ञां । वायुः । नावं । इव । अंभसि ॥ इतिप०
हेअर्जुन जिसकारणतैं आपणेआपणेविषयोंविषेप्रवर्त्तमान इंद्रियोंकेमध्यविषे जिसएक
इंद्रियकूंभी लक्ष्यकरिकै यहमन प्रवर्त्तहोवैहै सोएकइंद्रियभी इससाधकपुरुषकी प्रज्ञाकूं
हरणकरेहै जैसे जलविषेस्थित नौकाकूं प्रतिकूलवायु हरणकरेहै ॥ ६७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंविषेप्रवर्त्तमान ऐसेजे नहींवशकर्येहूएश्रोत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तिनश्रोत्रादि
कइंद्रियोंकेमध्यविषे जिसएकइंद्रियकेअनुसारीहूआभी यहमन प्रवर्त्तहोवैहैं ॥ सोमनसहकृत एकइंद्रियभी इससाधक
पुरुषकी अथवातिसमनकी शास्त्रजन्यआत्माविषयकप्रज्ञाकूं निवृत्तकरिदेवैहै ॥ जैसे जलविषेस्थितनौकाकूं प्रति
कूलवायू पाषाणादिकोंविषेलेजाइकै नाशकरिदेवैहै ॥ तैसे सोएकइंद्रियभी याअधिकारीपुरुषकेप्रज्ञाकूं बहिर्मुखता
करिकै नाशकरदेवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ रागद्वेषयुक्तमनकीसहायताकूंलैके आपणेविषयविषे प्रवर्त्तहूआ एकइंद्रियभी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जबी इसअधिकारीपुरुषकी ताप्रज्ञाकूंनाशकरेहै ॥ तबो तेसर्वइंद्रिय इसअधिकारीपुरुषकेप्रज्ञाकूंनाशकरेहैं याके विषेक्याकारणहै ॥ तहां प्रतिकूलवायुकूं जलविषेहीं नौकाकेहरणकरणेकासामर्थ्यहै पृथिवीविषेस्थित नौकाकेहरणकरणेकासामर्थ्यहैनहीं ॥ इसअर्थकेसूचनकरणेवासतै दृष्टांतविषे (अंभसि) यहपद कथनकऱ्याहै ॥ इसप्रकार दार्ष्टांतिकविषे जलकेसमान जोमनकीचंचलताहै ताचंचलताकेविद्यमानहूएहीं ताइंद्रियकूं तिसप्रज्ञाहरणकरणेकासामर्थ्य होवैहै ॥ और पृथिवीकेसमान जोमनकीस्थिरताहै ॥ तास्थिरताकेविद्यमानहूए ताइंद्रियकूं तिसप्रज्ञाकेहरणकरणेकासामर्थ्यहोवैनहींइति ॥ ईहां अन्यटीकावोंविषे (यत् तत्) यादोनोंशब्दोंतैंमनकाग्रहणकरिकै यहअर्थकऱ्याहै ॥ विषयोंविषेप्रवृत्तइंद्रियोंकूंलक्ष्यकरिकै जोमन तिनइंद्रियोंकेअनुसारीवर्त्तेहै ॥ सोमन इसपुरुषकेप्रज्ञाकूं हरणकरेहै इति ॥ ६७ ॥

280

तस्माद्यस्यमहाबाहोनिगृहीतानिसर्वशः॥इंद्रियाणींद्रियार्थेभ्यस्तस्यप्रज्ञाप्रतिष्ठिता६८

तस्मात् । यस्य । महाबाहो । निगृहीतानि । सर्वशः । इंद्रियाणि। इंद्रियार्थेभ्यः।तस्य । प्रज्ञा । प्रतिष्ठिता॥इतिप० ॥

तिसकारणतैं हेमहान्बाहुवालाअर्जुन जिसपुरुषके तेसर्व इंद्रिय आपणेशब्दादिकविषयोंतैं निवृत्तहूएहैं तिसपुरुषकीहीं साप्रज्ञा स्थिरहोवैहै ॥ ६८ ॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेमहान्बाहुवालाअर्जुन जिसकारणतैं बहिर्मुखहूए यहइंद्रिय इसपुरुषकीप्रज्ञाकूंनशकरेहैं ॥ तिसकारणतैं जिसपुरुषके यहमनसहितश्रोत्रादिकसर्वइंद्रिय आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंतैं निग्रहकूंप्राप्तहूएहैं ॥ तिसतत्त्व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेत्तारूपसिद्धपुरुषकीहीं अथवा मुमुक्षुरूपसाधकपुरुषकीहीं साआत्मविषयकप्रज्ञा स्थिरहोवैहै ॥ इंद्रियोंकेनिग्रहतैंर हितपुरुषकी साप्रज्ञा स्थिरहोवैनहीं ॥ ईहां (हेमहाबाहो) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ तूंअ र्जुन सर्वबाह्यशत्रुवोंकेनिवारण करणेविषे समर्थहैं ॥ यातैं अंतरइंद्रियरूपशत्रुवोंकेनिवृत्तकरणेविषेभी तूं समर्थहैंइति ॥ तहां मनसहितइंद्रियोंकासंयम तत्त्ववेत्तास्थितप्रज्ञपुरुषकातों लक्षणरूपहै ॥ औरमुमुक्षुजनकेप्रति सोमनसहितइंद्रियों कासंयम ताप्रज्ञाकीप्राप्तिकासाधनरूपहै ॥ याकारणतैंहीं (तस्य) याशब्दकरिकै तत्त्ववेत्ताका तथामुमुक्षुका दोनों काग्रहणकऱ्याहै ॥ यातैं मुमुक्षुजननैं आपणेप्रज्ञाकीस्थिरताकरणेवासतै अत्यंतप्रयत्नपूर्वक तिनइंद्रियोंका संयमकर णाइति ॥ ६८ ॥ ※ ॥ अब तास्थितप्रज्ञके सर्वइंद्रियोंकासंयम स्वतःहींसिद्धहै इसअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

यानिशासर्वभूतानांतस्यांजागर्तिसंयमी॥यस्यांजाग्रतिभूतानिसानिशापश्यतोमुनेः॥

या१ । निशा२ । सर्वभूतानां३ । तस्यां४ । जागर्त्ति५ । संयमी६ । यस्यां७ । जाग्रति८ । भूतानि९ । सा१० । निशा११ । पश्यतः१२ । मुनेः१३ ॥ इतिप० ॥ हेअर्जुन जासाक्षात्काररूपप्रज्ञा सर्वअज्ञानीजनोंकी रात्रिहै ताप्रज्ञारूपरात्रिविषे इंद्रियोंकेसंयमवालापुरुष जागताहै औ र जिसअविद्यारूपनिद्राविषे यहसर्वअज्ञानीपुरुष जागतेहैं साअविद्या साक्षात्कारवान् स्थितप्रज्ञकी रात्रिहै॥६९॥इ०प० ॥ टीका ॥ वेदांतवाक्योंकरिकैजन्यजा मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकीसाक्षात्काररूपप्रज्ञाहै ॥ साप्रज्ञा अज्ञानीपुरुषोंकेप्र ति अप्रकाशरूपहै ॥ यातैं साआत्मसाक्षात्काररूपप्रज्ञा तिनअज्ञानीपुरुषोंकेप्रति लोकप्रसिद्धरात्रिकीन्यांई रात्रि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूपहै ॥ ताब्रह्मविद्यारूप सर्वअज्ञानीजनोंकीरात्रिविषे मनसहितइंद्रियोंकेसंयमवाला स्थितप्रज्ञपुरुष अज्ञानरूप निद्रातैंजाग्रतहूआ सावधानवर्त्तेहै ॥ और जिसद्वैतदर्शनरूपअविद्यारूपनिद्राविषे सोयेहूए यहअज्ञानीपुरुष स्वप्न कीन्यांई नानाप्रकारके व्यवहारोकूंकरेहैं ॥ साअविद्या आत्मसाक्षात्कारवान्स्थितप्रज्ञकी लोकप्रसिद्धरात्रिकीन्यां ई रात्रिरूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जबपर्यंत यहपुरुष निद्रातैंजाग्रतनहींहोता तबपर्यंतहीं नानाप्रकारकेस्वप्नकादर्शनहो वैहै ॥ तानिद्रातैंजाग्रतहूएतैंअनंतर तिनस्वप्नोंकादर्शनहोवैनहीं ॥ काहेतैं बाधपर्यंतहीं भ्रमकोविद्यमानताहोवैहै ॥ बा धकेउत्तरकालविषे सोभ्रमरहैनहीं ॥ जैसे यहसर्पनहींहै किंतु रज्जुहै याप्रकारकेबाधपर्यंतहीं तासर्पभ्रमकीस्थितिहो वैह ॥ ताबाधकेहूए सोसर्पभ्रम रहैनहीं ॥ तैसे याअधिकारीपुरुषकूं जबपर्यंत तत्त्वज्ञानकीप्राप्तिनहींभई ॥ तबपर्यं तहीं यहसंसारभ्रमरहेहै ॥ और तत्त्वज्ञानकेप्राप्तहूए सोसंसारभ्रम निवृत्तहोइजावैहै ॥ यातैं ताज्ञानकालविषे तावि द्वान्पुरुषका ताभ्रमजन्यकोईभीव्यवहारहोवैनहीं इति ॥ यहवार्त्ता वार्त्तिकग्रंथकेकर्त्ता सुरेश्वराचार्यनैंभीकथनकरी है ॥ तहांश्लोकत्रयं ॥ (कारकव्यवहारेहिशुद्धंवस्तुनवीक्ष्यते ॥ शुद्धेवस्तुनिसिद्धेचकारकव्यावृतिस्तथा ॥ १ ॥ काको लूकनिशेवायंसंसारोऽज्ञात्मवेदिनोः ॥ यानिशासर्वभूतानामित्यवोचत्स्वयंहरिः ॥ २ ॥ बुद्धतत्त्वस्यलोकोयंजडोन्मत्त पिशाचवत् ॥ बुद्धतत्त्वोपिलोकस्यजडोन्मत्तपिशाचवत् ॥ ३ ॥) अर्थयह ॥ कर्त्ता करण इत्यादिककारकोंकेव्यवहारहूए शुद्धआत्मवस्तु देखाजावैनहीं ॥ और ताशुद्धआत्मवस्तुकेसिद्धहूए तिनसर्वकारकोंकोनिवृत्तिहोइजावैहैइति ॥ १ ॥ किंवा जैसे काकपक्षीको जायहलोकप्रसिद्धरात्रिहै सारात्रि उलूकपक्षीकीहैनहीं ॥ किंतु उलूकपक्षी तालोकप्रसिद्धरात्रि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषे नानाप्रकारकेखानपानादिकव्यवहारकरेहै ॥ और ताउलूकपक्षीकी जायहलोकप्रसिद्धदिनरूपरात्रिहै ॥ सोदिन ताकाकपक्षीकीरात्रिनहींहै ॥ किंतु तादिनविषे सोकाक नानाप्रकारकेखानपानादिकव्यवहारकरेहै ॥ तैसेहीं अज्ञानीपुरुषकूं तथा आत्मवेत्तापुरुषकूं यहसंसारहै ॥ यहवार्त्ता (यानिशासर्वभूतानां) यावचनकरिकै श्रीकृष्णभगवान् आपहीं कहताभयाहैइति ॥ २ ॥ किंवा जिसपुरुषनैं आपणेवास्तवस्वरूपकूं जान्याहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूं यहसर्वलोक जडउन्मत्तपिशाचकीन्यांई प्रतीतहोवैहैं ॥ और तिनसर्वलोकोंकूं भी सोविद्वान्पुरुष जडउन्मत्तपिशाचकीन्यांई प्रतीतहोवैहैइति ॥ ३ ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जिसपुरुषकूं जिसवस्तुकाविपरीतदर्शनहोवैहैं ॥ तिसपुरुषकूं तिसवस्तुका सम्यक्दर्शनहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोवस्तुकाविपरीतदर्शन तावस्तुकेसम्यक्दर्शनकेअभावकरिकैहीं जन्यहोवैहै ॥ और जिसपुरुषकूं जिसवस्तुकासम्यक्दर्शनहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं तिसवस्तुकाविपरीतदर्शनहोवैनहीं ॥ काहेतैं ताविपरीतदर्शनकाकारणरूपजो तावस्तुकाअदर्शनहै ॥ सोवस्तुकाअदर्शन तावस्तुकेसम्यक्दर्शनकरिकैनिवृत्तहोइजावैहै ॥ जैसे जिसपुरुषकूं रज्जुविषे यहसर्पहै याप्रकारकाविपरीतदर्शनहूआहै ॥ तिसपुरुषकूं तिसकालविषे यहरज्जुहै याप्रकारका सम्यक्दर्शनहोवैनहीं ॥ और जिसपुरुषकूं यहरज्जुहै याप्रकारका सम्यक्दर्शनहूआहै ॥ तिसपुरुषकूं तिसकालविषे यहसर्पहै याप्रकारकाविपरीतदर्शनहोवैनहीं ॥ तैसे आत्माकेवास्तवस्वरूपकूं जानणेहारेविद्वान्पुरुषकूं प्रपंचविषयकविपरीतदर्शनहोवैनहीं ॥ और प्रपंचविषयकविपरीतदर्शनवालेअज्ञानीपुरुषोंकूं आत्माकासम्यक्दर्शनहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (यत्र वाअन्यदिवस्यात्तत्रान्योऽन्यत्पश्येत्इति ॥ यत्रत्वस्यसर्वमात्मैवाभूत्तत्केनकंपश्येत्इति ॥) अर्थयह ॥ जिसअविद्याकालवि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

षे यहअद्वितीयआत्मा द्वैतकोन्यांई होवैहै ॥ तिसअविद्याकालविषे यहपुरुष आपणेकूंअन्यमानिकै आपणेतैंभिन्नअन्यप
दार्थोंकूंदेखेहैइति ॥ और जिसविद्याकालविषे इसविद्वान्पुरुषकूं यहसर्वजगत् आपणाआत्मारूपहींहोताभयाहै ॥ तिस
विद्याकालविषे यहविद्वान्पुरुष तिसकरणकरिकै किसपदार्थकूं आपणेतैंभिन्नदेखे ॥ किंतु सोविद्वान्पुरुष आपणेतैंभिन्न
किसीपदार्थकूंभीदेखतानहींइति ॥ यहदोनोंश्रुतियां यथाक्रमतैं अविद्याकीव्यवस्थाकूं तथाविद्याकीव्यवस्थाकूं कथनक
रेहैं ॥ यातैं तत्त्वदर्शीविद्वान्पुरुषविषे अविद्याकृतक्रियाकारकादिकव्यवहार कदाचित्भी संभवैनहीं ॥ यातैं तास्थितप्र
ज्ञविद्वान्पुरुषका सोइंद्रियोंकासंयम स्वभावतैंहींसिद्धहै ॥ मुमुक्षुकोन्यांई कोईप्रयत्नसाध्यनहींहै इति ॥ ६९ ॥ ❋ ॥ तहां
तास्थितप्रज्ञविद्वान्पुरुषकाइंद्रियोंकासंयम जैसे स्वभावतैंहींसिद्धहै ॥ तैसे तास्थितप्रज्ञविद्वान्पुरुषकेसर्वविक्षेपोंकीशां
तिभी स्वभावतैंहींसिद्धहै ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् दृष्टांतकरिकैनिरूपणकरेहै ॥

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठंसमुद्रमापःप्रविशंतियद्वत् ॥ तद्वत्का
मायंप्रविशंतिसर्वेसशांतिमाप्नोतिनकामकामी ॥ ७० ॥

आपूर्यमाणं । अचलप्रतिष्ठं । समुद्रं । आपः । प्रविशंति । यद्वत् । तद्वत् । कामाः । यं ।
प्रविशंति । सर्वे । सः । शांतिं । आप्नोति । न ॥ कामकामी ॥ ७० ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जिसप्रकार सर्वनदीयोंकरिकैपूर्णकरयेहूए तथाअचलप्रतिष्ठावाले समुद्रकूं वर्षाकेजल प्रवेशकरेहैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिसँप्रकार जिसस्थितप्रज्ञपुरुषकूं सर्व शब्दादिकेंविषयं प्रवेशकरेहैं सोस्थितप्रज्ञपुरुषहीं सर्वविक्षेपकीनिवृ
त्तिरूपशांतिकूं प्राप्तहोवैहै विषयोंकीकामनावालापुरुष ताशांतिकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ ७० ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ श्रीगंगा यमुना गोदावरी सिंधु सरस्वती इत्यादिकसर्वनदीयोंकेजलोंकरिकै सर्वओरतैंपूर्णहूआजोसमुद्रहै ॥
तासमुद्रकूंहीं वृष्टिआदिकोंतैंउत्पन्नहूएसर्वजल प्रवेशकरेहैं ॥ तिनसर्वजलोंकेप्रवेशहूएभी सोसमुद्र अचलप्रतिष्ठहींरहेहै
॥ नहींपरित्यागकरीहैआपणीमर्यादाजिसनैं ताकानाम अचलप्रतिष्ठहै ॥ अथवा मैनाकादिकपर्वतोंकानाम अचलहै ॥ ति
नमैनाकादिकपर्वतोंकोहैस्थितिजिसविषे ताकानाम अचलप्रतिष्ठहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै तासमुद्रकेगंभीरताकीअधिकता
वर्णनकरी ॥ ऐसेमहान्गंभीरसमुद्रविषेहीं तेसर्वजल प्रवेशकरेहैं ॥ परंतु तिनजलोंकेप्रवेशकरणेतैं सोसमुद्र किंचित्
मात्रभी क्षोभकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ तैसे निर्विकाररूपकरिकैस्थित जिसस्थितप्रज्ञपुरु
षकूं यहअज्ञानीपुरुषोंकीकामनाकेविषय शब्दादिकविषय प्रारब्धकर्मकेवशतैंप्राप्तहोवैहैं ॥ परंतु तेशब्दादिकविषय जि
सविद्वान्पुरुषकूं विकारकोप्राप्तिकरिसकतेनहीं ॥ ऐसा महान्समुद्रकेसमान सोस्थितप्रज्ञविद्वान्पुरुषहीं लौकिकवैदिक
सर्वकर्मोंकीनिवृत्तिरूप तथाकार्यसहितअविद्याकीनिवृत्तिरूप शांतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष तिनशब्दादिकविषयों
केप्राप्तिकोइच्छावालाहै ॥ सोपुरुष ताशांतिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सोविषयासक्तपुरुष सर्वकालविषे तालौकिकवैदिक
कर्मरूपविक्षेपकरिकै महान्क्लेशरूपसमुद्रविषे मग्नहोवैहै ॥ इतनैंकरिकै यहअर्थकह्यागया ॥ जिसपुरुषकूं गुरुशास्त्रकेउ
पदेशतैं आत्मसाक्षात्कारकोप्राप्तिभईहै ॥ तिसज्ञानवान्पुरुषकूंहीं फलरूपविद्वत्संन्यास प्राप्तहोवैहै ॥ तथा तिसज्ञानवा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नपुरुषकूंहीं सर्वविक्षेपकीनिवृत्तिरूप जीवन्मुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तथा विषयभोगोंकेप्राप्तहूएभी निर्विकारताहींहोवैहै इति ॥ ७० ॥ ※ ॥ जिसकारणतैं विषयोंकीकामनावालापुरुष ताशांतिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तिसकारणतैं प्राप्तहूए भी तिनविषयोंकूं यहविवेकीपुरुष परित्यागहींकरै ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् कहेहै ॥

286

विहायकामान्यःसर्वान्पुमांश्चरतिनिःस्पृहः॥निर्ममोनिरहंकारःसशांतिमधिगच्छति॥

विहाय॥कामान्॥यः॥सर्वान्॥पुमान्॥चरति॥निःस्पृहः॥निर्ममः॥निरहंकारः॥सः॥शांतिं ॥ अधिगच्छति ॥ इतिपद० ॥

हेअर्जुन जो पुरुष सर्व कामोंकूं परित्यागकरिकै निःस्पृहहूआ तथानिर्ममहूआ तथा निरहंकारहूआ विचरैहै सोस्थितप्रज्ञ ताशांतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ७१ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ गृह क्षेत्र धन आदिकजितनैंकीबाहरिलेकामहै ॥ तथा मनोराज्यरूप जितनैंकीअंतरलेकामहैं ॥ तथा वासनामात्ररूप जितनैंकीकामहैं ॥ ऐसेतीनप्रकारकेकामोंकूं जोपुरुष मार्गविषेचलतेहूए तृणोंकेस्पर्शकीन्याईं तुच्छ जानिकै उपेक्षाकरिदेवैहै ॥ तथा जोपुरुष आपणेशरीरकेजीवनमात्रकोइच्छातैंभीरहितहै ॥ तथा जोपुरुष शरीरइंद्रियादिकसंघातविषे यहहींमैंहूं याप्रकारकेअभिमानरूपअहंकारतैंरहितहै ॥ अथवा विद्या उत्तमआश्रम आदिकोंकीप्राप्तिकरिकैजन्य जोआपणेविषेउत्कृष्टताबुद्धिरूपअहंकारहै ताअहंकारतैंरहितहै ॥ निरहंकारहोणेतैं जोपुरुष निर्ममहै ॥ अर्थात् शरीरकेनिर्वाहवासतै प्रारब्धकर्मनैं प्राप्तकरयेजे कंथाकौपीनादिकहैं तिनोंविषेभी यहहमारेहैं याप्रका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रकेअभिमानतैं जोपुरुष रहितहै ॥ इसप्रकार सर्वपदार्थोंकीउपेक्षाकरिकै तथानिःस्पृहहोइकै तथानिरहंकारहोइकै तथानिर्ममहोइकै जोपुरुष प्रारब्धकर्मकेवशतैं शास्त्रविहितभोगोंकूंभोगेहै ॥ अथवा आपणोइच्छापूर्वक जहांतहांविच रेहै ॥ सोइसप्रकारकास्थितप्रज्ञपुरुष सर्वसंसारदुःखोंकीउपरामतारूप कार्यसहितअविद्याकीनिवृत्तिरूप शांतिकूं आत्मज्ञानकेबलतैं प्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकाव्रजन तास्थितप्रज्ञपुरुषकाहोवैहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै (किंव्रजेत) या चतुर्थप्रश्नकाउत्तरसिद्धभयाइति ॥ ७१ ॥ * ॥ तहां पूर्वग्रंथविषे च्यारिप्रश्नोंकेच्यारिउत्तरोंकेव्याजकरिकै स्थितप्रज्ञपुरुषके सर्वलक्षणोंकूं मुमुक्षुजननैं अवश्यसंपादनकरणा यहअर्थ निरूपणकरया ॥ अब निष्कामकर्मयोगका फलरूपजासांख्यनिष्ठाहै तासांख्यनिष्ठाकी फलकेनिरूपणकरिकै स्तुतिकरताहूआ श्रीभगवान् ताकाउपसंहारकरेहै ॥

एषाब्राह्मीस्थितिःपार्थनैनांप्राप्यविमुह्यति॥स्थित्वास्यामंतकालेपिब्रह्मनिर्वाणमृच्छति

इतिश्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां श्रीभीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सांख्ययोगोनामद्वितीयोऽध्यायःसमाप्तः ॥ २ ॥ ॥ ७५ ॥

एषा।ब्राह्मी।स्थितिः।पार्थ।नैं।एनां।प्राप्य।विमुह्यति।स्थित्वा।अस्यां।अंतकाले।अपि।ब्रह्मनिर्वाणं।ऋच्छति।इतिप०॥

हेपार्थ यहजा ब्रह्मविषयक स्थितिहै इसकूं प्राप्तहोइकै कोइभीपुरुष नहीं मोहकूंप्राप्तहोवैहै इसास्थितिविषे अंत्यअवस्थाविषे स्थितहोइकै भी यहपुरुष ब्रह्मनिर्वाणकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ७२ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वहमनैं तुमारेप्रति स्थितप्रज्ञपुरुषकेलक्षणोंकेव्योंजकरिकैकथनकरीहूई तथा (एषातेंभाहता सांख्येबुद्धिः) इसवचनकरिकैकथनकरीहूई जा सर्वकर्मोंकेसंन्यासपूर्वक परमात्माकाज्ञानरूप स्थितिहै ॥ कैसीहैसा स्थिति ॥ प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकूं विषयकरणेहारीहै ॥ यातैं तास्थितिकूं ब्राह्मीकहेहैं ॥ ऐसीब्रह्मनिष्ठारूपस्थितिकूं जो कोईपुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ सोपुरुष पुनःकदाचित्भी अज्ञानरूपमोहकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोअज्ञान अनादिहै अर्थात् उत्पत्तितैंरहितहै ॥ यातैं आत्मज्ञानकरिकै एकवार नाशकूंप्राप्तहूआसोअज्ञान पुनःकदाचित्भी उत्पन्नहोवैन हीं ॥ ऐसोब्रह्मनिष्ठारूपस्थितिविषे जोकोईपुरुष अंत्यअवस्थाविषेभी स्थितहोवैहै ॥ सोपुरुषभी ब्रह्मनिर्वाणकूं प्राप्त होवैहै ॥ अर्थात् ब्रह्मविषेहींआनंदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा ब्रह्मरूपआनंदकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार अभेदरूपकरिकैप्रा प्तहोवैहै ॥ ईहां (निर्वाणं) यहपद आनंदकाबोधकहै ॥ और किसीटीकाविषेतौं (ब्रह्म निर्वाणं) यहदोनोंपदभिन्न मानिकरिकैयहअर्थकरयाहै ॥ ताब्राह्मीस्थितिविषे स्थितहोइकै सोविद्वान्पुरुष ब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥जैसे स्वर्गादि कलोक गमनरूपक्रियाकरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे सोब्रह्म भी गमनरूपक्रियाकरिकैप्राप्तहोताहोवैंगा ॥ ऐसीशंकाकेहूए ताशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै ताब्रह्मकाविशेषणकहेहैं (निर्वाणंइति) निर्गतंवानंगमनंयस्मिन्प्राप्येब्रह्मणितन्निर्वाणं ॥ अर्थयह ॥ निवृत्तहोइगईहैगमनरूपक्रिया जिसब्रह्मविषे ताकानाम निर्वाणहै ॥ तहांश्रुति (नतस्यप्राणाउत्क्रामंत्यत्रैवसमवलीयंते ब्रह्मैवसन्ब्रह्माप्येति) अर्थयह ॥ मरणकालविषे जैसे अज्ञानीपुरुषोंकेप्राण इसशरीरतैं उत्क्रमणक रेहैं ॥ तैसे तिसब्रह्मवेत्ताज्ञानोपुरुषकेप्राण इसशरीरतैंबाहिर उत्क्रमणकरतेनहीं ॥ किंतु तेप्राण इसशरीरकेभीत

288

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रहीं लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और यह विद्वान्पुरुष ब्रह्मरूपहूआहीं ब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ ईहा (अंतकालेपि) या वचनविषेस्थितजो (अपि) यहशब्दहै ॥ ताअपिशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं यहकैमुतिकन्याय सूचनकरया ॥ यहअधिकारीपुरुष जबी अंत्यअवस्थाविषेभी ताब्रह्मनिष्ठाविषेस्थितहोइकै ताआनंदस्वरूपब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ तबी जो पुरुष ब्रह्मचर्यआश्रमतैंहीं संन्यासकूंकरिकै मरणपर्यंत ताब्राह्मीस्थितिविषे स्थितहूआहै ॥ सोपुरुष ताब्रह्मकूंप्राप्त होवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ तहांश्लोक (विज्ञायचरमावस्थांदेवताभ्योनृपोत्तमः ॥ खट्वांगनामाराजर्षिर्मुहूर्तेंमुक्तिमेयिवान् इति) अर्थयह ॥ सर्वराजावोंविषेश्रेष्ठ खट्वांगनामाराजऋषि आपणोअंत्यअवस्थाकूंदेखिकै देवतावोंके उपदेशतैं एकमुहूर्त्तमात्रविषे कैवल्यमुक्तिकूं प्राप्तहोताभया इति ॥ अब इसद्वितीयअध्यायविषे विस्तारतैंनिरूपणकरयाजोअर्थहै ॥ तासर्वअर्थका संक्षेपतैंनिरूपणकरणेहाराश्लोक कथनकरेहैं (ज्ञानंतत्साधनंकर्मसत्वशुद्धिश्चतत्फलं ॥ तत्फलंज्ञाननिष्ठैवेत्यध्यायेऽस्मिन्प्रकीर्त्तितं) अर्थयह ॥ इसभगवद्गीताकेद्वितीयअध्यायविषे आत्मज्ञानकाकथनकरयाहै ॥ तथा ताज्ञानका परंपरासाधनरूप निष्कामकर्म कथनकरयाहै ॥ और तानिष्कामकर्मका अंतःकरणकीशुद्धिरूपफल कथनकरयाहै ॥ और ताअंतःकरणकेशुद्धिका ज्ञाननिष्ठारूपफल कथनकरयाहै ॥ इतनैंपदार्थ इसद्वितीय अध्यायविषे कथनकरेहैं इति ॥ ७२ ॥ * ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमत्स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येणस्वामिचिद्घनानंदगिरिणाविरचितायां प्राकृतटीकायां श्रीभगवद्गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां सर्वगीतार्थसूत्रंनाम द्वितीयोऽध्यायःसमाप्तः ॥ २ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥इति श्रीभगवद्गीताभाषाटीकायां द्वितीयोध्यायः॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

291

॥अथ श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायांतृतीयोध्यायः॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ तृतीयाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां इसभगवद्गीताकेप्रथमअध्यायकरिकै उपोद्घातकऱ्याजो संपूर्णगीताशास्त्रकाअर्थहै ॥ सोसंपूर्णगीताशास्त्रकाअर्थ सूत्ररूपद्वितीयअध्यायकरिकैसूचनकऱ्याहै ॥ सोप्रकारदिखावैहैं ॥ याअधिकारीपुरुषकूंप्रथम निष्कामकर्मनिष्ठाहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर अंतःकरणकीशुद्धिहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर शमदमादिकसाधनपूर्वक सर्वकर्मोंकासंन्यासहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर वेदांतवाक्योंकेविचारसहित भगवद्भक्तिनिष्ठाहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर तत्त्वज्ञाननिष्ठाहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर तिसतत्त्वज्ञाननिष्ठाका त्रिगुणात्मकअविद्याकीनिवृत्तिपूर्वक जीवन्मुक्तिरूपफल होवैहै ॥ सोजीवन्मुक्तिरूपफल प्रारब्धकर्मकेफलभोगपर्यंतरहेहै ॥ ताप्रारब्धकर्मकेसमाप्तहूएतैंअनंतर विदेहमुक्ति होवैहै ॥ तहां जीवन्मुक्तिदशाविषे परमपुरुषार्थकेआलंबनकरिकै इसपुरुषकूं परवैराग्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तापरवैराग्यकीप्राप्तिविषे दैवीसंपदनामाशुभवासना उपयोगीहोवैहै ॥ यातैं साशुभवासनातौं ग्रहणकरणेयोग्यहै ॥ और आसुरीसंपदनामा अशुभवासना तापरवैराग्यकीप्राप्तिविषेविरोधीहै ॥ यातैं साअशुभवासना परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ तहां दैवीसंपदाका असाधारणकारण सात्विकीश्रद्धाहै ॥ और आसुरीसंपदाका असाधारणकारण राजसीतथातामसीश्रद्धाहै ॥ इसप्रकार ग्रहणकरणेकेयोग्य तथापरित्यागकरणेकेयोग्य पदार्थोंका विभागकरिकै सर्वगीताशास्त्रकेअर्थकीपरिसमाप्ति होवैहै ॥ सोसर्वअर्थ इसगीताकेसूत्ररूपद्वितीयअध्यायविषे सूचनकऱ्याहै ॥ तहां इसगीताकेद्वितीयअध्यायविषे (योगस्थःकुरुकर्माणि) इत्यादिकवचनोंकरिकैसूचनकरीजा अंतःकरणकेशुद्धिकासाधनरूप

292

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निष्कामकर्मनिष्ठाहै ॥ सानिष्कामकर्मनिष्ठा सामान्यरूपकरिकै तथाविशेषरूपकरिकै इसगीताके तृतीय चतुर्थ या दोनोंअध्यायोंविषे निरूपणकरीहै ॥ तिसतैंअनंतर (विहायकामान्यःसर्वान्) इत्यादिकवचनोंकरिकैसूचनकरीजा शुद्धअंतःकरणवालेअधिकारीपुरुषकूं शमदमादिकसाधनसंपत्तिपूर्वक सर्वकर्मोंकेसंन्यासकीनिष्ठाहै ॥ सासर्वकर्मसंन्या सनिष्ठा इसगीताके पंचम षष्ठ यादोनोंअध्यायोंविषेनिरूपणकरीहै ॥ इतनैंकरिकै त्वंपदार्थकानिरूपणसिद्धभया ॥ तिसतैंअनंतर (युक्तआसीतमत्परः) इत्यादिकवचनोंकरिकैसूचनकरीजा वेदांतवाक्योंकेविचारसहित अनेकप्रका रको भगवद्भक्तिनिष्ठाहै ॥ साभगवद्भक्तिनिष्ठा इसगीताके सप्तम अष्टम नवम दशम एकादश द्वादश याषट्अध्या योंविषे निरूपणकरीहै ॥ इतनैंकरिकै तत्पदार्थकानिरूपणसिद्धभया ॥ तहां पूर्वपूर्वअध्यायका उत्तरउत्तरअध्याय केसाथि संबंधरूपजेअवांतरसंगतिहैं तथाअवांतरप्रयोजनोंकाभेदहै तेदोनों तिसतिसअध्यायकेव्याख्यानविषे हम निरूपणकरैंगे ॥ तिसतैंअनंतर (वेदाविनाशिनंनित्यं) इत्यादिकवचनोंकरिकैसूचनकरीजा तत्त्वंपदार्थकाअभेदज्ञा नरूपतत्त्वज्ञाननिष्ठाहै ॥ सातत्त्वज्ञाननिष्ठा इसगीताके त्रयोदशेअध्यायविषे प्रकृतिपुरुषकेविवेकद्वारा निरूपणक रीहै ॥ तिसतैंअनंतर (त्रैगुण्यविषयावेदानिस्त्रैगुण्योभवार्जुन) इत्यादिकवचनोंकरिकैसूचनकऱ्याजो त्रैगुण्यनिवृत्ति रूप ताज्ञाननिष्ठाकाफलहै ॥ सोफल इसगीताके चतुर्दशेअध्यायविषे निरूपणकऱ्याहै ॥ सात्रैगुण्यकीनिवृत्तिहीं जो वन्मुक्तिहै यहवार्त्ता गुणातीतपुरुषकेलक्षणोंकेकथनकरिकै निरूपणकरीहै ॥ तिसतैंअनंतर (तदागंतासिनिर्वेदं) इ त्यादिकवचनोंकरिकैसूचनकरीजा परवैराग्यनिष्ठाहै ॥ सापरवैराग्यनिष्ठा इसगीताके पंचदशेअध्यायविषे संसाररू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पवृक्षकेउच्छेदनद्वारा निरूपणकरीहै ॥ तिसतैंअनंतर (दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः) इत्यादिकवचनोंविषे स्थितप्रज्ञपुरुषके लक्षणकरिकैसूचनकरीजा तिसपरवैराग्यकोउपयोगीदैवीसंपदाहै सादैवीसंपदातौं ग्रहणकरणेयोग्यहै ॥ और (यामिमांपुष्पितांवाचं) इत्यादिकवचनोंकरिकैसूचनकरीजा तापरवैराग्यकोविरोधी आसुरीसंपदाहै साआसुरीसंपदा परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ यहसर्ववार्त्ता इसगीताके षोडशेअध्यायविषे कथनकरीहै ॥ तिसतैंअनंतर (निर्द्वंद्वोनित्यसत्वस्थः) इत्यादिकवचनोंकरिकैसूचनकरीजा तादैवीसंपदाका असाधारणकारणरूप सात्विकीश्रद्धाहै ॥ सासात्विकीश्रद्धा इसगीताके सप्तदशेअध्यायविषे राजसीतामसीश्रद्धाकीनिवृत्तिपूर्वक कथनकरीहै ॥ इसप्रकार त्रयोदशेअध्यायतैं आदिलैके सप्तदशेअध्यायपर्यंत पंचअध्यायोंविषे फलसहितज्ञाननिष्ठा निरूपणकरीहै ॥ तिसतैंअनंतर इसगीताके अष्टादशेअध्यायविषे पूर्वकथनकऱ्येहूएसर्वअर्थका उपसंहारकऱ्याहै ॥ इसप्रकारसैं सर्वगीताकेअर्थका परस्परसंबंध सिद्धहोवैहै इति ॥ तहां पूर्वद्वितीयअध्यायविषे सांख्यबुद्धिकूंआश्रयणकरिकै श्रीभगवान्नैं (एषातेऽभिहितासांख्येबुद्धिः) इत्यादिकवचनोंकरिकै ज्ञाननिष्ठाकथनकरीथी॥तथा योगबुद्धिकूंआश्रयणकरिकै श्रीभगवान्नैं (योगेत्विमांशृणु) इसतैंआदिलैके (कर्मण्येवाधिकारस्तेमातेसंगोऽस्त्वकर्मणि) इसवचनपर्यंत सर्ववचनोंकरिकै कर्मनिष्ठाकथनकरीथी ॥ परंतु ज्ञाननिष्ठा तथाकर्मनिष्ठा यादोनोंनिष्ठावोंकेअधिकारीकाभेद श्रीभगवान्नैं स्पष्टकरिकैकथनकऱ्यानहीं ॥ शंका ॥ तिनदोनोंनिष्ठावोंका एकहींअधिकारीहै ॥ काहेतैं ज्ञान कर्म दोनोंकासमुच्चयहीं मोक्षकेप्राप्तिकाहेतुहै ॥ समाधान ॥ ज्ञान कर्म यादोनोंकासमुच्चय अंगीकारकरिकै तिनदोनोंकोएकअधिकारिता श्रीभगवान्कूं वांछि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तहैनहीं ॥ काहेतैं (दूरेणह्यवरंकर्मबुद्धियोगाद्धनंजय) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं ज्ञाननिष्ठाकीअपेक्षाकरिकै क
र्मनिष्ठाविषे निकृष्टता कथनकरीहै ॥ और (यावानर्थउदपाने) यावचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आत्मज्ञानकेफलवि
षे सर्वकर्मोंकेफलका अंतर्भाव दिखायाहै ॥ और स्थितप्रज्ञपुरुषका लक्षणकहिकरिकै श्रीभगवान्नैं (एषाब्राह्मी
स्थितिःपार्थ) यावचनकरिकै प्रशंसासहित ज्ञानकेफलका उपसंहारकऱ्याहै ॥ और (यानिशासर्वभूतानां) इत्यादि
कवचनोंकरिकै श्रीभगवान्नैं ज्ञानवान्पुरुषकूं द्वैतदर्शनकेअभावतैं कर्मोंकेअनुष्ठानकाअसंभव कथनकऱ्याहै ॥ और
जैसे लोकविषे अंधकारकीनिवृत्तिविषे केवल प्रकाशमात्रकूंहींकारणताहोवैहै ॥ तैसे अविद्याकोनिवृत्तिरूपमोक्षफल
विषेभी केवल ज्ञानमात्रकूंहींकारणताहै ॥ और श्रुतिभी ज्ञानमात्रतैंहीं मोक्षकोप्राप्तिका कथनकरेहै ॥ तहांश्रुति
(तमेवविदित्वातिमृत्युमेति नान्यःपंथाविद्यतेऽयनाय ॥) अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष आनंदस्वरूपआत्माकूं सा
क्षात्कारकरिकै संसाररूपमृत्युकूंनाशकरैहै ॥ और मोक्षकीप्राप्तिवासतै आत्मसाक्षात्कारतैंविना दूसराकोईमा
र्गहैनहींइति ॥ यातैं ज्ञान कर्म यादोनोंकासमुच्चय संभवैनहीं ॥ तथा एकअधिकारिकताभी संभवैनहीं ॥ शंका ॥
जैसे प्रकाश तथाअंधकार यहदोनों परस्पर विरोधीहैं ॥ यातैं तिनदोनोंका समुच्चय संभवैनहीं ॥ तैसे आत्मज्ञान
तथाकर्म यहदोनोंभी परस्पर विरोधीहैं ॥ यातैं तिनदोनोंकाभी समुच्चय संभवैनहीं ॥ यातैं ज्ञान तथाकर्म इनदोनों
का भिन्नभिन्नहीं अधिकारीहोवैहै ॥ समाधान ॥ ज्ञान तथाकर्मइनदोनोंका भिन्नभिन्नहीं अधिकारीहोवैहै यहवार्त्ता
यद्यपि सत्यहै ॥ तथापि एकहींअर्जुनकेप्रति ज्ञान कर्म दोनोंकाउपदेशकरणा संभवतानहीं ॥ काहेतैं जोदेहाभिमा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नीपुरुष कर्मकाअधिकारीहोवैहै ॥ तिसपुरुषकेप्रति ज्ञाननिष्ठाकाउपदेशकरणा योग्यनहींहोवैहै ॥ और जोदेहाभिमा
नतैंरहितपुरुष ज्ञानकाअधिकारीहोवैहै ॥ तिसपुरुषकेप्रति कर्मनिष्ठाकाउपदेशकरणा योग्यनहींहोवैहै ॥ शंका ॥ एक
हींपुरुषकेप्रति विकल्पकरिकै ज्ञान कर्म यादोनोंकाउपदेश संभवहोइसकेहै ॥ समाधान ॥ समानस्वभाववालेपदार्थो
काहीं विकल्पकरिकै विधानहोवैहै ॥ जैसे होमविषे समानस्वभाववाले व्रीहियवादिकपदार्थोंका विकल्पकरिकैविधान
होवैहै ॥ परंतु उत्कृष्ट निकृष्टपदार्थोंका विकल्पकरिकैविधानहोवैनहीं ॥ और आत्मज्ञानकीअपेक्षाकरिकै कर्मोंवि
षे निकृष्टता तथाकर्मोंकीअपेक्षाकरिकै आत्मज्ञानविषे उत्कृष्टता (दूरेणह्यवरंकर्मबुद्धियोगाद्धनंजय) इत्यादिकवच
नोंकरिकैस्पष्टहींहै ॥ यातैं ज्ञान कर्म यादोनोंका विकल्पसंभवैनहीं ॥ किंवा कार्यसाहितअविद्याकीनिवृत्तिकरिकै
उपलक्षितजो ब्रह्मानंदरूपमोक्षहै ॥ तामोक्षविषे कर्मोंकेस्वर्गादिकफलकीन्यांई न्यूनअधिकता संभवैनहीं ॥याकारणतैंभी
ज्ञानकर्म यादोनोंकासमुच्चय संभवैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया॥ ज्ञाननिष्ठा तथाकर्मनिष्ठा यादोनोंनिष्ठावोंका जोकदा
चित् भिन्नभिन्न अधिकारीमानिये॥ तौंएकपुरुषकेप्रति तिनदोनोंनिष्ठावोंका उपदेश संभवैनहीं॥ और तिनदोनोंनिष्ठावों
का जोकदाचित् एकहींअधिकारीमानिये॥ तौं परस्परविरुद्ध तिनदोनोंनिष्ठावोंका समुच्चयनहींसंभवैंगा ॥ तथा कर्म
कीअपेक्षाकरिकै ताआत्मज्ञानविषे श्रेष्ठताभी नहींसिद्धहोवैंगी ॥ और ज्ञान कर्म यादोनोंका जोकदाचित् विकल्पअं
गीकारकरीये॥ तौं सर्वतैंउत्कृष्ट तथापरिश्रमतैंविनाहींसिद्धहोणेहारा जोआत्मज्ञानहै ॥ ताआत्मज्ञानकापरित्यागकरिकै
बहुतपरिश्रमकरिकैसिद्धहोणेहारा तथाअत्यंतनिकृष्ट ऐसेकर्मकाअनुष्ठान कोईभीपुरुष करैंगा ॥ इसप्रकारकाविचा

296

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रकरिकै अत्यंतव्याकुलहूईहैबुद्धिजिसको ऐसासोअर्जुन श्रीभगवान्केप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥

॥ अर्जुनउवाच ॥ ज्यायसीचेत्कर्मणस्तेमताबुद्धिर्जना
र्दन ॥ तत्किंकर्मणिघोरेमांनियोजयसिकेशव ॥ १ ॥

ज्यायसी । चेत् । कर्मणः । ते । मता । बुद्धिः । जनार्दन । तत् । किं । कर्मणि । घोरे । मां । नियोजयसि । केशव ।

हेजनार्दन तुमारेकूं जबी निष्कामकर्मतैं आत्मविषयकबुद्धि श्रेष्ठरूपकरिकै अभिमतहै तबी हेकेशव हिंसारूपघोर कर्मविषे तूं हमारेकूं किसवासतै प्रेरणाकरताहैं ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेजनार्दन जोकदाचित् तुमारेकूं निष्कामकर्मोतैं आत्मतत्वविषयकबुद्धि अत्यंतश्रेष्ठरूपताकरिकै अभिमतहै ॥ तौं हेकेशव हिंसादिकअनेकआयासोंकरिकैयुक्त इसयुद्धरूपघोरकर्मविषे मैं अत्यंतभक्तकूं (कर्मण्येवाधिकारस्ते) इत्यादिकवचनोंकरिकै आप वारंवार किसवासतै प्रेरणाकरतेहो ॥ तहां ॥ सर्वैर्जनैरर्घ्यतेयाच्यतेस्वाभिलषितसिद्धयेइतिजनार्दनः ॥ अर्थयह ॥ आपणेआपणेमनवांछितपदार्थोंकोप्राप्तिवासतै सर्वजनोंनैं जिसकेप्रति याचनाकरीतीहै ताकानाम जनार्दनहै ॥ अथवा ॥ जनं जननं तत्कारणमज्ञानंच स्वसाक्षात्कारेणार्दयतिहिनस्तीतिजनार्दनः ॥ अर्थयह ॥ जन्मकूं तथाजन्मकेकारणअज्ञानकूं जो आपणेसाक्षात्कारकरिकै नाशकरैहै ताकानाम जनार्दनहै ॥ ईहां (हेजनार्दन) यासंबोधनकरिकै अर्जुननैं यहअर्थसूचनकरया ॥ ऐसेयाचनाकरणेहारेभक्तजनोंकेप्रति आप मनवांछि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तपदार्थोंकीप्राप्तिकरणेहारेहो ॥ यातैं आपणेश्रेयकेनिश्चयकरणेवासतैं जोहमारी आपकेप्रति याचनाहै सोकोईअनुचितनहींहै इति ॥ और (हेकेशव) यासंबोधनकरिकै अर्जुननैं यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ सर्वकाईश्वर तथासर्वइष्टपदार्थोंकीप्राप्तिकरणेहारा जोआपभगवान्हो ॥ तिसएकआपकेहीं (शिष्यस्तेहंशाधिमां) इत्यादिकप्रार्थनापूर्वक शरणकूंप्राप्तभयाजो मैंभक्तअर्जुनहूं ॥ तिसहमारेसाथि वंचनाकरणी आपकूं उचितनहींहै इति ॥ १ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन मैंकृष्णभगवान् किसीभीप्राणीकेसाथि वंचनाकरतानहीं ॥ तौं तैंअत्यंतप्रियभक्तकेसाथि मैं किसप्रकार वंचनाकरौंगा ॥ किंतु नहींकरौंगा ॥ और तूंअर्जुन हमारेविषे तावंचनकरणेका कौंनचिन्हदेखताहै ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहूए ॥ अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति कहेहै ॥

व्यामिश्रेणेववाक्येनबुद्धिंमोहयसीवमे ॥ तदेकंवदनिश्चित्ययेनश्रेयोहमाप्नुयां ॥ २ ॥

व्यामिश्रेण । इव । वाक्येन । बुद्धिं । मोहयसि । इव । मे । तत् । एकं । वद । निश्चित्य । येन । श्रेयः । अहं । आप्नुयां ॥ २ ॥

हेभगवन् मिल्येहूएवचनकी न्यांई वचनकरिकै आप हमारे बुद्धिकूं मोहकर्त्ताकीन्यांई मोहकीप्राप्तिकरतेहो तिसं एकंअधिकारकूं आप निश्चयकरिकै कथनकरो जिसकरिकै मैंअर्जुन मोक्षकूं प्राप्तहोवौं ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् (त्रैगुण्यविषयावेदानिस्त्रैगुण्योभवार्जुन) इत्यादिकवचनोंकरिकै आप पूर्व किसीस्थलविषेतौं वेदनिष्ठाकापरित्याग करावते भयेंहो ॥ और (कर्मण्येवाधिकारस्ते) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्व किसीस्थलविषेतौं आप ति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सीवेदनिष्ठाकाग्रहण करावतेभयेहो ॥ और (निर्द्वंद्वोनित्यसत्वस्थोनिर्योगक्षेमआत्मवान्) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्व किसीस्थलविषेतौं आप निवृत्तिमार्गकाउपदेश करतेभयेहो ॥ और (धर्म्याद्धियुद्धाच्छ्रेयोन्यत्क्षत्रियस्यनविद्यते) इत्यादिकवचनोंकरिकैपूर्व किसीस्थलविषेतौं आप प्रवृत्तिमार्गकाउपदेशकरतेभयेहो ॥ इसप्रकार ज्ञाननिष्ठाकूंतथाकर्मनिष्ठाकूंप्रतिपादनकरणेहारेजेआपकेवचनहैं॥तेआपकेवचन यद्यपि मिल्येहूएअर्थकूं कथनकरतेनहीं॥किंतु भिन्नभिन्न अर्थकूंकथन करतेहैं॥तथापि मैंअर्जुनकूं आपणेबुद्धिकेदोषतैं ज्ञाननिष्ठा कर्मनिष्ठा यादोनोंका एकहींअधिकारीहै अथवा भिन्नभिन्नअधिकारीहै याप्रकारकेसंशयकरिकैमिल्येहूएअर्थकेवाचक प्रतीतहोवैहैं॥यहअर्थअर्जुननैं(व्यामिश्रेणेव) यावचनविषेस्थित इव याशब्दकरिकैसूचनकर्या इति ॥ हेभगवन् ऐसेज्ञानकर्मनिष्ठाकेप्रतिपादक व्यामिश्रितवाक्योंकरिकैआप मैंमंदबुद्धि अर्जुनकेअंतःकरणकूं मानो मोहकीप्राप्तिकरतेहो ॥ ईहां (मोहयसीव) यावचनविषेस्थितजो इव यहशब्दहैताइवशब्दकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकर्या ॥ आप परमकृपालुहो ॥ यातैं आप हमारेमोहकेनिवृत्तकरणेवासतैहीं प्रवृत्तहूएहो॥को ईहमारेकूंमोहकरणेवासतैं आप प्रवृत्तहूएनहीं ॥ तथापि आपकेवचनोंकूंश्रवणकरिकै हमारेकूं जोभ्रमरूपमोहभयाहै ॥ सो आपणेअंतःकरणकेदोषतैंभयाहैइति ॥ हेभगवन् ज्ञान कर्म यादोनोंका जोकदाचित् एकहींपुरुष अधिकारीहोवै ॥ तौं परस्परविरुद्धहोणेतैं ताज्ञानकर्मदोनोंका समुच्चय नहींसंभवैंगा ॥ और ज्ञान कर्म यहदोनों एकअर्थकेहेतुहैंनहीं ॥ यातैं तिनदोनोंका विकल्पभी संभवैनहीं ॥ और पूर्वउक्तरीतिसैं जोकदाचित् आप ज्ञान कर्म यादोनोके अधिकारीकाभेद मानतेहोवौ ॥ तौं एकहींमैंअर्जुनकेप्रति परस्परविरुद्ध ज्ाननिष्ठा तथाकर्मनिष्ठा यादोनोंकाउपदेश संभवतानहीं ॥ और जैसे ए

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कहींपुरुष एकहीं कालविषे परस्परविरुद्ध स्थिति तथागमन यादोनोंकेकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ तैसे एकहींमैंअर्जुन एकहींकालविषे परस्परविरुद्ध ज्ञाननिष्ठा तथाकर्मनिष्ठा यादोनोंकेअनुष्ठानकरणेविषे समर्थहूंनहीं ॥ यातैं ज्ञानकाअधिकार तथाकर्मकाअधिकार यादोनोंविषे एकअधिकारकूं आप निश्चयकरिकै हमारेप्रति कथनकरो ॥ जिसअधिकार निश्चयपूर्वक आपकेवचनकरिकै मैंअर्जुन ज्ञान कर्म यादोनोंकेमध्यविषे एक ज्ञानका अथवा कर्मका अनष्ठानकरिकै मोक्षरूप श्रेयकूं प्राप्तहोवौं ॥ ईहां ज्ञाननिष्ठा कर्मनिष्ठा यादोनोंनिष्ठावोंका जोएकअधिकारी अंगीकारकीये तौं तिनदोनोंनिष्ठावोंकाविकल्प तथासमुच्चय संभवैनहीं ॥ यातैं तिनदोनोंनिष्ठावोंकेअधिकारीकेभेदजानणेवासतै यहदोश्लोककरिकै अर्जुनका प्रश्नहैयहसिद्धभया इति ॥ ॥ २ ॥ ❋ ॥ इसप्रकार जबीअर्जुननैं ज्ञाननिष्ठातथाकर्मनिष्ठा यादोनोंनिष्ठावोंके अधिकारीके भेदकाप्रश्नकर्‍या ॥ तबी सोश्रीभगवान् अजुनकेअनुसारी उत्तरकूं कहताभया ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ लोकेस्मिन्द्विविधानिष्ठापुराप्रोक्ताम यानघ ॥ ज्ञानयोगेनसांख्यानांकर्मयोगेनयोगिनां ॥ ३ ॥

लोके[३] । अस्मिन्[२] । द्विविधा[६] । निष्ठा[७] । पुरा[४] । प्रोक्ता[८] । मया[५] । अनघ[१] । ज्ञानयोगेन[१०] । सांख्यानां[९] । कर्मयोगेन[१२] । योगिनां[११] । इतिपद० ॥ हेपापतैंरहितअर्जुन इस[२] लोकविषे[३] पूर्वअध्यायविषे[४] हमनैं[५] दोप्रकारको[६] निष्ठा[७] कथनकरीथीतहां तत्ववेत्तापुरुषोंकूं[९] ज्ञानरूपयोगकरिकै[१०] सानिष्ठाकहीथी और कर्मरूपयोगवान्पुरुषोंकूं[११] कर्मरूपयोगकरिकै[१२] सानिष्ठाकथनकरीथी ॥ ३ ॥ इतिप० ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अधिकारीरूपकरिकैअंगीकारकऱ्येजे शुद्धअंतःकरणवाले तथाअशुद्धअंतःकरणवाले दोप्रकारके जनहैं ॥ तादोप्रकारकेजनरूप इसलोकविषे ज्ञानपरतारूप तथाकर्मपरतारूप दोप्रकारकीस्थितिरूपनिष्ठा पूर्वअ ध्यायविषे मैंकृष्णभगवान्नैं तुमारेप्रति स्पष्टरूपकरिकै कथनकरीथी ॥ यातैं ज्ाननिष्ठा तथाकर्मनिष्ठा यादोनों निष्ठावोंविषे एकअधिकारीशंकाकरिकै तूं ग्लानिकूं मत प्राप्तहोउ ॥ ईहां (हेअनघ) अर्थात् हेपापोंतैंरहित ॥ यासं बोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं ताअर्जुनविषे ब्रह्मविद्याकेउपदेशकीयोग्यता सूचनकरी ॥ काहेतैं (ज्ञानमुत्पद्यतेपुंसांक्ष यात्पापस्यकर्मणः) इत्यादिकशास्त्रोंकेवचनोनैं पापकर्मतैंरहितपुरुषोंविषेहीं आत्मज्ञानकेउत्पत्तिकीयोग्यता कथन करीहैइति ॥ और साएकहींस्थितिरूपनिष्ठा साध्यअवस्था तथासाधनअवस्था यादोनोंअवस्थावोंकेभेदकरिकै दो प्रकारकीहोवैहै ॥ कोई दोनोंहींनिष्ठा स्वतंत्रहैंनहीं याअर्थकेबोधकरणेवासतैं श्रीभगवान्नैं (निष्ठा) यापदवि षे एकवचन कथनकऱ्याहै ॥ जोकदाचित् स्वतंत्र दोनोंनिष्ठा भगवान्कूं अभिमतहोतीयां ॥ तौं निष्ठे याप्रकारकेद्वि वचनकूं भगवान् कथनकरता ॥ इसअर्थकूं (एकंसांख्यंचयोगंचयःपश्यति) यावचनकरिकै श्रीभगवान् आगे कथनकरैंगाइति ॥ अब तिसीहींस्थितिरूपनिष्ठाकूं दोप्रकारतारूपकरिकै वर्णनकरेहैं (ज्ञानयोगेनसांख्या नांइति) प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकूंविषयकरणेहारीजाबुद्धिहै ताकानाम सांख्याहै ॥ तासांख्यानामाबुद्धिकूंजेप्राप्तहूएहै तिनोंकानाम सांख्यहै ॥ अर्थात् जिनपुरुषोंनैं ब्रह्मचर्यआश्रमतैंहीं संन्यासकूंधारणकऱ्याहै ॥ तथा जिनपुरुषोंनैं वेदां तकेश्रवणमननादिकोंकरिकै आत्मवस्तुकूंनिश्चयकऱ्याहै तथा जेपुरुष ज्ञानभूमिकाविषेआरूढहूएहैं ॥ ऐसेशुद्धअं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तःकरणवाले सांख्यनामापुरुषोंकूं (तानिसर्वाणिसंयम्ययुक्तआसीतमत्परः) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्व ज्ञानरूप योग करिकैहीं सानिष्ठाकथनकरीहै ॥ (युज्यतेब्रह्मणाअनेनसयोगः) अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष जिसकरिकै ब्रह्मके साथि जुडेहै ताकानाम योगहैइति ॥ और यहअधिकारीपुरुष ताज्ञानकरिकैहीं ब्रह्मकेसाथि अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सोज्ञानहीं योगरूपहै इति ॥ और जिनपुरुषोंकाअंतःकरण शुद्धनहींभयाहै ॥ तथा जेपुरुष ज्ञानभूमिकाविषेआरूढनहींभएहैं ॥ ऐसेकर्मोकेअधिकारीरूप योगीरूप योगीपुरुषोंकूं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञानभूमिकाविषेआरूढहोणेवासतै (धर्म्याद्धियुद्धाच्छ्रेयोन्यत्क्षत्रियस्यनविद्यते) इत्यादिकवचनोंकरिकै कर्मरूपयोगकरिकैहीं पूर्व सानिष्ठाकथन करीहै ॥ ईहां (युज्यतेअंतःकरणशुद्ध्याअनेनसयोगः) अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष जिसकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिकेसाथिजुडेहै ताकानाम योगहैइति ॥ ऐसेअंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारे निष्कामकर्महैं ॥ यातैं तेनिष्कामकर्महीं योगरूपहैं ॥ याकहणेतैं यहअर्थसिद्धभया ॥ ज्ञान कर्म यादोनोंका पूर्वउक्तप्रकारतैं समुच्चय तथाविकल्प संभवैनहीं ॥ किंतु प्रथम निष्कामकर्मोकरिकै शुद्धहूआहैअंतःकरणजिनोंका ऐसेअधिकारीपुरुषोंकूं सर्वकर्मोकेसंन्यासकरिकैहीं आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं चित्तकीशुद्धिरूप तथाचित्तकीअशुद्धिरूप दोअवस्थावोंकेभेदकरिकैएकहींतैंअर्जुनकेप्रति हमनैं (एषातेभिहितासांख्येबुद्धिर्योगेत्विमांशृणु) इत्यादिकवचनोंकरिकै सादोप्रकारकीनिष्ठाकथनकरीहै ॥ यातैं भूमिकाकेभेदकरिकै एकहींपुरुषकेप्रति ज्ञान कर्म यादोनोंकाउपयोग संभवहोइसकेहै ॥ यातैं ज्ञान कर्म यादोनोंकेअधिकारकेभेदहूएभी उपदेशकीव्यर्थताहोवैनहींइति ॥ इसीअर्थकेजनावणेवासतै श्रीभगवान् इसतृतीयअध्यायविषे अशुद्धचित्तवालेपुरुषकूं

302

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ताचित्तकीशुद्धिपर्यंत निष्कामकर्मोंकेअनुष्ठानकीकर्त्तव्यता (नकर्मणामनारंभात्) इसतैंआदिलैके (मोघंपार्थसजीवति) इसवचनपर्यंत त्रयोदशश्लोकोंकरिकै कथनकरैंगा ॥ और जिनपुरुषोंकाचित्त शुद्धहूआहै ऐसेज्ञानवान्पुरुषोंकूंतौं तेकर्म किंचित्मात्रभी अपेक्षितनहींहैं याअर्थकूं (यस्त्वात्मरतिः) इत्यादिकदोश्लोकोंकरिकै कथनकरैंगे ॥ और तिसतैंअनंतर (तस्मादसक्तः) इत्यादिकवचनोंकरिकैतौं बंधकेहेतुरूपकर्मोंकूंभी फलकोइच्छातैंराहित्यरूपकौशल्यताकरिकै अंतःकरणकीशुद्धि तथाज्ञानकीउत्पत्तिद्वारा मोक्षकीहींकारणतासंभवैहै यहअर्थ कथनकरैंगे ॥ तिसतैंअनंतर (अथकेनप्रयुक्तोयं) याअर्जुनकेप्रश्नोकाउत्थापनकरिकै कामदोषकरिकैहीं काम्यकर्मोंकूं अंतःकरणकेशुद्धिकीकारणतानहींहै ॥ यातैं ताकामतैंरहितहोइकै कर्मोंकूंकरताहूआ तूं अर्जुन अंतःकरणकीशुद्धिकरिकै ज्ञानकाअधिकारीहोवैंगा ॥ यहअर्थ श्रीभगवान् इसतृतीयअध्यायकीसमाप्तिपर्यंतकथनकरैंगा इति ॥ ३ ॥ ॥ तहां जैसे मृत्तिका दंड चक्र कुलालआदिककारणोंकेअभावहूए घटरूपकार्यकीउत्पत्तिहींहोवैनहीं ॥ तैसे निष्कामकर्मरूपकारणकेअभावहूए ज्ञानरूपकार्यकोउत्पत्तिहींहोवैनहीं ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कथनकरेहै ॥

नकर्मणामनारंभान्नैष्कर्म्यंपुरुषोऽश्नुते ॥ नचसंन्यसनादेवसिद्धिंसमधिगच्छति ॥४॥

नं।कर्मणां।अनारंभात्।नैष्कर्म्यं।पुरुषः।अश्नुते।नं।चं।संन्यसनात्।एव।सिद्धिं।समधिगच्छति ॥४॥इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन यहअधिकारीपुरुष निष्कामकर्मोंके नकरणेतैं निष्कर्मभावकूं नहीं प्राप्तहोवैहै तथा संन्यासतैं भी ज्ञाननिष्ठाकूं नहीं प्राप्तहोवैहै ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ (तमेतंवेदानुवचनेन ब्राह्मणा विविदिषंति यज्ञेनदानेनतपसानाशकेन) ॥ याश्रुतिन आत्मज्ञानकीप्राप्तिवास तैकथनकरयेजे आपणेआपणेवर्णआश्रमकेअनुसार वेदाध्ययन यज्ञ दान तप इत्यादिककर्महैं ॥ तिन नित्यनैमित्तिकक र्मोंकूं जोपुरुष निष्कामहोइकैनहींकरेहै ॥ तिसपुरुषका अंतःकरणशुद्धहोवैनहीं ॥ और अंतःकरणकीशुद्धितैंविना यहपुरुष आत्मज्ञानकीप्राप्तिकेयोग्यहोवैनहीं ॥ यातैं निष्कामकर्मोंकेनहींकरणेतैं सोअशुद्धचित्तवालापुरुष सर्वक र्मोंतैंरहिततारूप नैष्कर्म्यकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ अर्थात् ज्ञानरूपयोगकरिकै तानिष्ठाकूंप्राप्तहोवैनहींइति ॥ शंका ॥ हेभ गवन् श्रुतिविषे सर्वकर्मोंकेसंन्यासतैंहीं ताज्ञाननिष्ठाकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ तथा तिनकर्मोंकरिकै ज्ञाननिष्ठाकेप्रा प्तिका निषेधभीकथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एतमेवप्रव्राजिनोलोकमिच्छंतःप्रव्रजंतिइति नकर्मणानप्रजयानधनेन त्यागेनैकेऽमृतत्वमानशुः ॥) अर्थयह ॥ संन्यासीयोकूंप्राप्तहोणेयोग्यजो अद्वितीयब्रह्मरूपलोकहै ताब्रह्मकेप्राप्तिकी इच्छाकरतेहूए यहअधिकारीपुरुष संन्यासकूंग्रहणकरेहैं इति ॥ और पूर्वकेईकविद्वान्पुरुष ब्रह्मभावकोप्राप्तिरूपमो क्षकूं अग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकै तथापुत्रादिकप्रजाकरिकै तथासुवर्णादिकधनकरिकै नहींप्राप्तहोतेभएहैं किंतु एक त्यागकरिकैहीं तामोक्षरूपअमृतकूं प्राप्तहोतेभएहैंइति ॥ यातैं सर्वकर्मोंकेसंन्यासतैंहीं साज्ञाननिष्ठा प्राप्तहोइसकेहै ॥ ताज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवासतै कर्मोंकूंकरणा व्यर्थहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (नचसंन्यसना त्इति) हेअर्जुन निष्कामकर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिकऱ्येतैंविनाहीं कीयाहूआजोसंन्यासहै ॥ तासंन्यास तैं सोअशुद्धअंतःकरणवालापुरुष मोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरणेहारी ज्ञाननिष्ठारूपसिद्धिकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तात्पर्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यह ॥ निष्कामकर्मोकेअनुष्ठानकरिकैजन्यजा चित्तकीशुद्धिहै ॥ ताचित्तशुद्धितैंविना प्रथम संन्यासहींनहींसंभवैहै ॥ काहेतैं (यदहरेवविरजेततदहरेवप्रव्रजेत) अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष जिसदिनविषे सर्वविषयसुखोंतैंवैराग्यकूंप्राप्तहोवै तिसीदिनविषे संन्यासकूंग्रहणकरैइति ॥ याश्रुतिनैं वैराग्यवान्पुरुषकूंहीं संन्यासकाअधिकारीकह्याहै ॥ सो वैराग्य अशुद्धचित्तवालेपुरुषकूंहोवैनहीं ॥ और सोअशुद्धचित्तवालापुरुष जोकदाचित् (दंडग्रहणमात्रेणनरोनारायणोभवेत्) अर्थयह ॥ दंडादिकचिन्होंकेग्रहणमात्रकरिकै यहपुरुष नारायणरूपहोवैहै इत्यादिकप्ररोचकवचनोंकूंश्रवणकरिकै औत्सुक्यमात्रकरिकै संन्यासकूंग्रहणभीकरेहै ॥ तौंभी ताअशुद्धचित्तवालेपुरुषकूं सोसंन्यास ज्ञाननिष्ठारूपफलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ उलटा प्रत्यवायकीहींप्राप्तिकरेहै ॥ ईहां कार्यके अधिकारका तथाफलका नविचारकरिकै ताकार्यविषेप्रवृत्तकरणेहाराजो अहलादविशेषहै ताकानाम औत्सुक्यहै ॥ तिसीऔत्सुक्यकूं कुतूहल कहेहैंइति ॥ और पूर्व सर्वकर्मोके त्यागरूपसंन्यासकरिकै मोक्षकीप्राप्तिकूंकथनकरणेहारेजेश्रुतिवचनकहेथे ॥ तेश्रुतिवचन शुद्धचित्तवालेपुरुषपरिहैं ॥ अशुद्धचित्तवालेपुरुषपरिहैंनहीं इति ॥ ४ ॥ ❋ ॥ तहां निष्कामकर्मोकेअनुष्ठानकरिकै जिसपुरुषकाचित्त शुद्ध नहींभयाहै ॥ सोपुरुष सर्वदा बहिर्मुखहींरहेहै ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रतिकहेहै ॥

नहिकश्चित्क्षणमपिजातुतिष्ठत्यकर्मकृत् ॥ कार्यतेह्यवशःकर्मसर्वःप्रकृतिजैर्गुणैः ॥ ५ ॥

नँ। हि[1]। कश्चित्[2]। क्षणं[4]अपि। जातु[3]। तिष्ठति[5]अकर्मकृत्। कार्यते[16]। हि[17]। अवशः[12]। कर्म[14]। सर्वः[13]। प्रकृतिजैः[10]। गुणैः[11]। इतिप०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन जिसकारणतैं कोईभीअज्ञानीपुरुष कदाचित् क्षणमात्र भी कर्मोंकूंनहींकरताहूआ नहीं स्थितहोवैहै जि
सकारणतैं प्रकृतिजन्य सत्त्वादिकगुणोंनैं अस्वतंत्र सर्वअज्ञानीजनोंकेप्रति लौकिकवैदिककर्म कराईतेहैं ५इतिप०

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसपुरुषनैं मनसहितइंद्रियोंकूं आपणेवशनहींकऱ्याहै ॥ ऐसा अजितइंद्रिय कोईभीपुरुष जिस
कारणतैं कदाचित् एकक्षणमात्रकालपर्यंतभी खानपानादिकलौकिककर्मोंकूं तथा अग्निहोत्रादिकवैदिककर्मोंकूं नहींक
रताहूआ स्थितहोवैनहीं ॥ किंतु ऐसाअजितइंद्रियपुरुष तिनलौकिकवैदिककर्मोंकूंकरताहूआहीं स्थितहोवैहै ॥ तिस
कारणतैं ताअशुद्धचित्तवालेपुरुषकूं सर्वकर्मोंकासंन्यासकरणा संभवतानहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोअशुद्धचित्तवा
ला अविद्वान्पुरुष तिनलौकिकवैदिककर्मोंकूंनहींकरताहूआ नहींस्थितहोवैहै किंतु तिनकर्मोंकूंकरताहूआहींस्थित
होवैहै याकेविषेक्याकारणहै ॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (कार्यतेहिइति) हेअर्जुन मूलप्रकृति
तैं उत्पन्नभयेजे सत्त्व रज तम यहतीनगुणहैं ॥ अथवा प्रकृतिनाम स्वभावकाहै तास्वभावरूपप्रकृतितैंउत्पन्नभये
जे रागद्वेषादिकगुणहैं ॥ तिनप्रकृतिजन्यगुणोंनैं जिसकारणतैं चित्तशुद्धितैंरहित अस्वतंत्रसर्वप्राणीयोंकेप्रति तेलौ
किकवैदिकसर्वकर्म कराईतेहैं ॥ अथवा कायिकवाचिक मानस यहसर्वकर्म कराईतेहैं ॥ तिसकारणतैं अशुद्धचित्त
वाला कोईभीअविद्वान्पुरुष तिनकर्मोंकूंनहींकरताहूआ स्थितहोवैनहीं ॥ किंतु तिनप्रकृतिजन्यगुणोंकरिकैचलाय
मानकऱ्याहूआ यहपराधीनअज्ञानीपुरुष सर्वकालविषे तिनकर्मोंकूंकरताहूआहीं स्थितहोवैहै ॥ ऐसेअशुद्धचित्तवा
लेपुरुषकूं सर्वकर्मोंकासंन्यासकरणा संभवतानहीं ॥ जबी ताअशुद्धचित्तवालेपुरुषकूं सोसंन्यासहीं नहींसंभवैहै ॥ त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बो ताअशुद्धचित्तवालेपुरुषकूं तासंन्यासजन्यज्ञाननिष्ठा नहींसंभवैहै याकेविषे क्याकहणाहै इति ॥ ५ ॥ ※ ॥ किंवा जिसपुरुषनैं निष्कामकर्मोकेअनुष्ठानतैं आपणेचित्तकूंशुद्धनहींकऱ्याहै ॥ किंतु औत्सुक्यमात्रकरिकै प्रथमसंन्यासकूंहीं ग्रहणकऱ्याहै ॥ ऐसाअशुद्धचित्तवालापुरुष तासंन्यासकेफलकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

कर्मेंद्रियाणिसंयम्ययआस्तेमनसास्मरन्॥इंद्रियार्थान्विमूढात्मामिथ्याचारःसउच्यते

कर्मेन्द्रियाणि । संयम्य । यः । आस्ते । मनसा । स्मरन् । इंद्रियार्थान् । विमूढात्मा । मिथ्याचारः । सः । उच्यते । इतिपद०

हेअर्जुन जो विमूढात्मापुरुष वाकादिककर्मइंद्रियोंकूं निग्रहैकरिकै शब्दादिकविषयोंकूं मनकरिकै स्मरणकरताहूआ स्थितहोवैहै सोपुरुष मिथ्याआचारवाला कह्याजावैहै ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ रागद्वेषकरिकैदूषितहैअंतःकरणजिसका ऐसाअशुद्धअंतःकरणवाला जोपुरुष केवलऔत्सुक्यमात्रकरिकै वाक् पाणि पाद आदिककर्मइंद्रियोंकानिरोधकरिकै अर्थात् बाह्यइंद्रियोंकरिकै तिनकर्मोकूंनहींकरताहूआ रागद्वेषकरिकैप्रेरितमनकरिकै शब्दस्पर्शादिकविषयोंकूं स्मरणकरताहूआस्थितहोवैहै ॥ आत्मतत्त्वकूंस्मरणकरताहूआ स्थितहोतानहीं ॥ अर्थात् हमनैं सर्वकर्मोकासंन्यासकऱ्याहै याप्रकारकेअभिमानकरिकै जोपुरुष सर्वकर्मोतैंरहितहूआ स्थितहोवैहै ॥ सोपुरुष मिथ्याआचारवाला कह्याजावैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ तिसपुरुषका अंतःकरणशुद्धहूआनहीं ॥ यातैं ज्ञाननिष्ठारूपफलकीप्राप्तिकेअयोग्यहूआ सोपुरुष पापआचरणवाला कह्याजावैहै इति ॥ यहवार्ता धर्मशास्त्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषेभीकहोहै ॥ तहां श्लोक ॥ (त्वंपदार्थविवेकायसंन्यासःसर्वकर्मणां ॥ श्रुत्येहविहितोयस्मात्त्यागीपतितोभवेत् अर्थयह ॥ जिसकारणतै इसअधिकारीलोकविषे श्रुतिभगवतौनैं त्वंपदार्थआत्माकेविचारकरणेवासतैहीं सर्वकर्मोंकासंन्यास विधानकऱ्याहै ॥ तिसकारणतैं जोअशुद्धचित्तवालापुरुष औत्सुक्यमात्रतैं तासंन्यासकूंग्रहणकरिकै त्वंपदार्थआत्माकाविचारकरतानहीं ॥ सोबहिर्मुखसंन्यासी पतितहोवैहैइति ॥ यातैंअशुद्धअंतःकरणवालापुरुष तासंन्यासतैं ज्ाननिष्ठारूपसिद्धिकूंप्राप्तहोवैनहीं यहजोवार्त्ता श्रीभगवान्नैंकथनकरीहै सोयथार्थहै इति ॥ ६ ॥ ※ ॥तहां चित्तशुद्धितैंविना केवलऔत्सुक्यमात्रकरिकै जोसर्वकर्मोंकासंन्यासहै ॥ तासंन्यासकूंनकरिकै यहअधिकारीपुरुषआपणेचित्तकीशुद्धिवासतैशास्त्रविहितनिष्कामकर्मोंकूंहींकरै ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कथनकरेहै ॥

308

यस्त्विंद्रियाणिमनसानियम्यारभतेऽर्जुन॥कर्मेंद्रियैःकर्मयोगमसक्तःसविशिष्यते॥ ७ ॥

यः। तु। इंद्रियाणि। मनसा। नियम्य। आरभते। अर्जुन। कर्मेंद्रियैः। कर्मयोगं। असक्तः। सः। विशिष्यते ॥ इतिप०

हेअर्जुन जोपुरुष मनसहित श्रोत्रादिकज्ञानइंद्रियोंकूं रोकिकरिकै फलइच्छातैंरहितहूआ वाँकादिककर्मइंद्रियोंकरिकै निष्कामकर्मोंकूं करैहै सोपुरुष अशुद्धचित्तवालेसंन्यासीतैं अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ ७ ॥ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यापंचज्ञानइंद्रियोंकूं मनसहित रोकिकरिकै अर्थात् पा
पकेउत्पत्तिकाहेतुजाशब्दादिकविषयोंकीआसक्तिहै ताविषयासक्तितैं तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूंनिवृत्तकरिकै॥ अथवाविवे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कयुक्तमनकरिकै तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूंरोकिकरिकै ॥ वाक्पाणिआदिककर्मइंद्रियोंकरिकै शास्त्रविहितकर्मोंकूंकरेहै ॥ परंतु ताकर्मोंकेफलकीइच्छाकरतानहीं ॥ सोनिष्कामकर्मोंकेकरणेहाराअधिकारीपुरुषपूर्वउक्तअशुद्धअंतःकरणवालेमिथ्याचारसंन्यासीतैं बहुत श्रेष्ठहै ॥ इसीविलक्षणताकेजनावणेवासतै श्रीभगवान्नैं मूलश्लोकविषे (यस्तु) यहतुशब्द कथनकरयाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ हेअर्जुन यामहान्आश्चर्यकूं तूंदेख ॥ तिनदोनोंपुरुषोंकूं यद्यपि परिश्रमतोंतुल्यहींहोवैहै ॥ तथापि एकपुरुषतौं वाकादिककर्मइंद्रियोंकरिकै मनसहितश्रोत्रादिकज्ञानइंद्रियोंकूं विषयोंविषेप्रवर्त्तकरताहूआ परमपुरुषार्थरूपफलतैंरहितहोवैहै ॥ और दूसरापुरुषतौं मनसहितश्रोत्रादिकज्ञानइंद्रियोंकूं शब्दादिकविषयोंतैंनिवृत्तकरिकैवाकादिककर्मइंद्रियोंकरिकै कर्मोंकूंकरताहूआभी परमपुरुषार्थकूंप्राप्तहोवैहै॥यातैं चित्तशुद्धितैंराहितसंन्यासीतैंसो निष्कामकर्मोंकेकरणेहारापुरुष बहुतश्रेष्ठहै इति ॥ ७ ॥ ❋ ॥ जिसकारणतैंअशुद्धअंतःकरणवालेसंन्यासीतैं निष्कामकर्मोंकेकरणेहारापुरुष बहुतश्रेष्ठहै ॥ तिसकारणतैं तूं मनसहितज्ञानइंद्रियोंकूं रोकिकरिकै वाकादिककर्मइंद्रियोंकरिकै नित्यनैमित्तिककर्मोंकूंकर ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रतिकथनकरेहै ॥

नियतंकुरुकर्मत्वंकर्मज्यायोह्यकर्मणः ॥ शरीरयात्रापिचतेनप्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥ ८ ॥

नियतं[2]। कुरु[4]। कर्म[3]। त्वं[1]। कर्म[5]। ज्यायः[7]। हि[6]। अकर्मणः[8]। शरीरयात्रा[12]। अपि[13]। च[11]। ते[10]। न[14]। प्रसिद्ध्येत्[15]। अकर्मणः[9]॥

हेअर्जुन तूं[1] नित्यनैमित्तिक कर्मोंकूंहीं[3] कर[4] जिस[5]कारणतैं कर्मोंकेनकरणेतैं कर्महीं श्रेष्ठहै[7] तथा कर्मोंतैंरहित तुमारे[10] शरीरकीयात्रा भी[13] नहीं[14] सिद्धहोवैंगी ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अंतःकरणकोशुद्धिकरणेहारेकर्मोकेअनुष्ठानतैंरहितजोतूंहैं ॥ सोतूंस्वर्गादिकफलोकीइच्छातैंरहितहो इकै श्रुतिकरिकैप्रतिपादित तथास्मृतिकरिकैप्रतिपादित संध्याउपासनादिकनित्यकर्मोकूं तथाग्रहणश्राद्धादिकनैमित्तिककर्मोकूंहीं कर ॥ शंका ॥ हेभगवन् अशुद्धअंतःकरणवालेपुरुषनैं किसकारणतैं कर्महींकरणेकूंयोग्यहैं ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (कर्मज्यायोह्यकर्मणःइति) जिसकारणतैं तिननित्यनैमित्तिककर्मोकेनहींकरणेतैं तिननित्यनैमित्तिककर्मोकाकरणाहीं अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ तिसकारणतै अशुद्धअंतःकरणवालेपुरुषनैं फलकीइच्छातैं रहितहोइकै तेनित्यनैमित्तिककर्महीं अवश्यकरिकैकरणे ॥ यद्यपि (संन्यासएवात्यरेचयत्) याश्रुतिनैं धर्मादिकसर्वसाधनोंतैं संन्यासकूंहीं श्रेष्ठरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यातैं संन्यासतैं कर्मोविषेश्रेष्ठताकथनकरणी संभवैनहीं ॥ तथापि जीवन्मुक्तिकेसुखवासतै ब्रह्मवेत्तापुरुषनैं कऱ्याजोविद्वत्संन्यासहै ॥ तथा आत्मज्ञानकोप्राप्तिवासतै शुद्धचित्तवालेमुमुक्षुजननैं कऱ्याजोविविदिषासंन्यासहै ॥ तादोनोंप्रकारकेसंन्यासविषेहीं साश्रुति धर्मादिकसर्वसाधनोंतैं श्रेष्ठताकथनकरेहै ॥ और ईहांप्रसंगविषे जोसंन्यासतैं कर्मोविषेश्रेष्ठताकथनकरीहै ॥ सोअशुद्धचित्तवालेपुरुषनैं केवल औत्सुक्यमात्रकरिकै कऱ्याजोसंन्यासहै तासंन्यासतैं निष्कामकर्मोविषे श्रेष्ठताकथनकरीहै ॥ कोईसंन्यासकोनिंदाविषे भगवान्का तात्पर्यनहींहै ॥ तहां धर्म सत्य तप दम शम दान प्रजनन आहिताग्नि अग्निहोत्र यज्ञ मानस याएकादशसाधनोंतैं संन्यासकीअधिकता आत्मपुराणकेदशमअध्यायकेअंतविषे हम विस्तारतैंकथनकरिआयेहैंइति ॥ किंवा ॥ हेअर्जुन तिन नित्यनैमित्तिककर्मोकेनहींकरणेकरिकै केवल तुमारेअंतःकरणकेशुद्धिकाअभावहीं नहींहोवैंगा ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किंतु युद्धादिककर्मोंकेनहींकरणेतैं तुमारे शरीरके खानपानादिकव्यवहारभी नहींसिद्धहोवैंगे ॥ ईहांभगवान्काय हअभिप्रायहै ॥ तूंअर्जुन क्षत्रियहैं ॥ यातैं संन्यासआश्रमकूंधारणकरिकै भिक्षावृत्तितैं शरीरकेनिर्वाहकरणेविषे तुमा राअधिकारहैनहीं ॥ काहेतैं श्रुतिस्मृतियोंविषे ब्राह्मणकूंहीं संन्यासकरणेकाअधिकार कथनकरयाहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्राह्मणाः पुत्रैषणायाश्चवित्तैषणायाश्चलोकैषणायाश्चव्युत्थायाथभिक्षाचर्यंचरंतिइति ॥) अर्थयह॥पुत्रएषणाका तथा वित्तएषणाका तथालोकएषणाका परित्यागकरिकै वैराग्यवान्ब्राह्मण संन्यासपूर्वक भिक्षावृत्तिकूंकरेहैंइति ॥ तहां स्मृति॥(चत्वारआश्रमाब्राह्मणस्यत्रयोराजन्यस्यद्वौवैश्यस्यइति)॥अर्थयह॥ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास य हच्यारिआश्रम ब्राह्मणकेहोवैंहैं ॥ और ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ यहतीनआश्रम क्षत्रियकेहोवैंहैं ॥ और ब्रह्मच र्य गृहस्थ यहदोआश्रम वैश्यकेहोवैंहैंइति ॥ तहां अन्यस्मृति॥(मुखजानामयंधर्मोवैष्णवंलिंगधारणं॥ बाहुजातोरु जातानांनायंधर्मोविधीयते ॥)अर्थयह ॥ परमेश्वरकेमुखतैंउत्पन्नभयेजेब्राह्मणहैं ॥ तिनब्राह्मणोंकाहीं यहदंडादिक चिन्हधारणपूर्वकसंन्यास धर्महै ॥ परमेश्वरकेबाहुतैंउत्पन्नभयेजेक्षत्रियहैं ॥ तथापरमेश्वरकेऊरुस्थलतैं उत्पन्नभयेजे वैश्यहैं ॥ तिनक्षत्रियवैश्योंकूं यहलिंगसंन्यासविधाननहींकरयाहैइति॥ इत्यादिकअनेकश्रुतिस्मृतिवचनोंविषे ब्राह्म णकूंहीं संन्यासआश्रमकाअधिकार कथनकरयाहै ॥ क्षत्रियवैश्यकूं संन्यासकाअधिकार कथनकरयानहीं॥याप्रकारके अभिप्रायकरिकैहीं श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति युद्धादिककर्मोंतैंविना तुमारेशरीरके खानपानादिकव्यवहारभी सि द्धनहींहोवैंगे याप्रकारकावचन कथनकरयाहै इति॥८॥※॥ ॥शंका॥हेभगवन्॥(कर्मणाबध्यतेजंतुर्विद्ययाचविमु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

च्यते) अर्थयह ॥ यहजीव कर्मोकरिकैतौं संसारविषेबंधायमानहोवैहै ॥ औरं विद्याकरिकै तासंसारतैं मुक्तहोवैहैइति ॥ यास्मृतिवचनकरिकै तिनसर्वकर्मोविषे बंधनकोहेतुताहींसिद्धहोवैहै ॥ यातैं मुमुक्षुजननैं तेबंधनके हेतुभूतकर्म करणेंकूंयोग्यनहींहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताअर्जुनकेप्रति काम्यकर्मोकूंहीं बंधकीहेतुताहै ईश्वरअर्पणबुद्धिकरिकैकरयेहूएकर्मोकूं बंधकीहेतुता नहींहै याप्रकारकाउत्तर कथनकरेहै ॥

312

यज्ञार्थात्कर्मणोन्यत्रलोकोयंकर्मबंधनः ॥ तदर्थंकर्मकौंतेयमुक्तसंगःसमाचर ॥ ९ ॥

यज्ञार्थात् । कर्मणः । अन्यत्र । लोकः । अयं । कर्मबंधनः । तदर्थं । कर्म । कौंतेय । मुक्तसंगः । समाचर ॥ ९ ॥ इतिप०

हेअर्जुन यहे लोक परमेश्वरकेआराधनअर्थ कर्मतैं अन्यकर्मविषेहीं कर्मकरिकैबंधायमानहोवैहै यातैं तूं फलकीइच्छातैंरहितहोइकै तापरमेश्वरआराधनअर्थ कर्मकूं भलीप्रकारकर ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ (यज्ञोवैविष्णुः) अर्थयह विष्णुभगवान् यज्ञरूपहै याश्रुतितैं यज्ञनाम परमेश्वरकावाचक सिद्धहोवैहै ॥ तापरमेश्वरकेआराधनवासतै जेनित्यनैमित्तिककर्मकरीतेहैं तिनकर्मोकानाम यज्ञार्थकर्महै ॥ ऐसेनिष्कामकर्मोतैंभिन्न जेस्वर्गादिकफलोंकीप्राप्तिवासतै काम्यकर्महैं ॥ तिनकाम्यकर्मोविषेप्रवृत्तहूए यहकर्मोकेअधिकारीजनहीं तिनकाम्यकर्मोकरिकै बंधायमान होवैहैं ॥ और परमेश्वरकेआराधनअर्थकर्येजेकर्महैं तिननिष्कामकर्मोकरिकै यहअधिकारीजन बंधायमानहोवैनहीं ॥ यातैं (कर्मणाबध्यतेजंतुः) यहपूर्वउक्तस्मृतिभो केवल काम्यकर्मोविषेहीं बंधनकीहेतुताकथनकरे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है॥निष्कामकर्मोंविषे बंधनकीहेतुता कथनकरैनहीं॥ यातैं हेअर्जुन तूं स्वर्गादिकफलोंकीइच्छातैंरहितहोइकै केवलपरमेश्वरकेआराधनअर्थ श्रद्धाभक्तिपूर्वक तिननित्यनैमित्तिककर्मोंकूंकर इति॥ ९॥ ※॥ किंवा॥ भगवान्प्रजापतिकेवचनतैं भी याअधिकारीपुरुषनैं तेकर्महीं करणेकूंयोग्यहैं॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् च्यारिश्लोकोंकरिकैअर्जुनकेप्रति कथनकरेहै॥

सहयज्ञाःप्रजाःसृष्ट्वापुरोवाचप्रजापतिः॥अनेनप्रसविष्यध्वमेषवोस्त्विष्टकामधुक् १०

सहयज्ञाः। प्रजाः। सृष्ट्वा। पुरा। उवाच।प्रजापतिः। अनेन। प्रसविष्यध्वं।एषः।वः। अस्तु। इष्टकामधुक्॥ इतिप०

हेअर्जुन कल्पकेआदिविषे प्रजापति यज्ञकेअधिकारी प्रजाकूं उत्पन्नकरिकै यहवचन कहताभया हेप्रजा इसयज्ञ करिकै तुम वृद्धिकूंप्राप्तहोवो जिसकारणतैं यहयज्ञहीं तुमारेकूं मनवांछितफलोंकोप्राप्तिकरणेहारा होवो १० इतिपदा०॥टीका॥ श्रुतिस्मृतियोंकरिकैविधानकरयेजे स्ववर्णआश्रमकेयज्ञादिरूपकर्महैं तिनकर्मोंकेसहितजेवर्त्तमानहोवैं तिनोंकानाम सहयज्ञहै॥ अर्थात् कर्मोंकेअधिकारीयोंकानाम सहयज्ञहै॥ ऐसे यज्ञादिरूपकर्मोंकेअधिकारी ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यात्रैवर्णिकप्रजाकूं सृष्टिकेआदिकालविषेरचिकरिकै परमकृपालु भगवान्प्रजापति ता त्रैवर्णिकप्रजाकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥ हेप्रजा आपणेआपणेवर्णआश्रमकरिकैउचित जोयह यज्ञादिरूपधर्महै तायज्ञादिरूपधर्मकरिकै तुम उत्तरउत्तरकालविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोवो॥ शंका॥ इसयज्ञादिरूपधर्मकरिकै किसप्रकार वृद्धिहोवैहै॥ ऐसीशंकाकेहूए प्रजापति कहेहै (एषवोस्त्विष्टकामधुक्इति) हेप्रजा यहयज्ञादिरूपधर्महीं तुमअधिकारीजनोंकूं मनवां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

च्छितफलोंकीप्राप्तिकरणेहाराहोवोइति ॥ शंका ॥ (सहयज्ञाः) यावचनविषेकन्याजोयज्ञकाग्रहणहै ॥ सोयज्ञकाग्रहण अवश्यकरणेयोग्यनित्यनैमित्तिककर्मोकाहीं उपलक्षकहै ॥ काम्यकर्मोका उपलक्षकहैनहीं ॥ काहेतैं तिनकर्मोकेनहीं करणेतैं प्रत्यवायकीप्राप्ति आगेकथनकरणीहै ॥ साप्रत्यवायकीप्राप्ति नित्यनैमित्तिककर्मोकेनहींकरणेतैंहींहोवैहै ॥ काम्यकर्मोकेनहींकरणेतैं कोईप्रत्यवायकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंवा इसगीताशास्त्रविषे तिनकाम्यकर्मोकेकहणेका को ईप्रसंगभीहैनहीं ॥ उलटा (माकर्मफलहेतुर्भूः) इसवचनकरिकै तिनकाम्यकर्मोका निषेधहींकरयाहै ॥ यातैं निष्का मकर्मोकेप्रसंगविषेयहयज्ञादिरूपधर्म तुमारेकूं मनवांच्छितफलोंकीप्राप्तिकरैंगा यहफलकाकथन असंगतहै ॥ समा धान ॥ काम्यकर्मोकीन्याईं तिननित्यनैमित्तिककर्मोकाभी सोआनुषंगिकफल संभवहोइसकैहै ॥ यहवार्त्ता आपस्तं बऋषिनैंभीकथनकरीहै ॥ (तद्यथाम्रेफलार्थैंनिर्मित्तेच्छायागंधेइत्यनूत्पद्येते एवंधर्मंचर्यमाणमर्थाअनूत्पद्यंते नोचेदनू त्पद्यंतेनधर्महानिर्भवतीति) अर्थयह ॥ जैसे किसीपुरुषनैं फलोंकीप्राप्तिवासतै लगायाहूआजोआम्रकावृक्षहै ताआ म्रवृक्षके छायासुगंध यहदोनोंआनुषंगिकफल तालगावणेहारेपुरुषकूं अवश्यप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे याअधिकारीपुरुष नैं स्वधर्मजानिकरिकै करयेजेनित्यनैमित्तिककर्महैं ॥ तिनकर्मोतैंअनंतर ताकर्मकरतापुरुषकूं मनवांच्छितपदार्थोंकीप्रा प्तिरूप आनुषंगिकफल अवश्यहोवैहै ॥ जोकदाचित् ताकर्मकरतापुरुषकूं सोआनुषंगिकफल नहींभीप्राप्तहोवै तौं भी तानित्यनैमित्तिकरूपधर्मकीहानि होवैनहीं ॥ जिसकारणतैं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा मोक्षरूपपरमफल तापुरुष कूं अवश्यकरिकैंप्राप्तहोवैहैइति ॥ शंका ॥ काम्यकर्मोकीन्यांईं जोकदाचित् नित्यकर्मोकाभी फलअंगीकारकरौंगे ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तौं कार्म्यकर्मोंतैं नित्यकर्मोंविषे विलक्षणता सिद्धनहींहोवैंगी ॥ समाधान ॥ ॥ काम्यकर्म तथानित्यकर्म यादोनोंवि
षे फलकीकारणताकेसमानहूए भी फलकीइच्छाकरिकैकरयेहूएकर्मकूं काम्यकर्मकहेहैं ॥ और फलकीइच्छातैंरहितहोइ
कैकरयेहूएकर्मकूं नित्यकर्मकहेहैं ॥ यारीतिसैं तिनकाम्यकर्मोंतैं नित्यकर्मोंविषेविलक्षणता संभवेहै ॥ और अनिच्छित
फलकीभी वस्तुकेस्वभावतैंहीं उत्पत्तिअंगीकारकीयेहूए तिनदोनोंविषे विशेषतासंभवैनहीं ॥ इसवार्त्ताकूं आगेवि
स्तारकरिकैनिरूपणकरैंगे ॥ यातैं यहयज्ञादिरूपधर्म तुमारेकूं मनवांच्छितफलोंकीप्राप्तिकरणेहाराहोवो यहवचन अ
संगतनहींहै किंतु यथार्थहै ॥ तहांस्मृति (संध्यामुपासतेयेतुसततंसंशितव्रताः ॥ विधूतपापास्तेयांतिब्रह्मलोकमना
मयं) अर्थयह ॥ जेपुरुष निरंतर श्रद्धाभक्तिपूर्वक संध्याकूं उपासनाकरेहैं ॥ तेपुरुष सर्वपापोंतैंरहितहोइकै रोगा
दिकविकारोंतैंरहितब्रह्मलोककूं प्राप्तहोवैहैंइति ॥ इत्यादिकअनेकवचनोंकरिकै संध्याउपासनादिकनित्यकर्मोंका ब्रह्म
लोकादिकोंकीप्राप्तिरूपआनुषंगिकफल कथनकरयाहै इति ॥ १० ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् यज्ञादिरूपधर्मकूं
मनवांच्छितफलोंकेप्राप्तिकीहेतुता किसप्रकारहै ॥ ऐसीशंकाकेहूए सोप्रजापति ताप्रकारकूंनिरूपणकरेहैं ॥

देवान्भावयतानेनतेदेवाभावयंतुवः ॥ परस्परंभावयंतःश्रेयःपरमवाप्स्यथ ॥ ११ ॥

देवान्१ । भावयत२ । अनेन३ । ते४ । देवाः५ । भावयंतु६ । वः७ । परस्परं८ । भावयंतः९ । श्रेयः१० । परं११ । अवाप्स्यथ१२ ॥ इतिप०
हेप्रजा तुम अधिकारी इसयज्ञादिरूपधर्मकरिकै इंद्रादिकदेवतावोंकूं संतुष्टकरो तिसतैंअनंतर ते इंद्रादिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देवता तुमारेकूं संतुष्टकरें इसप्रकार परस्पर संतुष्टकरतेहूए तुमदोनों परम श्रेयकूं प्राप्तहोवोंगे ॥ ११ ॥ इतिप०

॥ टीका ॥ हेप्रजा तुमसर्वयजमान इसयज्ञादिरूपधर्मकरिकै इंद्रादिकदेवतावोंकूंसंतुष्टकरो ॥ और तायज्ञविषेहविषभागोंकरिकै तुमोनैं संतुष्टकरयेहूए जेइंद्रादिकदेवताहैं तेइंद्रादिकदेवता जलकीवृष्टिआदिकोंतैंअन्नकीउत्पत्तिद्वारा तुमयजमानोंकूं संतुष्टकरैं ॥ इसप्रकार परस्पर संतुष्टकरतेहूए तुमप्रजा तथाइंद्रादिकदेवता दोनोंहीं मनवांच्छितअर्थरूप परमश्रेयकूं प्राप्तहोवोंगे ॥ तहां तुमारेकूंसंतुष्टकरणेतैं इंद्रादिकदेवतातौं तृप्तिरूप परमश्रेयकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ और इंद्रादिकदेवतावोंकूं संतुष्टकरणेतैं तुंमप्रजा स्वर्गरूप परमश्रेयकूंप्राप्तहोवोंगे इति ॥ ११ ॥ ※ ॥

॥ किंवा तायज्ञादिकरूपधर्मकरिकै तुमारेकूं केवल परलोकविषेस्थित स्वर्गादिरूपफलकीहींप्राप्तिनहींहोवैंगी ॥ किंतु इसलोकविषेस्थित अन्न सुवर्ण पशु आदिकफलकीभीप्राप्तिहोवैंगी ॥ याअर्थकूं प्रजापति कथनकरेहै ॥

इष्टान्भोगान्हिवोदेवादास्यंतेयज्ञभाविताः॥तैर्दत्तानप्रदायैभ्योयोभुंक्तेस्तेनएवसः॥१२

इष्टान्। भोगान्। हि। वः। देवाः। दास्यंते। यज्ञभाविताः। तैः। दत्तान्। अप्रदाय। एभ्यः। यः। भुंक्ते। स्तेनः। एव। सः ॥ इतिप०

जिसकारणतैं यज्ञकरिकैसंतुष्टहूए यहदेवता तुमारेतांई मनवांच्छित भोगोंकूं देवैंगे तिसकारणतैं तिनदेवतावोंनैं दीयेहूएभोगोकूं इनदेवतावोंकेतांई नदेकरिकै जोपुरुष भोगेहै सोपुरुष चोरहीं है ॥ १२ ॥ इतिप०

॥ टीका ॥ हेप्रजा इसप्रकार श्रौत स्मार्त यज्ञरूपधर्मकरिकै संतुष्टहूएजेइंद्रादिकदेवताहैं ॥ तेइंद्रादिकदेवता तु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर्मकर्तायजमानोंकेताईं अन्न पशु सुवर्ण इत्यादिकमनवांच्छितभोगोंकूंदेवैंगे ॥ और जैसे कोईपुरुष किसीअन्यपु
रुषकेप्रति ऋणदेवैहै ॥ तैसे तिनइंद्रादिकदेवतावोंनै तुमारेतांईं दीयेजेअन्नादिकभोगहैं ॥ तिनभोगोंकूं तिनइंद्रादि
कदेवतावोंकेतांईनदेकरिकै अर्थात् इंद्रादिकदेवतावोंकाउद्देशकरिकै व्रीहियवादिकपदार्थोंकात्यागरूपजे वैश्वदेव अ
ग्निहोत्र जातेष्टि इत्यादिक नित्य नैमित्तिक यागहैं तिनोंकूंनकरिकै जोपुरुष केवल आपणेदेहइंद्रियादिकोंकोपुष्ट
करणेवासतै तिन अन्नादिकपदार्थोंकूंभोगेहै ॥ सोपुरुष तिनदेवतावोंका चौरहींहै तथाकृतघ्नहै ॥ काहेतैं तिसपुरुष
नैं देवतावोंकेअन्नादिकपदार्थोंकुं तौं हरणकर्याहै ॥ और यज्ञादिकोंकरिकै तिनदेवतावोंकेऋणकीनिवृत्तिकरीनहीं इ
ति ॥ १२ ॥ * ॥ किंवा तिनयज्ञादिककर्मोंकेनकरणेतैं याअधिकारीपुरुषकूं केवल चौरभावकी तथाकृतघ्न
ताकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तिनयज्ञादिककर्मोंकेनहींकरणेतैं याअधिकारीपुरुषकूं प्रत्यवायकीभीप्राप्तिहोवैहैं ॥ या
अर्थकूं अन्वयव्यतिरेककरिकै निरूपणकरेहैं ॥

यज्ञशिष्टाशिनःसंतोमुच्यंतेसर्वकिल्बिषैः ॥ भुंजतेतेत्वघंपापायेपचंत्यात्मकारणात् ॥

यज्ञशिष्टाशिनः । संतः । मुच्यंते । सर्वकिल्बिषैः । भुंजते । ते । तु । अघं । पापाः । ये । पचंति । आत्मकारणात् । इतिप० ॥

जेपुरुष यज्ञकेशेषअन्नकूंभोजनकरेहैं तेशिष्टपुरुष सर्वपापोंनै परित्यागकरोतेहैं तथा जे पापात्मापु
रुष केवलआपणेवासतैहीं अन्नकूंपकावेहैं तेपुरुष पापकूंहीं भोजनकरेहैं ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ जेअधिकारीपुरुष ऋषियज्ञ देवयज्ञ पितृयज्ञ मनुष्ययज्ञ भूतयज्ञ यापंचयज्ञोंकूंकरिकैपरिशेषतैंरहेहूएअमृतरूपअन्नकूं भोजनकरेहैं ॥ तेपुरुषहींशिष्ट कहेजावैहैं ॥ काहेतैं श्रद्धाभक्तिपूर्वक वेदविहितकर्मोकेकरणेहारेपुरुषकूंहीं शास्त्र विषे शिष्ट कह्याहै ॥ ऐसेशिष्टपुरुष सर्वपापोंनैं परित्यागकरीतेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ प्रमादकरिकैकरयेहूएजेपापहैं ॥ तथा पंचसूनारूपनिमित्ततैंउत्पन्नहूएजेपापहैं ॥ तथा विहितकर्मोकेनकरणेकरिकैप्राप्तभयेजेपापहैं ॥ तिनसर्वपापोंतैं तेपुरुष रहितहोवैहैंइति ॥ इतनैंकहणेकरिकै तिनयज्ञादिकोंकेकरणेहारेपुरुषकूं पापकेप्राप्तिकाअभाव कथनकर्या ॥ अब तिनयज्ञादिककर्मोकेनहींकरणेहारेपुरुषकूं प्रत्यवायकेप्राप्तिका कथनकरेहैं (भुंजतेतेतुइति) तिनपंचमहायज्ञोंकूंनहींकरतेहूए जे पापात्मापुरुष केवल आपणेउदरकेभरणकरणेवासतैहीं अन्नकूंपकावैहैं ॥ देवताअतिथि आदिकोंकेवासतै अन्नकूंपकावते नहीं ॥ तेपुरुष केवल पापकूंहींभोजनकरेहैं ॥ अन्नकूंभोजनकरतेनहीं ॥ यद्यपि तिनपापात्मापुरुषोंकीदृष्टिकरिकेतौं सोअन्नहै ॥ तथापि शास्त्रकीदृष्टिकरिकै तथादेवतावोंकीदृष्टिकरिकै सोअन्नपापरूपहींहैइति ॥ ईहां (पापाःअघंभुंजते) यावचनकरिकै यहअर्थबोधनकर्या ॥ जेपुरुष तिनपंचयज्ञोंकूंनकरिकै केवल आपणेउदरकेभरणकरणेवासतैहीं अन्नकूंपकावेहैं ॥ तेपुरुष पूर्वहीं पंचसूनाकृतपापवाले तथाप्रमादकृतहिंसाजन्यपापवालेहूएभी पुनःवैश्वदेवादिकनित्यकर्मोकेनहींकरणेजन्य दूसरेपापकूंप्राप्तहोवैहैंइति ॥ तहांस्मृति ॥ (कंडनीपेषणीचुल्लीउदकुंभीचमार्जनी ॥ पंचसूनागृहस्थस्यताभिःस्वर्गंनविंदति ॥ पंचसूनाकृतंपापंपंचयज्ञैर्व्यपोहति ॥) अर्थयह ॥ गृहस्थपुरुषोंकेगृहविषे जीवोंकीहिंसाहोणेकेपंचस्थानहोवैहैं ॥ एकतौं ऊखलविषेअन्नकेकूटणेतैं जीवोंकीहिंसाहोवैहै ॥ और दूसरापाषाणकीचक्कीविषेअन्नकेपीसणेतैं जीवोंकीहिंसा ॥१५२॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होवैहैं ॥ और तीसरा अन्नकेपकावणेवासतै चुल्लेविषेअग्निकेजगावणेतैं जीवोंकीहिंसाहोवैहै ॥ और चौथा पात्रोंविषेजल केभरणेतैं जीवोंकीहिंसाहोवैहै ॥ और पचमा मृत्तिकाजलादिकोंसैं घरकेमार्जनकरणेतैं जीवोंकीहिंसाहोवैहै ॥ तापंचप्रका रकीजीवहिंसाकरिकै यह गृहस्थपुरुष स्वर्गकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ और तिनपंचहिंसास्थानोंतैं उत्पन्नभयेजेपापहैं ॥ तेपाप पंचयज्ञोंकरिकैनिवृत्तहोवैहै इति ॥ तेपंचयज्ञयहहै ॥ तहांश्लोक ॥ (ऋषियज्ञंदेवयज्ञंभूतयज्ञं चसर्वदा॥नृयज्ञंपितृयज्ञंचय थाशक्तिनहापयेत्) अर्थयह ॥ यहब्राह्मणादिकगृहस्थपुरुष दिनदिनविषे ऋषियज्ञ देवयज्ञ भूतयज्ञ मनुष्ययज्ञ पितृय ज्ञ यहपंचयज्ञ यथाशक्तिकरैं ॥ इनपंचयज्ञोंकापरित्याग कदाचित्भी नहींकरैंइति ॥ तहां वेदकापठनपाठनकरणा तथा संध्योपासनकरणा याकानाम ऋषियज्ञहै ॥ और अग्निहोत्रादिकोंकाकरणायाकानाम देवयज्ञहै ॥ और बलिवैश्वदेवकूंक रणा याकानाम भूतयज्ञहै ॥ और गृहविषेप्राप्तहूएअतिथिका अन्नादिकोंकरिकैसंतोषकरणा याकानाम मनुष्ययज्ञ है ॥ औरश्राद्ध तर्पणकूंकरणा याकानाम पितृयज्ञहैइति ॥ तिनयज्ञोंकेनहींकरणेहारेगृहस्थपुरुषोंकूं दोषकीप्राप्ति पाराशरस्मृतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (वैश्वदेवविहीनायेआतिथ्येनविवर्जिताः ॥ सर्वेतेनरकंयांति काकयोनिंव्रजंतिते ॥ काष्ठभारसहस्त्रेणघृतकुंभशतेनच ॥ अतिथिर्यस्यभग्नाशस्तस्यहोमोनिरर्थकः ॥) अर्थयह ॥ जे ब्राह्मणादिकगृहस्थ वैश्वदेवकरणेतैंरहितहैं ॥ तथा अतिथिकेप्रति भोजनदेणेतैंरहितहैं ॥ तेपुरुष मरिकरिकै नरककूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर काकयोनिकूंप्राप्तहोवैहैंइति ॥ किंवा जिसगृहस्थपुरुषकेगृहतैं अतिथिपुरुष अन्नादिकोंकी प्राप्तितैंविना निरासचल्याजावैहै ॥ तिसगृहस्थपुरुषनैं काष्ठोंकेसहस्त्रभारोंकरिकै तथाघृतकेशतकुंभोंकरिकै कऱ्याहू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आजोहोमहै ॥ सोहोम तापुरुषकूं किंचित्मात्रभी फलकीप्राप्तिकरैनहींइति ॥ अतिथिकालक्षण पाराशरस्मृतविषे यहकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (दूराध्वोपगतंश्रांतंवैश्वदेवउपस्थितं ॥ अतिथिंतंविजानीयान्नातिथिःपूर्वमागतः ॥ चौरो वायदिचांडालःशत्रुर्वापितृघातकः ॥ वैश्वदेवेतुसंप्राप्तेसोतिथिःसर्वसंगमः ॥ नपृच्छेद्गोत्रचरणेस्वाध्यायंचव्रतानिच ॥ हृदयंकल्पयेत्तस्मिन्सर्वदेवमयोहिसः ॥) अर्थयह ॥ जोपुरुष दूरमार्गतैंचलिकेआयाहोवै तथाथक्याहोवै तथावैश्वदेव केकरणेकालविषेप्राप्तहोवै ताकूं अतिथिजानना ॥ और जेआपणे पुरोहितादिक पूर्वहीं तहांप्राप्तहैं तेपुरोहितादिक अतिथिनहींकहेजावैहैंइति ॥ और वैश्वदेवकरणेकालविषे ब्राह्मणादिकगृहस्थपुरुषोंकेगृहविषे जोकोईअन्नार्थी चौ रआवै अथवाचांडालआवै अथवाशत्रुआवै अथवा पिताकेहननकरणेहाराआवै सोअन्नार्थीपुरुष अतिथिजानणा तथासर्वसत्संगादिकोंका कारणजानणाइति ॥ किंवा यहगृहस्थपुरुष गृहविषेप्राप्तहूए ताअन्नार्थी अतियिका गोत्रनहीं पूछे ॥ तथा वेदकोशाखादिकभीनहींपूछे ॥ तथा ऋग्वेदादिकोंकाअध्ययनभीनहींपूछे ॥ तथा ब्रह्मचर्यादिकव्रतभी न हींपूछे ॥ किंतु सोगृहस्थपुरुष ताअतिथिविषे यहअतिथि सर्वदेवमयविष्णुरूपहै याप्रकारकीभावनाकरिकै ताअति थिकेप्रति अन्नादिकदेवैइति ॥ यातैं जेब्राह्मणादिकगृहस्थपुरुष पूर्वउक्तपंचयज्ञोंकूंनकरिकै केवलअपणेउदरभरणे वासतैंहीं अन्नकूंपकावेहैं ॥ तेपुरुष अन्नरूपकरिकैंस्थितपापकूंहीं भोजनकरेहैं इति ॥ १३ ॥* ॥ किंवा केव ल पूर्वउक्त प्रजापतिकेवचनमात्रतैंहीं तेयज्ञादिककर्म करणेकूंयोग्यनहींहैं ॥ किंतु याजगत्रूपचक्रकेप्रवृत्तिकाहेतु होणेतैंभी तेयज्ञादिककर्म करणेकूंयोग्यहैं ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति तीनश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अन्नाद्भवंतिभूतानिपर्जन्यादन्नसंभवः॥यज्ञाद्भवतिपर्जन्योयज्ञःकर्मसमुद्भवः ॥ १४ ॥

अन्नात्। भवंति। भूतानि। पर्जन्यात्। अन्नसंभवः। यज्ञात्। भवति। पर्जन्यः। यज्ञः। कर्मसमुद्भवः ॥ इतिपद०

हेअर्जुन अन्नतैं शरीर उत्पन्नहोवैहैं और ताअन्नकाजन्म जलकीवृष्टितैं होवैहै और साजलकीवृष्टि अपूर्वरूपधर्मतैं उत्पन्नहोवैहै और सोअपूर्वरूपधर्म कर्मतैंउत्पन्नहोवैहै ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन भोजनद्वारा पुरुषस्त्रीयोंकेशरीरविषेप्राप्तहोइकै शुक्रशोणितरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तभयाजो व्रीहियवादिकअन्नहै ॥ तिसअन्नतैंहीं सर्वमनुष्यादिकप्राणीयोंकेशरीर उत्पन्नहोवैहैं ॥ और तावीहियवादिकअन्नकी उत्पत्ति जलकीवृष्टितैंहोवैहै ॥ यहवार्त्ता सर्वप्राणियोंकूं प्रत्यक्षसिद्धहै ॥ और कारीरीइष्टि अग्निहोत्रआदिकोंतैंउ त्पन्नभयाजोधर्महै ॥ जिसधर्मकूं शास्त्रविषे अपूर्व अदृष्ट यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ ताधर्मरूपयज्ञतैं साजलकीवृष्टि उत्पन्नहोवैहै ॥ तहां मनुस्मृति ॥ (अग्नौप्रास्ताहुतिःसम्यगादित्यमुपतिष्ठते ॥ आदित्याज्जायतेवृष्टिर्वृष्टेरन्नंततःप्रजाः) ॥ अर्थयह ॥ वैदिकअग्निविषे प्रातःसायंकालमैं श्रद्धाभक्तिपूर्वक पाईहूईजाघृतादिकपदार्थोंकीआहुतिहै साआहुति सूक्ष्मरूपकरिकै आदित्यविषेस्थितहोवैहै ॥ ताआहुतिविशिष्टआदित्यतैं मेघोंद्वारा जलकीवृष्टि उत्पन्नहोवैहै ॥ ता जलकीवृष्टितैं व्रीहियवादिकअन्न उत्पन्नहोवैहै ॥ और ताअन्नतैं यहमनुष्यादिकशरीर उत्पन्नहोवैहैंइति ॥ और सो धर्मरूपयज्ञ अग्निहोत्र कारीरीइष्टि आदिककर्मोंतैं उत्पन्नहोवैहै इति ॥ १४ ।※॥ किंच

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर्मब्रह्मोद्भवंविद्धिब्रह्माक्षरसमुद्भवं ॥ तस्मात्सर्वगतंब्रह्मनित्यंयज्ञेप्रतिष्ठितं ॥ १५ ॥

कर्म । ब्रह्मोद्भवं । विद्धि । ब्रह्म । अक्षरसमुद्भवं । तस्मात् । सर्वगतं । ब्रह्म । नित्यं । यज्ञे । प्रतिष्ठितं । इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन ताअग्निहोत्रादिककर्मकूं तूं वेदतैंउत्पन्नहूआ जान और तांवेदकूं परमात्मादेवतैंउत्पन्नहूआजान तिसकारणतैंहीं सर्वअर्थकाप्रकाशक तथानाशतैंरहित सोवेद ताधर्मरूपयज्ञविषे स्थितहै ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ ब्रह्मनाम वेदकाहै सोवेदरूपब्रह्महैप्रमाणजिसविषे ताकानाम ब्रह्मोद्भवहै ॥ तिसअग्निहोत्रादिककर्मकूं तूं ब्रह्मोद्भवजान ॥ तात्पर्ययह ॥ वेदनैंविधानकऱ्याजोअग्निहोत्रादिककर्महै ॥ ताकर्मकूंहीं तूं अपूर्वरूपधर्मकासाधन जान ॥ दूसरेपाखंडशास्त्रोनैंप्रतिपादनकऱ्येहूएकर्मोकूं तुमनैं ताअपूर्वरूपधर्मकासाधन जाणनानहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनपांखडशास्त्रोंकोअपेक्षाकरिकै वेदविषे कौंनविलक्षणताहै ॥ जिसविलक्षणताकरिकै वेदप्रतिपादितअर्थहीं धर्मरूपहोवैहै ॥ दूसरेपाखंडशास्त्रप्रतिपादितअर्थ धर्मरूपनहींहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् तावेदविषे दूसरेपाखंडशास्त्रोंतैंविलक्षणता कथनकरेहै ॥ (ब्रह्माक्षरसमुद्भवंइति) हेअर्जुन भ्रम प्रमाद करणाऽपाटव विप्रलिप्सा इत्यादिकसर्वदोषोंतैंरहितजोपरमात्मादेवहै ॥ ताअक्षरपरमात्मादेवतैंहीं पुरुषकेनिःश्वासोकीन्यांई विनाहींप्रयत्नतैंसो ऋग् यजुष् साम अथर्वणरूपवेद प्रादुर्भावहूआहै ॥ याकारणतैं भ्रमप्रमादआदिकदोषोंकीशंकातैंरहितहूए तेअपौरुषेयवेदोंकेवचनहीं धर्मरूपअतिइंद्रियअर्थविषयकप्रमाकीजनकताकरिकै प्रमाणरूप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैं ॥ भ्रमप्रमादआदिकदोषोंवालेपुरुषोंकरिकैरचितपाखंडवाक्य ताअतिइंद्रियधर्मविषयकप्रमाकूंउत्पन्नकरैनहीं ॥ या
तैं तेपाखंडशास्त्र ताधर्मविषेप्रमाणरूपहैनहीं ॥ ईहां अन्यपदार्थविषे अन्यबुद्धिकानाम भ्रमहै ॥ और अवश्यकरणेयो
ग्यअर्थकूंभी नहींकरणा याकानाम प्रमादहै ॥ और नेत्रादिककरणोंविषे वस्तुकेयथार्थग्रहणकरणेकोनहीं शक्तिहे
णी याकानाम करणाऽपाटवहै ॥ और अन्यलोकोंकेवंचनकरणेकीइच्छाकानाम विप्रलिप्साहैइति ॥ तहां अक्षरपरमा
त्मादेवतैंहीं वेदोंकाप्रादुर्भावहोवैहै यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकहीहै ॥ तहांश्रुति ॥(अस्यमहतोभूतस्यनिःश्वसितमेतद्यद्दग्व
दोयजुर्वेदःसामवेदोऽथर्वांगिरसइतिहासःपुराणंविद्याउपनिषदःश्लोकाःसूत्राण्यनुव्याख्यानानिव्याख्यानानिइति ॥) अ
र्थयह ॥ ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्वणवेद यहच्यारिवेद इसमहान्परमात्मादेवकेनिःश्वासरूपहैं ॥ तेच्यारोवेद
इतिहास पुराण विद्याउपनिषद श्लोक सूत्र अनुव्याख्यान व्याख्यान याभेदकरिकै अष्टप्रकारकेहैंइति ॥ इतिहास पुराण
आदिकअष्टोंकाअर्थ आत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे हम विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैं इसप्रकार साक्षात्परमा
त्मादेवतैंहींउत्पन्नहोणेंतैं सर्वअर्थकाप्रकाशक तथाअविनाशी जोवेदहै ॥ सोवेद अतिइंद्रियधर्मरूपयज्ञविषे आपणेता
त्पर्यकरिकैंस्थितहोवैहै ॥ यातैं पाखंडशास्त्रकरिकैप्रतिपादित निकृष्टधर्मकापरित्यागकरिकै याअधिकारीपुरुषनैं वे
दप्रतिपादितधर्महीं अनुष्ठानकरणा इति ॥ १५ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार वेदादिकोंकीउत्पत्तिहोवौ ताक
हणेकरिकै ईहांप्रसंगविषे क्याफलसिद्धहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

एवंप्रवर्त्तितंचक्रंनानुवर्त्तयतीहयः ॥ अघायुरिंद्रियारामोमोघंपार्थसजीवति ॥ १६ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एवं । प्रवर्त्तितं । चक्रं । नं । अनुवर्त्तयति । इह । यः । अघायुः । इंद्रियारामः । मोघं । पार्थ । सः । जीवति ॥ इतिप० ॥

हेअर्जुन इसलोकविषे जो अधिकारीपुरुष इसप्रकार प्रवृत्तहूए चक्रकूं नहीं अंगीकार करेहैसो पापजीवनइंद्रियारामपुरुष व्यर्थहीं जीवताहै ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वज्ञपरमेश्वरतैं सर्वअर्थकूंप्रकाशकरणेहारे नित्य निर्दोष वेदका प्रादुर्भावहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर तावेदउक्तकर्मोंकाज्ञानहोवैहै ॥ ताकर्मोंकेज्ञानतैंअनंतर तिनकर्मोंकेअनुष्ठानतैं अपूर्वरूपधर्मकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिसधर्म कीउत्पत्तितैं अनंतर जलकीवृष्टिहोवैहै ॥ तिसजलकीवृष्टितैं व्रीहियवादिकअन्न उत्पन्नहोवैहै॥ताअन्नतैंमनुष्यादिकभूत उत्पन्नहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर तिनमनुष्यादिकोंकी पुनःकर्मोंविषेप्रवृत्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार सर्वजगतकेनिर्वाहकरणेवासतै परमेश्वरनैं प्रवृत्तकराजोयहचक्रहै तिसचक्रकूं जोअधिकारीपुरुष नहींअंगीकारकरेहै ॥ सोपुरुष पापरूपजीवनवालाहोणेतैं व्यर्थहींजीवताहै॥अर्थात् तिसपुरुषकेजीवनेतैं मरणहींश्रेष्ठहै॥काहेतैं ताशरीरकापरित्यागकरिकैदूसरेजन्मविषे तापुरुषकूंभी कदाचित् धर्मकाअनुष्ठान संभवहोइसकेहै ॥ तथा इसजन्मविषे वेदविहितकर्मोंकेनकरणेतैं जोपापकासंग्रहहोवैहै तिसतैंभीरहितहोवैहै ॥ यातैं तापुरुषकेजीवनेतैंमरणहींश्रेष्ठहै॥शंका॥ हेभगवन् तापूर्वउक्तचक्रकूं नहीं अंगीकारकरणेहाराजोब्रह्मवेत्तापुरुषहै तिसकाभी जीवननिष्फलहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् ताअज्ञानीपुरुषका विशेषणकहेहै (इंद्रियारामइति) श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै शब्दादिकविषयोंविषे जोपुरुष रमणकरेहै तानाम इंद्रियारामहै ॥ ऐसाविषयलंपटपुरुष केवल कर्मोंकाहींअधिकारीहोवैहै ॥ तिनकर्मोंकाअधिकारीहूआभी जोपुरुष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिनकर्मोंकूंनहींकरेहै ॥ सोपुरुष तिन विहितकर्मोंके नकरणेतैं केवल पापकाहींसंग्रहकरताहूआ व्यर्थहींजीवैहै ॥ और जोवन्मुक्तविद्वान्पुरुष इंद्रियारामहैनहीं ॥ यातैं तिनकर्मोंकेनकरणेतैं सोविद्वान्पुरुष प्रत्यवायकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ ॥ १६ ॥ ※ ॥ किंवा ॥ जोपुरुष इंद्रियारामनहींहै तथा परमार्थवस्तुकूं सर्वदा देखणेहाराहै ॥ सोविद्वान्पुरुष इसजगत्रूपचक्रकेहेतुभूतकर्मोंका नहींअनुष्ठानकरताहूआभी प्रत्यवायकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं सोविद्वान्पुरुषकृतकृत्यभावकूंप्राप्तहूआहै ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् दोश्लोकोकरिकैकथनकरैहै ॥

यस्त्वात्मरतिरेवस्यादात्मतृप्तश्चमानवः॥आत्मन्येवचसंतुष्टस्तस्यकार्यंनविद्यते॥ १७॥

यः। तु। आत्मरतिः। एव। स्यात्। आत्मतृप्तः। च। मानवः। आत्मनि। एव। च। संतुष्टः। तस्य। कार्यं। न। विद्यते ॥ इतिप०॥

हेअर्जुन पुनः जो मनुष्य आत्माविषेप्रीतिवालाहै होवैहै तथा आत्माकरिकैहींतृप्तहोवैहै तथा आत्माविषे हीं संतुष्ट होवैहै तिसपुरुषकूं किंचित्मात्रभी कार्य नहीं कर्तव्यहोवैहै ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष इंद्रियारामहोवैहै ॥ सोविषयलंपट स्त्रक् चंदन वनिता आदिकविषयोंकीप्राप्तिकरिकैहीं रतिकूं अनुभवकरैहै ॥ तथा सोपुरुष मनोहर अन्नपानादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकैहीं तृप्तिकूं अनुभवकरैहै तथा सोइंद्रियारामपुरुष सुवर्ण पुत्र पशु आदिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै तथा रोगादिकोंकीअप्राप्तिकरिकैहीं तुष्टिकूं अनुभवकरैहै ॥ तिनपदार्थोंकेअप्राप्तहूए तिनइंद्रियारामरागीपुरुषोंविषे यथाक्रमतैं अरति अतृप्ति अतुष्टिहींदे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

खणेविषेआवैहै ॥ ईहां रति तृप्ति यहतीनों मनकीवृत्तिविशेषहैं ॥ तेतिनो साक्षीरूपअनुभवकरिकैसिद्धहैं ॥ और जिसविद्वान्पुरुषकूं परमानंदस्वरूप परमात्मादेवकीप्राप्तिभईहै ॥ सोविद्वान्पुरुष द्वैतदर्शनकेअभावतैं तथा विषयसुखोंविषेतुच्छबुद्धिवालाहोणेतैं तिनविषयसुखोंकीइच्छा करतानहीं ॥ यहवार्त्ता (यावानर्थउदपाने) इसश्लो कविषे पूर्व कथनकरिआयेहैं ॥ याकारणतैं सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष आनंदस्वरूपआत्माविषेहीं रतिकरेहै ॥ स्त्रीआ दिकविषयोंविषेरतिकरैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् आनंदस्वरूपआत्माविषेतौं सर्वप्राणीमात्रकी निरुपाधिकप्रीतिहै ॥ ताआपणेआत्माकेवासतैहीं स्त्रीपुत्रादिकोंविषे प्रीतिहोवैहै ॥ यातैं ताआत्मरतिविद्वान्पुरुषविषे अज्ञानीपुरुषोंतैं वि लक्षणतासिद्धहोवैनहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (आत्मतृप्तःइति) हेअर्जुन सोविद्वान्पुरुष प रमानंदस्वरूपआत्माकरिकैहीं तृप्तहोवैहै ॥ अज्ञानीपुरुषकीन्यांई सोविद्वान्पुरुष कोई मनोरमस्त्रीयोंकरिकै तथा मिष्टअन्नकरिकै तृप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसपुरुषका जठराग्नि रोगादिकोंकरिकै मंदहूआहै ॥ तथा धा तुक्षयहोइगयाहै ॥ सोपुरुष मिष्टअन्नकरिकै तृप्तहोवैंनहीं ॥ तथा मनोरमस्त्रीयोंविषेभी रमणकरतानहीं ॥ यातैं ति सरोगीपुरुषतैं ताविद्वान्पुरुषविषे विलक्षणता सिद्धनहींहोवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (आ त्मन्येवचसंतुष्टःइति) हेअर्जुन सोविद्वान्पुरुष केवल आनंदस्वरूपआत्माविषे संतोषकूंप्राप्तहूआहै ॥ दूसरेकिसी अनात्मपदार्थोंविषे सोविद्वान्पुरुष संतोषकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ और रोगादिकोंकरिकै जिसपुरुषकाजठराग्नि मंद हूआहै तथाधातुक्षयहूआहै ॥ सोपुरुषतौं ताजठराग्निकेप्रज्वलितकरणेवासतै तथाधातुकीवृद्धिकरणेवासतै नानाप्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कारकेऔषधोंकेअर्थ जहांतहां भ्रमणकरेहै ॥ आनंदस्वरूपआत्माविषे सोअज्ञानीपुरुष संतोषकूं प्राप्तहोवैनहींइति ॥ इसीविलक्षणताकेबोधनकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं (यस्त्वात्मरतिः) यावचनविषे तु यहशब्द कथनकरयाहै ॥ तहांश्रुति ॥ (आत्मक्रीडआत्मरतिः क्रियावानेषब्रह्मविदांवरिष्ठः ॥) अर्थयह ॥ ब्रह्मवेत्तावोंविषेश्रेष्ठ यहविद्वान्पुरुष आनंदस्वरूपआत्माविषेहीं क्रीडाकरेहै ॥ तथा ताआत्माविषेहीं रतिकरेहै ॥ तथा ताआत्माविषेहीं क्रियावान्होवैहैइति ॥ ऐसेब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषविषे कर्मोंकेअधिकारीपणेका कोईहेतुहैनहीं ॥ याकारणतैं ताविद्वान्पुरुषकूं कोईभी लौकिक वैदिक कार्य कर्त्तव्यनहींहै ॥ किंतु सोब्रह्मवेत्तापुरुष कृतकृत्यनहींहै ॥ ईहां (मानवः) यापदकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ जोकोईभीमनुष्यमात्र इसप्रकार आत्मरतिहोवैहै तथाआत्मतृप्तहोवैहै तथाआत्मसंतुष्टहोवैहै ॥ सोईहींमनुष्य कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताकृतकृत्यभावकीप्राप्तिविषे ब्राह्मणत्वआदिकउत्तमजातिका किंचित्मात्रभी उपयोगनहींहैइति ॥ १७ ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् आत्मसाक्षात्कारवान्पुरुषकूंभी स्वर्गादिकसुखोंकीप्राप्तिवासतै अथवा मोक्षकोप्राप्तिवासतै अथवा प्रत्यवायकोनिवृत्तिवासतै अवश्यकरिकै तेकर्म करणेयोग्यहैं ॥ ऐसोअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥

नैवतस्यकृतेनार्थोनाकृतेनेहकश्चन ॥ नचास्यसर्वभूतेषुकश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥ १८ ॥

नँ१ एव२ तस्य३ कृतेन४ अर्थः५ नँ६ अकृतेन७ इह८ कँश्चन९ नँ१० च११ अस्य१२ सर्वभूतेषु१३ कश्चित्१४ अर्थव्यपाश्रयः ॥ इतिपद० ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन तिसविद्वान्पुरुषकूं कर्मकरिकै कोईभीप्रयोजन नहींहै तथा कर्मकेनकरणेकरिकै इसलोकविषे कोईभीअर्थ नहींहै जिसकारणतैं इसविद्वान्पुरुषकूं सर्वभूतोंविषे कोईभी प्रयोजनकासंबंध नहींहै ॥ इतिप०॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष आत्मरतिहै तथाआत्मतृप्तहै तथाआत्मसंतुष्टहै ॥ तिसआत्मवेत्तापुरुषकूं नित्यनैमित्तिककर्मोकरिकै कोईभी अभ्युदयरूपप्रयोजन तथानिःश्रेयसरूपप्रयोजन हैनहीं ॥ काहेतैं तिसविद्वान्पुरुषकूं स्वर्गादिरूपअभ्युदयकेप्राप्तिकीतौं इच्छामात्रभीनहींहै ॥ और मोक्षरूपनिःश्रेयसतौं कर्मोकरिकैसाध्यहींनहींहै ॥ तहांश्रुति ॥ (परीक्ष्यलोकान्कर्मचितान्ब्राह्मणोनिर्वेदमायान्नास्त्यकृतःकृतेनइति ॥) अर्थयह ॥ यहअधिकारीब्राह्मण पुण्यकर्मकरिकैरचितस्वर्गादिकलोकोंकूं अनित्यता सातिशयता आदिकदोषोंवालाजाणिकै तिनस्वर्गादिकलोकोतैं वैराग्यकूंप्राप्तहोवै॥ जिसकारणतैंआत्मारूपनित्यमोक्ष नित्यनैमित्तिककर्मोकरिकै प्राप्तहोवैनहींइति ॥ ईहां (नैवतस्य) यावचनविषेस्थितजो एव यहशब्दहै ॥ सोएवशब्द ताआत्मारूपनित्यमोक्षविषे ज्ञानसाध्यताकोभी निवृत्तिसूचनकरेहै ॥ अर्थात्सोआत्मरूपनित्यमोक्ष जैसे कर्मोकरिकैसाध्यनहींहै तैसे ज्ञानकरिकैभी साध्यनहींहै ॥ काहेतैं सोआत्मारूपमोक्ष वास्तवतैंतौं याजीवोंकूं नित्यहींप्राप्तहै ॥ तथापि ताआत्माकाजोअज्ञानहै सोअज्ञानहीं तामोक्षकीअप्राप्तिहै ॥ सोअज्ञान तत्त्वज्ञानमात्रकरिकैनिवृत्तहोवैहै तातत्त्वज्ञानकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहूए ताविद्वान्पुरुषकूं कर्मोकरिकैसिद्धहोणेहारातथातत्त्वज्ञानकरिकैसिद्धहोणेहारा कोईभीप्रयोजन बाकीरहैनहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् नित्यनैमित्तिककर्मोकेनहींकरणेतैं शास्त्रविषे प्रत्यवायकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ यातैं ताविद्वान्पुरुषनैंभी प्रत्यवायकीनिवृत्तिकरणेवासतै तेनित्यनैमित्तिककर्म अवश्य करणेयोग्य

328

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (नाकृतेनेहकश्चनइति) हेअर्जुन तिसब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषकूं नित्यनैमित्तिककर्मोकेनकरणेकरिकै इसलोकविषे किंचित्मात्रभी निंदारूपअनर्थ तथाप्रत्यवायकीप्राप्तिरूपअनर्थ होवैनहीं इति ॥ तहां इसश्लोककेपूर्वार्द्धकरिकैकथनकरयेहूएसर्वअर्थविषे (नचास्यसर्वभूतेषुकश्चिदर्थव्यपाश्रयः) याउत्तरार्द्धकरिकैयुक्तिकाकथनकरेहैं ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं इसब्रह्मवेत्तापुरुषकूं ब्रह्मातैंआदिलैकेस्थावरपर्यंतसर्वभूतोंविषे कोईभीप्रयोजनकासंबंध नहींहै ॥ अर्थात् किसीभीभूतविशेषकूंआश्रयणकरिकै कोईक्रियासाध्यअर्थहैनहीं ॥ तिसकारणतैं इसब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषकूं तिननित्यनैमित्तिककर्मोकाकरणा तथातिनकर्मोकानहींकरणा यहदोनों निःप्रयोजनहैं॥तहांश्रुति॥(नैनंकृताऽकृतेतपतःइति) ॥ अर्थयह॥इसब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषकूं कर्मोकाकरणा तथाकर्मोकानहींकरणा यहदोनों तपायमानकरैं नहींइति॥शंका॥हेभगवन् तिसब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषकूंभी मोक्षकीप्राप्तिविषे इंद्रादिकदेवता नानाप्रकारकेविघ्नकरैंगे ॥ यातैंतिनविघ्नोंकीनिवृत्तिकरणेवासतै ताब्रह्मवेत्तापुरुषनैंभी तिनदेवतावोंकाआराधनरूपकर्म अवश्यकरणाचाहीये ॥ समाधान ॥ हेअर्जुन आत्मज्ञानतैंपूर्वहीं तेदेवता विघ्नकरेहैं ॥ आत्मज्ञानकोप्राप्तितैंउत्तर मोक्षकीप्राप्तिविषे तेदेवता विघ्नकरणेविषेसमर्थहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (तस्यहनदेवाश्चनाभूत्याईशतआत्माह्येषांसभवति ॥) अर्थयह ॥ जिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तापुरुष इनदेवतावोंकाआत्मारूपहै ॥ तिसकारणतैं यहइंद्रादिकदेवता तिसब्रह्मवेत्तापुरुषके पराभवकरणेविषे समर्थहोवैनहींइति ॥ यातैं ताब्रह्मवेत्तापुरुषकूं विघ्नोंकोनिवृत्तिकरणेवासतै सोदेवतावोंकाआराधनरूपकर्मभी कर्त्तव्यनहींहैइति ॥ ऐसाब्रह्मवेत्तापुरुष सप्तभूमिकावोंकेभेदकरिकै वसिष्ठभगवान्नैंभी निरूपणकरयाहै ॥ तहां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्लोक ॥ (ज्ञानभूमिःशुभेच्छास्याप्रथमापरिकीर्त्तिता ॥ विचारणाद्वितीयास्यात्तृतीयातनुमानसा ॥ सत्त्वापत्तिश्चतुर्थी स्यात्ततोऽसंसक्तिनामिका ॥ पदार्थाभावनोषष्ठीसप्तमीतुर्यगास्मृता ॥) अर्थयह ॥ शुभइच्छा १ विचारणा २ तनुमा नसा ३सत्वापत्ति ४ असंसक्ति ५ पदार्थाभावनी ६ तुरीया ७ यहसप्तभूमिका ज्ञानकीहोवैहैं ॥ तहां नित्यअनि त्यवस्तुकाविचार तथा इसलोकपरलोककेविषयसुखोंतैंवैराग्य तथाशमदमादिकषट्संपत्ति यातीनोंसाधनपूर्वक जा फलपर्यंत मोक्षकिइच्छाहै जिसकूं मुमुक्षुताकहेहैं ताकानाम शुभइच्छाहै ॥ १ ॥ तिसतैंअनंतर श्रोत्रियब्रह्मवेत्तागुरुकेस मीपजाइकै वेदांतवचनोंकाश्रवणकरणा तथाश्रवणकरयेहूएअर्थका मननकरणा याकानाम विचारणाहै ॥ २ ॥ तिस तैंअनंतर निदिध्यासनरूपअभ्यासतैं मनकीएकाग्रताकरिकै तामनविषे जासूक्षमवस्तुकेग्रहणकरणेकीयोग्यताहै याकानाम तनुमानसाहै ॥ ३ ॥ यहतीनोंभूमिका ज्ञानकेप्राप्तिका साधनरूपहैं ॥ और यातीनोंभूमिकाविषे य हसर्वजगत् भेदकरिकैविशिष्टहूआ प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं यहतीनोंभूमिका जाग्रत्अवस्था यानामकरिकैकहीजावैहैं ॥ यहवार्त्ताभी वसिष्ठभगवान्नैं कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (भूमिकात्रितयंत्वेतत्रामजाग्रदितिस्थितं ॥ यथावद्भेदबु द्ध्येदंजगज्जाग्रतिदृश्यते ॥) अर्थयह ॥ हेरामचंद्र जैसे जाग्रत्अवस्थाविषे यहजगत् यथावत् भेदबुद्धिकरिकैदेख्या जावैहै ॥ तैसै यातीनभूमिकावोंविषेभी यहसर्वजगत् यथावत् भेदबुद्धिकरिकै देख्याजावैहै ॥ यातैं शुभइच्छा विचार णा तनुमानसा यहतीनोंभूमिका जाग्रत्अवस्था यानामकरिकैकहीजावैहैंइति ॥ तिसतैंअनंतर याअधिकारीपुरुषकूं तत्त्वमसि आदिकवेदांतवाक्योंतैं निर्विकल्पक ब्रह्मात्मऐक्यविषयक साक्षात्कारहोवैहै याकानाम सत्वापत्तिहै ॥ ४ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और तासत्त्वापत्तिनामा चतुर्थभूमिकाविषे यहसर्वजगत् स्वप्नकीन्यांई मिथ्यारूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ याकारणतैं साफलरूपसत्त्वापत्ति स्वप्नअवस्था यानामकरिकैकहीजावैहै ॥ यहवार्त्ताभी वसिष्ठभगवान्नैं कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अद्वैतेस्थैर्यमायातेद्वैतप्रशममागते ॥ पश्यतिस्वप्नवल्लोकंचतुर्थीभूमिकामता ॥) अर्थयह ॥ जिसकालविषेअद्वैतकीस्थिरताप्राप्तहोवैहै तथाद्वैतकीनिवृत्तिहोवैहै तथा यहांवद्वान्पुरुष सर्वजगतकूंस्वप्नकीन्यांई मिथ्यादेखेहै ॥ तिसकालविषे चतुर्थीभूमिका कहीजावैहैइति ॥ ताचतुर्थीभूमिकाकूंप्राप्तिहूआ योगीपुरुष ब्रह्मवित् यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ और पंचमी षष्ठी सप्तमी यहतीनभूमिकातौं जीवन्मुक्तिकेहीं अवांतरभेदहैं ॥ तहां सविकल्पकसमाधिकेअभ्यासकरिकै निरुद्धहूआजोमनहै तानिरुद्धमनविषे जोनिर्विकल्पकसमाधिअवस्थाहै ताकानाम असंसक्तिहै ॥ ५ ॥ ताअसंसक्तिनाम पंचमीभूमिकांकूं सुषुप्ति यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और तापंचमीभूमिकावाला योगीपुरुष आपहीं समाधितैंव्युत्थानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं सोपंचमीभूमिकावाला योगीपुरुष ब्रह्मविद्वर यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ तिसतैंअनंतर ताअसंसक्तिनामा पंचमीभूमिकाकेपरिपक्वताकरिकै चिरकालपर्यंत स्थिरहूईजा सानिर्विकल्पकसमाधिअवस्थाहै ताकानामा पदार्थाभावनी है ॥६ ॥ सापदार्थाभावनीनाम षष्ठीभूमिका गाढसुषुप्ति यानामकरिकैकहीजावैहै ॥ तापदार्थाभावनीनामा षष्ठीभूमिकाकूंप्राप्तहूआ सोयोगीपुरुष आपेहीं समाधितैंउठैनहीं ॥ किंतु दुसरे शिष्यादिकौंकेप्रयत्नकरिकैहीं सोयोगीपुरुष समाधितैंव्युत्थानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोषष्ठीभूमिकावालायोगीपुरुष ब्रह्मविद्वरीयान् यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ यहवार्त्ताभी वसिष्ठभगवान्नैं कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (पंचमीभूमिकामेत्यसुषु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्तिपदनामिकां ॥ षष्ठींगाढसुषुप्त्याख्यांक्रमात्पततिभूमिकां ॥) अर्थयह ॥ यहयोगीपुरुष सुषुप्तिनामा पंचमीभूमिकाकूं प्राप्तहोइकै क्रमतैं गाढसुषुप्तिनामा षष्ठीभूमियाकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ और जिससमाधिअवस्थातैं यहयोगीपुरुष आपभी व्युत्थानकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा अन्यशिष्यादिकोंकरिकैभी व्युत्थानकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सर्वथा भेददर्शनकेअभावतैं तद्रूपहींहोवैहै ॥ तथा आपणेप्रयत्नतैंविनाहीं परमेश्वरकरिकैप्रेरणाकरयेहूए प्राणवायुकेवशतैंतथाप्रारब्धकर्मकेवशतैं जिसविद्वान्पुरुषकेदेहकाव्यवहार अन्यलोकहींसिद्धकरैहैं ॥ तथा जोविद्वान्पुरुष सर्वदा परिपूर्णपरमानंदघनहूआ स्थितहोवैहै ॥ ऐसोअवस्था तुरीयानामा सप्तमीभूमिकाकहीजावैहै ॥ ७ ॥ तासप्तमीभूमिकाकूंप्राप्तहूआ सोयोगीपुरुष ब्रह्मविद्वरिष्ठयानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ इनसप्तभूमिकावोंकेसंग्रहका यहश्लोकहै ॥ (चतुर्थीभूमिका ज्ञानंतिस्रःस्युःसाधनंपुरा ॥ जोवन्मुक्तेरवस्थास्तुपरातिस्रः प्रकीर्त्तिताः ॥) अर्थयह ॥ शुभइच्छा विचारणा तनुमानसा यहपूर्वलीतीनभूमिकातौं साधनरूपहैं ॥ और सत्त्वापत्तिनामा चतुर्थीभूमिका ज्ञानरूपहै ॥ और असंसक्ति पदार्थाभावनी तुरीया यहतीनभूमिका जीवन्मुक्तिकी अवस्थाविशेषहैंइति ॥ इनसप्तभूमिकावोंकेकहणेकाईहां प्रसंगविषे यहप्रयोजनहै ॥ जोपुरुष शुभइच्छाविचारणा तनुमानसा यासाधनरूप प्रथमतीनभूमिकावोंकूंभीप्राप्तभयाहै ॥ सोपुरुषभी जबी कर्मोंकाअधिकारीनहींहै ॥ तबी चतुर्थीभूमिकावालाज्ञानवान्पुरुष तथाउत्तरतीनभूमिकावालाजोवन्मुक्तपुरुष तिनकर्मोंकाअधिकारीनहींहै याकेविषे क्याकहणाहै इति ॥ १८ ॥* ॥ जिसकारणतैं तूंअर्जुन इसप्रका

332

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रकाज्ञानवान्हैंनहीं ॥ किंतु केवलकर्मोंकाहीं तूं अधिकारीहैं ॥ तिसकारणतैं फलकीइच्छातैंरहितहोइकै तूं नित्यनैमित्तिककर्मोंकूंहींकर याप्रकारकेअर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कथनकरेहै ॥

तस्मादसक्तःसततंकार्यंकर्मसमाचर॥ असक्तोह्याचरन्कर्मपरमाप्नोतिपूरुषः ॥ १९॥

तस्मात् । असक्तः । सततं । कार्यं । कर्म । समाचर । असक्तः । हि । आचरन् । कर्म । परं । आप्नोति । पूरुषः । इतिपद० ॥

हेअर्जुन तिसकारणतैं तूं फलकामनातैंरहितहोइकै सर्वदा अवश्यकरणेयोग्य नित्यनैमित्तिककर्मकूं भलीप्रकारतैंकरजिसकारणतैं यहपुरुष फलकीकामनातैंरहितहोइकै तिसकर्मकूं करताहूआ मोक्षकूंहीं प्राप्तहोवैहै॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं तूं ज्ञानवान्हैनहीं ॥ किंतु केवलकर्मोंकाहींअधिकारीहैं ॥ तिसकारणतैं (यावज्जीवमग्निहोत्रंजुहुयात्) इत्यादिकश्रुतियोनैंविधानकरयेहूए तथा (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेन) इसश्रुतिनैं आत्मज्ञानविषे उपयोग कथनकरयाहैजिनोंका ऐसेजेनित्यनैमित्तिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंकूं तूं फलकीइच्छातैंरहितहोइकै श्रद्धाभक्तिपूर्वक निरंतरकर ॥ जिसकारणतैं यहपुरुष फलकीइच्छातैंरहितहोइकै निरंतर तिनानित्यनैमित्तिककर्मोंकूंकरताहूआ अंतःकरणकोशुद्धिद्वारा तथाआत्मज्ञानद्वारा मोक्षकूंहींप्राप्तहोवैहै इति ॥ १९ ॥

॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छावान्पुरुषकूंभी ताज्ञाननिष्ठाकोप्राप्तिवासतै श्रवणमननिदिध्यासनकेअनुष्ठानअर्थ सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यास शास्त्रविषेविधानकरयाहै ॥ यातैं केवल ज्ञानवान्पुरुषकूंहीं तिनकर्मों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

काअनधिकारनहींहै ॥ किंतु ताज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छावान्विरक्तपुरुषकूंभी तिनकर्मोंकाअनधिकारहींहै ॥ यातैं ज्ञान केप्राप्तिकीइच्छावान् तथाविरक्त ऐसाजोमैंअर्जुनहूं ॥ तिसमैंअर्जुननैंभी तेकर्म परित्यागकरणेकूंहींयोग्यहैं ॥ ऐसी अर्जुनकोशंकाकूं श्रीभगवान् क्षत्रियराजाकूं संन्यासकाअनधिकार प्रतिपादनकरिकै निवृत्तकरेहै ॥

कर्मणैवहिसंसिद्धिमास्थिताजनकादयः॥लोकसंग्रहमेवापिसंपश्यन्कर्तुमर्हसि ॥२०॥

कर्मणा । एव । हि । संसिद्धिं । आस्थिताः । जनकादयः । लोकसंग्रहं । एव । अपि । संपश्यन् । कर्तुं । अर्हसि ॥ इतिपद० ॥

हेअर्जुन जिसकारणतैं पूर्व जनकादिकक्षत्रियराजे कर्मकरिकै ही ज्ञाननिष्ठाकूं प्राप्तहोतेभयेहैं तिसकारणतैं तूंभी कर्महींकरणेकूंयोग्यहैं किंवा लोकसंग्रहकूं देखताहूआ भी तूं कर्मकरणेकूं ही योग्यहैं ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रुतिस्मृतिविषेप्रसिद्धजे जनकराजा अजातशत्रुराजा अश्वपतिराजा भगीरथराजा इत्यादिक क्षत्रियराजेहैं ॥ तेजनकादिकविद्वान्राजेभी नित्यनैमित्तिककर्मोंकरिकैहीं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा श्रवणमननादिकों करिकैसाध्यज्ञाननिष्ठाकूं प्राप्तहोतेभयेहै ॥ कोईकर्मोंकेत्यागकरिकै ताज्ञाननिष्ठाकूं नहींप्राप्तहोतेभयेहै ॥ यहवार्ता जिसकारणतै यथार्थहै ॥ तिसकारणतै तूंक्षत्रियअर्जुनभी ज्ञानकीइच्छावालाहूआ अथवा विद्वान्हूआ सर्वप्रकारतै कर्महींकरणेकूंयोग्यहैं ॥ कर्मोंकेत्यागकरणेकूं तूं योग्यनहींहै ॥ काहेतैं (ब्राह्मणाःपुत्रैषणायाश्चवित्तैषणायाश्चलोकैष णायाश्चव्युत्थायाथभिक्षाचर्यंचरंति) यहजो संन्यासआश्रमकाविधायकश्रुतिवचनहै ॥ तावचनविषे ब्राह्मणकाहीं सं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न्यासविषेअधिकार कथनकऱ्याहै ॥ क्षत्रियवैश्यकाअधिकार कथनकऱ्यानहीं ॥ जैसे (स्वाराज्यकामोराजाराजसूयेनय
जेत) इसवचनविषे राजसूययज्ञविषे क्षत्रियराजाकाहींअधिकार कथनकऱ्याहै ॥ ब्राह्मणादिकोंकाअधिकार कथनकऱ्या
नहीं ॥ और (चत्वारआश्रमाब्राह्मणस्यत्रयोराजन्यस्यद्वौवैश्यस्य ॥) अर्थयह ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास यह
च्यारिआश्रम ब्राह्मणकेहींहोवैहैं ॥ और संन्यासकूंछोडिकै तीनआश्रम क्षत्रियराजाकेहोवैहैं ॥ और ब्रह्मचर्य गृहस्थ
यहदोआश्रम वैश्यकेहोवैहैंइति ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतिस्मृतिवचनोंविषे क्षत्रियवैश्यकूं संन्यासकेअभावकाकथनक
ऱ्याहै ॥ तिनश्रुतिस्मृतिवचनोंकेतात्पर्यकूंजानणेहारे तेजनकादिकक्षत्रियराजे नित्यनैमित्तिककर्मोंकरिकैहीं ज्ञाननि
ष्ठाकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ तिनकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकरिकै तेजनकादिक ज्ञाननिष्ठाकूंनहींप्राप्तहोतेभयेहैंइति ॥ किं
वा ॥ (सर्वेराजाश्रिताधर्माराजाधर्मस्यधारकः) ॥ अर्थयह ॥ श्रुतिस्मृतिकरिकैप्रतिपादितसर्वधर्म राजाकेआश्रितर
हेहैं ॥ तथा यहराजाहीं सर्वधर्मकाधारणकरणेहाराह्वोवैहैइति ॥ यास्मृतिवचनतैं सर्ववर्णआश्रमकेधर्मोंकाप्रवर्त्तकप
णा क्षत्रियराजाविषेसिद्धहोवैहै ॥ याकारणतैंभी यहक्षत्रियराजा अवश्यकरिकैकर्मोंकूंकरै ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान्
कहेहै (लोकसंग्रहमेवापीति) लोकोंकूं आपणेआपणेधर्मविषेप्रवर्त्तकरणा तथाअधर्मतैंनिवृत्तकरणा याकानाम लो
कसंग्रहहै ॥ तालोकसंग्रहकूंदेखताहूआभी तथापूर्वजनकादिकक्षत्रियराजावोंकेशिष्टाचारकूंदेखताहूआभी तूं अर्जुन
नित्यनैमित्तिककर्मोंकेकरणेकूंहींयोग्यहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ क्षत्रियजन्मकोप्राप्तिकरणेहारेकर्मोंनैं आरंभकऱ्याहैशरीरजिस
का ऐसाजोतूंअर्जुनहैं ॥ सोतूंअर्जुन विद्वान्हूआभी जनकादिकोंकीन्यांई प्रारब्धकर्मकेबलकरिकै तालोकसंग्रहके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वासतै कर्मकरणेकूंहींयोग्यहैं ॥ कोईकर्मोंकेत्यागकरणेकेयोग्य तूं नहींहैं ॥ जिसकारणतैं कर्मोंकेसंन्यासकरणेयोग्यब्राह्मणशरीर तुमारेकूंप्राप्तभयानहींइति ॥ इसीप्रकारके श्रीभगवान्केअभिप्रायकूं जानणेहारे भगवान्भाष्यकारोंनैं ब्राह्मणकूंहीं संन्यासविषेअधिकारहै अन्यक्षत्रियादिकोंकूं संन्यासविषेअधिकारनहींहै याप्रकारकानिर्णयकरयाहै ॥ और (सर्वाधिकारविच्छेदिज्ञानंचेदभ्युपेयते ॥ कुतोऽधिकारनियमोव्युत्थानेक्रियतेबलात्) अर्थयह ॥ सर्वअधिकारकाविच्छेदकरणेहाराज्ञान जबी क्षत्रियवैश्यकूं अंगीकारकरतेहो ॥ तबो संन्यासविषे ब्राह्मणकाहींअधिकारहै क्षत्रियवैश्यकानहींहै याप्रकारका संन्यासकेअधिकारकानियम बलात्कारसैं किसवासतै अंगीकार करतेहो ॥ किंतु यह नियमभी नहींमान्याचाहीयेइति ॥ इत्यादिकवचनोंकरिकै जोवार्त्तिककारनैं क्षत्रियवैश्यकूंभी संन्यासकाअधिकार सिद्धकरयाहै ॥ सोप्रौढिवादतैंसिद्धकऱ्याहै ॥ सर्वथाअनुपपन्नअर्थकूंभी आपणीप्रज्ञाकेबलतैं सिद्धकरदेणा याकानाम प्रौढिवादहै ॥ अथवा क्षत्रियवैश्यकूंसंन्यासकाप्रतिपादनकरणेहारेवचनोंका भरतऋषभादिकोंकोन्यांई अलिंगविद्वत्संन्यासविषे तात्पर्यहैइति ॥ सर्वप्रकारतैं दंडादिकचिन्हपूर्वक विविदिषासंन्यासविषे एकब्राह्मणकाहीं अधिकार है ॥ क्षत्रियादिकोंकाहैनहींइति ॥ २० ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोकदाचित् मैंअर्जुन तिनकर्मोंकूंकरौंभी ॥ तौंभी दूसरेलोक तिनकर्मोंकूंकिसप्रकारकरैंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् दूसरे लोक श्रेष्ठपुरुषोंकेआचारकेअनुसारहीं प्रवृत्तहोवैहैं याप्रकारकाउत्तरकहेहैं ॥

यद्यदाचरतिश्रेष्ठस्तत्तदेवेतरोजनः ॥ सयत्प्रमाणंकुरुतेलोकस्तदनुवर्त्तते ॥ २१ ॥

336

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यंत्।यंत्।आंचरति।श्रेष्ठः।तंत्।तंत्।एंव।इंतरः।जंनः।सैंः।यंत्।प्रैंमाणं।कुंरुते।लोकैंः।तंत्।अंनुवर्त्तते ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन श्रेष्ठपुंरुष जिसं जिसंकर्मकूं कंरेहै तिसी तिसीकंर्मकूं हौं दूसंरे जनंभी करेहैं और सोश्रेष्ठपुंरुष जिसंकूं प्रैंमाण कंरेहै तिसंकूंहीं दूसंरेलोकभी प्रमांणकरेहैं ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वलोकोंविषेप्रधानभूत जेराजादिकश्रेष्ठपुरुषहैं ॥ तेराजादिकश्रेष्ठपुरुष जिसजिस शुभकर्मकूं अथवा अशुभकर्मकूं करेहैं ॥ तिसीतिसी शुभकर्मकूं अथवा अशुभकर्मकूं तिनराजादिकोंकेआज्ञाविषेचलणेहारेदूसरेजनभी करेहैं ॥ तिनराजादिकोंतैंस्वतंत्रहोइकै तेदूसरेजन किंचित्मात्रभीकार्यकूंकरैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेदूसरेलोक शास्त्रकूंभलीप्रकारतैंविचारकरिकै शास्त्रतैंविरुद्ध राजादिकश्रेष्ठपुरुषोंकेआचारकूंपरित्यागकरिकै केवल शास्त्रविहितआचारकूं किसवासतैनहींकरते ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ तिनदूसरेलोकोंकूं श्रेष्ठाचारकीन्यांई प्रमाण ताकानिश्चयभी तिनश्रेष्ठपुरुषोंकेअनुसारहींहोवैहै याप्रकारकाउत्तर श्रीभगवान् कथनकरेहै (सयत्प्रमाणंकुरुतेइति)हे अर्जुन तेराजादिकश्रेष्ठपुरुष जिसलौकिकपदार्थकूं अथवा वैदिकपदार्थकूंप्रमाणरूपकरिकै अंगीकारकरेहैं ॥ तिसीहीं लौकिकपदार्थकूं तथा वैदिकपदार्थकूं दूसरेलोकभी प्रमाणरूपकरिकै अंगीकारकरेहैं ॥ तेदूसरेलोक तिनराजादिकश्रेष्ठ पुरुषोंतैं स्वतंत्रहोइकै किसीभीपदार्थकूं प्रमाणरूपकरिकैअंगीकारकरतेनहीं ॥ यातैं हेअर्जुन सर्वलोकोंविषेप्रधान भूतजोतूंराजाहैं ॥ तिसतुमनैं लोकोंकेसंरक्षणवासतैं अवश्यकरिकै कर्म करणेकूंयोग्यहैं ॥ तुमारीशुभकर्मोंविषेप्रवृत्तिकूंदेखिकरिकै दूसरेलोकभी अवश्यकरिकै तिनशुभकर्मोंविषे प्रवृत्तहोवैंगे ॥ जिसकारणतैं राजादिकप्रधानपुरुषों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

केअनुसारहीं दूसरेसर्वलोकोंकेव्यवहारहोवैहैं इति ॥ २१ ॥ * ॥ हेअर्जुन दूसरेलोकोंकूं शुभकर्मविषे प्रवृत्त करणेवासतै राजादिकश्रेष्ठपुरुषोंनैं अवश्यकरिकै शुभकर्मोंविषेप्रवृत्तहोणा याअर्थविषे मैंकृष्णभगवान्हीं दृष्टां तहूं इसअर्थकूं तीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् कहेहै ॥

नमेपार्थास्तिकर्त्तव्यंत्रिषुलोकेषुकिंचन॥नानवाप्तमवाप्तव्यंवर्त्तएवचकर्मणि॥२२॥

नँ। मे२। पार्थ१। अस्ति४। कर्त्तव्यं६। त्रिषु३। लोकेषु५। किंचन११। नँ। अनवाप्तं १०। अवाप्तव्यं १४। वर्त्ते १५। एव १३। च १२। कर्मणि॥इतिप०

हेअर्जुन१ हमारे२कूं तीन३ लोक५कोंविषे किंचित्मात्रभी कर्त्तव्य६णेयोग्य नँहीं है४ जिसकारणतैं हमारेकूं पूर्वअप्राप्तफ
ल किंचित्मात्रभी प्राप्त१०होणेयोग्य नहींहै तौंभी मैं कर्म१२विषे प्रसिद्ध वर्त्तता १५हींहूं ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ जैसे गृहकेस्वामीकूं तागृहविषेस्थितसर्वपदार्थ प्राप्तहींहैं ॥ तैसे सर्वब्रह्मांडकास्वामी जोमैं कृष्णभगवान् हूं तिसहमारेकूं ताब्रह्मांडविषेस्थितसर्वपदार्थ प्राप्तहींहैं ॥ कोईभीपदार्थ हमारेकूं अप्राप्तनहींहै ॥ और लोकविषे पूर्वअप्राप्तवस्तुकीप्राप्तिवासतैहीं प्रयत्नकरेहैं ॥ पूर्वप्राप्तवस्तुकीप्राप्तिवासतै कोईभी प्रयत्नकरतानहीं ॥ यातैं तीन लोकोंविषे किसीपदार्थकेप्राप्तिकाउद्देशकरिकै हमारेकूं किंचित्मात्रभी कर्त्तव्यनहींहै ॥ तौंभी मैंकृष्णभगवान् वेद विहितशुभकर्मोंविषे प्रवृत्तहोताहींहूं ॥ तिनशुभकर्मोंका मैं कदाचित्भी परित्यागकरतानहीं ॥ तिनशुभकर्मोंविषे हमारीप्रवृत्ति तुमारेकूंभी प्रत्यक्षहींसिद्धहै ॥ इसीप्रसिद्धिकेबोधनकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं (वर्त्तएवच) यावचनवि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

षेस्थित च यहशब्दकथनकरयाहै ॥ और (हेपार्थ) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थसूचनकरया ॥ शुद्धक्षत्रिय वंशविषेउत्पन्नहोणेतैं तूं अर्जुन हमारेसमानहीं शूरवीरहैं ॥ यातैं हमारेन्यांई तुमारेकूंभी शुभकर्मोंविषेप्रवृत्तहोणाहीं उचितहै इति ॥ २२ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् आप शुभकर्मोंविषेप्रवृत्तहोइकै दूसरेलोकोंकूंभी तिनशुभकर्मोंविषे प्रवृत्तकरणा याप्रकारके लोकसंग्रहकरणेका कोईफलहैनहीं ॥ यातैं सोलोकोंकासंग्रहभी तुमारेकूंकरणेयोग्यनहींहै ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

330

यदिह्यहंनवर्त्तेयंजातुकर्मण्यतंद्रितः ॥ ममवर्त्मानुवर्त्ततेमनुष्याःपार्थसर्वशः ॥ २३ ॥

यदि । हि । अहं । न । वर्त्तेयं । जातु । कर्मणि । अतंद्रितः । मम । वर्त्म । अनुवर्तते । मनुष्याः । पार्थ । सर्वशः ॥ इतिप०

हेअर्जुन जो कदाचित् मैंकृष्णभगवान् अलसतैंरहितहोइकै शुभकर्मविषे नहीं प्रवर्त्तहोवौं तौं कर्मकेअधिकारीमनुष्य हमारे मार्गकूंहीं सर्वप्रकारकरिकै अंगीकारकरैंगे ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैं अबीकृतार्थहूआहूं कर्मोंकेकरणेकरिकै अबी हमारेकूं किंचित्मात्रभीअर्थ सिद्धकरणेयोग्यनहींरह्या याप्रकारकी कृतकृत्यबुद्धिकरिकै जोकदाचित् मैंकृष्णभगवान् आलसतैंरहितहोइकै शुभकर्मोंविषेनहींप्रवृत्तहोवौंगा ॥ तौं जितनैंकीकर्मोंकेअधिकारीमनुष्यहैं तेसर्वमनुष्य हमारेकूं शुभकर्मोंतैंरहितहूआदेखिकै आपभी शुभकर्मोंतैंरहितहोवैंगे ॥ काहेतैं यहकृष्णभगवान् सर्वज्ञहै याप्रकारको हमारेविषेसर्वज्ञत्वबुद्धिकरिकै यहसर्वअधि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कारीमनुष्य सर्वप्रकारतैं हमारेहींमार्गकूं अंगीकारकरेहैंइति ॥ २३ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् सर्वमनुष्योंविषेश्रेष्ठजो आपहो तिसआपके शुभकर्मोंकेत्यागरूपमार्गकूंअंगीकारकरणा इनअधिकारीमनुष्योंकूं उचितहींहै ॥ ताकरिकै तिनअधिकारीमनुष्योंकूं कौनदोषहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥

उत्सीदेयुरिमेलोकानकुर्यांकर्मचेदहं॥संकरस्यचकर्त्तास्यामुपहन्यामिमाःप्रजाः २४॥

उत्सीदेयुः। इमे। लोकाः। न। कुर्यां। कर्म। चेत्। अहं। संकरस्य। च। कर्त्ता। स्यां। उपहन्यां। इमाः। प्रजाः॥ इतिपदच्छेदः

हेअर्जुन जोकदाचित् मैंईश्वर शुभकर्मकूं नहीं करौंगा तौं यह सर्वलोक नाशकूंप्राप्तहोवैंगे तथा मैंहीं वर्णसंकरका कर्त्ता होवौंगा तथा इस सर्वप्रजाकूं मैंहीं हननकरौंगा ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका॥हेअर्जुन सर्वकाईश्वर मैंकृष्ण भगवान् जोकदाचित् शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूं नहींकरौंगा॥तौं हमारेअनुसारवर्त्तणेहारे मनुआदिकश्रेष्ठपुरुषभी तिनशुभकर्मोंविषेप्रवृत्तनहींहोवैंगे यातैं जलकोवृष्टिद्वारा सर्वलोकोंकेस्थितिकाकारणरूपजे यज्ञादिककर्महैं तिनसर्वकर्मोंकालोपहोवैंगा॥तिनसर्वकर्मोंकेलोपहूए यहसर्वलोक नाशकूंप्राप्तहोवैंगे॥तिनसर्वलोकोंकेनाशतैं अनंतर जोवर्णसंकरहोनाहैतिसवर्णसंकरकाभीमैंहीं करणेहाराहोवौंगा ॥ तिसकरिकै मैंहीं इससर्वप्रजाकूं हननकरणेहाराहोवौंगा॥ सोयहवार्त्ता हमारेकूंअत्यंतअनुचितहै॥काहेतैं सर्वप्रजाकेअनुग्रहकरणेवासतै प्रवृत्तहूआ जोमैंकृष्णभगवान्हूंतिसहमारेकूं धर्मकालोपकरिकै सर्वप्रजाकाहननकरणा उचितनहींहैइति ॥ अथवा(यद्यदाचरतिश्रेष्ठः)इत्यादिकच्या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रिश्लोकोंका यहदूसराअर्थकरणा ॥ हेअर्जुन केवललोकसंग्रहकूं देखताहूआहीं तूं कर्मकरणेकूंयोग्यनहींहैं ॥ किंतु श्रेष्ठा
चारतैंभी तूंकर्मकरणेकूंयोग्यहै॥इसअर्थकूं श्रीभगवान् कहेहै(यद्यदाचरतिश्रेष्ठःइति)यातैसर्वप्राणीयोंतैश्रेष्ठ जोमैकृष्णभ
गवानहूंतिसहमारा जिसप्रकारका आचारहै तिसोप्रकारकाआचार हमारेअनुसारवर्त्तणेहारे तैंअर्जुननैंभी करणेयोग्यहै॥
हमारेतैंस्वतंत्रहोइकै किंचित्मात्रभीआचारतुमारेकूं करणेयोग्यनहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोआपकाआचार किसप्रका
रकाहै जोआचार हमारेकूं अवश्यकरिकै अंगीकारकरणेकूंयोग्यहै॥ऐसोअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान्(नमेपार्थास्तिकर्त्त
व्यं)इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै ताआपणेआचारका कथनकरताभया इति॥२४॥ ❀ ॥ शंका॥ हेभगवन् आप ईश्वरहो॥
यातैं लोकसंग्रहवासतै शुभकर्मोंकूंकरतेहूएभीमैंसर्वदा अकर्त्ताहूं याप्रकारके कर्तृत्वअभिमानकेअभावतैं आपको किंचि
त्मात्रभीहानिहोवैनहीं॥ औरमैंअर्जुनतौं जीवहूं॥यातैं लोकसंग्रहवासतै तिनशुभकर्मोंकेकरणेतैं मैंकर्मोंकाकर्त्ताहूं याप्रकार
केकर्तृत्वअभिमानकरिकै हमारेज्ञानकाअभिभव अवश्यकरिकैहोवैंगा ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥

सक्ताःकर्मण्यविद्वांसोयथाकुर्वंतिभारत ॥ कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहं ॥

सक्ताः। कर्मणि। अविद्वांसः। यथा। कुर्वंति। भारत। कुर्यात्। विद्वान्। तथा। असक्तः। चिकीर्षुः। लोकसंग्रहं॥ इतिप०

हेभारत जैसे अज्ञानीपुरुष कर्मविषे अभिनिवेशवालेहूए तिसकर्मकूं करेहैं तैसे लोकसंग्रहके कर
णेकीइच्छावाला विद्वान्पुरुष अभिनिवेशतैंरहितहूआ ताकर्मकूं करै ॥ २५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभारत आत्मज्ञानतैंरहितअज्ञानीपुरुष मैंकर्मोंकाकर्त्ताहूं याप्रकारकेकर्तृत्वअभिमानकरिकै तथास्वर्गा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दिकफलकीइच्छाकरिकै यज्ञादिककर्मोविषे अभिनिवेशवालेहूए जिसप्रकार श्रद्धाभक्तिपूर्वक तिनयज्ञादिककर्मोकूंक रेहैं ॥ तिसीप्रकार लोकसंग्रहकरणेकोइच्छावाला विद्वान्पुरुषभी श्रद्धाभक्तिपूर्वक तिनयज्ञादिककर्मोकूंकरै ॥ परंतु सोविद्वान्पुरुष कर्तृत्वअभिमानतैंरहितहूआ तथास्वर्गादिकफलकोइच्छातैंरहितहूआतिनशुभकर्मोकूंकरै ॥ ईहां (हे भारत) यासंबोधनकरिकैश्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ भरतवंशविषे जाकोउत्पत्तिहोवै ताका नाम भारतहै ॥ अथवा भानाम ज्ञानकाहै ताज्ञानविषे जोप्रीतिवालाहोवै ताकानाम भारतहै ॥ ऐसेभारतनामवा ला तूंअर्जुनहैं ॥ यातैं अज्ञानीपुरुषकीन्याई विद्वान्पुरुषभी लोकसंग्रहवासतै शुभकर्मोकूंकरै याप्रकारकाजोशास्त्र काअर्थहै तिसअर्थकेधारणकरणेकूं तूं योग्यहैं ॥ ताअर्थकेधारणकरणेतैंहीं तुमारेविषे सोभारतनाम सार्थकहोवैंगा इति ॥ २५ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् विद्वान्पुरुषनैं शुभकर्मोकाअनुष्ठानकरिकैहीं लोकसंग्रहकरणा ॥ तत्वज्ञानके उपदेशकरिकै सोलोकसंग्रह नहींकरणा याकेविषे कौनहेतुहै ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥

नबुद्धिभेदंजनयेदज्ञानांकर्मसंगिनां ॥ जोषयेत्सर्वकर्माणिविद्वान्युक्तःसमाचरन् ॥ २६ ॥

नं । बुद्धिभेदं । जनयेत् । अज्ञानां । कर्मसंगिनां । जोषयेत् । सर्वकर्माणि । विद्वान् । युक्तः । समाचरन् । इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन यहविद्वान्पुरुष कर्मकेसंगी अविवेकीपुरुषोंके बुद्धिभेदकूं नहीं उत्पन्नकरे किंतु सोविद्वान्पुरुष आदरपूर्वक सर्वकर्मोकूं करताहूआ तिन अविवेकीपुरुषोंकूंभी तिनकर्मोविषेहीं जोडै ॥ २६ ॥ इतिपदार्थः ॥

342

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन कर्तृत्वअभिमानकरिकै तथास्वर्गादिकफलकीइच्छाकरिकै यज्ञादिककर्मोंविषे अभिनिवेशवालेजं
अज्ञानीपुरुषहैं ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंकी मैं इसकर्मकूंकरौंगा तथामैं इसफलकूंभोगौंगा याप्रकारकीजाबुद्धिहे ताबु
द्धिकेभेदकूं यहविद्वान्पुरुष नहींउत्पन्नकरै ॥ अर्थात् तूंआत्मा अकर्त्ताहैं तथाअभोक्ताहैं याप्रकारकाउपदेशकरिकै तिन
अज्ञानीपुरुषोंकेबुद्धिकूं तिनशुभकर्मोंतैं चलायमाननहींकरै ॥ किंतु लोकसंग्रहकरणेकीइच्छावाला सोविद्वान्पुरुष आपश्र
द्धाभक्तिपूर्वक तिनशुभकर्मोंकूंकरताहूआ तिनअज्ञानीपुरुषोंकोभी तिनशुभकर्मोंविषेश्रद्धाउत्पन्नकरिकै तिनअज्ञानीपुरु
षोंकूं तिनशुभकर्मोंविषेहींनिरंतरजोडै ॥ काहेतैं शास्त्रविहित शुभकर्मोंकेअनुष्ठानतैं जिसपुरुषकाअंतःकरण शुद्धहूआहै ॥
सोपुरुषहीं अकर्त्ताआत्माकेउपदेशकाअधिकारीहोवैहै ॥ अशुद्धअंतःकरणवालापुरुष अकर्त्ताआत्माकेउपदेशका अधिका
रीहोवैनहीं ॥ ऐसेअनधिकारीपुरुषोंकेप्रति अकर्त्ताआत्माकेउपदेशकरिकै तिनोंकेबुद्धिकूं शुभकर्मोंतैं चलायमानकीयेहूए
तिनपुरुषोंकी शुभकर्मोंविषे श्रद्धानिवृत्तहोइजावैहै ॥ यातैं तिनअज्ञानीपुरुषोंकूंस्वर्गादिकउत्तमलोकोंकीभी प्राप्तिहोवै
नहीं ॥ तथाअशुद्धअंतःकरणविषे आत्माकाज्ञानभी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं तेअज्ञानीपुरुष भोग मोक्ष दोनोंतैंभ्रष्टहोवैहैं ॥
यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अज्ञस्यार्द्धप्रबुद्धस्यसर्वंब्रह्मेतियोवदेत् ॥ महानिरयजालेषुसतेनविनि
योजितः ॥) अर्थयह ॥ अंतःकरणकीशुद्धितैंरहित तथाविषयोंविषेआसक्त ऐसाजो केवलकर्मोंकाअधिकारी अर्द्धप्रबुद्ध अ
ज्ञानीपुरुषहै ॥ तिसअज्ञानीपुरुषकेप्रति जोविद्वान्पुरुष तूं मैं यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपहींहै याप्रकारकाउपदेशकरेहै ॥ ति
सविद्वान्पुरुषनैं सोअज्ञानीपुरुष महारौरवनरकादिकोंविषे प्राप्तकरयाइति ॥ यातैं यहविद्वान्पुरुष आपशुभकर्मोंविषेप्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वृत्तहोइकै तिनअज्ञानीपुरुषोंकूंभी शुभकर्मविषेहींप्रवृत्तकरै ॥ तिनशुभकर्मोंकेकरणेतैं जबी तिनअज्ञानीपुरुषोंकेअंतःक
रणकीशुद्धिहोवै ॥ तबी यहविद्वान्पुरुष तिनअज्ञानीपुरुषोंकेप्रति अकर्त्ताअभोक्ताआत्माकाउपदेशकरै इति ॥२६॥ ※॥
तहांअज्ञानीपुरुष तथाज्ञानीपुरुष दोनोंविषे शुभकर्मोंकेअनुष्ठानकीसमानताहूएभी कर्तृत्वअभिमान तथाताकर्तृत्व
अभिमानकाअभाव यादोनोंहेतुवोंकरिकै अज्ञानी तथाज्ञानी दोनोंकोविलक्षणताकूंदिखावताहूआ श्रीभगवान्
(सक्ताःकर्मण्यविद्वांसो) यापूर्वउक्तश्लोककेअर्थकूं दोश्लोकोंकरिकैस्पष्टकरेहै ॥

प्रकृतेःक्रियमाणानिगुणैःकर्माणिसर्वशः॥अहंकारविमूढात्माकर्ताहमितिमन्यते २७॥

प्रकृतेः । क्रियमाणानि । गुणैः । कर्माणि । सर्वशः । अहंकारविमूढात्मा । कर्त्ता । अहं । इति । मन्यते ॥ २७ ॥ इतिपद० ॥

हेअर्जुन मायाके गुणोनैं सर्वप्रकारतैं सर्वकर्म करीतेहैं अहंकारकरिकैविमूढहूआहैअं
तःकरणजिसका ऐसाअज्ञानीपुरुष मैं कर्मोकाकर्त्ताहूं याप्रकार मानेहै ॥ २७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥टीका ॥ हेअर्जुन जामाया सत्त्व रज तम यातीनगुणरूपहै तथामिथ्याज्ञानरूपहै तथा (देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निगूढां)
इस श्वेताश्वतरउपनिषदकोश्रुतिविषे जिसमायाकूं परमेश्वरकीशक्तिरूपकरिकैकथनकर्योहै तामायाकानाम प्रकृतिहै
तहांश्रुति ॥ (मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायिनंतुमहेश्वरं ॥) अर्थयह ॥ मायाकूं जगतकाप्रकृतिजानना तथामायाउपाधिवा
लेकूं महेश्वरजाननाइति ॥ ऐसीमायारूपप्रकृतिके विकाररूप जितनैंकी देहइंद्रियअंतःकरणादिक कार्यकारणरूप

344

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुणहैं ॥ तिनगुणोंनैं हीं सर्वप्रकारतैं लौकिकवैदिकसर्वकर्म करीतेहैं ॥ यहअसंगआत्मा तिनकर्मोंकूंकरतानहीं ॥ तथापि कार्यकारणरूपसंघातविषे आत्मत्वबुद्धिरूपजोअहंकारहै ताअहंकारकरिकै विमूढहूआहै क्या विवेककरणेविषेअसमर्थहूआहै आत्मा क्या अंतःकरणजिसका ताकानाम अहंकारविमूढात्माहै ॥ ऐसा अनात्मपदार्थोंविषे आत्मत्वअभिमानकरणेहारा अज्ञानीपुरुष तिनदेहादिकोंकेअध्यासकरिकै तिनसर्वकर्मोंका मैहींकर्त्ताहूं याप्रकार आपणे आत्माकूंही कर्त्तामानेहै ॥ तिन प्रकृतिकेगुणोंकूं कर्मोंकाकर्त्ता मानतानहीं इति ॥ २७ ॥ ❋ ॥ अब जैसे अज्ञानीपुरुष तिनकर्मोंकाकर्त्ता आपणेआत्माकूंहींमानेहै ॥ तैसे विद्वान्ज्ञानीपुरुष तिनकर्मोंकाकर्त्ता आपणेआत्माकूंमानतानहीं ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

तत्त्ववित्तुमहाबाहोगुणकर्मविभागयोः ॥ गुणागुणेषुवर्त्ततइतिमत्वानसज्जते ॥ २८ ॥

तत्त्ववित् । तु । महाबाहो । गुणकर्मविभागयोः । गुणाः । गुणेषु । वर्त्तते । इति । मत्वा । न । सज्जते ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेमहान्बाहुवालाअर्जुन गुणकर्मविभागके यथार्थस्वरूपकूंजानणेहाराविद्वान्पुरुष तौं इंद्रियादिककरणहीं रूपादिकविषयोंविषे प्रवृत्तहोवैहैं नअसंगआत्मा इसप्रकार मानिकरिकै नहीं कर्तृत्वअभिमानकरेहै ॥ इतिप० ॥

॥ टीका ॥ तत्वनाम यथार्थस्वरूपकाहै तिसकूंजोजानेहै ताकानाम तत्त्ववित्है ॥ ईहां (तत्त्ववित्तु) यावचनविषे स्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वश्लोकविषेकथनकरयेहूए अज्ञानीपुरुषतैं तातत्त्ववेत्तापुरुषविषे विलक्षणता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कूंकथनकरेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोविद्वान्पुरुष किसवस्तुकेतत्त्वकूंजाने ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहैं (गुणकर्मविभागयोःइति) अहंअभिमानकेविषयरूप जेदेहइंद्रियअंतःकरणहैं तिनोंकानाम गुणहै ॥ और मम अभिमानकेविषयरूप जे तिनदेहइंद्रियअंतःकरणकेव्यापारहैं तिनव्यापारोंकानाम कर्महै ॥ और जोवस्तु सर्वजड विकारोंकाप्रकाशकहोणेतैं तिनसर्वजडविकारोंतैं पृथक्होवै ताकानाम विभागहै ॥ ऐसास्वप्रकाशज्ञानरूपअसंग आत्माहै ॥ तहां तेगुणकर्मतौं भास्य जड विकारो रूपहैं ॥ और यहविभागरूपआत्मादेवतौं भासक चेतन निर्विकार रूपहै ॥ इसप्रकार गुणकर्म तथाविभाग यादोनोंकेयथार्थस्वरूपकूंजानणेहारा जोविद्वान्पुरुषहै ॥ सोविद्वान्पुरुषतौं यहइंद्रियादिककरणहीं विकारीहोणेतैं आपणेआपणे रूपादिकविषयोंविषे प्रवृत्तहोवैहैं निर्विकार आत्मा तिनरूपादिकविषयोंविषे प्रवृत्तहोतानहीं याप्रकारकानिश्चयकरिकै अज्ञानीपुरुषकीन्यांई आपणेआत्माविषे कर्तृत्व अभिमान करैनहींइति ॥ और किसोटोकाविषेतौं (तत्त्ववित्तुमहाबाहो) याश्लोकका याप्रकारकाअर्थकऱ्याहै ॥ चक्षु आदिकपंचज्ञानइंद्रिय तथा वाकादिकपंचकर्मइंद्रिय बुद्धि मन इनसर्वोंकानाम गुणहै ॥ और तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंकेजेव्यापारहैं तिनोंकानाम कर्महै ॥ विभाग यापदका गुणपदकेसाथि तथाकर्मपदकेसाथि दोनोंकेंसाथि संबंध करणा ॥ ताकरिकै यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ चक्षुश्रोत्रादिकइंद्रियोंकीहीं दर्शनश्रवणादिकक्रियाहैं ॥ और वाक् पाणिआदिकइंद्रियोंकीहीं वचन आदानादिकक्रियाहैं ॥ और बुद्धिकीहीं अहंकरणरूपक्रियाहै ॥ और मनकीहीं संकल्परूपक्रियाहै ॥ आत्माकी कोईभीक्रियानहींहै ॥ किंतु यह आत्मादेव सर्वदा कूटस्थअसंगचित्रूपकरिकैस्थितहै॥इसप्रकार

346

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

काजो गुणविभागहै तथाकर्मविभागहै ॥ तिनदोनोंविभागोंके तथाआत्माके यथार्थस्वरूपकूं जोभलीप्रकारतैंजानेहै ताकानाम तत्त्ववित्है ॥ ऐसातत्त्ववेत्ताविद्वान्पुरुषतौं सर्वकर्मोंविषे यहचक्षुआदिकइंद्रियहीं रूपादिकविषयोंविषे प्रवृत्तहोवैहैं तथावाकादिकइंद्रियहीं वचनादिकोंविषेप्रवृत्तहोवैहैं तथाबुद्धिहीं तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंकेकर्मोंविषे मैं कर्त्ताहूं याप्रकारकाअभिमानकरेहै मैंआत्मातौं नश्रवणकरताहूं नदेखताहूं नबोलताहूं नकरताहूं नचालताहूं किंतु कूटस्थअसंगचेतनरूपकरिकै सर्वदा तूष्णींहींस्थितहूं याप्रकारकानिश्चयकरिकै तिनइंद्रियादिकोंकेकर्मविषे अहंमम अभिमानकरतानहींइति ॥ औरकिसीटीकाविषेतौं (तत्त्ववित्तु) याश्लोककेपदोकी इसप्रकारतैं योजनाकरिकै याप्रकारकाअर्थ कथनकरयाहै (यस्तत्त्ववित्सगुणाःगुणेषुवर्त्ततेइतिमत्वागुणविभागेकर्मविभागेचनसज्जते) इतियोजना ॥ अर्थयह ॥ आत्मा अनात्मा यादोनोंके यथार्थस्वरूपकूंजानणेहारा जोविद्वान्पुरुषहै ॥ सोविद्वान्पुरुषतौं बुद्धिचक्षुआदिकगुणहीं सुखरूपादिकविषयोंविषेप्रवृत्तहोवैहैं आत्मातौं किसीभीविषयविषेप्रवृत्तहोतानहीं याप्रकारका निश्चयकरिकै गुणविभागविषे तथाकर्मविभागविषे अहंममअभिमानकरैनहीं ॥ ईहां सत्त्व रज तम यातीनोंगुणों का जो बुद्धि अहंकार ज्ञानइंद्रिय कर्मइंद्रिय विषय रूपकरिकै भिन्नभिन्न अवस्थानहै ताकानाम गुणविभागहै॥ तागुणविभागविषे मैं बुद्धिअहंकारादिरूपहूं याप्रकारकाअहंअभिमान सोतत्त्ववेत्तापुरुष करैनहीं ॥ और तिनबुद्धि अहंकारादिकोंके जे भिन्नभिन्न कर्महैं तिनोंकानाम कर्मविभागहै ॥ ताकर्मविभागविषे यहकर्ममेराहैयाप्रकारका ममअभिमान सोतत्त्ववेत्तापुरुष करैनहींइति ॥ ईहां (हेमहाबाहो) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थसूचनक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्या ॥ जानुपर्यंत जिसकादीर्घबाहुहोवैहैं ताकानाम महाबाहुहै ॥ और सामुद्रिकशास्त्रविषे महाबाहुपणा श्रेष्ठपुरुषकालक्षणकह्या ॥ यातैं ऐसेश्रेष्ठपुरुषोंकेलक्षणवालाहोइकै तूं अन्यपुरुषोंकीन्यांई अविवेकीहोणेकूंयोग्यनहींहैं इति ॥ २८ ॥* ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे विद्वान् तथाअविद्वान् यादोनोंविषे कर्मोंकेअनुष्ठानकीसमानताकथनकरिकै सो विद्वान्पुरुष अविद्वान्पुरुषकेबुद्धिभेदकूं नहींउत्पन्नकरै यहअर्थ कथनकर्‌या ॥ ताअर्थका अबउपसंहारकरेहैं ॥

348

प्रकृतेर्गुणसंमूढाःसज्जंतेगुणकर्मसु॥तानकृत्स्नविदोमंदान्कृत्स्नविन्नविचालयेत् २९

प्रकृतेः। गुणसंमूढाः। सज्जंते। गुणकर्मसु। तान्। अकृत्स्नविदः। मंदान्। कृत्स्नवित्। न। विचालयेत्॥ इतिपद० ॥

हेअर्जुन प्रकृतिके गुणोंकरिकैसंमूढहूए जेअज्ञानीजीव तिनगुणोंकेकर्मोंविषे आसक्तिकरेहैं तिन अनात्मवेत्ता अनधिकारीपुरुषोंकूं आत्मवेत्ताविद्वान् शुभकर्मकीश्रद्धातैं नहीं चलायमानकरै ॥ २९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वकथनकरीजा मायारूपप्रकृतिहै ॥ ताप्रकृतिका कार्यरूपहोणेतैं धर्मरूपजे देहइंद्रियअंतःकरणादिकविकारहैं ॥ तिनविकाररूपगुणोंकरिकै संमूढहूए अर्थात् स्वरूपकेअस्फुरणकरिकै तिनदेहादिकोंकूंहीं आत्मारूपकरिकैमानतेहूए जेअज्ञानीपुरुष तिनदेहइंद्रियअंतःकरणादिकोंकेव्यापारोंविषेहीं हम स्वर्गादिकफलकी प्राप्तिवासतै कर्मोंकूंकरेहैं याप्रकारकी अत्यंतदृढ आत्मीयत्वबुद्धिकरेहैं ॥ तिन कर्मोंकेअधिकारी तथाअनात्मपदार्थोंकेअभिमानवाले तथा अशुद्धचित्तवालेहोणेतैं ज्ञानकेअधिकारकूंनहींप्राप्तहूए अज्ञानीपुरुषोंकूं यहपरिपूर्णआत्मा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

केजानणेहारा विद्वान्पुरुष आप फलकीकामनाकरिकैकर्मनहींकरणे अथवा इनकर्मोंकाफल असत्है अथवा कर्मों केकर्तादिक मिथ्याहींहै अथवा तूं ब्रह्मरूपहैं तेरेकूं किंचित्मात्रभीकर्त्तव्यनहींहै इत्यादिकउपदेशकरिकै तिनशुभक र्मोंकीश्रद्धातैं चलायमाननहींकरै ॥ किंतु उलटा तिनशुभकर्मोंकीस्तुतिकरिकै सोविद्वान्पुरुष तिनअज्ञानीपुरुषोंकूं तिनशुभकर्मोंविषेहींप्रवृत्तकरै ॥ और जेपुरुष शुद्धअंतःकरणवालेहोणेतैं अधिकारीहै ॥ तेपुरुषतौं उपदेशतैंविना आपहीं विवेककीउत्पत्तिकरिकै चलायमानतातैंरहित ज्ञानकेअधिकारकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ ईहां जिसवस्तुकेज्ञानहूए भी तिसतैंअन्यवस्तुकाज्ञानहोवैनहीं ॥ तथा जिसवस्तुकेनहींज्ञानहूएभी तिसतैंअन्यवस्तुकाज्ञानहोइजावै तावस्तुकाना मअकृत्स्नहै ॥ जैसेएकघटकेज्ञानहूएभी ताघटतैंभिन्नपटादिकोंकाज्ञानहोवैनहीं ॥ और ताघटकेनहींज्ञानहूएभी ताघ टतैंभिन्नपटादिकपदार्थोंकाज्ञानहोइजावैहै ॥ यातैं तेघटादिकसर्वअनात्मपदार्थ अकृत्स्न यानामकरिकैकहेजावैहैं ॥ और जिसएकवस्तुकेज्ञानहूए सर्ववस्तुकाज्ञानहोइजावै तथाजिसएकवस्तुकेनहींज्ञानहूए सर्ववस्तुकाज्ञानहोवैनहीं तावस्तुकानाम कृत्स्नहै ॥ जैसे एकअद्वितीयआत्माकेज्ञानहूए सर्वअनात्मपदार्थोंकाज्ञानहोइजावैहै ॥ और ताअ द्वितीय आत्माकेनहींज्ञानहूए तिनसर्वअनात्मपदार्थोंकाज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं सोअद्वितीयआत्मा कृत्स्न यानामक रिकैकह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (आत्मनोवाअरेदर्शनेनश्रवणेनमत्याविज्ञानेनेदंसर्वंविदितं ॥) अर्थयह ॥ हेमैत्रेयी अ धिष्ठानरूपआत्माके दर्शनकरिकै तथाश्रवणकरिकै तथामननकरिकै तथाविज्ञानकरिकै यहसर्वअनात्मजगत् जान्या जावैहैइति ॥ याप्रकारका अकृत्स्न कृत्स्न यादोनोंशब्दोंकाअर्थ वार्तिकग्रंथविषे सुरेश्वराचार्यनैं कथनकऱ्याहैइति ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और किसीटीकाविषेतौं (प्रकृतेः) यापदका (गुणकर्मसु) यापदकेसाथि अन्वयकरिकै यह अर्थकऱ्याहै ॥ अहंकारादिक गुणोंकरिकैसंमूढहूए अज्ञानीपुरुष प्रकृतिके देहादिकगुणोंविषे तथागमनादिककर्मोंविषे मैंब्राह्मणहूं मेरायहयज्ञादिकक मैंहै याप्रकारका अहंममअभिमानकरेहैं इति ॥ २९ ॥ ※ ॥ पूर्वप्रसंगविषे अज्ञानीपुरुष तथाज्ञानवान्पुरुष दो नोंविषे शुभकर्मोंकेअनुष्ठानकीसमानताकेहूएभी अज्ञानीपुरुषविषेतौं कर्तृत्वकाअभिमानरहेहै और ज्ञानीपुरुषविषे ताक र्तृत्वअभिमानकाअभावरहेहै याप्रकारतैं दोनोंकोविलक्षणताकथनकरी ॥ अब अज्ञानीपुरुषभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एक तौं मोक्षकोइच्छावाला मुमुक्षु अज्ञानीहोवैहै ॥ और दूसरा मोक्षकीइच्छातैंरहित अमुमुक्षु अज्ञानीहोवैहै ॥ तहां अमुमुक्षु अज्ञानीकीअपेक्षाकरिकै मुमुक्षु अज्ञानीविषे सर्वकर्मोंकाश्रीभगवत्अर्पण तथाफलकीइच्छाकाअभाव याप्रकारकीवि लक्षणताकूंकथनकरताहूआ श्रीभगवान् अर्जुनविषेभी मुमुक्षुअज्ञानीपणेकरिकैकर्मोंकेअधिकारकूंदृढकरेहै ॥

मयिसर्वाणिकर्माणिसंन्यस्याध्यात्मचेतसा॥निराशीर्निर्ममोभूत्वायुध्यस्वविगतज्वरः

मयि। सर्वाणि। कर्माणि। संन्यस्य। अध्यात्मचेतसा। निराशीः। निर्ममः। भूत्वा। युध्यस्व। विगतज्वरः॥ इतिप०

हेअर्जुन तूं मैंपरमेश्वरविषे अध्यात्मचित्तकरिकै सर्व कर्मोंकूं समर्पणकरिकै कामनातैंर हिततथाममतातैंरहित तथाशोकतैंरहित होइकै इसंयुद्धकूंकर ॥ ३० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वज्ञ तथासर्वजगत्कानियंता तथासर्वकाआत्मारूप ऐसाजोमैंपरमेश्वरवासुदेवहूं ॥ ऐसेमैंप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रमेश्वरविषे तूं सर्वलौकिकवैदिककर्मोंकूं अध्यात्मचित्तकरिकै समर्पणकर ॥ ईहां आत्माकेप्रतिपादनकरणेवासतैजोशास्त्र प्रवृत्तहोवै ताशास्त्रकानाम अध्यात्महै ऐसाउपनिषदरूपवेदांतशास्त्रहै ॥ ताअध्यात्मशास्त्रकेविचारविषे जो चित्त तत्परहोवै ताचित्तकानाम अध्यात्मचेतस्है ॥ अर्थात् आत्माअनात्माकेविवेकवालेचित्तकानाम अध्यात्मचेतस्है ॥ ऐसे अध्यात्मचित्तकरिकै तूं सर्वकर्मोंकूं मैंपरमेश्वरविषे समर्पणकर ॥ तात्पर्ययह ॥ मैंअर्जुन कर्त्तारूपअंतर्यामीईश्वरकेअधीनहूं ॥ और जैसे भृत्य महाराजाकेवासतैहीं सर्वकर्मोंकूंकरेहै ॥ तैसे मैंभी तिसईश्वरकेवासतैहीं सर्वकर्मोंकूंकरताहूं ॥ याप्रकारकीबुद्धिकरिकै तिनसर्वकर्मोंका मैंईश्वरविषे अर्पणकरिकै तथासर्वकामनावोंतैंरहितहोइकै तथादेहपुत्रभ्रातादिकोंविषे ममताअभिमानतैंरहितहोइकै तथाइसलोकविषे अपकीर्त्तिकाहेतुरूप तथापरलोकविषे नरककेप्राप्तिकाहेतुरूप जोशोकरूपज्वरहै ताशोकरूपज्वरतैंरहितहोइकै तूंमुमुक्षुअज्ञानीअर्जुन इसयुद्धकूंकर ॥ अर्थात् शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूंकर ॥ ईहां श्रीभगवत्अर्पण तथानिष्कामपणा यहदोनों युद्धविषेहींकथनकरेहैं ॥ काहेतैं तायुद्धतैंभिन्नकिसीकर्मविषे ताअर्जुनका ममता तथाशोक प्राप्तहैनहीं ॥ किंतु तायुद्धविषेहींप्राप्तहै इति ॥ ३० ॥ * ॥

॥ तहां स्वर्गादिकफलकोइच्छातैंरहितहोइकै तथाश्रीभगवत्अर्पणबुद्धिकरिकै वेदविहितशुभकर्मोंकाजोअनुष्ठानहै ॥ सोशुभकर्मोंकाअनुष्ठानहीं अंतःकरणकोशुद्धिद्वारा तथाआत्मज्ञानकोप्राप्तिद्वारा मुक्तिरूपफलकोप्राप्तिकरणेहाराहैं याअर्थकूं अबी श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

येमेमतमिदंनित्यमनुतिष्ठंतिमानवाः ॥ श्रद्धावंतोनसूयंतोमुच्यंतेतेपिकर्मभिः ॥ ३१ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ये । मे । मतं । इदं । नित्यं । अनुतिष्ठंति । मानवाः । श्रद्धावंतः । अनसूयंतः । मुच्यंते । ते । अपि । कर्मभिः ॥ इतिपदच्छेदः ॥ अ० ३

हेअर्जुन जेकेई मनुष्य श्रद्धावान्हूए तथाअसूयातैंरहितहूए हमारे इस नित्य मतकूं अंगीकार करेहैं तेपुरुष भी पुण्यपापकर्मोनैं परित्याग करतेहैं ॥ ३१ ॥ इतिपदार्थः ॥

352

॥ टीका ॥ हेअर्जुन फलकोइच्छातैंरहितहोइकै तथाश्रीभगवत्अर्पणबुद्धिकरिकै याअधिकारीपुरुषनैं शास्त्रविहितशुभ कर्मोकाअनुष्ठानकरणा यहजोहमारामतहै ॥ सोहमारामत नित्यवेदकरिकैबोधितहोणैतैं अनादिपरंपराकरिकै प्राप्तहै या तैं नित्यहै ॥ अथवा सोहमारामत अधिकारीपुरुषोंकूं अवश्यकरिकैकरणेयोग्यहै यातैं नित्यहै ॥ ऐसेहमारेनित्यमतकूं जे केईमनुष्य श्रद्धावालेहूए तथाअसूयातैंरहितहूए अंगीकारकरेहैं ॥ ईहां शास्त्रनैं तथागुरुनैं उपदेशकऱ्याजोअर्थहै ॥ सोअ र्थ जोकदाचित् आपणे अनुभवविषे नहींभीआवताहोवै ॥ तौंभी ताअर्थविषे यहअर्थइसोप्रकारहै याप्रकारकाजोविश्वास हैं ताविश्वासकानाम श्रद्धाहै ॥ और किसीपुरुषकेगुणोंविषे जोदोषोंकाप्रगटकरणाहै याकानाम असूयाहै ॥ साअसू या ईहांप्रसंगविषे याप्रकारकीप्राप्तहै ॥ इसदुःखरूपयुद्धधर्मविषे मैंअर्जुनकूं प्रवृत्तकरताहूआ यहभगवान् करुणातैं रहितहैइति ॥ ऐसीअसूयाकूं सर्वप्राणीयोंकेसुहृदरूप तथागुरुरूप मैंभगवान्वासुदेवविषे नहींकरतेहूए जेमनुष्य ह मारे इसमतकूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक अंगीकारकरेहैं ॥ तेमनुष्यभी अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाज्ञानकीप्राप्तिद्वारा यथा र्थज्ञानोकीन्यांई पुण्यपापकर्मोनैं परित्यागकरीतेहै अर्थात् पुण्यपापकर्मोतैंरहितहोवैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ ताज्ञानवा ॥१६९॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नूपुरुषके भावीशरीरोंकीप्राप्तिकरणेहारे जितनैंकीपुण्यपापरूपसंचितकर्महैं ॥ तेसंचितकर्मतौं ज्ञानरूपअग्निकरिकै दग्धहोइजावैहैं॥और जिनप्रारब्धकर्मोंनैं यहशरीरदीयाहै ॥ तेप्रारब्धकर्म भोगकरिकैक्षयहोवैहैं ॥ और सोज्ञानवान् इसवर्त्तमानशरीरविषे जेपुण्यपापकर्मकरेहै ॥ तेपुण्यपापकर्म ताज्ञानवान्पुरुषकीसेवाकरणेहारे भक्तजन तथानिंदाकरणेहारेदुष्टजन लेजावैहैं॥ तहांश्रुति॥ (तस्यपुत्रादायमुपयांतिसुहृदःसाधुकृत्यांद्विषंतःपापकृत्यां)॥ अर्थयह॥ तिसज्ञानवान्पुरुषके धनादिकपदार्थोंकूंतौं पुत्रशिष्यादिक लेजावैहैं॥ और तिसज्ञानवान्पुरुषके पुण्यकर्मोंकूंतौं सेवाकरणेहारेभक्तजन लेजावैहैं॥ और तिसज्ञानवान्केपापकर्मोंकूंतौं निंदाकरणेहारेदुष्टजन लेजावैहैइति ॥ इसप्रकार सोविद्वान्पुरुष सर्वपुण्यपापकर्मोंतैंरहितहोवैहै ॥ ईहां शास्त्रविहितनित्यनैमित्तिककर्मोंका मनुष्यकूंहींअधिकारहै॥ अन्यकिसीकूंअधिकारहैनहीं ॥ यातैं श्रीभगवाननैं (मानवाः) यहवचन कथनकऱ्याहै इति॥३१॥* ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे भगवत्अर्पणबुद्धिकरिकै निष्कामकर्मोंकाअनुष्ठानरूपजोभगवत्कामतहै तामतकेअंगीकाररूप अन्वयविषे अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाज्ञानकीप्राप्तिद्वारा सर्वकर्मोंतैंरहिततारूपगुणका कथनकऱ्या ॥ अब इस श्लोकविषे ताभगवत्मतकेनहीं अंगीकाररूपव्यतिरेकविषे दोषकेप्राप्तिका कथनकरैहैं ॥

येत्वेतदभ्यसूयंतोनानुतिष्ठंतिमेमतं ॥ सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धिनष्टानचेतसः ॥ ३२ ॥

ये।[1] तु।[2] एतत्।[3] अभ्यसूयंतः।[4] न।[5] अनुतिष्ठंति।[6] मे।[7] मतं।[8] सर्वज्ञानविमूढान्।[12] तान्।[9] विद्धि।[11] नष्टान्।[13] अचेतसः॥[10] इतिपद०॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन पुनः जेपुरुष दोषकूंआरोपणकरतेहूए हमारे इसपूर्वउक्त मतकूं नहीं अंगीकारकरेहैं तिनपुरुषों कूं तूं दुष्टचित्तवाला जान तथा सर्वज्ञानविषेमूढ जान तथा सर्वपुरुषार्थतैंभ्रष्ट जान ॥ ३२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेकेईपुरुष नास्तिकपणेतैं गुरुशास्त्रकेवचनोंविषे श्रद्धाकूंनहींकरतेहूए तथा गुणोंविषेदोषोंकाकथन रूपअसूयाकूंकरतेहूए यापूर्वउक्तहमारेमतकूं नहींअंगीकारकरेहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं तूं अत्यंतदुष्टचित्तवालाजान ॥ याकारणतैंहीं कर्मविषयक जेज्ञानहैं तथासगुणनिर्गुणब्रह्मविषयक जेज्ञानहैं तिनसर्वज्ञानोंविषे प्रमाणतैं तथा प्रमेयतैं तथाप्रयोजनतैं तेपुरुष विशेषकरिकैमूढहूएजान ॥ तात्पर्ययह ॥ तेकर्मविषयकज्ञान तथासगुणनिर्गुणब्रह्मविषयकज्ञानकिसप्रमाणकरिकैजन्यहैं तथातिनज्ञानोंका प्रमेयकौंनहै तथातिनज्ञानोंका प्रयोजनकौंनहै याअर्थकूं तेपुरुष जानिसकतेनहीं ॥ याकारणतैंहीं तिनपुरुषोंकूं तूं सर्वपुरुषार्थोंतैंभ्रष्टहूआजान इति ॥ ३२ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे इसलोकविषे जेपुरुष महाराजाकेआज्ञाका उल्लंघनकरेहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं महान् भयकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे आपईश्वरकीआज्ञाकेउल्लंघनकरणेविषे महान्भयकीप्राप्तिकूंदेखतेहूएभी तेपुरुष किसकारणतैं असूयाकरतेहूए ताआपकेमतकूं नहींअंगीकारकरेहैं ॥ तथाकिसकारणतैं तिनसर्वपुरुषार्थोंकेसाधनोंविषे प्रतिकूलताबुद्धिकरेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै

सदृशंचेष्टतेस्वस्याःप्रकृतेर्ज्ञानवानपि॥प्रकृतिंयांतिभूतानिनिग्रहःकिंकरिष्यति॥३३॥

॥१७०॥

सदृशं । चेष्टते । स्वस्याः । प्रकृतेः । ज्ञानवान् । अपि । प्रकृतिं । यांति । भूतानि । निग्रहः । किं । करिष्यति ॥ इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन ज्ञानवान्पुरुष भी आपणी प्रकृतिके अनुसारहीं चेष्टाकरेहै यातैं सर्वप्राणी
ताप्रकृतिकूंहीं अनुसरणकरेहैं तिसविषे हमारानिग्रह क्या करैंगा ॥ ३३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वजन्मोंविषेकरयेहूए धर्मअधर्मके तथाज्ञानइच्छादिकोंके जेसंस्कारहैं ॥ जेसंस्कार इसवर्त्तमान जन्मविषे अभिव्यक्तिकूंप्राप्तभयेहैं ॥ तिनअभिव्यक्तसंस्कारोंकानाम प्रकृतिहै ॥ साप्रकृति सर्वप्रकारतैंबलवान्है ॥ ऐसी बलवान्प्रकृतिकेअनुसारहीं ब्रह्मवेत्तापुरुषभी चेष्टाकरेहै ॥ अथवा (ज्ञानवान्) यापदकरिकै केवल गुणदोषकेजानणेहारेपुरुषकाग्रहण करणा॥ तहां आचार्यवचनं॥ (पश्वादिभिश्चाविशेषात्) ॥अर्थयह॥ खानपानादिकव्यवहारकालविषे विद्वान्पुरुषको पश्वादिकोंकेसाथि तुल्यताहींहैइति ॥ ऐसाब्रह्मवेत्ताज्ञानवान् अथवा गुणदोषकेजानणेहाराज्ञानवान्भी जबी आपणे संस्काररूपप्रकृतिकेअनुसारहीं चेष्टाकरेहै ॥ तबी दूसरेअज्ञानीमूर्खपुरुष आपणेप्रकृतिकेअनुसारहीं चेष्टाकरेहैं याकेविषेक्याकहणाहैं ॥ यातैं साप्रकृति यद्यपि अविवेकीप्राणियोंकूं पुरुषार्थतैंभ्रष्टकरणेहारीहै ॥ तथापि तेसर्वप्राणी ताप्रकृतिकूंहीं अनुसरणकरेहैं ॥ तिसविषे मैंपरमेश्वरकृतनिग्रह तथाराजाकृतनिग्रह क्याकरैंगा ॥ अर्थात् उत्कटरागकरिकै पापकर्मोंविषेप्रवृत्तहूएपुरुषोंकूं सोनिग्रह तापापकर्मतैंनिवृत्तकरणेविषे समर्थनहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जेपुरुष पापकर्मोंविषे महान्नरककीसाधनाकूंजानिकरिकैभी दुर्वासनाकीप्रबलतातैं पुनः तिनपापकर्मोंविषेहीं प्रवृत्तहोवैहैं ॥ तेपुरुष मेरीआज्ञाकेउल्लंघनजन्यदोषतैं कदाचित् भयनहींकरैंगे इति ॥ ३३ ॥ * ॥

॥ शंका ॥ हेभगवन् जोकदाचित् सर्वप्राणी आपणीआपणी प्रकृतिकेहींवशवर्तीहोवैं ॥ तोंलौकिकपुरुषार्थका तथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैदिकपुरुषार्थका कोईभीविषयहोवैंगानहीं ॥ यातैं (स्वर्गकामोयजेत) इत्यादिकविधिवाक्योंविषे तथा (परदारानग च्छेत) इत्यादिकनिषेधवाक्योंविषे अनर्थकताप्राप्तहोवैंगो ॥ काहेतैं इसलोकविषे पूर्वसंस्काररूपप्रकृतितैंरहित कोई भीप्राणीहैनहीं ॥ जिसकेप्रति तिनविधिनिषेधवाक्योंकूं अर्थवत्ताहोवै ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥

इंद्रियस्येंद्रियस्यार्थेरागद्वेषौव्यवस्थितौ॥तयोर्नवशमागच्छेत्तौह्यस्यपरिपंथिनौ ३४॥

इंद्रियस्य। इंद्रियस्य। अर्थे। रागद्वेषौ। व्यवस्थितौ। तयोः। न। वशं। आगच्छेत्। तौ। हि। अस्य। परिपंथिनौ। इतिप०॥

हेअर्जुन इंद्रिय इंद्रियके शब्दादिकविषयविषे रागद्वेषदोनों नियमपूर्वकस्थितहैं तिनरागद्वेषदोनोंके वशकूं यहप्राणी नहीं प्राप्तहोवै जिसकारणतैं तेरागद्वेषदोनों इसप्राणीके शत्रुहींहैं ॥ ३४ ॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहजेपंचज्ञानइंद्रियहैं ॥ तथा वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु यह जेपंचकर्मइंद्रियहैं ॥ तिनज्ञानइंद्रियोंके तथाकर्मइंद्रियोंके जेयथाक्रमतैं शब्द स्पर्श रूप रस गंध वचन आदान गमन आनंद मलविसर्जन यहदश विषयहैं ॥ तिनशब्दस्पर्शादिकविषयोंविषे तथावचनआदानादिकविषयोंविषे जोजोविषय इसपुरुषकेअनुकूलहोवैहै ॥ सोसोविषय जोकदाचित् शास्त्रकरिकैनिषिद्धभी होवैहै ॥ तौंभी तिसतिस विषयविषे इसपुरुषकारागहींहोवैहै ॥ और तिनविषयोंविषे जोजोविषय इसपुरुषके प्रतिकूलहोवैहै ॥ सोसोवि षय जोकदाचित् शास्त्रकरिकैविहितभीहोवैहै ॥ तौंभी तिसतिसविषयविषे इसपुरुषका द्वेषहींहोवैहै ॥ इसप्रकार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंके शब्दादिकसर्वविषयोंविषे अनुकूलताकरिकै तथाप्रतिकूलताकरिकै तेरागद्वेषदोनों नियम पूर्वकहीं स्थितहैं ॥ कोईतिनसर्वविषयोंविषे नियमतैंविनाहीं तेरागद्वेषस्थितहैंनहीं ॥ तहां इसपुरुषनैं तारागद्वेषकेव शकूंनहींप्राप्तहोणा यहहीं आपणेपुरुषार्थका तथाशास्त्रका विषयहै ॥ ईहां यहतात्पर्यहै ॥ यहपरस्त्रीगमनादिककर्म महान्नरककीप्राप्तिकरणेहारेहैं याप्रकारकाजो बलवत्अनिष्टसाधनताज्ञानहै ॥ ताज्ञानकेअभावसहकृतजो यहपर स्त्रीगमनादिककर्म हमारे विषयसुखरूपइष्टकेसाधनहैं याप्रकारका इष्टसाधनताज्ञानहै ताइष्टसाधनताज्ञानकरिकै जन्यजो तिनपरस्त्रीगमनादिककर्मोंविषे रागहै ॥ तारागकूंअंगीकारकरिकैहीं साप्रकृति इसपुरुषकूं तिनपरस्त्रीग मनादिकनिषिद्धकर्मोंविषे प्रवृत्तकरेहै ॥ इसीप्रकार यहसंध्यावंदनादिककर्म स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिकरणेहारेहैं या प्रकारकाजो इष्टसाधनताज्ञानहै ॥ ताज्ञानकेअभावसहकृतजो यहसंध्यावंदनादिककर्म हमारे दुःखरूपअनिष्टकेसा धनहैं याप्रकारका अनिष्टसाधनताज्ञानहै ॥ ताअनिष्टसाधनताज्ञानकरिकैजन्यजो तिनसंध्यावंदनादिककर्मोंविषे द्वेषहै ॥ ताद्वेषकूंअंगीकारकरिकैहीं साप्रकृति तापुरुषकूं तिनसंध्यावंदनादिकविहितकर्मोंतैं निवृत्तकरेहै ॥ तहां जिस कालविषे धर्मशास्त्र तिनपरस्त्रीगमनादिककर्मोंविषे यहपरस्त्रीगमनादिककर्म नरककीप्राप्तिकरणेहारेहैं याप्रकार बलवत्अनिष्टसाधनताकूं बोधनकरेहै ॥ तिसकालविषे बलवत्अनिष्टसाधनताज्ञानकाअभावरहैनहीं ॥ जैसे घटरू पप्रतियोगीविद्यमानहूए घटाभावरहैनहीं ॥ और तिनपरस्त्रीगमनादिकनिषिद्धकर्मोंविषे रागकीउत्पत्तिकरणेमै ताइष्टसाधनताज्ञानका सोबलवत्अनिष्टसाधनताज्ञानकाअभावहीं सहकारीकारणथा ॥ तासहकारीकारणकेअभाव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

358

हूए सोकेवल इष्टसाधनताज्ञान तिनपरस्त्रीगमनादिकनिषिद्धकर्मोंविषे रागकूंउत्पन्नकरिसकैनहीं ॥ जैसे मधु विष यादोनोंकरिकैयुक्तजोअन्नहै ॥ ताअन्नविषे यहअन्न हमारेक्षुधाकेनिवृत्तिकासाधनहै याप्रकारके इष्टसाधनताज्ञानके हूएभी जिसपुरुषकूं ताअन्नविषे यहअन्न हमारेमरणकासाधनहै याप्रकारका अनिष्टसाधनताज्ञानहूआहै तिसपुरुष के सोकेवलइष्टसाधनताज्ञान ताअन्नविषे रागकूं उत्पन्नकरिसकैनहीं ॥ इसीप्रकार जिसकालविषे धर्मशास्त्र संध्यावं दनादिकविहितकर्मोंविषे यहसंध्यावंदनादिककर्म स्वर्गादिकसुखकेप्राप्तिकासाधनहैं याप्रकार बलवत्इष्टसाधनता कूं बोधनकरेहै ॥ तिसकालविषे तिनसंध्यावंदनादिकविहितकर्मोंविषे बलवत्इष्टसाधनताज्ञानकाअभाव रहैनहीं ॥ जैसे घटरूपप्रतियोगीकेविद्यमानहूए घटाभाव रहैनहीं ॥ और तिनसंध्यावंदनादिकविहितकर्मोंविषे द्वेषकीउत्पत्ति करणेमैं ताअनिष्टसाधनताज्ञानका सोबलवत्इष्टसाधनताज्ञानकाअभावहीं सहकारीकारणथा ॥ तासहकारीकारण केअभावहूए सोकेवलअनिष्टसाधनताज्ञानका तिनसंध्यावंदनादिकविहितकर्मोंविषे द्वेषकूंउत्पन्नकरिसकैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ प्रतिबंधतैंरहितहूआ सोशास्त्र इसपुरुषकूं संध्यावंदनादिकविहितकर्मोंविषेतौं प्रवृत्तकरेहै ॥ और परस्त्रीगमनादिकनिषिद्धकर्मोंतैं निवृत्तकरेहै ॥ इसप्रकार शास्त्रकेविचारजन्यज्ञानकीप्रबलताकरिकै जबो तास्वाभा विकरागद्वेषकेकारणकोनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी ताकारणकीनिवृत्तिकरिकै सोस्वाभाविकरागद्वेषरूपकार्यभी निवृत्तहो इजावैहै ॥ यातैं साप्रकृति विपरीतमार्गविषे शास्त्रदृष्टिवालेपुरुषकूं प्रवृत्तकरिसकैनहीं ॥ यातैं शास्त्रकूं तथापुरुषा र्थकूं व्यर्थताकीप्राप्तिहोवैनहींइति ॥ इसीअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान्नैं (तयोर्नवशमागच्छेत्) यहवचनकह्याहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अर्थात् यहपुरुष तारागद्वेषकेअधीनहोइकै नहींतौं किसीकर्मविषेप्रवृत्तहोवै तथानहींकिसीकर्मतैंनिवृत्तहोवै ॥ किंतु शास्त्रजन्यज्ञानकरिकै तारागद्वेषकेनाशद्वारा तारागद्वेषकूं नाशहींकरै ॥ जिसकारणतैं स्वाभाविकदोषजन्य तेरागद्वेषदोनों इसमोक्षरूपश्रेयकीइच्छावान्पुरुषके शत्रुहींहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे मार्गविषेचलणेहारेपुरुषोंकूं दुष्ट चौर अनेकप्रकारकेविघ्नकरेहैं ॥ तैसे मोक्षरूपश्रेयके आत्मज्ञानरूपमार्गविषेप्रवृत्तहूए इसअधिकारीपुरुषकूं तेरा गद्वेषदोनों अनेकप्रकारकेविघ्नकरणेहारेहैं ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष तारागद्वेषकूं अवश्यकरिकैनाशकरै इति ॥ ॥ ३४ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् स्वाभाविकरागद्वेषकरिकैजन्यजा पशुमनुष्यादिकसर्वप्राणीयोंकी साधारणप्रवृत्ति है ॥ तासाधारणप्रवृत्तिकीनिवृत्तिकरिकै जबी इसपुरुषकूं शास्त्रविहितकर्महीं करणेयोग्यहूआ ॥ तबी जैसे इसयुद्धविषे शास्त्रविहितकर्मरूपताहै ॥ तैसे संन्यासपूर्वक भिक्षाअन्नकेभोजनविषेभी शास्त्रविहितकर्मरूपताहै ॥ यातैं अत्यंतसुग म तथाहिंसादिकोंतैंरहित जोभिक्षाअन्नकाभोजनहै ॥ सोईहीं हमारेकूं करणेयोग्यहै ॥ अत्यंतदुःखरूप तथाहिंसादि कोंकाकारणरूप इसयुद्धकेकरणेविषेहमारा क्याप्रयोजनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

श्रेयान्स्वधर्मोविगुणःपरधर्मात्स्वनुष्ठितात् ॥ स्वधर्मेनिधनंश्रेयःपरधर्मोभयावहः ॥

श्रेयान्। स्वधर्मः। विगुणः। परधर्मात्। स्वनुष्ठितात्। स्वधर्मे। निधनं। श्रेयः। परधर्मः। भयावहः ॥ इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन सर्वअंगोंकीसंपूर्णतापूर्वककरयेहूए परकेधर्मतैं किंचित्अंगोकीन्यूनतापूर्वककरयाहूआ आपणाधर्म अत्यंत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रेष्ठहै इसकारणतैं ताआपणेधर्मविषे मरणभी श्रेष्ठहै और परकाधर्मतौं भयकोहींप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ हेअर्जुन ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहजेच्यारिवर्णहैं ॥ तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास यह
जेच्यारिआश्रमहैं ॥ तिनच्यारिवर्णोंविषे तथाच्यारिआश्रमोंविषे जिसजिसवर्णकेप्रति तथाजिसजिसआश्रमकेप्र
ति धर्मशास्त्रनैं जोजोधर्म विधानकरया सोसोधर्म तिसतिसवर्णका तथातिसतिसआश्रमका स्वधर्म कह्याजावैहै ॥
दूसरेवर्णनका तथादूसरेआश्रमका सोसोधर्म परधर्म कह्याजावैहै ॥ जैसे बृहस्पतिसवनामायज्ञ शास्त्रनैं एकब्राह्मण
केप्रतिहीं विधानकरयाहै ॥ क्षत्रियादिकोंकेप्रति विधानकरयानहीं ॥ यातैं सोबृहस्पतिसवनामायज्ञ ब्राह्मणकातौं स्व
धर्महै ॥ क्षत्रियादिकोंका परधर्महै ॥ इसप्रकार राजसूयनामायज्ञ शास्त्रनैं एकक्षत्रियकेप्रतिहीं विधानकरयाहै ॥ ब्राह्म
णादिकोंकेप्रति विधानकरयानहीं ॥ यातैं सोराजसूयनामायज्ञ क्षत्रियकातौं स्वधर्महै ॥ ब्राह्मणादिकोंका परधर्महै ॥
इसप्रकार सर्वअसाधारणधर्मोंविषे स्वधर्मता तथापरधर्मता जानिलेणी ॥ ईश्वरनामस्मरणादिकसाधारणधर्मोंविषे
तौं सर्वप्राणीमात्रकी स्वधर्मताहींरहैहै किसीभीप्राणीको परधर्मतारहैनहीं ॥ याकारणतैं असाधारणधर्मकह्याहै ॥
तहां द्रव्य मंत्र देवता इत्यादिकजेकर्मकेअंगहैं ॥ तिनसर्वअंगोंकोसंपूर्णतातैंविनाहीं जोधर्म करयाजावैहै ॥ सोधर्म
विगुणकह्याजावैहै ॥ इसप्रकारका विगुणजोस्वधर्महै ॥ सोस्वधर्म तिनसर्वअंगोकीसंपूर्णतापूर्वककरयेहूएपरधर्मतैं अ
त्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं एकवेदप्रमाणकूंछोडिकै दूसराकोईप्रमाण धर्मविषेहैनहीं केतुताधर्मविषे एकवेदहींप्रमाणहै ॥
यहवार्त्ता (नोदनालक्षणोऽर्थोधर्मः) इसपूर्वमीमांसाकेसूत्रविषे विस्तारतैंकथनकरीहै ॥ यातैं परधर्म जोहै सोभी अनुष्ठा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नकरणेकूंयोग्यहै धर्महोणेतैं स्वधर्मकीन्यांई याप्रकारकाअनुमान ताधर्मविषे प्रमाणहोइसकैनहीं ॥ यातैं यत्किंचित्अंगोंकोन्यूनताकरिकै विगुणभावकूंप्राप्तभयाजोस्वधर्महै ॥ ताविगुणस्वधर्मविषेभी स्थितजोपुरुषहै ॥ तास्वधर्मनिष्ठपुरुषका परधर्मविषेस्थितपुरुषकेजीवनतैं मरणभी अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं स्वधर्मविषेस्थितपुरुषकाजोमरणहै सो मरण इसलोकविषेतौं तापुरुषकूं कीर्तिकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ और परलोकविषे स्वर्गादिकोंकोप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ यातैं सोमरणभी अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ और परधर्मतौं इसपुरुषकूं इसलोकविषेतौं अकीर्तिकोप्राप्तिकरेहै ॥ और परलोकविषे नरकादिकोंकीप्राप्तिकरेहै ॥ यातैं जैसे रागद्वेषकरिकैजन्य स्वाभाविकप्रवृत्ति इसपुरुषकूं परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ तैसे यहपरधर्मभी परित्यागकरणेकूंयोग्यहै इति ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे श्रीभगवान्केमतकूंअंगीकारकरणेहारेपुरुषोंकूं श्रेयकीप्राप्ति कथनकरी ॥ और ताभगवान्केमतकूंनहींअंगीकारकरणेहारेपुरुषोंकूं ताश्रेयकेमार्गतैं भ्रष्टपणा कथनकरया ॥ और ताश्रेयकेमार्गतैंभ्रष्टहोणेविषे तथाफलकीइच्छापूर्वककाम्यकर्मोंकेकरणेविषे तथाकेवलपापकर्मोंकेकरणेविषे (येत्वेतदभ्यसूयंतः) इत्यादिकवचनोंकरिकै बहुतकारण कथनकऱ्ये ॥ तिनसर्वकारणोंकूंसंक्षेपतैंकथनकरणेहारा यहश्लोकहै ॥ (श्रद्धाहानिस्तथासूयादुष्टचित्तत्वमूढते ॥ प्रकृतेर्वशवर्त्तित्वंरागद्वेषौचपुष्कलौ ॥ परधर्मरुचित्वंचेत्युक्तादुर्मार्गवाहकाः ॥) अर्थयह ॥ श्रद्धातैंरहितहोणा तथाअसूयाकरणो तथाचित्तकीदुष्टता तथामूढता तथाप्रकृतिकेवशवर्तिहोणा तथापुष्कलरागद्वेष तथापरधर्मविषेप्रीतिकरणा यहसर्व दुर्मार्गकीप्राप्तिकरणेहारेहैं इति ॥ ३५ ॥ * ॥ तहां इसपुरुषकी क ऱ्यकर्मोंविषेप्रीतिकरावणेहारा तथानिषिद्धकर्मोंविषेप्रीतिकरावणेहारा जोकोई कारणहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ताकारणकूंनिवृत्तिकरिकै श्रीभगवान्‌के तापूर्वउक्तमतकूं आश्रयणकरणेवासतैं अर्जुन प्रथम ताकारणकास्वरूप पुछेहै ॥

अर्जुनउवाच ॥ अथकेनप्रयुक्तोयंपापंचरतिपूरुषः ॥
अनिच्छन्नपिवार्ष्णेयबलादिवनियोजितः ॥ ३६ ॥

अथ। केन। प्रयुक्तः। अयं। पापं। चरति। पूरुषः। अनिच्छन्। अपि। वार्ष्णेय। बलात्। इव। नियोजितः ॥ इतिप० ॥

हेवार्ष्णेय यह पुरुष पापकरणेकीनहींइच्छाकरताहूआ भी बलात्कारतैं प्रवृत्तकऱ्येहूएपु
रुषकी न्यांई किसकरिकै प्रवृत्तकऱ्याहूआ पापकर्मकूं करेहै ॥ ३६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् (ध्यायतोविषयान्पुंसः) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्वभी आपनैं अनर्थकामूल कथनकऱ्याथा ॥ और अबीभी आपनैं (प्रकृतेर्गुणसंमूढाः) इत्यादिकवचनोंकरिकै बहुतप्रकारका सोअनर्थकामूल कथनकऱ्याहै॥ तहां तेसर्वहीं समानप्रधानताकरिकै अनर्थकेकारणहैं ॥ अथवा तिनसर्वोविषे एकहींमुख्यकारणहै दूसरेसर्वगौणहैं ॥ तहां ॥ प्रथमपक्षविषेतौं तिनसर्वकारणोंकूं भिन्नभिन्न निवृत्तकरणेविषे महान्‌परिश्रमहोवैंगा ॥ और दूसरेपक्षविषे तौं ताएकहींप्रधानकारणकेनिवृत्तकीयेहूए इसपुरुषकूं कृतकृत्यभावकीप्राप्ति होवैंगी ॥ यातैं हेभगवन् आप यहवार्त्ताकहो ॥ तुमारेमतकूंनहींअंगोकारकरणेहारा तथासर्वज्ञानोंविषेमूढ यहपुरुष किसबलवान्‌कारणकरिकै प्रवृत्तकऱ्याहूआ अनर्थकीप्राप्तिकरणेहारे अनेकप्रकारकेनिषिद्धकर्मोंकूं तथाकाम्यकर्मोंकूं करेहै ॥ ईहां परस्त्रीगमनादिक नि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

षिद्धकर्महैं ॥ और शत्रुकेनाशकरणेहारेइयेनयज्ञादिक काम्यकर्महैं ॥ तेदोनोंप्रकारकेकर्म इसपुरुषकूं अनर्थकीहींप्रा
प्तिकरणेहारेहैं ॥ यातैं तिनदोनोंप्रकारकेकर्मोका पापशब्दकरिकैग्रहणकऱ्याहै इति ॥ हेभगवन् यहपुरुष आप तिन
पापकर्मोकेकरणेकीनहींइच्छाकरताहूआभी बलात्कारतैं तिनपापकर्मोकूंहींकरेहै ॥ और परमपुरुषार्थकासाधनरूप
करिकै आपनैं उपदेशकऱ्याजोकर्महै ॥ ताकर्मकेकरणेकीइच्छाकरताहूआभी यहपुरुष ताकर्मकूंकरतानहीं ॥ यातैं यह
जान्याजावैहै ॥ यहपुरुष परतंत्रहै स्वतंत्रनहींहै ॥ परतंत्रतातैंविना यहवार्त्ता संभवतोनहीं ॥ यातैं हेभगवन् जै
से महाराजानैं किसीकार्यविषे बलात्कारसैं प्रवृत्तकऱ्याजोकोईभृत्यहै ॥ सोभृत्य ताकार्यकेकरणेकीनहींइच्छाकरताहू
आभी ताकार्यकूं अवश्यकरिकैकरेहै ॥ तैसे जिसबलवान्कारणकरिकै प्रवृत्तकऱ्याहूआ यहपुरुष तुमारेमतकेविरोधी
पापकर्मोकूं सर्वअनर्थोकामूलभूतजानताहूआभी तिनपापकर्मोकूंहींकरेहै ॥ तिस अनर्थविषेप्रवृत्तकरणेहारेकारणका
स्वरूप आप हमारेप्रति कथनकरौ ॥ जिसकारणकेस्वरूपकूंजानिकरिकै मैंअर्जुन तिसकारणकेनाशकरणेवासतै प्र
यत्नकरौइति ॥ ईहां (अनिच्छन्नपि) यावचनकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ पूर्वकथनकऱ्येहूए रागद्वेषविषेभी
प्रवृत्तिकीकारणतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं रागकेविद्यमानहूए इच्छा अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यातैं यापुरुषविषे इच्छाकेअ
भावहूए तारागकाभीअभावहींहै ॥ जबी तारागविषे अप्रवर्त्तकतासिद्धभई ॥ तबी तारागजन्यसंस्कारोंकरिकैजन्य
जोधर्मअधर्महै ताधर्मअधर्मविषेभी साप्रवर्त्तकता संभवैनहीं ॥ और ताधर्मअधर्मविषे अप्रवर्त्तकताहूए ताधर्मअध
र्मकीअपेक्षाकरणेहारेईश्वरविषेभी साप्रवर्त्तकता संभवैनहींइति ॥ और (हेवार्ष्णेय) यासंबोधनकेकहणेकरिकै अर्जु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ननैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ हमारे मातामहकाकुल जोवृष्णिवंशहै तावृष्णिवंशविषे आपणेभक्तजनोंकेउद्धारकरणे वासतै आपनैं अवतारधारणकऱ्याहै ॥ और मैंअर्जुनभी तावृष्णिवंशविषेउत्पन्नहूई कुंतीमाताकापुत्रहूं ॥ यातैं ह मारेकूं आपनाजानिकरिकै आपनैं हमारीउपेक्षानहींकरणी ॥ किंतु इसहमारेप्रश्नका आपनैं यथार्थउत्तरकहणा इ ति ॥ ३६ ॥ ❋ ॥ इसप्रकार अर्जुनकरिकैपूछाहूआ श्रीभगवान् । (काममयएवायंपुरुषःइति आत्मैवेदमग्र आसीदेकएव सोऽकामयत जायामेस्यात् अथप्रजामेस्यात् अथवित्तंमेस्यात् अथकर्मकुर्वीय ।) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै सिद्ध तथा ।(अकामस्यक्रियाकाचित्दृश्यतेनेहकार्हिचित् ॥ यद्यद्धिकुरुतेजंतुस्तत्तत्कामस्यचेष्टितं ।) इत्यादिकस्मृतियोंक रिकैसिद्ध उत्तरकूं कहताभया ॥ तिनश्रुतियोंका तथास्मृतिवचनका यह अर्थहै यहपुरुष काममयहींहैइति ॥ इसज गतकीउत्पत्तितैंपूर्व एकआत्माहींहोताभया ॥ सोआत्मादेव याप्रकारकीकामना करताभया ॥ हमारेकूं जायाप्राप्त होवै ॥ तथा हमारेकूं प्रजाप्राप्तहोवै ॥ तथा हमारेकूं धनप्राप्तहोवै ॥ तथा मैं कर्मोंकूंकरौंइति ॥ और यालोकविषे कामनातैंरहितपुरुषकी कोईभीक्रिया देखणेविषेआवतीनहीं ॥ यातैं यहजीव जिसजिसकर्मकूंकरेहै ॥ सोसर्व इसका मकीहींचेष्टाहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंकरिकैसिद्धउत्तरकूं श्रीभगवान् कहेहैं ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ कामएषक्रोधएषरजोगुणसमुद्भ वः ॥ महाशनोमहापाप्माविद्ध्येनमिहवैरिणं ॥ ३७ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कामः । एषः । क्रोधः । एषः । रजोगुणसमुद्भवः । महाशनः । महापाप्मा । विद्धि । एनं । इह । वैरिणं । इतिपदच्छेदः ॥
हेअर्जुन सोअनर्थमार्गविषेप्रवृत्तकरणेहारा यह कामहींहै यहकामहीं क्रोधरूपहै तथारजोगुणतैंउत्पन्नभया
है तथामहान् आहारवालाहै तथाअत्यंतउग्रहै यातैं इससंसारविषे इसकामकूंहीं तूं वैरीरूप जान ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसपुरुषकूं बलात्कारसैं अनर्थमार्गविषेप्रवृत्तकरणेकाकारण जो तुमनैं पूछाथा॥ सोकारण यहकामरूप
महान्शत्रुहींहै ॥ इसकामकरिकैहीं इनप्राणीयोंकूं सर्वअनर्थोकीप्राप्तिहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे यहकामप्राणीयोंकूं
अनर्थविषेप्रवृत्तकरेहै ॥ तैसे क्रोधभी इनप्राणीयोंकूं सर्वअनर्थविषेप्रवृत्तकरेहै ॥ यातैं केवलकामविषेहीं प्रवर्त्तकता संभवै
नहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहैं (क्रोधएषःइति) हेअर्जुन यह विषयोंकीअभिलाषारूपजोकामहै ॥
ताकामतैं सोक्रोध भिन्ननहींहै ॥ किंतु यहकामहीं क्रोधरूपहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोकोईपुरुषकिसीधनादिकपदार्थोंकीइ
च्छाकरिकै जबी किसीधनीपुरुषकेसमीपजावेहै ॥ आगेतैंकोईदुष्टपुरुष तापुरुषकीइच्छा पूर्णहोणेदेवैनहीं ॥ तबी तापुरु
षका सोइच्छारूपकामहीं तादुष्टपुरुषऊपरि क्रोधरूपहोइकै परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्ता सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्ध
है ॥ यातैं सोकामहीं क्रोधरूपहै इति॥ताकामरूपमहाशत्रुकेनिवृत्तकीयेहूए इसपुरुषकूं सर्वपुरुषार्थोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ अब
ताकामरूपशत्रुकेनिवृत्तकरणेहारेउपायकेजनावणेवासतै ताकामरूपशत्रुकेकारणकूं कथनकरेहैं (रजोगुणसमुद्भवःइति)
हेअर्जुन दुःखप्रवृत्तिबलरूपजोरजोगुणहै ॥ सोरजोगुणहैसमुद्भवनाम कारणजिसका ऐसायहकामहै ॥ और लोकविषे
कारणकेसमानस्वभाववालाहींकार्यहोवैहै ॥ यातैं जैसे सोरजोगुणरूपकारण दुःखप्रवृत्तिआदिरूपहै ॥ तैसे यहकाम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूपकार्यभी दुःखप्रवृत्तिआदिरूपहींहै ॥ यद्यपि रजोगुणकीन्यांई तमोगुणभी ताकामकाकारणहै ॥ यातैं (रजोगुणसमुद्भवः) यावचनकीन्यांई तमोगुणसमुद्भवः यहभीवचनकहणाउचितथा ॥ तथापि दुःखविषे तथाप्रवृत्तिविषे रजोगुणकूंहीं प्रधानताहै ॥ तमोगुणकूंप्रधानताहैनहीं ॥ यातैं ईहां रजोगुणकाहींकथनकऱ्याहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थबोधनकऱ्या ॥ सात्विकवृत्तिकरिकै जबीतारजोगुणरूपकारणकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी कारणके निवृत्तहूए सोकामरूपकार्य आपेहींनिवृत्तहोइजावैहै ॥ यातैं सा सात्विकवृत्तिहीं रजोगुणकीनिवृत्तिद्वारा ताकामके निवृत्तिकाउपायहैइति ॥ अथवा ॥ हेभगवन् ताकामकूं किसप्रकारतैं अनर्थविषेप्रवर्त्तकताहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंका केहूए श्रीभगवान् कहेहै (रजोगुणसमुद्भवःइति) हेअर्जुन दुःखप्रवृत्ति आदिरूपजोरजोगुणहै तारजोगुणकाहैं समुद्भव नाम उत्पत्तिजिसतैं ताकानाम रजोगुणसमुद्भवहै ॥ ऐसारजोगुणकाकारणरूप यहकामहै ॥ तात्पर्ययह ॥ विषयोंकीअभिलाषारूपजोयहकामहै ॥ सोयहकाम आपप्रगटहोइकै तारजोगुणकूंप्रवर्त्तकरताहूआ इसपुरुषकूं दुःखरूपकर्मोंविषे प्रवृत्तकरेहैइति ॥ यातैं अधिकारीपुरुषोंनैं यहकामरूपशत्रु अवश्यकरिकै जयकरणेयोग्यहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसलोकविषे शत्रुकेजयकरणेवासतै साम दान भेद दंडयहच्यारि उपायहोवैहैं ॥ तहां साम दान भेद यातीनउपायोंकरिकै जोशत्रु वशनहींहोताहोवै ॥ तौं ताशत्रुकेजयकरणेवासतै चौथा दंडरूपउपायकरणा ॥ परंतु तिन तीनउपायोंकेकीयेंतैंविनाहीं प्रथमहीं सोदंडरूपउपायकरणा उचितनहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताकामरूपशत्रुकेजीतणेविषे प्रथम तीनउपायोंकैंअसंभवकहणेवासतै ताकामरूपशत्रुके दोविशेषण

366

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कहेहै (महाशनःमहापाप्माइति) महान्है अशन क्या आहार जिसका ताकानाम महाशनहै ॥ ऐसायहकामहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अनेकप्रकारकेमहान् भोगोंकीप्राप्तिकरिकैभी यहकाम कदाचित्भी तृप्तहोवैनहीं ॥ यहवार्ता स्मृतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (नजातुकामःकामानामुपभोगेनशाम्यति ॥ हविषाकृष्णवर्त्मेवभूयएवाभिवर्द्धते ॥ १ ॥ यत्पृथिव्यांव्रीहियवंहिरण्यंपशवःस्त्रियः ॥ नालमेकस्यतत्सर्वमितिमत्वाशमंव्रजेत् ॥२॥) अर्थयह ॥ यहकाम पदार्थोंकेभोगकरिके कदाचित्भी शांतिकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु जैसे अग्नि घृतकाष्ठादिकोंकेपावणेकरिकै वृद्धिकूंप्राप्तहोताजावैहै ॥ तैसे यहकामभी बहुतपदार्थोंकैभोगकरिकैदिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोताजावैहै ॥ १ ॥ और इसपृथिवीविषे जितनैंकीव्रीहियवादिकअन्नहैं ॥ तथा जितनैंकीसुवर्णादिकधनहैं ॥ तथा जितनैंकी गोअश्वादिकपशुहैं ॥ तथा जितनीकी सुंदरस्त्रीयांहैं ॥ तेसर्वपदार्थ जोकदाचित् कामनावालेकिसीएकपुरुषकूंभी प्राप्तहोवै ॥ तौंभी तेसर्वपदार्थ तापुरुषकेकामकूं तृप्तकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ तौंअल्पभोगोंकरिकै ताकामकीशांति कैसेहोवैंगी ॥ किंतु नहींहोवैंगी ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै यहपुरुष शांतिकूंप्राप्तहोवै ॥ २ ॥ यातैं तादानरूपउपायकरिकै यहकामरूपशत्रु वशहोवैनहीं ॥ इसप्रकार साम भेद यादोनोंउपायोंकरिकैभी यहकामरूपशत्रु वशहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं यहकामरूपशत्रु महापाप्माहै क्या अत्यंतउग्रहै ॥ याकारणतैंहीं इसकामकरिकैप्रेरणाकरयाहूआ यहपुरुष पापकर्मोंतैं दुःखरूपफलकीप्राप्तिकूंजानताहूआभी पुनः तिनपापकर्मोंकूंहींकरेहै ॥ ऐसाअत्यंतउग्र यहकामरूपशत्रु साम भेद यादोनोंउपायोंकरिकै वशहोइसकैनहीं ॥ जिसकारणतैं लोकविषेऋजुस्वभाववालेशत्रुहींता साम भेदरूप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उपायकरिकैवशहोवैहैं ॥ यातैं हेअर्जुन इससंसारविषे तूं इसकामकूंहींशत्रुरूपजान इति ॥ ३७ ॥ * ॥ तहांपूर्व श्लोकविषेअत्यंतउग्ररूपकरिकै ताकामविषे कथनकरया जोशत्रुपणा ता शत्रुपणेकूं अब तीनदृष्टांतोंकरिकै स्पष्टकरेहैं ॥

368

धूमेनाव्रियतेवन्हिर्यथादर्शोमलेनच ॥ यथोल्बेनावृतोगर्भस्तथातेनेदमावृतं ॥ ३८ ॥

धूमेन।आव्रियते।वन्हिः।यथा।आदर्शः।मलेन।च।यथा।उल्बेन।आवृतः।गर्भः।तथा।तेन।इदं।आवृतं ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जैसें धूमनैं अग्नि आवृतकरीताहै तथा जैसे रजरूपमलनैं दर्पण आवृतकरीताहै तथा जैसें जरायुचर्मनैं गर्भ आवृतकरीताहै तैसे तिसकामनैं यहज्ञान आवृतकरयाहै ॥ ३८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसस्थूलशरीरकेआरंभतैंपूर्व अंतःकरण कामादिकवृत्तियोंकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तितैंपूर्व सोअंतःकरण सूक्षम कह्याजावैहै और शरीरकेआरंभकरणेहारेपुण्यपापकर्मोंकरिकैरचित जोयहस्थूलशरीरहै ॥ तास्थूलशरीरविषे स्थितहोइकै सोअंतःकरण कामादिकवृत्तियोंकूंप्राप्तहोवैहै यातैं तास्थूलशरीरावच्छिन्नअंतःकरणविषे अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहूआ सोकाम स्थूल कह्याजावैहै ॥ और सोईहींकाम विषयोंकेचिंतनअवस्थाविषे पुनःपुनः वृद्धिकूंप्राप्तहूआ स्थूलतर कह्याजावैहै ॥ और सोईहींकाम तिनविषयोंकेभोगअवस्थाविषे अत्यंतवृद्धिकूंप्राप्तहूआ स्थूलतम कह्याजावैहै ॥ ईहां स्थूलतैंभी अधिकस्थूलकानाम स्थूलतरहै ॥ और स्थूलतरतैंभी अधिकस्थूलकानाम स्थूलतमहै ॥ इसप्रकार सोएकहींकाम स्थूल स्थूलतर स्थूलतम यातीनअवस्थावोंवालाहोवैहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तहांताकामके प्रथम स्थूलअवस्थाविषे दृष्टांतकथनकरेहैं (धूमेनाव्रियतेवन्हिःइति) हेअर्जुन जैसे अग्निकेसाथि उत्पन्नभयाजो अप्रकाशरूपधूमहै ॥ ताअप्रकाशरूपधूमनैं प्रकाशरूपअग्नि आवृतकरीताहै ॥ तैसे इसस्थूलकामनैं यह ज्ञान आवृतकरीताहै ॥ अब ताकामकी दूसरी स्थूलतरअवस्थाविषे दृष्टांतकथनकरेहैं (यथादर्शोमलेनचइति) हेअर्जुन जैसे दर्पणतैंपश्चात्उत्पन्नभयाजो रजरूपमलहै ॥ तिस रजरूपमलनैं सोदर्पण आवृतकरीताहै ॥ तैसे इसस्थूलतरकामनैंभी यहज्ञान आवृतकरीताहै ॥ अब ताकामकीतीसरी स्थूलतमअवस्थाविषे दृष्टांतकथनकरेहैं (यथोल्बेनावृतोगर्भःइति) हेअर्जुन जैसे माताकेउदरविषेस्थितगर्भकूं सर्वओरतैंवलेटरह्याहूआ जो जरायुनामाचर्महै ॥ ताजरायुनामाचर्मनैं सोगर्भ आवृतकरीताहै ॥ तैसे इसस्थूलतमकामनैं यहज्ञान आवृतकरीताहै ॥ ईहां इनतीनदृष्टांतोंविषे परस्पर इतनीविशेषताहै ॥ ताधूमकरिकैआवृतहूआभीअग्नि दाहादिरूपआपणेकार्यकूंकरताहींहै ॥ और रजरूपमलकरिकैआवृतहूआजोदर्पणहै ॥ सोदर्पणतौं प्रतिबिंबकाग्रहणरूपआपणेकार्यकूंकरतानहीं ॥ जिसकारणतैं तादर्पणकेस्वच्छतामात्रकातारजरूपमलकरिकै तिरोधानहोइरह्याहै ॥ परंतु सोदर्पण स्वरूपतैंतौं प्रतीतहोतारहेहै ॥ और जरायुनामाचर्मकरिकैआवृतजोगर्भहै ॥ सोगर्भतौं हस्तपादादिकोंकाप्रसारणरूप आपणेकार्यकूंभी करतानहीं ॥ तथा आपणेस्वरूपतैंभी प्रतीतहोतानहीं ॥ याप्रकारकी तिनदृष्टांतोंकीविलक्षणताकूंअंगीकारकरिकैहीं ताकामकी स्थूल स्थूलतर स्थूलतमयातीनअवस्थावोंविषे यथाक्रमतैं तेतीनदृष्टांत कथनकरेहैं इति ॥ ३८ ॥ * ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे (तथा तेनेदमावृतं) यहजोसंग्रहवचनकह्याथा तासंग्रहवचनकेअर्थकूं अब विस्तारकरिकै कथनकरेहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आवृतंज्ञानमेतेनज्ञानिनोनित्यवैरिणा ॥ कामरूपेणकौंतेयदुष्पूरेणानलेनच ॥ ३९ ॥

आँवृतं । ज्ञाँनं । एँतेन । ज्ञाँनिनः । नित्यँवैरिणा । काँमरूपेण । कौंतेयँ । दुँष्पूरेण । अँनलेन । चँ । इतिपदच्छेदः ॥

हेकौंतेय इसकामनैंहीं यहज्ञान आवृतकरयाहै कैसाहैयहकाम ज्ञानीपुरुषका नित्यहींवैरीहै तथाइच्छा तृष्णारूपहै तथा अग्निकी न्यांई पूंरितितैंरहितहै ॥ ३९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकरिकै वस्तुकूंजानिये ताकानाम ज्ञानहै ॥ ऐसा अंतःकरणहै ॥ अंतःकरणकरिकैहीं वस्तु जान्याजावैहै ॥ अथवा अंतःकरणकीवृत्तिरूप जोविवेकविज्ञानहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ ऐसाज्ञान इसकामनैंहीं आवृतकरयाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् यद्यपि इसकामनैं सोज्ञान आवृतकरयाहै ॥ तथापि अविचारसिद्धसुखकाहेतुहोणेतैं यहकाम ग्रहणकरणेकूंयोग्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (ज्ञानिनोनित्यवैरिणाइति) हेअर्जुन यहकाम ज्ञानीपुरुषोंकातौं नित्यहींवैरीहै ॥ काहेतैं अज्ञानीपुरुषतौं विषयभोगकालविषे ताकामकूं मित्रकीन्याई हींजानतेहैं ॥ और ताअज्ञानीपुरुषकूं जबी ताकामका कार्यरूपदुःख आइकैप्राप्तहोवैहै तबी सोअज्ञानीपुरुष इसकामनैंहीं हमारेकूं इसदुःखकीप्राप्तिकरीहै इसप्रकार ताकामकूं शत्रुरूपकरिकैजानेहै यातैं ताअज्ञानीपुरुषका सोकाम नित्यहींवैरीनहींहै ॥ किंतु दुःखरूपपरिणामकालविषे वैरीहै ॥ और ज्ञानवान्पुरुषतौं ताविषयभोगकाल विषेभी इसकामनैंहीं हमारेकूं इसअनर्थविषेप्रवृत्तकरयाहै याप्रकार ताकामकूं वैरीहींजानेहै ॥ यातैं सोज्ञानवान्पुरु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ष विषयभोगकालविषे तथाताकेदुःखरूपपरिणामकालविषे इसकामकरिकै दुःखीहींहोवैहै ॥ याकारणतैं यहकाम
ताज्ञानवान्पुरुषका नित्यहींवैरीहै ॥ ऐसेनित्यवैरीरूपकामकूं ताज्ञानवान्पुरुषनैं अवश्यकरिकैहननकरणा ॥ शंका
॥ हेभगवन् ताकामकेस्वरूपजानेतैंविना ताका हननसंभवैनहीं ॥ यातैं ताकामका स्वरूपकह्याचाहोये ॥ ऐसीअर्जु
नकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (कामरूपेणइति) हेअर्जुन इच्छातृष्णारूपकामहींहैरूपजिसका ऐसायहकामहै ॥
शंका ॥ हेभगवन् यद्यपि सोकाम विवेकीपुरुषका नित्यहींवैरीहीहै ॥ यातैं विवेकीपुरुषोंनैंतौं ताकामका अवश्यकरि
कैहननकरणा ॥ तथापि अविवेकीपुरुषोंका सोकाम नित्यवैरीहैनहीं ॥ यातैं तिनअविवेकीपुरुषोंनैंतौं ताकामका
अवश्यकरिकैग्रहणकरणा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (दुष्पूरेणानलेनचइति) हेअर्जुन जैसे यह
अग्नि घृतकाष्ठादिकोंकरिकै तृप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यहकामभी अनेकप्रकारकेभोगोंकरिकैभी तृप्तहोवैनहीं ॥ याकार
णतैं यहकाम निरंतर संतापकाहींहेतुहै ॥ यातैं विवेकीपुरुषकीन्यांई अविवेकीपुरुषनैंभी ताकामकापरित्यागहींक
रणाइति ॥ अथवा ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसलोकविषे जाजाइच्छाहोवैहै ॥ सासाइच्छा आपणेआपणेविषयकीप्राप्तितै
निवृत्तिहोइजावैहै ॥ और यहकामभी इच्छारूपहींहै ॥ यातैं यहकामभी तिसतिसविषयोंकेभोगकरिकै आपेहींनिवृत्ति
होइजावैंगा ताकामकीनिवृत्तिकरणेवासतै दूसरेउपायका कछुप्रयोजननहींहै ॥ ऐसोअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवा
न्कहेहै (दुष्पूरेणानलेनचइति) हेअर्जुन विषयकीप्राप्तिकालविषे यद्यपि ताविषयकीइच्छाकातिरोधानहोवैहै ॥ तथा
पि कालांतरविषेपुनःताइच्छाका प्रादुर्भावहोवैहै ॥ यातैं विषयकीप्राप्ति ताइच्छाकानिवर्त्तकनहींहै॥किंतु विषयोंविषे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वारंवार दोषदृष्टिहीं ताइच्छाकानिवर्त्तकहै इति ॥ ३९॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसलोकविषेजिसशत्रुकेस्थानकाज्ञानहोवै है ॥ सोईहींशत्रु जीत्याजावैहै ॥ ताशत्रुकेस्थानकेज्ञानतैंविना सोशत्रु जीत्याजावैनहीं ॥ यातैं इसकामशत्रुके जो तणैवासतैं प्रथम इसकामका अधिष्ठानजान्याचाहीये ॥ जिसअधिष्ठानकेआश्रितहूआयहकाम लोकोंकूं अनर्थकीप्राप्ति करेहै ॥ सोकामकाअधिष्ठान कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताकामके अधिष्ठानका कथनकरेहै ॥

इंद्रियाणिमनोबुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते ॥ एतैर्विमोहयत्येषज्ञानमावृत्यदेहिनं ॥ ४० ॥

इंद्रियाणि । मनः । बुद्धिः । अस्य । अधिष्ठानं । उच्यते । एतैः । विमोहयति । एषः । ज्ञानं । आवृत्य । देहिनं ॥ इतिप०

हेअर्जुन इंद्रिय मन बुद्धि यहतीनोंहीं इसकामके अधिष्ठान कहेजावेहैं इनतीनोंकरिकैहीं यहकाम ताज्ञानकूं आवृतकरिकै देहाभिमानीजीवकूं मोहकीप्राप्तिकरेहै ॥ ४० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापांचोंकूंयथाक्रमतैं विषयकरणेहारे जे श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रियहैं ॥ तथा वचन आदान गमन आनंद विसर्ग यापंचक्रियावोंके यथाक्रमतैंजनक जे वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु यहपंचकर्मइंद्रियहैं ॥ यहदशइंद्रियजोहैं ॥ तथा संकल्परूपजोमनहै ॥ तथा निश्चयरूपजाबुद्धिहै॥ यातीनोंहीं इसकामका अधिष्ठान कहेजावैहैं ॥ इनतीनोंकरिकैहीं यहकाम ताविवेकज्ञानकूं आवृतकरिकै देहाभिमानापु रुषकूं नानाप्रकारकेमोहकीप्राप्तिकरेहै इति ॥ ४० ॥ * ॥ जिसकारणतैं तिनइंद्रियादिकोंकेआश्रितहूआहीं यह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

काम देहाभिमानीजीवोंकूं अनेकप्रकारकेमोहकीप्राप्तिकरेहै ॥ तिसकारणतैं तूं प्रथम तिनइंद्रियादिकोंकूंहीं जयकर ॥ तिनइंद्रियादिकोंकेजयहूए ताकामकाभी सुखेनहीं जयहोवैंगा ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कथनकरेहै ॥

तस्मात्त्वमिंद्रियाण्यादौनियम्यभरतर्षभ॥पाप्मानंप्रजहित्येनंज्ञानविज्ञाननाशनं४१

तस्मात्। त्वं। इंद्रियाणि।आदौ। नियम्य। भरतर्षभ। पाप्मानं।प्रजहि। हि।एनं। ज्ञानविज्ञाननाशनं॥ इतिपद०

हेअर्जुन तिसकारणतैं तूंअर्जुन प्रथम तिनइंद्रियोंकूं वशकरिकै सर्वपापकेमूलभूत
तथाज्ञानविज्ञानकेनाशकरणेहारे इसकामकूं हीं नाशकर॥ ४१ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं इसकामके तेश्रोत्रादिकइंद्रियहीं अधिष्ठानरूपहैं ॥ जैसे किसीराजाके पर्वत दुर्ग आदिक अधिष्ठानहोवैहैं ॥ तैसेइसकामके तेश्रोत्रादिकइंद्रियहीं अधिष्ठानरूपहैं तिसकारणतैं तूंअर्जुन ताकाम कृतमोहतैंपूर्व अथवा ताकामकेनिरोधतैंपूर्व तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूंवशकरिकै इसकामकूंनाशकर ॥ तिनइंद्रियोंके वशकीयेतैंविना ताकामकानाश करयाजावैनहीं ॥ जैसे किसीपर्वतविषे तथाकिसीदुर्गादिकोंविषे स्थितजोकोईराजा है ॥ ताराजाके तिनपर्वतदुर्गादिकोंकूं आपणेवशकरिकैहीं दूसरेराजे ताराजाकूंनाशकरेहैं ॥ तिनपर्वतदुर्गादिकोंके वशकीयेतैंविना ताराजाकूं दूसरेराजे नाशकरिसकैनहीं ॥ तैसे तिनइंद्रियोंकेवशकीयेतैंविना ताकामका नाशहोवैन हीं ॥ और तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेवशकीयेतैंअनंतर मन बुद्धि यादोनोंकाभी वशकरणा सिद्धहोवैहै ॥ काहेतैं संक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ल्परूपजोमनहै तथानिश्चयरूपजाबुद्धिहै ॥ यहदोनों बाह्यइंद्रियजन्यवृत्तिद्वाराहीं अनर्थकेकारणहोवैहै ॥ ताबाह्य इंद्रियजन्यवृत्तितैंविना तिनदोनोंविषे अनर्थकीकारणता संभवैनहीं ॥ यातैं तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेवशहूएतैंअनंतर सोमनबुद्धिभी अवश्यकरिकै वशहोवैहै ॥ याकारणतैंहीं पूर्वश्लोकविषे (इंद्रियाणिमनोबुद्धिः) यावचनकरिकै इंद्रिय मन बुद्धि यातीनोंका भिन्नभिन्न कथनकरिकैभी इसश्लोकविषे (इंद्रियाणि) यावचनकरिकै केवल श्रोत्रादिकइंद्रियोंकाहीं कथनकरयाहै ॥ अथवा जैसे बाह्यशब्दादिकोंकेज्ञानविषे श्रोत्रादिकोंकूं इंद्रियरूपताहै ॥ तैसे अंतर सुखदुःखादिकोंकेज्ञानविषे मनबुद्धिकूंभी इंद्रियरूपताहै ॥ यातैं (इंद्रियाणि) यापदकरिकै तामनबुद्धिकाभी ग्रहणहो इसकेहैइति ॥ ईहां (हेभरतर्षभ) यासंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकरया ॥ महान्भरतवंशविषे तूं उत्पन्नभयाहैं ॥ यातैं तिनइंद्रियोंकेवशकरणेविषे तूं समर्थहैंइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसलोकविषे जोकोईपुरुष किसीमहान्अपराधकूंकरेहै ॥ तिसपुरुषकाहीं राजादिक नाशकरेहैं ॥ अपराधतौंविना किसीकाभी कोई नाशकरतानहीं ॥ सो ऐसाअपराध इसकामनैं कौंनकरयाहै ॥ जिसअपराधकरिकै मैं इसकानाशकरौं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् ताकामकृतअपराधका वर्णनकरेहै (पाप्मानंज्ञानविज्ञाननाशनंइति) हेअर्जुन यहजीव ताकामकेवशहूएहीं सर्वपापोंकूंकरेहैं ॥ कामरहितपुरुष किसीभीपापकूंकरतेनहीं ॥ यातैं अन्वयव्यतिरेककरिकै यहकामहीं सर्वपापकर्मोंकामूलरूपहै ॥ पुनःकैसाहैसोकाम ॥ गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंउत्पन्नभयाजो आत्माकापरोक्षज्ञानहै ॥ तथा तापरोक्षज्ञानकाफलरूपजो आत्माकाअपरोक्षज्ञानरूपविज्ञानहै ॥ जेज्ञानविज्ञानदोनों इसपुरुषकूं मोक्षकीप्रा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिकरणेहारेहैं ॥ तिनज्ञानविज्ञानदोनोंका यहकाम नाशकरणेहाराहै ॥ ऐसेमहान्अपराधवालेकामका अवश्यकरि केनाशकरयाचाहीये इति ॥४१॥※ ॥शंका॥ हेभगवन् ताकामकेनाशकरणेवासतै पूर्व आपनैं इंद्रियोंकाव शकरणा कथनकरया ॥ सो यद्यपि जिसीकिसीप्रकारतैं बाह्यश्रोत्रादिकइंद्रियोंकावशकरणातौं संभवहोइसकेहै ॥ त थापि अंतरकीतृष्णाकात्यागकरणा बहुतदुर्घटहै ॥ समाधान ॥ हेअर्जुन (रसोप्यस्यपरंदृष्ट्वानिवर्त्तते) इसवचनविषे पूर्वहम परवस्तुकेदर्शनकूंहीं तारसरूपतृष्णाकीनिवृत्तिविषेकारणरूप कथनकरिआयेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसपरव स्तुकेदर्शनतैं तिस तृष्णाकोनिवृत्तिहोवैहै॥ सोपरवस्तु कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् तिसपर शब्दकाअर्थरूप शुद्धआत्माकूं देहादिकोतैंभिन्नकरिकै निरूपणकरेहै ॥

इंद्रियाणिपराण्याहुरिंद्रियेभ्यःपरंमनः॥ मनसस्तुपराबुद्धिर्योबुद्धेःपरतस्तुसः॥४२॥

इंद्रियाणि। पराणि। आहुः। इंद्रियेभ्यः। परंमनः। मनसः। तु। परा। बुद्धिः। यः। बुद्धेः। परतः। तु। सः॥ इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन वेदकीश्रुतियां इसस्थूलशरीरतैं श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं पर कहेहैं तथा तिनइंद्रियोंतैं मन पर है तथा तामनतैं बुद्धि परहै और जो बुद्धितैंभी परेस्थितहै सो ईहीं परआत्माहै ॥ ४२ ॥ इतिपदार्थः

॥ टीका ॥ हेअर्जुन स्थूल तथाजड तथापरिच्छिन्न तथाबाह्य ऐसेजेयहदेहादिकअर्थहैं ॥ तिनदेहादिकअर्थोकीअपे क्षाकरिकै श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय सूक्ष्महैं तथाप्रकाशकहैं तथाव्यापकहैं तथाअंतरस्थितहैं ॥ यातैं वेदवेत्तापुरुष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अथवा वेदकीश्रुतियां तिनदेहादिकअर्थोतैं तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं परकहेहैं अर्थात् उत्कृष्टकहेहैं ॥ इसप्रकार आगेभी जानिलेणा ॥ और संकल्पविकल्परूपमनहीं तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंका प्रवर्त्तकहै ॥ मनतैंविना तिनइंद्रियोंकोप्रवृत्ति होवैनहीं याकारणतैंहीं मनकीसावधानतातैंविना समीपवस्तुकाभी नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै ग्रहणहोतानहीं ॥ यातैं तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं सोसंकल्पविकल्परूपमन परहै ॥ और निश्चयरूपबुद्धिपूर्वकहीं सोमनकासंकल्परूपधर्म उत्पन्नहोवैहै ॥ तानिश्चयतैंविना सोसंकल्प होवैनहीं ॥ यातैं सासंकल्परूपमनतैं सानिश्चयरूपबुद्धि परहै ॥ और जो आत्मादेव ताबुद्धिकाप्रकाशकहोणेतैं ताबुद्धितैंभी परेस्थितहै ॥ और जिसदेहीरूपआत्माकूं इंद्रियादिकआश्रयोंकरिकैयुक्तहूआ यहकाम ज्ञानकेआवरणद्वारा मोहकीप्राप्तिकरेहै ॥ सोबुद्धिकाद्रष्टासाक्षीआत्माहीं तापरशब्दकाअर्थ है ॥ ईहां (बुद्धेःपरतस्तुसः) यावचनविषेस्थितजो सः यहपदहै ॥ ता सःपदकरिकै यद्यपि व्यवधानतैंरहितवस्तुकाहीं परामर्शहोवैहै ॥ व्यवधानयुक्तवस्तुका परामर्शहोवैनहीं ॥ तथापि जैसे श्रुतिविषे (आत्मैवेदमग्रआसीत्) यावचनकरिकै आत्माका प्रतिपादनकरिकै तिसतैं अनंतर अनेकपदार्थोंकाप्रतिपादनकरिकै तिसतैंअनंतर (सएषइहप्रविष्टः) याप्रकारकावचन कथनकऱ्याहै ॥ यावचनविषेस्थितजो सः यहपदहै ॥ ता सःपदकरिकै पूर्व (आत्मैवेदमग्रआसीत्) यावचनविषेकथनकऱ्येहूए व्यवहितआत्माकाभी परामर्शकऱ्याहै ॥ तैसै ईहांभी चालीसवेंश्लोकविषे (देहिनं) यापदकरिकैकथनकऱ्याजोआत्माहै ॥ ताव्यवहितआत्माका ता सःपदकरिकै परामर्श संभवहोइसकेहै इति ॥ तहां श्रुति ॥ (इंद्रियेभ्यःपराह्यर्थाअर्थेभ्यश्चपरंमनः ॥ मनसस्तुपराबुद्धिर्बुद्धेरात्मामहान्परः ॥ महतःपरमव्यक्तमव्यक्तात्प

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रुषःपरः ॥ पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः ॥) अर्थयह ॥ श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं शब्दादिकअर्थ परहैं ॥ और तिनअर्थोंतैं मनपरहै ॥ और तामनतैं व्यष्टिबुद्धि परहै ॥ और ताव्यष्टिबुद्धितैं हिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धि परहैं ॥ और तासमष्टिबुद्धितैं मायारूपअव्याकृत परहै ॥ और तामायारूपअव्याकृततैं सर्वजडपदार्थोंकाप्रकाशकरणेहारा पूर्णआत्मा परहै ॥ शंका ॥ ऐसेपरिपूर्णआत्मातैंभी कोई परहोवैंगा ॥ ऐसीशंकाकेहूए साक्षात्श्रुतिभगवती उत्तरकहेहै ॥ (पुरुषान्नपरंकिंचित्इति) तापरमात्मादेवतैंपरे कोईभीवस्तुनहींहैं ॥ जिसकारणतैं सोपरमात्मादेवहींकाष्ठारूपहै ॥ अर्थात् सर्वकाअधिष्ठानहोणेतैं समाप्तिरूपहै ॥ तथा (सोऽध्वनःपरमाप्नोतितद्विष्णोःपरमंपदं) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकैसिद्धजा परागतिहै ॥ तापरागतिरूपभी सोपरमात्मादेवहींहै इति ॥ यहसर्वअर्थ (योबुद्धेःपरतस्तुसः) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं कथनकऱ्याहै ॥ ईहां श्रुतिका तथाभगवत्वचनका आत्माकेपरत्वविषेहीं तात्पर्यहैं ॥ कोई इंद्रियादिकोंकेपरत्वविषे तात्पर्यनहींहैं ॥ और श्रुतिविषे (इंद्रियेभ्यःपराह्यर्थाः) यहजोवचन स्थितहै ॥ तावचनकेस्थानविषे श्रीभगवान्नैं अर्थेभ्यःपराणींद्रियाणि यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ तहां जैसे शब्दादिकअर्थोंविषे इंद्रियोंतैं परत्वसंभवैहै ॥ तैसे पूर्वउक्तहेतुवोंतैं तिनइंद्रियोंविषेभी देहादिकअर्थोंतैं परत्वसंभवेहै ॥ यातैं ताश्रुतिवचनकेसाथि भगवान्केवचनका विरोधहोवैनहीं ॥ इनदोनोंश्रुतियोंकाअर्थ आत्मपुराणकेनवमेअध्यायविषे हम विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं इति ॥ ४२ ॥ ❋ ॥ अब पूर्ववचनोंकेकहणेकरिकै सिद्धभयाजोअर्थहै ताफलितार्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एवंबुद्धेःपरंबुद्ध्वासंस्तभ्यात्मानमात्मना ॥ जहिशत्रुंमहाबाहोकामरूपंदुरासदं ॥ ४३ ॥

378

इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेकर्मयोगोनामतृतीयोऽध्यायःसमाप्तः॥ ३॥

ऐवं । बुद्धेः । परं । बुद्ध्वा । संस्तभ्य । आत्मानं । आत्मना । जहि । शत्रुं । महाबाहो । कामरूपं । दुरासदं ॥ इतिपदच्छेदः॥

हेमहान्बाहुबालाअर्जुन इसप्रकार आत्मादेवकूं बुद्धितैं पर जानिकरिकै तथा मनकूं निश्चयरूपबुद्धिकरिकै स्थिरकरिकै इसतृष्णारूप तथा दुःखकरिकैवशहोणेहारे कामरूपशत्रुकूं तूं नाशकर ॥ ४३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन (रसोप्यस्यपरंदृष्ट्वानिवर्त्तते) इसश्लोकविषे जोआत्मादेव परशब्दकरिकैकथनकर्याहै ॥ तिसपरिपूर्णआत्मादेवकूं बुद्धितैंपर साक्षात्कारकरिकै तथा यहसाक्षीआत्मा बुद्धितैंभीपरहै याप्रकारको निश्चयरूपबुद्धिकरिकै मनकूं स्थिरकरिकै तूं सर्वपुरुषार्थकेनाशकरणेहारे इसकामरूपशत्रुकूं नाशकर ॥ कैसाहैयहकामरूपशत्रु इच्छातृष्णाहैस्वरूपजिसका ॥ तथा ता परआत्माकेसाक्षात्कारतैंविना बहुतदुःखकरिकैभी नाशकरणेकूंअशक्यहै ॥ ऐसेकामकेनाशहूएतैंअनंतर सर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ ताकामकेनाशतैंविना जन्ममरणादिकअनर्थोंकीनिवृत्तिहोवै नहीं ॥ ईहां (दुरासदं) यहजोकामका विशेषणकथनकर्याहै ॥ सो इसकामकेनाशकरणेवासतै इसअधिकारीपुरुषनैं अत्यंतअधिकप्रयत्नकरणा याअर्थकेबोधनकरणेवासतै कथनकर्याहै ॥ और (हेमहाबाहो) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकर्या ॥ महान्प्राक्रमवाले तैंअर्जुनकूं इसकामरूपशत्रुकानाशकरणा अत्यंतसुगमहैइति॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यअध्यायकेसर्वअर्थका संक्षेपतैंकथनकरणेहारा यहश्लोकहै ॥ उपायःकर्मनिष्ठात्रप्राधान्येनोपसंहृता ॥ उपे
क्षितातुतद्गुणत्वेनकीर्त्तिता ॥ अर्थयह ॥ ज्ञाननिष्ठाकाउपायरूप जोनिष्कामकर्मनिष्ठाहै ॥ साकर्मनिष्ठा इस
ध्यायविषे प्रधानरूपकरिकैकथनकरीहै ॥ और फलरूपज्ञाननिष्ठातौं ताका गौणरूपकरिकै कथनकरीहै इ
॥ ※ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमत्स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंद
विरचितायां प्राकृतटीकायां श्रीभगवद्गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां तृतीयोऽध्यायः समाप्तः ॥ ३ ॥ ॥ ७ ॥

379

॥ इति तृतीयोऽध्यायः समाप्तः ॥ ३ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायां तृतीयोध्यायः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥अथ श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायांचतुर्थोऽध्यायः॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ चतुर्थोऽध्या यप्रारंभः ॥ तहां पूर्वअध्यायविषे यद्यपि उपायकरिकैप्राप्तहोणेकूंयोग्य जोउपेयरूपज्ञानयोगहै तथाताज्ञानयोग काउपायरूप जोकर्मयोगहै तिनदोनोंयोगोंकूं यथाक्रमतैं उपेयरूपकरिकै तथाउपायरूपकरिकै श्रीभगवान् कथनकरताभयाहै ॥ तथापि (एकंसांख्यंचयोगंचयःपश्यतिसपश्यति) इसवक्ष्यमाणवचनकीरीतिसैं साध्यरूपज्ञा नयोग तथा ताकासाधनरूपकर्मयोग यादोनोंयोगोंकेफलकीएकतातैं एकताकथनकरिकै ता साधनरूपकर्मयोगकी तथा साध्यरूपज्ञानयोगको अनेकप्रकारकेगुणोंकेआधानअर्थ श्रीभगवान् विद्यावंशकेकथनकरिकै स्तुतिकरेहै ॥

॥ श्रीभगवानुवाच ॥ इमंविवस्वतेयोगंप्रोक्तवानहमव्य यं ॥ विवस्वान्मनवेप्राहमनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥ १ ॥

इमं विवस्वते। योगं। प्रोक्तवान्। अहं। अव्ययं। विवस्वान्। मनवे। प्राह। मनुः। इक्ष्वाकवे। अब्रवीत्॥ इतिप०॥ हेअर्जुन मैंकृष्णभगवान् इस नाशतैंरहित ज्ञानयोगकूं प्रथम सूर्यकेतांई कहताभया और सोसूर्य आपणे मनुपुत्रकेतांई कहताभया और सोमनु आपणे इक्ष्वाकुपुत्रकेतांई कथनकरताभया ॥ १ ॥ इतिपदा० ॥

॥ टीका॥ हेअर्जुन द्वितीय तृतीय यादोनोंअध्यायोंकरिकै कथनकऱ्याजो ज्ञाननिष्ठारूप ज्ञानयोगहै ॥ जोज्ञानयोग कर्मनिरूपकर्मयोगरूपउपायकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ ऐसे ज्ञाननिष्ठारूपज्ञानयोगकूं मैंसर्वजगतकापालक वासुदेव सृष्टिकेआदिकालविषे सूर्यकेप्रति कथनकरताभया ॥ जोसूर्य सर्वक्षत्रियवंशका बीजरूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ताज्ञानयो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गकीप्राप्तिद्वारा तिनराजावोंविषे बलकाआधानकरिकै तिनराजावोंकेअधीन सर्वजगतकापालनकरणेवासतै मैंकृ
ष्णभगवान् तिनराजावोंकेप्रति ताज्ञानयोगका कथनकरताभयाइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसज्ञानयोगकरिकै ति
नराजावोंविषे किसप्रकार बलकाआधानहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् तो ज्ञानयोगविषे विशे
षणकरिकै ताबलकेआधानकीकारणताकूं निरूपणकरेहै (अव्ययंइति) हेअर्जुन नाशतैंरहितजोवेदभगवान्है ॥ सो
वेदभगवान्हीं इसज्ञानयोगका मूलरूपहै ॥ याकारणतैं यहज्ञानयोग अव्यय यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ अथवा
ताज्ञानयोगकाफलरूपजोमोक्षहै ॥ सोमोक्ष नाशतैंरहितहै ॥ याकारणतभी यहज्ञानयोग अव्यय यानामकरिकैक
ह्याजावैहै ॥ इसप्रकार वेदरूपमूलकरिकै तथामोक्षरूपफलकरिकै नाशतैंरहित जोज्ञानयोगहै ॥ ताज्ञानयोगविषे
तिनराजावोंकेबलकीआधानकता संभवैहै इति ॥ हेअर्जुन सोहमाराशिष्य सूर्य आपणे वैवस्वतमनुनामापुत्रकेतांई
सोज्ञानयोग कथनकरताभया ॥ और सोवैवस्वतमनु आपणे इक्ष्वाकुनामापुत्रकेतांई सोज्ञानयोग कथनकरताभया
॥ जोइक्ष्वाकु सर्वराजावोंतैं आदिराजाहै ॥ यद्यपि यहश्रीभगवान्काउपदेश मन्वंतरमन्वंतरविषे स्वायंभुवमनुआ
दिकसर्वमनुवोंकेप्रति साधारणहींहै ॥ तथापि इदानींकालविषेविद्यमानजो वैवस्वतमन्वंतरहै ॥ तावैवस्वतमन्वंतर
केअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान्नैं सूर्यतैंलैके विद्याकासंप्रदाय गणनकरयाहै इति ॥ १ ॥ * ॥ किंच

एवंपरंपराप्राप्तमिमंराजर्षयोऽविदुः ॥ सकालेनेहमहतायोगोनष्टःपरंतप ॥ २ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

एवं। परंपराप्राप्तं। इमं। राजर्षयः। अविदुः। सः। कालेन। इह। महता। योगः। नष्टः। परंतप ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन इसप्रकार परंपराकरिकैप्राप्त इसज्ञानयोगकूं राजऋषि जानतेभयेहैं सो ज्ञानयोग इदानींकालविषे दीर्घ कालकरिकै नष्टहोइरह्याहै ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसप्रकार सूर्यतैंआदिलैके गुरुशिष्योंकोपरंपराकरिकै प्राप्तभयाजो यहज्ञानयोगहै ॥ ताज्ञानयोगकूं निमि जनक अजातशत्रु कैकेय इत्यादिकराजऋषि सूक्ष्मअर्थकेजानणेहारे आपणे आपणे आचार्य पिता आदिकोंतैं जानतेभयेहैं ॥ राजेहोवैं तेईहींऋषिहोवैं तिनोंकानाम राजऋषिहै अर्थात् क्षत्रियराजावोंकानाम राजऋषिहै ॥ अथवा (राजर्षयः) यापदकरिकै राजावोंका तथाऋषियोंका भिन्नभिन्न ग्रहणकरणा ॥ तहां राजाशब्दकरिकैतौं निमि जनक अजातशत्रु कैकेय इत्यादिकराजावोंकाग्रहणकरणा ॥ और ऋषिशब्दकरिकै सनक वसिष्ठ इत्यादिकऋषियोंकाग्रहणकरणा याप्रकारकाअर्थ किसीटीकाविषे कथनकरयाहै ॥ और किसीटीकाविषेतौं (राजर्षयः) यापदकरिकै पूर्वउक्तरीतिसैं क्षत्रियराजावोंकाहींग्रहणकरयाहै ॥ परंतु तापदकूं सनक वसिष्ठ इत्यादिकब्राह्मणऋषियोंकाभी उपलक्षक अंगीकारकऱ्याहैइति ॥ यातैं यहज्ञानयोग अनादिवेदमूलकहोणेतैं तथा नाशतैंरहितमोक्षरूपफलकाजनकहोणेतैं तथाअनादिगुरुशिष्योंकीपरंपराकरिकैप्राप्तहोणेतैं कृत्रिमशंकाका विषयहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ यहज्ञानयोग पूर्वनहींथा किंतु इदानींकालविषेहींहूआहै याप्रकारकी कृत्रिमशंका ताज्ञानयोगविषे संभवतीनहींइति ॥ ऐसामहान्प्रभाववाला यहज्ञानयोगहै ॥ इसप्रकार ताज्ञानयोगविषे मुमुक्षुजनोंकी अत्यंतश्रद्धाकरावणेवासतै श्री

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भगवान्नैं ताज्ञानयोगकोस्तुति कथनकरीहैइति ॥ हेअर्जुन सोऐसा महान्प्रयोजनवालाभी ज्ञानयोग धर्मकीन्यून ताकरणेहारेदीर्घकालकरिकै इसद्वापरकेअंतमैं तुमारेहमारेव्यवहारकालविषे दुर्बलअजितइंद्रियअनधिकारीपुरुषों कूंप्राप्तहोइकै कामक्रोधादिकविकारोंकरिकैअभिभवकूंप्राप्तहूआ विच्छिन्नसंप्रदायवाला होताभयाहै॥ और ताज्ञान योगतैंविना अधिकारीजनोंकूं मोक्षरूपपरमपुरुषार्थकीप्राप्ति होवैनहीं ॥ यातैं इनलोकोंकेअत्यंतदुर्भाग्यहैं ॥ ईहां (हेपरंतप) यासंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ परंशत्रुंतापयतीतिपरंतपः ॥ अर्थयह ॥ का मक्रोधादिकशत्रुवोंकानाम परंहै ॥ तिनकामक्रोधादिकशत्रुवोंकूं जोपुरुष आपणे शौर्यताकरिकै अथवा बलवान्विवे ककरिकै अथवा तपकरिकै सूर्यकीन्यांई तपायमानकरेहै॥ तापुरुषकानाम परंतपहै ॥ अर्थात् जितइंद्रियपुरुषका नाम परंतपहै ॥ ऐसातुमारा जितइंद्रियपणा स्वर्गकीउर्वशीआदिकअपसरावोंकीउपेक्षाकरणेतैं शास्त्रविषेप्रसिद्धहीं है ॥ ऐसाजितइंद्रियहोणेतैं तूंअर्जुन इसज्ञानयोगविषेअधिकारीहैं इति ॥ २ ॥* ॥ किंच

सएवायंमयातेद्ययोगःप्रोक्तःपुरातनः॥ भक्तोसिमेसखाचेतिरहस्यंह्येतदुत्तमं ॥३॥

सः१ एव२ अयं३ मया४ ते५ । अद्य६ योगः७ प्रोक्तः८ पुरातनः९ भक्तः१० असि११ मे१२ । सखा१३ च१४ इति१५ रहस्यं१६ हि१७ एतत्१८ उत्तमं१९ ॥ इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन सोई१ हीं यह२ अनादि ज्ञानयोग इसकालविषे मैंकृष्णभगवान्नैं तुमारेतांई कथनकऱ्याहै जिसका रणतैं तूं अर्जुन हमारा भक्त हैं तथा सखाहैं जिसकारणतैं यहज्ञानयोग उत्तमहै तथा अत्यंतगोप्यहै ॥ इतिप० ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोज्ञानयोग पूर्वहमनैं सूर्यादिकशिष्योंके प्रति उपदेशकरयाहूआभी इदानींकालविष अधिकारी पुरुषोंकेअभावतैं विच्छिन्नसंप्रदायवाला होताभयाहै ॥ तथा जिसज्ञानयोगनैंविना इनपुरुषोंकूं मोक्षरूपपरमपुरुषार्थकीप्राप्ति होतीनहीं ॥ सोईहीं गुरुशिष्योंकीपरंपराकरिकैअनादि ज्ञानयोग इससंप्रदायकेविच्छेदकालविषे अतिस्नेहयुक्तमैंकृष्णभगवान्नैं तैंअर्जुनकेतांई विस्तारतैं कथनकरयाहै ॥ दूसरे जिसीकिसीपुरुषकेतांई हमनैं यहज्ञानयोग उपदेशकरयानहीं ॥ जिसकारणतैं तूंअर्जुन हमाराभक्तहै ॥ अर्थात् मेरेशरणागतकूंप्राप्तहूआ तूं मेरेविषेअत्यंतप्रीतिमानहैं ॥ तथा तूंअर्जुन हमारासखाहै ॥ अर्थात् हमारेसमानअवस्थावालाहैं तथाहमारेविषेस्नेहवालाहैं तथाहमारी सहायताकरणेहाराहैं ॥ इसकारणतैं यहज्ञानयोग हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहज्ञानयोग हमारेतैंभिन्न दूसरेपुरुषोंकेप्रति आपनैं किसवासतै नहींकथनकरयाहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (रहस्यंह्येतदुत्तमंइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं यहज्ञानयोग अत्यंतउत्तमहै ॥ तथा अत्यंतगोप्यराखणेयोग्यहै ॥ तिसकारणतैं हमनैं यहज्ञानयोग अन्यकिसीपुरुषकेप्रति कथनकरयानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (विद्याहवैब्राह्मणमाजगाम गोपायमाशेवधिष्टेहमस्मि ॥ असूयकायानृजवेयताय नमाब्रूयावीर्यवतीतथास्यां ॥) अर्थयह ॥ एककालविषे ब्रह्मविद्या ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंकेसमीपजातीभई ॥ तहांजाइकै तिनब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहतीभई ॥ हेब्राह्मणो तुंम हमारेकूं अत्यंतगोप्यराखो ॥ ताकरिकै मैं तुमारेप्रति भोगमोक्षदोनोंकीप्राप्तिकरौंगी ॥ और जोकदाचित् कृपाकेवशहूए तुंम हमारेकूं गोप्यनहींराखिसको ॥ तौंभी विवेकवैराग्यादिकसाधनसंपन्नअधिकारीयोंकेप्रति हमाराउपदे

386

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शकरो ॥ और जोपुरुष असूयावालाहै तथाऋजुभावतैंरहितहै ॥ तथा मनसहितइंद्रियोंकेनिग्रहतैंरहितहै ॥ ऐसे अ
नधिकारीपुरुषकेप्रति हमाराउपदेश तुमोनैं कदाचित्भी नहींकरणा ॥ किंतु अधिकारीपुरुषोंकेप्रतिहीं उपदेशकर
णा ॥ जिसकरिकै मैंब्रह्मविद्या फलकाहेतुहोवौंइति ॥ इसश्रुतिका विस्तारतैंअर्थतौं आत्मपुराणकेद्वितीयअध्याय
विषे हम कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं ईहां संक्षेपतैंकह्याहैइति ॥ ३ ॥ ※ ॥ तहां शास्त्रविचारतैंरहित मूर्खलोकों
कूं वसुदेवकेपुत्ररूपश्रीकृष्णभगवान्विषे मनुष्यत्वरूपहेतुकरिकै जो असर्वज्ञपणेकी तथाअनित्यपणेकी शंकाहोवै
है ॥ ताशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै ताशंकाका अनुवादकरताहूआ अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरेहै ॥

अर्जुनउवाच ॥ अपरंभवतोजन्मपरंजन्माविवस्वतः ॥
कथमेतद्विजानीयांत्वमादौप्रोक्तवानिति ॥ ४ ॥

अपरं । भवतः । जन्म । परं । जन्म । विवस्वतः । कथं । एतत् । विजानीयां । त्वं । आदौ । प्रोक्तवान् । इति ॥ इतिप० ॥
हेभगवन् आपका जन्मतौं अबीहूआहै और सूर्यका जन्मतौं पूर्वहूआहै यातैं तूंकृष्णभगवान् सृष्टिकेआदिका
लविषे सूर्यकेप्रति यहज्ञानयोग कहंताभयाहै यहं वार्तामैं अर्जुन किसप्रकार निश्चयकरौं ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ हेभगवन् आपकृष्णभगवानका शरीरकाग्रहणरूपजन्मतौं इसद्वापरकेअंतकालविषे वसुदेवकेगृहविषे
हूआहै ॥ सोजन्मभी मनुष्यत्वजातिवालाहोणेतैं निकृष्टहै ॥ और सूर्यकाजन्मतौं सृष्टिकेआदिकालविषे हूआहै ॥
और सोसूर्यकाजन्म देवत्वजातिवालाहोणेतैं उत्कृष्टहै ॥ ईहां (नजायतेम्रियतेवाकदाचित्) इत्यादिवचनोंकरिकै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पूर्व आत्माकेजन्मकाअभाव विस्तारतैं कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं आत्माकेजन्मविषेतौं अर्जुनकाप्रश्न संभवतानहीं ॥ किंतु स्थूलदेहकेजन्मकेअभिप्रायकरिकैहीं अर्जुनका यहप्रश्नहैइति ॥ यातैं हेभगवन् अबीइसकालविषेउत्पन्नहूआ तथा सर्वज्ञ मनुष्यतूं पूर्वसृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नहूए सर्वज्ञसूर्यकेतांई यहज्ञानयोग कथनकरताभयाहैं ॥ इ सअर्थकूं मैंअर्जुन अविरुद्धरूपकरिकै किसप्रकार निश्चयकरौं ॥ किंतु यहआपकेवचनकाअर्थ हमारेकूं अत्यंतविरु द्धप्रतीतहोताहै ॥ ईहांअर्जुनका यहअभिप्रायहै ॥ सूर्यकेप्रति जोआपनैं इसज्ञानयोगकाउपदेशकऱ्याथा ॥ सोइसव र्त्तमानदेहतैंभिन्न किसीदूसरेदेहकरिकै उपदेशकऱ्याथा ॥ अथवा इसवर्त्तमानदेहकरिकैहीं उपदेशकऱ्याथा ॥ तहां प्रथ मपक्ष जोआप अंगीकारकरौ ॥ सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं पूर्वजन्मविषे अनुभवकऱ्याजोअर्थहै ॥ ताअर्थका उत्तरदूस रेजन्मविषे असर्वज्ञपुरुषकूं स्मरणहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् पूर्वजन्मविषेअनुभवकऱ्येहूएअर्थका दूसरेजन्माविषेभी अ सर्वज्ञपुरुषकूं स्मरणहोताहोवै ॥ तौं मैंअर्जुनकूंभी पूर्वजन्मविषेअनुभवकऱ्येहूएअर्थका इसजन्मविषे स्मरणहोणाचाही ये ॥ सोस्मरण हमारेकूंहोतानहीं ॥ और तुमारेविषे तथाहमारेविषे मनुष्यरूपताकरिकै असर्वज्ञपणा तुल्यहींहै ॥ यातैं ह मारेन्यांईंतुमारेकूंभी जन्मांतरविषेअनुभवकऱ्येहूएपदार्थका इसजन्मविषे स्मरणनहींहोवैंगाइति ॥ और इसवर्त्तमानदेह करिकैहीं पूर्व सूर्यकेप्रति हमनैं यहज्ञानयोग उपदेशकऱ्याहै ॥ यहदूसरापक्ष जोआप अंगीकारकरो ॥ सोभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं इसवर्त्तमानकालविषे वसुदेवपितातैं उत्पन्नभयाजो यहतुमारादेहहै ॥ सोयहदेह पूर्वसृष्टिकेआदिकालविषेविद्यमा नथानहीं ॥ यातैं इसवर्त्तमानदेहकरिकैभी आपका सूर्यकेप्रतिउपदेश संभवैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ इसदेहतैं

388

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भिन्न दूसरेकिसीदेहकरिकै तासृष्टिकेआदिकालविषे आपकीस्थितिकेसंभवहूएभी तादेहकरिकैअनुभवकऱ्येहूएअर्थका इसवर्त्तमानदेहविषे स्मरणनहींसंभवैंगा ॥ और इसवर्त्तमानदेहकरिकै तास्मरणकीसिद्धिहूएभी सृष्टिकेआदिकाल विषेइसवर्त्तमानदेहकीस्थिति संभवतीनहीं ॥ इसप्रकार असर्वज्ञत्व अनित्यत्व यादोनोंहेतुवोंकरिकै अर्जुनके दोपूर्वपक्ष सद्धहोवैहैं इति ॥ ४ ॥ ※ ॥ तहां श्रीभगवान् आपणेविषेसर्वज्ञपणाकथनकरिकै प्रथमपूर्वपक्षके परिहारकूं कथनकरेहै ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ बहूनिमेव्यतीतानि जन्मानितव
चार्जुन ॥ तान्यहंवेदसर्वाणिनत्वंवेत्थपरंतप ॥ ५ ॥

बहूनि । मे । व्यतीतानि । जन्मानि । तव । च । अर्जुन । तानि । अहं । वेद । सर्वाणि । न । त्वं । वेत्थ । परंतप ॥ इतिप०

हेअर्जुन हमारे तथा तुमारे बहुत जन्म वितीतहोतेभयेहैं तिन सर्वजन्मोकूं मैंकृष्णभगवान् जानताहूं हेपरंतप तूं तिनजन्मोंकूं नहीं जानताहैं ॥ ५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे यहलोक सर्वदाविद्यमानसूर्यकाभी उदयमानेहैं ॥ तैसे वास्तवतैंजन्मतैंरहितहूएभी मैंकृष्णभगवान्के लोकदृष्टिकेअभिप्रायकरिकै लीलामात्रतैंदेहकाग्रहणरूप अनेकजन्म पूर्व वितीतहोतेभयेहैं ॥ और आत्मज्ञानतैंरहितजोतूंअर्जुनहैं ॥ तिसतुमारेभी पुण्यपापकर्मोकेवशतैं देहकाग्रहणरूपअनेकजन्म पूर्व होतेभयेहैं ॥ ईहां (तव) यहएकअर्जुनकावाचकपद दूसरेजीवोंकाभी उपलक्षकहै ॥ अथवा (तव) यहपद एकजीववादकेअ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भिप्रायकरिकै कथनकऱ्योहैइति ॥ हेअर्जुन तिनआपणेसर्वजन्मोकूं तथातुमारेसर्वजन्मोकूं तथाअन्यजीवोंके सर्वज
न्मोकूं मैंसर्वज्ञसर्वशक्तिसंपन्नईश्वरहीं जानताहूं ॥ तूंआवृत्तज्ञानशक्तिवालाअज्ञानीअर्जुन तिनसर्वजन्मोकूं जानता
नहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ तूंअर्जुन अज्ञानदोषकेवशतैं जबी पूर्ववितीतहूए आपणेजन्मोंकूंभी नहींजानताहैं ॥ तबी पूर्व
वितीतहूए हमारेजन्मोकूं तथाअन्यजीवोंकेजन्मोंकूं तूं कैसेजानिसकैंगा ॥ किंतु नहींजानिसकैंगाइति ॥ ईहां (हेअ
र्जुन) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ शास्त्रविषे किसीवृक्षविशेषकूंभी अर्जुन यानामकरिकै
कथनकरेहैं ॥ ताअर्जुननामावृक्षकी ज्ञानशक्ति जैसे आवृत्तरहेहै ॥ तैसे तैअर्जुनकीभी साज्ञानशक्ति आवृत्तहोइरहीहै
॥ यातैं तिन आपणेजन्मोंकूं तथाहमारेजन्मोकूं तूं जानिसकतानहींइति ॥ और (हेपरंतप) यासंबोधनकेकहणेकरि
कै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ परंनामशत्रुकाहै ॥ ताशत्रुकूं भेदबुद्धितैंकल्पनाकरिकै ताशत्रुकेहननकरणेवि
षे तूं प्रवृत्तहूआहैं ॥ जैसे कोईमूढबालक आपणेशरीरकूंहीं पिशाचकल्पनाकरिकै ताकेहननकरणेविषेप्रवृत्तहोवैहै
॥ यातैं विपरीतदर्शीहोणेतैं तूंअर्जुन भ्रांतहैंइति ॥ ईहां (हेअर्जुन हेपरंतप) यादोनोंसंबोधनोंकरिकै श्रीभगवान्नैं
आवरण विक्षेप यादोनोंविषे अज्ञानकीधर्मरूपताकथनकरी इति ॥ ५ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोकदाचि
त् पूर्ववितीतहूए आपणेअनेकजन्मोंकूं आप स्मरणकरतेहो ॥ तौं आपभी जातिस्मरनामा कोईजीवविशेष होवौंगे
काहेतैं जातिस्मरयोगीपुरुषोंकूं सर्वात्मअभिमानकरिकै दूसरेजन्मोंकाज्ञानभी संभवहोइसकताहै ॥ जैसे वामदेव
कूं सर्वात्मअभिमानकरिकै पूर्वअनेकजन्मोका स्मरणहोताभयाहै ॥ तहां सोवामदेव माताकेउदरविषेस्थितहोइकै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

याप्रकारकावचन कहताभयाहै ॥ हेअधिकारीजनो मैंवामदेव जीवहूआभी पूर्व मनुहोताभयाहूं तथासूर्यहोताभया
हूं तथाकक्षीवान्ऋषि होताभयाहूंइति ॥ इसप्रकार सोवामदेवनामजीव सर्वात्मअभिमानकरिकै पूर्वलेअनेकज
न्मोंकूं स्मरणकरताभयाहै ॥ तिनजन्मोंकेस्मरणकरिकै जैसे वामदेवविषे मुख्यसर्वज्ञपणा सिद्धहोतानहीं ॥ तैसे पूर्वज
न्मोंकेस्मरणकरिकै आपविषेभी मुख्यसर्वज्ञपणा सिद्धनहींहोवैंगा ॥ यातैं ईश्वरभावतैंरहितहूआ तूंकृष्णभगवान्
पूर्व सर्वज्ञसूर्यकेप्रति सोज्ञानयोग किसप्रकार उपदेशकरताभयाहैं ॥ किंतु सर्वज्ञसूर्यकेप्रति आपकाउपदेश संभव
तानहीं ॥ हेभगवन् जीवविषे मुख्यसर्वज्ञपणा संभवतानहीं ॥ काहेतैं व्यष्टिउपाधिवालेकानाम जीवहै ॥ सोव्यष्टि
उपाधिवालाजीव परिच्छिन्नहींहोवैहै ॥ यातैं तापरिच्छिन्नजीवका भूतभविष्यत्वर्त्तमानसर्वपदार्थोंकेसाथि संबंधहीं न
हींसंभवताहै ॥ और तिनसर्वपदार्थोंकेसाथि संबंधतैंविना तिनसर्वपदार्थोंकाज्ञान संभवतानहीं ॥ हेभगवन् व्यष्टि
उपाधिवालेजीवकीक्यावार्त्ताहै ॥ परंतु समष्टिउपाधिवालाजोविराट्है तथासमष्टिउपाधिवालाजोहिरण्यगर्भहैं ॥
तिनदोनोंकूंभी सर्वपदार्थोंकाज्ञान संभवतानहीं ॥ काहेतैं समष्टिस्थूलभूतरूपउपाधीवालाजोविराट्है ॥ तिसविरा
ट्कूं यद्यपि स्थूलभूतोंकेकार्यविषयकज्ञान संभवैहै ॥ तथापि ताविराट्कूं सूक्षमभूतोंकेपरिणामविषयकज्ञान तथामा
याकेपरिणामविषयकज्ञान संभवतानहीं ॥ इसप्रकार समष्टिसूक्षमभूतरूपउपाधिवालाजोहिरण्यगर्भहै ॥ ताहिरण्यगर्भकूं
यद्यपि स्थूलभूतोंकेपरिणामविषयकज्ञान तथासूक्षमभूतोंकेपरिणामविषयकज्ञान संभवहोइसकेहै ॥ तथापि ता
हिरण्यगर्भकूं तिनसूक्षमभूतोंकाकारणरूपमायाकेपरिणामरूप आकाशादिकसृष्टिक्रमादिकविषयकज्ञान संभवतान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हीं ॥ यातैं विराट्विषे तथाहिरण्यगर्भविषेभीमुख्यसर्वज्ञतासंभवैनहीं॥तौं व्यष्टिउपाधिवालेजीवोंविषे सामुख्यसर्वज्ञता कैसेसंभवैंगी ॥ किंतु नहींसंभवैंगी यातैं मायारूपकारणउपाधिवालाहोणेतैं भूतभविष्यत्वर्त्तमानसर्वपदार्थविषयक ज्ञानवालाजोईश्वरहै ॥ सोमायाउपहितईश्वरहींमुख्यसर्वज्ञहै ॥ ऐसे जन्ममरणतैंरहित नित्य सर्वज्ञईश्वरविषे पुण्यपापकर्महैंनहीं ॥ यातैं ताईश्वरका प्रथमतौं जन्महोणाहीं संभवतानहीं तौं पूर्ववितीतहूए अनेकजन्म ताई श्वरके कैसेसंभवैंगे ॥ किंतु नहींसंभवैंगे ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जोकदाचित् आप जीवहो ॥ तौं हमारेन्यांई आपविषे सर्वज्ञतानहींसंभवैंगी ॥ और जोकदाचित् आप ईश्वरहो ॥ तौं आपविषे देहकाग्रहणरूपजन्मनहींसंभवैंगाइति ॥ ऐसी अर्जुनकीदोनोंशंकावोंकूंनिवृत्तकरताहूआ श्रीभगवान् पूर्वकथनकरयेहूए अनित्यत्वपक्षकेभीपरिहारकूं कथनकरेहै ॥

अजोपिसन्नव्ययात्माभूतानामीश्वरोपिसन्।प्रकृतिंस्वामधिष्ठायसंभवाम्यात्ममायया

अजः । अपि । सन् । अव्ययात्मा । भूतानां । ईश्वरः । अपि । सन् । प्रकृतिं । स्वां । अधिष्ठाय । संभवामि । आत्ममायया ॥

हेअर्जुन मैंकृष्णभगवान् जन्मतैंरहित हूआ भी तथामरणतैंरहितहूआभी तथा सर्वभूतोंका ईश्वर हूआ भी आपणी मायाकूं आश्रयणकरिकै ताआपणीमायाकरिकै जन्मवालाहोताहूं ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ अपूर्वदेहइंद्रियादिकोंकाजोग्रहणहै ताकानाम जन्महै ॥ और पूर्वग्रहणकरयेहूए देहइंद्रियादिकोंका जोवि योगरूपमरणहै ताकानाम व्ययहै ॥ ताजन्ममरणदोनोंकूंहीं नैयायिक प्रेत्यभाव यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ तिन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जन्ममरणदोनोंकूं (जातस्यहिध्रुवोमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच) इसवचनकरिकै पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ तेजन्ममरणदोनों इसजीवकूं धर्मअधर्मकेवशतैं प्राप्तहोवैहैं ॥ और सोधर्मअधर्मकावशपणा देहाभिमानीअज्ञानीजीवकूं कर्मोंकेअधिकारीपणेकरिकैहीं होवैहै ॥ तहां सर्वकेकारणरूपसर्वज्ञईश्वरकूं इसप्रकारका देहकाग्रहणरूपजन्म नहींसंभवताहै यहजो पूर्वकथनकऱ्याथा सोयथार्थहींहै काहेतैं जोकदाचित् तिसईश्वरकाशरीर स्थूलभूतोंकाकार्यरूपहोवै ॥ तिनस्थूलभूतोंकाकार्यरूपहूआभी सोशरीर जोकदाचित् व्यष्टिरूपहोवैंगा ॥ तौं जाग्रतअवस्थाविषेस्थितअस्मदादिकविश्वनामाजीवोंकेतुल्यहीं सोईश्वरहोवैंगा ॥ और जोकदाचित् सोईश्वरकाशरीर समष्टिरूपहोवैंगा ॥ तौं ताईश्वरविषे विराट्नामाजीवरूपता प्राप्तहोवैंगी ॥ जिसकारणतैं समष्टिस्थूलउपाधिवाला विराट्हींहोवैहै ॥ और सोईश्वरकाशरीर जोकदाचित् सूक्षमभूतोंकाकार्यरूपहोवै ॥ तहां सूक्षमभूतोंकाकार्यरूपहूआभी सोईश्वरकाशरीर जोकदाचित् व्यष्टिरूपहोवैंगा ॥ तौं ताईश्वरविषे स्वप्नअवस्थाविषेस्थितहमतैजसनामाजीवोंकीतुल्यता प्राप्तहोवैंगी ॥ और सोईश्वरकाशरीर जोकदाचित् समष्टिरूपहोवैंगा ॥ तौं ताईश्वरविषे हिरण्यगर्भनामाजीवरूपता प्राप्तहोवैंगी ॥ जिसकारणतैं समष्टिसूक्षमउपाधिवाला हिरण्यगर्भहींहोवैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ आकाशादिकभूतोंकाकार्यरूप तथाकिसीभीजीवनैंनहींआश्रयणकऱ्याहूआ ऐसाभौतिकशरीर ताईश्वरकासंभवतानहीं इति ॥ और जेकोईयहकहै ॥ किसीजीवकरिकैयुक्त जोभौतिकशरीरहै ॥ ताभौतिकशरीरविषे भूतावेशकीन्यांई सोईश्वर प्रवेशकरेहै ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं जिसजीवकरिकैयुक्त जिसभौतिकशरीरविषे ताईश्वरनैं प्रवेशकऱ्याहै ॥ ति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सशरीरकरिकै तिसजीवकूं सुखदुःखकाभोग होताहै अथवा नहींहोताहै ॥ तहां प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरौ ॥ तौं अंतर्यामीरूपकरिकै ताईश्वरकाप्रवेश सर्वशरीरोंविषे विद्यमानहै ॥ यातैं ताईश्वरके शरीरविशेषकाअंगीकारकरणा व्यर्थहोवैंगा ॥ और दूसरापक्ष जोअंगीकारकरौ ॥ तौं सोशरीर ताजीवका नहींसंभवैंगा ॥ यातैं किसीप्रकारकरि कैभी ईश्वरका भौतिकशरीर संभवतानहीं ॥ इससर्वअर्थकूं श्रीभगवान् श्लोककेपूर्वार्द्धकरिकै अंगीकारकरेहै (अजो पिसन्नव्ययात्माभूतानामीश्वरोपिसन्इति) हेअर्जुन अपूर्वदेहकाग्रहणरूपजोजन्महै ताजन्मतैंभी मैंकृष्णभगवान् र हितहूं ॥ तथा पूर्वदेहकापरित्यागरूपजो व्ययहै तामरणरूपव्ययतैंभी मैंकृष्णभगवान् रहितहूं ॥ तथाब्रह्मातैंआदि लैकेस्तंबपर्यंत जितनैंकीभूतहैं तिनसर्वभूतोंका मैंकृष्णभगवान् ईश्वरहूं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं आपणे विषे धर्मअधर्मकावशपणा निवृत्तकऱ्या ॥ जिसकारणतैं जन्ममरणवालापराधीनजीवहीं ताधर्मअधर्मकेवशहोवैंहै ॥ स्व तंत्रईश्वर ताधर्मअधर्मकेवशहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसेजन्ममरणादिकविकारोंतैंरहित आपईश्वरकूं देहकाग्र हण किसप्रकारसंभवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् श्लोककेउत्तरार्द्धकरिकै समाधानकरेहै (प्रकृतिं स्वामधिष्ठायसंभवामिइति) हेअर्जुन यद्यपि वास्तवतैं मैंकृष्णभगवान् जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहूं ॥ तथा पि मैंपरमेश्वरकीउपाधिरूप तथाविचित्रअनेकशक्तियोवाली तथाअघटितघटनापटीयसीनामवाली तथासत्वरजत म यात्रिगुणरूप ऐसीजा मायारूपप्रकृतिहै ॥ ताप्रकृतिकूं आपणेचिदाभासद्वारा वशकरिकै तिसमायाकेपरिणामवि शेषोंकरिकैहीं देहवालेकीन्यांई तथाजन्मेहूएकीन्यांई प्रतीतहोताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ उत्पत्तितैंरहितहोणेतैं अनादिरूप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जामायाहै ॥ सा अनादिमायाहीं मैंपरमात्मादेवकी उपाधिहै ॥ सामाया व्यवहारकालपर्यंत स्थायीहोणेतैंनित्यहै ॥ तथा मैंपरमात्मादेवविषे सर्वजगतकेकारणपणेकासंपादकहै तथा मैंपरमात्मादेवकीइच्छाकरिकैहीं सामाया प्रवृत्तहोवैहै ॥ ऐसीमायाहीं विशुद्धसत्वरूपकरिकै मैंपरमात्मादेवकीमूर्तिहै ॥ तामायारूपमूर्तिविशिष्टमैंपरमात्मादेवविषे जन्मतैंरहितपणा तथामरणतैंरहितपणा तथासर्वभूतोंकाईश्वरपणा संभवहोइसकेहै ॥ यातैं ताशुद्धसत्त्वप्रधानमायारूपनित्यदेहकरिकैहीं मैंपरमात्मादेव सृष्टिकेआदिकालविषेतौं सूर्यकेप्रति तथाइदानींकालविषे तैंअर्जुनकेप्रति यहज्ञानयोग उपदेशकरताभयाहूं ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी पूर्वउक्तदोषोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (आकाशशरीरं ब्रह्म)॥ अर्थयह ॥ आकाशहैनामजिसका ऐसाजो मायारूपअव्याकृतहै ॥ ताअव्याकृतरूपशरीरवाला ब्रह्महैइति ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे ब्रह्मका मायाहींशरीर कथनकऱ्याहै ॥ तामायारूपशरीरकरिकै मैंपरमात्मादेवकी जगतकी उत्पत्तिकालविषे तथास्थितिकालविषे तथाप्रलयकालविषे सर्वदा स्थितिसंभवहोइसकेहै इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोकदाचित् आपका केवलमायाहीं शरीरहोवै ॥ भौतिकशरीर होवैनहीं ॥ तौं भौतिकशरीरकेधर्मजेमनुष्यत्वादि कहैं तेमनुष्यत्वादिकधर्म इसआपकेशरीरविषे किसवासतै प्रतीतहोतेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (आत्ममाययाइति) हेअर्जुन हमारेविषे जेमनुष्यत्वादिकधर्म प्रतीतहोवैहैं ॥ तेमनुष्यत्वादिकधर्म हमारेविषे कोईवास्तवतैंनहीं ॥ किंतु लोकोंऊपरिअनुग्रहकरणेवासतै हमारीमायाकरिकैहीं तेमनुष्यत्वादिकधर्म हमारेविषेप्रतीतहोवैहैंइति ॥ यहवार्त्ता मोक्षधर्मविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (मायाह्येषामयासृष्टायन्मांपश्यसिनारद ॥ स

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्वभूतगुणैर्युक्तंनतुमांद्रष्टुमर्हसि ॥)अर्थयह ॥हेनारद जिसशरीरविशिष्टमेरेकूं तूंइनचर्मचक्षुवोंकरिकैदेखताहैं ॥ सोयहशरीर हमनैं मायाकरिकैरच्याहै ॥ और कारणमायारूपशरीरवालाजोमैंहूं तिसहमारेकूं तूं इनचर्मचक्षुवोंकरिकै देखणेकूंसमर्थ नहींहैइति॥तहांअनेकशक्तियोंवाला तथामायानामवाला ऐसाजो नित्यकारणउपाधिहै ॥ सोमायारूपकारणउपाधिहीं परमेश्वरका देहहै ॥ यह भगवान्भाष्यकारोंकामत कथनकरया ॥ और दूसरेकेईशास्त्रवालेतौं परमेश्वरविषे देहदेहीभावकूं मानतेनहीं ॥ किंतु जो सत् चित् आनंदघन भगवान् वासुदेव परिपूर्ण निर्गुण परमात्माहै सोईहीं तापरमेश्वरका शरीरहै ॥ दूसराकोईभौतिकशरीर तथामायिकशरीर तापरमेश्वरकाहैनहींइति॥ तहांश्रुति(।सभगवःकस्मिन्प्रतिष्ठितःस्वेमहिम्नि।) अर्थयह ॥ हेभगवन् सोपरमात्मादेव किसविषेस्थितहै ऐसोशंकाकेहूए ॥ सोपरमात्मादेव आपणे सत्चित्आनंदरूपमहिमाविषेहीं स्थितहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे तिसपरमात्मादेवकी आपणेस्वरूपविषेहीं स्थितिकथनकरीहै किसीमायिकशरीरविषे तथाभौतिकशरीरविषेस्थितिकथनकरीनहींइति॥इसपक्षविषेतौं इसश्लोककी इसप्रकारतैं योजनाकरणी॥ (आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः॥अविनाशीवाअरेऽयमात्माऽनुच्छित्तिधर्मा।)अर्थयह॥ यहपरमात्मादेव आकाशकीन्यांईसर्वत्रव्यापकहै तथानित्यहै॥हेमैत्रेयी यहआत्मादेवस्वरूपतैंभी नाशतैंरहितहै ॥ तथा धर्मोंकेनाशप्रयुक्तनाशतैंभीरहितहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतिप्रमाणोंतैं मैंपरमात्मादेव वास्तवतैं जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहूआभी तथासर्वजगतकाप्रकाशहूआभी तथा सर्वजगत्काकारणरूपमायाकाअधिष्ठानहोणेतैं सर्वभूतोंकाईश्वरहूआभी (स्वांप्रकृतिं)क्या आपणास्वरूपभूत सत् चित्आनंदघन एकरस स्वभावरूपप्रकृतिकूं(अधिष्ठाय)क्याआश्रयणकरिकै अर्थात् ताआपणेस्वरूपविषेस्थि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तहोइकै (संभवामि) क्या देहदेहीभावतैंविनाहीं लोकप्रसिद्ध देहवालेजीवोंकीन्यांई यहपरमेश्वर देहवालाहै याप्रकारके व्यवहारकाविषयहोवूंहूंइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् मायिकदेहतैं तथाभौतिकदेहतैं रहित सत्चित्आनंदघनजोआपहो ॥ ऐसेआपविषे इसमनुष्यदेहत्वकीप्रतीति किसवासतै होतीहै ॥ एसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (आत्ममा यया इति) हेअर्जुन देहदेहीभावतैंरहित जोमैं नित्य शुद्ध सत् चित् आनंदघन भगवान् वासुदेवहूं ॥ ऐसेमैंपरमात्मादेवविषे जोदेहदेहीरूपकरिकैप्रतीतिहै ॥ सामायामात्रहींहै ॥ वास्तवतैं हमारेविषे सोदेहदेहीभावहैनहीं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्र विषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (कृष्णमेनमवेहित्वमात्मानमखिलात्मनाम्॥जगद्धितायसोप्यत्रदेहीवाभातिमायया ॥अ होभाग्यमहोभाग्यंनंदगोपव्रजौकसां ॥ यन्मित्रंपरमानंदंपूर्णब्रह्मसनातनं ॥) अर्थयह॥इसकृष्णभगवान्कूं तूं सर्वभूतप्रा णीयोंका आत्मारूपजान॥ऐसासर्वभूतप्राणीयोंकाआत्मारूपहूआभी जोकृष्णभगवान् इसलोकविषे भक्तजनोंकेउद्धारकर णेवासतै आपणीमायाकरिकै देहवालेजीवोंकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ किंवा व्रजभूमिविषेरहणेहारेजे नंदगोप गोपीयांहैं तिनसर्वोंकेअहोभाग्यहैं अहोभाग्यहैं॥ जिसव्रजवासीलोकोंके यहपरमानंदपरिपूर्णसनातनब्रह्म कृष्णरूपकरिकै मित्रभा वकूंप्राप्तहूआहैइति ॥ और कोईकपुरुषतौं तिसपरमात्मादेवकूं नित्य निरवयव निर्विकार परमानंदरूपमानिकरिकैभी तापरत्मादेवविषेअवयवअवयवीभाव वास्तवहींअंगीकारकरैहैं ॥ तिनपुरुषोंकाकहणा अत्यंत निर्युक्तिकहै इ ति॥ ६ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार सत्चित्आनंदघनरूपजोआपहो ॥ तिसआपका किसकालविषे तथा किसप्रयोजनवासतैं देहवालेजीवकीन्यांइ व्यवहारहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यदायदाहिधर्मस्यग्लानिर्भवतिभारत॥अभ्युत्थानमधर्मस्यतदात्मानंसृजाम्यहं ॥७॥

यदा। यदा। हि। धर्मस्य। ग्लानिः। भवति। भारत। अभ्युत्थानं। अधर्मस्य। तदा। आत्मानं। सृजामि। अहं।

हेअर्जुन जिस जिसकालविषे धर्मकी हानि होवैहै तथा अधर्मकी वृद्धिहोवैहै तिसकालविषे मैंपरमात्मादेव देहकूं उत्पन्नकरूंहूं ॥ ७॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टोका ॥ हेअर्जुन वेदकरिकैविधानकऱ्याहूआजो प्रवृत्तिनिवृत्तिरूपधर्महै ॥ जोधर्म कामनापूर्वककऱ्याहूआ इनप्राणीयोंके स्वर्गादिरूपअभ्युदयका साधनहोवैहै ॥ तथा जोधर्म निष्कामकऱ्याहूआ इनप्राणीयोंके मोक्षरूपनिःश्रेयसका साधनहोवैहै ॥ तथा जोधर्म ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र याच्यारिवर्णोका तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास याच्यारिआश्रमोंका अभिव्यंजकहै अर्थात् जनावणेहाराहै ॥ तहांश्रद्धाभक्तिपूर्वक अग्निहोत्रादिककर्मोकूंकरणा याकानाम प्रवृत्तिरूपधर्महै ॥ और परस्त्रीगमनादिकनहींकरणे याकानाम निवृत्तिरूपधर्महैं ॥ ऐसेधर्मकी जिसजिसकालविषे हानिहोवैहै ॥ और वेदकरिकैनिषिद्धकऱ्याहूआ तथानानाप्रकारकेदुःखोंकासाधनरूप तथाधर्मकाविरोधी ऐसाजो अधर्महै ॥ तिसअधर्मकीजिसजिसकालविषे वृद्धिहोवैहै ॥ तिसतिसकालविषे मैंपरमात्मादेव आपणेदेहकूंसृजताहूं ॥ अर्थात् नित्यसिद्धआपणेदेहकूं मायाकरिकै रचेहूएकीन्यांई दिखावताहूं ॥ ईहां (हेभारत) यासंबोधनेककहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकरया ॥ भरतवंशविषेजोउत्पन्नहोवै ताकानाम भारतहै ॥ अथवा भा नामज्ञानकाहै त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

केविषे जोरतहोवै अर्थात् ज्ञानविषेजोप्रीतिवालाहोवै ताकानाम भारतहै ॥ ऐसेभारतनामवालातूंअर्जुन धर्मकीहा
निकूं सहारणेविषेसमर्थनहींहैं इति ॥ ७ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् साधर्मकोहानि तथाअधर्मकीवृद्धि यहदो
नों आपके परितोषकाकारणहोवैंगे ॥ जिसकरिकै आप तिसीकालविषेहीं अवतारकूंधारणकरोहो ॥ यातैं आपका
अवतार उलटा लोकोंकूं अनर्थकोप्राप्तिकरणेहाराहींहूआ ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥

399

परित्राणायसाधूनांविनाशायचदुष्कृतां ॥ धर्मसंस्थापनार्थायसंभवामियुगेयुगे ॥ ८ ॥

परित्राणाय । साधूनां । विनाशाय । च । दुष्कृतां । धर्मसंस्थापनार्थाय । संभवामि । युगे । युगे ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेअर्जुन साधुपुरुषोंके रक्षाकरणेवासतै तथा पापीपुरुषोंके नाशकरणेवासतै तथा धर्मकेसं
स्थापनकरणेवासतै मैंपरमेश्वर युग युगविषे अवतारकूंधारणकरूंहूं ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन धर्मकोहानिकरिकै हानिकूंप्राप्तहूए तथा निरंतरवेदप्रतिपादितमार्गविषेस्थित ऐसेजेवेदवि
हितपुण्यकर्मोंकूंकरणेहारे श्रेष्ठपुरुषहैं ॥ जेश्रेष्ठपुरुष आपणेप्राणोंकेनाशहूएभी आपणेधर्मकूंपरित्यागकरतेनहीं ॥ तिन
श्रेष्ठपुरुषोंकानाम साधुहै ॥ ऐसेसाधुपुरुषोंकेरक्षणकरणेवासतै ॥ और अधर्मकोवृद्धिकरिकैवृद्धिकूंप्राप्तहूए तथावेदमा
र्गकेविरोधी तथाशरीरमनवाणीकरिकै सर्वदा वेदनिषिद्धपापकर्मोंकूंकरणेहारे ऐसेजे दुष्टपुरुषहैं ॥ तिनदुष्टपुरुषों
कानाम दुष्कृत्है ॥ ऐसेदुष्कृत्पुरुषोका समूलतैं नाशकरणेवासतै मैंपरमेश्वर युगयुगविषे अवतारकूंधारणकरूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् साधुपुरुषोंकारक्षण तथादुष्टपुरुषोंकाविनाश यादोनोंकूं आप किसप्रकारकरोहो ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान्कहेहैं (धर्मसंस्थापनार्थायइति) हेअर्जुन पूर्ववृद्धिकूंप्राप्तहूआजोअधर्महै ताअधर्मकीनिवृत्तिकरिकै जोधर्मका सम्यक्स्थापनहै अर्थात् वेदमार्गकापरिरक्षणहै ताकानाम धर्मसंस्थापनहै ॥ ताधर्मकेसंस्थापनकरणेवासतैंहीं मैंपरमात्मादेव अवतारकूंधारणकरूंहूं ॥ ताधर्मकेसंस्थापनकरिकै साधुपुरुषोंकारक्षण तथा दुष्टपुरुषोंकाविनाश अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यातैं हमाराअवतार किसीकूं अनर्थकीप्राप्तिकरणेहारानहींहै इति ॥ ८ ॥ ※ ॥

जन्मकर्मचमेदिव्यमेवंयोवेत्तितत्त्वतः ॥ त्यक्त्वादेहंपुनर्जन्मनैतिमामेतिसोऽर्जुन॥९॥

जन्म। कर्म। च। मे। दिव्यं। एवं। यः।वेत्ति। तत्त्वतः।त्यक्त्वा। देहं। पुनः।जन्म। न। एति।मां। एति। सः।अर्जुन॥ इतिप०॥

हेअर्जुन जोपुरुष हमारे दिव्य जन्मकूं तथा कर्मकूं ईसप्रकार यथार्थ जानेहै सोपुरुष इसदेहकूं परित्यागकरिकै पुनः जन्मकूं नहीं प्राप्तहोवैहै किंतु मैंपरमेश्वरकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नित्यसिद्धजोमैं सत्चित् आनंदघनहूं ॥ ऐसेमैंपरमात्मादेवका आपणीलीलामात्रकरिकै लोकप्रसिद्धजीवोंकेजन्मकीन्यांई जोजन्मकाअनुकरणमात्ररूप जन्महै ॥ तथा मैंनित्यसिद्धपरमेश्वरका वेदविहितधर्मकीस्थापनाकरिकै जगतकापरिपालनरूपजोकर्महै ॥ तेहमारे जन्म कर्म दोनों दिव्यहैं ॥ अर्थात् दूसरेप्राकृतपुरुषोंकूं करणेविषेअशक्यहैं केवल मैंईश्वरकेहीं असाधारणधर्मरूपहैं ॥ ऐसेहमारे दिव्यजन्मकर्मदोनोंकूं जोपुरुष (अजोपिस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न्नव्ययात्मा) इत्यादिकवचनोक्तरीतिसैं तत्त्वतैंजानेहै ॥ अर्थात् मूढपुरुषोंनैंहीं श्रीभगवान्विषे मनुष्यत्वकीभ्रांति करिकै इतरजीवोंकीन्यांई गर्भवासादिरूपजन्म आरोपणकऱ्याहै तथाआपणेस्वार्थवासतैं सोकर्म आरोपणकऱ्याहै ॥ ता आरोपित जन्मकर्मकूं वास्तवतैं शुद्धसत्चित्आनंदस्वरूपकेज्ञानतैं निवृत्तकरिकै जन्मतैंरहितपरमेश्वरकाभी आपणीमायाकरिकै लीलामात्रतैं लोकप्रसिद्धजीवोंकेजन्मकीन्यांई जन्मकाअनुकरणमात्र संभवैहै ॥ तथा वास्तवतैंअकर्तापरमेश्वरकाभी दूसरेलोकोंऊपरिअनुग्रहकरणेवासतैं लोकप्रसिद्धजीवोंकेकर्मकीन्यांई कर्मकाअनुकरणमात्र संभवहोइसकेहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष हमारेजन्मकर्मकूं वास्तवरूपतैंजानेहै ॥ तथा इसीप्रकार आपणेवास्तवस्वरूपकूंभीजानेहै ॥ सोपुरुष इसवर्त्तमानशरीरका परित्यागकरिकै पुनः दूसरेजन्मकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु सोपुरुष सत्चित् आनंदघनमैंभगवान्वासुदेवकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् सत्चित्आनंदरूपपरमात्मादेव मैंहूं याप्रकारकेअभेदज्ञानतैं सोपुरुष इससंसारतैं मुक्तहोवैहै इति ॥ ९ ॥ ❋ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे (मामेतिसोऽर्जुन) यहवचनकथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् आपणेवास्तवस्वरूपकूं सर्वमुक्तपुरुषोंकेप्राप्तिकापदरूपकरिकै परमपुरुषार्थरूपताका तथाइसमोक्षमार्गकूं अनादिपरंपराकरिकैप्राप्तपणेका कथनकरेहै ॥

वीतरागभयक्रोधामन्मयामामुपाश्रिताः ॥ बहवोज्ञानतपसापूतामद्भावमागताः।१०॥

वीतरागभयक्रोधाः । मन्मयाः । मां । उपाश्रिताः । बहवः ज्ञानतपसा । पूताः । मद्भावं । आगताः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन[1] रागभय क्रोधतैं[2] रहित तथा[3] मेरेविषे चित्तवाले तथा[4] हमारे[5] शरणकूं प्राप्तहूए तथा ज्ञानरूपत
पकरिकै पापोंतैं[6] रहितहूए ऐसे बहुतपुरुष मेरे[7] स्वरूपकूं[8] प्राप्तहोतेभये हैं ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ तिसतिसस्वर्गादिकफलोंकेप्राप्तिकी जातृष्णाहै ताकानाम रागहै ॥ और स्त्रीपुत्रधनादिकसर्वविषयोंकापरित्या
गकरिकै ज्ञानमार्गविषे स्थितहूए हमारा किसप्रकार जीवनहोवैंगा याप्रकारकाजो त्रासहै ताकानाम भयहै ॥ और सर्वविष
योंका मूलतैं उच्छेदकरणेहाराजोज्ञानमार्गहै सोज्ञानमार्ग किसप्रकार हमारा हितहोवैंगा किंतु हितनहींहोवैंगा याप्रकार
काजोद्वेषहै ताकानाम क्रोधहै ॥ तेरागभयक्रोधतीनों विवेककरिकै निवृत्तहूएहैं जिनपुरुषोके तिनपुरुषोंकानाम वीतराग
भयक्रोधहै ॥ अर्थात् शुद्धअंतःकरणवालेजेपुरुषहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेपुरुष (मन्मयाः)क्यामैंतत्पदार्थरूपपरमात्मादेवकूं त्वंप
दार्थरूपआपणेआत्माकेसाथि अभेदकरिकै साक्षात्कारकरयाहैजिनोंनैं ॥ अथवा (मन्मयाः) क्या मैंएकपरमात्मादेवविषे
हींहै चित्तजिनोंका ॥ पुनःकैसेहैंतेपुरुष (मामुपाश्रिताः) क्या अनन्यप्रेमभक्तिकरिकै मैंपरमात्मादेवकेहीं जेशरणकूंप्राप्त
हूएहैं ॥ ऐसेअनेकशुकवामदेवादिकपुरुष ज्ञानरूपतपकरिकै सर्वपापोंतैं रहितहूए अर्थात् कार्यसहितअज्ञानरूपमलतैंर
हितहूए हमारे सत्चित्आनंदस्वरूपभूतमोक्षकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ अथवा (ज्ञानतपसापूताः) क्याज्ञानरूपतपकरिकै
जीवन्मुक्तहूएतेपुरुष (मद्भावमागताः) क्यामैंपरमात्माविषयक रतिनामाप्रेमरूपभावकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ इसीअर्थकूंश्री
भगवान्आपहीं (तेषांज्ञानीनित्ययुक्तएकभक्तिर्विशिष्यते)इसवचनकरिकै आगेकथनकरैंगा ॥ इति ॥ १० ॥ ※ ॥ शंका॥
हेभगवन् जेपुरुष ज्ञानरूपतपकरिकै पवित्रहूएहैं ॥ तेनिष्कामपुरुषतौं आपकेभावकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ औरजेपुरुष ताज्ञान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूपतपकरिकै पवित्रनहींहूएहैं ॥ तेसकामपुरुष ताआपकेभावकूं नहींप्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार निष्कामपुरुषोंकूंतौं आपणे भावकीप्राप्तिकरणेहारा तथासकामपुरुषोंकूं आपणे भावकोनहींप्राप्तिकरणेहारा जोआप ईश्वरहो ॥ तिसआपकूं विषमता दोषकीप्राप्ति तथानिर्दयतादोषकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैंगी ॥ ऐसोअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥

येयथामांप्रपद्यंतेतांस्तथैवभजाम्यहं ॥ ममवर्त्मानुवर्त्ततेमनुष्याःपार्थसर्वशः ॥ ११ ॥

ये[2]। यथा[3]।मां[4]।प्र[5]पद्यंते[6]।तां[7]न्।तथा[8]।एव[9]।भजामि[10]।अहं[11]।मम[12]।वर्त्म[13]। अनु[14]वर्त्तंते[15]।मनुष्याः[16]। पार्थ[17]।सर्वशः[18]॥ इतिपदच्छेदः॥

हेपार्थ[1] जे[2]पुरुष जिस[3]प्रकारकरिकै मैं[4]परमेश्वरकूं भजते[5]हैं तिन[6]पुरुषोंकूं मैं[7]परमेश्वर तिसी[8]प्रकार हीं[9] अनुग्रहकरूंहूं यहकर्म[10]केअधिकारीमनुष्य सर्व[11]प्रकारकरिकै मैंपरमेश्वरकेहीं भजनमार्ग[12]कूं अनुसरण[13]करेहैं ॥ इतिप० ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसलोकविषे दुःखकरिकैपीडितजेआर्त्तपुरुषहैं ॥ तथा धनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेहारे जे अर्थार्थीपुरुषहैं ॥ तथा आत्माकेजानणेकोइच्छावाले जेजिज्ञासुपुरुषहैं ॥ तथा तत्त्वसाक्षात्कारवाले जेज्ञानीपुरुषहैं ॥ तिनच्यारिप्रकारकेपुरुषोंविषे जेजेपुरुष सकामपणेकरिकै तथानिष्कामपणेकरिकै सर्वकर्मोंकेफलप्रदाताभैंईश्वर कूं भजतेहैं ॥ तिनपुरुषोकूं तिसतिसमनवांच्छितफलकोप्राप्तिकरिकै मैंपरमेश्वरअनुग्रहकरूंहूं ॥ तिनभक्तजनोंकूं मैंपर मेश्वर विपरीतफलकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ तहां मोक्षकीइच्छातैंरहित जेआर्त्तभक्तहैं ॥ तिनआर्त्तभक्तोंकूंतौं तिनोंकेपी डाकीनिवृत्तिकरिकै अनुग्रहकरोंहूं और मोक्षकीइच्छातैंरहित जेअर्थार्थीपुरुषहैं ॥ तिनअर्थार्थीपुरुषोंकूंतौं धनादि कपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै अनुग्रहकरोंहूं ॥ और (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसाऽनाशके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न।) इसश्रुतिनैंविधानकरयेजोनिष्कामकर्महैं ॥ तिननिष्कामकर्मोंकूंकरणेहारेजे जिज्ञासुजनहैं ॥ तिनजिज्ञासुभक्तोंकूंतौं आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै अनुग्रहकरोंहूं ॥ और ज्ञानवान्भक्तोंकूंतौं मोक्षकीप्राप्तिकरिकै अनुग्रहकरोंहूं ॥ अन्यव स्तुकीकामनावालेभक्तजनकूं अन्यवस्तुकीप्राप्ति मैंकरतानहीं ॥ यातैं तिनपुरुषोंके भावनाकेअनुसार फलकेदेणेहारे मैंपरमेश्वरविषे विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकी प्राप्ति संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् यद्यपि आप लोकोंकेभावना केअनुसारहीं तिसतिसफलकीप्राप्तिकरोहो ॥ तथापि आपणे भक्तजनोंकेप्रतिहीं ताफलकीप्राप्तिकरोहो ॥ अन्यइं द्रादिकदेवतावोंकेभक्तोंकूं आप तिसफलकीप्राप्ति करतेनहीं ॥ यातैं आपकेविषे सोविषमतादोष तथानिर्दयतादोष तिसीप्रकारस्थितहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहैं (ममवर्त्मानुवर्त्ततेमनुष्याःपार्थसर्वशःइति) हेअ र्जुन जेकर्मोंकेअधिकारीमनुष्य इंद्र अग्नि सूर्य इत्यादिकदेवतावोंकाभी भजनकरेहैं ॥ तेमनुष्यभी मैंअंतर्यामीवासुदे वकेहीं ज्ञानकर्मरूपमार्गकूं अनुसरणकरेहैं ॥ अर्थात् तेमनुष्यभी मैंपरमेश्वरकाहींभजनकरेहैं ॥ और तिनइंद्रादिक देवतावोंकेभक्तोकूंभी मैंपरमात्मादेवहीं तिसतिस इंद्रादिरूपकरिकै तिसतिस फलकीप्राप्तिकरोंहूं ॥ यातैं मैंपरमेश्व रविषे किंचित्मात्रभी विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकी प्राप्ति संभवैनहीं ॥ इसीअर्थकूं (फलमतउपपत्तेः) इस सूत्रकरिकै श्रीव्यासभगवान्भीकथनकरताभयाहै ॥ इसीअर्थकूं (येप्यन्यदेवताभक्ताः) इत्यादिकवचनोंकरिकै श्रीभगवान् आपहीं आगे स्पष्टकरिकैकथनकरैंगे ॥ तथा इसीअर्थकूं (इंद्रंमित्रंवरुणमग्निमाहुः) इत्यादिकवेदकेमंत्रक थनकरेहैं इति ॥ ११ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार आपईश्वरहीं जोकदाचित्इंद्रादिरूपकरिकै सर्वलोकोकूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिसतिसफलकीप्राप्तिकरणेहारेहोवो ॥ तौं तेसर्वजन साक्षात् आपपरमेश्वरकूंहीं किसवासतै नहींभजतेहैं ॥ साक्षात् आपईश्वरकूंछोडिकै तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूं किसवासतैभजतेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥

कांक्षंतःकर्मणांसिद्धियजंतइहदेवताः ॥ क्षिप्रंहिमानुषेलोकेसिद्धिर्भवतिकर्मजा ॥ १२ ॥

कांक्षंतः । कर्मणां । सिद्धिं । यजंते । इह । देवताः । क्षिप्रं । हि । मानुषे । लोके । सिद्धिः । भवति । कर्मजा ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन इसलोकविषे कर्मोंके फलकी इच्छाकरतेहूए सकामपुरुष इंद्रादिकदेवतावोंकूं पूजनकरेहैं जिस कारणतैं इसमनुष्यलोकविषे तिनसकामपुरुषोंकूं कर्मजन्य फल शीघ्रहीं प्राप्तहोवैहै ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेपुरुष इसलोकविषे यज्ञादिककर्मोंके धनपुत्रादिकफलोंकीइच्छाकरेहैं ॥ तेसकामपुरुषतौं इंद्र अग्नि सूर्य आदिकदेवतावोंकूंहीं पूजनकरेहैं ॥ तेपुरुष निष्कामहोइकै कदाचित्भी मैंपरमेश्वरका पूजनकरतेनहीं ॥ का हेतैं जेपुरुष तिसतिसफलकीइच्छाकरतेहूए तिनइंद्रादिकदेवतावोंका पूजनकरेहैं अर्थात् यज्ञादिककर्मोंकरिकैति न इंद्रादिकदेवतावोंकूं प्रसन्नकरेहैं ॥ तिनसकामपुरुषोंकूं तिसतिसकर्मजन्यफलकीप्राप्ति इसमनुष्यलोकविषे शीघ्र हींहोवैहै ॥ और आत्मज्ञानका जोमोक्षरूपफलहै ॥ सोफलतौं अंतःकरणकीशुद्धितैंविना प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सो ज्ञानकाफल आपणीप्राप्तिविषे अंतःकरणकेशुद्धिकीअपेक्षा अवश्यकरेहै ॥ और साअंतःकरणकीशुद्धि अनेकजन्मों केपुण्यकर्मकरिकैहोवैहै ॥ यातैं कर्मकेफलकीन्यांई सोज्ञानकाफल शीघ्रहींप्राप्तहोवैनहीं ॥ ईहां मनुष्यलोकविषे सो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर्मकाफल शीघ्रहींप्राप्तहोवैहै यावचनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थसूचनकरया॥इसमनुष्यलोकतैंभिन्न दूस रेलोकोंविषेभी वर्णआश्रमकेधर्मोंतैंभिन्न अन्यकर्मोंकेकरणेतैं फलकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैहैइति ॥ यातैं हेअर्जुन जिसकारणतैं मोक्षतैंविमुखहूए तेसकामपुरुष तिसतिसतुच्छफलकीप्राप्तिवासतै अन्यइंद्रादिकदेवतावोंका पूजनकरे हैं॥ तिसकारणतैं जैसे मुमुक्षुजन साक्षात् मैंपरमेश्वरकाहीं पूजनकरेहैं॥ तैसे तेसकामपुरुष साक्षात् मैंपरमेश्वरकापूजन करतेनहीं इति॥ १२ ॥ ❋ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे सकामताके तथानिष्कामताके भेदकरिकै सर्वपुरुषोंविषे समानस्वभा वताकाअभाव कथनकरया॥ अब शरीरकेआरंभकरणेहारे सत्वादिकगुणोंकीविषमताकरिकैभीतिनसर्वपुरुषोंविषे समा नस्वभावताकाअभाव कथनकरेहैं॥

406

चातुर्वर्ण्यंमयासृष्टंगुणकर्मविभागशः॥तस्यकर्त्तारमपिमांविद्ध्यकर्त्तारमव्ययं ॥१३॥

चातुर्वर्ण्यं। मया। सृष्टं। गुणकर्मविभागशः। तस्य। कर्त्तारं। अपि। मां। वि॑द्धि। अकर्त्तारं। अव्ययं। इतिपद०॥

हेअर्जुन मैंपरमेश्वरनैं गुणकर्मविभागकरिकै च्यारिवर्ण उत्पन्नकरेहैं तिसच्यारिवर्णका कर्त्तारूप भी मैंपरमेश्वरकूं तूं अकर्त्तारूप तथाअव्ययरूप जान॥ १३॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंईश्वरनैं सृष्टिकेआदिकालविषे सत्त्वादिकगुणोंकेभेदकरिकै तथाशमदमादिककर्मोंकेभेदकरिकै ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहच्यारिवर्ण भिन्नभिन्नकरिकै उत्पन्नकरेहैं ॥ तहां सत्त्वगुणहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेजेब्रा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ह्मणहैं ॥ तिनब्राह्मणोंकेतौं तासत्त्वगुणकेकार्यरूप शमदमादिकहीं कर्महैं ॥ और सत्त्वगुणउपसर्जनरजोगुणहै प्रधा
नजिनोंविषे ऐसेजेक्षत्रियहैं ॥ तिनक्षत्रियोंकेतौं तासत्त्वगुणउपसर्जनप्रधानभूतरजोगुणकाकार्यरूप शौर्य तेज
आदिकहीं कर्महैं ॥ और तमोगुणउपसर्जनरजोगुणहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेजेवैश्यहैं ॥ तिनवैश्योंकेतौं तातमोगु
णउपसर्जनप्रधानभूतरजोगुणकाकार्यरूप कृषिवाणिज्यादिकहीं कर्महैं ॥ और तमोगुणहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेजे
शूद्रहैं ॥ तिनशूद्रोंकेतौं तिसतमोगुणकाकार्यरूप त्रैवर्णिकंपुरुषोंकीसेवादिकहीं कर्महैं ॥ ईहां उपसर्जननाम गौणका
है ॥ इसप्रकार गुणोंकेभेदकरिकै तथाकर्मोकेभेदकरिकै यहच्यारिवर्ण स्थितहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार गु
णकर्मकेभेदकरिकै विषमस्वभाववाले च्यारिवर्णोंकूंउत्पन्नकरणेहारे आपईश्वरविषे विषमतादोषकीप्राप्ति अवश्य
करिकैहोवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (तस्यकर्त्तारमपिमांविद्ध्यकर्त्तारमव्ययंइति) हेअर्जुन
यद्यपि मैंपरमेश्वर व्यवहारदृष्टिकरिकै ताविषमस्वभाववालेच्यारिवर्णोंका करताहूं ॥ तथापि परमार्थदृष्टिकरि
कै तूं हमारेकूं अकर्त्तारूपहीं जान ॥ तथा अव्ययरूपजान अर्थात् निरहंकारताकरिकै अबाधितमहिमावाला जानइ
ति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (गुणकर्मविभागशः) यावचनविषे गुणकर्म विभागशः यहदोपदअंगीकारकरिकै यह
अर्थकथनकरयाहै ॥ च्यारिवर्णोंकेजेहितरूपहोवैं तिनोंकानामचातुर्वर्ण्यहै ॥ ऐसेजे द्रव्यदेवतादिकगुणहैं तथाअग्निहो
त्रादिककर्महै ॥ तेच्यारिवर्णोंकेहितरूपगुणकर्म मैंपरमेश्वरनैं (विभागशःसृष्टं) क्या साधारणअसाधारणभेदकरि
कै उत्पन्नकरेहैं ॥ तहां दानजपादिककर्म सर्ववर्णोंका साधारणधर्महैं ॥ और अग्निहोत्र वेदाध्ययन संध्योपासन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इत्यादिककर्मतौं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णकेहींहैं ॥ शूद्रके तेअग्निहोत्रादिककर्महैंनहीं ॥ तिन तीनवर्णोविषे भी बृहस्पतिसवादिककर्म केवल ब्राह्मणकेहीं असाधारणधर्महैं ॥ अन्यक्षत्रियादिकोंकेतेधर्मनहींहैं ॥ और राजसू यादिककर्म केवल क्षत्रियकेहीं असाधारणधर्महैं ॥ ब्राह्मणादिकोंके तेधर्मनहींहैं ॥ और वैश्यस्तोमादिककर्म केवल वैश्यकेहीं असाधारणधर्महैं ॥ ब्राह्मणादिकोंके तेधर्मनहींहैं ॥ और त्रैवर्णिकपुरुषोंकीसेवाकरणी इत्यादिककर्म केवल शूद्रकेहीं असाधारणधर्महैं ॥ ब्राह्मणादिकोंके तेधर्मनहींहैं ॥ इसप्रकार तिनअग्निहोत्रादिककर्मोंकेभेदहूए तिन कर्मोंविषे अंगभूतद्रव्यदेवतादिकगुणोंकाभी भेदहींहोवैहै ॥ इसप्रकार तिनच्यारिवर्णोंके गुण तथाकर्म मैंपरमेश्वरनैंही साधारणअसाधारणरूपकरिकै उत्पन्नकरेहैं ॥ यातैं जैसे पुत्रकीप्रसन्नताकरिकै पिताकीप्रसन्नताहोवैहै ॥ तैसे तिनइंद्रादिकदेवतावोंकीप्रसन्नताकरिकै मैंपरमेश्वरकीभी प्रसन्नताहोवैहै ॥ इसप्रकार प्रसन्नताकूंप्राप्तहूआ मैंपरमेश्वर तिनइंद्रादिकदेवतावोंकेभक्तोंकूंभी तिसतिसकर्मकेफलकी प्राप्तिकरौंहूं इति ॥ १३ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वआपनैं कर्त्तारूपमैंपरमेश्वरकूं तूं अकर्त्तारूपजान याप्रकारकावचन कथनकरया ॥ सो कर्त्ताकूं अकर्त्तारूपता किसप्रकार संभवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् ताअर्थकूं स्पष्टकरिकै निरूपणकरेहैं ॥

नमांकर्माणिलिंपंतिनमेकर्मफलेस्पृहा॥इतिमांयोभिजानातिकर्मभिर्नसबध्यते ॥१४॥

नँ३। मां१। कर्माणि२। लिंपंति४। नँ५। मे६। कर्मफले७। स्पृहाँ८। इति९। मां१०। यः११। अभिजानाति१२। कर्मभिः१४। न१५। सः१३। बध्यते१६॥ इतिपद०॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकूं यहकर्म नहीं लिंपायमानकरेहैं तथाहमारेकूं ताकर्मकेफलविषे तृष्णाभी नहींहै इसप्रकार जोपुरुष मैंपरमेश्वरकूं जानताहै सोपुरुषभी कर्मोंकरिकै नहीं बंधायमानहोवैहै ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन निरहंकारताकरिकै कर्तृत्वअभिमानतैंरहितजोमैंभगवान्हूं ॥ तिसहमारेकूं यहजगतकेउत्पत्ति स्थितिआदिककर्म नहीं लिपायमानकरते ॥ अर्थात् जैसे अन्यअज्ञानीपुरुषोंकूं यहकर्म देहकोआरंभताकरिकैबंधायमानकरेहैं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरकूं तेकर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ यातैं व्यवहारदृष्टिकरिकै मैं कर्मोंकूं करताहूआभीवास्तवतैं अकर्त्तारूपहींहूं ॥ इसप्रकार श्रीभगवान् आपणेविषे कर्त्तापणेकानिषेधकरिकै अब भोक्तापणेकाभी निषेध करेहै (नमेकर्मफलेस्पृहाइति) हेअर्जुन जैसे अज्ञानीजीवोंकूं कर्मोंकेस्वर्गादिकफलोंविषे यहफल हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारकीतृष्णा होवैहै ॥ तैसे मैंआप्तकामईश्वरकूं तिनकर्मोंकेफलोंविषे तृष्णाहैंनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (आप्तकामस्यकास्पृहाइति ॥) अर्थयह ॥ सर्वात्मदृष्टिकरिकै जिसपुरुषकूं सर्वपदार्थप्राप्तहूएहैं तिसपुरुषकानाम आप्तकामहै ॥ ऐसेआप्तकामपुरुषकूं किंचित्मात्रभी किसीफलकीतृष्णाहोवैनहींइति ॥ तात्पर्ययह ॥ इसलोकविषे अज्ञानीजीवोंकूं जो कर्म बंधायमानकरेहैं ॥ सो मैं इनकर्मोंकाकर्त्ताहूं तथा मैं इनकर्मोंकेफलकूंप्राप्तहोवौंगा याप्रकारका कर्तृत्वअभिमान तथाफलकीतृष्णा यादोनोंकरिकैहीं बंधायमानकरेहैं ॥ कर्तृत्वअभिमान तथाफलकीतृष्णा यादोनोंतैंविना तेकर्म किसीकूंभी बंधायमानकरतेनहीं ॥ और सोकर्तृत्वअभिमान तथाफलकीतृष्णा यहदोनों मैंआप्तकामईश्वरविषेहैंनहीं ॥ याकारणतैं तेकर्म मैंईश्वरकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ इसप्रकार कर्मोंकूंकरताहूआभीमैंईश्वर वास्तवतैं अक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्त्तारूपहींहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार आपईश्वरविषे अकर्त्तापणा तथाअभोक्तापणा सिद्धहूएभी ताकेजानणेकरिकै हमलोकोंकूं कौंनफलप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (इतिमांयोऽभिजानातिइति)हेअर्जुन इस प्रकार जोकोईअन्यपुरुषभी अकर्त्ताअभोक्तामैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानेहै ॥ सोपुरुषभी हमारेन्यांई तिन कर्मोंकरिकै बंधायमानहोवैनहीं ॥ अर्थात् अकर्त्ताआत्माकेज्ञानकरिकै सोपुरुषभी तिनकर्मोंतैंमुक्तहींहोवैहै इति ॥ १४ ॥

※ ॥ जिसकारणतैं मैं कर्त्तानहींहूं तथामेरेकूं कर्मोंकेफलकीतृष्णाभीनहींहै याप्रकारके अकर्त्ताअभोक्ताआत्माके ज्ञानतैं यहपुरुष तिनकर्मोंकरिकै बंधायमानहोतानहीं ॥ तिसकारणतैं पूर्वअनेकमहानपुरुष आत्माकूं अकर्त्ताअभोक्ताजा निकरिकै तिनकर्मोंकूंहींकरतेभयेहैं ॥ तिसप्रकार तूंअर्जुनभीतिनकर्मोंकूंहींकर ॥ याअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

एवंज्ञात्वाकृतंकर्मपूर्वैरपिमुमुक्षुभिः ॥ कुरुकर्मैवतस्मात्त्वंपूर्वैःपूर्वतरंकृतं ॥ १५ ॥

एवं । ज्ञात्वा । कृतं । कर्म । पूर्वैः । अपि । मुमुक्षुभिः । कुरु । कर्म । एव । तस्मात् । त्वं । पूर्वैः । पूर्वतरं । कृतं ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन इसप्रकार आत्माकूं अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरिकैपूर्वले मुमुक्षुवोंनैं भी कर्महीं करयाहै तथा तिसतैंभीपूर्व मुमुक्षुवोंनैं युगांतरविषे सोकर्महीं करयाहै तिसकारणतैं तूंअर्जुनभी ताकर्मकूं हीं कर ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसद्वापरयुगविषे पूर्व मोक्षकीइच्छावाले जे ययातिराजा यदुराजा इत्यादिकराजेहोतेभयेहैं ॥ तेराजेभी इसआत्मादेवकूं अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरिकै आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूंहीं करतेभयेहैं ॥ तिनकर्मोंकाप

॥१९८॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रित्यागकरिकै तेराजे तूष्णींभावकूं तथासंन्यासकूं नहींकरतेभयेहैं ॥ तिसकारणतैं तूं अर्जुनभी आत्माकूं अकर्त्ताअ
भोक्ता जानिकरिकै तिनकर्मोंकूंहींकर ॥ तूष्णींभावकूं तथासंन्यासकूं तूं मतकर ॥ हेअर्जुन जोकदाचित् तूं तत्त्ववे
त्तानहींहोवैं ॥ तौं तूं आपणेअंतःकरणकीशुद्धिवासतै तिनकर्मोंकूंकर ॥ और जोकदाचित् तूं तत्त्ववेत्ताहोवैं ॥ तौं तूं
लोकसंग्रहकेवासतै तिनकर्मोंकूं कर ॥ सर्वप्रकारतैं तुमारेकूं तेकर्म करणेयोग्यहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसद्वापरयुग
विषे पूर्व ययातियदुआदिकराजे कर्मोंकूंकरतेभयेहैं याप्रकारकावचन आपनैं कथनकऱ्या॥ ताकरिकैयहजान्याजावै
है ॥ केवल इसद्वापरयुगविषेहीं तिनकर्मोंकेकरणेकाअधिकारहै ॥ अन्यत्रेतादिकयुगोंविषे तिनकर्मोंकेकरणेका अ
धिकारनहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (पूर्वैःपूर्वतरंकृतंइति) हेअर्जुन केवल इसीद्वापरयुगोंवि
षेहीं पूर्व ययातिराजा यदुराजा आदिकराजे तिनकर्मोंकूंनहींकरतेभयेहैं ॥ किंतु इसयुगतैंपूर्व त्रेतादिकयुगोंविषे ज
नकादिकराजेभी इसआत्मादेवकूं अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरिकै तिनकर्मोंकूंनहींकरतेभयेहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया
॥ इसयुगविषे तथादूसरेयुगोंविषे मुमुक्षुराजे तथातत्त्ववेत्ताराजे अंतःकरणकीशुद्धिवासतै अथवा लोकसंग्रहकेवास
तै आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूं अवश्यकरिकैकरतेभयेहैं ॥ यातैं तिनराजावोंकीन्यांई तैंअर्जुनकूंभी आपणेवर्णआश्र
मकेकर्म अवश्यकरिकैकरयेचाहीये इति ॥ १५ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् क्या तिनकर्मोंविषे कोईसंशयभीहै ॥ जिस
करिकै आप (पूर्वैःपूर्वतरंकृतं) यावचनकरिकै तिसकर्मकूं अत्यंतदृढ करतेहो ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभग
वान् ताकर्माविषे संशयहै याकारणतैंहीं तिसकर्माविषे बुद्धिमान्पुरुषभी मोहकूंप्राप्तहोवैहैं याप्रकारकाउत्तरकहेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किंकर्मकिमकर्मेतिकवयोप्यत्रमोहिताः ॥ तत्तेक
र्मप्रवक्ष्यामियज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ १६ ॥

किं।कर्म।किं।अकर्म।इति।कवयः।अपि।अत्र।मोहिताः।तत्।ते।कर्म।प्रवक्ष्यामि।यत्।ज्ञात्वा।मोक्ष्यसे।अशुभात्॥

हेअर्जुन कर्म क्याहै तथा अकर्म क्याहै इस अर्थविषे बुद्धिमान्पुरुष भी मोहकूंप्राप्तहोतेभयेहैं तिसकारण तैं तुमारेतांई ताकर्मअकर्मकूं मैं कहताहूं जिसकूं जानिकरिकै तूं संसारतैं मुक्तहोवैंगा ॥ १६ ॥ इतिपदा० ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नौकाविषेस्थितजोपुरुषहै ॥ तिसपुरुषकूं तीरविषेस्थितगमनरूपक्रियातैंरहितवृक्षोविषेभी गमनरूपक्रियाकाभ्रम देखणेविषेआवेहै ॥ तथागमनरूपक्रियावालेपुरुषोंविषेभी दूरतैं तागमनक्रियाकेअभावकाभ्रम देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं वास्तवतैं सोकर्म क्यावस्तुहै ॥ तथा वास्तवतैं सोअकर्म क्यावस्तुहै ॥ इसप्रकारकाअर्थविषे बुद्धिमान्पुरुषभी मोहकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ अर्थात् ताकर्मअकर्मकेस्वरूपनिर्णयकरणेविषे असमर्थहोतेभयेहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (किंकर्मकिमकर्मेतिकवयोप्यत्रमोहिताः) याअर्धश्लोकका यहअर्थ कथनकर्याहै ॥ श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकै जोअर्थ विधानकर्याहोवै ताअर्थकानाम कर्महै ॥ और ताश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकै जोअर्थ नहींविधानकर्याहोवै ताअर्थकानाम अकर्महै ॥ इसप्रकार केईकपंडितपुरुष ताकर्मअकर्मकास्वरूपकथनकरेहैं ॥ और दूसरेकेईकपंडितजनतौं यहकहेहैं ॥ श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकै जोअर्थ विधानकर्याहोवै ताअर्थकानाम कर्महै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और तिनकर्मोंकेसंन्यासकानाम अकर्महै ॥ और दूसरेकेईकशास्त्रवेत्तापुरुषतौं यहकहेहैं ॥ गमनआगमनादिकक्रियावोंकानाम कर्महै ॥ और तिनगमनादिककियावोंतैंरहितहोइकै तूष्णींस्थितहोणेकानाम अकर्महै ॥ इसप्रकार ता कर्मअकर्मकेस्वरूपविषे बहुतप्रकारकाविवाद देखणेविषेआवताहै ॥ यातैं कर्मशब्दकावाच्यार्थ कौंनहै तथाअकर्मश ब्दकावाच्यार्थ कौंनहै इसप्रकारकेअर्थविषेशास्त्रवेत्तापुरुषभी मोहकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ अर्थात् ताकर्मअकर्मकेवास्त वस्वरूपकेनिर्णयकरणेविषे असमर्थहोतेभयेहैं इति ॥ तिसकारणतैं मैंकृष्णभगवान् तैंअर्जुनकेप्रति ताकर्मकेस्वरूप कूं तथाअकर्मकेस्वरूपकूं संशयकीनिवृत्तिपूर्वक कथनकरताहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताकर्मअकर्मकेजानणेकरिकै कि सफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकेशंकाकेहूए श्रीभगवान् ताकाफल कथनकरेहै (यज्ज्ञात्वाइति) हेअर्जुन जि सकर्मकेस्वरूपकूं तथाअकर्मकेस्वरूपकूं यथार्थजानिकै तूं इससंसारतैंमुक्तहोवैंगा ॥ अर्थात् इससंसारतैंमुक्तिहीं ता कर्मअकर्मकेज्ञानकाफलहै ॥ यद्यपि (तत्तेकर्मप्रवक्ष्यामि) यावचनविषे केवल कर्मफलहींहै तथापि तत्ते इसपद तैंआगे अकारनिकासिकै अकर्मकाभी ग्रहणहोइसकैहै इति ॥ १६ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताकर्मअकर्मकास्व रूप सर्वलोकविषेप्रसिद्धहींहै ॥ यातैं मैंअर्जुनभी ताकर्मअकर्मकेस्वरूपकूं जानताहींहूं ॥ तहां देहइंद्रियादिकोंकाजो व्यापारहै ताव्यापारकानाम कर्महै ॥ और सर्वव्यापारतैंरहितहोइकै तूष्णींस्थितहोणेकानाम अकर्महै ॥ ऐसे सर्वलो कोंविषेप्रसिद्ध कर्मअकर्मकेस्वरूपविषे आपनैं दूसराक्याकहणाहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

कर्मणोह्यपिबोद्धव्यंबोद्धव्यंचविकर्मणः॥अकर्मणश्चबोद्धव्यंगहनाकर्मणोगतिः १७॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर्मणः । हिं । अपि । बोद्धव्यं । बोद्धव्यं । च । विकर्मणः । अकर्मणः । च । बोद्धव्यं । गहना । कर्मणः । गतिः ॥ इतिपद० ॥

हेअर्जुन शास्त्रविहितकर्मका भी तत्त्व जानणेयोग्यहै तथा निषिद्धकर्मकाभी तत्त्व जानणेयोग्यहैं तथा अकर्मका भी तत्त्व जानणेयोग्यहै जिसकारणतैं कर्मविकर्मअकर्मका तत्त्व अत्यंतदुर्बोध्यहै ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं विधानकऱ्याजो अर्थहै ताकानामकर्महै ॥ ताकर्मकाभी वास्तवस्वरूप तुमारेकूं अवश्यकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ जिसकारणतैं ताकर्मकेस्वरूपजानेतैंविना ताकर्मकाअनुष्ठान होइसकैनहीं ॥ और श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं निषेधकऱ्याजो अर्थहै ताकानाम विकर्महै ॥ ताविकर्मकाभी वास्तवस्वरूप तुमारेकूं अवश्यकरिकैजानणेयोग्यहै ॥ जिसकारणतैं तानिषिद्धकर्मकेजानेतैंविना तानिषिद्धकर्मतैंनिवृत्तहूआजावैनहीं ॥ और सर्वव्यापारतैंरहितहोइकै जोतूष्णींस्थितहोणाहै ताकानाम अकर्महै ॥ ताअकर्मकाभी वास्तवस्वरूप तुमारेकूं अवश्यकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ जिसकारणतैं कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंकावास्तवस्वरूप अत्यंत दुर्विज्ञेयहै ॥ ईहां (गहनाकर्मणोगतिः) यावचनविषेस्थितजो कर्मशब्दहै ॥ सोकर्मशब्द विकर्म अकर्म यादोनोंकाभी उपलक्षकहै ॥ अर्थात् ताकर्मशब्दकरिकै कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंकाग्रहणकरणा ॥ और (कर्मणः विकर्मणः अकर्मणः) यातीनोंपदोंतैं उत्तर तत्त्वं इसपदका अध्याहारकरणा ॥ तथा (बोद्धव्यं) यातीनोंपदोंतैंउत्तर अस्ति यापदका अध्याहारकरणा ॥ ताकरिकै कर्मणस्तत्त्वं बोद्धव्यंअस्ति इसप्रकारकेतीनवाक्यसिद्धहोवैहैं ॥ तहां कर्मोंकाभीवास्तवस्वरूप तुमारेकूं जानणेयोग्यहै इसप्रकारका तिनवाक्योंकाअर्थसिद्धहोवैहै ॥ १७ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् कर्म विकर्म अकर्म या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तीनोंका जोवास्तवस्वरूप हमारेकूं अवश्यकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ सो कर्मादिकतीनोंकावास्तवस्वरूप किसप्रकार काहै ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् तिनकर्मादिकोकेवास्तवस्वरूपकूं कथनकरेहैं ॥

कर्मण्यकर्मयःपश्येदकर्मणिचकर्मयः ॥ सबुद्धिमान्मनुष्येषुसयुक्तःकृत्स्नकर्मकृत्। १८।

[2]कर्मणि । [3]अकर्म । [4]यः । [5]पश्येत्।[6]अकर्मणि।च[7]। [8]कर्म । [9]यः । सः । बुद्धिमान्[11] । [10]मनुष्येषु।[12]सः । युक्तः।[13][14]कृत्स्नकर्मकृत् ॥ इतिपद०

हेअर्जुन जो[1]पुरुष [2]कर्मविषे [3]अकर्मकूं देखेहै [4]तथा [6]जोपुरुष [5]अकर्मविषे [8]कर्मकूं देखेहै [12]सोपुरुषहीं सर्व[10]मनुष्योंविषे बुद्धिमान्[11]है तथा सोपुरुषहीं यो[13]गयुक्तहै तथा [14]सर्वकर्मोंकेकरणेहाराहै ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन देह इंद्रिय बुद्धि आदिकोंका जो श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकैविहित व्यापारहै तथाशास्त्रकरिकै निषिद्ध व्यापारहैं ताव्यापारकानाम कर्महै ॥ सोकर्म वास्तवतैंतौं तिनदेहइंद्रियादिकोंविषेहींरहेहै ॥ असंगआत्माविषे सोकर्म रहैनहीं ॥ तौंभी सोव्यापाररूपकर्म अहंकरोमि इसधर्माध्यासरूपप्रतीतिकेबलतैं आत्माविषे आरोपणकर्याजावैहै ॥ जैसे नदीकेतीरविषेस्थितजेवृक्षहैं ॥ तिनवृक्षोंविषे यद्यपि वास्तवतैं गमनरूपक्रियाहैनहीं ॥ तथापि नौकाविषेस्थितपुरुष तानौकाकेचलनेकरिकै तिनवृक्षोंविषे गमनरूपक्रियाकाआरोपणकरेहै ॥ तैसे शास्त्रविचारतैं रहितमूढपुरुष अक्रियआत्माविषे तादेहइंद्रियादिकोंकेव्यापाररूपकर्मका आरोपणकरेहैं ॥ ताआत्माविषेआरोपितकर्मविषे जोपुरुष आत्माकेअकर्त्तास्वरूपकाविचारकरिकै वास्तवतैं कर्मकेअभावकूंहीं देखेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नौकाविषेस्थितपुरुषोंनैं यद्यपि तीरस्थवृक्षोंविषे गमनरूपकर्मकाआरोपणकरीताहै ॥ तथापि वास्तवतैं तिनवृ
क्षोंविषे तागमनरूपकर्मकाअभावहींहै ॥ तैसे मूढपुरुषोंनैं यद्यपि अक्रियआत्माविषे तादेहादिकोंकेव्यापाररूपक
र्मका आरोपणकरीताहै ॥ तथापि ताअक्रियआत्माविषे वास्तवतैं तिनकर्मोकाअभावहींहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष कर्म
विषे अकर्मकूंदेखेहै इति ॥ और सत्त्वादिकतीनगुणोंवालीमायाकापरिणामहोणेतैं सर्वकालविषे ताव्यापाररूपकर्म
वालेजेदेहइंद्रियादिकहैं ॥ तिनदेहइंद्रियादिकोंविषे वास्तवतैं ताकर्मकाअभाव रहैनहीं ॥ किंतु तिनदेहइंद्रियादिकों
विषे ताकर्मकेअभावका आरोपणहोवैहै ॥ जैसे चक्षुकेसंबंधवाले दूरदेशविषेस्थित जेगमनरूपक्रियावालेपुरुषहैं ॥
तिनपुरुषोंविषे यद्यपि वास्तवतैं तागमनरूपक्रियाकाअभावहैनहीं ॥ तथापि दूरत्वदोषकेवशतैं तिनपुरुषोंविषे ता
गमनरूपक्रियाकेअभावका आरोपणहोवैहै ॥ तथा जैसे आकाशविषेस्थित जेचंद्रतारकादिकनक्षत्रहैं ॥ तिननक्षत्रों
विषे यद्यपि वास्तवतैं गमनरूपक्रियाकाअभावहैनहीं ॥ किंतु सर्वदा तिनोंविषे गमनरूपक्रियाहै ॥ तथापि दूरत्व
दोषकेवशतैं तिननक्षत्रोंविषे तागमनक्रियाकेअभावका आरोपणहोवैहै ॥ तैसे सर्वदा व्यापाररूपकर्मवाले जेदेह
इंद्रियादिकहैं ॥ तिनदेहइंद्रियादिकोंविषे वास्तवतैं ताकर्मकाअभावहैनहीं ॥ किंतु मैंतूष्णींहूआस्थितहूं किंचित्मा
त्रभीकर्म नहींकरताहूं याप्रकारकीअध्यासरूपप्रतीतिकेबलतैं तिनदेहइंद्रियादिकोंविषे ताकर्मकेअभावका आरो
पणकरयाजावैहै ॥ ऐसे देहइंद्रियादिकोंविषे आरोपणकरयाजो व्यापारकीउपरामतारूप अकर्महै ॥ ताअकर्मविषे
जोपुरुष तिनदेहइंद्रियादिकोंके सर्वदा व्यापारवत्स्वरूप वास्तवस्वरूपकाविचारकरिकै वास्तवतैं कर्मकूंदेखेहै ॥ अ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्थात् ताआरोपितअकर्मविषे कर्मनिवृत्तिहैनामजिसका ऐसाजोप्रयत्नरूपव्यापारहै जिसकूंनियहभीकहेहैं ताप्रय त्नरूपकर्मकूं जोपुरुषदेखेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे चक्षुकेसंबंधवाले दूरदेशविषेस्थित जे गमनरूपक्रियावालेपुरुष हैं तथाआकाशविषेस्थित जे गमनरूपक्रियावालेनक्षत्रहैं ॥ तिनपुरुषोंविषे तथानक्षत्रोंविषे यद्यपि दूरत्वदोषतैं तागमनरूपक्रियाकाअभाव प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि तेपुरुष तथानक्षत्र वास्तवतैं तागमनरूपक्रियावालेहींहैं ॥ तैसे तूष्णींस्थितहूआ मैं किंचित्मात्रभीनहींकरताहूं याप्रकारकीअध्यासरूपप्रतीतिकेबलतैं यद्यपि तिनदेहइंद्रियादि कोंविषे ताव्यापाररूपकर्मकाअभाव प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि तेदेहइंद्रियादिक वास्तवतैं ताकर्मवालेहींहैं ॥ और उ दासीनअवस्थाविषेभी मैं उदासीनहूआस्थितथा इसप्रकारकाअभिमानहीं एककर्महै इति ॥ इसप्रकार कर्मविषे अकर्मकूं देखणेहारा तथा अकर्मविषे कर्मकूं देखणेहारा जोपरमार्थदर्शीपुरुषहै ॥ सोपुरुषहीं सर्वमनुष्योंविषे बुद्धि मान्है तथासोपुरुषहीं योगयुक्तहै तथासोपुरुषहीं सर्वकर्मोंकेकरणेहाराहै ॥ ईहां बुद्धिमत्त्व योगयुक्तत्व कृत्स्नकर्मकृत्त्व यातीनधर्मोंकरिकै श्रीभगवान्नैं तापरमार्थदर्शीपुरुषकीस्तुति कथनकरीहै ॥ तहां (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) याप्रथ मपादकरिकै श्रीभगवान्नैं कर्मका तथाविकर्मका वास्तवस्वरूप दिखाया ॥ जिसकारणतैं कर्मशब्द विहितकर्म त थानिषिद्धकर्म दोनोंकाहीं वाचकहै ॥ और (अकर्मणिचकर्मयः) याद्वितीयपादकरिकै श्रीभगवान्नैं अकर्मका वास्त वस्वरूप दिखायाइति ॥ यातैं हेअर्जुन जोतूं यहमानताहैं ॥ यहसर्वकर्म बंधकेहेतुहैं ॥ यातैं तेकर्म हमारेकूं करणे योग्यनहींहै ॥ किंतु हमारेकूं तूष्णींभावतैंहीं सुखपूर्वकास्थितहोणायोग्यहै ॥ सोयहतुमारामानणा मिथ्याहींहै ॥ का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेतैं मैं कर्मोकाकर्त्ताहूं याप्रकारकाकर्तृत्वअभिमान जबपर्यंत इसपुरुषकूं होवैहै ॥ तबपर्यंतहीं तेविहितकर्म तथा निषिद्धकर्म इसपुरुषकूं बंधनकीप्राप्तिकरेहैं ताकर्तृत्वअभिमानतैंरहितहोइके केवल देहइंद्रियादिकोंकेधर्ममानिकै करयेहूए तेकर्म इसपुरुषकूं बंधनकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ इसअर्थकूं (नमांकर्माणिलिंपंति) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्व हम कथनकरिआयेहैं ॥ हेअर्जुन ताकर्तृत्वअभिमानकेविद्यमानहूए मैंतूष्णींहूआस्थितथा याप्रकारका उदासीनता काअभिमानमात्ररूपजोकर्महै सोकर्मभी इसपुरुषकेबंधकाहींहेतुहोवैहै ॥ जिसकारणतैं इसकर्तृत्वअभिमानीपुरुषनैं वस्तुका वास्तवस्वरूप जान्यानहीं ॥ यातैं हेअर्जुन कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंके पूर्वउक्त वास्तवस्वरूपकूंजानिक रिकै तथा विकर्म अकर्म यादोनोंकापरित्यागकरिकै तथा कर्तृत्वअभिमानतैंरहितहोइकै तथाफलकीइच्छातैंरहितहो इकै तूं शास्त्रविहितशुभकर्मोकूंहींकरइति ॥ अथवा ॥ इसश्लोकका यहदूसराअर्थ करणा प्रत्यक्षादिप्रमाणजन्य ज्ञानकाजोविषयहोवै ताकानामकर्महै ॥ ऐसा यहदृश्यरूप तथाजडरूप प्रपंचहै ॥ और जोवस्तु प्रत्यक्षादिप्रमाण जन्यज्ञानका विषयनहींहोवै तावस्तुकानाम अकर्महै ॥ ऐसा स्वप्रकाशरूप तथासर्वभ्रमकाअधिष्ठानरूप चैतन्यहै ॥ तहां जोपुरुष ताजगतरूपकर्मविषे आपणेसत्तास्फुरणरूपकरिकैअनुस्यूत स्वप्रकाशअधिष्ठानचैतन्यरूपअकर्मकूं परमार्थदृष्टिकरिकैदेखेहै ॥ तथा जोपुरुष तास्वप्रकाशअधिष्ठानचैतन्यरूपअकर्मविषे इसमायामयदृश्यप्रपंचरूपक र्मकूं कल्पितदेखेहै ॥ अर्थात् द्रष्टाचैतन्यका तथादृश्यप्रपंचका कोईभीसंबंधसंभवतानहीं यातैं यहदृश्यप्रपंच ताद्र ष्टाचैतन्यविषे वास्तवतैंहैनहीं याप्रकार जोपुरुष देखेहै ॥ तहांश्रुति (यस्तुसर्वाणिभूतानिआत्मन्येवानुपश्यति ॥ स

॥२०२॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्वभूतेषुचात्मानंततोनविजिगुप्सते ॥) अर्थयह ॥ जोपुरुष सर्वभूतोंकूं अधिष्ठानआत्माविषे कल्पितदेखेहै ॥ तथा तिनसर्वभूतोंविषे सत्तास्फुरणरूपकरिकै आत्माकूं अनुस्यूतदेखेहै ॥ सोपरमार्थदर्शीपुरुषहीं सर्वतैंश्रेष्ठहैइति ॥ इसप्रकार चैतन्यआत्माका तथादृश्यजगतका परस्पर अध्यासहूएभी जोपुरुष वास्तवतैं शुद्धचैतन्यकूंहींदेखेहै ॥ सोविद्वान्पुरुषहीं सर्वमनुष्योंकेमध्यविषे अत्यंतबुद्धिमान्है ॥ ताविद्वान्पुरुषतैंभिन्न कोईभीपुरुष बुद्धिमान्नहींहै ॥ काहेतैं इसलोकविषेभी यथावत्वस्तुकेस्वरूपकूंजानणेहारापुरुषहीं बुद्धिमान्कह्याजावैहै ॥ अयथावत्वस्तुकेस्वरूपकूंजानणेहारापुरुष बुद्धिमान्कह्याजावैनहीं ॥ जैसे रज्जुकुं रज्जुरूपकरिकैजानणेहारापुरुष बुद्धिमान् कह्याजावैहै और तिसीरज्जुकुं सर्परूपकरिकैजानणेहारापुरुष बुद्धिमान् कह्याजावैनहीं ॥ तैसे सर्वकेअधिष्ठानरूपशुद्धचैतन्यकूं देखणेहारापुरुषहीं परमार्थदर्शीहोणेतैं बुद्धिमान्है ॥ और अनात्मप्रपंचकूंदेखणेहारा अज्ञानीपुरुषतौं मिथ्यादर्शीहोणेतैं बुद्धिमान्होवैनहीं ॥ और सोपरमार्थदर्शीपुरुषहीं ताबुद्धिकेसाधनरूपयोगकरिकैयुक्तहै ॥ अर्थात् अंतःकरणकीशुद्धिकरिकै एकाग्रचित्तवालाहै ॥ इसीकारणतैं सोईहींपुरुष ताअंतःकरणकीशुद्धिकेसाधनरूप सर्वकर्मोका कर्त्ताहै ॥ इसप्रकार बुद्धिमत्त्व योगयुक्तत्व कृत्स्नकर्मकृत्त्व यावास्तवतीनधर्मोकरिकै सोपरमार्थदर्शीपुरुष स्तुतिकरयाजावैहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सोपरमार्थदर्शीपुरुष इसप्रकारके महान्पणेकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसकारणतैं तूंअर्जुनभी परमार्थदर्शी होउ ॥ तापरमार्थदर्शीपणेकरिकैहीं तुमारेविषे सोसर्वकर्मकाकर्त्तापणा सिद्धहोवैंगा ॥ यातैं जिसकर्मअकर्मकेस्वरूपकूंजानिकै तूं इससंसारतैंमुक्तहोवैंगा यहजोपूर्व कथनकरयाथा ॥ तथा कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंका वास्त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वस्वरूप तुमारेकूं जानणेयोग्यहै यहजोपूर्व कथनकऱ्याथा ॥ तथा सोईहींपुरुष बुद्धिमान्है इत्यादिकजोस्तुति कथन करीहै ॥ यहसर्ववार्त्ता परमार्थवस्तुकेदर्शनहूएहीं संभवहोइसकेहै ॥ अन्यवस्तुकेदर्शनतैं संभवैनहीं ॥ काहेतैं ताचै तन्यरूपपरमार्थवस्तुतैंभिन्न जितनैंको अनात्मपदार्थहैं ॥ तिनअनात्मपदार्थोंकेज्ञानतैं अशुभसंसारतैंमुक्ति संभवती नहीं उलटा बंधकीहींप्राप्तिहोवैहै ॥ तथा तापरमार्थवस्तुतैंभिन्न सर्वपदार्थअतत्त्वरूपहैं ॥ यातैं तेअतत्त्वरूपपदार्थ इसअधिकारीपुरुषकूं जानणेयोग्यभीनहींहै ॥ तथा तिनअनात्मपदार्थोंकेज्ञानहूए इसपुरुषविषे सोबुद्धिमान्पणा भी संभवतानहीं ॥ यातैं परमार्थदर्शीपुरुषोंका यहपूर्वउक्तव्याख्यान युक्तहैइति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (कर्मण्य कर्मयःपश्येत्) याश्लोकका यहअर्थ कथनकरयाहै ॥ परमेश्वरकीप्रसन्नतावासतै करयेजे अग्निहोत्रसंध्याउपासनादिक नित्यकर्महैं ॥ तेनित्यकर्म बंधकेहेतुहोवैनहीं ॥ यातैं तानित्यकर्मविषे जोपुरुष यहनित्यकर्म बंधकाअहेतुहोणेतैं अ कर्मरूपहींहै याप्रकारदेखेहै ॥ और तिननित्यकर्मोंका जोनहींकरणाहै ताकानाम अकर्महै ॥ सोनित्यकर्मोंकान हींकरणारूपअकर्म इसअधिकारीपुरुषके प्रत्यवायकाहेतुहोवैहै ॥ यातैं ताअकर्मविषे जोपुरुष यहअकर्म प्रत्यवाय काहेतुहोणेतैं कर्मरूपहींहै याप्रकारदेखेहै ॥ सोपुरुषहीं सर्वमनुष्योंविषे बुद्धिमान्है ॥ तथा योगयुक्तहै ॥ तथा सर्व कर्मोंकाकर्त्ताहैइति ॥ सोयहअर्थ असंगतहै ॥ काहेतैं तानित्यकर्मविषे यहअकर्महै याप्रकारकाजोज्ञानहै ॥ सोज्ञान रज्जुविषे सर्पज्ञानकीन्यांई भ्रांतिरूपहींहै ॥ यातैं ताभ्रांतिज्ञानविषे (यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्) यावचनकरिकैकथन करीजा अशुभसंसारतैंमोक्षकोहेतुताहै साहेतुता संभवैनहीं ॥ किंतु सोज्ञान मिथ्यारूपहोणेतैं आपहीं अशुभरूपहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ तथा सोभ्रांतिज्ञान (बोद्धव्यं) यावचनकरिकैकथनकरयाजानणेयोग्यतत्त्वरूपभीनहींहै ॥ तथा ताभ्रांतिज्ञानकेप्रा
तहूए बुद्धिमत्त्व योगयुक्तत्व इत्यादिकस्तुतिभी संभवतीनहीं ॥ उलटा सोभ्रांतिज्ञानवालापुरुष मिथ्यादर्शीहीं क
ह्याजावैहै ॥ और तानित्यकर्मोंकाजोअनुष्ठानहै ॥ सोअनुष्ठानतौं स्वरूपतैंहीं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानवि
षे उपयोगीहै ॥ तानित्यकर्मविषे अकर्मबुद्धितौं किसीविषेभी उपयोगीहैनहीं ॥ काहेतैं जोअर्थ शास्त्रकरिकैविहित
होवैहै ॥ सोईहींअर्थ अंतःकरणकीशुद्धिविषे तथाज्ञानविषे उपयोगीहोवैहै ॥ जैसे वाक् मन इत्यादिकोंविषे
शास्त्रनैं ब्रह्मदृष्टि विधानकरीहै ॥ यातैं तादृष्टिका अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञानविषेउपयोगहै ॥ तैसे नित्यकर्म अ
कर्मरूपहै याप्रकारकीदृष्टि किसीशास्त्रनैं विधानकरीनहीं ॥ यातैं तादृष्टिका किसीभीअर्थविषे उपयोगसंभवैनहीं
॥ तहां (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) यहगीताकावचनहीं ताकर्मविषे अकर्मदृष्टिका विधानकरेहै ॥ याप्रकारकावचन जो
कोईकथनकरै ॥ सोभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं इसगीतावचनका इसप्रकारकाअर्थ मानणेविषे पूर्व (यज्ज्ञात्वा
मोक्ष्यसेऽशुभात्) इत्यादिक उपक्रमादिकवचनोंकाविरोध कथनकरिआयेहै ॥ इसप्रकार नित्यकर्मोंकानहींकरणारूप
अकर्मभी स्वरूपतैंहीं तानित्यकर्मतैंविरुद्धकर्मकीलक्षकताकरिकै उपयोगीहोवैहै ॥ तिसअकर्मविषे कर्मदृष्टि किसीभी
अर्थविषेउपयोगीहोवैनहीं ॥ तथा तानित्यकर्मकेनहींकरणेतैं प्रत्यवायभी होवैनहीं ॥ काहेतैं सोनित्यकर्मकानहींकरणा
अभावरूपहै ॥ और प्रत्यवाय भावरूपहै ॥ ताअभावतैं भावकीउत्पत्ति संभवतीनहीं ॥ जोकदाचित् अभावतैभी
भावकार्यकीउत्पत्तिहोतीहोवै ॥ तौं अभावतौं सर्वदेशकालविषे विद्यमानहै ॥ यातैं सर्वदेशविषे तथासर्वकालविषे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सर्वकार्योंकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ सोऐसादेखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं अभावतैंभावकीउत्पत्तिमानणी अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा भावरूपअर्थहीं धर्मअधर्मरूपअपूर्वका जनकहोवैहै ॥ अभावरूपअर्थ ताअपूर्वकाजनकहोवैनहीं ॥ यातैं नित्यकर्मकाअभाव ताप्रत्यवायका जनकहैनहीं ॥ किंतु तानित्यकर्मकेअनुष्ठानकालविषे जो तानित्यकर्मकाविरोधी शयनउपवेशनादि कर्महै ॥ सो नित्यकर्मकेअकरणउपलक्षित भावरूपकर्महीं ताप्रत्यवायकाहेतुहै ॥ यह सर्ववैदिकपुरुषोंका सिद्धांतहै ॥ यातैं मिथ्याज्ञानकेनिवृत्तिप्रसंगविषे मिथ्याज्ञानकाहींव्याख्यानकरणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ और जोकोईवादी यहकहै ॥ सोभगवान्कावचन नित्यकर्मोंकेअनुष्ठानपरहै ॥ सो यहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं यहअधिकारीपुरुष नित्यकर्मोंकूंकरै याप्रकारकेअर्थकूं (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) यहवचन कथनकरतानहीं ॥ ताअर्थकेबोधनकरणेवासतै जोकदाचित् श्रीभगवान् तावचनकूंकथनकरैंगा ॥ तौं श्रीभगवान्विषेहीं मिथ्यावादीपणा सिद्धहोवैंगाइति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) इसश्लोकका यहअर्थ कथनकर्याहै ॥ तहां पूर्व (कर्मणोह्यपिबोद्धव्यं) याश्लोकविषे कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंका जापरिअवसानरूपगतिहै साअत्यंत गहनहै यातैं इसअधिकारीपुरुषकूं साकर्मादिकोंकीगति अवश्यकरिकैजानणेयोग्यहै यहअर्थ श्रीभगवान्नैं कथनकर्याथा ॥ तिसीअर्थकाहींव्याख्यानरूप (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्समनुष्येषुबुद्धिमान्) यहवचनहै ॥ सोदिखावेहैं ॥ (कर्मणि) यापदकरिकै कर्म अकर्म विकर्म यातीनोंका ग्रहणकरणा ॥ और (अकर्म) यापदकरिकै ता कर्म अकर्म विकर्म यातीनोंतैं विपरीतभावका ग्रहणकरणा ॥ तहां जोपुरुष ताकर्मविषे अकर्मकूंदेखेहै ॥ अर्थात् कर्मतैंविपरीतभावकूंदेखे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है ॥ तहां कर्म अकर्म विकर्म यातीनोंविषे तिनकर्मादिकोंतैंविपरीतरूपता शास्त्रप्रमाणतैं देखणेविषेआवैहै ॥ जैसे कर्मविषे श्रद्धातैंरहितजोपुरुषहै ॥ ताश्रद्धाहीनपुरुषनैं करयाजो कोईयज्ञरूपकर्महै ॥ सोयज्ञरूपकर्म फलकाअहेतुहोणे तैं करयाहूआभी नकरयेकेसमानहोवैहै ॥ यातैं सो श्रद्धाहीनपुरुषकृत यज्ञरूपकर्म अकर्मविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्त होवैहै ॥ और दांभिकपुरुषनैं करयाहूआ सोईयज्ञरूपकर्म विकर्मविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ याअर्थकूं श्री भगवान् आपहीं (अश्रद्धयाहुतंदत्तंतपस्तप्तंकृतंचयत् ॥ असदित्युच्यतेपार्थनचतत्प्रेत्यनोइह) इसश्लोकविषे आगे कथनकरैंगे ॥ इसप्रकार सर्वव्यापारतैंरहित उदासीनता यद्यपि अकर्मरूपहै ॥ तथापि दुःखीपुरुषोंकीरक्षाकरणे विषेसमर्थजोपुरुषहै ॥ सोसमर्थपुरुष ताऔदासीनताकूं अंगीकारकरिकै जो तिनदुःखीपुरुषोंकीरक्षा नहींकरेहै ॥ तौं तिससमर्थपुरुषका सोउदासीनतारूपअकर्म विकर्मविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा पितृयज्ञादिकपंच यज्ञोकाजो आपणेआपणेविहितकालविषे नहींकरणाहै ॥ सोपंचयज्ञोकानहींकरणा यद्यपि अकर्मरूपहै ॥ तथापि तिसकालविषे ईश्वरकेआराधनविषे अत्यंतआसक्तजोपुरुषहै तापुरुषका सोपंचयज्ञादिकोंका नहींकरणारूपअक र्मभी कर्मविषेहीं परिअवसानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता (सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज) याश्लोकविषे श्री भगवान्नैं आपहीं कथनकरीहै ॥ और नित्यकर्मकेपरित्यागतैं जो पापकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ सोभी तानित्यकर्म केकरणेकालविषे शास्त्रनिषिद्धलौकिकव्यवहारकेकरणेतैंहीं पापकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ परंतु ताकालविषे ईश्वरके आराधनविषेआसक्तहूआपुरुष ताप्रत्यवायकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणेतैंहीं पूर्व जलादिकोंकेभीतरस्थितहोइकै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तपकूंकरतेहूएऋषि ताकालविषे नित्यकर्मोंकेनहींकरणेतैं प्रत्यवायकूं नहींप्राप्तहोतेभयेंहै ॥ इसप्रकार किसीपशुकी हिंसाकरणी यद्यपि विकर्मरूपहै ॥ तथापि (अग्नीषोमोयंपशुमालभेत) इसवचनतैं यज्ञविषेकरीहूई सापशुकीहिंसा कर्मविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और व्यर्थहींतापशुकेनष्टहूए जा सापशुकीहिंसाहै तिसहिंसातैं कोई धर्म रूपअपूर्व उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं सापशुकीहिंसा कर्मरूपभीनहींहै ॥ और किसीकामनावालेपुरुषनैं सापशुकीहिंसाकरीनहीं ॥ यातैं साहिंसा विकर्मरूपभीनहींहै ॥ किंतु परिशेषतैं करीहूईभीसापशुकीहिंसा नहींकरेकेतुल्यहोवैहै ॥ यातैं साव्यर्थहिंसा अकर्मविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार चौरपुरुषकाजोछोडिदेणाहै सो यद्यपि ताचौरपुरुषकेसहवर्त्तीपुरुषोंका कर्मरूपहींहै ॥ तथापि सोचौरपुरुषकाछोडना राजाका विकर्महींहै ॥ काहेतैं (स्तेनःप्रमुक्तोराजनिपापमाप्नोति) इत्यादिकवचनोंविषे चौरपुरुषकाछोडना राजाकूं पापकीप्राप्तिकाहेतु कह्याहै ॥ और सोईहीं चौरपुरुषकाछोडना निष्कामसंन्यासीयोंका उपेक्षाकाविषयहोणेतैं अकर्मरूपहींहै ॥ इसप्रकार सत्यवचनकहणा यद्यपि कर्मरूपहै ॥ तथापि जिससत्यवचनतैं किसीप्राणीकीहिंसाहोवैहै ॥ सोसत्यवचनरूपकर्मभी विकर्मविषेहीं परिअवसानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार मिथ्यावचनकहणा यद्यपि विकर्मरूपहै ॥ तथापि जिसमिथ्यावचनकेकहणेतैं किसीप्राणीकीरक्षाहोवैहै ॥ तामिथ्यावचनरूपविकर्मका कर्मविषेहीं परिअवसानहोवैहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष शास्त्रप्रमाणतैं कर्मविषेतौं अकर्मरूपताकूं तथाविकर्मरूपताकूं देखेहै ॥ और अकर्मविषेतौं कर्मरूपताकूं तथाविकर्मरूपताकूं देखेहै ॥ और विकर्मविषेतौं कर्मरूपताकूं तथाअकर्मरूपताकूं देखेहै ॥ सो कार्यअकार्यकेविभागकूंजानणेहारा ॥२०५॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुरुष तिनकर्मादिकोंके वास्तवस्वरूपकेबोधवालाहोणेतैं बुद्धिमान् कह्याजावैहैइति ॥ और पूर्व (किंकर्मकिमकर्मेति इसश्लोकविषे जिस कर्मअकर्मकेस्वरूपविषे कवीपुरुषोंकूंभी मोहकीप्राप्तिकथनकरीथी ॥ तथा (यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्) यावचनविषे जिस कर्मअकर्मकाज्ञान अशुभसंसारतैं मोक्षकाहेतु कथनकऱ्याथा ॥ ताकर्मअकर्मदोनोंकास्वरूप मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ याप्रकारकावचन श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ तिसीहींवचनका व्याख्यानरूप (अकर्मणिचकर्मयःपश्येत्सयुक्तः) यहवचनहै ॥ तहां इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ सोचकार कर्मविषेअकर्मदर्शन तथाअकर्मविषेकर्मदर्शन यादोनोंदर्शनोंके समुच्चयकरावणेवासतैंहै ॥ ताकरिकैयहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ जोपुरुष बुद्धिमान्है तथायुक्तहै ॥ सोईहींपुरुष कृत्स्नकर्मकृत्है ॥ और जोपुरुष केवल बुद्धिमान्हींहै युक्तनहींहै ॥ सोपुरुषभी कृत्स्नकर्मकृत् नहींहै ॥ और जोपुरुष केवल युक्तहींहै बुद्धिमान्नहींहै ॥ सोपुरुषभी कृत्स्नकर्मकृत् नहींहै ॥ इसीअर्थकूं अब स्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ जोपुरुष अकर्मविषे कर्मकूंदेखेहै ॥ सोपुरुष युक्त कह्याजावैहै ॥ तहां स्पंदतैंरहितजो कूटस्थआत्माहै ताकानाम अकर्महै ॥ और स्पंदसहित जोआकाशादिकबाह्यप्रपंचहै तथामनबुद्धि आदिकजो अंतरप्रपंचहै ॥ तादोनोंप्रकारकेप्रपंचकानाम कर्महै ॥ ताकूटस्थवस्तुरूपअकर्मविषे ताप्रपंचरूपकर्मकूं आधारआधेयभावकरिकै अथवा उपादानउपादेयभावकरिकैं अथवा अधिष्ठानअध्यस्तभावकरिकै देखतेहूए शास्त्रवेत्तापुरुष कर्मोकूंकरेहैं ॥ तहां प्रथम सांख्यशास्त्रवालातौं जैसे जपाकुसुमकीरक्तता स्फटिकविषेप्रतीतहोवैहै तैसे संघातके कर्तृत्वादिकधर्म मैंअसंगकूटस्थविषे अविवेकतैं प्रतीतहोवैहैं याप्रकारकीभावनाकरताहूआ कर्मोकूंकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और दूसरा उपनिषदशास्त्रकावेत्तापुरुषतौं जैसे सुवर्णतैंउत्पन्नहूए कुंडलकंकणादिककार्य सुवर्णरूपहींहोवैहैं तैसे ब्रह्मतैं उत्पन्नभया यहसर्वजगत्भी ब्रह्मरूपहींहै यातैं यज्ञादिककर्म तथा ताकर्मकेद्रव्यदेवतादिकसाधन तथामैंकर्मकाकर्त्ता सर्व ब्रह्मरूपहींहैं याप्रकारकीभावनाकरताहूआ कर्मोंकूंकरेहै ॥ यहदोनों युक्त कहेजावेहैं ॥ तहां पूर्वउक्तरीतिसैं जोपुरुष बुद्धिमान्भीहै ॥ परंतु इसप्रकारकायुक्त हैनहीं ॥ सोबुद्धिमान्अयुक्तपुरुष जिसजिसकर्मकूंकरेहै ॥ तेसर्वकर्म तिसपुरुषके असत्हींहोवैहैं॥यातैं तेकर्म तिसपुरुषकूं अशुभसंसारतैं मुक्तकरैनहीं॥तहांश्रुति (योवाएतदक्षरंगार्ग्यविदित्वाऽस्मिन्लोकेजुहोतियजते तपस्तप्यते बहूनिवर्षसहस्त्राण्यंतवदेवास्यतद्भवति) अर्थयह ॥ हेगार्गी जोपुरुष इसअक्षरआत्माकूं नजानिकरिकै इसमनुष्यलोकविषे जिसजिस होमकूंकरेहै तथा जिसजिस यज्ञकूंकरेहै तथाअनेकसहस्त्रवर्षपर्यंत जिसजिस तपकूंकरेहै तेसर्वहोमयज्ञादिककर्म इसपुरुषकूं नाशवान्फलकीहींप्राप्तिकरेहैंइति ॥ और जोपुरुष युक्ततौंहै परंतु बुद्धिमान्है नहीं ॥ सोपुरुष नहींकरणेयोग्यकर्मोंकूंभी करेहै ॥ ताकरिकै सोपुरुष प्रत्यवायकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं पापकेअस्पर्शका कारण जोआत्माकाअपरोक्षज्ञानहै ॥ सोअपरोक्षज्ञान ता निर्बुद्धियुक्तपुरुषकूंहैनहीं ॥ किंतु तिसयुक्तपुरुषकूं केवलपरोक्षज्ञानहींहै ॥ इसी कर्मकूं तथापरोक्षज्ञानकूं (विद्यांचाविद्यांच) याश्रुतिनैं अविद्या विद्या यादोनोंशब्दोंतैं कथनकरिकै तिनदोनोंका समुच्चय कथनकर्याहैइति ॥ अथवा ॥ सो अकर्मविषेकर्मका दर्शन दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं परोक्षदर्शनहोवैहै ॥ दूसरा अपरोक्षदर्शनहोवैहै ॥ तहां परोक्षदर्शनवालातौं ज्ञान कर्म दोनोंकेसमुच्चयका अनुष्ठानकरताहोणेतैं बुद्धिमान् कह्याजावैहै ॥ और दूसरा अपरोक्षदर्शनभी दोप्रकारकाहोवैहै॥तहां एकतौं उपास्यसाक्षात्काररूपहोवैहै ॥ और दूसरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तत्त्वसाक्षात्काररूपहोवैहै॥ तहां जिसवस्तुकीउपासनाकरिये ताकानाम उपास्यहै ॥ सोउपास्य दोनप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं व्याकृतरूपहोवैहै ॥ और दूसरा अव्याकृतरूपहोवैहै ॥ ताउपास्यकेभेदकरिकै सोउपास्यविषयक साक्षात्कारभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां कार्यरूपसूत्रआत्माकानाम व्याकृतहै ॥ और सर्वजगतकेकारणकानाम अव्याकृतहै ॥ तहां ता सूत्ररूपव्याकृतकेसाक्षात्कारवान्पुरुष देहाभिमानतैं रहितहोणेतैं योगशास्त्रविषे विदेह यानामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और ताकारणरूपअव्याकृतकेसाक्षात्कारवान्पुरुष प्रकृतिलय यानामकरिकै कह्याजावैहै ॥ यादोनोंउपासनावोंका (अन्यदेवा हुःसंभवात्) इत्यादिकश्रुतिनैं संभव असंभव यादोनोंशब्दोंतैं कथनकरिकै समुच्चयविधानकर्‍याहै ॥ ताउपासनावा लापुरुष युक्त यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ इसउपासक युक्तपुरुषकूंभी आगेबाकीकर्त्तव्य रहेहै ॥ यातैं यहयुक्तपुरुष भी कृत्स्नकर्मकृत् होइसकैनहीं ॥ किंतु जिसपुरुषकूं ताप्रपंचरूपकर्मकाबाधकरिकै कूटस्थआत्मारूपअकर्मका मुख्य दर्शन प्राप्तभयाहै ॥ सोतत्त्वसाक्षात्कारवान्पुरुषहीं कृतकृत्यहोणेतैं मुख्य कृत्स्नकर्मकृत् कह्याजावैहै ॥ इनसर्वोंविषे प्रथम ज्ञानकर्मकेसमुच्चयकाअनुष्ठानकरणेहारापुरुषतौं देहाभिमानीमनुष्योंविषेहीं बुद्धिमान्है ॥ यातैं अक्रांतदर्शीहो णेतैं सोपुरुष अकवीहीहै ॥ और व्याकृतउपास्यविषयक साक्षात्कारवान् तथाअव्याकृतउपास्यविषयक साक्षात्कार वान् यहमध्यकेदोनों क्रांतदर्शीहोणेतैं यद्यपि कवीहै ॥ तथापि तत्त्ववस्तुविषेमूढहोणेतैं तेदोनों (कवयोप्यत्रमोहि ताः) इसवचनकरिकैकथनकरेहैं ॥ इनदोनोंको व्यवधानकरिकै अशुभ संसारतैंमुक्तिहोवैहै ॥ और तत्त्वसाक्षात्कार वान् उत्तमपुरुषतौं जोवताहूआहीं ताअशुभसंसारतैं मुक्तहोवैहैं ॥ ईहां सूक्ष्मदर्शीपुरुषकानाम क्रांतदर्शीहैइति ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अथवा (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) याश्लोकका यहअर्थकरणा ॥ पूर्व (तत्तेकर्मप्रवक्ष्यामि) यावचनविषे श्रीभगवान् नैं कर्म अकर्म दोनोंकूं वक्तव्यरूपकरिकै कथनकरयाथा ॥ और (कर्मणोह्यपिबोद्धव्यं) यावचनविषे तिनदानोकूं बोद्धव्यरूपकरिकै कथनकरयाथा ॥ सोकर्मअकर्मकाबोध लक्षणतैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं इसश्लोकविषे तिनदोनोंका लक्षणकथनकरणाहीं उचितहै ॥ तहां (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) यावचनकरिकै जो अकर्मकरिकैविशेषितहोवैहै सोईहीं कर्महोवैहै अन्यकर्महोवैनहीं यहकर्मकालक्षण कथनकरयाहै ॥ और (अकर्मणिचकर्मयः) यावचनकरिकै जो कर्मक रिकैविशेषितहोवैहै सोईहीं अकर्महोवैहै यहअकर्मकालक्षण कथनकरयाहै ॥ इसव्याख्यानविषे श्लोकेअक्षरोंकाअ र्थ याप्रकार करणा ॥ द्रव्यदेवतादिकसाधनोंसहितजेयज्ञादिकहै तिनोंकानाम कर्महै ॥ और स्पंदतैंरहितकूटस्थब्र ह्मकानाम अकर्महै ॥ तहां जोपुरुष तासाधनसहितयज्ञादिकरूपकर्मविषे कूटस्थब्रह्मरूपअकर्मकूंदेखेहै ॥ अर्थात् (अ हंक्रतुरहंयज्ञःस्वधाहमहमौषधं ॥ मंत्रोहमहमेवाज्यमहमग्निरहंहुतं) इसभगवत्वचनउक्तरीतिसैं तिनयज्ञादिककर्मोंवि षे तथातिनकर्मोंके द्रव्यदेवतादिकअंगोंविषे जोपुरुष ब्रह्मदृष्टि करेहै ॥ ताब्रह्मदृष्टितैंविना जोकर्म करयाजावैहै ॥ सो कर्म व्यर्थचेष्टारूपहींहोवैहै ॥ याकारणतैं तिनकर्मोंकीगति अत्यंतगहनहैइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोअकर्म कर्मवि षे आरोपणकरीताहै ॥ सोअकर्म क्यावस्तुहै ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (अकर्मणिचकर्मयः इ ति) हेअर्जुन जिसवस्तुविषे पुण्यपापरूपकर्म (पुण्योवैपुण्येनकर्मणाभवतिपापःपापेन) इसश्रुतिकेबलतैं प्रतीतहोवैहैं ॥ तथा जिसवस्तुविषे तापुण्यपापकर्मका सुखदुःखरूपफल अहंसुखी अहंदुःखी याप्रतीतिकेबलतैं प्रतीतहोवैहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सोप्रत्यक्चेतनहीं अकर्मरूपहै ॥ और जैसे सर्पभावतैंरहितरज्जुविषे सर्प अध्यस्तहोवैहै तैसे तास्पंदभावतैंरहित चेतनरूपअकर्मविषे यहस्पंदरूपकर्म अध्यस्तहै ॥ याप्रकार जोपुरुष ताअकर्माविषे कर्मकूंदेखेहै ॥ ईहांयहतात्पर्य है ॥ जैसे रज्जुविषेअध्यस्तसर्पकूं देखताहूआजोपुरुषहै ॥ तापुरुषकूं यहसर्पनहींहै किंतु रज्जुहींहै याप्रकारके आप्तवक्तापुरुषकेवचनतैं जोकदाचित् विक्षेपकीप्रबलतातैं रज्जुत्वकाज्ञाननहींहोवैहै ॥ तौं सोआप्तवक्तापुरुष ताभ्रांतपुरुषकेप्रति इससर्पकूं तूं रज्जुदृष्टिकरिकै उपासनाकर याप्रकारका जबी उपदेशकरेहै ॥ तबी सोभ्रांतपुरुष ताउपासनाकीदृढतातैं तासर्पकाविस्मरणकरिकै तारज्जुत्वकूंहीं साक्षात्कारकरेहै ॥ और जोपुरुष यहसर्पनहींहै किंतु रज्जुहींहै याप्रकारकेवचनतैंहीं तारज्जुकेवास्तवस्वरूपकूंजानेहै ॥ तिसपुरुषकूं यहसर्प रज्जुहींहै याप्रकारकीवृत्तियोंका निरंतर प्रवाहरूपउपासना करणेका किंचित्मात्रभी प्रयोजननहींहै ॥ इसप्रकार कूटस्थब्रह्मरूपअकर्मविषे अध्यस्त जो कर्त्ताक्रियादिक प्रपंचरूपकर्महै ॥ ताप्रपंचरूपकर्मकूं तत्त्वमसि इसवचनतैं बाधकरिकै शुद्धअंतःकरणवालेपुरुषकूं ताकूटस्थब्रह्मरूपअकर्मका बोधहोइसकैहै ॥ और जिसपुरुषकाअंतःकरण शुद्धनहींहै ॥ सोपुरुष जबी ताकर्मकूं अकर्मदृष्टिकरिकैउपासनाकरेहै तबी ताउपासनाकीदृढतातैं सोपुरुषभीताकर्मकेतिरोधानकरिकै ताअकर्मकेवास्तवस्वरूपकूं साक्षात्कारकरैइति ॥ इसप्रकारका विलक्षणव्याख्यानकरिकै ताटीकाकारनैं श्रीभाष्यकारभगवान्के आगे याप्रकारकीप्रार्थनाकरीहै ॥ तहांश्लोक (व्याख्यातुरपिमेनास्तिभाष्यकारेणतुल्यता ॥ गुहावद्योतिनोप्यस्ति किंदीपस्यार्कतुल्यता) अर्थयह ॥ इसप्रकार विलक्षणव्याख्यानकूंभी करणेहाराजोमैंहूं ॥ तिसहमारेकूं भगवान्भा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ष्यकारोंकीतुल्यता होवैनहीं ॥ जैसे किसीगुहाविषेप्रकाशकरणेहारेभीदीपककूं सूर्यभगवान्‌कीतुल्यता होवैनहीं इ
ति ॥ १८ ॥ ❋ ॥ अब पूर्वउक्तपरमार्थदर्शीपुरुषकूं कर्तृत्व अभिमानकेअभावतैं कर्मोंकरिकैअलिप्तपणा श्री
॥२०८॥ भगवान् (यस्यसर्वे) इसवचनतैंआदिलैके (ब्रह्मकर्मसमाधिना) इसवचनपर्यंत विस्तारतैं कथनकरेहै ॥ 430

यस्यसर्वेसमारंभाःकामसंकल्पवर्जिताः॥ज्ञानाग्निदग्धकर्माणंतमाहुःपंडितंबुधाः १९॥

यस्य । सर्वे । समारंभाः । कामसंकल्पवर्जिताः । ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं । तं । आहुः । पंडितं । बुधाः । इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन जिसपुरुषके सर्व कर्म कामसंकल्पतैंरहितहैं तथा ज्ञानरूपअग्निकरि
कैदग्धहूएहैंकर्मजिसके तिसपुरुषकूं ब्रह्मवेत्तापुरुष पंडित कहेहैं ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वश्लोकविषेकथनकरयेहूए जिसपरमार्थदर्शीपुरुषके सर्व लौकिकवैदिककर्म कामतैंरहितहूएहैं तथासंकल्पतैंरहितहूएहैं ॥ ईहां स्वर्गादिकफलोंकीजातृष्णाहै ताकानाम कामहै ॥ और मैं कर्मकाकर्त्ताहूं याप्रकारका जो कर्तृत्वअभिमानहै ताकानामसंकल्पहै ॥ ताकामसंकल्पदोनोंतैं जिसपुरुषके तेकर्म रहितहूएहैं ॥ अर्थात् जिसपु रुषके तेसर्वकर्म केवल लोकसंग्रहवासतै अथवा शरीरकेजीवन्मात्रवासतै प्रारब्धकर्मकेवेगतैं व्यर्थचेष्टारूपहूएहैं ॥ और पूर्वश्लोकविषेकथनकरयाजो प्रपंचरूपकर्मविषे सत्तास्फूर्त्तिरूपकरिकै चैतन्यब्रह्मरूपअकर्मकादर्शन तथा ताब्र ॥२०८॥
ह्मरूपअकर्मविषे कल्पितरूपकरिकै प्रपंचरूपकर्मकादर्शन तादर्शनकानामज्ञानहै ॥ सोज्ञान प्रसिद्धअग्निकीन्यांई स

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्वकर्मोंका दाहकहोणेतैं अग्निरूपहै ॥ ताज्ञानरूपअग्निकरिकै दग्धहोइगयेहैं शुभअशुभकर्मजिसके ॥ तहां श्रीव्या
ससूत्रं (तदधिगमउत्तरपूर्वाघयोरश्लेषविनाशौतद्व्यपदेशात्) अर्थयह ॥ तापरमात्मादेवकेसाक्षात्कारहूए तासा
क्षात्कारतैंउत्तर करयेहूए पुण्यपापकर्मोंका ताविद्वान्पुरुषकूं संबंधहीं नहींहोवैहै ॥ और तासाक्षात्कारतैंपूर्वकरयेहूए
संचितकर्मोंका ताज्ञानरूपअग्निकरिकै नाशहोइजावैहै ॥ यहवार्ता बहुतश्रुतिस्मृतियोंविषे देखणेमैंआवेहैइति ॥ ऐ
सेविद्वान्पुरुषकूं ब्रह्मवेत्तापुरुष वास्तवतैं पंडित कहेहैं ॥ ईहां सर्वत्र चैतन्यब्रह्ममात्रकूंविषयकरणेहारी जाअंतःक
रणकीवृत्तिहै तावृत्तिकानाम पंडाहै ॥ सापंडानामावृत्ति जिसपुरुषके अंतःकरणविषेउत्पन्नहोवै तापुरुषकानाम पं
डितहै ॥ और लोकविषेभी सम्यक्दर्शीपुरुषहीं पंडित कह्याजावैहै ॥ भ्रांतपुरुष पंडित कह्याजावैनहीं ॥ सोसम्य
क्दर्शीपणा विद्वान्पुरुषविषेहींहै ॥ अज्ञानीपुरुषोंविषे सोसम्यक्दर्शीपणा हैनहीं ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुषहीं पंडितहै
इति ॥ १९ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताज्ञानरूपअग्निकरिकै पूर्वआरंभकरयेहूए प्रारब्धकर्मतैंभिन्नकर्मोंका
दाहहोवो ॥ तथा आगामिकर्मोंकीअनुत्पत्तिभीहोवो ॥ परंतु ताज्ञानकीउत्पत्तिकालविषे कऱ्याहूआजोकर्महै सोक
र्म तिनपूर्वकर्मोंविषे तथाउत्तरकर्मोंविषे अंतर्भूतहोइसकैनहीं ॥ यातैं सोकर्मतौं ताज्ञानवान्पुरुषकूं अवश्यकरिकै
फलकीप्राप्तिकरैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताशंकाकीनिवृत्तिकरेहै ॥

त्यक्त्वाकर्मफलासंगंनित्यतृप्तोनिराश्रयः ॥ कर्मण्यभिप्रवृत्तोपिनैवकिंचित्करोतिसः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्यक्त्वा । कर्मफलासंगं । नित्यतृप्तः निराश्रयः । कर्मणि अभिप्रवृत्तः अपि नैव किंचित् करोति सः ॥ इतिपद० ॥

हेअर्जुन कर्मफलकेआसंगकूं परित्यागकरिकै नित्यतृप्तहूआ तथानिराश्रयहूआ कर्मविषे प्रवृत्तहूआ भी सोविद्वान्पुरुष किंचित्मात्रभी नहीं करेहै ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नित्यनैमित्तिककर्मोविषे जो मैंइनकर्मोकाकर्त्ताहूं याप्रकारका कर्तृत्वअभिमानहैं ताकर्तृत्वअभिमानकानाम कर्मआसंगहै ॥ और तिनकर्मोके स्वर्गादिकफलोंविषे जाभोगकोअभिलाषाहै ताअभिलाषाकानाम फलआसंगहै ॥ ताकर्मआसंगका तथाफलआसंगका परित्यागकरिकै अर्थात् अकर्त्ताअभोक्ताआत्माकेयथार्थज्ञानकरिकै ताआसंगका बाधकरिकै जोपुरुष नित्यतृप्तहूआहै ॥ अर्थात् परमानंदस्वरूपकेलाभकरिकै जोपुरुष सर्वपदार्थोविषे निराकांक्षहूआहै ॥ तथा जोपुरुष निराश्रयहूआहै ॥ अर्थात् अद्वैतआत्मदर्शनकरिकै जोपुरुष देहइंद्रियादिरूपआश्रयकेअभिमानतैं रहितहूआहै ॥ ऐसाजीवन्मुक्तपुरुष समाधितैंव्युत्थानदशाविषे प्रारब्धकर्मकेवशतैं लोकदृष्टिकरिकै लौकिकवैदिककर्मोके सांगोपांगअनुष्ठानकरणेवासतै प्रवृत्तहूआभी सोविद्वान्पुरुष आपणीपरमार्थदृष्टिकरिकै किंचित्मात्रभी कर्मकूंकरतानहीं ॥ जिसकारणतैं निष्क्रियआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै ताविद्वान्पुरुषकेतेसर्वकर्म बाधभावकूंप्राप्तहूएहैं ॥ ईहां ताविद्वान्पुरुषके (नित्यतृप्तःनिराश्रयः) यहजो दोविशेषणकथनकरेहैं ॥ तेदोनोंविशेषण हेतुरूपहैं ॥ तहां फलआसंगकीनिवृत्तिविषेतौं नित्यतृप्तः यहहेतुहै ॥ और कर्मआसंगकीनिवृत्तिविषे निराश्रयः यहहेतुहै ॥ ताकरिकै यहदोअनुमान सिद्धहोवैहैं ॥ सोविद्वान्पुरुष फलकीअभिलाषारूप फलआसंग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तैंरहितहै नित्यतृप्तहोणेतैं जोपुरुष ताफलआसंगतैंरहित नहींहोवैहै सोपुरुष नित्यतृप्तभी नहींहोवैहै जैसे अज्ञानी पुरुषहैइति ॥ और सोविद्वान्पुरुष कर्तृत्वअभिमानरूप कर्मआसंगतैंरहितहै निराश्रयहोणेतैं जोपुरुष ताकर्मआसंगतैंरहित नहींहोवैहै सोपुरुष निराश्रयभी नहींहोवैहै जैसे अज्ञानीपुरुषहै इति ॥ २० ॥ ※ ॥ तहां अत्यंत विक्षेपकेहेतु जे ज्योतिष्टोमादिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंकूंभी जबी तासम्यक्ज्ञानकेवशतैं बंधकीहेतुताहोवैनहीं ॥ तबी शरीरकीस्थितिमात्रकेहेतु तथाविक्षेपकीनहींप्राप्तिकरणेहारे जेभिक्षाअटनादिक यतिकेकर्महैं ॥ तिनकर्मोंकूं तासम्यक्दर्शनकेबलतैं बंधकीहेतुता नहींहै याकेविषे क्याकहणाहै ॥ याप्रकारके कैमुतिकन्यायकरिकै श्रीभगवान् तिनभिक्षाअटनादिककर्मोंविषे बंधकीहेतुताकाअभाव कथनकरेहै ॥

निराशीर्यतचित्तात्मात्यक्तसर्वपरिग्रहः॥शारीरंकेवलंकर्मकुर्वन्नाप्नोतिकिल्बिषं २१॥

निराशीःयतचित्तात्मा। त्यक्तसर्वपरिग्रहः।शारीरं। केवलं। कर्म। कुर्वन्। नं। आप्नोति। किल्बिषं॥इतिपदच्छेदः॥ हेअर्जुन जोपुरुष तृष्णातैं रहितहै तथा जोत्यैहैचित्त आत्माजिसनै तथात्यागकरेहैसर्वपरिग्रहजिसनैं सोपुरुष कर्तृत्वअभिमानतैंरहित शरीरकीस्थितिविषेउपयोगी भिक्षाअटनादिककर्मकूं करताहूआ किल्बिषकूं नहीं प्राप्तहोवैहै इतिप० ॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष स्वर्गादिकफलकीतृष्णातैंरहितहै ॥ तथा जिसपुरुषनैं अंतःकरणरूपचित्तकूं तथाबाह्य इंद्रियसहितदेहरूपआत्माकूं प्रत्याहारकरिकै निग्रहकऱ्याहै ॥ जिसकारणतैं सोपुरुष जितइंद्रियहै ॥ तिसकारणतैंहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सोपुरुष तृष्णातैंरहितहोणेतैं त्यक्तसर्वपरिग्रहहै ॥ ईहां विषयभोगकेसाधनरूप जेधनादिकउपकरणहैं तिनोंकाना म परिग्रहहै ॥ ते विषयभोगकेउपकरणरूप सर्वपरिग्रह त्यागकरेहैंजिसनैं ताकानाम त्यक्तसर्वपरिग्रहहै ॥ ऐसा निराशी तथायतचित्तात्मा तथात्यक्तसर्वपरिग्रह संन्यासी प्रारब्धकर्मकेवशतैं शारीरकर्मकूंकरताहूआ किल्बिषकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ ईहां शरीरकीस्थितिमात्रहैप्रयोजनजिनोंका ऐसेजे कंथाकौपीनादिकोंकाग्रहणरूप तथा भिक्षा अटनादिरूप कायिक वाचिक मानस कर्महैं ॥ जेकर्म संन्यासीकेप्रति शास्त्रनैं विधानकऱ्येहैं ॥ तिनकर्मोकानाम शा रीरकर्महै ॥ ऐसेशारीरकर्मोकूं कर्तृत्वअभिमानतैंरहितहोइकै अन्यारोपितकर्तृत्वरूपकरिकै करताहूआ सोसंन्या सी धर्मअधर्मकाफलभूतअनिष्टसंसाररूपकिल्बिषकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ यद्यपि पापकूंहीं किल्बिषकहेहैं ॥ तथापि पा पकीन्यांई सकामपुण्यभी अनिष्टफलकाहींहेतुहोवैहै ॥ यातैं सोपुण्यभी किल्बिषरूपहींहैं इति ॥ और किसीटीका विषे (शारीर) इसपदका यहअर्थकऱ्याहै ॥ शरीरकरिकै जोकर्म सिद्धहोवैहै ॥ ताकर्मकानाम शारीरहैइति ॥ सोइसव्या ख्यानविषे (केवलंकर्मकुर्वन्) इतनैंवचनमात्रकहणेतैं जोअर्थ सिद्धहोवैहै तिसतैंअधिकअर्थ ताशारीरपदकेकहणे तैं सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं इतरकर्मका अव्यावर्त्तकहोणेतैं सोशारीरपद व्यर्थहींहोवैंगा ॥ और सोटीकाकार जोयहकहै ॥ वाचिक मानस कर्मकी व्यावृत्तिकरणेवासतै सोशारीरपदहै ॥ यातैं सोशारीरपद व्यर्थनहींहै इति ॥ सोयहकह णाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं (शारीरंकेवलंकर्म) यावचनविषेस्थितजोकर्मपदहै ॥ सोकर्मपद विहितकर्मकावाचक है ॥ अथवा विहितनिषिद्धसाधारण कर्ममात्रकावाचकहै ॥ तहां सोकर्मपद विहितकर्मका वाचकहै यहप्रथमपक्ष जो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अंगीकारकरिये ॥ तौं तावचनका यहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ शास्त्रविहित शारीरकर्मकूंकरताहूआ सोविद्वान्पुरुष ताकि ल्बिषकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ तहां विहितकर्मविषे किल्बिषकीहेतुता कहांभी प्राप्तहैनहीं ॥ और प्राप्तअर्थकाहीं प्र तिषेधहोवैहै ॥ अप्राप्तअर्थका प्रतिषेध होवैनहीं ॥ यातैं अप्राप्तअर्थका प्रतिषेधकहोणेतैं सोवचन अनर्थकहोवैंगा ॥ और शास्त्रविहित शारीरकर्मकूंकरताहूआ सोविद्वान्पुरुष किल्बिषकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकहणेतैं अर्थतैंयहासिद्ध होवैहै ॥ शास्त्रविहित वाचिक मानस कर्मकूंकरताहूआ सोपुरुष ताकिल्बिषकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ सोयहवार्त्ता शास्त्रतैं विरुद्धहींहै ॥ और सोकर्मपद विहितनिषिद्धसाधारणकर्ममात्रका वाचकहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये ॥ तौंय हअर्थ सिद्धहोवैगा ॥ शास्त्रविहित तथानिषिद्ध शारीरकर्मकूंकरताहूआ सोविद्वान्पुरुष ताकिल्बिषकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ सोयहकहणाभी पूर्वकीन्यांई अत्यंतविरुद्धहींहै ॥ यातैं यहशारीरपदकाव्याख्यान अत्यंतअसंगतहै ॥ किं तु पूर्वउक्तव्याख्यानहीं समीचीनहै इति ॥ २१ ॥ ※ ॥ तहांपूर्वश्लोकविषे त्यागकऱ्याहैसर्वपरिग्रहजिसनैं ऐ सेसंन्यासीकूं शरीरकीस्थितिमात्रविषेउपयोगीकर्मोकीकर्त्तव्यता कथनकरीथी ॥ तहां अन्नवस्त्रादिकोंतैंविना शरी रकीस्थितिहीं संभवतीनहीं ॥ यातैं याचनाआदिक आपणेप्रयत्नकरिकैभी तासंन्यासीनैं तिनअन्नवस्त्रादिकोंका सं पादनकरणा याप्रकारके अर्थकेप्राप्तहूए ॥ श्रीभगवान् ताकेविषे नियमकूं कथनकरेहै ॥

यदृच्छालाभसंतुष्टोद्वंद्वातीतोविमत्सरः॥समःसिद्धावसिद्धौचकृत्वापिननिबध्यते२२

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यदृच्छालाभसंतुष्टः । द्वंद्वातीतः । विमत्सरः । समः । सिद्धौ । असिद्धौ । च । कृत्वा । अपि । न । निबध्यते ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेअर्जुन जोपुरुष यदृच्छालाभकरिकैसंतुष्टहै तथाद्वंद्वधर्मोतैंरहितहै तथामत्सरतैंरहितहै तथा प्राप्तिविषे तथा अप्राप्तिविषे समानहै सोपुरुष तिनभिक्षाअटनादिककर्मोकूं करिकै भी नहीं बंधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ संन्यासीकेप्रति शास्त्रनैं विधानकऱ्याजो शरीरकीस्थितिमात्रविषेउपयोगी प्रयत्नहै ॥ ताशास्त्रविहितप्रयत्नतैंभिन्न जितनैंकी याचना कृषि सेवा वाणिज्य आदिकप्रयत्नहैं जेप्रयत्न संन्यासीकेप्रति शास्त्रनैं निषेधकऱ्येहैं ॥ तिनशास्त्रनिषिद्धप्रयत्नोंकूंनहींकरणा याकानाम यदृच्छाहै ॥ तायदृच्छाकरिकै जोशास्त्रविहित अन्नवस्त्रादिकपदार्थों कालाभहै ॥ तालाभकरिकै जोसंन्यासी संतुष्टहैं अर्थात् तिसतैंअधिकपदार्थोंकीतृष्णातैंरहितहै ॥ तासंन्यासीका नाम यदृच्छालाभसंतुष्टहै ॥ तहां शास्त्रविषे (भैक्ष्यंचरेत्) यावचनतैं संन्यासीकूं भिक्षाकाविधानकरिकै पश्चात् यहवचन कथनकऱ्याहै (अयाचितमसंक्लृप्तमुपपन्नंयदृच्छया) अर्थयह ॥ भिक्षाअटनकरणेवासतैं जोउद्यमहैं ताउद्यमतैं पूर्वकालविषे तासंन्यासीकेप्रति किसीश्रेष्ठगृहस्थनैं निमंत्रणकऱ्याजोभिक्षाअन्नहै ताभिक्षाअन्नकानाम अयाचितहै ॥ ताअयाचित भिक्षाअन्नकूंभी सोसंन्यासी ग्रहणकरै ॥ और संकल्पतैंविनाहीं पंचगृहोतैं अथवा सप्तगृहोतैं माधुकरीवृत्तितैंप्राप्तभयाजोअन्नहै ताअन्नकानाम असंक्लृप्तहै ॥ ताअसंक्लृप्तअन्नकूंभी सोसंन्यासी ग्रहणकरै ॥ और आपणे प्रयत्नतैंविनाहीं तासंन्यासीकेसमीप भक्तजनोंनैं प्राप्तकऱ्याजोपक्वअन्नहै ताअन्नकानाम उपपन्नहै ॥ ऐसेउपपन्नअन्नकूंभी सोसंन्यासी ग्रहणकरैइति ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक (माधुकरमसंक्लृप्तंप्राक्प्रणी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तमयाचितं ॥ तात्कालिकोपपन्नंचभैक्ष्यंपंचविधंस्मृतंइति ॥) अर्थयह ॥ माधुकर १ प्राक्प्रणीत २ अयाचित ३ तात्कालिक ४ उपपन्न ५ यहपंचप्रकारका भिक्षाअन्न संन्यासीकेवासतै होवैहै ॥ तहां मनकेसंकल्पकाअविषयभूत जेती नगृहहैं अथवा पंचगृहहैं अथवा सप्तगृहहैं तिनगृहोतैं जोअन्न प्राप्तहोवैहै ताकानाम माधुकरहै ॥ १ ॥ और शयनके उत्थानतैंपूर्व किसीभक्तजननैं करीजाभिक्षाअन्नकीप्रार्थनाहै सोभिक्षाअन्न प्राक्प्रणीत कह्याजावैहै ॥ २ ॥ और भिक्षाअटनकेउद्यमतैंपूर्व किसीभक्तजननैं भिक्षाअन्नका निमंत्रणदीया सोभिक्षाअन्न अयाचित कह्याजावैहै ॥ ३ ॥ और भिक्षाकेअटनवासतैउद्यमकीयेतैंअनंतर जोकिसीभक्तजननैं भिक्षावासतैप्रार्थनाकरी सोभिक्षाअन्न तात्कालिक कह्याजावैहै ॥ ४ ॥ और भिक्षाकेसमयविषे आपणेआसनऊपरिहीं कोईभक्तजन पक्कअन्नलेआया सोअन्न उपपन्न कह्याजावैहैइति ॥ ५ ॥ इत्यादिकशास्त्रकेवचन तासंन्यासीकेप्रति भिक्षाअन्नकेनियमकाविधानकरतेहूए तिनयाचनादिकप्रयत्नोंकीनिवृत्तिकूं कथनकरेहैं ॥ यहवार्त्ता मनुभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (नचोत्पातनिमित्ताभ्यांननक्षत्रांगविद्यया ॥ नानुशासनवादाभ्यांभिक्षांलिप्सेतकर्हिचित् ॥) अर्थयह ॥ यहसंन्यासी उत्पातकरिकै तथा निमित्तकरिकै तथानक्षत्रविद्याकरिकै तथाअंगविद्याकरिकै तथाअनुशासनकरिकै तथावादकरिक कदाचित्भी भिक्षाग्रहणकरणेकीइच्छा नहींकरै ॥ ईहां भूकंपादिकोंके शुभअशुभफलका कथनकरणा याकानाम उत्पातहै ॥ और चक्षुआदिकोंकीस्पंदरूपक्रियाके शुभअशुभफलका कथनकरणा याकानाम निमित्तहै ॥ और अश्विनीआदिकनक्षत्रोंके शुभअशुभफलका कथनकरणा याकानाम नक्षत्रविद्याहै ॥ और हस्तादिकोंकीरेखावोंके शुभअशुभफलका कथ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नकरणा याकानाम अंगविद्याहै ॥ और यहनीतिमार्ग इसप्रकारकाहै इसप्रकार तुमोनैं इसनीतिमार्गविषेवर्त्तणा याप्रकारकेउपदेशकानाम अनुशासनहै ॥ और शास्त्रकेअर्थकाकथनकरणा याकानाम वादहै ॥ इत्यादिकउपायोंक रिकै संन्यासीनैं आपणेशरीरकानिर्वाह कदाचित्भीनहींकरणा ॥ किंतु पूर्वउक्तरीतिसैं भिक्षाअन्नसैं शरीरकानिर्वा हकरणाइति ॥ और (यतयोभिक्षार्थंग्रामंप्रविशंति) इत्यादिकशास्त्रनैं विधानकरयाजो संन्यासीका भिक्षाकेवासतै प्रयत्नहै ॥ सोशास्त्रविहितप्रयत्नतौं संन्यासीनैं अवश्यकरिकैकरणा ताशास्त्रविहितप्रयत्नकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य अन्न वस्त्रादिकपदार्थभी शास्त्रकरिकैनियतहींहोवैहै ॥ यातैं शास्त्रविहितप्रयत्नकरिकै जोसंन्यासीकूं शास्त्रविहितअन्नवस्त्रा दिकपदार्थोंकोप्राप्तिहै सोयदृच्छालाभरूपहींहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक (कौपीनयु गलंवासःकंथांशीतनिवारिणीं ॥ पादुकेचापिगृह्णीयात्कुर्यान्नान्यस्यसंग्रहं) अर्थयह ॥ यहसंन्यासी दोकौपीनोंकूं तथा ताकौपीनऊपरिबांधणेवासतै दोकटीवस्त्रोंकूं तथाशीतकीनिवृत्तिकरणेवासतै कंबलादिरूपकंथाकूं तथापादुका कूं ग्रहणकरै ॥ इसतैंअधिक द्रव्यादिकपदार्थोंकासंग्रह नहींकरैइति ॥ इसप्रकार दूसरेभी विधिनिषेधरूपवचन जा निलेणे ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनयाचनादिक आपणेप्रयत्नतैंविना अन्नवस्त्रादिकोंकेअप्राप्तहूए क्षुधा शीत उष्ण आ दिकोंकरिकैपीडितहूआ सोसंन्यासी किसप्रकार जीवैंगा ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (द्वंद्वातीतःइ ति) हेअर्जुन क्षुधापिपासा शीतउष्ण वातवर्षा इत्यादिकसर्वद्वंद्वधर्मोतैं सोसंन्यासी रहितहै ॥ तात्पर्ययह ॥ समा धिदशाविषेतौं ताब्रह्मवेत्तासंन्यासीकूं तेद्वंद्वधर्म स्फुरणहींहोवैनहीं ॥ और तासमाधितैंव्युत्थानदशाविषे यद्यपि तेद्वंद्व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धर्मस्फुरणहोवैहैं ॥ तथापि परमानंदस्वरूप अद्वितीयअकर्त्ताअभोक्ताआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै तिनसर्वद्वंद्वधर्मोंका बाधहोइजावैहै ॥ यातैं तिनबाधितद्वंद्वधर्मोंकरिकै हन्यमानहूआभी सोसंन्यासी चित्तकेक्षोभतैंरहितहींहोवैहैंइति ॥ जिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी द्वंद्वधर्मोंतैंरहितहै ॥ तिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी अन्यपुरुषकूं किसीवस्तुकी प्राप्तिविषे तथा आपणेकूं किसीवस्तुकीअप्राप्तिविषे विमत्सरहै ॥ ईहां परकोउत्कृष्टताके नसहनपूर्वक जोआपणी उत्कृष्टताकीइच्छाहै ताकानाम मत्सरहै ॥ तामत्सरतैंजोरहितहोवै ताकानाम विमत्सरहैइति ॥ और जिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै तामत्सरतैंरहितहै ॥ तिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी तायदृच्छालाभकी प्राप्तिविषे तथाअप्राप्तिविषे समानहै ॥ अर्थात् तायदृच्छालाभकी प्राप्तिविषेतौं हर्षतैंरहितहै और अप्राप्तिविषे विषादतैंरहितहैइति ॥ ऐसाब्रह्मवेत्तासंन्यासी आपणेअनुभवकरिकैतौं अकर्त्ताहींहै ॥ परंतु अन्यपुरुषौंनैं ताकेविषे आरोपणकऱ्याजोकर्तृत्वहै ॥ ताआरोपितकर्तृत्वकरिकै सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी शरीरकीस्थितिमात्र विषेउपयोगी भिक्षाअटनादिक शास्त्रविहितकर्मोंकूं करताहूआभी बंधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं बंधकेहेतुरूप अज्ञानसहितकर्मोंका पूर्वउक्तज्ञानरूपअग्निकरिकै दाहहोइगयाहै इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वआपनैं यहकह्याथा ॥ त्यागकरेहैं सर्वपरिग्रहजिसनैं तथायदृच्छालाभकरिकै संतोषकूंप्राप्तहूआहैचित्तजिसका ऐसाजोसंन्यासीहै ॥ तासंन्यासीके शरीरमात्रकीस्थितिविषेउपयोगी जेभिक्षाअटनादिककर्महैं ॥ तिनभिक्षाअटनादिककर्मोंकूं करताहूआभी सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी बंधकूंप्राप्तहोवैनहींइति ॥ याआपकेकहणेतैं यहअर्थ प्रतीतहोवैहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गृहस्थआश्रमविषेस्थित जे जनकअजातशत्रुआदिकब्रह्मवेत्ताहैं ॥ तिनजनकादिकोंके जेयज्ञादिककर्महैं ॥ ते यज्ञादिककर्म तिनजनकादिकोंके अवश्यकरिकै बंधकेहेतुहोवैंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ताशंकाकीनिवृत्तिकरणेवास तै श्रीभगवान् (त्यक्त्वाकर्मफलासंगं) इत्यादिकवचनकरिकैकथनकरयेहूएअर्थकूं अब स्पष्टकरिकै कथनकरेहै ॥

गतसंगस्यमुक्तस्यज्ञानावस्थितचेतसः॥ यज्ञायाचरतःकर्मसमग्रंप्रविलीयते ॥ २३ ॥

गतसंगस्य । मुक्तस्य । ज्ञानावस्थितचेतसः । यज्ञाय । आचरतः । कर्म । समग्रं । प्रविलीयते ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन फलकीअभिलाषातैंरहित तथाअध्यासतैंरहित तथाज्ञानविषेस्थितहैचित्तजिसका तथायज्ञादिकोंकेसंरक्षणवासतै आचरणकरताहूआ जोविद्वान्पुरुषहै ताविद्वान्पुरुषके तेयज्ञादिककर्म फलसहित नाशकूंप्राप्तहोवैहैं॥इतिपदार्थः॥ ॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष गतसंगहै अर्थात् स्वर्गादिकफलोंकीअभिलाषातैंरहितहै ॥ तथाजोपुरुष मुक्तहै अर्थात् मैं कर्त्ताहूं मैंभोक्ताहूं याप्रकारकेकर्तृत्वभोक्तृत्वअध्यासतैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष ज्ञानावस्थितचेतस्है अर्थात् तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यतैंजन्यनिर्विकल्पकरूप जीवब्रह्मकेअभेदज्ञानविषे अवस्थितहूआहैचित्तजिसका ऐसाजोस्थितप्रज्ञपुरुषहै ॥ ईहां (गतसंगस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः) यातीनपदोंकरिकै ताविद्वान्पुरुषके तीनविशेषण कथनकरे ॥ तहां पूर्वपूर्वविशेषणकीसिद्धिविषे उत्तरउत्तरविशेषण हेतुरूपहै ॥ ताकरिकै यहदोअनुमान सिद्धहोवैहैं ॥ सोविद्वान्पुरुष फलकीअभिलाषारूपसंगतैंरहितहै कर्तृत्वभोक्तृत्वअध्यासतैंरहितहोणेतैं जोपुरुष तासंगतैंरहितनहींहोवै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है सोपुरुष ताअध्यासतैंरहितभीनहींहोवैहै जैसे अज्ञानीपुरुषहैइति ॥ और सोविद्वान्पुरुष ताअध्यासतैंरहितहै स्थितप्रज्ञहोणेतैं जोपुरुष ताअध्यासतैंरहितनहींहोवैहै सोपुरुष स्थितप्रज्ञभीनहींहोवैहै जैसे आज्ञानीपुरुषहैइति ॥ ऐसाब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषभी प्रारब्धकर्मकेवशतैं वेदविहितयज्ञदानादिकोंके संरक्षणकरणेवासतै अर्थात् ज्योतिष्टो मादिकयज्ञोंविषे श्रेष्ठाचारताकरिकै लोकोंकीप्रवृत्तिकरावणेवासतै अथवा (यज्ञोवैविष्णुः) इत्यादिकवचनोंविषे यज्ञश ब्दकरिकैकथनकरयाजोविष्णुहै ताविष्णुकीप्रसन्नतावासतै यज्ञदानादिककर्मोंकूंकरेहै ॥ परंतु ताविद्वान्पुरुषके तेय ज्ञदानादिकसर्वकर्म समग्र नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ईहां अग्रनाम फलकाहै ॥ ताफलरूपअग्रकेसहितजोविद्यमानहोवै ताकानाम समग्रहै ॥ अर्थात् तत्त्वसाक्षात्कारकेबलतैं अविद्यारूपकारणकेनिवृत्तहूए ताविद्वान्पुरुषके तेफलसहि तकर्म नाशकूंहींप्राप्तहोवैहैं ॥तहांश्रुति ॥ (तद्यथेषीकातूलमग्नौप्रोतंप्रदूयेतैवंहास्यसर्वेपाप्मानःप्रदूयंतेइति ॥) अर्थ यह ॥ जैसे प्रज्वलितअग्निविषे प्राप्तहूआ इषीकातूल नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे इसब्रह्मवेत्ता विद्वान्पुरुषके सर्व पुण्यपापकर्म ज्ञानरूपअग्निकरिकै नाशकूंप्राप्तहोवैहैंइति ॥ इसीअर्थकूं श्रीभगवान् आपहीं (ज्ञानाग्निःसर्वकर्माणिभस्म सात्कुरुतेतथा) इसश्लोकविषे कथनकरैंगे इति ॥ २३ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोक्रियमाणकर्म फलकूंउत्प न्नकरिकै कैसेनाशकूंप्राप्तहोवैंगा ॥ किंतु फलकेदीयेतैंविना सोकर्म नाशनहींहोवैंगा ॥ काहेतैं (नाभुक्तंक्षीयतेकर्मकल्प कोटिशतैरपि) अर्थयह फलकेभोगतैंविना यहशुभअशुभकर्मकल्पकोटीशतकरिकैभी नाशकूंप्राप्तहोवैनहींइति ॥ इ त्यादिकवचनोंविषे फलकेभोगतैंविना तिनकर्मोंकेनाशका निषेधहींकरयाहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान्

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै ताकर्मकेकारणकानाशहोणेतैं साकर्मभी नाशकूंहींप्राप्तहोवैहै याप्रकारकेउत्तरकूं कथनकरेहैं ॥ अ०४

ब्रह्मार्पणंब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौब्रह्मणाहुतं ॥ ब्रह्मैवतेनगंतव्यंब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ २४ ॥

ब्रह्म । अर्पणं । ब्रह्म । हविः । ब्रह्माग्नौ । ब्रह्मणा । हुतं । ब्रह्म । एव । तेन । गंतव्यं । ब्रह्म । कर्मसमाधिना ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन अर्पणभी ब्रह्म हींहै तथा हविभी ब्रह्महींहै तथा ब्रह्मरूपअग्निविषे ब्रह्मरूपकर्त्तानैं जोह वनकर्याहैंसोहवनभी ब्रह्महींहै तथा तिसंहवनकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यस्वर्गादिकभी ब्रह्मरूपहींहै तथाकर्मविषेब्रह्मबुद्धिवालेपुरुषनैंभी परमानंदस्वरूपब्रह्महीं गंतव्यहै ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ कर्ता कर्म करण संप्रदान अधिकरण यापंचप्रकारकेकारकोंकरिकै यज्ञादिरूपक्रिया सिद्धहोवैहै ॥ तहां इंद्रादिकदेवतावोंकाउद्देशकरिकै जोघृतादिरूपद्रव्यका त्यागकरणाहै ताकानाम यागहै ॥ सोयागहीं त्यागकरणे योग्यघृतादिकद्रव्यका अग्निविषेप्रक्षेपकरणेतैं होम इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ तहां उद्दिश्यमानइंद्रादिकदेवतातौं संप्रदानकारकरूपहैं ॥ और त्यागकरणेयोग्यजेघृतादिकहैं तेघृतादिक हविष् याशब्दकरिकैकहेजावैहैं ॥ सोघृता दिरूपहविष्तौं त्यागप्रक्षेपरूप धातुअर्थका साक्षात् कर्मरूपहै ॥ और ताकाफलभूत स्वर्गादिक व्यवहितभावना काकर्मरूपहैं ॥ और अग्निविषे ताघृतादिरूपहविष्केप्रक्षेपविषे ताहविष्केधारकहोणेतैं जुहूआदिक करणरूपहैं ॥ तथा इंद्रादिरूपअर्थकीप्रकाशताकरिकै (इंद्रायस्वाहा) यहमंत्रादिकभी करणरूपहींहै ॥ इसप्रकार कारक ज्ञापक या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भेदकरिकै सोकरण दोप्रकारकाहोवैहैं ॥ इसप्रकार देवताकाउद्देशकरिकै घृतादिकद्रव्यकात्याग तथाताद्रव्यका अग्निविषेप्रक्षेप यहदोप्रकारकीक्रियाहोवैहै ॥ तहां प्रथम त्यागरूपक्रियाविषेतौं यजमानपुरुषहीं कर्त्ताहोवैहै ॥ और दूसरी प्रक्षेपरूपक्रियाविषेतौं तायजमानपुरुषनैं दक्षिणादेकरिकैस्थापनकरयाहूआ अध्वर्यु कर्त्ताहोवैहै ॥ और आहवनीयादिकअग्नि ताहविष्केप्रक्षेपका अधिकरणरूपहोवैहै ॥ इसप्रकार देशकालादिकभी सर्वक्रियावोंकेप्रति साधारण अधिकरणरूपजानणे ॥ इसप्रकार जितनैंकी क्रियाकारकव्यवहारहैं तेसर्वव्यवहार ब्रह्मकेअज्ञानकरिकैकल्पित हैं ॥ यातैं जैसे रज्जुकेअज्ञानकरिकैकल्पितजे सर्प दंड माला आदिकहैं ॥ तिनकल्पितसर्पादिकोंका तारज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानकरिकै बाधहोइजावैहै ॥ तैसे अधिष्ठानब्रह्मकेसाक्षात्कारकरिकै तेक्रियाकारकादिकसर्वव्यवहार बाधकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं ताविद्वान्पुरुषविषे बाधितानुवृत्तिकरिकै सोक्रियाकारकादिरूपव्यवहाराभास प्रतीतहूआभी दग्धपटकीन्यांई किसीफलकेउत्पन्नकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेअर्थकूं श्रीभगवान् इसश्लोककरिकैकथन करेहै ॥ तथा साब्रह्मदृष्टिहीं सर्वयज्ञरूपहै याप्रकार ताब्रह्मदृष्टिकीस्तुतिकरेहैइति ॥ अब सोप्रकार दिखावैहैं ॥ (अर्प्यतेअनेन तत्अर्पणं) अर्थयह जिसकरिकै घृतादिरूपहविष् अग्निविषे अर्पणकरयाजावैहै ताकानाम अर्पणहै ॥ याप्रकारकी करणव्युत्पत्तिकरिकै सोअर्पणपद जुहूआदिककरणोंका तथामंत्रादिककरणोंका वाचकहै ॥ और (अर्प्यतेअस्मैतत्अर्पणं) अर्थयह सोघृतादिरूपहविष् जिसकेतांई अर्पणकरीयेहै ताकानाम अर्पणहै ॥ याप्रकारकी व्युत्पत्तिकरिकै सोअर्पणपद इंद्रादिकदेवतारूप संप्रदानका वाचकहै ॥ और (अर्प्यतेअस्मिन् तत्अर्पणं) अर्थयह सो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

घृतादिरूपहविष् अर्पणकरीयेजिसविषे ताकानाम अर्पणहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै सोअर्पणशब्द देशकालादिरूप अधिकरणका वाचकहै ॥ इसप्रकार एकहीं अर्पणपद करण संप्रदान अधिकरण यातीनकारकोंका वाचकहै ॥ यातैं जुहूमंत्रादिरूप करणकारक तथादेवतादिरूप संप्रदानकारक तथादेशकालादिरूप अधिकरणकारक यहसर्व ब्रह्मविषेकल्पितहोणेतैं ब्रह्मरूपहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित सर्पदंडादिक तारज्जुरूपअधिष्ठानतैं भिन्नताकरिकै असत्हींहोवैंहैं ॥ तैसे तेकारकभी अधिष्ठानब्रह्मतैं भिन्नताकरिकै असत्हींहैंइति ॥ और यजमानकर्तृक त्यागरूपक्रियाका तथाअध्वर्युकर्तृक प्रक्षेपरूपक्रियाका साक्षात्कर्मरूप जोघृतादिकहविष्है ॥ सोहविष्रूपकर्मकारकभी ब्रह्मरूपहींहै ॥ और जिस आहवनीयादिकअग्निविषे सोघृतादिरूपहविष् पायाजावैहै ॥ सोअग्निरूपअधिकरणकारकभी ब्रह्मरूपहींहै ॥ और जिसयजमाननैं देवताकाउद्देशकरिकै सोघृतादिरूपहविष् त्यागकरीताहै ॥ तथा जिसअध्वर्युनैं सोघृतादिरूपहविष् अग्निविषे प्रक्षेपकरीताहै ॥ सोयजमानरूप कर्त्ताकारक तथाअध्वर्युरूप कर्त्ताकारक दोनों ब्रह्मरूपहींहैं ॥ और हुतं याशब्दकरिकै कथनकरयाजो त्यागक्रियारूप तथाप्रक्षेपक्रियारूप हवनहै ॥ सोक्रियारूपहवनभी ब्रह्मरूपहींहै ॥ और तिसहवनरूपक्रियाकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यजो स्वर्गादिरूप व्यवहितकर्महै ॥ सोस्वर्गादिरूपकर्मकारकभी ब्रह्मरूपहींहै ॥ और इसप्रकार ताकर्मविषे ब्रह्मदृष्टिरूपसमाधिहैजिसको ताका नाम कर्मसमाधिहै ॥ ऐसाजो कर्मोंकेअनुष्ठानकरणेहारा ब्रह्मवेत्तापुरुषहै ॥ ताब्रह्मवेत्तापुरुषनैंभी परमानंदस्वरूप अद्वितीयब्रह्महीं गंतव्यहै ॥ ईहां (कर्मसमाधिना) यावचनतैंउत्तर (ब्रह्म गंतव्यं) यादोनोंपदोंका पूर्ववाक्यतैं अ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नुषंगकरणाइति ॥ अथवा (॥ अर्प्यतेअस्मैफलायतत् अर्पणं) अर्थयह जिसफलकीप्राप्तिवासतै सोहविष् अर्पणकरिये है ताकानाम अर्पणहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै ताअर्पणपदकरिकैहीं तिनस्वर्गादिकफलोंकाभी ग्रहणकरणा ॥ (गंतव्यं) यापदकरिकै तिनस्वर्गादिकोंका ग्रहणकरणानहीं ॥ यातैं (ब्रह्मैवतेनगंतव्यंब्रह्मकर्मसमाधिना) यहश्लोकाउत्तरार्द्ध ज्ञानकेफलकथनकरणेवासतैहींहै ॥ यहहींव्याख्यान समीचीनहै ॥ तहां इसद्वितीयव्याख्यानविषे (ब्रह्म कर्मसमाधिना) यहएकहीं समस्तपदहै ॥ अथवा (ब्रह्मैवतेन) यावचनविषेस्थितजो ब्रह्म यहपदहै ॥ ताब्रह्मपदकातौं पूर्व (हुतं) यापदकेसाथि अन्वयकरणा ॥ और (ब्रह्मकर्मसमाधिना) यावचनविषेस्थितजो ब्रह्म यहपदहै ॥ ताब्रह्मपदकातौं (गंतव्यं) यापदकेसाथि अन्वयकरणा ॥ यातैं (ब्रह्म कर्मसमाधिना) यहदोनोंपद भिन्नभिन्नहींहै ॥ इसद्वितीयव्याख्यानविषे पूर्वव्याख्यानकोन्यांई (ब्रह्म गंतव्यं) यादोनोंपदोंकेअनुषंगरूपक्लेशकीप्राप्तिहोवैनहींइति ॥ ईहां (ब्रह्मैवतेनगंतव्यंब्रह्मकर्मसमाधिना) यावचनकरिकै श्रीभगवान्नैं ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं जोब्रह्मकोप्राप्ति कथन करीहै ॥ सो मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार अभेदरूपकरिकै ब्रह्मकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ कोई स्वर्गादिकोंकोन्यांई भिन्नरूपकरिकै अथवा स्वामीसेवकभावकरिकै साप्राप्ति कथनकरीनहीं ॥ तहांश्रुति (॥ ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवतिइति) ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मकूंजानणेहारापुरुष ब्रह्मरूपहींहोवैहैइति ॥ इसीकारणतैं सोब्रह्मवेत्तापुरुष स्वर्गादिकतुच्छफलोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं ताब्रह्मवेत्तापुरुषके ब्रह्मविद्याकरिकै अविद्याकृत सर्वकारकव्यवहार नाशकूंप्राप्तहूएहैंइति ॥ यहवार्त्ता वार्तिकग्रंथकेकर्त्ता सुरेश्वराचार्यनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (कारकव्यवहारेहिशुद्धंवस्तुनवीक्ष्यते ॥ शुद्धेव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्तुनिसिद्धेचकारकव्यापृतिःकुतः ॥) अर्थयह ॥ कर्त्ताकर्मादिककारकोंकेव्यवहारहूए आत्मारूपशुद्धवस्तु देख्याजावै नहीं ॥ और ताशुद्धवस्तुकेसाक्षात्कारहूए तिनकारकोंकाव्यापार होवैनहींइति ॥ और किसीटीकाकारनैंतौं इसश्लोकका यहव्याख्यानकरयाहै ॥ जैसे नाम वाक् मन इत्यादिकोंकेस्वरूपका नबाधकरिकै तिननामादिकोंविषे श्रुतिनैं ब्रह्मदृष्टिका विधानकरयाहै ॥ तैसे ईहां श्रीभगवान्नैंभी अर्पणादिककारकोंकेस्वरूपका नबाधकरिकै तिनअर्पणादिककारकोंविषे ब्रह्मदृष्टिका विधानकरयाहैइति ॥ सोइसव्याख्यानकूं श्रीभाष्यकारोंनैं तात्पर्यकेनिश्चायक उपक्रमादिकोंकेविरोधकरिकै तथाब्रह्मविद्याकेप्रकरणविषे संपत्उपासनामात्रकीप्राप्तिहींनहींहै इत्यादिकयुक्तियोंकरिकै विस्तारतैं खंडनकरयाहैइति ॥ २४ ॥ ※ ॥ तहांपूर्व (ब्रह्मार्पणं) यामंत्ररूपश्लोकविषे सर्वत्रब्रह्मदृष्टिरूपसम्यक्दर्शनकोयज्ञरूपकरिकैस्तुति कथनकरी ॥ अब तिसीसम्यक्दर्शनकी पुनःस्तुतिकरणेवासतै श्रीभगवान् दूसरेयज्ञोंकाभी कथनकरेहै ॥

दैवमेवापरेयज्ञंयोगिनःपर्युपासते ॥ ब्रह्माग्नावपरेयज्ञंयज्ञेनैवोपजुह्वति ॥ २५ ॥

दैवं। एव। अपरे। यज्ञं। योगिनः। पर्युपासते। ब्रह्माग्नौ। अपरे। यज्ञं। यज्ञेन। एव। उपजुह्वति ॥ इतिपदच्छेदः।

हेअर्जुन दूसरे कर्मीपुरुषतौं दैव यज्ञकूं हीं सर्वदाकरेहैं और दूसरेतत्त्ववेत्तापुरुषतौं ब्रह्मरूपअग्निविषे आत्मांकूं आत्मारूपकरिकै हीं होमकरेहैं ॥ २५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इंद्र अग्नि वायु आदिकदेवता जिसकर्मकरिकै संतुष्टकर्त्येजावैहै ताकानाम दैवहै ॥ ऐसाजो दर्श

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पूर्णमास ज्योतिष्टोम आदिकयज्ञहै ॥ तादैवयज्ञकूंहीं दूसरेकर्मीपुरुष सर्वदाकरेहैं ॥ तेकर्मीपुरुष ज्ञानयज्ञकूं कदा चित्भी करतेनहींइति ॥ इसप्रकार कर्मयज्ञकूंकथनकरिकै अंतःकरणकोशुद्धिद्वारा ताकर्मयज्ञकाफलभूत जोज्ञान यज्ञहै ताज्ञानयज्ञकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (ब्रह्माग्नौइति) हेअर्जुन सत्य ज्ञान अनंत आनंदरूप तथासर्वविशे षोंतैंरहित ऐसाजो तत्पदार्थरूपब्रह्महै ॥ सोब्रह्महीं ज्ञातहूआ सर्वकर्मोकादाहकहोणेतैं अग्निकीन्याईं अग्निरूपहै ॥ ऐसे तत्पदार्थब्रह्मरूपअग्निविषे दूसरेतत्त्ववेत्तासंन्यासी त्वंपदार्थरूपप्रत्यक्आत्माकूं अभिन्नरूपकरिकै होमकरेहैं ॥ अर्थात् तात्वंपदार्थरूपप्रत्यक्आत्माकूं ताब्रह्मरूपकरिकैदेखेहैं ॥ ईहां (यज्ञेनैव) यावचनविषेस्थितजो एव यह शब्दहै ॥ सोएवकार जीवब्रह्मकेभेदकोनिवृत्तिकरणेवासतेहै ॥ ईहां जीवब्रह्मके अभेदज्ञानकूं यज्ञरूपतैंसंपादनकरि कै (श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः) इत्यादिकवचनोंकरिकै ताज्ञानयज्ञकी स्तुतिकरणेवासतैं ताज्ञानयज्ञकेसाध नरूपयज्ञोंकेमध्यविषे श्रीभगवान्नैं सोज्ञानयज्ञ कथनकऱ्याहै इति ॥ २५ ॥ ※ ॥ ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभग वान्नैं मुख्ययज्ञ तथागौणयज्ञ यहदोयज्ञ कथनकरे ॥ अब वेदविषे जितनैंकीश्रेयकेसाधन कथनकरेहैं ॥ तिनसर्व साधनोंकूं श्रीभगवान् यज्ञरूपकरिकै प्रतिपादनकरेहै ॥

श्रोत्रादीनींद्रियाण्यन्येसंयमाग्निषुजुह्वति ॥ शब्दादीन्विषयानन्येइंद्रियाग्निषुजुह्वति २६

श्रोत्रादीनि । इंद्रियाणि । अन्ये । संयमाग्निषु । जुह्वति । शब्दादीन् । विषयान् । अन्ये । इंद्रियाग्निषु । जुह्वति ॥ इतिप० ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन दूसरेपुरुषतौं श्रोत्रादिक इंद्रियोंकूं संयमरूपअग्नियोंविषे होमकरेहैं तथाकेईअन्यपुरुषतौं शब्दादिक विषयोंकूं श्रोत्रादिकइंद्रियरूपअग्नियोंविषे होमकरेहैं ॥ २६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यम नियम आसन प्राणायाम याच्यारोंकूंसिद्धकरिकै केवलप्रत्याहारपरायण जेकेईकअधिकारी पुरुषहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषतौं श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रियोंकूं आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंतैं निवृत्तकरिकै संयम रूपअग्निविषे होमकरेहैं ॥ ईहां (त्रयमेकत्रसंयमः) इसपतंजलिभगवान्केसूत्रविषे एकवस्तुकूंविषयकरणेहारे धारणा ध्यान समाधि यातीनोंकूं संयम याशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तहां हृदयकमलादिकस्थानोंविषे चिरकालपर्यंत जो मनकास्थापनकरणाहै ताकानाम धारणाहै ॥ इसप्रकार एकस्थानविषेधारणकऱ्याजोचित्तहै ॥ ताचित्तका उत्तरउत्त र विजातीयवृत्तियोंकृतव्यवधानसहित जोभगवत्आकार सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकानाम ध्यानहै ॥ और ताचित्तका विजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित केवल ताभगवत्आकार सजातीयवृत्तियोंकाजोप्रवाहहै ताकानाम स माधिहै ॥ सोसमाधिभी चित्तकीभूमिकावोंकेभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकतौं संप्रज्ञातनामासमाधि होवै है ॥ और दूसरा असंप्रज्ञातनामासमाधि होवैहै ॥ तहां क्षिप्त मूढ विक्षिप्त एकाग्र निरुद्ध यहपंचभूमिका चित्तकी होवैहैं ॥ भूमिकानाम अवस्थाविशेषकाहै ॥ तहां रागद्वेषादिकोंकेवशतैं विषयोंविषे अंत्यतअभिनिवेशवालाजोचित्त है सोचित्त क्षिप्त कह्याजावैहै ॥ और निद्रातंद्रादिकोंकरिकै ग्रस्तहूआजोचित्तहै सोचित्त मूढ कह्याजावैहै ॥ और सर्वकालविषे विषयोंविषेआसक्तहूआभी जोचित्त कदाचित् दैवयोगतैं ध्याननिष्ठभीहोवैहै सोचित्त ताक्षिप्ततैं श्रेष्ठहो ॥२१७॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

णेतैं विक्षिप्त कह्याजावैहै ॥ तहां क्षिप्तचित्तविषे तथामूढचित्तविषे तासमाधिहोणेकी शंकाहींनहींहोवैहै ॥ और वि
क्षिप्तचित्तविषेतौं कादाचित्कसमाधि होवैभीहै ॥ परंतु विक्षेपकोप्रधानतातैं सोसमाधि योगपक्षविषे वर्त्ततानहीं ॥
किंतु जैसे महान्पवनकरिकैविक्षिप्तहूआ दीपक आपेहीं नाशहोइजावैहै ॥ तैसे सोकादाचित्कसमाधिभी आपेहीं
नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और ताचित्तविषे एकवस्तुकूंविषयकरणेहारी धारावाहिकवृत्तियोंका जोसामर्थ्यहै ताकानाम ए
काग्रहै ॥ तहां सत्त्वगुणकोवृद्धिकरिकै तमोगुणकृत तंद्रादिरूपलयकेअभावहूए आत्माकारवृत्तिहोवैहै ॥ साआत्माका
रवृत्ति रजोगुणकृतचंचलतारूपविक्षेपकेअभावतैं एकवस्तुविषयकहींहोवैहै ॥ इसप्रकारशुद्धसत्त्वगुणकेहूएहीं सोचि
त्त एकाग्रहोवैहै ताएकाग्रचित्तविषेहीं सोसंप्रज्ञातनामासमाधि होवैहै ॥ तासंप्रज्ञातनामासमाधिविषे सा ध्येयाकारवृ
त्तिभी प्रतीतहोवैहै ॥ और जिसकालविषे साध्येयाकारवृत्तिभी निरोधकूंप्राप्तहोवैहै तिसकालविषे सोचित्त निरुद्ध
कह्याजावैहै ॥ तानिरुद्धचित्तविषे असंप्रज्ञातनामासमाधिहोवैहै ॥ यहहींअसंप्रज्ञातसमाधि सर्वसुखोंतैंविरक्तयोगी
पुरुषका दृढभूमिकारूपहूआ धर्ममेघ यानामकरिकै कह्याजावैहैइति ॥ इसप्रकार अनेकरूपकरिकै तिनधारणादि
कसंयमोंकाभेदहै ॥ यातैं (संयमाग्निषु) यावचनविषे श्रीभगवान्नैं बहुवचनकथनकरयाहै ॥ ऐसेसंयमरूपअग्नियोंवि
षे केईकअधिकारीपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं होमकरेहैं ॥ अर्थात् धारणा ध्यान समाधि यातीनोंकीसिद्धिवासतै
श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेविषयोंतैं प्रत्याहरणकरेहैं ॥ तहां आपणेआपणेविषयोंतैं निग्रहकंप्राप्तहूए तेइंद्रि
य चित्तरूपहींहोवैहैं ॥ इसीकूंहीं शास्त्रविषे प्रत्याहार यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ तिसप्रत्याहारतैंअनंतर विक्षेपके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अभावतैं सोचित्त तिन धारणादिकोंकूंसंपादनकरेहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि यहच्या रिअंग योगके कथनकरये ॥ ताकरिकै समाधिअवस्थाविषे सर्वइंद्रियजन्यवृत्तियोंकेनिरोधकूं यज्ञरूपकरिकै वर्णनक रया ॥ अब तासमाधितैंव्युत्थानदशाविषे रागद्वेषतैंरहितहोइकै जोशास्त्रविहितविषयोंकाभोगहै सोभोगभी एकयज्ञ रूपहींहै इसअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (शब्दादीन्विषयानन्येइंद्रियाग्निषुजुह्वतिइति) हेअर्जुन तासमाधितैंव्युत्था नकूंप्राप्तहूए जेयोगीपुरुषहैं॥तेयोगीपुरुष रागद्वेषतैंरहितहोइकै ताव्युत्थानकालविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै शास्त्रतैंअ विरुद्ध शब्दादिकविषयोंकूं ग्रहणकरेहैं॥यहहीं तिनशब्दादिकविषयोंका श्रोत्रादिकइंद्रियोंविषेहोमहै इति॥२६॥* ॥त हां इसपूर्वश्लोकविषे पातंजलमतकेअनुसारकरिकै लयपूर्वकसमाधिरूप तथातासमाधितैंव्युत्थानदशारूप यादोनोंयज्ञों कूं कथनकरया ॥ अब इसश्लोकविषे ब्रह्मवादीपुरुषोंके मतकेअनुसारकरिकै सर्वसाधनोंकाफलरूप तथाकारणकेनाशक रिकैव्युत्थानतैंरहित ऐसाजोनिरोधपूर्वकसमाधिहैं ॥ तासमाधिरूपयज्ञांतरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

सर्वाणींद्रियकर्माणिप्राणकर्माणिचापरे॥आत्मसंयमयोगाग्नौजुह्वतिज्ञानदीपिते॥२७॥

सर्वाणि । इंद्रियकर्माणि । प्राणकर्माणि । च । अपरे । आत्मसंयमयोगाग्नौ । जुह्वति । ज्ञानदीपिते ॥ इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन दूसरेकेईअधिकारीतौं सर्व इंद्रियोंकेकर्मोकूं तथा प्राणोंकेसर्वकर्मोकूंज्ञान करिकैदीपित आत्मसंयमयोगरूपअग्निविषे होमकरेहैं ॥ २७ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ तहां समाधि दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं लयपूर्वक समाधिहोवैहै ॥ और दूसरा बाधपूर्वक समाधिहोवैहै ॥ तहां (तदनन्यत्वमारंभणशब्दादिभ्यः) इससूत्रविषे श्रीव्यासभगवान्नैं कारणतैंभिन्नकरिकै कार्यकाअसत्त्व कथनक ऱ्याहै ॥ यातैं पंचीकृतपंचभूतोंकाकार्यजोव्यष्टिरूपहै सोव्यष्टिरूप समष्टिरूपविराट्काकार्यहोणेतैं ताविराट्रूपका रणतैंभिन्ननहींहै ॥ और सोसमष्टिरूपपंचीकृतपंचभूतात्मककार्यभी अपंचीकृतपंचमहाभूतोंकाकार्यरूपहोणेतैं तिन अपंचीकृतपंचमहाभूतरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और तिनपंचभूतोंविषेभीशब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचगुणोंवा ली जाएथिवीहै ॥ सापृथिवी शब्द स्पर्श रूप रस याच्यारिगुणोंवालेजलकाकार्यहोणेतैं ताजलरूपकारणतैं भिन्नन हींहै ॥ और सोच्यारिगुणोंवालाजलभी शब्द स्पर्श रूप यातीनगुणोंवालेतेजकाकार्यहोणेतैं तातेजरूपकारणतैंभि न्ननहींहै ॥ और सोतीनगुणोंवालातेजभी शब्द स्पर्श यादोगुणोंवालेवायुकाकार्यहोणेतैं तावायुरूपकारणतैं भिन्नन हींहै ॥ और सोदोगुणोंवालावायुभी एकशब्दगुणवालेआकाशकाकार्यहोणेतैं ताआकाशरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोशब्दगुणवालाआकाशभी (बहुस्यां) याश्रुतिनैंकथनकऱ्याजो परमेश्वरकासंकल्परूपअहंकारहै ताअहंकारकाका र्यहोणेतैं ताअहंकाररूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोसंकल्परूपअहंकारभी (तदैक्षत) याश्रुतिकरिकैकथनकऱ्याजो मायाईक्षणरूप महत्तत्वहै तामहत्तत्वकाकार्यहोणेतैं तामहत्तत्वरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोईक्षणरूपमहत्तत्व भी मायाकापरिणामहोणेतैं तामायारूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोमायारूपकारणभी जडरूपहोणेतैं चैतन्य रूपब्रह्मविषे अध्यस्तहै ॥ यातैं ताचैतन्यब्रह्मतैं सोमायारूपकारण भिन्ननहींहै ॥ इसप्रकार निरंतरचिंतनकरिकै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कार्यकारणरूपसर्वप्रपंचकेविद्यमानहूएभी जोचैतन्यब्रह्ममात्रविषयकसमाधिहै ॥ सोसमाधि लयपूर्वकसमाधि कह्या जावैहै ॥ तालयपूर्वकसमाधिविषे ताअधिकारीपुरुषकूं तत्त्वमसिआदिकवेदांतमहावाक्योंकेअर्थकाज्ञानहैनहीं ॥ यातैं कार्यसहितअविद्याकानाशहूआनहीं ॥ किंतु साअविद्या तालयचिंतनकालविषे विद्यमानहींहै ॥ ताअविद्याकेविद्यमानहूए ताअविद्यारूपकारणतैं पुनः संसाररूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यातैं यहलयपूर्वकसमाधि सुषुप्तिकीन्यांई सबीजसमाधिहींहै ॥ मुख्य निर्बीजसमाधिहैनहीं ॥ और जिसकालविषे तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यजन्यसाक्षात्कारकरिकै ताअविद्याकोनिवृत्तिहोवैहै ॥ तथा उत्पत्तिक्रमतैं ताअविद्याके महत्तत्त्वादिक सर्वकार्योंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै एकवार नाशकूंप्राप्तहूई साअनादिअविद्या पुनः कदाचित्भी उत्थानकूंप्राप्तहोवैनहीं तथा ताअविद्याकाकार्यभी पुनः उत्थानकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तिसकालविषे ताविद्वान्पुरुषकूं मुख्य निर्बीज बाधपूर्वकसमाधिहोवैहै ॥ सोबाधपूर्वक समाधिहीं इसश्लोककरिकै श्रीभगवान्नैं कथनकरीताहै ॥ सोप्रकार दिखावैहै ॥ तहां अंतर बाह्य याभेदकरिकै इंद्रिय दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रिय तथा वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु यहपंचकर्मइंद्रिय यहदशइंद्रियतौं बाह्यइंद्रिय कहेजावैहै ॥ और मन बुद्धि यहदोनों अंतरइंद्रिय कहेजावैहैं ॥ तिनबाह्यअंतर सर्वइंद्रियोंके जितनैंकी स्थूलरूप तथासंस्काररूप कर्महैं ॥ तहां शब्दकाश्रवण श्रोत्रइंद्रियका कर्महै ॥ और स्पर्शकाग्रहण त्वक्इंद्रियका कर्महै ॥ और रूपकादर्शन चक्षुइंद्रियका कर्महै ॥ और रसकाग्रहण रसनइंद्रियका कर्महै ॥ और गंधकाग्रहण घ्राणइंद्रियका कर्महै ॥ और वचनकाउच्चारण वा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कइंद्रियका कर्महै ॥ और वस्तुकाग्रहण पाणिइंद्रियका कर्महै ॥ और गमनआगमन पादइंद्रियका कर्महै ॥ और विषयानंद उपस्थइंद्रियका कर्महै ॥ और मलकापरित्याग पायुइंद्रियका कर्महै ॥ और संकल्प मनका कर्महै ॥ और निश्चय बुद्धिका कर्महै इति ॥ इसप्रकार प्राण अपान व्यान समान उदान यापंचप्राणोंके जितनैंकोकर्महैं ॥ तहां बहिर्गमन प्राणका कर्महै ॥ और अधोगमन अपानका कर्महै ॥ और हस्तपादादिकअंगोंका आकुंचनप्रसारण आदिक व्यानका कर्महै ॥ और भोजनकरयेहूएअन्नजलकासमानकरणा समानका कर्महै ॥ और ऊर्ध्वगमन उदानका कर्महै ॥ इतनैंकरिकै पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचप्राण दोमनबुद्धि यासप्तदशतत्वोंकासमुदायरूपलिंगशरीर कथनकऱ्या ॥ सोसूक्षमशरीरभी ईहां सूक्षमभूतोंकासमष्टिरूप हिरण्यगर्भहीं विवक्षितहै ॥ इसीअर्थकेजनावणेवासतैं श्रीभगवान्नैं तिनइंद्रियोंकेकर्मोंका तथाप्राणोंकेकर्मोंका (सर्वाणि) यहविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ ऐसेसप्तदशतत्त्वरूप लिंगशरीरकूं अन्यकेईविद्वान्पुरुष आत्मसंयमयोगाग्निविषे होमकरेहैं ॥ तहां आत्माकूंविषयकरणेहाराजोधारणा ध्यान संप्रज्ञातसमाधिरूप संयमहै तासंयमकेपरिपाकहूएतैं सिद्धभयाजो निरोधसमाधिरूपयोगहै ताकानाम आत्मसंयमयोगहै ॥ इसीनिरोधसमाधिरूपयोगकूं पतंजलिभगवान्भी योगसूत्रोंविषे कथनकरताभयाहै ॥ तहां सूत्रं ॥ (व्युत्थाननिरोधसंस्कारयोरभिभवप्रादुर्भावौनिरोधक्षणचित्तान्वयोनिरोधपरिणामःइति ॥) अर्थयह ॥ क्षिप्त मूढ विक्षिप्त यातीनभूमिकावोंकानाम व्युत्थानहै ॥ ताव्युत्थानकेसंस्कार समाधिकेविरोधीहोवैहैं ॥ तेविरोधिसंस्कार तौं योगीपुरुषके प्रयत्नकरिकै दिनदिनविषे तथाक्षणक्षणविषे अभिभवकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और तिनव्युत्थानसंस्का

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रोंकेविरोधीरूप जेनिरोधकेसंस्कारहैं तेनिराधकेसंस्कार दिनदिनविषे तथाक्षणक्षणविषे प्रादुर्भावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर निरोधमात्रक्षणकेसाथि जोचित्तकाअन्वयहै सोनिरोधपरिणाम कह्याजावैहै इति ॥ इसीनिरोधसमाधिकेफलकूंभी सोपतंजलिभगवान् योगसूत्रोंविषे कथनकरताभयाहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (तस्यप्रशांतवाहितासंस्कारादिति) ॥ अर्थयह ॥ तानिरोधपरिणामतैंअनंतर निरोधसंस्कारोकीदृढताकरिकै तिसचित्तकूं प्रशांतवाहिता होवैहै ॥ अर्थात् तमोगुण रजोगुण यादोनोंगुणोंकेनाशहूएतैंअनंतर लयविशेषदोषतैंरहितपणेकरिकै शुद्धसत्त्वरूपजोचित्तहै सोचित्त प्रशांत कह्याजावैहै ॥ और पूर्वपूर्व ताप्रशमकेसंस्कारोकीबाहुल्यताकरिकै जोतिसतैंभी अधिकताहै ताकूं प्रशांतवाहिता कहेहैंइति ॥ तानिरोधसमाधिकेकारणकूंभी सोपतंजालिभगवान् योगसूत्रोंविषे कथनकरताभयाहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (विरामप्रत्ययाभ्यासपूर्वःसंस्कारशेषोन्यःइति) ॥ अर्थयह ॥ वृत्तिकीउपरामतारूपजोविरामहै ताविरामकाजोप्रत्ययहै क्या कारणहै अर्थात् तावृत्तिकीउपरामतावासतैं जोपुरुषकाप्रयत्नहै तापुरुषप्रयत्नकाजो पुनःपुनःसंपादनरूप अभ्यासहै ॥ ताअभ्यासकरिकैजन्य संप्रज्ञातसमाधितैंविलक्षण असंप्रज्ञातसमाधिहोवैहैइति ॥ इसप्रकारका निरोधसमाधिरूप जोआत्मसंयमयोगहै सोईहीं अग्निरूपहै ॥ कैसाहेसो आत्मसंयमयोगरूपअग्नि ॥ ज्ञानकरिकैदीपित है ॥ अर्थात् वेदांतवाक्यकरिकैजन्यजो ब्रह्मात्मऐक्यसाक्षात्कारहै तासाक्षात्कारकरिकै कार्यसहितअविद्याकेनाशद्वारा अत्यंतउज्ज्वलितहै ॥ ऐसे ज्ञानकरिकैदीपित आत्मसंयमयोगाग्निरूप बाधपूर्वकसमाधिविषे अन्यकेईविद्वान्पुरुष समष्टिलिंगशरीरकूं होमकरेहैं ॥ अर्थात् तासमाधिविषे तालिंगशरीरकूं प्रविलापनकरेहैंइति ॥ ईहां (सर्वाणि आत्म ज्ञान

454

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दीपिते) यातीनविशेषणोंकेकहणेकरिकै तथा (अग्नौ) याएकवचनकेकहणेकरिकै पूर्वकथनकरयेहूएयज्ञतैं इसयज्ञविषे विलक्षणता सूचनकरी ॥ यातैं ईहां पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ २७ ॥ ※ ॥ तहांपूर्व (दैवमेवापरेयज्ञं) इत्यादि कतीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान्नैं पंचयज्ञोंकूं कथनकरया ॥ अब इसएकहीं श्लोककरिकै श्रीभगवान् षट्यज्ञोंकूं कथनकरेहै

द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञायोगयज्ञास्तथापरे॥स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्चयतयःसंशितव्रताः॥२८

द्रव्ययज्ञाः । तपोयज्ञाः । योगयज्ञाः । तथा । अपरे । स्वाध्यायज्ञानयज्ञाः । च । यतयः । संशितव्रताः ॥ इतिपदच्छेः ॥

हेअर्जुन केईकअधिकारीपुरुष द्रव्यकात्यागरूपयज्ञकूंकरेहै तथाकेईकअधिकारीपुरुष तपरूपयज्ञकूं करेहैं तथा केईकअधिकारीपुरुष योगरूपयज्ञकूंकरेहैं तथा केईकअधिकारीपुरुष वेदाभ्यासरूपय ज्ञकूंतथाज्ञानरूपयज्ञकूंकरेहैं तथाकेईक यत्नशीलपुरुष अत्यंतदृढव्रतरूपयज्ञकूंकरेहैं ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शास्त्रकोविधिप्रमाण जोद्रव्यकात्यागहै सोद्रव्यकात्यागहींहैयज्ञरूपजिनोंका तेअधिकारीपुरुष द्रव्ययज्ञा कहेजावैहैं ॥ अर्थात् पूर्त्त दत्त नामा स्मार्त्तकर्मकूंकरणेहारेपुरुष द्रव्ययज्ञा कहेजावैहैं ॥ तहां पूर्त्त दत्त यादोनोंकर्मोंकास्वरूप स्मृतिविषे यहकह्याहै ॥ तहां श्लोक ॥ (वापीकूपतडागादिदेवतायतनानिच ॥ अन्नप्रदानमारामःपूर्त्तमित्यभिधीयते ॥ शरणागतसंत्राणंभूतानांचाप्यहिंसनं ॥ बहिर्वेदिचयद्दानंदत्तमित्यभिधीयते ॥) अर्थयह ॥ बावडी बनावणी तथाकूप बनावणा तथातलाव बनावणा तथाविष्णुशिवादिकदेवतावोंकेमंदिर बनावणे तथाक्षुधातु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रप्राणीयोंकूं अन्नप्रदानकरणा तथालोकोंकेनिवासकरणेवासतैं धर्मशाला बगीचा बनावणा ॥ इत्यादिकसर्वकर्म पूर्त्त या नामकरिकैकहेजावेहैंइति ॥ और शरणागतप्राणीयोंकीरक्षाकरणी तथा किसीभी भूतप्राणीकोहिंसानहींकरणी तथावे दोतैंबाह्यजोदानहै इत्यादिकसर्वकर्म दत्त यानामकरिकैकहेजावैहैं इति ॥ इसप्रकारके पूर्त्त दत्त नामा स्मार्त्तकर्मोकूंक रणेहारेपुरुष द्रव्ययज्ञा कहेजावैहैं ॥ और इष्टनामा जोश्रौतकर्महै ताश्रौतकर्मकूंतौं (दैवमेवापरेयज्ञं) यावचनकरि के पूर्वकथन करिआयेहैं ॥ और जोदान वेदिकेअंतर दीयाजावैहै सोदानभी तिसश्रौतकर्मकेअंतर्भूतहींहैइति ॥ ॥ १ ॥ और कृच्छ्रचांद्रायणादिरूपजोतपहै सोतपहींहैयज्ञरूपजिनोका तेअधिकारीपुरुष तपोयज्ञा कहेजावैहैं ॥ अर्था त् केईकतपस्वीपुरुष कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपरूपयज्ञकूंहींकरेहैं ॥ २ ॥ और चित्तकीवृत्तिकानिरोधरूप जोअष्टांगयोग है सोअष्टांगयोगहींहैयज्ञरूपाजिनोंका तेअधिकारीपुरुष योगयज्ञाकहेजावैहैं ॥ अर्थात् केईकअधिकारीपुरुष अ ष्टांगयोगरूपयज्ञकूंहींकरेहैं ॥ तहां यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ स माधि ८ यहयोगकेअष्टअंगकहेजावेहैं ॥ तहां प्रत्याहारकास्वरूपतौं (श्रोत्रादीनींद्रियाण्यन्ये) इसवचनविषे पूर्वक थनकरिआयेहैं ॥ और धारणा ध्यान समाधि यातीनोंकास्वरूपतौं (आत्मसंयमयोगाग्नौ) इसवचनविषे पूर्वकथ नकरिआयेहैं ॥ और प्राणायामकास्वरूपतौं (अपानेजुह्वतिप्राणं) इसअगलेश्लोकविषे कथनकरैंगे ॥ यातैं अब य म नियम आसन यातीनोंकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ तहां अहिंसा १ सत्य २ अस्तेय ३ ब्रह्मचर्य ४ अपरिग्रह ५ यहपंचप्रकारका यमहोवैहै ॥ तथा शौच १ संतोष २ तप ३ स्वाध्याय ४ ईश्वरप्रणिधान ५ यहपंचप्रकारका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नियमहोवेहै ॥ और आसनतौं पद्मक स्वस्तिक भद्र इत्यादिकभेदकरिकै अनेकप्रकारकाहोवेहै ॥ तहां शास्त्रकरि कैअप्रतिपादित जोकिसीप्राणीकावधकरणाहै ताकानाम हिंसाहैं ॥ ईहां शास्त्रकरिकैअप्रतिपादित इतनैंकहणेकरिकै (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत) इत्यादिकशास्त्रनैं विधानकऱ्याजो यज्ञविषेपशुकावधहै ताकेविषे हिंसापणेकी निवृत्तिकरी ॥ साहिंसाभी कृत कारित अनुमोदितयाभेदकरिकै तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां जाहिंसा इसपुरुषनैं आपेहीं करीती है ताहिंसाकूं कृत कहेहैं ॥ और जाहिंसा इसपुरुषनैं किसीअन्यद्वारा कराईतीहै ताहिंसाकूं कारित कहेहैं ॥ और इसपुरुषनैं जिसहिंसाकी प्रशंसा करीतीहै ताहिंसाकूं अनुमोदित कहेहै ॥ इसप्रकारकीहिंसातैं निवृत्तिरूप जो उपरामताहै ताकानाम अहिंसाहै ॥ १ ॥ और अयथार्थभाषणकरणा तथा नहींहननकरणेयोग्यप्राणीकीहिंसाकेअनुकूलसत्यभाषणकरणा तादोनोंकानाममिथ्याभाषणहै ॥ तादोनोंप्रकारकेमिथ्याभाषणतैंनिवृत्तिरूपजाउपरामताहै ताकानाम सत्यहै ॥ २ ॥ और शास्त्रकरिकैनहींप्रतिपादितमार्गकरिकै जोपराएद्रव्यका स्वीकारकरणाहै याकानाम स्तेयहै ॥ तास्तेयतैंनिवृत्तिरूप जाउपरामताहै ताकानाम अस्तेयहै ॥ ३ ॥ और शास्त्रकरिकैनिषिद्ध जोस्त्रीपुरुषका संबंधरूप मैथुनहै ॥ तामैथुनतैंनिवृत्तिरूप जाउपरामताहै ताकानाम ब्रह्मचर्यहै ॥ ४ ॥ और शास्त्रनिषिद्धमार्गकरिकै शरीरयात्राकेनिर्वाहकभोगकेसाधनोंतैं जोअधिकभोगसाधनोंकास्वीकारकरणाहै याकानाम परिग्रहहै ॥ तापरिग्रहतैंनिवृत्तिरूप जाउपरामताहै ताकानाम अपरिग्रहहै ॥ ५ ॥ इतिपंचयमनिरूपणं ॥ अब पंचप्रकारकेनियमका निरूपणकरेहैं ॥ तहां शौच दाप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं बाह्यशौचहोवैहै ॥ और दूसरा अंतरशौचहोवैहै ॥ तहां मृ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्तिकाजलादिकोंकरिकै शरीरका प्रक्षालनकरणा तथा हित मित मेध्य अन्नादिकोंकूंभोजनकरणा यहबाह्यशौच कह्याजावैहै ॥ और मैत्री करुणा मुदिता उपेक्षा इत्यादिकगुणोंकरिकै चित्तके मदमानादिरूपमलकीनिवृत्तिक रणी यहअंतरशौच कह्याजावैहै ॥ तहां सुखीप्राणीयोंविषे मित्रभाव करणा याकानाम मैत्रीहैं ॥ और दुःखीप्राणी योंऊपरि कृपाकरणी याकानाम करुणाहै ॥ और पुण्यवानपुरुषोंकूंदेखिकरिकै प्रसन्नहोणा याकानाम मुदिताहै ॥ और पापीदुष्टजनोंकेसंगका परित्यागकरणा याकानाम उपेक्षाहै ॥ १ ॥ और आपणेसमीपविद्यमान जेभोगके साधनहैं ॥ तिनोंतैंअधिक भोगसाधनोंकेनहींसंपादनकरणेकीइच्छारूप जोचित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम संतोषहै ॥ २ ॥ और क्षुधातृषा शीतउष्ण इत्यादिकद्वंद्वधर्मोंका सहनकरणा तथाकाष्ठमौन आकारमौन इत्यादिकजेव्रत हैं इनसर्वोंकानाम तपहै ॥ तहां हस्तादिकअंगोंकीचेष्टाकरिकैभी आपणेअभिप्रायकूं नहींप्रगटकरणा याकाना म काष्ठमौनहै ॥ और तिनहस्तादिक अंगोंकीचेष्टाकरिकैतौं आपणेअभिप्रायकूं प्रगटकरणा परंतु मुखसैंवचनउच्चा रणकरणानहीं याकानाम आकारमौनहै ॥ ३ ॥ और मोक्षकेप्रतिपादक वेदांतशास्त्रका जोअध्ययनहै अथवा प्रण वमंत्रकाजोजपहै याकानाम स्वाध्यायहै ॥ ४ ॥ और तिसतिसफलकीइच्छातैंरहितहोइकै सर्वकर्मोंका परमगुरुरूप ईश्वरविषेजोअर्पणकरणाहै याकानाम ईश्वरप्रणिधानहै ॥ ५ ॥ इतिपंचनियमनिरूपणं ॥ यहयोगशास्त्रकीरीतिसैं पंचप्रकारके यमनियमका निरूपणकरयाहै ॥ और पुराणोंविषेतौं स्तेयकर्मनिवृत्ति १ करुणा २ आर्जव ३ शांति ४ शौच ५ धृति ६ मिताहार ७ सत्यभाषण ८ जीवाहिंसन ९ ब्रह्मचर्य १० इसभेदकरिकै दशप्रकारकेयम कथन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करेहैं ॥ और आस्तिकत्व १ हर्ष २ तप ३ सुरार्चन ४ दान ५ लज्जा ६ सद्ज्ञान ७ होम ८ सत्श्रवण ९ जप १० याभेदकरिकै दशप्रकारकेनियम कथनकरेहैं ॥ तेअधिकपंचयमनियम पूर्वउक्तपंचयमनियमोंकेअंतर्भूतहींहैं ॥ इसप्रकारके यमनियमादिकअष्टअंगोंकेअभ्यासपरायण जेअधिकारीपुरुषहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष योगयज्ञा कहेजावेहैं ॥ ३ ॥ और जेअधिकारीपुरुष विधिपूर्वक गुरुकेसमीपनिवासकरिकै ऋगादिकवेदोंका अभ्यासकरेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष स्वाध्याययज्ञा कहेजावेहैं ॥ अर्थात् केईकअधिकारीपुरुष वेदाभ्यासरूपयज्ञकूंहीं करेहैं ॥ ४ ॥ और जेअधिकारीपुरुष अनेकप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै वेदकेअर्थकानिश्चयकरेहैं तेअधिकारीपुरुष ज्ञानयज्ञा कहेजावेहैं ॥ अर्थात् केईकअधिकारीपुरुष वेदकेअर्थकानिश्चयरूपयज्ञकूंहींकरेहैं ॥ ५ अब यज्ञांतरका कथनकरेहैं (यतयःसंशितव्रताःइति) हेअर्जुन केईक यत्नशील अधिकारीपुरुषतौं संशितव्रतरूपयज्ञकूंहींकरेहैं ॥ तहां भलीप्रकारतैंअत्यंतदृढहूएहैंअहिंसादिकव्रत जिनोंके तेअधिकारीपुरुष संशितव्रता कहेजावेहैं ॥ यहवार्त्ता भगवान्पतंजलिनैंभी योगशास्त्रविषे कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (जातिदेशकालसमयानवच्छिन्नाःसार्वभौमामहाव्रतंइति ॥) अर्थयह ॥ जेपूर्व अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यहपंचयम कथनकरेथे ॥ तेअहिंसादिकपंचयमहीं जाति देश कालसमय इनच्यारोंकरिकैअनवच्छिन्नहोणेतैं अत्यंतदृढभूमिकारूपहूए महाव्रत याशब्दकरिकैकहेजावेहैंइति ॥ अब तिनअहिंसादिकपंचयमोंविषे जातिदेशादिकोंकरिकैअनवच्छिन्नता स्पष्टकरणेवासतै प्रथम तिनअहिंसादिकोंविषे जातिदेशादिकोंकरिकैअवच्छिन्नता निरूपणकरेहैं ॥ तहां एकमृगकूंछोडिकै दूसरे गौअश्वादिकप्राणीयोंकूं मैं कदाचित्भी हनन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषेकरिकै जोतिनगौअश्वादिकप्राणीयोंकीअहिंसाहै साअहिंसा जातिअवच्छिन्न कहीजावेहै ॥ और तीर्थविषे मैं किसीभीजीवकोहिंसा नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोतीर्थमात्रविषे किसीप्राणीकीहिंसानहींकरणीहै साअहिंसा देशावच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और एकादशीविषे तथाअन्यकिसीपवित्रदिनविषे मैं किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोतिन एकादशीआदिकोंविषे किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरणीहै साअहिंसा कालावच्छिन्न कहीजावेहै ॥ और देवताब्राह्मणोंकेप्रयोजनतैंविना अथवा युद्धतैंविना मैं किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरौंगा याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जो तिसप्रयोजनतैंविना किसीभी जीवकीहिंसा नहींकरणीहै साअहिंसा समयावच्छिन्न कहोजावैहै ॥ ईहां समयनाम प्रयोजनविशेषकाहैइति ॥ इसप्रकार विवाहादिकप्रयोजनतैंविना मैं मिथ्याभाषण नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोविवाहादिप्रयोजनतैंविना मिथ्याभाषणकापरित्यागरूप सत्यहै सोसत्य समयावच्छिन्न कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार आपतकालतैंविना क्षुधाकेनिवर्त्तकपदार्थतैंअतिरिक्तपदार्थको मैं चौरीनहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोचौरीतैंनिवृत्तिरूप अस्तेयहै सोअस्तेय कालावच्छिन्न कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार ऋतुकालतैंभिन्नकालविषे मैं आपणीस्त्रीविषे गमननहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जो ऋतुकालतैंभिन्नकालविषे मैथुनकापरित्यागरूप ब्रह्मचर्यहै सोब्रह्मचर्य कालावच्छिन्न कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार गुरुदेवताआदिकोंकेप्रयोजनतैंविना मैं अधिकपदार्थोंकापरिग्रह नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोअधिकपदार्थोंके परिग्र

460

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हतैंनिवृत्तिरूप अपरिग्रहहै सोअपरिग्रह समयावच्छिन्न कह्याजावैहै ॥ इसरीतिसैं अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यापांचोंयमोंविषे यथायोग्य जातिअवच्छिन्नता तथादेशावच्छिन्नता तथाकालावच्छिन्नता तथासमयावच्छिन्नता जानिलेणी ॥ तहां जाति देश काल समय याच्यारोंअवच्छेदकोंकीनिवृत्तिकरिकै जिसकालविषे तेअहिंसादिकपंचयम सर्वजातीयोंविषे तथासर्वदेशोंविषे तथासर्वकालोंविषे तथासर्वप्रयोजनोंविषे होवेहैं ॥ अर्थात् किसीदेशविषे किसीकालविषे किसीप्रयोजनवासतै किसीभीजीवकी मैं हिंसाकरौंगानहीं तथामिथ्याभाषण तथाचौरी तथामैथुन तथापरिग्रह करौंगानहीं ॥ याप्रकारकेसंकल्पपूर्वक जबी तेअहिंसादिकपंचयम निरवच्छिन्नसिद्धहोवैहै ॥ तिसकालविषे तेअहिंसादिकपंचयम महाव्रत यानामकरिकैकहेजावेहैं इसप्रकार काष्ठमौनादिकव्रतभीजानिलेणे ॥ इसप्रकार अहिंसादिकव्रतकी दृढताकेहूए नरककेद्वारभूत काम क्रोध लोभ मोह याच्यारोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तहां अहिंसाकरिकै तथा क्षमाकरिकै क्रोधकीनिवृत्तिहोवैहै और ब्रह्मचर्यकरिकै तथा वस्तुकेविचारकरिकै कामकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और अस्तेयअपरिग्रहरूप संतोषकरिकै लोभकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और सत्यकरिकै तथायथार्थज्ञानरूपविवेककरिकै मोहकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार तिनकामक्रोधादिकोंकेनिवृत्तहूएतैंअनंतर तिनकामक्रोधादिकोंकेकार्यरूप सर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तिनअहिंसादिकोंके दूसरेभीअनेकफल सकामपुरुषोंवासतै योगशास्त्रविषे कथनकरेहैं इति ॥ २८ ॥ ※ ॥ अब प्राणायामरूपयज्ञकूं सार्धश्लोककरिकै श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपानेजुह्वतिप्राणंप्राणेपानंतथापरे ॥ प्राणापानगतीरुद्ध्वाप्राणा
यामपरायणाः ॥ २९ ॥ अपरेनियताहाराःप्राणान्प्राणेषुजुह्वति ॥

अपाने । जुह्वति । प्राणं । प्राणे । अपानं । तथा । अपरे । प्राणापानगती । रुद्ध्वा । प्राणा
यामपरायणाः । अपरे । नियताहाराः । प्राणान् । प्राणेषु । जुह्वति ॥ २९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेअर्जुन अन्यअधिकारीपुरुषतौं अपानविषे प्राणकूं होमकरेहैं तथा प्राणविषेअपानकूं
होमकरेहैं और नियतआहारवाले दूसरेअधिकारीजनतौं प्राणअपानकीगतिकूं रो
किकरिकै प्राणयामपरायणहूए प्राणोंविषे ज्ञानकर्मइंद्रियोंकूं होमकरेहैं ॥ २९ ॥ इतिपदार्थः
॥ टीका ॥ हेअर्जुन केईकअधिकारीपुरुषतौं अपानकीप्रश्वासरूपवृत्तिविषे प्राणकीश्वासरूपवृत्तिकूं होमकरेहैं ॥ अ
र्थात् बाह्यवायुका शरीरकेभीतर प्रवेशकरिकै पूरकनामाप्राणायामकूंकरेहैं ॥ तथा ते अधिकारीपुरुष प्राणकीश्वास
रूपवृत्तिविषे अपानकीप्रश्वासरूपवृत्तिकूं होमकरेहैं ॥ अर्थात् शरीरकेभीतरलेवायुकूं बाह्यदेशविषेनिर्गमनकरिकै
रेचकनामाप्राणायामकूंकरेहैं ॥ ईहां पूरक रेचक यादोप्रकारकेप्राणायामकेकथनकरिकै श्रीभगवान्नैं दोप्रकारकेकुंभ
ककाभी अर्थतैंहींकथनकऱ्या ॥ जिसकारणतैं तापूरकरेचकतैंविना सोदोप्रकारकाकुंभक सिद्धहोवैनहीं ॥ तहां अंतर
कुंभक बाह्यकुंभक याभेदकरिकै सोकुंभक दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां यथाशक्तिपरिमाण बाह्यवायुकूं नासिकाद्वारा श

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रीरकेभीतर पूरणकरिकै तिसतैंअंनतर जोश्वासप्रश्वासका निरोधकऱ्याजावैहै ॥ सो अंतरकुंभक कह्याजावैहै ॥ और यथाशक्तिपरिमाण शरीरकेअंतरलेवायुका तानासिकाद्वारा बाह्यपरित्यागकरिकै तिसतैंअनंतर जोश्वासप्रश्वास कानिरोध कऱ्याजावैहै ॥ सो बाह्यकुंभक कह्याजावैहैइति ॥ अब पूर्वकथनकऱ्येहूए पूरक रेचक कुंभक यातीनप्रकार केप्राणायामकेअनुवादपूर्वक चतुर्थकुंभककूं श्रीभगवान् कथनकरेहैं (प्राणापानगतीरुद्वाइति) हेअर्जुन मुखनासि काद्वारा शरीरकेअंतरलेवायुका जोबाह्यनिर्गमनहै ताकानाम श्वासहै ॥ सोश्वासतौं प्राणकोगतिहै ॥ और बाह्यनि कसेहूएवायुका जो तामुखनासिकाद्वारा शरीरकेभीतरप्रवेशहै ताकानाम प्रश्वासहै ॥ सोप्रश्वास अपानकोगतिहै ॥ तहां पूरकविषेतौं प्राणकेश्वासरूपगतिका निरोधहोवैहै ॥ और रेचकविषे अपानकेप्रश्वासरूपगतिका निरोधहोव है ॥ और कुंभकविषेतौं तिनदोनोंगतियोंका निरोधहोवैहै ॥ इसप्रकार क्रमकरिकै तथाएकहींकालविषे ताप्राणअ पानके श्वासप्रश्वासरूपगतिकूं रोकिकरिकै त्रिविधप्राणायामपरायणहूए तथाआहारनियमादिक योगकेसाधनोंक रिकैविशिष्टहूए केईकअधिकारीजन बाह्यअंतरकुंभककेअभ्यासकरिकै निग्रहकऱ्येहूएप्राणोंविषे ज्ञानकर्मइंद्रियरूप प्राणोंकूं होमकरेहैं ॥ अर्थात् चतुर्थकूंभकके अभ्यासकरिकै तिनइंद्रियोंकूं निगृहीतप्राणोंविषे लयकरेहैं इति ॥ यहस र्व अर्थ भगवान्पतंजलिनैं योगसूत्रोंविषे संक्षेपकरिकै तथाविस्तारकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ तहां संक्षेपसूत्रं ॥ (तस्मिन्स तिश्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदलक्षणःप्राणायामःइति) ॥ अर्थयह ॥ तिसआसनकेस्थिरहूए प्राणायाम करणेकूंयोग्य है ॥ कैसाहैसोप्राणायाम ॥ श्वासप्रश्वासकोगतिका निरोधरूपहै अर्थात् प्राण अपान यादोनोंके यथाक्रमतैं धर्म

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूपजे श्वास प्रश्वास यहदोनोंहैं ताश्वासप्रश्वासदोनोंकी पुरुषप्रयत्नतैंविनाहीं जा स्वाभाविक चलनरूपगतिहै तागतिका क्रमकरिकै तथाएकहींकालविषे जोपुरुषप्रयत्नविशेषकरिकै निरोधहै सोनिरोधहैस्वरूपजिसका ताकूं प्राणायामकहेहैंइति ॥ इससंक्षिप्तअर्थकूं अब विस्तारतैंकथनकरेहैं ॥ तहांसूत्रं ॥ (बाह्याभ्यंतरस्तंभवृत्तिर्देशकालसंख्याभिःपरिदृष्टोदीर्घःसूक्ष्मःइति ॥) अर्थयह ॥ सोप्राणायाम बाह्यवृत्ति अभ्यंतरवृत्ति स्तंभवृत्ति तुरीय याभेदकरिकैच्यारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां बाह्यगतिकानिरोधरूपहोणेतैं पूरक बाह्यवृत्ति कह्याजावैहै ॥ और अंतरगतिकानिरोधरूपहोणेतैं रेचक अंतरवृत्ति कह्याजावैहै ॥ अथवा बाह्यवृत्तिशब्दकरिकै रेचककाग्रहणकरणा ॥ और अभ्यंतरवृत्तिशब्दकरिकै पूरककाग्रहणकरणा ॥ और एकहींकालविषेतिनदोनोंगतियोंकाजोनिरोधहै ताकानामस्तंभहै तास्तंभरूपहोणेतैं कुंभक स्तंभवृत्तिकह्याजावैहै ॥ अर्थात् जहां श्वास प्रश्वास दोनोंका एकहीं विधारकप्रयत्नतैं अभावहोवैहै ॥ पूर्वकोन्यांई पूरणकेप्रयत्नकाभीविधारणहोवैनहीं तथारेचनकेप्रयत्नकाभी विधारणहोवैनहीं ॥ किंतु जैसे अग्निकरिकैतप्तपाषाणऊपरिपायाहूआजल परिशोषणकूंप्राप्तहूआ सर्वओरतैंसंकोचकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सर्वदा चलनस्वभाववाला यहप्राणवायुभी बलवान्विधारकप्रयत्नकरिकै ताचलनक्रियातैंरहितहूआ शरीरविषेहीं सूक्ष्महूआस्थितहोवैहै ॥ तिसकालविषे सोसूक्ष्मप्राणवायु पूरणकूंभी प्राप्तहोवैनहीं यातैं पूरकभीहोवैनहीं ॥ तथा सोसूक्ष्मप्राणवायु रेचनकूंभीप्राप्तहोवैनहीं यातैं रेचकभीकह्याजावैनहीं ॥ किंतु परिशेषतैं सोनिरुद्धहूआ सूक्ष्मप्राणवायु कुंभकहीं कह्याजावैहैइति ॥ सोयह पूरक रेचक कुंभक तीनप्रकारकाप्राणायाम देशकरिकै तथाकालकरिकै तथासंख्याक ॥२२५॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रिकै परीक्षाकरयाहूआ सूक्ष्मसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे घनीभूततूलकापिंड प्रसारणकरयाहूआ विरलताकरिकै दीर्घहोवैहै तथासूक्षमहोवैहै ॥ तैसे यहप्राणवायुभी देशकालसंख्याकीअधिकताकरिकै अभ्यासकरयाहूआ दीर्घहोवैहै तथा दुर्लक्ष्यताकरिकै सूक्ष्मभीहोवैहै ॥ सोप्रकार अबदिखावैहैं ॥ तहां प्राणकीगतिरूपजोश्वासहै ॥ सोश्वास तौं हृदयदेशतैंनिकसिकै नासिकाकेअग्रभागकेसन्मुख द्वादशअंगुलपर्यंतदेशविषेजाइकै समाप्तहोवैहै ॥ और अपानकीगतिरूप जोप्रश्वासहै ॥ सोप्रश्वासतौं ताश्वासकीसमाप्तिदेशतैं पुनः उलटिकरिकै ताहृदयदेशविषेजाइकै समाप्तहोवैहै ॥ यहसर्वमनुष्योंके प्राणअपानकी स्वाभाविकगतिहोवैहै ॥ और अभ्यासकरिकैतौं सोप्राणवायु यथाक्रमतैं नाभिदेशतैंनिकासिकै अथवा आधारदेशतैंनिकासिकै तानासिकाकेअग्रभागकेसन्मुख चौवीसअंगुलपर्यंतदेशविषे अथवा छतीसअंगुलपर्यंतदेशविषे जाइकै समाप्तहोवैहै ॥ पुनःतिससमाप्तिदेशतैंहीं उलटिकरिकै तानासिकाद्वारा तानाभिदेशविषे अथवा आधारदेशविषे प्राप्तहोवैहै ॥ तहां बाह्यदेशविषे तावायुकासंबंधतौं वायुतैंरहितदेशविषे आपणीनासिकाकेसन्मुख किसीइषीकाकेसूक्षमतूलकूंराखिकै तातूलकीचलन रूपक्रियातैं अनुमान करयाजावैहै ॥ और शरीरकेअंतरदेशविषे ताप्राणवायुकासंबंधतौं पिपीलिकाकेस्पर्शकेसमानस्पर्शकरिकै अनुमान करयाजावैहै ॥ सो यह देशपरीक्षाकहीजावैहैइति ॥ और नेत्रोंकोजानिमेषक्रियाहै ॥ तानिमेषक्रियावच्छिन्नकालकाजोचतुर्थभागहै ताकानाम क्षणहै ॥ तिनक्षणोंके इयत्ताकानिश्चयकरणा याकानाम कालपरीक्षाहैइति ॥ और आपणेजानुमंडलकूं आपणेहस्तसैं प्रदक्षिणाकीन्यांई तीनवारस्पर्शकरिकै छोटिकामुद्राकरणो ताछोटिकामुद्राअवच्छिन्नजोकालहै ताकानाम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मात्राहै ॥ तिनछतीसमात्रावोंकरिकै जोप्रथम उद्घातहै सो मंदकह्याजावैहै ॥ और सोईहींउद्घात पूर्वतैंद्विगुणक
रयाहूआ द्वितीय मध्यकह्याजावैहै ॥ और सोईहींउद्घात त्रिगुणकरयाहूआ तृतीय तीव्रकह्याजावैहै ॥ तहां नाभि
देशतैंउठाइकै विरेचनकर्येहूए प्राणवायुका जोशिरविषेअभिहननहै ताकानाम उद्घातहै ॥ सोयह संख्यापरीक्षा
कहीजावैहै ॥ अथवा प्रणवमंत्रकेजपकीआवृत्तिकेभेदकरिकै संख्यापरीक्षा जानणी ॥ अथवा श्वासप्रदेशोंकीगणना
करिकै संख्यापरीक्षा जानणी ॥ इसप्रकार काल संख्या यादोनोंका यत्किंचित्भेदअंगीकारकरिकै भिन्नभिन्न कथ
नकरयाहै ॥ यद्यपि कुंभकविषे पूरकरेचककीन्यांई देशव्याप्ति प्रतीतहोवैनहीं ॥ तथापि कालव्याप्ति तथासंख्या
व्याप्ति ताकुभकविषेभी जानीजावैहै ॥ सोयहतीनप्रकारकाप्राणायाम दिनदिनविषेअभ्यासकरयाहूआ दिवस पक्ष
मास इत्यादिकक्रमकरिकै अधिकदेशकालविषेव्यापकहोणेतैं दीर्घकह्याजावैहै ॥ तथा परमनैपुण्यसमाधिकरिकै
गम्यहोणेतैं सूक्षमकह्याजावैहै ॥ इतनैंकरिकै पूरक रेचक कुंभक यहतीनप्रकारकाप्राणायाम कथनकर्या ॥ अब फ
लरूपचतुर्थप्राणायामका निरूपणकरेहैं ॥ तहांपतंजलिसूत्रं (बाह्याऽभ्यंतरविषयाक्षेपीचतुर्थः इति)॥ अर्थयह ॥ बा
ह्यविषयजोश्वासहै ॥ सो रेचककह्याजावैहै ॥ और अंतरविषयजोप्रश्वासहै सो पूरक कह्याजावैहै ॥ अथवा बाह्य
विषयशब्दकरिकै पूरककाग्रहणकरणा ॥ और अभ्यंतरविषयशब्दकरिकै रेचककाग्रहणकरणा तारेचकपूरकदोनों
कीअपेक्षाकरिकै एकहींबलवान् विधारकप्रयत्नकेवशतैं बाह्यअंतरभेदकरिकै दोप्रकारकातृतीयकुंभकहोवैहै ॥ औ
र तिसरेचकपूरकदोनोंकीनअपेक्षाकरिकैहीं केवल कुंभककेअभ्यासकीदृढताकरिकै अनेकवार तिसतिसप्रयत्नकेव

466

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शतैं चतुर्थकुंभकहोवैहैइति ॥ अथवा इससूत्रका यहदूसराव्याख्यान करणा ॥ पूर्वकथनकरयाजो द्वादशअंगुलपर्यंत तथाचौवीसअंगुलपर्यंत तथाछतीसअंगुलपर्यंत प्राणकेजाणेका बाह्यदेशहै ॥ सोबाह्यदेशहीं बाह्यविषयशब्दकरिकैग्रहणकरणा ॥ और अभ्यंतरविषयशब्दकरिकैतौं हृदयनाभिचक्रआदिकोंका ग्रहणकरणा ॥ तिनदोनोंविषयोंकूं सूक्षमदृष्टिसैंनिश्चयकरिकै जोस्तंभरूप गतिकाविच्छेदहै सो चतुर्थ प्राणायाम कह्याजावैहै ॥ और तीसराकुंभकनामा प्राणायामतौं बाह्यविषय अभ्यंतरविषय यादोनोंविषयोंके निश्चयतैंविनाहीं शीघ्रहीं होवैहै ॥ इतनीहीं तीसरे कुंभकनामा प्राणायामविषे तथाचतुर्थ कुंभकनामा प्राणायामविषे विशेषताहै इति ॥ यहहीं च्यारिप्रकारकाप्राणायाम श्रीभगवान्नैं (अपानेजुह्वतिप्राणं) इत्यादिक सार्धश्लोककरिकै कथनकरयाहै इति ॥ २९ ॥ ❋ तहां (दैवमेवापरेयज्ञं) इसतैंआदिलैकै साढेपंचश्लोकोंकरिकै द्वादशयज्ञ कथनकरये ॥ अब तिनद्वादशप्रकारकेयज्ञोंकेजानणेहारेपुरुषोंकूं तथातिनद्वादशप्रकारकेयज्ञोंकेकरणेहारेपुरुषोंकूं जोफल प्राप्तहोवैहै ॥ ताफलकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

सर्वेप्येतेयज्ञविदोयज्ञक्षपितकल्मषाः ॥ ३० ॥ यज्ञशिष्टामृतभुजोयां तिब्रह्मसनातनं ॥ नायंलोकोस्त्ययज्ञस्यकुतोन्यःकुरुसत्तम ॥ ३१ ॥

सर्वे । अपि । एते । यज्ञविदः । यज्ञक्षपितकल्मषाः । यज्ञशिष्टामृतभुजः । यांति । ब्रह्म । सनातनं । नं । अयं । लोकः । अस्ति । अयज्ञस्य ॥ कुतः । अन्यः । कुरुसत्तम ॥ ३१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन तिनयज्ञकूंकरणेहारे तथातिनयज्ञोंकरिकैनाशहूएहैंकल्मषजिनोंके तथातिनयज्ञोंकेउत्तरकालवि
षेअमृतरूपअन्नकूंभोजनकरणेहारे यँह सँर्व हीं अधिकारीजन नित्यँ ब्रह्मकूं प्राप्तहोवैंहै हेअँर्जुन तिनँय
ज्ञोंतैंरहितपुरुषकूं यँह मनुँष्यलोकभी नँहीं प्राप्तहै तौंस्वँर्गादिलोक कँहांतैंहोवैं ॥ ३१ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तद्वादशयज्ञोंकूं जेपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंजानेहैं ॥ अथवा तिनद्वादशयज्ञोंकूं जे प्राप्त
होवैंहैं ॥ अर्थात् तिनयज्ञोंकूं जेपुरुष श्रद्धापूर्वककरेहैं ॥ तिनोंकानाम यज्ञविद्है ॥ ऐसे तिनयज्ञोंकेजानणेहारे तथा
तिनयज्ञोंकेकरणेहारे जेपुरुषहैं ॥ तथा तिनपूर्वउक्तयज्ञोंकरिकै नाशकूंप्राप्तहूएहैंपापकर्मरूपकल्मषजिनोंके ॥ तथा
तिनयज्ञोंकूंकरिकै बाकीरहेहूएकालविषे अमृतरूपअन्नकूंभोजनकरणेहारेजेपुरुषहैं ॥ तेसर्वहींअधिकारीपुरुष अंतः
करणकीशुद्धिद्वारा तथाज्ञानकीप्राप्तिद्वारा नित्यब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैंहैं ॥ अर्थात् इसजन्ममरणादिरूपसंसारतैं तेपुरु
ष मुक्तहोवैंहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै तिनयज्ञोंकेकरणेहारेपुरुषोंकूं फलकीप्राप्ति कथनकरी ॥ अब तिनयज्ञोंकेनहींकर
णेहारेपुरुषोंकूं दोषकोप्राप्ति कथनकरेहैं (नायंलोकोस्त्ययज्ञस्यइति) हेअर्जुन पूर्वउक्तद्वादशयज्ञोंकेमध्यविषे कोईभी
यज्ञ जिसपुरुषकूंनहींहै ताकानाम अयज्ञहै ॥ ऐसे अयज्ञपुरुषकूं यहअल्पसुखवाला मनुष्यलोकभी प्राप्तहोवैनहीं ॥
जिसकारणतैं सोअयज्ञपुरुष सर्वशिष्टपुरुषोंकरिकैनिंद्यहोणेतैं दुःखीहींहै ॥ जबी तिसअयज्ञपुरुषकूं यहअल्पसु
खवालामनुष्यलोकभी नहींप्राप्तहूआ ॥ तबी महान्पुण्यकर्मोंकरिकैप्राप्तहोणेहारा स्वर्गादिरूपलोक तिसअयज्ञपु
रुषकूं किसप्रकार प्राप्तहोवैंगा ॥ किंतु ताअयज्ञपुरुषकूं कोईभीलोक नहींप्राप्तहोवैंगा इति ॥ ३१ ॥ ❋ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शंका ॥ हेभगवन् पूर्व आपनैं जोफलसहित यज्ञोंकाकथनकऱ्याहै ॥ सो केवल आपणीकल्पनाकरिकैहींकथन कऱ्याहै ॥ तिनफलसहितयज्ञोंविषे दूसराकोई प्रमाणहैनहीं ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् साक्षात् वे दहीं तिनयज्ञोंविषे प्रमाणहै याप्रकारकाउत्तर कथनकरेहै ॥

एवंबहुविधायज्ञावितताब्रह्मणोमुखे॥कर्मजान्विद्धितान्सर्वानेवंज्ञात्वाविमोक्ष्यसे ३२

एवं। बहुविधाः। यज्ञाः। विततताः। ब्रह्मणः। मुखे। कर्मजान्। विद्धि। तान्। सर्वान्। एवं। ज्ञात्वा। विमोक्ष्यसे॥ इतिपद०॥

हेअर्जुन इसप्रकार बहुतप्रकारके यज्ञ वेदके मुखविषे विस्तृतहैं तिन सर्वयज्ञोंकूं तूं कर्मजन्यहीं जान इसप्रकार जानिकरिकै तूं इससंसारतैं मुक्तहोवैंगा ॥ ३२ ॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन (दैवमेवापरेयज्ञं) इसवचनतैंआदिलैके पूर्वकथनकऱ्येजेद्वादशयज्ञहैं ॥ जेयज्ञ सर्ववैदिकश्रेयके साधनरूपहैं ॥ तेसर्वयज्ञ ऋगादिकवेदकेमुखविषे विस्तृतहैं ॥ अर्थात् ऋगादिक वेदद्वाराहीं तेसर्वयज्ञ जानेजावेहैं ॥ केवल आपणीकल्पनाकरिकै हमनैं तेयज्ञ कथनकऱ्येनहीं ॥ हेअर्जुन तिनसर्वयज्ञोंकूं तूं कायिकवाचिकमानसकर्मों तैंहीं उत्पन्नहूआजान ॥ तिनयज्ञोंकूं आत्मातैंउत्पन्नहूआ जाननानहीं ॥ जिसकारणतैं यहआत्मादेव सर्वव्यापारों तैंरहितहैं ॥ तिसकारणतैं तेयज्ञ मैंआत्माकेव्यापाररूपनहींहै ॥ किंतु मैंआत्मा सर्वव्यापारोंतैंरहित असंगउदासी नहूं ॥ इसप्रकार आत्मादेवकूं असंग उदासीनजानिकै तूंअर्जुन इससंसारबंधतैं मुक्तहोवैंगा इति॥ ३२ ॥ ❋ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तहां पूर्वप्रसंगविषे श्रीभगवान्नैं सर्वयज्ञोंका तुल्यहीं कथनकऱ्या ॥ यातैं कर्मयज्ञ ज्ञानयज्ञ यहदोनोंयज्ञ समानहींहो वैंगे ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् तिनदोनोंयज्ञोंकीसमानताकेनिवृत्तकरणेवासतै ज्ञानयज्ञकीश्रेष्ठताकूंकहेहै ॥

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञःपरंतप ॥ सर्वंकर्माखिलंपार्थज्ञानेपरिसमाप्यते ॥३३॥

श्रेयान्। द्रव्यमयात्। यज्ञात्। ज्ञानयज्ञः। परंतप। सर्वं। कर्म। अखिलं। पार्थ। ज्ञाने। परिसमाप्यते॥इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन द्रव्यमय यज्ञतैं ज्ञानयज्ञ अत्यंतश्रेष्ठहै जिसकारणतैं हेपार्थ सर्व निर
वशेष कर्म ज्ञानविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ३३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन द्रव्यमययज्ञतैंआदिलैके जितनैंकीज्ञानतैंशून्ययज्ञहैं ॥ तिनसर्वयज्ञोंतैं सोज्ञानयज्ञ अत्यंतश्रेष्ठ है ॥ काहेतैं तेज्ञानतैंशून्यसर्वयज्ञतौं संसाररूपफलकीहीं प्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ और सोज्ञानयज्ञतौं साक्षात् मोक्षरूपफलकीहीं प्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ज्ञानादेवतुकैवल्यं) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीपुरुषकूं ज्ञानतैंही कैवल्यमोक्षकीप्राप्तिहोवैहैइति ॥ अब ताज्ञानयज्ञकोश्रेष्ठताविषे श्रीभगवान् हेतुकहेहै (सर्वंकर्माखिलंइति) हेअर्जुन अग्निहोत्र ज्योतिष्टोम सोमयज्ञ चयनयज्ञ इसतैं आदिलैके जितनैंकीश्रौतकर्महैं ॥ तथा उपासनादिरूप जितनैंकीस्मार्त्तकर्महैं ॥ तेसर्वकर्म निरवशेषहूए ब्रह्मात्मऐक्यज्ञानविषेहीं समाप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् तेसर्वश्रौतस्मार्त्तकर्म पापरूप प्रतिबंधकीनिवृत्तिद्वारा ताआत्मज्ञानविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ तहांश्रुति ॥ (तमेतंवेदानुवचनेनब्रा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेनइति ॥ धर्मेणपापमपनुदतिइति ॥) अर्थयह ॥ यहअधिकारीब्राह्मण वेदकेअध्ययनकरिकै तथायज्ञकरिकै तथादानकरिकै तथातपकरिकै इसआत्मादेवकेजानणेकीइच्छाकरेहैंइति ॥ और यहअधिकारोपुरुष धर्मकरिकै पापकूं निवृत्तकरेहैइति ॥ सर्वशुभकर्मोंका प्रतिबंधकपापोंकोनिवृत्तिद्वारा आत्मज्ञानविषेहीं उपयोगहै ॥ इसअर्थकूं श्रीव्यासभगवान्नैं तथाभाष्यकारोंनैं (सर्वापेक्षायज्ञादिश्रुतेरश्ववत्) इससूत्रविषे विस्तारतैं कथनकऱ्याहै ॥ यातैं यहज्ञानरूपयज्ञहीं सर्वयज्ञोंतैंश्रेष्ठहै इति ॥ ३३ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसआत्मज्ञानविषे सर्वशुभकर्मोंका परिअवसानहै ॥ तिसआत्मज्ञानकीप्राप्तिविषे अत्यंत समीपउपाय कौंनहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् ताउपायका कथनकरेहै ॥

तद्विद्धिप्रणिपातेनपरिप्रश्नेनसेवया ॥ उपदेक्ष्यंतितेज्ञानंज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥ ३४ ॥

तत् । विद्धि । प्रणिपातेन । परिप्रश्नेन । सेवया । उपदेक्ष्यंति । ते । ज्ञानं । ज्ञानिनः । तत्त्वदर्शिनः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन तिसआत्मज्ञानकूं तूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेआगे दंडवत्प्रणामकरिकै तथाप्रश्नकरिकै तथासेवाकरिकै प्रासहोउ ताकरिकैप्रसन्नहूए तेतत्त्वदर्शी ज्ञानीगुरु तुमारेतांई ज्ञानकूं उपदेशकरैंगे ॥ ३४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वशुभकर्मोंकाफलभूतजो आत्मज्ञानहै ॥ तिसआत्मज्ञानकूं तूं अवश्यकरिकैप्रासहोउ ॥ ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै तूं याप्रकारकाउपायकर ॥ तहां (आचार्यवान्पुरुषोवेद) याश्रुतिनैं ब्रह्मवेत्ताआचार्यकेउपदेशतैंहीं ज्ञानकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ यातैं तूं अर्जुनभी ब्रह्मवेत्ताआचार्योंकेसमीपजाइकै प्रथम दंडवत्प्रणामकर ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तथा सर्वप्रकारतैं तिनआचार्योंकीअनुकूलताकासंपादकजोव्यापारविशषहै ताकानाम सेवाहै ऐसीसेवाकूंकर ॥ तिसतैंअनंतर हेभगवन् मैं कौंनहूं तथामैं किसप्रकार बंधायमानहूआहूं तथाकिसउपायकरिकै मैं इससंसारतैं मुक्त होवौंगा याप्रकारकाप्रश्न तिनगुरुवोंकेआगेकर ॥ इसप्रकार भक्तिश्रद्धापूर्वक तुमारेदंडवत्प्रणामकरिकै तथासेवाकरिकै प्रसन्नहूए तेतत्त्वदर्शीज्ञानवान्गुरु तुमारेतांई आत्मज्ञानका उपदेशकरैंगे ॥ जोआत्मज्ञान साक्षात् मोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ ईहां पदोंकेज्ञानविषे तथावाक्योंकेज्ञानविषे तथानानाप्रकारकीयुक्तियोंकेज्ञानविषे जे पुरुष अत्यंतकुशलहोवैहैं तिनोंकानाम ज्ञानीहै ॥ और जिनपुरुषोंकूं संशयविपरीतभावनातैंरहित आत्माका साक्षात्कारहूआहै तिनोंकानाम तत्त्वदर्शीहै ॥ ऐसे ज्ञानवान् तथातत्त्वदर्शीपुरुषोंनैं उपदेशकऱ्याजो आत्मज्ञानहै सो आत्मज्ञानहीं मोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरेहै ॥ तातत्त्वदर्शीपणेतैंरहित केवल पदवाक्ययुक्तिआदिकोंकेज्ञानविषेकुशल पुरुषनैं उपदेशकऱ्याहूआ सोआत्मज्ञान तामोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ अर्थात् श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुनैं उपदेशकऱ्याहूआ आत्मज्ञानहीं तामोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरेहैइति ॥ तहां (ज्ञानिनः) यापदकरिकै श्रीभगवान्नैं श्रोत्रियका कथनकऱ्याहै ॥ और (तत्त्वदर्शिनः) यापदकरिकै श्रीभगवान्नैं ब्रह्मनिष्ठका कथनकऱ्याहै ॥ इसीअर्थकूं साक्षात् श्रुतिभगवतीभी कथनकरेहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तद्विज्ञानार्थंसगुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिःश्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठंइति ॥) अर्थ यह ॥ तिसपरमात्मादेवकेसाक्षात्कारवासतै यहअधिकारीपुरुष यथाशक्तिभेटाहस्तविषेलेकै श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुके समीपजावैइति ॥ ईहां (ज्ञानिनः तत्त्वदर्शिनः) इस आचार्यकेवाचक दोनोंपदोंविषे जोबहुवचन भगवान्नैं कथन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करयाहै ॥ सो आचार्यकी महानताकेबोधनकरणेवासतै कथनकरयाहै ॥ कोई ताबहुवचनकरिकै बहुतआचार्य भगवा
नूकूं विवक्षितनहींहै ॥ काहेतैं श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठएकहींआचार्यतैं इसअधिकारीशिष्यकूं तत्त्वसाक्षात्कारकीप्राप्ति हो
इसकेहै ॥ तातत्त्वसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै बहुतआचार्योंकेसमीपजानेका किंचित्मात्रभी प्रयोजननहींहै इति ॥
३४ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारके अत्यंतदृढउपायकरिकै ताआत्मज्ञानकेउत्पन्नकीयेहूएभी ताज्ञा
नकरिकै कौंनफलप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताआत्मज्ञानकेफलका वर्णनकरेहै ॥

यज्ज्ञात्वानपुनर्मोहमेवंयास्यसिपांडव॥येनभूतान्यशेषेणद्रक्ष्यस्यात्मन्यथोमयि॥ ३५

यत्। ज्ञात्वा। नपुनः। मोहं। एवं। यास्यसि। पांडव। येन। भूतानि। अशेषेण। द्रक्ष्यसि। आत्मनि। अथो। मयि। इतिप०
हेअर्जुन जिसपूर्वउक्तज्ञानकूं प्राप्तहोइकै तूं पुनः इसप्रकारके मोहकूं नहीं प्राप्तहोवैंगा जिसकारणतैं जिस
ज्ञानकरिकै इनसर्व भूतोंकूं आपणेआत्माविषे तथा मैंपरमेश्वरविषे अभेदरूपकरिकै देखैंगा ॥ इतिपदच्छेदः ॥
॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुनैं उपदेशकरयाजो आत्मज्ञानहै ॥ ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोइकै इनबांधवोंके
वधादिकहैंनिमित्तजिसविषे ऐसेभ्रमरूपशोककूं तूं पुनः कदाचित्भी नहींप्राप्तहोवैंगा ॥ काहेतैं आत्माकेअज्ञानक
रिकैजन्य जितनैंकी ब्रह्मातैंआदिलैके स्तंबपर्यंत पितापुत्रादिकभूतप्राणीहैं तिनसर्वभूतप्राणीयोंकूं जिसआत्मज्ञानक
रिकै तूं आपणेत्वंपदार्थआत्माविषे तथावास्तवतैं भेदतैंरहित सर्वकाअधिष्ठानभूत मैंतत्पदार्थपरमेश्वरविषे अभेद

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूपकरिकै देखैंगा ॥ जिसकारणतैं अधिष्ठानतैंभिन्नकरिकै कल्पितवस्तुका अभावहींहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मैंभगवान् वासुदेवकूं अपनाआत्मारूपजानिकै अज्ञानकेनाशहूएतैंअनंतर ताअज्ञानकेकार्यरूप यहसर्वभूतप्राणीभोस्थितहो वैंगेनहींइति ॥ ईहां किसीटीकाविषेतौं (आत्मनि मयि) यादोनोंपदोंका समानाधिकरणअंगीकारकरिकैआत्मारूप मैंपरमेश्वरविषे तिनसर्वभूतोंकूं तूं देखैंगा इसप्रकारकाअर्थ कथनकरयाहै इति ॥ ३५ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् इ सप्रकारकेआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकैभी मैंअर्जुन भीष्मद्रोणादिकगुरुवोंके तथादुर्योधनादिकबांधवोंके वधजन्यपापतैं मुक्तनहींहोवौंगा ॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताआत्मज्ञानका परममाहात्म्य कथनकरेहै ॥

अपिचेदसिपापेभ्यःसर्वेभ्यःपापकृत्तमः ॥ सर्वंज्ञानप्लवेनैववृजिनंसंतरिष्यसि ॥ ३६ ॥

अपि । चेत् । असि । पापेभ्यः । सर्वेभ्यः । पापकृत्तमः । सर्वं । ज्ञानप्लवेन । एव । वृजिनं । संतरिष्यसि ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जोकदाचित् तूं सर्व पापकारीपुरुषोंतैं अत्यंतपापकारीभी होवै तौंभी तूं
ताँसर्व पापरूपसमुद्रकूं ज्ञानरूपनौकाकरिकै हीं तरैंगा ॥ ३६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ ईहां अपि चेत् यहदोनोंपद असंभावितअर्थकेअंगीकारका बोधकहैं ॥ अर्थात् सर्वपापकारीपुरुषोंतैं ता अर्जुनविषे अत्यंतपापकारीपणा यद्यपि हैनहीं ॥तथापि ज्ञानकेफलका कथनकरणेवासतै ताअर्जुनविषे सोअत्यंतपापका रीपणा अंगीकारकरिकै श्रीभगवान् कहेहै ॥ हेअर्जुन जोकदाचित् तूं सर्वपापकारीपुरुषोंतैं अत्यंतपापकारीभीहोवैं ॥ तौं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भी तिस सर्वपापरूपसमुद्रकूं तूं इसज्ञानरूपनौकाकरिकैहीं तरैंगा ॥ ताआत्मज्ञानतैंभिन्नउपायकरिकै यहपापरूपसमुद्र तर्‌याजावैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (तरतिशोकमात्मवित्) ॥ अर्थयह ॥ आत्मवेत्तापुरुष सर्वसंसाररूपशोककूंतरेहैइति ॥ ईहां (वृजिनं) याशब्दकरिकै संसाररूपफलकीप्राप्तिकरणेहारे सर्वधर्मअधर्मरूपकर्मोंकाग्रहणकरणा॥काहेतैं मोक्षकीइच्छावा नूंअधिकारीपुरुषकूं पापकर्मकीन्यांई सोपुण्यकर्मभी अनिष्टहींहै इति ॥ ३६॥*॥ शंका ॥ हेभगवन् यहअधिकारीपुरुषआ त्मज्ञानरूपनौकाकरिकै पुण्यपापरूपसमुद्रकूं तरेहै॥यहवार्त्ता पूर्वआपनैं कथनकरी॥तहां जैसेनौकाकरिकैसमुद्रकेतर्‌येहू एभी तासमुद्रकानाशहोवैनहीं॥तैसे आत्मज्ञानरूपनौकाकरिकै इसपुण्यपापरूपसमुद्रकेतर्‌येहूएभी तापुण्यपापरूपकर्म कानाशहोवैंगानहीं॥ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥श्रीभगवान् आत्मज्ञानकरिकैतिनकर्मोंकेनाशविषे दूसरादृष्टांतकथनकरेहै

यथैधांसिसमिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ॥ ज्ञानाग्निःसर्वकर्माणिभस्मसात्कुरुतेतथा ॥

यथा । एधांसि । समिद्धः । अग्निः । भस्मसात् । कुरुते । अर्जुन । ज्ञानाग्निः । सर्वकर्माणि । भस्मसात् । कुरुते । तथा । इतिप० ॥ हेअर्जुन जैसे प्रज्वलित अग्नि काष्ठोंकूं भस्मीभूत करेहै तैसे ज्ञानरूपअग्नि सर्वकर्मोंकूं भस्मीभूत करेहै ॥३७॥ इतिपदार्थः ॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे अत्यंतप्रज्वलितअग्नि बहुतकाष्ठोंकूंभी भस्मीभूत करिदेवैहै ॥ तैसे मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार काजोआत्मज्ञानरूपअग्निहै ॥ सोज्ञानरूपअग्निभी प्रारब्धकर्मतैंभिन्न सर्वपुण्यपापकर्मोंकूं भस्मीभूतकरिदेवैहै ॥ अर्थात् सोज्ञानरूपअग्नि तिनपुण्यपापकर्मोंकेकारणभूतअज्ञानकूं नाशकरिकै तिनकर्मोंकूंभी नाशकरेहैइति ॥ तहांश्रुति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः ॥ क्षीयंतेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरेइति ॥) अर्थयह ॥ ब्रह्मादिकदेवतावों तैंभी अत्यंतउत्कृष्टजोपरमात्मादेवहै ॥ तापरमात्मादेवकेसाक्षात्कारहूए इसविद्वान्पुरुषकी आत्माअनात्माकाअ ध्यासरूपहृदयग्रंथि नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा आत्मा देहादिकोंतैंभिन्नहै अथवा देहादिरूपहै तहां देहादिकोंतैंभि न्नहूआभी आत्मा ब्रह्मरूपहै अथवा ब्रह्मतैंभिन्नहै इसतैंआदिलैके जितनैंकी आत्मविषयकसंशयहैं तेसर्वसंशयभी नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा जिन पुण्यपापरूपप्रारब्धकर्मोंनैं यहशरीरदीयाहै तिनप्रारब्धकर्मोंकूंछोडिकै दूसरेसर्वकर्म नाशकूंप्राप्तहोवैहैंइति ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यासभगवान्नैं ब्रह्मसूत्रोंविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (तदधिगमउत्तर पूर्वाघयोरश्लेषविनाशौतद्व्यपदेशात् ॥) अर्थयह ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारके आत्मसाक्षात्कारकेहूए इसविद्वान्पुरु षके पूर्वसंचितकर्मोंकातौं नाशहोजावैहै ॥ और जैसे जलविषेस्थितपद्मपत्रकूं जलकास्पर्शहोवैनहीं ॥ तैसे आत्म ज्ञानतैं उत्तरकरयेहूएकर्मोंका ताविद्वान्पुरुषकूं स्पर्शहींहोवैनहीं ॥ यहवार्ता अनेकश्रुतिस्मृतियोंविषे कथनकरीहैइति ॥ और जिसशरीरविषे इसविद्वान्पुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहूईहै ॥ तिसशरीरकेआरंभकरणेहारे जेपुण्य पापरूपप्रारब्धकर्महैं ॥ तिनप्रारब्धकर्मोंकातौं तिसशरीरकेनाशकालविषेहीं नाशहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तस्यतावदेव चिरंयावन्नविमोक्ष्येऽथसंपत्स्ये ॥) अर्थयह ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूं विदेहमोक्षकीप्राप्तिविषे तितनैंकालपर्यंतहीं विलंबहै ॥ जितनैंकालपर्यंत प्रारब्धकर्मोंकेभोगपूर्वक इसशरीरकीनिवृत्ति नहींहूई ॥ इसशरीरकेनिवृत्तहूएतैंअनंतर सोवि द्वान्पुरुष विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ यहवार्त्ता ॥ श्रीव्यासभगवान्नैंभी ब्रह्मसूत्रोंविषेकथनकरीहै ॥ तहांसूत्रं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

(भोगेनत्वितरेक्षपयित्वासंपद्यते ॥) अर्थयह ॥ संचितक्रियमाणकर्मोंतैंभिन्न पुण्यपापरूपप्रारब्धकर्मोंका भोगतैंनाश करिकै यहविद्वान्पुरुष विदेहमोक्षकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ और वसिष्ठसनकादिकजेअधिकारकपुरुषहै ॥ तिनअधिकारकपुरुषोंकूंतौं ज्ञानकीउत्पत्तितैंअनंतरभी दूसरेशरीरोंकीप्राप्ति शास्त्रोंविषेदेखणेमैंआवेहै ॥ यातैं (यावदधिकारमवस्थितिराधिकारकाणां) इससूत्रकेव्याख्यानविषे भगवान्भाष्यकारोंनैं याप्रकारकीव्यवस्था कथनकरीहै॥ तिन वसिष्ठादिकोंकूं जिसशरीरविषे आत्मज्ञानकीप्राप्तिभईहै ॥ तिसशरीरकेआरंभकरणेहारे जेप्रारब्धकर्महैं ॥ तेप्रारब्धकर्महीं तिनवसिष्ठादिकोंके दूसरेशरीरोंकाभी आरंभकरेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ अनेकशरीरोंकाआरंभकरणेहारा जोबलवान्प्रारब्धकर्महै ताकानाम अधिकारहै ॥ सोऐसाअधिकार वसिष्ठादिकउपासकपुरुषोंकाहींहोवैहै ॥ अन्यजीवोंका होवैंनहीं ॥ सोऐसाअधिकार जबपर्यंतरहेहै ॥ तबपर्यंतहीं तिनवसिष्ठादिक अधिकारकपुरुषोंकीस्थितिहोवैहै ॥ यातैंयहअर्थासिद्धभया ॥ जिनकर्मोंनैं आपणेफलकाआरंभनहींकर्याहै ॥ तेकर्मतौं आत्मज्ञानरूपअग्निकरिकै नाशहोइजावेहैं ॥ और जिनकर्मोंनैं आपणेफलकाआरंभकर्याहै ॥ तेकर्मतौं भोगकीसमाप्तिपर्यंत स्थितहोवैहैं ॥ तिनप्रारब्धकर्मोंकाभोग अस्मदादिकतत्त्ववेत्ताजीवोंविषेतौं एकहींदेहकरिकैहोवैहै ॥ और वासिष्ठादिकअधिकारकपुरुषोंविषेतौं अनेकदेहोंकरिकै सोभोग होवैहैइति ॥ ३७॥ ❋ ॥ जिसकारणतैं इसआत्मज्ञानका ऐसामहान्प्रभावहै ॥ तिसकारणतैं इसआत्मज्ञानकेसमान दूसराकोईपदार्थहैनहीं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहिज्ञानेनसदृशंपवित्रमिहविद्यते ॥ तत्स्वयंयोगसंसिद्धःकालेनात्मनिविंदति ॥ ३८ ॥

नँ । हिं । ज्ञानेन । सँदृशं । पँवित्रं । इहँ । विद्यँते । तँत् । स्वँयं । योगँसंसिद्धः । कालेँन । आँत्मनि । विंदँति॥इतिपद०

हेअर्जुन जिसकारणतैं इसवेदलोकविषे ज्ञानके समान पवित्र नहीं विद्यमानहै तिससंज्ञानकूं महान कालकरिकै कर्मयोगकरिकैशुद्धचित्तवालापुरुष आपहीं अंतःकरणविषे प्राप्तहोवैहै ॥ ३८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वेदोंविषे अथवा इसलोकव्यवहारविषे इसआत्मज्ञानकेसमान दूसराकोईपदार्थ शुद्धिकरणेहाराहैनहीं ॥ किंतु यहएकआत्मज्ञानहीं शुद्धिकरणेहाराहै ॥ काहेतैं इसआत्मज्ञानतैंभिन्न जितनैंकीदूसरेकर्मउपासनादिकउपायहैं ॥ तेउपाय अज्ञानकीनिवृत्तिकरैनहीं ॥ यातैं तेभिन्नउपाय अज्ञानरूपमूलसहितपापोंकोनिवृत्तिकरैनहीं ॥ किंतु यत्किंचित् पापकीनिवृत्तिकरेहैं ॥ जैसे प्रायश्चित्त यत्किंचित् पापकीनिवृत्तिकरेहै ॥ और जबपर्यंत तिनसर्वपापोंका मूलकारणरूप अज्ञान विद्यमानहै ॥ तबपर्यंत किसीप्रायश्चित्तादिकउपायोंकरिकै एकपापकेनाशहूएभी पुनः दूसरेपाप अवश्यकरिकैउत्पन्नहोवैंगे ॥ और आत्मज्ञानकरिकैतौं अज्ञानकेनिवृत्तिहूए मूलसहित सर्वपापोकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं इसआत्मज्ञानकेसमान दूसराकोई शुद्धिकरणेकाउपायहैनहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोआत्माकाज्ञान इनसर्वप्राणीयोंकूं शीघ्रहीं किसवासतैनहींउत्पन्नहोता ॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (तत्स्वयंयोगसंसिद्धःइति) हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष बहुतकालपर्यंत तापूर्वउक्तकर्मयोगकरिकै अंतः

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करणको शुद्धिपूर्वक आत्मज्ञानकेयोग्यताकूंप्राप्तहूआहै ॥ सोअधिकारीपुरुषहीं आपहीं ताआपणेअंतःकरणविषे तिस आत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसअंतःकरणकीशुद्धिरूपयोग्यताकूंनहींप्राप्तहूआपुरुष ताआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा अन्यकिसीपुरुषकेदीयेहूएज्ञानकूं आपणेविषेस्थितरूपकरिकैभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा अन्यकिसीपुरुषविषेस्थितज्ञानकूं आपणाकरिकैभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सोशुद्धचित्तवालापुरुष आपहीं आपणेअंतःकरणविषेहीं ताआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ ३८ ॥ तहां जिसउपायकरिकै नियमपूर्वक आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ सोउपाय पूर्वउक्त प्रणिपातसेवादिकउपायोंकीअपेक्षाकरिकै अत्यंतसमीपहै ॥ ऐसेअत्यंतसमीपउपायकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

श्रद्धावाँल्लभतेज्ञानंतत्परःसंयतेंद्रियः॥ज्ञानंलब्ध्वापरांशांतिमचिरेणाधिगच्छति॥३९॥

श्रद्धावान्। लभते। ज्ञानं। तत्परः। संयतेंद्रियः। ज्ञानं। लब्ध्वा। परां। शांतिं। अचिरेण। अधिगच्छति॥इतिप०

हेअर्जुन जोपुरुष श्रद्धावान्है तथागुरुकीउपासनाविषेतत्परहै तथाजितेंइंद्रियहै सोपुरुषहीं आत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैहै ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोइकै शीघ्रहीं कैवल्य मुक्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ३९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ब्रह्मवेत्तागुरुकेवचनोंविषे तथावेदांतशास्त्रकेवचनोंविषे यहवचन यथार्थअर्थकेहींकहणेहारेहैं या प्रकारकी प्रमाणरूपजाआस्तिक्यबुद्धिहै ताकानाम श्रद्धाहै ॥ ऐसीश्रद्धावालापुरुषहीं ताआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ ऐसाश्रद्धावान्हूआभी जोपुरुष अत्यंतआलसीहोवैहै ॥ ताआलसीपुरुषकूंभी ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोणीचा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हीये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहहै (तत्परःइति) हेअर्जुन जोपुरुष श्रद्धावान्होवैहै ॥ तथा आत्मज्ञा
नकीप्राप्तिकाउपायभूत जेब्रह्मवेत्तागुरुकीउपासनादिकहैं तिनउपायोंविषे जोपुरुष आलस्यतैंरहितहूआ अत्यंत त
त्परहोवैहै ॥ सोपुरुषहीं ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिस तत्परतातैंविना केवलश्रद्धावान्पुरुष ताआत्मज्ञानकूं
प्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोपुरुष श्रद्धावान्भीहै तथाब्रह्मवेत्तागुरुकोउपासनादिकोंविषे तत्परभीहै ॥ परंतु श्रो
त्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंतैं जिसनैं निवृत्तकऱ्यानहीं ॥ ऐसेअजितइंद्रियपुरुषकूंभी ताआत्मज्ञा
नकीप्राप्तिहोणीचाहीये ॥ ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (संयतेंद्रियःइति) हेअर्जुन जोपुरुष श्रद्धावान्भी
है तथातत्परभीहै ॥ परंतु जिसपुरुषनैं आपणेश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं शब्दादिकविषयोंतैंनिवृत्तनहींकऱ्या ॥ सोअजित
इंद्रियपुरुषभी ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु जोपुरुष श्रद्धावान्होवैहै ॥ तथातत्परहोवैहै तथाजितइंद्रियहोवैहै ॥
सोपुरुषहीं ताआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और (तद्विद्धिप्रणिपातेन) याश्लोकविषे जेपूर्व प्रणिपात प्रश्न सेवा यहतीनउपा
य आत्मज्ञानकेकथनकऱ्येथे ॥ तेतोनों बाह्यउपायतौं दांभिक मायावीपुरुषविषेभी संभवहोइसकेहै ॥ यातैं तेप्रणिपाता
दिकबाह्यउपाय नियमकरिकै ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिविषेहेतुहोवैनहीं ॥ और इसश्लोकविषे कथनकऱ्येजे श्रद्धा तत्पर
ता जितइंद्रियता यहअंतरतीनउपायहैं ॥ तेयहतीनउपायतौं नियमपूर्वक ताआत्मज्ञानकी प्राप्तिकरेहैं ॥ ऐसेश्रद्धादिक
तीनउपायोंकरिकै यहअधिकारीपुरुष ताआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै कार्यसहितअविद्याको निवृत्तिरूप कैवल्यमुक्तिकूं
व्यवधानतैंविनाहीं प्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जेसे दीपक आपणीउत्पत्तिमात्रकरिकैहीं अंधकारकोनिवृत्तिकरेहै ॥ ताअं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धकारकीनिवृत्तिकरणेविषे सोदीपक किसीभीसहकारीकारणकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ तैसे यहआत्मज्ञानभी आपणी उत्पत्ति मात्रकरिकैहीं अज्ञानकीनिवृत्तिकरेहै ॥ ताअज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे सोआत्मज्ञान दूसरेकिसीभी प्रसंख्यानादिक उपायोंकीअपेक्षाकरैनहीं इति ॥ ३९ ॥ * ॥ तहां इसपूर्वउक्तअर्थविषे तुमनैं कदाचित्भी संशयकरणानहीं ॥ जिसकारणतैं संशयवान्पुरुष महान्अनर्थकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्चसंशयात्माविनश्यति॥नायंलोकोस्तिनपरोनसुखंसंशयात्मनः॥४०

अज्ञः। च। अश्रद्दधानः। च। संशयात्मा। विनश्यति। न। अयं। लोकः। अस्ति। न। परः। न। सुखं। संशयात्मनः॥इतिप०

हेअर्जुन अज्ञानीपुरुष तथा अश्रद्धावान्पुरुष तथा संशययुक्तपुरुष विनाशकूंहींप्राप्तहोवैहै तिससंशययुक्तपुरुषकूं यह मनुष्यलोकभी नहीं सिद्धहोवैहै तथा स्वर्गादिरूपपरलोकभी नहीं सिद्धहोवैहै तथा भोजनादिकृतसुखभी नहींप्राप्तहोवैहै ॥ ४० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष वेदांतशास्त्रकेअध्ययनतैंरहितहोणेतैं आत्मज्ञानतैंशून्यहैं तापुरुषकानाम अज्ञहै ॥ और ब्रह्मवेत्तागुरुनैं कथनकऱ्याजो अर्थहै तथावेदांतशास्त्रनैं कथनकऱ्याजोअर्थहै ॥ ताअर्थविषे यह अर्थ इसप्रकारकाहैनहीं याप्रकारकी विपर्ययरूपजानास्तिक्यबुद्धिहै ताकानाम अश्रद्धाहै ॥ ताअश्रद्धाकरिकै जोपुरुष युक्तहैं तापुरुषकानाम अश्रद्दधानहै ॥ और लौकिकवैदिकसर्वअर्थोंविषे यहअर्थ इसप्रकारकाहै अथवा अन्यप्रकारकाहै याप्रकारकेसंशय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करिकै जिसपुरुषका चित्त युक्तहै तापुरुषकानाम संशयात्माहै ॥ ऐसा अज्ञपुरुष तथाअश्रद्दधानपुरुष तथासंशयात्मापुरुष यहतीनोंपुरुष नाशकूंहींप्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् आपणेअर्थतैंभ्रष्टहोवैहैं ॥ ईहां सोसंशयात्मापुरुष जिसप्रकारकेअनर्थकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसप्रकारकेअनर्थकूं सोअज्ञपुरुष तथाअश्रद्दधानपुरुष प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तिसतैंन्यूनअनर्थकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार तासंशयात्मापुरुषतैं अज्ञपुरुषविषे तथाअश्रद्दधानपुरुषविषे न्यूनताबोधनकरणेवासतैंतिनदोनोंकेवाचकपदोंकेअंतविषे चकार कथनकरयाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोसंशयात्मापुरुष अज्ञपुरुषतैं तथाअश्रद्दधानपुरुषतैं अधिक अनर्थकूंप्राप्तहोवैहै यहवार्त्ता किसप्रकार जानीजावै॥ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै(नायंलोकःइति)हेअर्जुन जोपुरुष सर्वदासंशयकरिकैयुक्तहै ॥ सोसंशयआत्मापुरुष आपणेमित्रादिकोंविषेभी यहहमारेमित्रहैं अथवाशत्रुहैंयाप्रकारका संशयहींकरेहै ॥ और सोसंशयात्मापुरुष धनादिकपदार्थोंकेएकठेकरणेविषेभीप्रवृत्तहोवैनहीं ॥ यातैंतिससंशयात्मापुरुषकूं यहमनुष्यलोकभी सिद्धहोवैनहीं ॥ और तासंशयात्मापुरुषकूं वेदकेवचनोंविषेभी सर्वदा संशयबन्यारहेहै॥ यातैं तासंशयात्मापुरुषतैं धर्मका तथाज्ञानका संपादनहोइसकैनहीं ॥ याकारणतैं तासंशयात्मापुरुषकूं स्वर्गमोक्षादिरूपपरलोकभी सिद्धहोवैनहीं ॥ और तासंशयात्मापुरुषकूं भोजनादिकोंविषेभी यहभोजनादिक मैं करौं अथवा नहीं करौं याप्रकारकासंशय सर्वदा बन्यारहेहै ॥ यातैं तासंशयात्मापुरुषकूं भोजनादिकृतविषयसुखभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ ताअज्ञपुरुषकूं तथाअश्रद्दधानपुरुषकूं यद्यपि सोपरलोकप्राप्तहोवैनहीं ॥ तथापि यहमनुष्यलोक तथाभोजनादिकृतविषयसुख यहदोनोंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैंहीं शास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं ताअज्ञपुरुषकूं सुसाध्य कह्याहै ॥ और ता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अश्रद्दधानपुरुषकूं प्रयत्नसाध्य कह्याहै ॥ और तासंशयात्माकूं असाध्य कह्याहै ॥ ईहां जिसपुरुषकी सुखेनहीं सत् मार्गविषेप्रवृत्तिहोइसकै तापुरुषकूं सुसाध्यकहेहैं ॥ और जिसपुरुषको बहुतप्रयत्नकरिकै तासत्मार्गविषेप्रवृत्तिहोइस कै तापुरुषकूं प्रयत्नसाध्यकहेहैं ॥ और किसीप्रकारकरिकैभी जिसपुरुषकी तासत्मार्गविषेप्रवृत्तिनहींहोइसकै तापुरुषकूं असाध्यकहेहैं ॥ यातैं सोसंशयात्मापुरुष सर्वतैंअत्यंतपापिष्ठहै इति ॥ ४० ॥ * ॥ तहां ऐसेसर्वअर्थोंकेमूलभूत संशयके निवृत्तकरणेवासतै आत्माकानिश्चयरूपउपायकूं कथनकरताहूआ श्रीभगवान् दोअध्यायोंकरिकैकथनकरी जा पूर्वउत्तरभूमिकाकेभेदकरिकै कर्मज्ञानमय दोप्रकारकीब्रह्मनिष्ठाहै ताका अब उपसंहारकरेहै ॥

योगसंन्यस्तकर्माणंज्ञानसंछिन्नसंशयं॥आत्मवंतंनकर्माणिनिबध्नंतिधनंजय ॥४१॥

योगसंन्यस्तकर्माणं । ज्ञानसंछिन्नसंशयं । आत्मवंतं । न । कर्माणि ॥ निबध्नंति । धनंजय ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन समत्वबुद्धिरूपयोगकरिकैभगवत्अर्पणकरेहैंकर्मजिसनैं तथाआत्मज्ञानकरिकै छेदनकर्या हैसंशय जिसनैं ऐसेप्रमादतैंरहितपुरुषकूं कर्म नहीं बंधायमानकरेहैं ॥ ४१ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन भगवत्आराधनरूपजासमत्वबुद्धिहै ताकानामयोगहै ॥ ऐसेयोगकरिकै मैंश्रीभगवान्विषे समर्पणकरेहैंकर्मजिसनैं ॥ अथवा परमार्थवस्तुकेदर्शनकानाम योगहै तायोगकरिकै त्यागकरेहैंसर्वकर्मजिसनैं तात्कानाम योगसंन्यस्तकर्माहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् तासंशयकेविद्यमानहूए सोयोगसंन्यस्तकर्मपणाहीं किसप्रकारसंभवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (ज्ञानसंछिन्नसंशयंइति) हेअर्जुन आत्माकानिश्चयरूपजो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिकै छेदनकराहैसंशयजिसपुरुषनैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् विषयोंकीपरवशतारूपप्रमादकेविद्यमा
नहूए ताज्ञानकीउत्पत्तिहींसंभवैनहीं ॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (आत्मवंतंइति) हेअर्जुन जोपु
रुष तापरवशतारूपप्रमादतैंरहितहै ॥ अर्थात् जोपुरुष सर्वदा सावधानहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष अप्रमादिहोणेतैं
ज्ञानवान्है ॥ तथा ज्ञानसंछिन्नसंशयहोणेतैं योगसंन्यस्तकर्माहै ताविद्वान्पुरुषकूं लोकसंग्रहवासतैकरयेहूएशुभक
र्म अथवा व्यर्थचेष्टारूपकर्म बंधायमानकरैनहीं ॥ अर्थात् तेकर्म देवतादिरूपइष्टशरीरका तथापशुआदिरूपअनि
ष्टशरीरका तथा मनुष्यादिरूप मिश्रितशरीरका आरंभकरैनहीं इति ॥ ४१ ॥ ❋ जिसकारणतैं आत्मज्ञानकरिकैनष्ट
हूआहैसंशयजिसका ऐसेविद्वान्पुरुषकूं यहलौकिकवैदिककर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ तिसकारणतैं तूं अर्जुनभी ता
आत्मज्ञानकरिकै तासंशयकूंछेदनकरिकै स्वधर्मविषेतत्परहोउ ॥ याअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

तस्मादज्ञानसंभूतंहृत्स्थंज्ञानासिनात्मनः॥छित्त्वैनंसंशयंयोगमातिष्ठोत्तिष्ठभारत ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुन
संवादेयज्ञविभागयोगोनाम चतुर्थोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ४ ॥

तस्मात्[2]। अज्ञानसंभूतं[3]। हृत्स्थं[4]। ज्ञानासिना[5]। आत्मनः[6]। छित्त्वा[7]। एनं[8]। संशयं[9]। योगं[10]। आतिष्ठ[11]। उत्तिष्ठ[12]। भारत[1]
हेअर्जुन तिसकारणतैं अज्ञानतैंउत्पन्नहूए तथाबुद्धिविषेस्थित इस संशयकूं आत्माके ज्ञानरूपखड्गकरिकै छेद
नकरिकै तूं निष्कामकर्मकूं कर इसप्रकारतैं तूंअब युद्धकरणेवासतै उठखडाहोउ ॥ ४२ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अविवेकरूपअज्ञानतैंउत्पन्नहूआ तथाबुद्धिरूपहृदयविषेस्थित ऐसाजोयह सर्वअनर्थोंकामूलभूत संशयहै ॥ इससंशयकूं आत्माकूंविषयकरणेहारे निश्चयरूपखड्गकरिकै छेदनकरिकै तूं सम्यक्दर्शनकेउपायभूत निष्कामकर्मयोगकूंकर इसकारणतैं तूं इसकालविषे इसयुद्धकरणेवासतै उठखडाहोउइति ॥ ईहां (अज्ञानसंभूतं) यापदकरिकै श्रीभगवान्नैं तासंशयकेकारणका कथनकरया ॥ और (हृत्स्थं) यापदकरिकै तासंशयके आश्रयकाकथनकऱ्या ॥ ताकहणेकरिकै यहअर्थबोधनकरया ॥ जैसे लोकविषे जिसशत्रुकेकारणका तथाआश्रयका ज्ञानहोवैहै ॥ सोशत्रु सुखेनहीं हननकरयाजावैहै ॥ तैसे इससंशयरूपशत्रुके कारणके तथाआश्रयके ज्ञानहूएतैंअनंतर यह संशयरूपशत्रूभी ताकेकारणादिकोंकीनिवृत्तिकरिकै सुखेनहीं नाशकऱ्याजावैहैइति ॥ और (हेभारत) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ भरतवंशविषेउत्पन्नभयाजोतूंअर्जुनहैं ॥ तिसतुमारा यहयुद्धकाउद्यम निष्फल नहींहै ॥ किंतु अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञानकाहेतुहोणेतैं सफलहै इति ॥ इसचतुर्थेअध्यायकेसर्वअर्थकूंसंक्षेपतैंकथनकरणेहारा यहश्लोकहै॥(स्वस्यानीशत्वबाधेनभक्तिश्रद्धेदृढीकृते ॥ धीहेतुःकर्मनिष्ठाचहरिणेहोपसंहृता)॥ अर्थयह ॥ इसचतुर्थेअध्यायविषे श्रीभगवान्नैं आपणेअनीश्वरपणेकीनिवृत्तिकरिकै आपणेविषे अर्जुनके भक्तिकूं तथाश्रद्धाकूं दृढकऱ्या ॥ तथा आत्मज्ञानकाकारणरूपजाकर्मनिष्ठाहै साकर्मनिष्ठा उपसंहारकरी इति ॥ ४२ ॥* ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां चतुर्थोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ४ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायांचतुर्थोऽध्यायः॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

487

॥अथ श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायांपंचमोध्यायः॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ पं
चमाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहांपूर्व तृतीय चतुर्थ यादोनोंअध्यायोंकरिकै कर्म ज्ञान यादोनोंका निरूपणकरया ॥ अब पं
चम षष्ठ यादोनोंअध्यायोंकरिकै कर्म तथाकर्मकात्यागरूपसंन्यास यादोनोंका निरूपणकरेहैं ॥ तहां पूर्व तृतीयअ
ध्यायविषे (ज्यायसीचेत्कर्मणस्ते) इत्यादिकवचनोंकरिकै अर्जुननैंपूछाहूआ श्रीभगवान् ज्ञान कर्म यादोनोंके वि
कल्पका तथासमुच्चयका असंभव कथनकरिकै अधिकारीपुरुषकेभेदकीव्यवस्थाकरिकै (लोकेस्मिन्द्विविधानिष्ठापुरा
प्रोक्तामयानघ) इत्यादिकवचनोंकरिकै निर्णयकरताभया ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ अज्ञपुरुषहैअधिकारीजिसका
ऐसाजोकर्महै ॥ सोकर्म आत्मज्ञानकेसाथि समुच्चयकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ जैसे प्रकाशरूपतेज तथाअंधकाररूपतिमिर
यादोनोंका परस्पर समुच्चयसंभवैनहीं ॥ तैसे ज्ञान तथाकर्म यादोनोंकाभी परस्पर समुच्चयसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ति
नकर्मोंकाहेतुरूप जाभेदबुद्धिहै ॥ ताभेदबुद्धिका सोआत्मज्ञान नाशकरणेहाराहै ॥ यातैं सोआत्मज्ञान तिनकर्मो
का विरोधीहींहै ॥ और विरोधीपदार्थोंका एकदेशविषे तथाएककालविषे एकठाहोणा कदाचित्भी संभवतानहीं ॥
और सोकर्म ताज्ञानकेसाथि विकल्पकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं जेदोपदार्थ एकहींकार्यकीसिद्धिकरणेवासतै होवै
हैं ॥ तिनपदार्थोंकाहीं परस्पर विकल्पहोवैहै ॥ सोईहांप्रसंगविषे ज्ञान तथाकर्म यहदोनों एककार्यकीसिद्धिवासतै
हैंनहीं ॥ काहेतैं आत्मज्ञानकाकार्यजोअज्ञानकानाशहै ॥ सोअज्ञानकानाश कर्मकरिकैहोइसकैनहीं ॥ किंतु केवलज्ञा
नकरिकैहीं सोअज्ञानकानाशहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तमेवविदित्वाऽतिमृत्युमेतिनान्यःपंथाविद्यतेऽयनाय ॥) अर्थयह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ तिसआत्मादेवकूंजानिकरिकै यहअधिकारीपुरुष कार्यसहितअज्ञानकूंनाशकरेहै ॥ तथा अविद्याकीनिवृत्तिरूपमो
क्षकीप्राप्तिवासतै आत्मज्ञानतैंविना दूसराकोईमार्गहैनहीं ॥ किंतु एकआत्मज्ञानहीं तामोक्षकेप्राप्तिकामार्गहैइति ॥
और ताआत्मज्ञानकेउत्पन्नहूएतैंअनंतर तिनकर्मोकाकार्य किंचित्मात्रभी अपेक्षितनहींहै ॥ यहअर्थ (यावानर्थ
उदपाने) इसश्लोकविषे पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ इसप्रकार ज्ञानवान्पुरुषविषे कर्मोकेअनधिकारकानिश्चयहूए प्रार
ब्धकर्मकेवशतैं वृथाचेष्टारूपकरिकै तिनकर्मोकाअनुष्ठानहोवै अथवा तिनसर्वकर्मोकासंन्यासहोवै ॥ यहवार्त्ता निर्वि
वाद चतुर्थअध्यायविषे निर्णयकरी ॥ और जिसपुरुषकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिनहींभईहै ॥ ऐसेअज्ञानीपुरुषनैंतौं अं
तःकरणकीशुद्धिद्वारा ताआत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरणेवासतै तिनकर्मोकूं अवश्यकरिकैकरणा ॥ तहांश्रुति ॥ (तमेतंवे
दानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेनइति ॥) इसश्रुतिनैं वेदाध्ययन यज्ञ दान तप इत्यादिक
सर्वकर्मोका अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानविषे उपयोग कथनकऱ्याहै ॥ और (सर्वकर्माखिलंपार्थज्ञानेपरिस
माप्यते) इसवचनविषे श्रीभगवान्नैं आपहीं तिनसर्वकर्मोका आत्मज्ञानविषेउपयोग कथनकऱ्याहै ॥ और जैसे
श्रुतिनैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै कर्मोकाअनुष्ठानकथनकऱ्याहै ॥ तैसे श्रुतिनैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै सर्वकर्मो
कात्यागरूपसंन्यासभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एतमेवप्रव्राजिनोलोकमिच्छंतःप्रव्रजंति ॥ शांतोदांतउपरतस्ति
तिक्षुःसमाहितोभूत्वाऽऽत्मन्येवात्मानंपश्येत् ॥) अर्थयह ॥ संन्यासीपुरुषोंकूंप्राप्तहोणेयोग्य जोयहआत्मारूपलोक
है ॥ ताआत्मारूपलोककेप्राप्तिकीइच्छाकरतेहूए यहअधिकारीजन सर्वकर्मोकेत्यागरूपसंन्यासकूंकरेहैंइति ॥ और

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यहअधिकारीपुरुष शम दम उपरति तितिक्षा श्रद्धा समाधान इसषट्संपत्तियुक्तहोइकै आपणेहृदयदेशविषे प्रत्यक्आत्माकूंदेखैइति ॥ ईहां उपरतिशब्दकरिकै संन्यासकाहींग्रहणकऱ्याहै ॥ इत्यादिकश्रुतियोनैं सर्वकर्मोंकेसंन्यासकूंहीं आत्मज्ञानकाहेतुकह्याहै ॥ तहां जैसे ज्ञान कर्म यादोनोंका समुच्चय संभवैनहीं तैसे कर्म तथाकर्मोंकात्याग इनदोनोंकाभी समुच्चयसंभवैनहीं ॥ काहेतैं जेपदार्थ एकहींकालविषे एकठेस्थितहोवैहैं ॥ तिनपदार्थोंकाहीं परस्पर समुच्चयहोवैहै ॥ भिन्नदेशकालवृत्तिपदार्थोंका परस्पर समुच्चयसंभवैनहीं ॥ और कर्म तथाकर्मोंकात्याग यहदोनोंभी तेजतिमिरकीन्यांई परस्पर विरुद्धहैं ॥ यातैं तिनदोनोंका एकहींकालविषे एकहींवर्त्तणासंभवैनहीं ॥ यातैं कर्म तथाकर्मोंकात्याग यादोनोंकासमुच्चय संभवतानहीं ॥ शंका ॥ कर्म तथाकर्मोंकात्याग यादोनोंका आत्मज्ञानहीं फलहै ॥ यातैं एकार्थताहोणेतैं तिनदोनोंकाविकल्प किसवासतै नहींहोवै ॥ समाधान ॥ आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरणेविषे कर्मका तथाकर्मकेत्यागका द्वार भिन्नभिन्नहींहै ॥ यातैं तिनदोनोंका विकल्पभी संभवैनहीं ॥ जहां दोपदार्थोंकाएककार्यकीउत्पत्तिकरणेविषे एकहींद्वार होवैहै ॥ तहांहीं तिनदोनोंपदार्थोंका विकल्पहोवैहै ॥ तहां आत्मज्ञानकोउत्पत्तिविषे प्रतिबंधक जेपापकर्महैं ॥ तिनपापकर्मोंकीनिवृत्ति नित्यनैमित्तिककर्मोंकरिकैहींहोवैहै ॥ यातैं तिननित्यनैमित्तिककर्मोंकातौं तिनपापोंकानाशरूप अदृष्टहींद्वारहै ॥ और जिसपुरुषकाचित्त लौकिकवैदिककर्मोंकरिकै अत्यंतविक्षिप्तहै ॥ तिसपुरुषकूंभी आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और साविक्षेपकीनिवृत्ति संन्यासकरिकैहींहोवैहै ॥ यातैं ताकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकातौं विक्षेपकीनिवृत्तिकरिकै आत्मविचारकेअवसरकीप्राप्तिरूप दृष्टहींद्वारहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ यातैं एकआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतैंहूएभी तेकर्म तथाकर्मोंकात्याग यहदोनों ताअदृष्ट तथादृष्ट द्वारकेभेदकरिकै
विकल्पकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं समुच्चयके तथाविकल्पके असंभवहूए तेकर्म तथातिनकर्मोंकात्यागरूपसंन्यास यह
दोनों यथाक्रमतैंहीं अनुष्ठानकरणे ॥ ताक्रमपक्षविषेभी संन्यासतैंअनंतर कर्मोंकाअनुष्ठानकरणा ॥ अथवा कर्मोंके
अनुष्ठानतैंअनंतर संन्यासकरणा ॥ तहां संन्यासतैंअनंतर कर्मोंकाअनुष्ठानकरणा ॥ यहप्रथमपक्षतौं संभवैनहीं ॥
काहेतैं यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् तासंन्यासतैंअनंतर पुनःकर्मोंकाअनुष्ठानकरैंगा ॥ तौं परित्यागकऱ्येहूए पू
र्वलेआश्रमका पुनःअंगीकारकरणाहोवैंगा ॥ ताकरिकै सोसंन्यासी आरूढपतितहोवैंगा ॥ और सोसंन्यासी ति
नकर्मोंकाअधिकारीभीहैनहीं ॥ यातैं संन्यासकूंधारणकरिकै सोपुरुष जोपुनःकर्मोंकूंकरैंगा ॥ तौं पूर्वग्रहणकऱ्याहू
आसंन्यासहीं ताका व्यर्थहोवैंगा ॥ जिसकारणतैं सोसंन्यास कर्मोंकीन्यांई अदृष्टार्थक नहींहै ॥ किंतु विक्षेपकीनिवृत्ति
रूपदृष्टार्थकहींहै ॥ और प्रथमकऱ्येहूए संन्यासकरिकैहीं तिसपुरुषकूं ज्ञानकेअधिकारकीप्राप्तिहोजावैहै ॥ तिससं
न्यासतैंअनंतर पुनःकर्मोंकाअनुष्ठानकरणा व्यर्थहींहै ॥ यातैं संन्यासतैंअनंतर इसअधिकारीपुरुषनैं कर्मोंकाअनु
ष्ठान कदाचित्भीनहींकरणा ॥ किंतु इसअधिकारीपुरुषनैं प्रथम भगवत्अर्पणबुद्धिकरिकै निष्कामकर्मोंकाअनुष्ठा
नकरणा ॥ ताकरिकैअंतःकरणकीशुद्धिहूएतैंअनंतर तीव्रवैराग्यकरिकै जबो दृढआत्मज्ञानकोइच्छाहोवै ॥ जिसइच्छा
कूं श्रुतिविषे विविदिषाशब्दकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ तबीहीं वेदांतवाक्योंकै श्रवणमननादिरूपविचारकरणेवासतै इ
सअधिकारीपुरुषनैं सोसंन्यासकरणा यहहीं श्रीकृष्णभगवान्कामतहै ॥ तथा सर्ववेदोंकामतहै ॥ इसआपणेम

491

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तकूं श्रीकृष्णभगवान् (नकर्मणामनारंभान्नैष्कर्म्यंपुरुषोऽश्नुते) इसवचनकरिकै पूर्व कथनकरताभयाहै ॥ और इ
सीआपणेमतकूं श्रीभगवान् (आरुरुक्षोर्मुनेर्योगंकर्मकारणमुच्यते ॥ योगरूढस्यतस्यैवशमःकारणमुच्यते) इसश्लो
ककरिकै आगेकथनकरैंगा ॥ ईहां योगशब्दकरिकै तीव्रवैराग्यपूर्वक विविदिषाका ग्रहणकरणा ॥ यहवार्ता वा
र्त्तिककारनैंभी कथनकरीहै ॥ तहां श्लोक ॥ (प्रत्यग्विविदिषासिद्ध्यैवेदानुवचनादयः ॥ ब्रह्मावाप्त्यैतुतत्त्यागईप्सती
तिश्रुतेर्बलात् ॥) अर्थयह ॥ (तमेतंवेदानुवचनेन) इसश्रुतिनैं विधानकऱ्येजे वेदाध्ययन यज्ञ दान तप आदिककर्महैं
॥ तेवेदाध्ययनादिककर्मतौं प्रत्यक्आत्माकेजानणेकीइच्छारूप विविदिषाकीप्राप्तिवासतैहींहैं ॥ और प्रत्यक्अभिन्न
ब्रह्मकीप्राप्तिवासतैतौं (एतमेवप्रव्राजिनोलोकमिच्छंतःप्रव्रजंति) इसश्रुतिकरिकैप्रतिपादित सर्वकर्मोकात्यागहींहैइ
ति ॥ तहां स्मृतिभी ॥ (कषायेकर्मभिःपक्केततोज्ञानंप्रवर्त्तते ॥) अर्थयह ॥ निष्कामकर्मोकेअनुष्ठानकरिकै अंतःकरणके
शुद्धहूएतैंअनंतर सर्वकर्मोकेत्यागतैं आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहैइति ॥ तहां सोआत्मज्ञानकोप्राप्तिकाहेतुभूत विविदि
षासंन्यासभी क्रमसंन्यास अक्रमसंन्यास याभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां प्रथम ब्रह्मचर्यआश्रमकूंधारणकरणा ॥
तिसतैंअनंतर गृहस्थआश्रमकूंधारणकरणा ॥ तिसतैंअनंतर वानप्रस्थआश्रमकूंधारणकरणा ॥ तिसतैंअनंतर च
तुर्थअवस्थाविषे संन्यासआश्रमकूंधारणकरणा ॥ याकानाम क्रमसंन्यासहै ॥ और संसारतैंअत्यंततीव्रवैराग्यके
प्राप्तहूए ब्रह्मचर्यादिकआश्रमोंतैंअनंतरहीं तासंन्यासआश्रमकूंधारणकरणा ॥ याकानाम अक्रमसंन्यासहै ॥ तहां
श्रुति ॥ (ब्रह्मचर्यंसमाप्यगृहीभवेद्गृहाद्वनीभूत्वाप्रव्रजेत् ॥ यदिवेतरथाब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेद्गृहाद्वावनाद्वायदहरेवि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रजेत् दहरेवप्रव्रजेत्इति ॥) अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यकीसमाप्तिकरिकै गृहस्थहोवै ॥ तागृहस्थआश्र
मतैंअनंतर वानप्रस्थहोइकै संन्यासकूंग्रहणकरैइति ॥ और जोकदाचित् इसअधिकारीपुरुषकूं पूर्वलेपुण्यकर्मोंकेप्र
भावतैं प्रथमहीं तीव्रवैराग्यकीप्राप्तिहोवै ॥ तौं यह अधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्यआश्रमतैंअनंतरहीं संन्यासआश्रमकूंधा
रणकरै ॥ अथवा गृहस्थआश्रमतैंअनंतर संन्यासआश्रमकूंधारणकरै ॥ अथवा वानप्रस्थआश्रमतैंअनंतर संन्यास
आश्रमकूंधारणकरै ॥ याकेविषे किंचित्मात्रभी क्रमनहीं ॥ किंतु जिसदिनविषे यहअधिकारीपुरुष तीव्रवैराग्यकूं
प्राप्तहोवै ॥ तिसीदिनविषे संन्यासकूंकरैइति ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ एकहींअज्ञानीमुमुक्षुजनकूं वैराग्यतैंरहित
दशाविषेतौं निष्कामकर्मोंकाहीं अनुष्ठानकरणेयोग्यहै ॥ और तिसीहीं अज्ञानीमुमुक्षुजनकूं वैराग्यदशाविषे तिनक
र्मोंका संन्यासहींकरणेयोग्यहै ॥ सोईहींसंन्यास श्रवणमननकेकरणेवासतै अवसरकीप्राप्तिकरिकै तिसपुरुषकेज्ञा
नवासतैहोवैहै ॥ इसप्रकार अविरक्तादशा तथाविरक्तादशा यादोनोंदशावोंकेभेदकरिकै एकहींअज्ञानीमुमुक्षुज
नकेप्रति कर्मोंकीकर्त्तव्यता तथातिनकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकीकर्त्तव्यता कहणेवासतै श्रीभगवान्नैं इसपंचमअ
ध्यायका तथावक्ष्यमाणषष्ठेअध्यायका प्रारंभकऱ्याहै ॥ और आत्मज्ञानकीप्राप्तितैंअनंतर जीवन्मुक्तिकेआनंदवासतै
करणेयोग्यजोविद्वत्संन्यासहै ॥ सोविद्वत्संन्यासतौं आत्मज्ञानकेबलतैं अर्थतैंहींसिद्धहै ॥ यातैं ताकेविषे संदेहकेअ
भावहोणेतैं ताविद्वत्संन्यासका ईहां विच्यारकऱ्यानहीं ॥ किंतु विविदिषासंन्यासकाहीं ईहां विचारकऱ्याहैइति ॥ इस
पूर्वउक्तश्रीभगवान्केअभिप्रायकूं नजानिकरिकै सोअर्जुन याप्रकारके संशयकूंप्राप्तहोताभया ॥ श्रीभगवान्नैं एक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हीं अज्ञानीमुमुक्षुकेप्रति आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै कर्मोंका तथातिनकर्मोंकेत्यागका विधानकरयाहै ॥ और तैकर्म त
थातिनकर्मोंकात्याग यहदोनों तेजतिमिरकीन्यांई परस्परविरोधीहोणेतैं एककालविषे एकअधिकारीपुरुषकरिकै
अनुष्ठानकरयेजावैनहीं ॥ यातैं मैं मुमुक्षुअर्जुननैं इसकालविषे तेकर्महीं करणेयोग्यहैं ॥ अथवा तिनकर्मोंका त्यागरूप
संन्यासहीं करणेयोग्यहै ॥ याप्रकारकेसंशयकरिकैयुक्तहूआ सो अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरेहै ॥

अर्जुनउवाच ॥ संन्यासंकर्मणांकृष्णपुनर्योगंचशंस
सि ॥ यच्छ्रेयएतयोरेकंतन्मेब्रूहिसुनिश्चितं ॥ १ ॥

संन्यास[3]ं। कर्म[2]णां। कृष्ण[1]। पुनः[4]। योग[5]ं। च[6]। शंससि[7]। यत्[8]। श्रेयः[11]। एतयो[10]ः। एक[9]ं। तत्[12]। मे[13]। ब्रूहि[14]। सुनिश्चित[15]ं ॥ इतिप०

हे[1]कृष्णभगवन् आप कर्म[2]ोंके संन्यास[3]कूंभी कथनकरतेहो तथा पुनः[4] कर्मयोग[5]कूंभी कथनकरतेहो
इनदोनोंविषे जो[8] एक[9] श्रेष्ठ[11]होवै सो[12] हमारेप्रति निश्चय[15]करिकै कथनकरो ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेकृष्ण क्या हेसत्यआनंदरूप अथवा हेभक्तजनोंकेदुःखकूंनष्टकरणेहारा ॥ (यावज्जीवमग्निहोत्रंजुहोति) इ
सश्रुतिकरिकै तथा (कुर्वन्नेवेहकर्माणिजिजीविषेच्छतꣳसमाः) इसश्रुतिकरिकै विधानकरयेजेनित्यनैमित्तिककर्महैं ॥
तिनकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकूंभी आप अज्ञानीमुमुक्षुजनकेप्रति (एतमेवप्रव्राजिनोलोकमिच्छंतःप्रव्रजंति) इसश्रुतिव
चनकरिकै अथवा (निराशीर्यतचित्तात्मात्यक्तसर्वपरिग्रहः ॥ शारीरंकेवलंकर्मकुर्वन्नाप्नोतिकिल्बिषं) इसपूर्वउक्तगीताव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चनकरिकै कथनकरतेहो ॥ तथा तिसकर्मकेत्यागरूपसंन्यासतैं अत्यंतविरुद्ध जोकर्मोकाअनुष्ठानरूपकर्मयोगहै ॥ तिसकर्मयोगकूंभी आप तिसीअज्ञानीमुमुक्षुजनकेप्रति (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसा नाशकेन) इसश्रुतिवचनकरिकै अथवा (छित्त्वैनंसंशयंयोगमातिष्ठोत्तिष्ठभारत) इसपूर्वउक्तगीतावचनकरिकै कथनकर तेहो ॥ ईहां यद्यपि कर्मोकेसंन्यासकूं तथाकर्मयोगकूं आप इसगीतावचनकरिकै कथनकरतेहो इतनामात्रहींकहणासंभवै है ॥ इसश्रुतिवचनकरिकै कहतेभयेहो यहकहणासंभवतानहीं ॥ तथापि (पुनर्योगंचशंससि) यावचनविषेस्थितजो पुनः यहशब्दहै ॥ तापुनःशब्दकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकरयाहै ॥ जैसे अबो इसगीताकेवचनोंकरिकै एकहींमुमुक्षुजन केप्रति कर्मोकेसंन्यासकूं तथाकर्मयोगकूं कथनकरोहो ॥ तैसे सृष्टिकेआदिकालविषे वेदोंकेकर्त्ताआपनैं तिनवेदोंविषेभी इ सीप्रकार कथनकरयाहैइति ॥ हेभगवन् इसप्रकार एकहींअज्ञानीमुमुक्षुजनकेप्रति आपनैं कर्मोका तथातिनकर्मोकेत्याग का दोनोंका विधानकरयाहै ॥ सोतिनदोनोंका एकहींकालविषे एकहींअधिकारीपुरुषनैं अनुष्ठानकरणा संभवतानहीं ॥ जै से एकहींकालविषे एकहींपुरुषविषे स्थिति तथागमन यहदोनों संभवतेनहीं ॥ यातैं कर्म तथाकर्मोकात्यागरूपसंन्यास या दोनोंविषे जिसएक कर्मकूं अथवा संन्यासकूं आप अत्यंतश्रेष्ठ मानतेहोवौ ॥ तिसकर्मयोगकूं अथवा संन्यासकूं आप नि श्चयकरिकै हमारेप्रति कथनकरौ ॥ तिस आपके निश्चितमतकूं मैंअर्जुन आपणेश्रेयकासाधनरूपमानिकै अनुष्ठानकरौं इ ति ॥ १ ॥ ❋ ॥ इसप्रकारके अर्जुनकेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै ॥ श्रीभगवान् अब ताप्रश्नकेउत्तरकूं कथनकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रीभगवानुवाच ॥ संन्यासःकर्मयोगश्चनिःश्रेयसकरावु
भौ ॥ तयोस्तुकर्मसंन्यासात्कर्मयोगोविशिष्यते ॥ २ ॥

संन्यासः । कर्मयोगः । च । निःश्रेयसकरौ । उभौ । तयोः । तु । कर्मसंन्यासात् । कर्मयोगः । विशिष्यते ॥ इतिपद०
हेअर्जुन संन्यास तथा कर्मयोग यहदोनों मोक्षकेहेतुहैं तिनदोनोंविषे भी कर्मकेसंन्यासतैं कर्मयोगहीं श्रेष्ठहै ॥२॥ इतिप०
॥ टीका ॥ हेअर्जुन शास्त्रकीविधिपूर्वक सर्वकर्मोकात्यागरूपजोसंन्यासहै ॥ तथा आपणेआपणे वर्णआश्रमकेअनुसार नित्यनैमित्तिककर्मोकाअनुष्ठानरूप जोकर्मयोगहै ॥ यहदोनों आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकाहेतुहोणेतैं मोक्षकीहींप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ तथापि तिनदोनोंविषे अंतःकरणकीशुद्धितैंरहित अनधिकारीपुरुषनैं कराजो कर्मोकासंन्यासहै तासंन्यासतैं सोकर्मयोगहीं श्रेष्ठहै ॥ काहेतैं अशुद्धअंतःकरणवालेपुरुषनैं करयाजो संन्यासहै ॥ सोसंन्यास ताअशुद्धअंतःकरणवालेपुरुषविषे आत्मज्ञानकेअधिकारीपणेका संपादक होवैनहीं ॥ और सोनिष्कामकर्मयोगतौं इसपुरुषविषे ताआत्मज्ञानकेअधिकारीपणेका संपादकहींहोवैहै ॥ यातैं सोकर्मयोग तासंन्यासतैंश्रेष्ठहै इति ॥ २ ॥ * अब तीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् तानिष्कामकर्मयोगकी स्तुतिकूंकरेहै अधिकारीपुरुषोंकूं ताकर्मयोगविषे प्रवृत्तकरणेवासतै ॥

ज्ञेयःसनित्यसंन्यासीयोनद्वेष्टिनकांक्षति ॥ निर्द्वंद्वोहिमहाबाहोसुखंबंधात्प्रमुच्यते ॥ ३

॥२४१॥

ज्ञेयः । सः । नित्यसंन्यासी । यः । न । द्वेष्टि । न । कांक्षति । निर्द्वंद्वः । हि । महाबाहो । सुखं । बंधात् । प्रमुच्यते ॥ इतिप०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन जोपुरुष नहींतौं द्वेषकरेहै तथा नहीं स्वर्गादिकफलोंकीइच्छाकरेहै तथा रागद्वेषतैंरहितहै सो पुरुष नित्यहींसंन्यासी जानणा जिसकारणतैं सोपुरुष सुखपूर्वकहीं बंधतैं मुक्तहोवैहै ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष भगवत्अर्पणबुद्धिकरिकैकरयेहूए नित्यनैमित्तिककर्मोविषे यहसर्वकर्म निष्फलहींहैं ऐसीनिष्फलपणेकीशंकाकरिकै द्वेषकरतानहीं ॥ तथा जोअधिकारीपुरुष तिनकर्मोकेस्वर्गादिकफलोंकोइच्छाकरतानहीं ॥ तथा जोअधिकारीपुरुष रागद्वेषतैंरहितहै ॥ ऐसाअधिकारीपुरुष आपणेनित्यनैमित्तिककर्मोविषेप्रवृत्तहूआभी नित्यहींसंन्यासीजानणा ॥ जिसकारणतैं सोनिष्कामकर्मोकूंकरणेहाराअधिकारीपुरुष अंतःकरणकीअशुद्धिरूप ज्ञानकेप्रतिबंधतैं नित्यअनित्यवस्तुकेविवेककरिकै अनायासतैंहीं मुक्तहोवैहै ॥ अर्थात् शुद्धअंतःकरणवालाहोवैहै इति ॥ ३ ॥ ❋

॥ शंका ॥ हेभगवन् जोपुरुष आपणे नित्यनैमित्तिककर्मोविषेप्रवृत्तहूआहै सोपुरुष किसप्रकार नित्यहींसंन्यासीजानणा ॥ किंतु ताकर्मकर्त्तापुरुषविषे सोसंन्यासीपणा संभवतानहीं ॥ काहेतैं तेनित्यनैमित्तिककर्म तथातिनकर्मोकात्यागरूपसंन्यास यहदोनों तेजतिमिरकीन्यांई स्वरूपतैंहींविरोधीहैं ॥ जहां कर्मीपणा रहेहै तहां संन्यासीपणा रहैनहीं ॥ और जहां संन्यासीपणा रहेहै तहां कर्मीपणा रहैनहीं ॥ और जोआप यहवचनकहो ॥ कर्म तथाकर्मोकासंन्यास यादोनोंका फलएकहींहै ॥ यातैं तानिष्कामकर्मोकेकर्त्तापुरुषविषे सोसंन्यासीपणा संभवहोइसकेहै ॥ सोयह आपकाकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं जेसाधन स्वरूपतैंविरुद्धहोवैहैं ॥ तिनसाधनोंकेफलविषेभी विरोधहींहोवैहै ॥ तिनविरुद्धसाधनोंके फलकीएकतासंभवैनहीं ॥ यातैं कर्मयोग तथाकर्मोकात्यागरूपसंन्यासयहदोनोंएक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निःश्रेयसकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ यहपूर्वउक्तआपकावचन असंगतहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै

सांख्ययोगौपृथग्बालाःप्रवदंतिनपंडिताः॥ एकमप्यास्थितःसम्यगुभयोर्विंदतेफलं॥४

सांख्यं योगौ। पृथक्। बालाः। प्रवदंति। न। पंडिताः। एकं। अपि।आस्थितः। सम्यक्। उभयोः। विंदते। फलं॥इतिप०

हेअर्जुन विचारहीनपुरुष संन्यासकर्मयोगदोनोंकूं विरुद्धफलवाला कथनकरेहैं विचारवान्पंडित ऐसानहींकथनकरेहैं जिसकारणतैं तिनदोनोंविषे एकंकूं भी भलीप्रकार करताहूआ यहपुरुष तिनदोनोंके निःश्रेयसरूपफलकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन संशयविपरीतभावनातैंरहित जायथार्थ आत्माकारबुद्धिहै ताकानाम संख्याहै ॥ ताआत्माकारबुद्धिरूपसंख्याको जोप्राप्तिकरेहै ताकानाम सांख्यहै ॥ ऐसा आत्मज्ञानकाअंतरंग साधनहोणेतैं संन्यासहींहै ॥ ऐसा सांख्यनामासंन्यास तथापूर्वकथनकऱ्या कर्मयोग यहदोनों भिन्नभिन्नफलकेहेतुहैं याप्रकारकेवचनकूं शास्त्रअर्थकेविवेकविज्ञानतैंरहितपुरुषहीं कथनकरेहैं ॥ शास्त्रअर्थकेविवेकविज्ञानवालेपंडितपुरुष तावचनकूं कथनकरतेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेपंडितपुरुष जोइसप्रकारकावचन नहींकहते ॥ तौं तिनपंडितपुरुषोंका कौनमतहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् तिनपंडितपुरुषोंकेमतका कथनकरेहै (एकमप्यास्थितःइति) हेअर्जुन तिनपंडितपुरुषोंकातौं यहमतहै ॥ तेनिष्कामकर्म तथातिनकर्मोंकासंन्यास यादोनोंविषे एकहीं कर्मयोगकूं अथवा संन्यासकूं जोपुरुष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आपणेअधिकारकेअनुसार शास्त्रकीविधिपूर्वक करेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष आत्मज्ञानकाउत्पत्तिद्वारा तिनदोनोंके एकहींमोक्षरूपफलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातें तानिष्कामकर्मकर्त्तापुरुषविषे सोसंन्यासीपणा संभवहोइसकेहै इति ॥ ॥ ४ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ संन्यास तथाकर्मयोगयादोनोंविषे एककेअनुष्ठानकरणेतें यहअधिकारीपुरुष तिनदोनोंकेफलकूं किसप्रकार प्राप्तहोवैहै ॥ ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

यत्सांख्यैःप्राप्यतेस्थानंतद्योगैरपिगम्यते॥एकंसांख्यंचयोगंचयःपश्यतिसपश्यति ५॥

यत्[2]। सांख्यैः[1]। प्राप्यते[4]। स्थानं[3]। तत्[5]। योगैः[6]। अपि[8]। गम्यते[7]। एकं[13]। सांख्यं[10]। च[11]। योगं[12]। च[9]। यः[14]। पश्यति[16]। सः[15]। पश्यति[16]॥ इतिप०

हेअर्जुन सांख्यपुरुषोंनैं जिस[2] स्थानकूं[3] प्राप्तहोईताहै तिसस्थानकूं योगीपुरुषोंनैं भी प्राप्तहोईताहै यातें जोअधिकारीपुरुष सांख्यकूं[10] तथा योग[12]कूं एकरूप[13] देखताहै सोईहींपुरुष[15] सम्यक्[16] देखेहै ॥५॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ज्ञाननिष्ठाकरिकैयुक्त जेसंन्यासीहैं जेसंन्यासी इसजन्मविषे कर्मोंकेअनुष्ठानतैंरहितहूएभी पूर्वजन्मकेकर्मोंकरिकै शुद्धअंतःकरणवालेहैं ॥ ऐसेशुद्धअंतःकरणवालेसंन्यासीयोंनैं श्रवणमननादिपूर्वक ज्ञाननिष्ठाकरिकै जिसमोक्षरूपस्थानकूंप्राप्तहोईताहै ॥ ईहां जिसविषेस्थितहूआ यहविद्वान्पुरुष कदाचित्भी पुनरावृत्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ताकानाम स्थानहै ॥ ऐसास्थानरूप अविद्याकीनिवृत्तिपूर्वक अद्वितीयनिर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षहींहै ॥ तामोक्षतैंभिन्न जितनैंकी ब्रह्मलोक वैकुंठलोक गोलोक स्वर्गलोक इत्यादिकलोकहै ॥ तिनलोकोंकूंप्राप्तहूआ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भी यहपुरुष पुनः जन्ममरणादिरूपआवृत्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रीभगवान्नैं आपहीं (आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्त्तिनोर्जुन) इसवचनकरिकै स्पष्टकरीहै ॥ यातैं तिनब्रह्मलोकादिकोंका ईहां स्थानशब्दकरिकैग्रहणहोइस कैनहीं ॥ ऐसाब्रह्मरूपमोक्ष यद्यपि इसअधिकारीपुरुषकूं नित्यहींप्राप्तहै ॥ तथापि अज्ञानकीआवरणशक्तिकरिकै अप्राप्तहूएकीन्याई होइरह्याहै ॥ महावाक्यजन्य तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै जबी ताआवरणकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी सोमोक्ष प्राप्तहूएकीन्यांई प्राप्तकह्याजावैहै ॥ जैसे कंठविषेस्थित विस्मरणहूएभूषणकी ताकेज्ञानकरिकै पुनःप्राप्ति कहीजावैहैइति ॥ और फलकोइच्छातैंरहितहोइकै केवल भगवत्अर्पणबुद्धिकरिकैकऱ्येहूए जेशास्त्रविहित नित्यनैमित्तिककर्महैं तिनकर्मोकानाम योगहै ॥ सोनिष्कामकर्मरूपयोग जिनअधिकारीपुरुषोंविषेविद्यमानहोवै तिनअधिकारीपुरुषोंकानाम योगीहै ॥ ऐसेयोगीपुरुषोनैंभी इसजन्मविषे अथवा दूसरे जन्मविषे अंतःकरणकीशुद्धिकरिकै संन्यासपूर्वकश्रवणादिकोंकरिकैप्राप्तभईजाज्ञाननिष्ठाहै ताज्ञाननिष्ठाकरिकै तिसीमोक्षरूपस्थानकूं प्राप्तहोईताहै ॥ इसप्रकार सर्वकर्मोकेत्यागरूपसंन्यासका तथानिष्कामकर्मयोगका एकहींमोक्षरूपफलहै ॥ यातैं जोअधिकारीपुरुष तासांख्यनामासंन्यासकूं तथानिष्कामकर्मयोगकूं एकरूपकरिकैदेखेहै ॥ सोअधिकारीपुरुषहीं यथार्थदेखेहै ॥ और जोपुरुष तिनदोनोंकूं भिन्नभिन्नदेखेहै ॥ सोपुरुष यथार्थदर्शी कह्याजावैनहीं ॥ किंतु सोपुरुष विपरीतदर्शी कह्याजावैहै ॥ ईहांश्रीभगवान्का यहअभिप्रायहै ॥ जिनअधिकारीपुरुषोंविषे अबी संन्यासपूर्वकज्ञाननिष्ठा देखणेमैंआवेहै ॥ और कर्मनिष्ठा देखणेविषेआवतीनहीं ॥ तिनपुरुषोंविषे तासंन्यासपूर्वकज्ञाननिष्ठारूपलिंगकरिकै पूर्वअनेकजन्मों

500

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषे भगवत्अर्पितकर्मनिष्ठा अनुमानकरीजावेहै ॥ काहेतैं कारणतैविना कार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ सोकारण जोक
दाचित् प्रत्यक्षप्रतीत नहींहोताहोवै ॥ तौं ताकार्यरूपलिंगतैं ताकारणका अनुमानकर्याजावैहै ॥ जैसे वर्षाकाकार्य
रूप जानदीकेजलकीवृद्धिहै ताजलकीवृद्धिरूपहेतुतैं देशांतरविषे वर्षारूपकारणका अनुमानकर्याजावैहै ॥ तैसे इ
सजन्मके संन्यासपूर्वकज्ञाननिष्ठारूपहेतुकरिकै इसतैंपूर्वजन्मोंविषे साकर्मनिष्ठा अनुमानकरीजावैहै ॥ और जिनअ
धिकारीपुरुषोंविषे अबो भगवत्अर्पितकर्मनिष्ठा देखणेमेआवेहै ॥ और संन्यासपूर्वकज्ञाननिष्ठा देखणेमेआवतीनहीं
॥ तिनपुरुषोंविषे ताकर्मनिष्ठारूपलिंगकरिकै आगेहोणेहारी संन्यासपूर्वकज्ञाननिष्ठा अनुमानकरीजावैहै ॥ काहे
तैं जहां कारणसामग्रीहोवैहै तहां कार्य अवश्यकरिकैउत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं ताकारणसामग्रीतैं भावीकार्यका अनु
मान कर्याजावैहै ॥ जैसे मेघोंकीरचनाविशेषकरिकै भावीवर्षाका अनुमानहोवैहै ॥ तैसे ताभगवत्अर्पितकर्मनि
ष्ठाकरिकै भावीज्ञाननिष्ठा अनुमानकरीजावेहै ॥ यातैं अज्ञानीमुमुक्षुजननैं अंतःकरणकोशुद्धिवासतै प्रथम नि
ष्कामकर्महींकरणे संन्यास प्रथम करणानहीं ॥ सोसंन्यासतौं तीव्रवैराग्यकेप्राप्तहूए आपेहींसिद्धहोवैंगा इति ॥
॥ ५ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ज्ञाननिष्ठाकाहेतुहोणेतैं सोसंन्यासतौं अवश्यकरिकैकरणेयोग्यहींहै ॥ यातैं
जैसे शुद्धअंतःकरणवालेपुरुषनैं ज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवासतैसोसंन्यास करीताहै ॥ तैसे अशुद्धअंतःकरणवाले
पुरुषनैंभी सोसंन्यासहीं प्रथम किसवासतैं नहींकरीताहै ॥ किंतु ताअशुद्धअंतःकरणवालेपुरुषनैंभो ताज्ञाननिष्ठा
कीप्राप्तिवासतै प्रथम संन्यासहीं कर्याचाहीये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संन्यासस्तुमहाबाहोदुःखमाप्तुमयोगतः॥ योगयुक्तोमुनिर्ब्रह्मनचिरेणाधिगच्छति ॥६॥

502

संन्यासः । तु । महाबाहो । दुःखं । आप्तुं । अयोगतः । योगयुक्तः । मुनिः । ब्रह्म । नचिरेण । अधिगच्छति ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन कर्मयोगतैंविना कऱ्याहूआसंन्यास तौं दुःखकूंहीं प्राप्तकरेहै और कर्मयोगयुक्त पुरुषतौं संन्यासीहोइकै ब्रह्मकूं शीघ्रहीं साक्षात्कारकरेहै ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारे जेशास्त्रविहित नित्यनैमित्तिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंकूंनकरिकै जोपुरुष केवलहठमात्रतैं प्रथम संन्यासकूंहींकरेहै ॥ सोहठपूर्वक कऱ्याहूआ संन्यास इसपुरुषकूं केवलदुःखकोहींप्राप्तिकरेहै ॥ तासंन्यासतैं इसपुरुषकूं किंचित्मात्रभी सुखहोवैनहीं ॥ काहेतैं तापुरुषका अंतःकरण शुद्धहूआनहीं ॥ यातैं संन्यासकाफलरूप जाज्ञाननिष्ठाहै साज्ञाननिष्ठातौं ताअशुद्धअंतःकरणवालेसंन्यासीकूं कदाचित्भी प्राप्तहोवैनहीं ॥ और जेनिष्कामकर्म अंतःकरणकोशुद्धिकरेहैं ॥ तिनकर्मोंकेकरणेविषे तासंन्यासीका अधिकारहैनहीं ॥ यातैं कर्मनिष्ठा तथाज्ञाननिष्ठा यादोनोंनिष्ठावोंतैंभ्रष्टहोणेतैं सोअशुद्धअंतःकरणवालासंन्यासी महान् संकटकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ और जोपुरुष अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारे निष्कामकर्मयोगकरिकैयुक्तहै ॥ सोपुरुषतौं शुद्धअंतःकरणवालाहोणेतैं मननशीलसंन्यासीहोइकै सत्चित्आनंदस्वरूप प्रत्यक्अभिन्न ब्रह्मकूं शीघ्रहीं साक्षात्कारकरेहै ॥ यहसर्व अर्थ (नकर्मणामनारंभान्नैष्कर्म्यंपुरुषोऽश्नुते ॥ नचसंन्यसनादेवसिद्धिंसमधिगच्छति) इसश्लोककरिकै पूर्वहीं कथनक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रिआयेहैं यातैं कर्मयोग तथाकर्मोंकासंन्यास यादोनोंकूं एकफलकीहेतुताकेहूएभी अशुद्धअंतःकरणवालेपुरुषकृतसं न्यासतैं सोकर्मयोग अत्यंतश्रेष्ठहै यहजोपूर्वकथनकऱ्याथा सोयुक्तहै इति ॥ ६ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् (कर्म णाबध्यतेजंतुः) इत्यादिकवचनोंविषे तिनकर्मोंकूं बंधकाहींहेतुकथनकऱ्याहै ॥ यातैं कर्मयोगयुक्तपुरुष ब्रह्मकूंसाक्षात्कार करेहै यहआपकावचन असंगतहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहैं ॥

योगयुक्तोविशुद्धात्माविजितात्माजितेंद्रियः॥सर्वभूतात्मभूतात्माकुर्वन्नपिनलिप्यते॥

योगयुक्तः । विशुद्धात्मा । विजितात्मा । जितेंद्रियः । सर्वभूतात्मभूतात्मा । कुर्वन् । अपि । न । लिप्यते ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जोपुरुष योगकरिकैयुक्तहै तथाविशुद्धात्माहै तथाविजितात्माहै तथाजितेंइंद्रियहै तथा सर्वभू तोंकाआत्मारूपहैआत्माजिसका ऐसापुरुष तिनकर्मोंकूं करताहूआ भी नहीं लिपायमानहोवैहै॥७॥इतिप०

॥ टीका ॥ हेअर्जुन भगवत्अर्पणता तथाफलकीइच्छातैंरहितपणा इत्यादिकगुणोंकरिकैयुक्तजोशास्त्रविहित नित्यनै मित्तिककर्महै ताकानाम योगहै ता योगकरिकैयुक्तजोपुरुषहै ॥ सोयोगयुक्तपुरुष प्रथम विशुद्धात्मा होवैहै ॥ ईहां विशु द्धहै क्या रजतमतैंरहितहै आत्मा क्या अंतःकरण जिसका ताकानाम विशुद्धात्माहै ॥ ऐसाविशुद्धात्माहोइकै यहपु रुष विजितात्माहोवै ॥ ईहां आत्मानाम देहकाहै सोदेह वशकऱ्याहैजिसनैं ताकानाम विजितात्माहै ॥ ऐसाविजितात्माहो इकै यहअधिकारीपुरुष जितेंद्रियहोवै ॥ ईहां आपणेवशकरेहैं सर्वबाह्यइंद्रियजिसनैं ताकानाम जितेंद्रियहै ॥ ईहां (वि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शुद्धात्मा विजितात्मा जितेंद्रियः) यातीनपदोंकरिकै श्रीभगवान्नैं यथाक्रमतैं मनोदंड कायदंड वाक्दंड यातीनदं
डोंयुक्त त्रिदंडीका कथनकऱ्या ॥ यहवार्त्ता मनुनैंभी कथनकरीहै ॥ तहां श्लोक ॥ (वाग्दंडोथमनोदंडःकायदंडस्तथै
वच ॥ यस्यैतेनियतादंडाःसत्रिदंडीतिकथ्यते ॥) अर्थयह ॥ वाक्दंड मनोदंड कायदंड यहतीनदंड जिसपुरुषकूं नि
यमपूर्वकहैं ॥ सोपुरुष त्रिदंडी यानामकरिकैकह्याजावैहैइति ॥ ईहां वाक्शब्द सर्वबाह्यइंद्रियोंका उपलक्षकहै ॥ ऐसेत्रि
दंडीपुरुषकूं सर्वात्मज्ञान अवश्यकरिकैहोवैहै इसअर्थकूं श्रीभगवान् कहेहै (सर्वभूतात्मभूतात्माइति) ब्रह्मा
तैंआदिलैकेस्तंबपर्यंत जितनैंकोचेतनभूतहैं ॥ तथाआकाशादिकजितनैंकीअचेतनभूतहैं ॥ तिनचेतनअचेतनरूप स
र्वभूतोंका स्वरूपभूतहै प्रत्यक्चेतनआत्माजिसका ताकानाम सर्वभूतात्मभूतात्माहै॥तात्पर्ययह॥जैसे कुंडलकंकणादिक
भूषणोंका सुवर्णहीं वास्तवस्वरूपहोवैहै ॥ तैसे सर्वजडअजडप्रपंचका मैंहीं वास्तवस्वरूपहूं याप्रकार जोपुरुष सर्वप्रपं
चकूं आपणाआत्मारूपकरिकैदेखेहै ॥ सोपरमार्थदर्शीविद्वान्पुरुष अन्यपुरुषोंकीदृष्टिकरिकै तिनकर्मोंकूंकरताहूआ
भी कर्तृत्वअभिमानकेअभावतैं तिनकर्मोंकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ अर्थात् तेकर्म तिसविद्वान्पुरुषकूं बंधकीप्रा
प्तिकरैंनहीं ॥ जिसकारणतैं स्वदृष्टिकरिकै तिसविद्वान्पुरुषविषे सोकर्मोंकाकरतापणाहैनहींइति ॥ ईहां किसीटीकाविषे
(सर्वभूतात्मभूतात्मा) इसपदका यहअर्थकऱ्याहै ॥ सर्व यहशब्द आकाशादिकजडप्रपंचकावाचकहै ॥ और आत्म
यहशब्द अजडप्रपंचकावाचकहै ॥ और सर्व आत्म यादोनोंशब्दोंतैंउत्तर जो भूत यहशब्दहै ॥ सोभूतशब्द स्वरूप
कावाचकहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ सर्वभूत तथाआत्मभूत हैआत्माजिसका ताकानाम सर्वभूतात्मभूतात्माहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

याप्रकारकाअर्थ जोनहींअंगीकारकरीये ॥ किंतु सर्वभूतोंकाआत्माभूतहैआत्माजिसका ताकानाम सर्वभूतात्मभूतात्माहै याप्रकारका जोअर्थ अंगीकारकरीये ॥ तौं सर्वभूतात्मा इतनैंमात्रकहणेकरिकैहीं वांछितअर्थकोसिद्धिहाइसकेहै ॥ यातैं आत्मभूत यहपद अधिकहोवैंगाइति ॥ इसप्रकार प्रथम व्याख्यानविषे आत्मभूत इसपदकोअधिकतारूपदूषणदेकरिकै किसीटीकाकारनैं यहअर्थकथनकरयाहै॥सो आत्मभूत यापदकोअधिकतारूपदूषण इसटीकाविषेभीप्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं सर्व इसपदकरिकैहीं संपूर्णजडअजडप्रपंचकाग्रहणहोइसकेहै ॥ तासर्वपदकासंकोचकरिकै केवलजडप्रपंचमात्रका तासर्वशब्दकरिकैग्रहणकरणा संभवतानहीं ॥ यातैं (सर्वभूतात्मभूतात्मा) यापदका भाष्यकारोंकेअनुसारी प्रथम व्याख्यानहीं समीचीनहै इति ॥७॥ ❋ ॥ अब इसीपूर्वउक्तअर्थकूं दोश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान्स्पष्टकरेहै ॥

नैवकिंचित्करोमीतियुक्तोमन्येततत्त्ववित् ॥ पश्यन्शृण्वन्स्पृशन्
जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपन्श्वसन् ॥८॥ प्रलपन्विसृजन्गृण्हन्नुन्मिष
न्निमिषन्नपि ॥ इंद्रियाणींद्रियार्थेषुवर्त्तंतइतिधारयन् ॥ ९ ॥

न । एव । किंचित् । करोमि । इति । युक्तः । मन्येत । तत्त्ववित् । पश्यन् । शृण्वन् । स्पृशन् । जिघ्रन् । अश्नन् । गच्छन् । स्वपन् । श्वसन् । प्रलपन् । विसृजन् । गृह्णन् । उन्मिषन् । निमिषन् । अपि । इंद्रियाणि । इंद्रियार्थेषु । वर्त्तंते । इति । धारयन् । इ० प०
हेअर्जुन सोयोगयुक्त परमार्थदर्शीपुरुष देखताहूआ भी तथाश्रवणकरताहूआभी तथास्पर्शकरताहू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आभी तथागंधकूंग्रहणकरताहूआभी तथाभक्षणकरताहूआभी तथा गमनकरताहूआभी तथानिद्रांकरताहूआभी तथाश्वांसकूंउठावताहूआभी तथाशब्दकूंउच्चारणकरताहूआभी तथामलकापरित्यागकरताहूआभीतथाग्रहणकरताहूआभी तथाउन्मेषकूंकरताहूआभी तथानिमेषकूंकरताहूआभी यहइंद्रियांदिकहीं आपणेआपणेरूपादिकअर्थोविषे प्रवर्त्तहोवैहैं इसप्रकार मानताहूआ मैं किंचित्मात्र भी नहीं करताहूं याप्रकार मानेहै ॥ ८ ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष युक्तहै अर्थात् निरुद्धचित्तवालाहै ॥ तथा जोपुरुष तत्त्ववित्है ॥ अर्थात् परमार्थदर्शीहै ॥ अथवा जोपुरुष प्रथमतौं निष्कामकर्मयोगकरिकैयुक्तहै ॥ तिसतैंअनंतर अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तत्त्ववेत्ताहूआहै ॥ ऐसापरमार्थदर्शीपुरुष चक्षुआदिपंचज्ञानइंद्रियोंकरिकै तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंकरिकै तथाप्राणादिकपंचप्राणोंकरिकै तथाबुद्धिआदिकच्यारिअंतःकरणोंकरिकै शास्त्रविहितरूपादिकविषयोंकूं ग्रहणकरताहूआभो तिनरूपादिकविषयोंविषे यहइंद्रियादिकहीं प्रवर्त्तहोवैहैं मैंअसंगआत्मा इनरूपादिकविषयोंविषे कदाचित्भी प्रवर्त्तहोता नहीं इसप्रकार निश्चयकरताहूआ मैंअसंगआत्मा किंचित्मात्रभीनहींकरताहूं याप्रकार सोतत्ववेत्तापुरुष सर्वदा मानेहैइति ॥ ईहां (पश्यन् शृण्वन् स्पृशन् जिघ्रन् अश्नन्) यापंचशब्दोंकरिकै श्रीभगवान्नैं यथाक्रमतैं चक्षु श्रोत्र त्वक् घ्राण रसन यापंचज्ञानइंद्रियोंकेव्यापार कथनकरेहैं ॥ तहां रूपादिकोंकादर्शन चक्षुइंद्रियकाव्यापार है ॥ और शब्दश्रवण श्रोत्रइंद्रियकाव्यापारहै ॥ और स्पर्शकाग्रहण त्वक्इंद्रियकाव्यापारहै ॥ और गंधकाग्रहण घ्राणइंद्रियकाव्यापारहै ॥ और रसकाग्रहण रसनइंद्रियकाव्यापारहैइति ॥ और (गच्छन् प्रलपन् विसृजन् गृह्ण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न्) याच्यारिपदोंकरिकै श्रीभगवान्नैं यथाक्रमतैं पाद वाक् पायु हस्त याच्यारिकर्मइंद्रियोंकेव्यापार कथनक रेहैं ॥ तहां गमन पादइंद्रियकाव्यापारहै ॥ और वचनकाउच्चारण वाक्इंद्रियकाव्यापारहै ॥ और मलकाविसर्ग पायुइंद्रियकाव्यापारहै ॥ और ग्रहण हस्तइंद्रियकाव्यापारहै ॥ यहच्यारोव्यापार उपस्थइंद्रियके विषयआनंदरूप व्यापारकाभी उपलक्षकहैं ॥ और श्वसन् यापदकरिकैकथनकरयाजो प्राणका श्वासरूप व्यापारहै ॥ सोश्वा सरूपव्यापार प्राण अपान समान व्यान उदान यापंचप्राणोंकेव्यापारोंकाभी उपलक्षकहै ॥ और (उन्मिषन् नि मिषन्) यापदकरिकै कथनकऱ्याजो उन्मेषनिमेषरूपव्यापारहै ॥ सोव्यापार नाग कूर्म कृकल देवदत्त धनंजय या पांचोप्राणोंकेव्यापारोंकाभी उपलक्षकहै ॥ और (स्वपन्) यापदकरिकैकथनकऱ्याजो बुद्धिका निद्रारूपव्यापारहै ॥ सोव्यापार मन बुद्धि चित्त अहंकार याच्यारिअंतःकरणकेव्यापारोंकाभी उपलक्षकहैइति ॥ इसप्रकार सोतत्त्ववे त्तापुरुष सर्वव्यापारोंविषे आत्माकूं अकर्त्तारूपहीं देखेहै ॥ इसकारणतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनइंद्रियादिकोंकरिकै तिनसर्वव्यापारोंकूंकर्ताहूआभी तिनव्यापारोंकरिकै बंधायमानहोवैनहीं इति ॥ ८ ॥ ९ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हे भगवन् विद्वान्पुरुष कर्तृत्वअभिमानकेअभावतैं सर्वकर्मोंकूंकरताहूआभी लिपायमानहोवैनहीं यहअर्थ पूर्व आपनैं कथनकऱ्या यातैंयहजान्याजावेहै ॥ अविद्वान्पुरुषतौं कर्तृत्वअभिमानकेवशतैं तिनकर्मोंकूंकरताहूआ अवश्यकरि कैलिपायमानहोताहोवैंगा ॥ यातैं तिनकर्मोंविषेप्रवृत्तहूए ताविद्वान्पुरुषकूं सा संन्यासपूर्वकज्ञाननिष्ठा किसप्र कार प्राप्तहोवैंगी ॥ किंतु नहीं प्राप्तहोवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ब्रह्मण्याधायकर्माणिसंगंत्यक्त्वाकरोतियः॥लिप्यतेनसपापेनपद्मपत्रमिवांभसा १०॥

५०४

ब्रह्मणि। आधाय। कर्माणि। संगं। त्यक्त्वा। करोति। यः। लिप्यते। न। सः। पापेन। पद्मपत्रं। इव। अंभसा ॥इतिपद०

हेअर्जुन जोपुरुष परमेश्वरविषे समर्पणकरिकै तथाफलकीइच्छाकूं परित्यागकरिकै कर्मोकूं करेहै सोपुरुष जलकरिकै पद्मपत्रकी न्यांई कर्मकरिकै नहीं लिपायमानहोवैहै ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष परमेश्वरविषे लौकिकवैदिकसर्वकर्मोका समर्पणकरिकै तथा तिनकर्मोकेस्वर्गादिकफलोंकीइच्छाका परित्यागकरिकै जैसे भृत्य आपणेस्वामिवासतै सर्वकर्मोकूंकरेहै तैसे मैंभी केवलपरमेश्वरकीप्रसन्नतावासतैहीं सर्वकर्मोकूंकरताहूं याप्रकारके अभिप्रायकरिकै जोपुरुष तिनलौकिकवैदिकसर्वकर्मोकूंकरेहै॥ सोपुरुषभी तिसविद्वान्पुरुषकीन्यांई तिनपुण्यपापकर्मोकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ जैसे पद्मकेपत्रऊपरि पायाजोजलहै ॥ ताजलकरिकै सोपद्मकापत्र लिपायमानहोवैनहीं॥ तैसे भगवत्अर्पणबुद्धिकरिकैकरयेहूएजेकर्महैं॥ तिनकर्मोकरिकै यहअधिकारीपुरुष लिपायमानहोवैनहीं॥ अर्थात् तेनिष्कामकर्म इसअधिकारीपुरुषकेबंधकाहेतुहोवैनहीं॥ किंतु तेनिष्कामकर्म इसअधिकारीपुरुषकेअंतःकरणकीशुद्धिकाहीं हेतुहोवैहैं॥ १०॥ ॥ अब इसीअर्थकूं श्रीभगवान् स्पष्टकरिकैप्रतिपादनकरेहै॥

कायेनमनसाबुद्ध्याकेवलैरिंद्रियैरपि ॥ योगिनःकर्मकुर्वंतिसंगंत्यक्त्वात्मशुद्धये॥ ११॥

कायेन। मनसा। बुद्ध्या। केवलैः। इंद्रियैः। अपि। योगिनः। कर्म। कुर्वंति। संगं। त्यक्त्वा। आत्मशुद्धये ॥ इतिपदच्छेदः

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन अधिकारीजन फलकोइच्छाकूं परित्यागकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिवासतै केवल शरीरक रिकै तथामनकरिकै तथाबुद्धिकरिकै तथाइंद्रियोंकरिकै कर्मकूं हीं करेहैं ॥ ११ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मोक्षकीइच्छावालेअधिकारीजन आपणेअंतःकरणकीशुद्धिकरणेवासतै स्वर्गादिकफलकीइच्छा कापरित्यागकरिकै केवल शरीरकरिकै तथाकेवल मनकरिकै तथाकेवल बुद्धिकरिकै तथाकेवल इंद्रियोंकरिकै आ पणेवर्णआश्रमकेअनुसार नित्यनैमित्तिककर्मोंकूंहीं करेहैं ॥ ईहां इनकर्मोंकूं मैं ईश्वरकीप्रसन्नतावासतैहीं करताहूं कोई आपणे स्वर्गादिकफलोंकीप्राप्तिवासतै मैं इनकर्मोंकूंकरतानहीं ॥ याप्रकारकाजो ममताकाअभावहै ॥ यहहीं शरीर मन बुद्धि इंद्रिय इनच्यारोंविषे केवलरूपताहै इति ॥ ११ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् कर्तृत्वअभिमानके समानहूएभी तिसीहींकर्मोंकरिकै कोईकपुरुषतौं मुक्तहोवैहै और कोईकपुरुष बंधायमानहोवैहै याप्रकारकीविषमता विषे कौनहेतुहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

युक्तःकर्मफलंत्यक्त्वाशांतिमाप्नोतिनैष्ठिकीं॥अयुक्तःकामकारेणफलेसक्तोनिबध्यते ॥

युक्तः । कर्मफलं । त्यक्त्वा । शांतिं । आप्नोति । नैष्ठिकीं । अयुक्तः । कामकारेण । फले । सक्तः । निबध्यते ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन युक्तपुरुष कर्मकेफलकूं परित्यागकरिकै कर्मोंकूंकरताहूआ सत्त्वशुद्धिक्रमतैंउत्पन्नहूई मोक्षरूपशांति कूं प्राप्तहोवैहै और अयुक्तपुरुषतौं कामनाकरिकै फलविषे आसक्तहूआ बंधायमानहोवैहै ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहसर्वकर्म परमेश्वरकेप्रसन्नतावासतैहींहै हमारेफलवासतै यहकर्म नहींहै याप्रकारकेअभिप्रायवान्पुरुषकानाम युक्तहै ॥ याप्रकारकायुक्तपुरुष तिनकर्मोंके स्वर्गादिकफलोंका परित्यागकरिकै तिननित्यनैमित्तिककर्मोंकूंकरताहूआ मोक्षरूपशांतिकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ कैसीहैसामोक्षरूपशांति नैष्ठिकीहै ॥ अर्थात् प्रथम अंतःकरणकीशुद्धि तिसतैंअनंतर नित्यअनित्यवस्तुकाविवेक तिसतैंअनंतर संन्यासपूर्वकज्ञाननिष्ठा इसक्रमकरिकै जा मोक्षरूपशांति उत्पन्नहूईहै ॥ ऐसी नैष्ठिकीमोक्षरूपशांतिकूं सोयुक्तपुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ और जोपुरुष अयुक्तहै॥ अर्थात् यहसर्वकर्म परमेश्वरवासतैहींहैं हमारेफलवासतै नहींहैं याप्रकारकेअभिप्रायतैं जोपुरुष रहितहै ॥ सोअयुक्तपुरुषतैं कामनाकरिकै तिनकर्मोंकेस्वर्गादिकफलोंविषे मैं इसस्वर्गादिकोंकीप्राप्तिवासतै कर्मोंकूंकरताहूं याप्रकार आसक्तहूआ तिनकर्मोंकरिकै बंधायमानहींहोवैहै ॥ अर्थात् तिनसकामकर्मोंकरिकै सोअयुक्तपुरुष संसाररूपबंधकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं हेअर्जुन तूंभी युक्तहूआ तिनकर्मोंकूंकर इति ॥ १२ ॥ ॐ ॥ तहां अशुद्धचित्तवालेपुरुषकूं केवलसंन्यासतैं कर्मयोगहीं श्रेष्ठहै ॥ इसपूर्वउक्तअर्थकूं इतनैंपर्यंत विस्तारकरिकैकथनकरया ॥ अब शुद्धचित्तवालेपुरुषकूं सोसर्वकर्मोंकासंन्यासहीं श्रेष्ठहै इसअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

सर्वकर्माणिमनसासंन्यस्यास्तेसुखंवशी ॥ नवद्वारेपुरेदेहीनैवकुर्वन्नकारयन् ॥ १३ ॥

सर्वकर्माणि । मनसा । संन्यस्य । आस्ते । सुखं । वशी । नवद्वारे । पुरे । देही । नैं । एव । कुर्वन् । नैं । कारयन् ॥ इतिपद० ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन सर्वकर्मोकूं मनकरिकै परित्यागकरिक देहतैंभिन्नआत्मदर्शी वशीपुरुष नवद्वारवाले इसदेहविषे सुखपूर्वक स्थितहोवैहै तथा नहीं किसीकार्यकूंकरताहूआ तथा नहीं किसीकार्यकूंकरावता हूआ स्थितहोवैहै ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥ टीका ॥ हेअर्जुन नित्य नैमित्तिक काम्य प्रतिषिद्ध यहच्यारिप्रकारकेकर्महोवैहैं ॥ तिनसर्वकर्मोका (कर्मण्यकर्म यःपश्येत्) इसश्लोकविषेकथनकरयाजो अकर्त्ताआत्मस्वरूपकासम्यक्दर्शनहै तासम्यक्दर्शनयुक्तमनकरिकै परित्यागकरिकै प्रारब्धकर्मकेवशतैं सोसंन्यासी स्थितहोवैहै ॥ तहां सोसंन्यासी क्याद्दुःखपूर्वकस्थितहोवैहै ऐसीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (सुखंइति) हेअर्जुन शरीरकाव्यापार तथावाकादिकइंद्रियोंकाव्यापार तथामनकाव्यापार यहतीनव्यापारहीं इसप्राणीयोंकूं आयासकीप्राप्तिकरेहैं ॥ तेआयासकेहेतुरूपतीनोंव्यापार तिससंन्यासीविषे हैंनहीं ॥ यातैं सोसंन्यासी ताआयासतैंरहितहूआहीं स्थितहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् तासंन्यासीके शरीरइंद्रिय मन यहतीनों स्वतंत्रहोइकै आपणेआपणेव्यापारविषे किसवासतैनहींप्रवृत्तहोते ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (वशीइति) हेअर्जुन तिससंन्यासीनैं यहकार्यकारणरूपसंघात आपणेवशकऱ्याहै ॥ यातैं तासंन्यासीके शरीर इंद्रिय मन यहतीनों स्वतंत्रहोइकै किसीव्यापारविषे प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसासर्वव्यापारतैंरहित संन्यासी किसस्थानविषे स्थितहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (नवद्वारेपुरेइति) दोश्रोत्र दोचक्षु दोनासिका एकमुख यहसप्तद्वारतौं ऊपरिशिरविषेरहेहै ॥ और पायु उपस्थ यहदोद्वार नीचेरहेहैं ॥ इननवद्वारोंकरिकैविशिष्ट जोयहस्थूलशरीरहै ॥ तास्थूलशरीररूपपुरविषे सोसंन्यासीरहेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संन्यासी असंन्यासी विद्वान् अविद्वान् इत्यादिकसर्वप्राणीमात्र इसनवद्वारवालेदेहविषेहींरहेहैं ॥ केवल सासंन्यासीहीं इसदेहविषेरहेनहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (देहीइति) हेअर्जुन सोविद्वान्संन्यासी इसनवद्वारवालेदेहविषे स्थितहूआभी इसदेहतैं आपणेआत्माकूं भिन्नरूपकरिकैदेखेहै ॥ देहरूपआत्माकूंदेखतानहीं ॥ याकारणतैंहीं जैसे प्रवासीपुरुष किसीपरगृहविषे निवासकरेहै ॥ परंतु तागृहकीवृद्धिहानिकरिकै सोप्रवासीपुरुष हर्षशोककूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे सोविद्वान्संन्यासीभी इसशरीरकेपूजनपराभवकरिकै हर्षविषादकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु अहंताममतातैंरहितहूआ इसदेहविषेस्थितहोवैहै ॥ और अज्ञानीपुरुषतौं तादेहकेतादात्म्यअभिमानतैं आपणेकूं देहरूपहींमानेहै ॥ देहोरूप आपणेकूंमानतानहीं ॥ याकारणतैंहीं सोअज्ञानीपुरुष इसदेहकेअधिकरणकूंहीं आत्माका अधिकरणमानताहूआ मैं इसगृहविषेस्थितहूं मैं इसभूमिविषेस्थितहूं मैं इसआसनविषेस्थितहूं याप्रकारहीं आपणेकूंमानेहै मैं इसदेहविषेस्थितहूं याप्रकार सोअज्ञानीपुरुष आपणेकूंमानतानहीं ॥ जिसकारणतैं ताअज्ञानीपुरुषनैं इसदेहतैंभिन्नकरिकै आपणेआत्माकूंजान्यानहीं ॥ और इससंघाततैंभिन्नकरिकै आत्माकूंजानणेहारा जोसर्वकर्मोंकासंन्यासीहै ॥ सोविद्वान्संन्यासीतौं मैं इसदेहविषेस्थितहूं याप्रकारहीं आपणेकूंमानेहै ॥ देहरूप आपणेकूं मानतानहीं ॥ याकारणतैंहीं अविक्रियआत्माविषे अविद्याकरिकैआरोपित जोदेहादिकोंकेव्यापारहैं तिनसर्वव्यापारोंका जोतत्त्वसाक्षात्कारकरिकैबाधहै ॥ सोईहीं सर्वकर्मोंकासंन्यास कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार की अज्ञानीपुरुषतैंविलक्षणताकूं अंगोकारकरिकैहीं श्रीभगवान्नैं ताविद्वान्पुरुषका (नवद्वारेपुरेआस्ते) यहविशे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

षण कथनकरयाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे नौकाकेचलनरूपव्यापारका तीरस्थवृक्षविषे आरोपणहोवैहै ॥ तैसे आत्माविषेआरोपित जेदेहादिकोंकेव्यापारहैं तिनव्यापारोंका विद्याकरिकैबाधहूएभी आत्माविषे आपणेव्यापारकरिकै करतापणाहोवैंगा तथादेहादिकोंकेव्यापारविषे प्रयोजककरतापणा होवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (नैवकुर्वन्नकारयन्इति) हेअर्जुन यहआत्मादेव आप किसीव्यापारकूंकरताहूआ स्थितहोवैनहीं ॥ तथा प्रेरणाकरिकै देहइंद्रियादिकोंतैं किसीव्यापारकूंकरावताहूआभी स्थितहोवैनहीं ॥ किंतु उदासीनहूआस्थितहोवैहैइति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (नवद्वारेपुरे) यावचनका यहअर्थकरयाहै ॥ श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण प्राण बुद्धि अहंकार चित्त यहनवद्वारहैजिसविषे ऐसेइसशरीररूपपुरविषे सोविद्वान्पुरुषस्थितहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकप्रसिद्धपुरकेराजाकूं तापुरकेद्वारोंकरिकैहीं बाहरलेविषयप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे इसशरीररूपपुरकाअधिपति जोयहजीवात्मारूपराजाहै ॥ ताजीवात्माकेभोगवासतै बाहरलेशब्दादिकविषय तिनश्रोत्रादिकद्वारोंकरिकैहीं भोतरप्रवेशकरेहैं ॥ यातैं तेश्रोत्रादिक प्रसिद्धपुरकेद्वारोंकीन्यांई द्वाररूपहैं इति ॥ १३ ॥ ॐ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे देवदत्तनामापुरुषविषे वास्तवतैंस्थित जागमनरूपक्रियाहै ॥ सागमनरूपक्रिया तादेवदत्तपुरुषकेस्थितिकालविषे होतीनहीं ॥ तैसे आत्माविषे वास्तवतैंस्थित जोकर्तृत्व तथाकारयितृत्वहै ॥ सोकर्तृत्व तथाकारयितृत्व संन्यासकालविषे ताआत्माविषेहोतानहीं ॥ यहआपकेकहणेकातात्पर्यहै ॥ अथवाजैसे आकाशविषे तलमलिनतादिक वास्तवतैंहैंनहीं ॥ तैसे आत्माविषेभी सोकर्तृत्व तथाकारयितृत्व वास्तवतैंहैहींनहीं ॥ यहआपकेकहणेकातात्प

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्यहै ॥ इसप्रकारके अर्जुनकेसंशयकीनिवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान् अंत्यकोटीकूंअंगीकारकरिकैकहेहै ॥

नकर्तृत्वंनकर्माणिलोकस्यसृजतिप्रभुः ॥ नकर्मफलसंयोगंस्वभावस्तुप्रवर्त्तते ॥ १४ ॥

514

नँ । कँर्तृत्वं । नँ । कँर्माणि । लोकँस्य । सृँजति । प्रँभुः । नँ । कँर्मफलसंयोगं । स्वँभावः । तुँ । प्रँवर्तते ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन यहआत्मादेव देहादिकोंके कर्तृत्वकूं नहीं उत्पन्नकरेहै तथाकर्मोंकूंभी नहीं उत्पन्नकरेहै तथाकर्मोंकेफलकेसंबंधकूंभी नहीं उत्पन्नकरेहै किंतु अज्ञानरूपमायाहीं सर्वकार्यकेकरणेविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥ ॥टीका ॥ हेअर्जुन देहइंद्रियादिकसर्वसंघातकास्वामीरूप जोयहआत्मादेवहै ॥ सोयहआत्मादेव तिनदेहइंद्रियादिकोंकेकर्तृत्वकूं उत्पन्नकरतानहीं ॥ अर्थात् तुंम इसकार्यकूंकरो याप्रकारकोप्रेरणाकरिकै यहआत्मादेव किसीभीकार्यकूंकरावतानहीं ॥ यातैं इसआत्मादेवविषे प्रयोजककर्त्तापणारूप कारयितृत्व संभवैनहीं ॥ और तिनदेहइंद्रियादिकोंकूं वांच्छितजेघटादिरूपकर्महैं ॥ तिनघटादिकरूपकर्मोंकूंभी यहआत्मादेव उत्पन्नकरतानहीं ॥ अर्थात् यहआत्मादेव तिनघटादिकपदार्थोंका कर्त्ताभीहोवैनहीं ॥ यातैं इसआत्मादेवविषे कर्तृत्वभीहैनहीं ॥ और कर्मोंकूंकरणेहारे लोकोंका जोतिसतिसकर्मकेफलकेसाथि संबंधहै ॥ तिसकर्मफलकेसंबंधकूंभी यहआत्मादेव उत्पन्नकरतानहीं ॥ अर्थात् यहआत्मादेव नहींतौं किसीकूं फलकेभोगावणेहाराहै ॥ तथा नहीं आप फलकूंभोक्ताहै ॥ यातैं इसआत्मादेवविषे भोजयितृत्व तथाभोक्तृत्वभी संभवैनहीं ॥ इसोअर्थकूं (शरीरस्थोपिकौंतेयनकरोतिनलिप्यते) यहगीताकावचनभी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कथनकरेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहआत्मादेव जबी आप किंचित्मात्रभीकार्यकूं करतानहीं तथाकरावताभीनहीं ॥ तबी दूसराकौंन कार्यकूंकरताहूआ तथाकरावताहूआ प्रवृत्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (स्वभावस्तुप्रवर्त्ततेइति) हेअर्जुन अज्ञानरूपजादैवीमायाहैं ॥ जिसमायाकूं प्रकृतिभीकहेहैं ॥ सामायारूपप्रकृतिहीं कार्यकेकरणेविषे तथाकरावणेविषे प्रवृत्तहोवैहैइति ॥ ईहां किसीटीकाविषे (स्वभावस्तुप्रवर्त्तते) इसवचनका यहअर्थ कथनकरयाहै ॥ यहचैतन्यस्वरूपआत्मा सूर्यकीन्यांई सर्वकाप्रकाशमात्रहींहै ॥ किसीकर्मादिकोंविषे प्रवर्त्तकहैनहीं ॥ किंतु जिसजिसवस्तुका जैसाजैसा स्वभावहोवैहै ॥ सोस्वभावहीं तिसतिसप्रकार प्रवृत्तहोवैहै ॥ जैसे एकहींसूर्यके उदयहूए कमलोंकातौं स्वभावतैंहीं विकासहोवैहै और कुमुदोंका स्वभावतैंहीं संकोचहोवैहै ॥ सोसूर्य किसीका विकास तथासंकोच करतानहीं ॥ तैसे एकहींआत्माकेप्रकाशमानहूए घटादिकपदार्थतौं चेष्टाकूंकैरैनहीं और मनुष्यादिकतौं नानाप्रकारकीचेष्टाकूंकरेहैं ॥ सोआत्मादेव किसीभीपदार्थकूं प्रवृत्त तथानिवृत्त करतानहीं इति ॥ १४ ॥

* ॥ शंका ॥ हेभगवन् ईश्वरतौं प्रेरणाकरिकै जीवकेप्रति कर्मोंकेकरावणेहाराहै ॥ और जीवतौं तिनकर्मोंके करणेहाराहै ॥ याकारणतैं ताईश्वरविषेतौं कारयितृत्वहै ॥ और ताजीवविषे कर्तृत्वहै ॥ यहवार्ता श्रुतिविषे तथा स्मृतिविषे कथनकरीहै ॥ तहां श्रुति ॥ (एषउह्येवसाधुकर्मकारयतितंयमेभ्योलोकेभ्यउन्निनीषते एषउह्येवासाधुकर्मकारयतितंयमधोनिनीषतेइति) ॥ अर्थयह ॥ यहपरमेश्वर जिसपुरुषकूं इसलोकतैंऊपरि स्वर्गादिकलोकोंविषेलेजाणेकीइच्छाकरेहै ॥ तिसपुरुषकूंतौं प्रेरणाकरिकै पुण्यकर्मकरावैहै ॥ और यहपरमेश्वर जिसपुरुषकूं नरकादिकनीच

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लोकोंविषे लेजाणेकीइच्छाकरेहै ॥ तिसपुरुषकूं प्रेरणाकरिकै पापकर्म करावैहै इति ॥ यहश्रुति ईश्वरविषेतौं पुण्य पापकर्मोंका कारयितृत्व कथनकरेहै ॥ और जीवविषे तिनपुण्यपापकर्मोंका कर्तृत्व कथनकरेहै ॥ इसीअर्थकूं स्मृतिभी कथनकरेहै ॥ तहांस्मृति ॥ (अज्ञोजंतुरनीशोयमात्मनःसुखदुःखयोः ॥ ईश्वरप्रेरितोगच्छेत्स्वर्गंवाश्वभ्रमेववा ॥) अर्थयह ॥ यहअज्ञानीजीव आपणे सुखविषे तथादुःखविषे असमर्थहींहै ॥ किंतु ईश्वरकरिकै प्रेरणाकऱ्याहूआ यह जीव आपणेपुण्यपापकेवशतैं स्वर्गनरकादिकोंकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ और जोपुरुष पुण्यपापकर्मोंकाकर्त्ताहोवैहै ॥ तथा जोपुरुष प्रेरणाकरिकै तापुण्यपापकर्मकेकरावणेहाराहोवैहै ॥ तिनदोनोंकूंहीं तापुण्यपापकर्मकालेप अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यातैं जीवविषेतौं कर्त्तापणेकरिकै तथाईश्वरविषे कारयितापणेकरिकै तापुण्यपापकर्मकालेप अवश्यकरिकैहोवैगा ॥ यातैं यहआत्मादेव नकरताहै नकरावताहै ॥ किंतु यहप्रकृतिरूपस्वभावहीं सर्वकार्योंविषेप्रवृत्तहोवैहै यहआपकाकहणा श्रुतिस्मृतितैंविरुद्धहोणेतैं असंगतहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

नादत्तेकस्यचित्पापंनचैवसुकृतंविभुः ॥ अज्ञानेनावृतंज्ञानंतेनमुह्यंतिजंतवः ॥ १५॥

नॅ। आदॅत्ते। कॅस्यचित्। पॉपं। नॅ। चॅ। एॅव। सुकृॅतं। विभुॅः। अॅज्ञानेन। आॅवृतं। ज्ञॉनं। तेॅन। मुॅह्यंति। जंतॅवः ॥ इतिपद०

हेअर्जुन परमेश्वर किसीभीजीवके पापकूं नहीं ग्रहणकरेहै तथा पुण्यकूं भी नहीं ग्रहणकरेहै किंतु अज्ञानकरिकै आवृत्त जोज्ञानहै तिसकरिकै यहजीव मोहकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वत्रव्यापकहोणेतैं निष्क्रियजोपरमेश्वरहै ॥ सोपरमेश्वर किसीभीजीवके पापकूं तथापुण्यकूं ग्रहणकरतानहीं ॥ काहेतैं परमार्थदृष्टिकरिकै इसजीवविषेतौं तिनपुण्यपापकर्मोंका कर्त्तापणानहींहै ॥ और ईश्वरविषे तिनपुण्यपापकर्मोंका कारयितापणा नहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोकदाचित् परमेश्वरविषे वास्तवतैं कर्मोंका कारयितृत्वनहींहोवै तथाजीवविषे तिनकर्मोंका कर्तृत्वनहींहोवै ॥ तौं परमेश्वरविषे कर्मोंके कारयितृत्वकूं तथाजीवविषे कर्मोंके कर्तृत्वकूं कथनकरणेहारी पूर्वउक्तश्रुतिस्मृति असंगतहोवैंगी ॥ और इसलोकविषेभी शिष्टपुरुष ईश्वरकीप्रसन्नतावासतैं शुभकर्मोंकूंकरेहैं और तिनशुभकर्मोंकेनहींकरणेतैं भयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यहलोकोंकाव्यवहार भी असंगतहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (अज्ञानेनावृतंज्ञानंतेनमुह्यंतिजंतवःइति) हेअर्जुन आवरणविक्षेपशक्तिवाला जोमायारूपमिथ्याअज्ञानहै ॥ ताअज्ञानरूपतमकरिकैआवृतहूआजो जीवईश्वरजगतभेदभ्रमकाअधिष्ठानरूप तथानित्यस्वप्रकाशसच्चिदानंदअद्वितीयरूप तथापरमार्थसत्यरूप ज्ञानहै ॥ ताज्ञानस्वरूपआत्माकेआवरणकरिकै आपणेवास्तवस्वरूपकूंनहींजानणेहारे यहसंसारीजोव मोहकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् प्रमाता प्रमाण प्रमेय कर्त्ता कर्म करण भोक्ता भोग्य भोग यहनवप्रकारकासंसारभ्रमरूपजोविक्षेपहै ताविक्षेपरूपमोहकूं तेजीव प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ वास्तवतैं अकर्त्ता अभोक्तारूप जोपरमानंदअद्वितीयआत्माहै ॥ ताआत्माकेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानकरिकैहीं अविवेकीमूढपुरुषोंकूं यहजीवहै यहईश्वरहै यहजगतहै इत्यादिकभेदभ्रम प्रतीतहोवैहै ॥ अर्थात् यहजीव पुण्यपापकर्मोंकाकर्त्ताहै और ईश्वर तिनपुण्यपापकर्मोंकेकरावणेहाराहै इत्या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दिकभेदभ्रम प्रतीतहोवैहै ॥ तिनअज्ञानीमूढपुरुषोंकेभ्रातिज्ञानकूंहीं (एषउह्येवसाधुकर्मकारयति) इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचन अनुवादमात्रकरेहैं ॥ कोईतिनश्रुतिस्मृतिवचनोंका ताभेदभ्रमकेबोधनविषे तात्पर्यनहींहै ॥ यातैं वास्तवतैंअद्वितीयआत्माकेबोधकजे तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यहैं तिनमहावाक्योंकेहीं तेश्रुतिस्मृतिवचन शेषरूपहैं ॥ यातैं तिनश्रुतिस्मृतिवचनोंकाभी ईहां विरोधहोवैनहींइति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (अज्ञानेनावृतंज्ञानंतेनमुह्यंतिजंतवः) इसवचनका यहअभिप्राय कथनकऱ्याहै ॥ जैसे चक्रवर्त्तिमहाराजाकूं जाग्रतअवस्थाविषे मैं सर्वप्रजाकाईश्वर हूं याप्रकारकाज्ञानहोवैहै ॥ सोताकाज्ञान जबी निद्रारूपअज्ञानकरिकैआवृतहोवैहै ॥ तबी सोचक्रवर्त्तिराजा तास्वप्न अवस्थाविषे अनेकप्रकारकेसंकटोंकूंदेखेहै तथा मैं अत्यंतदीनहूं मैं अत्यंतदुःखीहूं इसप्रकारकेमोहकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे यहजीवभी अहंब्रह्मास्मि इत्यादिकवेदकेवचनोंतैं आपणेब्रह्मभावकूंनहींजानतेहूए तथाईश्वरतैंआपणेकूं जुदामानतेहूए अर्थात् ईश्वरकूं स्वामीमानतेहूए तथा आपणेकूं ताईश्वरका सेवकमानतेहूए वारंवार जन्ममरणरूपमोहकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अथयोऽन्यांदेवतामुपास्तेऽन्योसावन्योहमितिनसवेदयथापशुरेवसदेवानांइति ॥ उदरमंतरंकुरुतेअथतस्यभयंभवतिइति ॥ मृत्योःसमृत्युमाप्नोतियइहनानेवपश्यतिइति ॥) अर्थयह ॥ जो पुरुष यहदेवता भिन्नहै तथामैंभिन्नहूं याप्रकार देवतातै आपणेकूंभिन्नमानिकै तिसदेवताका ध्यानकरेहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष देवताकेस्वरूपकूं तथाआपणेस्वरूपकूं यथार्थजानतानहीं ॥ जैसे लोकप्रसिद्धअश्वमहिषादिकपशु किंचित्मात्रभी जानतेनहीं ॥ तैसे सोभेददर्शीपुरुषभी तिनदेवतावोंकापशुहींहै ॥ भेददर्शीअज्ञानीपुरुष देवतावोंकापशुहै यहवार्त्ता आत्मपु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राणकेचतुर्थअध्यायविषे दध्यङ्अथर्वण देवराजइंद्रकेसंवादविषे हमविस्तारतैंकथनकरिआयेहैंइति ॥ और जोपुरुष ईश्वरतैं आपणा किंचित्मात्रभीभेदअंगीकारकरेहै ॥ तिसभेददर्शीपुरुषकूं महान्भयकोप्राप्तिहोवैहैइति ॥ और जोपुरुष इसअद्वितीयब्रह्मविषे नानाभावकूंदेखेहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष मृत्युतैंमृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् वारंवार जन्म मरणकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ १५ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जबी सर्वहींजीव ताअनादिअज्ञानकरिकैआवृतहूए तबी इसजन्ममरणरूपसंसारकीनिवृत्ति किसप्रकारतैंहोवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

ज्ञानेनतुतदज्ञानंयेषांनाशितमात्मनः ॥ तेषामादित्यवज्ज्ञानंप्रकाशयतितत्परं ॥ १६ ॥

ज्ञा॑नेन । तु॑ । तत्॑ । अ॑ज्ञानं । येषां॑ । ना॑शितं । आत्म॑नः । तेषां॑ । आ॑दित्यवत् । ज्ञा॑नं । प्र॑काशयति । तत्॑ । प॑रं ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन पुनः जिनपुरुषोंका सो अज्ञान आत्माके ज्ञाननैं नाशकऱ्याहै तिनपुरुषोंका सो आत्मज्ञान सूर्यकीन्यांई परब्रह्मकूं प्रकाशकरेहै ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोअज्ञान आवरणविक्षेपशक्तिवालाहै तथाअनादिहै अर्थात् उत्पत्तितैंरहितहै ॥ तथा जोअज्ञान अनिर्वचनीयहै अर्थात् सत् असत् सत्असत् यातीनोंपक्षोंतैंरहितहै ॥ तथाजोअज्ञान सर्वअनर्थोंकामूलकारणहै ॥ तथा जोअज्ञान स्वाश्रयअभिन्नविषयकहै अर्थात् जैसे अंधकार जिसगृहकेआश्रितरहेहै तिसीगृहकूं आवृतकरेहै तैसे यहअज्ञानभी जिसआत्मादेवके आश्रितरहेहै तिसीआत्मादेवकूं आवृतकरेहै ॥ तथा जिसअज्ञानकूं शास्त्रविषे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

माया अविद्या प्रकृति प्रधान अव्यक्त शक्ति इत्यादिकनामोंकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ऐसाअज्ञान जिनअधिकारीपुरुषोंके आत्मविषयकज्ञाननैं नाशकऱ्याहै ॥ अर्थात् जोज्ञान ब्रह्मवेत्तागुरुनैंउपदेशकऱ्येहूए वेदांतमहावाक्यकरिकैजन्य है ॥ तथा जोज्ञान श्रवणमननिदिध्यासनकोपरिपक्वताकरिकै निर्मलहूएअंतःकरणको वृत्तिरूपहै ॥ तथा जोज्ञान शोधिततत्त्वंपदार्थोंकाअभेदरूपजो शुद्धसच्चिदानंदअखंडएकरसवस्तुहै तावस्तुमात्रकूं विषयकरणेहाराहै ॥ ऐसेनिर्विकल्पकआत्मसाक्षात्कारनैं जिनअधिकारीपुरुषोंका सोअज्ञान बाधकूंप्राप्तकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे शुक्तिविषेरजतभ्रमतैंअनंतर उत्पन्नभयाजो यहशुक्तिहींहै रजतनहींहै याप्रकारका शुक्तिविषयकज्ञानहै ॥ सोशुक्तिकाज्ञान ताशुक्तिविषे तारजतका त्रैकालिकअसत्त्वरूपबाधकूंकरेहै ॥ तैसे सोआत्मज्ञानभी ताअद्वितीयब्रह्मविषे ताअज्ञानका त्रैकालिकअसत्त्वरूपबाधकूं करेहै ॥ कोई जैसे मुद्गरकाप्रहार घटकेसूक्ष्मअवस्थारूपध्वंसकूंकरेहै तैसे यहआत्मज्ञान ताअज्ञानकेसूक्ष्मअवस्थारूपध्वंसकूंकरतानहींइति ॥ ऐसा सोअधिकारीजनोंकाआत्मज्ञान लोकप्रसिद्धसूर्यकीन्यांई सत्यज्ञानअनंतआनंदरूपएकअद्वितीयपरमात्मतत्वकूं प्रकाशकरेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे यहसूर्य आपणेउदयमात्रकरिकैहीं निरवशेषअंधकारकीनिवृत्तिकरिकै घटादिकपदार्थोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ ताअंधकारकोनिवृत्तिकरणेविषे सोसूर्य अन्यकिसीकेसहायताकीअपेक्षाकरतानहीं ॥ तैसे शुद्धसत्त्वकापरिणामरूपहोणेतैं व्यापक तथाप्रकाशरूप जोब्रह्मज्ञानहै सोब्रह्मज्ञानभी आपणीउत्पत्तिमात्रकरिकैहीं ताकार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिकरताहूआ अद्वितीयपरमात्मतत्त्वकूं प्रकाशकरेहै ॥ ताकार्यसहितअज्ञानकोनिवृत्तिकरणेविषे सोब्रह्मसाक्षात्कार अन्यकिसीकेसहा

520

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यताकी अपेक्षाकरतानहीं ॥ ईहां (तत्ज्ञानंपरंप्रकाशयति) इसवचनकरिकै अद्वितीय स्वप्रकाशब्रह्मविषे जो ज्ञान कृतप्रकाश्यता कथनकरीहै ॥ सो अज्ञानरूपआवरणकोनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मकीअभिव्यक्तिमात्रजानणी ॥ जिसकूं वेदां तशास्त्रविषे वृत्तिव्याप्ति यानामकरिकैकथनकरेहैंइति ॥ और (अज्ञानेनावृतंज्ञानं ज्ञानेनतुतदज्ञानंयेषांनाशितमा त्मनः) यादोनोंवचनोंकरिकै श्रीभगवान्नैं ताअज्ञानविषे आवरणरूपता तथाज्ञानकरिकैनाश्यता कथनकरी ॥ ताक हणेकरिकै श्रीभगवान्नैं ताअज्ञानविषे नैयायिकोंनैंअंगीकारकरीहूई ज्ञानाभावरूपता निवृत्तकरी ॥ काहेतैं अभा व किसीवस्तुकाआवरण करतानहीं ॥ तथा ज्ञानकाअभाव ताज्ञानकरिकैनाशभीहोइसकैनहीं ॥ जिसकारणतैं वि द्यमानवस्तुवोंकाहीं परस्पर नाश्यनाशकभावहोवैहै ॥ यातैं ज्ञानकेअभावकानाम अज्ञाननहींहै ॥ किंतु मैं अज्ञानी हूं मैं आपणेकूं तथाअन्यकूंजानतानहीं इत्यादिकसाक्षीरूपप्रत्यक्षकरिकैसिद्ध भावरूपहींअज्ञानहैइति ॥ और (ये षां तेषां) याबहुवचनांत सामान्यअर्थकेवाचक यत् तत् यादोनोंशब्दोंकरिकै श्रीभगवान्नैं इसब्राह्मणत्वादिक उ त्तमजातिविषेहीं तथाइसउत्तमआश्रमविषेहीं आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै तथाताज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै इसतैंअन्यजातिविषे तथाइसतैंअन्यआश्रमविषे ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैनहीं तथाताज्ञानकरिकैअज्ञानकीनिवृ त्तिभीहोवैनहीं याप्रकारकेनियमकाअभाव कथनकरया ॥ किंतु सर्वजातियोंविषे तथासर्वआश्रमोंविषे श्रवणादिकसा धनोंकरिकै ताआत्मज्ञानकीप्राप्ति तथाताज्ञानकरिकैअज्ञानकीनिवृत्ति होवैहैइति ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथन करीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तद्योयोदेवानांप्रत्यबुद्ध्यतसएवतदभवत्तथार्षीणांतथामनुष्याणांइति) अर्थयह ॥ देवतावोंके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मध्यविषे जोजोदेवता इसअद्वितीयब्रह्मकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणाआत्मारूपकरिकै जानताभयाहै ॥ सोसो देवता अज्ञानकोनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मरूपहींहोताभयाहै ॥ तथा ऋषियोंकेमध्यविषे जोजोऋषि तिसअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानताभयाहै ॥ सोसोऋषि अज्ञानकीनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मरूपहींहोताभयाहै ॥ तथा मनुष्योंकेमध्यविषे जोजोमनुष्य तिसअद्वितीयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानताभयाहै ॥ सोसोमनुष्य अज्ञानकीनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मरूपहींहोताभयाहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतियोंनैं मनुष्यमात्रकूंहीं आत्मज्ञानकीप्राप्ति तथाताआत्मज्ञानकरिकै मोक्षकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ यातैं ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिविषे तथाताज्ञानकरिकैमोक्षकीप्राप्तिविषे उत्तमजातिआश्रमका किंचित्मात्रभी नियमनहींहै ॥ किंतु ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिकासाधनरूपजोश्रवणहै ताश्रवणविषेहीं नियमहै ॥ तहां ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यात्रैवर्णिकपुरुषोंनैंतौं वेदवचनोंकेश्रवणतैं आत्मज्ञानकूं संपादनकरणा ॥ और शूद्रादिकोंनैं अद्वैतकेप्रतिपादकपुराणादिकोंकेश्रवणकरिकै ताआत्मज्ञानकूं संपादनकरणा ॥ यहश्रवणकेनियमकीप्रक्रिया आत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे हम विस्तारतैंकथनकरिआयेहैंइति ॥ ईहां (अज्ञानेनावृतंज्ञानं) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आत्माविषे अज्ञानकृतआवरण कथनकऱ्याहै ॥ और (ज्ञानेनतुतदज्ञानंयेषांनाशितमात्मनः) यावचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आत्मज्ञानकरिकै ताआवरणकीनिवृत्ति कथनकरीहै ॥ सोअज्ञानकृतआवरणदोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं असत्त्वापादक आवरणहोवैहै ॥ और दूसरा अभानापादक आवरणहोवैहै ॥ जैसे सो आवरण दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तैसे सोआत्मज्ञानभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकतौं परोक्षज्ञानहोवैहै ॥ और दूसरा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपरोक्षज्ञानहोवैहै ॥ तहां अवांतरवाक्यकेश्रवणतैं उत्पन्नभयाजोज्ञानहै ताकूं परोक्षज्ञानकहेहै ॥ और महावाक्य केश्रवणतैं उत्पन्नभयाजोज्ञानहै ताकूं अपरोक्षज्ञानकहेहैं ॥ तहां तत्पदार्थरूपईश्वरके तथात्वंपदार्थरूपजीवके स्व रूपमात्रकूं कथनकरणेहारेजेवाक्यहै तिनवाक्योंकूं अवांतरवाक्यकहेहैं ॥ जैसे (सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म) इत्यादिकवा क्यहैं ॥ और ताईश्वरके तथाजीवके अभेदकूंकथनकरणेहारेजेवाक्यहैं तिनवाक्योंकूं महावाक्यकहेहैं ॥ जैसे (तत्त्व मसि अहंब्रह्मास्मि) इत्यादिकवाक्यहैं ॥ तहां ब्रह्मनास्ति याप्रकारकेभ्रमकाजनक जोप्रथम असत्त्वापादक आवर णहै ॥ सोअसत्त्वापादकआवरणतौं परोक्षअपरोक्षसाधारण प्रमाणजन्यज्ञानमात्रकरिकै निवृत्तहोवैहैं ॥ काहेतैं जै से पर्वतविषे धूमरूपहेतुकेदर्शनतैं यहपर्वत अग्निवालाहै याप्रकारकेअनुमितिरूपपरोक्षज्ञानकेहूएभी पर्वतविषेअ ग्निनहींहै याप्रकारकेभ्रमकीनिवृत्तिहोइजावैहै ॥ तैसे सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्मअस्ति इसवाक्यतैं ब्रह्मकेपरोक्षज्ञानश्चयहूए भी ब्रह्मनहींहै याप्रकारकेभ्रमको निवृत्तिहोइजावैहै ॥ और ब्रह्मतौंहै परंतु सोब्रह्म हमारेकूंभासतानहीं याप्रका रकेभ्रमकाजनक जोदूसरा अभानापादक आवरणहै ॥ सोअभानापादकआवरणतौं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअपरो क्षज्ञानतैंहीं निवृत्तहोवैहैं ॥ परोक्षज्ञानकरिकै सोअभानापादकआवरण निवृत्तहोवैनहीं ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका ज्ञान वाक्यतैंजन्यहूआभी दशमस्त्वमसि इसवाक्यजन्यज्ञानकीन्यांई अपरोक्षरूपहींहोवैहै यहवार्त्ता सर्ववेदांत शास्त्रोंविषे निर्णीतहींहै इति ॥ १६ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताआत्मज्ञानकरिकै परमात्मतत्त्वकेप्रकाशहूए किसफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् ताआत्मज्ञानके विदेहमुक्तिरूपफलकूं कथनकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः॥गच्छंत्यपुनरावृत्तिंज्ञाननिर्धूतकल्मषाः १७

524

तद्बुद्धयः। तदात्मानः। तन्निष्ठाः। तत्परायणाः। गच्छंति। अपुनरावृत्तिं। ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः॥ इतिपदच्छेदः॥ हेअर्जुन तिसपरब्रह्मविषेहैबुद्धिजिनोंकी तथासोपरब्रह्महींहैआत्माजिनोंका तथातिसपरब्रह्मविषे हींहैनिष्ठाजिनोंकी तथासोपरब्रह्महींहैप्राप्तहोणेयोग्यजिनोंकूं तथाज्ञानकरिकैनिवृत्तहूएहैंपुण्यपाप कर्मजिनोके ऐसेविद्वान्संन्यासी अपुनरावृत्तिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ज्ञानकरिकैप्रकाशित जोसच्चिदानंदघनपरमात्मतत्त्वहै ॥ तापरमात्मतत्त्वविषेहीं बाह्यसर्वविषयोंकेपरित्यागपूर्वक विवेकादिकसाधनोंकीपरिपक्कतातैं परिअवसानकूंप्राप्तहूईहैअंतःकरणकीसाक्षात्काररूपवृत्ति जिनोंकी ऐसेपुरुष तद्बुद्धिकहेजावैहैं ॥ अर्थात् जेपुरुष सर्वदा निर्विकल्पसमाधिवालेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् (तद्बुद्धयः) यावचनकरिकै जीवतौं वृत्तिरूपबोधकाआश्रय प्रतीतहोवैहैं औरपरब्रह्म तावृत्तिरूपबोधकाविषय प्रतीत होवैहै॥ यातैं तिनजीवोंका तथापरब्रह्मका परस्पर बोद्धृबोद्धव्यरूपभेद अवश्यकरिकैहोवैंगा ॥ तहां बोधकेआश्रयकानाम बोद्धृहै ॥ और ताबोधकेविषयकानाम बोद्धव्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (तदात्मानः इति) हेअर्जुन सोपरब्रह्महींहैआत्माजिनोंका ऐसेविद्वान्पुरुष तदात्माकहेजावेहैं ॥ यातैं मायाकरिकै कल्पित सोबोद्धृबोद्धव्यभाव वास्तवअभेदका विरोधीहोवैनहींइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनविद्वान्पुरुषोंका (तदात्मा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नः) यहजोविशेषण आपनैं कथनकऱ्याहै सोविशेषण व्यर्थहींहै ॥ काहेतैं जोविशेषण तिनविद्वान्पुरुषोंकूं दूसरेअ ज्ञानीपुरुषोंतैंव्यावृत्तकरेहै ॥ सोईहींविशेषण तिनविद्वान्पुरुषोंका सार्थकहोवैहै ॥ सोव्यावर्त्तकपणा (तदात्मानः) इसविशेषणविषे घटतानहीं ॥ जिसकारणतैं अज्ञानीपुरुषभीवास्तवतैं परब्रह्मरूपहींहैं ॥ समाधान ॥ हेअर्जुन (त दात्मानः) याविशेषणका देहादिकोंविषेआत्मत्वबुद्धिकेनिवृत्तकरणेविषेहीं तात्पर्यहै ॥ ईहां यहअभिप्रायहै ॥ अज्ञा नीपुरुषतौं वास्तवतैंब्रह्मरूपहूएभी तापरब्रह्मविषे आत्मबुद्धिकरतेनहीं ॥ किंतु अनात्मरूपदेहादिकोंविषेहीं आ त्मअभिमानकरेहैं ॥ यातैं तेअज्ञानीपुरुष (तदात्मानः) यानामकरिकैकहेजावैनहीं ॥ और ज्ञानवान्पुरुषतौं तिनअ नात्मारूपदेहादिकोंविषे आत्मअभिमानकरतेनहीं ॥ किंतु तापरब्रह्मविषेहीं आत्मबुद्धिकरेहै ॥ यातैं तेज्ञानवान्पुरुष हीं (तदात्मानः) यानामकरिकैकहेजावेहैं ॥ यातैं (तदात्मानः) यहज्ञानवान्काविशेषण सार्थकहैइति ॥ शंका ॥ हे भगवन् लौकिकवैदिककर्मोंकेअनुष्ठानरूपविक्षेपकेविद्यमानहूए तिनदेहादिकोंकेअभिमानकोनिवृत्ति कैसेहोवैंगी किंतु नहींहोवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (तन्निष्ठाःइति) हेअर्जुन तिनसर्वकर्मोंकेअनुष्ठानरू पविक्षेपकोनिवृत्तिकरिकै तिसपरब्रह्मविषेहींहैस्थितिजिनोंकी तेपुरुष तन्निष्ठा कहेजावैंहैं ॥ अर्थात् जेपुरुष तिनस र्वकर्मोंकासंन्यासकरिकै तिसएकपरब्रह्मकेविचारपरायणहूएहैंइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिसतिसस्वर्गादिकफलविषय क रागकेविद्यमानहूए तिसतिसफलकेसाधनरूपकर्मोंका परित्याग कैसेहोवैंगा किंतु नहींहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनको शंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (तत्परायणाःइति) हेअर्जुन सोएकपरब्रह्महींहैप्राप्तहोणेयोग्यजिनोंकूं तेपुरुष तत्प

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रायण कहेजावेहैं ॥ अर्थात् जेपुरुष तिनस्वर्गादिकसर्वफलोंतैं विरक्तहैंइति ॥ ईहां (तद्बुद्धयः) इसपदकरिकै श्रीभगवान्नैं ब्रह्मसाक्षात्कारका कथनकऱ्याहै ॥ और (तदात्मानःतन्निष्ठाःतत्परायणाः) यातीनपदोंकरिकै श्रीभगवान्नैं ताब्रह्मसाक्षात्कारकेसाधन कथनकरेहैं ॥ तहां (तदात्मानः) इसपदकरिकै श्रीभगवान्नैं देहादिकअनात्मपदार्थोंविषेआत्मअभिमानरूप विपरीतभावनाकीनिवृत्तिहैफलजिसका ऐसाजो परिपक्वनिदिध्यासनहै सो कथनकऱ्याहै ॥ और (तन्निष्ठाः) यापदकरिकै श्रीभगवान्नैं सर्वकर्मोंकेसंन्यासपूर्वक प्रमाणप्रमेयगतअसंभावनाकीनिवृत्तिहैफलजिसका ऐसाजो परिपक्वश्रवणमननरूप वेदांतविचारहै सोकथनकऱ्याहै ॥ और (तत्परायणाः) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं इसलोकपरलोककेविषयसुखोंतैं तीव्रवैराग्य कथनकऱ्याहै ॥ तहां उत्तरउत्तरसाधनकूं पूर्वपूर्वसाधनकीहेतुताहै ॥ जैसे ब्रह्मसाक्षात्कारविषेतौं निदिध्यासनकूं हेतुताहै ॥ और निदिध्यासनविषे श्रवणमननरूपवेदांतविचारकूं हेतुताहै ॥ और तावेदांतविचारविषे वैराग्यकूं हेतुताहैइति ॥ इसप्रकार (तद्बुद्धयः तदात्मानः तन्निष्ठाः तत्परायणाः) याच्यारिविशेषणोंकरिकैयुक्त जेसंन्यासीहैं ॥ तेसंन्यासी पुनःशरीरकेसंबंधकाअभावरूप अपुनरावृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् विदेहमुक्तिकूं प्राप्तहोवैहैंइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् एकवार मुक्तहूएभी तिनविद्वान् पुरुषोंकूं पुनःशरीरकासंबंध किसवासतैं नहींहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (ज्ञाननिर्धूतकल्मषाःइति) मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकरिकै समूलतैं निवृत्तहोइगयेहैं पुनःदेहकेसंबंधकाकारणरूप पुण्यपापरूपकल्मष जिनोंके तिनपुरुषोंकानाम ज्ञाननिर्धूतकल्मषहै ॥ ऐसेविद्वान्पुरुष पुनःशरीरकूंप्राप्तहोवैंनहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ तात्पर्ययह ॥ आत्मसाक्षात्कारकरिकै तिनविद्वान्पुरुषोंके अनादिअज्ञानकीनिवृत्तिहोइजावैहै ॥ ताअज्ञानकेनिवृत्तहूए अज्ञानकेकार्यरूपपुण्यपापकर्मभी निवृत्तहोइजावैहै ॥ और तिनपुण्यपापकर्मोंकेवशतैंहीं इनजीवोंकूं पुनःदेहांतरकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिनपुण्यपापकर्मोंकेनाशहूए तिनविद्वान्पुरुषोंकूं पुनःदूसरेशरीरकीप्राप्ति किसप्रकार होवैंगी किंतु नहींहोवैंगो इति ॥ १७ ॥ * ॥ तहां (तद्बुद्धयस्तदात्मानः) इसपूर्वश्लोकविषे देहके पाततैंअनंतर ताआत्मज्ञानका विदेहकैवल्यरूपफल कथनकऱ्या ॥ अब प्रारब्धकर्मकेवशतैं तादेहकेविद्यमानहूए भी ताअज्ञानके जीवन्मुक्तिरूपफलकूं श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

विद्याविनयसंपन्नेब्राह्मणेगविहस्तिनि ॥ शुनिचैवश्वपाकेचपंडिताःसमदर्शिनः ॥ १८॥

विद्याविनयसंपन्ने । ब्राह्मणे । गवि । हस्तिनि । शुनि । च । एव । श्वपाके । च । पंडिताः । समदर्शिनः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन ज्ञानवान्पुरुष विद्याविनययुक्त ब्राह्मणविषे तथागौविषे तथाहस्तिविषे तथा श्वानविषे तथा चांडालविषे समदर्शी हीं होवैहैं ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वेदकेअर्थकासम्यक्ज्ञानरूपजाविद्याहै ॥ अथवा अद्वितीयब्रह्मकाप्रतिपादनकरणेहारी ब्रह्मविद्यारूप जाविद्याहै ॥ और तिनविद्यादिकोंकूंप्राप्तहोइकैभी निरहंकारतारूपजो विनयहै ॥ ताविद्या विनय दोनोंकरिकै संपन्न जेसर्वतैं उत्तम सात्विकब्राह्मणहैं ॥ और तिनब्राह्मणोंकीअपेक्षाकरिकैमध्यम तथासंस्कारोंतैंरहित ऐसीजो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

राजसगौहै ॥ तथा अत्यंततमोगुणयुक्त तथासर्वतैंअधम ऐसेजेहस्ति श्वान चांडालहैं ॥ अर्थात् यथाक्रमतैं उत्तम मध्यम अधमरूप जितनैंको सात्विक राजस तामस प्राणीहैं ॥ तिनसर्वऊचनीचप्राणीयोंविषे तेज्ञानवान्पुरुष समद शींहीं होवैहैं ॥ अर्थात् तिनसत्वादिकगुणोंकरिकै तथातिनगुणोंजन्यसंस्कारोंकरिकै नहींस्पर्शकऱ्याहूआजोपरब्रह्म है ॥ तापरब्रह्मकानाम समहै ॥ तापरब्रह्मकूंहीं तेविद्वान्पुरुष सर्वत्रदेखेहैं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरी है ॥ तहांश्लोक ॥ (अस्तिभातिप्रियंरूपंनामचेत्यंशपंचकं ॥ आद्यंत्रयंब्रह्मरूपंजगद्रूपंततोद्वयं) ॥ अर्थयह ॥ अस्ति भाति प्रिय नाम रूप यहपंचअंशहीं सर्वत्रव्यापकहैं ॥ तहांआद्यकेतीन अंशतौं ब्रह्मरूपहैं ॥ और अंतकेदोअंश जगत्रूपहैंइति ॥ इसप्रकार तेविद्वान्पुरुष सर्वत्र अस्तिभातिप्रियरूपब्रह्मकूंहींदेखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अत्यं तपवित्रगंगाजलविषे तथातलावकेजलविषे अथाअत्यंतनिषिद्ध मदिराविषे तथाअत्यंतमलिन मूत्रविषे प्रतिबिंब भावकूंप्राप्तभयाजो सूर्यहै ॥ तिससूर्यकूं तिनगंगाजलादिकोंके गुणदोषोंकासंबंध होवैनहीं ॥ तैसे आपणेचिदाभास द्वारा सर्वऊचनीचउपाधियोंविषे प्रतिबिंबभावकूंप्राप्तभयाजोब्रह्महै ॥ ताब्रह्मकूं तिनऊचनीचउपाधियोंके गुणदो षोंकासंबंधहोवैनहीं ॥ इसप्रकारका निरंतरविचारकरतेहूए तेब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष सर्वत्रसमदृष्टिकरिकै रागद्वेषतैं रहितहूए परमानंदकीस्फूर्तिकरिकै जीवन्मुक्तिकेसुखकूंहीं सर्वदा अनुभवकरेहैं इति ॥ १८ ॥ * ॥ शंका ॥ हे भगवन् परस्पर विषमस्वभाववाले जेसात्विक राजस तामस प्राणीहैं ॥ तिनविषमस्वभाववालेप्राणीयोंविषे समत्व बुद्धिकरणेका धर्मशास्त्रविषेनिषेधकरयाहै ॥ तहांगौतमस्मृति ॥ (तस्यान्नमभोज्यंभवतिसमासमाभ्यांविषमसमेपूजा

528

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तः इति ॥) अर्थयह ॥ च्यारिवेदोंकेज्ञातारूपकरिकैतुल्य तथासदाचारविषेप्रवृत्तिरूपताकरिकैतुल्य जेदोब्राह्मणहैं ॥ तिनदोनोंब्राह्मणोंविषे एकब्राह्मणका जोपुरुष वस्त्र अलंकार अन्न आदिकोंकेदानपूर्वक जिसप्रकारकापूजनकरेहै ॥ तिसीप्रकारकापूजन तादूसरेब्राह्मणकाकरतानहीं ॥ किंतु तिसब्राह्मणका तिसतैंन्यून पूजनकरेहै ॥ और एकब्राह्मण तौं च्यारिवेदोंकावक्ताहै तथासदाचारकरिकैयुक्तहै ॥ और दूसराब्राह्मणतौं तिसतैंअल्पवेदका वक्ताहै ॥ तथासदाचारतैंरहितहैं ॥ तिनअधिकन्यूनदोनोंब्राह्मणोंका जोपुरुष तिनवस्त्रअलंकारअन्नादिकपदार्थोंकेदानपूर्वक समानहीं पूजनकरेहै ॥ तिसपूजनकरणेहारेपुरुषकाअन्न शिष्टपुरुषोंनैं भोजनकरणानहींइति ॥ किंवा समपुरुषोंकोविषमपूजा करणेहारेपुरुषकूं तथाविषमपुरुषोंकीसमानपूजाकरणेहारेपुरुषकूं धर्मशास्त्रनैं दोषकोभीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ तहां धर्मशास्त्रं ॥ (पूजयिताप्रतिपत्तिविशेषमकुर्वन् धर्माद्धनाच्चहीयतेइति) ॥ अर्थयह ॥ पूजनकरणेहारापुरुष समविषमभावकेविचारकूंनहींकरताहूआ धर्मतैं तथाधनतैं रहितहोवैहैइति ॥ यद्यपि ब्राह्मण गौ हस्ति श्वान चांडाल इत्यादिक सर्वऊचनीचपदार्थोंविषे समबुद्धिकरणेहारे जेब्रह्मवेत्तासंन्यासीहैं ॥ तेसंन्यासी धनकेसंग्रहतैं तथाअन्नकेसंग्रहतैं रहितहैं ॥ यातैं तिनसंन्यासीयोंविषे अभोज्यान्नत्व तथाधनहीनत्व स्वतः हींविद्यमानहै ॥ तथापि तासमबुद्धितैं तिन संन्यासीयोंविषेभी धर्मकीहानिरूपदोष अवश्यकरिकैहोवैंगा ॥ और वास्तवतैंविचारकरिकैदेखीयेतौं (तस्यान्नमभोज्यं) इसवचननैं जो अभोज्यान्नत्व कथनकरयाहै सोअभोज्यान्नत्व तिनसमबुद्धिवालेपुरुषोंविषे अशुचिपणेकरिकै पापकेउत्पत्तिकाहीं उपलक्षकहै ॥ सापापकीउत्पत्ति तिनसंन्यासीयोंविषेभी संभवहोइसकेहै ॥ और तपस्वीपुरुषों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का सोतपहींधनहोवैहै ॥ यातैं तिसतपरूपधनकीहानिभी तिनसंन्यासीयोंविषे संभवहोइसकेहै ॥ यातैं सर्वत्रसमद र्शीपंडितपुरुष जीवन्मुक्तहींहै यहआपकावचन असंगतहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

इहैवतैर्जितःसर्गोयेषांसाम्येस्थितंमनः॥निर्दोषंहिसमंब्रह्मतस्माद्ब्रह्मणितेस्थिताः॥१९

इह[६]।एव[७]।तैः[९]।जितः[९]।सर्गः[८]।येषां[१]।साम्ये[३]।स्थितं[४]।मनः[२]।निर्दोषं[१२]।हि[१०]।समं[१३]।ब्रह्म[११]।तस्मात्[१४]।ब्रह्मणि[१६]।ते[१५]।स्थिताः[१७]।इ०प०

हेअर्जुन जिन[१]पुरुषोंका मन[२] ब्रह्म[३]भावविषे स्थित[४]हूआहै तिन[५]पुरुषोंनैं इस[६]जीवतदशाविषे हीं[७] यह[८]द्वैतप्रपंच अतिक्रमणक[९]र्‍याहै जिस[१०]कारणतैं सो[११]ब्रह्म निर्दोष[१२]है तथा[१३]समहै तिसकारण[१४]तैं तेसम[१५]दर्शीपुरुष ता[१६]ब्रह्मविषेहीं स्थित[१७]हैं।१९।इतिपदार्थः

॥टीका॥ हेअर्जुन परस्पर विषमस्वभाववालेभी सर्वभूतोंविषे जोब्रह्म अस्ति भाति प्रिय रूपकरिकै तुल्यहींवर्त्तमा नहै ॥ ऐसेब्रह्मकेसमभावविषे जिनविद्वान्पुरुषोंका शुद्धमन निश्चलहूआहै ॥ ऐसे समदर्शीपंडितपुरुषोंनैं इसजी वतदशाविषेहीं यहसर्व द्वैतप्रपंच अतिक्रमणकर्‍याहै ॥ अर्थात् इससर्वद्वैतप्रपंचका बाधकर्‍याहै॥ तात्पर्ययह ॥ ज बी जीवतदशाविषेहीं तिनविद्वान्पुरुषोंनैं यहद्वैतप्रपंच अतिक्रमणकर्‍याहै॥ तबी इसशरीरकेपाततैंअनंतर तेविद्वान्पुरु ष इसद्वैतप्रपंचका अतिक्रमणकरेहैं याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ जिसकारणतैं सोपरब्रह्म निर्दोषहै तथासमहै ॥ अर्थात् सोपरब्रह्म जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहै तथाकूटस्थ नित्य एकरस अद्वितीयरूपहै ॥ तिसकारणतैं तेसमदर्शीविद्वान्पुरुष ताअद्वितीयब्रह्मविषेहीं अभेदरूपकरिकैस्थितहैंइति ॥ ईहां श्रीभगवान्का यहअभिप्रायहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ वस्तुविषे जोदुष्टपणाहोवैहै ॥ सोदुष्टपणा दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं स्वभावतैंअदुष्टवस्तुकूंभी किसीदुष्टवस्तुक संबंधतैं दुष्टपणाहोवैहै ॥ जैसे स्वभावतैं अदुष्ट जोगंगाजलहै ॥ तागंगाजलकूं मूत्रकोगर्त्तविषे गावणेतैं दुष्टपणा होवैहै ॥ और दूसरा वस्तुविषे स्वभावतैंहीं दुष्टपणा होवैहै ॥ जैसे मूत्रादिकमलिनपदार्थोंविषे स्वभावतैंहीं दुष्टपणा होवैहै ॥ तहां स्वभावतैं दोषवाले जेश्वानचांडालादिकहैं ॥ तिनश्वानादिकोंविषे स्पर्शकूंकरिकैस्थितहूआ जोब्रह्महै ॥ सोब्रह्म तिनश्वानादिकोंकेदोषोंकरिकै अवश्य दुष्टताकूंप्राप्तहोवैंगा ॥ इसप्रकारतैं विचारहोनमूढपुरुषोंनैं ताअद्वितीयब्रह्मविषे सोदुष्टपणा संभावनाकऱ्याहूआभी ॥ सोब्रह्म तिनसर्वदोषोंकेसंबंधतैंरहितहींहै ॥ जिसकारणतैं सोब्रह्म आकाशकीन्यांई असंगहींहै ॥ ताअसंगब्रह्मकूं किसोभीदोषका स्पर्शहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (असंगोह्ययंपुरुषः इति ॥ असंगोनहिसज्जतेइति ॥ सूर्योयथासर्वलोकस्यचक्षुर्नलिप्यतेचाक्षुषैर्बाह्यदोषैः ॥ एकस्तथासर्वभूतांतरात्मान लिप्यतेलोकदुःखेनबाह्यइति ॥) अर्थयह ॥ यहआत्मादेव असंगहैइति ॥ और असंगहोणेतैं यहआत्मादेव किसीभोपदार्थकेसाथि संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ और जैसे सर्वलोकोंकाप्रकाशकसूर्यभगवान् प्रकाश्यरूपघटादिकपदार्थोंकेदोषोंकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ तैसे सर्वभूतोंकाअंतरआत्मारूप एकअद्वितीयब्रह्मभी देहादिकोंकेदुःखादिकधर्मोंकरिकै लिपायमानहोवैनहींइति ॥ यातैं दुष्टउपाधियोंकेसंबंधतैं आत्माविषे दुष्टतासंभवैनहीं ॥ तथा कामादिकधर्मवत्ताकरिकै ताआत्मादेवविषे स्वतःभी सोदुष्टपणासंभवतानहीं ॥ काहेतैं तेकामादिक जोआत्माकेधर्महोते ॥ तौं तिनकामादिकोंकरिकै आत्माविषे स्वतःहीं सोदुष्टपणाहोता ॥ परंतु तेकामादिक आत्माकेधर्महैंनहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ किंतु (कामःसंकल्पोविचिकित्सा) इसश्रुतिविषे तेकामादिकसर्व अंतःकरणकेहींधर्म कथनकरेहैं ॥ आत्माका कोईभी धर्म कथनकऱ्यानहीं ॥ किंतु (साक्षोचेताकेवलोनिर्गुणश्च) यहश्रुति आत्माकूं सर्वधर्मोतैंरहित निर्गुणकहेहै ॥ इसप्रकार सर्वदोषोंतैंरहितजोब्रह्महै ॥ ताब्रह्मकूंहीं आपणाआत्मारूपकरिकैजानणेहारेजेजीवन्मुक्तसंन्यासीहैं ॥ तिनजीवन्मुक्तसंन्यासीयोंकूं पापकोउत्पत्ति तथातपरूपधनकीहानि तथाधर्मकीहानि इत्यादिकदोषोंकरिकैदुष्टकहणा अत्यंत विरुद्धहै ॥ और (समासमाभ्यांविषमसमेपूजातः) यहजोपूर्व स्मृतिवचनकथनकऱ्याथा ॥ सोस्मृतिवचनतौं अज्ञानो गृहस्थविषयकहींहै ॥ ब्रह्मवेत्तासंन्यासीविषयक सोस्मृतिवचननहींहै ॥ काहेतैं तास्मृतिविषे (तस्यान्नमभोज्यं) याप्रकारका प्रथम उपक्रमकऱ्याहै ॥ तिसतैं अनंतर मध्यविषे (समासमाभ्यांविषमसमेपूजातः) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ तिसतैंअनंतर (पूजयित्वाप्राप्तपत्तिविशेषमकुर्वन्धनाद्धर्माच्चहीयते) याप्रकारका उपसंहारकऱ्याहै ॥ ताउपक्रमउपसंहारवचनतैं अविद्वान्गृहस्थहीं प्रतीतहोवैहै ॥ काहेतैं जोवस्तु जहां प्राप्तहोवैहै ॥ तिसवस्तुकाहीं तहां निषेधहोवैहै अप्राप्तवस्तुका निषेधहोतानहीं ॥ और अन्नकासंग्रह तथाधनकासंग्रह गृहस्थपुरुषकूंहीं प्राप्तहै ॥ संन्यासीकूं ताअन्नकासंग्रह तथाधनकासंग्रह प्राप्तहैनहीं ॥ यातैं समोंकी विषमपूजाकरणेहारेपुरुषका तथाविषमकी समपूजाकरणेहारेपुरुषका अन्न भोजनकरणेयोग्यनहींहै तथाइसप्रकारकीपूजाकरणेहारापुरुष धनतैं तथाधर्मतैं रहितहोवैहै याप्रकारकानिषेध ताअविद्वान्गृहस्थविषेहींघटेहै ॥ ताब्रह्मवेत्तासंन्यासीविषे सोनिषेध घटतानहीं ॥ और (अन्नमभोज्यं) इसवचनका मुख्यअर्थछोडिके तावचनकरिकै पापकीउत्पत्तिका ग्रहणकरणा तथाधनशब्दका सुवर्णादिरूपमुख्य

॥२५९॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अर्थछोडिकै ताधनशब्दकरिकै तपक ग्रहणकरणा यहभी अत्यंतअसंगतहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे सुवर्णम यजादेवताकीप्रतिमाहै ॥ तथा सुवर्गमयजोताप्रतिमाका सिंघासनहै ॥ तिनदोनोंविषे सुवर्णद्रष्टापुरुषतौं समानता कूंहीं देखेहै ॥ और तासुवर्णदृष्टितैंरहित केवलआकारदृष्टिवाला जोपूजाकरणेहारापुरुषहै ॥ सोपूजकपुरुषतौं तिन दानोंविषे महान् विषमताकूंहींदेखेहै ॥ तैसे सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषतौं तिन ब्राह्मण गौ हस्ति श्वान चांडाल आ दिकपदार्थोंविषे एकपरिपूर्णब्रह्मकूंहीं देखेहै ॥ और अज्ञानीपुरुषतौं तिनपदार्थोंविषे महान् विषमताकूंदेखेहै ॥ या तैं सापूजास्मृततौं भ्रांतिकृतन्यूनअधिकताकूं विषयकरेहै ॥ और (विद्याविनयसंपन्ने) यहभगवन्कावचनतौं परमार्थवस्तुकूं विषयकरेहै ॥ यातैं तास्मृतिवचनका ईहां विरोधहोवैनहीं इति ॥ १९ ॥ ※ ॥ जिसकारण तैं सोपरब्रह्म निर्दोषहै तथासर्वत्रसमहै ॥ तिसकारणतैं तानिर्दोषसमब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजानताहूआ सोब्र ह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष आपभी रागद्वेषादिकदोषोंतैंरहितहूआ स्थितहोवैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै

नप्रहृष्येत्प्रियंप्राप्यनोद्विजेत्प्राप्यचाप्रियं ॥ स्थिरबुद्धिरसंमूढोब्रह्मविद्ब्रह्मणिस्थितः२०

न[3] । प्रहृष्येत्[4] । प्रियं[5] । प्राप्य[2] । न[1] । उद्विजेत्[7] । प्राप्य[6] । च[8] । अप्रियं[9] । स्थिरबुद्धिः[10] । असंमूढः[11] । ब्रह्मवित्[12] । ब्रह्मणि[13] । स्थितः[14] । इतिप०

हेअर्जुन सोविद्वान्पुरुष प्रियवस्तुकूं प्राप्तहोइकै नहीं हर्षकूंप्राप्तहोवैहै तथा अप्रियवस्तुकूं प्राप्तहोइकै नहीं उद्वेगकूंप्रा प्तहोवैहै जिसकारणतैं सोविद्वान् स्थिरबुद्धिहै तथासंमोहतैंरहितहै तथाब्रह्मवित्है तथाब्रह्मविषेहीं स्थितहै॥२९इतिप०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सो समदर्शी विद्वान्संन्यासी सुखकेकरणेहारेप्रियपदार्थकूंप्राप्तहोइकै हर्षकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तथा दुःखकेकरणेहारेअप्रियपदार्थकूं प्राप्तहोइकै विषादकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ किंतु तिनदोनोंकूं आपणेप्रारब्धकर्मकाफलरूपजानिकै सर्वदा एकरसहीं रहेहै ॥ यहसर्वअर्थ (दुःखेष्वनुद्विग्नमनाःसुखेषुविगतस्पृहः) इसश्लोकविषे पूर्व विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ और प्रियअप्रियपदार्थोंकूंप्राप्तहोइकैभी हर्षविषादतैंरहितहोणा इत्यादिक जो जीवन्मुक्तपुरुषोंका स्वाभाविकचरितहै ॥ तास्वाभाविकचरितकूं मुमुक्षुजननैं प्रयत्नपूर्वक संपादनकरणा ॥ इसअर्थकेबोधनकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं (नप्रहृष्येत् नोद्विजेत्) यादोनोंपदोंविषे विधिकावाचक लिङ् प्रत्ययकथनकरयाहै ॥ कोई जीवन्मुक्तपुरुषऊपरि सोविधिवचन नहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सर्वत्र अद्वितीयआत्माकूंदेखणेहाराजोविद्वान्पुरुषहै ॥ तिसविद्वान्पुरुषकूं आपणेतैंभिन्नरूपकरिकै किसीभीप्रियअप्रियपदार्थकीप्राप्ति संभवतीनहीं ॥ और लोकविषे आपणेतैंभिन्नकरिकै जान्याहूआपदार्थहीं हर्षविषादकाहेतुहोवैहै आपणाआत्मा किसीकेहर्षविषादकाहेतुहोवै नहीं ॥ याकारणतैं ताप्रियअप्रियपदार्थकीप्राप्तिकरिकै ताविद्वान्पुरुषकूं हर्षविषादकीप्राप्ति संभवतीनहींइति ॥ अब जिसअद्वितीयआत्माकेज्ञानकरिकै ताविद्वान्पुरुषकूं हर्षविषादकीप्राप्ति नहींहोवैहै ॥ ताआत्मज्ञानका साधनपूर्वक निरूपणकरेहै (स्थिरबुद्धिरसंमूढोब्रह्मविद्ब्रह्मणिस्थितःइति) स्थिरा कहिये संन्यासपूर्वक वेदांतवाक्योंकेविचारकोपरिपक्वताकरिकै संशयतैंरहितहूईहै ब्रह्मविषेबुद्धिजिसकी ताकानाम स्थिरबुद्धिहै ॥ अर्थात् श्रवणकाफलरू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प जा प्रमाणगत असंभावनाकीनिवृत्तिहै तथामनकाफलरूप जा प्रमेयगतअसंभावनाकीनिवृत्तिहै तेदोनोंफल जिसपुरुषकूं प्राप्तहूएहैंइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताप्रमाणगतअसंभावनातैं तथाप्रमेयगतअसंभावनातैं रहितजोपुरुषहै ॥ तिसपुरुषकूंभी विपरीतभावनारूपप्रतिबंधकेवशतैं आत्माकासाक्षात्कार नहींहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंका केहूए श्रीभगवान् निदिध्यासनकूंकथनकरेहै (असंमूढइति) तहां अनात्माकारविजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित जो आत्माकार सजातोयवृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकानाम निदिध्यासनहै ॥ तानिदिध्यासनकीपरिपक्वताकरिकै विपरीतभावनारूप संमोहतैंरहित जोपुरुषहै ताकानाम असंमूढहै ॥ ईहां वेदांतशास्त्र जीवब्रह्मकेअभेदकाप्रतिपादकहै अथवा भेदकाप्रतिपादकहै याप्रकारकेसंशयकानाम प्रमाणगतअसंभावनाहै ॥ और यहजीवात्मा ब्रह्मरूपहै अथवानहींहै इत्यादिकसंशयोंकानाम प्रमेयगतअसंभावनाहै ॥ और देहादिकोंविषेआत्मत्वबुद्धिकानाम विपरीतभावनाहै ॥ तेअसंभावनाविपरीतभावना आत्मज्ञानके प्रतिबंधकहोवैंहैं ॥ ताअसंभावनाविपरीतभावनाकी जबी श्रवण मननानिदिध्यासनतैं निवृत्तिहोवैहै ॥ तबी सर्वप्रतिबंधोंतैंरहितहूआ सोपुरुष ब्रह्मवित्होवैहै ॥ अर्थात् मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार ब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारकरेहै ॥ तिसतैंअनंतर समाधिकोपरिपक्वताकरिकै सोविद्वान् पुरुष तानिर्दोषसमब्रह्मविषेहीं अभेदरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ ताब्रह्मतैंभिन्न दूसरेकिसीपदार्थविषेस्थितहोवैनहीं ॥ इसप्रकार ब्रह्मविषेस्थितहूआ सोविद्वान्पुरुष जीवन्मुक्त कह्याजावैहै तथास्थितप्रज्ञ कह्याजावैहै ॥ ऐसेजीवन्मुक्तपुरुषविषे द्वैतप्रपंचकादर्शन हैनहीं यातैं ताजीवन्मुक्तपुरुषकूं प्रियअप्रियवस्तुकोप्राप्तिहूएभो जोहर्षविषादकाअभा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व कथनकऱ्याहै सोउचितहींहै और साधकमुमुक्षुजनौंतौं ताद्वैतदर्शनकेविद्यमानहूएभो तिनविषयोंविषेदोषदृष्टि करिकै सोहर्षविषाद प्रयत्नकरिकैपरित्यागकरणा इति ॥ २० ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् बाह्यशब्दादिकविषयोंविषेजाप्रीतिहै ॥ साप्रीति पूर्वअनेकजन्मोंविषेअनुभूतहोणेतैं अत्यंतप्रबलहै ॥ यातैं तिनबाह्यविषयोंविषे आसक्तहूआहैचित्तजिसका ऐसेपुरुषकी सर्वदृष्टसुखोंतैंरहित अलौकिकब्रह्मविषे स्थिति किसप्रकारहोवैंगी ॥ किंतु नहींहोवैंगी ॥ और जोआप यहकह्यो ॥ सोब्रह्म परमआनंदरूपहै ॥ यातैं बाह्यविषयोंकेप्रीतिकापरित्यागकरिकै ताब्रह्मविषे तिसपुरुषकीस्थिति संभवहोइसकेहैइति ॥ सोयहआपका कहणाभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं सोब्रह्मकाआनंद अनुभवहोतानहीं ॥ यातैं ताब्रह्मानंदकूं चित्तकेस्थितिकीहेतुतासंभवतीनहीं ॥ अनुभवकऱ्याहूआ आनंदहीं चित्तकेस्थितिकाहेतुहोवैहै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्माविंदत्यात्मनियत्सुखं ॥ सब्रह्मयोगयुक्तात्मासुखमक्षय्यमश्नुते ॥

बाह्यस्पर्शेषु । असक्तात्मा । विंदति । आ मनियत् । सुखं सः ब्रह्मयोगयुक्तात्मा । सुखं अक्षय्यं अश्नुते ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन बाह्यशब्दादिकविषयोंविषे आसक्तितैंरहितपुरुष अंतःकरणविषेस्थित जो सुखहै तिसकूं प्राप्तहोवैहै तथा सोतृष्णारहित ब्रह्मयोगविषेयुक्तचित्तवाला नाशतैंरहित सुखकूंभी प्राप्तहोवैहै ॥२१॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकैग्रहणकरणेयोग्य जेशब्दादिकविषयहैं ॥ तेशब्दादिकविषय अनात्मवस्तुकाधर्महोणेतैं बाह्यकहेजावेहैं ॥ ऐसेबाह्यशब्दादिकविषयोंविषे नहींआसक्तिकूंप्राप्तभयाहैचित्तजिसका ऐसाजोनिष्कामपुरुषहै ॥ सोनिष्कामपुरुष तृष्णातैंरहितहोणेतैं अत्यंतविरक्तहूआ आपणेअंतःकरणविषेस्थित जोबाह्यविषयोंकीअपेक्षातैंरहित उपशमरूपसुखहै तिससुखकूंहीं निर्मलअंतःकरणकीवृत्तिकरिकै अनुभवकरेहै ॥ यहवार्त्ता भारतविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (यच्चकामसुखंलोकेयच्चदिव्यंमहत्सुखं ॥ तृष्णाक्षयसुखस्यैतेनार्हतःषोडशींकलां ॥) अर्थयह ॥ इसलोकविषे जेकामजन्यसुखहैं ॥ तथा स्वर्गादिकलोकोंविषे जेमहान् दिव्यसुखहैं ॥ तेसर्वसुख तृष्णाकोनिवृत्तिजन्यसुखके षोडशवेंभागकेतुल्यभीनहींहोवैहैंइति ॥ अथवा (आत्मनि) यापदकरिकै प्रत्यक्आत्माका ग्रहणकरणा ॥ यापक्षविषे तावचनका यहअर्थकरणा ॥ त्वंपदार्थरूप प्रत्यक्आत्माविषेविद्यमानजोस्वरूपभूतसुखहै जोसुख सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वप्राणीयोंकूं अनुभवहोवैहै ॥ तथा जोसुख बाह्यविषयोंकोआसक्तिरूपप्रतिबंधकेवशतैं प्रतीतहोतानहीं ॥ तिसीस्वरूपभूतसुखकूं सोविद्वान्पुरुष बाह्यविषयोंकीआसक्तिकेअभावतैं प्राप्तहोवैहैइति ॥ किंवा सोविद्वान्पुरुष केवल त्वंपदार्थआत्माकेसुखकूंहीं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ किंतु तत्पदार्थकोएकताकेअनुभवकरिकै पूर्णसुखकूंभी अनुभवकरेहै ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कहेहै (सब्रह्मयोगयुक्तात्मासुखमक्षय्यमश्नुतेइति) परमात्मारूपब्रह्मविषे जोसमाधिरूपयोगहै ताकानाम ब्रह्मयोगहै ॥ ताब्रह्मयोगकरिकै युक्तहै आत्मा क्या अंतःकरण जिसका अर्थात् ताब्रह्मयोगविषे संलग्नहैअंतःकरणजिसका ताकानाम ब्रह्मयोगयुक्तात्माहै ॥ अथवा ब्रह्मशब्दकरिकै तत्प

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दार्थका ग्रहणकरणा ॥ तिसतत्पदार्थरूपब्रह्मविषे महावाक्यार्थकाअनुभवरूपसमाधियोगकरिकै युक्तहूआहै क्या एकताकूंप्राप्तहूआहै त्वंपदार्थरूपआत्माजिसका ताकानाम ब्रह्मयोगयुक्तात्माहै ॥ ऐसाब्रह्मयोगयुक्तात्माविद्वान्पुरुष उत्पत्तिनाशतैंरहित स्वस्वरूपभूत नित्यसुखकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् सोविद्वान्पुरुष सर्वदा सुखानुभवरूपहीं होवैहै ॥ यद्यप सोआत्मास्वरूपनित्यसुख वास्तवतैं इसपुरुषकूं तत्त्वसाक्षात्कारतैंपूर्वभी प्राप्तहीहै ॥ यातैं ताकीप्राप्तिकहणासंभवतोनहीं ॥ पूर्वअप्राप्तवस्तुकीहीं प्राप्ति होवैहै ॥ तथापि तत्त्वसाक्षात्कारतैंपूर्व सोनित्यसुख अविद्याकरिकैआवृतहै ॥ यहहीं तानित्यसुखकीअप्राप्तिहै ॥ और तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै ताअविद्याकोनिवृत्तिहोइजावैहै ॥ यहहीं तासुखकी प्राप्तिहै ॥ अर्थात् तानित्यसुखकाजे अज्ञानहै सोईहीं तानित्यसुखकीअप्राप्तिहै ॥ और तानित्यसुखकाजोअपरोक्षज्ञानहै सोईहीं तानित्यसुखकीप्राप्तिहैइति ॥ यातैं प्रत्यक्आत्माविषेअभेदरूपकरिकैस्थितजोनित्यसुखहै ॥ तानित्यसुखकेअनुभवकीइच्छाकरताहूआ यहअधिकारीपुरुष महान्नरकोंकीप्राप्तिकरणेहारी तथाक्षणिक जाबाह्यविषयोंकीप्रीतिहै ताप्रीतितैं आपणेइंद्रियोंकूंनिवृत्तकरै ॥ ताकरिकैहीं इसपुरुषको प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मविषे स्थितिहोवैहै इति ॥ २१ ॥※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् बाह्यविषयोंकेप्रीतिकी जबी निवृत्तिहावै तबी आत्माकेनित्यसुखका अनुभवहोवै ॥ और आत्माकेनित्यसुखका जबी अनुभवहोवै तबी ताअनुभवकेप्रसादतैं बाह्यविषयोंकेप्रीतिकीनिवृत्तिहोवैहै इसप्रकार नित्यसुखकाअनुभव तथाबाह्यविषयोंकेप्रीतिकोनिवृत्ति इनदोनोंकी अन्योअन्यआश्रयता प्राप्तहोवैहै ॥ और जिनदोपदार्थोंविषे अन्योअन्यआश्रयता प्राप्तहोवैहै ॥ तिनपदार्थोंविषे एकभी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पदार्थ सिद्धहोतानहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् विषयोंविषेदोषदर्शनकेअभ्यासकरिकैहीं तिनविषयों केप्रीतिकीनिवृत्तिहोवैहै यातैं ताअन्योअन्यआश्रयतादोषकीप्राप्तिहोवैनहीं याप्रकारकाउत्तर कथनकरेहै ॥

येहिसंस्पर्शजाभोगादुःखयोनयएवते ॥ आद्यंतवंतःकौंतेयनतेषुरमतेबुधः ॥ २२ ॥

ये[३] । हि[२] । संस्पर्शजाः[४] । भोगाः[५] । दुःखयोनयः[७] । एव[८] । ते[६] । आद्यंतवंतः[९] । कौंतेय[१] । न[१२] । तेषु[११] । रमते[१३] । बुधः[१०] ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन[१] जिसकारण[२]तैं जितनैंकी[३] विषय[४]इंद्रियकेसंबंधजन्य भोग[५]हैं तेसर्वभोग[६] दुःख[७]केहेतु हीं[८]है तथा आदिअंतवाले[९]है तिसकारणतैं विवेकीपुरुष[१०] तिन[११]भोगोंविषे नहीं[१२] प्रीतिकरे[१३]है ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शब्दादिकविषयोंकेसाथि जेश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेसंबंधहैं तिनोंकानाम संस्पर्शहै ॥ तासंस्पर्शक रिकैजन्य जितनैंकी अत्यंतक्षुद्रलेशमात्रसुखकेअनुभवरूप भोगहै ॥ तेसर्वभोग इसलोकविषे तथापरलोकविषे रा गद्वेषकरिकैव्याप्तहोणेतैं दुःखकेहींहेतुहैं ॥ अर्थात् इसमनुष्यलोकतैंआदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनैंकीभोगहैं तेस र्वभोग तीनकालविषे दुःखकेहींहेतुहैं ॥ यहवार्त्ता विष्णुपुराणविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (यावतःकुरुतेजंतुः संबंधान्मनसःप्रियान् ॥ तावंतोऽस्यनिखन्यंतेहृदयेशोकशंकवः ॥) अर्थयह ॥ यहजीव जितनैंकी मनके प्रियसंबंधोंकूं करेहै ॥ तितनैंहीं शोकरूपीशंकु इसपुरुषकेहृदयविषे छिद्रकरेहैंइति ॥ इसप्रकारके तेभोगभी कोईस्थिरहैंनहीं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किंतु आदिअंतवालेहैं ॥ ईहां विषयइंद्रियकेसंयोगकानाम आदिहै ॥ और ताकेवियोगकानाम अंतहै ॥ तेआदिअंत दोनों जिनोंविषेविद्यमानहोवैं तिनोंकानाम आदिअंतवतहै ॥ अर्थात् तेभोग ताआदिकालविषेभीनहींहैं तथाअंत कालविषेभीनहींहैं ॥ किंतु स्वप्नपदार्थोंकीन्यांई तेभोग केवल मध्यकालविषेहीं प्रतीतहोवैहैं ॥ यातैं तेभोग स्वप्नप दार्थोंकीन्यांई क्षणिकहैं तथामिथ्यारूपहै ॥ यहवार्त्ता श्रीगौडपादाचार्यनैंभी कथनकरीहै ॥ (आदावंतेचयन्नास्तिवर्त्त मानेपितत्तथाइति ॥) अर्थयह ॥ जोपदार्थ आदिकालविषेभी नहींहोवैहै तथाअंतकालविषेभी नहींहोवैहै ॥ सोपदा र्थ वर्तमान कालविषेभी वास्तवतैंनहींहोवैहै ॥ जैसे स्वप्नकेपदार्थहैंइति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं यहविषयजन्यभोग इसप्रकारकेहैं ॥ तिसकारणतैं विवेकीपुरुष तिनभोगोंविषे नहींरमणकरेहै ॥ अर्थात् तिन भोगोंकूं प्रतिकूलजानिकै सोविवेकीपुरुष तिनभोगोंविषे प्रीतिकूं अनुभवकरैनहींइति ॥ यहवार्त्ता पतंजलिभगवान्नैंभी योगसूत्रोंविषेकथनक रीहैं ॥ तहांसूत्रं ॥ (परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्च दुःखमेवसर्वंविवेकिनःइति ॥) अर्थयह ॥ भलीप्रका रतैंनिश्चयकऱ्याहै क्लेशादिकोंकास्वरूपजिसनैं एसाजोविवेकीपुरुषहै ॥ तिसविवेकीपुरुषकूं इसलोकके तथापरलोक के सर्वविषयसुख दुःखरूपहींप्रतीतहोवैहैं ॥ अविवेकीपुरुषकूं तेविषयसुख दुःखरूपप्रतीतहोवैनहीं ॥ याकारणतैंहीं शास्त्रविषे ताविवेकीपुरुषकूं अक्षिगात्रकेतुल्य कथनकऱ्याहै ॥ जैसे ऊर्णनाभिजंतुकृतजोतंतुहै ॥ सोतंतु अत्यंतसू क्ष्महोवेहै तथाअत्यंतकोमलहोवैहै ॥ ऐसातंतुभी नेत्रविषेपड्याहूआ आपणस्पर्शकरिकै तानेत्रकूं दुःखकीहींप्रा प्तिकरेहै ॥ तानेत्रतैंभिन्न दूसरेमुखनासिकादिकअंगोविषेपड्याहूआ सोतंतु दुःखकाप्राप्तिकरैनहीं ॥ तैसे मधु विष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दोनोंकरिकैमिलितअन्नभोजनकीन्यांई तीनकालोंविषे क्लेशकरिकैव्याप्त जेविषयभोगकेसाधनहैं ॥ तेविषयभोगके साधन ताविवेकीपुरुषकूंहीं दुःखकीप्राप्तिकरेहैं ॥ अर्थात् सोविवेकीपुरुषहीं तिनोंकूं दुःखरूपमानेहैं ॥ और रात्रि दिनविषे बहुतप्रकारकेदुःखोंकूंसहनकरणेहारा जोअविवेकीमूढपुरुषहै ॥ तिसअविवेकीमूढपुरुषकूं तेविषयभोगके साधन दुःखकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ अर्थात् सोअविवेकीपुरुष तिनभोगकेसाधनोंकूं दुःखरूपमानतानहीं तहां तापसं जलिसूत्रविषे (परिणामतापसंस्कारदुःखैः) यापदकरिकै भूत वर्त्तमान भविष्यत् यातीनकालोंविषेभी दुःखकरिकै मिश्रितहोणेतैं तिनविषयसुखोंविषे औपाधिकदुःखरूपता कथनकरीहै और (गुणवृत्तिविरोधात्) यापदकरिकै तिन विषयसुखोंविषे स्वरूपतैंभीदुःखरूपता कथनकरीहै ॥ तहां (परिणामतापसंस्कारदुःखैः) यावचनकेअंतविषेस्थित जो दुःख यहशब्दहै ॥ तादुःखशब्दका परिणाम ताप संस्कार यातीनोंशब्दोंकेसाथि संबंधकरणा ॥ याकरिकैयह अर्थसिद्धहोवैहै ॥ परिणामदुःख तापदुःख संस्कारदुःख यातीनोंरूपताकरिकै तेविषयसुख दुःखरूपहींहै ॥ सोयह प्रकार अब दिखावेहैं ॥ जितनाकी विषयसुखकाअनुभवहोवैहै ॥ सोसब रागकरिकैयुक्तहींहोवैहै ॥ रागतैंविना सो विषयसुखकाअनुभवहोवैनहीं ॥ काहेतैं जिसपुरुषका जिसवस्तुविषे रागहोवैहै ॥ सोपुरुषहीं तिसवस्तुकीप्राप्तिक रिकै सुखीहोवैहै ॥ और जिसपुरुषका जिसवस्तुविषे रागनहींहोवैहै ॥ सोपुरुष तिसवस्तुकीप्राप्तिकरिकै सुखीहो वैनहीं ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकविषेप्रसिद्धहै ॥ यातैं विषयकीप्राप्तितैंपूर्व उद्भूतहूआजोरागहै सोरागहीं ताविषयकीप्राप्ति कालविषे सुखरूपकरिकैपरिणामकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और सोराग क्षणक्षणविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोताजावैहै ॥ तारोग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

काविषयजोपदार्थहै तापदार्थकी जबी अप्राप्तिहोवैहै तबी अवश्यकरिकै दुःखकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं सोराग दुःख रूपहींहै ॥ तहां भोगोंविषे परितृप्तताकरिकै जाइंद्रियोंकीउपशांतिहै ताकानाम सुखहै ॥ और तिनभोगोंविषे लोल्पताकरिकै जातिनइंद्रियोंकी अनुपशांतिहै ताकानाम दुःखहै ॥ सोबहुतभोगोंकेभोगणेकरिकै तिनइंद्रियोंकूं तृष्णातैंरहितकरणेविषे कोईभोप्राणी समर्थनहींहै ॥ उलटा बहुतभोगोंकेभोगणेकरिकै तृष्णाकीवृद्धिहोतीजावैहै ॥ जैसे घृतकाष्ठोंकेपावणेकरिकै अग्निकीवृद्धिहोतीजावैहै ॥ यातैं दुःखरूपरागकापरिणामहोणेतैं सोविषयसुखभी दुःखरूपहींहोवैहै ॥ जिसकारणतैं कार्यकारणकाअभेदहींहोवैहै ॥ तिसकारणतैं दुःखरूपरागकापरिणामहोणेतैं सोविषयसुखभी दुःखरूपहींहै ॥ इतनैंकरिकै ताविषयसुखविषे परिणामदुःखरूपता कथनकरी ॥ अब तापदुःखरूपता कथनकरेहैं ॥ तहां यहपुरुष जिसकालविषे ताविषयसुखकाअनुभवकरेहै ॥ तिसकालविषे ताविषयसुखकेप्रतिकूल जितनैंकीदुःखकेसाधनहैं ॥ तिनसर्वदुःखकेसाधनोंविषे यहपुरुष द्वेषकरेहै ॥ और तिन दुःखकेसाधनरूपभूतोंका नहींहननकरिकै सोविषयसुखकाभोग संभवतानहीं ॥ यातैं ताविषयसुखवासतैं सोपुरुष तिनप्रतिकूलभूतोंकूं अवश्यकरिकै हननकरेहै ॥ तहां जितनैंकीदुःखकेसाधनहैं तेसर्वदुःखकेसाधन हमारेकूं मतप्राप्त होवैं याप्रकारकाजो संकल्पविशेषहै ताकानाम द्वेषहै ॥ ताद्वेषकेविषयरूप जितनैंकीदुःखकेसाधनहैं ॥ तिनसर्वोंकेनिवृत्तकरणेविषे कोईभी प्राणी समर्थहोवैनहीं ॥ यातैं ताविषयसुखकेअनुभवकालविषेभी तासुखकेविरोधीविषयकद्वेष सर्वदा बन्यारहेहै ॥ तिसद्वेषकेविद्यमानहूए सोतापदुःख निवृत्तकरणेकूं अशक्यहै ॥ ईहां तापकूंहीं द्वेषकहेहैं ॥ इसप्रकार तिनदुःखसाधनों

542

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

केनिवृत्तकरणेविषे असमर्थजोपुरुषहै ॥ सोपुरुष तिसकालविषे मोहकूंभी अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं तापदुः
खताकीन्यांई संमोहदुःखताभी निवृत्तकरणेकूंअशक्यहै ॥ तहां तिसतापरूपद्वेषतैं कर्माशय उत्पन्नहोवैहै ॥ काहेतैं जो
पुरुष विषयसुखकेसाधनोंकोइच्छाकरेहै ॥ सोपुरुष शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै अवश्य प्रवृत्तहोवै
है ॥ ताप्रवृत्तितैंअनंतर आपणेअनुकूलप्राणीयोंऊपरि अनुग्रहकरेहैं ॥ और आपणेप्रतिकूलप्राणीयोंका हननकरे
है ॥ ताअनुकूलप्राणीयोंकेअनुग्रहतैं तथा प्रतिकूलप्राणीयोंकेहननतैं सोपुरुष धर्मअधर्मकूं संपादनकरेहै ॥ याका
नाम कर्माशयहै ॥ सोकर्माशय लोभतैं तथामोहतैं होवैहै इति ॥ इतनैंकरिकै तिनविषयसुखोंविषे तापदुःखता कथ
नकरी ॥ अब संस्कारदुःखता कथनकरेहैं ॥ तहां वर्त्तमानकालविषेजोविषयसुखकाअनुभवहैं ॥ सोविषयसुखका
अनुभव आपणेनाशकालविषे इसपुरुषकेचित्तविषे संस्कारोकूंउत्पन्नकरिजावैहै ॥ आगेतैं तेसंस्कार तासुखविषय
कस्मरणकूं उत्पन्नकरेहैं ॥ तिसतैंअनंतर सोसुखविषयकस्मरण तिनसुखोंविषे रागकूंउत्पन्नकरेहै ॥ तिसतैंअनंतर
सोसुखविषयकराग तासुखकीप्राप्तिवासतैं शरीरमनवाणीकीचेष्टाकूं उत्पन्नकरेहै ॥ तिसतैंअनंतर साशरीरादिकों
कीचेष्टा पुण्यपापरूपकर्माशयकूं उत्पन्नकरेहै ॥ तिसतैंअनंतर तेपुण्यपापकर्म जन्मादिकोंकीप्राप्तिकरेहैं ॥ इसकाना
म संस्कारदुःखताहै ॥ इसप्रकार तापमोहकेसंस्कारभीजानिलेणे ॥ इतनैंकरिकै भूत भविष्यत् वर्त्तमान यातीनोंका
लविषे दुःखकरिकैयुक्तहोणेतैं यहसर्वविषयसुख दुःखरूपहींहै यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ अब तिनविषयसुखोविषे स्व
रूपतैंभी दुःखरूपता कथनकरेहै (गुणवृत्तिविरोधाच्च) इसवचनकरिकै ॥ ईहां सुखरूपजोसत्त्वगुणहै तथादुःखरूपजोर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जोगुणहै तथामोहरूपजोतमोगुणहै यातीनोंका गुणशब्दकरिकै ग्रहणकरणा ॥ ते सत्त्व रज तम तीनोंगुण परस्पर विरुद्धस्वभाववालेहूएभी जैसे तेल वर्त्ति अग्नि यहतीनों मिलिकैं एकहीं दीपकरूपकार्यकूं उत्पन्नकरेहैं तैसे इस पुरुषकेभोगवासतै तीनगुणात्मककार्यकूं उत्पन्नकरेहैं ॥ तिसत्रिगुणात्मककार्यविषेभी एकगुणकीतौं प्रधानताहोवैहै ॥ और दूसरेदोगुणोंकी गौणताहोवैहैं ॥ ताएकप्रधानगुणकूंअंगीकारकरिकैहीं सोत्रिगुणात्मककार्यभी सात्त्विक रा जस तामस याप्रकार एकएकगुणकरिकै कथनकऱ्याजावैहै ॥ तहां सुखकाउपभोगरूपजोप्रत्ययहै ॥ सोप्रत्यय उ द्भूतसत्त्वगुणकाकार्यहूआभी अनुद्भूतरजतमकाभी कार्यहोवैहै ॥ केवलसत्त्वगुणका सोप्रत्यय कार्यहैनहीं ॥ यातैं सो सुखकाउपभोगरूपप्रत्ययभी त्रिगुणात्मकहीहैं ॥ यातैं तासुखकाउपभोगरूपप्रत्ययविषे सुखरूपता तथादुःखरूप ता तथाविषादरूपता यहतीनोंहीं विद्यमानहै ॥ याकारणतैंहीं विवेकीपुरुषकूं तेसर्वविषयसुखोंके अनुभव दुःखरूपहीं हैं ॥ ऐसादुःखरूप विषयसुखकाउपभोगरूपप्रत्ययभी कोईस्थिरनहींहै ॥ किंतु सोप्रत्यय शीघ्रहींनाशकूंप्राप्तहोवै है ॥ जिसकारणतैं (चलंहिगुणवृत्तं) इसवचनकरिकै चित्तकूं शीघ्रपरिणामि कथनकऱ्याहै ॥ शंका ॥ एकहीं सोप्रत्यय एकहींकालविषे परस्परविरुद्ध सुखदुःखमोहरूपताकूं कैसेप्राप्तहोवैंगा किंतु नहींप्राप्तहोवैंगा ॥ समाधान ॥ उद्भूत अनुद्भूत यादोनोंका परस्परविरोधहोवैनहीं ॥ किंतु समवृत्तिवालेगुणोंकाहीं एककालविषे परस्पर विरोधहोवै है ॥ विषमवृत्तिवालेगुणोंका एककालविषे परस्पर विरोधहोतानहीं ॥ जैसे इसपुरुषाविषे अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहूएजे धर्म ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य यहच्यारोहैं तेअभिव्यक्तधर्मादिकच्यारों आपणेसमान अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहूएजे अधर्म

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अज्ञान अवैराग्य अनैश्वर्य यहच्यारिहै तिनचारोंकेसाथिहीं यथाक्रमतैं विरोधकूंकरेहै ॥ अनभिव्यक्तअधर्मादिकों केसाथि अभिव्यक्तधर्मादिक विरोधकूंकरतेनहीं ॥ इसलोकविषेभी एकप्रधानपुरुषका दूसरेप्रधानपुरुषकेसाथिहीं वि रोधहोवैहै ॥ दुर्बलपुरुषकेसाथि ताप्रधानपुरुषका विरोधहोतानहीं ॥ तैसे सत्त्व रज तम यहतीनोंगुणभी एककाल विषे परस्पर प्रधानतामात्रकूं नहींसहनकरेहैं ॥ एकदूसरेके सद्भावमात्रकूंअसहनकरतेनहीं ॥ इसीप्रकार परिणाम दुःख तापदुःख संस्कारदुःख यातीनोंविषेभी एकहींकालविषे राग द्वेष मोह यातीनोंकासद्भावभीजानिलेणा ॥ जि सकारणतैं तेरागद्वेषादिकक्लेश प्रसुप्त तनु विच्छिन्न उदार इनच्यारिरूपोंकरिकै च्यारिअवस्थावोंवालेहींहोवैहैं ॥ अब तिनक्लेशोंकास्वरूप योगशास्त्रकीरीतिसैंवर्णनकरेहैं ॥ तहांयोगसूत्राणि ॥ (अविद्याऽस्मितारागद्वेषाभिनिवेशाःपंचक्लेशाः ॥ १ ॥ अविद्याक्षेत्रमुत्तरेषांप्रसुप्ततनुविच्छिन्नोदाराणां ॥ २ ॥ अनित्याशुचिदुःखाऽनात्मसुनित्यशुचिसुखात्मख्याति रविद्या ॥ ३ ॥ दृग्दर्शनशक्त्योरेकात्मतेवास्मिता ॥ ४ ॥ सुखानुशयीरागः ॥ ५ ॥ दुःखानुशयीद्वेषः ॥ ६ ॥ स्वरसवाही विदुषोऽपितथारूढोऽभिनिवेशः ॥ ७ ॥ तेप्रतिप्रसवहेयाःसूक्ष्माः ॥ ८ ॥ ध्यानहेयास्तद्वृत्तयः ॥ ९ ॥ क्लेशमूलःकर्मा शयोदृष्टाऽदृष्टजन्मवेदनीयः ॥ १० ॥ सतिमूलेतद्विपाकोजात्यायुर्भोगाः ॥ ११ ॥) अब यथाक्रमतैं इनएकादशसूत्रोंका अर्थ निरूपणकरेहैं ॥ अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यहपंचक्लेशहोवैहैं ॥ तहां कर्मके तथाताकेफलके प्रव र्त्तकहूए जे इसपुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिकरैं तिनोंकानाम क्लेशहै ॥ याप्रकारकालक्षण तिनअविद्यादिकपांचोविषेघटेहै ॥ यातैं तेअविद्यादिकपांचो क्लेशकहेजावैहैंइति ॥ १ ॥ तिनपंचक्लेशोंविषेभी प्रथमक्लेशरूप जाअविद्याहै ॥ साअविद्याहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रसुप्त तनु विच्छिन्न उदार याच्यारिअवस्थावाले अस्मितादिकच्यारिक्लेशोंका कारणरूपहै ॥ तहां तत्अभाववाले विषेतत्वत्ताबुद्धि विपर्यय मिथ्याज्ञान अविद्या यहच्यारोशब्द एकहींअर्थकेवाचकहैंइति ॥ २ ॥ साअविद्या च्यारि प्रकारकीहोवैहै ॥ तहां अनित्यपदार्थोंविषे नित्यबुद्धिकरणी यहप्रथम अविद्याहै ॥ जैसे पृथिवी चंद्र सूर्य तारा गण स्वर्ग देवता इत्यादिकअनित्यपदार्थोंविषे यहसर्वपदार्थनित्यहै याप्रकारकीबुद्धिकरणीइति ॥ और अशुचिपदार्थोंविषे शुचिबुद्धिकरणी यहदूसरीअविद्याहै ॥ जैसे अशुचिस्त्रीकेशरीरविषे शुचिबुद्धिकरणी ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यास भगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (स्थानाद्बीजादुपष्टंभान्निष्पंदान्निधनादपि ॥ कायमाधेयशौचत्वात्पंडिता ह्यशुचिंविदुः ॥) अर्थयह ॥ शास्त्रकेयथार्थतात्पर्यकूंजानणेहारेविद्वान्पुरुष इसशरीरकूं स्थान बीज उपष्टंभ निष्पंद निधन आधेयशौच इतनैंहेतुवोंतैं अशुचिहीं जानेहैं ॥ तहां विष्ठामूत्रादिकोंकरिकैयुक्त जोमाताकाउदरहै ताका नाम स्थानहै ॥ ऐसेमलिनस्थानविषे इसशरीरकोस्थितिहोवैहै ॥ यातैं यहशरीर स्थानतैंभी अशुचिहींहै ॥ और पिताकाजो सप्तमधातुरूपशुक्रहै तथामाताकाजो सप्तमधातुरूपशोणितहै याकानाम बीजहै ॥ ऐसेबीजतैं इसशरीरकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यातैं यहशरीर बीजतैंभी अशुचिहींहै ॥ और अन्नकापरिणामरूप जो श्लेष्मरुधिरादिकहैं याकानामउपष्टंभहै ॥ ताउपष्टंभतैंभी यहशरीर अशुचिहींहै ॥ और मुख नासिका कर्ण नेत्र पायु उपस्थ इनसर्व द्वारोंतैं जोमलका बाहरिनिकसणाहै याकानाम निष्पंदहै ॥ तानिष्पंदतैंभी यहशरीर अशुचिहींहै ॥ और मरणका नाम निधनहै ॥ जिसमरणकरिकै विद्वान्ब्राह्मणकाशरीरभी अशुचिहोवैहै ॥ तानिधनतैंभी यहशरीर अशुचिहींहै ॥

546

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और स्नानचंदनलेपादिकोंकरिकै जोइसशरीरविषे शुचित्वकाआपादनकरणाहै याकानाम आधेयशौचहै ॥ ताआधे यशौचताकरिकैभी यहशरीर अशुचिहींहै इति ॥ ऐसेअशुचिस्त्रीशरीरविषे शुचिबुद्धिकरणी दूसरीअविद्याहैइति ॥ और दुःखरूप विषयभोगोंविषे सुखबुद्धिकरणी यहतीसरीअविद्याहै ॥ सादुःखविषेसुखबुद्धितौं (परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्चदुःखमेवसर्वंविवेकिनः) इससूत्रकेव्याख्यानविषे पूर्वकथनकरिआयेहैंइति ॥ और अनात्मवस्तुविषे आत्मबुद्धिकरणी यहचतुर्थअविद्याहै ॥ जैसे अनात्मरूपइसस्थूलशरीरविषे मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं इसप्रकारकीआत्मबुद्धिकरणीइति ॥ इसप्रकार च्यारिप्रकारकेभेदकरिकैस्थितजाअविद्याहै ॥ साअविद्याहीं अस्मितादिकसर्वक्लेशोंका मूलभूतहै ॥ इसीअविद्याकूं शास्त्रविषे तम यानामकरिकैकथनकरेहैंइति ॥ ३ ॥ और दृक्शक्ति जोपुरुषहै तथादर्शनशक्ति जाबुद्धिहै तेदोनों भोक्ताभोग्यरूपकरिकै अत्यंतभिन्नहैं ॥ ऐसे पुरुष बुद्धि दोनोंका जोअविद्याकृत अभेदअभिमानहै याकानाम अस्मिताहै ॥ इसीअस्मिताकूं ब्रह्मवेत्तापुरुष हृदयग्रंथि इसनामकरिकैकथनकरेहै ॥ और इसीअस्मिताकूं शास्त्रविषे मोह यानामकरिकैकथनकरेहैंइति ॥ ४ ॥ और तिसतिससुखकीप्राप्तिकेजेसाधनहैं तिनसर्वसाधनोंतैंरहित पुरुषका जो सर्वप्रकारकेसुख हमारेकूंप्राप्तहोवैं याप्रकारका विपर्ययविशेषहै ताकानाम रागहै ॥ इसीरागकूं शास्त्रविषे महामोह यानामकरिकै कथनकरेहैं ॥ ५ ॥ और दुःखकीप्राप्तिकरणेहारे साधनोंके विद्यमानहूएभी हमारेकूंकोईप्रकारकादुःख नहींप्राप्तहोवै याप्रकारका जोविपर्ययविशेषहै ताकानाम द्वेषहै ॥ इसीद्वेषकूं शास्त्रविषे तामिश्र यानामकरिकैकथनकरेहैं इति ॥ ६ ॥ और जीवनकाहेतुजोआयुष्है ताआयुष्केअभावहूएभी इन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनित्यभीदेहइंद्रियादिकोंसाथि हमारा कदाचित्भी वियोगनहींहोवै याप्रकारकाजो विद्वान्अविद्वान्सर्वप्राणीयों विषेसाधारण मरणकात्रासरूपविपर्ययहै ताकानाम अभिनिवेशहै ॥ इसीअभिनिवेशकूं शास्त्रविषे अंधतामिश्र या नामकरिकैकथनकऱ्याहैइति ॥ ७ ॥ यहवार्त्ता पुराणविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (तमोमोहोमहामोहस्तामिश्रोह्यंधसंज्ञितः॥ अविद्यापंचपर्वैषाप्रादुर्भूतामहात्मनः ॥) अर्थयह ॥ इसपुरुषकीअविद्या तम मोह महामोह तामिश्र अंधतामिश्र इनपंचप्रकारोकरिकै प्रादुर्भावकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ यहअविद्यादिकपंचक्लेश प्रसुप्तअवस्था तनुअवस्था विच्छिन्नअवस्था उदारअवस्था याच्यारिअवस्थावोंवालेहोवैहैं ॥ तहां असत्कार्यको कदाचित्भी उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं तिनअविद्यादिकपंचक्लेशोंकी आपणोउत्पत्तितैंपूर्व जाअनभिव्यक्तरूपकरिकैस्थितिहै ताकानाम प्रसुप्तअवस्थाहै ॥ और अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहूएभी तिनक्लेशोंविषे दूसरेसहकारीकारणकेअलाभतैं जोकार्यकीअजनकताहै ताकानाम तनुअवस्थाहै ॥ और जेक्लेश अभिव्यक्तिकूंभी प्राप्तहूएहैं तथाजिनक्लेशोंनैं आपणेआपणेकार्यकूंभी उत्पन्न कऱ्याहै ऐसेक्लेशोंकाभी जोकिसीबलवान्प्रत्ययकरिकै अभिभवहै ताकानाम विच्छिन्नअवस्थाहै ॥ और जेक्लेश अभिव्यक्तिकूंभीप्राप्तहूएहैं तथा दूसरेसहकारीकारणोंकीसंपत्तिकूंभीप्राप्तहूएहैं ॥ ऐसेक्लेशोंविषे जोप्रतिबंधतैंरहितपणेकरिकै आपणेआपणेकार्यकीजनकताहै ताकानाम उदारअवस्थाहै ॥ इसप्रकारकी च्यारिअवस्थावोंकरिकैविशिष्ट तथाविपर्ययबुद्धिरूप ऐसेजे अस्मितादिक च्यारिक्लेशहैं ॥ तिनच्यारोंक्लेशोंका सामान्यरूपअविद्याहीं क्षेत्ररूपहै ॥ अ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्थात् साअविद्या तिनच्यारोंक्लेशोंकेउत्पत्तिकाभूमिरूपहै ॥ तिनसर्वक्लेशोंविषे विपरीतबुद्धिरूपता पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ यातैं ताअविद्याकीनिवृत्तिकरिकैहीं तिनअस्मितादिकसर्वक्लेशोंकीनिवृत्तिहोवैहैइति ॥ तेक्लेशभी सूक्षम स्थूल या भेदकरिकै दोप्रकारकेहोवैहैं ॥ तहां प्रकृतिविषेलीनपुरुषोंके जेप्रसुप्तक्लेशहैं ॥ तथा विरोधीभावनाकरिकै तनुकरेहूए जेयोगीपुरुषोंके तनुक्लेशहैं ॥ तेप्रसुप्तअवस्थावालेक्लेश तथातनुअवस्थावालेक्लेश दोनों सूक्षम कहेजावेहैं ॥ तेसूक्षमक्लेशतौं मनकानिरोधरूपनिर्बीजसमाधिकरिकैहीं निवृत्तहोवैहैं ॥ इसीमनकेनिरोधकूं सूत्रविषे प्रतिप्रसव इस नामकरिकैकथनकऱ्याहैइति ॥ ८ ॥ ॥ और तिनसूक्षमक्लेशोंकाकार्यरूप जेविच्छिन्नअवस्थावाले तथाउदारअवस्थावाले क्लेशहैं तेदोनोंप्रकारकेक्लेश स्थूल कहेजावेहैं ॥ तहां जेक्लेश बीचमैंविच्छेदकूंप्राप्तहोइकै तिसतिसरूपकरिकै पुनःपुनः प्रादुर्भावकूं प्राप्तहोवैहैं तेक्लेश विच्छिन्न कहेजावेहैं ॥ जैसे रागकालविषे क्रोध विद्यमानहूआभी प्रादुर्भूतहोवैनहीं किंतु कालांतरविषे सोक्रोध प्रादुर्भूतहोवैहै ॥ यातैं सोक्रोध विच्छिन्न कह्याजावैहै ॥ इसीप्रकार जिसकालमैं चैत्रनामा पुरुष एकस्त्रीविषेरागवालाहै तिसकालविषे सोचैत्रनामापुरुष अन्यस्त्रीयोंविषे कोईवैराग्यकूंप्राप्तहूआनहीं ॥ किंतु तिसकालविषे सोचैत्रपुरुषकाराग ताएकस्त्रीविषे वृत्तिकूंप्राप्तहूआहै ॥ और अन्यस्त्रीयोंविषे सोराग आगेवृत्तिकूंप्राप्त होवैंगा यातैं तिसकालविषे सोराग विच्छिन्न कह्याजावेहै ॥ इसप्रकारकीरीति दूसरेक्लेशोंविषेभी जानिलेणी ॥ और जेक्लेश जिसकालविषे विषयोंविषे वृत्तिकूंप्राप्तहूएहैं तेक्लेश तिसकालविषे सर्वरूपकरिकै प्रादुर्भूतहूए उदार कहेजावेहैं ॥ तेविच्छिन्नअवस्थावाले तथाउदारअवस्थावाले दोनोंप्रकारकेक्लेश अंत्यतस्थूलहैं ॥ यातैं तेदोनोंप्रकारकेक्लेश

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शुद्धसत्त्वमय भगवत्केध्यानकरिकैहीं निवृत्तिहोवैहैं ॥ तेदोनोंस्थूलक्लेश आपणीनिवृत्तिविषे तामनकेनिरोधकीअपेक्षाकरतेनहीं ॥ सूक्षमक्लेशहीं आपणीनिवृत्तिविषे तामनकेनिरोधकीअपेक्षाकरेहैं ॥ जैसे लोकविषे वस्त्रकाजोस्थूल मलहै सोस्थूलमल जलकेप्रक्षालनतैं निवृत्तहोइजावैहै और तावस्त्रविषे जोसूक्षममलहै सोसूक्षममल क्षारसंयोगादिकोंकरिकै निवृत्तहोवैहै ॥ तैसे तेस्थूलक्लेशतौं भगवत्केध्यानकरिकै निवृत्तहोवैहैं ॥ और तेसूक्षमक्लेशतौं तामनकेनिरोधकरिकैनिवृत्तहोवैहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ पूर्वउक्त परिणामदुःख तापदुःख संस्कारदुःख यातीनों विषे प्रसुप्त तनु विच्छिन्न यातीनरूपोंकरिकै तेसर्व क्लेश सर्वदा रहेहैं ॥ और उदारअवस्थातौं किसीकालविषे किसी क्लेशकीहींहोवैहै ॥ यहअविद्यादिकपंच बाधनारूपदुःखकूंउत्पन्नकरतेहूए क्लेशशब्दकावाच्यहोवैहैंइति ॥ ९ ॥ औरधर्म अधर्मरूप जोकर्माशयहै ॥ सोक्लेशमूलकहींहोवैहै ॥ अर्थात् ताकर्माशयका तेक्लेशहींमूलभूतहैं ॥ सोक्लेशमूलक कर्माशयभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं दृष्टजन्मवेदनोय होवैहै ॥ दूसरा अदृष्टजन्मवेदनीय होवैहै ॥ तहां जिसदेहकरिकै तेधर्मअधर्मरूपकर्मकरेजावेहैं तिसदेहकरिकै जो तिनकर्मोंकेफलकाभोगणाहै ताकानाम दृष्टजन्मवेदनीयहै ॥ और जिसकर्माशयकाफल इसशरीरविषेभोग्याजावैनहीं किंतु जन्मांतरविषेभोग्याजावैहै सोकर्माशय अदृष्टजन्मवेदनीय कह्याजावैहैइति ॥ १० ॥ तहां मूलभूतक्लेशोंकेविद्यमानहूए ताधर्मअधर्मरूपकर्माशयकाफल अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ सोकर्माशयकाफलभी जाति आयुष् भोग याभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां जन्मकानाम जातिहै ॥ अथवा ब्राह्मणत्व देवत्व आदिकोंकानाम जातिहै ॥ और देह प्राण यादोनोंका जोचिरकालपर्यंतसंबंधहै ताकानाम आयु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

षहै ॥ और श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै शब्दादिकविषयोंकाजोअनुभवहै ताकानाम भोगहै ॥ तिनतीनोंविषेभी भोग तौं मुख्यहै ॥ और जाति आयुष् यहदोनों ताभोगका शेषरूपहैंइति ॥ ११ ॥ इसप्रकार तिनअविद्यादिकक्लेशोंकी संतती निरंतर प्रवृत्तहोइरहीहै ॥ इसीपूर्वउक्तसर्वअभिप्रायकूं मनाविषेराखिकै श्रीभगवान्नैं (येहिसंस्पर्शजाभोगा दुःखयोनयएवतेआद्यंतवंतः) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ तहां तिनविषयभोगोंविषे दुःखयोनित्वतौं (परिणामताप संस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्च) इसवचनकरिकै पूर्वकथनकऱ्याहै ॥ और तिनविषयभोगोंविषे आदिअंतवत्त्वतौं (च लंहिगुणवृत्तं) इसवचनकरिकै पूर्वकथनकऱ्याहै ॥ यहसर्वव्याख्यान योगशास्त्रकेमतकेअनुसार कथनकऱ्याहै ॥ और वेदांतमतविषेतौं ताकायहअर्थहै ॥ ब्रह्मकेआश्रित तथाब्रह्मकूंविषयकरणेहारा जोअनादिभावरूपअज्ञानहै ताका नाम अविद्याहै ॥ और सुखदुःखादिकधर्मसहित अहंकारका जो आत्माविषेअध्यासहै ताकानाम अस्मिताहै ॥ और राग द्वेष अभिनिवेश यहतीनोंतौं ताअहंकारकीवृत्तिविशेषहैं ॥ इसप्रकार संसार अविद्यामूलकहोणेतैं अविद्यारूपहीहै ॥ यातैं तेसर्वविषयभोग मिथ्यारूपहूएभी रज्जुविषेसर्पअध्यासकीन्यांई दुःखकेहींकारणहैं ॥ तथा स्वप्नपदार्थोंकीन्यांई दृष्टिसृष्टिमात्रहोणेतैं आदिअंतवालेभीहैं ॥ जिसपुरुषका अधिष्ठानआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै सो अज्ञानसहितभ्रम निवृत्तहोइगयाहै ऐसाजोविद्वान्पुरुषहै सोविद्वान्पुरुष तिनमिथ्याविषयभोगोंविषे रमणकरता नहीं ॥ जैसे मृगतृष्णाकेवास्तवस्वरूपकूंजानणेहाराजोपुरुषहै सोपुरुष जलकेप्राप्तिकीइच्छाकरिकै तहांप्रवृत्तहोतानहीं ॥ तैसे अधिष्ठानआत्माकेज्ञानतैं सर्वप्रपंचकूंमिथ्याजानणेहारा सोविद्वान्पुरुष तिनविषयभोगोंविषे प्रीतिकरैन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हीं ॥ किंतु इससंसारविषे सुखकागंधमात्रभी नहींहै याप्रकारकानिश्चयकरिकै सोविद्वान्पुरुष तिससंसारतैं सबंई द्रियोंकूंनिवृत्तकरैहै इति ॥ २२ ॥ * तहां सर्वअनर्थोंकेप्राप्तिकाहेतुरूप तथाश्रेयमार्गकाविरोधी तथाअल्प प्रयत्नकरिकैदुर्निवार ऐसाजो यहअत्यंतकष्टरूपदोषहै सोदोष महान्प्रयत्नकरिकैभी मुमुक्षुजनोंनैं निवृत्तकरणेकूं योग्यहै ॥ इसप्रकार प्रयत्नकोअधिकता विधानकरणेवासतै श्रीभगवान् पुनःकथनकरेहै ॥

552

शक्नोतीहैवयःसोढुंप्राक्शरीरविमोक्षणात्॥कामक्रोधोद्भवंवेगंसयुक्तःससुखीनरः२३॥

शक्नोति । इह । एव । यः । सोढुं । प्राक् । शरीरविमोक्षणात् । कामक्रोधोद्भवं । वेगं । सः । युक्तः । सः । सुखी । नरः ॥ इ०प०॥

हेअर्जुन जोधीरपुरुष शरीरकेनाशपर्यंतसंभाव्यमान तथाकामक्रोधजन्य ऐसेवेगंकूं बाह्यइंद्रियोंकीप्रवृत्तितैं पूर्व हीं सहनकरणेविषे समर्थहोवैहै सोईहींपुरुष युक्तहै तथासोईहींपुरुष सुखीहै तथासोईहीं पुरुषहै॥२३॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन प्रत्यक्षदेखेहूए तथा श्रवणकरेहूए तथास्मरणकरेहूए जितनैंकी आत्माकेअनुकूल विषयसुखके साधनहैं ॥ तिनसुखसाधनोंके सौंदर्यतादिकगुणोंका वारंवार चिंतनकरणेकरिकै तिनविषयसुखकेसाधनोविषे उत्पन्नभयाजो रतिनामा अभिलाषाहै जिसअभिलाषाकूं तृष्णा लोभकहेहैं ताकानाम कामहै ॥ यद्यपि स्त्रीपुरुषदोनोंकी जापरस्पर विषयसंबंधविषेअभिलाषाहै ताअभिलाषाविषेहीं सोकामशब्द निरूढहै ॥ इसअभिप्रायकरिकै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हीं (कामःक्रोधस्तथालोभः) इसवचनविषे धनकोतृष्णाकानाम लोभहै और स्त्रीकेसंसर्गकीतृष्णाकानाम कामहै इसप्रकार काम लोभ यहदोनों भिन्नभिन्न कथनकरेहैं ॥ तथापि ईहांतौं काम लोभ दोनोंविषेअनुगत जोतृष्णारूप सामान्यहै ॥ तातृष्णारूपसामान्यकेअभिप्रायकरिकै केवल कामशब्दहींकथनकरयाहै ॥ ताकामशब्दतैंपृथक् लोभ शब्द कथनकरयानहीं इति ॥ और प्रत्यक्षदेखेहूए तथाश्रवणकरेहूए तथास्मरणकरेहूए जितनैंकी आत्माकेप्रतिकूल दुःखकेसाधनहैं ॥ तिनदुःखकेसाधनोंविषे वारंवार दोषोंकेचिंतनकरणेकरिकै उत्पन्नभयाजो प्रज्वलनरूपद्वेषहै जि सद्वेषकूं मन्युभीकहेहैं ताकानाम क्रोधहै ॥ ताकाम क्रोधदोनोंकी जोउत्कटअवस्थाहै ॥ जाउत्कटअवस्था लोकवेदके विरोधज्ञानका प्रतिबंधकहोणेतैं लोकवेदतैंविरुद्धअर्थविषे प्रवृत्तिकोउन्मुखतारूपहै ॥ साकामक्रोधकीउत्कटअव स्था प्रसिद्धनदीकेवेगकेसमानहोणेतैं वेगशब्दकरिकैकहीजावैहै ॥ जैसे लोकप्रसिद्धनदीकावेग वर्षाकालविषे अ त्यंतप्रबलताकरिकै लोकवेदकेविरोधज्ञानतैं गर्त्तादिकोंविषे नहींपडनेकोइच्छाकरतेहूएपुरुषकूंभी बलात्कारतैं तागर्त्त विषेप्राप्तकरिकै डुबावेहै तथाअधोदेशकूंलेजावेहै ॥ तैसे सोकामक्रोधकावेगभी निरंतर विषयोंकाचिंतनरूपवर्षाका लकरिकै अत्यंतप्रबलताकूंप्राप्तहूआ लोकवेदकेविरोधज्ञानतैं तिनविषयोंकीनहींइच्छाकरतेहूएपुरुषकूंभी ताविषय रूपगर्त्तविषे प्राप्तकरिकै संसाररूपसमुद्रविषेडुबावेहै तथामहान्नरकरूपअधादशकूं लेजावेहै ॥ यहसर्वअर्थ श्रीभ गवान्नैं (वेगं) याशब्दकरिकेसूचनकरयाहै ॥ यहसर्वअर्थ (अथकेनप्रयुक्तोयंपापंचरतिपूरुषः) इसश्लोकविषे पूव कथनकरिआयेहैं ॥ इसप्रकारका अंतःकरणकाक्षोभरूप जोकामकावेगहै तथाक्रोधकावेगहै ॥ जोकामक्रोधकावेग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनेकप्रकारके बाह्यविकाररूपलिंगोंकरिकै जान्याजावैहै ॥ तहां रोमांचोकाखडाहोणा तथामुखकीप्रसन्नताहोणी तथानेत्रोकी प्रसन्नताहोणी इत्यादिकबाह्यचिन्होंकरिकै सोकामकावेग अनुमानकरयाजावैहै ॥ और शरीरविषेकंपहोणा तथाप्रश्वेदकानिकसणा तथाआपणेओष्ठोंकूंदांतोंसैंदबावणा तथानेत्रोंकीरक्तता इत्यादिकबाह्यचिन्होंकरिकै सोक्रोधकावेग अनुमानकरयाजावैहै ॥ तथा जोकामक्रोधकावेग शरीरकेनाशपर्यंत अनेकप्रकारकेनिमित्तोंकेवशतैं सर्वदा संभावनाकरयाजावैहै ॥ ताअंतरउत्पन्नहूए कामक्रोधकेवेगकूं जोधैर्यवान्संन्यासी बाह्यइंद्रियोंकेव्यापाररूपगर्त्तके पाततैंपूर्वहीं विषयोंविषे वारंवार दोषचिंतनजन्यवशीकारनामावैराग्यकरिकै सहनकरणेविषे समर्थहोवैहै ॥ अर्थात् जैसे तिमिंगिलनामा मत्स्यआपणेबलकरिकै नदीकेवेगकूंसहनकरेहै ॥ तैसे जोधैर्यवान्पुरुष वैराग्यकेबलतैं तो कामक्रोधकेवेगकूं सहनकरेहै ॥ तहां कामक्रोधकेवेगकरिकै जोबाह्यअनर्थविषेप्रवृत्तिहै ताप्रवृत्तिरूपकार्यकूं नसंपादनकरिकै जो तिसकामक्रोधकेवेगकूं निष्फलकरणाहै यहहीं ताकामक्रोधकेवेगकासहनकरणाहै ॥ सोईहींपुरुष योगी है ॥ तथा सोईहींपुरुष सुखीहै ॥ तथा सोईहीं परमपुरुषार्थकासंपादकहोणेतैं पुरुषरूपहै ॥ तिसतैंभिन्न जितनैंकी विषयासक्तपुरुषहैं ॥ तेसर्व आहार निद्रा भय मैथुन इत्यादिकपशुवोंकेधर्मविषेप्रीतिवालेहोणेतैं मनुष्यकेआकार वालेहूएभी पशुरूपहीहैं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै ॥ तहां श्लोक ॥ (आल्हादरूपतायस्यसुषुप्तेसर्वसाक्षिकी ॥ तत्रोपेक्षाभवेद्यस्यतदन्यःस्यात्पशुःकथं) ॥ अर्थयह ॥ जिसआत्मादेवकी आनंदरूपता सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वप्राणीयोंकेअनुभवकरिकैसिद्धहै ॥ तिसआनंदस्वरूपआत्माविषे जिसविषयासक्तपुरुषकी उपेक्षाहींरहेहै ॥ तिसब

554

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हिर्मुखपुरुषतैंपरे दूसराकौंन पशुहै ॥ किंतु सोविषयासक्तबहिर्मुखपुरुषहीं पशुहैइति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (प्राक्शरीरविमोक्षणात्) इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै ॥ जैसे मरणतैंउत्तर विलापकरतोहूई सुंदरस्त्रीयोंनैं आलिंगनकऱ्याहूआभी तथापुत्रादिकोंनैं अग्निविषेदाहकऱ्याहूआभी यहपुरुष प्राणोंतैंरहितहोणेतैं ताकामक्रोधकेवेगकूं सहनकरेहै ॥ तैसे मरणतैंपूर्व जीवतअवस्थाविषेभी जोपुरुष ताकामक्रोधकेवेगकूं सहनकरेहै ॥ सोपुरुषहीं युक्तहै तथासुखीहै ॥ यहवार्त्ता वसिष्ठभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (प्राणेगतेयथादेहःसुखंदुःखंनविंदति ॥ तथा चेत्प्राणयुक्तोपिसकैवल्याश्रमेवसेत् ॥) अर्थयह ॥ जैसे प्राणोंकेगयेतैंअनंतर यहदेह सुखदुःखकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तैसे प्राणोंकरिकैयुक्तहूआभी जोपुरुष तासुखदुःखकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ सोपुरुषहीं कैवल्यमोक्षविषेस्थितहोवैहै इति ॥ परंतु याप्रकारकाव्याख्यान तबी सिद्धहोवै ॥ जबी मरणअवस्थाकीन्यांई जीवतअवस्थाविषे ताकामक्रोधकीउत्पत्तिमात्रहीं नहींअंगीकारकरीये ॥ और ईहांप्रसंगविषे ताकामक्रोधकेवेगकीअनुत्पत्तिमात्र प्राप्तहैनहीं ॥ किंतु अंतरउत्पन्नहूए कामक्रोधकेवेगकासहनहीं ईहांप्राप्तहै ॥ यातैं ताकामक्रोधकीअनुत्पत्तिमात्रकूं दृष्टांतरूपतासंभवैनहीं ॥ यातैं पूर्वउक्तव्याख्यानहीं समीचीनहैइति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (प्राक्शरीरविमोक्षणात्) इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै ॥ ईहां शरीरपदकरिकै शरीरकेआश्रितरहणेहारा गृहस्थआश्रम ग्रहणकरणा ॥ तागृहस्थआश्रमकेपरित्यागरूपसंन्यासतैंपूर्वहीं जोअधिकारीपुरुष विवेकवैराग्यकरिकै ताकामक्रोधकेवेगकूं सहनकरणेविषेसमर्थहोवैहै ॥ सोईहींपुरुष पश्चात् संन्यासपूर्वक श्रवणादिकसाधनोंकरिकै आत्मज्ञानकूंसंपादनकरिकै ब्रह्मयोगयुक्तहोणेकूं त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

थाब्रह्मानंदीहोणेकूं योग्यहोवैहै ॥ और जोपुरुष तासंन्यासतैंपूर्व ताकामक्रोधकेवेगकूंनहींसहनकरेहै अर्थात् ताका मक्रोधकूंजयनहींकरेहै ॥ सोअशुद्धचित्तवालापुरुष संन्यासआश्रमकूंकरिकै श्रवणादिकोंकूंकरताहूआभी आत्मज्ञानकूं तथाज्ञानकेफलरूप मोक्षरूपसुखकूं प्राप्तहोवैनहीं इति ॥२३॥ ॥ तहां यहअधिकारीपुरुष केवल ताकामक्रोधकेवेगकेसह नमात्रकरिकैहीं मोक्षकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तिसतैंअधिकभी किंचित्कर्त्तव्यहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै

554

योंऽतःसुखाऽतरारामस्तथांऽतर्ज्योतिरेवयः ॥ सयोगीब्रह्मनिर्वाणंब्रह्मभूतोधिगच्छति॥

यः१ । अंतः२सुखः३ । अंतरारामः४ । तथा५ । अंतर्ज्योतिः६ । एव७ । यः८ । सः९ । योगी१० । ब्रह्म११ । निर्वाणं१२ । ब्रह्मभूतः१३ । अधिगच्छति इतिप०

अर्जुन जोपुरुष अंतरसुख हींहै तथा अंतरारामहींहै तथा जोपुरुष अंतरज्योतिहींहै
सो योगीपुरुष ब्रह्मरूपहूआहीं निर्वाण ब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ बाह्यविषयोंकीअपेक्षातैंविनाहीं अंतर स्वरूपभूतसुख प्राप्तहैजिसकूं ताकानाम अंतःसुखहै ॥ अर्थात् जोपुरुष बाह्यविषयजन्यसुखतैंरहितहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् तापुरुषकूं बाह्यविषयसुखकाअभाव किसकारणतैंहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (अंतरारामःइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं सोपुरुष अंतरारामहै ॥ तिस कारणतैं सोपुरुष बाह्यविषयसुखोंतैंरहितहै ॥ अंतरआत्माविषेहींहैक्रीडारूपआरामजिसकूं बाह्यविषयसुखकेसाध नरूपस्त्रीपुत्रधनादिकविषयोंविषे सोक्रीडारूपआराम जिसकूंहैनहीं ताकानाम अंतरारामहै ॥ अर्थात् जोपुरुष स

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्वपरिग्रहतैंरहितहोणेतैं बाह्यविषयसुखकेसाधनोंतैंरहितहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सर्वपरिग्रहतैंरहित जोविरक्तसंन्या
सीहै ॥ तिससंन्यासीकूंभी यदृच्छातैंप्राप्तहूए कोकिलादिकोंकेमधुरशब्दकेश्रवणकरिकै तथामंदमंदपवनकेस्पर्शकरिकै
तथाचंद्रमाकेदर्शनकरिकै तथामयूरनृत्यकेदर्शनकरिकै तथाअत्यंतमधुरशीतलगंगाजलकेपानकरिकै तथाकेतकीकुसु
मकीसुगंधिकेग्रहणकरिकै सुखकीउत्पत्ति संभवहोइसकेहै ॥ यातैं तासंन्यासीकूं बाह्यसुखकाअभाव तथातासुखके
साधनोंकाअभाव कहणासंभवतानहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (तथांतर्ज्योतिरेवयः) हेअर्जुन
जैसे ताविद्वान्पुरुषकूं अंतरआत्माविषेहीं सुखहै ॥ बाह्यविषयोंकरिकै सुखहैनहीं ॥ तैसे अंतरआत्माविषेहींहै ज्यो
तिः क्या वृत्तिरूपविज्ञान जिसका बाह्यइंद्रियोंकरिकै सोविज्ञानरूपज्योति जिसका हैनहीं ताकानाम अंतर्ज्योति
है ॥ अर्थात् जोपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियजन्य शब्दादिकविषयोंकेज्ञानतैंरहितहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ताविद्वान्पुरुषकूं स
माधिकालविषेतौं तिनशब्दादिकविषयोंकी प्रतीतिहीं नहींहोवैहै ॥ और तासमाधितैंव्युत्थानकालविषे यद्यपि ता
विद्वान्पुरुषकूं तिनशब्दादिकोंकीप्रतीति होवैहै ॥ तथापि सोविद्वान्पुरुष तिनशब्दादिकविषयोंकूं मृगतृष्णाकेज
लकीन्यांई मिथ्याहींजानेहै ॥ यातैं ताविद्वान्पुरुषकूं बाह्यविषयोंकरिकै सुखकीउत्पत्ति संभवतीनहींइति ॥ हेअर्जुन
इसप्रकार जोपुरुष अंतःसुखहै तथाअंतरारामहै तथाअंतर्ज्योतिहै ॥ सोविद्वान्पुरुषहीं मनसहितसर्वइंद्रियोंकेनिरो
धरूपयोगवालाहोणेतैं योगीहै ॥ ऐसायोगीपुरुषहीं तत्वसाक्षात्कारकरिकै अविद्यारूपआवरणकीनिवृत्तिकरिकै प
रमानंदस्वरूपब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोब्रह्म निर्वाणहै ॥ अर्थात् कल्पितप्रपंचकीनिवृत्तिरूपहै ॥ जिसकारण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तैं कल्पितवस्तुकाअभाव आधिष्ठानरूपहींहोवैहै ताअधिष्ठानतैंभिन्नहोवैनहीं ॥ इतनैंकहणेकरिकै द्वैतप्रपंचरूपअन
र्थकीनिवृत्तिपूर्वकपरमानंदकोप्राप्तिरूप मोक्षका कथनकऱ्या ॥ ऐसेनिर्वाणब्रह्मकूंभी यहविद्वान्पुरुष आप अब्र
ह्मरूपहूआ प्राप्तहोवैनहीं किंतु सोविद्वान्पुरुष आप सर्वदा ब्रह्मरूपहूआहीं ताब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् नि
त्यप्राप्तब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मैवसन्ब्रह्माप्येति ॥) अर्थयह ॥ यहविद्वान्पुरुष ज्ञानतैं पूर्वहीं वास्त
वतैं ब्रह्मरूपहूआभी अज्ञानकृतविस्मृतिकेहूए आत्मज्ञानकरिकै पुनःताब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ २४ ॥ ※ ॥
तहां मोक्षकेप्राप्तिकाकारणरूप जो आत्मज्ञानहैं ॥ ताआत्मज्ञानके पूर्व अनेकप्रकारकेसाधन कथनकरेहै ॥
अबताआत्मज्ञानके दूसरेसाधनोंकूंभी श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

558

लभंतेब्रह्मनिर्वाणमृषयःक्षीणकल्मषाः॥छिन्नद्वैधायतात्मानःसर्वभूतहितेरताः ॥२५॥

लभंते । ब्रह्म । निर्वाणं । ऋषयः । क्षीणकल्मषाः । छिन्नद्वैधाः । यतात्मानः । सर्वभूतहिते । रताः ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेअर्जुन जेपुरुष पापोंतैंरहितहैं तथासंन्यासयुक्तहैं तथासंशयतैंरहितहैं तथाएकाग्रचित्तवालेहैं तथासर्व
भूतोंकेहितविषे प्रीतिवालेहैं ऐसेपुरुषहीं तानिर्वाण ब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ २५ ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेपुरुष प्रथम यज्ञदानादिक निष्कामकर्मोंकरिकै पापरूपकल्मषोंतैंरहितहूएहैं ॥ तिसतैंअनंतर
अंतःकरणकीशुद्धिकरिकै जेपुरुष ऋषिभावकूंप्राप्तहूएहै ॥ अर्थात् सूक्ष्मवस्तुकेविवेककरणेविषेसमर्थ संन्यासीहूए

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैं ॥ तिसतैंअनंतर जेपुरुष वेदांतशास्त्रके श्रवणमननकोपरिपक्कताकरिकै छिन्नद्वैधांहूएहैं ॥ अर्थात् प्रमाणगतसंशय प्रमेयगतसंशय इत्यादिकसर्वसंशयोंतैंरहितहूएहैं ॥ तिसतैंअनंतर निदिध्यासनकोपरिपक्कताकरिकै यतात्माहूएहैं ॥ अर्थात् विपरीतभावनाकीनिवृत्तिपूर्वक एकपरमात्माविषेहीं एकाग्रचित्तवालेहूएहैं ॥ तिसतैंअनंतर द्वैतदर्शनकेअभावकरिकै जेपुरुष सर्वभूतोंकेहितविषे प्रीतिवालेहूएहै ॥ अर्थात् शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै सर्वभूतप्राणीयोंकीहिंसातैंरहितहूएहैं ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तापुरुषहीं तासर्वद्वैतकोनिवृत्तिरूप परमानंदस्वरूपब्रह्मकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ॥ तत्रकोमोहःकःशोकएकत्वमनुपश्यतःइति ॥) अर्थयह ॥ जिसज्ञानवस्थाविषे इसविद्वान्पुरुषकूं यहसर्वभूत आपणाआत्मारूपहींहोतेभयेहैं ॥ तिसज्ञानअवस्थाविषे एकअद्वितीयआत्माकूंदेखणेहारे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं द्वैतदर्शनकेअभावहूए किसीमोहकोप्राप्ति तथाकिसीशोककीप्राप्ति कदाचित्भी होवैनहींइति ॥ २५ ॥ ※ ॥ तहां पूर्व (शक्नोतीहैवयःसोढुं) इसश्लोकविषे उत्पन्नहूएभी कामक्रोधकेवेगकूं इसपुरुषनैं सहनकरणा यहअर्थ कथनकऱ्याथा ॥ अब इसअधिकारीपुरुषनैं कामक्रोधकेउत्पत्तिकाहीं प्रतिबंधकरणा ॥ अर्थात् ताकामक्रोधकूं उत्पन्नहींनहींहोणेदेणा इसअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

कामक्रोधवियुक्तानांयतीनांयतचेतसां॥ अभितोब्रह्मनिर्वाणंवर्त्ततेविदितात्मनां २६॥

कामक्रोधवियुक्तानां । यतीनां । यतचेतसां । अभितः । ब्रह्म । निर्वाणं । वर्त्तते । विदितात्मनां ॥ इतिपदच्छेदः ॥

559

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन जेपुरुष कामक्रोधकीउत्पत्तितैंरहितहैं तथाचित्तकेनिग्रहवालेहैं तथाआत्मसाक्षात्का
रवालेहैं ऐसेसंन्यासीयोंकूं सर्वअवस्थाविषे सोनिर्वाणरूप ब्रह्म प्राप्तहै ॥ २६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥२७३॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेयत्नशीलसंन्यासी कामक्रोधदोनोंकीअनुत्पत्तिकरिकैयुक्तहै ॥ अर्थात् जिनोंकूं सोकामक्रोध उ
त्पन्नहींनहींहोवैहै ॥ इसीकारणतैं जेपुरुष चित्तकेसंयमकरिकैयुक्तहैं ॥ तथा तत्पदार्थरूप परमात्मादेवकूं आपणा
आत्मारूपकरिकैसाक्षात्कार कऱ्याहैजिनोनैं ॥ ऐसेविद्वान्संन्यासीयोंकूं जीवतकालविषे तथामरणकालविषे सोनि
र्वाणब्रह्मरूपमोक्ष सर्वदाप्राप्तहींहै ॥ जिसकारणतैं सोब्रह्मरूपमोक्ष नित्यहै स्वर्गादिकोंकीन्यांई साध्यहैनहीं ॥ यातैं
तिनविद्वान्पुरुषोंकूं सोब्रह्मरूपमोक्ष आगेप्राप्तहोवैंगा याप्रकारकाभविष्यत्व्यवहार तामोक्षविषेहोवैनहीं इति ॥
२६ ॥ ※ ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ ईश्वरविषेअर्पणकरेहै सर्वकर्मजिसनैं ऐसाजोअधिकारी
पुरुषहै ॥ ताअधिकारीपुरुषके तानिष्कामकर्मयोगकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिहोवैहै ॥ ताअंतःकरणकीशुद्धितैंअनंत
र सर्वकर्मोकात्यागरूपसंन्यासहोवैहै ॥ तासंन्यासतैंअनंतर श्रवणमननादिकोंविषेतत्परपुरुषकूं मोक्षकासाधनरूप
तत्त्वज्ञान प्राप्तहोवैहै ॥ यहसर्ववार्त्ता पूर्वकथनकरीथी ॥ अब (सयोगीब्रह्मनिर्वाणं) इसपूर्ववचनविषे श्रीभगवान्
नैं सूचनकऱ्याजो ध्यानयोगहै सोध्यानयोगहीं तिसतत्त्वसाक्षात्कारका अंतरंगसाधनहै इसअर्थकूं विस्तारतैंकथ
नकरणेवासतैं श्रीभगवान् सूत्ररूपतीनश्लोकोंकूं कथनकरेहै ॥ इनसूत्ररूपतीनश्लोकोंकाहीं समग्रषष्ठाध्यायव्या

॥२७३॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ख्यानरूपहै ॥ तिन तीनश्लोकोंविषेभी प्रथमदोश्लोकोंकरिकैतौं संक्षेपतैं तायोगका कथनकरयाहै ॥ और तीसरे श्लोककरिकैतौं ताध्यानयोगकाफलरूप आत्मज्ञान कथनकरयाहै ॥

स्पर्शान्कृत्वाबहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवांतरेभ्रुवोः॥प्राणापानौसमौकृत्वानासाभ्यंतरचारिणौ
यतेंद्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः॥विगतेच्छाभयक्रोधोयःसदामुक्तएवसः ॥ २८॥

स्पर्शान्[२]। कृत्वा[४]। बहिः[३]। बाह्यान्[१]। चक्षुः[६]। च[५]। एव[९]। अंतरे[८]। भ्रुवोः[७]। प्राणापानौ[१०]। समौ[११]। कृत्वा[१३]। नासाभ्यंतरचारिणौ[१२] ॥
यतेंद्रियमनोबुद्धिः[१४]। मुनिः[१५]। मोक्षपरायणः[१६]। विगतेच्छाभयक्रोधः[१७]। यः[१८]। सदा[२०]। मुक्तः[२१]। एव[२२]। सः[१९] ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन बाह्यस्थित शब्दादिकविषयोंकूं पुनःबाह्य करिकै तथा चक्षुकूं दोनोंभ्रुवोंके मध्यविषे हीं स्थितकरिकै तथा प्राणअपानदोनोंकूं समान नासिकाकेभीतरहींनिरुद्ध करिकै जीतेहूंएहैंइं द्रियमनबुद्धिजिसनैं तथानिवृत्तहूएहैंइच्छाभयक्रोधजिसके तथासर्वविषयोंतैंविरक्त ऐसाजो मननशीलसंन्यासीहै सोसंन्यासी सर्वदा मुक्त हींहै[२२] ॥ २७ ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन स्वभावतैं बाह्यदेशविषेरहणेहारे जेशब्दादिकविषयहैं तेशब्दादिकविषय बाह्यहूएभी श्रोत्रादिकइंद्रियद्वारा तिसतिसशब्दादिआकारकूंप्राप्तहूई अंतःकरणकीवृत्तिकूंद्वारकरिकै अंतरचित्तविषे प्रवेशकरेहैं ॥ ऐसेशब्दादिकविषयोंकूं जोपुरुष पुनःबाह्यहींकरेहै ॥ अर्थात् जोपुरुष परवैराग्यकेप्रभावतैं तिसतिसशब्दाकारवृ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

562

त्तिकूं उत्पन्नहींनहींकरेहै ॥ ईहां श्रीभगवान्नैं शब्दादिकविषयोंका जो बाह्यान् यहविशेषण कथनकर्‌याहै ताकाय हअभिप्रायहै ॥ यहशब्दादिकविषय जोकदाचित् स्वभावतैंहीं अंतरहोते ॥ तौं सहस्त्रउपायोंकरिकैभी तेविषय पु नः बाह्यकरेजातेनहीं ॥ जो स्वभावतैंअंतरस्थितविषयभी बाह्यकरेजाते ॥ तौं तिनविषयोंकेस्वभावकीहींहानिहोती ॥ सो वस्तुकेस्वभावकीहानिहोतीनहीं ॥ जैसे अग्निकेउष्णस्वभावकी कदाचित्भीहानिहोतीनहीं ॥ और तिनश ब्दादिकविषयोंकूं जोस्वभावतैंहीं बाह्यअंगीकारकरीये ॥ तौं रागकेवशतैं अंतरचित्तविषेप्रविष्टहूएभी तिनशब्दादि कविषयोंका परवैराग्यकेवशतैं पुनःबाह्यनिकसणा संभवहोइसकेहै ॥ जैसे स्वभावतैंशुद्धवस्त्रविषे बाह्यतैंप्राप्तभई जामृत्तिकाहै सामृत्तिका क्षारजलकेप्रक्षालनकरणेतैं निवृत्तकरिजावैहै इति ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं वैरा ग्यका कथनकर्‌या ॥ अब अभ्यासका कथनकरेहैं (चक्षुश्चैवांतरेभ्रुवोःइति) हेअर्जुन यहअधिकारीपुरुष आपणेचक्षु कीदृष्टिकूं दोनोंभ्रुवोंकेमध्यविषेस्थितकरै ॥ ताभ्रुवोंकेमध्यविषे चक्षुकीस्थिति ताचक्षुके अर्धनिमीलनकरिकैहींहोवैहै ॥ ताचक्षुके अत्यंत निमीलनकरिकै तथाअत्यंत उनमीलनकरिकै साभ्रुवोंकेमध्यविषेस्थितिहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह॥ यहअभ्यासकरणेहारापुरुष जोकदाचित् आपणेचक्षुकूं अत्यंत निमीलनकरैंगा ॥ तौं इसपुरुषकूं निद्रारूपलयवृत्ति हीं होवैंगी ॥ और यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् तिसआपणेचक्षुकूं अत्यंत प्रसारणकरैंगा ॥ तौं प्रमाण विपर्य य विकल्प स्मृति यहच्यारिप्रकारकी विक्षेपरूपवृत्तियां उत्पन्नहोवैंगीयां ॥ और तेनिद्रादिकपांचोंवृत्तियां योगा भ्यासकेविरोधीहींहोवैहैं ॥ यातैं इसअधिकारीपुरुषनैं तेपांचोंवृत्तियां निरोधकरणेकूंयोग्यहैं ॥ सोतिनपांचोंवृत्ति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

योंकानिरोध ताभ्रुवोंकेमध्यविषे चक्षुकेस्थितकरणेतैंहींहोवैहैइति ॥ तथा सोअधिकारीपुरुष आपणे प्राण अपान दोनोंकूं समकरिकै अर्थात् प्राणकेऊर्ध्वगतिका तथाअपानकेअधोगतिका विच्छेदकरिकै कुंभककरिकै तिसप्राण अपानकूं हृदयादिकस्थानविषेहींस्थितकरै ॥ इसप्रकारकेउपायकरिकै निरोधकूंप्राप्तहूएहैं इंद्रिय मन बुद्धि जिसके ऐसाजो मोक्षपरायणपुरुषहै अर्थात् सर्वविषयोंतैंविरक्तहै ॥ सोपुरुष मुनिहोवै अर्थात् मननशीलहोवै ॥ तथा जोपुरुष विगतेच्छाभयक्रोधहै ॥ अर्थात् इच्छा भय क्रोध यातीनोंतैंरहितहै (विगतेच्छाभयक्रोधः) इसवचनकाअर्थ (वीतरागभयक्रोधः) इसवचनकेव्याख्यानविषे पूर्व विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ इसप्रकारके लक्षणोंयुक्त जोसंन्यासी सर्वदा होवैहै ॥ सो संन्यासी मुक्तहींहै ॥ तिससंन्यासीकूं सोमोक्ष कर्त्तव्यनहींहै ॥ अथवा (सदा) इसपदका (मुक्त एव) यापदकेसाथि अन्वयकरणा ॥ ताकरिकै यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकारका सोसंन्यासी जीवताहूआभी मुक्तहींहै इति ॥ २७ ॥ २८ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारकेयोगकरिकैयुक्तजोपुरुषहै सोअधिकारीपुरुष किसवस्तुकूंजानिकरिकै मुक्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

भोक्तारंयज्ञतपसांसर्वलोकमहेश्वरं ॥ सुहृदंसर्वभूतानांज्ञात्वामांशांतिमृच्छति ॥ २९ ॥

॥ इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णाऽर्जुनसंवादेसंन्यासयोगोनामपंचमोऽध्यायःसमाप्तः ॥५॥

भोक्तारं । यज्ञतपसां । सर्वलोकमहेश्वरं । सुहृदं । सर्वभूतानां । ज्ञात्वा । मां । शांतिं । ऋच्छति । इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन सर्वयज्ञतपोंका भोक्तारूप तथासर्वलोकोंकामहान्ईश्वररूप तथासर्वभूतप्राणीयोंका सुहृदरूपऐसा जोमैंभगवान्हूं तिसइमारेकूं आत्मारूपजानिकैहीं सोयोगयुक्तपुरुष मुक्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वेदकरिकैप्रतिपादित जितनैंको ज्योतिष्टोमादिकयज्ञहैं तथाजितनैंकी कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपहैं ॥ तिनसर्वयज्ञोंका तथासर्वतपोंका यजमानादिककर्त्तारूपकरिकै तथाइंद्रादिकदेवतारूपकरिकै भोक्तारूप तथापालनकरणेहारा जोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तथा सर्वलोकोंका महान्ईश्वररूपजोमैंहूं अर्थात् हिरण्यगर्भादिकईश्वरोंकूंभी आपणोआज्ञाविषेचलावणेहारा जोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तथा सर्वप्राणीयोंकासुहृदरूपजोमैंहूं अर्थात् प्रतिउपकारकीअपेक्षातैंविनाहीं तिनसर्वप्राणीयोंऊपरि उपकारकरणेहारा जोमैंपरमेश्वरहूं ॥ ऐसे सर्वांतर्यामी सर्वकेप्रकाशक परिपूर्ण सत्चित्आनंदस्वरूप एकरस परमार्थसत्य सर्वकाआत्मारूप मैंनारायणकूं आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारकरिकैहीं तेयोगयुक्तपुरुष सर्वसंसारकीनिवृत्तिभूत मोक्षरूपशांतिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ ईहां हेभगवन् शंख चक्र गदा पद्म याच्यारोंकूंधारणकरणेहारी जोयहआपकी चतुर्भुजव्यक्तिहै ॥ जाव्यक्ति वसुदेवदेवकीतैं उत्पन्नहूईहै तथाहमारेरथविषेस्थितहै ॥ ऐसीआपकीव्यक्तिकूंजानताहूआभी मैंअर्जुन मुक्तिकूं क्युंनहींप्राप्तहोता ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं आपणेस्वरूपके (यज्ञतपसांभोक्तारं सर्वलोकमहेश्वरं सर्वभूतानांसुहृदं) यहतीनविशेषण कथनकरेहैं ॥ अर्थात् इसप्रकारकेहमारेस्वरूपकाज्ञानहीं मुक्तिकाकारणहै ॥ केवल इसहमारेस्थूल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व्यक्तिकाज्ञान तामुक्तिकाकारणहोवैनहीं इति ॥ अब इसपंचमअध्यायकेसर्वअर्थकूं संक्षेपतप्रतिपादनकरणेहारा श्लो
ककहेहैं॥अनेकसाधनाभ्यासनिष्पन्नंहरिणेरितं ॥ स्वस्वरूपपरिज्ञानं सर्वेषांमुक्तिसाधनं इति ॥ अर्थयह ॥ अनेकप्रका
रकेसाधनोंकेअभ्यासकरिकैउत्पन्नहूआ तथासर्वअधिकारीजनोंकेमुक्तिकासाधनरूप ऐसाजोस्वस्वरूपकाज्ञानहै सो
ज्ञान श्रीभगवानूनैं इसपंचमअध्यायविषेकथनकरयाहै इति ॥ २९ ॥ ❋ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य
श्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थ
दीपिकाख्यायां पंचमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ५ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥

इतिपंचमोध्यायःसमाप्तः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायांपंचमोध्यायः॥

566

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ अथ श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायां षष्ठोऽध्यायः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ षष्ठाध्यायप्रारंभः ॥ तहां प्रारंभका श्लोक ॥ योगसूत्रंत्रिभिःश्लोकैःपंचमांतेयदीरितं ॥ षष्ठआरभ्यतेऽध्यायस्तद्व्याख्यानायविस्तरात् ॥ अर्थयह ॥ पंचमअध्यायकेअंतविषे तीनश्लोकोंकरिकै कथनकऱ्याजो योगसूत्रहै ॥ तिसयोगसूत्रके विस्तारतै व्याख्यान करणेवासतैं यहषष्ठाध्याय प्रारंभकरीताहै इति ॥ तहां सर्वकर्मोंकेत्यागकाकथनकरिकै श्रीभगवान्नैं योगकाविधानकऱ्या ॥ यातैं तेसर्वकर्म त्यागणेयोग्यहोणेतैं संन्यासतैं तथायोगतैं अत्यंत निकृष्टहोवैंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् दोश्लोकोकरिकै पुनः ताकर्मयोगकीस्तुतिकरेहै अर्जुनकूं तायुद्धरूपकर्मविषे प्रवृत्तकरणेवासतै ॥

2

श्रीभगवानुवाच ॥ अनाश्रितःकर्मफलंकार्यकर्मकरोति यः ॥ ससंन्यासीचयोगीचननिरग्निर्नचाक्रियः ॥ १ ॥

अनाश्रितः । कर्मफलं । कार्यं । कर्म । करोति । यः । सः । संन्यासी । च । योगी । च । न । निरग्निः । न । च । अक्रियः ॥ इतिपद० ॥ हेअर्जुन जोपुरुष कर्मकेफलकूं नहींइच्छताहूआ अवश्यकरणेयोग्य नित्यकर्मकूं करेहै सोपुरुष यद्यपि अग्नितैंरहित नहींहै तथा क्रियातैंरहित नहींहै तथापि सोपुरुष संन्यासीहै तथा योगीहै ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष कर्मकेस्वर्गादिकफलोंकोइच्छातैंरहितहोइकै शास्त्रनैंकर्त्तव्यतारूपकरिकैविधानकऱ्येजे अग्निहोत्रादिक नित्यनैमित्तिककर्महैं तिननित्यनैमित्तिककर्मोंकूं श्रद्धापूर्वककरेहै ॥ सोपुरुष कर्मीहूआभी संन्यासी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हींहै तथायोगीहींहै ॥ याप्रकारतैं सोकर्मीपुरुष स्तुतिकऱ्याजावैहै ॥ काहेतैं त्यागकानाम संन्यासहै ॥ और चित्तविषे स्थितविक्षेपकेअभावकानाम योगहै ॥ इसप्रकारका संन्यास तथायोग दोनों इसनिष्कामपुरुषविषेविद्यमानहैं ॥ अर्थात् यहनिष्कामपुरुष फलकेत्यागवालाहोणेतैं संन्यासीहै ॥ तथा फलकोतृष्णारूपविक्षेपकेअभाववालाहोणेतैं योगीहै ॥ ईहां सकामपुरुषोंको अपेक्षाकरिकै तिसनिष्कामपुरुषविषे श्रेष्ठताकथनकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं संन्यासशब्दकी गौणीवृत्तिकूंअंगीकारकरिकैतासंन्यासशब्दकरिकै कर्मकेफलकात्यागकथनकऱ्याहै तथायोगशब्दकीगौणीवृत्तिकूंअंगीकारकरिकै तायोगशब्दकरिकै फलकेतृष्णाकात्याग कथनकऱ्याहै ॥ और तासंन्यासशब्दका फलसहितसर्वकर्मोंकात्यागरूप जोमुख्यअर्थहैं ॥ तथा तायोगशब्दका सर्वचित्तवृत्तियोंकानिरोधरूप जोमुख्यअर्थहै ॥ तेदोनों तानिष्कामपुरुषकूं आगे अवश्यकरिकैउत्पन्नहोणेहारेहैं ॥ यातैं सोनिष्कामकर्मोंकूंकरणेहारापुरुष यद्यपि अग्नितैं रहितनहींहै अर्थात् अग्निकरिकैसिद्धहोणेहारे अग्निहोत्रादिकश्रौतकर्मोंकेत्यागवाला नहींहै ॥ तथा सोकर्मीपुरुष क्रियातैंरहितभी नहींहै अर्थात् ताअग्निकीअपेक्षातैंरहित स्मार्तक्रियाकेत्यागवालाभी नहींहै ॥ तथापि सोनिष्कामकर्मोंकूंकरणेहारा कर्मीपुरुष संन्यासीहींजानणा तथायोगीहींजानणा इति ॥ अथवा (ससंन्यासीचयोगीचननिरग्निर्नचाक्रियः) यावचनका यहअर्थकरणा ॥ श्रौतअग्नितैंरहितपुरुष कोईसंन्यासी कह्याजावैनहीं॥तथा क्रियातैंरहितपुरुष कोईयोगी कह्याजावैनहीं॥किंतु ताश्रौतअग्निवाला तथाताक्रियावाला जोनिष्कामकर्मोंकेकरणेहारापुरुषहै सोकर्मीपुरुषहीं संन्यासीजानणा तथायोगीजानणा ॥ इसप्रकारतैं सोनिष्कामकर्मीपुरुष स्तुतिकऱ्याजावैहैइति ॥ ईहां यद्यपि अक्रिय याशब्दकरिकैहैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सर्वकर्मोंकेसंन्यासीकी प्रतीतिहोइसकेहै यातैं निरग्निः यहपदव्यर्थहै ॥ तथापि अग्निशब्दतैं सर्वकर्मोंकाग्रहणकरिकै निरग्निः याशब्दकरिकै संन्यासीका कथनकर्‍याहै ॥ तथा क्रियाशब्दतैं सर्वचित्तकेवृत्तियोंकाग्रहणकरिकै अक्रिय याशब्दकरिकै निरुद्धचित्तवृत्तिवालेयोगीका कथनकर्‍याहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ सोनिरग्निपुरुष संन्यासीकह्याजावैनहीं ॥ तथाअक्रियपुरुष योगीकह्याजावैनहीं ॥ किंतु सोनिष्कामकर्मोंकेकरणेहारा कर्मीपुरुषहीं संन्यासी तथायोगी कह्याजावैहै इति ॥ १ ॥ ❋ ॥ तहां जैसे (सिंहोदेवदत्तः) इसवचनविषे पशुरूपसिंहतैंभिन्न मनुष्यरूपदेवदत्तविषे तासिंहकेसदृश शूरता क्रूरता आदिकगुणोंकूंग्रहणकरिकै सोसिंहशब्द प्रवृत्तहोवैहै ॥ तैसे असंन्यासविषे संन्यासशब्दकेप्रवृत्तिका तथाअयोगविषे योगशब्दकेप्रवृत्तिका निमित्तरूपजोसमानगुणहै तागुणकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

यंसंन्यासमितिप्राहुर्योगंतंविद्धिपांडव ॥ नह्यसंन्यस्तसंकल्पोयोगीभवतिकश्चन ॥ २ ॥

यं[२]।संन्यासं[३]। इति[४]।प्राहुः[५]। योगं[७]।तं[६]। विद्धि[८]।पांडव[१]। न[१३]। हि[९]। असंन्यस्तसंकल्पः[१०]। योगी[१२]। भवति[१४]। कश्चन[११] ॥इतिप० ॥

हे[१]अर्जुन जिस[२]कूं श्रुतियां संन्यास[३] इस[४]नामकरिकै कथन[५]करेहैं तिस[६]कूंहीं तूं योग[७]रूप जान[८] जिस[९]कारणतैं संकल्प[१०]केत्यागतैंरहित कोई[११]भीपुरुष योगी[१२] नहीं[१३] होवै[१४]है ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ (न्यासएवातिरेचयत्। ब्राह्मणाःपुत्रैषणायाश्चवित्तैषणायाश्चलोकैषणायाश्चव्युत्थायाथभिक्षाचर्यंचरंति) इत्यादिकअनेकश्रुतियां जिसफलसहित सर्वकर्मोंकेत्यागकूं संन्यास यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ तिससंन्यासकूंहीं तूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अर्जुन योगरूप जान ॥ ईहां फलकीइच्छाका तथाकर्तृत्वअभिमानका परित्यागकरिकै जोशास्त्रविहितशुभकर्मोकाअनुष्ठानहै ताकानाम योगहै अर्थात् तासंन्यासकूं तूं निष्कामकर्मयोगरूप जान ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे अब्रह्मदत्तकूं यहब्रह्मदत्तहै याप्रकार जोकोईकहेहै ॥ ताकहणेकरिकै यहजान्याजावैहै ॥ यह ब्रह्मदत्तकेसदृश्यहै ॥ काहेतैं कि सीअन्यवस्तुकावाचकजोशब्दहै ताशब्दका जबी किसीअन्यवस्तुकेजनावणेवासतै उच्चारणहोवैहै ॥ तबी सोशब्द गौणी वृत्तिकरिकै अथवा तद्भावकेआरोपकरिकै तिसअन्यवस्तुविषे स्ववाच्यार्थकेसदृश्यताकूंहीं बोधनकरेहै ॥ सोईहां प्रसंगविषे कौनसादृश्यधर्महै ॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् तासादृश्यधर्मकूं कथनकरेहै (नह्यसंन्यस्तसंकल्पोयोगीभवतिकश्चनइति ॥) जिसकारणतैं फलसंकल्पकेत्यागतैंरहित कोईभीपुरुष योगीहोवैनहीं ॥ किंतु सर्व योगीजन फलसंकल्पकेत्यागवालेहींहोवैहैं ॥ तिसकारणतैं फलकात्यागरूप समानधर्मतैं तथातृष्णारूपचित्तवृत्तिकेनिरोधकोसमानतातैं गौणीवृत्तिकरिकै सोकर्मीपुरुषहींहै संन्यासीहै तथायोगीहै ॥ तात्पर्ययह ॥ संन्यासीशब्दका मुख्यअर्थजो फलसहितसर्वकर्मोकात्यागीहै ॥ ताकेविषे जैसे स्वर्गादिकफलोंकात्यागरहेहै॥तैसे निष्कामकर्मीपुरुषविषेभी सोस्वर्गादिकफलोंकात्याग रहेहै ॥ यातैं सोसंन्यासीशब्द गौणीवृत्तिकरिकै ताकर्मीपुरुषविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ तथायोगीशब्दका मुख्यअर्थजो सर्वचित्तवृत्तियोंकेनिरोधवालाहै ॥ ताकेविषे जैसे फलकोतृष्णारूपचित्तवृत्तिका निरोधरहेहै ॥ तैसे निष्कामकर्मीविषेभी सो फलकीतृष्णारूपचित्तवृत्तिकानिरोध रहेहै ॥ यातैं सोयोगीशब्दभी गौणीवृत्तिकरिकै ताकर्मीपुरुषविषे प्रवृत्तहोवैहै इति ॥ अब इसीअथकूं योगसूत्रोंकरिकैस्पष्टकरेहैं ॥ तहांसूत्रं ॥ (योग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्चित्तवृत्तिनिरोधः ॥ प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयःइति ॥) अर्थयह ॥ चित्तकोसर्ववृत्तियोंकाजोनिरोधहै ता
कानाम योगहैइति ॥ तेचित्तकीवृत्तियां प्रमाण १ विपर्यय २ विकल्प ३ निद्रा ४ स्मृति ५ यहपंचप्रकारकीहोवै
हैं ॥ तहां प्रमाकाजोकरणहोवै ताकूं प्रमाणकहेहैं ॥ सोप्रमाणभी प्रत्यक्ष अनुमान शब्द उपमान अर्थापत्ति अनुप
लब्धि यहषट्प्रकारकाहोवैहै ॥ याप्रकारका वैदिकपुरुष अंगीकारकरेहैं ॥ और प्रत्यक्ष अनुमान आगम यहतीनप्रका
रकाप्रमाणहोवैहै याप्रकार योगशास्त्रवाले अंगीकारकरेहैं ॥ तहां किसीप्रमाणका किसीप्रमाणविषे अंतरभावहोवैहै
॥ और किसीप्रमाणका किसीप्रमाणतैंबहिर्भावहोवैहै ॥ इसप्रकार तिनप्रमाणोंका परस्पर अंतर्भाव तथाबहिर्भाव
अंगीकारकरिकै किसीशास्त्रविषे तिनप्रमाणोंकासंकोचकऱ्याहै ॥ और किसीशास्त्रविषे तिनप्रमाणोंकाविस्तारकऱ्याहै
॥ जैसे नैयायिकोंकेमतविषे प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द यहच्यारिहीं प्रमाणहोवैहैं ॥ तहां नैयायिकोंनैं अर्थापत्ति
प्रमाणका केवलव्यतिरेकीअनुमानविषेहीं अंतर्भावकऱ्याहै ॥ और अनुपलब्धिप्रमाणका प्रत्यक्षप्रमाणविषेहीं अंतर्भा
वकऱ्याहै ॥ इसप्रकार अन्यमतोंविषेभी तिनप्रमाणोंकीन्यूनअधिकताजानिलेणी ॥ यद्यपि नैयायिकादिकोंकेमतविषे
प्रत्यक्षादिकप्रमाकेकरणहोणेतैं इंद्रियादिकहीं प्रत्यक्षादिप्रमाणरूपहैं ॥ तथापि योगशास्त्रकेमतविषे इंद्रियादिकोंक
रिकैउत्पन्नहूईजेचित्तकीवृत्तियांहैं तेवृत्तियांहीं प्रत्यक्षादिप्रमाणरूपहैं ॥ और तिनवृत्तियोंविषे जोचेतनकाप्रतिबिं
बहै ॥ सोप्रतिबिंब प्रत्यक्षादिप्रमारूपहै ॥ यातैं प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकूं चित्तकीवृत्तिरूपकथनकरयाहैइति ॥ १ ॥
और मिथ्याज्ञानकानाम विपर्ययहै॥सोविपर्ययभी अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश इसभेदकरिकै पंचप्रका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रकाहोवैहै ॥ तिनअविद्यादिकपंचक्लेशोंकास्वरूप पूर्वपंचमअध्यायविषे विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैंइति ॥ २ ॥ औ
र शब्दश्रवणतैंअनंतरउत्पन्नहोणेहारी तथाअर्थरूपवस्तुतैंरहित ऐसीजाचित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम विकल्पहै ॥
जैसे वंध्यापुत्रोअस्ति नरशृंगोअस्ति इत्यादिकशब्दोंकेश्रवणतैंअनंतर ताश्रोतापुरुषकी वंध्यापुत्रविषयक तथानरशृंग
विषयक चित्तकीवृत्ति अवश्यकरिकै उत्पन्नहोवैहै ॥ और तावृत्तिकाविषयरूप वंध्यापुत्र तथानरशृंग अत्यंतअसत्हैं ॥
यातैं असत्अर्थविषयक तेवृत्तियां विकल्परूपकहीजावैहैं ॥ सोयहविकल्प विषयरूपवस्तुतैंरहितहोणेतैं प्रमारूपभी क
ह्याजावैनहीं ॥ तथा यहविकल्प बाधज्ञानकेविद्यमानहूएभी अवश्यकरिकैउत्पत्तिवालाहोणेतैं तथाव्यवहारकाहेतुहोणेतैं
विपर्ययरूपभीनहींहै॥जैसे चैतन्यहींपुरुषहोवैहै याप्रकारतैं चैतन्य पुरुष दोनोंके अभेदकेनिश्चयहूएभी पुरुषकाचैतन्यहै
याप्रकारकेशब्दश्रवणतैंअनंतर चैतन्यपुरुषकेभेदकूंविषयकरणेहारा विकल्पज्ञानहोवैहै यातैं सोविकल्पज्ञान विपर्ययरूप
भीनहींहैं ॥ बाधज्ञानकेविद्यमानहूए सोविपर्ययज्ञान उत्पन्नहोतानहीं ॥ किंतु सोविकल्पज्ञान प्रमाज्ञानतैं तथाभ्रम
ज्ञानतैं विलक्षणहींहोवैहै ॥ यहहींविकल्पकास्वरूप (शब्दज्ञानानुपातीवस्तुशून्योविकल्पः) इससूत्रविषे पतंजलिभ
गवान्नैं कथनकऱ्याहैइति ॥ ३ ॥ और प्रमाण विपर्यय विकल्प स्मृति याच्यारिप्रकारकीवृत्तियोंकेअभावकाकारण
रूपजोतमोगुणहै ॥ तिसतमोगुणकूंविषयकरणेहारी जावृत्तिविशेषहै ताकानाम निद्राहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै ज्ञानादि
कोंकेअभावमात्रकानाम निद्राहै यामतकाभी खंडनकऱ्या ॥ यहहींनिद्राकास्वरूप (अभावप्रत्ययालंबनावृत्तिर्निद्रा)
इससूत्रविषे पतंजलिभगवान्नैं कथनकऱ्याहैइति ॥ ४ ॥ और पर्वअनुभवजन्यसंस्कारमात्रतैं जोज्ञान उत्पन्नहोवै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है ताकानाम स्मृतिहै ॥ सास्मृति सर्ववृत्तियोंकरिकैजन्यहोवैहै ॥ यातैं पतंजलीभगवान्नैं तास्मृतिकूं सर्ववृत्तियोंकेअं तर्विषेकथनकरयाहैइति ॥ ५ ॥ यद्यपि लज्जादिक अनेकप्रकारकीवृत्तियांहोवैहैं ॥ तथापि तिनलज्जादिकसर्ववृत्तियोंका इनप्रमाणादिकपंचवृत्तियोंविषेहीं अंतर्भावहै ॥ इसप्रकारकी सर्वचित्तवृत्तियोंकाजोनिरोधहै ॥ सोनिरोधहीं योगकह्याजा वैहै ॥ तथा समाधिकह्याजावैहै ॥ और कर्मोंकेफलकाजोसंकल्पहै सोसंकल्पभी पंचप्रकारकेविपर्ययविषे रागनामा तीस राविपर्ययविशेषहै तिसरागरूपफलसंकल्पकेनिरोधमात्रकूंहीं ईहां गौणीवृत्तिकरिकै योगनामकरिकै तथासंन्यासनामक रिकै कथनकरयाहै ॥ यातैं किंचित्मात्रभीईहां विरोधहोवैनहीं इति ॥ २ ॥ * ॥ शंका हेभगवन् पूर्व आपनैं कर्मयोगकी श्रेष्ठताकथनकरी ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ श्रेष्ठहोणेतैं सोकर्मयोगहीं इसअधिकारीपुरुषकूं जीवत्कालपर्यंत करणेयोग्यहै ॥ और (यावज्जीवमग्निहोत्रंजुहोति) यहश्रुतिभी जीवत्कालपर्यंत अग्निहोत्रादिककर्मोंकीकर्त्तव्यताकूंहीं कथनकरेहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताकर्मयोगकेअवधिकूं कथनकरेहै ॥

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगंकर्मकारणमुच्यते ॥ योगारूढस्यतस्यैवशमःकारणमुच्यते ॥ ३ ॥

आरुरुक्षोः । मुनेः । योगं । कर्म । कारणं । उच्यते । योगारूढस्य । तस्य । एव । शमः । कारणं । उच्यते ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन योगविषे आरूढहोणेकीइच्छावान् मुनिकूं तायोगकीप्राप्तिविषे नित्यकर्महीं समाधानरूप कथनकऱ्याहै तथा तायोगविषेआरूढहूए तिसीहींपुरुषकूं ज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवासतै संन्यास हीं साधनरूप कथनकऱ्याहै॥३॥ इ०पदा०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ अंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक जोसर्वविषयसुखोंतें तीव्रवैराग्यहै ताकानाम योगहै ॥ ऐसेयोगविषेआरूढहो णेकीइच्छावाला जोपुरुषहै ताकानाम आरुरुक्षुहै ॥ और सोआरुरुक्षुपुरुष अंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतर आगे सर्व कर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासवालाहोणाहै ॥ यातैं अबी तकूं मुनिकह्याहै ॥ अथवा अबीहीं फलकीतृष्णातैंरहितहै या तैं ताकूं मुनिकह्याहै ॥ ऐसे आरुरुक्षुमुनिकेप्रति तायोगविषेआरूढहोणेवासतै अर्थात् तायोगकोप्राप्तिवासतै वेद विहित निष्काम अग्निहोत्रादिकनित्यनैमित्तिककर्महीं साधनरूपकरिकै हमनैं तथावेदभगवान्नैं विधानकऱ्याहैं ॥ और सोईहींकर्मीपुरुष जबी तिननिष्कामकर्मोंकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिरूपयोगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोपुरुष यो गारूढकह्याजावैहै ॥ ऐसेयोगारूढपुरुषकूं पुनः तेकर्म कर्त्तव्यनहींहैं ॥ किंतु तायोगारूढपुरुषकूं ज्ञाननिष्ठाकीप्रा प्तिवासतै सर्वकर्मोंकासंन्यासरूपशमहीं साधनरूपकरिकै विधानकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जितनैंकालपर्यंत इसअधि कारीपुरुषकूं अंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक वैराग्यकीप्राप्तिनहींभई ॥ तितनैंकालपर्यंत यहअधिकारीपुरुष तावैराग्यकी प्राप्तिवासतै फलकीइच्छातैंरहितहोइकै शास्त्रविहित नित्यनैमितिककर्मोंकूंहींकरै ॥ और जिसकालविषे यहअधिकारी पुरुष तिननिष्कामकर्मोंकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक तावैराग्यकूंप्राप्तहोवै ॥ तिसकालविषे यहअधिकारीपुरुष पुनः तिनकर्मोंकूंकरैनहीं ॥ किंतु तिसकालविषे श्रवणमननादिद्वारा ज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवासतैं सर्वकर्मोंकेत्यागरूपसंन्यासकूं हींकरै ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिपर्यंतहीं तेकर्म कर्त्तव्यहैं ॥ जीवतकालपर्यंत तेकर्म कर्त्तव्यनहींहै ॥ और यावज्जीवं यहश्रु तितौं वैराग्यहीनपुरुषऊपरिहै ॥ वैराग्यवान्पुरुषऊपरि यहश्रुतिहैनहीं इति ॥ ३ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ जिसयो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गारूढअवस्थाकूंप्राप्तहूआ यहअधिकारीपुरुष सर्वकर्मोंकेत्यागकरणेका अधिकारीहोवैहै ॥ तिसयोगारूढअवस्थाकूं यह अधिकारीपुरुष किसकालविषे प्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् ताकालका निरूपणकरेहै ॥

यदाहिनेंद्रियार्थेषुनकर्मस्वनुषज्जते ॥ सर्वसंकल्पसंन्यासीयोगारूढस्तदोच्यते ॥ ४ ॥

यदा । हि । न । इंद्रियार्थेषु । न । कर्मसु । अनुषज्यते । सर्वसंकल्पसंन्यासी । योगारूढः । तदा । उच्यते ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जिसकालविषे यहअधिकारीपुरुष शब्दादिकविषयोंविषे नहीं आसक्तहोवैहै तथा कर्मोंविषे नहीं आसक्तहोवैहै तथा सर्वसंकल्पोंतैंरहितहोवैहै तिसकालविषे योगारूढ कह्याजावैहै ॥४॥इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिस चित्तकेनिरोधकालविषे यहअधिकारीपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियोंके शब्दादिकविषयोंविषेअनुषंगकूं नहींकरेहै ॥ तथा नित्यकर्म नैमित्तिककर्म कम्यकर्म लौकिककर्म प्रतिषिद्धकर्म इत्यादिककर्मोंविषे अनुषंगकूं नहींकरेहै ॥ अर्थात् तिनशब्दादिकविषयोंविषे तथातिनकर्मोंविषे मिथ्यात्वबुद्धिकरिकै तथा अकर्त्ताअभोक्ताअद्वितीयपरमानंदस्वरूपआत्माकेदर्शनकरिकै तिनविषयोंतैं तथातिनकर्मोंतैं स्वप्रयोजनकेअभावकानिश्चयकरिकै जोपुरुष इनकर्मोंका मैंकर्त्ताहूं तथामेरेकूं यहशब्दादिकविषय भोगणेयोग्यहै याप्रकारकेअभिनिवेशरूप अनुषंगकूंनहींकरेहै ॥ याकारणतैंहीं जोपुरुष सर्वसंकल्पोंकासंन्यासीहै ॥ अर्थात् यहकर्म हमनैं करणाहै यहफल हमनैं भोगणाहै इसप्रकारके मनकीवृत्तिविशेषरूप जेसंकल्पहैं ॥ तथा तिनसंकल्पोंकेविषयभूत जेनानाप्रकारके कामहैं ॥ त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

था तिनकामोंकेसाधनरूप जितनैंकोकर्महैं ॥ तिनसर्वोंका त्यागकरयाहैजिसनैं ऐसाआसक्तितैंरहितपुरुष तिसकाल विषे समाधिरूपयोगविषेआरूढहोणेतैं योगारूढ कह्याजावैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ शब्दादिकविषयोंविषे तथाकर्मोंविषे जोअभिनिवेशरूप अनुषंगहै ॥ तथा ताअनुषंगकाकारणरूपजोसंकल्पहै ॥ यहदोनोंहीं तायोगारूढपणेकेप्रतिबंध कहैं ॥ तिसप्रतिबंधकका जिसकालविषे अभावहोवैहै ॥ तिसकालविषे यह अधिकारीपुरुष योगारूढ कह्याजावैहै ॥ इति ॥ ४ ॥ ※ ॥ किंवा जोअधिकारीपुरुष जिसकालविषे इसप्रकारका योगारूढहोवैहै ॥ सोअधिकारीपुरुष तिसकालविषे आपणेआत्माकूं आत्माकरिकैहीं इससंसारसमुद्रतैं उद्धारकरेहै ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष योगारू ढहोइकै आपणेआत्माकूं इससंसारसमुद्रतैं अवश्यकरिकै उद्धारकरै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

उद्धरेदात्मनात्मानंनात्मानमवसादयेत् ॥ आत्मैवह्यात्मनोबंधुरात्मैवरिपुरात्मनः ॥ ५ ॥

उद्धरेत्[2]आत्मना[3]आत्मानं[4]न[5]आत्मानं[6]अवसादयेत्[7]आत्मा[8]एव[9]हि[10]आत्मनः[11]बंधुः[12]आत्मा[13]एव[14]रिपुः[15]आत्मनः ॥ इतिपद०

हेअर्जुन यहअधिकारीपुरुष [3]आपणेजीवात्माकूं विवेकयुक्तमनकरिकै इससंसारतैं उद्धारकरै ताजीवात्माकूं संसारसमु द्रविषे [5]नहीं [6]डुबावै जिस[7]कारणतैं [8]आपणाआत्मा [9]हीं [10]आत्माका [11]बंधुहै तथा[12]आत्मा [13]हीं [14]आत्माका [15]शत्रुहै॥५॥इतिप०

॥ टीका ॥ हेअर्जुन लोकप्रसिद्धसमुद्रकीन्यांई यहसंसारसमुद्रभी स्त्री पुत्र धन मित्र इत्यादिकपदार्थोंकूंविषयकरणेहा रे महामोहरूप अनेकआवर्त्तोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा काम क्रोध लोभ अहंकार ममकार इत्यादिकचित्तकेविकाररूप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनेकमहाग्राहोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा अनेकप्रकारके महारोगरूप तिमिंगिलोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा अशनायापिपासादि रूप महान्कल्लोलोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा तीनतापरूप वडवानलकरिकैयुक्तहै ॥ तथा प्रियपदार्थोंकेवियोगजन्य अ नेकप्रकारकेप्रलापरूप महाध्वनिरूपशब्दकरिकैयुक्तहै ॥ तथा नित्यनिरंतर दुर्वासनारूप शैवालपटलकरिकैयुक्तहै ॥ तथा विषयरूपविषकरिकै परिपूर्णहै ॥ इसप्रकारकेसंसारसमुद्रविष निमग्नहूआ जोयहजीवात्माहै ॥ तिसआपणे जीवात्माकूं यहअधिकारीपुरुष विवेकयुक्तशुद्धमनकरिकै तासंसारसमुद्रतैं बाह्यनिकासे ॥ अर्थात् विषयासक्तिकाप रित्यागकरिकै तिसयोगारूढताकूं संपादनकरै ॥ यहहीं जीवात्माका तासंसारसमुद्रतैं उद्धरणहै ॥ परंतु यहअधि कारीपुरुष तिनविषयोंविषेआसक्तिकरिकै आपणेआत्माकूं तासंसारसमुद्रविषे निमग्नकरैनहीं ॥ जिसकारणतैं यह आत्मा आपहीं आपणा हितकारीबंधुहैं ॥ अर्थात् इससंसारबंधनतैं मुक्तकरणेहाराहै ॥ आत्मातैंभिन्न दूसराकोईबं धु इसआत्माका हितकारीनहींहै ॥ काहेतैं इसलोकविषेप्रसिद्ध जितनैंकी स्त्री पुत्र भ्राता आदिकबांधवहैं ॥ तेबांध वतौं आपणेविषे स्नेहकीउत्पत्तिद्वारा तथाभरणपोषणकोचिंताद्वारा इसजीवके बंधनकेहींहेतुहोवैहैं ॥ यातैं तिनोंवि षे बंधुरूपता संभवतीनहीं ॥ और जैसे कोशकारजंतु आपहीं आपणा अहितकारीहोवैहैं ॥ तैसे विषयरूपबंधनग्र हविषेप्रवेशकरणेतैं यहआत्मा आपहीं आपणा अहितकारीशत्रु होवैहै ॥ दूसराकोई इसआत्माका शत्रुहैनहीं ॥ और जेलोकप्रसिद्धबाह्यशत्रुहैं ॥ तिनोंविषेभीइसआत्मानैंहीं शत्रुताकरीहै ॥ यातैं यहजीवात्मा आपहीं आपकाश त्रुहैइति ॥ ५ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ किसप्रकारकाआत्मा आपणा बंधुहोवैहै ॥ तथा किसप्रकारकाआत्मा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आपणा शत्रुहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् बंधुआत्माका तथाशत्रुआत्माका लक्षण कथनकरेहै ॥

बंधुरात्मात्मनस्तस्ययेनात्मैवात्मनाजितः ॥ अनात्मनस्तुशत्रुत्वेवर्त्तेतात्मैवशत्रुवत् ६

बंधुः।आँत्मा।आँत्मनः।तँस्य।येन।आत्मा।एँव।आँत्मना।जितँः।अँनात्मनः।तुँ।शँत्रुत्वे।वर्त्तेँत।आँत्मा।एँव।शँत्रुवत्।इतिप० ॥

हेअर्जुन जिस आत्मानैं यहसंघात विवेकयुक्तमनकरिकै हीं जीत्याहै तिससआत्माका स्वस्वरूपहीं आत्माका बंधुहै औरं अजितआत्माके शत्रुभावविषे बाह्यशत्रुकीन्यांई आपणाआत्मा हीं वर्त्तेहै ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसआत्मानैं यहदेहइंद्रियादिरूपसंघात केवल विवेकयुक्तशुद्धमनकरिकैहीं आपणेवशकऱ्याहै ॥ दूसरेकिसीशस्त्रादिकउपायोंकरिकै तासंघातकूंवशकऱ्यानहीं ॥ तिसआत्माका आपणाआत्माहींआत्माका बंधुहै ॥ काहेतैं जैसे शृंखलारूपबंधनयुक्तपुरुषकी यथाइच्छापूर्वक प्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे तिसआत्माकीभी यथाइच्छापूर्वक कहांभीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ और इसजीवात्माकी नेत्रादिकइंद्रियद्वारा जारूपादिकविषयोंविषे प्रवृत्तिहै साप्रवृत्तिहीं इसआत्माके अनेकप्रकारकेअनर्थकाहेतुहै ॥ साप्रवृत्ति तिनदेहइंद्रियादिकोंकेवशकरणेतैं निवृत्तहोइजावैहै ॥ यातैं विवेकयुक्तमनकरिकै तासंघातकूंवशकरणेहाराआत्मा आपहीं आपणाबंधुहै ॥ और जिसआत्मानैं तादेहइंद्रियादि रूपसंघातकूं विवेकयुक्तमनकरिकै आपणेवशनहींकऱ्याहै ॥ तिसआत्माका आपणा आत्मास्वरूपहीं बाह्यशत्रुकी न्यांई शत्रुभावविषे वर्त्तेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे शृंखलारूपबंधनतैंरहितपुरुष आपणीइच्छापूर्वक विचरेहै ॥ तैसे जि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सआत्मानैं विवेकयुक्तमनकरिकै तादेहइंद्रियादिरूपसंघातकूं आपणेवशनहींकऱ्याहै ॥ सोआत्माभी यथाइच्छापूर्वक शब्दादिकविषयोंविषेविचरेहै ॥ ताविषयपरायणप्रवृत्तिकरिकै सोआत्मा आपहीं आपणाशत्रुहोवैहै इति ॥ ६ ॥ ❋ ॥ अब तासंघातकेवशकरणेहारेआत्माकूं आपणाबंधुपणा स्पष्टकरिकैकथनकरेहैं ॥

जितात्मनःप्रशांतस्यपरमात्मासमाहितः ॥ शीतोष्णसुखदुःखेषुतथामानापमानयोः७

जितात्मनः । प्रशांतस्य । परमात्मा । समाहितः । शीतोष्णसुखदुःखेषु । तथा । मानापमानयोः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन शीतउष्णसुखदुःखकेप्राप्तहूएभी तथा मानअपमानकेप्राप्तहूएभी जोआत्मा जितात्माहै तथा प्रशांतहै तिसआत्माकाहीं परमात्मा समाधिकाविषयहोवैहै ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन चित्तकूं विक्षेपकोप्राप्तिकरणेहारे जे शीतउष्ण सुखदुःख इत्यादिकद्वंद्वधर्महैं ॥ तिनद्वंद्वधर्मोंकेविद्यमानहूएभी ॥ तथा चित्तकूंविक्षेपकीप्राप्तिकरणेहाराजो पूजारूपमानहै तथापराभवरूपअपमानहै ॥ तामानअपमानकेविमानहूएभी ॥ तिनशीतउष्णादिकोंकीप्राप्तिविषे समत्वबुद्धिकरिकै जोआत्मा जितात्माहै ॥ अर्थात् श्रोत्रादिकसर्वइंद्रिय जिसनैं आपणेवशकरेहैं ॥ तथा जोआत्मा प्रशांतहै ॥ अर्थात् सर्वत्रसमबुद्धिकरिकै रागद्वेषादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ ऐसे जीवात्माका स्वप्रकाशज्ञानस्वभावआत्मा समाहित क्या समाधिकाविषय होवैहै ॥ अर्थात् योगारूढहोवैहै ॥ अथवा (परमात्मा) इसवचनविषे परं आत्मा यहदोपद पृथक्करणे ॥ तहां परं यापदका केवल यहअर्थकरणा ॥ ताकरिकैयहअर्थ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सिद्धहोवैहै ॥ जोआत्मा जितात्माहै तथाप्रशांतहै ॥ तिसआत्माकाहीं केवलआत्मा समाहितहोवैहै ॥ तिसतैंभिन्नआत्मा का सोआत्मा समाहितहोवैनहीं ॥ यातैं यहजीवात्मा जितात्मा तथाप्रशांत अवश्यकरिकैहोवै इति ॥७॥ ॥ किंच

ज्ञानविज्ञानतृप्तात्माकूटस्थोविजितेंद्रियः ॥ युक्तइत्युच्यतेयोगीसमलोष्टाश्मकांचनः८

ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा । कूटस्थः । विजितेंद्रियः । युक्तः । इति । उच्यते । योगी । समलोष्टाऽश्मकांचनः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन ज्ञानविज्ञानकरिकैतृप्तहूआहैचित्तजिसका तथासर्वविक्रियातैंरहित तथाजीत्येहूएहैंइंद्रियजिसनैं तथा समानहैमृत्पिंडपाषाणकांचनजिसकूं ऐसायोगीपुरुष योगारूढ इंसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ ८॥ इतिप० ॥

॥ टीका ॥ गुरुकेउपदेशतैंउत्पन्नभईजा शास्त्रउक्तपदार्थोंकूंविषयकरणेहारीबुद्धिहै ताबुद्धिकानाम ज्ञानहै ॥ और ता बुद्धिविषयक अप्रामाण्यशंकाकीनिवृत्तिहैफलजिसका ऐसाजोविचारहै ताविचारकरिकै तिसीप्रकार तिनशास्त्र उक्तपदार्थोंका जो आपणेअनुभवकरिकै अपरोक्षकरणाहै ताकानाम विज्ञानहै ॥ ऐसे ज्ञान विज्ञान दोनोंकरिकै तृप्तहूआहै आत्मा क्या चित्त जिसका ताकानाम ज्ञानविज्ञानतृप्तात्माहै ॥ याकारणतैंहीं जोपुरुष कूटस्थहै अर्थात् जैसे लुहारपुरुषका कूट चलायमानताहैंरहितहोवैहै ॥ तैसे जोपुरुष विषयोंकेसमीपप्राप्तहूएभी तथातिन विषयोंकेभोगणेविषेसमर्थहूआभी चलायमानहोतानहीं ॥ याकारणतैंहीं जोपुरुष विजितेंद्रियहै ॥ तहां रागद्वेषपू र्वक जोशब्दादिकविषयोंकाग्रहणहै तिसतैं निवृत्तकरेहैंश्रोत्रादिकइंद्रियजिसनैं ताकानाम विजितेंद्रियहै ॥ विजितें

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

द्रियहोणेतैंहीं जोपुरुष समलोष्टाऽश्मकांचनहै ॥ अर्थात् यहवस्तु हमारेकूं ग्रहणकरणेयोग्यहै यहवस्तु हमारेकूं परित्यागकरणेयोग्यहै याप्रकारकी ग्रहणत्यागबुद्धितैंरहितहोणेतैं समानहै लोष्ठ कया मृत्पिंड तथाअश्म कया पाषाण तथाकांचन कया सुवर्ण जिसकूं ॥ ऐसा परमहंसपरिव्राजक योगो परवैराग्यरूपयोगकरिकैयुक्तहूआ योगारूढ इसनामकरिकै कह्याजावैहै इति ॥ ८ ॥ * ॥ किंवा जिसपुरुषकी शत्रुमित्रादिकोंविषे समबुद्धिहै ॥ सोपुरुषतौं सर्वयोगोजनोंतैं श्रेष्ठहै ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबंधुषु ॥ साधुष्वपिचपापेषुसमबुद्धिर्विशिष्यते ॥ ९ ॥

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबंधुषु । साधुषु । अपिच । पापेषु । समबुद्धिः । विशिष्यते ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन सुहृदमित्रअरिउदासीनमध्यस्थद्वेष्यबंधुइनसर्वोंविषे तथासाधुवोंविषे तथापापीयोंविषे तथा अन्यसर्वप्राणीयोंविषेसमबुद्धिकरणेहारापुरुष सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ प्रतिउपकारी नहींअपेक्षाकरिकै पूर्वस्नेहतैंविनाहीं तथापूर्वसंबंधतैंविनाहीं जोपुरुष उपकारकरेहै ताकानाम सुहृदहै ॥ और पूर्वस्नेहकीअपेक्षाकरिकैहीं जोपुरुष उपकारकरेहै ताकानाम मित्रहै ॥ और स्वकृतअपकारको नहींअपेक्षाकरिकै केवल आपणेक्रूरस्वभावतैंहीं जोपुरुष अपकारकरेहै ताकानाम अरिहै ॥ और परस्परविवादकरतेहूएजेदोपुरुषहैं तिनदोनोंपुरुषोंके हितकी तथाअहितकी नहींइच्छाकरताहूआ जोपुरुष तिनदोनोंकीउपे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्षाहींकरेहै ताकानाम उदासीनहै ॥ और परस्पर विवादकरतेहूएजेदोपुरुषहैं ॥ तिनदोनोंकेहितकोइच्छाकरणेहारा जोपुरुषहै ताकानाम मध्यस्थहै ॥ और स्वकृतअपकारकोअपेक्षाकरिकैहीं जोपुरुष अपकारकरेहै ताकानाम द्वेष्य है ॥ और किंचित्संबंधकरिकै जोपुरुष उपकारकरेहै ताकानाम बंधुहै ॥ और जेपुरुष शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूंकरेहैं तिनोंकानाम साधुहै ॥ और जेपुरुष शास्त्रनिषिद्धअशुभकर्मोंकूंकरेहैं तिनोकानाम पापहै ॥ इसप्रकार सुहृद मित्र अरि उदासीन मध्यस्थ द्वेष्य बंधु साधु पाप इनसर्वोंविषे तथाअन्यसर्वप्राणीयोंविषे जोपुरुष समबुद्धिकरेहै ॥ अर्थात् कौनपुरुष किसकर्मवालाहै याप्रकार बुद्धिविषे नल्याइकै सर्वत्र रागद्वेषतैंरहितहै ॥ ऐसासमबुद्धिवालापुरुष सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ और किसीपुस्तकविषे (विशिष्यते) इसपदकेस्थानविषे (विमुच्यते) यहभीपाठहोवैहै ॥ तापक्षविषे यह अर्थकरणा ॥ सोसर्वत्रसमबुद्धिवालापुरुष इससंसारबंधनतैं मुकहोवैहै इति ॥ ९ ॥ ❋ ॥ तहांपूर्वश्लोकोंविषे श्रीभगवानूनैं योगारूढपुरुषका लक्षण तथाफल कथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् (योगीयुंजीतसततं) इसवचनतैंआदिलैकै (सयोगीपरमोमतः) इसवचनपर्यंत त्रेवीसश्लोकोंकरिकै तिसयोगारूढपुरुषके अंगोसहितयोगकूं कथनकरेहै ॥

योगीयुंजीतसततमात्मानंरहसिस्थितः ॥ एकाकीयतचित्तात्मानिराशीरपरिग्रहः १०

योगी । युंजीत । सतत । आत्मानं । रहसि । स्थितः । एकाकी । यतचित्तात्मा । निराशीः । अपरिग्रहः ॥ इतिपद० ॥

हेअर्जुन सोयोगारूढपुरुष एकांतदेशविषे स्थितहोइकै तथाएकाकीहोइकै तथायतचितात्माहोइकै त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

थानिराशीहोइकै तथापरिग्रहतैंरहितहोइकै आपणेचित्तकूं निरंतर समाहितकरै ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सोयोगारूढपुरुष आपणेचित्तकूंनिरंतर समाहितकरै ॥ अर्थात् क्षिप्त मूढ विक्षिप्त यातीनभूमिकावोंकापरित्यागकरिकै एकाग्र निरोध यादोनोंभूमिकावोंकरिकै ताचित्तकूं समाहितकरै ॥ किसप्रकारकाहूआसोयोगारूढपुरुष ताचित्तकूंसमाहितकरै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताप्रकारकूं वर्णनकरेहै (रहसिस्थितःइति) हेअर्जुन सोयोगारूढपुरुष योगकोसिद्धिविषे प्रतिबंधकरणेहारेजेदुष्टजनहैं तिनदुर्जनादिकोंतैंरहित किसीपर्वतकी गुहादिक एकांतदेशविषेस्थितहोवै ॥ तथाएकाकीहोवै ॥ अर्थात् गृहकेसर्वपरिजनोंकापरित्यागकरिकै संन्यासीहोवै ॥ तथा यतचित्तात्माहोवै ॥ ईहां चित्तनाम अंतःकरणकाहै और आत्मनाम इंद्रियसहितशरीरकाहै तेदोनों योगकेप्रतिबंधकव्यापारतैंरहितहूएहैंजिसके ताकानाम यतचित्तात्माहै ॥ तथा निराशीहोवै ॥ अर्थात् दोषदृष्टिपूर्वकवैराग्यकोदृढताकरिकै सर्वपदार्थोंकीतृष्णातैंरहितहोवै ॥ तथा अपरिग्रहहोवै ॥ अर्थात् योगकीसिद्धिविषे प्रतिबंधकरणेहारेजेपदार्थहैं तिनपदार्थोंकेसंग्रहतैंरहितहोवै ॥ इसप्रकारकाहोइकै सोयोगारूढपुरुष आपणेचित्तकूं समाहितकरै ॥ ईहां (सततं) यापदकरिकै तायोगाभ्यासकेकरणेविषे निरंतरता कथनकरी ॥ और (निराशीः) यापदकरिकै सत्कार कथनकऱ्या ॥ अर्थात् निरंतर सत्कारपूर्वक कऱ्याहूआयोगाभ्यासहीं फलकाहेतुहोवैहै इति ॥ १० ॥ ※ ॥ तहां तिसयोगकीसिद्धिवासतै प्रथम आसनकानियम अवश्यकरिकैचाहीये ॥ यातैं ताआसनकेनियमकूं श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शुचौदेशेप्रतिष्ठाप्यस्थिरमासनमात्मनः ॥ नात्युच्छ्रितंनातिनीचंचैलाजिनकुशोत्तरं ॥

शुचौ । देशे । प्रतिष्ठाप्या । स्थिरं । आसनं । आत्मनः । नाऽति । उच्छ्रितं । नं । अति । नीचं । चैल । अजिनकुशोत्तरं । इतिप०

हेअर्जुन सोयोगारूढपुरुष पवित्र देशविषे आपणे निश्चल आसनकूं स्थापनकरै जोआसन नहीं तौं अत्यंत ऊंचाहोवै तथा नहीं अत्यंत नीचाहोवै तथाकुशाकेऊपरिमृगचर्मतथावस्त्रकरिकैयुक्तहोवै ॥ ११ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोदेश स्वभावतैंहींशुद्धहोवै ॥ अथवा मृत्तिकादिकोंकेलेपनतैं जोदेश शुद्धकऱ्याहोवै ॥ तथा जो देश जनोंकेसमुदायतैंरहितहोवै ॥ तथा भयतैंरहितहोवै ॥ ऐसे गंगातट अथवा पर्वतकोगुहा आदिक समानस्थल विषे यहअधिकारीपुरुष आपणे निश्चलआसनकूं स्थापनकरै ॥ ईहां (स्थिरं) यापदकरिकै ताआसनकी निश्च लता कथनकरी ॥ सानिश्चलता मृत्तिकामयस्थलरूपआसनविषेहीं संभवैहै ॥ काष्ठमयआसनविषे सानिश्चलतासं भवतीनहीं ॥ यातैं स्थिरं याआसनकेविशेषणकरिकै काष्ठमयआसनकीव्यावृत्ति कथनकरी ॥ कैसाहोवैसोआसन ॥ अत्यंत ऊंचाभीनहींहोवै ॥ तथा अत्यंत नीचाभीनहींहोवै ॥ काहेतैं अत्यंतऊंचेआसनविषेतौं कदाचित् परवशताकरिकै नीचेभीपतनहोइजावैहै ॥ औरअत्यंतनीचेआसनविषेभी शीत उष्ण वर्षाजलकाप्रवेश पाषाणादिकोंकाघर्षण आदिकहोवै हैं ॥ ताकरिकै योगाभ्यासविषेविघ्न प्राप्तहोवेहै ॥ यातैंअत्यंतऊंचा तथाअत्यंतनीचा आसन करणानहीं ॥ किंतु दोनोंतैंवि लक्षणकरणा ॥ तथा तामृत्तिकामयस्थलरूप आसनऊपरि प्रथम कुशा विछावणे ॥ तिनकुशावोंऊपरि अत्यंतको

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मल मृगकाचर्म अथवा व्याघ्रकाचर्म विछावणा ॥ और तामृगादिचर्मऊपरि कोमलवस्त्र विछावणा ॥ यद्यपि (वस्त्रं दारिद्र्यदुःखायदारुरोगायचोपलः) इसस्मृतिवचननैं वस्त्रकानिषेधकऱ्याहै ॥ तथापि सोनिषेध केवल गृहस्थविषयक है॥ संन्यासीविषयक सोनिषेध हैनहीं॥ ईहां(आत्मनः)यापदकरिकै अन्यपुरुषकृतआसनकीनिवृत्ति कथनकरी॥जिसका रणतैं अन्यपुरुषकेइच्छाका कोईनियमनहींहै ॥ कदाचित् ताअन्यपुरुषकीइच्छाकृतकार्य आपणे अनुकूलभीहोवैहै कदा चित् प्रतिकूलभीहोवैहै ॥ यातैं अन्यपुरुषकृतआसनभो योगकेविक्षेपकाहींहेतुहोवैहै ॥ यातैं यहअभ्यासवान्पुरुष आप णाआसन आपहींस्थापनकरै इति ॥ ११ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारकेआसनकूंस्थापनकरिकै सोयोगा भ्यासवान्पुरुष क्याकार्यकरै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताकोकर्त्तव्यता कथनकरेहै ॥

तत्रैकाग्रंमनःकृत्वायतचित्तेंद्रियक्रियः॥उपविश्यासनेयुंज्याद्योगमात्मविशुद्धये॥१२॥

तत्र। एकाग्रं। मनः। कृत्वा।यतचित्तेंद्रियक्रियः। उपविश्य।आसने। युंज्यात्।योगं। आत्मविशुद्धये॥इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन तिस आसनऊपरि बैठकरिकै चित्तइंद्रियोंकीक्रियाकेजयवालापुरुष आपणेमनकूं एकाग्र करिकै अंतःकरणकीशुद्धिवासतै समाधिविषयक अभ्यासकरै ॥ इतिपदार्थः ॥१२॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सोयोगाभ्यासकरणेहारापुरुष तापूर्वउक्तआसनऊपरिबैठिकरिकै निग्रहकरीहै चित्तकीक्रिया तथाश्रोत्रादिकइंद्रियोंकीक्रिया जिसनैं ऐसाहूआ समाधिरूपयोगका अभ्यासकरै ॥ तहां शब्दादिकविषयोंकास्म

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रणकरणा यहचित्तकोक्रियाहै ॥ और तिनशब्दादिकविषयोंकाग्रहणकरणा यह श्रोत्रादिकइंद्रियोंकीक्रियाहैं ॥ ते दोनोंप्रकारकीक्रिया तासमाधिरूपयोगका प्रतिबंधकहोवैहैं ॥ यातैं ताअभ्यासवान्पुरुषनैं तिनक्रियावोंकानिग्रह अवश्यकरिकै कऱ्याचाहीये ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोयोगकेअभ्यासवालापुरुष किसप्रयोजनकोसिद्धिवासतै तासमाधिकाअभ्यासकरै ॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (आत्मविशुद्धयेइति) ईहां आत्मशब्दकरिकै अंतःकरणकाग्रहणकरणा ॥ ताअंतःकरणकीशुद्धिवासतै ताअभ्यासकूंकरै ॥ ईहां ताअंतःकरणविषे सर्वविक्षेपोंकीनिवृत्तिकृत जोअत्यंतसूक्षमताहै तासूक्षमताकरिकै प्राप्तभई जाब्रह्मसाक्षात्कारकीयोग्यताहै यहहीं ताअंतःकरणकीशुद्धिजानणी ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिः ॥) अर्थयह ॥ सूक्ष्मदर्शिपुरुषोंनैं एकाग्रसूक्षमबुद्धिकरिकैहीं यहप्रत्यक्अभिन्नब्रह्म साक्षात्कारकरीताहैइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोअधिकारीपुरुष क्याकरिकै तायोगाभ्यासकूंकरै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (एकाग्रंमनःकृत्वाइति) पूर्वकथनकरीहूईजे राजसतामसरूप क्षिप्त मूढ विक्षिप्त यहव्युत्थानरूप तीनभूमिकाहैं तिनोंकापरित्यागकरिकै विजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित एकप्रत्यक्ब्रह्मविषयक जोअनेकसजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहहै तावृत्तियोंकेप्रवाहकरिकैयुक्त जोसत्त्वगुणप्रधानमनहै ताकूं एकाग्रमनकहेहैं ॥ ऐसोमनकोएकाग्रताकूं दृढभूमिकायुक्तप्रयत्नतैंसंपादनकरिकै ताएकाग्रताकीवृद्धिवासतै संप्रज्ञातसमाधिरूपयोगका अभ्यासकरै ॥ सोब्रह्माकार मनकेवृत्तियोंकाप्रवाहहीं निदिध्यासन कह्याजावैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहां श्लोक (ब्रह्माकारमनोवृ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्तिप्रवाहोऽहंकृतिंविना ॥ संप्रज्ञातसमाधिःस्याद्ध्यानाभ्यासप्रकर्षतः ॥) अर्थयह ॥ अहंकृतितैंविनाहीं जो ब्रह्माकारम नकेवृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकानाम संप्रज्ञातसमाधिहै ॥ सासंप्रज्ञातसमाधि ध्यानाभ्यासकीअधिकताकरिकै सिद्धहोवैहै इति ॥ इसीअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् (योगीयुंजीतसततं । युंज्याद्योगमात्मविशुद्धये । युक्तआसीतमत्परः) इत्यादिकअनेकवचनोंकरिकै ताध्यानाभ्यासकेअधिकताकूं कथनकरताभयाहै इति ॥ १२ ॥ ❋ ॥ तहां (शुचौदेशेप्रतिष्ठाप्य) इत्यादिकश्लोकोंकरिकै पूर्व तायोगाभ्यासकेवासतै बाह्यआसनका कथनकरया ॥ अब ताबाह्यआसन ऊपरिबैठिकै सोयोगाभ्यासवान्पुरुष किसप्रकार आपणेशरीरका धारणकरै ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

समंकायशिरोग्रीवंधारयन्नचलंस्थिरः ॥ संप्रेक्ष्यनासिकाग्रंस्वंदिशश्चाननवलोकयन् १३

समं । कायशिरोग्रीवं । धारयन् । अचलं । स्थिरः । संप्रेक्ष्य । नासिकाग्रं । स्वं । दिशः । च । अनवलोकयन् ॥ इतिप० हेअर्जुन सोयोगाभ्यासवान्पुरुष दृढप्रयत्नवालाहोइकै कायशिरग्रीवायातीनोंकूं समान तथाअचल धारण करताहूआ तथा आपणे नासिकाकेअग्रकूं देखताहूआ तथा दिशावोंकूं नहींदेखताहूआ स्थितहोवै।१३।इ०पदा०

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सोयोगाभ्यासवान्पुरुष अत्यंतदृढप्रयत्नवालाहोइकै आपणे शरीरकेमध्यदेशरूपकायकूं तथा शिरकूं तथाग्रीवाकूं समान धारणकरताहूआ अर्थात् वक्रभावतैंरहित दंडकीन्यांई ऋजु धारणकरताहूआ ॥ तथा शिरकूं तथाग्रीवाकूं अचल धारणकरताहूआ अर्थात् कंपतैंरहित धारणकरताहूआ स्थितहोवैहै ॥ यद्यपि ताकायशि

22

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ग्रीवाकेऋजुधारणकीयेहूए वामदक्षिणभागविषेस्थित तथापृष्ठदेशविषेस्थित कोईभीवस्तु देखीजावैनहीं तथा स्पर्शकरीजावैनहीं ॥ तथापि मशकपिपीलिकादिकजीवोंकृत उपद्रवकेहूए कदाचित्शरीरके चलायमानताकी संभावनाहोइसकैहै ॥ ताकीनिवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं अचल यह विशेषण कथनकऱ्याहै ॥ तथा सोयोगाभ्यासवान्पुरुष आपणेनासिकाकेअग्रभागकूं चक्षुकरिकैदेखताहूआ स्थितहोवै ॥ ईहां चक्षुकरिकै नासिकाकेअग्रभागका जोदर्शन कथनकऱ्याहै सो चक्षुकरिकै रूपादिकविषयोंकूं नहींग्रहणकरै इसनियमकेवासतै कथनकऱ्याहै ॥ कोई नासिकाकेअग्रभागकेदेखगेवासतै सोवचन कथनकऱ्यानहीं ॥ जोकदाचित् तावचनकरिकै नासिकाकेअग्रभागका दर्शनहीं भगवान्कूं विवक्षितहोवै ॥ तौं मन तदाकारताकरिकै तानासिकाकेअग्रभागविषेहीं स्थितहोवैंगा ॥ ताकरिकै चित्तकी ब्रह्मविषेस्थिति नहींहोवैंगी ॥ और ब्रह्मविषे जोचित्तकास्थापनहै ताकानामहीं समाधिहै ॥ यहहींसमाधिस्वरूप श्रीभगवान्नैं (आत्मसंस्थंमनःकृत्वा) इसवचनकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यातैं नासिकाकेअग्रभागकादेखणा रूपादिकोंकेअग्रहणकूं लखावैहै ॥ तथा चक्षुइंद्रियके चंचलताकीनिवृत्तिवासतैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे (संप्रेक्ष्यनासिकाग्रं) यावचनकरिकै श्रीभगवान्कूं चक्षुकरिकै रूपादिकविषयोंकाअग्रहण विवक्षितहै ॥ तैसेश्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै शब्दादिकविषयोंकाअग्रहणभी विवक्षितहै ॥ काहेतैं जैसे चक्षुइंद्रियकाव्यापार योगकाप्रतिबंधकहै ॥ तैसे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेव्यापारभी तायोगकेप्रतिबंधकहैंइति ॥ तथा सोयोगाभ्यासवान्पुरुष पूर्वपश्चिमादिकदिशावोंकूं नहींदेखताहूआ स्थितहोवै ॥ यद्यपि नासिकाकेअग्रभागकेदेखणेकरिकैहीं दिशादिकसर्वपदार्थों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कदेखणेकानिषेध सिद्धहोवैहै ॥ यातैं पृथक् तिनदिशावोंकेदेखणेकानिषेधकरणा संभवतानहीं ॥ तथापि कदाचित् तिनपूर्वपश्चिमादिकदिशावोंविषे किसीभयानक विपरीतशब्दकेउत्पन्नहूए तिनदिशावोंकेदेखणेकी संभावनाहोइस कैहै ॥ सो ऐसेविपरीतशब्दकेउत्पन्नहूएभी तिनदिशावोंकूंदेखेनहीं ॥ और (दिशश्च) यावचनविषेस्थितजोचकार है ॥ ताचकारकरिकै आपणेशरीरकाग्रहणकरणा ॥ अर्थात् सोयोगाभ्यासवान्पुरुष तिसकालविषे आपणेशरीर कूंभी नहींदेखै ॥ जिसकारणतैं तिनदिशावोंकादेखणा तथाशरीरकादेखणा योगकाप्रतिबंधकहींहै ॥ इसप्रकार सर्व वृत्तियोंकानिरोधकरिकै सोयोगाभ्यासवान्पुरुष तिसआसनऊपरिस्थितहोवै इति ॥ १३ ॥ ※ ॥ किंच

प्रशांतात्माविगतभीर्ब्रह्मचारिव्रतेस्थितः ॥ मनःसंयम्यमच्चित्तोयुक्तआसीतमत्परः १४

प्रशांतात्मा । विगतभीः । ब्रह्मचारिव्रते । स्थितः । मनः । संयम्य । मच्चित्तः । युक्तः । आसीत । मत्परः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन सोअभ्यासवान्पुरुष प्रशांतआत्माहूआ तथाभयतैंरहितहूआ तथाब्रह्मचारीकेव्रतविषे स्थितहूआ तथा मनकूं निग्रहकरिकै मेरेविषेचित्तवालाहूआ तथामैंपरमेश्वरपरायणहूआ संप्रज्ञातसमाधिमानहूआ स्थितहोवै १४इ०

॥ टीका ॥ रागद्वेषादिकोंकेकारणकीनिवृत्तिकरिकै प्रशांतहूआहै क्या रागद्वेषादिकोंतैंरहितहूआहै आत्मा क्या अंतःकरण जिसका ताकानाम प्रशांतात्माहै ॥ तथाशास्त्रकेदृढनिश्चयकरिकै निवृत्तहोइगयाहैभय जिसका ताकाना म विगतभीहै ॥ तहां सर्वकर्मोंकात्यागकरणा हमारेकूं युक्तहै अथवा नहींयुक्तहै याप्रकारकी ताकर्मोंकेत्यागविषेजा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शंकाहै ताशंकाकानाम भयहै ॥ सोशंकारूपभय जिसका शास्त्रकेदृढनिश्चयकरिकै निवृत्तहोइगयाहै ॥ तथा ब्रह्मच
र्य गुरुशुश्रूषा भिक्षाभोजन इत्यादिकजोब्रह्मचारीकाव्रतहै ॥ ताव्रतविषेस्थितहोइक आपणेमनकूं विषयाकारवृत्ति
योंतैंशून्यकरिकै मैंप्रत्यक्चैतन्यरूपपरमेश्वरकेसगुणरूपविषे अथवा निर्गुणरूपविषे चित्तहैजिसका ताकानाम म
च्चित्तहै ॥ अर्थात् जोपुरुष मैंपरमेश्वरविषयकहीं चित्तवृत्तियोंकेप्रवाहवालाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् चिंतनकरणेयोग्य
स्त्री पुत्र धनादिक प्रियपदार्थोंकेविद्यमानहूए सो मच्चित्तपणा कैसेहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्
कहेहै (मत्परःइति) मैंपरमेश्वरहीं परमानंदस्वरूपहोणेतैं परमपुरुषार्थरूपहूं अर्थात् परमप्रियरूपहूं जिसकूं ताका
नाम मत्परहै ॥ ऐसामत्परपुरुष अन्यपदार्थोंकूं प्रियरूपजाणतानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (तदेतत्प्रेयःपुत्रात्प्रेयोवित्तात्प्रे
योऽन्यस्मात्सर्वस्मादंतरतरंयदयमात्माइति ॥) अर्थयह ॥ जोआनंदस्वरूपआत्मा देहइंद्रियप्राणमनबुद्धिआदिकसर्व
पदार्थोंतैं अत्यंत अंतरहै ॥ सोयहआत्मादेव पुत्रतैंभीप्रियहै तथाधनतैंभीप्रियहै तथाअन्यसर्वपदार्थोंतैंभीप्रियहै इति ॥
इसप्रकार विषयाकारसर्ववृत्तियोंकानिरोधकरिकै एकभगवत्आकार कीयाहै चित्तकेवृत्तियोंकाप्रवाह जिसनैं ऐसा
संप्रज्ञातसमाधिरूपयोगवालापुरुष यथाशक्तिपरिमाण तहांस्थितहोवै ॥ स्वइच्छाकरिकै शीघ्रहीं तहांतैंउठैनहीं इति ॥
ईहां (मच्चित्तः मत्परः) यादोनोंपदोंका श्रीभाष्यकारोनैं यहअर्थकऱ्याहै ॥ जैसे कोईविषयासक्तरागीपुरुष आपणेचि
त्तविषे निरंतरस्त्रीकाचिंतनकरताहूआ स्त्रीचित्ततौं होवैहै ॥ परंतु सोरागीपुरुष तास्त्रीकूं परत्वरूपकरिकै तथाआराध्य
त्वरूपकरिकै ग्रहणकरतानहीं ॥ किंतु सोरागीपुरुष महाराजाकूं अथवा किसोदेवताकूं परत्वरूपकरिकै तथाआराध्यत्व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूपकरिकै ग्रहणकरेहै ॥ और यहअधिकारीपुरुषतौं एकमैंपरमेश्वरविषेहीं मच्चित्तहोवैहै तथामत्परहोवैहै ॥ अर्थात् सर्वआराध्यत्वरूषकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहींमानेहैइति ॥ इसप्रकारके भाष्यकारोंकेव्याख्यानतैं पूर्वउक्तकिंचित्विलक्षणव्याख्यानकूंकरिकै तिसटीकाकारनैं श्रीभाष्यकारोतैं इसप्रकार आपणीन्यूनता कथन करीहै ॥ तहां श्लोक ॥ (व्याख्यातृत्वेपिमेनात्रभाष्यकारेणतुल्यता ॥ गुंजायाःकिंनुहेम्नैकतुलारोहेपितुल्यता ॥) अर्थयह ॥ इसगीताकेव्याख्यानकरणेहारेभी हमारी भगवान्भाष्यकारोंकेसाथितुल्यताहोवैनहीं ॥ जैसे एकहींतुलाविषेसुवर्णकेसाथि आरूढहूएजेगुंजाहैं तिनगुंजावोंकी तासुवर्णकेसाथि तुल्यताहोवैनहीं ॥ तैसे एकहींगीताशास्त्रकेव्याख्यानकरणेविषेप्रवृत्तहूए जोश्रीभाष्यकारहैं तथा मैंटीकाकारहूं ॥ तिसहमारी श्रीभाष्यकारोंकेसाथि तुल्यताहोवैनहीं इति ॥ १४ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार संप्रज्ञातसमाधिरूपयोगकरिकै स्थितहूआजोपुरुषहै तिसपुरुषकूं कौंनफलप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताकेफलका कथनकरैहै ॥ अधिकारीजनोंकूं तासमाधिरूपयोगविषे प्रवृत्तकरणेवासतै ॥

26

युंजन्नेवंसदात्मानंयोगीनियतमानसः।शांतिंनिर्वाणपरमांमत्संस्थामधिगच्छति १५॥

युंजन्[३] । एवं[१] । सदा[४] । आत्मानं[२] । योगी । नियतमानसः[६] । शांतिं[९] । निर्वाणपरमां । मत्संस्थां । अधिगच्छति[७] । इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन पूर्वउक्तप्रकारसैं आपणेमनकूं समाहितकरताहूआ सर्वदा योगाभ्यासवान्पुरुष मनकेनिरोधवालाहूआ मेरास्वरूपभूत निर्वाणपरम शांतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन एकांतदेशविषेस्थितितैंआदिलैके जितनैंकीनियम पूर्वकथनकरेहैं ॥ तिनसर्वनियमोंकरिकै आप
णेमनकूं अभ्यासवैराग्यकेबलतैं समाहितकरताहूआ सर्वदा योगाभ्यासपरायण जोयोगीपुरुषहै ॥ सोयोगीपुरुष
नियतमानसहूआ शांतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहां अभ्यासकीदृढताकरिकै निरुद्धकरयाहैआपणामन जिसनैं ताकानाम
नियतमानसहै ॥ अथवा ताअभ्यासकीदृढताकरिकै निवृत्तकरेहैंमनकेवृत्तिरूपविकार जिसनैं ताकानाम नियतमानस
है ॥ ऐसानियतमानस सोयोगीपुरुष सर्ववृत्तियोंकीउपरामतारूप प्रशांतवाहितानामा शांतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ कैसी
हैसाशांति ॥ निर्वाणपरमाहै ॥ अर्थात् जाशांति तत्त्वसाक्षात्कारकीउत्पत्तिद्वारा सर्व काम कर्म अविद्याकीनिवृत्ति
रूपमुक्तिविषे परिअवसानवालीहै ॥ पुनःकैसीहैसाशांति मत्संस्थाहै ॥ अर्थात् मेरेपरमानंदस्वरूपकीनिष्ठारूपहै ॥ इस
प्रकारकीशांतिकूंहीं सोयोगीपुरुष प्राप्तहोवैहै ॥ अनात्मवस्तुवोंकूं विषयकरणेहारे सांसारिकऐश्वर्यतारूप जेसमाधिके
फलहैं तिनफलोंकूं सोयोगीपुरुष प्राप्तहोतानहीं ॥ काहेतैं तेऐश्वर्यरूपसिद्धियां मोक्षके उपयोगीसमाधिके विघ्नरूप
हींहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता पतंजलिभी योगसूत्रोंविषे समाधिके तिसतिसव्यावहारिकसिद्धिरूपफलोंकूंकथनकरिकै कहताभ
याहै ॥ तहांसूत्रद्वयं ॥ (तेसमाधावुपसर्गाव्युत्थानेसिद्धयः ॥१॥ स्थान्युपमंत्रणेसंगस्मयाऽकरणंपुनरनिष्टप्रसंगात् ॥ २॥)
अर्थयह ॥ पूर्वकथनकरीहूई नानाप्रकारकीसिद्धियोंकरिकैहीं यहयोगीपुरुष कृतकृत्यहोवैंगा ॥ ऐसीआशंकाकरि
कै श्रीपतंजलिभगवान् कहेहै ॥ मोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरणेहारेसमाधिविषे प्रीतिमान्जोयोगीपुरुषहै ॥ तिसयोगी
पुरुषकूंतौं तेपूर्वउक्तव्यावहारिकसिद्धियां विघ्नरूपहींहोवैहैं ॥ यातैं मोक्षकेप्राप्तिकीइच्छावान्पुरुष तिनप्रतिबंधकसिद्धि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

योंकीउपेक्षाहींकरै ॥ जिसकारणतैं आत्मज्ञानतैंविना कोटीसिद्धियोंकरिकैभी साकृतकृत्यताहोवैनहीं ॥ और जोयोगी पुरुष तिसमोक्षकेहेतुभूतसमाधिविषे प्रीतिमान्नहींहै किंतु व्युत्थानविषेहीं प्रीतिमान्है ॥ तिसयोगीपुरुषकूंतौं तेव्यावहारिकसिद्धियांहींहोवैहैंइति ॥ १ ॥ तहां तिसतिसस्थानकेअधिपतिरूप जेमहेंद्रादिकदेवताहैं ॥ तेदेवता तिसयोगीपुरुषकेप्रति याप्रकारकीप्रार्थनाकरेहैं ॥ हेयोगिन् इसस्वर्गादिकस्थानोंविषे आप आइकैनिवासकरौ ॥ तथा रमणकरौ ॥ देखो यहदेवकन्या कैसीरमणीकहै ॥ तथा यहदिव्यभोग कैसेरमणीकहैं ॥ तथा यहरसायनअमृतादिक जरामृत्युकेनिवृत्तकरणेहारेहैं ॥ तथा यहविमानकैसेदिव्यहैं ॥ ऐसेदिव्यपदार्थोंकूं ईहांआइकैभोगो ॥ इसप्रकार तिनदेवतावोंकरिकैप्रार्थनाकरयाहूआभी सोयोगीपुरुष तिनपदार्थोंविषे कामरूपसंगकूं कदाचित्भी नहींकरै ॥ तथा इसहमारेयोगका बहुतआश्चर्यरूपप्रभावहै ॥ जिसकरिकै साक्षात्देवताभी हमारेआगे इसप्रकारकीप्रार्थनाकरतेहैं ॥ याप्रकारकेगर्वरूपस्मयकूंभी सोयोगीपुरुष कदाचित्नहींकरै ॥ किंतु सोयोगीपुरुष तिनविषयभोगोंविषे याप्रकारकीदोषदृष्टिकरै ॥ बहुतकालतैं इससंसाररूप अग्निविषेजलतेहूए तथाजन्ममरणकेप्रवाहरूपचक्रविषे आरूढहूए हमनैं किसीपूर्वलेपुण्यकर्मकेप्रभावतैं बहुतप्रयत्नसैं यह क्लेशकर्मरूपअंधकारकेनाशकरणेहारा योगरूपीदीपक प्रज्वलितकऱ्याहै ॥ तायोगरूपदीपककेनाशकरणेहारा यह तृष्णाकाजनक विषयरूपवायुहै ॥ ऐसेयोगरूपदीपककेप्रकाशकूंप्राप्तहोइकैभोमैं अनेकवार इसविषयरूपमृगतृष्णाकेजलकरिकैवंचितहूआभी पुनःतिनविषयोंकी प्राप्तिवासतै इससंसाररूपअग्निका आपणेकूंकाष्ठरूप किसवासतैकरौं ॥ किंतु पुनःऐसाकरणा हमारेकूंयोग्यनहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है ॥ यातैं कृपणपुरुषोंकरिकैप्रार्थनाकरणेयोग्य तथास्वप्नपदार्थोंकीन्यांई मिथ्यारूप ऐसेभोगोंतैं हम उपरामहैं ॥ इसप्रकार तिनभोगोंविषे दोषदृष्टिकरिकै सोयोगीपुरुष तासमाधिकूंदृढकरै ॥ और ताकामनारूपसंगविषे पतित ताकूं तथातागर्वरूपस्मयविषे कृतकृत्यताकूं मानणेहारेपुरुषकूं योगकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ तासंगस्मयकेवशतैं तायोग भ्रष्टपुरुषकूं पुनः अनिष्टरूपसंसारकोप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं तासंगस्मयदोनोंकाजोनहींकरणाहै सोकैवल्यमोक्षकेविघ्न केनिवृत्तिकाउपायहै इति ॥ २ ॥ तहां (युंजन्नेवंसदात्मानं) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं एकाग्रभूमिकाविषे संप्रज्ञातसमाधि कथनकऱ्या ॥ और (नियतमानसः) इसवचनकरिकै निरोधभूमिकाविषे तासंप्रज्ञातसमाधिकाफल भूत असंप्रज्ञातसमाधि कथनकऱ्या ॥ और (शांतिं) यापदकरिकै तानिरोधसमाधिजन्यसंस्कारोंकाफलभूत प्रशां तवाहिता कथनकरी ॥ और (निर्वाणपरमां) यावचनकरिकै धर्ममेघनामासमाधिकूं तत्त्वज्ञानद्वारा कैवल्यमुक्तिकी हेतुता कथनकरी ॥ और (मत्संस्थां) यावचनकरिकै वेदांतसिद्धांतविषेअंगीकृत कैवल्यमोक्ष कथनकऱ्या ॥ इनसमा धियोंका योगशास्त्रविषे विस्तारतैं निरूपणकऱ्याहै ॥ जिसकारणतैं इसप्रकारकेमहान्फलकीप्राप्तिकरणेहारा यह योगहै ॥ तिसकारणतैं यह अधिकारीपुरुष महान्प्रयत्नकरिकैभी तायोगकासंपादनकरै इति ॥ १५ ॥ * ॥

अब श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकै तायोगाभ्यासवान्पुरुषके आहारादिकोंकेनियमकूं कथनकरेहै ॥

नात्यश्नतस्तुयोगोस्तिनचैकांतमनश्नतः।नचातिस्वप्नशीलस्यजाग्रतोनैवचार्जुन १६॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नं । अति । अश्नतः । तु । योगः । अस्ति । न । च । एकांतं । अनश्नतः । न । च । अति ।
स्वप्नशीलस्य । जाग्रतः । न । एव । च । अर्जुन ॥ १६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन अत्यंत अन्नकेभोजनकरणेहारेका भी सोयोग नहीं सिद्धहोवैहै तथा अत्यंत नहींभो
जनकरणेहारेकाभी सोयोग नहीं सिद्धहोवैहै तथा अत्यंत निद्रालुपुरुषकाभी सोयोग नहीं सिद्ध
होवैहै तथा अत्यंतजागणेहारेपुरुषका भी सोयोग नहीं सिद्धहोवैहै ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जो अन्न भोजनकऱ्याहूआ जठराग्निकरिकै जीर्णभावकूंप्राप्तहोइजावैहै तथाशरीरविषे कार्यकरणेकी सामर्थ्यताकूं संपादनकरेहै ॥ सोअन्न शास्त्रविषे आत्मसंमित कह्याजावैहै ॥ ताआत्मसंमितअन्नकूं नहींभोजनकरिकै जोपुरुष लोभकेवशतैं अधिकअन्नकूं भोजनकरेहै ॥ तिसपुरुषकूंभी सोसमाधिरूपयोग सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं सो भोजनकऱ्याहूआअधिकअन्न अजीर्णभावकूंप्राप्तहोइकै तिसपुरुषविषे धातुवोंकीविषमताद्वारा नानाप्रकारकी ज्व रशूलादिकव्याधियोंकूं उपन्नकरेहै ॥ तिनज्वरशूलादिकव्याधियोंकरिकैपीडितहूए पुरुषतैं सोयोगाभ्यास कऱ्याजावै नहीं ॥ और जोपुरुष अत्यंत अन्नकाभोजनहीं नहींकरेहै अथवा अत्यंत अल्पअन्नकाभोजनकरेहै ॥ तिसपुरुषकाभी सोयोग सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं अन्नकेनहींभोजनकरणेतैं अथवा अत्यंतअल्पभोजनकरणेतैं शरीरका रसादिकधा तुवोंकरिकै पोषणहोवैनहीं ॥ ताकरिकै सोशरीर किसीभीकार्यकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ तथा क्षुधाकरिकैपीडितपु रुषकी वृत्तिभी एकाग्रहोवैनहीं ॥ ऐसे असमर्थशरीरतैं सोयोगाभ्यास सिद्धहोइसकैनहीं ॥ यहवार्त्ता शतपथकीश्रु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिविषेभीकथनकरीहै॥तहांश्रुति ॥ (यदुहवाआत्मसंमितमन्नंतदवतितन्नहिनस्तियद्भूयोहिनस्तितद्यत्कनीयोनतदवति इति ॥) अर्थयह ॥ जोआत्मसंमितअन्न भोजनकऱ्याजावैहै ॥ सोअन्न ताभोक्तापुरुषविषे वेदअर्थकेअनुष्ठानकीयोग्य तासंपादनकरिकै ताअनुष्ठानद्वारा ताभोक्तापुरुषका रक्षणकरेहै ॥ सोआत्मसंमितअन्न धातुवोंकीविषमताकूंकरि कै ज्वरशूलादिकव्याधियोंकीउत्पत्तिद्वारा ताभोक्तापुरुषका हननकरैनहीं ॥ और ताआत्मसंमितअन्नतैं जोअधिकअ न्नभोजनकऱ्याजावैहै ॥ सोअधिकअन्नतौं धातुवोंकीविषमताद्वारा ज्वरशूलादिकव्याधियोंकूंउत्पन्नकरिकै ताभोक्ता पुरुषकूं हननकरेहै ॥ तथा तापुरुषके धर्मकाभीनाशकरेहै ॥ और जोअत्यंतअल्पअन्न भोजनकऱ्याजावैहै ॥ सोअ ल्पअन्नतौं ताभोक्तापुरुषकूं रक्षणकरैनहीं ॥ अर्थात् क्षुधाकोनिवृत्तिकरणेवासतै तथाधर्मकेनिर्वाहकरणेवासतै सम र्थहोवैनहीं ॥ यातैं योगाभ्यासवान्पुरुषनैं अत्यंतअधिकअन्नका तथाअत्यंतअल्पअन्नका तथाअत्यंतनहींभोजनका यातीनोंका परित्यागकरिकै सो आत्मसंमितअन्नहीं भोजनकरणाइति ॥ अथवा ॥ (पूरयेदशनेनार्द्धं तृतीयमुदकेनतु ॥ वायोःसंचरणार्थाय चतुर्थमवशेषयेत् ॥) अर्थयह ॥ यहयोगाभ्यासवान्पुरुष आपणेउदरके दोभागोंकूंतौं अन्नकरि कैपूरणकरै ॥ और तीसरेभागकूं जलकरिकै पूरणकरै ॥ और प्राणवायुके सुखपूर्वकसंचारवासतै चतुर्थभागकूं खा लीराखैइति ॥ इसप्रकार योगशास्त्रविषे अन्नकेभोजनकरणेका परिमाण कथनकऱ्याहै ॥ तिसपरिमाणतैं न्यूनपरि माण अथवा अधिकपरिमाण अन्नकेभोजनकरणेतैं सोयोग सिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु तिसयोगशास्त्रउक्तपरिमाण अन्न केभोजनतैंहीं सोयोग सिद्धहोवैहै ॥ और जोपुरुष अत्यंतनिद्रावालाहींहोवैहै ॥ तिसपुरुषकाभी सोयोग सिद्धहोवैन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हीं ॥ जिसकारणतैं सानिद्रा योगका प्रतिबंधकहींहै और जोपुरुष अत्यंत जाग्रतकूंहींकरेहै ॥ तिसपुरुषकाभी सो योग सिद्धहोवैनहीं ॥ काहेतैं अत्यंत जागरणकरणेतैं तायोगाभ्यासकालविषे अवश्यकरिकै निद्राकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ तहां (नैवचार्जुन) यावचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोचकार ईहांनहींकथनकरेहूएदोषोंके ग्रहणकरावणेवासतेहै ॥ तेदोष मार्कंडेयपुराणविषेकथनकरेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (नाध्मातःक्षुधितःश्रांतोनचव्याकुलचेतनः ॥ युंजीतयोगंरा जेंद्रयोगीसिद्ध्यर्थमात्मनः ॥ १ ॥ नातिशीतेनचैवोष्णेनद्वंद्वेअनिलान्विते ॥ कालेष्वेतेषुयुंजीतनयोगंध्यानतत्परः ॥ २॥) अर्थयह ॥ हेराजेंद्र यहयोगीपुरुष अत्यंतअन्नखाइकैफुल्याहूआ तथाअत्यंतक्षुधातुरहूआ तथाअत्यंतश्रमयुक्त हूआ तथाव्याकुलचित्तवालाहूआ योगकूं करैनहीं ॥ १ ॥ तथा अत्यंतशीतकालविषे तथाअत्यंतउष्णकालविषे त थाअत्यंतपवनकालविषे यहध्यानपरायणपुरुष तायोगकूंकरैनहीं इति ॥ १६ ॥ ❋ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे आहा रादिकोंकेनियमतैंरहितपुरुषकूं तायोगकीप्राप्तिहोवैनहीं याप्रकारकेव्यतिरेककरिकै तिनआहारादिकोंकेनियमविषे यो गकीकारणता कथनकरी ॥ अब तिनआहारादिकोंकेनियमवालेपुरुषकूं तायोगकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैहै याप्रकारके अन्वयकरिकैभी तिनआहारादिकोंकेनियमविषे तायोगकीकारणताकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

युक्ताहारविहारस्ययुक्तचेष्टस्यकर्मसु ॥ युक्तस्वप्नावबोधस्ययोगोभवतिदुःखहा॥ १७॥

युंक्ताहारविहारस्य । युंक्तचेष्टस्य । कर्मसु । युंक्तस्वप्नावबोधस्य । योगः । भवति । दुंःखहा ॥ इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन नियमतैंहैआहारतथाविहारजिसका तथाप्रणवजपादिककर्मोंविषे नियमतैंहैप्रवृत्तिजिसकी तथानियमतैंहैनि
द्रातथाजाग्रतजिसका ऐसेपुरुषकाहीं सोसमाधिरूपयोग दुःखकेनाशकरणेहारा सिद्धहोवैहै ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ हेअर्जुन अन्नरूपजोआहारहै तथागमनआगमनरूपजोविहारहै तेआहारविहारदानों युक्तहै क्या नियमपू
र्वकहैं जिसके ॥ तथाप्रणवादिकमंत्रोंकाजप तथाउपनिषदोंकापाठ इत्यादिकजेकर्महैं तिनकर्मोंविषेयुक्तहै क्या
कालकेनियमपूर्वकहै चेष्टा क्या प्रवृत्ति जिसकी ॥ तथा निद्रारूपजोस्वप्नहै तथाजाग्रतरूपजोप्रबोधहै तेदोनों यु
क्तहैं क्या कालकेनियमपूर्वकहैं जिसके ॥ ऐसेसाधनसंपन्नपुरुषकाहीं तिनसाधनोंकीदृढताकरिकै सोसमाधिरूपयोग
सिद्धहोवैहै ॥ तिनआहारविहारादिकोंकेनियमतैंरहितपुरुषका सोसमाधिरूपयोगसिद्धहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन्
इसप्रकारकेप्रयत्नविशेषकरिकै संपादनकऱ्याजोयोगहै ॥ तायोगकरिकै तिसयोगीपुरुषकूं कौनफल प्राप्तहोवैहै ॥
ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहैहै (दुःखहाइति) हेअर्जुन संसारसंबंधीसर्वदुःखोंकाकारण जाअविद्याहै ॥
ताअविद्याकेनाशकरणेहारीजाब्रह्मविद्याहै ॥ ताब्रह्मविद्याकेउत्पन्नकरणेहारा यहयोगहै ॥ यातैं यहसमाधिरूपयोग
ब्रह्मविद्याकीउत्पत्तिद्वारा मूलअविद्यासहित सर्वदुःखोंकेनिवृत्तिकाहेतुहै ॥ ऐसेमहानफलवाले इससमाधिरूपयोग
कूं यहअधिकारीपुरुष अवश्यकरिकै संपादनकरै ॥ तहां आहारकानियमतौं पूर्वश्लोकविषे (यदुहवा) इसश्रुतिवचन
करिकै तथा (पूरयेदशनेनार्द्धं) इसयोगशास्त्रकेवचनकरिकै कथनकरिआयेहैं ॥ और गमनआगमनरूपविहारकानियम
तौं (योजनान्नपरंगच्छेत्) अर्थयह योजनपरिमाणतैंअधिक नहींचले किंतु योजनपरिमाणके भीतरभीतर चलै इत्या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दिकवचनोंकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ और वाकादिकइंद्रियोंकेचपलताकाजोपरित्यागहै यहहीं तिनजपादिककर्मोंविषे चेष्टाका नियमहै ॥ और सूर्यकेअस्तकालतैंलैके पुनःउदयकालपर्यंत जितनीकीरात्रिहै ॥ तासंपूर्णरात्रिके समान तीनविभागकरणे ॥ तिन तीनोंविभागोंविषे प्रथमविभागविषे तथाअंत्यकेविभागविषेतौं जागरणकरणा ॥ और मध्यकेविभागविषे निद्राकरणी ॥ यहहीं जाग्रतका तथानिद्राका नियमहै ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेनियम योगशास्त्रविषेकथनकरेहैं इति ॥ १७ ॥ * ॥ तहां पूर्वप्रसंगकरिकै एकाग्रभूमिकाविषे संप्रज्ञातसमाधिकाकथन करया ॥ अब निरोधभूमिकाविषे असंप्रज्ञातसमाधिकेकहणेवासतै प्रारंभकरेहैं ॥

यदाविनियतंचित्तमात्मन्येवावतिष्ठते।निःस्पृहःसर्वकामेभ्योयुक्तइत्युच्यतेतदा१८॥

यदा[1]। विनियतं[2]। चित्तं[3]। आत्मनि[4]। एव[5]। अवतिष्ठते[6]। निःस्पृहः[7]। सर्वकामेभ्यः[8]। युक्तः[9]। इति[10]। उच्यते[11]। तदा[12]॥इतिपद०

हेअर्जुन जिसकालविषे निरुद्धहूआ चित्त आत्माविषे हीं स्थितहोवैहै तथासर्वविषयोतैं निस्पृहहोवैहै तिसकालविषे युक्त इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकालविषे यह अंतःकरणरूपचित्त आपणेस्वच्छस्वभावकेवशतैं स्वविषयकेआकारकूंग्रहणकरणेविषेसमर्थहूआभी परवैराग्यकेवशतैं सर्ववृत्तियोंकेनिरोधवालाहूआ तथारजतमतैंरहितहूआ प्रत्यक्चैतन्यस्वरूपआमाविषेहीं सर्वदा अचलस्थितहोवैहै ॥ तिससर्ववृत्तियोंकेनिरोधकालविषे समाधिरूपयोगकरिकैयुक्त कह्याजावैहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कौन युक्तकह्याजावैहै ऐसीशंकाकेहूए कहेहैं (निःस्पृहःसर्वकामेभ्यःइति) इसलोकके तथापरलोकके जितनैंकोविषय हैं तिनोंकानाम कामहै ॥ तिनविषयरूपसर्वकामोंतैं निवृत्तहूईहैतृष्णारूपस्पृहाजिसकी ताकानाम निःस्पृहहै ॥ ऐसा निःस्पृहपुरुष युक्त इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै दोषदृष्टिपूर्वकपरवैराग्यविषे असंप्रज्ञातसमाधि कोसाधनरूपता कथनकरी इति ॥ १८ ॥ ※ ॥ अब समाधिविषे सर्ववृत्तियोंतैंरहितहूएचित्तकेउपमानकूंकथनकरेहैं ॥

यथादीपोनिवातस्थोनेंगतेसोपमास्मृता।योगिनोयतचित्तस्ययुंजतोयोगमात्मनः १९

यथा । दीपः । निवातस्थः । नैं । इंगते । सा । उपमा । स्मृता । योगिनः । यतचित्तस्य । युंजतः । योगं । आत्मनः ॥ इतिपद०

हेअर्जुन जैसे वायुतैंरहितदेशविषेस्थित दीपक नहीं चलायमानहोवैहै सोईहीं दृष्टांत निरुद्ध चित्तवाले तथायोगकूं अनुष्ठानकरणेहारे योगीपुरुषके अंतःकरणका कथनकरयाहै ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः

॥ टीका ॥ हेअर्जुन दीपकेचलनकाहेतुजोवायुहै ॥ तिसवायुतैंरहितदेशविषेस्थित जोदीपकहै ॥ सोदीपक जैसे चलावनेहारेवायुकेअभावहोणेतैं चलायमानहोतानहीं ॥ तैसे जोयोगीपुरुष एकाग्रभूमिकाविषे संप्रज्ञातसमाधिरूपयोगवालाहै ॥ तथा अभ्यासकीबाहुल्यताकरिकै निरुद्धकरीहैंसर्वचित्तकीवृत्तियांजिसनैं ॥ तथा जोयोगीपुरुष निरोधभूमिकाविषे असंप्रज्ञातसमाधिरूपयोगकूं अनुष्ठानकरणेहाराहै ॥ ऐसेयोगीपुरुषकाजोअंतःकरणहै ॥ सोअंतःकरणतादीपककीन्यांई निश्चलहै तथासत्त्वगुणकीअधिकताकरिकै प्रकाशकहै ॥ यातैं तायोगीपुरुषकेअंतःकरणका योगशा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्रवेत्तापुरुषोंनैं सोनिश्चलदीपकरूपदृष्टांत कथनकरी अर्थात् जैसे सोदीपक चलायमानतातैंरहितहोवैहै ॥ तै
से तायोगीपुरुषकाअंतःकरणभी चलायमानतातैंरहितहोवैहैइति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (आत्मनः) यापदक
रिकै अंतःकरणकाग्रहणकऱ्यानहीं ॥ किंतु ताआत्मशब्दकरिकै प्रत्यक्आत्माकाहींग्रहणकऱ्याहै ॥ तहां (आत्मनः
योगंयुंजतः) याप्रकारतैं पदोकाअन्वयकरिकै आत्माविषयकयोगकूंकरणेहाराजोयोगीपुरुषहै ॥ याप्रकारकाअर्थ
कऱ्याहै ॥ सोइसव्याख्यानविषे दीपकरूपउपमानका कोईउपमेय सिद्धहोतानहीं ॥ दृष्टांतकानाम उपमानहै ॥ औ
र दार्ष्टांतिककानाम उपमेयहै ॥ किंवा इसव्याख्यानविषे (आत्मनः) यहपदहीं व्यर्थहोवैहै ॥ काहेतैं सर्वअवस्था
विषे ताचित्तकूं आत्माकारता स्वभावतैंहींसिद्धहै ॥ कोईयोगनैं ताचित्तकीआत्माकारता संपादनकरीतीनहीं ॥ किं
तु ताचित्तविषे कर्मजन्य जाकादाचितिक अनात्माकारताहै साअनात्माकारता तायोगनैं निवृत्तकरीतीहै ॥ यहवार्त्ता
संक्षेपशारीरकविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (स्वाभाविकीहिवियदन्विततायटादेःक्षीरादिवस्तुघटनापुनरन्य
हेतुः ॥ एवंधियामपिचिदन्विततोऽनिमित्तंशब्दादिवस्तुघटनाखलुकर्महेतुः ॥) अर्थयह ॥ घटादिकोंका आकाशकेसाथि
जोसंबंधहै सोतौं स्वामाविकहींहै ॥ किसीकेप्रयत्नकरिकैकऱ्यानहीं ॥ और तिसीघटादिकोंका क्षीरादिकपदार्थोंकेसा
थिजोसंबंधहै सोसंबंधतौं स्वाभाविकहैनहीं किंतु कर्मजन्यहै ॥ तैसे बुद्धियोंका जोचेतनकेसाथिसंबंधहै सोसंबंध किसी
कर्मजन्यनहींहै ॥ किंतु सोसंबंध स्वभावसिद्धहै ॥ और तिनबुद्धियोंका जोविषयोकेसाथिसंबंधहै ॥ सोसंबंधतौं केवल
कर्मजन्यहींहै ॥ स्वभावसिद्धहैनहींइति ॥ यातैं (आत्मनः) यहपद प्रत्यक्आत्माकावाचकनहींहै ॥ किंतु अंतःकरणरूप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दार्ष्टांतिकका बोधकहै ॥ अथवा इसव्याख्यानविषे दार्ष्टांतिककेलाभवासतै (यतचित्तस्य) यापदविषे (यतंचतत्चित्तं च) अर्थयह निरुद्धहूआ ऐसाजोचित्तहै याप्रकारका कर्मधारयसमास अंगीकारकरिकै ताचित्तकाहीं ग्रहणकरणा इति ॥ १९ ॥ ※ ॥ इसप्रकार सामान्यरूपतैं समाधिकाकथनकरिकै अब तिसीअसंप्रज्ञातनामा निरोधसमाधिकूं विस्तारतैंनिरूपणकरताहूआ श्रीभगवान् प्रारंभकरेहै ॥

यत्रोपरमतेचित्तंनिरुद्धंयोगसेवया ॥ यत्रचैवात्मनात्मानंपश्यन्नात्मनितुष्यति ॥२०॥

यत्र । उपरमते । चित्तं । निरुद्धं । योगसेवया । यत्र । च । एव । आत्मना । आत्मान । पश्यन् । आत्मनि । तुष्यति ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन योगाभ्यासकेसेवनकरिकै जिसपरिणामविशेषकेउत्पन्नहूए यहनिरुद्धहूआ चित्तं उपशमकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा जिसपरिणामकेहूए शुद्धअंतःकरणकरिकै प्रत्यक्चैतन्यआत्माकूं साक्षात्कारकरताहूआ ताआत्माविषे हीं तोषकूंप्राप्तहोवैहै ताकूं योगजानणा ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन निरंतर श्रद्धापूर्वक तायोगाभ्यासकेसेवनकरिकै जिसपरिणामविशेषकेउत्पन्नहूए यहनिरुद्धहूआचित्त एकवस्तुकूंविषयकरणेहारीवृत्तियोंकाप्रवाहरूप एकाग्रताकूं परित्यागकरिकै इंधनोंतैंरहितअग्निकीन्यांई उपशमकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् सोचित्त सर्ववृत्तियोंतैंरहितहोणेतैं सर्ववृत्तियोंकेनिरोधरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा ॥ जिसपरिणामविशेषकेउत्पन्नहूए रजतमकरिकैनहींपराभवकूंप्राप्तहूए शुद्धसत्त्वमात्ररूपअंतःकरणकरिकै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परमात्मातैंअभिन्न सत् चित् आनंदघन अनंत अद्वितीय प्रत्यक्आत्माकूं वेदांतप्रमाणजन्यवृत्तिकरिकै साक्षात्का
रकरताहूआ तिसपरमानंदघनआत्माविषेहीं तोषकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ताआत्मातैंभिन्न देहइंद्रियादिरूपसंघातविषे त
थातासंघातकेभोग्यपदार्थोंविषे तुष्टिकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (समोदतेमोदनीयंहिलब्ध्वा ॥) अर्थयह ॥ ब्रह्मातैं
आदिलैकेस्तंबपर्यंत सर्वप्राणीयोंकूं आनंदकीप्राप्तिकरणेहारा जोपरमात्मादेवहै तापरमात्मादेवकूंसाक्षात्कारकरि
कै सोविद्वान्पुरुष मैंकृतार्थहूं याप्रकारकेमोदकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ तिससर्ववृत्तियोंकेनिरोधरूप अंतःकरणकेपरिणा
मकूंहीं योगशब्दका अर्थरूप जानणा ॥ इसप्रकार (तंविद्याद्दुःखसंयोग) इसत्रेवीसवेंश्लोककेसाथि इसवीसवेंश्लो
ककी तथावक्ष्यमाण एकवीसवेंबावीसवेंश्लोकका अन्वयकरणा ॥ और किसीटीकाविषेतौं (यत्रउपरमतेचित्तं) इ
सवचनविषेस्थित यत्र इसशब्दका जिसकालविषे याप्रकारकाअर्थकऱ्याहै ॥ सोइसव्याख्यानविषे (तंविद्यात्) इस
वक्ष्यमाणवचनविषेस्थिततत्शब्दका ताकालकेसाथि अन्वय संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं कालविषे योगशब्दकी
अर्थरूपतासंभवतीनहीं ॥ यातैं यहव्याख्यान समीचीननहीं इति ॥ २० ॥ ※ ॥ तहां इसपूर्वश्लोकविषे प्र
त्यक्आत्माविषेहीं तोषकूंप्राप्तहोवैहै यहअर्थकथनकऱ्या ॥ अब ताअर्थकीसिद्धिविषे हेतुका कथनकरेहैं ॥

सुखमात्यंतिकंयत्तद्बुद्धिग्राह्यमतींद्रियं॥वेत्तियत्रनचैवायंस्थितश्चलतितत्त्वतः॥ २१ ॥

सुखं। आत्यंतिकं। यत्। तत्। बुद्धिग्राह्यं। अतींद्रियं। वेत्ति। यत्र। न। च। एव। अयं। स्थितः। चलति। तत्त्वतः॥इ०प०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन जो सुख अनंतहै तथाइंद्रियकाअविषयहै तथाकेवलशुद्धबुद्धिकरिकैग्रहणहोवैहै तिससुखकूं यहयोगी पुरुष जिसअवस्थाविशेषविषे अनुभवकरेहै तथा जिसविषे स्थितहूआ यहविद्वान् आपणेआत्मास्वरूपतैं कदाचित्भी नहीं चलायमानहोवैहै तिसकूंहीं योगशब्दकाअर्थरूपजानणा ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोसुख आत्यंतिकहै ॥ अर्थात् देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित निरतिशयब्रह्मरूपहै ॥ तथा जोसुख अति इंद्रियहै ॥ अर्थात् नेत्रादिकइंद्रियोंकेसंबंधजन्यज्ञानका विषयनहींहै ॥ तथा जोसुख रजतमरूपमलतैंरहित केवल सत्त्वप्रधानबुद्धिकरिकैहीं ग्रहणकरयाजावैहै ऐसेस्वरूपसुखकूं यहयोगीपुरुष जिसअवस्थाविशेषविषे अनुभवकरैहै ॥ तथा जिसअवस्थाविशेषविषेस्थितहूआ यहविद्वान्पुरुष आपणे परिपूर्णअद्वितोयआत्मास्वरूपतैं कदाचित्भी चलायमानहोतानहीं ॥ तिसनिरोधपरिणामरूप अवस्थाकूंहीं योगशब्दकाअर्थरूप जानणा ॥ ईहां श्रीभगवान्नैं तास्वरूपसुखके (आत्यंतिकं अतिइंद्रियं बुद्धिग्राह्यं) यहतीनविशेषणकथनकरे ॥ तहां (आत्यंतिकं) याविशेषणकरि कैतौं ताब्रह्मरूपसुखका (योवैभूमातत्सुखं) इसश्रुतिकरिकैसिद्ध देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित अनंतस्वरूप कथनकऱ्या ॥ और (अतींद्रियं) याविशेषणकरिकै ताब्रह्मरूपसुखविषे विषयजन्यसुखतैंभिन्नपणा कथनकऱ्या ॥ जिसकारणतैं सोविषयजन्यसुख विषयइंद्रियकेसंबंधकीअपेक्षा अवश्यकरिकैकरेहै ॥ और (बुद्धिग्राह्यं) याविशेषणकरिकै ताब्रह्मरूपसुखविषे सुषुप्तिकेसुखतैंभिन्नपणा कथनकऱ्या ॥ काहेतैं सुषुप्तिअवस्थाविषे बुद्धिकेलयहोणेतैं सोसुषुप्तिकासुखबुद्धिकरिकैग्रहणहोवैनहीं ॥ और समाधिअवस्थाविषेतौं साबुद्धि सर्ववृत्तियोंतैंरहितहूई स्थितहोवैहै ॥ यातैं समाधिअ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वस्थाविषे सोब्रह्मरूपसुख बुद्धिकरिकैग्रहणहोवैहै ॥ यहवार्त्ता गौडपादाचार्यनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोकार्द्ध ॥ (लीयतेतुसुषुप्तौतन्निगृहीतंनलीयते ॥) अर्थयह ॥ सोमन सुषुप्तिअवस्थाविषेतौं अज्ञानमैं लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और समाधिविषेतौं सोनिगृहीतमन लयभावकूंप्राप्तहोवैनहींइति ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (समाधिनिर्द्धूतमलस्यचेतसो निवेशितस्यात्मनियत्सुखंभवेत्॥नशक्यतेवर्णयितुंगिरातदायदेतदंतःकरणेनगृह्यते ॥) अर्थयह ॥ समाधिकरिकैनिवृत्तहोइगयाहै रजतमरूपमल अथवा पापरूपमलजिसका ऐसाजो आत्माविषेस्थितचित्तहै ॥ ताचित्तकूं तिसकालविषे जोसुख प्राप्तहोवैहै ॥ सोसुख वाणीकरिकै वर्णनकऱ्याजावैनहीं ॥ किंतु निरुद्धहूईयांहैंसर्ववृत्तियांजिसकी ऐसेअंतःकरणकरिकैहीं सोसुख ग्रहणकऱ्याजावैहैइति ॥ किंवा तासमाधिअवस्थाविषे वृत्तियोंकरिकै सुखका आस्वादनकरणा श्रीगौडपादाचार्यनैंहीं निषेधकऱ्याहै ॥ तहांश्लोकार्द्ध ॥ (नास्वादयेत्सुखंतत्रनिःसंगः प्रज्ञयाभवेत् ॥) अर्थयह ॥ इससमाधिविषे मैं इसमहान्सुखकूं अनुभवकरताहूं याप्रकारकोसविकल्पकवृत्तिकानाम प्रज्ञाहै ॥ ताप्रज्ञाकरिकै जोसुखकाआस्वादनहै सोव्युत्थानरूपहोणेतैं समाधिकाविरोधीहींहै ॥ यातैं ताप्रज्ञाकरिकै सुखकेआस्वादनकूं योगीपुरुष कदाचित्भी नहींकरै ॥ इसीकारणतैं सोयोगीपुरुष ताप्रज्ञाकेसाथि संगतैंरहितहोवै ॥ अर्थात् तावृत्तिरूपप्रज्ञाकूं निरोधकरैइति ॥ और सर्ववृत्तियोंतैंरहितचित्तकरिकै तास्वरूपसुखकाअनुभवतौं तिसीगौडपादाचार्यनैंहीं (स्वस्थंशांतंसनिर्वाणमकथ्यंसुखमुत्तमं) इत्यादिकवचनोंकरिकै प्रतिपादनकऱ्याहै ॥ इसअर्थकूं आगेस्पष्टकरैंगे इति ॥ २१ ॥ ❋ ॥ तहांपूर्वश्लोकविषे (यत्रनचैवायंस्थितश्चलतितत्त्वतः) इसवचनकरिकै जिसअव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्थाविशेषविषेस्थितहूआ यहयोगीपुरुष आपणे अद्वितीयआत्मस्वरूपतैं चलायमानहोतानहीं यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ अब इसश्लोककरिकै तिसीअर्थका उपपादनकरेहैं ॥

यंलब्ध्वाचापरंलाभंमन्यतेनाधिकंततः॥यस्मिन्स्थितोनदुःखेनगुरुणापिविचाल्यते ॥

यं । लब्ध्वा । च । अपरं । लाभं । मन्यते । न । अधिकं । ततः । यस्मिन् । स्थितः । न । दुःखेन । गुरुणा । अपि । विचाल्यते । इतिप० हेअर्जुन जिसअवस्थाविशेषकूं प्राप्तहोइकै सोयोगीपुरुष दूसरे लाभकूं तिसतैं अधिक नहीं मानताहै तथा जिस अवस्थाविषे स्थितहूआ सोयोगीपुरुष महान् दुःखनैं भी नहीं चलायमानकरीताहै ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन निरतिशय आत्मास्वरूपनित्यसुखका अभिव्यंजक जा सर्ववृत्तियोंतैंरहितचित्तकोनिरोधनामा अवस्थाविशेषहै ॥ ऐसोजिसअवस्थाविशेषकूं निरंतर योगाभ्यासकोपरिपक्कतातैं संपादनकरिकै योगीपुरुष जिसअवस्थाविशेषतैंपरे दूसरेकिसीलाभकूं अधिकमानतानहीं ॥ किंतु तिसअवस्थाविशेषकोप्राप्तिकरिकैहीं सोयोगीपुरुष आपणेकूं कृतकृत्य मानेहै ॥ तथा प्राप्तप्रापणीय मानेहै ॥ अनेकउपायोंकरिकैप्राप्तहोणेहारेसुख जिसकूं एकहींकालविषे प्राप्तहोवै ताकूं प्राप्तप्रापणीय कहेहै ॥ तहांस्मृति (आत्मलाभान्नपरंविद्यते ॥) अर्थयह॥आनंदस्वरूप आत्मातैंभिन्न जितनैंकी स्वर्गलोक वैकुंठलोक गोलोक ब्रह्मलोक इत्यादिकलोकहैं ॥ तेसर्वलोक सातिशयता तथादीनता तथानोचैपतनकाभय तथाईर्षा इत्यादिकदोषोंकरिकै सर्वदाग्रस्तहैं॥ यातैं तेसर्वलोक अलाभरूपहींहैं ॥ यद्यपि वेदांतसिद्धां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तविषे प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मसाक्षात्कारहीं परमलाभकह्याहै ॥ यातैं चित्तकीनिरोधअवस्थाकूंपरमलाभरूपता संभवतीनहीं ॥ तथापि जैसे श्रुतिविषे सत्यब्रह्मकीप्राप्तिकरणेहारे महावाक्यजन्यवृत्तिरूपज्ञानकूंभी सत्यरूपकरिकैकथन कऱ्याहै ॥ तैसे ईहां श्रीभगवान्नैंभी तापरमलाभरूपआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिकरणेहारी चित्तकीनिरोधअवस्थाकूं परमलाभरूपकरिकै कथनकऱ्याहैइति ॥ तहां श्लोकके पूर्वार्द्धकरिकै बाह्यविषयोंकीवासनाकरिकै तायोगीपुरुषका तिससमाधितैं विचलन नहींहोवैहै यहवार्त्ता कथनकरी ॥ अब शीत आतप वायु मशक इत्यादिकोंनैंकऱ्याजोउपद्रवहै ॥ ताउपद्रवकेनिवृत्तकरणेवासतैभी तायोगीपुरुषका तिससमाधितैंविचलन नहींहोवैहै इसअर्थकूं श्लोककेउत्तरार्द्धकरिकै कथनकरेहैं (यस्मिन्स्थितःइति) जिसआत्मास्वरूपसुखकाअभिव्यंजक सर्ववृत्तियोंतैंरहित चित्तकीअवस्थाविशेषविषे स्थितहूआ योगीपुरुष शस्त्रप्रहारादिकनिमित्तजन्य महान्दुःखनैंभी चलायमान करीतानहीं ॥ तौं शीत आतपादिकोंकेउपद्रवजन्यअल्पदुःख तायोगीपुरुषकूं कैसेचलायमानकरिसकैंगे ॥ किंतु तेदुःख नहींचलायमानकरिसकैंगे इति ॥ २२ ॥ * ॥ तहां (यत्रोपरमतेचित्तं) इसश्लोकतैंलैकेतीनश्लोकोंकरिकैकथनकरीजाचित्तकीअवस्थाविशेषहै ताअवस्थाविशेषविषे योगशब्दकीअर्थरूपताकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

तंविद्याद्दुःखसंयोगवियोगंयोगसंज्ञितं ॥ सनिश्चयेनयोक्तव्योयोगोऽनिर्विण्णचेतसा ॥

॥२९७॥

तं[२] । विद्यात्[१] । दुःखसंयोगवियोगं । योग[३]संज्ञितं । सः[४] । निश्चयेन । योक्तव्यः । योगः[६] । अनिर्विण्णचेतसा ॥ इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन दुःखकेसंबंधतैंरहित तिसनिरोधअवस्थाकूंहीं योगशब्दकाअर्थ जानणा सोयोग निश्चयकरिकै तथाउद्वेगतैंरहितचित्तकरिकैहीं अभ्यासकरणेयोग्यहै ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ (यत्रोपरमतेचित्तं) इसवचनतैंआदिलैके बहुतविशेषणोंकरिकै कथनकऱ्याजो सर्ववृत्तियोंतैंरहित तथापरमानंदकाअभिव्यंजक चित्तकोनिरोधनामा अवस्थाविशेषहै ॥ सोचित्तवृत्तियोंकानिरोध चित्तवृत्तिमयसर्वदुःखोंकाविरोधीहोणेतैं तिनदुःखोंकेसंबंधकावियोगरूपहींहै ॥ अर्थात् आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक जितनैंकोदुःखहैं ॥ तिनसर्वदुःखोंकेसंबंधका जिसनिरोधविषे अभावहै ॥ यातैं सोसर्ववृत्तियोंकानिरोध यद्यपि वियोग इसनामकरिकै कहणेकूंयोग्यहै ॥ तथापि विरोधीलक्षणाकरिकै तिसनिरोधकूं योगशब्दकाअर्थ जानणा ॥ तायोगशब्दकेअनुसारतैं सोनिरोध किंचित्मात्रभी संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ इसीअर्थकूं भगवान्पतंजलिनैंभी कथनकरयाहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः ॥) अर्थयह ॥ सर्वचित्तवृत्तियोंकाजोनिरोधहै ताकानाम योगहैइति ॥ इतनैंकहणेकरिकै (योगोभवतिदुःखहा) इसवचनकरिकै जोपूर्व योगकाफल कथनकऱ्याथा ताकाउपसंहारकऱ्या ॥ अब निश्चयविषे तथानिर्वेदतैंरहितपणेविषे तिसयोगकीसाधनरूपताकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ (सनिश्चयेनयोक्तव्यःइति) इसप्रकारकेमहान्फलकीप्राप्तिकरणेहारासोयोग इसअधिकारीपुरुषनैं निश्चयकरिकै अभ्यासकरणेकूंयोग्यहै ॥ ईहां आचार्यकेवचनोंके तथाशास्त्रकेवचनोंके तात्पर्यका विषयीभूत जोजोअर्थहै सोसर्वअर्थ सत्यहै याप्रकारकीदृढबुद्धिकानाम निश्चयहै ॥ ऐसेनिश्चयकरिकै सोयोगाभ्यासकरणा ॥ तथा इसअधिकारीपुरुषनैं निर्वेदतैंरहितहोइकैभी तायो

43

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गाभ्यासकूंकरणा ॥ ईहां इतनैंकालपर्यंत अभ्यासकरतेहूएभी हमारेकूं योगसिद्धहूआनहीं तौंइसतैंआगे कैसेसिद्धहो
वैंगा याप्रकारकेअनुतापकानाम निर्वेदहै ॥ ऐसेनिर्वेदतैंरहितचित्तकरिकै तायोगाभ्यासकूंकरै ॥ अर्थात् निरंतरअ
भ्यासकरतेहूए इसजन्मविषे अथवा जन्मांतरविषे अवश्यकरिकैयोगसिद्धहोवैंगा याकेविषे अतिशीघ्रताकरणेका
क्याप्रयोजनहै ॥ याप्रकारकेधैर्ययुक्तमनकरिकै तिसयोगाभ्यासकूंकरै ॥ यहवार्त्ता श्रीगौडपादाचार्यनैंभी कथनकरी
है ॥ तहांश्लोक ॥ (उत्सेकउद्धर्यद्वत्कुशाग्रेणैकबिंदुना ॥ मनसोनिग्रहस्तद्वद्भवेदपरिखेदतः ॥) अर्थयह ॥ जैसे कोईटिटिभ
पक्षी समुद्रकेसुकावणेकानिश्चयकरिकै कुशाकेअग्रभागसमान आपणीचंचुसैं समुद्रकेजलकेबिंदुकूंग्रहणकरिकै तीरऊप
रि पावताभया ॥ तैसे खेदतैंरहितहोइकै अभ्यासकरणेतैंहीं इसमनकानिग्रह होवैहै ॥ ईहां वेदांतसंप्रदायकेवेत्ता वृद्धपु
रुष याप्रकारकीआख्यायिकाकूं कहतेभयेहैं ॥ समुद्रकेतीरविषेस्थित किसीटिटिभनामापक्षीकेअंडोंकूं समुद्र आप
णेतरंगकेवेगकरिकै हरणकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर सोटिटिभपक्षी क्रोधवान्होइकैं इससमुद्रकूं मैं अवश्यकरिकै
कसुावौंगा याप्रकारकानिश्चयकरिकै तिससमुद्रकेसुकावणेविषे प्रवृत्तहोताभया ॥ तहां आपणेमुखकेअग्रभागकरिकै
एकजलकेबिंदुकूंग्रहणकरिकै तासमुद्रतैंबाहरिजाइकै छोडताभया ॥ तिसकालविषे ताटिटिभपक्षीकूं आपणेबांधव ब
हुतपक्षी तासमुद्रसुकावणेतैं निवृत्तकरतेभये ॥ तौंभी सोटिटिभपक्षी तिसतैंउपराम नहींहोताभया ॥ तिसतैंअनंतर ति
सस्थानविषे दैवयोगतैं नारदमुनि आवताभया ॥ सोनारदमुनिभी तिसटिटिभपक्षीकूं तासमुद्रकेसुकावणेतैं निवृत्त
करताभया ॥ तौंभी सोटिटिभपक्षी तिसतैंनिवृत्त नहींहोताभया ॥ किंतु इसजन्मविषे अथवा दूसरेजन्मविषे मैं इस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समुद्रकूं अवश्यकरिकैसुकावौंगा याप्रकारकीप्रतिज्ञा सोटिटिभपक्षी नारदकेआगेकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर दैवकी अनुकूलतातैं सोकृपालुनारद गरुडकेसमीपजाइकै याप्रकारकावचनकहताभया ॥ हेगरुड यहसमुद्र तुमारेसजाती यपक्षीयोंकाद्रोहकरिकै तुमाराहीं अपमानकरेहै ॥ याप्रकारकावचन कहिकै सोनारदमुनि तागरुडकूं तहांभेज ताभया ॥ तिसगरुडकेपक्षोंकेपवनकरिकै सूकताहूआ सोसमुद्रभी भयभीतहोइकै तिनअंडोकूं तिसटिटिभपक्षीकेतां ई देताभयाइति ॥ इसप्रकार जोयोगीपुरुष खेदतैंरहितहोइकै तिसमनकेनिरोधरूप परमधर्मविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ तिसयोगीपुरुषऊपरि साक्षात् आपईश्वरहीं अनुग्रहकरेहै ताईश्वरकेअनुग्रहकरिकै तिसटिटिभपक्षीकीन्यांई ति सयोगीपुरुषकाभी सोमनकानिरोधरूपवांच्छितअर्थ अवश्यकरिकैसिद्धहोवैहै ॥ यहटिटिभपक्षीकाआख्यान आत्मपु राणके एकादशेअध्यायविषे हम विस्तारतैं कथनकरिआयेहैंइति ॥ ❋ ॥२३॥ तहां किसउपायकरिकै सोयोग अभ्यासकरणेयोग्यहै ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहूए श्रीभगवान् तायोगके उपायकावर्णनकरेहै ॥

संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वासर्वानशेषतः ॥ मनसैवेंद्रियग्रामंविनियम्यसमंततः२४

संकल्पप्रभवान् । कामान् । त्यक्त्वा । सर्वान् । अशेषतः । मनसा । एव । इंद्रियग्रामं । विनियम्य । समंततः ॥ इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन यहअधिकारीपुरुष संकल्पजन्य सर्व कामोंकूं वासनासहित परित्यागकरिकै तथामन करिकै हीं इंद्रियोंकेसमूहकूं सर्वविषयोंतैं रोकिकैंरिकै मनकानिरोधकरै ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ जेविषय इसलोकविषे तथापरलोकविषे अनर्थकाहेतुहोणेतैं अत्यंतदुष्टहै ॥ ऐसेदुष्टविषयोंविषेरह्याहू आजोअशोभनपणाहै ॥ ताअशोभनपणेकूंनदेखिकै जो तिनविषयोंविषे यहविषय बहुतरमणीकहै याप्रकारका शो भनपणेकाअध्यासहै ताकानाम संकल्पहै ॥ तासंकल्पतैंउत्पन्नभयेजे यहविषय हमारेकूंप्राप्तहोवैं याप्रकारकोविषय अभिलाषारूपकामहैं ॥ तिन शोभनअध्यासजन्य विषयकीअभिलाषारूप सर्वकामोंकूं अशेषतैं परित्यागकरिकै यहअधिकारीपुरुष शनैशनैकरिकै मनकानिरोधकरै ॥ अर्थात् अध्यात्मशास्त्रकेविचारतैं उत्पन्नभयाजो तिनविषयोंवि षे अशोभनत्वनिश्चयहै ॥ ताअशोभनत्वनिश्चयकरिकै तिसशोभनत्वअध्यासकेबाधहूएतैं अनंतर स्त्रक् चंदन वनिता आदिकदृष्टविषयोंविषे तथा चंद्रलोक पारिजात अमृत अपसरा इत्यादिकअदृष्टविषयोंविषे श्वानकेवांतग्रासकी न्यांई सर्वकामोंका सूक्षमवासनासहित परित्यागकरिकै मनकानिरोधकरै ॥ और ताविषयकीअभिलाषारूपका मपूर्वकहीं नेत्रादिकइंद्रियोंकी तिनविषयोंविषेप्रवृत्तिहोवैहै ॥ कामतैंविना तिनइंद्रियोंकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं ताका मकेअभावहूए विवेकयुक्तमनकरिकै चक्षुआदिकइंद्रियोंकेसमूहकूं रूपादिकसर्वविषयोंतैंनिवृत्तकरिकै यहअधिकारी पुरुष शनैशनैकरिकै आपणेमनकानिरोधकरै ॥ इसप्रकार अगलेश्लोककेसाथि इसश्लोकका अन्वयकरणा ॥ ईहां (अशेषतः) यापदकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थसूचनकरया ॥ जैसे किसीपात्रविषे तैलकूंपाइकै तिसपात्रतैं पुनः सोतैल निकासिदईयें ॥ तिसतैंअनंतर तापात्रविषे जोलेपरूपकरिकै तैलरहेहै ताकानाम शेषहै ॥ तैसे विषयअ भिलाषारूपकामकेपरित्यागकीयेहूएभी जबपर्यंत तिसकामका वासनारूपशेषरहेहै ॥ तबपर्यंत तिनवासनावोंकरि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कै आकर्षणकूंप्राप्तहूआ सो मन समाधिविषेस्थितहोवैनहीं ॥ यातैं वासनारूपशेष जैसेबाकीनहींरहै तैसे तिनसर्व कामोंका परित्यागकरै ॥ और (मनसैव) यावचनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थसूचनकरया ॥ यहनेत्रादिकइंद्रियमनकेसंबंधतैंविना किसीभीविषयविषे स्वतंत्र प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु मनकेसंबंधकूंप्राप्तहोइकैहीं यहनेत्रादिक आपणेआपणेविषयोंविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ यातैं तिननेत्रादिकइंद्रियोंकेसाथि जोमनकासंबंध नहींकरणाहै ॥ यह हीं तिननेत्रादिकइंद्रियोंका नियमहै इति ॥ २४ ॥ ※

शनैःशनैरुपरमेद्बुद्ध्याधृतिगृहीतया ॥ आत्मसंस्थंमनःकृत्वानकिंचिदपिचिंतयेत् ॥ २५

शनैः । शनैः । उपरमेत् । बुद्ध्या । धृतिगृहीतया । आत्मसंस्थं । मनः । कृत्वा । न । किंचित् । अपि । चिंतयेत् ॥ इतिपद० ॥

हेअर्जुन सोयोगीपुरुष धैर्ययुक्त बुद्धिकरिकै शनैः शनैःकरिकै मनकानिरोधकरै तथा प्रत्यक् आत्माविषेस्थित मनकूं करिकै किंचित्मात्र भी नहीं चिंतनकरै ॥ २५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ धैर्यरूपजाधृतिहै ताधृतिकरिकैअनुगृहीत जाअवश्यकर्त्तव्यताकानिश्चयरूपबुद्धिहै ॥ अर्थात् जिसीकिसी कालविषे यहयोग अवश्यकरिकैसिद्धहोवैंगा याकेविषेबहुतशीघ्रताकरणेकाक्याप्रयोजनहै याप्रकारके धैर्यकरिकैअनुगृहीतजाबुद्धिहै ॥ ताबुद्धिकरिकै यहअधिकारीपुरुष गुरुउपदिष्टमार्गकरिकै भूमिकावोंकेजयक्रमतैं शनैशनैकरिकै मनकानिरोधकरै ॥ इतनैंकहणेकरिकै पूर्व योगकासाधनरूपकरिकैकथनकर्‍येजे अनिर्वेद तथानिश्चय तेदोनों दिखा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ए ॥ यहवार्त्ताश्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति॥ (यच्छेद्वाङ्मनसीप्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञानआत्मनि ॥ज्ञानमात्मनिमहति नियच्छेत्तद्यच्छेच्छांतआत्मनीति) ॥ अर्थयह ॥ लौकिक तथावैदिक जितनीकीवाचाहै ॥ तिसवाचाकूं यहबुद्धिमान् अधिकारी सव्यापारमनविषेलयकरै ॥ अर्थात् वाक्इंद्रियकेसर्वव्यापारकापरित्यागकरिकै केवल मनकेव्यापारमात्रवाला होवै ॥ तहांश्रुति ॥ (नानुध्यायाद्बहून्शब्दान्वाचोविग्लापनंहितत् ॥) अर्थयह ॥ अनात्मपदार्थोंकेवाचक बहुतशब्दों कूं यहअधिकारीपुरुष नहींउच्चारणकरै ॥ जिसकारणतै तेशब्द वाक्इंद्रियकूं केवल परिश्रमकीहींप्राप्तिकरणेहारेहैं इति ॥ और वाकादिकपंचकर्मइंद्रिय तथाश्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय यहदशइंद्रियहैं सहकारीजिसके तथानानाप्रकारकेसंकल्पविकल्पोंकासाधनरूप ऐसाजोकारणरूपमनहै ॥ तिसमनकूं ज्ञानरूपआत्माविषेलयकरै ॥ ईहां (जानातीतिज्ञानं) ॥ अर्थयह ॥ जो वस्तुकूं जानै ताकानाम ज्ञानहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै ज्ञानशब्द ज्ञाताकावाचकहै॥ ऐसेज्ञाताआत्माविषे तामनकूंलयकरै ॥ अर्थात् आत्माविषे ज्ञातृपणेकाउपाधिजोअहंकारहै ताअहंकारविषे तिसमनकालयकरै ॥ तात्पर्ययह ॥ तिसमनकेसंकल्पविकल्पादिकसर्वव्यापारोंकूंपरित्यागकरिकै ताअहंकारमात्रकूं परिशेषतैं राखै ॥ तिसतैंअनंतर तिसज्ञातृपणेकाउपाधिअहंकाररूपज्ञानकूं सर्वत्रव्यापकमहत्तत्वआत्माविषे लयकरै ॥ तहां सोअहंकार दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं विशेषरूपअहंकारहोवैहै ॥ दूसरा सामान्यरूपअहंकार होवैहै ॥ तहां यहदेवदत्तनामामैं इसयज्ञदत्तकापुत्रहूं इसप्रकारकाजो स्पष्टअभिमानहै सोविशेषरूपअहंकारहै ॥ यहहींविशेषरूपअहंकार व्यष्टिअहंकार कह्याजावैहै ॥ और अहंअस्मि इतनामात्रजोअभिमानहै सोअभिमान सामान्यअहंकार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है ॥ सोसामान्यअहंकारहीं समष्टिअहंकार कह्याजावैहै ॥ सोसमष्टिअहंकार सर्वत्र अनुस्यूतहोणेतैं हिरण्यगर्भ तथा
महान्आत्मा कह्याजावैहै ॥ तिसदोनोंप्रकारकेअहंकारतैं पृथक्कऱ्याहूआ जोसर्वकेअंतर चिदेकरसआत्माहै ताका
नाम शांतआत्माहै ॥ तिसशांतआत्माविषे तिस समष्टिबुद्धिरूपमहान्आत्माकूं लयकरै ॥ इसप्रकार तासमष्टिबुद्धि
रूपमहत्तत्वका कारणरूपजो अव्यक्तहै तिसअव्यक्तकूंभी ताशांतआत्माविषे लयकरै ॥ इसप्रकार सर्वकार्यकारणरू
पसंघातकेलयकीयेतैं अनंतर इसअधिकारीपुरुषकूं सर्वउपाधियोंतैंरहित त्वंपदकालक्ष्यअर्थरूप शुद्धआत्माका सा
क्षात्कारहोवैहै ॥ तहां तिस शुद्धचिदेकरसप्रत्यक्आत्माविषे जडशक्तिरूप अनिर्वचनीयअव्यक्तनामा प्रकृति उपा
धिरूपहै ॥ साप्रकृति प्रथम तासामान्यअहंकाररूप महत्तत्वनामकूंधारणकरिकै प्रगटहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर बाह्य
विशेषअहंकाररूपकरिकै प्रगटहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर तिसतैंभीबाह्य मनरूपकरिकै प्रगटहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर
तिसमनतैंभीबाह्य वाकूइंद्रियरूपकरिकै प्रगटहोवैहैइति ॥ यहसर्वअर्थ साक्षात्श्रुतिनैंहो कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति
॥ (इंद्रियेभ्यः पराह्यर्था अर्थेभ्यश्चपरंमनः ॥ मनसस्तुपराबुद्धिर्बुद्धेरात्मामहान्परः ॥ महतः परमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषः
परः ॥ पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः इति ॥) अर्थयह ॥ श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं शब्दादिकअर्थ परहैं ॥ और ति
नअर्थोंतैं मनपरहै ॥ और तामानतैं व्यष्टिबुद्धि परहै ॥ और ताव्यष्टिबुद्धितैं महत्तत्वनामासमष्टिबुद्धि परहै ॥ और
तामहत्तत्वतैं अव्यक्त परहै ॥ और ताअव्यक्ततैं अधिष्ठानरूप परमात्मापुरुष परहै ॥ तापुरुषतैंपरे कोईभोपदार्थ
हैनहीं ॥ किंतु सोपुरुषहीं सर्वकीअवधिरूपहै तथापरागतिरूपहैइति ॥ तहां जैसे गौमहिषादिकपशुवोंविषे वाकूइं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

द्रियकानिरोधरहेहै ॥ तैसे वाक्इंद्रियकानिरोधकरणा यहप्रथमभूमिका कहीजावैहै ॥ और जैसे बालकविषे तथामू
ढपुरुषविषे निर्मनस्त्व रहेहै ॥ तैसे निर्मनस्त्ववालाहोणा यहदूसरीभूमिका कहोजावैहै ॥ और जैसे तंद्राअवस्थाविषे
मैंब्राह्मणहूं मैंमनुष्यहूं याप्रकारका अहंकार रहतानहीं ॥ तैसे सर्वदा अहंकारतैंरहितहोणा यहतृतीयभूमिका कही
जावैहै ॥ और जैसे सुषुप्तिविषे महत्तत्वनहींरहेहै ॥ तैसे जोमहत्तत्वतैंरहितपणाहै साचतुर्थभूमिका कहीजावैहै ॥ इ
नच्यारिभूमिकावोंकीअपेक्षाकरिकैहीं श्रीभगवान्नैं (शनैःशनैरुपरमेत्) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ ईहां यद्यपि म
हत्तत्त्व तथाशांतआत्मा यादोनोंकेमध्यविषे (इंद्रियेभ्यःपराह्यर्थाः) इसश्रुतिनैं तामहत्तत्वकाउपादानकारण अव्याकृ
तनामातत्त्व कथन कऱ्याहै ॥ तथापि जैसे वाकादिकतत्त्वोंका मनादिकतत्त्वोंविषेलय श्रुतिनैं कथनकऱ्याहै ॥ तैसे ति
समहत्तत्त्वनामातत्त्वका अव्याकृतनामातत्त्वविषेलय श्रुतिनैं कथनकऱ्यानहीं ॥ याकेविषेयहकारणहै ॥ जोकदाचित्
तामहत्तत्त्वका तिसअव्याकृतविषेलय करीये ॥ तौंसुषुप्तिकीन्यांई स्वरूपलयकीहींप्राप्तिहोवैंगी ॥ और सोअव्याकृत
विषेमहत्तत्त्वकालय भोगप्रदकर्मोंकेक्षयहूएतैंअनंतर पुरुषप्रयत्नतैंविना स्वतःहींसिद्धहै ॥ तथा सोअव्यक्तविषेमहत्त
त्त्वकालय तत्त्वदर्शनविषे उपयोगीभीहैनहीं॥ और(दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिः) याप्रकारकावचन पूर्व
कथनकरिकै तिससूक्ष्मताकीसिद्धिवासतै (यच्छेद्वाङ्मनसीप्राज्ञः) इसश्रुतिनैं निरोधसमाधिकाविधानकऱ्याहै ॥ यातैं
सोनिरोधसमाधि जिज्ञासुजनकूंतौं तत्त्वसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै अपेक्षितहै ॥ और तत्त्ववेत्तापुरुषकूंतौं सर्वक्लेशोंकीनि
वृत्तिरूपजीवन्मुक्तिकीप्राप्तिवासतै अपेक्षितहै ॥ यातैं जिज्ञासुजननैं तथातत्त्ववेत्तापुरुषनैं सोनिरोधसमाधि अवश्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करिकैसंपादनकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् शांतआत्माविषे अवरुद्धजोचित्तहै सोचित्त तिसकालविषे सर्ववृत्तियोंतैंरहि
तहै ॥ यातैं सुषुप्तचित्तकीन्यांई तिसचित्तविषे आत्मदर्शनकीहेतुताहीं संभवतीनहीं ॥ समाधान ॥ तिसनिरोधकालविषे
सर्ववृत्तियोंकेअभावहूएभी तिसनिरुद्धचित्तकरिकै स्वतःसिद्धजोआत्माकादर्शनहै ताकूं कोईभीवादी निवृत्तकरणेवि
षेसमर्थहैनहीं ॥ यहवार्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (आत्मानात्माकारंस्वभावतोऽवस्थितंसदा
चित्तं ॥ आत्मैकाकारतयातिरस्कृतानात्मदृष्टिंविदधीत ॥) अर्थयह ॥ यहचित्त आपणेसविषयस्वभावतैंहीं सर्वदा आ
त्माकार अथवा अनात्माकार हूआहीं स्थितहोवैहै ॥ तहां यहअधिकारोपुरुष ताचित्तकी आत्मैकाकारताकूंसंपाद
नकरिकै अनात्मदृष्टिकापरित्यागकरिकै ताचित्तकानिरोधकरै ॥ ईहांयहतात्पर्यहै ॥ जैसे उत्पन्नहूआघट स्वतःआकाश
करिकैपूर्णहूआहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ किसीपुरुषप्रयत्नकरिकै सोघट आकाशकरिकैपूर्णकऱ्याजावैनहीं ॥ और ताघटवि
षे जलतंडुलादिकपदार्थोंकाजोपूरणहोवैहै ॥ सोतौं ताघटकेउत्पन्नहूएतैंअनंतर पुरुषकेप्रयत्नकरिकैहोवैहै ॥ तहां
तिसघटतैं जलतंडुलादिकोंकेनिकास्येहूएभी सोआकाश ताघटतैंबाहरिनिकास्याजावैनहीं ॥ तथा ताघटकेमुखकेबंदकी
येहूएभी सोआकाश ताघटकेअंतरहींरहेहै ॥ तैसे यहचित्तभी उत्पन्नहूआहीं चैतन्यआत्माकरिकैपूर्णहींउत्पन्नहोवैहै ॥
उत्पन्नहूए तिसचित्तविषे पश्चात् मूषाविषेपायेहूएद्रुतताम्रकीन्यांई घटदुःखादिरूपता भोगकेहेतुधर्मअधर्मसहकृतसा
मग्रीकेवशतैं प्राप्तहोवैहै ॥ तहां योगाभ्यासकेबलतैं तिसचित्ततैं ताघटदुःखादिकअनात्माकारताकेनिवृत्तकोयेहूएभी
विनाहींनिमित्ततैं जोचित्तविषेचिदाकारताहै ॥ साचिदाकारता ताचित्ततैं निवृत्तकरीजावैनहीं ॥ यातैं निरोधसमाधिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रिकैसर्ववृत्तियोंतैंरहित तथासंस्कारमात्ररूपहोणेतैं अत्यंतसूक्ष्म ऐसाजो निरुपाधिकचेतनआत्माकेअभिमुख चित्तहै ॥ तानिरुद्धचित्तकरिकै वृत्तितैंविनाहीं निर्विघ्नआत्माकाअनुभव संभवहोइसकेहै ॥ इसीपूर्वउक्तसर्वअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥(आत्मसंस्थंमनःकृत्वानकिंचिदपिचिंतयेत्) सर्वउपाधितैंरहित प्रत्यक्आत्माविषेहै संस्था क्या समाप्ति जिसकी ताकानाम आत्मसंस्थहै ॥ अर्थात् सर्वप्रकारकीवृत्तियोंतैंरहित स्वभावसिद्धआत्माकारमात्रजोमनहै ॥ ऐसेआत्मसंस्थमनकूं पूर्वउक्तधैर्यकरिकैअनुगृहीतबुद्धितैं संपादनकरिकै असंप्रज्ञातसमाधिविषेस्थितहूआ यहयोगीपुरुष किसीभीवस्तुका चिंतनकरैनहीं ॥ अर्थात् किसीअनात्मपदार्थकूं अथवा प्रत्यक्आत्माकूं वृत्तिकरिकैविषयकरैनहीं ॥ काहेतैं तिसअसंप्रज्ञातसमाधिकालविषे जोकदाचित् अनात्माकारवृत्तिकूं उत्पन्नकरैंगा ॥ तौं तिससमाधितैंव्युत्थानहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ और जोकदाचित् आत्माकारवृत्तिकूंउत्पन्नकरैंगा ॥ तौं संप्रज्ञातसमाधिहीं प्राप्तहोवैंगी ॥ असंप्रज्ञातसमाधि रहैंगीनहीं ॥ यातैं सोयोगीपुरुष ताअसंप्रज्ञातसमाधिकी स्थिरताकरणेवासतैं किसीभी आत्माकारवृत्तिकूं अथवा अनात्माकारवृत्तिकूं उत्पन्नकरैनहीं इति ॥ २५ ॥ ※ ॥ इसप्रकार निरोधसमाधिकूंकरताहूआ योगी पुरुष आपणेमनकूं सर्वओरतैंरोकिकै अंतरआत्माविषे निरुद्धकरै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

यतोयतोनिश्चरतिमनश्चंचलमास्थिरं ॥ ततस्ततोनियम्यैतदात्मन्येववशंनयेत् ॥ २६ ॥

यतः। यतः।॥ निश्चरति। मनः। चंचलं। अस्थिरं। ततः। ततः। नियम्य। एतत्। आत्मनि। एव। वशं। नयेत्॥ इतिप०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन जिस जिसनिमित्ततैं विक्षेपकेअभिमुखहूआ तथालयकेअभिमुखहूआ [illegible] विषयाकारवृत्ति
कूंउत्पन्नकरेहै तिस तिसनिमित्ततैं इसमनकूं रोकिकै आत्माविषे हीं निरोधकूं प्राप्तकरै ॥ २६ ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ हेअर्जुन चित्तकूंविक्षेपकीप्राप्तिकरणेहारे जेशब्दादिकविषयहैं ॥ तिनशब्दादिकविषयोंकेमध्यमविषे जिस
जिसशब्दादिकविषयरूपनिमित्ततैं तथारागद्वेषादिकनिमित्ततैं विक्षेपकेअभिमुखहूआ यहमन निश्चरताहै ॥ अर्था
त् विषयकेअभिमुखहूई जेप्रमाण विपर्यय विकल्प स्मृति यहसमाधिकोविरोधी च्यारिप्रकारकीवृत्तियांहैं तिनवृ
त्तियोंविषे किसीभीवृत्तिकूंउत्पन्नकरेहै ॥ तथालयकेहेतुरूपजे निद्राशेष बहुअन्नभोजन परिश्रम इत्यादिकनिमित्त
हैं ॥ तिनोंकेमध्यविषे जिसजिसनिमित्ततैं लयकेअभिमुखहूआ यहमन निश्चरताहै ॥ अर्थात् लीनहूआ समाधिकोवि
रोधीनिद्रारूपवृत्तिकूं उत्पन्नकरेहै ॥ तिसतिस विक्षेपकेनिमित्ततैं तथालयकेनिमित्ततैं इसमनकूंनियमकरिकै अर्थात्
सर्ववृत्तियोंतैंरहितकरिकै स्वप्रकाशपरमानंदघनआत्माविषेहीं निरुद्धकरै ॥ जिसआत्माविषेनिरुद्धहूआ यहमन वि
क्षेपकूंभीप्राप्तहोवैनहीं तथालयकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ यहसर्वअर्थ श्रीगौडपादाचार्यनैंभीकथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥
(उपायेननिगृह्णीयाद्विक्षिप्तंकामभोगयोः ॥ सुप्रसन्नंलयेचैवयथाकामोलयस्तथा ॥ १ ॥ दुःखंसर्वमनुस्मृत्यकामभो
गान्निवर्त्तयेत् ॥ अजंसर्वमनुस्मृत्यजातंनैवतुपश्यति ॥ २ ॥ लयेसंबोधयेच्चित्तंविक्षिप्तंशमयेत्पुनः ॥ सकषायंविजानोया
त्समप्राप्तंनचालयेत् ॥ ३ ॥ नास्वादयेत्सुखंतत्रानिःसंगःप्रज्ञयाभवेत् ॥ निश्चलंनिश्चरच्चित्तमेकीकुर्यात्प्रयत्नतः ॥ ४ ॥
॥ यदानलीयतेचित्तंनचविक्षिप्यतेपुनः ॥ अनिंगनमनाभासंनिष्पन्नंब्रह्मतत्तदा ॥ ५ ॥) अब यथाक्रमतैं इनपंचश्लो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कोंकाअर्थनिरूपणकरेहैं ॥ काम भोग यादोनोंविषे विक्षिप्तजोमनहै ॥ अर्थात् प्रमाण विपर्यय विकल्प स्मृति या च्यारिवृत्तियोंविषे किसीभीवृत्तिरूपकारिकै परिणामकूंप्राप्तभयाजोमनहै तिसमनकूं यहयोगीपुरुष वक्ष्यमाणवैरा ग्यअभ्यासरूप उपायकरिकै प्रत्यक्आत्माविषेहीं निरुद्धकरै ॥ तहां शब्दादिकविषयोंकी दोप्रकारकीअवस्थाहोवै हैं ॥ एकतौं चिंत्यमान अवस्थाहै ॥ और दूसरी भुज्यमान अवस्थाहोवैहै ॥ तहां शब्दादिकविषयोंकाचिंतनक रणा याकानाम चिंत्यमान अवस्थाहै ॥ और तिनशब्दादिविषयोंकाजोभोगणाहै ताकानाम भुज्यमान अवस्थाहै ॥ तिनदोनोंअवस्थावोंकेबोधनकरणेवासतै (कामभोगयोः) यावचनविषे द्विवचनकथनकऱ्याहै ॥ तेदोनोंअवस्था मनकेविक्षेपकाहींहेतुहोवैहैं ॥ और लयभावकूंप्राप्तहोवैजिसविषे ताकानाम लयहै ऐसीसुषुप्तिहै ॥ तासुषुप्तिरूप लयविषे यहमन सुप्रसन्नहोवैहै ॥ अर्थात् सर्वआयासतैंरहितहोवैहै ॥ ऐसे सुप्रसन्नमनकूंभी सोयोगीपुरुष निग्रहक रै ॥ शंका ॥ सुषुप्तिविषे सर्वविक्षेपरूपआयासतैं जोमन रहितहोवैहै ॥ तौं किसवासतै तामनकानिग्रहकरणा ॥ ऐसीशंकाकेहूए कहेहैं (यथाकामोलयस्तथाइति) जैसे काम विषयगोचर प्रमाणादिकवृत्तियोंकूंउत्पन्नकरिकै समाधिकाविरोधीहोवैहै ॥ तैसे सोलयभी निद्रारूपवृत्तिकूंउत्पन्नकरिकै समाधिकाविरोधीहींहोवैहै ॥ जिसकारणतैं सर्ववृ त्तियोंकानिरोधहीं समाधिकह्याजावैहै ॥ यातैं कामादिकृतविक्षेपतैं जैसे सोमन निरोधकरणेयोग्यहै ॥ तैसे परिश्रमा दिकृतलयतैंभी सोमन निरोधकरणेयोग्यहैइति ॥ १ ॥ तहां प्रथमश्लोकविषे । उपायेननिगृह्णीयात् । यावचनकरिकै सामान्यतैं उपाय कथनकऱ्या ॥ सोमनकेनिग्रहकरणेकाउपाय कौनहै ऐसोशंकाकेहू[illegible] ताउपायकाकथनकरेहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दुःखंसर्वमनुस्मृत्येति ॥ अविद्याकरिकैरचित जितनाकीयहद्वैतप्रपंचहै ॥ सोसर्वद्वैतप्रपंच परिच्छिन्नहोणेतैंदुःखरूपहीं
है इसप्रकारकानिरंतर चिंतनकरिकै ॥ अर्थात् (योवैभूमातत्सुखंनाल्पेसुखमस्ति अथयदल्पंतन्मर्त्यंतदुःखंइति ॥)
अर्थयह ॥ जोचेतन देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै सोईहीं सुखरूपहै ॥ परिच्छिन्नपदार्थोंविषेसुखरूपता होवैनहीं ॥
जोजोपदार्थ परिच्छिन्नहै सोसोपदार्थ नाशवान्है तथादुःखरूपहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतियोंकेअर्थकूं गुरुकेउपदेशतैं
अनंतर निश्चयकरिकै सोयोगीपुरुष कामभोगोंकूं आपणेमनतैं निवृत्तकरै ॥ अर्थात् चिंत्यमानअवस्थावालेविषयों
कूं तथाभुज्यमानअवस्थावालेविषयोंकूं आपणेमनतैं निवृत्तकरै ॥ अथवा तिसकामभोगतैं आपणेमनकूं निवृत्तकरै
॥ इतनैंकहणेकरिकै द्वैतप्रपंचकेस्मरणकालविषे वैराग्यभावनामें तामनकोनिग्रहीउपायरूपता कथनकरी ॥ अब
सर्वद्वैतप्रपंचकाविस्मरणरूप परमउपायकूं कथनकरेहैं । अजंसर्वमनुस्मृत्यइति । जन्मतैंरहितजोब्रह्महै ॥ तद्रूपहीं
यहसर्वजगत्है ॥ तिसब्रह्मतैंअतिरिक्त किंचित्मात्रभीवस्तुहैनहीं ॥ इसप्रकार गुरुशास्त्रके उपदेशतैंअनंतर विचारकरि
कै तिसअद्वितीयब्रह्मतैंविपरीत इसद्वैतमात्रकूं सोयोगीपुरुष देखतानहीं ॥ जिसकारणतैं अधिष्ठानकेज्ञानहूए क
ल्पितवस्तुका अभावहींहोवैहै ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानहूए ताकेविषेकल्पित सर्पदंडादिकोंकाअभावहींहोवैहै ॥
तैसे अधिष्ठानब्रह्मकेसाक्षात्कारहूए ताकेविषेकल्पितद्वैतप्रपंचकाअभावहींहोवैहै ॥ तहां वैराग्यभावनारूप पूर्वउक्त
उपायकीअपेक्षाकरिकै इससर्वद्वैतकीनिवृत्तिरूपउपायविषे विलक्षणताबोधनकरणेवासतै श्लोकविषे तु यहशब्द
कथनकऱ्याहैइति ॥ २ ॥ इसप्रकार वैराग्यभावना तथा तत्त्वदर्शन यादोनोंउपायोंकरिकै विषयोंतैंनिवृत्तकऱ्याहू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आजोचित्तहै ॥ सोचित्त जोकदाचित् दिनदिनविषेलयहोणेकेअभ्यासवशतैं तालयकेअभिमुखहोवै ॥ तौं निद्राशेष
बहुअन्नभोजन अतिपरिश्रम इत्यादिकजे लयकेकारणहैं तिनकारणोंकानिरोधकरिकै सोयोगीपुरुष उत्थानकेप्रय
त्नकरिकै ताचित्तकूं तिसलयतैं प्रबोधनकरै ॥ इसप्रकार तिसलयतैं प्रबोधनकऱ्याहूआ सोचित्त जोकदाचित् दिनदिन
विषे ताप्रबोधनके अभ्यासवशतैं पुनः ताकामभोगविषे विक्षिप्तहोवै ॥ तौं पूर्वउक्त वैराग्यभावनाकरिकै तथातत्वसा
क्षात्कारकरिकै पुनः ताचित्तकूं निरुद्धकरै ॥ इसप्रकार पुनःपुनः अभ्यासकेबलतैं तालयतैंप्रबोधनकऱ्याहूआ तथाश
ब्दादिकविषयोंतैंनिवृत्तकऱ्याहूआजोचित्तहै ॥ अर्थात् लय विक्षेप यादोनोंदोषोंतैंरहितकऱ्याहूआ जोचित्तहै ॥ सोचि
त्त जबी ब्रह्मरूपसमभावकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ किंतु मध्यविषेस्थितहूआ सोचित्त स्तब्धहोइजावैहै तास्तब्धभावकूं क
षायदोष कहेहैं ॥ सोकषायदोष रागद्वेषादिकोंकीप्रबलवासनारूपरागकेवशतैं प्राप्तहोवैहै ॥ ताकषायदोषकरिकै
युक्तजोचित्तहै ताकूं सकषायकहेहैं ॥ ऐसे सकषायचित्तकूं सोयोगीपुरुष समाहितचित्ततैं विवेककरिकैजानैं ॥ तिसतैंअ
नंतर यहहमाराचित्त अबी समाहितनहींभयाहै इसप्रकारकानिश्चयकरिकै सोयोगीपुरुष जैसे लयविक्षेपदोषतैं ता
चित्तकूंनिवृत्तकऱ्याथा तैसे ताकषायदोषतैंभी तिसचित्तकूं निवृत्तकरै ॥ तिसतैंअनंतर लयविक्षेपकषायदोषतैंरहितहू
आ सोचित्त परिशेषतैं तिस समरूपब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ तासमब्रह्मविषेप्राप्तहूए चित्तकूं सोयोगीपुरुष कषाय
लयकीभ्रांतिकरिकै नहींचलायमानकरै ॥ किंतु धैर्यअनुगृहीतबुद्धिकरिकै तालयकषायकोप्राप्तितैं विवेचनकरिकै
तिससमब्रह्मकीप्राप्तिविषेहीं अत्यंत प्रयत्नकरिकै तिसचित्तकूंस्थापनकरै इति ॥ ३ ॥ किंवा सोनिरोधसमाधि यद्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पि परमसुखका अभिव्यंजकहै ॥ तथापि सोयोगीपुरुष तानिरोधसमाधिविषे तासुखकूं आस्वादननहींकरै ॥ अर्थात् इतनैंकालपर्यंत मैं सुखीहूआस्थितहूं इसप्रकारकी सुखकाआस्वादनरूपवृत्तिकूं सोयोगीपुरुष नहींउत्पन्नकरै ॥ जोकदाचित् तासुखाकारवृत्तिकूंकरैंगा ॥ तौं तिसअसंप्रज्ञातसमाधिकाहीं भंगहोवैंगा ॥ यहवार्ता पूर्वहींकथनकरि आयेहैं ॥ किंवा प्रज्ञाकरिकै जोसुख प्रतीतहोवैहै ॥ सोसुख अविद्याकरिकैकल्पितहोणेतैं मिथ्याहीहै याप्रकारकी भावनाकरिकै सोयोगीपुरुष सर्वसुखोंविषे निःसंगहोवै ॥ अर्थात् तासुखकीइच्छातैंरहितहोवैहै ॥ अथवा ॥ (निःसंगः प्रज्ञयाभवेत्) इसवचनका यहदूसराअर्थकरणा ॥ सविकल्प सुखाकारवृत्तिरूपजाप्रज्ञाहै ॥ तिसप्रज्ञाकेसाथि सोयोगीपुरुष संगकापरित्यागकरै ॥ और सर्ववृत्तियोंतैंरहितचित्तकरिकै जोस्वरूपसुखकाअनुभवहोवैहै ॥ ताअनुभवकातौं सोयोगीपुरुष कदाचित्भी परित्यागकरैनहीं ॥ जिसकारणतैं वृत्तितैंविना स्वभावतैंहींप्राप्तजो स्वरूपसुखका अनुभवहै सो निवृत्तकरणेकूंअशक्यहै ॥ इसप्रकार सर्वओरतैंनिवृत्तकरिकै प्रत्ययकेबलतैं निश्चलकरयाजोचित्तहै ॥ सोचित्त जोकदाचित् आपणेचंचलस्वभावतैं विषयोंकीअभिमुखताकरिकै बाह्यगमनकरै ॥ तौंभी सोयोगीपुरुष निरोधकेप्रयत्नतैं तिसचित्तकूं पुनः ता समब्रह्मविषे एकताकूंप्राप्तकरै इति ॥ ४ ॥ तासमब्रह्मविषे प्राप्तहूआसोचित्त किसप्रकारकाहोवैहै ऐसीजिज्ञासाकेहूए ताकास्वरूप कथनकरेहैं (यदानलीयतेइति) जिसकालविषे सोचित्त लयकूंभी नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तथा स्तब्धभावरूपकषायकूंभी नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तथा शब्दादिकविषयाकारवृत्तिरूप विक्षेपकूंभी नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तथा तासमाधिकेसुखकूंभी वृत्तिकरिकैनहींआस्वादनकरेहै ॥ यद्यपि श्लोकविषे लय विक्षेप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यादोनोंकाहींकथनकरयाहै ॥ कषाय सुखास्वाद यादोनोंका कथनकरयानहीं ॥ तथापि लय कषाय यहदोनोंदोष तमो गुणकेकार्यहैं ॥ यातैं तामसत्वधर्मकोसमानताकूंलैकै सोलयशब्द ताकषायकाभी उपलक्षकहै ॥ इसप्रकार विक्षेप सुखास्वाद यहदोनोंदोष रजोगुणकेकार्यहैं ॥ यातैं राजसत्वधर्मकीसमानताकूंलैकै सोविक्षेपशब्द तासुखास्वादका भी उपलक्षकहै ॥ इसीसुखास्वादकूं योगशास्त्रविषे रसास्वादभीकहेहैं ॥ और पूर्वजो तिनच्यारोदोषोंकूं पृथक्पृथक् कथनकरयाथा ॥ सोतिनलयादिकदोषोंकोनिवृत्तिकरणेवासते पृथक्पृथक् प्रयत्नकेकरणेवासतै कथनकऱ्याथा ॥ इसप्रकार लय कषाय यादोनोंदोषोंतैंरहित तथाविक्षेप सुखास्वाद यादोनोंदोषोंतैंरहित जोचित्त अनिंगनहै ॥ ईहां इंगननाम चलनकाहै ॥ जैसे वायुविषेस्थितदीपक लयकीअभिमुखतारूपइंगनवालाहोवैहै तैसे लयकीअभिमुखतारू पजोइंगनहै ॥ तिसइंगनतैंरहितजोचित्तहै सोअनिंगन कह्याजावैहै ॥ अर्थात् वायुतैंरहितदेशविषेस्थितदीपककीन्यां ईजोचित्त ताचलनरूपइंगनतैंरहितहै ॥ तथा जोचित्त अनाभासहै ॥ अर्थात् जोचित्त किसीभीविषयाकारकरिकै नहीं प्रतीतहोवैहै ॥ इसप्रकार जिसकालविषे सोचित्त लय कषाय विक्षेप सुखास्वाद याच्यारोंदोषोंतैंरहितहोवैहै ॥ ति सकालविषे सोचित्त तिससमब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ ५ ॥ इसोप्रकारकायोग साक्षात् श्रुतिनैंभी कथनकरयाहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यदापंचावतिष्ठंते ज्ञानानिमनसासह ॥ बुद्धिश्चनविचेष्टते तामाहुःपरमांगतिं॥तांयोगमितिमन्यंते स्थिरामिं द्रियधारणां ॥ अप्रमत्तस्तदाभवति योगोहिप्रभवाप्ययौइति ॥) अर्थयह ॥ जिसकालविषे मनसहित पंचज्ञानइंद्रिय निरोधकंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा बुद्धिभी किसोचेष्टाकूंकरतीनहीं ॥ तिस स्थिरइंद्रियोंकोधारणाकूं योगशास्त्रवत्तापुरुष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परमगतिकहेहैं तथायोगकहेहैं ॥ तिसकालविषे विनाहींप्रयत्नतैं सोचित्त ब्रह्माकारताकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ इसीमूलभू तश्रुतिकूंअंगोकारकरिकै पतंजलिभगवान्नैं (योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः) यहसूत्र कथनकऱ्याहै ॥ यातैं (ततस्ततोनिय म्यैतदात्मन्येववशंनयेत्) यहजोवचन श्रीभगवान्नैं कथनकऱ्याहै सो श्रुतिसूत्रकेअनुसारहोणेतैं यथार्थहै इति ॥ ॥ २६ ॥ ※ ॥ इसप्रकार योगाभ्यासकेबलतैं तिसयोगीपुरुषकामन प्रत्यक्आत्माविषेहीं निरोधकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैं तायोगीपुरुषकूं जोफल प्राप्तहोवैहै ॥ ताकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

प्रशांतमनसंह्येनंयोगिनंसुखमुत्तमं ॥ उपैतिशांतरजसंब्रह्मभूतमकल्मषं ॥ २७ ॥

प्रशांतमनसं । हि । एनं । योगिनं । सुखं । उत्तमं । उपैति । शांतरजसं । ब्रह्मभूतं । अकल्मषं ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन प्रशांतहैमनजिसका तथानिवृत्तहूआहैरजोगुणजिसका तथानिवृत्तहूआहैतमोगुणजिसका तथाब्रह्मरूप ऐसेइस योगीपुरुषकूं निरतिशय सुख प्राप्तहोवैहै ॥ २७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टाका ॥ प्रशांतहूआहैमनजिसका अर्थात् सर्ववृत्तियोंतैंरहिततताकरिकै निरुद्धहूआहै संस्कारमात्रअवशेष मनजि सका ताकानाम प्रशांतमनसहै ॥ इसीकूंहीं शास्त्रविषे निर्मनस्कभी कहेहैं ॥ अब तायोगीपुरुषकी निर्मनस्कताविषे हेतुगर्भितदोविशेषण कथनकरेहैं (शांतरजसं अकल्मषंइति) शांतहूआहै क्या निवृत्तहूआहै विक्षेपकाहेतुरजो गुण जिसका ताकानाम शांतरजसहै ॥ अर्थात् जोयोगीपुरुष विक्षेपदोषतैंरहितहै ॥ तथा नहींविद्यमानहै कल्मष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्या लयकाहेतुतमोगुण जिसविषे ताकानाम अकल्मषहै ॥ अर्थात् जोयोगीपुरुष लयदोषतैंरहितहै ॥ ईहां (शां तरजसं) इसपदकूंहीं जो तमोगुणकाउपलक्षण अंगीकारकरिये ॥ तौं (अकल्मषं) इसपदका यहअर्थकरणा ॥ संसारकाहेतुभूतजो धर्मअधर्मादिरूपकल्मषहै ताकल्मषतैंरहितजोयोगीपुरुषहै ताकानाम अकल्मषहै ॥ तथा जोयोगीपुरुष ब्रह्मभूतहै ॥ अर्थात् यहसर्वजगत ब्रह्मरूपहींहै याप्रकारकेनिश्चयकरिकै तासमब्रह्मकूंप्राप्तहूआ जोजीवन्मुक्तपुरुषहै ॥ इसप्रकारकेयोगीपुरुषकूं निरतिशयसुख प्राप्तहोवैहै ॥ तहां मन तथामनकीवृत्ति यादोनोंकेअभावहूएभी सुषुप्तिविषेस्वरूपसुखकाअनुभव प्रसिद्धहींहै ॥ ताप्रसिद्धिकेबोधनकरणेवासतै मूलश्लोकविषे हि यहशब्दकथनकऱ्याहै ॥ सोयहवार्ता (सुखमात्यंतिकंयत्तत्) इसश्लोकविषे पूर्वकथनकरिआयेहैं इति ॥ २७ ॥ ※ ॥ अब तिसयोगीपुरुषके कथनकऱ्येहूएसुखकूं स्पष्टकरिकै निरूपणकरेहैं ॥

युंजन्नेवंसदात्मानंयोगीविगतकल्मषः ॥ सुखेनब्रह्मसंस्पर्शमत्यंतंसुखमश्नुते ॥ २८ ॥

युंजन् । एवं । सदा । आत्मानं । योगी । विगतकल्मषः । सुखेन । ब्रह्मसंस्पर्शं । अत्यंतं । सुखं । अश्नुते ॥ इतिपद० ॥

हेअर्जुन इसप्रकार सर्वदा आपणेमनकूं आत्माविषेसमाहितकरताहूआ धर्मअधर्मतैंरहित सोयोगीपुरुष अनायासतैं ब्रह्मस्वरूप अपरिच्छिन्न सुखकूंहीं अनुभवकरेहै ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ (मनसैवेंद्रियग्रामंविनियम्यसमंततः) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्वकथनकऱ्याजोक्रमहै ॥ तिसपूर्वउक्तक्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मकरिकै जोयोगीपुरुष आपणेमनकूं सर्वदा प्रत्यक्आत्माविषे समाहितकरताहूआ स्थितहै ॥ तथा जोयोगीपुरुष विगतकल्मषहै ॥ अर्थात् संसारकीप्राप्तिकरणेहारे जेधर्मअधर्मरूपकल्मषहैं तेकल्मष निवृत्तहोइगयेहैंजिसके ॥ ऐसायोगीपुरुष ईश्वरकेप्रणिधानतैं सर्वअंतरायोंकोनिवृत्तिकरिकै अनायासतैंहीं सुखकूं अनुभवकरेहै ॥ अब जन्यसुखकीव्यावृत्तिकरणेवासतै तासुखकेदोविशेषण कथनकरेहैं (ब्रह्मसंस्पर्शीअत्यंतंइति) विषयकेस्पर्शतैंरहित ब्रह्मका तादात्म्यरूपसंस्पर्शहै जिससुखविषे ताकानाम ब्रह्मसंस्पर्शीहै ॥ अर्थात् जोसुख ब्रह्मरूपहींहै ॥ तथा जोसुख अत्यंतहै ॥ ईहां देशकालवस्तुपरिच्छेदकानाम अंतहै ॥ तापरिच्छेदरूपअंतकूं जोसुख अतिक्रमणकरिकैवर्त्तेहै तासुखकानाम अत्यंतहै ॥ इसीअपरिच्छिन्नब्रह्मरूपसुखकूं (योवैभूमातत्सुखं) यहश्रुति प्रतिपादनकरेहै ॥ ऐसेनिरतिशयब्रह्मानंदकूं सोयोगीपुरुष सर्वओरतैंनिर्वृत्तिकचित्तकरिकै लयविक्षेपतैंविलक्षण अनुभवकरेहै ॥ तहां विक्षेपकेविद्यमानहूए वृत्ति अवश्यहोवैहै और लयकेहूए मनकास्वरूपतैंहींअसत्वहोवैहै ॥ यातैं तासुखकेअनुभवकूं लयविक्षेपतैंविलक्षणकह्याहै ॥ और सर्ववृत्तियोंतैंरहितसूक्ष्ममनकरिकै सुखकाअनुभव केवल असंप्रज्ञातसमाधिविषेहीं होवैहै ॥ अन्यत्रहोवैनहीं ॥ ईहां (सुखेन) याशब्दकरिकै प्रतिबंधकअंतरायोंकोनिवृत्तिकथनकरी ॥ तेअंतराय योगसूत्रोंविषे पतंजलिभगवान्नैं कथनकरेहैं ॥ तहांसूत्रं ॥ (व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रांतिदर्शनालब्धभूमिकत्वानवस्थितत्वानिचित्तविक्षेपास्तेंऽतरायाः ॥)अर्थयह ॥ व्याधि १ स्त्यान २ संशय ३ प्रमाद ४ आलस्य ५ अविरति ६ भ्रांतिदर्शन ७ अलब्धभूमिकत्व ८ अनवस्थितत्व ९ यहनवप्रकारकेचित्तविक्षेप अंतरायकहेजावैहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तहां जे चित्तकूं योगतैंवांक्षप्तकरहैं अर्थात् तायोगतैंबहिर्मुखकरेहैं ते चित्तविक्षेप कहेजावेहैं ॥ तेहींचित्तविक्षेप योग केविरोधीहोणेतैं अंतरायकहेजावेहैं ॥ तिनोंविषेभी संशय भ्रांतिदर्शन यहदोनोंतौं तावृत्तिनिरोधरूपयोगके साक्षा त्हीं विरोधीहोवेहैं ॥ और व्याधिआदिकदूसरेनिमित्ततौं सर्वदा वृत्तिकेसहचरितहोणेतैं तावृत्तिकेहींविरोधीहोवेहैं ॥ तहां वातपित्तादिकधातुवोंकीविषमताहैनिमित्तजिनोंविषे ऐसे जेज्वरादिकविकारहैं तिनोंकानाम व्याधिहै ॥ १ ॥ और अकर्मण्यताकानाम स्त्यानहै अर्थात् योगशास्त्रवेत्तापुरुषनैं सिखाएहूएभीशिष्यविषे जोआसनादिककर्मो की अयोग्यताहै ताकानाम स्त्यानहै ॥ २ ॥ और यहयोग हमारेकूं सिद्धकरणेयोग्यहै अथवानहीं इसप्रकार भाव अभावरूपदोकोटियोंकूंविषयकरणेहाराजोज्ञानहै ताकानाम संशयहै ॥ यद्यपि तत्अभाववालेविषे तत्बुद्धिरूपता विपर्ययकीन्यांई संशयविषेभीहै ॥ यातैं सोसंशय विपर्ययकेअंतर्भूतहीं होइसकेहै ॥ तथापि संशयविषेतौं दोकोटीयोंका भानहोवैहै ॥ और विपर्ययविषे एकहींकोटीकाभानहोवैहै ॥ इतनीअवांतरविशेषताकूंअंगीकारकरिकै ईहां संशयकूं विपर्ययतैंभिन्न कथनकऱ्याहैइति ॥ ३ ॥ और समाधिकेसाधनोंकेअनुष्ठानकरणेकीसामर्थ्यताकेविद्यमानहूएभी जो तिनसाधनोंकाअनुष्ठाननहींकरणाहै ताकानाम प्रमादहै ॥ अर्थात् दूसरेविषयोंविषेप्रवृत्तिपणेकरिकै जोयोगसाधनों विषेउदासीनताहै ताकानाम प्रमादहै ॥ ४ ॥ और तिसउदासीनताकेनिवृत्तहूएभी कफादिकधातुवोंकीवृद्धिकरि कैअथवा तमोगुणकोवृद्धिकरिकै जोशरीरविषे तथाचित्तविषे गुरुत्वहै ताकानाम आलस्यहै ॥ सोआलस्य व्याधि रूपकरिकैअप्रसिद्धहूआभी योगविषे प्रवृत्तिका विरोधीहींहै ॥ ५ ॥ और किसीविषयविशेषविषे जोचित्तकी निरंतर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अभिलाषाहै ताकानाम अविरतिहै ॥ ६ ॥ और योगके असाधनोंविषेभी जायोगसाधनत्वबुद्धिहै तथायोगकेसाधनोंविषेभी जायोगअसाधनत्वबुद्धिहै ताकानाम भ्रांतिदर्शनहै ॥ ७ ॥ और समाधिकीजाएकाग्रताभूमिकाहै ॥ ताभूमिकाका जोअलाभहै ॥ अर्थात् क्षिप्त मूढ विक्षिप्तरूपताकीजाप्राप्तिहै ताकानाम अलब्धभूमिकत्वहै ॥ ८ ॥ और तासमाधिकीभूमिकाकेप्राप्तहूएभी आपणेप्रयत्नकोशिथिलताकरिकै जोचित्तकी तिसभूमिकाविषे नहींस्थितिहै ताकानाम अनवस्थितत्वहै ॥ ९ ॥ यहनवप्रकारके चित्तविक्षेप योगमल कहेजावेहैं तथा योगप्रतिपक्ष कहेजावेहैं तथा योगअंतराय कहेजावेहैं इति ॥ किंवा इसतैंअन्य दूसरेभीविघ्नरूप अंतराय पंतजलिभगवान्नें कथनकरेहैं ॥ तहां सूत्रं ॥ (दुःखदौर्मनस्यांगमेजयत्वश्वासप्रश्वासाविक्षेपसहभुवः ॥) अर्थयह ॥ दुःख १ दौर्मनस्य २ अंगमेजयत्व ३ श्वास ४ प्रश्वास ५ यहपंचअंतराय समाहितचित्तकूंहोवैंनहीं ॥ किंतु विक्षिप्तचित्तकूंहीं होवैहैं ॥ यातैं यहपांचो विक्षेपसहभुवःअंतराय कहेजावैहैं ॥ तहां चित्तका बाधनारूप जोराजसपरिणामहै ताकानाम दुःखहै ॥ सोदुःख आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैविक इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां ज्वरादिकव्याधियोंकरिकैउत्पन्न भयाजोशारीर दुःखहै तथाकामक्रोधादिकआधियोंकरिकै उत्पन्नभयाजोमानसदुःखहै तेदोनोंप्रकारकेदुःख आध्यात्मिकदुःख कहेजावेहैं ॥ और व्याघ्र सर्प चोर आदिकोंकरिकैजन्यजोदुःखहै सोदुःख आधिभौतिकदुःख कह्याजावैहै ॥ और ग्रहपीडादिकोंकरिकैजन्यजोदुःखहै सोदुःखहै आधिदैविकदुःख कह्याजावैहै ॥ सोयहत्रिविधदुःख द्वेषरूप विपर्ययकाहेतुहोणेतैं समाधिकाविरोधीहींहै ॥ १ ॥ औरइच्छाविघातादिक बलवान्दुःखकेअनुभवकरिकैजन्य जो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चित्तका तामसपरिणामविशेषहै ताकूं क्षोभकहेहैं तथास्तब्धीभावभीकहेहैं ताकानाम दौर्मनस्यहै ॥ सोदौर्मनस्य कषायरूपहोणेतैं लयकोन्यांई समाधिकाविरोधीहींहै ॥ २ ॥ और हस्तपादादिकअंगोंकाजोकंपनहै ॥ ताकूं अंगमेजयत्व कहेहैं ॥ सोअंगमेजयत्व आसनकेस्थिरताकाविरोधीहोवैहै ॥ ३ ॥ और प्राणकरिकै बाह्यवायुकाजोअंतरप्रवेश है ताकानाम श्वासहै ॥ सोश्वास समाधिकेअंगभूत रेचककाविरोधीहोवैहै ॥ ४ ॥ और प्राणकरिकै भीतरलेवायुका जोबाह्यनिकासणाहै ताकानाम प्रश्वासहै ॥ सोप्रश्वास समाधिकेअंगभूतपूरककाविरोधीहोवैहै इति ॥ ५ ॥ यहपूर्व उक्तदोसूत्रोंकरिकै कथनकरेजेचतुर्दशअंतरायहैं तेविघ्नरूपअंतराय अभ्यासवैराग्यकरिकै निवृत्तहोवैहैं ॥ अथवा ईश्वरप्रणिधानकरिकै निवृत्तहोवैहैं ॥ तहां योगसूत्रोंविषे पतंजलिभगवान् (तीव्रसंवेगानामासन्नः) इससूत्रविषे तोव्रवैराग्यवान्पुरुषोंकूं अत्यंतसमीप असंप्रज्ञातसमाधिकालाभकथनकरिकै (ईश्वरप्रणिधानाद्वा) इससूत्रविषे पक्षांतरकूंकहिकै तिसप्रणिधेयईश्वरकेस्वरूपकूं (क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टःपुरुषविशेषईश्वरः । तत्रनिरतिशयंसर्वज्ञबीजं । सपूर्वेषामपिगुरुःकालेनानवच्छेदात्) इनतीनसूत्रोंतैंप्रतिपादनकरिकै ताईश्वरकेप्रणिधानकूं (तस्यवाचकः प्रणवः । तज्जपस्तदर्थभावनं) यादोसूत्रोंकरिकै कथनकरताभयाहै ॥ तिसतैंअनंतर सोपतंजलिभगवान् (ततःप्रत्यक्चेतनाधिगमोप्यंतरायाभावश्च) यहसूत्र कथनकरताभयाहै ॥ अब ॥ (ईश्वरप्रणिधानाद्वा ॥ १ ॥ क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेषईश्वरः ॥ २ ॥ तत्रनिरतिशयंसर्वज्ञबीजं ॥ ३ ॥ सपूर्वेषामपिगुरुःकालेनानवच्छेदात् ॥ ४ ॥ तस्यवाचकः प्रणवः ॥ ५ ॥ तज्जपस्तदर्थभावनं ॥ ६ ॥ ततःप्रत्यक्चेतनाधिगमोप्यंतरायाभावश्च ॥ ७ ॥)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ इनसप्तसूत्रोंका यथाक्रमतैंअर्थ निरूपणकरेहैं ॥ ईश्वरविषे जो कायिक वाचिक मानस यहतीनप्रकारकीभक्तिविशे
षहै ताकानाम ईश्वरप्रणिधानहै ॥ तिसईश्वरप्रणिधानतैं इसयोगीपुरुषकूं अत्यंतसमीप असंप्रज्ञातसमाधिकाला
भहोवैहै ॥ तहांसूत्रकेअंतविषेस्थितजो वा यहशब्दहै सोवाशब्द पूर्वउक्त तीव्रवैराग्यरूपउपायकेसाथि इसईश्वर
प्रणिधानरूपउपायका विकल्पबोधनकरणेवासतैंहैं ॥ अर्थात् जैसे तीव्रवैराग्यतैं तासमाधिकालाभहोवैहै ॥ तैसे ई
श्वरप्रणिधानतैंभी तासमाधिकालाभहोवैहै ॥ जिसकारणतैं ताभक्तिकरिकैप्रसन्नहूआ ईश्वर यहइष्टवस्तु इसभक्तज
नकूंप्राप्तहोवो याप्रकारकाअनुग्रह अवश्यकरिकैकरेहै इति ॥ १ ॥ अब जिसईश्वरकेप्रणिधानतैं अंतरायकीनिवृत्ति
पूर्वक तासमाधिकालाभहोवैहै ॥ ताईश्वरकेस्वरूपकूं तीनसूत्रोंकरिकैवर्णनकरेहैं ॥ क्लेश कर्म विपाक आशय याच्या
रोकरिकै तीनकालविषेअसंबद्ध जोपुरुषविशेषहै ताकानाम ईश्वरहै ॥ तहां अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवे
श यापांचोंकानाम क्लेशहै ॥ इनक्लेशोंकास्वरूप पूर्वपंचमअध्यायविषेनिरूपणकरिआयेहैं ॥ और विहितप्रतिषिद्धक्रि
यातैंजन्य जोधर्मअधर्महै ताकानाम कर्महै ॥ और ताधर्मअधर्मकाजोफलहै ताकानाम विपाकहै ॥ और ताफलभो
गकेअनुकूल जेसंस्कारहैं तिनोंकानाम आशयहै ॥ जैसे इसपुरुषकूं जबी पापकर्मकेवशतैं उष्ट्रकाजन्महोवैहै ॥ तबी
तहां कंटकभक्षणकरणेकेसंस्कार उद्भवहोवैहैं ॥ इसप्रकार यहजीव जिसजिसजातिवालेशरीरकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ति
सतिसजातिवालेशरीरकेभोगोंविषे जोप्रवृत्तहोवैहै सोपूर्वले संस्कारोंकेवशतैंहींप्रवृत्तहोवैहै ॥ तिनसंस्कारोंकेउद्भव
तैंविना तिसतिसशरीरकाजीवनहीं संभवैनहीं ॥ ऐसेचित्तविषेस्थितक्लेशादिकोंकरिकै यहसंसारीपुरुषहीं संबद्धहोवै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है ॥ तेक्लेशादिक तीनकालविषे जिसमैंहैंनहीं ॥ ऐसापुरुषविशेष ईश्वरकह्याजावैहै ॥ ईहां सूत्रविषेस्थितजो विशेष यहशब्दहै ॥ सो तीनकालविषेअसंबंधरूपअर्थकावाचकहै ॥ ऐसेविशेषपदकरिकै ताईश्वराविषे मुक्तपुरुषोंतैंभीव्या वृत्तिकथनकरा ॥ तिनमुक्तपुरुषोंविषे यद्यपि तिसकालविषे सोक्लेशादिरूपबंध नहींहै ॥ तथापि तत्त्वसाक्षात्कारतैंपू र्वकालविषे सोबंध तिनमुक्तपुरुषोंविषेभी विद्यमानथा ॥ यातैं तीनकालविषे तिनक्लेशादिकोंकेसंबंधकाअभाव तिनमु क्तपुरुषोंविषे संभवतानहीं ॥ किंतु (यःसर्वज्ञःसर्ववित्) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकैप्रतिपादित जोसर्वज्ञईश्वरहै ताईश्व रविषेहीं सोसंभवैहै इति ॥ २ ॥ अब ताईश्वरकीसर्वज्ञताविषेअनुमानप्रमाणका कथनकरेहैं ॥ तहां अस्मदादिक जीवोंकाजो ज्ञानहै सोज्ञान सातिशयहोणेतैं निरतिशयज्ञानकरिकैव्याप्तहै ॥ जोजोपदार्थ सातिशयहोवैहै सोसोपदा र्थ आपणेसमानजातीय निरतिशयपदार्थकरिकैव्याप्तहींहोवैहै ॥ जैसे घटकापरिमाण सातिशयहै यातैं परिमाण त्वरूपतैंआपणेसमानजातीय विभुपरिमाणकरिकैव्याप्तहै ॥ ऐसानिरतिशयज्ञान केवल ईश्वरविषेहींरहेहै ॥ अ न्यकिसोविषेरहैनहीं ॥ और सोनिरतिशयज्ञानहीं सर्वज्ञताका ज्ञापकहोवैहै ॥ अर्थात् जहां निरतिशयज्ञानहोवैहै ॥ तहां सर्वज्ञताहींजानीजावैहै ॥ यातैं निरतिशयज्ञानवालाहोणेतैं सोईश्वर सर्वज्ञहै इति ॥ ३ ॥ अब ताईश्वरविषे ब्रह्मादिकदेवतावोंतैं विशेषता कथनकरेहैं ॥ सृष्टिकेआदिकालविषेउत्पन्नभयेजेब्रह्मादिकदेवताहैं तेसर्व कालपरिच्छेद वालेहैं ॥ ऐसेकालपरिच्छिन्नब्रह्मादिकोंकाभी सोईश्वर गुरुरूपहै ॥ काहेतैं सोईश्वर कालकरिकैअपरिच्छिन्नहै ॥ अर्थात् आदिअंततैंरहितहै ॥ तहांश्रुति ॥ (योब्रह्माणंविदधातिपूर्वंयोवेदांश्वप्रहिणोतितस्मै ॥) अर्थयह ॥ जोईश्वर सृ ॥३०९॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ष्टिकेआदिकालविषे हिरण्यगर्भरूपब्रह्माकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तथा जोईश्वर तिसब्रह्माकेताई सर्ववेद देताभया इति ॥ इत्यादिकश्रुतिवचनोंतैं तिसईश्वरविषे ब्रह्मादिकोंकागुरुपणा सिद्धहोवैहै इति ॥ ४ ॥ तहां पूर्वतीनसूत्रोंकरिकैकथनकऱ्याजोईश्वर ताईश्वरकेप्रणिधानकूं अब दोसूत्रोंकरिकै कथनकरेहैं ॥ तिनपूर्वउक्तईश्वरकावाचक ॐकाररूपप्रणवहै इति ॥ ५ ॥ तिसईश्वरकेवाचकप्रणवकाजो निरंतरजपहै तथाताप्रणवकेअर्थरूपईश्वरकाजोध्यानहै ताकानाम ईश्वरप्रणिधानहै इति ॥ ६ ॥ और तिसप्रणवकेजपरूप तथाताप्रणवकेअर्थकाध्यानरूप ईश्वरप्रणिधानतैं तिसयोगीपुरुषकूं प्रत्यक्चेतनआत्माका साक्षात्कारहोवैहै ॥ तथा पूर्व (व्याधिस्त्यान) इत्यादिकदोसूत्रोंकरिकैकथनकरयेहूए चतुर्दशविघ्नरूपअंतरायोंकाभी अभावहोवैहै इति ॥ ७ ॥ जैसे ताईश्वरप्रणिधानतैं तिनअंतरायोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तैसे अभ्यासवैराग्यकरिकैभी तिनअंतरायोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तहां अभ्यासवैराग्यकरिकै तिनअंतरायोंकीनिवृत्तिकरणेविषे ताअभ्यासकीदृढताकरणेवासतै पतंजलिभगवान्नैं यहदोसूत्र कथनकरेहैं ॥ तहांसूत्रं ॥ (तत्प्रतिषेधार्थमेकतत्त्वाभ्यासः ॥ १ ॥ मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणांसुखदुःखपुण्यापुण्यविषयाणांभावनातश्चित्तप्रसादनं ॥२॥) अर्थयह ॥ पूर्वकथनकऱ्येहूए विघ्नरूपअंतरायोंकीनिवृत्तिकरणेवासतै सोयोगीपुरुष किसीएकइष्टतत्त्वविषे चित्तका पुनःपुनःनिवेशरूप अभ्यासकूंकरै इति ॥ १ ॥ ईहां सुहृदताकानाम मैत्रीहै ॥ और कृपाकानाम करुणाहै ॥ और हर्षकानाम मुदिताहै ॥ और उदासीनताकानाम उपेक्षाहै ॥ और सुख दुःख पुण्य अपुण्य यहच्यारिशब्द यथाक्रमतैं सुखवालेका तथादुःखवालेका तथापुण्यवालेका तथाअपुण्यवालेका वाचकहैं ॥ यातैं यहअर्थ सिद्धभया ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सुखभोगकरिकैसंपन्नजेप्राणीहैं तिनसर्वप्राणीयोंविषे इनहमारेमित्रोंकूं जोयहसुख प्राप्तभयाहै सोसर्वदाबन्याराहै या प्रकारकीमैत्रीकूं सोअधिकारीपुरुषकरै ॥ तिनसुखीपुरुषोंकूंदेखिकै यहसुख इनोंकूंक्युंप्राप्तभयाहै याप्रकारकीईर्षा कूं सो अधिकारीपुरुष करैनहीं ॥ और इसलोकविषेजेदुःखीप्राणीहैं ॥ तिनदुःखीप्राणीयोंविषे सोअधिकारीपुरुष कि सीप्रकारकरिकै इनोंकेदुःखकीनिवृत्तिहोवैतौंश्रेष्ठहै याप्रकारकीकृपाकूंहींकरै ॥ तिनदुःखीप्राणीयोंविषे उपेक्षाबुद्धि करैनहीं तथाईर्षाकूंभी करैनहीं ॥ और जेपुरुष पुण्यवान्हैं तिनपुण्यवानोंविषेतौं तिनोंकेपुण्यकीस्तुतिकथनपूर्वक हर्षकूंहींकरै ॥ तिनपुण्यवानोंविषे द्वेषकूंभी नहींकरै तथाउपेक्षाकूंभी नहींकरै ॥ और जेपापात्मादुष्टपुरुषहैं तिनोंवि षेतौं उदासीनतारूपउपेक्षाकूंहींकरै ॥ तिनपापीयोंविषे हर्षकूं तथाद्वेषकूंकरैनहीं ॥ इसप्रकार मैत्री करुणा मुदिता उपेक्षा याच्यारोंकेसेवनकरणेहारेपुरुषविषे एकशुद्धधर्म उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसधर्मविशेषकेप्रभावतैं रागद्वेषादिकमल तैंरहितचित्त प्रसन्नहूआ एकाग्रताकेयोग्यहोवैहै इति ॥ २ ॥ ईहां मैत्रीआदिकच्यारिधर्म दूसरे दैवीसंपत्रूपधर्मों केभी उपलक्षणहैं ॥ तेदूसरेधर्म (अभयंसत्वसंशुद्धिः) इत्यादिकवचनकरिकै तथा (अमानित्वमदंभित्वं) इत्यादि कवचनकरिकै श्रीभगवान् आपहीं आगेकथनकरैंगा ॥ तेसर्वधर्म शुभवासनारूपहोणेतैं मलिनवासनाकेनिवर्त्तकहीं हैं ॥ यातै सर्वपुरुषार्थकेप्रतिबंधकहोणेतैं परमशत्रुरूप जेरागद्वेषादिकहैं ॥ तेरागद्वेषादिक इसअधिकारीपुरुषनैं म हान्प्रयत्नकरिकैभीनिवृत्तकरणे ॥ और पतंजलिभगवान्नैं योगशास्त्रविषे इसचित्तकेप्रसादनवासतै जैसे मैत्रीकरु णादिकउपाय कथनकरेहै ॥ तैसे प्राणायामादिक दूसरेउपायभी कथनकरेहैं ॥ सोऐसा चित्तकाप्रसादन भगवत्के

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनुग्रहकरिकै जिसपुरुषकूं उत्पन्नभयाहै॥तिसी भगवत्अनुगृहीत पुरुषकेप्रतिहीं (सुखेन) यहवचन भगवान्नैंकथनक
ऱ्याहै॥ताभगवत्अनुग्रहणतैंविना इसमनकानिग्रह होइसकतानहीं इति ॥२८॥ ※ ॥ इसप्रकार निरोधसमाधिकरिकै
त्वंपदकेलक्ष्यअर्थरूप तथातत्पदकेलक्ष्यअर्थरूप शुद्धचेतनकेसाक्षात्कारहूएतैंअनंतर तालक्ष्यचेतनकेएकताकूंविषयक
रणेहारी तथातत्त्वमसि इत्यादिकवेदांतवाक्यकरिकैजन्य निर्विकल्पकसाक्षात्काररूप अंतःकरणकीवृत्ति उत्पन्नहोवैहै ॥
जिसवृत्तिकूं वेदवेत्तापुरुष ब्रह्मविद्या इसनामकरिकैकथनकरेहैं॥तिसतत्त्वसाक्षात्काररूपब्रह्मविद्यातैंसर्वअविद्याकी तथा
ताकेकार्यप्रपंचकी निवृत्तिकरिकै यहअधिकारीपुरुष अपरिच्छिन्न ब्रह्मरूपसुखकूं अनुभवकरेहै॥इससर्वअर्थकूं अब तीन
श्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् प्रतिपादनकरेहै ॥ तहां इसप्रथमश्लोककरिकै प्रथम त्वंपदकेलक्ष्यअर्थका निरूपणकरेहैं ॥

सर्वभूतस्थमात्मानंसर्वभूतानिचात्मनि ॥ ईक्षतेयोगयुक्तात्मासर्वत्रसमदर्शनः २९

सर्वभूतस्थं । आत्मानं । सर्वभूतानि । च । आत्मनि । ईक्षते । योगयुक्तात्मा । सर्वत्र । समदर्शनः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन योगयुक्तआत्मा सर्वप्रपंचविषे समबुद्धिवालाहूआ सर्वभूतोंविषेस्थित
आत्माकूं तथा आत्माविषे सर्वभूतोकूं देखेहै ॥ २९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ स्थावरजंगमशरीररूप जितनैंकीभूतहैं तिनसर्वभूतोंविषे भोक्तारूपकरिकैस्थितहूआजो एकअद्वितीय
विभु सच्चिदानंदरूप प्रत्यक्साक्षीआत्माहै ॥ तिसप्रत्यक्साक्षीआत्माकूं अनृतजडपरिच्छिन्नदुःखरूपसाक्ष्यपदार्थोंतैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पृथक्करिकै साक्षात्कारकरेहै ॥ तथा तिसप्रत्यक्साक्षीआत्माविषे आध्यासिकसंबंधकरिकैस्थित जे मिथ्याभूत परिच्छिन्न जड दुःखरूप सर्वभूतहैं ॥ तिनसाक्ष्यरूपसर्वभूतोंकूं तिसप्रत्यक्साक्षीआत्माविषे कल्पितरूपकरिकै साक्षात्कारकरेहै ॥ कौनपुरुष तिनोंकूं साक्षात्कारकरेहै ऐसीजिज्ञासाकेहूए कहेहैं (योगयुक्तात्मासर्वत्रसमदर्शनः इति) तहां वस्तुकेविचारकोपरमकुशलतारूपयोगकरिकै युक्तहूआहै क्या प्रसादकूंप्राप्तहूआहै आत्मा क्या अंतःकरण जिसका ताकानाम योगयुक्तात्माहै ॥ तथा तायोगजन्य ऋतंभरनामाप्रत्यक्षकरिकै एकहींकालविषे सर्व सूक्षमवस्तुवोंकूं तथाव्यवहितवस्तुवोंकूं तथाविप्रकृष्टवस्तुवोंकूं तुल्यहींदेखेहै ॥ इसप्रकारतैं सर्ववस्तुवोंविषे समानहैदर्शनजिसकूं ताकानाम समदर्शनहै ॥ ऐसासमदर्शनहूआ सोयोगयुक्तआत्मा प्रत्यक्आत्माकूं तथाताकेविषेकल्पित अनात्मप्रपंचकूं पूर्वउक्तरीतिसैं यथावत् जानेहै यहवार्त्तायुक्तहै इति ॥ अथवा इसश्लोकका यहदूसराअर्थकरणा ॥ जोपुरुष योगयुक्तात्माहै ॥ तथा जोपुरुष सर्वत्रसमदर्शनहै ॥ सोपुरुषहीं इसप्रत्यक्साक्षीआत्माकूं साक्षात्कारकरेहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै योगीपुरुष तथासमदर्शीपुरुष दोनोंहीं आत्मसाक्षात्कारकेअधिकारी कथनकरे ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे चित्तकीवृत्तिकानिरोधरूपयोग साक्षीआत्माकेसाक्षात्कारकाहेतुहै ॥ तैसे जडप्रपंचकाविवेककरिकै सर्वत्रअनुस्यूतचैतन्यआत्माका ताजडप्रपंचतैंपृथक्करणारूपविचारभी तासाक्षीआत्माकेसाक्षात्कारकाहेतुहै ॥ ताआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिविषे केवल योगहीं अवश्यअपेक्षितनहींहै ॥ इसीअभिप्रायकूंलैकै श्रीवसिष्ठभगवान्नैं रामचंद्रकेप्रति यहवचनकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (द्वौक्रमौचित्तनाशस्ययोगोज्ञानंचराघव ॥ योगोवृत्तिनिरोधोहिज्ञानंसम्यगवेक्षणं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥१॥ असाध्यःकस्यचिद्योगःकस्यचित्तत्त्वनिश्चयः ॥ प्रकारौद्वौततोदेवोजगादपरमःशिवः॥ २ ॥) अर्थयह ॥ हेरामचं
द्र साक्षीआत्माकाउपाधिभूतजोचित्तहै ताचित्तकूं तिससाक्षिआत्मातैंपृथक्करिकै जोतिससाक्षिआत्माकादर्शनहै य
हहीं तिसचित्तकानाशहै ॥ ऐसे चित्तनाशके दोउपायहैं ॥ एकतौं योगउपायहै ॥ दूसरा ज्ञानउपायहै ॥ तहां सर्व
वृत्तियोंकानिरोधरूप जोअसंप्रज्ञातसमाधिहै ताकानाम योगहै ॥ ताअसंप्रज्ञातसमाधिकोप्राप्ति संप्रज्ञातसमाधितैं
होवैहै ॥ तहां संप्रज्ञातसमाधिविषेतौं एकआत्माकारवृत्तियोंकेप्रवाहयुक्त अंतःकरणसत्त्व साक्षिचैतन्यनैं अनुभवक
रीताहै ॥ और असंप्रज्ञातसमाधिविषेतौं सर्ववृत्तियोंकेनिरोधयुक्त सोअंतःकरणसत्त्व उपशांतहोणेतैं तासाक्षीचैत
न्यनैं अनुभवकरीतानहीं ॥ इतनीहीं तिनदोनोंसमाधियोंविषे विशेषताहै इति ॥ और साक्षीआत्माविषेकल्पित य
हसाक्ष्यप्रपंच मिथ्याहोणेतैं तीनकालविषेनहींहै एकसाक्षीआत्माही परमार्थसत्यहै यात्रकारकेसम्यक्विचारकाना
म ज्ञानहै ॥ १ ॥ तहां किसी अधिकारीपुरुषकूंतौं सोयोग कठनपडेहै विचार सुगमपडेहै ॥ और किसीअधिकारी
पुरुषकूंतौं सोयोग सुगमपडेहै विचार कठनपडेहै ॥ इसीकारणतैं परमात्मादेवशिव तिनदोप्रकारोंकूं कथनकरता
भयाहै इति ॥ २ ॥ तहां इनदोनोंउपायोंविषे प्रथमयोगरूपउपायकूंतौं प्रपंचकूंपरमार्थसत्यमानणेहारे हैरण्यग
र्भादिकपुरुष अंगीकारकरेहैं ॥ तिनोंकेमतविषे परमार्थसत्यचित्तकेअदर्शनकरिकै साक्षीआत्माकेदर्शनविषे चित्तनि
रोधतैंअतिरिक्त दूसराकोईउपायहैनहीं ॥ किंतु केवल सोचित्तकानिरोधहीं तासाक्षीआत्माकेदर्शनका उपायहै इ
ति ॥ और श्रीमत्शंकराचार्यकेमतकूंअनुसरणकरणेहारे जे प्रपंचकूंमिथ्यामानणेहारे औपनिषदपुरुषहैं ॥ तेऔप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निषदपुरुषतौं दूसरेविचाररूपउपायकूंहीं अंगीकारकरेहैं ॥ तिन औपनिषदपुरुषोंकूंतौं अधिष्ठानचेतनकेदृढसाक्षा
त्कारहूएतैंअनंतर तिसअधिष्ठानविषेकल्पितचित्तका तथादृश्यप्रपंचका अदर्शन अनायासतैंहीं संभवहोइसकेहै ॥
ताप्रपंचकेअदर्शनविषे तिनोंकूं योगकीअपेक्षारहैनहीं ॥ इसीकारणतैं श्रीमत्शंकराचार्यनैं किसीभीस्थलविषेब्रह्मवे
त्तापुरुषोंकूं तायोगकीअपेक्षा प्रतिपादनकरीनहीं ॥ इसीकारणतैं तेऔपनिषद परमहंससंन्यासी ब्रह्मसाक्षात्कार
कीप्राप्तिवासतै ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंके श्रवणमननरूपविचारविषेहीं प्रवृत्तहोवैहैं ॥ योगविषे
प्रवृत्तहोतेनहीं ॥ काहेतैं तिसयोगकरिकै जेचित्तकेकामक्रोधादिकदोष निवृत्तकऱ्येजावैहैं ॥ तेचित्तकेदोष जोकदाचि
त् तायोगतैंविना अन्यकिसीउपायकरिकै नहींनिवृत्तहोते ॥ तौं सोयोगहीं अवश्यअपेक्षितहोता ॥ परंतु तेचित्तकेदोष
तौं विचारकरिकैभी निवृत्तहोइसकेहैं ॥ यातैं तिनऔपनिषदपुरुषोंकूं ताब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिवासतै सोयोग अ
वश्यअपेक्षितनहींहै ॥ किंतु सोवेदांतवाक्योंकाविचारहीं अवश्यअपेक्षितहै ॥ इसीकारणतैं तैत्तिरीयउपनिषदविषे
वरुणऋषि भृगुपुत्रकेप्रति वारंवार विचाररूपतपकाहीं विधानकरताभयाहै इति ॥ २९ ॥ ※ ॥ तहां इसपूर्व
श्लोकविषे शुद्धत्वंपदार्थका निरूपणकऱ्या ॥ अब इसश्लोकविषे शुद्धतत्पदार्थका निरूपणकरेहैं ॥

72

योमांपश्यतिसर्वत्रसर्वंचमयिपश्यति ॥ तस्याहंनप्रणश्यामिसचमेनप्रणश्यति ॥ ३० ॥

यः । मां । पश्यति । सर्वत्र । सर्वं । च । मयि । पश्यति । तस्य । अहं । न । प्रणश्यामि । सः । च । मे । न । प्रणश्यति ॥ इतिप० ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन जोयोगीपुरुष सर्वप्रपंचविषे मैंपरमेश्वरकूं देखेहै तथा तिससर्वप्रपंचकूं मैंपरमेश्वरविषे देखेंहै तिसंयो
गीपुरुषकूं मैंपरमेश्वर नहीं परोक्षहोवोंहूं तथा सोयोगीपुरुष मैंपरमेश्वरकूंभी नहीं परोक्षहोवैहै ॥३०॥ इतिपदा०
॥ टीका ॥ हेअर्जुन तत्त्वमसि इसवाक्यविषेस्थिततत्पदकाअर्थरूप जोमैंपरमेश्वरहूं ॥ कैसाहूंसोमैं ॥ मायाउपाधि
वालाहूआ सर्वप्रपंचकाकारणरूपहूं ॥ तथा वास्तवतैंसर्वउपाधियोंतैंरहितहूं ॥ तथा परमार्थसत्य आनंदघनहूं ॥
तथा देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहोणेतैं अनंतरूपहूं ॥ तथा सर्वप्रपंचविषे सत्तास्फुरणरूपकरिकैअनुस्यूतहूं ॥ ऐ
सेपरमेश्वरकूं जोयोगीपुरुष सर्वप्रपंचविषे व्यापकदेखेहै ॥ अर्थात् योगजन्यप्रत्यक्षज्ञानकरिकै मैंपरमेश्वरकूं अ
परोक्षकरेहै ॥ तथा जोयोगीपुरुष इससर्वप्रपंचकूं मैंपरमेश्वरविषेदेखेहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरविषे मायाकरिकैआ
रोपित जोयहसर्वप्रपंचहै तिसप्रपंचकूं मैंअधिष्ठानपरमेश्वरतैंपृथक् मिथ्यारूपकरिकैहींदेखेहै ॥ इसप्रकार मैंपरमे
श्वरकेस्वरूपकूं तथाप्रपंचकेस्वरूपकूं यथार्थजानणेहारा जोयोगीपुरुषहै ॥ तिसयोगीपुरुषकूं मैंतत्पदार्थरूप परमे
श्वर कदाचित्भी परोक्षहोतानहीं ॥ अर्थात् सोईश्वर हमारेतैंभिन्नहै याप्रकारतैं तायोगीपुरुषकेपरोक्षज्ञानकाविष
य मैंपरमेश्वर होतानहीं ॥ किंतु तिसयोगीपुरुषके योगजन्यअपरोक्षज्ञानकाविषयहीं मैंपरमेश्वर होताहूं ॥ यद्यपि
तत्पदार्थईश्वरविषे जोवाक्यजन्यअपरोक्षज्ञानकोविषयताहै सा त्वंपदार्थजीवकेसाथि अभेदरूपकरिकैहींहै ॥ केवल
ईश्वरविषे वाक्यजन्य अपरोक्षज्ञानकीविषयता संभवतीनहीं ॥ तथापि योगजन्यअपरोक्षज्ञानकीविषयता केवलई
श्वरविषेभी संभवहोइसकेहै ॥ इसप्रकार योगजन्यप्रत्यक्षज्ञानकरिकै मैंपरमेश्वरकूं अपरोक्षकरताहूआ सोयोगीपु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रुष मैंपरमेश्वरकूंभी परोक्षहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोविद्वान्पुरुष मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहींहै ॥ तथा अत्यंत प्रियहै ॥ यहसर्ववार्त्ता (ज्ञानीत्वात्मैवमेमतं) इत्यादिकवचनोंकरिकै आगेभीस्पष्टहोवैंगो ॥ और आपणाआत्मा किसीकूंभी परोक्षहोतानहीं किंतु सर्वकूंअपरोक्षहींहोवैहै ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुष सर्वदा हमारेअपरोक्षज्ञानकाहींविषयहोवैहै ॥ यहसर्ववार्त्ता (येयथामांप्रपद्यंतेतांस्तथैवभजाम्यहं) इसगीतावचनतैंहींसिद्धहै और यहवार्त्ता महाभारतविषे युधिष्ठिरकेप्रति भगवान्नैंभी कथनकरीहै (अविद्वांस्तुस्वात्मानमपिसंतंभगवंतंनपश्यति अतोभगवान्पश्यन्नपितंनपश्यति इति॥) अर्थयह ॥ हेयुधिष्ठिर आत्मज्ञानतैंरहितजोअविद्वान्पुरुषहै ॥ सोअविद्वान्पुरुषतौं आपणा आत्मारूपकरिकै विद्यमानहूएभीपरमेश्वरकूं देखतानहीं ॥ इसकारणतैं सोपरमेश्वरभी आपणेसर्वज्ञस्वभावतैं सर्वप्रपंचकूंदेखताहूआभी ताअविद्वान्पुरुषकूंदेखतानहीं इति ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सएनमविदितोनभुनक्ति ॥) अर्थयह ॥ सोपरमात्मादेव यद्यपि इसजीवकाआत्मारूपहींहै ॥ तथापि अज्ञातहूआसो परमात्मादेव इसजीवकूं जन्ममरणरूपसंसारतैंरक्षणकरतानहीं ॥ जैसे गृहविषेस्थितहूईभीनिधि अज्ञातहूई इसगृहीपुरुषकेदरिद्रताकूंनिवृत्तकरिसकैनहीं इति ॥ और विद्वान्पुरुषतौं सर्वदा अत्यंतसमीप भगवान्केअनुग्रहका पात्रहै इति ॥ ३० ॥ ❋ ॥ तहां पूर्वदोश्लोकोंकरिकै शुद्धत्वंपदार्थका तथाशुद्धतत्पदार्थका निरूपणकऱ्या ॥ अब इसश्लोकविषे तिन शुद्धत्वंपदार्थोंका अभेदरूप तत्त्वमसिवाक्यकाअर्थ निरूपणकरेहैं ॥

सर्वभूतस्थितंयोमांभजत्येकत्वमास्थितः॥सर्वथावर्त्तमानोपियोगीमयिवर्त्तते३१॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सर्वभूतस्थितं । यः । मां । भजति । एकत्वं । आस्थितः । सर्वथा । वर्त्तमानः । अपि । सः । योगी । मयि । वर्त्तते ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेअर्जुन जोयोगोपुरुष सर्वभूतोंविषेस्थित मैंतत्पदार्थकूं आपणेत्वंपदार्थकेसाथि अभेदकूं निश्चयकरताहूआ अपरोक्षकरे
है सो योगीपुरुष जिसकिसप्रकारतैं व्यवहारकरताहूआ भी मैंपरमात्माविषेहींअभेदरूपकरिकै वर्त्तेहै ॥ ३१ ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वभूतोंविषेअधिष्ठानरूपकरिकैस्थित तथासर्वप्रपंचविषे सत्तास्फुरणरूपकरिकैअनुस्यूत जो
सत्तामात्र तत्पदकालक्ष्यअर्थरूप मैंईश्वरहूं ॥ तिसमैंईश्वरका आपणेत्वंपदकेलक्ष्यअर्थरूप प्रत्यक्साक्षीकेसाथि अ
भेदनिश्चयकरताहूआ ॥ अर्थात् जैसे घटरूपउपाधिकेपरित्यागकोयेहूए घटाकाश महाकाशरूपहींहै ॥ तैसे अवि
द्याअंतःकरणादिकउपाधियोंकापरित्यागकरिकै मैंपरमेश्वरका आपणेआत्माकेसाथि अभेदनिश्चयकरताहूआ ॥ जो
अधिकारीपुरुष मैंपरश्वमेरकूंभजेहै ॥ अर्थात् अहंब्रह्मास्मि इसवेदांतवाक्यकरिकैजन्य साक्षात्कारकरिकै जोपुरुष
मैंपरमेश्वरकूं अपरोक्षकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष कार्यसहितअविद्याकीनिवृत्तिकरिकै जीवन्मुक्तहूआ कृतकृत्यहींहोवै
है ॥ तिसजीवन्मुक्तपुरुषकूं बाधितानुवृत्तिकरिकै जितनैंकालपर्यंत शरीरादिकोंकादर्शन विद्यमानहै ॥ तितनैंकाल
पर्यंत विलक्षणप्रारब्धकर्मकीप्रबलतातैं सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष याज्ञवल्क्यादिकोंकीन्यांई सर्वकर्मोंकापरित्यागक
रिकै वर्त्तमानहूआ अथवा वसिष्ठजनकादिकोंकीन्यांई अग्निहोत्रादिकविहितकर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै वर्त्तमानहूआ
अथवा दत्तात्रेयादिकोंकीन्यांई प्रतिषिद्धकर्मोंकरिकै वर्त्तमानहूआ जिसकिसीरूपकरिकै व्यवहारकूंकरताहूआ सो
ब्रह्मवेत्तायोगीपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार जानताहूआ मैंपरमात्माविषेहीं अभेदरूपकरिकैवर्तेहै ॥ तिसमेरेपरमानं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दस्वरूपतैं सोविद्वान्पुरुष कदाचित्भी प्रच्युतहोवैनहीं अर्थात् तिसविद्वान्पुरुषकूं सर्वप्रकारतैंमोक्षकेप्रतिबंधक कीशंकाहैनहीं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तस्यहनदेवाश्चनाभूत्याईशतआत्माह्येषांसभवति) ॥ अर्थयह ॥ महान्प्रभाववालेजेइंद्रादिकदेवताहैं तेइंद्रादिकदेवताभी तिसविद्वान्पुरुषकेमोक्षविषे प्रतिबंधकरणेमैं समर्थनहींहै ॥ जिसकारणतैं सोविद्वान्पुरुष तिनदेवतावोंका आत्मारूपहींहै ॥ और आपणेआत्माकी कोईभीहानि करतानहीं ॥ जबी इंद्रादिकदेवताभी प्रतिबंधकरणेकूंसमर्थनहींभये ॥ तबी अन्यक्षुद्रजीव ताकाप्रतिबंधनहींकरेहैं याकेविषे क्याकहणाहैइति ॥ यद्यपि निषिद्धकर्मोविषेप्रवृत्तकरणेहारे जेरागद्वेषहैं तेरागद्वेष तिसब्रह्मवेत्तापुरुषविषेहैंनहीं ॥ यातैं तिसविद्वान्पुरुषको निषिद्धकर्मोविषे प्रवृत्तिसंभवतोनहीं ॥ तथापि ब्रह्मवेत्तापुरुषकी निषिद्धकर्मोविषेप्रवृत्तिकूअंगीकारकरिकै आत्मज्ञानकीस्तुतिकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं (सर्वथावर्त्तमानोपि) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ जैसेपूर्व (हत्वापिसइमाँल्लोकान्नहंतिननिबध्यते) यहवचन ज्ञानकोस्तुतिवासते कथनकऱ्याथा ॥ तैसे (सर्वथावर्त्तमानोपि) यहवचनभी ज्ञानकोस्तुतिवासतैहींहै ॥ और दत्तात्रेयभगवान्की जोनिषिद्धकर्मविषेप्रवृत्ति हूईहै ॥ सोकोई रागद्वेषतैंनहीं हूई ॥ किंतु बहिर्मुखलोकोंकेसहवासकीनिवृत्तिकरणेवासतै साप्रवृत्तिहूईहै ॥ यहसर्ववार्त्ता आत्मपुराणके एकादशेअध्यायविषे हम विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैं इति ॥ ३१ ॥ * ॥ इसप्रकार ब्रह्मसाक्षात्कारकेउत्पन्नहूएभी कोईकविद्वान्पुरुष मनोनाश वासनाक्षय यादोनोंकेअभावतैं जीवन्मुक्तिकेसुखकूं अनुभवकरतानहीं ॥ तथा चित्तकेविक्षेपकरिकै दृष्टदुःखकूंअनुभवकरेहै ॥ सोविद्वान्पुरुष अपरमयोगी कह्याजावैहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ जिसकारणतैं सोविद्वान्पुरुष इसदेहकेपाततैंअनंतरतौं विदेहकैवल्यकूं अवश्यकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ और इसशरीरकेविद्यमानकालपर्यंततौं विक्षेपकरिकै दृष्टदुःखकाअनुभवकरेहै ॥ तिसकारणतैं सोविद्वान् अपरमयोगी कह्या जावैहै ॥ और जोविद्वान्पुरुष तत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय यातीनोंका एककालविषेअभ्यासतैं दृष्टदुःखकीनिवृत्तिपूर्वक जीवन्मुक्तिकेसुखकूंअनुभवकरताहूआ प्रारब्धकर्मकेवशतैं समाधितैंव्युत्थानकालविषे सर्वप्राणियोंकूं आपणेआत्माकेतुल्यदेखेहै ॥ सोईहींविद्वान्पुरुष परमयोगी कह्याजावैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

आत्मौपम्येनसर्वत्रसमंपश्यतियोर्जुन ॥ सुखंवायदिवादुःखंसयोगीपरमोमतः ॥३२॥

आत्मौपम्येन । सर्वत्र । समं । पश्यति । यः । अर्जुन । सुखं । वा । यदिवा । दुःखं । सः । योगी । परमः । मतः ॥ इतिप० ॥

हेअर्जुन जोपुरुष सर्वप्राणीयोंविषे आपणेआत्माकेदृष्टांतकरिकै सुखकूं अथवा दुःखकूं तुल्यहीं देखेहै सो ब्रह्मवेत्तायोगी श्रेष्ठ मान्याजावैहै ॥ ३२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोविद्वान्पुरुष सर्वप्राणीमात्रविषे सुखकूं अथवा दुःखकूं आपणेआत्माकेदृष्टांतकरिकै तुल्यहीं जानेहै ॥ अर्थात् जोविद्वान्पुरुष द्वेषतैंरहितहोणेतैं जैसे आपणेअनिष्टकूं नहींसंपादनकरेहै ॥ तैसे अन्यप्राणीयोंकेभी अनिष्टकूंसंपादनकरतानहीं ॥ इसप्रकार जोविद्वान्पुरुष रागतैंरहितहोणेतैं जैसे आपणेइष्टकूंसंपादनकरेहै तैसे अन्यप्राणीयांकभी इष्टकूंहींसंपादनकरेहै ॥ सो निर्वासनताकरिकै शांतमनवाला ब्रह्मवेत्तायोगीपुरुष पूर्वउक्त अपरम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

योगीतैं श्रेष्ठहै ॥ अर्थात् मनोनाशवासनाक्षयतैंरहित केवल तत्त्ववेत्तापुरुषतैं सोमनोनाशवासनाक्षयसहित तत्त्ववेत्ता पुरुष श्रेष्ठहै ॥ यातैं तत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय यातीनोंका यथाक्रमतैंअभ्यासकरणेवासतै इसअधिकारीपुरुषनैं महान्प्रयत्नकरणा इति ॥ अब तत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय यातोनोंकास्वरूप वर्णनकरेहैं ॥ तहां यहसर्वद्वैतप्रपंच अद्वितीयसच्चिदानंदरूप परमात्मादेवविषे मायाकरिकैकल्पितहोणेतैं मिथ्याभूतहींहै ॥ एकपरमात्मादेवहीं परमार्थसत्यरूपहै ॥ ऐसाअद्वितीयपरमात्मादेव मैंहूं याप्रकारकेज्ञानकूं तत्त्वज्ञानकहेहैं ॥ और प्रदीपकीज्वालावों केसंतानकीन्यांई वृत्तियोंकेसंतानरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तभयाजो अंतःकरणरूपद्रव्यहै ॥ सोअंतःकरण मननरूपताकरिकै मनकह्याजावैहै ॥ और तिसवृत्तिरूपपरिणामकापरित्यागकरिकै तिनसर्ववृत्तियोंकाविरोधी जो निरोधाकारकरिकैपरिणामहै यहहीं तिसमनकानाशहै ॥ और पूर्वअपरकेविचारतैंविना शीघ्रहीं उत्पन्नहूई जेक्रोधादिकवृत्तिविशेषहैं ॥ तिनोंके हेतुभून जे चित्तविषेस्थित संस्कारविशेषहैं तिनसंस्कारोंकानाम वासनाहै ॥ तहां विवेककरिकैजन्य जे चित्तकेप्रशमकोदृढवासनाहैं तिनोंकोप्रबलतातैं क्रोधादिकोंकीउत्पत्तिकरणेहारेबाह्यनिमित्तोंकेविद्यमानहूएभी जोतिनक्रोधादिकोंकी नहींउत्पत्तिहै ताकानाम वासनाक्षयहै ॥ अब इनतीनोंका परस्पर कार्यकारण भाव दिखावेहैं ॥ तहां तत्त्वज्ञानकेउत्पन्नहूएतैंअनंतर मिथ्याभूतजगत्विषे नरविषाणादिकोंकीन्यांई बुद्धिकीवृत्ति उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और तिसकालविषे आत्माअपरोक्षहै यातैं आत्माविषेभी वृत्तिका कोईउपयोगनहींहै ॥ परिशेषतैं इंधनोंतैंरहितअग्निकीन्यांई सोमन नाशकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ इसरीतिसैं सोतत्त्वज्ञान मनोनाशकाकारणहै ॥ और ता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मनकेनाशहूएतैंअनंतर संस्कारोंकेउद्बोधकबाह्यनिमित्तोंकीप्रतीतिहोवैनहीं ॥ तिसतैं तेसंस्काररूपवासनाभी क्षय होइजावैहैं ॥ इसरीतिसैं सोमनोनाश वासनाक्षयकाहेतुहै ॥ और तिनवासनावोंकेक्षयहूएतैंअनंतर कारणकेअभाव होणेतैं तेक्रोधादिकवृत्तियां उत्पन्नहोवैनहीं ॥ तिसतैं सोमनभी नाशहोइजावैहै ॥ इसरीतिसै सोवासनाक्षय मनोनाश विषेकारणहै ॥ और तामनकेनाशहूएतैंअनंतर शमदमादिकसाधनोंकीसंपत्तिकरिकै सोतत्त्वज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ इसरीतिसैं सोमनोनाश तत्त्वज्ञानका कारणहै ॥ और तत्त्वज्ञानकेउत्पन्नहूएतैंअनंतर तेरागद्वेषादिरूपवासनाभी क्षयहोइजावैहैं ॥ यातैं सोतत्त्वज्ञान वासनाक्षयकाहेतुहै ॥ और तिनवासनावोंकेक्षयहूएतैंअनंतर प्रतिबंधककेअभाव हूएतैं सोतत्त्वज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ यातैं सोवासनाक्षय तत्त्वज्ञानकाहेतुहै ॥ इसरीतिसैं तत्त्वज्ञान मनोनाश वासना क्षय यातीनोंका परस्पर कार्यकारणभावहै ॥ यहवार्त्ता वासिष्ठग्रंथविषेवसिष्ठभगवान्नैंभी श्रीरामचंद्रकेप्रति कथन करीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (तत्त्वज्ञानंमनोनाशोवासनाक्षयएवच ॥ मिथःकारणतांगत्वादुःसाध्यानिस्थितानिहि ॥ १ ॥ तस्माद्राघवयत्नेनपौरुषेणविवेकिना ॥ भोगेच्छांदूरतस्त्यक्त्वात्रयमेतत्समाश्रयेत् ॥ २ ॥) अर्थयह ॥ तत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय यहतीनों परस्पर कार्यकारणभावकूंप्राप्तहोइकै ईहां दुःसाध्यहूए स्थितहैं ॥ १ ॥ तिसकारणतैं हेरामचंद्र विवेकयुक्त पौरुषयत्नकरिकै भोगकीइच्छाकूं दूरतैंपरित्यागकरिकै यहअधिकारीपुरुष इनतीनोंकूंआश्रयणकरै ॥ ईहां जिसीकिसीउपायकरिकै इनतीनोंकूं मैं अवश्यकरिकैसंपादनकरौंगा याप्रकारकाजो उत्साहविशेषहै ताकानाम पौरुषयत्नहै ॥ और तिनतीनोंकेपृथक्पृथक्करिकैजोसाधनोंकानिश्चयहै ताकानाम विवेकहै ॥ जैसे तत्त्वज्ञानकेतौं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रवणादिक साधनहैं ॥ और मनोनाशका योग साधनहै ॥ और वासनाक्षयका प्रतिकूलवासनावोंकीउत्पत्ति साधनहै ॥ ऐसेविवेकयुक्तपौरुषयत्नकरिकै भोगकेइच्छाकूं दूरतैंपरित्यागकरिकै तत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय इनतीनोंकूं आश्रयणकरै ॥ तहां जैसे घृतादिकहविष् अग्निकेवृद्धिकाहेतुहोवैहै ॥ तैसे अत्यंतअल्पभी भोगोंकीइच्छा वासनाके वृद्धिकाहींहेतुहोवैहै ॥ यातैं ताभोगकीइच्छाका दूरतैंहीं त्यागकथनकऱ्याहैइति ॥ २ ॥ ईहांयहअभिप्रायहै ॥ ब्रह्मविद्याकाअधिकारी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं कृतोपास्तिहोवैहै ॥ और दूसरा अकृतोपास्तिहोवैहै ॥ तहां जोपुरुष उपास्यदेवताकेसाक्षात्कारपर्यंत उपासनाकूंकरिकै पश्चात् तत्त्वज्ञानवासतैं प्रवृत्तहूआहै सोपुरुष कृतोपास्ति कह्या जावैहै ॥ तिसकृतोपास्तिपुरुषकूं मनोनाश वासनाक्षय यहदोनों तत्त्वज्ञानतैंपूर्वहीं दृढहैं ॥ यातैं तत्त्वज्ञानतैंउत्तर तिस कृतोपास्तिपुरुषकूं साजीवन्मुक्ति स्वतःहींसिद्धहोवैहै ॥ और जिसपुरुषनैं तत्त्वज्ञानतैंपूर्व साउपासनानहींकरीहै॥सोपुरुष अकृतोपास्ति कह्याजावैहै ॥ सोइदानींकालकेमुमुक्षुजन विशेषकरिकैतौं अकृतोपास्तिहींहोवैहैं ॥ सोअकृतोपास्तिमुमुक्षु औत्सुक्यमात्रतैं शीघ्रहीं विद्याविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ और असंप्रज्ञातसमाधिरूपयोगतैंविनाहीं चेतनजडवस्तुकेविवेकमात्रकरिकैहीं तात्कालिक मनोनाशवासनाक्षयकूंसंपादनकरिकै शमदमादिसंपत्तिकरिकै श्रवणमननिदिध्यासनकूंसंपादनकरेहै ॥ तिन दृढअभ्यासकरेहूए श्रवणादिकोंकरिकै सर्वबंधोंकानाशकरणेहारा तत्त्वज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसतत्वज्ञानतैं अविद्याग्रंथि अब्रह्मत्व हृदयग्रंथि संशय कर्म असर्वकामत्व मृत्यु जन्म असर्वत्व इत्यादिकसर्वबंध निवृत्तहोवैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (एतद्योवेदनिहितंगुहायांसोऽविद्याग्रंथिंविकिरतीतिहेसाम्य ॥ ब्रह्मवेदब्रह्मैवभ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वति ॥ भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः ॥ क्षीयंतेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्मयोवेदनिहितंगुहायांपरमेव्योमन्सोऽश्नुतेसर्वान्कामान्सह ॥ तमेवविदित्वाऽतिमृत्युमेति ॥ यस्तुविज्ञानवान्भवत्यमनस्कःसदाशुचिः सतुतत्पदमाप्नोतियस्माद्भूयोनजायते ॥ यएवंवेदाहंब्रह्मास्मीतिसइदंसर्वंभवति ॥) अब यथाक्रमतैं इनसर्वश्रुतियोंकाअर्थ निरूपणकरेहै ॥ हेप्रियदर्शन जोपुरुष हृदयरूपगुहाविषेस्थित इसआत्मादेवकूं साक्षात्कारकरेहै सोपुरुष अविद्याग्रंथिकूं नाशकरेहै इति ॥ और जोपुरुष ब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरेहै ॥ सोपुरुष ब्रह्मरूपहोवैहै इति ॥ और परमात्मादेवकेसाक्षात्कारहूए इसविद्वान्पुरुषको हृदयग्रंथि भेदनकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथासर्वसंशयभी छेदनकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तथाप्रारब्धकर्मतैंअतिरिक्त सर्वकर्मभी नाशकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ और परमव्योमरूप हृदयगुहाविषे स्थित सत्यज्ञानअनंत ब्रह्मकूं जोपुरुष साक्षात्कारकरेहै ॥ सोपुरुष सर्वकामोंकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ और तिसआत्माकूंसाक्षात्कारकरिकै यहविद्वान्पुरुष मृत्युतैंरहितहोवैहै इति ॥ और जोपुरुष विज्ञानवालाहै तथामनकेनिरोधवालाहै तथासर्वदाशुचिहै ॥ सोपुरुष तिसपरमपदकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जिसतैं पुनःजन्मकूंप्राप्तहोतानहीं इति ॥ और जोपुरुषमैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारजानेहै ॥ सोपुरुष इससर्वजगत्काआत्माहोवैहै इति ॥ इत्यादिकश्रुतियां तत्त्वज्ञानकरिकैसर्वबंधकीनिवृत्तिकूं प्रतिपादनकरेहैं ॥ इसप्रकारकेसर्वबंधोंकीनिवृत्तिरूप जाविदेहमुक्तिहै ॥ साविदेहमुक्ति इसदेहकेविद्यमानहूएभी तत्त्वज्ञानकीउत्पत्तिकेसमानकालहीं जानणी ॥ काहेतैं ब्रह्मविषे अविद्याकरिकैआरोपित जोपूर्वउक्तबंधहै ॥ सोसर्वबंध तत्त्वज्ञानतैंपूर्वहीं रहेहै ॥ तत्त्वज्ञानकरिकै अविद्याकेनाशहूएतैंअनंतर सोबंधभी निवृत्तहोइ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जावैहै ॥ और तत्त्वज्ञानकरिकै एकवार नाशकूंप्राप्तहुआ सोअविद्यासहितबंध पुनः उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं तत्त्वज्ञा
नकीशिथिलताकरणेहारेकारणकेअभावतैं सोतत्त्वज्ञानतौं तिसविद्वान्पुरुषका तिसीप्रकारकाबन्यारहेहै ॥ और पूर्व
तिसतत्त्वज्ञानकीप्राप्तिवासतै जो तात्कालिक मनोनाश वासनाक्षय संपादनकीयेथे ॥ सोमनोनाश तथावासनाक्षयतौं
दृढअभ्यासकेअभावतैं तथाभोगकेदेणेहारेप्रारब्धकर्मकरिकैबाध्यमानहोणेतैं वायुवालेदेशविषेस्थित प्रदीपकीन्यांई
शीघ्रहीं निवृत्तहोइजावैहै ॥ इसोकारणतैं इदानींकालके अकृतोपास्ति तत्त्वज्ञानवालेपुरुषकूं पूर्वसिद्धतत्त्वज्ञानविषेतौं
किंचित्मात्रभी प्रयत्नकीअपेक्षानहींहै ॥ किंतु तिसविद्वान्पुरुषकूं मनोनाश वासनाक्षय यहदोनों प्रयत्नकरिकै सा
ध्यहैं ॥ तहां मनकानाशतौं पूर्व असंप्रज्ञातसमाधिकेनिरूपणकरिकै कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं अब वासनाक्षयका
निरूपणकरेहैं ॥ तहां वासनाकेजानेतैंविना तावासनाक्षय कऱ्याजावैनहीं ॥ यातैं प्रथम वासनाकास्वरूप जान्या
चाहीये ॥ तहां वासनाकास्वरूप वसिष्ठभगवान्नैं यहकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (दृढभावनयात्यक्तपूर्वापरविचारणं ॥
यदादानंपदार्थस्यवासनासाप्रकीर्तिता ॥) अर्थयह ॥ दृढभावनाकरिकै पूर्वअपरकेविचारतैंरहितहोइकै जोपदार्थका
ग्रहणकरणाहै ताकानाम वासनाहै इति ॥ ईहां आपणेआपणेदेशकेआचारविषे तथाआपणेआपणेकुलकेधर्मविषे
तथाआपणेआपणेस्वभावविषे तथाआपणेआपणेदेशादिकोंविषेस्थित जेअपशब्दहैं तथासाधुशब्दहैं तिनशब्दोंविषे
जोप्राणीयोंकाअभिनिवेशहै ताकानाम वासनाहै ॥ यहसामान्यतैं वासनाकास्वरूपकह्या ॥ अब विशेषतैं कहेहैं
॥ सावासना दोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौं शुद्धवासनाहोवैहै ॥ और दूसरी मलिनवासनाहोवैहै ॥ तहां अमानित्व अदं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भित्व इत्यादिक वक्ष्यमाणदैवीसंपत् शुद्धवासना कहीजावैहै ॥ साशुद्धवासना तत्त्वज्ञानकासाधनरूपहोणेतैं एकरूप हींहोवैहै और दूसरी मलिनवासना तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौंलोकवासनाहोवैहै ॥ दूसरी शास्त्रवासनाहोवैहै ॥ तीसरी देहवासनाहोवैहै ॥ तहां यहसर्वलोक जैसे हमारीनिंदा नहींकरैं किंतु यहसर्वलोक हमारीस्तुतिहींकरैं तिसीप्रकारकेआचरणकूंमैंकरौं याप्रकारका जोअशक्यअर्थकाअभिनिवेशहै ताकूं लोकवासनाकहेहै ॥ सालोकवासना संपादनकरणेकूंअशक्यहै ॥ काहैतैं पूर्व जेरामकृष्णादिकअवतारहूएहैं ॥ तिनोंकीभीसर्वलोकौंनैं स्तुतिकरीनहीं ॥ किंतु केईदुष्टलोक तिनोंकोभीनिंदाकरतेरहेहैं ॥ जबी साक्षात्ईश्वरोंकोभी सर्वलोकोंनैं स्तुतिनहींकरी ॥ तबी इदानींकालकेजीवोंकी सर्वलोक स्तुतिकैसेकरैंगे किंतु नहींकरैंगे ॥ यातैं सालोकवासना संपादनकरणेकूंअशक्यहै ॥ तथा सालोकवासना पुरुषार्थका उपयोगीभीनहींहै ॥ याकारणतैं सालोकवासना मलिनहै इति ॥ और दूसरी शास्त्रवासना तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौं पाठकाव्यसनरूपहोवैहै ॥ और दूसरी बहुतशास्त्रकाव्यसनरूपहोवैहै ॥ और तीसरी शास्त्रअर्थकेअनुष्ठानका व्यसनरूपहोवैहै ॥ तहां पाठकाव्यसनरूपशास्त्रवासनातौं भारद्वाजकूं होतीभईहै ॥ और बहुतशास्त्रका व्यसनरूपशास्त्रवासनातौं दूर्वासाकूंहोतीभईहै ॥ और अनुष्ठानकाव्यसनरूपशास्त्रवासनातौं निदाघकूं होतीभईहै ॥ सात्रिविधशास्त्रवासना बहुतक्लेशोंकरिकैव्याप्तहै तथापुरुषार्थकाभी अनुपयोगीहै तथाअभिमानकाहेतुहै तथाजन्मकाभीहेतुहै ॥ याकारणतैं साशास्त्रवासनाभी लोकवासनाकीन्यांई मलिनहींहै इति ॥ और तीसरी देहवासनाभी तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां एकतौं देहविषेआत्मत्वभ्रांतिरूप देहवासनाहोवैहै ॥ और दूसरी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुणाधानत्वभ्रांतिरूप देहवासनाहोवैहै ॥ और तीसरी दोषापनयनत्वभ्रांतिरूप देहवासनाहोवैहै ॥ तहां देहविषे आत्मत्वभ्रांतिरूपदेहवासना विरोचनादिकोंविषे तथातिनोंकेअनुयायी इदानींकालकेबहुतलोकोंविषे प्रसिद्धहींहै ॥ और दूसरा गुणाधान दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं लौकिक गुणाधानहोवैहै ॥ और दूसरा शास्त्रीयगुणाधानहोवैहै ॥ तहां समीचीनशब्दादिकविषयोंकासंपादनकरणा याकानाम लौकिकगुणाधानहै ॥ और गंगास्नान शालिग्राम तीर्थ आदिकोंकासंपादनकरणा याकानाम शास्त्रीयगुणाधानहै ॥ और तागुणाधानकीन्यांई तीसरा दोषापनय नभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं लौकिक दोषापनयनहोवैहै ॥ और दूसरा शास्त्रीय दोषापनयनहोवैहै ॥ तहां चिकित्साकरणेहारेपुरुषउक्त औषधोंकरिकै ज्वरादिकव्याधियोंकीनिवृत्तिकरणी याकानाम लौकिकदोषापनयन है ॥ और शास्त्रउक्त स्नानआचमनादिकोंकरिकै अशौचादिकोंकी निवृत्तिकरणो याकानाम शास्त्रीयदोषापनयन है ॥ यहत्रिविधदेहवासना अप्रामाणिकहै तथाकरणेकूंभीअशक्यहै तथापुरुषार्थविषेभी अनुपयोगीहै तथापुनः जन्मकेप्राप्तिकाहेतुहै ॥ याकारणतैं इसदेहवासनाविषे मलिनपणा शास्त्रविषेप्रसिद्धहींहै ॥ इसप्रकार मलिनरूपकरिकैप्रसिद्ध जेलोकवासना तथाशास्त्रवासना तथादेहवासना यहतीनप्रकारकीवासनाहैं ॥ तेतीनोंवासना यद्यपि अविवेकीपुरुषोंकूं उपादेयरूपकरिकै प्रतीतहोवैहैं ॥ तथापि यहतीनोंवासना जिज्ञासुपुरुषकूंतौं ज्ञानकीउत्पत्तिविषे विरोधीहैं ॥ और विद्वान्पुरुषकूंनौं ज्ञाननिष्ठाकाविरोधीहैं ॥ यातैं जिज्ञासुपुरुषनैंतौं ज्ञानकीप्राप्तिवासतै यहतीनों वासना परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ और विद्वान्पुरुषनैंतौं ज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवासतैं यहतीनोंवासना परित्यागकर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

णेयोग्यहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकैं बाह्यविषयवासना तीनप्रकारकी निरूपणकरी ॥ और अंतर मलिनवासनातौं काम क्रोध दंभ दर्प इत्यादिकआसुरसंपत्रूपहोवैहै ॥ साआसुरसंपत्रूपवासना सर्वअनर्थोंकामूलभूत मानसवासना क हीजावैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ लोकवासना शास्त्रवासना देहवासना यहतीनोंबाह्यवासना तथाआसुरसंपत्रूप अंतरवासना याच्यारोंमलिनवासनावोंका इसअधिकारीपुरुषनैं शुभवासनाकरिकैनाशकरणा ॥ यहवार्त्ता वसिष्ठ भगवान्नैंभी श्रीरामचंद्रकेप्रति कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (मानसीवासनाःपूर्वंत्यक्काविषयवासनाः ॥ मैत्र्यादिवा सनारामगृहाणामलवासनाः ॥) अर्थयह ॥ हेरामचंद्र लोकवासना शास्त्रवासना देहवासना यातीनोंवासनावोंकाना म विषयवासनाहै ॥ ऐसीमलिनविषयवासनावोंकापरित्यागकरिकै तथाकामक्रोधदंभदर्पादिकआसुरसंपत्रूप म लिन मानसवासनावोंकूंपरित्यागकरिकै मैत्री करुणा मुदिता इत्यादिकशुभवासनावोंकूं तूंग्रहणकर ॥ अथवा इस श्लोकविषेस्थित विषयवासनाः मानसीवासनाः यादोनोंपदोंका यहदूसराअर्थकरणा ॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापांचोंकानाम विषयहै ॥ तिनशब्दादिकविषयोंकी दोदशाहोवैहैं ॥ एकतौं भुज्यमानत्वदशाहोवैहै ॥ दूसरी का म्यमानत्वदशाहोवैहै ॥ तहां भोगकीविषयताकानाम भुज्यमानत्वहै ॥ और कामनाकीविषयताकानाम काम्यमान त्वहै ॥ तहां तिनशब्दादिकविषयोंकेभुज्यमानत्वदशाजन्यसंस्कारोंकानाम विषयवासनाहै ॥ और काम्यमानत्वद शाजन्यसंस्कारोंकानाम मानसवासनाहै ॥ इसपक्षविषे पूर्वकथनकरीहूई च्यारि प्रकारकीवासनावोंका इनदोनोंवा सनावोंविषेहीं अंतर्भावहै ॥ जिसकारणतैं बाह्य अभ्यंतर यादोनोंप्रकारकीवासनावोंतैंभिन्न दूसरीकोईवासनाहैनहीं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सर्ववासनावोंका इनदोवासनावोंविषेहीं अंतर्भावहै ॥ तहां तिनमलिनवासनावोंतैंविरुद्ध मैत्रीकरुणादिकशुभवास
नावोंकाजोउत्पादनहै यहहीं तिनमलिनवासनावोंका परित्यागहै ॥ तेमैत्रीआदिकशुभवासना पतंजलिभगवान्नैं
योगसूत्रोंविषेकथनकरीहैं ॥ तेमैत्रीआदिक शुभवासना यद्यपि पूर्व संक्षेपतैंप्रतिपादनकरिआयेहैं ॥ तथापि तिसी
पूर्वउक्तअर्थकी दृढताकरणेवासतै पुनः तिनमैत्रीआदिकोंकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ तहां इसपुरुषकेचित्तकूं राग द्वेष
पुण्य अपुण्य यहच्यारोंहीं मलिनकरेहैं ॥ तहां किसोसुखकेअनुभवहूएतैंअनंतर तिससुखकास्मरणकरिकै तिससु
खकेसजातीयदूसरेसुखोंविषे तथातिनसुखोंकेसाधनोंविषे यहसाधनोंसहित सर्वविषयसुख हमारेकूंप्राप्तहोवैं याप्र
कारको अंतःकरणकीराजसवृत्तिविशेषरूप जातृष्णाहै ताकानाम रागहै ॥ तहां तिनसर्वसुखोंकोप्राप्तिकरणेहारी
जादृष्टअदृष्टरूपकारणसामग्रीहै ॥ तासामग्रीकेअभावहोणेतैं तिनसर्वसुखोंकासंपादनकरणा अत्यंतअशक्यहै ॥ या
तैं विषयकीप्राप्तितैंरहितहूआ सोराग इसपुरुषकेचित्तकूं मलिनकरेहै ॥ और यहअधिकारीपुरुष जबी सर्वसुखी
प्राणीयोंविषे यहसर्वसुखीप्राणी हमारेहींहै याप्रकारकीमैत्रीसंपादनकरेहै ॥ तबी सोसर्वप्राणियोंकासुख आपणाहीं
सिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकारकीभावनाकरणेहारेपुरुषका तिनसुखोंविषे सोराग निवृत्तहोइजावैहै ॥ जैसे किसीराजाकूं आ
पतौं राज्यतैंवैराग्यकीप्राप्तिहूएभी आपणेपुत्रादिकोंकेराज्यकूंहीं आपणाराज्यकरिकैमानेहै ॥ तैसे सोपुरुषभी आ
पणे सुखविषयकरागकेनिवृत्तहूएभी दूसरेप्राणीयोंकेसुखकूंहीं आपणाकरिकैमानेहै ॥ इसप्रकार मैत्रीभावना
करिकै जबी तारागकोनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबो वर्षाकेनिवृत्तहूएतैंअनंतर जैसे जलशुद्धहोवैहै तैसे सोचित्त शुद्धहोवैहै इ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ति ॥ और किसीदुःखकेअनुभवहूएतैंअनंतर तादुःखकास्मरणकरिकै तिसदुःखकेसजातीयदूसरेदुःखोंविषे तथाति
नदुःखोंकेसाधनोंविषे यहसाधनोंसहित सर्वदुःख हमारेकूं कदाचित्भी मतप्राप्तहोवैं याप्रकारकीजा तमोगुणमिलि
तरजोगुणकापरिणामरूप अंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम द्वेषहै ॥ तहां दुःखकेहेतुरूप शत्रुव्याघ्रादिकोंकेविद्य
मानहूए सोदुःख निवृत्तकरणेकूंअशक्यहै ॥ और तिनसर्वदुःखोंकेहेतुवोंकूं हननकरणेविषेभीकोईसमर्थनहींहै ॥ या
तैं सोद्वेष इसपुरुषकेचित्तकूं सर्वदा दाहकरेहै ॥ और यहअधिकारीपुरुष जबी सर्वदुःखी प्राणीयोंविषे आपणेकी
न्यांई इनसर्वप्राणीयोंकूं यहदुःख मतप्राप्तहोवै याप्रकारकीकरुणाकरेहै ॥ तबी इसपुरुषका वैराआदिकोंविषे सोद्वे
ष निवृत्तहोइजावैहै ॥ ताद्वेषकेनिवृत्तहूएतैंअनंतर इसअधिकारीपुरुषकाचित्त निर्मलहोवैहै ॥ यहवार्त्ता स्मृतिविषे
भीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक॥ (प्राणायथात्मनोभीष्टाभूतानामपितेतथा ॥ आत्मौपम्येनभूतेषुदयांकुर्वंतिसाधवः ॥)
अर्थयह ॥ जैसे इसपुरुषकूं आपणेप्राण अत्यंतप्रियहोवैहै ॥ तैसे सर्वभूतोंकूं तेआपणेआपणेप्राण अत्यंतप्रियहोवैहैं
॥ याप्रकारकाविचारकरिकै श्रेष्ठमहात्मापुरुष आपणेआत्माकीन्यांई सर्वभूतप्राणीयोंविषे दयाकूंहींकरेहैं इति ॥ इ
सीअर्थकूं श्रीभगवान् ईहां (आत्मौपम्येनसर्वत्रसमंपश्यतियोर्जुन) इसश्लोकविषे कथनकरताभयाहै इति ॥ और
यहप्राणी स्वभावतैंहीं पुण्यकर्मोंकूं अनुष्ठानकरतेनहीं ॥ तथा पापकर्मोंकूंअनुष्ठानकरेहैं ॥ यहवार्त्ताभी शास्त्रविषेकथ
नकरीहै॥ तहां श्लोक ॥(पुण्यस्यफलमिच्छंतिपुण्यंनेच्छंतिमानवाः॥ नपापफलमिच्छंतिपापंकुर्वंतियत्नतः ॥) अर्थय
ह ॥ यहमनुष्य पुण्यकर्मकेसुखरूपफलकीतौं इच्छाकरेहैं॥ परंतु तापुण्यकर्मकीइच्छाकरतेनहीं ॥ और यहमनुष्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पापकेदुःखरूपफलकीतौं इच्छाकरतेनहीं ॥ और तिसपापकर्मकूंतौं प्रयत्नतैंकरेहैं इति ॥ तहां तेपुण्यकर्मतौं नहींक
ऱ्येहूए इसपुरुषकूं पश्चात्तापकोप्राप्तिकरेहैं ॥ और पापकर्मतौं कऱ्येहूए इसपुरुषकूं पश्चात्तापकीप्राप्तिकरेहैं ॥ यह
वार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (किमहंसाधुनाकरवंकिमहंपापमकरवं ॥) अर्थयह ॥ जोपुरुष पुण्यकर्मोंकूं
नहींकरेहै ॥ सोपुरुष दूसरेपुण्यवान्पुरुषोंकूं सुखीहूआदेखिकै ऐसेसुखकोप्राप्तिकरणेहारेपुण्यकर्मोंकूं मैं किसवासतै
नहींकरताभया याप्रकारकेपश्चात्तापकूंकरेहै ॥ यातैं पुण्यकर्मतौं नहींकऱ्येहूए इसपुरुषकूं पश्चात्तापकीप्राप्तिकरेहैं ॥
और जोपुरुष पापकर्मकूंकरेहै ॥ सोपुरुष जबी तिसपापकर्मकेदुःखरूपफलकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी सोपुरुष ऐसेदुःख
कीप्राप्तिकरणेहारेपापकर्मोंकूं मैं किसवासतैकरताभया याप्रकारकेपश्चात्तापकूंकरेहै ॥ यातैं तेपापकर्म कऱ्येहूए इ
सपुरुषकूं पश्चात्तापकीप्राप्तिकरेहैं इति ॥ और यहअधिकारीपुरुष जबी पुण्यवान्पुरुषोंविषे मुदिताकरेहै ॥ तबी
ताशुभवासनावालाहूआ सोपुरुष आपभी सावधानहूआ अशुक्लकृष्णनामा पुण्यविशेषविषे प्रवृत्तहोवैहै ॥ यह
वार्त्ता योगसूत्रोंविषे पतंजलिभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (कर्माशुक्लकृष्णंयोगिनस्त्रिविधमितरेषां॥) अर्थ
यह ॥ योगीपुरुषोंकाकर्मतौं अशुक्लकृष्णहोवैहै ॥ और अयोगीपुरुषोंकाकर्मतौं शुक्ल कृष्ण शुक्लकृष्ण यहतीनप्रका
रकाहोवैहै ॥ तहां जोकर्म केवल मनवाणीकरिकैहीं साध्यहोवैहै तथाएकसुखरूपफलकीहीं प्राप्तिकरैहै सोकर्म शुक्ल
कर्म कह्याजावैहै ॥ ऐसाशुक्लकर्म वेदाध्ययनपरायणब्रह्मचारीपुरुषोंका तथातपस्वीपुरुषोंका होवैहै ॥ और जोकर्म
केवल दुःखकीहींप्राप्तिकरेहै सोकर्म कृष्णकर्म कह्याजावैहै ॥ ऐसाकृष्णकर्मतौं दुरात्मापुरुषोंकाहोवैहै ॥ और जो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कर्म सुखदुःखमिश्रितफलकीप्राप्तिकरेहै तथाव्रीहियवादिकबाह्यसाधनोंकरिकैसाध्यहोवैहै सोकर्म शुक्लकृष्ण कह्या जावैहै ॥ सोशुक्लकृष्णकर्मतौं सोमयागादिकोंविषेप्रीतिमानपुरुषोंकाहोवैहै ॥ काहेतैं तिन सोमयागादिकोंविषे व्रीहिआदिकोंकेकूटणेकरिकै पिपीलिकादिकजंतुवोंकूं पोडाकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और दक्षिणादिकोंकेदेणेकरिकै ब्राह्मणादिकोंकीप्रसन्नताभीहोवैहै ॥ यातैं तिनयागिकपुरुषोंका सोकर्म शुक्लकृष्णहोवैहै ॥ यहतीनप्रकारकाकर्म अयोगीपुरुषोंकाहींहोवैहै ॥ और संन्यासीयोगीपुरुषनैंतौं व्रीहियवादिकबाह्यसाधनोंकरिकैसिद्धहोणेहारे यागादिककर्मोंका परित्यागकऱ्याहै ॥ यातैं तिनयोगीपुरुषोंका सोशुक्लकृष्णकर्महोवैनहीं ॥ और तेयोगीपुरुष अविद्यादिकसर्वक्लेशोंतैं रहित हैं ॥ यातैं तिनयोगीपुरुषोंका सोकृष्णकर्मभीहोवैनहीं ॥ और तेयोगीपुरुष योगजन्यधर्मकेफलकीइच्छाकूंनकरिकै ताधर्मकाईश्वरविषेअर्पणकरेहैं ॥ यातैं तिनयोगीपुरुषोंका सोशुक्लकर्मभीहोवैनहीं ॥ किंतु चित्तकीशुद्धिद्वारा तथाविवेकख्यातिद्वाराएकमोक्षरूपफलकोप्राप्तिकरणेहारा अशुक्लकृष्णनामा पुण्यकर्म तिनयोगीपुरुषोंकाहोवैहै इति ॥ और जोअधिकारीपुरुष पापात्मापुरुषोंविषे उपेक्षाकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष तिसवासनावालाहूआ आपभी तिनपापकर्मोंतैंनिवृत्तहोवैहै ॥ यातैं यहअर्थासिद्धभया ॥ पुण्यवान्पुरुषोंविषेमुदिताकरणेहारेपुरुषकूं तथापापीपुरुषोंविषे उपेक्षाकरणेहारेपुरुषकूं पुण्यकर्मोंकेनकरणनिमित्तिक पश्चात्ताप तथापापकर्मोंकेकरणनिमित्तिक पश्चात्ताप प्राप्तहोवेनहीं ॥ तापश्चात्तापकेअभावहूए तिसपुरुषकाचित्त निर्मलताकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ किंवा ॥ इसप्रकार सुखीप्राणीयोंविषे मैत्रीभावनाकरणेहारेपुरुषका केवल एकरागहीं निवृत्तनहींहोवैहै ॥ किंतु तामैत्रीभावनाकरिकै असूया ई

89

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ष्र्या आदिकभी निवृत्तहोवैहैं ॥ तहां अन्यपुरुषोंकेगुणोंविषे जोदोषोंकाप्रगटकरणाहै ताकानाम असूयाहै॥ और प
रकेगुणोंका जोनहींसहनकरणाहै ताकानाम ईर्ष्याहै ॥ जबो मैत्रीभावनाकेवशतैं यहअधिकारीपुरुष सर्वप्राणीयोंके
सुखकूं आपणाहींकरिकैमानेहै ॥ तबी तापुरुषकी परगुणोंविषे असूया तथाईर्ष्या कदाचित्भी होवैनहीं ॥ इसप्रका
र दुःखीप्राणीयोंविषे करुणाभावनाकरणेहारेपुरुषका शत्रुआदिकोंकेवधकरणेहाराद्वेष जबी निवृत्तहोइजावैहै ॥ तबो
दूसरेकूंदुःखीदेखिकै तथाआपणेकूंसुखीदेखिकै जोदर्प उत्पन्नहोवैहै सोदर्पभी निवृत्तहोइजावैहै ॥ इसप्रकारतैं दूस
रेदोषोंकीनिवृत्तिभी जानिलेणी ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ इसअधिकारीपुरुषनैं जीवन्मुक्तिकेसुखवासतै तत्त्वज्ञा
न मनोनाश वासनाक्षय यातीनोंका अभ्यासकरणा ॥ तहां जिसीकिसीप्रकारतैं पुनःपुनः जोतत्त्वकास्मरणहै ताकूं
तत्त्वज्ञानाभ्यास कहेहैं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (तच्चिंतनंतत्कथनमन्योन्यंतत्प्रबो
धनं॥ एतदेकपरत्वंचब्रह्माभ्यासंविदुर्बुधाः ॥ १ ॥ सर्गादावेवनोत्पन्नंदृश्यंनास्त्येवतत्सदा ॥ इदंजगदहंचेतिबोधाभ्या
संविदुःपरं ॥ २ ॥) अर्थयह ॥ तिसीअद्वितीयब्रह्मका जोवारंवार चिंतनहै॥ तथा तिसीब्रह्मका जोवारंवार कथनहै
॥ तथा तिसीब्रह्मका जोपरस्पर बोधनहै॥ तथा निरंतर तिसोएकब्रह्मपरताजोहै॥ ताकूं विद्वान्पुरुष ब्रह्माभ्यासकहेहैं
इति ॥ १ ॥ और यहदृश्यप्रपंच सृष्टिकेआदिकालविषेहीं उत्पन्नहूआनहीं॥ यातैं यहदृश्यप्रपंच तीनकालविषेहैनहीं
॥ और मैस्वयंज्योतिअधिष्ठानआत्मा सर्वदा विद्यमानहूं याप्रकारका जोनिरंतरविचारहै ताकूं बोधाभ्यास कहेहैं इ
ति ॥ २ ॥ और दृश्यप्रपंचकेअवभासकाविरोधी जोयोगाभ्यासहै ताकूं मनोनिरोधाभ्यासकहेहैं ॥ यहवार्त्ताभी शा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्त्रविषेकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अत्यंताभावसंपत्तौज्ञातुर्ज्ञेयस्यवस्तुनः ॥ युक्त्याशास्त्रैर्यतंतेयेतेप्यत्राभ्यासिनःस्थिताः ॥) अर्थयह ॥ ज्ञाता ज्ञेयवस्तु यादोनोंविषे जोमिथ्यात्वबुद्धिहै ताकानाम अभावसंपत्तिहै ॥ और तिनदोनोंकी जास्वरूपतैंहीं अप्रतीतिहै ताकानाम अत्यंताभावसंपत्तिहै ॥ ताअत्यंताभावसंपत्तिकेवासतै जेपुरुष योगकरिकै तथाशास्त्रोंकरिकै प्रयत्नकरेहैं ॥ तेपुरुष मनोनिरोधकेअभ्यासवालेकहेजावेहैं इति ॥ और दृश्यप्रपंचकेअसंभवबोधकरिकै जोरागद्वेषादिकोंकी क्षीणताकरणीहै ताकूं वासनाक्षयकाअभ्यास कहेहैं ॥ यहवार्त्ताभी अन्यशास्त्रविषेकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (दृश्यासंभवबोधेनरागद्वेषादितानवे ॥ रतिर्घनोदितायासौब्रह्माभ्यासः सउच्यते ॥) अर्थयह ॥ इसदृश्यप्रपंचकेअसंभवबोधकरिकै इनरागद्वेषादिकोंकोक्षीणताकरणेविषे जादृढरति उत्पन्नहोवैहै सोब्रह्माभ्यास कह्या जावैहै इति ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जोपुरुष तत्त्वज्ञानकेअभ्यासकरिकै तथामनोनाशकेअभ्यासकरिकै तथावासनाक्षयकेअभ्यासकरिकै रागद्वेषादिकविकारोंतैंरहितहूआ आपणेपराये सुखदुःखादिकोंविषे समदृष्टिहै ॥ सोपुरुषतौं परमयोगीहै ॥ और जोपुरुष विषमदृष्टिवालाहै ॥ सोपुरुषतौं तत्त्वज्ञानवालाहूआभी अपरमयोगीहींहैइति ॥ ३२ ॥

॥*॥तहां श्रीभगवान्नैं पूर्व विस्तारतैंकथनकर्‌याजो मनकानिरोधरूपयोगहै ताका निषेधकरताहूआ अर्जुनप्रश्नकरेहै॥

अर्जुनउवाच ॥ योयंयोगस्त्वयाप्रोक्तःसाम्येनमधुसूद
न ॥ एतस्याहंनपश्यामिचंचलत्वात्स्थितिंस्थिरां ॥ ३३ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यः। अयं। योगः। त्वया। प्रोक्तः। साम्येन। मधुसूदन। एतस्य। अहं। न। पश्यामि। चंचलत्वात्। स्थितिं। स्थिरां॥ इतिपद०

हेमधुसूदन तुमनैं जो यह योग समत्वकरिकै कथनकरयाहै सोइसंयोगके स्थिर
स्थितिकूं मैंअर्जुन नहीं देखताहूं मनकूं अतिचंचलहोणेतैं ॥ ३३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेमधुसूदन अर्थात् हेसर्ववैदिकसंप्रदायकाप्रवर्त्तक ॥ तैंसर्वज्ञईश्वरनैं जोयह सर्वत्रसमदृष्टिरूप परमयोग पूर्व समभावकरिकै कथनकऱ्याहै अर्थात् चित्तविषेस्थित विषमदृष्टिकेहेतुभूत जेरागद्वेषादिकहैं तिनरागद्वेषादि कोंका निराकरणकरिकै जोयहयोग कथनकरयाहै ॥ इस सर्वमनोवृत्तिनिरोधरूपयोगकी दीर्घकालपर्यंतरहणेहारी विद्यमानतारूपस्थितिकूं मैं अर्जुन देखतानहीं ॥ अर्थात् ऐसेसर्ववृत्तियोंकेनिरोधरूपयोगकी दीर्घकालपर्यंतस्थितिहो तीहै याप्रकारकीसंभावना हमारेकूं होतीनहीं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन ऐसीसंभावना तुमारेकूं किसवासतैनहींहोती ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहूए अर्जुन ताकेविषेहेतुकहेहै (चंचलत्वात्इति) हेभगवन् यहमन अत्यंतचंचलहै ॥ एकक्ष णमात्रभी स्थिरहोतानहीं ॥ याकारणतैं तिसअर्थकीसंभावना हमारेकूंहोतीनहीं इति ॥ ३३ ॥ ※ ॥ अब अर्जुन तिसमनकेचंचलस्वभावकूं सर्वलोकशास्त्रकीप्रसिद्धताकरिकै उपपादनकरेहै ॥

चंचलंहिमनःकृष्णप्रमाथिबलवद्दृढं ॥ तस्याहंनिग्रहंमन्येवायोरिवसुदुष्करं ॥ ३४ ॥

चंचलं। हि। मनः। कृष्ण। प्रमाथि। बलवत्। दृढं। तस्य। अहं। निग्रहं। मन्ये। वायोः। इव। सुदुष्करं ॥ इतिपदच्छेदः॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेकृष्ण यहमन प्रसिद्ध चंचलहै तथाप्रमाथिहै तथाबलवान्है तथादृढहै तिसमनके निग्रहकूं
मैंअर्जुन वायुकेनिग्रहकी न्यांई अत्यंतकठन मानताहूं ॥ ३४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेकृष्णभगवन् यहमन चंचलहै ॥ अर्थात् अत्यंत चलनस्वभाववालाहै ॥ कदाचित्भी स्थिरहोतानहीं ॥ ऐसामनकाचंचलस्वभाव सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ हेभगवन् यहमन केवल चंचलहीं नहींहै ॥ किंतु प्रमाथिभी हैं ॥ तहां शरीरकूं तथाइंद्रियोंकूं क्षोभकोप्राप्तिकरणेका जिसकास्वभावहोवैहै ताकानाम प्रमाथिहै ॥ अर्थात् यह मन तिनशरीरइंद्रियोंकाक्षोभकहोणेतैं तिनशरीरइंद्रियोंके विवशताकाहेतुहै यातैं प्रमाथिहै ॥ हेभगवन् यहमन केवल चंचल तथाप्रमाथि नहीं ॥ किंतु यहमन बलवान्भीहै ॥ अर्थात् यहमन अभिप्रेतविषयतैं किसीभीउपायकरिकै निवृत्तकरणेकूंअशक्यहै ॥ इसलोकविषेभी किसीकार्यविषेप्रवृत्तहूए जिसपुरुषकूं कोईभी निवृत्तकरणेमैंसमर्थन हींहोवैहै तिसपुरुषकूं बलवान्कहेहै ॥ तैसे किसीविषयविषेप्रवृत्तहूआयहमन तिसविषयतैं निवृत्तकरयाजातानहीं ॥ यातैं यहमन अत्यंत बलवान्है ॥ तथा यहमन दृढहै ॥ अर्थात् अनेकजन्मोंको अनेकसहस्रविषयवासनावोंकरिकै युक्तहोणेतैं भेदनकरणेकूंअशक्यहै ॥ अथवा तंतुनागकीन्यांई अच्छेद्यहोणेतैं यहमन दृढहै ॥ ईहां नागपाशकानाम तंतुनागहै ॥ अथवा जलकेमहाह्रदविषेरहणेहारे किसीजंतुविशेषकानाम तंतुनागहै ॥ जिसजंतुविशेषकूं गुर्जरादिक देशोंविषे तांतनी यानामकरिकै कथनकरेहैं ॥ ईहां अर्जुननैं (चंचलं प्रमाथि बलवत् दृढं) यहच्यारिविशेषण मनकेकथनकरये ॥ तिनच्यारोंविशेषणोंविषे पूर्वपूर्वविशेषणकीसिद्धिविषे उत्तरउत्तरविशेषण हेतुरूपहै ॥ जैसे यहमन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अत्यंतदृढहोणेतैं बलवान्है ॥ तथा बलवान्होणेतैं यहमन प्रमाथिहै ॥ तथा प्रमाथिहोणेतैं यहमन अत्यंत चंचलहै ॥ हे भगवन् जैसे महामत्त वनहस्तिका निग्रहकरणा अत्यंतकठनहोवैहै ॥ तैसे इसमनकेनिग्रहकूं अर्थात् सर्ववृत्तियोंतैंर हितकरिकै स्थितकरणेकूं मैंअर्जुन दुष्करमानताहूं ॥ अर्थात् सर्वप्रकारतैंकरणेकूंअशक्य मानताहूं ॥ तामनकेनिग्रहकी अशक्यताविषे अर्जुन दृष्टांतकूंकहेहै (वायोरिवइति) हेभगवन् जैसे आकाशविषेचलायमानहोइरह्याजोवायुहै ॥ ता वायुकी निश्चलताकूंसंपादनकरिकै तावायुकानिरोधकरणा अत्यंतअशक्यहै ॥ तैसे सर्वथा चंचलमनकोनिश्चलताकूं संपादनकरिकै तामनकानिरोधकरणा अत्यंतअशक्यहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अ प्यब्धिपानान्महतःसुमेरून्मूलनादपि ॥ अपिवह्न्यशनात्साधोविषमश्चित्तनिग्रहः ॥) अर्थयह ॥ हेसाधो महान्समुद्रके पानकरणेतैंभी तथासुमेरुपर्वतकेमूलतैंउखाडनेतैंभी तथाअग्निकेभक्षणकरणेतैंभी यहचित्तकानिग्रहकरणा अत्यंतकठ नहै इति ॥ ईहां (हेकृष्ण) यासंबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्केप्रति यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ दोषान्कृषंतिनि वारयतीतिकृष्णः ॥ अथवा पुरुषार्थानाकर्षतिप्रापयतीतिकृष्णः ॥ अर्थयह ॥ भक्तजनोंके जेपापादिकदोष निवृत्तकर णेकूंअशक्यहैं तिनपापादिकदोषोंकूंभी जोनिवृत्तकरेहै ताकानाम कृष्णहै ॥ अथवा तिनभक्तजनोंकूं सर्वप्रकारतैं प्राप्तहोणेकूंअशक्य जेपुरुषार्थहैं ॥ तिनपुरुषार्थोंकूंभी जोप्राप्तकरेहै ताकानाम कृष्णहै ॥ ऐसेकृष्णनामवाले आप हो ॥ यातैं आपणेनामकूं सार्थकरणेवासतै दुर्निवारभीहमारेचित्तकीचंचलताकूं आप अवश्यकरिकै निवृत्तकरौंगे ॥ तथा दुःप्रापभीसमाधिसुखकूं आप अवश्यकरिकैप्राप्तकरौंगे इति ॥ ईहां अर्जुनका यहअभिप्रायहै ॥ तत्त्वज्ञानके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उत्पन्नहूएभी प्रारब्धकर्मकेभोगवासतैं जीवतेहूएविद्वान्पुरुषके कर्तृत्व भोक्तृत्व सुख दुःख राग द्वेष इत्यादिकचित्तकेधर्म बाधितानुवृत्तिकरिकैविद्यमानहूएभी क्लेशकेहेतुहोणेतैं बंधरूपहींहोवैहैं ॥ और सर्वचित्तवृत्तियोंकेनिरोधरूपयोगकरिकै जो तिसबंधकोनिवृत्तिहै ताकानाम जीवन्मुक्तिहै ॥ जिस जीवन्मुक्तिकेसंपादनकरणेकरिकै सोविद्वान्पुरुष परम योगी कह्याजावैहै ॥ यहवार्त्ता आपनैं पूर्व कथनकरीहै ॥ याअर्थविषे हमारा यहकहणाहै ॥ सोबंध साक्षीचेतनतैं निवृत्तकरतेहो ॥ अथवा चित्ततैं सोबंध निवृत्तकरतेहो ॥ तहां प्रथमपक्ष जोअंगीकारकरौ सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं पूर्वउत्पन्नहूए तत्त्वज्ञाननैंहीं तासाक्षीकेबंधकीनिवृत्तिकरीहै॥तिसबंधकीनिवृत्तिविषे तायोगका किंचित्मात्रभोउपयोगनहींहै॥और सोबंधचित्ततैं निवृत्तकरोताहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरौ सोभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं सोबंध साक्षीचेतनविषे जैसेआरोपितहै तैसे जोचित्तविषेआरोपितहोता तौं सोबंध चित्ततैं निवृत्तकऱ्याजाता ॥ परंतु सोबंध ताचित्तविषे आरोपितनहीं है ॥ किंतु सोबंध चित्तका स्वभावहींहै ॥ और जोजिसकास्वभावहोवैहै ॥ तिसस्वभावकी सहस्त्रउपायोंकरिकैभी निवृत्तिहोवैनहीं ॥ जैसे जलकास्वभावजोआर्द्रपणाहै तथाअग्निकास्वभावजो उष्णपणाहै सोस्वभाव ताजलतैं तथा अग्नितैं अनेकउपायोंकरिकैभी निवृत्तकऱ्याजावैनहीं ॥ तैसे सोचित्तकास्वभावभी निवृत्तकऱ्याजावैनहीं ॥ और शास्त्रविषे ताचित्तकूं क्षणक्षणविषे परिणामस्वभाववाला कथनकऱ्याहै ॥ तहां शास्त्रवचनं ॥ (प्रतिक्षणपरिणामिनोहि भावाऋतेचितिशक्तेः ॥) अर्थयह ॥ चैतन्यआत्मातैंभिन्न जितनैंकीअनात्मपदार्थहै ॥ ते सर्वअनात्मपदार्थ क्षणक्षणविषेपरिणामकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ किंवा प्रारब्धकर्मरूप प्रतिवंधकेविद्यमानहूए ताबंधकी निवृत्ति संभवैनहीं ॥ काहे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तैं अविद्याके तथाताअविद्याकेकार्यके नाशकरणेविषेप्रवृत्तभयाजोतत्त्वज्ञानहै ॥ तातत्त्वज्ञानकाभीप्रतिबंधकरिकै सोप्रारब्धकर्म आपणेफलदेणेवासतै इसदेहइंद्रियादिकसंघातकूं स्थितकरेहै ॥ अर्थात् तासंघातकूं निवृत्तहोणेदेवैनहीं और चित्तकीवृत्तियोंतैंविना सोप्रारब्धकर्म आपणे सुखदुःखकेभोगरूपफलकूं संपादनकरिसकैनहीं ॥ काहेतैं सुखाकार तथादुःखाकार जाचित्तकीवृत्तिहै ताहींकूं शास्त्रविषेभोगकहेहैं ॥ ताचित्तकीवृत्तितैंविना सुखदुःखकाभोग संभवैनहीं ॥ यातैं यद्यपि स्वाभाविकभी चित्तकेपरिणामोंका योगकरिकै यथाकथंचित् अभिभव होइसकेहै ॥ तथापि जैसे तत्त्वज्ञानतैं सोप्रारब्धकर्म प्रबलहैं ॥ तैसे सोप्रारब्धकर्म योगतैंभी प्रबलहै ॥ ऐसे प्रारब्धकर्मकेविद्यमानहूए साचित्तकीचंचलताभी अवश्यकरिकैरहैंगी ॥ यातैं योगकरिकै ताचित्तकीचंचलताकेनिवृत्तकरणेकूं मैअर्जुन आपणेज्ञानतैं अशक्यमानताहूं ॥ यातैं आपणेआत्माकीन्यांई सर्वत्रसमदर्शीपुरुष परमयोगीहै यहआपकावचन अनुपपन्नहै ॥ यहअर्जुनकाआक्षेप दोश्लोकोंकरिकै सिद्धभया इति ॥ ३४ ॥ ❋ ॥ अब श्रीभगवान् तिसअर्जुनकेआक्षेपकूं निवृत्तकरताहूआ कहेहै ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ असंशयंमहाबाहोमनोदुर्निग्रहंच
लं ॥ अभ्यासेनतुकौंतेयवैराग्येणचगृह्यते ॥ ३५ ॥

असंशयं । महाबाहो । मनः । दुर्निग्रहं । चलं । अभ्यासेन । तु । कौंतेय । वैराग्येण । च । गृह्यते ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेमहाबाहो यहमन दुर्निग्रहहै तथाचंचलहै यहवार्त्ता संशयतैंरहितहै तौंभी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेकौंतेय सोमन अभ्यासकरिकै तथा वैराग्यैंकरिकै निग्रैहकऱ्याजावैहै ॥ ३५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तुमारेवचनतैं तुमारेचित्तकावृत्तांत हमनैं सम्यक्जान्याहै ॥ परंतु तूंअर्जुन इसमनकेनिग्रहकरणे विषे समर्थहैं इसप्रकार ताअर्जुनका संतोषकरणेवासतै श्रीभगवान् ताअर्जुनका संबोधनकहेहै (हेमहाबाहोइति) सा क्षात्महादेवसैंभी युद्धकरणेतैं महान्हैंदोनोंबाहुजिसकी ताकानाम महाबाहुहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै भगवान्नैं अर्जु नविषे निरतिशयउत्कृष्टता सूचनकरी ॥ अर्थात् ऐसीनिरतिशयउत्कृष्टतावाला तूंअर्जुन इसमनकेनिग्रहकरणेविषे अ वश्यकरिकै समर्थहोवैंगा इति ॥ हेअर्जुन पूर्वजो तुमनैं यहवचनकह्याथा ॥ जोयहमन दुर्निग्रहहै ॥ अर्थात् प्रारब्ध कर्मकीप्रबलतातैं असंयतात्मापुरुषकूं सोमन दुःखकरिकैभी निग्रहकरणेकूंअशक्यहै ॥ तथा यहमन स्वभावतैंहीं चं चलहै ॥ ईहां (दुर्निग्रहं) यहजोमनकाविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ सो पूर्वउक्त (प्रमाथि बलवत् दृढं) यातीनविशेष णोंकूं एकठाकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ सोइसतुमारेकहणेविषे किंचित्मात्रभी संशयहैनहीं ॥ अर्थात् सोतुमाराकहणा स त्यहै ॥ तथापि संयतात्मापुरुषनैंतौं समाधिमात्ररूपउपायकरिकै तथायोगीपुरुषनैं अभ्यासवैराग्यरूपउपायकरिकै सोमन निग्रहकरीताहै अर्थात् सोमन सर्ववृत्तियोंतैंशून्य करीताहै ॥ ईहां मनकेनहींनिग्रहकरणेहारे असंयतात्मा पुरुषतैं मनकेनिग्रहकरणहारे संयतात्मापुरुषविषे विशेषताकेबोधनकरणेवासतै श्लोकविषे तु यहशब्द कथनक ऱ्याहै ॥ और तामनकेनिग्रहविषे अभ्यास वैराग्य यादोनोंकेसमुच्चयबोधनकरणेवासतै च यहशब्द कथनकरया है ॥ और (हेकौंतेय) यासंबोधनकरिकै भगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकरया ॥ हमारेपिताकीभागिनीका तूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुत्रहैं ॥ यातैं मैं भगवान् तुमारेकूं अवश्यकरिकैसुखकोप्राप्तिकरौंगा ॥ ईहां इसश्लोककेपूर्वार्द्धकरिकै श्रीभगवान्नैं चित्त का हठनिग्रह नहींसंभवैहै यहअर्थ कथनकरया ॥ और श्लोककेउत्तरार्द्धकरिकै ताचित्तकाक्रमनिग्रहसंभवैहै यहअर्थ कथनकरया ॥ ईहांभगवान्का यहअभिप्रायहै ॥ तामनकानिग्रह दोप्रकारतैंहोवैहै ॥ एकतौं हठकरिकैमनकानिग्रहहोवैहै ॥ और दूसरा क्रमकरिकै मनकानिग्रहहोवैहै ॥ तहां चक्षुश्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाक्पाणिआदिकपंचकर्मइंद्रिय यहदशइंद्रिय जैसे गोलकमात्रकेनिरोधकरिकै हठतैं निग्रहकरयेजावैहैं ॥ तैसे इसमनकूंभी मैं हठकरिकैनिग्रहकरौंगा ॥ इसप्रकारकोभ्रांति मूढपुरुषोंकूं होवैहै ॥ परंतु तिनइंद्रियोंकीन्यांई मनका हठमात्रतैंनिग्रहहोइसकैनहीं ॥ काहेतैं तामनकेरहणेका गोलक जोहृदयकमलहै सोहृदयकमल निरोधकरणेकूंअशक्यहै ॥ यातैं तिसमनका क्रमकरिकैनिग्रहकरणाहीं युक्तहै ॥ यहवार्त्ता वसिष्ठभगवान्नैंभो कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (उपविश्योपविश्यैव चित्तज्ञेनमुहुर्मुहुः ॥ नशक्यतेमनोजेतुंविनायुक्तिमनिंदितां ॥ १ ॥ अंकुशेनविनामत्तोयथादुष्टमतंगजः ॥ अध्यात्मविद्याधिगमःसाधुसंगमएवच ॥ २ ॥ वासनासंपरित्यागःप्राणस्पंदनिरोधनं ॥ एतास्तायुक्तयःपुष्टाःसंतिचित्तजयेकिल ॥ ३ ॥ सतीषुयुक्तिष्वेतासुहठान्नियमयंतिये ॥ चेतस्तेदीपमुत्सृज्यविनिघ्नंतितमोंजनैः ॥ ४ ॥) अर्थयह ॥ चित्तके स्वभावकूंजाननेहारेपुरुषनैं उत्तमयुक्तितैंविना केवल वारंवार आसनऊपरिस्थितहोइकै यहमन जयकरिसकीतानहीं ॥ १ ॥ जैसे महामत्तदुष्टहस्ती अंकुशतैंविना वशहोइसकैनहीं ॥ तैसेयहमनभी उत्तमयुक्तियोंतैंविना वशहोइसकैनहीं ॥ तेयुक्तियांयहहैं ॥ एकतौं अध्यात्मविद्याकोप्राप्ति दूसरा महात्माजनोंकासमागम ॥ २ ॥ तीसरा वासनवोंकाप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रित्याग चौथा प्राणोंकेस्पंदकानिरोध यहच्यारियुक्तियांहीं तिसचित्तकजयका उपायरूपहैं ॥ ३ ॥ इनच्यारोंयुक्तियों केविद्यमानहूएभी जेपुरुष चित्तका हठतैंनिग्रहकरेहैं ॥ तेपुरुष दोषकापरित्यागकरिकै तमकूं अंजनोंकरिकैनिवृत्त करेहैं ॥ ४ ॥ अब याहींअर्थकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहैं ॥ तहां क्रमकरिकैमनकेनिग्रहविषे एकतौं अध्यात्मविद्या कीप्राप्ति उपायहै ॥ काहेतैं साअध्यात्मविद्या दृश्यप्रपंचविषेतौं मिथ्यात्वकूंबोधनकरेहै ॥ और द्रष्टासाक्षीआत्माविषेतौं परमार्थसत्यरूपताकूं तथापरमानंदस्वप्रकाशताकूं बोधनकरेहै ॥ ऐसेबोधहूएतैंअनंतर यहमन आपणेविषयभूतदृश्यपदार्थोंविषे मिथ्यात्वहेतुतैं प्रयोजनकेअभावकूं निश्चयकरताहूआ तथाप्रयोजनवाले परमार्थसत्यपरमानंदस्वरूपद्रष्टाविषे स्वप्रकाशतारूपहेतुतैं आपणेअविषयताकूंनिश्चयकरताहूआ इंधनोंतैंरहितअग्निकीन्यांई सोमन आपेहीं शांतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं साअध्यात्मविद्याकीप्राप्ति मनकेनिग्रहका उपायरूपहै ॥ और जोपुरुष बोधनकऱ्येहूएतत्त्वकूंभी सम्यक् जानिसकतानहीं ॥ अथवा जोपुरुष बोधनकऱ्येहूएतत्त्वकूं विस्मरणकरिदेवैहै ॥ तिनदोनोंप्रकारकेपुरुषोंकूं तामनकेनिग्रहविषे साधुसमागमहीं उपायरूपहै ॥ काहेतैं तेमहात्माजन इसअधिकारीपुरुषकूं पुनःपुनःतत्त्वकाबोधनकरेहैं ॥ तथा पुनः पुनः तिसतत्त्वकास्मरणकरावेहैं ॥ और जोपुरुष विद्यामदादिकदुर्वासनाकरिकैपीडितहूआ तिससाधुसमागमकूंकरतानहीं ॥ तिसपुरुषकूंतौं पूर्वउक्तविवेककरिकै तावासनाकापरित्यागहीं मनकेनिग्रहविषेउपायहै ॥ और तिनवासवोंकूंभीअतिप्रबलहोणेतैं जोपुरुष तिनवासनावोंकेत्यागकरणेकूंभी समर्थनहींहै ॥ तिसपुरुषकूंतौं प्राणोंकेस्पंदकानिरोधहीं तामनकेनिग्रहका उपायहै ॥ काहेतैं प्राणोंकास्पंदतथावासना यहदोनोंहींचि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्तकेप्रेरकहैं ॥ तिनदोनोंकेनिरोधहूएचित्तकीशांति अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यहवार्त्ता वसिष्ठभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (द्वेबीजेचित्तवृक्षस्यप्राणस्पंदनवासने ॥ एकस्मिंश्चतयोःक्षीणेक्षिप्रंद्वेपिविनश्यतः ॥ १ ॥ प्राणायामदृढाभ्यासैर्युक्त्याचगुरुदत्तया ॥ आसनाशनयोगेनप्राणस्पंदोनिरुद्ध्यते ॥ २ ॥ असंगव्यवहारित्वाद्भवभावनवर्जनात् ॥ शरीरनाशदर्शित्वाद्वासनानप्रवर्त्तते ॥ ३ ॥ वासनासंपरित्यागाच्चित्तंगच्छत्यचित्ततां ॥ प्राणस्पंदनिरोधाच्चयथेच्छसि तथाकुरु ॥ ४ ॥ एतावन्मात्रकंमन्येरूपंचित्तस्यराघव ॥ यद्भावनंवस्तुनोंतर्वस्तुत्वेनरसेनच ॥ ५ ॥ यदानभाव्यते किंचिद्धेयोपादेयरूपियत् ॥ स्थीयतेसकलंत्यक्त्वातदाचित्तंनजायते ॥ ६ ॥ अवासनत्वात्सततंयदानमनुतेमनः ॥ अमनस्तातदोदेतिपरमात्मपदप्रदा ॥ ७ ॥) अर्थयह ॥ हेरामचंद्र इसचित्तरूपवृक्षके दोबीजहैं ॥ एकतौं प्राणोंकास्पंद दूसरा वासना ॥ तिनदोनोंबीजोंविषे एककेनाशहूए दोनों नाशहोइजावैहैं ॥ १ ॥ तहांप्राणायामकेदृढअभ्यासकरिकै तथागुरुनैंबताईहूईयुक्तिकरिकै तथाआसनभोजनादिकोंकेनियमकरिकै सोप्राणोंकास्पंद निरोधकऱ्याजावैहै ॥ २ ॥ और असंगव्यवहारकेराखणेतैं तथाप्रपंचकेचिंतनकेपरित्यागतैं तथाशरीरकूंनाशवान्देखणेतैं इसअधिकारीपुरुषकी वासना प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ ३ ॥ और वासनाकेपरित्यागतैं तथाप्राणस्पंदकेनिरोधतैं सोचित्त अचित्तभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ आगे जोतुमारीइच्छाहोवैसोकर ॥ ४ ॥ हेराघव बाह्यअनात्मपदार्थोंका जोवस्तुत्वरूपकरिकै तथारागकरिकै अंतराचिंतनहै इतनामात्रहीं मैं चित्तकास्वरूपमानताहूं ॥ ५ ॥ और जिसकालविषे यहपुरुष परित्यागकरणेयोग्य तथाग्रहणकरणेयोग्य किंचित्मात्रवस्तुकाभी चिंतनकरतानहीं ॥ किंतु सर्वकापरित्यागकरिकै स्थितहोवैहै ॥ तिसका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लविषे सोचित्त उत्पन्नहोवैनहीं ॥ ६ ॥ और जिसकालविषे यहमनसर्ववासनावोंतैंरहितहोणेतैं किंचित्मात्रभीवस्तु का मननकरतानहीं ॥ तिसकालविषे अमनस्ता उत्पन्नहोवैहै ॥ जाअमनस्ता परमात्मपदकेदेणेहारीहै इति ॥ ७ ॥ ॥ इतनैंकहणेकरिकै यहदोउपाय सिद्धभये ॥ एकतौं प्राणस्पंदकेनिरोधवासतै अभ्यासरूपउपाय ॥ दूसरा वासनाके परित्यागवासतै वैराग्यरूपउपाय ॥ और साधुसमागम तथाअध्यात्मविद्याकीप्राप्ति यहदोनोंउपायतौं अभ्यास वैराग्य यादोनोंकेउपपादकहोणेतैं अन्यथासिद्धहैं ॥ यातैं यहदोनोंउपाय अभ्यासवैराग्यदोनोंविषेहीं अंतर्भूतहैं ॥ इस कारणतैंहीं श्रीभगवान्नैं अभ्यास वैराग्य यहदोउपायहीं कथनकरेहै ॥ इसीअर्थकूं भगवान्पतंजलिभो योगसूत्रों विषेकथनकरताभयाहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (अभ्यासवैराग्याभ्यांतन्निरोधः ॥) अर्थयह ॥ पूर्वकथनकरीजे प्रमाण विपर्यय विकल्प निद्रा स्मृति यहपांचप्रकारकीवृत्तियांहै ॥ तेपांचवृत्तियां असुरत्वरूपकरिकै क्लिष्टकहीजावैहैं ॥ और देव त्वरूपकरिकै अक्लिष्टकहीजावैहैं ॥ ऐसीसर्ववृत्तियोंकाजोनिरोधहै ॥ अर्थात् इंधनतैंरहितअग्निकोन्यांई जोउपशम रूपपरिणामविशेषहै ॥ सोनिरोध अभ्यासवैराग्य यादोनोंउपायोंकरिकैहोवैहै इति ॥ यहवार्त्ता योगभाष्यविषे श्रीव्यासभगवान्नैंभी कथनकरीहै॥ तहांभाष्यवचनं ॥ (चित्तनदीनामोभयतोवाहिनीवहतिकल्याणायवहतिपापायच) ॥ अर्थयह ॥ जैसे श्रीगंगायमुनादिकप्रसिद्धनदीयां निम्नभूमिविषेचलिके समुद्रविषेजाइकै परिअवसानकूंप्राप्तहोवै हैं ॥ तैसे जाचित्तरूपनदी विवेकरूपनिम्नभूमिविषेचलिकै कैवल्यरूपफलविषे परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ साचित्त रूपनदी कल्याणवहा कहीजावैहै ॥ और जाचित्तरूपनदी अविवेकरूपनिम्नभूमिविषेचलिकै संसारविषेपरिअवसा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नकूंप्राप्तहोवैहै ॥ साचित्तरूपनदी पापवहा कहीजावैहै ॥ इसप्रकारतैं साचित्तरूपनदी दोनोंतरफचलेहै ॥ तहां विष
योंविषे वारंवार दोषदृष्टिकरिकै उत्पन्नभयाजोवैराग्यहै ॥ तावैराग्यनैंतौं तिसचित्तरूपनदीका विषयोंकीतरफकाप्र
वाह रोकीताहै ॥ और विवेकदर्शनरूपअभ्यासनैंतौं ताचित्तरूपनदीका प्रत्यक्आत्माविषे प्रवाहकरीताहै ॥ इसप्र
कारतैं वैराग्य अभ्यास दोनोंकेअधीनहीं चित्तवृत्तियोंकानिरोधहै ॥ केवलवैराग्यतैं अथवा केवलअभ्यासतैं सोनि
रोधहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे तीव्रवेगकरिकैयुक्तजोनदीकाप्रवाहहै ॥ ताप्रवाहकूं काष्ठमृत्तिकादिकोंकासेतुबांधि
कै निवृत्तकरिकै तहांसैंकुल्याखोदकै क्षेत्रकेसन्मुख दूसराएकवक्रप्रवाह उत्पन्नकऱ्याजावैहै ॥ तैसे वैराग्यकरिकै चि
त्तरूपनदीकेविषयाभिमुखप्रवाहकूं निवृत्तकरिकै समाधिकेअभ्यासकरिकै प्रत्यक्प्रवाह उत्पन्नकऱ्याजावैहै ॥ इसप्र
कार वैराग्य अभ्यास दोनोंका चित्तकैनिरोधविषे भिन्नभिन्नद्वारहोणेतैं तिनदोनोंका समुच्चयहींसंभवैहै ॥ जोकदा
चित् तिनदोनोंका एकहींद्वारहोवै ॥ तौं जैसे एकहींहोमविषे व्रीही यव दोनोंका एकहींद्वारहोणेतैं विकल्पहै ॥ तैसे
वैराग्य अभ्यास यादोनोंकाभी विकल्पहींहोवैंगा इति ॥ शंका ॥ मंत्र तप देवताध्यान आदिक क्रियारूपहैं ॥ या
तैं तिनमंत्रादिकोंकातौं पुनःपुनःआवृत्तिरूपअभ्यास संभवैहै ॥ परंतु सर्वव्यापारोंकाउपरमरूपजोसमाधिहै ताका
कोईअभ्यास संभवतानहीं ॥ ऐसीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै सोपतंजलिभगवान् इसप्रकारका अभ्यासकास्वरूप क
हताभयाहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (तत्रस्थितौयत्नोऽभ्यासः ॥) अर्थयह ॥ स्वस्वरूपविषेस्थित जोद्रष्टाशुद्धचिदात्माहै ताशुद्धचि
दात्माविषे सर्ववृत्तियोंतैंरहितचित्तको जा प्रशांतवाहितारूप निश्चलस्थितिहै ॥ तास्थितिकेवासतै जोमानसउत्साह

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूपयत्नहै ॥ अर्थात् आपणेचंचलस्वभावतैं बाह्यप्रवाहवालेइसचित्तकूं मैं सर्वप्रकारतैंनिरोधकरौंगा याप्रकारकाजो मनविषेउत्साहविशेषहै ॥ सोउत्साहरूपयत्न वारंवार आवृत्तिकऱ्याहूआ अभ्यास कह्याजावैहै इति॥ अन्यसूत्रं ॥ (स तुदीर्घकालनैरंतर्यसत्कारसेवितोदृढभूमिः) ॥ अर्थयह ॥ सोपूर्वउक्तअभ्यास उद्वेगतैंरहितहोइकै दीर्घकालपर्यंत सेवन कऱ्याहूआ तथाव्यवधानकेअभावकरिकै निरंतरसेवनकऱ्याहूआ तथाश्रद्धाअतिशयरूपसत्कारकरिकै सेवनकऱ्याहूआ दृढभूमिहोवैहै ॥ अर्थात् सोअभ्यास विषयसुखकोवासनावोंकरिकै चलायमानहोइसकैनहीं ॥ तहां तिसअभ्यासका अदीर्घकालपर्यंत सेवनकीयेहूए ॥ तथा दीर्घकालपर्यंतसेवनकीयेहूएभी वीचमैंव्यवधानराखिकैसेवनकीयेहूए ॥ तथा दीर्घकालनिरंतरसेवनकीयेहूएभी श्रद्धाअतिशयकेअभावहूए लय विक्षेप कषाय सुखास्वाद याच्यारोंकेनहीं निवृत्तहूए व्युत्थानसंस्कारोंकीप्रबलतातैं अदृढभूमिहूआ सोअभ्यास फलकीप्राप्तिवासतै होवैंगानहीं ॥ इसीकारणतैं पतंजलिभगवान्नैं दीर्घकाल नैरंतर्य सत्कार यहतीनोंकथनकरेहैं इति ॥ इतनैंकहणेकरिकै अभ्यासकास्वरूपकथनकऱ्या ॥ अब वैराग्यकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ तहां वैराग्य दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं अपरवैराग्यहोवैहै ॥ और दूसरा परवैराग्यहोवैहै ॥ तहां यतमान व्यतिरेक एकेंद्रिय वशीकार याभेदकरिकै सोअपरवैराग्य च्यारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां पूर्वभूमिकाकेजयकरिकै उत्तरभूमिकाकेसंपादनकीविवक्षाकरिकै सोपतंजलिभगवान् चौथावशीकारनामावैराग्यहीं कथनकरताभयाहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्यवशीकारसंज्ञावैराग्यं) ॥ अर्थयह ॥ स्त्री अन्न पान मैथुन ऐश्वर्य इत्यादिकविषय सर्वलोकोंकूंप्रत्यक्षहोणेतैं दृष्टविषय कहेजावैहैं ॥ और स्वर्ग विदेहता प्रकृ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिलय इत्यादिकविषय केवलशास्त्रप्रमाणकरिकैगम्यहोणेतैं आनुश्रविकविषय कहेजावैहैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेवि
षयोंकोतृष्णाकेहूएभी विवेकीन्यूनअधिकताकरिकै यतमानादिकतीव्रवैराग्य सिद्धहोवैहै ॥ तहां इसजगत्विषे कौंनव
स्तु सारहै तथाकौंनवस्तु असारहै इसवार्त्ताकूं मैंगुरुशास्त्रतैं निश्चयकरौं याप्रकारकाजोउद्योगहै ताकूं यतमानना
मावैराग्य कहेहैं ॥ और आपणेचित्तविषे पूर्वविद्यमानजेदोषहैं ॥ तिनदोषोंकेमध्यविषे अभ्यस्यमानविवेककरिकै
इतनैंदोष पक्कहूए इतनैंदोष बाकीरहतेहैं इसप्रकारतैं चिकित्साकीन्यांई जोविवेचनहै ताकूं व्यतिरेकनामावैराग्य
कहेहैं ॥ और दृष्टआनुश्रविकविषयोंकीप्रवृत्तिकूं दुःखरूपजानिकै बाह्यइंद्रियोंकेप्रवृत्तिकूंनहींउत्पन्नकरतोहूईभी तृ
ष्णाका जोऔत्सुक्यमात्रकरिकै मनविषेअवस्थानहै ताकानाम एकेंद्रियनामावैराग्यहै ॥ और तिसमनविषेभी तृष्णा
केअभावकरिकै जोसर्वप्रकारतैं वैतृष्ण्यहै अर्थात् तृष्णाकीविरोधी ज्ञानप्रसादरूप जाचित्तकोवृत्तिविशेषहै ताका
नाम वशीकारनामावैराग्यहै ॥ सोवशीकारनामावैराग्य संप्रज्ञातसमाधिकातौं अंतरंगसाधनहोवैहै ॥ और असंप्र
ज्ञातसमाधिका बहिरंगसाधनहोवैहै ॥ ताअसंप्रज्ञातसमाधिकातौं परवैराग्यहीं अंतरंगसाधनहोवैहै ॥ सोपरवैरा
ग्यकास्वरूप पतंजलिभगवान्नैं योगसूत्रोंविषे यहकह्याहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (तत्परंपुरुषख्यातेर्गुणवैतृष्ण्यं ॥) अर्थयह ॥
संप्रज्ञातसमाधिकीदृढताकरिकै त्रिगुणात्मकप्रधानतैं पृथक्कऱ्येहूएपुरुषका साक्षात्कार उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसतैं अनं
तर संपूर्णतीनगुणोंकेव्यवहारोंविषे जोवैतृष्ण्यहोवैहै ॥ सोपरवैराग्य कह्याजावैहै ॥ अर्थात् सर्वतैंश्रेष्ठ फलभूतवैराग्य
कह्याजावैहै ॥ तिसपरवैराग्यको परिपाकतातैं चित्तकेउपशमकीपरिपाकताहोइकै शीघ्रहीं कैवल्यकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सीसर्वअभिप्रायकूंलैके श्रीभगवान्नैं (अभ्यासेनतुकौंतेयवैराग्येणचगृह्यते) यहवचन कथनकऱ्याहै॥ इति ॥ ३५॥

* ॥ हेअर्जुन पूंर्वतुमनैं जोयहकह्याथा तत्त्वज्ञानतैंभी प्रबलजोप्रारब्धकर्महै ॥ सोप्रारब्धकर्म आपणेफलकेदेणेवासतै मनकेवृत्तियोंकूं अवश्यकरिकैउत्पन्नकरैंगा वृत्तियोंतैंविना सोफलकाभोग बनतानहीं ॥ ऐसीमनकीवृत्तियोंकेउत्पन्नहूए तिनवृत्तियोंकानिरोध कऱ्याजावैनहीं इति ॥ सोइसकाउत्तर अब तूंश्रवणकर ॥

105

असंयतात्मनायोगोदुष्प्रापइतिमेमतिः॥वश्यात्मनातुयतताशक्योवाप्तुमुपायतः।३६॥

असंयतात्मना। योगः।दुष्प्रापः।इति।मे।मतिः। वश्यात्मना। तु।यतता। शक्यः। अवाप्तुं। उपायतः॥इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन असंयतात्मापुरुषनैं सोयोग दुःखकरिकैभीनहींपाइसकीताहै यहवार्त्ता हमारेकूंभी संमतहै तौंभी यतमान वश्यात्मापुरुषनैं उपायतैं प्राप्तहोणेकूं शक्यहै ॥ ३६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ तत्वसाक्षात्कारकेउत्पन्नहूएभी वेदांतशास्त्रकेव्याख्यानादिकोंविषे चित्तकीसंलग्नतातैं अथवा आलस्यादिकदोषतैं अभ्यासवैराग्यकरिकै नहींनिरुद्धकऱ्याहैअंतःकरणजिसनैं ताकानाम असंयतात्माहै ॥ ऐसाअसंयतात्मापुरुष यद्यपि तत्त्वसाक्षात्कारवालाभीहै ॥ तथापि सोअसंयतात्मापुरुष प्रारब्धकर्मकृतचित्तकीचंचलतातैं मनकीसर्ववृत्तियोंकेनिरोधरूपयोगकूं दुःखकरिकैभी प्राप्तहोइसकैनहीं ॥ इसप्रकारकावचन जोतुमनैं कह्याहै ॥ सोतुमाराकहणा हमारेकूंभी संमतहै ॥ अर्थात् सोतुमाराकहणा यथार्थहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् असंयतात्मापुरुष जबी तिसयोगकुं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तबी दूसराकौंनपुरुष तिसयोगकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (वश्या त्मनातुइति) वैराग्यकेपरिपाककरिकै वासनाकेक्षयहूए वश्यहूआहै क्या स्वाधीनहूआहै अर्थात् विषयोंकीपरतंत्रता तैंशून्यहूआहै आत्मा क्या अंतःकरण जिसका ताकानाम वश्यात्माहै ॥ ईहां (वश्यात्मनातु) यावचनकेअंतविषे स्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वउक्त असंयतात्मापुरुषतैं इसवश्यात्मापुरुषविषे विलक्षणताकेबोधनकरणेवा सतैहै ॥ अथवा निश्चयार्थकहै ॥ तथा जोपुरुष वैराग्यकरिकै चित्तरूपनदीकेविषयाभिमुखप्रवाहकूंरोकिकै प्रत्यक्आ त्माकेअभिमुखताकाप्रवाहकरणेवासतै पूर्वउक्तअभ्यासकूंकरेहै ताकानाम यतत्है ॥ ऐसावश्यात्मायतमानपुरुषहीं चित्तकीचंचलताकरणेहारेप्रारब्धकर्मोंकाभी अभिभवकरिकै तासर्वचित्तवृत्तियोंकेनिरोधरूपयोगकूं प्राप्तहोणेवासतै समर्थहोवैहै ॥ शंका ॥ अत्यंतबलवान् जेप्रारब्धकर्महैं ॥ तिनप्रारब्धकर्मोंकाअभिभव किसप्रकारतैंहोवैहै ॥ ऐसी अर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (उपायतःइति) हेअर्जुन पुरुषप्रयत्नरूपजोउपायहै ॥ तिसउपायतैंहीं तिसप्रा रब्धकर्मकाअभिभवहोवैहै ॥ काहेतैं सोलौकिकपुरुषप्रयत्न तथावैदिकपुरुषप्रयत्न ताप्रारब्धकर्मकीअपेक्षाकरिकै प्र बलहै ॥ जोकदाचित् तापुरुषप्रयत्नकूं प्रारब्धकर्मतैंप्रबल नहींअंगीकारकरीये ॥ तौं लौकिकपुरुषोंके कृषिआदिक प्रयत्नकूं तथावैदिकपुरुषोंकेज्योतिष्टोमादिकप्रयत्नकूं व्यर्थताप्राप्तहोवैंगी ॥ और सर्वकार्यविषे प्रारब्धकर्मके सत्त्वका तथाअसत्त्वका विकल्पहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ ताकरिकै किसीभीकार्यविषेप्रवृत्तिनहींहोवैंगी ॥ काहेतैं प्रारब्धकर्मकेसत्त्व हूए तिसतैंहींफलकीप्राप्तिहोइजावैंगी ताफलकीप्राप्तिविषे पुरुषप्रयत्नका कछुप्रयोजननहींहै ॥ और प्रारब्धकर्मके

106

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

असत्वहूएतौं सर्वप्रकारतैं फलकीप्राप्तिहोणीअसंभवहै यातैंभी पुरुषप्रयत्नका कछुप्रयोजन नहींहै ॥ इसप्रकारकावि
चारकरिकै कोईभीपुरुष किसोभीलौकिकवैदिककार्यविषेप्रवृत्तहोवैंगानहीं ॥ शंका ॥ सोप्रारब्धकर्म आप अदृष्टरू
पहै ॥ जोअदृष्टकारणहोवैहै सो दृष्टकारणतैंविना कार्यका जनकहोवैनहीं ॥ किंतु दृष्टकारणकीसहायताकरिकैहीं सोअ
दृष्टकारण कार्यकाजनकहोवैहै ॥ यातैं अदृष्टकारणरूप सोप्रारब्धकर्मभी दृष्टसाधनसंपत्तितैंविना फलकीउत्पत्तिकर
णेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ यातैं कृषिआदिकलौकिककार्योंविषे तथाज्योतिष्टोमादिकवैदिककार्योंविषे ताप्रारब्धकर्मकूं
सोपुरुषप्रयत्न अवश्यअपेक्षितहै ॥ समाधान ॥ यहवार्त्तातौं योगाभ्यासविषेभी समानहींहै ॥ काहेतैं तायोगाभ्यास
करिकैसाध्यजाजीवन्मुक्तिहै ॥ ताजीवन्मुक्तिकूंभी सुखातिशयरूपताहोणेतैं प्रारब्धकर्मकेफलविषेहीं अंतर्भावहै ॥
याकारणतैंहीं अध्यात्मशास्त्रोंविषे ताजीवन्मुक्तिकूं अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकाफलरूप कथनकऱ्याहै ॥ यातैं ताजीव
न्मुक्तिरूपफलकीप्राप्तिवासतै दृष्टकारणरूप योगाभ्यासकासंपादनकरणा संभवैहै ॥ अथवा तत्त्ववेत्तापुरुषके देहइं
द्रियादिकसंघातकीस्थितिकूंदेखिकै जैसे प्रारब्धकर्मकूं तत्त्वज्ञानतैंप्रबलता कल्पनाकरीजावैहै ॥ तैसे तिसप्रारब्धक
र्मतैंभी सोयोगाभ्यास प्रबलहोवौ ॥ काहेतैं शास्त्रप्रतिपादितयत्नकूं सर्वतैंप्रबलताहींदेखणेविषेआवैहै ॥ यहवार्त्ता
वसिष्ठभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (सर्वमेवेहहिसदासंसारेरघुनंदन ॥ सम्यक्प्रयुक्तात्सर्वेणपौरुषात्स
सवाप्यते ॥ १ ॥ उच्छास्त्रंशास्त्रितंचेतिपौरुषंद्विविधंस्मृतं ॥ तत्रोच्छास्त्रमनर्थायपरमार्थायशास्त्रितं ॥ २ ॥ शुभाशु
भाभ्यांमार्गाभ्यांवहंतीवासनासरित् ॥ पौरुषेणप्रयत्नेनयोजनीयाशुभेपथि ॥ ३ ॥ अशुभेषुसमाविष्टंशुभेष्वेवावतार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

य ॥ स्वमनःपुरुषार्थेनबलेनबलिनांवर ॥ ४ ॥ प्रागभ्यासवशाद्यातियदातेवासनोदयं ॥ तदाभ्यासस्यसाफल्यंविद्धि
त्वमरिमर्दन ॥ ५ ॥ संदिग्धायामपिभृशंशुभामेवसमाहर ॥ शुभायांवासनावृद्धौ तातदोषोनकश्चन ॥ ६ ॥ अन्यु
त्पन्नमनायावद्भवानज्ञाततत्पदः ॥ गुरुशास्त्रप्रमाणैस्त्वंनिर्णीतंतावदाचर ॥ ७ ॥ ततःपक्वकषायेणनूनंविज्ञातवस्तु
ना ॥ शुभोप्यसौत्वयात्याज्योवासनौघोनिरोधिना ॥ ८ ॥) अर्थयह ॥ हेरघुनंदन इसलोकविषे सर्वपुरुष सम्यक्करे
हूएपुरुषप्रयत्नतैं सर्वपदार्थोकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसाकोईपदार्थहैनहीं जोपुरुषप्रयत्नकरिकैनहींप्राप्तहोवै ॥ १ ॥ हेराम
चंद्र सोपुरुषप्रयत्नरूपपौरुष दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं उत्शास्त्रहोवैहै दूसराशास्त्रितहोवैहै ॥ तहां शास्त्रकरिकैप्र
तिषिद्धपौरुषकूं उत्शास्त्रकहेहैं ॥ और शास्त्रकरिकैविहितपौरुषकूं शास्त्रितकहेहैं ॥ तहां उत्शास्त्रपौरुषतौं नरककी
प्राप्तिवासतैहींहोवैहै ॥ और शास्त्रितपौरुषतौं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा मोक्षकीप्राप्तिवासतैहींहोवैहै ॥ २ ॥ हेरामचंद्र
यहवासनारूपनदी शुभ अशुभ यादोनोंमार्गोतैंवहनकरेहै ॥ तहा इसअधिकारीपुरुषनैं पुरुषप्रयत्नकरिकै यहवा
सनारूपनदी अशुभमार्गतैंरोकिकै शुभमार्गविषेप्रवृत्तकरणी ॥ ३ ॥ हेसर्वबलवान्पुरुषोंविषेश्रेष्ठरामचंद्र अशुभकर्मो
विषेप्रवृत्तहूएआपणेमनकूं तूं पुरुषप्रयत्नकरिकै तिनअशुभकर्मोतैंनिवृत्तकरिकै शुभकर्मोविषेप्रवृत्तकर ॥ ४ ॥ हेश
त्रुवोंकूंनष्टकरणेहारारामचंद्र पूर्वलेअभ्यासकेवशतैं जबी तुमारीशुभवासना उत्पन्नहोवै ॥ तबीहीं तुमनैं आपणे अ
भ्यासकीसफलताजानणी ॥ ५ ॥ तावासनाकेअनिर्णयहूएभी तूं निरंतर शुभवासनाकूंहीं संपादनकर ॥ हेपुत्र ता
शुभवासनाकीवृद्धिहूए किंचित्मात्रभी दोषहोवैनहीं ॥ अशुभवासनाकीवृद्धितैंहीं दोषकोप्राप्तिहोवैहै ॥ ६ ॥ हेराम

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चंद्र जबपर्यंत तूं अव्युत्पन्नमनवालाहै ॥ तथा परमपदकेज्ञानतैंरहितहै ॥ तबपर्यंत गुरुशास्त्रप्रमाणकरिकैनिर्णीतअ
र्थकूंहीं तूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक अनुकरणकर॥ ७॥ हेरामचंद्र इसप्रकारकेउपायतैं जबी तुमारेपापरूपकषाय निवृत्तहोवैं ॥
तथा आत्मवस्तुकानिश्चयहोवै ॥ तथा मनकानिरोधहोवै ॥ तबी तुमनैं ताशुभवासनाकाभी परित्यागहींकरणा इ
ति॥ ८॥ इत्यादिकअनेकवचनोंकरिकै वसिष्ठभगवान्नैं पुरुषप्रयत्नकीप्रबलताकथनकरीहै ॥ यातैं सोशास्त्रीयपुरुष
प्रयत्न सर्वतैंप्रबलहै॥ तापुरुषप्रयत्नकरिकै तिसप्रारब्धकर्मकाअभिभव संभवैहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै पूर्वउक्त अर्जुन
केप्रश्नका यहउत्तरसिद्धभया ॥ साक्षीआत्माविषेस्थित जोअविवेकसिद्धसंसारबंधहै तासंसारबंधकी विवेकसाक्षात्का
रतैं निवृत्तिहूएभी प्रारब्धकर्मनैं स्थितकरयेहूएचित्तकी स्वाभाविकभीवृत्तियोंकूं जोपुरुष योगाभ्यासकेप्रयत्नकरिकै
निवृत्तकरेहै ॥ सोजीवन्मुक्तपुरुष परमयोगी कह्याजावैहै ॥ और तिनचित्तवृत्तियोंकेनहींनिरोधकीयेहूए यहपुरुष त
त्त्वज्ञानवालाहूआभी परमयोगी कह्याजावैनहीं ॥ किंतु अपरमयोगी कह्याजावैहै इति॥ ३६॥ ※ ॥ तहां
इसपूर्वग्रंथकरिकै यहवार्त्ता कथनकरी ॥ जिसपुरुषकूंतत्त्वज्ञानकीतौंप्राप्तिहूईहै ॥ परंतु जीवन्मुक्तिकीप्राप्तिहूईनहीं॥
सोपुरुष अपरमयोगी कह्याजावैहै ॥ और जिसपुरुषकूं तत्त्वज्ञानकीभी प्राप्तिहूईहै तथाजीवन्मुक्तिकीभी प्राप्तिहूई
है ॥ सोपुरुष परमयोगी कह्याजावैहै इति ॥ तहां अपरमयोगी तथापरमयोगी दोनोंका तत्त्वज्ञानकरिकै अज्ञानके
नाशहूएभी जबपर्यंत प्रारब्धकर्म विद्यमानहै तबपर्यंत देहइंद्रियसंघात बन्यारहैहै ॥ और ताप्रारब्धकर्मका जबी भो
गतैंनाशहोवैहै तबी तिनदोनोंका देहइंद्रियसंघातभी नाशहोइजावैहै ॥ और एकवार नाशकूंप्राप्तहूआ सोसंघात

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुनःकदाचित्भी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं तासंघातकेउत्पादक अविद्याकामकर्म तिनतत्त्ववेत्तापुरुषोंके नाश होइगयेहैं ॥ यातैं तिनदोनोंप्रकारकेविद्वान्पुरुषोंकूं विदेहकैवल्यकीप्राप्तिविषे किंचित्मात्रभी शंकानहींहै ॥ परंतु जोपुरुष पूर्वकरयेहूएनिष्कामकर्मोंकरिकै विविदिषापर्यंत चित्तशुद्धिकूंप्राप्तहूआहै ॥ तिसतैंअनंतर शास्त्रविधिपूर्वक तिनसर्वकर्मोंकापरित्यागकरिकै विविदिषारूप परमहंससंन्यासकूंप्राप्तहूआहै ॥ तिसतैंअनंतर श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठजीवन्मुक्तसंन्यासीगुरुकेसमीपजाइकै तिसब्रह्मवेत्तागुरुतैं वेदांतमहावाक्यकेउपदेशकूंप्राप्तहोइकै ताउपदेशविषे असंभावनाविपरीतभावनारूपप्रतिबंधकीनिवृत्तिवासतै (अथातोब्रह्मजिज्ञासा) इससूत्रतैंआदिलैके (अनावृत्तिःशब्दात्) इससूत्रपर्यंत समग्र च्यारिअध्यायरूप उत्तरमीमांसाशास्त्रकरिकै श्रवण मनन निदिध्यासन यातीनोंकूं गुरुकेप्रसादतैं करणेकाआरंभकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष श्रद्धावान्हूआभी आयुष्कीअल्पताकरिकै अल्पप्रयत्नवालाहोणेतैं इस जन्मविषे आत्मज्ञानकूंप्राप्तहूआनहीं ॥ किंतु ताश्रवणमननिदिध्यासनकेकरतेहूएहीं मध्यविषे मरणकूंप्राप्तहोइगया ॥ सोपुरुष आत्मज्ञानतैंरहितहोणेतैं अज्ञानकेनाशतैंरहितहै ॥ यातैं सोपुरुष मोक्षकूंतौं प्राप्तहोवैनहीं ॥ और तिसपुरुषनैं कर्मोंका तथाउपासनाका पूर्व परित्यागकऱ्याहै ॥ यातैं सोपुरुष अर्चिरादिमार्गकरिकै उपासनासहितकर्मके देवलोकरूपफलकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथासोपुरुष धूमादिकमार्गकरिकै केवलकर्मोंके पितृलोकरूपफलकूंभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु सोयोगभ्रष्टपुरुष कीटपतंगादिकभावकोप्राप्तिकरिकै कष्टगतिकूंहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ आत्मज्ञानतैंरहितहूआ देवयान पितृयाणमार्गके असंबंधवालाहोणेतैं ॥ वर्णआश्रमकेआचारतैंभ्रष्टहूएपुरुषकीन्यांई ॥ अथवा सोपुरुष ताकष्टगतिकूंनहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राप्तहोवैंगा ॥ शास्त्रनिषिद्धकर्मोंकेअभाववालाहोणेतैं ॥ वामदेवकीन्यांई ॥ इसप्रकारकेसंशयकरिकै व्याकुलहूआहैमन जिसका ऐसाजोअर्जुनहै ॥ सोअर्जुन तासंशयकीनिवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरेहै ॥

अर्जुनउवाच॥अयतिःश्रद्धयोपेतोयोगाच्चलितमानसः॥
अप्राप्ययोगसंसिद्धिंकांगतिंकृष्णगच्छति ॥ ३७ ॥

अयतिः । श्रद्धया । उपेतः । योगात् । चलितमानसः।अप्राप्यायोगंसंसिद्धिंकां।गतिं । कृष्ण । गच्छति ॥ इतिप० ॥ हेकृष्ण जोपुरुष अल्पप्रयत्नवालाहै तथाश्रद्धाकरिकै युक्तहै तथातत्त्वसाक्षात्कारतैं चलायमानहूआहै मनजिसका सोपुरुष तत्त्वज्ञानकेफलकूं नप्राप्तहोइकै मरणकूंप्राप्तहूआ किसं गतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ३७ ॥ इतिपदार्थः ॥ ॥ टीका ॥ हेकृष्णभगवन् आयुष्कीअल्पताकरिकै जोपुरुष अल्पप्रयत्नवालाहै ॥ तथागुरुवेदांतवाक्योंविषे विश्वास बुद्धिरूपजाश्रद्धाहैताश्रद्धाकरिकैयुक्तहै ॥ ईहां श्रद्धा आपणेसहवर्त्तिशमदमादिकोंकाभी उपलक्षणहै ॥ तेश्रद्धासहितश मदमादिक (शांतोदांतउपरतस्तितिक्षुःश्रद्धावित्तोभूत्वात्मन्येवात्मानंपश्यति) इसश्रुतिविषे कथनकरेहैं ॥ यातैं यहअर्थ सिद्धभया ॥ नित्यअनित्यवस्तुकाविवेक ॥ तथाइसलोकपरलोककेफलभोगोंविषेवैराग्य ॥ तथा शम दम उपरति तितिक्षा श्रद्धा समाधान यहषट्संपत्ति ॥ तथामोक्षकीइच्छारूप मुमुक्षुता ॥ इनच्यारिसाधनोंकरिकै संपन्नहूआ जोपुरुष श्रोत्रि यब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंके श्रवणमननादिकोंकूंकरताभीहै ॥ परंतु आयुष्कीअल्पताकरिकै तथामरण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कालविषेइंद्रियोंकीव्याकुलताकरिकै तिनश्रवणादिकसाधनोंके दृढअनुष्ठानकेअसंभवतैं जोपुरुष योगतैं चलितमनवा
लाहूआहै ॥ ईहां श्रवणमननादिकोंकेपरिपाककरिकै उत्पन्नभयाजोतत्त्वसाक्षात्कारहै ताकानाम योगहै ॥ तायोगतैं च
लितहूआहै क्या तिसयोगकेफलकूंनहींप्राप्तहूआहै मनजिसका ऐसाजोपुरुषहै ॥ सोपुरुषतायोगसंसिद्धिकूं नप्राप्तहोइ
कै अर्थात् तत्त्वसाक्षात्काररूपयोगकरिकैप्राप्तहोणेहारी जाअपुनरावृत्तिसहित कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिहै ताकानाम
योगसंसिद्धिहै ताकूं नप्राप्तहोइकै अतत्त्वज्ञहूआहीं मध्यविषेमृत्युकूंप्राप्तहूआ किसगतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् सोपुरुष
सुगतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अथवा दुर्गतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ तिसपुरुषनैं नित्यनैमित्तिककर्मोकातौं परित्यागकऱ्याहै
तथाज्ञानकीउत्पत्तिहुईनहीं ॥ यातैं तिसपुरुषकूं दुर्गतिकेप्राप्तिकीभीसंभावनाहोवैहै ॥ और तिसपुरुषनैं शास्त्रउक्तमोक्ष
साधनोंकाअनुष्ठानकऱ्याहै तथाशास्त्रप्रतिषिद्धकर्मोकापरित्यागकऱ्याहै ॥ यातैं तिसपुरुषकूं सुगतिकेप्राप्तिकीभी
संभावनाहोवैहै इति ॥ ३७ ॥ ※ ॥ अब इसीपूर्वउक्तसंशयकेबीजकूं स्पष्टकरिकैनिरूपणकरैहैं ॥

कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिवनश्यति ॥ अप्रतिष्ठोमहाबाहोविमूढोब्रह्मणःपथि ३८

कच्चित्। नो। उभयविभ्रष्टः। छिन्नाभ्रं। इव। नश्यति। अप्रतिष्ठः। महाबाहो। विमूढः। ब्रह्मणः। पथि ॥ इतिपद०॥

हेमहान्बाहुवालेकृष्ण ब्रह्मप्राप्तिके ज्ञानरूपमार्गविषे विमूढ तथाकर्मउपासनातैंरहित ऐसाउ
भयभ्रष्टपुरुष विच्छिन्नहूएअभ्रकी न्यांई क्युं नहीं नाशकूंप्राप्तहोवैंगा ॥ ३८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेमहाबाहो ॥ अर्थात् सर्वभक्तजनोंके सर्वउपद्रवोंकेनिवृत्तकरणेविषे समर्थहैंच्यारोंभुजाजिसको अथवा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सर्वभक्तजनोंकेप्रति धर्म अर्थ काम मोक्ष याच्यारिप्रकारकेपुरुषार्थदेणेविषे समर्थहैच्यारिभुजाजिसकी ताकानाम म
हाबाहुहै ॥ ईहां (हेमहाबाहो) यासंबोधनकेकहणेकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्विषे स्वप्रश्ननिमित्तकक्रोधकाअभा
व सूचनकऱ्या ॥ तथा तिसप्रश्नकेउत्तरदेणेकासामर्थ्य सूचनकऱ्या ॥ और (कच्चित्) यहपद अभिलाषासहितप्रश्न
कावाचकहै ॥ सोदिखावेहैं ॥ हेभगवन् जोपुरुष अद्वितीयब्रह्मकीप्राप्तिके आत्मज्ञानरूपमार्गविषे विमूढहै ॥ अर्था
त् ताब्रह्मआत्माकेऐक्यसाक्षात्कारकीउत्पत्तितैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष अप्रतिष्ठहै अर्थात् पितृयाणमार्गविषेगम
नकासाधनरूपजोकर्महै तथादेवयानमार्गविषे गमनकासाधनरूपजाउपासनाहै ताकर्मउपासनादोनोंतैंरहितहै ॥
जिसकारणतैं उपासनासहितसर्वकर्मोंका तिसपुरुषनैं पूर्वहीं परित्यागकऱ्याहै ॥ ऐसाजोउभयभ्रष्टपुरुषहै ॥ अर्थात्
कर्ममार्गतै तथाज्ञानमार्गतैं दोनोंतैं भ्रष्टहै ॥ ऐसापुरुष छिन्नअभ्रकीन्यांई क्युं नाशकूंनहींप्राप्तहोवैंगा ॥ अर्थात् जैसे
वायुनैं पूर्वमेघतैंपृथक्कऱ्याजोअभ्रहै सोअभ्र जैसे पूर्वमेघतैंभ्रष्टहोइकै तथाउत्तरमेघकूंनप्राप्तहोइकै वृष्टिकेअयोग्य
हूआ मध्यविषेहीं नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सोयोगभ्रष्टपुरुषभी पूर्वकर्ममार्गतैंविच्छिन्नहूआ तथाउत्तरज्ञानमार्गकूंनहीं
प्राप्तहूआ मध्यविषेहीं नाशकूंप्राप्तहोवैंगा ॥ ऐसायोगभ्रष्टपुरुष कर्मकेफलकूं तथाज्ञानकेफलकूं प्राप्तहोणेवासतै अ
योग्यनहींहैक्याइति ॥ इतनैंकहणेकरिकै ज्ञान कर्म दोनोंका समुच्चयभी निराकरणकऱ्या ॥ काहेतैं इससमुच्चयपक्ष
विषे ज्ञानकेफलकेअलाभहूएभी कर्मकेफलकालाभ संभवहोइसकेहै ॥ यातैं तासमुच्चयकूंकरणेहारेपुरुषविषे उभयभ्र
ष्टपणा संभवतानहीं ॥ ईहांजोकोईयहशंकाकरै ॥ तिसपुरुषकूं कर्मोंकेसंभवहूएभी तिसपुरुषनैं कर्मोंकेफलकीकामनाका प

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रित्यागकऱ्याहै ॥ यातैं कर्मकरतेहूएभी तिसपुरुषविषे उभयभ्रष्टपणा संभवहोइसकेहै ॥ सोयहशंकाभीसंभवैनहीं ॥ काहे तैं जैसे सकामकर्मोंकाफल होवैहै ॥ तैसे निष्कामकर्मोंकाभी फलहोवैहै ॥ यहवार्त्ता पूर्व आपस्तंबऋषिकावचनप्रमाणदे कै कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं ज्ञान कर्म दोनोंकेसमुच्चयकूंअनुष्ठानकरणेहारेपुरुषऊपरि यहप्रश्ननहींहै ॥ किंतु सर्वकर्मोंकेत्यागीसंन्यासीऊपरिहीं यहप्रश्नहै ॥ जिसकारणतैं अनर्थकेप्राप्तिकीशंका तिससर्वकर्मोंकेत्यागीसंन्यासीविषेहीं संभवहोइसकेहै इति ॥ ३८ ॥ ❋ ॥ अब इसपूर्वउक्तसंशयकेनिवृत्तकरणेवासतै सोअर्जुन अंतर्यामीकृष्णभगवान्केप्रति प्रार्थनाकरेहै ॥

एतन्मेसंशयंकृष्णछेत्तुमर्हस्यशेषतः ॥ त्वदन्यःसंशयस्यास्यछेत्तानह्युपपद्यते ॥ ३९ ॥

एतत्[2] मे[3] संशयं[4] कृष्ण[5] छेत्तुं[6] अर्हसि[7] अशेषतः[8] । त्वदन्यः[9] संशयस्य[10] अस्य[11] छेत्ता[12] न[13] हि[14] उपपद्यते[15] ॥ इतिप०

हेकृष्ण हमारे इस संशयकूं अशेषतैं निवृत्तकरणेकूं आपहीं योग्यहो जिसकारणतैं तुमारेतैं अन्यकोईभी इस संशयके छेदनकरणेहारा नहीं संभवैहै ॥ ३९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेकृष्णभगवन् पूर्वदोश्लोकोंकरिकै हमनैं दिखायाजोआपणासंशयहै ॥ तिसहमारेसंशयकूं अशेषतैंनिवृत्तकरणेकूं अर्थात् तासंशयकेमूलभूत जेअधर्मादिकहैं तिनअधर्मादिकोंकेउच्छेदनपूर्वक तासंशयकेनिवृत्तकरणेकूं एकआपहीं योग्यहो ॥ शंका ॥ हेअर्जुन मेरेतैंअन्य कोईऋषि अथवा कोईदेवता तुमारे इससंशयकूंनिवृत्तकरैंगा ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहूए अर्जुनकहेहै (त्वदन्यःइति) हेभगवन् सर्वज्ञ तथासर्वशास्त्रोंकाकर्त्ता तथापरमगुरुरूपतथापरमकृपालु ऐसेजोआप परमेश्वरहो ॥ तिसआपतैंभिन्न जितनैंकीऋषिहैं तथाजितनैंकीदेवताहैं तेसर्व अनीश्वरहोणेतैं असर्वज्ञहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है॥यातैं कोईऋषि तथाकोईदेवता इसयोगभ्रष्टपुरुषकेपरलोकगतिविषयक हमारेसंशयके सम्यक्उत्तरदेकरिकै नाशकरणे हारा संभवतानहीं॥ यातैं सर्वकापरमगुरु तथासर्वअर्थकूंप्रत्यक्षदेखणेहारा आपईश्वरहीं इसहमारेसंशयके निवृत्तकरणे कूंयोग्यहो इति॥ ३९॥ * ॥ इसप्रकार अर्जुनकी योगीपुरुषकेनाशकीशंकाकूं निवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् उत्तरकहेहै

श्रीभगवानुवाच॥ पार्थनैवेहनामुत्रविनाशस्तस्यविद्य ते॥ नहिकल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिंतातगच्छति॥ ४०॥

पार्थ। नैं एंव। इह। नं। अमुत्र। विनाशः। तस्य। विद्यते। नैं। हिं। कल्याणंकृत्। कश्चित्। दुर्गतिं। तात। गच्छति॥ इतिप०

हेपार्थ तिसयोगभ्रष्टपुरुषका इसलोकविषे कदाचित्भी विनाश नहीं होवैहै तथा परलोकविषेभी विनाश नहीं होवैहै जिसकारणतैं हेतात शास्त्रविहितकारी कोईभीपुरुष दुर्गतिकूं नहीं प्राप्तहोवैहै॥ ४०॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन उभयभ्रष्टहूआ सोयोगीपुरुष नाशकूंहींप्राप्तहोवैहै॥ यहजोवचन पूर्वतुमनैं कथनकऱ्याथा॥ तिसवचनकाक्याअर्थहै॥ क्यासोपुरुष वेदविहितकर्मोकेपरित्यागकरणेतैं इसलोकविषे किसीप्रमादीपुरुषकीन्यांई श्रेष्ठ पुरुषोंकरिकै निंदाकरणेयोग्यहोवैहै॥ अथवा सोपुरुष परलोकविषे निकृष्टगतिकूंप्राप्तहोवैहै॥ जापरलोकविषेनिकृष्टगति श्रुतिनैं कथनकरीहै॥ तहांश्रुति॥ (अथैतयोःपथोर्नकतरेणचनतेकीटाःपतंगायदिदंदंदशूकं)॥ अर्थयह॥ देवलोककेप्राप्तिकाजोदेवयानमार्गहै॥ तथापितृलोकके प्राप्तिकाजोपितृयाणमार्गहै॥ तिनदोनोंमार्गोविषे एकमार्ग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषेभी जेपुरुष प्रवृत्तनहींहोवैहैं ॥ तेअज्ञानीपुरुष कीटपतंगमशकादिकक्षुद्रशरीरोंकूं वारंवार प्राप्तहोवैहैं इति ॥ सोयहदोनोंप्रकारकानाश तिसयोगभ्रष्टपुरुषका होवैनहीं ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान्कहेहै ॥ हेपार्थ जिसपुरुषनैं शास्त्रउक्तविधिपूर्वक सर्वकर्मोंकापरित्यागरूपसंन्यासकऱ्याहै ॥ तथा जोपुरुष सर्वतैंविरक्तहूआहै ॥ तथा जो जोपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंकूंकरेहै ॥ तथा जोपुरुष तिनश्रवणमननादिकोंकेकरतेहूएहीं मध्यविषे मरणकूंप्राप्तहूआहै ॥ ऐसाजोयोगभ्रष्टपुरुषहै ॥ तिसयोगभ्रष्टपुरुषका इसलोकविषे तथापरलोकविषे विनाशहोवैनहीं ॥ इसीअर्थविषे श्रीभगवान् हेतुकहेहै (नहिकल्याणकृत्इति) हेतात जोकोईपुरुष किंचित्मात्रभी शास्त्रविहितअर्थकाअनुष्ठानकरेहै ॥ सोपुरुष इसलोकविषेतौं अपकीर्तिरूपदुर्गतिकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ और परलोकविषे कीटपतंगादिकशरीरोंकीप्राप्तिरूपदुर्गतिकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ जबी सामान्यतैं शास्त्रविहितअर्थकेअनुष्ठानकरणेहारापुरुषभीतादुर्गतिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तबीसर्वतैंउत्कृष्ट सोयोगभ्रष्ट तादुर्गतिकूंनहींप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ ईहां श्रीभगवान्नैं अर्जुनकूं हेतात यासंबोधनकरिकैजोकथनकऱ्याहै ॥ ताकायहअभिप्रायहै ॥ तनोत्यात्मानंपुत्ररूपेणेतितातः ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष आपणेआत्माकूंहीं पुत्ररूपकरिकैविस्तारकरै ताकूं तातकहेहैं ॥ इसरीतिसैं तातशब्द पिताकावाचकहै ॥ सोपिताहीं पुत्ररूपहोवैहै ॥ यातैं तापुत्रकूंभी तातकहेहैं ॥ और शिष्यभी पुत्रकेसमानहींहोवैहै ॥ यातैं तिसपुत्रकेस्थानविषे शिष्यका जोतातयहसंबोधनहै ॥ सोतिससशिष्यऊपरि कृपाकीअतिशयताकेसूचनवासतेहैइति ॥ तहां पूर्वप्रश्नविषेजोयहवचनकह्याथा ॥ सोयोगभ्रष्टपुरुष कष्टगतिकूंप्राप्तहोवैहै अज्ञानीहूआ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देवयानपितृयाणमार्गकेअसंबंधवालाहोणेतैं स्वधर्मतैंभ्रष्टपुरुषकीन्यांई ॥ सोयहकहणाभीअयुक्तहै ॥ काहेतैं सोयोगभ्रष्टपुरुष तादेवयानमार्गकेअसंबंधवालानहींहै ॥ किंतु तादेवयानमार्गकेसंबंधवालाहींहै ॥ यातैं ताअनुमानविषे सोहेतुहीं असिद्धहै अर्थात् तायोगभ्रष्टपुरुषविषे सोहेतुरहैनहीं ॥ काहेतैं पंचाग्निविद्याविषे यहवचन कह्याहै ॥ (यइत्थंविदुर्येचामीअरण्येश्रद्धांसत्यमुपासतेतेऽर्चिरभिसंभवंतीति ॥) इसश्रुतिविषे पंचाग्निकेजानणेहारेपुरुषोंकीन्यांई श्रद्धावाले तथासत्यवाले मुमुक्षुजनोंकूंभी देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोककीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ और श्रवणमननादिकोंकूंकरणेहारा जोयोगभ्रष्टहै तिसयोगभ्रष्टपुरुषकूं (श्रद्धावित्तोभूत्वा) इसपूर्वउक्तश्रुतिकरिकै साश्रद्धाभी प्राप्तहींहै ॥ तथा (शांतोदांतः) इसश्रुतिवचनकरिकै मिथ्याभाषणरूपजोवाक्इंद्रियकाव्यापारहै ताकानिरोधरूपसत्यभी तायोगभ्रष्टकूं प्राप्तहींहै ॥ काहेतैं श्रोत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकेव्यापारकाजोनिरोधहै ताहींकूं दमकहेहैं ॥ तादमकेप्राप्तहूए सो सत्यभीप्राप्तहींहै ॥ अथवा योगशास्त्रविषे योगकेअंगरूपकरिकै कथनकरेजे अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रहयहपंचयमहैं ॥ ताकेप्राप्तहूए सोसत्यभी प्राप्तहींहै ॥ और पूर्वउक्तस्थितिविषे स्थित सत्यशब्दकरिकै जोब्रह्मकाहींग्रहणकरीये ॥ तौंभीकोईहानिनहींहै ॥ काहेतैं वेदांतशास्त्रकेजेश्रवणादिकहैं तेश्रवणादिकभी तासत्यब्रह्मकाचिंतनरूपहींहैं ॥ यद्यपि जिसपुरुषकी जिसवस्तुविषे बुद्धिकोस्थितिहोवैहै सोपुरुष मरणतैंअनंतर तिसीहींवस्तुकूंप्राप्त होवैहै यहनियम शास्त्रविषेकथनकऱ्याहै ॥ यातैं सत्यब्रह्मकोचिंतनकरणेहारेपुरुषोंकूं ब्रह्मलोककोप्राप्तिकहणीसंभवैनहीं ॥ तथापि यहनियम सर्वत्रनहींसंभवैहै ॥ जिसकारणतैं पंचाग्निविद्याविषेहीं तानियमकाव्यभिचारहै ॥ यातैं जै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

से पंचाग्निविद्यावालेपुरुषोंकूं ब्रह्मलोककीप्राप्तिहोवैहै ॥ तैसे तिन सत्यब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेपुरुषोंकूंभी ब्रह्मलोक कीप्राप्ति संभवैहै ॥ और (संन्यासाद्ब्रह्मणःस्थानं) इससृतिनै संन्यासतैंभी ब्रह्मलोककीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और दिनदिनविषे भक्तिश्रद्धापूर्वक जोवेदांतशास्त्रकाविचारहै ॥ ताविचारकूं असीकृच्छ्रकेफलकीतुल्यता स्मृतिविषेकथनक रीहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ श्रद्धा सत्य ब्रह्मविचार संन्यास याच्यारोंविषे एकएककूंभी ब्रह्मलोककेप्राप्तिकीसाधन रूपताहै ॥ जबी एकएककूंभी ताब्रह्मलोककेप्राप्तिकीसाधनरूपताहै ॥ तबी तायोगभ्रष्टपुरुषविषेस्थित तिनच्यारोंकूं ब्रह्मलोककेप्राप्तिकीसाधनरूपताहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ इसीकारणतैं तैत्तिरीयशाखावालेब्राह्मण (तस्यहवाएवंवि दुषोयज्ञस्य) इत्यादिकवचनोंकरिकै तायोगीपुरुषकेचरितकूं सर्वसुकृतरूप कथनकरतेभयेहैं ॥ तथा स्मृतिविषेभी यह वार्त्ता कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (स्नातंतेनसमस्ततीर्थसलिलेसर्वापिदत्तावनिर्यज्ञानांचकृतंसहस्रमखिलादेवाश्वसंपू जिताः ॥ संसाराच्चसमुद्धृताःस्वपितरस्त्रैलोक्यपूज्योप्यसौयस्यब्रह्मविचारणेक्षणमपिस्थैर्यंमनःप्राप्नुयात् ॥) अर्थयह ॥ जि सपुरुषकामन एकक्षणमात्रभी ब्रह्मविचारविषेस्थिरताकूंप्राप्तहूआहै ॥ तिसपुरुषनैं संपूर्णतीर्थोंकेजलविषेभी स्नान कर्याहै ॥ तथा तिसपुरुषनैं सर्वपृथ्वीभी दानकरीहै ॥ तथा तिसपुरुषनैं सहस्रयज्ञभीकरेहैं ॥ तथा तिसपुरुषनैं ब्रह्मा दिकसर्वदेवताभी पूजनकरेहैं ॥ तथा तिसपुरुषनैं आपणेपितरभी संसारसमुद्रतैं उद्धारकरेहैं ॥ तथा सोपुरुष तीनलोकोंकरिकैभीपूज्यहै इति ॥ ४० ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारतैं तायोगभ्रष्टपुरुषकूं शुभकारिताक रिकै दोनोंलोकविषे नाशकेअभावहूएभी दूसरा कौनफलप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहूएश्रीभगवान् कहेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राप्यपुण्यकृताँल्लोकानुषित्वाशाश्वतीःसमाः॥ शुचीनांश्रीमतांगेहेयोगभ्रष्टोभिजायते

प्राप्य। पुण्यकृतान्। लोकान्। उषित्वा। शाश्वतीः। समाः। शुचीनां। श्रीमतां। गेहे। योगभ्रष्टः। अभिजायते॥ इतिप०

हेअर्जुन सोयोगभ्रष्टपुरुष पुण्यात्मापुरुषोंकूंप्राप्तहोणेहारे लोकोंकूं प्राप्तहोइकै तहां बहुत संवत्सरपर्यंत निवाँसकरिकै तिसतैंअनंतर पवित्र श्रीमान्पुरुषोंके गृहविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहै॥ ४१॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष योगमार्गविषे प्रवृत्तहूआहै॥ तथा जिसपुरुषनैं सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यासकरयाहै॥ तथा जोपुरुष निरंतर वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंकूंकरैहै॥ इसप्रकारतैं श्रवणमननादिकोंकूंकरताहूआ जोपुरुष मध्यविषेहीं मरणकूंप्राप्तहूआहै॥ ताकेविषेभी कोईकयोगभ्रष्टपुरुषतौं पूर्वअनुभवकरयेहूएभोगोंकीवासनाकेप्रादुर्भावतैं विषयोंकीइच्छाकरैहै॥ और कोईकयोगभ्रष्टपुरुषतौं वैराग्यभावनाकीदृढतातैं तिनविषयोंकीइच्छाकरतानहीं॥ तिनदोनोंप्रकारकेयोगभ्रष्टोंविषे प्रथमयोगभ्रष्टकावृत्तांत इसश्लोकविषेकथनकरैहैं॥ तहां उपासनासहित अश्वमेधादिकयज्ञोंकूं करणेहारेपुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्य जोब्रह्मलोकहै॥ ताब्रह्मलोककूं सोयोगभ्रष्टपुरुष अर्चिरादिमार्गद्वारा प्राप्तहोइकै ताब्रह्मलोकविषे ब्रह्माकेआयुष्परिमाण संवत्सरपर्यंत निवासकरिकै तिसतैंअनंतर पवित्र तथाविभूतिवाले महाराजचक्रवर्ति पुरुषोंकेकुलविषे भोगवासनाशेषकेसद्भावतैं अजातशत्रुजनकादिकोंकीन्यांई जन्मकूंप्राप्तहोवैहै॥ अर्थात् भोगवासनाकीप्रबलतातैं सोयोगभ्रष्टपुरुष ब्रह्मलोककेअंतविषे सर्वकर्मोंकेसंन्यासकरणेकूंअयोग्य महाराजाहोवैहै इति॥ ईहां एकहींब्रह्मलोकविषे (लोकान्) यहजोबहुवचन कथनकऱ्याहै॥ सो ताब्रह्मलोकविषेस्थितभोगस्थानोंकेभेदकूंलैके कथ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नकऱ्याहै ॥ और श्रीमान्पुरुष धनकरिकैअनेकपापकर्मोंकूंकरतेहूए अधोगतिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं सोयोगभ्रष्टपुरुषभी श्रीमान्पुरुषोंकेगृहविषे जन्मकूंलैके अधोगतिकूंहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् नें तिनश्रीमान्पुरुषोंका शुचि यहविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ अर्थात् जेपवित्रश्रीमान्होवैहैं ते पापकर्मोंविषे धनादिकोंकूं खरचकरतेनहीं ॥ किंतु शुभकार्योंविषे धनादिकोंकूंखरचकरतेहूए पूर्वस्थानकीअपेक्षाकरिकै अत्यंतमहान्स्थानकूंसंपादनकरेहैं इति ॥ ४१ ॥ ❋ ॥ ॥ अब विषयोंकीइच्छातैंरहितदूसरेयोगभ्रष्टकी मरणतैं अनंतरगतिकूं कथनकरेहैं

120

अथवायोगिनामेवकुलेभवतिधीमतां ॥ एतद्धिदुर्लभतरंलोकेजन्मयदीदृशं ॥ ४२ ॥

अथवा । योगिनां । एव । कुले । भवति । धीमतां । एतत् । हि । दुर्लभतरं । लोके । जन्म । यत् । ईदृशं । इतिपद०

हेअर्जुन अथवा सोयोगभ्रष्टपुरुष ब्रह्मविद्यावाले दरिद्रीब्राह्मणोंके कुलविषे हीं जन्मलेवैहै जिसकारणतैं इसलोकविषे इसप्रकारका जोयह जन्महै सोयहजन्म अत्यंतदुर्लभहै ॥ ४२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष श्रद्धावैराग्यादिकशुभगुणोंकीअधिकताकरिकै विषयभोगवासनातैंरहितहै ॥ सोयोगभ्रष्टपुरुष मरणतैंअनंतर तिनपुण्यकारीपुरुषोंकेलोकोंकूनहींप्राप्तहोइकैहीं ब्रह्मविद्यावाले तथायोगाभ्यासवाले दरिद्रीब्राह्मणोंकेकुलविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ श्रीमान्राजावोंकेकुलविषे सोयोगभ्रष्टपुरुष जन्मकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ हेअर्जुन ऐसेब्रह्मवेत्तादरिद्रीब्राह्मणोंकेकुलविषे जोतिसयोगभ्रष्टपुरुषकाजन्महै ॥ सोजन्म सर्वप्रमादकेकारणोंतैंरहितहोणेतैं दुर्लभतरहै ॥ तात्पर्ययह ॥ इसलोकविषे पवित्रश्रीमान्राजावोंकेगृहविषे जोयोगभ्रष्टपुरुषकाजन्महै ॥ सो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जन्मभी अनेकसुकृतोंकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ तथा मोक्षविषेपरिअवसानवालाहै ॥ यातैं सोजन्मभी दुर्लभहै ॥ और पवित्र तथाब्रह्मविद्यावाले ऐसेदरिद्रीब्राह्मणोंकेकुलविषेजोजन्महै ॥ सोजन्म प्रमादकेहेतुभूत धनादिकपदार्थोंतैंरहितहोणेतैं तादुर्लभजन्मतैंभी अत्यंतदुर्लभहै ॥ यातैं यहजन्मदुर्लभतरहै ॥ इसरीतिसैं यहदूसरायोगभ्रष्ट स्तुतिकरणेयोग्यहै ॥ तात्पर्ययह ॥ श्रीमान्पुरुषोंकेगृहविषेजन्मकूंप्राप्तभयाजो प्रथमयोगभ्रष्टपुरुषहै ॥ तिसकूंचित्तकेविक्षेपकरणेहारे अनेकप्रकारकेनिमित्तप्राप्तहैं ॥ तेसर्वनिमित्त इसदूसरेयोगभ्रष्टकूं स्वभावतैंहीं अप्राप्तहैं ॥ तेचित्तकेविक्षेपकरणेहारेनिमित्त शास्त्रविषे यहकहेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (मनोहराणांभोज्यानांयुवतीनांचवाससां ॥) वित्तस्यापिचसान्निध्याच्चलेच्चित्तंसतामपि ॥ तत्सान्निध्यंततस्त्यक्तामुमुक्षुर्दूरतोवसेत् ॥) अर्थयह ॥ मनोहर भोजनकरणेयोग्यपदार्थोंकीसमीपतातैं तथामनोहरस्त्रीयोंकीसमीपतातैं तथामनोहर वस्त्रोंकोसमीपतातैं तथाधनकीसमीपतातैं श्रेष्ठपुरुषोंकाचित्तभी चलायमानहोइजावैहै ॥ तिसकारणतैं मुमुक्षुजन तिनसर्वपदार्थोंकीसमीपताकापरित्यागकरिकै दूरनिवासकरैइति ॥ यातैं सर्वभोगवासनावोंतैंरहितहोणेतैं सर्वकर्मोंकेसंन्यासकरणेकूंयोग्य सोद्वितीययोगभ्रष्टपुरुष प्रथमयोगभ्रष्टतैंश्रेष्ठहै इति ॥४२॥*॥शंका॥हेभगवन् तायोगभ्रष्टपुरुषका शुचिश्रीमान्राजावोंकेगृहविषेजोजन्महै तथाब्रह्मविद्यावालेदरिद्रीब्राह्मणोंकेगृहविषेजोजन्महै तिनदोनोंजन्मोंकूं दुर्लभता किसहेतुतैं है ॥ ऐसो अर्जुनकोजिज्ञासाकेहूए श्रीभगवान्ताजन्मकीदुर्लभताविषे हेतुकहेहै ॥

तत्रतंबुद्धिसंयोगंलभतेपौर्वदेहिकं ॥ यततेचततोभूयःसंसिद्धौकुरुनंदन ॥४३॥

तत्र । तं । बुद्धिसंयोगं । लभते । पौर्वदेहिकं । यतते । च । ततः । भूयः । संसिद्धौ । कुरुनंदन । इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन सोयोगभ्रष्टपुरुष तिनदोनोंप्रकारकेजन्मोंविषे पूर्वदेहविषेप्रारंभकऱ्येहूए तिस ज्ञानकेश्रवणादि
कसाधनकूं प्राप्तहोवैहै तिसँतैंअनंतर मोक्षकेनिमित्त पुनः अधिक प्रयत्नकूंकरेहै ॥ ४३ ॥ इतिप०

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ब्रह्मआत्माकेऐक्यसाक्षात्कारकोप्राप्तिवासतैं तिसयोगभ्रष्टपुरुषनैं पूर्वदेहविषेप्रारंभकऱ्येजे विवे
कादिकसाधनचतुष्टय तथासर्वकर्मोंकासंन्यास तथाब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपगमन तथातागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकाश्रवण
तथामनन तथानिदिध्यासन इत्यादिकसाधनथे ॥ तिनसाधनोंकेमध्यविषे जिसजिससाधनकूं जितनैंपर्यंत अनुष्ठान
करिकै सोयोगभ्रष्टपुरुष मरणकूंप्राप्तहूआथा तिसतिससाधनकूं तितनैंपर्यंतहीं सोयोगभ्रष्टपुरुष तिनदोनोंप्रकारके
जन्मोंविषेप्राप्तहोवैहै ॥ कोईतिसजन्मविषे सोयोगभ्रष्टपुरुष पुनःआदिसैंलैकेतिनसाधनोंकाप्रारंभकरैनहीं ॥ जैसे ती
र्थकरणेकाउद्देशकरिकै आपणेग्रामसौंनिकस्याहूआपुरुष मार्गविषे किसीस्थानविषे रात्रिकूंशयनकरिकै प्रातःकालमैं
तिसीस्थानतैं आगेचलेहै ॥ कोईपुनःआपणेग्रामतैंचलेनहीं ॥ हेअर्जुन सोयोगभ्रष्टपुरुष ताजन्मकूंपाइकै केवल ति
नपूर्वलेसाधनमात्रकूंहीं प्राप्तनहींहोवैहै ॥ किंतु तिनपूर्वलेसाधनोंकोप्राप्तितैंअनंतर मोक्षकोप्राप्तिनिमित्त तिनपूर्वले
साधनोंतैंभी पुनःअधिकसाधनोंकेसंपादनकरणेकूं प्रयत्नकरेहै ॥ अर्थात् इसयोगभ्रष्टपुरुषनैं पूर्वजन्मविषे जाभूमि
का संपादनकरीहै ॥ उत्तरजन्मविषे मोक्षकोप्राप्तिपर्यंत तिसतैंअगलीभूमिकावोंकूंहींसंपादनकरेहै ॥ ईहां (हेकुरुनं
दन) यासंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ लोकविषे महान्प्रभाववाला तथा
अत्यंतशुद्ध तथाअत्यंतश्रीमान् ऐसाजोकुरुराजाहै ताकुरुराजाकेकुलविषे तुमाराजन्महूआहै ॥ यातैं यहजान्याजा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैहै ॥ तूंअर्जुनभी कोईयोगभ्रष्टहींहैं ॥ यातैं पूर्वजन्मोंकेसंस्कारोंकेवशतैं इसजन्मविषे तुमारेकूं थोडेहींप्रयत्नतैं आत्म ज्ञानकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैंगी इति ॥ यहसर्ववार्त्ता वसिष्ठभगवान्नैंभी श्रीरामचंद्रकेप्रति कथनकरीहै ॥ तहां श्रीरामचंद्रनैं यहप्रश्नकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (एकामथद्वितीयांवातृतीयांभूमिकामुत ॥ आरूढस्यमृतस्याथकीदृशीभग वन्गतिः ॥) अर्थयह ॥ हेभगवन् एकभूमिकाकूं अथवा द्वितीयभूमिकाकूं अथवा तृतीयभूमिकाकूं प्राप्तहोइकै मरण कूंप्राप्तभयाजोपुरुषहै तिसपुरुषकी तामरणतैंअनंतर किसप्रकारकीगति होवैहै इति ॥ तेसप्तभूमिका इसगीताकेत्र तीयअध्यायविषे विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ इसरामचंद्रकेप्रश्नका यहअभिप्रायहै ॥ नित्यअनित्यवस्तुकेविवेकपूर्व क तथाइसलोकपरलोककेविषयभोगोंतैंवैराग्यपूर्वक तथाशमदमादिषट्संपत्तिपूर्वक तथासर्वकर्मोंकेसंन्यासपूर्वक जा उत्कटमोक्षकीइच्छारूप मुमुक्षुताहै ताकानाम शुभइच्छाहै ॥ साशुभइच्छा प्रथमभूमिकाहै ॥ यहशुभइच्छा विवेका दिकसाधनचतुष्टयरूपहै ॥ तिसतैंअनंतर ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंकाविचारकरणा ॥ यहविचारणा नामा दूसरीभूमिकाहै ॥ यहदूसरीभूमिका श्रवणमननरूपहै ॥ तिसतैंअनंतर श्रवणमननतैंसिद्धभयाजोतत्त्वज्ञानहै तातत्त्वज्ञानविषे संशयतैंरहितहोणा ॥ यह तनुमानसानामा तीसरीभूमिकाहै ॥ यहतीसरीभूमिका निदिध्यासनरूप है ॥ यहतीनोंभूमिका तत्त्वसाक्षात्कारका साधनरूपहैं ॥ और सत्त्वापत्तिनामा चतुर्थीभूमिकातौं तत्त्वसाक्षात्काररूप हींहै ॥ और असंसक्तिनामा पंचमीभूमिका तथापदार्थाभावनीनामा षष्ठीभूमिका तथातुरीयानामा सप्तमीभूमिका यहतीनभूमिकातौं जीवन्मुक्तिकेहींअवांतरभेदहैं ॥ तहां चतुर्थीभूमिकाकूंप्राप्तहोइकै मरणकूंप्राप्तभयाजोपुरुषहै ॥ ति

123

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सपुरुषकूं जीवन्मुक्तिकेअभावहूएभी विदेहमुक्तिकोप्राप्तिविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींहै ॥ और पंचमी षष्ठी सप्त
मी यातीनभूमिकावोंकूंप्राप्तभयाजोपुरुषहै ॥ सोपुरुषतौं जीवताहूआभी मुक्तहींहै ॥ जबी सोपुरुष जीवताहूआभी
मुक्तहींहै तबी तापुरुषके विदेहमोक्षविषेक्याकहणाहै ॥ यातैं चतुर्थी पंचमी षष्ठी सप्तमी याच्यारिभूमिकावोंविषेतौंकिंचि
त्मात्रभी शंकानहींहै ॥ परंतु प्रथमा द्वितीया तृतीया यहजोतीनसाधनभूमिकाहैं ॥ तिनतीनभूमिकावोंविषेतौं इसपुरुष
नैं सर्वकर्मोकापरित्यागकऱ्याहै तथा आत्मज्ञानकोप्राप्तिभईनहीं यातैं शंकासंभवैहै ॥ इसोकारणतैं श्रीरामचंद्रनैं तिन
साधनरूप तीनभूमिकावोंविषेहीं प्रश्नकऱ्याहै इति ॥ इसप्रश्नका वसिष्ठभगवान्नैं यहउत्तरकह्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (योग
भूमिकयोत्क्रांतजीवितस्यशरीरिणः ॥ भूमिकांशानुसारेणक्षीयतेसर्वदुष्कृतं ॥ १ ॥ ततःसुरविमानेषुलोकपालपुरेषुच ॥ मे
रुपर्वतकुंजेषुरमतेरमणीसखः ॥ २ ॥ ततःसुकृतसंभारेदुष्कृतेचपुराकृते ॥ भोगक्षयात्परिक्षीणेजायंतेयोगिनोभुवि ॥ ३ ॥
शुचीनांश्रीमतांगेहेगुप्तेगुणवतांसतां ॥ जनित्वायोगमेवैतेसेवंतेयोगवासिताः ॥ ४ ॥ तत्रप्राग्भावनाभ्यस्तंयोगभूमिक्रमं
बुधाः ॥ दृष्ट्वापरिपतंत्युच्चैरुत्तरंभूमिकाक्रमं ॥५॥) अर्थयह ॥ जोपुरुष ज्ञानयोगकीभूमिकाकूंसंपादनकरिकै मरणकूंप्राप्त
भयाहै ॥ तिसपुरुषके पूर्वलेपापकर्म तायोगभूमिकाकेअनुसार नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ १ ॥ तिसमरणतैंअनंतर सोपुरुष
मेरुपर्वतकीकुंजोंविषे तथाइंद्रादिकलोकपालोंकीपुरियोंविषे देवतावोंके विमानोंविषेआरूढहोइकै अपसरावोंकेसाथि
रमणकरेहै ॥ २ ॥ तिसतैंअनंतर पूर्वसंपादनकऱ्येहूए सुकृतोंकेसमूहका तथादुष्कृतोंका भोगकरिकैक्षयहूए तेयोग
भ्रष्टपुरुष पुनःभूमिलोकविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ३ ॥ तहां इसभूमिलोकविषे जेपुरुष पवित्रहैं तथाश्रीमानहैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तथाविद्यादिकश्रेष्ठगुणोंकरिकैसंपन्नहैं ऐसेश्रेष्ठपुरुषोंकेगृहविषे तेयोगभ्रष्टपुरुष जन्मकूंप्राप्तहोइकै पूर्वले योगभूमिकावोंकेसंस्कारोंकेवशतैं पुनः तिनयोगभूमिकावोंकूंहीं संपादनकरेहैं ॥ ४ ॥ तहांपूर्वजन्मविषे अभ्यासकऱ्या हूआ जोभूमिकावोंकाक्रमहै ॥ ताक्रमकूं विचारकरिकै तेबुद्धिमानपुरुष तिसतैंउत्तरभूमिकावोंकेक्रमकूं प्रयत्नतैंसंपादनकरेहैं इति ॥ ५ ॥ ईहां पूर्ववृद्धिकूंप्राप्तहूई भोगवासनावोंकीप्रबलतातैं अल्पकालविषेअभ्यासकरीहूई वैराग्यवासनावोंकीदुर्बलताकरिकै प्राणोंकेउत्क्रमणकालविषे प्रादुर्भावकूंप्राप्तहूईहैभोगोंकीस्पृहाजिसकूं ऐसाजोसर्वकर्मोंका संन्यासीहै ॥ सोईहीं वसिष्ठभगवान्नैं कथनकऱ्याहै ॥ और जोपुरुष वैराग्यवासनावोंकीप्रबलतातैं प्रकृष्टपुण्यकर्मोंकरिकैप्राप्तपरमेश्वरकेप्रसादकरिकै प्राणोंकेउत्क्रमणकालविषे भोगोंकी स्पृहातैंरहितहै ॥ सोसंन्यासीतौं विषयभोगोंकेव्यवधानतैंविनाहीं ब्रह्मविद्यावाले दरिद्रीब्राह्मणोंके सर्वप्रमादकेकारणोंतैंरहितकुलविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेयोगभ्रष्टपुरुषकूं पूर्वसंस्कारोंकीअभिव्यक्ति विनाहींप्रयत्नतैंहोवैहै ॥ यातैं पूर्वयोगभ्रष्टपुरुषकोन्यांई इसद्वितीययोगभ्रष्टपुरुषकूं मोक्षविषे किंचित्मात्रभी शंकानहींहै ॥ सोयह द्वितीययोगभ्रष्टपुरुष वसिष्ठभगवान्नैं कथनकऱ्यानहीं ॥ किंतु परमकृपालुश्रीकृष्णभगवान्नैंहीं (अथवायोगिनामेव) इसपक्षांतरकूं अंगीकारकरिकै कथनकऱ्याहै इति ॥ ४३ ॥ ॥शंका ॥ हेभगवन् जोपुरुष ब्रह्मवेत्तादरिद्रीब्राह्मणोंकेकुलविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं मध्यविषे विषयभोगोंकाव्यवधानहै॥यातैंव्यवधानतैंरहित पूर्वलेसंस्कारोंकेउद्बोधतैं तिसपुरुषकूं पुनःभी सर्वकर्मोंकेसंन्यासपूर्वक ज्ञानकेश्रवणादिकसाधनोंकालाभहोवो ॥ परंतु जोपुरुष श्रीमान्महाराजेचक्रवर्तियोंकेकुलविषे बहुतप्रकारकेविषयभोगोंकेव्यवधानकरिकै उत्पन्नहूआहै॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिसपुरुषकूं विषयभोगोंकेवासनावोंकीप्रबलतातैं तथाधनादिकप्रमादकेकारणोंकासंभवहोणेतैं व्यवधानतैंरहित पूर्वले ज्ञानसंस्कारोंकाउद्बोध कैसेहोवैंगा ॥ तथा क्षत्रियराजाहोणेतैं सर्वकर्मोंकेसंन्यासकरणेविषेअयोग्य तिसपुरुषकूं ज्ञानकेसाधनोंकालाभ कैसेहोवैंगा किंतुनहींहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥

पूर्वाभ्यासेनतेनैवह्रियतेह्यवशोपिसः ॥ जिज्ञासुरपियोगस्यशब्दब्रह्मातिवर्त्तते ॥ ४४ ॥

पूर्वाभ्यासेन । तेन । एव । ह्रियते । हि । अवशः । अपि । सः । जिज्ञासुः । अपि । योगस्य । शब्दब्रह्म । अतिवर्त्तते ॥ इतिप०

हेअर्जुन सोयोगभ्रष्टपुरुष नहींप्रयत्नकरताहूआ भी तिस पूर्वअभ्यासनैं हीं प्रवृत्तकरीताहै जिसकारणतैं प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मका जिज्ञासुहूआ भी कर्मकांडरूपवेदकूं अतिक्रमणकरिकैस्थितहोवैहै ॥ ४४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन उत्तमलोकोंविषे भोगोंकूंभोगिकै श्रीमान्राजावोंकेगृहविषे जन्मकूंप्राप्तभयाजोयोगभ्रष्टपुरुषहै तिस योगभ्रष्टपुरुषका अत्यंतव्यवधानयुक्तजोपूर्वलाजन्महै ॥ तिसपूर्वलेजन्मविषे संपादनकरयेजेज्ञानकेसंस्कारहैं ताकाना म पूर्वअभ्यासहै ॥ तिसपूर्वलेअभ्यासनैं इसजन्मविषे मोक्षकेसाधनोंवासतै नहींप्रयत्नकरताहूआभी सोयोगभ्रष्टपुरुष आपणेवशकरीताहै ॥ अर्थात् तिनपूर्वलेज्ञानसंस्कारोंनैं अकस्मातैंहीं भोगवासनातैंनिवृत्तकरिकै सोयोगभ्रष्टपुरुष मो क्षकेसाधनोंविषेप्रवृत्तकरीताहै ॥ हेअर्जुन यद्यपि तेज्ञानवासना अल्पकालकीअभ्यासकरीहैं ॥ और तेभोगवासना बहुत कालकीअभ्यासकरीहैं ॥ तथापि तेज्ञानवासनातौं वस्तुविषयकहैं ॥ और तेभोगवासना अवस्तुविषयकहैं ॥ यातैं तेअल्प कालकीअभ्यासकरीहूईभीज्ञानवासना तिनबहुतकालकीअभ्यासकरीहूईभोगवासनावोंतैं अत्यंतप्रबलहैं ॥ तिनप्रबलज्ञा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नवासनावोंकरिकै अप्रबलभोगवासनावोंकाअभिभवसंभवैहै ॥ जैसे आकाशविषेनीलताज्ञानजन्यवासना यद्यपि बहुत कालकीअभ्यासकरीहैं ॥ तथापि आकाश रूपरहितहै इत्यादिकशास्त्रजन्य अल्पकालकीअभ्यासकरीहूईवासनावोंनैं तिन वासनावोंकाअभिभवकरीताहै ॥ यातैं वासनावोंकीप्रबलताविषे बहुत कालकेअभ्यासकीविषयता प्रयोजकनहींहै ॥ तथा वासनावोंकीदुर्बलताविषे अल्पकालकेअभ्यासकीविषयता प्रयोजकनहींहै ॥ किंतु वस्तुविषयत्व तिनवासनावोंकीप्रबलताविषे प्रयोजकहै ॥ और अवस्तुविषयत्व तिनवासनावोंकीदुर्बलताविषे प्रयोजकहै ॥ सोवस्तुविषयत्व ज्ञानवासनावोंविषेहींहै ॥ भोगवासनावोंविषेहैनहीं ॥ यातैं तेज्ञानवासनाहीं भोगवासनातैंप्रबलहैं ॥ हेअर्जुन यहवार्त्ता तूं अन्यत्र मतदेख ॥ किंतु आपणेविषेहींदेख ॥ जोतूं पूर्व केवल युद्धकरणेविषेहींप्रवृत्तहूआथा ॥ कोईज्ञानकेवासतै प्रवृत्तहूआनहींथा ॥ परंतु पूर्वली ज्ञानवासनावोंकीप्रबलतातैं अकस्मातैंहीं तूं इसरणभूमिविषे युद्धतैंउपरामहोइकै ज्ञानविषेहीं प्रवृत्तहोताभया है ॥ इसीकारणतैंहीं पूर्वहमनैं (नेहाभिक्रमनाशोस्ति) यहवचन तुमारेप्रति कथनकस्याथा ॥ तात्पर्ययह ॥ अनेकसहस्र जन्मोंकेव्यवधानवालाहूआभी सोज्ञानसंस्कार सर्वविरोधीयोंकानाशकरिकै आपणेकार्यकूं अवश्यकरिकै सिद्धकरैहै इति ॥ यद्यपि ताक्षत्रियराजाकूं सर्वकर्मोंकेसंन्यासकरणेकाअभावहै ॥ तथापि ताक्षत्रियराजाकूं ज्ञानकाअधिकारतौं प्राप्तहीं है ॥ ईहां (ह्रियते) याशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकरया ॥ जैसे बहुतरक्षकपुरुषोंकेमध्यविषेविद्यमान जो गौ अश्वादिकद्रव्यहै ॥ सोद्रव्य आप जाणेकीइच्छानहींकरताहूआभी किसी चौरपुरुषनैं तिनसर्वरक्षकपुरुषोंकाअभिभव करिकैआपणेसामर्थ्यविशेषतैंहीं हरणकरीताहै ॥ तैसे बहुत ज्ञानकेप्रतिबंधकोंविषे विद्यमानजोयोगभ्रष्टपुरुषहै ॥ सोयो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गभ्रष्टपुरुष आप ज्ञानकीइच्छानहींकरताहूआभी पूर्वजन्मकेबलवान्ज्ञानसंस्कारोंनैं आपणेसामर्थ्यविशेषतैं सर्वप्रति
बंधकोंकाअभिभवकरिकै आपणेवशकरीताहै ॥ अर्थात् पुनः ज्ञानविषेप्रवृत्तकरीताहैइति ॥ इसकारणतैंहीं संस्कारों
कीप्रबलतातैं प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकेजानणेकीइच्छाकरताहूआभी अर्थात् शुभइच्छारूपप्रथम भूमिकाविषेस्थितहूआभी
जोसंन्यासीहै ॥ सोप्रथमभूमिकावालासंन्यासीभी तिसप्रथमभूमिकाविषेहीं मरणकूंप्राप्तहोइकै मध्यविषे बहुतप्रका
रकेविषयोंकूंभोगकरिकै महाराजाचक्रवर्त्तियोंकेकुलविषे उत्पन्नहूआभी सोयोगभ्रष्टपुरुष पूर्वसंपादनकऱ्येहूएज्ञान
संस्कारोंकीप्रबलतातैं तिसीहींजन्मविषे कर्मकेप्रतिपादकवेदभागकूं अतिक्रमणकरिकै स्थितहोवैहै ॥ अर्थात् कर्मके
अधिकारकापरित्यागकरिकै ज्ञानकाअधिकारीहोवैहै ॥ इसकहणेकरिकैभी ज्ञानकर्मदोनोंकासमुच्चय खंडनहूआजा
नणा ॥ काहेतैं ज्ञानकर्मकेसमुच्चयपक्षविषे ज्ञानवान्पुरुषकूंभी कर्मकापरित्याग संभवतानहीं इति ॥ ४४ ॥ ※ ॥ ॥जबो
इसप्रकारतैं प्रथमभूमिकाविषेमरणकूंप्राप्तहूआभी तथाअनेकभोगवासनावोंकरिकैव्यवहितहूआभी तथानानाप्रकारके
प्रमादकेकारणोंवाले महाराजाकेकुलविषेजन्मकूंप्राप्तहोइकैभी सोयोगभ्रष्टपुरुष पूर्वसंपादनकऱ्येहूए ज्ञानसंस्कारोंकीप्र
बलताकरिकै कर्मकेअधिकारकूंपरित्यागकरिकै ज्ञानकाहींअधिकारीहोवैहै ॥ तबी द्वितीयभूमिकाविषे अथवा तृतीयभूमि
काविषे मरणकूंप्राप्तहोइकै उत्तमलोकोंविषे नानाप्रकारकेभोगोंकूंभोगिकै पश्चात् महाराजाकेकुलविषे जन्मकूंप्राप्त
भयाजोपुरुषहै ॥ सोयोगभ्रष्टपुरुष ताकर्मकेअधिकारकूंपरित्यागकरिकै ज्ञानकाहीं अधिकारीहोवैहै याकेविषेक्या
कहणाहै ॥ अथवा जोपुरुष तिनभूमिकावोंविषे मरणकूंप्राप्तहोइकै तिनउत्तमलोकोंविषेभोगोंकूंनहींभोगिकैहीं ब्र
ह्मविद्यावालेब्राह्मणोंकेकुलविषे जन्मकूंप्राप्तभयाहै ॥ सोनिस्पृहयोगभ्रष्टपुरुष कर्मकेअधिकारकूंपरित्यागकरिकै केवल

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ज्ञानकाहीं अधिकारीहोइकै तिसज्ञानकेश्रवणादिकसाधनोंकूंसंपादनकरिकै तिनसाधनोंकेज्ञानरूपफलकरिकै संसा
रबंधनतैंमुक्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ इसप्रकारके कैमुतिकन्यायकरिकैसिद्धअर्थकूं अब श्रीभगवान्कहेहैं ॥

प्रयत्नाद्यतमानस्तुयोगीसंशुद्धकिल्बिषः॥अनेकजन्मसंसिद्धस्ततोयातिपरांगतिं ४५॥

प्रयत्नात्। यतमानः। तु। योगी। संशुद्धकिल्बिषः। अनेकजन्मसंसिद्धः। ततः। याति। परां। गतिं ॥ इतिपद०

हेअर्जुन जोयोगीपुरुष पूर्वप्रयत्नतैं भी अधिकप्रयत्नकरैहै तथाधोयेगयेहैंपापरूपकिल्बिषजिसके तथा अनेकजन्मोंके
पुण्यकर्मोंकरिकैप्राप्तभयाहैअंत्यकाजन्मजिसकूं सोयोगीपुरुष तिनसाधनोंकेपरिपाकतैं परम मुक्तिकूं प्राप्तहोवैहै॥४५॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वजन्मविषेकऱ्याजोप्रयत्नहै तिसप्रयत्नतैंभी अधिकअधिकप्रयत्नकूंकरताहूआ जोयोगीपुरुषहै
॥ अर्थात् पूर्वजन्मविषेसंपादनकऱ्येहूए ज्ञानसंस्काररूपयोगकरिकैयुक्तजोपुरुषहै ॥ तथा तिसीयोगकेप्रयत्नरूपपुण्य
करिकै जोपुरुष संशुद्धकिल्बिषहै ॥ अर्थात् तिसपुण्यरूपजलकरिकै धोयेगएहैंज्ञानकेप्रतिबंधकपापरूपमलजिसके
॥ इसीकारणतैंहीं ज्ञानसंस्कारोंकीवृद्धितैं तथापुण्यकीवृद्धितैं जोपुरुष अनेकजन्मोंकरिकैसंसिद्धहूआहै ॥ अर्थात् ति
नपूर्वलेअनेकजन्मोंके ज्ञानसंस्कारोंकेप्रभावतैं तथातिनपुण्यकर्मोंकेप्रभावतैं प्राप्तभयाहै अंत्यजन्मजिसकूं ॥ ऐसा
सोयोगभ्रष्टपुरुष तिनश्रवणादिकसाधनोंकेपरिपाकतैं ब्रह्मात्मऐक्यसाक्षात्कारकूंप्राप्तहोइकै पुनरावृत्तितैंरहित पर
ममुक्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींहै इति ॥ ४५ ॥ अब अर्जुनकेप्रति श्रद्धाअति
शयकेउत्पादनपूर्वक तिसपूर्वउक्तयोगकेविधानकरणेवासतै श्रीभगवान् तापूर्वउक्तयोगकीस्तुतिकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

130

तपस्विभ्योधिकोयोगीज्ञानिभ्योपिमतोधिकः ॥ क
र्मिभ्यश्चाधिकोयोगीतस्माद्योगीभवार्जुन ॥४६॥

तपस्विभ्यः।अधिकः।योगी।ज्ञानिभ्यः।अपि।मतः।अधिकः।कर्मिभ्यः।च।अधिकः।योगी।तस्मात्।योगी।भव।अर्जुन ॥इ०प०

हेअर्जुन सोतत्त्ववेत्तायोगी तपस्वीयोंतैंभी हमारेकूं अधिक संमतहै तथापरोक्षज्ञानीयोंतैं भी अधिक संमतहै तथा सोयोगी कर्मीपुरुषोंतैभी अधिक संमतहै तिसकारणतैं तूंअर्जुन ऐसायोगी होउं ॥ ४६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥टीका॥हेअर्जुन तत्त्वज्ञानकीउत्पत्तितैंअनंतर जीवन्मुक्तिकेसुखवासतै मनोनाशवासनाक्षयकूंकरणेहाराजोयोगीपुरुष है ॥ सोयोगीपुरुष कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपकूंकरणेहारे तपस्वीपुरुषोंतैं भी हमारेकूं अधिकसंमतहै ॥ अर्थात् तिसयोगीपुरुषकूं मैं तिनतपस्वीयोंतैंभी उत्कृष्टमानताहूं ॥ तहांश्रुति॥(विद्ययातदारोहंति यत्रकामाः परागता नतत्रदक्षिणायंति ना विद्वांसस्तपस्विनः)॥अर्थयह॥यहतत्त्ववेत्तापुरुष मैं ब्रह्मरूपहूं याप्रकारकीब्रह्मविद्याकरिकै तिसपदकूंप्राप्तहोवैहैं॥जिसपदविषे सर्वकाम परिअवसानकूंप्राप्तहूएहैं ॥ तथा जिसपदविषे यज्ञादिककर्मोंकूंकरणेहारेपुरुषभीप्राप्तहोतेनहीं ॥ तथा अविद्वान्तपस्वीभी प्राप्तहोतेनहीं इति॥इसकारणतैंहीं दक्षिणासहित ज्योतिष्टोमादिककर्मोंकूंकरणेहारेकर्मीपुरुषोंतैं भी सोयोगीपुरुष हमारेकूं अधिकसंमतहै ॥ काहेतैं तेकर्मीपुरुष तथातपस्वीपुरुष तत्त्वज्ञानतैंरहितहोणेतैं मोक्षकेयोग्यहैंनहीं ॥ और आत्माकेपरोक्षज्ञानवालेजेपुरुषहैं ॥ तिनपरोक्षज्ञानीयोंतैंभी सोअपरोक्षज्ञानवाला योगीपुरुष हमारेकूं अधिकसंमत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है॥इसप्रकार आत्माकेअपरोक्षज्ञानवालेजेपुरुषहैं॥जेअपरोक्षज्ञानवालेपुरुष मनोनाशवासनाक्षयकेअभावतैंजीवन्मुक्तिके सुखकूंप्राप्तहूएनहीं ऐसेजीवन्मुक्तितैंरहित अपरोक्षज्ञानीयोंतैं मनोनाशवासनाक्षयवाला जीवन्मुक्तयोगीपुरुषहमारेकूं अधिकसंमतहै॥ जिसकारणतैं सोतत्त्ववेत्ता जीवन्मुक्तयोगीपुरुष हमारेकूं सर्वतैंअधिकसंमतहै॥ तिसकारणतैं तूंयोगभ्रष्ट अर्जुन इसकालविषे अधिकप्रयत्नकेबलतैंतत्त्वज्ञान मनोनाश वासनाक्षय यातीनोंकूंसंपादनकरिकैजीवन्मुक्तयोगीहोउ॥ सोजीवन्मुक्तयोगी (सयोगीपरमोमतः) इसवचनकरिकै पूर्वहमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै॥ ईहां (हेअर्जुन) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनविषे शुद्धताबोधनकरी॥ ताकरिकै तिसअर्जुनविषे तायोगकेसंपादनकरणेकोयोग्यता सूचन करी इति॥ ४६॥* ॥ अब सर्वयोगीयोंतैंश्रेष्ठयोगीका कथनकरताहूआ श्रीभगवान् इसषष्ठेअध्यायका उपसंहारकरेहै॥

योगिनामपिसर्वेषांमद्गतेनांतरात्मना॥ श्रद्धावान्भजतेयोमांसमेयुक्ततमोमतः॥ ४७॥

इतिश्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेआत्मसंयमयोगोनामषष्ठोऽध्यायःसमाप्तः॥ ६॥

योगिनां। अपि। सर्वेषां। मद्गतेन। अंतरात्मना। श्रद्धावान्। भजते। यः। मां। सः। मे। युक्ततमः। मतः॥ इतिप०॥

हेअर्जुन जोपुरुष श्रद्धावान्हूआ मेरेविषेस्थित अंतःकरणकरिकै मैंपरमेश्वरकूं भजेहै सोपुरुष सर्व योगीयोंकेविषेभी अत्यंतश्रेष्ठ मैंपरमेश्वरकूं संमतहै॥ ४७॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका॥ हेअर्जुन मैंभगवान्वासुदेवविषे पुण्यकर्मोंकेपरिपाकविशेषतैं उत्पन्नहूईप्रीतिकेवशतैं प्राप्तभयाजोअंतःकरणहै॥ ताअंतःकरणकरिकै जोपुरुष पूर्वलेसंस्कारोंकेवशतैं तथामहात्माजनोंकेसत्संगतैं मेरेभजनविषेहीं अत्यं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तश्रद्धावान्हूआ मैंपरमेश्वरकूंभजेहै ॥ अर्थात् ईश्वरोंकाभीईश्वररूप मैंनारायणकूं सगुणकूं अथवानिर्गुणकूं यह कृष्णभगवान् मनुष्यहै तथादूसरेईश्वरोंकेसमानहै याप्रकारकेभ्रमकूंपरित्यागकरिकै जोपुरुष निरंतर चिंतनकरैहै ॥ सोपुरुष मैंपरमेश्वरकूं वसुरुद्रआदित्यादिकअन्यदेवतावोंकेभजनकरणेहारे सर्वयोगीयोंतैं युक्ततमरूपकरिकै अभिमत है ॥ अर्थात् संपूर्णसमाहितचित्तवालेयुक्तपुरुषोंतैं तिसपुरुषकूं मैंपरमेश्वर अत्यंतश्रेष्ठकरिकैमानताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ यो गाभ्यासकेक्लेशकेसमानहूएभी तथाभजनकेआयासकेसमानहूएभी मेरीभक्तितैंरहितयोगीपुरुषोंतैं मेराभक्त अत्यंत श्रेष्ठहै॥ और तूंअर्जुनभी हमारापरमभक्तहैं ॥ यातैं तूंअर्जुन विनाहींआयासतैं युक्ततम होणेकूंसमर्थहैं इति ॥ तहां इसष ष्ठेअध्यायविषे श्रीभगवान्नैं इतनाअर्थ निरूपणकऱ्या ॥ तहांप्रथम चित्तशुद्धिकेहेतुभूत कर्मयोगकीमर्यादा कथनकरी ॥ तिसतैंअनंतर कऱ्याहूआहैसर्वकर्मोंकासंन्यासजिननैं ऐसेपुरुषकूंकरणेयोग्य अंगोंसहितयोग कथनकऱ्या ॥ तिसतैंअनं तर अर्जुनकेआक्षेपकेनिराकरणपूर्वक मनकेनिग्रहकाउपाय कथनकऱ्या ॥ तिसतैंअनंतर योगभ्रष्टपुरुषके पुरुषार्थकेशू न्यताकीशंकाकूंशिथिलकऱ्या ॥ इतनैंसर्वअर्थकूंकथनकरिकै श्रीभगवान्नैं प्रथमषट्करूपकर्मकांडकूं तथात्वंपदार्थकेनि रूपणकूं समाप्तकऱ्या ॥ इसतैंअनंतर (श्रद्धावान्भजतेयोमां) इसवचनकरिकै सूचनकऱ्याजोभक्तियोगहै तथा ताभ क्तियोगकाविषय जोतत्पदार्थरूपभगवान्वासुदेवहै ॥ तिनदोनोंकेनिरूपणकरणेवासतैं अगलेषट्अध्यायरूपउपासना कांड आरंभकऱ्याजावैंगा इति॥ ४७॥ * ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपाद शिष्येणस्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां षष्ठोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ६ ॥ प्रथमंचकांडंसमाप्तं ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ ॥ ७ ॥ ॥

132

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

133

...war Collection. Digitized by S3 Foundat...

134

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥इतिश्रीभगवद्गीताभाषाटीकायांप्रथमषट्कंसमाप्तम् १॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ अथ श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायांद्वितीयषट्कं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ सप्त माऽध्यायप्रारंभः ॥ श्लोक ॥ यद्भक्तिंनविनामुक्तिर्यःसेव्यःसर्वयोगिनां ॥ तंवंदेपरमानंदघनंश्रीनंदनंदनं ॥ अर्थय ह ॥ भक्तजनोंकेउद्धारकरणेवासतै श्रीनंदकेपुत्रभावकूंप्राप्तभयाजोश्रीकृष्णभगवान्है ॥ जिसकृष्णभगवान्कीभक्तिंतै विना इनअधिकारीजनोंकूं मुक्तिकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तथा जोकृष्णभगवान् सर्वयोगीपुरुषोंका सेव्यहै ॥ अर्थात् स र्वयोगीपुरुष जिसका सेवनकरेहैं ॥ तथा जोकृष्णभगवान् परमानंदघनहै ॥ तिसकृष्णभगवान्कूं मैं वारंवार वंदन करूंहूं इति ॥ तहां सर्वकर्मोकासंन्यासरूपसाधनहैप्रधानजिसविषे ऐसाजोप्रथमषट्कहै ॥ ताप्रथमषट्ककरिकै श्रीभगवाननैं योगसहित त्वंपदकालक्ष्यरूप ज्ञेयवस्तु प्रतिपादनकऱ्या ॥ अब ध्येयब्रह्मकाप्रतिपादनहैप्रधानजि सविषे ऐसाजोयहमध्यकाद्वितीयषट्कहै ताद्वितीयषट्ककरिकै श्रीभगवान् तत्पदार्थरूपपरमात्माकूं प्रतिपादन करैंगा ॥ ताद्वितीयषट्कविषेभी (योगिनामपिसर्वेषांमद्गतेनांतरात्मना ॥ श्रद्धावान्भजतेयोमांसमेयुक्ततमोमतः) इ सश्लोककरिकै पूर्व कथनकऱ्याजोभगवद्भजनहै ताभगवद्भजनकेव्याख्यानकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं यहसप्तमअध्या यप्रारंभकरीताहै ॥ तहां किसप्रकारका भगवत्कास्वरूप भजनकरणेकूंयोग्यहै ॥ तथातिसभगवत्केस्वरूपविषे यहमन किसप्रकारतैं स्थितहोवै ॥ यहदोनोंप्रश्न अर्जुनकूं करणेयोग्यथे ॥ परंतु यहदोनोंप्रश्न अर्जुननैं श्रीभगवा न्केप्रति कऱ्येनहीं ॥ तौंभी परमकृपालुश्रीभगवान् विनाहींपूछेतैं अर्जुनकेप्रति तिनदोनोंप्रश्नोंकाउत्तर कथनकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

142

श्रीभगवानुवाच ॥ मय्यासक्तमनाःपार्थयोगंयुंजन्मदा श्रयः ॥ असंशयंसमग्रंमांयथाज्ञास्यसितच्छृणु ॥ १ ॥

मैंयि। आसक्तमनाः। पार्थ। योगं। युंजन्। मदाश्रयः। असंशयं। समग्रं। मां। यथा। ज्ञास्यसि। तत्। शृणु ॥ इतिपद०

हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषे आसक्तहैमनजिसका तथामैंएकपरमेश्वरकेशरण ऐसातूं पूर्वउक्तयोगकूं करताहूआ संशयतैंरहित सर्वविभूतिसंपन्न मैंपरमेश्वरकूं जिसप्रकारतैं जानैंगा तिसप्रकारकूं तूं श्रवणकर ॥ १ ॥ इतिप०

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वजगत्को उत्पत्तिस्थितिलयतैंआदिलैके नानाप्रकारकीविभूतियोंकरिकैयुक्त जोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरविषे आसक्तहैमनजिसका ऐसाजोतूंअर्जुनहैं ॥ इसीकारणतैंहीं मैंएकपरमेश्वरकेशरणकूंप्राप्तभया जोतूंहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे राजाकाभृत्य ताराजाकेआश्रिततौंहोवैहै परंतु ताराजाविषे आसक्तमनवालाहोवैनहीं ॥ किंतु आपणे स्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थोंविषेहीं आसक्तमनवालाहोवैहै ॥ इसप्रकारका तूं अर्जुनहैनहीं ॥ किंतु तूंअर्जुन तौं मैंएकपरमेश्वरकेहीं आश्रितहैं तथामैंएकपरमेश्वरविषेहीं आसक्तमनवालाहैं ॥ ऐसामुमुक्षु तूंअर्जुन अथवा तुमारेसरीखादूसराभीकोईमुमुक्षु षष्ठेअध्यायउक्तरीतिसैं मनकेनिरोधरूपयोगकूंकरताहूआ जिसप्रकार कोईभीसंशयरहै नहीं इसप्रकार बलशक्तिऐश्वर्यादिकसर्वविभूतिसंपन्न मैंपरमेश्वरकूं जिसप्रकारतैं जानैंगा ॥ तिसप्रकारकूं मैंभगवान् तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ तूं सावधानहोइकैश्रवणकर इति ॥ १ ॥ ॥ तहां इसपूर्वश्लोकाविषे (मांज्ञास्यसि)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यहवचन भगवान्नैं कथनकऱ्या ॥ तावचनतैं यहजान्याजावैहै ॥ सोभगवत्विषयकज्ञान परोक्षहींहोवैंगा ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकूं निवृत्तकरताहूआ श्रीभगवान् श्रोतापुरुषकूं ताज्ञानकेअभिमुखकरणेवासतै ताज्ञानकीस्तुति करेहै॥

ज्ञानंतेहंसविज्ञानमिदंवक्ष्याम्यशेषतः॥यज्ज्ञात्वानेहभूयोन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते॥२॥

ज्ञानं१। ते२। अहं३। सविज्ञानं४। इदं५। वक्ष्यामि६अशेषतः७। यत्८। ज्ञात्वा९। न१०। इह११। भूयः१२। अन्यत्१३। ज्ञातव्यं१४। अवशिष्यते१५॥इतिप

हेअर्जुन मैंपरमेश्वर तैंअर्जुनकेप्रति इस विज्ञानसहित ज्ञानकूं साधनफलादिकोंसहित कथनकरताहूं जिसकैं तन्यरूपज्ञानकूं जानिकै इहां पुनःकोईअन्यपदार्थ जानणेयोग्य नहीं बाकीरहेहै ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मेरेअद्वितीयपरिपूर्णस्वरूपकूंविषयकरणेहारा जोयहज्ञानहै ॥ सोयहज्ञान स्वभावतैंअपरोक्षहू आभी असंभावनाविपरीतभावनारूपप्रतिबंधकेवशतैं आपणेफलकूंनहींउत्पन्नकरताहूआ परोक्ष कह्याजावैहै ॥ और श्रवणमननादिरूपविचारकेपरिपाककरिकै ताअसंभावनादिरूपप्रतिबंधकेनिवृत्तहूएतैंअनंतर तिसीवाक्यप्रमाण करिकैउत्पन्नहूआ जोज्ञान प्रतिबंधककेअभावतैं आपणेफलकूंउत्पन्नकरताहूआ अपरोक्ष कह्याजावैहै ॥ इसरीति सैं श्रवणमननरूपविचारकरिकैजन्यहोणेतैं सोईहींज्ञान विज्ञान कह्याजावैहै ॥ इसप्रकारकेविज्ञानसहित तथामहा वाक्यतैंजन्य इसअपरोक्षज्ञानकूं मैंयथार्थवक्ता कृष्णभगवान् तुमारेतांई अशेषतैं कथनकरताहूं ॥ अर्थात् ताअप रोक्षज्ञानकेजितनैंकीसाधन तथाफलहै तिनसाधनफलादिकोंसहित तिसज्ञानकूं मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ जि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सनित्यचैतन्यस्वरूपज्ञानकूं जानिकै अर्थात् अहंब्रह्मास्मि यावेदांतवाक्यजन्य मनकोवृत्तिकाविषयकरिकै इसव्यव
हारभूमिविषे पुनःदूसराकोईवस्तु तुमारेकूं जानणेयोग्यरहैंगानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (येनाश्रुतंश्रुतंभवत्यमतंमतमविज्ञातं
विज्ञातमिति ॥ कस्मिन्नुभगवोविज्ञातेसर्वमिदंविज्ञातंभवति ॥) इत्यादिकश्रुतियोंविषे एकपरमात्मादेवकेज्ञानकरिकैहीं
सर्वजगतकाज्ञानहोणा कथनकरयाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अज्ञानतैं रज्जुविषेप्रतीतभयेजे सर्प दंड माला जल
धारा आदिकहैं ॥ तिनकल्पितसर्पादिकोंका तारज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानहूएतैंअनंतर बाधहोइजावैहै ॥ तिसतैंअनं
तर एकरज्जुहीं परिशेषतैंरहेहै ॥ तैसे अधिष्ठानसत्ब्रह्मविषेकल्पितजोयहसर्वप्रपंचहै ॥ ताप्रपंचकाभी तिसअधिष्ठान
ब्रह्मकेज्ञानतैंअनंतर बाधहोइजावैहै ॥ तिसतैं अनंतर सोअधिष्ठानब्रह्महीं परिशेषतैंरहेहै ॥ ऐसेअधिष्ठानब्रह्मकेसा
क्षात्कारकरिकैहीं तूंअर्जुन कृतार्थहोवैंगा इति ॥ २ ॥ ※ ॥ हेअर्जुन ऐसेमहान्फलकीप्राप्तिकरणेहारा यहह
मारेस्वरूपकाज्ञान मैंपरमेश्वरकेअनुग्रहतैंविना अत्यंतदुर्लभहै इसप्रकार ताज्ञानकीदुर्लभताकूंकथनकरिकै श्रीभग
वान् ताज्ञानकीस्तुतिकरेहै ॥ अधिकारीजनोंकूं ताज्ञानविषे प्रवृत्तकरणेवासतै ॥

मनुष्याणांसहस्रेषुकश्चिद्यतितिसिद्धये॥यततामपिसिद्धानांकश्चिन्मांवेत्तितत्त्वतः॥३॥

मनुष्याणां। सहस्रेषु। कश्चित्। यतति। सिद्धये। यततां। अपि। सिद्धानां। कश्चित्। मां। वेत्ति। तत्त्वतः॥ इतिपद०॥

हेअर्जुन मनुष्योंके अनेकसहस्रोंविषे कोईएकमनुष्यहीं ज्ञानकीउत्पत्तिवासतै प्रयत्नकरेहै और तिनप्रयत्नकरणेहा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रे अँधिकारीमनुष्योंकेमध्यविषे भी कोईएकमनुष्यहीं मैंपरमेश्वरकूं वास्तवस्वरूपतैं जानेहै ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ हेअर्जुन शास्त्रनैंप्रतिपादन करयाजो ज्ञानहै तथाकर्महै ॥ ताज्ञानकर्मकेअनुष्ठानकरणेकूंयोग्य जितनैंकी ब्राह्मणादिक अधिकारीमनुष्यहैं तिनअनेकसहस्त्रमनुष्योंविषे कोईएकमनुष्यहीं पूर्वले अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंके वशतैं नित्यअनित्यवस्तुकेविवेकवालाहूआ अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञानकीउत्पात्तिवासतै प्रयत्नकरेहै ॥ इसप्रकार आत्मज्ञानकीप्रात्तिवासतै प्रयत्नकरणेहारेभी जेसाधकमनुष्यहैं ॥ तिनसाधकमनुष्योंकेअनेकसहस्त्रोंविषेभी कोईएकसाधकमनुष्यहीं श्रवणमननिदिध्यासनकेपरिपाकतैंअनंतर मैंपरमेश्वरकूंसाक्षात्कारकरेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् विष्णुकूं तथारामकूं तथाआपकृष्णकूं देवता असुर मनुष्य आदिकबहुतप्राणी जानतेहैं ॥ यातैं अनेकसहस्त्रमनुष्योंविषे कोईएकमनुष्यहीं हमारेकूंजानताहै यहआपकाकहणा संभवतानहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (तत्त्वतः इति) हेअर्जुन यद्यपि शंख चक्र गदा पद्म याच्यारोंकूंधारणकरणेहारे इसहमारे स्थूलचतुर्भुज स्वरूपकूं तेदेवतामनुष्यादिकबहुतलोकजानतेहैं ॥ तथापि यहहमारा वास्तवस्वरूपहैनहीं ॥ किंतु मायाकृतहै ॥ यातैं तेसर्वपुरुष हमारेवास्तवस्वरूपकूंजानतेनहीं ॥ और जेपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणेप्रत्यक्आत्मासैंअभिन्नरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंजानतेहैं ॥ तेपुरुषहीं हमारेवास्तवस्वरूपकूंजानेहैं ॥ इसप्रकार वास्तवस्वरूपतैंहमारेकूंजानणेहारा पुरुष अनेकसहस्त्रमनुष्योंविषे कोईएकहींनिकसैंगा ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ प्रथमतौं अनेकमनुष्योंकेमध्यविषे आत्मज्ञानकेसाधनोंकूं अनुष्ठानकरणेहारापुरुषहीं परमदुर्लभहै ॥ और तिन ज्ञा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नसाधनोंकेअनुष्ठानकरणेहारेपुरुषोंकेमध्यविषेभी ज्ञानरूपफलकूंप्राप्तहूआपुरुष परमदुर्लभहै ॥ ऐसेब्रह्मज्ञानकामाहाम्य कौंन वर्णनकरिसकैंगा इति ॥ ३ ॥ ※ ॥ इसप्रकार आत्मज्ञानकोस्तुतिकरिकै श्रोतापुरुषकूं ताज्ञानके अभिमुखकरिकै अब सर्वात्मत्वरूपहेतुकरिकै आत्माकेपरिपूर्णत्वकूंकथनकरणेवासतैं प्रथम अपरप्रकृतिकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (भूमिरापःइति) अथवा (यज्ज्ञात्वानेहभूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते) इसवचनकरिकै श्रीभगवान् एकब्रह्मकेज्ञानतैं सर्वप्रपंचकेज्ञानकीप्रतिज्ञा करताभयाहै ॥ साप्रतिज्ञा तबी सिद्धहोवै ॥ जबी ब्रह्मकूं सर्वजगत्काकारण अंगीकारकरीये ॥ काहेतैं लोकविषे उपादानकारणकेज्ञानकरिकैहीं ताकेसर्वकार्योंकाज्ञानहोवैहै ॥ जैसे एकमृत्तिकारूपकारणकेज्ञानहूएहीं तामृत्तिकाकेकार्यरूप घटशरावादिकसर्वकाज्ञानहोवैहै ॥ कारणकेज्ञानतैंविनाताकेसर्वकार्यकाज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं तापूर्वलीप्रतिज्ञाकेउपपादनकरणेवासतै श्रीभगवान् ताज्ञानस्वरूपब्रह्मतैं जडअजडरूपसर्वप्रपंचकोउत्पत्तिकूं कथनकरेहै ॥ (भूमिरापः) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै ॥

146

भूमिरापोनलोवायुःखंमनोबुद्धिरेवच ॥ अहंकारइतीयंमेभिन्नाप्रकृतिरष्टधा ॥४॥

भूमिः । आपः । अनलः । वायुः । खं । मनः । बुद्धिः । एव । च । अहंकारः । इति । इयं । मे । भिन्ना । प्रकृतिः । अष्टधा । इ०प०

हेअर्जुन पृथिवी जल तेज वायु आकाश मन बुद्धि तथा अहंकार इसप्रकारतैं मैंपरमेश्वरकी यह प्रकृति अष्टप्रकार भेदवालीहै ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ तहां सांख्यशास्त्रवाले पंचतन्मात्रा अहंकार महत्तत्व अव्यक्त याअष्टोंकूं प्रकृति कहेहैं ॥ और पंचमहाभूत पंचकर्मइंद्रिय पंचज्ञानइंद्रिय एकमन इनषोडशोंकूं विकार कहेहैं ॥ तेअष्टप्रकृति तथाषोडशविकार दोनोंमिलिकै चौवीसतत्त्व कहेजावैहैं ॥ तहां भूमिआदिकपंचशब्दोंकरिकै लक्षणावृत्तितैं पृथिवीआदिकपंचमहाभूतोंकीसूक्षमअवस्थारूप गंधादिकपंचतन्मात्रावोंकाग्रहणकरणा ॥ अर्थात् भूमि याशब्दकरिकैतौं गंधतन्मात्राका ग्रहणकरणा ॥ और आपः याशब्दकरिकै रसतन्मात्राका ग्रहणकरणा ॥ और अनल याशब्दकरिकै रूपतन्मात्राका ग्रहणकरणा ॥ और वायु याशब्दकरिकै स्पर्शतन्मात्राका ग्रहणकरणा ॥ और खं याशब्दकरिकै शब्दतन्मात्राका ग्रहणकरणा ॥ और बुद्धि अहंकार यहदोनोंशब्दतौं आपणेप्रसिद्धअर्थकूंहीं बोधनकरेहैं ॥ और मन याशब्दकरिकै परिशेषतैंरहेहूएअव्यक्तकाग्रहणकरणा ॥ काहेतैं तामनशब्दका प्रकृतिशब्दकेसाथि सामानाधिकरण्यहै ॥ यातैं तामनशब्दकेस्वार्थकापरित्यागकरिकै अव्यक्तविषेलक्षणाकरणी उचितहै ॥ अथवा लक्षणावृत्तितैं तामनशब्दकरिकै तामनकेकारणरूप अहंकारका ग्रहणकरणा ॥ काहेतैं पूर्व गंधादिकपंचतन्मात्रावोंका कथनकरयाहै ॥ तिनतन्मात्रावोंकीअहंकारतैंहींउत्पत्तिहोवैहै ॥ यातैं तन्मात्रावोंकीसमीपतातैं ईहां मनशब्दकरिकै अहंकारकाहींग्रहणकरणाउचितहै ॥ और बुद्धिशब्दतौं ताअहंकारकेकारणरूप महत्तत्त्वकूं शक्तिरूपमुख्यवृत्तिकरिकैहीं कथनकरेहै ॥ और अहंकारशब्दकीलक्षणावृत्तिकरिकै सर्ववासनावोंयुक्तअविद्यारूपअव्यक्तका ग्रहणकरणा ॥ काहेतैं प्रवर्त्तकत्वादिकअसाधारणधर्म अहंकारअव्यक्तदोनोंविषे तुल्यहींरहेहैं ॥ यातैं अहंकारशब्दकरिकै ताअव्यक्तकाग्रहणकरणा उचितहै ॥ इसप्रकार साक्षीआत्मा

147

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करिकैभास्यमानहोणेतैं अपरोक्षरूप तथापरमेश्वरकीशक्तिरूप तथाअनिर्वचनीयस्वभाववाली तथात्रिगुणात्मक ऐसीजामायारूपप्रकृतिहै ॥ सामायारूपप्रकृति पंचतन्मात्रा अहंकार महत्तत्व अव्यक्त याअष्टप्रकारोंकरिकै भेदकूंप्राप्तहूई है ॥ ताअष्टप्रकारकीप्रकृतिविषेहीं यहसंपूर्णजडप्रपंच अंतर्भूतहै ॥ यहव्याख्यानसांख्यशास्त्रकीरीतिसैंकथनकऱ्या ॥ और वेदांतशास्त्रविषेतौं भूमिः आपः अनलः वायुः खं यापंचशब्दोंकरिकै अपंचीकृत पृथिवीआदिक पंचभूतोंकाहीं ग्रहणकरणा ॥ और बुद्धिशब्दकरिकै सृष्टिकेआदिकालविषे परमेश्वरकीमायाकापरिणामरूपईक्षणका ग्रहणकरणा ॥ और अहंकारशब्दकरिकै तामायाकापरिणामरूपसंकल्पका ग्रहणकरणा इति ॥ ४ ॥ * ॥तहां पूर्वश्लोकविषेकथनकरीजा क्षेत्ररूप अष्टप्रकारकीप्रकृतिहै ॥ ताप्रकृतिविषे अपरपणेकूंकथनकरताहूआ श्रीभगवान् अब क्षेत्ररूप पराप्रकृतिकूंकथनकरेहै

अपरेयमितस्त्वन्यांप्रकृतिंविद्धिमेपरां ॥ जीवभूतांमहाबाहोययेदंधार्यतेजगत् ॥ ५ ॥

अपरा१ । इयं२ । इतः३ । तुं४ । अन्यां५ । प्रकृतिं६ । विद्धि७ । मे८ । परां९ । जीवभूतां१० । महाबाहो११ । ययां१२ । इदं१३ । धार्यते१४ । जगत्१५ ॥ इतिपद०

हेअर्जुन यह१ पूर्वउक्तअष्टप्रकारकीप्रकृति अपरा२कहीजावैहै अब इसअपराप्रकृतितैं विलक्षण मैंपरमेश्वरकी जीवरूप परां९ प्रकृतिकूं तूं जान जिसपराप्रकृतिनैं यह सर्वजगत् धारणकरीताहै ॥ ५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वश्लोकविषेकथनकरीजा अचेतनवर्गरूप क्षेत्रनामा अष्टप्रकारकीप्रकृतिहै ॥ सायहप्रकृति अपराजानणी ॥ अर्थात् साप्रकृति जडहोणेतैं तथापरकेअर्थहोणेतैं तथासंसारबंधरूपहोणेतैं निकृष्टहींहै ॥ और

148

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ताअचेतनवर्गरूप तथा क्षेत्ररूप अपराप्रकृतितैं विलक्षण तथामैंतत्पदार्थरूपपरमेश्वरकाआत्मारूप जा चेतनजीवात्मक क्षेत्रज्ञरूपप्रकृतिहै ॥ ताक्षेत्रज्ञरूपविशुद्धप्रकृतिकूं तूं पराप्रकृति जान ॥ अर्थात् सर्वतैंउत्कृष्टजान ॥ ईहां (इतस्तु)यावचन विषेस्थितजो तु यहशब्दहै॥सोतुशब्द पूर्वउक्तक्षेत्ररूपजडप्रकृतितैंइसक्षेत्रज्ञरूपचेतनप्रकृतिविषेअत्यंतविलक्षणताकेबोधनकरणेवासतैंहै ॥ अर्थात् इनक्षेत्रक्षेत्रज्ञरूपदोनोंप्रकृतियोंकी किसीअंशविषेभीएकताहोइसकैनहीं ॥ हेअर्जुनसर्वसंघातोंविषे प्रविष्टहूईजा क्षेत्रज्ञनामा जीवरूपपराप्रकृतिहै ॥ ताप्रकृतिनैंहीं यहदेहइंद्रियादिरूपजडजगत् धारणकऱ्या है ॥ तहांश्रुति ॥ (अनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्यनामरूपेव्याकरवाणि ॥) अर्थयह ॥ मैंपरमात्मादेवइसआपणेजीवरूपतैं प्रवेशकरिकै नामरूपकूंप्रगटकरौं इति ॥ ऐसी क्षेत्रज्ञनामा जीवरूपपराप्रकृतिनैंहीं यहसर्वजगत् धारणकऱ्या है ॥ ताचेतनजीवतैंरहित कोईभीवस्तु किसीवस्तुकेधारणकरणेविषे समर्थहोवैनहीं इति ॥ ५ ॥ ❋ ॥ तहां पूर्वदोइलोकोंकरिकै अपराप्रकृति तथापराप्रकृति यहदोप्रकारकीप्रकृति कथनकरी ॥ अब तादोप्रकारकीप्रकृतिविषे कार्यलिंगक अनुमानप्रमाणकूंदिखावताहूआ श्रीभगवान् आपणेकूं ताप्रकृतिद्वारा सर्वजगत्केउत्पत्तिआदिकोंकीकारणता कथनकरेहै

एतद्योनीनिभूतानिसर्वाणीत्युपधारय॥अहंकृत्स्नस्यजगतःप्रभवःप्रलयस्तथा॥६॥

एतद्योनीनि । भूतानि । सर्वाणि । इति । उपधारय । अहं । कृत्स्नस्य । जगतः । प्रभवः । प्रलयः । तथा ॥ इतिपद० ॥

हेअर्जुन यहसर्व भूत इनदोनोंप्रकृतियोंकेकार्यरूपहैं इसप्रकार तूं निश्चयकर यातैं मैंपरमे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्वरहीं संपूर्ण जगतके उत्पत्तिकाकारणहूं तथा प्रलयकाकारणहूं ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वअपरत्वरूपकरिकैकथनकरीजा क्षेत्रनामाप्रकृतिहै ॥ तथा परत्वरूपकरिकैकथनकरीजा क्षेत्रज्ञनामाप्रकृतिहै ॥ तेदोनोंप्रकृतिहैंकारणजिनोंका तिनोंकानाम एतद्योनिहै ॥ ऐसाएतद्योनिरूप इनउत्पत्तिधर्मवाले चेतनअचेतनरूपसर्वभूतोंकूं तूंजान ॥ तात्पर्ययह ॥ यहसर्वकार्य चेतनअचेतनकोग्रंथिरूपहैं ॥ यातैं ताकार्यरूपहेतुतैं तिनोंकेप्रकृतिरूपकारणकूंभी चेतनअचेतनकोग्रंथिरूपकरिकैअनुमानकर जिसकारणतैं कार्यकारणका समानस्वभावहीं लोकविषेदेखणेमैंआवैहै ॥ तिसकारणतैं चेतनअचेतनकीग्रंथिरूपकार्यतैं ताके चेतनअचेतनकोग्रंथिरूपकारणकाअनुमान संभवहोइसकेहै ॥ इसप्रकार सर्वभूतोंकाकारणरूप क्षेत्रक्षेत्रज्ञनामा दोप्रकारकीप्रकृति मैं परमेश्वरकाउपाधिरूपहै ॥ यातैं सर्वज्ञ तथा सर्वकाईश्वर तथाअनंतशक्तिवाला मायाउपहित मैंपरमेश्वरहीं तिस पूर्वउक्तप्रकृतिद्वारा इसचराचररूप सर्वजगतकेउत्पत्तिकाकारणहूं तथा तासर्वजगतकेविनाशकाकारणहूं ॥ अर्थात् जैसे स्वप्नकेपदार्थोंकाउपादानकारण तथाद्रष्टा एकहींहोवैहै ॥ तैसे मायाका आश्रयविषयहोणेतैं मैंमायावीपरमेश्वरहीं आपणीमायिकजगतका उपादानकारणहूं तथाद्रष्टारूपहूं इति ॥ ६ ॥ * ॥ जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरहीं आपणीमायाशक्तिकरिकै इससर्वजगत्के उत्पत्तिस्थितिलयकाहेतुहूं ॥ तिसकारणतैं परमार्थतैं मैंपरमेश्वरतैंभिन्न कोईभीपदार्थहैनहीं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै (मत्तःपरतरंइति) अथवा (यज्ज्ञात्वानेहभूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते) इसवचनकरिकै पूर्व एकआत्मवस्तुकेज्ञानतैं सर्वजगत्केज्ञानकोप्रतिज्ञाकरीथी ॥ ताप्रतिज्ञाकेउ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पपादनकरणेवासतै आत्माकूं सर्वजगत्काउपादानकारण कथनकऱ्या ॥ ताउपादानकारणपणेकरिकै आत्माकेनिर्विकारत्वरूपकीहानिहोवैंगी ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

मत्तःपरतरंनान्यत्किंचिदस्तिधनंजय ॥ मयिसर्वमिदंप्रोतंसूत्रेमणिगणाइव ॥ ७ ॥

मत्तः । परतरं । नं । अन्यत् । किंचित् । अस्ति । धनंजय । मयि । सर्वं । इदं । प्रोतं । सूत्रे । मणिगणाः । इव ॥इतिप०

हेअर्जुन मैंपरमेश्वरतैं अन्य कोईभीपदार्थ परमार्थसत्य नहीं है जैसे सूत्रविषे मणियों कासमूहग्रथितहै तैसे मैंपरमेश्वरविषे यहसर्वजगत् ग्रथितहै ॥ ७॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वदृश्यप्रपंचाकारपरिणामकूंप्राप्तहूईमायाकाअधिष्ठानरूप तथासर्वजगत्काप्रकाशक तथा सत्तास्फुरणरूपकरिकै सर्वजगत्विषेअनुस्यूत तथास्वप्रकाशपरमानंदचैतन्यघन तथापरमार्थतैंसत्यस्वरूप ऐसाजोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोईभीपदार्थ परमार्थतैंसत्यहैनहीं ॥ जैसे स्वप्नद्रष्टातैंभिन्न स्वप्नकेपदार्थ परमार्थतैंसत्यहैंनहीं ॥ तथा मायावीपुरुषतैंभिन्न मायिकपदार्थ परमार्थतैंसत्यहैंनहीं ॥ तथा शुक्तिअवच्छिन्नचैतन्यतैंभिन्न कल्पितरजत परमार्थतैंसत्यहैनहीं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरविषेकल्पित यहसर्वजगत् वास्तवतैं मेरेतैंभिन्ननहींहै यहसर्ववार्त्ता (तदनन्यत्वमारंभणशब्दादिभ्यः) इससूत्रकेव्याख्यानविषे श्रीभाष्यकारोनैं विस्तारतैंनिरूपणकरीहै इति ॥ और व्यवहारदृष्टिकरिकैतौं यहसर्वजडप्रपंचमैंसत्यरूप तथास्फुरणरूप परमेश्वरविषेहीं ग्रथितहै अर्थात् मैंपर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेश्वरकी सत्ताकरिकै यहसर्वजगत् सत्कीन्याईं प्रतीतहोवैहै तथामेरेस्फुरणरूपकरिकै स्फुरणकोन्याईं प्रतीतहोवै है ॥ तहां यहसर्वप्रपंच चैतन्यविषेग्रथितहै इतनैंअंशमात्राविषे दृष्टांतकूंकथनकरेहैं (सूत्रेमणिगणाइवइति) हेअ र्जुन जैसे सूत्रविषे मणियोंकासमूह ग्रथितहोवैहै ॥ तैसे सत्तास्फुरणरूप मैं परमेश्वरविषे यहसर्वजगत् ग्रथितहै इति ॥ अथवा (सूत्रेमणिगणाइव) इसवचनका यहअर्थकरणा ॥ हिरण्यगर्भरूप जोस्वप्नकाद्रष्टा तैजसआत्माहै ताका नाम सूत्रहै ॥ ऐसेसूत्रआत्माविषे जैसे स्वप्नविषेप्राप्तमणियोंकासमूह ग्रथितहोवैहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरविषे यहसर्व जगत् ग्रथितहै इति ॥ इसद्वितीयव्याख्यानविषे कारणकार्यभाव तथाद्रष्टादृश्यभाव इत्यादिकसर्वअंशोंविषे दृष्टांत कासंभवहोइसकेहै ॥ और प्रथमव्याख्यानविषेतौं केवल ग्रथितपणेमात्रविषेहीं सोदृष्टांतसंभवैहै इति ॥ और कि सीटीकाविषेतौं इसश्लोकका याप्रकारकाअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ हेअर्जुन सर्वज्ञ तथासर्वशक्तिवाला तथासर्वकाकारण रूप ऐसाजोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोई इसजगत्केउत्पत्तिसंहारकास्वतंत्रकारण प्रसिद्धहैन हीं ॥ किंतु मैंपरमेश्वरहीं इसजगत्केउत्पत्तिसंहारकाकारणहूं ॥ जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरहीं इससर्वजगत्काकारण हूं ॥ तिसकारणतैं सर्वजगत्केकारणरूपमैंपरमेश्वरविषेहीं यहकार्यरूपसर्वजगत् ग्रथितहै मेरेतैंभिन्नअन्यकिसी विषे यहजगत् ग्रथितहैनहीं ॥ जैसे मणियोंकासमूह सूत्रविषेहीं ग्रथितहोवैहै ॥ अन्यकिसीविषे ग्रथितहोवैनहीं ॥ ई हां सूत्रमणियोंकादृष्टांत केवल ग्रथितत्वमात्रविषेहींहै ॥ कारणपणेविषे यहदृष्टांत संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं सो सूत्र तिनमणियोंका कारणरूपहैनहीं ॥ ताकारणपणेविषेतौं सुवर्णविषेकुंडलकंकणादिकभूषणोंकादृष्टांतहीं संभवैहै इ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोकका यहअर्थ कऱ्याहै ॥ व्यवहारकालविषेतौं मृत्तिकादिरूपकारणका तथाघटा
दिरूपकार्यका परस्परभेद प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं मृत्तिकादिरूपकारणतैं घटादिरूपकार्य परहै अर्थात् पृथक्है ॥ और
जैसे घटादिककार्योंका सामृत्तिका उपादानकारणहै ॥ तैसे गौअश्वादिककार्योंका सामृत्तिका उपादानकारण हैनहीं
॥ यातैं तेगौअश्वादिककार्य तामृत्तिकातैं परतरहैं ॥ तैसे मैंपरमात्मादेवतैं कोईभीकार्य परतर नहींहै ॥ अर्थात् जि
सकार्यवस्तुका मैंपरमेश्वर उपादानकारणनहींहूं ॥ ऐसाकोईकार्यवस्तु हैनहीं ॥ इतनैकहणेकरिकै प्रपंचविषे ब्रह्मका
अव्यतिरेकपणादिखाया ॥ अब ताब्रह्मविषे प्रपंचकेव्यतिरेकपणेकूं दृष्टांतसहित कथनकरेहैं (मयिसर्वइति) हेअर्जुन
जैसे परस्परव्यावृत्त तथासूत्रतैंव्यावृत्त जेमणियांहैं ॥ तेमणियां तिनसर्वमणियोंविषेअनुस्यूतसूत्रविषे ग्रथितहोवैहैं ॥
तैसे सत्तारूपकरिकै तथास्फुरणरूपकरिकै सर्वत्रअनुस्यूत जोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरविषे यहपरस्परव्यावृ
त्तप्रपंच ग्रथितहै ॥ और जैसे व्यावृत्तमणियोंतैं सर्वत्रअनुस्यूतसूत्र भिन्नहोवैहै ॥ तैसे इसव्यावृत्तप्रपंचतैं सर्वत्रअनु
स्यूतमैंपरमेश्वरभी भिन्नहूं ॥ इसप्रकार सर्वप्रपंचतैंरहित मैंपरमेश्वरविषे विकारीपणा संभवतानहीं इति ॥ इसीव्या
ख्यानकेअनुसार श्लोककेप्रारंभविषे अथवाइत्यादिकअवतरण कथनकऱ्याथा इति ॥ ७ ॥ ※ ॥ शंका ॥
हेभगवन् जलादिकोंकातौं रसादिकोंविषेहीं प्रोतपणा प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं मैंपरमेश्वरविषेहीं यहसर्वजगत् प्रोतहै यहआ
पकावचन कैसेसंगतहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ मैंपरमेश्वरहीं रसादिरूपकरिकैस्थितहूआहूं ॥ यातैं रसादिकोंवि
षे जोजलादिकोंकाप्रोतपणाहै सो मैंपरमेश्वरविषेहीं प्रोतपणाहै ॥ याप्रकारकेउत्तरकूं पंचश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् कहेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रसोहमप्सुकौंतेयप्रभास्मिशशिसूर्ययोः ॥ प्रणवःसर्ववेदेषुशब्दःखेपौरुषंनृषु॥८॥

रसः। अहं। अप्सु। कौंतेय। प्रभा। अस्मि।शशिसूर्ययोः। प्रणवः। सर्ववेदेषु। शब्दः। खे। पौरुषं। नृषु ॥ इतिपदच्छेदः॥ हेअर्जुन जलोंविषे जोरसहै सोरस मैं हूं तथा चंद्रसूर्यविषे जाप्रभाहै साप्रभा मैंहूं तथा सर्ववेदोंविषे जोप्रणवहैसो प्रणव मैंहूं तथाआकाशविषे जोशब्दहै सोशब्द मैंहूं तथा सर्वनरोंविषे जोपौरुष सोपौरुष मैंहूं ॥८॥ इति पदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वजलोंविषेस्थित जोरसतन्मात्रारूप पुण्य मधुररसहै ॥ जोरस तिनसर्वजलोंका सारभूतहै तथा तिनसर्वजलोंका कारणभूतहै तथा तिनसर्वजलोंविषेअनुस्यूतहै सोरस मैंहूं ॥ अर्थात् ऐसेरसरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेसर्व जल प्रोतहैं ॥ और चंद्रमाविषे तथासूर्यविषे जोप्रभारूपप्रकाशहै॥ जिसप्रकाशकरिकै सर्वलोकोंकाव्यवहार सिद्धहोवैहै॥ सोप्रकाश मैंहूं ॥अर्थात् तासामान्यप्रकाशरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेचंद्रमासूर्य प्रोतहैं ॥और सर्ववेदोंविषेअनुस्यूत जोॐ काररूपप्रणवहै ॥ सोप्रणव मैंहूं ॥ अर्थात् ताप्रणवरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेसर्ववेद प्रोतहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (तद्यथाशंकु नासर्वाणिपर्णानिसंतृण्णानिएवमोंकारेणसर्वावाक्संतृण्णाइति ॥) अर्थयह ॥ जैसे सर्वपर्ण शंकुकरिकैग्रथितहैं ॥ तैसे सर्व वेदोंकेवचन ॐकारकरिकैग्रथितहैं इति ॥ और संपूर्णआकाशविषे अनुस्यूत तथाताआकाशकाकारणरूप जो शब्दतन्मा त्रारूप पुण्यशब्दहै सोशब्द मैंहूं॥अर्थात् ताशब्दरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं सोआकाश प्रोतहै॥और सर्वपुरुषोंविषे अनुस्यूत होइकैरह्याहूआजो पुरुषत्वसामान्यरूप पौरुषहै ॥ सोपौरुष मैंहूं ॥ अर्थात् तापौरुषरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेसर्वपुरुष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रोतहैं ॥ ईहांयहतात्पर्यहै ॥ जैसे सर्वशब्दोंविषेअनुगत शब्दत्वसामान्यविषे दुंदुभिशब्दत्वादिकविशेष प्रोतहोवैहैं ॥ तैसे रसादिसामान्यरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं जलादिकसर्वविशेष प्रोतहैं ॥ याप्रकारकीरीति अगलेच्यारिश्लोकोंविषेभी सर्वत्र जानणी ॥ तहां दुंदुभि शंख वीणा यहतीनदृष्टांत आत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे हम विस्तारतैंकथनकरिआयेहै ॥ ईहां (रसोहमप्सु) इत्यादिकपंचश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान्नैं जोआपणीविभूति कथनकरीहै ॥ सोकेवल ध्यानकरणेवासतैंकथनकरीहै ॥ यातैंइसध्येयस्वरूपविषे अत्यंतअभिनिवेशकरणानहीं इति ॥ ८ ॥ ※ ॥ किंच

पुण्योगंधःपृथिव्यांचतेजश्चास्मिविभावसौ॥जीवनंसर्वभूतेषुतपश्चास्मितपस्विषु ९॥

पुण्यः। गंधः। पृथिव्यां। च। तेजः। च। अस्मि। विभावसौ। जीवनं। सर्वभूतेषु। तपः। च। अस्मि। तपस्विषु॥इतिप०॥

हेअर्जुन पृथिवीविषे जोपुण्य गंधहैसोगंध मैं हूं तथा अग्निविषे जोतेजहै सोमैंहूं तथा सर्वभूतों विषे जोजीवनहै सोमैंहूं तथा तपस्वीपुरुषोंविषे जोतपहै सो मैंहूं ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वपृथिवीविषेसामान्यरूप तथासर्वपृथिवीविषेअनुस्यूत तथातापृथिवीकाकारणरूप ऐसाजो तन्मात्रारूपपुण्यगंधहै ॥ अर्थात् विकारभावतैंरहित जोसुरभिगंधहै ॥ सोपुण्यगंध मैंहूं ॥ अर्थात् तापुण्यगंधरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं सापृथिवी प्रोतहै ॥ ईहां (पुण्योगंधःपृथिव्यांच) यावचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोचकार रसादिकोंविषेभी तापुण्यत्वके समुच्चयकरावणेवासतैंहै ॥ तात्पर्ययह ॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापांचोंविषे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वभावतैंतौं पुण्यत्वहींरहेहै ॥ और प्राणीयोंकेअधर्मविशेषतैं तिनशब्दादिकोंविषे अपुण्यत्व होवैहै ॥ स्वभावतैं सोअ
पुण्यत्व तिनशब्दादिकविषयोंविषे होवैनहीं ॥ ईहां असुराभिआदिकविकारभावतैंरहितपणेकानाम पुण्यत्वहै इति
॥ और अग्निविषेजोतेजहै जोतेज सर्वपदार्थोंके दहनप्रकाशनका सामर्थ्यरूपहै तथाउष्णस्पर्शसहितहैं तथाश्वेतभा
स्वररूपहै तथासर्वअग्निविषेअनुस्यूतहै ॥ सोतेज मैंहू ॥ अर्थात् तिसतेजरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं सोअग्नि प्रोतहै ॥
ईहां (तेजश्चास्मि) यावचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ ताचकारतैं वायुकेस्पर्शकाभी ग्रहणकरणा ॥ अर्थात् उष्णस्प
र्शकरिकैआतुरपुरुषोंकूं शीतलताकोप्राप्तिकरणेहारा जोवायुकाशीतस्पर्शहै ॥ सोशीतस्पर्शभी मैंहीं हूं ॥ ताशीतस्प
र्शरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं सोवायु प्रोतहै इति ॥ और स्थावरजंगमरूपसर्वप्राणीयोंविषेस्थितजो प्राणोंकाधारणरू
प आयुष्रूपजीवनहै ॥ सोआयुष्रूपजोवन मैंहूं ॥ अर्थात् ताआयुष्रूपमैंपरमेश्वरविषेहीं तेसर्वप्राणी प्रोतहैं ॥ अ
थवा (जीवत्यनेनेतिजीवनं ॥) अर्थयह ॥ जोवनकूंप्राप्तहोवैंजिसकरिकै ताकानाम जीवनहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिक
रिकै सोजोवनशब्द विराट्रूपसमष्टिअन्नकावाचकहै ॥ तिसअन्नरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेसर्वभूतप्रोतहैं ॥ और
दिनदिनविषे तपकरिकैयुक्त जेवानप्रस्थादिकहैं ॥ तिनवानप्रस्थादिक तपस्वीयोंविषेस्थितजो शीतउष्ण क्षुधापिपा
सा इत्यादिकद्वंद्वोंकेसहनकरणेकासामर्थ्यरूपतपहै ॥ सोतप मैंहूं ॥ अर्थात् तिस तपरूपमैंपरमेश्वरविषेहीं तेतप
स्वीपुरुष प्रोतहैं ॥ ईहां (तपश्चास्मि) यावचनविषेस्थितजोचकारहै॥ ताचकारकरिकै अंतरबाह्य सर्वतपोंकाग्रहणकरणा
॥ तहां चित्तकीएकाग्रतारूप अंतरतपहै ॥ और जिह्वाउपस्थादिकइंद्रियोंकानिग्रहरूप बाह्यतपहै इति ॥ ९ ॥ * ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ शंका ॥ हेभगवन् (आकाशाद्वायुर्वायोरग्निरग्नेरापःअद्भ्यःपृथिवी) इसश्रुतिनें आकाशतैंवायुकीउत्पत्तिकथनकरी ह ॥ और वायुतैंअग्निकीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥ और अग्नितैंजलकीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥ और जलतैंपृथिवी कीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥ और कार्यका आपणेआपणेकारणविषेहीं प्रोतपणाहोवैहै ॥ यातैं तेसर्वभूतआपणे आपणेकारणविषेहीं प्रोतहैं ॥ अकारणरूपतुमारेविषे कोईभीपदार्थ प्रोतनहींहै ॥ ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए (आत्मनआकाशःसंभूतःयतोवाइमानिभूतानिजायंते) इत्यादिकश्रुतियां मैंपरमेश्वरतैंहीं सर्वभूतोंकीउत्पत्तिकूंकथ नकरेहैं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरहीं सर्वभूतोंकाकारणहूं याप्रकारकाउत्तर श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

बीजंमांसर्वभूतानांविद्धिपार्थसनातनं॥बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मितेजस्तेजस्विनामहं॥ १०॥

बीजं१ । मां२ । सर्वभूतानां३ । विद्धि४ । पार्थ५ । सनातनं६ । बुद्धिः७ । बुद्धिमतां८ । अस्मि९ । तेजः१० । तेजस्विनां११ । अहं१२ ॥ इतिपद० ॥

हे१अर्जुन उत्पत्तितैंरहित मैंपरमेश्वरकूं तूं सर्वभूतोंका कारण जान तथा बुद्धिमान्पुरुषोंकी जाबु द्धिहै साबुद्धिमैं हूं तथा तेजस्वीपुरुषोंका जोतेजहै सोतेज मैंहूं ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंका जोएकसनातनबीजहै ॥ अर्थात् आपणोउत्पत्तिविषेबीजांतरकीअ पेक्षातैंरहित जोसर्वभूतोंका एकनित्यकारणहै ॥ जोकारण व्यक्तिव्यक्तिविषे भेदवालाहैनहीं तथाअनित्यहैनहीं ॥ ऐसा अव्याकृतनामा सर्वजगत्काबीजकारणरूप मैंपरमेश्वरकूंहीं तूंजान ॥ मैंपरमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोईवस्तु स

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्वभूतोंकाबीजरूपहैनहीं ॥ और श्रुतिविषे आकाशादिकोंतैं जोवायुआदिकोंकीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥ सोभी केवल जड आकाशादिकोंतैंहीं वायुआदिकोंकीउत्पत्ति कथनकरीनहीं ॥ किंतु आकाशादिउपहित मैंपरमेश्वरतैंहीं वायुआदिकोंकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ यातैं सर्वभूतोंका अव्याकृतनामाबीजरूप मैंपरमेश्वरविषे तिनसर्वभूतोंकाप्रोतपणा युक्तहै ॥ किंवा तत्त्वअतत्त्ववस्तुकेविवेककाजोसामर्थ्यहै ताकानाम बुद्धिहै ॥ तिसबुद्धिवालेपुरुषोंकानाम बुद्धिमत्है ॥ ऐसेबुद्धिमान्पुरुषोंकी साबुद्धि मैंहूं ॥ अर्थात् ताबुद्धिरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेबुद्धिमान्पुरुष प्रोतहैं ॥ और अन्य शत्रुवोंके अभिभवकरणेकाजोसामर्थ्यहै ॥ जिससामर्थ्यकरिकै यहपुरुष अन्यप्राणीयोंकरिकैअभिभवकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तासामर्थ्यकानाम तेजहै ॥ ऐसेतेजवालेपुरुषोंकानाम तेजस्वीहै ॥ तिनतेजस्वीपुरुषोंका सोतेज मैंहूं ॥ अर्थात् ता तेजरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेतेजस्वीपुरुष प्रोतहैं इति ॥ १० ॥ * ॥ किंच

बलंबलवतांचाहंकामरागविवर्जितं ॥ धर्माविरुद्धोभूतेषुकामोस्मिभरतर्षभ ॥ ११ ॥

बलं । बलवतां । च । अहं । कामरागविवर्जितं । धर्माविरुद्धः । भूतेषु । कामः । अस्मि । भरतर्षभ ॥ इतिप०

हेअर्जुन बलवान्पुरुषोंका कामरागतैंरहित जोबलहै सोबल मैं हूं तथा सर्वप्राणीयोंविषे धर्मतैंअविरुद्ध जोकामहै सोकाम मैंहूं ॥ ११ ॥

॥ टीका ॥ अप्राप्तजोविषयहै ताविषयकीप्राप्तिकरणेहारेकारणकेअभावहूएभी यहविषय हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रकीजा चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम कामहै ॥ और प्राप्तजोविषयहै ताविषयके नाशकरणेहारेकारणकेविद्यमान हूएभी यहविषय नाशकूंनहींप्राप्तहोवै याप्रकारकी जा रंजनात्मकचित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम रागहै ॥ ऐसेकामराग तैंरहित जोबलहै ॥ अर्थात् सर्वप्रकारतैं ताकामरागकूंनहींउत्पन्नकरणेहारा तथारजतमतैंरहित जोस्वधर्मकेअनुष्ठानवा सतै देहइंद्रियादिकोंकेधारणकासामर्थ्यरूपबलहै ॥ ऐसेसात्विकबलवालेपुरुषोंकानाम बलवत्है ॥ ऐसेसंसारतैंपराङ्मुख बलवान्पुरुषोंका सोबल मैंहूं ॥ अर्थात् तासात्विकबलरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेबलवान्पुरुष प्रोतहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ सोकामरागतैंरहितबलहीं मैंपरमेश्वरकास्वरूपभूतकरिकै ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ ताकामरागकूंउत्पन्नकरणेहारा जोविषयासक्तपुरुषोंकाबलहै सोबल मैंपरमेश्वरकास्वरूपभूतकरिकै ध्यानकरणेयोग्यनहींहै इति ॥ अथवा (कामरागविवर्जितं) यावचनविषेस्थितजोरागशब्दहै ॥ तारागशब्दकरिकै क्रोधकाहींग्रहणकरणा ॥ किंवाधर्मशास्त्रकानाम धर्महै ॥ ताधर्मशास्त्रतैंअविरुद्ध अर्थात् ताधर्मशास्त्रनैंनहींनिषेधकऱ्याहूआ अथवा धर्मकेअनुकूलऐसाजो सर्वभूतप्राणीयोंविषे शास्त्रकेअनुसार स्त्रीपुत्रादिकपदार्थविषयक अभिलाषारूपकामहै ॥ सोकाम मैंहूं॥अर्थात् ताशास्त्रअविरुद्धकामरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेकामयुक्तसर्वप्राणी प्रोतहैं इति ॥ ११ ॥ ❋ ॥ हेअर्जुन इसप्रकार बहुतपदार्थोंकीगणनैंसैंक्याप्रयोजनहै ॥ यहसर्वजगत् मैंपरमेश्वरतैंहींउत्पन्नहूआ मैंपरमेश्वरविषेहीप्रोतहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

येचैवसात्विकाभावाराजसास्तामसाश्चये॥मत्तएवेतितान्विद्धिनत्वहंतेषुतेमयि॥१२॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ये[1] । च[5] । एव[2] । सात्विकाः[3] । भावाः[4] । राजसाः[7] । तामसाः[9] । च[8] । ये[6] । मत्तः[11] । एव[12] ।
इति[13] । तान्[10] । विद्धि[14] । न[18] । तु[15] । अहं[16] । तेषु[17] । ते[19] । मयि[20] ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जे[1] कोई अन्य[2]भी सात्विक[3] पदार्थ[4]हैं तथा[5] जे[6]कोई राजसपदार्थ[7]हैं तथा[8] तामस[9] पदार्थ[10]हैं तिन[10]सर्वपदार्थोंकूं मैं[11]परमेश्वरतैं हीं[12] पूर्व[13]उक्तरीतिसैं उत्पन्न हूआ जान[14] तौं[15] भी मैं[16]परमेश्वर तिन[17]पदार्थोंविषे न[18]हींहूं ते[19]पदार्थतौं मैं[20]परमेश्वरविषेहींहै ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तपदार्थोंतैंभिन्न जेकोईदूसरेभो अंतःकरणकेपरिणामरूप शमदमादिक सात्विकभावहैं ॥ ॥ तथा हर्षदर्पादिक राजसभावहैं ॥ तथा शोकमोहादिक तामसभावहैं ॥ जेसात्विकराजसतामसभाव इनप्राणीयोंकूं विद्याकर्मादिकोंकेवशतैं उत्पन्नहोवैहैं ॥ तिनसर्वभावोंकूं (अहंकृत्स्नस्यजगतःप्रभवः) इत्यादिकवचनउक्तरीतिसैं मैंपरमेश्वरतैंहीं उत्पन्नहूआ जान ॥ अथवा सत्वगुणहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेजेसात्विकभावहैं ॥ जैसे देव ऋषि ब्राह्मण शर्करा इत्यादिकपदार्थहैं ॥ तथा रजोगुणहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेजेराजसभावहैं ॥ जैसे गंधर्व यक्ष क्षत्रिय मिरच इत्यादिकपदार्थहैं ॥ तथा तमोगुणहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेजेतामसभावहैं ॥ जैसे राक्षस क्रव्याद शूद्र गृंजन इत्यादिकपदार्थहैं ॥ तेसर्वपदार्थ मैंपरमेश्वरतैंहीं उत्पन्नहूएजान ॥ हेअर्जुन इसप्रकार तेसर्वपदार्थ मैंपरमेश्वरतैं उत्पन्नभीहूएहैं ॥ तौंभी मैंपरमेश्वर तिनजडपदार्थोंविषे आधेयरूपकरिकैस्थितनहींहूं ॥ अर्थात् जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानकल्पितसर्पादिकोंकेविकल्पोंकरिकै दूषितहोवैनहीं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी तिनअनात्मपदार्थोंके वशवर्ति तथातिनोंकेविका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रोंकरिकैदूषित होतानहीं ॥ जैसे संसारीजीव तिनोंकेवशवार्ति तथातिनोंकेविकारोंकरिकै दूषित होवैहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वर दूषितहोतानहीं ॥ और तेसर्वजडपदार्थतौं जैसे रज्जुविषे सर्पादिककल्पितहोवैहैं तैसे मैंपरमेश्वरविषेहीं कल्पितहैं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरतैं सत्तास्फूर्तिकूंप्राप्तहूए तेसर्वपदार्थ मैंपरमेश्वरकेहीं अधीनहैं ॥ इति ॥ १२ ॥ ※॥ शंका ॥ हेभगवन् (रसोहमप्सुकौंतेय) इत्यादिकवचनोंकरिकै आपनैं सर्वजगत्कूं आपणास्वरूपकह्या ॥ तथा आपणेकूं स्वतंत्रकह्या तथानित्यशुद्धमुक्तस्वभावकह्या ॥ ऐसे स्वतंत्र नित्य शुद्ध मुक्तस्वभाव आपपरमेश्वरतैंअभिन्न जोयहजगत्है तिसजगत्विषे संसारीपणा कैसेसंभवैंगा किंतु नहींसंभवैंगा ॥ तहां तिसहमारे स्वतंत्रनित्यशुद्धमुक्तस्वरूपकेअज्ञानतैंहीं इसजगत्विषे सोसंसारीपणाहोवैहै वास्तवतैंनहीं ॥ ऐसावचन जोआपकहो ॥ तौंभी तिसआपकेस्वरूपकाअज्ञान इसजगत्विषे किस कारणतैंहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताआपणेस्वरूपकेअज्ञानविषे कारणकूं कथनकरेहैं ॥

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिःसर्वमिदंजगत्॥मोहितंनाभिजानातिमामेभ्यःपरमव्ययं॥ १३॥

त्रिभिः। गुणमयैः। भावैः। एभिः। सर्वं। इदं। जगत्। मोहितं। न। अभिजानाति। मां। एभ्यः। परं। अव्ययं ॥इतिपद० ॥

हेअर्जुन इनपूर्वउक्त गुणमय तीनप्रकारके भावोंनैं यह सर्व जगत् मोहितकऱ्याहै याकारणतैं इनंगुणमयभावोंतैं पर तथाअविक्रिय मैंपरमेश्वरकूं नहीं जानताहै ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वकथनकऱ्येजे सत्व रज तम यातीनगुणोंकेविकाररूप तीनप्रकारकेभावपदार्थहैं ॥ तिन तीन प्रकारकेपदार्थोंनैंहीं यहसर्वप्राणीमात्र मोहितकरेहैं ॥ अर्थात् नित्यअनित्यवस्तुकेविवेककीअयोग्यताकूं प्राप्तकरेहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

याकारणतैंहीं यहप्राणी मैंपरमात्मादेवकूं जानतेनहीं ॥ कैसाहूंमैंपरमेश्वर ॥ इनतीनप्रकारकेभावोंतैं परहूं ॥ अर्थात् तिनसर्वभावोंकेकल्पनाका अधिष्ठानरूपहूं ॥ तथा तिनसर्वभावोंतैं अत्यंत विलक्षणहूं ॥ ताविलक्षणताविषे हेतुगर्भितविशेषणकहेहैं (अव्ययंइति) अर्थात् जन्ममरणादिकसर्व विकारोंतैंरहितहूं॥ तथा इसदृश्यप्रपंचतैंरहितहूं ॥ तथा आनंदघनहूं ॥ तथा आपणेस्वयंज्योतिरूपकरिकैप्रकाशमानहूं ॥ तथा सर्वप्राणीयोंका आत्मारूपहूं ॥ ऐसे अत्यंतसमीपभी मैंपरमेश्वरकूं यहप्राणी जानतेनहीं ॥ ताप्रत्यक्अभिन्न मैंपरमेश्वरकेअज्ञानतैंहीं यहसर्वप्राणी वारंवार जन्ममरणरूपसंसारकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं इनअविवेकीजनोंके बहुतदौर्भाग्यहैंइति ॥ तहां सत्त्वादिकगुणमय भावोंनैं यहसर्वप्राणी मोहकूंप्राप्तकरीतेहैं यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (इंद्रियाभ्यामजय्याभ्यांह्राभ्यामेवहतंजगत् ॥ अहोउपस्थजिह्वाभ्यांब्रह्मादिमशकावधि ॥) अर्थयह ॥ अल्पयत्नकरिकैजयकरणेकूंअशक्यजोउपस्थइंद्रियहै तथाजिह्वाइंद्रियहै ॥ तिनदोनोंइंद्रियोंनैंहीं ब्रह्मातैंआदिलैकेमशकपर्यंत यहसर्वजगत् हननकऱ्याहै ॥ यहबडाआश्चर्यहै ॥ यद्यपि आपणेआपणेविषयोंविषेप्रवृत्तहूए नेत्रादिकसर्वइंद्रिय इसपुरुषकेअनर्थकाहेतुहैं ॥ तथापि तिनसर्वइंद्रियोंविषे उपस्थ जिह्वा यहदोनोंइंद्रिय अत्यंतप्रबलहैं ॥ यातैं तिनदोनोंइंद्रियोंकाहीं ईहांग्रहणकऱ्याहै इति ॥ १३ ॥ ※ ॥

॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वकथनकऱ्येजे अनादिसिद्धमायाके सत्वादिकतीनगुणहैं ॥ तिन तीनगुणोंकरिकैसंबद्धहूए इसजगतकूं स्वतंत्रताकेअभावहोणेतैं तिसत्रिगुणात्मकमायाकेनिवृत्तकरणेकासामर्थ्य हैनहीं ॥ यातैं कदाचित्भी तामायाकी निवृत्ति नहींहोवैंगी ॥ काहेतैं यथार्थवस्तुकेविवेकका जोअसामर्थ्यहै ॥ ताअसामर्थ्यकाहेतुरूप सात्रिगुणात्मकमाया

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सनातनहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ अन्यउपायकरिकै यद्यपि तामायाकीनिवृत्तिनहींहोवैहै ॥ तथापि एकभग वत्कीशरणताकरिकै प्राप्तहूएतत्वज्ञानतैं तामायाकीनिवृत्ति संभवैहै ॥ याप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

दैवीह्येषागुणमयीममायादुरत्यया ॥ मामेवयेप्रपद्यंतेमायामेतांतरंतिते ॥ १४ ॥

दैवी । हि । एषा । गुणमयी । मम । माया । दुरत्यया । मां । एव । ये । प्रपद्यंते । मायां । एतां । तरंति । ते ॥ इतिप० ॥

हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकी यह सत्त्वादिगुणरूप प्रसिद्ध दैवी माया दुरतिक्रमाहै जेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं हीं साक्षात्कारकरेहैं तेपुरुषहीं इस मायाकूं नाशकरेहैं ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन (एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः) इत्यादिकश्रुतियोंनैं प्रतिपादनकऱ्याजो स्वप्रकाशचैतन्यआनंदस्वरूप देवहै जोदेव जीवईश्वरविभागतैंरहितहै ॥ ताशुद्धचैतन्यमात्रदेवके आश्रयरूपकरिकै तथाविषयरूपकरिकै जामा याकल्पनाकरीजावैहै ताकानाम दैवीहै ॥ अर्थात् जैसे अंधकार जाग्रहकेआश्रितरहेहै ताग्रहकूंहीं आवृत्तकरेहै ॥ तैसे यहमायाभी जिस शुद्धचैतन्यदेवकेआश्रितरहेहै तिसीशुद्धचैतन्यदेवकूं विषयकरेहै ॥ इसप्रकार चैतन्यदेवके आश्रित तथाचैतन्यदेवविषयकहोणेतैं सामाया दैवी कहीजावैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहां श्लोक ॥ (आश्रयत्वविषयत्वभागिनोनिर्विभागचितिरेवकेवला ॥ पूर्वसिद्धतमसोहिपश्चिमोनाश्रयोभवतिनापिगोचरः ॥) अर्थयह ॥ जीवईश्वरविभागतैंरहित केवलचैतन्यमात्रहीं अनादिसिद्धअज्ञानके आश्रयत्वकूं तथाविषयत्वकूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राप्तहोवैहै ॥ जिसकारणतैं ताअनादिसिद्धअज्ञानका ताअज्ञानकेपश्चात्भावीकोईभीपदार्थ आश्रय तथाविषयहोवै नहीं इति ॥ जादैवीमाया मामहंनजानामि अर्थ मैंआपणेकूंनहींजानताहूं याप्रकारकेसाक्षीरूपप्रत्यक्षकरिकैसिद्धहो णेतैं अपलापकरीजावैनहीं ॥ तथा जामाया स्वप्नभ्रमादिकोंकीअन्यथाअनुपपत्तिरूप अर्थापत्तिप्रमाणकरिकै सिद्ध है ॥ यहमायाकीप्रसिद्धि (एषा हि) यादोनोंशब्दोंकरिकैकथनकरीहै ॥ तहां एषा याशब्दकरिकैतौं साक्षीप्रत्यक्ष सिद्धता कथनकरीहै ॥ और हि याशब्दकरिकै अर्थापत्तिप्रमाणसिद्धता कथनकरीहै ॥ तथा जामाया गुणमयीहै ॥ अर्थात् सत्त्व रज तम यातीनगुणरूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे त्रिगुणकरीहूईरज्जु अत्यंतदृढहोणेतैं पुरुषोंकेबंधनकाहेतुहो वैहै ॥ तैसे अत्यंतदृढहोणेतैं यहत्रिगुणात्मकमायाभी इनजीवोंकेबंधनकाहेतुहै ॥ इसअर्थकेबोधनकरणेवासतैहीं श्रीभ गवान्नैं तामायाका गुणमयी यहविशेषणकथनकऱ्याहै ॥ ऐसीजा मैंपरमेश्वरकीमायाहै ॥ अर्थात् सर्वजगत्काका रणरूप तथासर्वज्ञ तथासर्वशक्तिसंपन्न तथामायावो ऐसाजोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसहमारे गृहीपुरुषकेगृहादिकोंकी न्यांई ममत्वकाविषयीभूत जामायाहै ॥ जामाया मैंपरमेश्वरकेअधीनहोणेतैं इसजगत्केउत्पत्तिआदिकोंका निर्वाह करणेहारीहै ॥ तथा जामाया तत्त्ववस्तुकेभानकाप्रतिबंधकरिकै अतत्त्ववस्तुकेभानकाहेतुरूप आवरणविक्षेपशक्तिवा लीअविद्यारूपहै ॥ तथा जामाया सर्वजगत्कीप्रकृतिरूपहै ॥ तहांश्रुति ॥ (मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायिनंतुमहेश्वरं ॥) अर्थयह ॥ इससर्वजगत्का माया उपादानकारणहै ॥ और तामायावाला महेश्वर कह्याजावैहैइति ॥ ईहां यहप्रक्रि याहै ॥ जीव ईश्वर जगत् इत्यादिकविभागतैंरहित जोशुद्धचैतन्यहै ॥ ताशुद्धचैतन्यविषेअध्यस्त जाअनादिमायारूपअ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विद्याहै ॥ जाअविद्या सत्त्वगुणकीप्रधानताकरिकै अत्यंतस्वच्छहै ॥ ऐसीस्वच्छअविद्या जैसेस्वच्छदर्पण मुखकेआभास कूंग्रहणकरेहै तैसे चेतनकेआभासकूंग्रहणकरेहै ॥ तहां जैसे दर्पणरूपउपाधिके श्यामतादिकदोष मुखरूपाबिंबकूं स्पर्शकरैनहीं ॥ तैसेताअविद्यारूपउपाधिकेदोषोंकरिकैअसंबद्धहोणेतैं परमेश्वरतौं बिंबस्थानीयहै ॥ और जैसे दर्पण विषेस्थितप्रतिबिंब तादर्पणकेश्यामतादिकदोषोंकरिकै संबद्धहोवैहै ॥ तैसे ताअविद्यारूपउपाधिकेदोषोंकरिकैसंबद्धहोणेतैं जीवात्मा प्रतिबिंबस्थानीयहै ॥ तहां तिसबिंबरूपईश्वरतैंहीं ताजोवकेभोगवासतै आकाशादिकक्रमकरिकै शरीरइंद्रियादिकसंघात तथातासंघातका भोग्यरूपसंपूर्णप्रपंच उत्पन्नहोवैहै ॥ याप्रकारकीकल्पना करीजावैहै ॥ तहां जैसे बिंब प्रतिबिंब यादोनोंविषे शुद्धमुख अनुगतहोवैहै ॥ तैसे ईश्वर जीव यादोनोंविषेअनुगत जोमायाउपहितचैतन्यहै ॥ सोचैतन्य साक्षी कह्याजावैहै ॥ तिससाक्षीचैतन्यनैंहीं आपणेविषेअध्यस्तमाया तथातामायाकाकार्यरूप सर्वप्रपंच प्रकाशकरीताहै ॥ यातैं तासाक्षीचैतन्यकेअभिप्रायकरिकै तौं श्रीभगवान्नैं ताअविद्यारूपमायाकूं दैवी यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ और ताबिंबरूपईश्वरकेअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान्नैं तामायाकूं ममाया यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यद्यपि ताएकअविद्याविषेप्रतिबिंबरूप एकहींजीव संभवैहै ॥ तथापि ताएकअविद्याविषेस्थित अंतःकरणकेसंस्कार भिन्नभिन्नहैं ॥ तिनसंस्कारोंकेभेदकरिकै अंतःकरणरूपउपाधिवालेजीवका ईहांगीताविषे तथा श्रुतिविषे भेदकथनकऱ्याहै ॥ तहां इसगीताविषेतौं (मांयेप्रपद्यंते । दुष्कृतिनोमूढानप्रपद्यंते । चतुर्विधाभजंतेमां) इत्यादिकवचनोंकरिकै ताजीवकाभेद कथनकऱ्याहै ॥ और श्रुतिविषेतौं ।(तद्योयोदेवानांप्रत्यबुध्यतसएवतदभवत्तथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ऋषीणांतथामनुष्याणां ।) इत्यादिकवचनोंकरिकै ताजीवकाभेद कथनकऱ्याहै ॥ और ताअंतःकरणरूपउपाधिकेभेद कानहींविचारकरिकैतौं जीवत्वकाप्रयोजकअविद्यारूपउपाधिकेएकत्वहोणेतैं ताजीवकाभी एकत्वरूपकरिकैहीं इस गीताविषे तथाश्रुतिविषे कथनकऱ्याहै ॥ तहांइसगीताविषेतौं (क्षेत्रज्ञंचापिमांविद्धिसर्वक्षेत्रेषुभारत । प्रकृतिंपुरुषं चैवविद्ध्यनादीउभावपि । ममैवांशोजीवलोकेजीवभूतः सनातनः) इत्यादिकवचनोंकरिकै ताजीवका एकत्वकथनकऱ्या है ॥ और श्रुतिविषेतौं । (ब्रह्मवाइदमग्रआसीत्तदात्मानमेवावेदहंब्रह्मास्मीतितस्मात्सर्वमभवत् । एकोदेवःसर्वभूतेषुगू ढः । अनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्य । वालाग्रशतभागस्यशतधाकल्पितस्यच॥भागोजीवःसविज्ञेयः सचानंत्यायकल्पते ॥) इत्यादिकवचनोंकरिकै ताजीवका एकत्वकथनकऱ्याहै ॥ यद्यपि दर्पणविषेस्थित जोचैत्रनामापुरुषका प्रतिबिंबहै ॥ सोप्रतिबिंब आपणेकूं तथापरकूं जानतानहीं ॥ काहेतैं जडचेतनकासमुदायरूप जोचैत्रनामापुरुषहै ॥ ताचैत्रपुरुष केशरीररूपअचेतनअंशकाहीं तादर्पणविषे प्रतिबिंबहोवैहै ॥ चेतनअंशका तादर्पणविषे प्रतिबिंबहोवैनहीं ॥ यातैं जडहोणेतैं सोप्रतिबिंब आपणेकूं तथापरकूं जानतानहीं ॥ तथापि अविद्याविषेजोचेतनकाप्रतिबिंबहै ॥ सोप्रतिबिंब चेतनरूपहोणेतैं आपणेकूं तथापरकूं जानताहींहै ॥ काहेतैं प्रतिबिंबपक्षविषे सोप्रतिबिंब मिथ्याहोवैनहीं ॥ किंतु ताबिंबचैतन्यविषे उपाधिस्थत्वमात्रहीं कल्पितहोवैहै ॥ और आभासपक्षविषेतौं यद्यपि सोचिदाभासशुक्तिरजता दिकोंकीन्यांई अनिर्वचनीयहींउत्पन्नहोवैहै ॥ तथापि सोचिदाभास घटादिकजडपदार्थोतैं विलक्षणहींहोवैहै ॥ यातैं ताचिदाभासविषेभी आपणाज्ञान तथापरकाज्ञान संभवैहै ॥ ऐसाप्रतिबिंबरूपजीव जबपर्यंत आपणे परमेश्वररू

166

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पबिंबकेसाथि आपणीएकताकूं नहींजानेहै ॥तबपर्यंत जैसे जलविषेस्थितसूर्य ताजलकेकंपादिकविकारोंकूं प्राप्तहो वैहै तैसे सोप्रतिबिंबरूपजीवभी ताअविद्यारूपउपाधिके सहस्रविकारोंकूं अनुभवकरैहै ॥ इससर्वअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (ममम्मायादुरत्ययाइति) हेअर्जुन बिंबभूतमैंपरमेश्वरके ऐक्यसाक्षात्कारतैंविना यहमेरीमाया तरणेकूं अशक्यहै ॥ यातैं यहमायां दुरत्ययाहै॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहाश्रुति॥ (यदाचर्मवदाकाशंवेष्टयिष्यंतिमानवाः ॥ तदादेवमविज्ञायदुःखस्यांतोभविष्यति)॥ अर्थयह॥ जिसकालविषे यहमनुष्य चर्मकोन्यांई इसआकाशकूं एकठाकरिलेवैंगे ॥ तिसकालविषे मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैं परमात्मादेवकूंनजानिकैभी अविद्यादिकसर्वदुःखका नाशहोवैंगा ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे चर्मकोन्यांई निरवयवआकाशका एकठाकरणा अत्यंतअशक्यहै तैसे ब्रह्मसाक्षात्कारतैंविना अविद्यादिकदुःखकानाशकरणाभी अत्यंतअशक्यहै इति॥ इसीकारणतैं सोजीव अंतःकरणावच्छिन्नहोणेतैं ताअंतःकरणसैंसंबद्धपदार्थोंकूं नेत्रादिकइंद्रियद्वारा प्रकाशकरताहूआ अल्पज्ञकह्याजावैहै ॥ तिसकारणतैंहीं सोजीव मैंजानताहूं मैंकरताहूं मैंभोक्ताहूं इत्यादिकअध्यासरूपसहस्रअनर्थोंकापात्रहोवैहै ॥ और सोईहींप्रतिबिंबरूपजीव जबीआपणेबिंबभूतईश्वरका आराधनकरेहै ॥ अर्थात् जोबिंबरूपईश्वर अनंतशक्तिवालाहै ॥ तथा अविद्यारूपमायाका नियंताहै ॥ तथा सर्वप्रपंचकूंजानणेहाराहै ॥ तथा सर्वशुभअशुभकर्मकेफलका प्रदाताहै ॥ तथा परिपूर्णआनंदघनमूर्तिहै तथा भक्तजनोंकेउद्धारकरणेवासतैं अनेकअवतारोंकूंधारणकरेहै ॥ तथा सर्वका परमगुरुरूपहै ऐसेबिंबभूतपरमेश्वरकूं यहप्रतिबिंबरूपजीव जबी सर्वकर्मोंकासमर्पणकरिकै आराधनकरेहै ॥ तबी बिंबविषे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समर्पणकऱ्येहूएगुणोंका प्रतिबिंबविषेभानहोणेतैं यहजोव सर्वपुरुषार्थोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता प्रल्हादनैंभी कथन करीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (नैवात्मनःप्रभुरयंनिजलाभपूर्णोमानंजनादविदुषःकरुणोवृणीते ॥ यद्यज्जनोभगवतेविदधीत मानंतच्चात्मनेप्रतिमुखस्ययथामुखश्रीः ॥) अर्थयह ॥ दर्पणविषेप्रतिबिंबितमुखविषे जबो तिलकादिरूपश्रीअपेक्षितहो वैहै ॥ तबी बिंबभूतमुखविषेहीं तेतिलकादिकचिन्ह करयेजावैहैं ॥ ताबिंबभूतमुखविषेकरयेहूए तेतिलकादिकचिन्ह आपेहीं ताप्रतिबिंबविषे प्रतीतहोवैहैं ॥ ताबिंबभूतमुखविषे तिनतिलकादिकोंके कीयेतैंविना ताप्रतिबिंबविषे तिनतिलकादिकोंकेप्राप्तिकरणेका दूसराकोईउपायहैंनहीं ॥ तैसे बिंबभूतईश्वरविषे समर्पणकरयेहूए धर्मादिकपुरुषार्थोंकूंहीं सोप्रतिबिंबरूपजोव प्राप्तहोवैहै ॥ तिसबिंबभूतईश्वरविषे तिनधर्मादिकोंकेअर्पणकीयेतैंविना तिसप्रतिबिंबरूपजोव कूंपुरुषार्थकीप्राप्तिविषे दूसराकोईउपायहैनहीं इति ॥ इसप्रकार सर्वत्रपरिपूर्णभगवान्वासुदेवकूं आराधनकरणेहा रेअधिकारीपुरुषका अंतःकरण जबोज्ञानकेप्रतिबंधकपापोंतैंरहितहोवैहै तथा ज्ञानकेअनुकूलपुण्योंकरिकै युक्तहोवै है ॥ तबी जैसे अत्यंतनिर्मल दर्पणविषे मुख स्पष्टप्रतीतहोवैहै तैसे सर्व कर्मोंकेत्यागपूर्वक तथाशमदमादिपूर्वक ब्रह्म वेत्तागुरुके समीपजाइकै करयेहूए श्रवणमननिदिध्यासनकरिकैसंस्कृत अत्यंतस्वच्छअंतःकरणविषे मैंब्रह्मरूपहूं यात्र कारकोसाक्षात्काररूपवृत्ति उत्पन्नहोवैहै ॥ जासाक्षात्काररूपवृत्ति ब्रह्मवेत्तागुरुनैंउपदेशकरयेहूए तत्त्वमसि इसवेदांत वाक्यकरिकैजन्यहै ॥ तथा जावृत्ति अनात्माकारतातैंरहितहै ॥ तथा सर्वउपाधियोंतैंरहित शुद्धचैतन्यकेआकारहै ॥ ऐसीसाक्षात्काररूपवृत्तिविषे प्रतिबिंबितहूआ चैतन्य उसीकालविषे स्वआश्रयविषयअविद्याकूं नाशकरेहै ॥ जैसे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दीपक आपणीउत्पत्तिकालविषेहीं अंधकारकूंनाशकरेहै ॥ ताअविद्याकेनाशहूएतैंअनंतर तिसवृत्तिसहित सर्वकार्य प्रपंचका नाशहोवैहै ॥ काहेतैं उपादानकारणकेनाशहूएतैंअनंतर उपादेयकार्यकेनाशकूं सर्वशास्त्रवालेअंगीकारकरे हैं ॥ इसीसर्वअर्थकूं श्रीभगवान्कहेहै (मामेवयेप्रपद्यंतेमायामेतांतरंतितेइति) तहां । (आत्मेत्येवोपासीत । तदात्मानमे वावेत् । तमेवधीरोविज्ञाय । तमेवविदित्वातिमृत्युमेति ।) इत्यादिकश्रुतियोंविषेस्थितजो एव यहशब्दहै ॥ सोएवकार जैसे प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मविषे सर्वउपाधियोंतैंरहितपणेकूं बोधनकरेहै ॥ तैसे (मामेवयेप्रपद्यंते) इसगीतावचनवि षेस्थित एवकारभी तिसप्रत्यक्अभिन्नब्रह्मविषे सर्वउपाधियोंतैंरहितपणेकूंबोधनकरेहै ॥ अर्थात् स्थूलसूक्ष्मकारणरू पसर्वउपाधियोंतैंरहित सच्चिदानंदअखंड अद्वितीयरूप मैंपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष साक्षात्कारकरेहैं ॥ तेअ धिकारीपुरुषहीं इसअविद्यारूपमायाकूं नाशकरेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जाअंतःकरणकीवृत्ति तत्त्वमसिआदिकवेदांतवाक्यों करिकैजन्यहै ॥ तथा निर्विकल्पकसाक्षात्काररूपहै ॥ तथा निर्वचनकरणेकूंअयोग्य शुद्धचिदाकारत्वधर्मकरिकैविशि ष्टहै ॥ तथा सर्वसुकृतोंकाफलरूपहै ॥ तथा निदिध्यासनकेपरिपाकतैं उत्पन्नहूईहैं ॥ तथा सर्वकार्यसहितअज्ञानका विरोधीहै ॥ ऐसीसाक्षात्काररूपवृत्तिकरिकै जेअधिकारीपुरुष मैंतत्पदार्थरूपपरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूप करिकै साक्षात्कारकरेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषहीं इसहमारीअविद्यारूपमायाकूं विनाहींआयासतैं नाशकरेहैं ॥ कैसीहैसा माया ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारके हमारेसाक्षात्कारतैंविना दूसरेअनेकउपायोंकरिकैभी नाशकरीजावैनहीं ॥ तथा जामाया सर्वअनर्थोंकेजन्मकाभूमिरूपहै ॥ ऐसीअविद्यारूपमायाकूं तेअधिकारीपुरुष मैंपरमात्मादेवकेसाक्षात्कार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कारिकै सुखेनहीं नाशकरेहैं ॥ अर्थात् सर्वउपाधियोंकीनिवृत्तिकरिकै तेपुरुष सच्चिदानंदघनरूपकरिकैस्थितहोवैहैं ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तापुरुषोंका कोईभी प्रतिबंध करिसकैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (तस्यहनदेवाश्चनाभूत्याईशतआत्माह्येषासभवति ॥) अर्थयह ॥ तिसब्रह्मवेत्तापुरुषकेअभिभवकरणेविषे इंद्रादिकदेवताभी समर्थहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तापुरुष तिनसर्वदेवतावोंका आत्मारूपहींहै इति ॥ तहां (ये ते) यादोनोंपदोंविषे बहुतपुरुषोंकावाचक जोबहुवचन भगवान्नैं कथनकऱ्याहै ॥ सोबहुवचन देहइंद्रियरूपसंघातकेभेदकरिकैकल्पनाकऱ्येहूए आत्माकेभेदभ्रमका अनुवाद करेहै ॥ कोईसोबहुवचन वास्तवतैं आत्माकेभेदकाबोधकनहींहै ॥ और (मामेवयेप्रपद्यंते) यावचनकेस्थानविषे (मामेवयेप्रपश्यंति) यहसाक्षात्कारकावाचक वचनहीं भगवान्कूंकहणेयोग्यथा ॥ काहेतैं साक्षात्कारकरिकैहीं तामायाकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ कर्मउपासनादिकोंकरिकै तामायाकोनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ तावचनकूंनकहिकै श्रीभगवान्नैं जो (मामेवयेप्रपद्यंते) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ ताकरिकै यहअर्थ सूचनकऱ्याहै ॥ जेअधिकारीपुरुष मैंएकपरमेश्वर केशरणकूंप्राप्तहोइकै परमानंदघनपरिपूर्ण मैंभगवान्वासुदेवकूंचिंतनकरतेहूए दिवसोंकूंवितीतकरेहैं ॥ तेअधिकारी पुरुष मैंपरमेश्वरकेप्रेमजन्यमहान्आनंदसमुद्रविषेमग्नमनवालेहोणेतैं इसमेरीमायाकेसंपूर्णगुणविकारोंनैं अभिभव नहींकरीतेहैं ॥ किंतु उलटा साहमारोमाया यहभगवत्शरणपुरुष हमारेविलासविनोदविषेअकुशलहोणेतैं हमारे नाशकरणेविषेसमर्थहै याप्रकारकीशंकाकरतीहूई तिनभक्तजनोंतैं आपेहींनिवृत्तहोइजावैहै ॥ जैसे क्रोधवान्तपस्वीपुरुषोंतैं वारांगना निवृत्तहोइजावैहै ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष तिसहमारीमायाकेतरणवासतै मैंपरिपूर्णभगवान्वासु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

देवकूं निरंतर चिंतनकरै इति ॥ १४ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् [illegible] कार आपपरमेश्वरकेशरणागतहोइकै आपके निरंतरचिंतनतैं जोइसमायाकीनिवृत्ति होतीहोवै ॥ तौं सर्वअनर्थोंकामूलभूत इसमायाकेनाशकरणेवासतै यहसर्वमनुष्य आपकेशरणागतकूं किसवासतैनहींप्राप्तहोते ॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए ॥ अनेकजन्मोंविषेसंचयकरेहूए पापरूपप्रतिबंधकेवशतैं यहसर्वमनुष्य हमारेशरणकूं प्राप्तहोतेनहीं याप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(71)

नमांदुष्कृतिनोमूढाःप्रपद्यंतेनराधमाः॥माययापहृतज्ञानाआसुरंभावमाश्रिताः॥१५॥

नँ। मां। दुष्कृतिनः। मूढाः। प्रपद्यंते। नराधमाः। मायया। अपहृतज्ञानाः। आसुरं। भावं। आश्रिताः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जेपुरुष पापकर्मोवालेहैं तथामूढहैं तथानरोंविषेअधमहैं तथामायाकरिकै निवृत्तहूआहैज्ञानजिनोंका तथादंभदर्पादिरूपआसुरभावकूं आश्रयकरयाहैजिनोंनैं ऐसेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं नहीं भजेहैं ॥१५॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेपुरुष पापकर्मोकरिकै नित्यहींयुक्तहैं ॥ जिसकारणतैं पापकरिकैयुक्तहैं तिसकारणतैं तेपुरुष सर्वमनुष्योंविषेअधमहैं ॥ अर्थात् तेपापात्मापुरुष इसलोकविषेतौं श्रेष्ठपुरुषोंकरिकै निंदाकरणेयोग्यहोवैहैं ॥ और परलोकविषे सहस्रअनर्थोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैं तेपापात्मापुरुष सर्वमनुष्योंविषेअधमहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेपुरुष अनर्थकीप्राप्तिकरणेहारे पापकर्मकूंहीं सर्वदा किसकारणतैंकरतेहैं ॥ ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥ (मूढाःइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं तेपुरुष मूढहैं ॥ अर्थात् यहकार्य हमारेअर्थकासाधनहैं तथायहकार्य हमारेअनर्थ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कासाधनहै याप्रकारके इष्टअनिष्टकेविवेकतैंशून्यहैं ॥ तिसकारणतैं तेपुरुष सर्वदा पापकूंहींकरैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् शास्त्रप्रमाणकेविद्यमानहूए तेपुरुष तिसविवेककूं किसवासतै नहींकरतेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् क हेहै (माययापहृतज्ञानाःइति) शरीरइंद्रियादिकसंघातविषेतादात्म्यभ्रांतिरूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तभईजामायाहै ॥ तामायाकरिकै प्रतिबद्धहूआहै ताविवेककरणेकासामर्थ्यरूपज्ञानजिनोंका तिनोंकानाम माययाऽपहृतज्ञानाहै ॥ जिसकारणतैं तेपुरुष माययाऽपहृतज्ञानाहैं ॥ तिसकारणतैं तेपुरुष तिसकार्यअकार्यकेविवेककूंकरतेनहीं ॥ इसीका रणतैंहीं (दंभोदर्पोभिमानश्चक्रोधःपारुष्यमेवच) इत्यादिकवचनोंकरिकै आगेकथनकरणाजोआसुरभावहै ॥ तिसहिं साअनृतादिरूपआसुरस्वभावकूंहीं आश्रणकऱ्याहैजिनोंनैं ॥ इसप्रकार मैंपरमात्मादेवकेसाक्षात्कारकेअयोग्यहूए ते दुष्कृतीपुरुष मैंपरमेश्वरकूं भजतेनहीं ॥ यातैं तिनदुष्कृतीपुरुषोंका कोईआश्चर्यरूप दौर्भाग्यहै इति ॥ और किसीटी काविषेतौं इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ जिसकारणतैं तेपुरुष दुष्कृतीहैं तिसकारणतैं चित्तकीशुद्धिकेअभा वतैं तेपुरुष मूढहैं ॥ अर्थात् आत्मअनात्मविवेकतैंरहितहैं ॥ इसीकारणतैंहीं तेपुरुष मनुष्योंविषेअधमहैं ॥ ऐसेदुष्कृती नराधमपुरुष मैंपरमेश्वरकूंभजतेनहीं ॥ तेपुरुष दुष्कृतीक्युंहैं ॥ ऐसीशंकाकेहूए कहेहैं (माययाऽपहृतज्ञानाःइति) जिसकारणतैं अविद्यारूपमायाकरिकै तिनपुरुषोंका अखंडसंविदब्रह्मरूपज्ञान आच्छादितहोइगयाहै ॥ तिसकारणतैं तेपुरुष दुष्कृतीहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै मायाकीआवरणशक्ति कथनकरी ॥ पुनः कैसेहैंतेपुरुष ॥ आसुरभावकूं आश्रय णकऱ्याहैंजिनोंनैं ॥ अर्थात् यहदेहइंद्रियरूपसंघातहीं आत्माहै ऐसैंजिससंघातकूंहीं सर्वप्रकारतैंतृप्तकरणा इसप्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कारकाजो असुरविरोचनकेचित्तकाअभिप्रायहै ताकानाम आसुरभावहै ॥ ऐसेआसुरभावकूं आश्रयणकऱ्याहैजिनोंनैं ॥ इतनैंकहणेकरिकैतामायाकीविक्षेपशक्ति कथनकरी ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ इसमायानैंस्वरूपानंदकूंआवरणकरि कै उत्पन्नकऱ्याजो देहविषेआत्मत्वबुद्धिरूपभ्रमहै ॥ तादेहात्मअभिमानतैं तिनदेहादिकोंकीपुष्टिकरणेवासतै तेपुरुष अनेकप्रकारकेदुष्कृतोंकूंकरेहैं ॥ तिनपापकर्मोंकरिकै मूढहूए तथासर्वमनुष्योंविषेअधमहूए तेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं नहींभजेहैं ॥ यातैं यहअविद्यारूपमायाहीं सर्वअनर्थोंकामूलभूतहै इति ॥ १५ ॥ ※ ॥ किंवा जेपुरुष तिसआ सुरभावतैंरहितहैं ॥ तथा सर्वदा पुण्यकर्मवालेहैं ॥ तथाइष्टअनिष्टवस्तुकेविवेकवालेहैं ॥ तेपुरुष तिसपुण्यकर्मकी न्यूनअधिकताकरिकै च्यारिप्रकारकेहूए मैंपरमेश्वरकूंभजेहैं ॥ तथा यथाक्रमकरिकै कामनातैंरहितहूए तेपुरुष मैं परमेश्वरकेप्रसादतैं तिसमायाकूं तरेहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

चतुर्विधाभजंतेमांजनाःसुकृतिनोर्जुन॥आर्त्तोजिज्ञासुरर्थार्थीज्ञानीचभरतर्षभ १६॥

चतुर्विधाः। भजंते। मां। जनाः। सुकृतिनः। अर्जुन। आर्त्तः। जिज्ञासुः। अर्थार्थी। ज्ञानी। च। भरतर्षभ॥इतिपद० ॥

हेभरतवंशविषेश्रेष्ठ अर्जुन आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी तथा ज्ञानी यहच्यारि प्रकारके सुकृति जन मैंपरमेश्वरकूं भजेहैं ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेपुरुष सुकृतीहैं अर्थात् जिनपुरुषोंनैं पूर्वअनेकजन्मोंविषे पुण्यकर्मकासंचयकऱ्याहै ॥ तेपुरुषहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जनहैं ॥ अर्थात् सफलजन्मवालेहैं ॥ तिनोंतैंभिन्नपुरुष निष्फलजन्मवालेहींहैं ॥ ऐसेसुकृतीजनहीं मैंपरमेश्वरकूं भजेहैं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरका आराधनकरेहैं ॥ तेहमारेभजनकरणेहारेजनभी आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी ज्ञानी इसभेदकरिकैच्यारिप्रकारकेहींहोवैहैं ॥ तिनच्यारोंविषेभी आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी यहतीनतौं सकामहोवैहैं ॥ और एकज्ञानी निष्कामहोवैहै ॥ तहां शत्रुव्याघ्रादिरूपआपदाकानाम आर्त्तिहै ॥ ताआर्त्तिकरिकैजोग्रस्तहोवै ताकानाम आर्त्त है ॥ ऐसाआर्त्तजन ताआपदारूपआर्त्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै मैंपरमेश्वरकाआराधनकरेहै ॥ जैसे यज्ञकेभंगकरिकै क्रोधकूंप्राप्तहूआइंद्र व्रजभूमिविषे महान्वर्षाकरताभया ॥ ताकरिकैदुःखोहूए व्रजवासीजन मैंपरमेश्वरका आराधनकरतेभयेहैं ॥ तथा जैसे जरासंधराजाकेबंधनगृहविषेप्राप्तहूए सर्वराजे आर्त्तहोइकै मैंपरमेश्वरका आराधनकरतेभयेहैं ॥ तथा जैसे दुर्योधनकीसभाविषे वस्त्रोंकेउतारणेकरिकै आर्त्तहूईद्रौपदी मैंपरमेश्वरका आराधनकरतीभईहै ॥ तथा जैसे ग्राहकरिकैग्रस्तहूआ गजेंद्र आर्त्तहोइकै मैंपरमेश्वरका आराधनकरताभयाहै ॥ इसतैं आदिलैके दूसरेभीअनेकजन आर्त्तहोइकै मैंपरमेश्वरका आराधनकरतेभयेहैं इति ॥ और जिसपुरुषकूं सर्वदा आत्मज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छाहै ताकानाम जिज्ञासुहै ॥ सोजिज्ञासुभी ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै मैंपरमेश्वरका आराधनकरेहैं ॥ जैसे मुचुकुंद तथाजनकराजा तथाउद्धव इत्यादिकजिज्ञासुजन आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै मैंपरमेश्वरका आराधनकरतेभयेहैं इति ॥ और इसलोकविषेस्थित तथापरलोकविषेस्थित जेधनस्त्रीपुत्रादिक भोगकेसाधनहैं तिनोंकानाम अर्थहै ॥ ताअर्थकीइच्छाकरणेहारेपुरुषकानाम अर्थार्थीहै ॥ ऐसाअर्थार्थीजनभी ताधनादिरूपअर्थकीप्राप्तिवासतै मैंपरमेश्वर

॥ १७॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का आराधनकरेहै ॥ तहां सुग्रीव बिभीषण उपमन्यु इत्यादिक अर्थार्थीजनतौं इसलोककेभोगसाधनोंकीइच्छाकर तेहूए मैंपरमेश्वरकाआराधनकरतेभयेहैं ॥ और ध्रुवादिकअर्थार्थीजनतौं परलोककेभोगसाधनोंकोइच्छाकरतेहूए मैंप रमेश्वरकाआराधनकरतेभयेहैं इति ॥ तहां जैसे तत्त्ववेत्तापुरुष मायाकूंतरेहै ॥ तैसे आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी यहती नोंभी भगवत्केभजनकरिकै तामायाकूंतरेहैं ॥ तिनतीनोंविषेभी जिज्ञासुजनतौं आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरिकै साक्षा त्हीं तामायाकूंतरेहै ॥ और आर्त्त तथाअर्थार्थी यहदोनोंतौं जिज्ञासुपणेकूंप्राप्तहोइकैहीं तामायाकूंतरेहैं ॥ इतनीती नोंविषेविशेषताहै ॥ तहां आर्त्तकूं तथा अर्थार्थीकूं जिज्ञासुपणा संभवहोइसकेहै ॥ और जिज्ञासुकूंभी आर्त्तपणा तथा आ त्मज्ञानकेसाधनरूपअर्थोंकाअर्थीपणा संभवहोइसकेहै ॥ याकारणतैं श्रीभगवान्नैं आर्त्त अर्थार्थी यादोनोंकेमध्यवि षे जिज्ञासुका कथनकऱ्याहै ॥ इतनैंकरिकै आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी यातीनसकामभक्तोंका कथनकऱ्या ॥ अब चतुर्थनि ष्कामभक्तका कथनकरेहैं (ज्ञानीचइति) तहां सर्वत्रपरिपूर्ण अद्वितीय परमात्मादेव मैंहूं याप्रकारकाजो भगवत्के वास्तवस्वरूपकासाक्षात्कारहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिकैजोनित्ययुक्तहोवै ताकानाम ज्ञानीहै ॥ जोज्ञानो ति सज्ञानकरिकै मेरीमायाकूंतऱ्याहै ॥ तथा सर्वकामोंतैंरहितहै ॥ ऐसा ज्ञानीभी निरंतर मैंपरमात्मादेवका आराधन करेहै ॥ ईहां (ज्ञानीच) यावचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ सोचकार जिसीकिसीनिष्कामप्रेमभक्तका ताज्ञानीविषे अंतर्भाव बोधनकरणेवासतैंहै ॥ अर्थात् निष्कामप्रेमभक्तोंका ताज्ञानीविषेहीं अंतर्भावहै ॥ यातैं श्रीभगवान्कूं पंचप्र कारकेभक्तहीं कथनकरणेयोग्यथे याप्रकारकीन्यूनताशंका संभवैनहीं इति ॥ और (हेभरतर्षभ) यासंबोधनकरि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ तूंअर्जुनभी जिज्ञासुभक्तहैं अथवा ज्ञानीभक्तहैं ॥ यातैं तिनच्यारोंभक्तोंविषे मैंअर्जुन कौंनभक्तहूं याप्रकारकोशंका तुमनैं करणीनहीं इति ॥ तहां निष्कामज्ञानीभक्ततौं जैसेसनकादिकहैं तथा नारदहै तथाप्रल्हादहै तथापृथुराजाहै तथाशुकदेवहै इत्यादिकसर्व निष्कामज्ञानीभक्त होतेभयेहैं ॥ और निष्काम शुद्धप्रेमभक्ततौं जैसे व्रजवासीगोपिकाहैं तथाअक्रूरयुधिष्ठिरादिकहैं ॥ और कंसशिशुपालादिकतौं यद्यपि भयतैं अथवा द्वेषतैं निरंतर भगवत्काचिंतनकरतेभयेहैं ॥ तथापि तेकंसशिशुपालादिक भक्तकहेजावैनहीं ॥ जिसकारणतैं तिनकंसादिकोंकीपरमेश्वरविषे भगवत्अनुरक्तिरूपभक्ति हैनहीं ॥ तिसकारणतैं द्वेषभयतैं भगवत्काचिंतनकरतेहूएभी तेकंसादिक भगवत्भक्त कहेजावैनहीं इति ॥ १६ ॥ ※ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी ज्ञानी इनच्यारों विषे भगवाननैं सुकृतीपणा कथनकऱ्या ॥ यातैं श्रीभगवान्कूं तिनच्यारोंकी तुल्यताहीं अभिमतहोवैंगी ॥ ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ तिनच्यारोंविषे यद्यपि सुकृतीपणा निश्चितहींहै ॥ तथापि सुकृतकीअधिकताकरिकै प्राप्तहूई निष्कामताकरिकै प्रेमकी अधिकतातैं सोज्ञानीहीं सर्वतैंश्रेष्ठहै ॥ याप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

तेषांज्ञानीनित्ययुक्तएकभक्तिर्विशिष्यते॥प्रियोहिज्ञानिनोत्यर्थमहंसचममप्रियः१७॥

तेषां। ज्ञानी। नित्ययुक्तः। एकभक्तिः। विशिष्यते। प्रियः। हि। ज्ञानिनः। अत्यर्थं। अहं। सः। च। मम। प्रियः॥ इ०प०

हेअर्जुन तिनच्यारोंकेमध्यविषे नित्ययुक्त तथाएकभक्तिवाला ज्ञानी उत्कृष्टहै जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर तिसज्ञानीकूं अत्यंत प्रियहूं तथा सोज्ञानी मैंपरमेश्वरकूं अत्यंत प्रियहै ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

176

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी ज्ञानी इनच्यारिप्रकारकेभक्तोंकेमध्यविषे सर्वत्रपरिपूर्णअद्वितीयब्रह्मरूपमैंहूं याप्रकारकेतत्वज्ञानवालाजोज्ञानीहै ॥ जोज्ञानी सर्वकामनावोंतैंरहितहै ॥ सोज्ञानी सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ अब ताज्ञानीकीउत्कृष्टताविषे ताज्ञानीके हेतुगर्भितदोविशेषणकथनकरेहैं (नित्ययुक्तःएकभक्तिःइति) जिसकारणतैं सोज्ञानी नित्ययुक्तहै ॥ अर्थात् सर्वविक्षेपकेअभावतैं प्रत्यक्अभिन्नपरमात्मादेवविषे सर्वदा समाहितहैचित्तजिसका ताकानाम नित्ययुक्तहै ॥ नित्ययुक्तहोणेतैंहीं सोज्ञानी एकभक्तिहै ॥ अर्थात् एकप्रत्यक्अभिन्नपरमात्माविषेहींहै अनुरक्तिरूपभक्तिजिसकी अन्यकिसीविषे साभक्ति जिसकीहैनहीं ताकानाम एकभक्तिहै॥ इसप्रकार नित्ययुक्तहोणतैंतथाएकभक्तिहोणेतैं सोज्ञानवान् सर्वतैंश्रेष्ठहै॥ अब ताएकभक्तिपणेविषेहेतुकहेहैं (प्रियोहिइति) जिसकारणतैं तिसज्ञानवान्पुरुषकूं मैंप्रत्यक्अभिन्नपरमात्मादेव अत्यंतप्रियहूं ॥ अर्थात् निरुपाधिकप्रीतिकाविषयहूं ॥ तिसकारणतैं सोज्ञानवान्पुरुष एकभक्तिहै ॥ इसकारणतैं सोज्ञानवान्पुरुषभी मैंपरमेश्वरकूं अत्यंत प्रियहै ॥ काहेतैं आपणाआत्मा अत्यंत प्रियहोवैहै यहवार्त्ता श्रुतिविषे तथालोकविषे प्रसिद्धहींहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इस श्लोकका यहअर्थ कऱ्याहै॥ तिनच्यारोंकेमध्यविषे एकज्ञानीहींश्रेष्ठहै॥ जिसकारणतैं सोज्ञानी नित्ययुक्तहै ॥ अर्थात् सर्वदा हमारेभजनविषेयुक्तहै ॥ और आर्त्तादिकसकामभक्ततौं जबपर्यंत कामनाकीपूर्णतानहींभई तबपर्यंतहीं मेरे भजनविषेयुक्तहोवैहैं ॥ कामनाकीपूर्णतातैंअनंतर मेरेभजनविषेयुक्तहोवैनहीं॥ यातैं तेआर्त्तादिकभक्त नित्ययुक्त कहेजावैनहीं॥ तथा सोज्ञानी एकभक्तिहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकाहीं एकभावकरिकैभजनकरेहै ॥ अन्यकिसीका भज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नकरैनहीं ॥ और आर्त्तादिकतौं एकभावकरिकैभजनकूंकरतेनहीं ॥ तहां रोगग्रस्तआर्त्तपुरुषतौं सूर्यकाभजनकरे हैं ॥ और जिज्ञासुजन सरस्वतीकाभजनकरेहैं ॥ और अर्थार्थीपुरुष कुबेरादिकोंकाभजनकरेहैं ॥ इसप्रकार तिनआ र्त्तादिकोंविषे तिसतिसकामकीप्राप्तिवासतै अनेकोंकीभक्ति देखणेविषेआवैहै ॥ अब तिसज्ञानीपुरुषकेनित्ययुक्तपणे विषे तथाएकभक्तिपणेविषे हेतुकहेहैं (प्रियोहिइति) जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर तिसज्ञानवान्पुरुषकूं अत्यंतप्रियहूं ॥ काहेतैं मैंपरमेश्वर तिसज्ञानवान्पुरुषका आत्मारूपहींहूं ॥ और आपणाआत्मा निरुपाधिकप्रीतिकाविषयहोणे तैं सर्वकूं प्रियहींहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ प्रीतिदोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौं सोपाधिकप्रीतिहोवैहै ॥ और दूसरीनिरु पाधिकप्रीतिहोवैहै ॥ तहां जाप्रीति जिसवस्तुविषे अन्यवासतैहोवैहै साप्रीति सोपाधिकप्रीति कहीजावैहै ॥ जैसे आपणेआत्माकेसुखवासतै स्त्रीपुत्रधनादिकोंविषे प्रीतिहै ॥ और जाप्रीति जिसवस्तुविषे किसीअन्यवासतै नहींहो वैहै ॥ साप्रीति निरुपाधिकप्रीति कहोजावैहै ॥ जैसे आपणेआत्माविषेप्रीति अन्यकिसीवासतैहैनहीं ॥ यातैं सा आत्मविषयकप्रीति निरुपाधिकप्रीतिहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तदेतत्प्रेयःपुत्रात्प्रेयोवित्तात्प्रेयोऽन्यस्मात्सर्वस्मादंतरतरंयदय मात्माइति ॥) अर्थयह ॥ बुद्धिआदिकसर्वसंघाततैंअंतर जोयहआत्मादेवहै ॥ सोयहआत्मादेव पुत्रतैंभी अत्यंतप्रिय है ॥ तथा धनतैंभी अत्यंतप्रियहै ॥ तथा अन्यसर्वपदार्थोंतैंभी अत्यंतप्रियहै इति ॥ और ऐसानिष्कामज्ञानीभक्त अत्यंतदुर्लभहै तथामैंपरमेश्वरकाआत्मारूपहै ॥ यातैं सोज्ञानीपुरुष मैंपरमेश्वरकूंभी अत्यंतप्रियहै इति ॥ १७ ॥

॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् (सचममप्रियः) इसआपकेवचनतैं यहजान्याजावैहै ॥ जोएकज्ञानीभक्तहीं आ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पकूंप्रियहै ॥ दूसरे आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी यहतीनोंभक्त आपकूं प्रियनहींहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ तेआर्त्तादिकभक्तभीहमारेकूं प्रियहींहैं ॥ परंतु तेआर्त्तादिकभक्त हमारेकूं अत्यंतप्रियनहींहैं ॥ और ज्ञानवान्भक्ततौं हमाराआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै ॥ याप्रकारकाउत्तर श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

उदाराःसर्वएवैतेज्ञानीत्वात्मैवमेमतं॥आस्थितःसहियुक्तात्मामामेवानुत्तमांगतिं १८॥

उदाराः। सर्वे। एव। एते। ज्ञानी। तु। आत्मा। एव। मे। मतं। आस्थितः। सः। हि। युक्तात्मा। माम्। एव। अनुत्तमां। गतिं। इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन यह आर्त्तादिकतीनोंभी उत्कृष्टहींहै परंतु ब्रह्मज्ञानीतौं हमारा आत्मा हींहैं याप्रकारका मैंपरमेश्वरका निश्चयहै जिसकारणतैं सोब्रह्मज्ञानी मैंपरमेश्वरविषे समाहित चित्तवालाहूआ मैंपरमेश्वरकूंहीं सर्वतैंउत्कृष्ट परमफलरूप अंगीकारकरेहै॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ ॥ हेअर्जुन आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी यहतीनों हमारेभक्त यद्यपि सकामहैं ॥ तथापि हमारीभक्तितैंरहितप्राणीयोंतैं तेतीनोंभक्त उत्कृष्टहींहैं ॥ काहेतैं पूर्वजन्मोंविषे तिनपुरुषोंनैं अनेकसुकृतकरेहैं ॥ जिसकरिकै इसजन्मविषेतौं तिनोंकूं हमारीभक्तिप्राप्तभईहै ॥ पूर्वसुकृतोंतैंविना साहमारीभक्ति प्राप्तहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् तिनोंके पूर्वलेजन्मोंके अनेकसुकृत नहींहोवैं तौंतेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं कदाचित्भी भजैनहीं ॥ जिसकारणतैं इसलोकविषे मैंपरमेश्वरतैंबहिर्मुखहूए कितनैंकी आर्त्त तथाजिज्ञासुअर्थार्थी अन्यक्षुद्रदेवतावोंकाहीं भजनकरतेहूए देखणेविषेआवैहैं ॥ या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तैं इसजन्मविषे मैंपरमेश्वरकेभजनतैं तिनपुरुषोंके पूर्वलेजन्मोंकेसुकृत अनुमानकऱ्येजावैहैं ॥ ऐसे पूर्वजन्मोंकेपुण्य कर्मोंकेप्रभावतैं मैंपरमेश्वरकाभजनकरणेहारे जेआर्त्तजिज्ञासुअर्थार्थीपुरुषहैं ॥ तेतीनोंभी हमारेकूं प्रियहींहैं ॥ कोई भीहमाराभक्त ज्ञानवान् अथवाअज्ञानी हमारेकूं अप्रियनहींहैं ॥ परंतु जिसपुरुषकी जिसप्रकारकी मैंपरमेश्वरविषे प्रीतिहैं ॥ मैंपरमेश्वरकीभी तिसपुरुषविषे तिसीप्रकारकीप्रीतिहोवैहै ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकविषे स्वभावसिद्धहींहै ॥ तहां आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी यातीनोंसकामभक्तोंकूंतौं केवल मैंपरमेश्वरहीं प्रियहोवउनहीं ॥ किंतु कामनाकेविषय पदार्थभी प्रियहोवैहैं तथामैंपरमेश्वरभी प्रियहोवउहूं ॥ और ज्ञानवान्पुरुषकूंतौं मैंपरमेश्वरतैंविना दूसराकोईभीपदार्थ प्रियहोवैनहीं ॥ किंतु तिसज्ञानवान्पुरुषकूं एकमैंपरमेश्वरहीं निरतिशयप्रीतिकाविषयहूं ॥ इसकारणतैं सोनिष्कामज्ञानीभक्तभी मैंपरमेश्वकूं निरतिशयप्रीतिकाविषयहै ॥ जोकदाचित् मैंपरमेश्वर तिसज्ञानवान्भक्तविषे निरतिशयप्रीति नहींकरौंगा ॥ तौं मैंपरमेश्वरविषे कृतज्ञता नहींसिद्धहोवैंगी ॥ तथा कृतघ्नता प्राप्तहोवैंगी ॥ यातैं आपणेविषे ताकृतज्ञताकीसिद्धिवासतै तथाकृतघ्नताकीनिवृत्तिकरणेवासतै मैंपरमेश्वरभी ताज्ञानीभक्तविषे निरतिशयप्रीतिकरूंहूं ॥ इसीकारणतैंहीं पूर्वश्लोकविषे (अत्यर्थं) यहविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ जैसे (यदेवविद्ययाकरोतिश्रद्धयोपनिषदातदेववीर्यवत्तरंभवति) इसश्रुतिविषे विद्याश्रद्धादिकोंकरिकैकऱ्येहूएकर्मकूं वीर्यवत्तर कथनकऱ्याहै ॥ ईहां वीर्यवत्तरं यावचनकेअंतविषेस्थितजो तर प्रत्ययहै ॥ ताका अतिशयतारूपअर्थहीं विवक्षितहै ॥ ताकरिकैयहअर्थसिद्ध होवैहै ॥ विद्यादिकोंकरिकैकऱ्याहूआकर्मतौं अतिशयकरिकैवीर्यवालाहोवैहै ॥ और तिनविद्यादिकोंतैंविना कऱ्याहू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आकर्मभी वीर्यवालातौंहोवैहींहै ॥ तैसे ज्ञानवान्भक्त मैंपरमेश्वरकूं (अत्यर्थंप्रियः) इसभगवान्केवचनविषेस्थित जो अत्यर्थं यहपदहै ताका अतिशयतारूपअर्थहीं विवक्षितहै ताकरिकै यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ ज्ञानवान्पुरुषतौं मैंपरमेश्वरकूं अतिशयकरिकैप्रियहै ॥ और ताज्ञानतैंरहित आर्त्तादिकभक्तभी मैंपरमेश्वरकूं प्रियतौंहैंहीं ॥ इसीअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान्नैं ताज्ञानवान्विषे अत्यर्थं यहविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ तथा इसीअर्थकूं श्रीभगवान् (येयथामांप्रपद्यंतेतांस्तथैवभजाम्यहं) इसवचनकरिकै आपहीं कथनकरताभयाहै ॥ इसकारणतैं मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानणेहारा सोज्ञानवान्भक्त मैंपरमेश्वरकाआत्मारूपहींहै ॥ मैंपरमेश्वरतैं सोज्ञानवान्भक्त भिन्ननहींहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ॥) अर्थयह ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणेआत्मातैंअभेदरूपकरिकै ब्रह्मकूंजानणेहारा ब्रह्मवेत्ताज्ञानीपुरुष ब्रह्मरूपहींहोवैंहैइति ॥ इसप्रकारका मैंपरमेश्वरका निश्चयहै ॥ ईहां (ज्ञानोतु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द सकाम तथाभेददर्शी आर्त्तादिकतोनभक्तोंकोअपेक्षाकरिकै ताज्ञानवान्भक्तविषे निष्कामतारूप तथाअभेददर्शित्वरूप विशेषताके बोधनकरणेवासतैंहै ॥ अब ताज्ञानीकेआत्मरूपताविषे श्रीभगवान् हेतुकहेहै (सहियुक्तात्माइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं सोज्ञानवान्भक्त युक्तात्माहूआ अर्थात् मैंहीं भगवान्वासुदेवहूं याप्रकार अभेदरूपकरिकै मैंपरमेश्वरविषे सर्वदा समाहितचित्तवालाहूआ मैंआनंदघनपरमेश्वरकूंहीं सर्वतैंउत्कृष्ट परमफलरूपकरिकै अंगीकारकरताभयाहै ॥ मैंपरमात्मादेवतैंभिन्न दूसरेकिसीफलकूं सोज्ञानवान्पुरुष मानतानहीं ॥ यातैं सोब्रह्मज्ञानीपुरुष मैंपरमेश्वरका आत्मारूपहींहै इति ॥ १८ ॥ ❋ ॥ हेअर्जुन जिसकार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

णतैं सोज्ञानवान्पुरुष मैंपरमेश्वरकूंहीं परमफलरूपकरिकैमानेहै ॥ तिसकारणतैं सोज्ञानवान् मैंपरमेश्वरकूंहीं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ तथा सोज्ञानवान्पुरुषहीं अत्यंतदुर्लभहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

बहूनांजन्मनामंतेज्ञानवान्मांप्रपद्यते ॥ वासुदेवःसर्वमितिसमहात्मासुदुर्लभः ॥ १९ ॥

बहूनां । जन्मनां । अंते । ज्ञानवान् । मां । प्रपद्यते । वासुदेवः । सर्वं । इति । सः । महात्मा । सुदुर्लभः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन सोज्ञानवान्पुरुष बहुत जन्मोंके अंतविषे यहसर्वजगत् वासुदेवरूपहींहै याप्रकारकेज्ञानवालाहूआ मैंपरमेश्वरकूं अभेदरूपकरिकै भजेहै सो महात्मा अत्यंतदुर्लभहै ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन किंचित्किंचित्पुण्यकेसंपादनकाहेतुरूप जेपूर्ववितीतहूएबहुतजन्महैं ॥ तिनबहुतजन्मोंकेअंतविषे अर्थात् सर्वसुकृतोंकेफलभूत अंत्यजन्मविषे सोज्ञानवान्पुरुष यहसर्वजगत् वासुदेवरूपहै याप्रकारकेज्ञानवालाहूआ निरुपाधिकप्रीतिकाविषयरूप मैंपरमेश्वरकूंहीं सर्वदा संपूर्णप्रेमकाविषयरूपकरिकै भजेहै ॥ काहेतैं मैं तथा यहसर्वजगत् परमेश्वरवासुदेवरूपहींहै याप्रकारकीदृष्टिकरिकै तिसज्ञानवान्पुरुषकेसर्वप्रेमोंका मैंपरमेश्वरविषेहीं परिअवसानहोवैहै ॥ इसीकारणतैं सोज्ञानपूर्वकहमारीभक्तिकरणेहारा विद्वान्पुरुष महात्माहै ॥ अर्थात् अत्यंतशुद्धअंतःकरणवालाहोणेतैं सोजीवन्मुक्तपुरुष सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ तिसजीवन्मुक्तविद्वान्केसमान दूसराकोईहैनहीं ॥ जबीताजीवन्मुक्तपुरुषके समानभी कोईनहींभया ॥ तबो ताजीवन्मुक्तपुरुषतैं अधिक कहांतैंहोवैंगा ॥ इसीकारणतैं सो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जीवन्मुक्तविद्वान्पुरुष सुदुर्लभहै ॥ अर्थात् सोविद्वान्पुरुष अनेकसहस्रमनुष्योंविषे दुःखकरिकैभी प्राप्तहोणेकूंअश
क्यहै ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषकोदुर्लभता (मनुष्याणांसहस्रेषु) इसवचनविषे श्रीभगवान्नैं स्पष्टकरिकैकथनकरीहै ॥
यातैं सोजीवन्मुक्तपुरुष मैंपरमेश्वरकूं निरतिशयप्रीतिकाविषयहै यहपूर्वउक्तअर्थ युक्तहींहै इति ॥ १९ ॥ * ॥ तहां
(तेषांज्ञानीनित्ययुक्तएकभक्तिर्विशिष्यते) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आर्त्तादिकतीनभक्तोंको अपेक्षाकरिकै
ज्ञानवान्भक्तके उत्कृष्टताको प्रतिज्ञाकरीथी ॥ साप्रतिज्ञा इतनैंपर्यंत सिद्धकरी ॥ और सकामत्व तथाभेददर्शित्व
यादोंनोंकेसमानहूएभी दूसरेदेवतावोंकेभक्तोंकीअपेक्षाकरिकै मैंपरमेश्वरके आर्त्तादिकतीनोंभक्त उत्कृष्टहैं ॥ या
प्रकारकी जाप्रतिज्ञा श्रीभगवान्नैं (उदाराःसर्वएवैते) इसवचनकरिकै पूर्वकथनकरीथी ॥ अब इससप्तमअध्याय
कीसमाप्तिपर्यंत श्रीभगवान् तिसप्रतिज्ञाकोसिद्धिकरेहै ॥ ईहां परमकृपालु श्रीभगवान्का यहअभिप्रायहै ॥ हमारे
आर्त्तादिकतीनभक्तोंविषे तथाअन्यदेवतावोंके आर्त्तादिकभक्तोंविषे यद्यपि आयास तथासकामत्व तथाभेददर्शित्व
इत्यादिक धर्मसमानहींहैं ॥ तथापि मैंपरमेश्वरकेभक्ततौं भूमिकावोंकेक्रमकरिकै सर्वतैंउत्कृष्ट मोक्षरूपफलकूंहीं प्रा
प्तहोवैहैं ॥ और क्षुद्रदेवतावोंकेभक्ततौं पुनः पुनः जन्ममरणकोप्राप्तिरूप क्षुद्रफलकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं
सर्वआर्त्तभक्त तथाजिज्ञासुभक्त तथाअर्थार्थीभक्त मैंपरमेश्वरकेशरणागतकूंप्राप्तहोइकै विनाहींआयासतैं सर्वतैं
उत्कृष्टमोक्षरूपफलकूं प्राप्तहोवैं इति ।तहां मोक्षरूपपरमपुरुषार्थरूपफलकोप्राप्तिकरणेहारा जोमैंपरमेश्वरकाभजन
है ॥ तामेरेभजनकोउपेक्षाकरिकै क्षुद्रफलकोप्राप्तिकरणेहारे क्षुद्रदेवतावोंकेभजनविषे जोलोकोंकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ताप्रवृत्तिविषे पूर्वलेसंस्काररूपवासनाविशेषहीं असाधारणकारणहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाःप्रपद्यंतेन्यदेवताः॥तंतंनियममास्थायप्रकृत्यानियताःस्वया२०॥

कामैः। तैः। तैः। हृतज्ञानाः। प्रपद्यंते। अन्यदेवताः। तं। तं। नियमं। आस्थाय। प्रकृत्या। नियताः। स्वया ॥ इतिप०॥

हेअर्जुन तिन तिन कामनावोंकरिकै मैंपरमेश्वरतैंविमुखहूआहैअंतःकरणजिनोंका ऐसेपुरुष आपणी पूर्ववासनारूपप्रकृतिनैं वशिकऱ्येहूए तिसं तिसं नियमंकूं आश्रयणकरिकै अन्यदेवतावोंकूं भजेहैं॥२०॥इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मारण मोहन उच्चाटन स्तंभन आकर्षण वशीकरण इत्यादिकोंकूंविषयकरणेहारे जेअभिलाषारूपकामहैं ॥ जिनकामोंके मारणमोहनादिकविषय भगवत्कीसेवाकरिकै प्राप्तहोणेकूं लोकोंनैं अशक्यमानेहैं ॥ ऐसेक्षुद्रअभिलाषारूपजेकामहैं ॥ तिनतिनकामोंकरिकै अपहृतहूआहै क्या भगवान्वासुदेवतैंविमुखकरिकै तिसतिसमारणादिकफलकादातारूपकरिकैमान्येहूएक्षुद्रदेवतावोंकेअभिमुखकऱ्याहूआहै ज्ञान क्या अंतःकरण जिनोंका तिनोंकानाम हृतज्ञानाहै ॥ ऐसे मैंपरमेश्वरतैंबहिर्मुखपुरुष मैंपरमेश्वरतैंअन्य क्षुद्रदेवतावोंकूं तिसतिसदेवताकेआराधनविषेप्रसिद्धजे जप उपवास प्रदक्षिणा नमस्कार इत्यादिकनियमहैं तिसतिसनियमकूंआश्रयणकरिकै तिसतिस मारणमोहनादिकक्षुद्रफलकेप्राप्तिकीइच्छाकरिकै भजेहैं ॥ तिनक्षुद्रदेवतावोंकेमध्यविषेभी केईकपुरुष पूर्वअभ्यासजन्य आपणीआपणी असाधारणवासनाकेवशहूए किसीदेवताकूंहीं भजेहैं इति ॥ २० ॥ ※ ॥ शंका ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेभगवन् जेपुरुष अन्यक्षुद्रदेवतावोंका भजनकरेहैं ॥ तिनपुरुषोंकूंभी तिसतिसदेवताकेप्रसादतैं सर्वकेईश्वररूप भगवान्वासुदेवविषे अवश्यकरिकै भक्तिहोवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

योयोयांयांतनुंभक्तःश्रद्धयार्चितुमिच्छति॥तस्यतस्याचलांश्रद्धांतामेवविदधाम्यहं॥

यः१। यः२। यां३। यां४। तनुं५। भक्तः६। श्रद्धया७।अर्चितुं८। इच्छति९। तस्य१०। तस्य११। अचलां१२।श्रद्धां१३।तां१४। एव१५। विदधामि१६।अहं१७॥इतिप०

हेअर्जुन जो जो सकामपुरुष भक्तियुक्तहूआ जिसं जिसं देवतामूर्तिकूं श्रद्धाकरिकै अर्चनकरणेकूं प्रवृत्तहोवैहै तिसं तिसंपुरुषकी तिसं देवतामूर्तिप्रति हीं स्थिर भक्तिकूं मैंअंतर्यामी करूंहूं ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तिनअन्यदेवतावोंकेभजनकरणेहारेपुरुषोंकेमध्यविषे जोजोसकामपुरुष भक्तिकरिकैयुक्तहूआ जिसजिसदेवतामूर्तिकूं पूर्वलेजन्मकीवासनावोंकेबलतैं प्रादुर्भूतहूईश्रद्धाकरिकै अर्चनकरणेवासतै प्रवृत्तहोवैहै ॥ तिसतिस सकामपुरुषकी तिसतिसदेवतामूर्त्तिविषेहीं पूर्ववासनावोंकेवशतैं प्राप्तहूई भक्तिरूपश्रद्धाकूं मैंअंतर्यामी स्थिर करूंहूं ॥ तिसपुरुषकी तिसदेवतातैं श्रद्धाहटाइकै आपणेविषे तिसकीश्रद्धाकूंमैं करावतानहीं इति ॥ ईहां किसीटीकाविषे (तां) इसपदकरिकै श्रद्धाकाहीं ग्रहणकऱ्याहै ॥ परंतु इसव्याख्यानविषे पूर्वकथनकऱ्येहूए (यांयां) इसदेवतावाचक यत्शब्दका अन्वयनहींहोवैंगा ॥ अथवा तत् इसशब्दकाअध्याहारकरिकैहीं तायत्शब्दकाअन्वयहोवैंगा ॥ काहेतैं यत्शब्दकूं तत्शब्दकीआकांक्षा अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यातै ईहां तां इसशब्दकेआगेप्रति इसशब्दकाअध्या

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हारकरिकै तां इसशब्दकरिकै पूर्व (यांयां) इसयत्शब्दउक्तदेवताकाहीं परामर्शकऱ्याहै इति ॥ २१ ॥ ※ ॥ किंच

सतयाश्रद्धयायुक्तस्तस्याराधनमीहते॥लभतेचततःकामान्मयैवविहितान्हितान्२२॥

सः। तया। श्रद्धया। युक्तः। तस्य। आराधनं। ईहते। लभते। च। ततः। कान्। मान्। मया। एव। विहितान्। हि। तान् ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन सोसकामपुरुष तिस श्रद्धाकरिकै युक्तहूआ तिसोदेवतामूर्तिकरिकै पूजनकूं करेहै तथा तिसोदेव तामूर्तितैं मैंपरमेश्वरनैं हीं रच्येहूए पूर्वसंकल्पित कामोंकूं प्रसिद्ध प्राप्तहोवैहै ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तिनमारणमोहनादिकअर्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरताहूआ सोसकामपुरुष मैंपरमेश्वरनैं तिसतिसदेवताविषे स्थिरकरीहूईश्रद्धाकरिकैयुक्तहूआ तिसोदेवतामूर्त्तिकाहीं पूजनकरेहै ॥ तादेवतामूर्तिकूंछोडिकै मैंपरमेश्वरका पूजनकरैनहीं ॥ तापूजनकरिकै सोसकामपुरुष तिसोदेवताकीमूर्तितैंहीं पूर्वसंकल्पकरयेहूए मारणमोहनादिककाम्यमानपदार्थोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जबी तेअन्यदेवताभी आपणेआपणेभक्तजनोंकेप्रति तिसतिसकर्मकेफलदेणेविषे स्वतंत्रहींहूए ॥ तबी आपपरमेश्वरविषे सर्वकर्मोंकेफलकादातापणा सिद्धनहींहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (मयैवविहितान् इति) हेअर्जुन सर्वजीवोंकेपुण्यपापकर्मोंकूंजानणेहारा तथातिनसर्वकर्मोंकेफलकाप्रदाता तथातिनसर्वदेवतावोंकाअंतर्यामी ऐसाजो मैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरनैंहीं तिसतिसकर्मकेफलविपाकसमयविषे तेमारणमोहनादिकअर्थ उत्पन्नकरेहैं ॥ मैंपरमेश्वरतैंविना तेदेवता तिसतिस अर्थकेउत्पन्नकरणे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषे समर्थहैंनहीं ॥ ऐसे मैंअंतर्यामीपरमेश्वरनैं उत्पन्नकरयेहूए तिनमारणमोहनादिकअर्थोंकूंहीं तेसकामपुरुष तिस तिसदेवतातैं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं मैंअंतर्यामोपरमेश्वरहीं साक्षात् अथवा किसोअन्यद्वारा सर्वकर्मोंकेफलकाप्रदाता हूं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं सर्वदेवतावोंविषे आपणोआज्ञाकेवशवर्तिपणा बोधनकऱ्या इति ॥ अथवा मूल श्लोकविषे (हितान्) यहएकहींपद जानणा ॥ अर्थात् वास्तवतैं अहितरूपहूएभो तेमारणमोहनादिकअर्थ तिनसकामपुरुषोंकूं हितरूपकरिकैप्रतीतहूएहैं इति ॥ २२ ॥ ※ ॥ यद्यपि तेसर्वहींदेवता सर्वात्मारूप मैं परमेश्वरकीहीं मूर्तिहैं ॥ यातैं तिनदेवतावोंकाआराधनभो वास्तवतैं मैंपरमेश्वरकाहीं आराधनहै ॥ तथासर्वत्र फलप्रदाताभो मैं अंतर्यामोईश्वरहीं हूं॥तथापि साक्षात् मैंपरमेश्वरके भक्तोंकूं तथाअन्यदेवतावोंकेभक्तोंकूं जोविषमफलकीप्राप्तिहोवैहै॥सोवस्तुकेविवेककरिकै तथावस्तुकेअविवेककरिकैहीं होवैहै॥तहां मैंपरमेश्वरकेभक्तोंविषेतौं सोवस्तुकाविवेकरहेहै ॥ और अन्यदेवतावोंकेभक्तोंविषे सोवस्तुकाअविवेकरहेहै ॥ याकारणतैंहीं तिनोंकूं विषमफलकोप्राप्तिहोवैहै॥इस अर्थकूं अत्र श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

अंतवत्तुफलंतेषांतद्भवत्यल्पमेधसां ॥ देवान्देवयजोयांतिमद्भक्तायांतिमामपि॥२३॥

अंतवत्[6]। तु[5]। फलं[4]। तेषां[3]। तत्[2]। भवति[1]। अल्पमेधसां[2]। देवान्[3]। देवयजः[4]। यांति[11]। मद्भक्ताः[12]। यांति[13]। मां[14]। अपि[15] ॥ इतिपद०

हेअर्जुन तिन[1] अल्प[2]बुद्धिवालेपुरुषोंका सो फल[4] नाशवान्[6] हीं[5] होवैहै जिसकारणतैं देवतावोंकेआराधनकरणेहारेपुरुष तिनदेवतावोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं[11] और मैंपरमेश्वरकेभक्त[12] मैंपरमेश्वरकूं[13] हीं[14] प्राप्तहोवैहैं[15] ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अल्पहैबुद्धिरूपमेधाजिनोंको अर्थात् मंदताकरिकै यथार्थवस्तुकेविवेककरणेविषे असमर्थहैबुद्धिरूप मेधाजिनोंकी तिनोंकानाम अल्पमेधस्है ॥ ऐसेजे तिसतिसदेवताकेभक्तहैं ॥ तिन अन्यदेवतावोंकेभक्तोंकूं यद्यपि में अंतर्यामीपरमेश्वरनैंहीं तिसतिसदेवताकेआराधनजन्य सोसोफल प्राप्तकऱ्याहै ॥ तथापि सोतिनोंकाफल नाशवान् हींहोवैहै ॥ अर्थात् परमार्थवस्तुकेविवेककरणेहारे मैंपरमेश्वरकेभक्तोंका मोक्षरूपफल जैसे नाशतैंरहितहोवैहै ॥ तैसे तिनअन्यदेवतावोंकेभक्तोंका सोमारणमोहनादिरूपफल नाशतैंरहितहोवैनहीं ॥ किंतु सोफल नाशवान्हींहोवैहै ॥ परमार्थवस्तुकेविवेकतैंरहितपुरुषोंकूं कर्मोतैं नाशवान्फलकीहींप्राप्तिहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (योवाएतदक्षरंगार्ग्यऽविदित्वाऽस्मिँल्लोकेजुहोतियजतेतपस्तप्यतेबहूनिवर्षसहस्त्राण्यंतवदेवास्यतद्भवति) ॥ अर्थयह ॥ हेगार्गी जोपुरुष इसअक्षरपरमात्मादेवकूं नजानिकरिकै इसलोकविषे होमकरेहै तथायज्ञकरेहै तथा अनेकसहस्त्रवर्षपर्यंत तपकरेहै ॥ तेसर्वकर्म इसपुरुषकूं नाशवान्फलकीहीं प्राप्तिकरेहैं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् अ न्यदेवतावोंकेभक्तोंकूंतौं नाशवान्फलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और तुमारेभक्तोंकूंतौं अविनाशीफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ याके विषेकौंनकारणहै ॥ ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् ताकेविषेकारणकूंकहेहै ॥ (देवान्देवयजःइति) हेअर्जुन मैंपरमेरश्वरतैंअन्य इंद्रादिकदेवतावोंका आराधनकरणेहारे तेसकामपुरुष तिन नाशवान्इंद्रादिकदेवतावोंकूंहीं प्रा प्तहोवैहैं ॥ मैंपरमेश्वरकूं तेपुरुष प्राप्तहोवैंनहीं ॥ इसप्रकार यक्षराक्षसोंकेभक्त तिनयक्षराक्षसोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ त था भूतप्रेतोंकेभक्त तिनभूतप्रेतोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तहां इंद्रादिकदेवता तथातिनोंकेभक्त यहदोनों सात्विकहैं ॥ और

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यक्षराक्षस तथातिनोंकेभक्त यहदोनों राजसहै ॥ और भूतप्रेत तथातिनोंकेभक्त यहदोनों तामसहैं ॥ जोजोपुरुष जि
सजिसका आराधनकरेहै ॥ सोसोपुरुष तिसतिसकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रु
ति ॥ (कर्मणापितृलोकोविद्ययादेवलोकः ॥ देवोभूत्वादेवानप्येति) ॥ अर्थयह ॥ पितृसंबंधीकर्मकरिकै इसपुरुषकूं पि
तृलोक प्राप्तहोवैहै ॥ और देवतावोंकोउपासनाकरिकै इसपुरुषकूं देवलोक प्राप्तहोवैहै इति ॥ और तिसतिसदेवता
काआराधनकरणेहारापुरुष तिसतिसदेवताभावकूंप्राप्तहोइकै तिसतिसदेवताकेलोककूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इत्यादिकश्रु
तिवचन तिसतिसदेवताकेआराधनकरणेहारेपुरुषकूं तिसतिसदेवताकीप्राप्ति कथनकरेहैं ॥ और जेआर्त्तादिकतीनभ
क्त साक्षात् मैंपरमेश्वरकाहीं आराधनकरेहैं ॥ तेतीनोंभक्ततौं मैंपरमेश्वरकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ ईहां (मामपि) यावचन
विषेस्थितजो अपि यहशब्दहै ॥ ताअपिशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ तेहमारे आर्त्तादिकतीन
सकामभक्त प्रथमतौं मैंपरमेश्वरकेप्रसादतैं तिसतिस मनवांछितपदार्थोंकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर मैंपरमेश्वरकी
उपासनाकेपरिपाकतैं मैंअनंतआनंदघनपरमेश्वरकूंभी प्राप्तहोवैहैं इति ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ मैंपरमेश्वरके आ
र्त्तादिकतीनभक्तोंविषे तथाअन्यदेवतावोंके आर्त्तादिकभक्तोंविषे सकामताकेसमानहूएभी नित्यफलकीप्राप्तिकरिकै
तथाअनित्यफलकीप्राप्तिकरिकै तिनदोनोंका महान्भेदहै ॥ यातैं (उदाराः सर्वएवैते) यहपूर्वउक्त भगवान्कावचन
युक्तहै इति ॥ यद्यपि परमेश्वरकेआर्त्तादिकतीनसकामभक्तोंकूं आपणीआपणीकामनाकेअनुसार जो दुःखकोनिवृत्ति
तथावांछितअर्थोंकीप्राप्ति इत्यादिक सांसारिकफल प्राप्तहोवैहै ॥ सोसांसारिकफल अनित्यहींहै ॥ तथापि तापरमे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्वरकेआराधनका परमफलजोमोक्षहै सोनित्यहै ॥ तामोक्षरूपफलकेअभिप्रायकरिकैहीं तिनपरमेश्वरकेभक्तोंकूं नि
त्यफलकीप्राप्ति कथनकरीहै इति ॥ ईहां किसीटीकाविषे (अल्पमेधसां) यावचनकायहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ अल्पे
मेधायेषां ॥ अर्थयह ॥ श्रुतिनैं अल्पशब्दकरिकैकथनकऱ्याजोयहद्वैतप्रपंचहै ताअल्पद्वैतविषेहैबुद्धिरूपमेधाजिनोंको
तिनोंकानाम अल्पमेधस्है ॥ अर्थात् बाह्यअर्थोंकीअभिलाषाकरणेहारेपुरुषोंकानाम अल्पमेधस्है ॥ तहांश्रुति ॥
(अथयत्रान्यत्पश्यत्यन्यच्छृणोतिअन्यन्मनुतेऽन्यद्विजानातितदल्पं) ॥ अर्थयह ॥ जिसद्वैतभावविषे यहपुरुष अन्यवस्तु
कूंदेखेहै तथाअन्यवस्तुकूंश्रवणकरेहै तथाअन्यवस्तुकूंमननकरेहै तथाअन्यवस्तुकूंजानेहै सोसर्वद्वैतप्रपंच अल्पहै
इति ॥ २३ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोसाक्षात्भगवत्काभजन जोकदाचित् नाशतैंरहित उत्तमफलकीप्रा
प्तिकरताहोवै ॥ तौं इसलोकविषे विशेषकरिकै यहमनुष्य तिसभगवत्तैंविमुख किसकारणतैंहोवैहैं ॥ ऐसीअर्जुनकी
शंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् तिनबहुतमनुष्योंकीभगवत्विमुखताविषे कारणकूंकथनकरेहै ॥

अव्यक्तंव्यक्तिमापन्नंमन्यंतेमामबुद्धयः ॥ परंभावमजानंतोममाव्ययमनुत्तमं ॥ २४ ॥

अव्यक्तं । व्यक्तिं । आपन्नं । मन्यंते । मां । अबुद्धयः । परं । भावं । अजानंतः । मम । अव्ययं । अनुत्तमं ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन विवेकतैंशून्यपुरुष मैंपरमेश्वरके सर्वकाकारणरूप तथानित्य सोपाधिकस्वरूपकूं
तथासर्वतैंउत्कृष्ट निरुपाधिकस्वरूपकूं नहींजानतेहूए अव्यक्तरूप मैंपरमेश्वरकूं व्यक्तिकूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्राप्तहूआ मानेहैं याकारणतैंहीं तेअविवकीपुरुष मैंपरमेश्वरतैं विमुखरहेहैं ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन विवेकतैंरहितपुरुष अव्यक्तरूपमैंपरमेश्वरकूं व्यक्तिभावकूंप्राप्तहूआ मानेहैं ॥ अर्थात् इसदेह ग्रहणतैंपूर्व कार्यकरणेकीअसामर्थ्यतारूपकरिकैस्थितहूए मैंपरमेश्वरकूं अरु इसकालविषे वसुदेवकेगृहविषे भौतिकशरीरकरिकै कार्यकरणेकीसामर्थ्यताकूंप्राप्तहूआ कोईकजीवविशेषहीं मानेहैं ॥ अथवा अव्यक्तं कहीये सर्वकाकारणरूप भीमैंपरमेश्वरकूं व्यक्तिमापन्नं कहीये मत्स्यकूर्मादिकअवताररूपकरिकै कार्यभावकूंप्राप्तहूआ मानेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेमनुष्य तुमारेस्वरूपकाविवेक किसकारणतैंनहींकरेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् ताकेविषेकारणकूंकहेहै (अबुद्धयःइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं तेपुरुष मेरेस्वरूपकेविवेककरणेहारीबुद्धितैंरहितहैं ॥ तिसकारणतैं तेपुरुष अव्यक्तरूपमैंपरमेश्वरकूं व्यक्तिभावकूंप्राप्तहूआ मानेहैं ॥ तहां अव्यक्तरूपपरमेश्वरकूं व्यक्तिभावकीप्राप्तिमानणेविषे कथनकऱ्याजो (अबुद्धयः) यहहेतुहै ॥ ताहेतुकूं अब स्पष्टकरिकै निरूपणकरेहैं (परंभावमजानंत इति) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकाजो परअव्ययभावहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकाजो सर्वजगत्काकारणरूप तथानित्य सोपाधिकस्वरूपहै ॥ तिसहमारेसोपाधिकस्वरूपकूंभी तेपुरुष जानतेनहीं ॥ तथा मैंपरमेश्वरकाजो अनुत्तमभावहै ॥ अर्थात् (पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः) इत्यादिकश्रुतियोंनैं कथनकऱ्याजो सर्वतैंउत्कृष्ट तथाअतिशयतातैं रहित तथाअद्वितीयपरमानंदघन तथादेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित मैंपरमेश्वरका निरुपाधिकस्वरूपहै ॥ तिसमेरेनिरुपाधिकस्वरूपकूंभी तेपुरुष जानतेनहीं ॥ इसीकारणतैं तेविवेकहीनपुरुष अन्यजीवोंकीन्यांई हमारेलीलामात्रका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्यकूंदेखिकै मेरेकूंभी कोईजीवविशेषहीं मानतेहैं ॥ ईश्वररूप हमारेकूं मानतेनहीं ॥ इसकारणतैं तेअविवेकीपुरुष मैंपरमेश्वरकूंपरित्यागकरिकै प्रसिद्धइंद्रादिकदेवतावोंकाहीं आराधनकरेहैं ॥ तिनअन्यदेवतावोंकेआराधनतैं तेपुरुष नाशवान्फलकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ इसीवार्त्ताकूं श्रीभगवान् (अवजानंतिमांमूढामानुषींतनुमाश्रितं) इसीवचनकरिकै आगेभीकथनकरैंगा इति ॥ २४॥* ॥ शंका ॥ हेभगवन् आप कैसेहो ॥ आपणेजन्मकालविषेभी सर्व योगीपुरुषोंकरिकैध्यानकरणेयोग्य तथाश्रीवैकुंठविषेस्थित ऐसेदिव्य ईश्वरसंबंधीस्वरूपकूं आविर्भावकरतेभयेहो ॥ और अबी वर्त्तमानकालविषेभी श्रीवत्स कौस्तुभमणि वनमाला मुकुट कुंडल इत्यादिकदिव्यअलंकारोंकरिकै आप युक्तहो ॥ तथा शंख चक्र गदा पद्म याच्यारोंकूं धारणकरणेहारी च्यारिभुजावोंकरिकैयुक्तहो ॥ तथा श्रीगरुड आपका वाहनहै ॥ तथा सर्वसुरलोकोंकरिकैसंपादित राजराजेश्वरअभिषेकआदिकमहावैभवकरिकैयुक्तहो ॥ तथा सर्वसुरअसुरोंकूं जयकरणेहारेहो ॥ तथा नानाप्रकारकेदिव्यलीलाविलासोंकूं करणेहारेहो ॥ तथा रामादिकसर्वअवतारोंविषे शिरोमणीहो ॥ तथा साक्षात् वैकुंठलोककेअधिपतिहो ॥ तथा सर्वलोकोंकेउद्धारकरणेवासतै इसभूमिलोकविषे अवतारकूंधारणकरणेहारेहो ॥ तथा ब्रह्माकीसृष्टिविषे नहींउत्पन्नकरणेहारी निरतिशयसौंदर्यताकूं धारणकरणेहारेहो ॥ तथा आपणोबाललीलाकरिकै साक्षात्ब्रह्माकूंभी मोहकीप्राप्तिकरणेहारेहो ॥ तथा सूर्यकीकिरणावोंकेसमानउज्ज्वल दिव्यपीतांबरकूं धारणकरणेहारेहो ॥ तथा उपमातैंरहित श्यामसुंदरस्वरूपकूं धारणकरणेहारेहो ॥ तथा पारिजातकेवासतै साक्षात्इंद्रकूंभी पराजयकरतेभयेहो ॥ तथा बाणयुद्धविषे साक्षात्महादेवकूंभी पराजयकर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तेभयेहो ॥ तथा संपूर्णसुरअसुरोंकूंजयकरणेहारेदैत्योंके प्राणपर्यंत सर्वपदार्थोंकूं हरणकरणेहारेहो ॥ तथा श्रीदामा दिकपरमरंकोंकेप्रति महान्वैभवकीप्राप्ति करणेहारेहो ॥ तथा एकहींकालविषे षोडशसहस्र दिव्यरूपोंकूंधारणकर णेहारेहो ॥ तथा अपरिमितगुणोंकरिकैयुक्तहो ॥ तथा महान्महिमावालेहो ॥ तथा नारद मार्कंडेय इत्यादिकमहान् मुनियोंकेसमुदायकरिकै स्तुतिकरणेयोग्यहो ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदिव्यगुण आपकेविषेहैं ॥ जेदिव्यगुण किसीभीजीवविषेसंभवतेनहीं ॥ किंतु ईश्वरविषेहीं तेगुण संभवैहैं ॥ ऐसेआपपरमेश्वरविषे अविवेकीपुरुषोंकीभी सामनुष्यत्वबुद्धि तथाजीवत्वबुद्धि कैसेहोवैहैं ॥ ऐसोअर्जुनकोशंकाकूं निवृत्तकरताहूआ श्रीभगवान् कहेहै ॥

नाहंप्रकाशःसर्वस्ययोगमायासमावृतः॥ मूढोयंनाभिजानातिलोकोमामजमव्ययं२५

नँ । अँहं । प्रकाशः । सर्वस्यायोगंमायासमावृतः । मूँढः । अँयं । नँ । अभिजानाति । लोकँः । मां । अँजं । अव्ययँयं ॥ इतिप० हेअर्जुन मैंपरमेश्वर सर्वलोकोंकूं प्रगट नहींहोवूंहूं जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर योगमायाकरिकैआवृतहूं तिस का रणतैं मूढहूआ यँह लोक जन्मतैंरहित तथामरणतैंरहित मैंपरमेश्वरकूं नहीं जानेहै ॥ २५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वर सर्वलोकोंकूं आपणेस्वरूपकरिकै प्रगटनहींहोवूंहूं ॥ किंतु मैंपरमेश्वरकेजेकेईभक्तहै तिनभक्तोंकूंहीं मैंपरमेश्वर आपणेस्वरूपकरिकै प्रगटहोवूंहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनसर्वलोकोंकूं आप क्युंनहींप्रग टहोतेहो ॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् तानहींप्रगटहोणेविषे हेतुकूंकहेहै (योगमायासमावृतःइति) ई

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हां मैंपरमेश्वरकीभक्तितैंरहितप्राणी मैंपरमेश्वरकूं वास्तवस्वरूपकरिकैनहींजानैं यःप्रकारकाजो मैंपरमेश्वरका संकल्पहै ताकानाम योगहै ॥ तायोगकेवशवर्ति जाअनादिअनिर्वचनीयअविद्यारूपमायाहै ताकानाम योगमायाहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेसंकल्पकेअनुसारवर्त्तणेहारीमायाकानाम योगमायाहै ॥ तायोगमायाकरिकै मैंपरमेश्वर सम्यक् आवृतहूआहूं ॥ अर्थात् हमारेस्वरूपविषयकज्ञानके कारणकेविद्यमानहूएभी तायोगमायानैं तिसज्ञानकीविषयताकेअयोग्यकऱ्याहूं ॥ इसीकारणतैं तिनसर्वलोकोंकूं मैंपरमेश्वर आपणेवास्तवस्वरूपकरिकैप्रगटहोतानहीं ॥ यातैं (परंभावमजानंतोममाव्ययमनुत्तमं) इसवचनकरिकै जोपूर्व आपणे सोपाधिकस्वरूपका तथानिरुपाधिकस्वरूपका अज्ञान लोकोंकूं कह्याथा ॥ तास्वरूपकेअज्ञानविषे मैंपरमेश्वरका सोमायाकाप्रेरकसंकल्पहीं कारणहै इति ॥ इसीकारणतैं तिसहमारीयोगमायाकरिकैमूढहूए अर्थात् आवृतज्ञानशक्तिवालेहूए यह पूर्वउक्तआर्त्तादिकच्यारिप्रकारकेभक्तजनोंतैंविलक्षणलोक मैंपरमेश्वरविषयकज्ञानकेकारणकेविद्यमानहूएभी उत्पत्तिनाशतैंरहितमैंपरमेश्वरकूं जानिसकतेनहीं ॥ किंतु तेमूढलोक विपरीतदृष्टिकरिकै मैंपरमेश्वरकूं कोईमनुष्यविशेषहीं मानतेहैं ॥ याकारणतैंहीं तेविपरीतदृष्टिवाले मूढलोक मैंपरमेश्वरकापरित्यागकरिकै अन्यइंद्रादिकदेवतावोंकूंहीं भजेहैं ॥ तहां वस्तुकेविद्यमानयथार्थस्वरूपकूं आवरणकरिकै तावस्तुके अविद्यमानअयथार्थस्वरूपकूंदिखावणा यहमायाकास्वभाव लौकिकऐंद्रजालिकमायाविषेभी प्रसिद्धहींहै इति ॥ ईहां किसीटीकाविषेतौं (योगमाया) यावचनका यहअर्थकऱ्याहै ॥ आपणीआवरणशक्तिकरिकै इसपुरुषकूं जन्ममरणरूपदुःखकेप्रवाहसाथि जा जोडदेवै ताकानाम योगाहै ॥ ऐसीयोगाजा

॥ २७ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मायाहै ताकानाम योगमायाहै इति ॥ और भगवान्भाष्यकारोनैंतौं (योगमाया) इसवचनका यहअर्थ कथनक
ऱ्याहै ॥ सत्त्वादिकतीनगुणोंकाजोसंबंधहै ताकानाम योगहै तायोगवालीजामायाहै ताकानाम योगमायाहै इति ॥
और किसीटीकाविषेतौं (योगमायासमावृतः) इसवचनविषे योग मायासमावृतः यहदोपद निकासेहैं ॥ त
हां चित्तकानिरोधरूपयोगहैविद्यमानजिसविषे ताकानाम योगहै ॥ याप्रकारका तायोगशब्दकाअर्थकरिकै योगिन्
इसशब्दकीन्यांई सोयोगशब्द अर्जुनकासंबोधन अंगीकारकऱ्याहै ॥ अर्थात् हेयोगिन् मायाकरिकैआवृतहूआ मैंप
रमेश्वर तिनसर्वलोकोंकूं प्रगटहोतानहीं इति ॥ २५ ॥ ❋ ॥ हेअर्जुन इसप्रकार मैंपरमेश्वरकेआधीनजामाया
है ॥ तास्वाधीनमायाकरिकै मैंपरमेश्वर सर्वभूतोंकूं मोहकोप्राप्तिकरूंहूं ॥ तथा आपमैंपरमेश्वर प्रतिबंधतैंरहितज्ञान
शक्तिवालाहूं यातैं मैंपरमेश्वरतौं तिनसर्वभूतोंकूंजानताहूं ॥ और मैंपरमेश्वरकूं मेरीभक्तितैंरहित कोईभीप्राणी
जानतानहीं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

वेदाहंसमतीतानिवर्तमानानिचार्जुन ॥ भविष्याणिचभूतानिमांतुवेदनकश्चन ॥ २६ ॥

वेद । अहं । समतीतानि । वर्त्तमानानि । च । अर्जुन । भविष्याणि । च । भूतानि । मां । तु । वेद । न । कश्चन ॥ इतिपदच्छेदः

हेअर्जुन मैंपरमेश्वर पूर्ववितीतहूए तथा अबीवर्त्तमान तथा आगेहोणेहारे सर्वभूतोंकूं
जानताहूं और मैंपरमेश्वरकूं तौ कोईभीअभक्त नहीं जानेहै ॥ २६ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन प्रतिबंधतैंरहित सर्वविषयकज्ञानवाला मैंपरमेश्वर आपणीमायाकरिकै तिनसर्वलोकोंकूंमोहकी प्राप्तिकरताहूआभी चिरकालकेनष्टहूए तथाअबीवर्त्तमान तथाआगेहोणेहारे जितनैंकी तीनकालवार्ती स्थावरजंगम रूपभूतहैं तिनसर्वोंकूं अपरोक्षहींजानताहूं ॥ इसीकारणतैंहीं मैं सर्वज्ञपरमेश्वरहूं ॥ इसअर्थविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयकरणानहीं ॥ ऐसेसर्वदर्शीभीमैंपरमेश्वरकूं मेरीमायाकरिकैमोहितहूआ कोईभीप्राणी जानतानहीं ॥ अर्थात् जैसे लोकप्रसिद्ध ऐंद्रजालिकमायावीपुरुषकीमायाकरिकैमोहितहूएलोक तामायावीपुरुषकूं जानिसकतेनहीं ॥ किंतु तामायावीपुरुषके अनुग्रहकापात्रभूत जे तिसमायावीपुरुषकेपुत्रादिकहैं तेपुत्रादिकहीं तिसमायावीपुरुषकूंजानेहैं ॥ तैसे मैं परमेश्वरकेअनुग्रहकेपात्रभूत जेहमारेभक्तजनहैं तिनौंतैंभिन्न दूसरेसर्वप्राणी हमारीयोगमायाकरिकैमोहितहोणेतैं मैं परमेश्वरकूंजानिसकतेनहीं ॥ किंतु तेभक्तजनहीं हमारीमायाकरिकैनहींमोहितहोणेतैं मैंपरमेश्वरकूंवास्तवरूप करिकैजानेहैं ॥ इसीकारणतैंहीं मैंपरमेश्वरकेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैं बहुतमनुष्य मैंपरमेश्वरकूंभी कोईजीवविशेष मानतेहूए मैंपरमेश्वरका आराधनकरतेनहीं ॥ किंतु इंद्रादिकदेवतावोंकाहीं आराधनकरेहैं ॥ ईहां (मांतु) यावच नविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ ता तुशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं तिनअभक्तप्राणीयोंविषे परमेश्वरविषयकज्ञान का प्रतिबंध सूचनकऱ्याहै ॥ अर्थात् किसीप्रतिबंधकेवशतैं तेअभक्तलोक मैंपरमेश्वरकूं वास्तवरूपतैं जानिसकते नहीं इति ॥ २६ ॥※ ॥ तहां परमेश्वरकेवास्तवस्वरूपकेज्ञानकाजोप्रतिबंधहै ताप्रतिबंधविषे पूर्व योग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मायाकूं हेतुरूपता कथनकरी ॥ अब ताप्रतिबंधविषे देहइंद्रियरूपसंघातकेअभिमानकी अतिशयतापूर्वक भोगोंविषे अभिनिवेशरूप दूसरेहेतुकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

इच्छाद्वेषसमुत्थेनद्वंद्वमोहेनभारत ॥ सर्वभूतानिसंमोहंसर्गेयांतिपरंतप ॥ २७ ॥

इच्छाद्वेषसमुत्थेन । द्वंद्वमोहेन । भारत । सर्वभूतानि । संमोहं । सर्गे । यांति । परंतप ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेभारत हेपरंतप यहसर्वभूतप्राणी स्थूलशरीरकीउत्पत्तितैंअनंतर इच्छाद्वेषदोनोंतैंउत्पन्नहूए शीतउष्णादिकद्वंद्वनिमित्तकमोहकरिकै संमोहकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ २७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभरतवंशविषेउत्पन्नहूआ तथाशत्रुवोंकूंनाशकरणेहारा अर्जुन ॥ अनुकूलवस्तुकूंविषयकरणेहाराजा यहवस्तु हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारकीइच्छाहै ॥ तथा प्रतिकूलवस्तुकूंविषयकरणेहाराजो यहवस्तु हमारेकूंमतप्राप्तहोवै याप्रकारकाद्वेषहै ॥ ताइच्छाद्वेषदोनोंकरिकैउत्पन्नहूआ तथा शीतउष्ण सुखदुःख क्षुधापिपासा इत्यादिकद्वंद्वधर्महैंनिमित्तजिसविषे ऐसाजो अहंसुखी अहंदुःखी इत्यादिक विपर्ययरूपमोहहै ॥ तामोहकरिकै यहसर्वभूतप्राणी स्थूलशरीरकीउत्पत्तितैंअनंतर नित्यअनित्यवस्तुकेविवेककीअयोग्यतारूप संमोहकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ ईहां (हेभारत) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनविषे कुलकीमहिमा कथनकरी ॥ और (हेपरंतप) यासंबोधनकरिकै ताअर्जुनविषे स्वरूपतैंशक्ति कथनकरी ॥ ताकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ ऐसेकुलमहिमा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करिकै तथास्वरूपशक्तिकरिकै युक्त तैंअर्जुनकूं सोद्वंद्वमोहरूपशत्रु पराजयकरणेविषेसमर्थनहींहै ॥ किंतु तूंअर्जुनहीं ति सद्वंद्वमोहकूं पराजयकरणेविषेसमर्थहैं इति ॥ इहां श्रीभगवान्का यहतात्पर्यहै ॥ ताइच्छाद्वेषतैंरहित कोईभीभूतप्रा णीहैनहीं ॥ किंतु सर्वभूतप्राणी ताइच्छाद्वेषकरिकैविशिष्टहैं ॥ और ताइच्छाद्वेषकरिकैआविष्टपुरुषकूं बाह्यवस्तुविष यकज्ञानभी संभवतानहीं ॥ तौं तिसपुरुषकूं अंतरआत्मविषयकज्ञान कैसेहोवैंगा किंतु नहींहोवैंगा ॥ यातैं रागद्वेष करिकैव्याकुलहूएअंतःकरणवालेहोणेतैं तेसर्वभूतप्राणी मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानतेनहीं ॥ इसी कारणतैं भजनकरणेयोग्यभी मैंपरमेश्वरकूं भजतेनहीं इति ॥ २७ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् (सर्वभूतानिसं मोहंयांति) इसवचनकरिकै पूर्व आपैंने सर्वभूतप्राणीयोंकूं संमोहकीप्राप्ति कथनकरी ॥ और इसवचनतैंभीपूर्व (च तुर्विधाभजंतेमां) इसवचनकरिकै आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी ज्ञानी याच्यारिप्रकारकेभक्तजनोंकूं परमेश्वरकेभजनकीहीं प्राप्ति कथनकरीथी ॥ तेदोनोंवचन परस्परविरुद्धअर्थकूंहीं कथनकरेहैं ॥ यातैं (चतुर्विधाभजंतेमां) इसवचनकूं जो आप प्रमाणभूतमानौंगे ॥ तौं (सर्वभूतानिसंमोहंयांति) यहआपकावचन असंगतहोवैंगा ॥ और (सर्वभूतानिसंमोहं यांति) इसवचनकूं जोआप प्रमाणभूतमानौंगे ॥ तौं (चतुर्विधाभजंतेमां) यहआपकावचन असंगतहोवैंगा ॥ ऐ सीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ पुण्यकर्मोंकीअतिशयताकरिकै जिनपुरुषोंके सर्वपापकर्म नाशहोइगयेहैं ॥ तेभक्तजनहीं मैंप रमेश्वरकाआराधनकरेहैं ॥ ऐसेभक्तजनहीं (चतुर्विधाभजंतेमां) इसवचनकरिकै पूर्व कथनकरेहैं ॥ और (सर्वभूता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निसंमोहंयांति) इसवचनकरिकैतौं तिनपुण्यवान् भक्तजनोंतैं भिन्नहींप्राणीयोंका कथनकऱ्याहै ॥ यातैं तिनदोनोंवच नोंका परस्परविरोध होवैनहीं ॥ याप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

येषांत्वंतगतंपापंजनानांपुण्यकर्मणां ॥ तेद्वंद्वमोहनिर्मुक्ताभजंतेमांदृढव्रताः ॥२८॥

येषां । तु । अंतगतं । पापं । जनानां । पुण्यकर्मणां । ते । द्वंद्वमोहनिर्मुक्ताः । भजंते । मां । दृढव्रताः ॥ इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन पुनः जिन पुण्यकर्मवाले जनोंका पाप नाशकूंप्राप्तहूआहै तेपुरुष ताद्वंद्वमोहतैं रहितहूए दृढसंकल्पवालेहूए मैंपरमेश्वरकूं भजेहैं ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वअनेकजन्मोंविषे पुण्यकर्मोकासंचयकऱ्याहैजिनोंनैं याकारणतैंहीं सफलहैजन्मजिनोंका याका रणतैंहीं इतरसर्वलोकोंतैंविलक्षण ऐसेजिनअधिकारीपुरुषोंका तिसतिसपुण्यकर्मोकरिकै ज्ञानकाप्रतिबंधकपाप ना शकूंप्राप्तहूआहै ॥ तेपुरुष ताप्रतिबंधरूपपापकेअभावहूए द्वंद्वमोहनिर्मुक्तहूए ॥ अर्थात् सोपापहैनिमित्तकारणजिसका ऐसाजो रागद्वेषादिकजन्य अहंसुखी अहंदुःखी इत्यादिकविपर्ययरूपमोहहै तिसद्वंद्वमोहनैं तेपुरुष पुनरावृत्तिकेअयो ग्यदेखिकै त्यागकीयेहैं ॥ ऐसे द्वंद्वमोहतैंरहितपुरुष दृढव्रतहूए क्या अचलसंकल्पवालेहूए ॥ अर्थात् सर्वप्रकारतैं य हपरमेश्वरहींभजनकरणेयोग्यहै सोपरमेश्वर इसप्रकारकाहींहै याप्रकारकाजो शास्त्रप्रमाणजन्य तथाअप्रामाण्यशं कातैंरहित ज्ञानहै ताज्ञानवालेहूए ॥ मैंपरमेश्वरकूं आराधनकरेहैं ॥ अर्थात् अनन्यशरणहूएमैंपरमेश्वरकाहीं सेवन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करेहैं ॥ ऐसेअधिकारीजनहीं (चतुर्विधाभजंतेमांजनाःसुकृतिनोऽर्जुन) इसपूर्वउक्तवचनविषे सुकृतिशब्दकरिकै कथनकरेहैं ॥ यातैं यहअर्थ सिद्धभया (सर्वभूतानिसंमोहंयांति) यहवचनतौं उत्सर्गरूपहै ॥ और तिनसर्वभूतप्राणीयोंकेमध्यविषे जेपुरुष पुण्यकर्मवालेहैं ॥ तेपुरुष तिससंमोहतैंरहितहूए मैंपरमेश्वरकूंभजेहैं इसअर्थकूंबोधनकरणेहारा जो (चतुर्विधाभजंतेमांजनाःसुकृतिनोर्जुन) यहपूर्वउक्तवचनहै तथा (येषांत्वंतगतंपापंजनानांपुण्यकर्मणां) यहवचनहै ॥ सोयहवचन ताउत्सर्गका अपवादरूपहै ॥ सामान्यतैं सर्वत्र जिसकीप्रवृत्तिहोवै ताकूं उत्सर्गकहेहैं ॥ और किसीकस्थानविशेषविषेजाकीप्रवृत्तिहोवै ताकूं अपवादकहेहैं ॥ तहां जिसस्थानविषे अपवादकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ तिसस्थानविषे उत्सर्गकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तिसस्थानतैंभिन्नस्थानविषेहीं ताउत्सर्गकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ जैसे (नहिंस्यात्सर्वाणिभूतानि ॥) यहसर्वभूतोंकेहिंसाकानिषेधकरणेहारावचनतौं उत्सर्गरूपहै ॥ और (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत ॥) यह यज्ञविषेपशुकीहिंसाकूंविधानकरणेहारावचन अपवादरूपहै ॥ ताअपवादस्थानविषे तिसउत्सर्गकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तिसतैंभिन्नस्थानविषेहीं ताउत्सर्गकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ अर्थात् यज्ञतैं तथायुद्धतैं भिन्नस्थानविषे किसीभीप्राणीकींहिंसानहींकरणी ॥ याप्रकारका ताउत्सर्गवाक्यकाअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ तैसे (सर्वभूतानिसंमोहंयांति) इसउत्सर्गवचनकीभी तिनआर्त्तादिकच्यारिप्रकारकेसुकृतीजनोंकूंछोडिकै अन्यत्रहीं प्रवृत्तिहोवैहै ॥ अर्थात् तिनहमारेभक्तोंतैंभिन्न अन्यसर्वप्राणी संमोहकूंप्राप्तहोवैहैं याप्रकारका तिसउत्सर्गवचनकाअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ इसीप्रकारकाउत्सर्ग पूर्वभी (त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदंजगत् ॥ मोहितंनाभिजानातिमामेभ्यःपरमव्ययं) इसश्लो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कविषे कथनकऱ्याथा ॥ यातैं (सर्वभूतानिसंमोहंयांति । चतुर्विधाभजंतेमां) इत्यादिकवचनोंका परस्पर विरोधहोवै नहीं इति ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारेपुण्यकर्मोंकेसंपादनकरणेवासतै इसअधिकारीपुरुषनैं सर्वदाप्रयत्न करणा इति ॥ २८ ॥ * ॥ ॥ अब अर्जुनके वक्ष्यमाणप्रश्नकेउत्थापनकरणेवासतैं श्रीभगवान् सूत्रभूतदोश्लो कोंकूं कथनकरेहैं ॥ इसीसूत्रभूतदोश्लोकोंका अगलाअष्टमअध्याय व्याख्यानरूपहोवैंगा ॥

201

जरामरणमोक्षायमामाश्रित्ययतंतिये ॥ तेब्रह्मतद्विदुःकृत्स्नमध्यात्मंकर्मचाखिलं ॥२९॥

जरामरणमोक्षाय । मां । आश्रित्य । यतंति । ये । ते । ब्रह्म । तत् । विदुः । कृत्स्नं । अध्यात्मं । कर्म । च । अखिलं ॥ इतिप० ॥

हेअर्जुन जेपुरुष जरामरणादिकोंकेनिवृत्तकरणेवासतै मैंसगुणपरमेश्वरकूं आश्रय णकरिकै प्रयत्नकरेहै तेपुरुष तत्पदकेलक्ष्यअर्थरूप निर्गुणब्रह्मकूं तथाअपरिच्छिन्न त्वंपदकेलक्ष्यअर्थरूपआत्माकूं तथा संपूर्ण श्रवणादिकसाधनोंकूं जानेहैं ॥ २९ ॥ इतिप०

॥ टीका ॥ हेअर्जुन संसारकेजरामरणादिकदुःखोंतैंवैराग्यकूंप्राप्तहूए जेअधिकारीजन तिनजरामरणादिकनानाप्र कारकेदुःसहदुःखोंकेनिवृत्तकरणेवासतै तिनसर्वदुःखोंकेनिवृत्तकरणेहारेमैंसगुणपरमेश्वरकूं आश्रयणकरिकै अर्था त् इतरसर्वतैंविमुखहोइकै एकमैंपरमेश्वरकेशरणकूंप्राप्तहोइकै प्रयत्नकरेहैं ॥ अर्थात् फलकीइच्छातैंरहितहोइकै मैंप रमेश्वरविषेअर्पणकऱ्येहूए शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूंकरेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष क्रमकरिकै शुद्धअंतःकरणेवालेहूए तिस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ब्रह्मकूं जानेहैं ॥ अर्थात् इससर्वजगत्काकारणरूपजामायाहै तामायाकाअधिष्ठानरूप तथातत्पदकालक्ष्यअर्थरू
प तथासर्वउपाधियोंतैंपरे ऐसेनिर्गुणशुद्धब्रह्मकूं तेअधिकारीपुरुष जानेहैं ॥ तथा शरीरकूंआश्रयणकरिकैप्रकाशमा
नहोणेतैं अध्यात्मसंज्ञाकूंप्राप्तहूआ तथाउपाधिकृतसर्वपरिच्छेदतैंरहित ऐसाजो त्वंपदकालक्ष्यअर्थरूप प्रत्यक्आत्मा
है तिसआत्माकूंभी तेअधिकारीजन जानेहैं ॥ तथा तिसतत्त्वंपदार्थविषयक ज्ञानके जितनैंकी ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीप
निवास श्रवण मनन निदिध्यासन इत्यादिकसाधनहैं ॥ जेसाधन तिसज्ञानरूपफलकी नियमतैंप्राप्तिकरेहैं ॥ तिनसं
पूर्णसाधनोंकूंभी तेअधिकारीपुरुष जानेहैं इति ॥ २९ ॥* ॥ किंच ॥

साधिभूताधिदैवंमांसाधियज्ञंचयेविदुः ॥ प्रयाणकालेपिचमांतेविदुर्युक्तचेतसः ॥३०॥

इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेज्ञानयोगोनामसप्तमोऽध्यायः समाप्तः ॥ ७ ॥

साधिभूताधिदैवं । मां । साधियज्ञं । च । ये । विदुः । प्रयाणकाले । अपि । च । मां । ते । विदुः । युक्तचेतसः ॥ इतिप०

हेअर्जुन जेअधिकारीजन अधिभूतअधिदैवदोनोंसहित तथा अधियज्ञसहित मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरेहैं तेअ
धिकारीपुरुष मैंपरमेश्वरविषेयुक्तचित्तवालेहूए मरणकालविषे भी मैंपरमेश्वरकूंहीं जानेहैं ॥ ३० ॥ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसप्रकारकेहमारेभक्तजनोंकूं मरणकालविषेभीइंद्रियादिककरणोंकी विवशताकरिकै मैंपरमेश्व
रकेविस्मरणकीशंका तुमनैं करणीनहीं ॥ जिसकारणतैं अधिभूतसहित तथाअधिदैवसहित तथाअधियज्ञसहित मैंपर ॥३१॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेश्वरकूं जेअधिकारीजन सर्वदा चिंतनकरेहैं ॥ तेअधिकारीजन सर्वदा मैंपरमेश्वरविषे समाहितचित्तवालेहूए ता
पूर्वअभ्यासजन्यसंस्कारोंकीदृढतातैं प्राणोंकेउत्क्रमणकालविषेभी मैंसर्वात्मारूपपरमेश्वरकूंहींजानेहैं ॥ अर्थात् ताम
रणकालविषे इंद्रियादिककरणोंकेअसावधानहूएभी मैंपरमेश्वरकीकृपाकरिकै तथापूर्वअभ्यासजन्यसंस्कारोंकीदृढ
तातैं तिनपुरुषोंकेचित्तकीवृत्ति मैंपरमेश्वरकेआकारहींहोवैहै ॥ दूसरेकिसीअनात्मपदार्थकेआकारहोवैनहीं ॥ यातैं तेअ
धिकारीजन मैंपरमेश्वरकेभक्तियोगतैं कृतार्थहींहोवैहैं ॥ तहां अधिभूत अधिदैव अधियज्ञ इनशब्दोंकेअर्थकूं श्री
भगवान् आपहीं आगलेअष्टमअध्यायविषे अर्जुनकेप्रश्नपूर्वक स्पष्टकरिकैकथनकरैंगा ॥ यातैं ईहां इनशब्दोंका
अर्थ कथनकऱ्यानहीं इति ॥ तहां इससप्तमअध्यायविषे श्रीभगवान्नैं उत्तमअधिकारीकेप्रतितौं लक्षणावृत्तिकरि
कै तत्पदप्रतिपाद्य ज्ञेयब्रह्म कथनकऱ्या ॥ और मध्यमअधिकारीकेप्रतितौं शक्तिरूपमुख्यवृत्तिकरिकै तत्पद
प्रतिपाद्य ध्येयब्रह्म कथनकऱ्या इति ॥ ॥ ३० ॥ ※ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवा
नंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां सप्त
मोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ७ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ छ ॥ छ ॥

॥ इति सप्तमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ७ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायांसप्तमोध्यायः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

205

॥अथ श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायां अष्टमोऽध्यायः॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथअष्टमाऽध्या यप्रारंभः ॥ तहां पूर्वसप्तमअध्यायकेअंतविषे (तेब्रह्मतद्विदुःकृत्स्नं) इत्यादिकसार्द्धश्लोककरिकै श्रीभगवान्नैं सप्तप दार्थ ज्ञेयत्वरूपकरिकै सूत्रितकऱ्ये ॥ तिन सूत्ररूपवचनकरिकैकथनकरेहूए सप्तपदार्थोंकाहींव्याख्यानरूप यहसमग्र अष्टमअध्याय श्रीभगवान्नैं प्रारंभकरीताहै ॥ तहां पूर्व तिससूत्ररूपवचनकरिकै सामान्यरूपतैंजान्येहूए तिनसप्तपदा थोंकूं पुनःविशेषरूपतैं जानणेकीइच्छाकरताहूआ अर्जुन दोश्लोकोंकरिकै तिनसप्तपदार्थोंकेस्वरूपका प्रश्नकरेहै ॥

206

अर्जुनउवाच ॥ किंतद्ब्रह्मकिमध्यात्मंकिंकर्मपुरुषोत्तम ॥ अधिभूतंच किंप्रोक्तमधिदैवंकिमुच्यते ॥ १ ॥ अधियज्ञःकथंकोत्रदेहेस्मिन्मधु सूदन ॥ प्रयाणकालेचकथंज्ञेयोसिनियतात्मभिः ॥ २ ॥

किं। तत्। ब्रह्मकिं। अध्यात्मं। किं। कर्म । पुरुषोत्तम। अधिभूतं। च। किं। प्रोक्तं। अधिदैवं। किं। उच्यते। अधियज्ञः। कं थं। कः। अत्र। देहे। अस्मिन्। मधुसूदन। प्रयाणकाले। च। कथं। ज्ञेयः। असि। नियतात्मभिः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेसर्वपुरुषोंविषेश्रेष्ठ मधुसूदन सो ब्रह्म कौंनहै तथाअध्यात्म कौंनहै तथा कर्म कौंनहै तथा अधिभूत कौं न कह्याथा तथा अधिदैव कौंन कहीताहै तथा ईहां अधियज्ञ कौंनहै सोअधियज्ञ किसप्रकारकरिकै

॥ ३३ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चिंतनकरणेयोग्यहै तथा सोअधियज्ञ इस[21] देह[22]विषे वर्तेहै अथवा देहतैंबाह्यवर्तेहै[23] तथा मरण[24]काल विषे सँमाहितचित्तवालेपुरुषोंनैं तूंपरमेश्वर किस[25]प्रकारकरिकै जाँनणेयोग्य हैं[26] ॥ १ ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् पूर्वज्ञेयरूपकरिकै आपनैं कथनकऱ्याजोब्रह्महै ॥ सोब्रह्म कौंनहैं ॥ अर्थात् सोब्रह्म सोपाधिक है अथवा निरुपाधिकहै ॥ इतिप्रथमप्रश्नः ॥ १ ॥ तथा हेभगवन् आत्माकेसंबंधवालाहोणेतैं आत्मशब्दकरिकैप्रतिपादित जोयहदेहहै तादेहरूपआत्माकूंआश्रयणकरिकैजोस्थितहोवै ताकानाम अध्यात्म है ॥ सोअध्यात्म कौंनहै ॥ अर्थात् श्रोत्रादिककरणोंकेसमूहकानाम अध्यात्महै ॥ अथवा प्रत्यक्चैतन्यकानाम अध्यात्महै ॥ इतिद्वितीयप्रश्नः ॥ २ ॥ और हेभगवन् (कर्मचाखिलं) इसपूर्वउक्तवचनविषे आपनैं कथनकऱ्याजोकर्महै ॥ सोकर्महै कौंनहै ॥ अर्थात् सोकर्म यज्ञरूपहै अथवा तिसयज्ञतैंकोईअन्यवस्तुहै ॥ जिसकारणतैं (विज्ञानंयज्ञंतनुतेकर्माणितनुतेपिच) इसश्रुतिविषे यज्ञ कर्म दोनों भिन्नभिन्नहीं कथनकरेहैं ॥ इतितृतीयप्रश्नः ॥ ३ ॥ और हेभगवन् भूतोंकूंआश्रयणकरिकैजोस्थितहोवै ताकूं अधिभूतकहेहैं ॥ सोअधिभूत आप किसकूंकहतेहो ॥ अर्थात् ताअधिभूतशब्दकरिकै आपकूं पृथिवीआदिकभूतोंकूंआश्रयणकरिकैस्थित यत्किंचित्कार्य विवक्षितहै ॥ अथवा संपूर्णकार्यमात्र विवक्षितहै ॥ इतिचतुर्थप्रश्नः ॥ ४ ॥ और हेभगवन् दैवकूंआश्रयणकरिकै जोस्थितहोवै ताकानाम अधिदैवहै ॥ सोअधिदैव आप किसकूंकहतेहो ॥ अर्थात् देवताविषयजोध्यानहै ताकूं अधिदैव कहतेहो ॥ अथवा देवतावोंके आदित्यमंडलादिकोंविषेअनुस्यूत जोचैतन्यहै ताकूं अधिदैव कहतेहो ॥ इतिपंचमप्रश्नः ॥ ५ ॥ और हेभगवन् यज्ञकूंआ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रयणकरिकैजोस्थितहोवै ताकानाम अधियज्ञहै ॥ सोअधियज्ञ ईहां कौंनहै ॥ अर्थात् किसीदेवताविशेषकानाम अधियज्ञहै ॥ अथवा परब्रह्मकानाम अधियज्ञहै ॥ सोअधियज्ञभी इसअधिकारीपुरुषनैं किसप्रकारकरिकै चिंतन करणेयोग्यहै ॥ अर्थात् तादात्म्यरूपकरिकै चिंतनकरणेयोग्यहै ॥ अथवा अत्यंतअभेदरूपकरिकै चिंतनकरणेयोग्यहै ॥ तथा सर्वप्रकारतैंभी सोअधियज्ञ इसदेहविषेहींरहेहै ॥ अथवा इसदेहतैंबाह्यरहेहै ॥ जोकहो इसदेहविषेरहेहै ॥ तौंभी इसदेहविषे सोअधियज्ञ कौंनहै ॥ अर्थात् बुद्धि आदिरूपहै अथवा तिनबुद्धिआदिकोंतैंभिन्नहै ॥ इतिषष्ठ प्रश्नः ॥ ६ ॥ और हेभगवन् मरणकालविषे श्रोत्रादिकसर्वकरणोंकासमूह सावधानतातैंरहितहोवैहै ॥ यातैं तिस कालविषे चित्तकीसावधानता संभवतीनहीं ॥ ऐसेमरणकालविषे समाहितचित्तवालेपुरुषोंनैं किसप्रकारकरिकै तूं परमेश्वर जानणेयोग्यहोवैहैं ॥ इतिसप्तमप्रश्नः ॥ ७ ॥ हेभगवन् सर्वज्ञहोणेतैं तथा परमकृपालुहोणेतैं आप यहसर्व अर्थ मैंशरणागतशिष्यकेप्रति कथनकरौ इति ॥ ईहां अर्जुननैं श्रीभगवान्के (हेपुरुषोत्तम हेमधुसूदन) यहदोसं बोधनकथनकरेहैं ॥ तहां हेअर्जुन तुम हम दोनों समानहैं ॥ यातैं तूंहमारेसैं तिनअध्यात्मादिकोंकास्वरूप किसवा सतैपूछताहैं ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै अर्जुननैं हेपुरुषोत्तम यहसंबोधनकरिकै यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ सर्वपुरुषोंविषे सर्वज्ञतादिकगुणोंकरिकैजोउत्तमहोवै ताकानाम पुरुषोत्तमहै ॥ ऐसेसर्वज्ञपुरुषोत्तम आप हींहो ॥ यातैं आपकूं कोईभीपदार्थ अज्ञात नहींहै ॥ किंतु आपकूं करामलककीन्यांई सर्वपदार्थ अपरोक्षहींहैं ॥ और अल्पज्ञताकरिकैमैंअर्जुनकूं तिनसर्वपदार्थोंकाज्ञानहैनहीं ॥ यातैं आपहीं सोसर्वअर्थ हमारेप्रति कथनकरौ इति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ और (हेमधुसूदन) यासंबोधनकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ आप परमकरुणाकरिकैयुक्तहो ॥ यातैं मधु आदिकदैत्योंकूं हननकरिकै महान्आयासकरिकैभी सर्वउपद्रवोंकीनिवृत्तकरतेहो ॥ ऐसेआपकूं विनाहींआयासक रिकै इसहमारे संशयरूपीतुच्छउपद्रवकीनिवृत्तिकरणी उचितहींहैइति ॥ १ ॥ २ ॥ * ॥ इसप्रकार दोश्लोकोंकरि कै अर्जुननैं कऱ्येजेसप्तप्रश्नहैं ॥ तिनसप्तप्रश्नोंकेउत्तरकूं श्रीभगवान् यथाक्रमतैं तीनश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै ॥

209

श्रीभगवानुवाच ॥ अक्षरंब्रह्मपरमंस्वभावोऽध्यात्ममु
च्यते ॥ भूतभावोद्भवकरोविसर्गःकर्मसंज्ञितः ॥ ३ ॥

अक्षरं । ब्रह्म । परमं । स्वभावः । अध्यात्मं । उच्यते । भूतभावोद्भवकरः । विसर्गः । कर्मसंज्ञितः ॥ ३ ॥ इतिपद० ॥

हेअर्जुन परम अक्षर ब्रह्म कह्याजावैहै तथा स्वभाव अध्यात्म कह्याजावैहै तथा
भूतोंकीउत्पत्तिवृद्धिकरणेहारा यज्ञदानादिक कर्मकह्याजावैहै ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ तहां जिसक्रमकरिकै शिष्यनैं प्रश्नकऱ्येहोवै ॥ तिसीक्रमकरिकै जबी गुरु तिनप्रश्नोंकेउत्तरकूं कथनकरे है ॥ तबी अनायासकरिकैहीं तिसप्रश्नकरणेहारेशिष्यकेइष्टकीसिद्धिहोवैहै ॥ इसअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् इ सप्रथमश्लोकविषे यथाक्रमकरिकै तीनप्रश्नोंकेउत्तरकूं कथनकरताभयाहै ॥ इसप्रकार द्वितीयश्लोकविषेभी तीनप्र श्नोंकेउत्तरकूं कथनकरताभयाहै ॥ और तीसरेश्लोकविषेतौं एकहींप्रश्नकेउत्तरकूं कथनकरताभयाहै इति ॥ तहां ब्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

210

ह्मशब्दकरिकै निरुपाधिकब्रह्महीं ईहां विवक्षितहै ॥ सोपाधिकब्रह्म ईहां ब्रह्मशब्दकरिकै विवक्षितनहींहै ॥ इसप्र
कारका प्रथमप्रश्नकाउत्तर श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥ तहां (नक्षरति ननश्यतीतिअक्षरं ॥) अर्थयह ॥ ज्ञानकरिकै तथा
अज्ञानकरिकै तथादेशकालकरिकै तथाकिसीअन्यकरिकै जो नाशकूंनहींप्राप्तहोवै ताकूं अक्षरकहेहैं ॥ अथवा ॥ (अश्नु
तेसर्वमितिअक्षरं ॥) अर्थयह ॥ जैसे अग्नि लोहकेपिंडकूं अंतरबाह्यतैं व्याप्यकरिकैस्थितहोवैहै ॥ तैसे अव्याकृतकूं
तथाताकेसर्वकार्यकूं अंतरबाह्यतैं व्याप्यकरिकै जोस्थितहोवै ताकूं अक्षरकहेहैं ॥ अर्थात् उत्पत्तिनाशतैंरहित तथासर्व
त्रव्यापक वस्तुकानाम अक्षरहै ॥ इसीअक्षरकूं बृहदारण्यकउपनिषदविषेभी कथनकऱ्याहै ॥ तहां याज्ञवल्क्यमुनिनैं
गार्गीकेप्रति यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ (तद्वैतदक्षरंगार्गिब्राह्मणाअभिवदंतिअस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घं ॥) अर्थयह ॥
हेगार्गी ब्रह्मवेत्ताब्राह्मण इसअक्षरकूं स्थूलभावतैंरहित तथाअणुभावतैंरहित तथाह्रस्वभावतैंरहित तथादीर्घभावतैं
रहित कथनकरेहैं इति ॥ इसप्रकारकाउपक्रमकरिकै मध्यविषे सोयाज्ञवल्क्यमुनि तागार्गीकेप्रति याप्रकारकावच
न कहताभया ॥ (एतस्याक्षरस्यप्रशासनेगार्गिसूर्यचंद्रमसौविधृतौतिष्ठतः नान्योतोऽस्तिद्रष्टा) ॥ अर्थयह ॥ हेगार्गी
इसीअक्षरके प्रशासनविषे यहसूर्यचंद्रमा नियमपूर्व स्थितहै ॥ इसअक्षरतैंभिन्नदूसराकोईद्रष्टाहैनहीं ॥ किंतु
यहअक्षरहीं सर्वकाद्रष्टाहै इति ॥ इसप्रकारकावचन मध्यविषेकहिकै अंतविषे सोयाज्ञवल्क्यमुनि याप्रकारका उप
संहार करताभयाहै ॥ (एतस्मिन्नुखल्वक्षरेगार्ग्याकाशश्चओतश्चप्रोतश्च ॥) अर्थयह ॥ हेगार्गी इसीअक्षरविषे यहअ
व्याकृतआकाश ओतप्रोतहै इति ॥ इसप्रकार तात्पर्यकेनिश्चयकरावणेहारे उपक्रमउपसंहारादिकलिंगोतैं सर्वउ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पाधियोंतैंरहित तथासूर्यचंद्रमादिकसर्वजगत्काप्रशासिता तथाअव्याकृतरूपआकाशपर्यंत सर्वप्रपंचकाधारणकरणे हारा तथाइससशरीरइंद्रियरूपसंघातविषेविज्ञाता ऐसानिरुपाधिचैतन्यहीं ताअक्षरशब्दकाअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ ऐसा चैतन्यस्वरूपअक्षरहीं ईहां ब्रह्मशब्दकरिकैविवक्षितहै ॥ इसीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै ताअक्षरका विशेषणकहेहैं (पर मंइति) अर्थात् सोअक्षर स्वप्रकाशपरमानंदस्वरूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सूर्यचंद्रमादिकोंका शासितापणा तथासर्व जडजगत्का धारकपणा तथासर्वकाद्रष्टापणा इत्यादिकलिंग जे श्रुतिविषेअक्षरकेकहेहैं ॥ तेसर्वलिंग ब्रह्मविषेहीं संभवैहैं ॥ ब्रह्मतैंभिन्न दूसरेकिसीपदार्थविषे तेलिंग संभवतेनहीं ॥ यातैं सोअक्षरब्रह्मरूपहीहै इति ॥ यहवार्त्ता व्यासभगवान्नैं ब्रह्मसूत्रोंविषेभी कथनकरीहैं ॥ तहांसूत्रं ॥ (अक्षरमंबरांतधृतेः॥) अर्थयह ॥ बृहदारण्यकउपनिषदवि षे अक्षरकूं अव्याकृतनामाआकाशपर्यंत सर्वजगत्का विधारकत्व कथनकऱ्याहै ॥ सोसर्वजगत्काविधारकपणा ब्र ह्मविषेहीं संभवैहै ॥ अन्यकिसीपदार्थविषे संभवतानहीं ॥ यातैं अक्षरशब्दकरिकै ब्रह्मकाहीं ग्रहणकरणा इति ॥ शं का ॥ हेभगवन् (ओमित्येतदक्षरं) इत्यादिकश्रुतिविषे तथा (ओमित्येकाक्षरंब्रह्म) इससस्मृतिविषे ओंकाररूपप्रणवकूं हीं अक्षरकह्याहै ॥ और लोकविषेभी अक्षरशब्द वर्णोंविषेहींरूढहै ॥ तहां (रूढियोंगमपहरति) अर्थयह॥पदकीरूढिश क्ति तिसपदकेयोगाशक्तिका बाधकहोवैहै ॥ इसन्यायकरिकै तिसरूढिशक्तिकूं (नक्षरतीतिअक्षरं) इसयोगाशक्तितैंप्रबल ता सिद्धहोवैहै॥यातैं ताअक्षरशब्दकरिकै ओंकाररूपप्रणवकाहीं ग्रहणकरणा ॥अथवा (संयुक्तमेतत्क्षरमक्षरंच) इत्यादि क श्रुतियोंविषे अव्यक्तकूंभी अक्षरकह्याहै ॥ यातै ताअक्षरशब्दकरिकै अव्यक्तकाहीं ग्रहणकरणा ॥ समाधान ॥ सर्वज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गत्का शासितापणा तथाविधारकपणा तथाद्रष्टापणा इत्यादिक जे लिंग पूर्व अक्षरकेकथनकरेहैं ॥ तेलिंग ओंकार रूपप्रणवविषे तथामायारूपअव्यक्तविषे संभवतेनहीं ॥ तथा (तस्यप्रकृतिलीनस्य) इसश्रुतिनैं तिसप्रणवकाभी प्रलय कथनकऱ्याहै ॥ तथा (तरत्यविद्यांविततां) इसस्मृतिनैं तिसमायारूपअव्यक्तकाभी नाशकथनकऱ्याहै ॥ यातैं ईहां अक्षरशब्दकरिकै वर्णात्मकप्रणवका तथामायारूपअव्यक्तका ग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥ और श्रुतिविषे तथास्मृतिविषे जो प्रणवकूं अक्षरकह्याहै ॥ सो ताकेनित्यपणेकूंलैके अक्षर नहींकह्या ॥ किंतु जैसे सत्यब्रह्मकीप्राप्तिकरणेहारे ज्ञानकूं श्रुतिविषेसत्यकह्याहै ॥ तैसे अक्षरब्रह्मकावाचकहोणेतैं ताप्रणवकूं अक्षरकह्याहै ॥ इसीप्रकार अव्यक्तकूंजो श्रुतिविषे अक्षरकह्याहै सो ताकेनित्यपणेकूंलैके नहींकह्या ॥ किंतु स्वकार्यकीअपेक्षाकरिकै सोअव्यक्त चिरकालपर्यंतरहेहै ॥ यातैं ताकूं अक्षरकह्याहै ॥ जिसकारणतैं (क्षरंप्रधानममृताक्षरंहरः) यहश्रुति प्रधानरूपअव्यक्तकूं नाशवान् कहिकै परब्रह्मकूंहीं अक्षरकहेहै ॥ और पूर्वकथनकऱ्येहूए जगत्विधारकत्वादिकअक्षरकेलिंग वर्णात्मकप्रणवविषे संभवेनहीं ॥ यातैं ईहां अक्षरशब्दकी सायोगाशक्तिहीं रूढशक्तितैंप्रबलहै ॥ यातै ईहां अक्षरशब्दकरिकै उत्पत्तिनाशतैंरहितचैतन्यकाहीं ग्रहणकरणा ॥ प्रणवका तथाअव्यक्तका ताअक्षरशब्दकरिकैग्रहणकरणानहीं ॥ तिसप्रणवअव्यक्तकीव्यावृत्तिकरणेवासतैंहीं श्रीभगवान्नैं ताअक्षरका (परमं) यहविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ इतनैंपर्यंत (किंतद्ब्रह्म) इसप्रथमप्रश्नकाउत्तर कथनकऱ्या ॥ १ ॥ अब (किमध्यात्मं) इसद्वितीयप्रश्नकाउत्तर कथनकरेहैं (स्वभावोऽध्यात्ममुच्यतेइति) हेअर्जुन जोउत्पत्तिनाशतैंरहित अक्षर पूर्व ब्रह्मरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तिसअक्षरब्रह्मका जोस्वभावहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अर्थात् तिसअक्षरब्रह्मका स्वरूपभूतजोप्रत्यक्चैतन्यहै ॥ सोप्रत्यक्चैतन्यहीं इसदेहरूपमिथ्याआत्माकूं आश्रयण करिकै भोक्तारूपतैंवर्त्तमानहूआ अध्यात्म इसशब्दकरिकैकह्याजावैहै ॥ तिसभोक्ताचैतन्यतैंभिन्न श्रोत्रादिककरणोंकासमूह अध्यात्मशब्दकरिकैकह्याजावैनहीं ॥ इतिद्वितीयप्रश्नउत्तरं ॥ २ ॥ अब (किंकर्म) इसतीसरेप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरेहैं (विसर्गःकर्मसंज्ञितः इति) हेअर्जुन इंद्रादिकदेवतावोंकाउद्देशकरिकै द्रव्यकात्यागरूपजोयागहै ॥ तथा वैदिकअग्निविषे घृतयवादिकपदार्थोंका प्रक्षेपरूपजोहोमहै ॥ तथा ब्राह्मणोंकेतांई सुवर्णगौआदिकपदार्थोंकीदक्षिणारूपजोदानहै ॥ ता याग होम दान तीनोंविषे त्यागरूपता अनुगतहै ॥ यातैं त्यागकावाचकजोविसर्गशब्दहै ॥ ताविसर्गशब्दकरिकै याग होम दान इनतीनोंकाग्रहणकरणा ॥ ऐसा यागहोमदानरूपविसर्गहीं ईहां कर्मशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ कोई उदासोनक्रियामात्र ईहां कर्मशब्दकरिकैकथनकऱ्यानहीं ॥ कैसाहैसोत्यागरूपविसर्ग ॥ भूतभावोद्भवकरहै ॥ अर्थात् स्थावरजंगमरूपभूतोंका जोउत्पत्तिरूपभावहै तथावृद्धिरूपउद्भवहै तिनदोनोंकूं करणेहाराहै ॥ यज्ञहोमादिककर्मोंकरिकैहीं सर्वभूतोंकीउत्पत्ति तथावृद्धि श्रुतिस्मृतिविषेप्रसिद्धहींहै ॥ तहांस्मृति ॥ (अग्नौप्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते ॥आदित्याज्जायतेवृष्टिर्वृष्टेरन्नंततः प्रजाः ॥) अर्थयह ॥ वैदिकअग्निविषे श्रद्धापूर्वक पाईहूईजाआहुतिहै ॥ साआहुति सूक्ष्मरूपकरिकै आदित्यमंडलविषेस्थितहोवैहै ॥ तिसआहुतिविशिष्टआदित्यतैं जलकी वृष्टिहोवैहै ॥ तिसजलकीवृष्टितैं व्रीहियवादिकअन्न उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसअन्नतैं स्थावरजंगमरूपप्रजा उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा तिसीअन्नतैं ताप्रजाकीवृद्धिहोवैहै ॥ इसप्रकारकी परंपराकरिकै तेयज्ञहोमादिककर्महीं सर्वभूतोंके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

उत्पत्तिवृद्धिका कारणहैं इति ॥ इसीअर्थकूं (तेवाएतेआहुतीउत्क्रामंतः) इत्यादिकश्रुतिभी कथनकरेहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (भूतभावोद्भवकरः) इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै ॥ मनुष्यादिकभूतोंका जोसात्विकराजसादिरूपभावहै तथाउत्पत्तिरूप उद्भवहै तिनदोनोंकूं जोकरेहै ताकानाम भूतभावोद्भवकरहै ॥ तहां तिनभूतोंकी यज्ञदानादिककर्मोतैंउत्पत्तितौं (अग्नौप्रास्ताहुतिः) इसपूर्वउक्तस्मृतिवचनकरिकैहीसिद्धहै ॥ इसप्रकार भूतोंकेसात्विकादिकभावकी कर्मोतैंउत्पत्तिभी (बुद्धिःकर्मानुसारिणी) अर्थयह । इसपुरुषकी आपणेकर्मोकेअनुसारहीं सात्विक वाराजस बुद्धि होवैहै इत्यादिकस्मृतिवचनोंकरिकैसिद्धहींहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (भूतभावोद्भवकरः) इसवचनका यह अर्थकथनकऱ्याहै ॥ भूतरूपजेभावहोवैं तिनोंकूं भूतभावकहेहैं ॥ अर्थात् स्थावरजंगमरूपजेपदार्थहैं तिनोंकानाम भूतभावहै ॥ ऐसेभूतभावोंकेउत्पत्तिरूपउद्भवकूंजोकरेहै ताकानाम भूतभावोद्भवकरहैइति ॥ इतितृतीयप्रश्नउत्तरं ॥ ३ ॥ इति ॥ ३ ॥ ❋ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे (किंतद्ब्रह्म किमध्यात्मं किंकर्म) इनतीनप्रश्नोंकाउत्तर कथनकऱ्या ॥ अब (अधिभूतंकिं अधिदैवंकिं अधियज्ञः कः) इनतीनप्रश्नोंकाउत्तर कथनकरेहैं ॥

अधिभूतंक्षरोभावःपुरुषश्चाधिदैवतं ॥ अधियज्ञोहमेवात्रदेहेदेहभृतांवर ॥ ४ ॥

अधिभूतं । क्षरः । भावः । पुरुषः । च । अधिदैवतं । अधियज्ञः । अहं । एव । अत्र । देहे । देहभृतां । वर ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेसर्वप्राणीयोंकेमध्यविषे श्रेष्ठ अर्जुन नाशवान् पदार्थ अधिभूत कह्याजावै है तथा हिरण्यगर्भनामापुरुष अ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धिदैव कह्याजावैहै तथाविष्णुरूपअधियज्ञ मैंवांसुदेव हीं "हूं सोअधियज्ञ ईस मैंनुष्य देहविषेहीं वर्त्तैहै॥४॥इतिपदार्थः॥ ॥टीका ॥ हेअर्जुन जोपदार्थ विनाशकूंप्राप्तहोवैहै ताकानाम क्षरहै ॥ और जोपदार्थ उत्पत्तिकूंप्राप्तहोवैहै ताका नाम भावहै ॥ ऐसाउत्पत्तिनाशवान् जितनाकीपदार्थमात्रहै ॥ सोपदार्थमात्र सर्वप्राणीमात्ररूपभूतकूं आश्रयणकरि कैहीं होवैहै ॥ यातैं सोउत्पत्तिनाशवान्पदार्थमात्र अधिभूत इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ कोईयत्किंचित्पदार्थ ता अधिभूतशब्दकरिकै कह्याजावैनहीं॥ इतिचतुर्थप्रश्नउत्तरं ॥ ४ ॥ अब (अधिदैवंकिं) इसपंचमप्रश्नकाउत्तर कथन करेहैं (पुरुषश्चाधिदैवतंइति) तहां सर्वकार्यमात्र पूर्णकरयेहोवैंजिसनैं ताकानाम पुरुषहै ॥ अथवा शरीररूपसर्वपु रोंविषेजोनिवासकरेहै ताकानाम पुरुषहै॥ ऐसापुरुष जोहिरण्यगर्भहै ॥ जोहिरण्यगर्भ समष्टिलिंगस्वरूपहै ॥ तथा जोहिरण्यगर्भ सूर्यादिरूपकरिकै चक्षुआदिकसर्वव्यष्टिकरणोंऊपरि अनुग्रहकरेहै ॥ तथा जिसहिरण्यगर्भकूं (आत्मैवेदमग्रआसीत्पुरुषविधः॥हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेभूतस्य) इत्यादिकश्रुतियां कथनकरेहैं ॥ तथा जिसहिरण्यगर्भकूं (स वैशरीरीप्रथमः सवैपुरुषउच्यते ॥ आदिकर्त्तासभूतानांब्रह्माग्रेसमवर्त्तत) इत्यादिकस्मृतियां कथनकरेहैं ॥ सोहिरण्यग र्भपुरुष आदित्यादिकदैवतोंकूं आश्रयणकरिकै चक्षुआदिककरणोंऊपरि अनुग्रहकरेहै ॥ यातैं सोहिरण्यगर्भपुरुष अ धिदैव इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ देवताविषयकध्यानादिक ताअधिदैवशब्दकरिकैकह्येजावैनहीं ॥ ईहां (पुरुष श्च) यावचनविषेस्थित चशब्दकरिकै ताहिरण्यगर्भविषे श्रुतिस्मृतिकरिकैसिद्ध प्रसिद्धता कथनकरी॥ और किसी टीकाविषेतौं (पुरुषश्च) यावचनविषेस्थितचकारकरिकै श्रोत्रादिकचतुर्दशकरणोंकेप्रवर्त्तक दिक् वात अर्क आदिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चतुर्दशदेवतावोंका ग्रहणकऱ्याहै ॥ अर्थात् हिरण्यगर्भपुरुष तथादिक्वातअर्कादिकदेवता सर्वहीं अधिदैव कह्येजावै हैं इति ॥ इतिपंचमप्रश्नउत्तरं ॥ ५ ॥ अब (अधियज्ञःकः) इसषष्ठेप्रश्नकाउत्तर कथनकरेहैं ॥ (अधियज्ञोहंइति) तहां सर्वयज्ञोकाअधिष्ठानतारूप तथासर्वयज्ञोंकेफलकाप्रदाता तथासर्वयज्ञोंकाअभिमानीरूप जोविष्णुदेवताहै ॥ सो विष्णुदेव पूर्वउक्तविसर्गरूपयज्ञकूंआश्रयणकरिकै स्थितहोवैहै ॥ यातैं सोविष्णु अधियज्ञ इसनामकरिकैकह्याजा वैहै ॥ जिसविष्णुकूं (यज्ञोवैविष्णुः) यहश्रुतिभी यज्ञरूपकरिकैकथनकरेहै ॥ ऐसाअंतर्यामीविष्णुरूपअधियज्ञ मैंवासु देवहींहूं ॥ मैंपरमेश्वरतैंभिन्न कोईभीवस्तुहैनहीं ॥ इतनैंकहणेकरिकै पूर्वषष्ठेप्रश्नविषे (कथं) इसशब्दकरिकै कथ नकऱ्याजो सोअधियज्ञ तादात्म्यरूपकरिकैचिंतनकरणेयोग्यहै अथवा अत्यंतअभेदरूपकरिकैचिंतनकरणेयोग्यहै याप्रकारकासंदेहथा तासंदेहकीभी निवृत्तिकरी ॥ अर्थात् सोपरब्रह्मरूपविष्णु अत्यंतअभेदरूपकरिकैहीं चिंतनकर णेयोग्यहै इति ॥ ऐसाअधियज्ञरूपविष्णु इसमनुष्यदेहविषेहीं यज्ञरूपकरिकैवर्तेहै ॥ तथा सोविष्णु सर्वव्यापकहोणे तैं परिच्छिन्नबुद्धिआदिकोंतैंभिन्नहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै सोअधियज्ञ इसदेहविषेवर्तेहै अथवा इसदेहतैं बाह्यवर्त्तेहै ॥ देहविषेरह्याभी सोअधियज्ञ बुद्धिआदिरूपहै अथवा बुद्धिआदिकोंतैंभिन्नहै इससंदेहकीभी निवृत्तिकरी ॥ अर्थात् सो अधियज्ञरूप विष्णु यज्ञरूपकरिकै इसमनुष्यदेहविषेहींरहेहै ॥ तथा बुद्धिआदिकोंतैंभिन्नहै यहउत्तर सिद्धभया ॥ ईहां इ समनुष्यदेहकरिकैहीं सोयज्ञ सिद्धहोवैहै अन्यदेहकरिकैसिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं इसमनुष्यदेहविषेहीं यज्ञकोस्थितिकथनक रीहै ॥ तहां (हेदेहभृतांवर) अर्थात् हेसर्वप्राणीयोंविषेश्रेष्ठअर्जुन यहजोअर्जुनकासंबोधन भगवान्नैं कथनकऱ्याहै ॥ सो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्षणक्षणविषे मैंपरश्वरकेसंभाषणतैं कृतकृत्यहूआ तूंअर्जुन इसहमारेबोधकेयोग्यहैं इसप्रकारकेउत्साहकरावणेवासतैं कथ
नकऱ्याहै ॥ इतिषष्ठप्रश्नउत्तरं ॥ ६ ॥ इति ॥ ४ ॥ ❋ ॥ अब (प्रयाणकालेकथंज्ञेयोसि) अर्थात् मरणकालविषे समाहि
तचित्तवालेपुरुषोंनैं किसप्रकारतैं तूंपरमेश्वर जानणेयोग्यहैं ॥ इससप्तमप्रश्नकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

अंतकालेचमामेवस्मरन्मुक्त्वाकलेवरं॥यःप्रयातिसमद्भावंयातिनास्त्यत्रसंशयः॥५॥

अंतकाले । च । मां । एव । स्मरन् । मुक्त्वा । कलेवरं । यः । प्रयाति । सः । मद्भावं । याति । न । अस्ति । अत्र । संशयः ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेअर्जुन जोपुरुष मरणकालविषे भी मैंपरमेश्वरकूं हीं चिंतनकरताहूआ इसशरीरकूं परित्यागकरिकै जावैहै
सोपुरुष मैंपरमेश्वरकेस्वरूपताकूंहीं प्राप्तहोवैहै इसअर्थविषे कोईभीसंशय नहीं है ॥ ५ ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष अधियज्ञरूप मैंसगुणब्रह्मकूं अथवा परमअक्षररूप मैंनिर्गुणब्रह्मकूं सर्वका
लविषे चिंतनकरताहूआ ताचिंतनकेसंस्कारोकीदृढतातैं श्रोत्रादिकसर्वकरणोंकीअसावधानतावालेमरणकालवि
षेभी स्मरणकरताहूआ इसकलेवरकापरित्यागकरिकै अर्थात् इसशरीरविषेअहंममअभिमानकापरित्यागकरिकै
प्राणोंकेवियोगकालविषे गमनकरेहै ॥ सोपुरुष मद्भावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् निर्गुणब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां
सगुणब्रह्मकेध्यानपक्षविषेतौं (अग्निर्ज्योतिरहःशुक्लः) इत्यादिकवक्ष्यमाणश्लोककरिकै कथनकऱ्याजोदेवयानमार्ग
है तिसदेवयानमार्गकरिकै जोउपासकपुरुष ब्रह्मलोकविषेजावैहै ॥ सोउपासकपुरुष तिसहिरण्यगर्भलोकके भोगोंके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अंतविषे निर्गुणब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और निर्गुणब्रह्मस्वरूपकेस्मरणपक्षविषेतौं जोपुरुष इसकलेवरकूंपरित्यागकरिकैजावैहै यहवचन केवल लोकदृष्टिकेअभिप्रायकरिकैजानणा ॥ काहेतैं मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारका निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कार जिसपुरुषकूं प्राप्तभयाहै ॥ तिसतत्त्ववेत्तापुरुषके प्राणोंका मरणकालविषे इसशरीरतैंबाह्य उत्क्रमणहीं नहीं होवैहै ॥ और शरीरतैंप्राणोंकेउत्क्रमणतैंविना लोकांतरविषेगमनसंभवैनहीं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (नतस्यप्राणाउत्क्रामंत्यत्रैवसमवलीयंते) ॥ अर्थयह ॥ तिसब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण इसशरीरतैंबाह्य उत्क्रमण करतेनहीं ॥ किंतु इसशरीरकेभीतरहीं अधिष्ठानचैतन्यविषेलयभावकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ ऐसाब्रह्मवेत्तापुरुष तिसनिर्गुणब्रह्मभावकूं साक्षात्हीं प्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥(ब्रह्मैवसन्ब्रह्माप्येति ॥) अर्थयह ॥ सोतत्त्ववेत्तापुरुष ब्रह्मरूपहूआहीं ब्रह्मभावकूं प्राप्तहे वैहैइति ॥ हेअर्जुन देहतैंभिन्नआत्माविषे तथामैंनिर्गुणब्रह्मकीप्राप्तिविषे कोईभीसंशयहैनहीं ॥ अर्थात् आत्मा देहतैं भिन्नहै अथवा नहींहै ॥ तथादेहतैंभिन्नहूआभी आत्मा ईश्वरतैंअभिन्नहै अथवाभिन्नहै ॥ इसप्रकारका कोईभीसंशय ईहां नहींहै ॥ जिसकारणतैं तत्त्वसाक्षात्कारतैं अनंतर(छिद्यंतेसर्वसंशयाः) इसश्रुतिनैं सर्वसंशयोंकीनिवृत्तिहीं कथनकरीहै॥ईहां (कलेवरंमुक्त्वाप्रयाति) इसवचनकरिकैतौं श्रीभगवान्नैं जीवात्माका इसदेहतैंभिन्नपणा कथनक्याहै और (मद्भावंयाति) इसवचनकरिकैतौं इसजीवात्माका ईश्वरतैं अभिन्नपणा कथनक्याहै॥ इसीजीवईश्वरकेअभेदकूं तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि इत्यादिकमहावाक्यभीकथनकरेहैं ॥ इतिसप्तमप्रश्नउत्तरं॥७॥ इति ॥५॥* ॥ तहां अंतकालविषे परमेश्वरकाध्यानकरणेहारेपुरुषकूं तिसपरमेश्वरकीप्राप्तिअवश्यकरिकैहोवैहै इसपूर्वउक्तअर्थकेहीं स्पष्टकरणेवासतै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रीभगवान् दूसरेदेवतावोंकेध्यानकरणेहारेपुरुषकूंभीनियमकरिकै तिसतिसदेवताभावकीप्राप्ति कथनकरेहै ॥

यंयंवापिस्मरन्भावंत्यजत्यंतेकलेवरं ॥ तंतमेवैतिकौंतेयसदातद्भावभावितः ॥ ६ ॥

यं । यं । वा । अपि । स्मरन् । भावं । त्यजति । अंते । कलेवरं । तं । तं । एव । एति । कौंतेय । सदा । तद्भावभावितः ॥ इतिप०

हेअर्जुन सर्वकालविषे तिसतिसदेवताविषयकभाववालाहूआ यहपुरुष मरणकालविषे जिस जिस भी देवताविशेषकूं स्मरणकरताहूआ इसशरीरकूं त्यागकरेहै सोपुरुष तिस तिस देवताभावकूं हीं प्राप्तहोवैहै ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मरणकालविषे मैंपरमेश्वरकूंस्मरणकरताहूआ यहअधिकारीपुरुष मैंपरमेश्वरकेभावकूंहीं प्राप्त होवैहै यहहींकेवलनियमनहींहै ॥ किंतु तामरणकालविषे यहपुरुष जिसजिसदेवताविशेषरूपभावकूं तथाअन्यभीकिसी प्रियअप्रियपदार्थरूपभावकूं स्मरणकरताहूआ इसशरीरका परित्यागकरेहै ॥ सोपुरुष तामरणतैंअनंतर तिसतिसभावकूंहीं प्राप्तहोवैहै॥तिसतैंअन्यभावकूं प्राप्तहोवैनहीं॥ईहांयहतात्पर्यहै॥जोप्राणी जिसवस्तुका निरंतर ध्यानकरेहै॥ तिसप्राणीकूं ताध्यानकेबलतैं देहांतरकीप्राप्तितैंविना इसजीवतकालविषेहीं तिसवस्तुभावकीप्राप्ति किसीस्थलविषे देखणेमैंआवैहै ॥ जैसेभयकेवशतैं निरंतर भ्रमरकाध्यानकरणेहारा जोकीटविशेषहै ॥ तिसकीटकूं ताध्यानकेप्रभावतैं जीवतेहूएहीं तिसभ्रमररूपताकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और नंदिकेश्वर निरंतर महादेवकेध्यानकरिकै देहांतरकीप्राप्तितैंविनाहीं तामहादेवकेसमानरूपताकूं प्राप्तहोताभयाहै ॥ यहवार्त्ता शास्त्रविषेप्रसिद्धहींहै ॥जबी तिसतिसवस्तुकेध्यानकरणेहारेपुरु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

षकूं जीवतेहूएहीं ताध्यानकेप्रभावतैं तिसतिस ध्येयवस्तुभावकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तबी तिसतिस देवताविशेषका सर्वदा ध्यानकरणेहारे पुरुषकूं मरणतैंअनंतर तिसतिस देवताविशेषकीप्राप्तिहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ तहां मरणकालविषे यद्यपि तिसतिस देवताविशेषके स्मरणकाउद्यम संभवतानहीं ॥ तथापि पूर्वकालकेअभ्यासजन्य जेसंस्काररूपवासनाहैं तेवासनाहीं तामरणकालविषे तिसस्मरणकाहेतुहैं ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कहेहै (सदातद्भावभावितःइति) तहां तिसमरणतैंपूर्व सर्वकालविषे तिसतिस देवतादिकोंविषे जोभावहै अर्थात् भावनाजन्यसंस्काररूपवासनाहै ताकानाम तद्भावहै ॥ सोतद्भाव संपादनकऱ्याहैजिसपुरुषनैं ताकानाम तद्भावभावितहै ॥ अर्थात् जोपुरुष पूर्वध्यानजन्यसंस्कारों करिकैयुक्तहै ॥ तिनसंस्कारोंकेबलतैंहीं तिसपुरुषकूंमरणकालविषे तिसतिसदेवतादिकोंका स्मरणहोवैहै ॥ ईहां (हेकौंतेय)इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनविषेआपणेपिताकीभगिनीकापुत्ररूपताकहिकै स्नेहकीअतिशयतासूचनकरी ॥ तिसकरिकै मैंपरमेश्वर अवश्यकरिकै तुमारेऊपरि अनुग्रहकरौंगा यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ ताकरिकै यहभगवान् हमारेसाथि वंचनाकरताहै याप्रकारकीशंकाकाअभावसूचनकऱ्या इति ॥ ईहां किसीटीकाविषे (यंयंचापि) याप्रकारका मूलश्लोककापाठ कल्पनाकरिकै (यंयं) याशब्दकरिकैतौं तिसतिसदेवताविशेषका ग्रहणकऱ्याहै ॥ और चकारतैं अन्यभोजिसीकिसोवस्तुका ग्रहणकऱ्याहै ॥ परंतु बहुतमूलपुस्तकोंविषे (यंयंवापि) इसप्रकारकाहीं पाठहोवैहै ॥ यातैं सोईहीं ईहांलिख्याहै इति ॥ ६ ॥ * ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं पूर्वस्मरणकेअभ्यासजन्य मरणकालकीअंत्यभावनाहीं तिसमरणकालविषे परवशपुरुषकूं देहांतरकीप्राप्तिविषे कारणहोवैहै ॥ तिसकारणतैं तूंअर्जुन तिसअंत्यभाव

220

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाकीउत्पत्तिवासतै सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरकाहीं चिंतनकर ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

तस्मात्सर्वेषुकालेषुमामनुस्मरयुध्यच॥ मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयं॥७॥

तस्मात्। सर्वेषु। कालेषु। मां। अनुस्मर। युध्य। च। मयि। अर्पितमनोबुद्धिः। मां। एव। एष्यसि। असंशयं॥इतिप०॥

हेअर्जुन तिसकारणतैं सर्व कालोंविषे मैंपरमेश्वरकूं तूं चिंतनकर तथा युद्धकर मैंपरमेश्वरविषे अर्पणकऱ्येहूएमन बुद्धिवालातूं मैंपरमेश्वरकूं हीं प्राप्तहोवैंगा याअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींहै ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं पूर्वउक्तप्रकारतैं पूर्वलेअभ्यासजन्य अंत्यभावनाहीं देहांतरकीप्राप्तिका कारण होवैहै ॥ तिसकारणतैं मैंपरमेश्वरविषयक ताअंत्यभावनाकीउत्पत्तिवासतै तूंअर्जुन तामरणतैंपूर्वहीं सर्वकालोंविषे बहुतआदरपूर्वक निरंतर मैंसगुणपरमेश्वरकूं चिंतनकर ॥ जोकदाचित् आपणेअंतःकरणकीअशुद्धिकेवशतैं निरंतर मैंपरमेश्वरकेचिंतनकरणेविषे तूं समर्थनहींहोइसकै ॥ तौं तिसअंतःकरणकीशुद्धिकरणेवासतै तूं युद्धकूंकर ॥ ईहां युद्धशब्द स्ववर्णआश्रमके सर्वनित्यनैमित्तिककर्मोका उपलक्षणहै ॥ प्रसंगविषेपूर्वयुद्धहींप्राप्तहै यातैं श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति युद्धकरणेकाविधानकऱ्याहै॥ अर्थात् ताअंतःकरणकीशुद्धिवासतैं तूं युद्धादिकनित्यनैमित्तिककर्मोकूंकर ॥ इसप्रकार नित्य नैमित्तिककर्मोकेअनुष्ठानकरिकै ताअंतःकरणकीशुद्धिहूएतैंअनंतर मैंपरमेश्वरविषे अर्पणकऱ्याहूआहैसंकल्परूपमन तथानिश्चयरूपबुद्धि जिसतुमनैं ऐसाहूआतूं अर्थात् सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरकेचिंतनपरायणहूआतूं मैंपरमेश्वरकूंहीं प्राप्त

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होवैंगा ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींहै इति ॥ सोयह सगुणब्रह्मकाचिंतन उपासकपुरुषकेप्रतिहीं भगवान्नैं कथनकऱ्याहै ॥ जिसकारणतैं तिनउपासकपुरुषोंकूं तिसमरणकालकीअंत्यभावनाकीअपेक्षा अवश्यकरिकैरहेहै ॥ और जिनपुरुषोंकूं निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहूआहै ॥ तिनतत्त्ववेत्तापुरुषोंकूंतौं तिसब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिकालविषेहीं अज्ञानकी निवृत्तिरूपमुक्ति सिद्धहै ॥ यातैं तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं तिसअंत्यभावनाकी किंचित्मात्रभीअपेक्षानहींहै ॥ ईहां ध्येयवस्तु केआकार चित्तकेवृत्तिकानाम भावनाहै ॥ इति ॥ ७ ॥ ❋ ॥ इसप्रकार अर्जुनकेसप्तप्रश्नोंकाउत्तरकहिकै मरणकालविषे पर मेश्वरकेस्मरणका जोपरमेश्वरकीप्राप्तिरूपफल कथनकऱ्याहै॥तिसीकूंहीं विस्तारतैंकहणेवासतै श्रीभगवान् आरंभकरेहै

अभ्यासयोगयुक्तेनचेतसानान्यगामिना॥परमंपुरुषंदिव्यंयातिपार्थानुचिंतयन् ॥८॥

अभ्यासयोगयुक्तेन। चेतसा। नान्यगामिना। परमं। पुरुषं। दिव्यं। याति। पार्थ। अनुचिंतयन् ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन सर्वदापरमात्मादेवकूंचिंतनकरताहूआ यहपुरुष अभ्यासरूपयोगकरिकैयुक्त तथाअन्यविषयोंविषेनहींगमनकरणेहारे ऐसेचित्तकरिकै परम दिव्य पुरुषकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंअनंतर निरंतर परमात्मादेवकाध्यानकरताहूआ यहअधिकारीपुरुष चित्त करिकै तिसपरमात्मादेवकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अब ताचित्तविषे परमेश्वरकीप्राप्तिकरणेकोयोग्यताकेबोधनकरणेवासतै ताचित्तकेदोविशेषणोंकूं भगवान्कथनकरेहै (अभ्यासयोगयुक्तेनान्यगामिनाइति) ईहां मैंपरमेश्वरविषे विजा

222

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तीयवृतियोंकेव्यवधानतैंरहित जोसजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकानाम अभ्यासहै ॥ जोअभ्यास पूर्वषष्ठेअध्याय विषे विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ सोअभ्यासहीं समाधिरूपयोगहै ॥ ऐसे अभ्यासरूपयोगकरिकैयुक्तजोचित्तहै ॥ अर्थात् अनात्माकारसर्ववृत्तियोंकापरित्यागकरिकै तिसअभ्यासयोगविषेहीं अत्यंतसंलग्नजोचित्तहै ॥ तथा जोचित्त नान्यगामीहै ॥ अर्थात् निरोधकेप्रयत्नतैंविनाभी जिसचित्तका अनात्मपदार्थोंविषे जाणेकास्वभावनहींहै ॥ ऐसे समाहितचित्तकरिकैहीं यहअधिकारीपुरुष तिसपरमात्मादेवकूं प्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव परमहै ॥ अर्थात् निरतिशयआनंदरूपहै ॥ पुनःकैसाहैसोपरमात्मादेव पुरुषहै ॥ अर्थात् सर्वत्रपरिपूर्णहै ॥ पुनः कैसाहैसोपरमात्मादेव दिव्यहै ॥ अर्थात् प्रकाशरूपआदित्यविषे अंतर्यामीरूपकरिकैस्थितहै ॥ तहां (यश्चासावादित्ये) यहश्रुति तिसपरमात्मादेवकी आदित्यविषेस्थिति कथनकरेहै ॥ ऐसे परमदिव्यपुरुषकूं अभेदरूपकरिकैंचिंतनकरताहूआ यहपुरुष नदीसमुद्रकीन्यांई तिसीपरमात्मादेवकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यथानद्यः स्पंदमानाः समुद्रेअस्तंगच्छंतिनामरूपेविहाय ॥ तथाविद्वान्पुण्यपापेविधूयपरात्परंपुरुषमुपैतिदिव्यं ॥) अर्थयह ॥ जैसे श्रीगंगायमुनादिकनदीयां आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकै समुद्रविषे एकताभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुषभी पुण्यपापकर्मकापरित्यागकरिकै सूत्रात्मातैंभीपर अंतर्यामीदिव्यपुरुषकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैहै इति ॥ ॥ ८ ॥ * ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं कथनकऱ्याजो अधिकारीजनोंकूं चिंतनकरणेयोग्य तथाप्राप्तहोणेयोग्य परमदिव्यपुरुषहै ॥ तिसीपरमदिव्यपुरुषकूं पुनःभी अनेकविशेषणोंकरिकै श्रीभगवान् अब कथनकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

224

कविंपुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ॥ स
र्वस्यधातारमचिंत्यरूपमादित्यवर्णंतमसःपरस्तात्॥ ९॥

कविं । पुराणं । अनुशासितारं । अणोः । अणीयांसं । अनुस्मरेत् । यः । सर्व
स्य । धातारं । अचिंत्यरूपं । आदित्यवर्णं । तमसः । परस्तात्॥इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन सर्वज्ञ तथाअनादि तथासर्वकानियंता तथासूक्ष्मतैंभी अत्यंतसूक्ष्म तथासर्वका धारणकरणे
हारा तथाअचिंत्यरूपवाला तथाआदित्यकीन्यांईप्रकाशवाला तथाअज्ञानतैं परेस्थित ऐसेदिव्यपु
रुषकूं जोकोईपुरुष चिंतनकरेहै सोपुरुष तिसीदिव्यपुरुषकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मोक्षकीकामनावालेअधिकारीजनोंकूं चिंतनकरणेयोग्य तथाप्राप्तहोणेयोग्य जोपरमदिव्यपुरु
षहै ॥ सोपरमात्मादेव कैसाहै कविहै ॥ अर्थात् भूत भविष्यत् वर्त्तमान सर्ववस्तुवोंका द्रष्टाहोणेतैं सर्वज्ञहै ॥ पुनः
कैसाहैसोपरमात्मादेव पुराणहै ॥ अर्थात् इससर्वजगत्काकारणहोणेतैं अनादिहै ॥ पुनःकैसाहैसोपरमात्मादेव अ
नुशासिताहै ॥ अर्थात् सूर्यचंद्रमादिकसर्वजगत्कूं नियमपूर्वक चलावणेहाराहै ॥ अथवा सर्वप्राणीयोंकेहृदयविषे
स्थितहोइकै तिनप्राणीयोंकेकर्मोकेअनुसार तिनप्राणीयोंकूं शुभअशुभकार्यविषे प्रवृत्तकरणेहाराहै ॥ पुनःकैसाहैसो
परमात्मादेव ॥ आकाशादिकसर्वप्रपंचका उपादानकारणहोणेतैं आकाशादिकसूक्ष्मपदार्थोतैंभी अत्यंतसूक्ष्महै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कार्यकीअपेक्षाकरिकै ताकेउपादानकारणविषेअत्यंतसूक्ष्मता पटतंतुआदिकोंविषेप्रसिद्धहींहै ॥ ईहां सूक्ष्मताकरिकै दुर्विज्ञेयता ग्रहणकरणी ॥ अन्यथा (महतोमहीयान्) यहश्रुति असंगतहोवैंगी ॥ पुनः कैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ सर्व काधारणकरणेहाराहै ॥ अर्थात् पुण्यपापकर्मोंकाजितनाकोफलहै ॥ तिससर्वफलकूं सर्वप्राणीयोंकेतांई आपणेआ पणेपुण्यपापकर्मकेअनुसार विचित्ररूपतैं भिन्नभिन्नकरिकै देणेहाराहै ॥ यहवार्त्ता (फलमतउपपत्तेः) इससूत्रकेव्या ख्यानविषे श्रीभाष्यकारोंनैं विस्तारतैंप्रतिपादनकरीहै ॥ पुनःकैसाहैसोपरमात्मादेव अचिंत्यरूपहै ॥ अर्थात् अप रिमितमहिमावालाहोणेतैं नहींचिंतनकरणेकूंशक्यहैरूपजिसका ॥ पुनःकैसाहैसोपरमात्मादेव आदित्यवर्णहै ॥ आ दित्यकीन्यांई सर्वजगत्का अवभासकहै वर्ण क्या प्रकाश जिसका ताकानाम आदित्यवर्णहै ॥ अर्थात् जोपरमा त्मादेव सूर्यकीन्यांई सर्वजगत्कूंप्रकाशकरणेहाराहै ॥ प्रकाशरूपहोणेतैंहीं जोपरमात्मादेव तमतैंपरहै ॥ ईहां अ ज्ञानरूप जोमोहअंधकारहै ताकानाम तमहै ॥ तिसतमतैं परहै ॥ अर्थात् प्रकाशरूपहोणेतैं तिसअज्ञानरूपतमका विरोधीहै ॥ ऐसे परमात्मारूपदिव्यपुरुषकूं जोअधिकारीपुरुष चिंतनकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष तिसअभ्यासकीदृ ढतातैं तिसपरमदिव्यपुरुषकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं इसश्लोकका पूर्वलेश्लोककेसाथि अन्वयकर्णा ॥ अथवा (सतंपरंपुरुषमुपैतिदिव्यं) इसअगलेश्लोककेसाथि अन्वयकरणा ॥ अन्वयनाम संबंधकाहै इति ॥ ९ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् आप वारंवार परमेश्वरकेस्मरणविषेप्रयत्नकीअधिकता कथनकरतेहो सोकिसकालविषे तापरमेश्वरके स्मरणविषयक प्रयत्नकीअधिकता कथनकरतेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् ताकालका कथनकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

226

प्रयाणकालेमनसाऽचलेनभक्त्यायुक्तोयोगबलेनचैव ॥ भ्रु
वोर्मध्येप्राणमावेश्यसम्यक्सतंपरंपुरुषमुपैतिदिव्यं ॥ १० ॥

प्रयाणकाले । मनसा । अचलेन । भक्त्या । युक्तः । योगबलेन । च । एव । भ्रुवोः ।
मध्ये । प्राणं । आवेश्य । सम्यक् । सः । तं । परं । पुरुषं । उपैति । दिव्यं ॥ १० ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जोपुरुष मरणकालविषे एकाग्र मनकरिकै तिसदिव्यपुरुषकास्मरणकरेहै तथाभक्तिकरिकै युक्तहै तथा योगकरि
कै युक्तहै सोपुरुष दोनोंभ्रुवोंके मध्यविषे प्राणकूं भलीप्रकारतैं स्थापनकरिकै तिस परम दिव्य पुरुषकूं प्राप्तहोवैहै ॥ १० ॥ इ०
॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोउपासकपुरुष मरणकालविषे एकाग्रमनकरिकै तिसदिव्यपुरुषकूं स्मरणकरेहै ॥ तथा जोपुरुष
भक्तिकरिकैयुक्तहै ॥ अर्थात् परमेश्वरविषयक परमप्रेमकरिकैयुक्तहै ॥ तथा जोपुरुष योगबलकरिकैयुक्तहै ॥ ईहां स
माधिकानाम योगहै ॥ तासमाधिरूपयोगकाजोबलहै अर्थात् तासमाधिरूपयोगकरिकैजन्य जोसंस्कारोकासमूहहै ॥
जोसंस्कारोकासमूह तासमाधितैंव्युत्थानकरणेहारेसंस्कारोंकाविरोधीहै ॥ ऐसेयोगबलकरिकै जोपुरुष युक्तहै ॥ त
था जोपुरुष प्रथम आपणेहृदयकमलविषे प्राणोंकूंवशकरिकै तिसतैंअनंतर तिसहृदयदेशतैंऊर्ध्वगमनकरणेहा
री सुषुम्नानाडीरूपमार्गद्वारा पूर्वपूर्वभूमिकाकेजयक्रमकरिकै दोनोंभ्रुवोंकेमध्यविषेस्थितआज्ञाचक्रविषे तिसप्राण
कूंस्थापनकरिकै सावधानहूआ दशमद्वाररूपब्रह्मरंध्रतैं उत्क्रमणकरेहै ॥ सोउपासकपुरुषहीं कविपुराणइत्यादिक

॥ ४३ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लक्षणोंकरिकैयुक्त तिसपरमदिव्यपुरुषकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहां आधारचक्र स्वाधिष्ठानचक्र मणिपूरकचक्र अनाहतचक्र विशुद्धचक्र आज्ञाचक्र इनषट्चक्रोंकास्वरूप तथा तिनोंकेस्थान तथातिनोंकेदेवता तथातिनषट्चक्रोंविषेप्राणके स्थापनकरणेकाप्रकार आत्मपुराणकेएकादशेअध्यायविषे हम विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैं इति ॥ १० ॥ ※ ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे परमेश्वरभावकीप्राप्तिवासतै श्रीभगवान्नैं परमेश्वरकास्मरण विधानकऱ्या ॥ ताकहणेकरिकै यहसंशय प्राप्तहोवैहै ॥ जो तिसध्यानकालविषे जिसीकिसीनामकरिकै तिसपरमेश्वरका स्मरणकरणा अथवा नियमतैं किसीएकनामकरिकैहीं तापरमेश्वरका स्मरणकरणाइति ॥ इससंशयकीनिवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान् (सर्वेवेदायत्पदमामनंति तपांसिसर्वाणिचयद्वदंति॥यदिच्छंतोब्रह्मचर्यंचरंति तत्तेपदंसंग्रहेणब्रवीम्योमित्येतत्) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै प्रतिपादित जोओंकाररूपप्रणवनामहै तिसप्रणवनामकरिकैहीं परमेश्वरकास्मरणकरणा अन्यमंत्रादिकोंकरिकैकरणानहीं याप्रकारकेनियमकूं अब कथनकरेहै ॥

यदक्षरंवेदविदोवदंतिविशंतियद्यतयोवीतरागाः ॥ यदिच्छंतोब्रह्मचर्यंचरंतितत्तेपदंसंग्रहेणप्रवक्ष्ये ॥ ११ ॥

यत्[1]। अक्षरं[2]। वेदविदः[3]। वदंति[4]। विशंति[5]। यत्[6]। यतयः[7]। वीतरागाः[8]। यत्[9]। इच्छंतः[10]। ब्रह्मचर्यं[11]। चरंति[12]। तत्[13]। ते[14]। पदं[15]। संग्रहेण[16]। प्रवक्ष्ये[17] ॥ इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन वेदवेत्तापुरुष जिस अक्षरकूं कथनकरेहैं तथानिःस्पृह संन्यासी जिसअक्षरकूं प्राप्तहोवैहैं तथासाधकपुरुष जिसअक्षरकूं इच्छतेहूए ब्रह्मचर्यकूं करेहैं तिस अक्षरकूं मैं तुमारेतांई संक्षेपकरिकै कथनकरताहूं ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिस ओंकारनामवाले अविनाशीब्रह्मकूं वेदवेत्तापुरुष कथनकरेहैं ॥ अर्थात् (एतद्वैतदक्षरंगार्गिब्राह्मणाअभिवदंतिअस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घं) इत्यादिकश्रुतिवचनोंकरिकै स्थूलादिकसर्वविशेषधर्मोंकीनिवृत्तिकरिकै जिसअक्षरब्रह्मकूं प्रतिपादनकरेहैं ॥ हेअर्जुन सोअक्षरब्रह्म केवल प्रमाणविषेकुशल वेदवेत्तापुरुषोंनैंहीं प्रतिपादन नहींकरीता ॥ किंतु मुक्तपुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यहोणेतैं सोअक्षरब्रह्म तिनमुक्तपुरुषोंनैंभी अनुभवकरीताहै ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (विशंतिइति) हेअर्जुन सर्वविषयसुखोंकीइच्छातैंरहित जेयत्नशीलसंन्यासीहैं ॥ तेनिष्कामसंन्यासीभी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकरिकै जिसअक्षरब्रह्मकूं आपणास्वरूपभूतकरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥ हेअर्जुन सोअक्षरब्रह्म तिनतत्त्ववेत्तासिद्धपुरुषोंनैंहीं केवल अनुभवनहींकरीता ॥ किंतु साधकमुमुक्षुजनोंकाभी सर्व प्रयत्न तिसअक्षरब्रह्मको प्राप्तिवासतैहींहै ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कहेहै (यदिच्छंतःइति) हेअर्जुन जिसअक्षरब्रह्मकेजानणेकोइच्छाकरतेहूए नैष्ठिकब्रह्मचारी गुरुकुलविषेनिवासकरिकै ब्रह्मचर्यपूर्वक वेदांतशास्त्रकेश्रवणमननादिकोंकूंकरेहैं ॥ ऐसाअक्षरब्रह्मरूपपद मैंभगवान् तैंअर्जुनकेप्रति संक्षेपतैंकथनकरताहूं ॥ अर्थात् जिसप्रकारतैं तैंअर्जुनकूं तिसअक्षरब्रह्मका संशयतैंरहित यथार्थ बोधहोवै ॥ तिसप्रकारतैं मैंतुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ यातैं तिसअक्षरब्रह्मकूं मैंअर्जुन किसप्रकारजानूंगा याप्रकारकीचिंताकरिकै तूं व्याकुलमतहोउ इति ॥ तहां यहओंकाररूपप्रणव पर

॥ ४४ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ब्रह्मकाहींवाचकहै ॥ अथवा शालग्रामादिकप्रतिमाकीन्यांई तिसपरब्रह्मका प्रतीकहै ॥ यातैं तिसपरब्रह्मकी वाच कतारूपकरिक तथाप्रतीकतारूपकरिकै श्रुतिभगवतीनैं मंदमध्यमबुद्धिवाले पुरुषोंकेप्रति क्रममुक्तिरूपफलवाली तिसप्रणवकीउपासना कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यःपुनरेतत्त्रिमात्रेणोमित्यनेनैवाक्षरेणपरंपुरुषमभिध्यायीतस तमधिगच्छति)॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष अकार उकार मकार इनतीनमात्रावोंवाले ओंइसअक्षरकरिकै परमपुरुषकूं चिं तनकरेहै ॥ सोपुरुष तिसपरमपुरुषकूंहीं प्राप्तहोवैहै इति ॥ इसप्रकारतैं श्रुतिविषे कथनकरीजा प्रणवकीउपासना है ॥ साईहींउपासना ईहां भगवान्कूं विवक्षितहै ॥ यातैं इसअष्टमअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत श्रीभगवान्नैं सायोग धारणासहित ओंकारकीउपासना तथाताउपासनाका स्वस्वरूपकीप्राप्तिरूपफल तथातिसफलतैंअपुनरावृत्ति तथा ताकामार्ग यहसर्वअर्थ कथनकरीताहै इति ॥ ११ ॥ * ॥ तहां (तत्तेपदंप्रवक्ष्ये) इसपूर्वउक्तवचनकरिकै प्रति ज्ञाकऱ्याजोअर्थहै ॥ तिसअर्थकूं साधनसहित दोश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

सर्वद्वाराणिसंयम्यमनोहृदिनिरुध्यच॥मूर्ध्न्याधायात्मनःप्राणमास्थितोयोगधारणां ॥
ओमित्येकाक्षरंब्रह्मव्याहरन्मामनुस्मरन्॥यःप्रयातित्यजन्देहंसयातिपरमांगतिं॥१३॥

सर्वद्वाराणि । संयम्य । मनः । हृदि । निरुध्य । च । मूर्ध्नि । आधाय । आत्मनः । प्राणं । आस्थितः । योगधारणां । ओं । इति । एकाक्षरंब्रह्म । व्याहरन् । मां । अनुस्मरन् । यः । प्रयाति । त्यजन् । देहं । सः । याति । परमां । गतिं ॥ इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन जोउपासकपुरुष सर्वइंद्रियद्वारोंकूं रोकिकरिकै तथा मनकूं हृदयविषे निरुद्धकरिकै तथा प्राणकूं मूर्द्धादेशविषे स्थितकरिकै आत्मविषयक समाधिरूपधारणाकूं करताहूआ तथा ओं इस ब्रह्मरूप एकअक्षरकूं उच्चारणकरताहूआ तथा मैं परमेश्वरकूं चिंतनकरताहूआ इसदेहकूं परित्यागकरताहूआ जोवहै सोउपासकपुरुष परम गतिकूं प्राप्तहोवैहै॥ १२॥१३॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोउपासकपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियरूपद्वारोंकूं आपणेआपणे शब्दादिकविषयोंतैंरोकिकैस्थितहूआहै ॥ अर्थात् तिनशब्दादिकविषयोंविषे वारंवार दोषदर्शनकेअभ्यासतैं तिनविषयोंतैंविमुखताकूंप्राप्तहूए श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै तिनशब्दादिकविषयोंकूंनहींग्रहणकरताहूआ स्थितहूआहै॥ शंका ॥ हेभगवन् श्रोत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकैनिरोधकीयेहूएभी अंतर मनकरिकै तिनविषयोंकाचिंतन होवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (मनोहृदिनिरुध्यचइति) हेअर्जुन पूर्वषष्ठेअध्यायविषे विस्तारतैं कथनकऱ्याजो अभ्यासवैराग्यहै ॥ तिस अभ्यासवैराग्यदोनोंकरिकै जोपुरुष तिसमनकूं हृदयदेशविषे सर्ववृत्तियोंतैंरहितकरिकै स्थितहूआहै ॥ अर्थात् जोपुरुष अंतरभी विषयोंकीचिंताकूंनहींकरताहूआ स्थितहूआहै ॥ इसप्रकार बाह्यअंतरज्ञानकेद्वारभूत मनसहित श्रोत्रादिकइंद्रियरूपसर्वद्वारोंकूं निरोधकरिकै जोपुरुष क्रियाकेद्वारभूतप्राणकूंभी सर्वओरतैंनिग्रहकरिकै मूर्द्धादेशविषेस्थापनकरिकै स्थितहूआहै ॥ अर्थात् जोपुरुष गुरुउपदिष्टमार्गकरिकै पूर्वपूर्वभूमिकाजयक्रमतैं प्रथम तिसप्राणकूं दोनोंभ्रुवोंकेमध्यविषेस्थितकरिकै पश्चात् तिसतैंऊपरि मूर्द्धादेशविषे स्थापनकरिकै स्थितहूआहै ॥ तथा ॥४५॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जोपुरुष प्रत्यक्आत्माविषयक समाधिरूपधारणाकूंकरताहूआ स्थितहूआहै ॥ ईहां (आत्मनः) यहपद अन्यदेव ताविषयकधारणाकीव्यावृत्तिकरणेवासतैंहै ॥ और ओं यहजोएकअक्षरहै ॥ सो ओंअक्षर ब्रह्मकावाचकहोणेतैं अथवा शालग्रामादिकप्रतिमाकीन्यांई ब्रह्मकाप्रतीकहोणेतैं ब्रह्मरूपहै ॥ ऐसे ब्रह्मरूप ओंइसएकअक्षरकूं उच्चारण करताहूआ जोपुरुष स्थितहूआहै ॥ ईहां यद्यपि (ओंइतिव्याहरन्) इतनैंमात्रकहणेकरिकैहीं निर्वाहहोइसकेहै (एकाक्षरं) इसकहणेतैं कोईअधिकअर्थ सिद्धहोतानहीं ॥ तथापि (एकाक्षरं) यहवचन अनायासताकूं कथनकरताहूआ ताप्रणवकेउच्चारणकोस्तुतिवासतैंहै ॥ अथवा (ओंइतिव्याहरन् एकाक्षरंब्रह्ममांअनुस्मरन्) याप्रकारतैं पदोकाअन्वयकरणा ॥ अर्थयह जोपुरुष ओं इसप्रणवमंत्रकूं उच्चारणकरताहूआ स्थितहूआहै ॥ तथा जोपुरुष तिस ओंकारकाअर्थरूप अद्वितीय अविनाशी सर्वत्रव्यापक मैंपरमेश्वरकूं स्मरणकरताहूआ स्थितहूआहै ॥ इसप्रकार प्रणवमंत्रकाजपकरताहूआ तथाताप्रणवमंत्रकेअर्थरूपमैंपरमेश्वरकाचिंतनकरताहूआ जोपुरुष मरणकालविषे सुषुम्नानाम मूर्द्धन्यनाडीरूपमार्गकरिकै इसदेहकूंपरित्यागकरताहूआ गमनकरेहै ॥ सोउपासकपुरुष देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोकविषेजाइकै तिसब्रह्मलोककेदिव्यभोगोंकूंभोगिकै अंतविषे परमगतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेतत्त्वसाक्षात्कारकरिकै सर्वतैंउत्कृष्ट ब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एषाऽस्यपरमागतिरेषाऽस्यपरमासंपदेषोऽस्यपरमआनंदः ॥) अर्थयह ॥ यहअद्वितीयआनंदस्वरूपब्रह्महीं इसविद्वान्पुरुषकी परमगतिहै तथापरमसंपदहै तथापरम आनंदहै इति ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसपूर्वउक्तरीतिसैं जोपुरुष मरणकालविषे प्राणवायुके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

निरोधकेअभावतैं दोनोंभ्रुवोंकेमध्यविषे प्राणोंकूंस्थितकरिकै मूर्द्धन्यनाडीकरिकै इसदेहकेपरित्यागकरणेकूं आपणीइच्छा करिकै समर्थनहींहोवैहै ॥ किंतु प्रारब्धकर्मोंकेनाशहूए तिसमरणकालविषे परवशहूआ जोपुरुष इसदेहकापरित्यागकरे है ॥ तिसपुरुषकूं कौंनफलप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् तिसफलकूं कथनकरेहै ॥

अनन्यचेताःसततंयोमांस्मरतिनित्यशः॥तस्याहंसुलभःपार्थनित्ययुक्तस्ययोगिनः१४

अनन्यचेताः । सततं । यः । मां । स्मरति । नित्यशः । तस्य । अहं । सुलभः । पार्थ । नित्ययुक्तस्य । योगिनः॥इतिपद०

हेअर्जुन जोपुरुष अनन्यचित्तवालाहूआ निरंतर जीवतकालपर्यंत मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरेहै तिस समाहितचित्तवाले योगीपुरुषकूं मैंपरमेश्वर अतिसुलभहूं ॥ १४ ॥ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरतैंअन्य किसोभीपदार्थविषे नहींहैआसक्तचित्तजिसका ताकानाम अनन्यचेताहै ॥ ऐसाअनन्यचेताहूआ जोपुरुष निरंतर जीवतकालपर्यंत मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरेहै ॥ सो निरंतर समाहितचित्तवाला पुरुष पूर्वउक्तरीतिस स्वाधीनताकरिकै इसदेहकापरित्यागकरै अथवा पराधीनताकरिकै इसदेहकापरित्यागकरै ॥ सर्वप्रकारतैं तिसपुरुषकूं मैंपरमेश्वर अत्यंतसुलभहूं ॥ अर्थात् इतरपुरुषोंकूं अत्यंतदुर्लभहूआभी मैंपरमेश्वर तिसपुरुषकूं तौं सुखैनहीं प्राप्तहोणेयोग्यहूं ॥ हेअर्जुन तूंभी इसप्रकारका हमारा अनन्यभक्तहैं॥यातैंमैंपरमेश्वर तुमारेकूंभी अत्यंतसुलभहूं ॥ यातैं तूं किसीप्रकारका भयमतकर इति ॥ ईहां (अनन्यचेताः) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं तिसपरमेश्वरके स्मरणविषे अतिआदररूपसत्कार कथनकऱ्या ॥ और (सततं) इसवचनकरिकै निरंतरताकथनकरी ॥ और (नित्यशः)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसवचनकरिकै दीर्घकालता कथनकरी ॥ ताकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं (सतुदीर्घकालनैरंतर्य्यसत्कारसेवितोदृढभूमिः) इससूत्रउक्त पतंजलिकामत अनुसरणकऱ्या ॥ यद्यपि इससूत्रविषे सः इसपदकरिकै पतंजलिनैं अभ्यासका कथनकऱ्या है ॥ और ईहां श्रीभगवान्नैं (मांस्मरति) यावचनकरिकै स्मरणका कथनकऱ्याहै ॥ तथापि तिसअभ्यासका परमेश्वर केस्मरणविषेहीं परिअवसानहै ॥ यातै यहअर्थसिद्धभया ॥ दूसरेसर्वविक्षेपोंतैंरहितहोइकै अतिआदरपूर्वक तथाजीवत कालपर्यंत तथाव्यवधानतैंरहित जोनिरंतर परमेश्वरकाचिंतनहै ॥ सोपरमेश्वरकाचिंतनहीं तिसमोक्षरूपपरमगतिके प्राप्तिकाहेतुहै ॥ ऐसे परमेश्वरकेचिंतनकेप्राप्तहूए आपणोइच्छापूर्वक सुषुम्नानाडीद्वारा प्राणोंकाउत्क्रमणहोवो अथवा नहींहोवो ॥ याकेविषे कोईअत्यंतआग्रहहैनहीं ॥ सर्वप्रकारतैं सोपरमेश्वरकेचिंतनकरणेहारापुरुष तिसपरमगतिकूंहीं प्राप्तहोवैहै इति ॥ १४ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार सर्वदा परमेश्वरकाचिंतनकरिकै तिसपरमेश्वर कूंप्राप्तहूए जेअधिकारीजनहैं ॥ तेअधिकारीजन पुनःआवृत्तिकूं प्राप्तहोवैहैं अथवानहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् तेअधिकारीजन पुनः आवृत्तिकूं नहींप्राप्तहोवैहैं याप्रकारकाउत्तर कहेहै ॥

मामुपेत्यपुनर्जन्मदुःखालयमशाश्वतं ॥ नाप्नुवंतिमहात्मानःसंसिद्धिंपरमांगताः ॥ १५ ॥

मां । उपेत्य । पुनः । जन्म । दुःखालयं । अशाश्वतं । नः । आप्नुवंति । महात्मानः । संसिद्धिं । परमां । गताः ॥ इतिपद०

हेअर्जुन तेउपासकपुरुष मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोइकै पुनः सर्वदुःखोंकेस्थानभूत नाशवान् जन्मकूं नहीं प्राप्तहोवैहैं जिसकारणतैं तेमहात्माजन सर्वतैंउत्कृष्ट मोक्षकूं प्राप्तहूएहैं ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहउपासकपुरुष मैंपरमेश्वरकूंप्राप्तहोइकै पुनः मनुष्यादिकदेहकासंबंधरूपजन्मकूं प्राप्तहोतेन हीं ॥ कैसाहैसोजन्म दुःखालयहै ॥ अर्थात् गर्भवास तथायोनिद्वारतौंनिर्गमन इसतैंआदिलैके जेगर्भउपनिषदविषे दुःखकथनकरेहैं तिनसर्वदुःखोंकास्थानहै ॥ पुनःकैसाहैसोजन्म अशाश्वतहै ॥ अर्थात् स्थिरपणेतैंरहितहै तथाआ पणेदर्शनकालविषेभी नाशहूएजैसाहै ॥ ऐसेशरीरकेसंबंधरूपजन्मकूं तेपुरुष प्राप्तहोतेनहीं ॥ अर्थात् तेपुरुष पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं इति ॥ अब तापुनरावृत्तिकेनहींहोणेविषे तिनउपासकपुरुषोंके हेतुरूपदोविशेषण कथनक रेहैं (महात्मानः संसिद्धिंपरमांगताःइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं तेपुरुष महात्माहै ॥ अर्थात् रजतमरूपमलतैंर हित शुद्धअंतःकरणवालेहैं ॥ तथा तेपुरुष परमसंसिद्धिकूंप्राप्तहूएहै ॥ अर्थात् तेउपासकपुरुष मैंपरमेश्वरकेलोककूं प्राप्तहोइकै तहां अनेकप्रकारकेदिव्यभोगोंकूंभोगिकै ताके अंतविषे ब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै सर्वतैं उत्कृष्ट कैवल्यमुक्ति कूंप्राप्तहूएहैं ॥ तिसकारणतैं तेपुरुष पुनरावृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ ईहां मैंपरमेश्वरकूंप्राप्तहोइकै तेपुरुष मोक्षकूंप्रा प्तहूएहैं इसवचनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं तिनउपासकपुरुषोंकूं क्रममुक्तिकीप्राप्ति दिखाई ॥ तहां उपासनाके बलतैं देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोकविषेजाइकै तहांदिव्यभोगोंकूंभोगिकै ताकेअंतविषे तत्त्वज्ञानकरिकै जोमुक्तिकीप्रा प्तिहै ताकानाम क्रममुक्तिहै ॥ यहवार्त्ता स्मृतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहास्मृति ॥ (ब्रह्मणासहतेसर्वेसंप्राप्तेप्रतिसंच रे ॥ परस्यांतेकृतात्मानः प्रविशंतिपरंपदं ॥) अर्थयह ॥ तेउपासकपुरुष ब्रह्मलोकविषेजाइकै तहांब्रह्माकेप्रलयकीप्रा प्तिहूए तत्त्वसाक्षात्कारवालेहोइकै ताब्रह्माकेनाशहूएतैंअनंतर तिसब्रह्माकेसाथिहीं विदेहमुक्तिकूंप्राप्तहोवैहैंइति

॥ ४७ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ ईहां मैंपरमेश्वरकूंप्राप्तहोइकै तेउपासकपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं इसभगवान्‌केवचनतैं ब्रह्मलोकतैंभिन्न कोईविष्णुलोक जानणानहीं ॥ काहेतैं जैसे पौराणिक ब्रह्मलोक विष्णुलोक रुद्रलोक इनतीनलोकोंकी भिन्नभिन्न ऊपरिऊपरिकल्पनाकरे हैं ॥ तैसे वेदांतसिद्धांतविषे तिनलोकोंकी भिन्नभिन्नऊपरिऊपरि कल्पनाहैनहीं ॥ किंतु वेदांतसिद्धांतविषे तेसर्वलोक स त्यलोकनामाब्रह्मलोकविषेहीं अंतर्भूतहैं ॥ तहां विष्णुकेउपासकोंकूंतौं सोब्रह्मलोक विष्णुलोकहोइकै प्रतीतहोवैहै ॥ औ र रुद्रकेउपासकोंकूंतौं सोब्रह्मलोक रुद्रलोकहोइकै प्रतीतहोवैहै ॥ यहसर्ववार्त्ता (पराहिसोपासनकर्मोर्जितिर्हिरण्यगर्भप्रा ह्यंता) इसबृहदारण्यकउपनिषदकीश्रुतिकेव्याख्यानविषे श्रीभाष्यकारोंनैं तथाताभाष्यकेव्याख्यानकरतावोंनैं स्पष्टक रिकैकथनकरीहै इति ॥ १५ ॥ ※ ॥ तहां परमेश्वरकीउपासनातैं परमेश्वरकूंप्राप्तहोइकै तहां तत्त्वसाक्षात्कारकूंप्राप्त हूए जेउपासकपुरुषहैं ॥ तिनउपासकपुरुषोंकी अपुनरावृत्तिकेकथनकोयेहूए तिसपरमेश्वरतौंविमुख तथातत्त्वसाक्षात्का रतैंरहित ऐसेपुरुषोंकी ताब्रह्मलोकतैंपुनरावृत्ति अर्थतैंहीं सिद्धहोवैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्त्तिनोर्जुन ॥ मामुपेत्यतुकौंतेयपुनर्जन्मनविद्यते ॥ १६ ॥

आब्रह्मभुवनात् । लोकाः । पुनरावर्त्तिनः । अर्जुन । मां । उपेत्य । तु । कौंतेय । पुनः । जन्म । न । विद्यते ॥ इतिपद० ॥

हेअर्जुन ब्रह्मलोकसहित सर्वलोक पुनरावृत्तिवालेहींहैं हेकौंतेय एकमैंपरमेश्वरकूं हीं प्राप्तहोइकै पुनः जन्म नहीं होवैहैं ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरतैंविमुख तथाअसम्यक्दर्शनवाले जितनैंकीपुरुषहैं तिनसर्वपुरुषोंकूं ब्रह्मलोकसहित सर्व भोगभूमिरूपलोक पुनरावृत्तिवालेहींहोवैहैं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरतैंविमुखपुरुष ब्रह्मलोकादिकसर्वलोकोंतैं नीचैपतनहोइकै पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तैंपरमेश्वरकूंप्राप्तहूए अधिकारीजनोंकूंभी तिनपुरुषों कीन्यांई क्यापुनरावृत्तिकीहींप्राप्तिहोवैहैं ॥ ऐसीशंकाहेहूए श्रीभगवान् पूर्वकहेहूएअर्थकूंहीं पुनःदृढकरावणेवा सतै कहेहैं ॥ (मामुपेत्यतुइति) हेकौंतेय मैंएकपरमेश्वरकूंहींप्राप्तहोइकै परमआनंदकूंप्राप्तहूए जेअधिकारीपुरुषहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं पुनःकदाचित्भी जन्मनहींहोवैहै ॥ अर्थात् तिनपुरुषोंकी कदाचित्भी पुनरावृत्ति नहींहोवैहै ॥ ईहां (हेअर्जुन) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं ताअर्जुनविषे स्वभावसिद्ध महानुभावपणा कथनकऱ्या ॥ और (हेकौंतेय) यासंबोधनकरिकै मातातैंभी महानुभावपणा कथनकऱ्या ॥ ताकहणेकरिकै आत्मज्ञानकीसिद्धिवासतै ताअर्जुनविषे स्वरूपतैंशुद्धि तथाकारणतैंशुद्धि सूचनकरी इति ॥ ईहां (आब्रह्मभवनात्) याप्रकारका जोकिसीपुस्तक विषेपाठहोवै ॥ तौंभी पूर्वउक्तअर्थतैं विलक्षणतानहींहै ॥ काहेतैं (भवंत्यत्रभूतानीतिभुवनं) अर्थयह जिसविषे भूतविद्यमानहोवैं ताकानाम भुवनहै ॥ याप्रकारकी व्युत्पत्तिकरिकै सोभुवनशब्द लोककावाचकहै ॥ और निवासकेस्थान कानाम भवनहै ॥ सोभवनशब्दभी लोककाहींवाचकहै इति ॥ ईहां (आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्तिनोऽर्जुन) इस पूर्वार्द्धकरिकै श्रीभगवान्नैं ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहूए पुरुषोंकी पुनरावृत्ति कथनकरी ॥ और (मामुपेत्यतुकौंतेयपुनर्जन्मनविद्यते) इसउत्तरार्धकरिकै तिसब्रह्मलोकतैं अपुनरावृत्ति कथनकरी ॥ याकेविषेयहव्यवस्थाहै ॥ क्रममुक्ति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैफलजिनोंका ऐसीजे दहरादिकउपासनाहै ॥ तिनउपासनावोंकरिकै जेपुरुष देवयानमार्गद्वारा तिसब्रह्मलोककूं प्राप्तहूएहैं ॥ तिनउपासकपुरुषोंकूंहीं तहां उत्पन्नहूएतत्त्वसाक्षात्कारकरिकै ब्रह्माकेसाथि मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं तेउपासकपुरुष पुनरावृत्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ औरजेपुरुष पंचाग्निविद्यादिकोंकरिकै ताब्रह्मलोककूं प्राप्तहूएहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं तहां तत्त्वसाक्षात्कारकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं तेपुरुषतौं तहां भोगोंकूंभोगिकै अवश्यकरिकै पुनरावृत्तिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ परंतु तेउपासकपुरुषभी जिसकल्पविषे तिसब्रह्मलोककूंप्राप्तहूएहैं ॥ तिसकल्पविषे पुनरावृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ किंतु दूसरेकल्पविषे पुनरावृत्तिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं (ब्रह्मलोकमभिसंपद्यतेनचपुनरावर्त्तते) इत्यादिकश्रुतियोंनैं तथा (अनावृत्तिःशब्दात्) इससूत्रनैं ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहूएउपासकपुरुषोंकी जोपुनरावृत्ति कथनकरीहै ॥ सो क्रममुक्तिवालेउपासकपुरुषोंकी अपुनरावृत्ति कथनकरीहै ॥ और जेश्रुतिस्मृतिवचन ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहूएपुरुषोंकी पुनरावृत्तिकूं कथनकरेहैं ॥ तेवचनतौं पंचाग्निविद्यादिकोंकरिकै ब्रह्मलोककूंप्राप्तहूएपुरुषोंके पुनरावृत्तिकूंकथनकरेहैं ॥ यातैं उपासकपुरुषोंकी ब्रह्मलोकतैं अपुनरावृत्तिकूंकथनकरणेहारेवचनोंका तथाताब्रह्मलोकतैं पुनरावृत्तिकूंकथनकरणेहारेवचनोंका परस्पर विरोधहोवैनहीं ॥ तापंचाग्निविद्याकास्वरूप आत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे हम विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैं इति ॥ १६ ॥ ※ ॥ तहां ब्रह्मलोकसहित सर्वलोक कालकरिकैपरिच्छिन्नहोणेतैं पुनरावृत्तिवालेहींहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

सहस्रयुगपर्यंतमहर्यद्ब्रह्मणोविदुः ॥ रात्रिंयुगसहस्रांतांतेहोरात्रविदोजनाः ॥ १७ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सहस्रयुगपर्यंतं । अहः । यत् । ब्रह्मणः । विदुः । रात्रिं । युगसहस्रांतां । ते । अहोरात्रविदः । जनाः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जेपुरुष ब्रह्माके चतुर्युगसहस्रपर्यंत दिनकूं जानेहैं तथा चतुर्युगसहस्रपर्यंत रात्रिकूं जानेहैं ते योगीजनहीं दिनरात्रिकूंजानणेहारेहैं ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ तहां सतारहलक्ष अठावीससहस्रवर्ष १७२८००० सत्ययुगका परिमाणहोवैहै ॥ और बारहलक्ष छि यानवेसहस्रवर्ष १२९६००० त्रेतायुगका परिमाणहोवैहै ॥ और आठलक्ष चौसठसहस्रवर्ष ८६४००० द्वापर युगका परिमाणहोवैहै ॥ और च्यारिलक्ष बतीससहस्रवर्ष ४३२००० कलियुगका परिमाणहोवैहै ॥ यहच्यारोयुग जबी एकसहस्रवार वितीतहोवैहैं ॥ तबी प्रजापतिनामाब्रह्माका एकदिनहोवैहै ॥ इसीप्रकार यहच्यारियुग जबी एकसहस्रवार वितीतहोवैहैं ॥ तबी तिसब्रह्माकी एकरात्रिहोवैहै ॥ यहहीं ब्रह्माकेदिनरात्रिकापरिमाण (चतुर्युगसह स्रंतुब्रह्मणोदिनमुच्यते) इत्यादिकपुराणकेवचनोंविषेभी कथनकऱ्याहै ॥ इसप्रकारके ब्रह्माकेदिनकूं तथारात्रिकूं जे पुरुष जानेहैं तेयोगीजनहीं रात्रिदिनकेजानणेहारेकहेजावैहैं ॥ और जेपुरुष सूर्यचंद्रमाकीगतिकरिकै दिनरात्रि कूंजानेहैं ॥ तेपुरुष दिनरात्रिकेजानणेहारेकहेजावैनहीं ॥ जिसकारणतैं तेपुरुष अल्पदर्शीहैं इति ॥ १७ ॥ * ॥ इस प्रकारका ब्रह्माकादिनरात्रिजबी पंचदशदिनहोवैहैं ॥ तबी ताब्रह्माका एकपक्ष कह्याजावैहै ॥ ऐसे दोपक्षोंका एक मास कह्याजावैहै ॥ ऐसेद्वादशमासोंका एकवर्ष कह्याजावैहै ॥ ऐसेएकशतवर्ष १०० ताब्रह्माकी परमआयुष्होवैहै ॥ तहां प्रथम पंचासवर्ष प्रथमपरार्द्ध कह्याजावैहै और दूसरेपंचासवर्ष द्वितीयपरार्द्ध कह्याजावैहै ॥ ऐसीशतवर्षआ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

युष्कूंभोगिकै सोब्रह्मा नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं सोब्रह्माभी कालकरिकैपरिच्छिन्नहोणेतैं अनित्यहींहै ॥ यातैं क्रममुक्तितैंरहितपुरुषोंकी तिसब्रह्मलोकतैंपुनरावृत्ति युक्तहींहै॥और जेइंद्रादिकदेवता तिसब्रह्मातैंभीनीचैहैं ॥ तेइंद्रादिकदेवतातौं तिसब्रह्माके एकदिनरूपकालकरिकैहीं परिच्छिन्नहैं ॥ यातैं तिनइंद्रादिकदेवतावोंकेलोकोंतैं इनपुरुषोंकी पुनरावृत्तिहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

अव्यक्ताद्व्यक्तयःसर्वाःप्रभवंत्यहरागमे ॥ राव्यागमेप्रलीयंतेतत्रैवाव्यक्तसंज्ञके॥ १८॥

अव्यक्तात्। व्यक्तयः। सर्वाः। प्रभवंति। अहरागमे। राव्यागमे। प्रलीयंते। तत्र। एव। अव्यक्तसंज्ञके। इतिपद०॥

हेअर्जुन तिसब्रह्माके दिनकेआगमनविषे अव्यक्ततैं यहसर्व व्यक्तियां उत्पन्नहोवैहैं और रात्रिकेआगम नविषे तेसर्वव्यक्तियां तिसं अव्यक्तनामाकारणविषे हीं प्रलयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वजोब्रह्माकादिनकथनकऱ्याहै ॥ तादिनकेआगमविषे अर्थात् ताब्रह्माकेजाग्रतकालविषे अव्यक्ततैं यहसर्वव्यक्तियां उत्पन्नहोवैहैं ॥ यद्यपि अन्यस्थलविषे अव्यक्तशब्द अव्याकृतअवस्थाकाहीं वाचकहोवैहै ॥ तथापि ईहां अव्यक्तशब्दकरिकै अव्याकृतअवस्थाकाग्रहणकरणानहीं ॥ काहेतैं ईहांप्रसंगविषे ब्रह्माके दिनदिनविषे सृष्टिकूं तथारात्रिरात्रिविषे प्रलयकूं कथनकरणेवासतैहीं प्रारंभकऱ्याहै ॥ ताब्रह्माके दिनसृष्टिविषे तथारात्रिप्रलयविषे आकाशादिकभूतोंकी उत्पत्ति तथानाश होवैनहीं ॥ किंतु तेआकाशादिकभूत तहां जिउकेतिउ बनैंरहेहैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ यातैं ताअव्यक्तशब्दकरिकै आकाशादिकोंकाकारणरूप अव्याकृतअवस्थाका ग्रहणकरणानहीं ॥ किंतु ताअव्यक्तशब्दकरिकै ब्रह्माकेसुषुप्तिअवस्थाका ग्रहणकरणा ॥ अर्थात् सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहूएप्रजापतिकानाम अव्यक्तहै ॥ ऐसेअव्यक्ततैं शरीरविषयादिरूपभोगकीभूमियांरूपव्यक्तियां उत्पन्नहोवैहै अर्थात् पूर्वसूक्षमरूपकरिकैरहीहूई ते व्यक्तियां व्यवहारकरणेविषे समर्थतारूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तिसप्रजापतिनामा ब्रह्माके रात्रिकेआगमनविषे अर्थात् तिसब्रह्माकेसुषुप्तिकालविषेतेसर्वव्यक्तियां जिसअव्यक्तरूपकारणतैं पूर्व प्रादुर्भूतहूईयांथ्यां ॥ तिसीअव्यक्तनामाकारणविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ १८ ॥ ※ ॥ इसप्रकार यहसंसार यद्यपि शीघ्रहीं विनाशकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथापि इससंसारकी निवृत्तिहोतीनहीं ॥ काहेतैं अविद्या काम कर्म इनतीनोंकरिकै परतंत्रहूआ यहसंसार पुनःपुनः प्रादुर्भावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा ताप्रादुर्भावकूंप्राप्तहूए इससंसारका ताअविद्याकामकर्मकेवशतैं पुनःपुनः तिरोभावहोवैहै ॥ ऐसेआगमापायीसंसारविषेवर्त्तमान जितनैंकोप्राणीहैं ॥ तेप्राणीभी ताअविद्याकामकर्मकरिकै परतंत्रहींहैं ॥ ऐसेपरतंत्रप्राणीयोंकूंहीं जन्ममरणादिकदुःखोंकोप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं इसदुःखरूपसंसारतैं निवृत्तहोणाहींश्रेष्ठहै याप्रकारकेवैराग्यकीउत्पत्तिवासतै तथाइससंसारका समाननामरूपकरिकैहीं पुनःपुनःप्रादुर्भावहोणेतैं कृतनाश अकृताभ्यागमरूपदोषकीनिवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान् कहेहै ॥

भूतग्रामःसएवायंभूत्वाभूत्वाप्रलीयते॥रात्र्यागमेऽवशःपार्थप्रभवत्यहरागमे ॥ १९॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भूतग्रामः । सः । एव । अयं । भूत्वा । भूत्वा । प्रलीयते । रात्र्यागमे । अवशः । पार्थ । प्रभवति । अहरागमे ॥ इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन जोपूर्वकल्पविषेथा सोई हीं यह प्राणीयोंकासमुदाय उत्तरउत्तरकल्पविषे उत्पन्नहोइकै उत्पन्नहोइकै पर तंत्रआहू ब्रह्माके दिनकेआगमनविषेतौं उत्पन्नहोवैहै और रात्रिकेआगमनविषे लयहोवै है॥ १९ ॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोस्थावरजंगमभूतोंकासमुदाय पूर्वकल्पविषेस्थितथा ॥ सोईहीं भूतोंकासमुदाय उत्तरउत्तरकल्पविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ कल्पकल्पविषे अन्यअन्यनवीन भूतोंकासमुदाय उत्पन्नहोवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे तार्किक असत्कार्यकीउत्पत्तिकूंअंगीकारकरेहैं ॥ तैसे वेदांतसिद्धांतविषे असत्कार्यकोउत्पत्ति अंगीकारहैनहीं ॥ जोकदाचित् असत्कीभीउत्पत्तिहोतीहोवै ॥ तौं नरशृंगवंध्यापुत्रकीभी उत्पत्तिहोणीचाहीये ॥ यातैं असत्कार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु आपणीउत्पत्तितैंपूर्व आपणेकारणविषे सूक्ष्मरूपकरिकैरह्येहूएकार्यकीहीं कारणसामग्रीकेवशतैं पुनःअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ किंवा जोकदाचित् कल्पकल्पविषे अन्यअन्य नवीन प्राणीयोंकीउत्पत्ति अंगीकारकरीये ॥ तौं पूर्वकल्पकेअंतविषे प्राणीयोंनैं कऱ्येजेपुण्यपापकर्महैं तिनकर्मोंका भोगतैंविनाहीं नाशहोवैंगा ॥ और इसकल्पके आदिविषेउत्पन्नभयेजेप्राणीहैं ॥ तिनप्राणीयोंकूं पूर्वनहींकऱ्येहूएपुण्यपापकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकाभोग होवैंगा ॥ इसीकूंहीं शास्त्रविषेकृतनाश अकृताभ्यागम कहेहैं ॥ सो आत्मज्ञानतैंरहित पुरुषोंकूं कऱ्येहूएकर्मका फलकेभोगतैं विना नाशकहणा तथानकऱ्येहूएकर्मोंकेफलकाभोगकहणा शास्त्रतैंविरुद्धहै ॥ काहेतैं शास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ (अवश्यमेवभोक्तव्यं कृतंकर्मशुभाशुभं ॥ नाभुक्तंक्षीयतेकर्म कल्पकोटिशतैरपि ॥) अर्थयह ॥ आत्मज्ञानतैंरहितअज्ञानीपुरुषनैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जोशुभकर्मकऱ्याहै अथवा अशुभकर्मकऱ्याहै ॥ सोशुभअशुभकर्म अवश्यकरिकैभोग्याजावैहै ॥ तिसअज्ञानीपुरुषकूं भोगदीयेतैंविना सोशुभअशुभकर्म शतकोटीकल्पोंकरिकैभी नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ याकारणतैंभी कल्पकल्प विषे नवीनप्राणीयोंकीउत्पत्तिहोवैनहीं किंतु पूर्वपूर्वकल्पविषेस्थितप्राणीयोंकीहीं उत्तरउत्तरकल्पविषे उत्पत्तिहोवैहैं ॥ किंवा यहवार्त्ता केवलयुक्तिकरिकैहींसिद्धनहींहै॥ किंतु साक्षात्श्रुतिभगवतीहीं इसअर्थकूं कथनकरेहै॥तहांश्रुति ॥ (सूर्या चंद्रामसौधातायथापूर्वमकल्पयत् दिवंचपृथिवींचांतरिक्षमथोस्वरिति ॥ अर्थयह ॥ सूर्य चंद्रमा पृथिवी अंतरिक्ष स्वर्ग इसतैंआदिलैके यहसर्वजगत् जिसप्रकारका पूर्वपूर्वकल्पविषेथा तिसीतिसीप्रकारका उत्तरउत्तरकल्पविषे परमेश्वर रच ताभया इति ॥ सोईहीं यहस्थावर जंगमरूपभूतोंकासमुदाय अविद्याकामकर्मकरिकैपरतंत्रहूआ तिसब्रह्माके दिनकेआग मन विषेतौं तिसपूर्वउक्तरूपकारणतैं प्रादुर्भावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तिसब्रह्माके रात्रिकेआगमनविषे तिसअव्यक्तरूप कारणविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इति ॥ १९ ॥ ❋ ॥ इसप्रकार अविद्याकामकर्मकेअधीनप्राणीयोंका वारंवार उ त्पत्तिविनाश दिखाइकै (आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्तिनोऽर्जुन) इसपूर्वउक्तवचनकाअर्थ तीनश्लोकोंकरिकै उपपाद नकऱ्या ॥ अब (मामुपेत्यपुनर्जन्मनविद्यते) इसपूर्वउक्तवचनकाअर्थ दोश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् उपपादनकरेहै ॥

242

परस्तस्मात्तुभावोन्योऽव्यक्तोव्यक्तात्सनातनः॥यःससर्वेषुभूतेषुनश्यत्सुनविनश्यति ॥

परः।तस्मात्।तु।भावः।अन्यः।अव्यक्तः। अव्यक्तात्। सनातनः।यः। सः।सर्वेषु।भूतेषु।नश्यत्सु।न।विनश्यति।इतिपदच्छेदः।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन जो[1] सत्तारूपभाव तिस[3] अव्यक्ततैं परैहै तथाअत्यंतविलक्षणहै तथाइंद्रियोंकाँअविषयहै
तथानित्यहै सोसत्तारूपभाव सर्व भूतोंके[11] नाशहूएभी नहीं[13] नाशहोवैहै[14] ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वकल्पितप्रपंचविषे अनुस्यूत जोसत्तारूपभावहै ॥ सोसत्तारूपभावकैसाहै ॥ पूर्वकथनकऱ्याजो चराचरस्थूलप्रपंचकाकारणभूत हिरण्यगर्भनामा अव्यक्तहै ॥ तिसअव्यक्ततैंभी परहै ॥ अर्थात् ताअव्यक्ततैं व्यतिरिक्तहै अथवा ताअव्यक्ततैं श्रेष्ठहै ॥ काहेतैं सोसत्तारूपभाव तिसहिरण्यगर्भरूपअव्यक्तकाभी कारणरूपहै ॥ शंका ॥ हे भगवन् तिससत्तारूपभावकूं तिसअव्यक्ततैंव्यतिरिक्ताहूएभी तिसअव्यक्तकीसादृश्यता होवैंगी ॥ जैसे गवयकूं गौ तैंव्यतिरिक्ताहूएभी गौकीसादृश्यताहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (अन्यःइति) हेअर्जुन सो सत्तारूपभाव तिसअव्यक्ततैं अन्यहै ॥ अर्थात् अत्यंतविलक्षणहै ॥ किसीअंशविषेभी ताअव्यक्तकेसदृशनहींहै ॥ त हांश्रुति ॥ (नतस्यप्रतिमाअस्ति ॥) अर्थयह ॥ तिससत्तारूप परमात्माकेसदृश कोईभीपदार्थहैनहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसा सत्तारूपभाव सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्षक्युंनहींहोता ॥ ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (अ व्यक्तःइति) हेअर्जुन सोसत्तारूपभाव अव्यक्तरूपहै ॥ अर्थात् रूपादिकगुणोंतैंरहितहोणेतैं चक्षुआदिकइंद्रियोंका अविषयहै ॥ तहांश्रुति ॥ (नचक्षुषापश्यतिकश्चिदेनं ॥) अर्थयह इसआत्मादेवकूं चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकै कोईभी देखसकतानहीं इति ॥ पुनःकैसाहैसोसत्तारूपभाव सनातनहै ॥ अर्थात् उत्पत्तिनाशतैंरहितहोणेतैं सर्वदानित्यहै ॥ ईहां (तस्मात्तु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द परित्यागकरणेयोग्य अनित्य अव्यक्ततैं तिसस

243

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्तारूपनित्यअव्यक्तविषे ग्राह्यत्वरूपविलक्षणताकूं सूचनकरेहै ॥ अथवा सोतुशब्द नैयायिकोनैंकल्पनाकरीहूई जा तिरूपसत्ताकीव्यावृत्तिकूं बोधनकरेहै ॥ काहेतैं साजातिरूपसत्ता द्रव्य गुण कर्म इनतीनपदार्थोंविषेअनुगतहूईभी सामान्य विशेष समवाय अभाव इनच्यारिपदार्थोंविषेरहैनहीं ॥ और यहचैतन्यरूपसत्तातौं सर्वपदार्थोंविषे अनुस्यूतहोइकैरहेहै ॥ इसप्रकारकाजोसत्तारूपभावहै ॥ सोसत्तारूपभाव तिसअव्यक्तनामाहिरण्यगर्भकीन्यांई तिनसर्वभूतोंकेनाशहूएभी नाशहोवैनहीं ॥ तथा तिनसर्वभूतोंकेउत्पन्नहूएभी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और सोअव्यक्तनामा हिरण्यगर्भतौंआप कार्यरूपहै तथातिनभूतोंकाअभिमानीहै ॥ यातैं तिनभूतोंकेउत्पत्तिनाशकरिकै तिसहिरण्यगर्भका उत्पत्तिनाश युक्तहै ॥ और तिनभूतोंकानहींअभिमानी तथाअकार्यरूप जोसत्तारूप परमात्मादेवहै ॥ तिसपरमात्मादेवका तिनभूतोंकेउत्पत्तिनाशकरिकै उत्पत्तिनाश संभवतानहीं इति ॥ ॥ २० ॥ ❋ ॥ किंच

अव्यक्तोऽक्षरइत्युक्तस्तमाहुःपरमांगतिं ॥ यंप्राप्यननिवर्त्तंतेतद्धामपरमंमम ॥ २१ ॥

अव्यक्तः । अक्षरः । इति । उक्तः । तं । आहुः । परमां । गतिं । यं । प्राप्य । ना।निवर्त्तंते । तत् । धाम । परमं । मम॥इतिप०

हेअर्जुन जोसत्तारूपभाव ईहां अव्यक्त अक्षर इसनामकरिकै कथनकऱ्याहै तिससत्तारूपभावकूं श्रुतिस्मृतियां परम गति कहेहैं जिससत्तारूपभावकूं प्राप्तहोइकै यहअधिकारीजन पुनः नहीं जन्मकूं प्राप्तहोवैहैं सोसत्तारूपभाव मैंपरमेश्वरका सर्वतैंउत्कृष्ट स्वरूपहींहै ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥ ॥५२॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोसत्तारूपभाव इसगीताशास्त्रविषे इंद्रियोंकाअविषयहोणेतैं अव्यक्त इसनामकरिकै पूर्वकथन कऱ्याहै ॥ तथा जोसत्तारूपभाव नाशतैंरहितहोणेतैं अथवा सर्वत्रव्यापकहोणेतैं अक्षर इसनामकरिकै पूर्वकथनकऱ्या है ॥ तथा अन्यश्रुतिस्मृतियोंविषेभी अव्यक्त अक्षर इसनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तिससत्तारूपभावकूं श्रुतिस्मृतियां परमगतिरूपकहैहैं ॥ ईहां (परमां) इसशब्दकरिकै उत्पत्तिनाशतैंरहितस्वप्रकाशपरमानंदरूपका ग्रहणकरणा ॥ और मुमुक्षुजनोंकूं एकआत्माज्ञानकरिकैहीं जोपुरुषार्थ प्राप्तहोवैहै ताकानाम गतिहै ॥ अर्थात् तिससत्तारूपभावकूं श्रुतिस्मृतियां स्वप्रकाशपरमानंदस्वरूप परमपुरुषार्थरूपकहैहैं ॥ अथवा ब्रह्मलोकपर्यंत जागतिहै ॥ सागति कार्यरूपहोणेतैं अपरमाहै ॥ और यहचैतन्यसत्तारूपगतितौं कार्यकारणभावतैंरहितहोणेतैं परमाहै इति ॥ तहां श्रुति ॥ (एषास्यपरमागतिः पुरुषान्नपरांकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः ॥) अर्थयह ॥ यहसत्चित्आनंदस्वरूप परमात्मादेवहीं इसविद्वान्पुरुषकीपरमगतिहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवतैंपरेकोईभीवस्तुनहींहैं किंतु सोपरमात्मादेवहीं सर्वकाअवधिहै तथापरमगतिहै इति ॥ और जिससत्तारूपभावकूं यहअधिकारीजन प्राप्तहोइकै पुनःसंसारविषे पतनहोते नहीं ॥ अर्थात् पुनःजन्मकूं प्राप्तहोतेनहीं ॥ सोसत्तारूपभाव मैंपरमेश्वरका परमधामहै ॥ अर्थात् सोसत्तारूपभाव मैंपरिपूर्णविष्णुका सर्वतैंउत्कृष्ट तथासर्वउपाधियोंतैंरहित वास्तवस्वरूपहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तद्विष्णोःपरमंपदं ॥) अर्थयह ॥ जिससत्चित्आनंदस्वरूप अद्वितीयनिर्गुणब्रह्मकूं अहंब्रह्मास्मि इसप्रकार अभेदरूपतैंप्राप्तहोइकै तत्त्ववेत्तापुरुष पुनःजन्ममरणरूपसंसारकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ सोअद्वितीयनिर्गुणहीं विष्णुका परमपदहै ॥ अर्थात् ताविष्णुका वास्तवरूपहै इति ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ईहां (राहोःशिरःपुरुषस्यचैतन्यं) इसस्थलविषे जैसे राहुशिरकेअभेदहूएभी तथापुरुषचैतन्यकेअभेदहूएभी भेदकीकल्पनाकरिकै षष्ठीविभक्तिहै ॥ वास्तवतैं राहुशिरका तथापुरुषचैतन्यका अभेदहींहैं ॥ तैसे (ममधाम) इसवचनविषे भी परमेश्वरके तथासत्तारूपधामके वास्तवतैंअभेदहूएभी भेदकीकल्पनाकरिकै षष्ठीविभक्तिहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जिसअक्षरअव्यक्तरूपभावकूं श्रुतियां परमगतिरूपकहेहैं ॥ सापरमगति मैंपरमेश्वरहींहूं इति ॥ २१ ॥ * ॥ तहां (अनन्यचेताःसततंयोमांस्मरतिनित्यशः ॥ तस्याहंसुलभःपार्थनित्ययुक्तस्ययोगिनः) इसश्लोककरिकै पूर्वकथनकऱ्याजोभक्तियोगहै ॥ सोभक्तियोगहीं तिसपरमगतिकेप्राप्तिकाउपायहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

246

पुरुषःसपरःपार्थभक्त्यालभ्यस्त्वनन्यया॥यस्यांतःस्थानिभूतानियेनसर्वमिदंततं २२

पुरुषः । सः । परः । पार्थ । भक्त्या । लभ्यः । तु । अनन्यया । यस्य । अंतःस्थानि । भूतानि । येन । सर्वं । इदं । ततं ॥इतिप०

हेअर्जुन सोपूर्वउक्त निरतिशय परमात्मापुरुष अनन्य भक्तिकरिकै हीं प्राप्तहोवैहै जिसपुरुषके सर्वभूत अंतर्वर्त्तिहैं तथा जिसपुरुषनैं यह सर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सो निरतिशय परमात्मापुरुष मैंहींहूं ॥ ऐसा मैंपरमात्मादेव एकअनन्यभक्तिकरिकैहीं प्राप्तहोताहूं ॥ तहां मैंपरमेश्वरतैंविना नहींविद्यमानहै अन्यविषय जिसविषे ऐसीजाप्रेमलक्षणाभक्तिहै ताकानाम अनन्यभक्तिहै ॥ सोनिरतिशयपुरुष कौंनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (यस्यांतःस्थानिइति) हे ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अर्जुन जिसकारणपुरुषके यहसर्वकार्यरूपभूत अंतर्वर्तीहैं ॥ काहेतैं इसलोकविषेभी जोजोकार्यहोवैहे ॥ सोसो कार्य आपणेउपादानकारणकेहीं अंतर्वर्तिहोवैहै ॥ जैसे घटशरावादिककार्य मृत्तिकारूपकारणकेहीं अंतर्वर्त्तिहोवैहैं ॥ तैसे यहसर्वकार्यप्रपंचजिसकारणरूपपुरुषके अंतर्वर्त्तीहै॥ इसोकारणतैंहीं जिसपुरुषनैं यहसर्वकार्य प्रपंचव्याप्तकऱ्याहै ॥ जैसे मृत्तिकारूपकारणनैं घटशरावादिकसर्वकार्य व्याप्तकऱ्येहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्मात्परंनापरमस्तिकिंचित् यस्मान्नाणोयोनऱ्यायोस्तिकश्चित् ॥ वृक्षइवस्तब्धोदिवितिष्ठत्येकस्तेनेदंपूर्णंपुरुषेणसर्वं ॥ यच्चकिंचिज्जगत्यस्मिन्दृश्यतेश्रूयतेपिवा ॥ अंतर्बहिश्चतत्सर्वंव्याप्यनारायणःस्थितः ॥) अर्थयह ॥ जिसपरमात्मादेवतैं कोईभीवस्तु पर तथाअपर नहींहै ॥ तथा जिसपरमात्मादेवतैं कोईभीवस्तु अत्यंतअणु तथाअत्यंतमहान् नहींहै ॥ तथा जोअद्वितीय परमात्मादेव महान्वृक्षकीन्यांई चलायमानतातैंरहितहै ॥ तथा आपणेस्वयंज्योति स्वरूपविषे स्थितहै ॥ तिसपरमात्मादेवपुरुषनैंहींयहसर्वजगत् पूर्णकऱ्याहै॥ और इसजगत्विषे जोकोईवस्तु देखणेविषेआवैहै ॥ तथाश्रवणकऱ्याजावैहै ॥ तिससर्वजगत्कूं अंतरबाह्यतैंव्याप्यकरिकैहीं नारायणस्थितहै इति ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतियां तिसपरमात्मादेवकीव्यापकताकूं कथनकरेहैं ॥ ऐसामैंपरमात्मादेव केवलअनन्यभक्तिकरिकैहीं प्राप्तहोवूंहूं ईहां मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाजो तत्त्वज्ञानहै सोईहीं तिसपरमात्मादेवकीप्राप्तिहै ॥ तिसतत्त्वज्ञानकीप्राप्तिका परमेश्वरकीअनन्यभक्तिहीं उपायहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाः प्रकाशंतेमहात्मनः ॥) अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमेश्वरविषे अनन्यभक्तिहै ॥ और जैसी परमे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्वरविषे अनन्यभक्तिहै ॥ तैसीहीं गुरुविषेअनन्यभक्तिहै ॥ तिसमहात्मापुरुषकूंहीं बहवेदांतकरिकैप्रतिपादितअर्थ अपरोक्षहोवैहैं ॥ ताभक्तितैंरहितपुरुषकूं तेअर्थ अपरोक्षहोतेनहीं ॥ यातैं जिज्ञासुजनकूं सापरमेश्वरकीभक्ति अवश्य कर्त्तव्यहै इति ॥ २२ ॥ * ॥तहां पूर्व यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ जो सगुणब्रह्मकेउपासक तिससगुणब्रह्मकूंप्राप्तहोइकै पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ किंतु तहां क्रममुक्तिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तहां तिससगुणब्रह्मलोकभोगतैंपूर्व नहींउत्पन्नभयाहै आत्मसाक्षात्कारजिनोंकूं ऐसेजेउपासकपुरुषहैं ॥ तिनउपासकपुरुषोंकूं ताब्रह्मलोकविषे जाणेवासतैं मार्गकीअपेक्षा अवश्यकरिकैरहेहै ॥ तत्त्ववेत्तापुरुषोंकीन्यांई तिनउपासकपुरुषोंकूं मार्गकीअनपेक्षा नहीं है ॥ यातैं उपासकपुरुषोंकूं तिसब्रह्मलोककीप्राप्तिवासतै श्रीभगवान् देवयानमार्गका कथनकरेहै ॥ और पितृयाणमार्गका जोईहांकथनकऱ्याहै ॥ सो तिसदेवयानमार्गकीस्तुतिवासतैकथनकऱ्याहै ॥

248

यत्रकालेत्वनावृत्तिमावृत्तिंचैवयोगिनः॥ प्रयातायांतितंकालंवक्ष्यामिभरतर्षभ॥ २३॥

यत्र। काले। तु। अनावृत्तिं। आवृत्तिं। च। एव। योगिनः। प्रयाताः। यांति। तं। कालं। वक्ष्यामि। भरतर्षभ॥ इतिप०॥

हेअर्जुन जिस मार्गविषे जाणेहारे उपासककर्मीपुरुष अनावृत्तिकूं तथा आवृत्तिकूं हीं प्राप्तहोवैहैं तिस मार्गकूं मैं कथनकरताहूं ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसशरीरतैंप्राणोकेउत्क्रमणतैंअनंतर जिसकालविषे जाणेहारे योगीपुरुष अर्थात् दिनरात्रि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आदिककालकेअभिमानीदेवतावोंकरिकैउपलक्षितमार्गविषे जाणेहारेयोगीपुरुष अनावृत्तिकूं तथाआवृत्तिकूं प्राप्त होवैहैं ॥ सोकाल मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ अर्थात् ताकालकेअभिमानीदेवतावोंकरिकैउपलक्षित सोअनावृत्तिकामार्ग तथाआवृत्तिकामार्ग मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ ईहां (योगिनः) यापदकरिकै उपासकपुरुषोंका तथाकर्मीपुरुषोंका दोनोंका ग्रहणकरणा ॥ तहां देवयानमार्गविषे जाणेहारे उपासकपुरुषतौं अनावृत्तिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और पितृयाणमार्गविषे जाणेहारे कर्मीपुरुषतौं आवृत्तिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यद्यपि देवयानमार्गविषे जाणेहारे उपासकपुरुषभी पुनरावृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता (आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्त्तिनोऽर्जुन) इसवचनविषे पूर्व कथनकरीहै ॥ तथापि पितृयाणमार्गविषे जाणेहारे जितनैंकीकर्मीपुरुषहैं ॥ तेसर्वकर्मीपुरुष नियमकरिकै आवृत्तिकूंहींप्राप्तहोवैहैं ॥ कोईभीकर्मीपुरुष तहां क्रममुक्तिकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ और देवयानमार्गविषे जाणेहारे जेउपासकपुरुषहैं ॥ तिनउपासकोंकेमध्यविषे यद्यपि केईकउपासकपुरुष ताब्रह्मलोकविषे भोगोंकूंभोगिकै अंतविषे पुनःआवृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ जैसे पंचाग्निविद्यादिकउपासनाकरिकै तादेवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहूएभी तेउपासकपुरुष पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथापि जेउपासकपुरुष दहरविद्यादिकउपासनावोंकरिकै तादेवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहूएहैं ॥ तेउपासकपुरुषतौं पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ किंतु ब्रह्मलोककेभोगोंकेअंतविषे क्रममुक्तिकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं तादेवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहूए उपासकपुरुष सर्वहीं आवृत्तिकूंप्राप्त होवैनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं पितृयाणमार्ग नियमकरिकै आवृत्तिरूपफलवालाहोणेतैं निकृष्टहै ॥ और यहदेवयान

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मार्गतौं अनावृत्तिरूपफलवालाहोणेतैं उत्कृष्टहै ॥ याप्रकारतैं तिसदेवयानमार्गकीस्तुति संभवैहै ॥ यद्यपि तादेवयान मार्गद्वारागएहूए कितनैंकीपुरुषोंकी पुनः आवृत्तिहोवैहै ॥ तथापि तादेवयानमार्गद्वारा गएहूए कितनैंकीउपासकपुरुषोंकी पुनः आवृत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं तादेवयानमार्गविषे अनावृत्तिरूपफलवत्ता संभवैहै ॥ ईहां (यत्रकाले तं कालं) यावचनविषेस्थितजो काल यहशब्दहै ॥ ताकालशब्दकी दिनरात्रिआदिककालकेअभिमानीदेवतावोंकरि कैउपलक्षितमार्गविषे जोलक्षणानहींअंगीकारकरीये ॥ किंतु ताकालशब्दका यहश्रुतमुख्यअर्थहीं अंगीकारकरीये ॥ तौं वक्ष्यमाणश्लोकविषे (अग्निर्ज्योतिर्धूमः) इनशब्दोंकीअनुपपत्तिहोवैंगी ॥ जिसकारणतैं इनशब्दोंकेअर्थविषे कालरूपताहैनहीं ॥ तथा स्पष्टमार्गकेवाचकजो वक्ष्यमाण गति सृति यहदोशब्दहै तिनोंकीभीअनुपपत्तिहोवैंगी ॥ याकारणतैं कालशब्दकी तामार्गविषेलक्षणाअंगीकारकरीहै ॥ और तिनदोनोंमार्गोंविषे कालकेअभिमानीदेवता बहुतहैं ॥ यातैं श्रीभगवान्नैं तामार्गकाउपलक्षक कालशब्द कथनकऱ्याहै इति ॥ २३ ॥ ※ ॥ तहां प्रथम उपासकपुरुषोंके देवयानमार्गकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

अग्निर्ज्योतिरहःशुक्लःषण्मासाउत्तरायणं॥तत्रप्रयातागच्छंतिब्रह्मब्रह्मविदोजनाः ॥ २४

अग्निः । ज्योतिः । अहः । शुक्लः । षण्मासाः । उत्तरायणं । तत्र । प्रयाताः । गच्छंति । ब्रह्म । ब्रह्मविदः । जनाः । इतिपदच्छेदः

हेअर्जुन जिसमार्गविषे ज्योतिरूप अग्नि तथादिन तथाशुक्लपक्ष तथाषट्मासरूप उत्तरायण इत्यादिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्थितहैं तिसंदेवयानमार्गविषे गमनंकरणेहारे सगुंणब्रह्मकेउपासक जंन तिससंगुणब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ २४ ॥
॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसदेवयानमार्गविषे प्रथमज्योतिरूपअग्नि स्थितहै ॥ तिसतैंअनंतर दिवसस्थितहै ॥ तिस
तैंअनंतर शुक्लपक्ष स्थितहै ॥ तिसतैंअनंतर षट्मासरूपउत्तरायणस्थितहै ॥ ईहां (अग्निर्ज्योतिः) इसशब्दकरि
कै अग्निकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ इसीअग्निकूं श्रुतिविषेअर्चिः यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ और (अ
हः) इसशब्दकरिकै दिनकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ और (शुक्ल) इसपदकरिकै शुक्लपक्षकेअभिमानी
देवताका ग्रहणकरणा ॥ और (षण्मासाउत्तरायणं) इसवचनकरिकै षट्मासरूपउत्तरायणकेअभिमानीदेवताका ग्रह
णकरणा ॥ यहकथनकरयेहूएदेवता श्रुतिउक्तदूसरेदेवतावोंकेभी उपलक्षकहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तेऽर्चिरभिसंभवंत्यार्चि
षोऽहरन्हआपूर्यमाणपक्षमापूर्यमाणपक्षाद्यान्षडुदङितिमासांस्तांन्मासेभ्यः संवत्सरं संवत्सरादादित्यमादित्याच्चंद्रमसं
चंद्रमसोविद्युतंतत्पुरुषोऽमानवः सएतान्ब्रह्मगमयत्येषदेवपथोब्रह्मपथएतेनप्रतिपद्यमानाइमंमानवमावर्त्तंनावर्त्ततेइ
ति) ॥ अर्थयह ॥ तेउपासकपुरुष प्रथम अर्चिकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर दिनकेअभिमानीदे
वताकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर शुक्लपक्षकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर षट्मासरूपउत्तरायण
केअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर संवत्सरकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर
आदित्यकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर चंद्रमाकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर विद्युतकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तहां अमानवपु
रुष आइकै इनउपासकपुरुषोंकूं ब्रह्मलोकविषे लेजावैहै ॥ इसीकानाम देवमार्गहै तथाब्रह्ममार्गहै ॥ इसदेवयानमार्ग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करिकै ब्रह्मलोककूंप्राप्तहूए यहउपासकपुरुष इसमानवआवर्त्तकूं नहींप्राप्तहोवैहैं इति ॥ तहां इसश्रुतिविषे दूसरी श्रुतिकेअनुसार संवत्सरतैंअनंतर देवलोकदेवता तिसतैंअनंतर वायुदेवता तिसतैंअनंतर आदित्यदेवताका ग्रहण करणा ॥ तथा विद्युतकेअनंतर वरुण इंद्र प्रजापति इनतीनोंदेवतावोंका ग्रहणकरणा ॥ इसप्रकार श्रीभाष्यकारोंनैं निर्णयकरयाहै ॥ तहां तिसउपासकपुरुषकूं प्रथमतौं अग्निदेवतालेजावैहै ॥ ताअग्निलोकतैं दिनकाअभिमानीदेवता आपणेलोकविषेलेजावैहै ॥ यहरीति आगेभीजानलेणी ॥ और विद्युत्लोकविषे ब्रह्मलोकवासीअमानवपुरुष आइकै ताउपासकपुरुषकूं वरुणलोकविषे लेजावैहै ॥ ताउपासक तथाअमानवपुरुष दोनोंकेसाथि विद्युत्काअभिमानी देवता तावरुणलोकपर्यंत जावैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोवरुणदेवता तिनदोनोंकेसाथि इंद्रलोकपर्यंतजावैहै ॥ तिसतैं अनंतर सोइंद्रदेवता तिनदोनोंकेसाथि प्रजापतिकेलोकपर्यंतजावैहै ॥ तिसतैंअनंतर प्रजापतिकूं ताब्रह्मलोकविषे जाणेकासामर्थ्यहैनहीं ॥ यातैं केवलअमानवपुरुषहीं ताउपासककूं ब्रह्मलोकविषेलेजावैहै ॥ ईहां प्रजापतिशब्दकरिकैविराट्काग्रहणकरणा इति ॥ तहां श्रीभगवान्नैंतौं अग्निकाअभिमानीदेवता दिनकाअभिमानीदेवता शुक्लपक्षकाअभिमानीदेवता उत्तरायणकाअभिमानीदेवता यहच्यारिदेवताहीं ईहां कथनकरेहैं ॥ संवत्सर देवलोक वायु आदित्य चंद्रमा विद्युत वरुण इंद्र प्रजापति यहसर्वदेवता ईहांकथनकरेनहीं ॥ तौंभी ताश्रुतिकेअनुसार तिनसर्वदेवतावोंका ईहांग्रहणकरणा इति ॥ जिसमार्गविषे यहअग्नितैंआदिलैकेप्रजापतिपर्यंत सर्वदेवता स्थितहैं ॥ तिसदेवयानमार्गविषे गमनकरणेहारे सगुणब्रह्मकेउपासकजन तिसहिरण्यगर्भरूप सगुणब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिससगुण

252

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ब्रह्मद्वाराहीं तेउपासकपुरुष निर्गुणब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यहवार्ता (कार्यबादरिरस्यगत्युपपत्तेः) इससूत्रविषे भगवान्भाष्यकारोंनैं विस्तारतैं कथनकरीहै॥ईहां (एतेनप्रतिपद्यमानाइमंमानवमावर्त्तंनावर्त्तते) इसश्रुतिविषे इमं यहविशेषणकथनकरयाहै ॥ ताविशेषणतैं यहअर्थ प्रतीतहोवैहैं ॥ इसकल्पतैंअनंतर दूसरेकल्पविषे केईकपंचाग्निविद्यावाले उपासकपुरुष तिसब्रह्मलोकतैं पुनःआवृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं॥ तिनोंकीहीं श्रीभगवान्नैं (आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनः) इसवचनकरिकैआवृत्ति कथनकरीहै॥ इसीकारणतैंहीं ईहां श्रीभगवान्नैंउक्तमार्गका श्रुतिप्रतिपादितमार्गकेकथनकरिकैहीं व्याख्यानकरयाहै ॥ इसदेवयानमार्गका विस्तारतैंकथनतौं आत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे प्रसिद्धहै इति॥ २४॥ ❋ ॥ अबइसपूर्वउक्तदेवयानमार्गकोस्तुतिकरणेवासतै श्रीभगवान् पितृयाणमार्गकूंकथनकरेहैं॥

धूमोरात्रिस्तथाकृष्णःषण्मासादक्षिणायनं॥तत्रचांद्रमसंज्योतिर्योगीप्राप्यनिवर्त्तते ॥

धूमः१। रात्रिः२। तथा३। कृष्णः४। षण्मासाः५। दक्षिणायनं६। तत्र७। चांद्रमसं८। ज्योतिः९। योगी१०। प्राप्य११। निवर्त्तते१२॥इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन जिसमार्गविषे धूम१ तथा रात्रि२ तथा कृष्णपक्ष३ तथा षट्मासरूप दक्षिणायन४ इत्यादिकस्थितहैं तिसमार्गविषे गमनकरणेहारे कर्मीपुरुष चंद्रमातैं५ प्राप्तहूए कर्मकेफल६कूं प्राप्तहोइकै पुनःआवृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं॥२५॥इतिपदार्थः ॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसपितृयाणमार्गविषे प्रथम धूम स्थितहै ॥ तिसतैंअनंतर रात्रि स्थितहै ॥ तिसतैंअनंतर कृष्णपक्ष स्थितहै ॥ तिसतैंअनंतर षट्मासरूपदक्षिणायन स्थितहै ॥ ईहांभी (धूमः) इसशब्दकरिकै धूमकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ और (रात्रिः) इसशब्दकरिकै रात्रिकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ और (कृ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ष्णः) इसशब्दकरिकै कृष्णपक्षकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ और (षण्मासादक्षिणायनं) इसवचनकरि कै षट्मासरूपदक्षिणायनकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ ईहांभी यहकथनकऱ्येहूए धूमादिकच्यारिदेवता श्रुतिउक्तदूसरेदेवतावोंकेभी उपलक्षकहैं॥तहांश्रुति॥ (तेधूममभिसंभवंतिधूमाद्रात्रिंरात्रेरपरपक्षमपरपक्षाद्यान्षड्दक्षिणेतिमासांस्तान्मासेभ्यः पितृलोकंपितृलोकादाकाशमाकाशाच्चंद्रमसंतांस्मिन्यावत्संपातमुषित्वाथैतमेवाध्वानंपुनर्निवर्त्तंतेइति ॥) अर्थयह ॥ तेकर्मीपुरुष प्रथम धूमकेअभिमानीदेवताकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर रात्रिकेअभिमानीदेवताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर कृष्णपक्षकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर षट्मासरूपदक्षिणायनकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैहैं॥ तिसतैंअनंतर पितृलोककेअभिमानीदेवताकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर आकाशकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैहैं॥तिसतैंअनंतर चंद्रमाकूंप्राप्तहोवैहैं॥तास्वर्गनामा चंद्रलोकविषे पुण्यकर्मोकेभोगकालपर्यंत निवासकरिकै पश्चात् परिशेषतैं रह्येहूए पुण्यपापकर्मोकेवशतैं पुनःतिसमार्गद्वारा निवृत्तहोवैहैं इति ॥ ईहां श्रीभगवान् नैंधूमकाअभिमानीदेवता रात्रिकाअभिमानीदेवता कृष्णपक्षकाअभिमानीदेवता दक्षिणायनकाअभिमानीदेवता यहच्यारिदेवताहीं कथनकऱ्येहैं ॥ पितृलोककाअभिमानीदेवता आकाशकाअभिमानीदेवता चंद्रमादेवता यहतीनदेवता कथनकऱ्येनहीं ॥ तौंभी इसश्रुतिकेअनुसार तेतीनोंदेवताभी ईहांग्रहणकरणे ॥ इसप्रकार धूमकेअभिमानीदेवतातैं आदिलैकै चंद्रमादेवतापर्यंत कथनकऱ्येहूए सर्वदेवता जिसमार्गविषेस्थितहैं ॥ तिसपितृयाणमार्गविषे गमनकरणेहारे इष्ट पूर्त्त दत्त इनतीनप्रकारकेकर्मोकूंकरणेहारेकर्मीपुरुष ताचंद्रलोकविषे चंद्रमातैंप्राप्तहूए

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिनकर्मोंकेसुखरूपफलकूंप्राप्तहोइकै तिनकर्मोंकेक्षयतैंअनंतर पुनः इसमनुष्यलोकविषे आवृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं इसपितृयाणनामा आवृत्तिकेमार्गतैं सोदेवयाननामा अनावृत्तिकामार्ग अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ ईहां अग्निहोत्रादिककर्मोंकानाम इष्टकर्महै ॥ और वापी कूप तलाव धर्मशाला इत्यादिककर्मोंकानाम पूर्त्तकर्महै ॥ और सुपात्रकेप्रति गौसुवर्णादिकपदार्थोंकादानकरणा याकानाम दत्तकर्महै ॥ इनतीनप्रकारकेकर्मोंकास्वरूप पूर्वभी विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं इति ॥ २५ ॥ ※ ॥ अब इनपूर्वउक्तदोनोंमार्गोंका उपसंहारकरेहैं ॥

शुक्लकृष्णेगतीह्येतेजगतःशाश्वतेमते ॥ एकयायात्यनावृतिमन्ययावर्त्ततेपुनः ॥ २६ ॥

शुक्लकृष्णे । गती । हि । एते । जगतः । शाश्वते । मते । एकया । याति । अनावृत्तिं । अन्यया । आवर्त्तते । पुनः ॥ इतिप० ॥

हेअर्जुन इनलोकोंके यह प्रसिद्ध शुक्लकृष्णदोनो मार्ग अनादि सिद्धहैं तिनदोनोंमार्गोंविषे एकशुक्लमार्गकरिकैतौं कोईक उपासकपुरुष अनावृत्तिकूं प्राप्तहोवैहैं और दूसरेकृष्णमार्गकरिकैतौं सर्वहींजन पुनः आवृत्तिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ २६ ॥ इतिप० ॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्व ब्रह्मलोकप्राप्तिका मार्गरूपकरिकैकथनकऱ्याजो देवयानमार्गहै ॥ सोदेवयान मार्ग ज्ञानरूपप्रकाशकीअधिकतावाले अग्नि आदिकदेवतावोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथाप्रकाशरूप सगुणब्रह्मविद्याकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ तथा प्रकाशमयलोकभी तिसमार्गविषे बहुतहैं ॥ तथा स्वप्रकाशब्रह्मकेप्राप्तिकाहेतुहोणेतैं उत्कृष्टहै ॥ तथा ज्ञानरूपप्रकाशमयहै ॥ याकारणतैं सोदेवयानमार्ग शुक्ल इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और पूर्व स्वर्गलोकप्राप्ति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

का मार्गरूपकरिकै कथनकऱ्याजो पितृयाणमार्गहै ॥ सोपितृयाणमार्गतौं ज्ञानरूपप्रकाशतैंरहितहोणैतैं तमोमयहै ॥ तथा अप्रकाशरूप धूमरात्रिआदिकोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा पुनः संसारकाहतुहाणैतैं निकृष्टहै ॥ याकारणतैं सोपि तृयाणमार्ग कृष्ण इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ इसप्रकार शुक्लकृष्णनामकरिकैप्रसिद्ध यहपूर्वउक्तदोनोंमार्ग इसज गत्के अनादिसिद्धहैं ॥ अर्थात् यहसंसार प्रवाहरूपकरिकैअनादिहै ॥ यातैं तासंसारविषेवर्त्तणेहारे तेदोनोंमार्ग भी अनादिहींहैं ॥ यद्यपि जगत् यहशब्द प्राणीमात्रकावाचकहै ॥ तथापि ईहां जगत्शब्दकरिकै सगुणविद्याकेअ धिकारी तथाकर्मोंकेअधिकारी जेशास्त्रज्ञमनुष्यहैं तिनोंकाहींग्रहणकरणा ॥ प्राणीमात्रकाग्रहणकरणानहीं ॥ काहे तैं तेदोनोंमार्ग सर्वप्राणीमात्रकूं प्राप्तहोतेनहीं किंतु केवल उपासककर्मीपुरुषोंकूंहीं प्राप्तहोतेहैं ॥ कर्मउपासनातैंर हित पापात्माअज्ञानीपुरुषोंकूंतौं अधोगतिकूंप्राप्तकरणेहारा तृतीयस्थाननामा मार्गहीं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं ईहां जगत्शब्दकरिकै उपासकपुरुषोंका तथाकर्मीपुरुषोंकाहीं ग्रहणकरणाउचितहै इति ॥ हेअर्जुन तिनदोनोंमार्गोंवि षे प्रथम देवयानरूपशुक्लमार्गकरिकै ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहूए उपासकपुरुषोंविषे कोईकउपासकपुरुष अनावृत्तिकूं हीं प्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (नचपुनरावर्त्ततेइति ॥) अर्थयह ॥ सोक्रममुक्तिवाला उपासकपुरुष पुनःआवृत्तिकूंप्रा प्तहोतानहीं इति ॥ और दूसरे पितृयाणनामा कृष्णमार्गकरिकै स्वर्गविषेप्राप्तहूए कर्मीपुरुषतौं सर्वहीं पुनःआवृ त्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (प्राप्यांतंकर्मणस्तस्य यत्किंचेहकरोत्ययं ॥ तस्माल्लोकात्पुनरेति अस्मैलोकायकर्मणे) ॥ अर्थयह ॥ यहपुरुष इसमनुष्यलोकविषे जोजोपुण्यकर्मकरेहै ॥ तिसपुण्यकर्मकेवशतैं स्वर्गलोकविषेजाइकै तिस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुण्यकर्मोंकूंभोगतैंनाशकरिकै तिसलोकतैं पुनः इसमनुष्यलोककीप्राप्तिवासतै आवैहै इति ॥ २६ ॥* ॥ तहां जैसे सगुणब्रह्मकीउपासना ताब्रह्मलोककेप्राप्तिकाकारणहै ॥ तैसे तादेवयानमार्गकाचिंतनभी कारणहै ॥ यातैं ता मार्गकीउपासनाकरावणेवासतै श्रीभगवान् तामार्गकेज्ञानकीस्तुतिकरेहै ॥

नैतेसृतीपार्थजानन्योगीमुह्यतिकश्चन॥तस्मात्सर्वेषुकालेषुयोगयुक्तोभवार्जुन॥२७॥

नँ। एँते। सृँती। पार्थ। जानँन्। योगी। मुह्यँति। कँश्चन। तस्मँात्। सँर्वेषु। कँालेषु। योगँयुक्तः। भँव। अँर्जुन। इतिपद०

हेंपार्थ इनपूर्वउक्त दोनोंमार्गोंकूं जाँनताहूआ कोंईभी ध्यानपँरायणपुरुष नँहीं मोहकूंप्राप्त होवैहै तिसकँारणतैं हेंअर्जुन सँर्व कँालविषे तूं ध्यँानपरायण होंउँ ॥ २७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहदेवयाननामा शुक्लमार्गतौं क्रममुक्तिकीहीं प्राप्तिकरणेहाराहै ॥ और यहपितृयाणनामा कृष्ण मार्गतौं पुनः संसारकीहीं प्राप्तिकरणेहाराहै ॥ याप्रकारतैं इनदोनोंमार्गोंकूंजानणेहारा सगुणब्रह्मकेध्यानपरायण पुरुष कोईभी मोहकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ अर्थात् तापितृयाणमार्गकीप्राप्तिकरणेहारे जेइष्टपूर्त्तकर्महैं तेकर्महीं हमारेकूंक र्त्तव्यहै अन्यकछुकर्त्तव्यहैनहीं याप्रकारतैं केवल तिनकर्मोंकूंहीं कर्त्तव्यतारूपकरिकै निश्चयकरतानहीं ॥ हेअर्जुन जिस कारणतैं सोसगुणब्रह्मकाध्यानरूपयोग अपुनरावृत्तिरूपफलकीहीं प्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तिसकारणतैं तूंअर्जुन ति सअपुनरावृत्तिरूपफलवासतै तियोगकरिकै युक्तहोउ ॥ अर्थात् समाहितचित्तवालाहोउ इति ॥ २७ ॥* ॥ अब ताध्यानरूपयोगविषे अधिकारीजनोंकेश्रद्धाकीवृद्धिकरावणेवासतै श्रीभगवान् पुनः तायोगकीस्तुतिकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेदेषुयज्ञेषुतपःसुचैवदानेषुयत्पुण्यफलंप्रदिष्टं ॥ अत्येति
तत्सर्वमिदंविदित्वायोगीपरंस्थानमुपैतिचाद्यं ॥ २८ ॥

॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेमहापुरुषयोगोनामअष्टमोऽध्यायः समाप्तः ॥

वेदेषु । यज्ञेषु । तपःसु । च । एव । दानेषु । यत् । पुण्यफलं । प्रदिष्टं । अत्येति ।
तत् । सर्वं । इदं । विदित्वा । योगी । परं । स्थानं । उपैति । च । आद्यं ॥ २८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन वेदोंविषे तथायज्ञोंविषे तथा तपोंविषे तथा दानोंविषे जो पुण्यकास्वर्गादिकफल
शास्त्रनैं कथनकऱ्याहै तिस सर्वकूं सोध्याननिष्ठपुरुष इसपूर्वउक्तअर्थकूं जानिकै अतिक्रमणक
रेहैतथा सर्वतैंउत्कृष्ट कारणरूप स्थानकूंभी प्राप्तहोवैहै ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वेदोंकेअध्ययनकालविषे शास्त्रनैं जेब्रह्मचर्यादिकनियमकथनकरेहैं ॥ तिननियमोंकेपालनपूर्वक
व्याकरणादिकषट्अंगोंसहित अध्ययनकऱ्येजेऋगादिकवेदहैं ॥ तिनवेदोंकेअध्ययनकोयेहूए ताअध्ययनकरतापुरु
षकूं शास्त्रनैं जोपुण्यकाफल कथनकऱ्याहै ॥ और अंगउपअंगोंसहित तथाश्रद्धापूर्वक सम्यक्अनुष्ठानकऱ्येहूए जे
अश्वमेधादिकयज्ञहैं ॥ तिनयज्ञोंकेकोयेहूए तिसयज्ञकरतापुरुषकूं शास्त्रतैं जोपुण्यकाफल कथनकऱ्याहै ॥ और म
नबुद्धिआदिकोंकीएकाग्रताकरिकै श्रद्धापूर्वक कऱ्येहूएजेशास्त्रविहित कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपहैं ॥ तिनतपोंकेकीयेहू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ए तिसतपकरतापुरुषकूं शास्त्रनैं जोपुण्यकाफल कथनकऱ्याहै ॥ और उत्तमदेशकालविषे सुपात्रकेतांई शास्त्रकीवि
धिपूर्वक तथाश्रद्धापूर्वक दीयाजो गौसुवर्णादिकपदार्थोंकादानहै ॥ तादानकेकीयेहूए तिसदानकरतापुरुषकूं शास्त्रनैं
जोपुण्यकाफल कथनकऱ्याहै ॥ अर्थात् सार्वभौमकेसुखतैंआदिलैके विराट्लोककेसुखपर्यंत जितनाकी तैत्तिरीयश्रु
तिनैं शतशतगुणाअधिकसुख कथनकऱ्याहै ॥ तिनसर्व पुण्यकेसुखरूपफलोंकूं सोध्यानपरायणपुरुष अतिक्रमणक
रेहै ॥ किसअर्थकूं जानिकरिकै अतिक्रमणकरेहै ॥ ऐसोअर्जुनकोजिज्ञासाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (इदंविदित्वाइ
ति) हेअर्जुन इसअष्टमअध्यायविषे पूर्वउक्तसप्तप्रश्नोंकेनिरूपणद्वारा कथनकऱ्याजोअर्थहै ॥ तिससर्वअर्थकूं स
म्यक्निश्चयकरिकै तथाश्रद्धापूर्वक तिसअर्थकाअनुष्ठानकरिकै सोसगुणब्रह्मकेध्यानपरायणउपासकपुरुष तिनसर्व
पुण्यकर्मोंकेफलोंकूं अतिक्रमणकरेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोउपासकपुरुष केवल तिनपुण्यकर्मोंकेफलोंकूंहीं अति
क्रमणकरेहै ॥ अथवा तिसकूं कोईदूसराभीफल प्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (परं
स्थानमुपैतिचाद्यं) हेअर्जुन सोध्यानपरायणपुरुष केवल तिनस्वर्गादिकफलोंकाहीं अतिक्रमणनहींकरेहै ॥ किंतु
सर्वतैंउत्कृष्ट तथासर्वकाकारणरूपजो ईश्वरसंबंधीस्थानहै ॥ तिसस्थानकूंभी प्राप्तहोवै ॥ अर्थात् सोध्याननिष्ठउपा
सकपुरुष सर्वकेकारणरूपब्रह्मकूंभीप्राप्तहोवैहै इति ॥ तहां इसअष्टमअध्यायकरिकै श्रीभगवान्नैं ध्येयत्वरूपकरिकै
तत्पदार्थका निरूपणकऱ्या इति ॥ २८ ॥ * ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशि
ष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायांअष्टमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ८ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायांअष्टमोध्यायः ॥

260

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

261

॥अथ श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायांनवमोध्यायः॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ नव माऽध्यायप्रारंभः ॥ तहांपूर्वअष्टमअध्यायविषे यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ सुषुम्नानामा मूर्द्धन्यानाडीहै गमनकाद्वार जिसविषे ॥ तथा हृदय कंठ भ्रुवोंकामध्य इत्यादिकस्थानोंविषे प्राणोंकीधारणाहै जिसविषे ॥ तथा सर्वइंद्रियद्वारोंका संयमरूपगुणहैजिसविषे ॥ ऐसाजोयोगहै ॥ तायोगकरिकै आपणीइच्छापूर्वक इसशरीरतैं उत्क्रमणकूंप्राप्तहूएहैं प्राण जिसके ॥ तथाअर्चिरादिमार्गकरिकैं ब्रह्मलोकविषेप्राप्तिहूईहै जिसको ॥ ऐसाजोउपासकपुरुषहै ॥ जिसउपासकपुरुषकूं ताब्रह्मलोकविषे दिव्यभोगोंकेभोगतैंअनंतर ब्रह्मज्ञानकीउत्पत्तिकरिकै ताकल्पकेअंतविषे परब्रह्मकीप्राप्तिरूप क्रममु क्तिकीप्राप्तिहोवैहै इति ॥ यहवार्त्ता पूर्वअध्यायविष कथनकरीथो ॥ ताकेविषे पूर्व यहशंकाप्राप्तभईथी ॥जो इसअधिकारी पुरुषकूं इसपूर्वउक्तप्रकारतैंहीं मुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ अथवा किसोअन्यप्रकारतैंभी मुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै इति ॥ ऐसीशं काकेप्राप्तहूए ताशंकाकोनिवृत्तिकरणेवासतै (अनन्यचेताःसततंयोमांस्मरतिनित्यशः ॥ तस्याहंसुलभःपार्थनित्ययुक्त स्ययोगिनः) इत्यादिकवचनोंकरिकै श्रीभगवान्कवास्तवस्वरूपकेविज्ञानतैं ईहांहीं साक्षात्मोक्षकोप्राप्ति कथनकरीथो ॥ तहां तिससाक्षात्मोक्षकीप्राप्तिविषे अनन्यभगवत्भक्तिहीं असाधारणकारणहै ॥ यहवार्त्ताभो (पुरुषःसपरःपार्थभ क्त्यालभ्यस्त्वनन्यया) इसवचनकरिकैकथनकरीथो ॥ इत्यादिकसर्ववार्त्ता पूर्वअष्टमअध्यायविषेनिरूपणकरीथी ॥ तहां पूर्वउक्तधारणापूर्वकप्राणोंकाउत्क्रमण तथाअर्चिरादिमार्गविषेगमन तथाबहुतकालकाविलंब इत्यादिकक्लेशोंतैंविनाहीं साक्षात्मोक्षकीप्राप्तिवासतै श्रीभगवान्केवास्तवस्वरूपका तथाताकेभक्तिका विस्तारतैंनिरूपणकरणेवासतै इसनवम

262

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अध्यायका प्रारंभकरीताहै ॥ तहां पूर्वअष्टमअध्यायविषेतौं ध्येयब्रह्मकानिरूपणकरिकै ताध्येयब्रह्मकेध्यानपरायण पुरुषोंकीगति कथनकरी ॥ अब इसनवमअध्यायविषे ज्ञेयब्रह्मकानिरूपणकरिकै ज्ञाननिष्ठपुरुषोंकीगति कथनकरीतोहै ॥ तहां वक्ष्यमाणज्ञानकीस्तुतिवासतै श्रीभगवान्नैं प्रथम यहतीनश्लोक कथनकरीतेहैं ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ इदंतुतेगुह्यतमंप्रवक्ष्याम्यनसूयवे ॥
ज्ञानंविज्ञानसहितंयज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ १ ॥

इदं१ तु२ ते३ । गुह्यतमं४ । प्रवक्ष्यामि५ । अनसूयवे६ । ज्ञानं७ । विज्ञानसहितं८ । यत्९ । ज्ञात्वा१०मोक्ष्यसे११ । अशुभात्१२ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन असूयातैंरहित तैं२अर्जुनकेतांई मैं३ यह अत्यंतगुह्य४ तथाविज्ञानसहित ज्ञान
कथनकरताहूं जिसज्ञानकूं प्राप्तहोइकै तूं संसारबंधनतैं मुक्तहोवैंगा॥ १॥इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन केवलमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणकरिकैजन्य तथाप्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकूंविषयकरणेहारा जोमैंब्रह्म रूपहूं याप्रकारकाज्ञानहै ॥ जोज्ञान पूर्वभीअनेकवार हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ तथा आगेकथनकरणाहै ॥ तथा अबीइसअध्यायविषे कथनकऱ्याजावैंगा ॥ सोज्ञान मैंपरमेश्वर तुमारेतांई कथनकरताहूं ॥ तूं सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ ईहां (इदंतु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सोतुशब्द पूर्वअध्यायविषेकथनकऱ्येहूए सगुणब्रह्मकेध्यानतैं इसज्ञानविषे विलक्षणताकूंकथनकरेहै ॥ अर्थात् यहआत्मज्ञानहीं साक्षात् मोक्षकेप्राप्तिकासाधनहै ॥ पू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्वकथनकऱ्याहूआध्यान साक्षात् मोक्षकेप्राप्तिकासाधनहैनहीं ॥ काहेतैं जैसे आत्मज्ञान अज्ञानकोनिवृत्तिकरेहै ॥ तैसे सोध्यान अज्ञानकीनिवृत्तिकरतानहीं ॥ यातैं सोध्यान साक्षात् मोक्षकेप्राप्तिकासाधननहींहै ॥ किंतु सोध्यान तौं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा इसआत्मज्ञानकूंसंपादनकरिकैहीं क्रमकरिकै तामोक्षकूंउत्पन्नकरैहै ॥ यहवार्त्ता पूर्वअध्यायविषेकहिआयेहैं ॥ पुनःकैसाहैसोज्ञान गुह्यतमहै ॥ अर्थात् अतिरहस्यहोणेतैं सोज्ञान गोप्यराखणेयोग्यहै ॥ अब ताज्ञानकोगोप्यताविषे तिसज्ञानका हेतुगर्भितविशेषण कहेहैं (विज्ञानसहितंइति) हेअर्जुन कैसाहैसोज्ञान विज्ञानसहितहै ॥ अर्थात् मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअपरोक्षअनुभवपर्यंतहै ॥ याकारणतैंहीं सोज्ञान गोप्यराखणेयोग्यहै ॥ ऐसाअतिरहस्यरूपभीयहज्ञान मैंभगवान्वासुदेव तुमारेतांई कथनकरताहूं ॥ अब ताअर्जुनविषे तिसज्ञानकेउपदेशकरणेकीयोग्यताबोधनकरणेवासतै श्रीभगवान् ताअर्जुनका विशेषण कथनकरेहै (अनसूयवेइति) हेअर्जुन तूं असूयातैंरहितहैं ॥ यातैं इसज्ञानकेउपदेशका तूंअधिकारीहैं ॥ तहां गुणोंविषेदोषदृष्टिकरणी याकानाम असूयाहै ॥ ताअसूयातैं तूंरहितहैं ॥ अर्थात् यहकृष्णभगवान् हमारेसमीप सर्वदा आपणीऐश्वर्यताकथनकरिकै आपणीहींस्तुतिकरताहै याप्रकारकीअसूयातैं तूं रहितहैं ॥ ईहां असूयातैंरहितपणा दूसरेभी आर्जवसंयमादिकशिष्यकेगुणोंका उपलक्षकहै ॥ अर्थात् शिष्यकेसर्वगुणोंकरिकैसंपन्न तैं अर्जुनकेतांई मैं यहज्ञान उपदेशकरताहूं॥ शंका॥ हेभगवन् ऐसेज्ञानकीप्राप्तिकरिकै हमारेकूं कौंनफलहोवैंगा॥ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्)हेअर्जुन जिसआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै तूं शीघ्रही इससर्वदुःखोकेकारणरूपसंसारबंधनतैं मुक्तहोवैंगा इति ॥ १ ॥※ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अब तिस आत्मज्ञानविषे अधिकारीजनोकीअभिमुखता करावणेवासतै श्रीभगवान्पुनः तिसज्ञानकीस्तुतिकरेहै ॥

राजविद्याराजगुह्यंपवित्रमिदमुत्तमं ॥ प्रत्यक्षावगमंधर्म्यंसुसुखंकर्त्तुमव्ययं ॥ २ ॥

राजविद्या । राजगुह्यं । पवित्रं । इदं । उत्तमं । प्रत्यक्षावगमं । धर्म्यं । सुसुखं । कर्त्तुं । अव्ययं ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन यहआत्मज्ञान सर्वविद्यावोंकाराजाहै तथासर्वगुह्यपदार्थोंकाराजाहै तथासर्वतैंउत्तम पवित्रहै तथाप्रत्यक्षहैप्रमाणजिसविषे तथासर्वधर्मकाफलरूपहै तथासुखपूर्वकहीं करणेकूंशक्यहै तथाअक्षयफलवालाहै ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥ ॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहआत्मज्ञानकैसाहै जितनीकी लौकिक तथाशास्त्रीय विद्याहैं ॥ तिनसर्वविद्यावोंकाराजाहै ॥ अर्थात् तिनसर्वविद्यावोंतैं अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं यहआत्मज्ञान कार्यसहित संपूर्णमूलाअविद्याका नाशकरणेहारा है ॥ और इसआत्मज्ञानतैंभिन्न दूसरीजितनीकोविद्याहैं ॥ तेविद्यातौं संपूर्णमूलाअविद्याकूंनाशकरतीनहीं ॥ किंतु तेविद्या तिसमूलाअविद्याकेकिसीएकदेशकाहीं विरोधीहोवैहैं ॥ जिसएकदेशकूं शास्त्रविषे तूलाअविद्या तथाअवस्थाअज्ञान इसनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ पुनःकैसाहैयहआत्मज्ञान ॥ लोकशास्त्रविषे जितनैंकीगुह्यपदार्थहैं ॥ तिनसंर्वगुह्यपदार्थोंकाराजाहै ॥ अर्थात् तिनसर्वगुह्यपदार्थोंतैंभी अत्यंतगुह्यहै ॥ काहेतैं यहआत्मज्ञान अनेकजन्मोंविषेकऱ्येहूए निष्कामपुण्यकर्मोकरिकैहींप्राप्तहोवैहै ॥ तापुण्यकर्मतैंरहितजेपुरुषहैं ॥ तेपुरुष यद्यपि आपणीबुद्धिकेबलतैं अनेकगुह्यपदार्थोंकूंजानेहैं ॥ तथापि इसआत्मज्ञानकूं तेपुरुष जानिसकतेनहीं ॥ यातैं यहआत्मज्ञान तिनसर्व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

गुह्यपदार्थोंतैं अत्यंतगुह्यहै ॥ पुनःकैसाहैयहआत्मज्ञान सर्वतैंउत्तम पवित्रहै ॥ काहेतैं धर्मशास्त्रविषे पापकीनिवृत्ति करणेवासतैं जितनैंकीप्रायश्चित्तकथनकरेहैं ॥ तेप्रायश्चित्त इसपुरुषके सर्वपापोंकीनिवृत्तिकरतेनहीं किंतु तेप्रायश्चित्त किसाएकपापकीहीं निवृत्तिकरेहै ॥ ताप्रायश्चित्तकरिकै निवृत्तहूआभी सोएकपाप आपणेकारणविषे सूक्ष्मरूपहोइकैरहेहै ॥ जिसपापवासनातैं यहपुरुषपुनःतिसपापकरणेविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ यातैं तेप्रायश्चित्त सर्वतैंउत्तम पवित्र नहींहैं ॥ और यहआत्मज्ञानतौं अनेकसहस्रजन्मोंविषेसंचयकरयेहूए तथास्थूलसूक्ष्मअवस्थावाले जितनैंकीपापहैं तिनसर्वपापोंका तथातिनपापोंकेकारणरूपअज्ञानका शीघ्रहीं नाशकरेहै ॥ यातैं यहआत्मज्ञान सर्वतैंउत्तम पवित्रहै ॥ अर्थात् शुद्धिकरणेहाराहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे अतिइंद्रियधर्मविषे लोकोंकूंसंदेहरहेहै ॥ तैसे इसज्ञानविषेभीं लोकोंकूं संदेहहींरहैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ यहआत्मज्ञान आपणेस्वरूपतैं तथाफलतैं प्रत्यक्षहींहै इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (प्रत्यक्षावगमंइति) तहां (अवगम्यतेअनेनेत्यवगमोमानं) ॥ अर्थयह ॥ जिसकरिकैवस्तुजानोजावैहै ताकानाम अवगमहै ॥ इसप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै अवगम यहशब्द प्रमाणकावाचकहै ॥ और (अवगम्यतेप्राप्यतेइत्यवगमःफलं) ॥अर्थयह॥अधिकारीपुरुषोंकूं जोप्राप्तहोवै ताकानाम अवगमहै ॥ याप्रकारको व्युत्पत्तिकरिकै सोअवगमशब्द फलकावाचकहै ॥ तहां प्रथमअर्थविषेतौं प्रत्यक्षहैअवगम क्या प्रमाण जिसविषे ताकानाम प्रत्यक्षावगमहै ॥ याप्रकारके बहुव्रीहिसमासकरिकै तावृत्तिरूपज्ञानविषे स्वरूपतैं साक्षीप्रत्यक्षगम्यत्व सिद्धहोवैहै ॥ और दूसरेअर्थविषेतौं प्रत्यक्षहैअवगम क्या फल जिसका ताकानाम प्रत्यक्षावग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महै ॥ याप्रकारकेबहुव्रीहिसमासकरिकै तावृत्तिज्ञानविषे फलतैंभी साक्षीप्रत्यक्षगम्यत्व सिद्धहोवैहै ॥ तहां मैनैं यह वस्तु जान्याहै इसकारणतैं अबी हमारा इसवस्तुविषयकअज्ञान नष्टहूआहै ॥ याप्रकारकासाक्षीरूपअनुभव सर्व लोकोंकूंहोवैहै ॥ सोयहसाक्षीरूपअनुभव तावृत्तिज्ञानकूंस्वरूपतैं तथाअज्ञानकीनिवृत्तिरूपफलतैं विषयकरेहै इति ॥ इसप्रकारं विद्वान्लोकोंके साक्षीरूपअनुभवकरिकैसिद्धहूआभी सोआत्मज्ञान स्वधर्मकेप्रतिकूलनहींहै ॥ किंतु धर्म्यरूपहै ॥ अर्थात् अनेकजन्मोविषेसंचयकऱ्येहूए निष्कामधर्मका फलरूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसाआत्मज्ञान अत्यंतदुःखकरिकैसंपादनहोताहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहैं (सुसुखंकर्तुंइति) हेअर्जुन ब्रह्मवेत्तागुरुनैं कृपाकरिकै प्राप्तकऱ्याजोविचारहै सोविचारहैसहकारीजिसका ऐसाजो तत्त्वमसिआदिक महावाक्यहै ॥ तामहावाक्यकरिकै सोतत्त्वज्ञान सुखैनहीं संपादनकरणेकूंशक्यहै ॥ सोआत्मज्ञान आपणोउत्पत्तिविषे देशकालादिकोंकेव्यवधानकी अपेक्षाकरतानहीं ॥ काहेतैं सोज्ञान केवल वस्तुप्रमाणकेहीं अधीनहोवैहै ॥ ध्यानकीन्यांई सोज्ञान पुरुषकोइच्छाकेअधोनहोतानहीं ॥ वस्तुकेसाथि प्रमाणकेसंबंधहूएतैंअनंतर तावस्तुकाज्ञान अवश्यकरिकैउत्पन्नहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार विनाहीं आयासतैं जोआत्मज्ञानकीसिद्धि अंगीकारकरौंगे ॥ तौं अल्पआयास करिकैसाध्यक्रियाका अल्पहींफलहोवैहै महान्फलहोवैनहीं यातैं तिसआत्मज्ञानकाभी अल्पहींफलहोवैंगा महान्फलहोवैंगानहीं ॥ जिसकारणतैं महान्आयासकरिकैसाध्यजेकर्महैं तिनकर्मोकाहीं महान्फल देखणेविषेआवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (अव्ययंइति) हेअर्जुन यहआत्मज्ञान यद्यपि अनायासकरिकैहीं सिद्ध

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होवैहै ॥ तथापि इसआत्मज्ञानके मोक्षरूपफलकानाश होवैनहीं ॥ यातैं यहआत्मज्ञान अव्ययहै ॥ अर्थात् यह आत्मज्ञान मोक्षरूपअक्षयफलवालाहै ॥ यद्यपि अंतःकरणकावृत्तिरूपज्ञानविषे अव्ययरूपता संभवतीनहीं ॥ तथापि जैसे श्रुतिविषे सत्यब्रह्मकीप्रापकताकरिकै ज्ञानकूं सत्यकह्याहै ॥ तैसे ईहां श्रीभगवान्नैंभी मोक्षरूपअव्ययफलकीप्रापकताकरिकै ताज्ञानकूं अव्ययकह्याहैं ॥ और अग्निहोत्रादिककर्म यद्यपिमहान्आयासकरिकैसाध्यहैं ॥ तथापि तिनकर्मोका नाशवान्फलहींहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (योवाएतदक्षरंगार्ग्यविदित्वास्मिँल्लोकेजुहोतियजतेतपस्तप्यतेबहूनिवर्षसहस्राण्यंतवदेवास्यतद्भवति ॥) अर्थयह ॥ हेगार्गी जोपुरुष इसअक्षरपरमात्मादेवकूंनजानिकै इसलोकविषे होमकरेहै तथायज्ञकरेहै तथाबहुतसहस्रवर्षपर्यंत तपकूंकरेहै ॥ ते सर्वकर्म इसपुरुषकूं नाशवान्फलकीहींप्राप्तिकरेहैं इसप्रकारतैं यहआत्मज्ञान सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ यातैं इसआत्मज्ञानविषे मुमुक्षुजनोंनैं अत्यंतश्रद्धाकरणीयोग्यहै इति ॥ २ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार यहआत्मज्ञान जोकदाचित् अत्यंतसुगम होवै तथासर्वतैंउत्कृष्टहोवै तथामहान्फलकीहेतुहोवै ॥ तौं सर्वप्राणी तिसआत्मज्ञानविषे किसवासतैंनहीं प्रवृत्तहोते ॥ किंतु सर्वप्राणी ताआत्मज्ञानविषेप्रवृत्तहोणेचाहीयें ॥ महान्फलवाले सुगमकार्यविषेतौं सर्वलोक स्वभावतैंहीं प्रवृत्तहोवैहैं ॥ यातैं ताआत्मज्ञानविषे सर्वप्राणीयोंकीप्रवृत्तिहूए कोईभीप्राणीसंसारीनहीं होवैंगा ॥ यातैं संसारमार्गकाहीं उच्छेदहोवैंगा ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

अश्रद्दधानाःपुरुषाधर्मस्यास्यपरंतप ॥ अप्राप्यमांनिवर्त्ततेमृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ ३ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अश्रद्दधानाः । पुरुषाः । धर्मस्य । अस्य । परंतप । अप्राप्य । मां । निवर्त्तंते । मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हे अर्जुन इस आत्मज्ञानरूपधर्मकी श्रद्धातैंरहित पुरुष मैंपरमेश्वरकूं नप्राप्तहो

इकै मृत्युयुक्तसंसाररूपमार्गविषे निरंतरभ्रमणकरेहैं ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहआत्मज्ञान यद्यपि संपादनकरणेकूं अत्यंतसुगमहै तथासर्वतैंउत्कृष्टहै तथामहान्फलकाहेतु है ॥ तथापि इसआत्मज्ञानविषे जोसर्वप्राणीयोंकीप्रवृत्तिनहींहोती ॥ ताकेविषे इनप्राणियोंकीअश्रद्धाहीं कारणहै ॥ हेअर्जुन इसआत्मज्ञानरूपधर्मका जो स्वरूपहै तथासाधनहै तथाफलहै ॥ तेतीनों यद्यपि शास्त्रकरिकैप्रतिपादितहैं ॥ तथापि तिनोंविषे श्रद्धाकूंनहींकरणेहारे जेपुरुषहैं ॥ अर्थात् वेदतैंविरोधी कुत्सितहेतुवोंकेदर्शनकरिकै दूषितअंतःकरणवालेहोणेतैं जेपुरुष ताआत्मज्ञानके स्वरूपसाधनफलकूं अप्रमाणरूपहीं मानेहैं ॥ तथा जेपुरुष सर्वदा पापकर्मोंकूंहीं करणेहारेहैं ॥ तथा जेपुरुष दंभदर्पादिकआसुरसंपदकूंहीं धारणकरणेहारेहैं ॥ ऐसेश्रद्धाहीन पापात्मापुरुष आपणीबुद्धितैंकल्पनाकऱ्येहूए उपायकरिकै यथाकथंचित् प्रयत्नकरतेहूएभी शास्त्रविहितप्रयत्नकेअभावतैं मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोतेनहीं ॥ तथा मैंपरमेश्वरकीप्राप्तिकेसाधनोंकूंभी प्राप्तहोतेनहीं ॥ याकारणतैंहीं तेश्रद्धाहीनपुरुष इसमृत्युयुक्तसंसाररूपमार्गविषे भ्रमणकरेहैं ॥ अर्थात् तेपुरुष वारंवार कीटपतंगादिक नारकीययोनियोंविषेहीं भ्रमणकरेहैं इति ॥ ३ ॥ ❋ ॥ तहां पूर्व श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति कहणेवासतै प्रतिज्ञाकऱ्याजो आत्मज्ञानहै ॥ ताआत्मज्ञानकी विधिमुखकरिकै तथानिषेधमुखकरिकै स्तुतिकथनकरी ॥ तहां प्रथमदोश्लोकोंकरिकैतौं ताआत्म

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ज्ञानकी विधिमुखकरिकैस्तुतिकरी ॥ और (अश्रद्दधानाःपुरुषाः) इसतृतीयश्लोककरिकै ताआत्मज्ञानकी निषेधमुखकरिकैस्तुतिकरी ॥ तहां जिसवस्तुकीप्राप्तितैं जो महान्फलका कथनहै ॥ सोकथन तिसवस्तुकी विधिमुखस्तुति होवैहै ॥ और जिसवस्तुकीअप्राप्तितैं जो महान्अनर्थकेप्राप्तिका कथनहै ॥ सोकथन तिसवस्तुकी निषेधमुखस्तुति होवैहै ॥ इसप्रकार तीनश्लोकोंतैं तिसआत्मज्ञानकीस्तुतिकरिकै तिसआत्मज्ञानके अभिमुखकऱ्याजोअर्जुनहै ॥ तिसअर्जुनकेप्रति श्रीभगवान् अब दोश्लोकोंकरिकै सोआत्मज्ञान कथनकरेहै ॥

270

मयाततमिदंसर्वंजगदव्यक्तमूर्त्तिना ॥ मत्स्थानिसर्वभूतानिनचाहंतेष्ववस्थितः ॥ ४ ॥

मया१ । तत२तं । इदं३ । सर्वं४ । जगत्५ । अव्यक्तमूर्त्तिना६ । मत्स्थानि७ । सर्वभूतानि८।न९ । च१० । अहं११ । तेषु१२ । अवस्थितः१३ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन अव्यक्तमूर्तिवाले मैं१ परमेश्वरनैं२ यह३ सर्व४ जगत्५ व्याप्त६ कऱ्याहै इसकारणतैं यहसर्वभूत मेरेविषेस्थितहैं७ और८ मैं९ परमेश्वरतौं तिन१० भूतोंविषे११ नहीं१२ स्थित१३ हूं ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन भूतभौतिकरूप तथातिनभूतभौतिकोंकाभीकारणरूप जितनाकायह दृश्यजगत्है ॥ जोजगत् मैं परमेश्वरकेअज्ञानकरिकैकल्पितहै ॥ सोयहसर्वजगत् मैंअधिष्ठानरूप तथापरमार्थसत्स्वरूप परमेश्वरतैं सत्रूपकरिकै तथास्फुरणरूपकरिकै व्याप्तकऱ्याहै ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित जे सर्प दंड जलधारा माला आदिकहैं ॥ तैसे पादिक तारज्जुरूपअधिष्ठाननैं आपणे इदमअंशकरिकै व्याप्तकीयेहैं ॥ तैसे मैंअधिष्ठानरूप परमेश्वरनैं आपणेसत्ता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्फुरणरूपकरिकै यहसर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् हमारेरथविषेस्थित जो वसुदेवकेपुत्र आपहो ॥ सोआप परिच्छिन्नहो ॥ ऐसेपरिच्छिन्न आपनैं यहसर्वजगत् कैसेव्याप्तकऱ्याहै ॥ किंतु नहींव्याप्तकऱ्याहै ॥ जिसकारणतैं इसआपकेकहणेविषे प्रत्यक्षप्रमाणकाविरोधहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (अव्यक्तमूर्त्तिनाइति) तहांनेत्रादिककरणोंका नहींविषयहै स्वप्रकाशअद्वितीयसत्चित् आनंदरूपमूर्त्तिजिसकी ताकानाम अव्यक्तमूर्त्तिहै ॥ ऐसेअव्यक्तमूर्त्तिरूप मैंपरमेश्वरनैंहीं यहसर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ और जिसहमारेइसस्थूलशरीरकूं तूं मांसमयनेत्रोंकरिकैदेखताहैं ॥ इसशरीरकरिकै हमनैं कोईसर्वजगत् व्याप्तकऱ्यानहीं ॥ यातैं हमारेकहणेविषे प्रत्यक्षप्रमाणका विराधहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरनैं यहसर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ तिसकारणतैंहीं यहस्थावरजंगमरूपसर्वभूत मैंपरमेश्वरकेसत्तास्फुरणरूपकरिकै सत्कोन्यांई तथास्फुरणकोन्यांई स्थितहैं ॥ तथापि मैं परमेश्वर तिनकल्पितभूतोंविषे वास्तवतैं स्थितनहींहूं ॥ काहेतैं अकल्पितरूपजोमैंपरमेश्वरहूं तथाकल्पितरूपजो यहभूतहैं तिनदोनोंका कोईसंबंधहीं संभवतानहीं ॥ संबंधतैंविना तिनभूतोंविषे वास्तवतैं हमारीस्थिति संभवतोनहीं ॥ याकारणतैंहीं वेदवेत्तापुरुषोंनैं यहवचनकह्याहै ॥ (यत्रयदध्यस्तंतत्कृतेनगुणेनदोषेणवाऽणुमात्रेणापिनससंबध्यते ॥) अर्थयह ॥ जिसअधिष्ठानविषे जोवस्तु कल्पितहोवैहै ॥ तिसकल्पितवस्तुकृत गुणकेसाथि अथवा दोषकेसाथि सोअधिष्ठान किंचित्मात्रभी संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ ४ ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सर्वविकारोंतैंरहित तथासर्वत्रपरिपूर्ण ऐसेजोआप परब्रह्महो ॥ तिसआपकी तिनभूतोंविषे वास्तवतैं स्थिति मतहोवौ ॥ परंतु ते

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सर्वभूततौं आपपरमेश्वरविषे वास्तवतैंहीं स्थितहोवैंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

नचमत्स्थानिभूतानिपश्यमेयोगमैश्वरं॥भूतभृन्नचभूतस्थोममात्माभूतभावनः ॥५॥

न[3]। च। मत्स्थानि[2]। भूतानि[1]। पश्य[7]। मे[4]। योगं[6]। ऐश्वरं[5]। भूतभृत्[10] न[14]। च[12]। भूतस्थः[13]। मम[8]। आत्मा[9]। भूतभावनः[11] ॥ इतिप०

हेअर्जुन यह[1]सर्वभूत मैं[2]परमेश्वरविषेस्थित नहीं[3]है मैंपरमेश्वरके[4] इसअद्भुत[5] प्रभावकूं[6] तूंदेख[7] जोमैं[8]परमेश्वरका सच्चिदानंदस्वरूप[9] भूतोंकूं[10]धारणकरताहूआ तथाभूतोंकूं[11]उत्पन्नकरताहूआ भी[12] तिनभूतोंविषेस्थित[13] नहीं[14]है ॥ ५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे आकाशविषेस्थितसूर्यविषे जलकेचलनादिकविकार कल्पितहोवैहैं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरविषे कल्पित जेयहसर्वभूतहैं ॥ तेसर्वभूत वास्तवतैं मैंपरमेश्वरविषेहैंनहीं ॥ हेअर्जुन तूं इसप्राकृतमनुष्यबुद्धिकूंपरित्यागकरिकै सूक्ष्मविचारदृष्टिकरिकै मैंपरमेश्वरके इसयोगऐश्वरकूंदेख ॥ अर्थात् जैसे लोकप्रसिद्धमायावीपुरुषका अघटितअर्थकेबनावनेकीचातुर्यतारूपप्रभावहै ॥ तैसे महामायावीरूप मैंपरमेश्वरके इस अघटितअर्थकेबनावनेकी चातुर्यतारूपप्रभावकूं तूं देख ॥ जो मैंपरमेश्वर वास्तवतैं किसीवस्तुका आधेयरूपभीनहींहूं ॥ तथा किसीवस्तुका आधाररूपभी नहींहूं ॥ तौंभीमैंपरमेश्वर इनसर्वभूतोंविषेस्थितहूं ॥ तथा मैंपरमेश्वरविषे यहसर्वभूतस्थितहै ॥ यह मैंपरमेश्वरकी एकमहान्मायाहै ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरका जोसच्चिदानंदघनएकरस परमार्थस्वरूपहै ॥ सोहमारास्वरूपहीं भूतभृत्है ॥ अर्थात् सोहमारास्वरूपहीं उपादानकारणतारूपकरिकै तिनसर्वकार्यरूपभूतोंकूं धारणकरेहै ॥

272

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तथापोषणकरेहै ॥ यातैं सोहमारास्वरूप भूतभृत् कह्याजावैहै ॥ और सोहमारास्वरूपहीं कर्त्तारूपकरिकै तिनसर्व भूतोंकूं उत्पन्नकरेहै ॥ यातैं सोहमारास्वरूप भूतभावन कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार तिनसर्वभूतोंका उपादानकारणरूप तथानिमित्तकारणरूपहूआभी सोहमारा सच्चिदानंदस्वरूप वास्तवतैं असंगअद्वितीयस्वरूपहोणेतैं तिनभूतोंविषेस्थितहैनहीं ॥ अर्थात् जैसे स्वप्नद्रष्टापुरुष वास्तवतैं तिनकल्पितस्वप्नपदार्थोंका संबंधोहोवैनहीं ॥ तैसे सोहमारा स्वरूपभी वास्तवतैं इनकल्पितभूतोंकासंबंधीहोवैनहीं ॥ ईहां (ममआत्मा) इसवचनविषे जोषष्ठीविभक्तिहै ॥ सो भेदकी कल्पनाकरिकैहै ॥ जैसे राहोःशिरः इसवचनविषे राहुशिरकेअभेदहूएभी भेदकीकल्पनाकरिकै षष्ठीविभक्ति है इति ॥ ५ ॥ * ॥ तहांपूर्वश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ जो मैंपरमेश्वरका तथाइनसर्व भूतोंका वास्तवतैं कोईभीसंबंधहैनहीं ॥ तौंभी मैंपरमेश्वर इनभूतोंविषे स्थितहूं ॥ तथा यहसर्वभूत मैंपरमेश्वरविषे स्थितहैं ॥ इसभगवान्केकहणेविषे अर्जुनकी यहशंका प्राप्तभई ॥ जो आपपरमेश्वरका तथाइनभूतोंका वास्तवतैं कोई संबंधनहींहै ॥ तौं आपपरमेश्वरका तथाइनभूतोंका परस्पर आधारआधेयभाव कैसेहोवैंगा ऐसीअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् वास्तवतैं परस्परसंबंधतैंरहितपदार्थोंकैभी आधारआधेयभावकूं लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकै कथनकरेहै ॥

यथाकाशस्थितोनित्यंवायुःसर्वत्रगोमहान्।तथासर्वाणिभूतानिमत्स्थानीत्युपधारय॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यथा। आकाशस्थितः। नित्यं। वायुः। सर्वत्रगः। महान्। तथा॥सर्वाणिभूतानि। मत्स्थानि॥इति॥उपधारय॥ इतिप० ॥
हेअर्जुन जैसे सर्वदिशावोंविषेगमनकरणेहारा तथामहत्परिमाणवाला तथासदा चलनस्वभाववालावायु आं
काशविषेस्थितहैं तैसे यहसर्व भूतं मैंपरमेश्वरविषेस्थितहैं इसप्रकार तूं निश्चयकर ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसेपूर्वादिकसर्वदिशावोंविषेगमनकरणेहारा तथामहत्परिमाणवाला तथाउत्पत्तिस्थितिसंहा
रकालविषे चलनस्वभाववाला वायु असंगस्वभाववालेआकाशविषे स्थितहोवैहै ॥ परंतु सोवायु तिसअसंगआका
शकेसाथि वास्तवतैं कदाचित्भी संबंधकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तैसे असंगस्वभाववाले मैंपरमेश्वरविषे संबंधतैंविनाहीं
यहआकाशादिकसर्वभूत स्थितहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे असंगस्वभाववाले आकाशविषे वास्तवतैं बायुकासंबंध न
हींभीहै ॥ तौभी सोवायु आकाशविषेस्थित कह्याजावैहै ॥ तैसे असंगस्वभाववाले मैंपरमेश्वरविषे वास्तवतैं इ
नआकाशादिकभूतोंकासंबंध नहींभीहै॥तौंभी यहआकाशादिकभूत मैंपरमेश्वरविषेस्थित कहेजावैहैं ॥ इसप्रकार
वास्तवतैं संबंधकेअभावहूएभी मैंपरमेश्वरविषेतौं इसकल्पितप्रपंचकीआधारताकूं तथाइसकल्पितप्रपंचविषे मैंप
रमेश्वरकोआधेयताकूं तूं इसआकाशकेदृष्टांतसैं विचारकरिकैं निश्चयकर इति॥ किंवा॥ (असंगोह्ययंपुरुषः असंगो
नहिसज्जते।) इत्यादिकअनेकश्रुतियां प्रत्यक्अभिन्नअसंगब्रह्मविषे आकाशादिकसर्वभूतोंकेसंबंधका निषेधकरेहैं ॥
तिनश्रुतियोंविषे अविश्वासकरिकै जोवादी तिसब्रह्मविषे आकाशादिकभूतोंकेसंबंधकूं अंगीकारकरेहै ॥ तावादीसैं
यहपूछाचाहिये ॥ तिसअसंगब्रह्मविषे तेभूत संयोगसंबंधकरिकैरहेहैं ॥ अथवा समवायसंबंधकरिकैरहेहैं ॥ अथवा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तादात्म्यसंबंधकरिकैरहेहैं ॥ तहां प्रथम संयोगपक्षविषेभी ब्रह्मका तथाभूतोंका सर्वओरतैंसंयोगहै ॥ अथवा एक देशकरिकैसंयोगहै ॥ तहां प्रथम सर्वओरतैंसंयोगतौंबनैंनहीं ॥ काहेतैं ब्रह्मतौंअपरिच्छिन्नहै और तेभूत परिच्छिन्नहैं ॥ तिनपरिच्छिन्नभूतोंका अपरिच्छिन्नब्रह्मकेसाथि सर्वओरतैंसंयोग बनैंनहीं ॥ तैसेएकदेशकरिकै संयोगहै यहद्वितीयपक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जेपदार्थ सावयवहोवैंहैं ॥ तिनपदार्थोंकाहीं आपसमैं एकदेशकरिकैसंयोगहोवैंहै ॥ जैसे वृक्ष वानर दोनोंका आपसमैं एकदेशकरिकैसंयोगहै ॥ और ब्रह्मतौं निरवयवहै ॥ यातैं तानिरवयवब्रह्मका तथातिनभूतोंका एकदेशकरिकैभी संयोगसंभवैनहीं ॥ और ताब्रह्मविषे तेआकाशादिकभूत समवायसंबंधकरिकैरहेहैं यहद्वितीयपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं गुणगुणीका तथाजातिव्यक्तिका तथाअवयवी अवयवकाहीं वादीयोंनैं समवायसंबंध अंगीकारकऱ्याहै ॥ सोईहां तिनभूतोंका तथाब्रह्मका गुणगुणीभाव तथाजातिव्यक्तिभाव तथाअवयवीअवयवभाव हैनहीं ॥ यातैं ताब्रह्मविषे तिनभूतोंकी समवायसंबंधकरिकैभीस्थिति संभवैनहीं ॥ और ताब्रह्मविषे तेभूत तादात्म्यसंबंधकरिकैरहेहैं यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवैनहीं ॥ काहेतैं ब्रह्मतौं सत् चित् आनंद परिपूर्ण स्वरूपहै ॥ और तेआकाशादिकभूततौं असत् जड दुःख परिच्छिन्न स्वरूपहैं ॥ ऐसे विरुद्धस्वभाववाले तिनआकाशादिकभूतोंका ताब्रह्मविषे तादात्म्यसंबंध संभवतानहीं ॥ यातैं परिशेषतैं तिनआकाशादिकभूतोंका ताब्रह्मविषे अध्यासरूपकल्पितसंबंधहीं अंगीकारकरणाहोवैंगा ॥ सोतौं हमारेकूंभी इष्टहै ॥ काहेतैं जिसअधिष्ठानविषे जोपदार्थ अध्यस्त होवैंहै ॥ सोकल्पितपदार्थ तिसअधिष्ठानविषे नाममात्रहींहो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैहै ॥ वास्तवतैंहोवैनहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पितसर्प तथाशुक्तिविषेकल्पितरजत नाममात्रहींहै ॥ वास्तवतैंहैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मविषेअध्यस्तते आकाशादिकभूतभी नाममात्रहींहैं ॥ वास्तवतैंहैंनहीं ॥ ऐसेकल्पितभूतोंके अध्यासरूपसंबंधकेहूएभी ताअधिष्ठानब्रह्मकी स्वाभाविकअसंगरूपता निवृत्तहोवैनहीं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोकका यहअर्थ कथनकर्याहै ॥ पूर्वअष्टमअध्यायविषे (किंतद्ब्रह्म) अर्थयह सोब्रह्म कौंनहै इसप्रश्नका (अक्षरंपरमं ब्रह्म) अर्थयह अक्षरनामा शुद्धत्वंपदार्थहीं निरुपाधिकब्रह्महै यहउत्तर कथनकर्याथा ॥ सोनिरुपाधिकब्रह्महीं ईहां (मयाततमिदंसर्वं) इत्यादिकश्लोकोंकरिकै प्रतिपादनकऱ्याहै ॥ अबतिसनिरुपाधिकब्रह्मका अक्षरनामजीवकेसाथि अभेदकूं दृष्टांतकरिकैकथनकरेहैं (यथाकाशस्थितःइति) ईहां (वायुः) इसशब्दकरिकै सूत्रात्माकाग्रहणकरणा ॥ काहेतैं (वायुर्वैगौतमसूत्रं) इसश्रुतिविषे तासूत्रात्माकूं वायुनामकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ कैसाहै सोसूत्रात्मारूपवायु सर्वत्रगहै ॥ अर्थात्समष्टिलिंगदेहरूपहोणेतैं सर्वत्रव्यापकहै ॥ पुनःकैसाहैसोवायु महानहै ॥ अर्थात् इसबाह्यवायुतैंविलक्षणहै ॥ ऐसासूत्रात्मारूपवायु जैसे नित्यहीं स्वकारणीभूत अव्याकृतनामाआकाशविषे स्थितहै ॥ ईहां (नित्यं) इसशब्दकरिकै तासूत्रआत्माका तीनकालविषे ताअव्याकृतनामाआकाशकेसाथि संबंध कथनकऱ्या ॥ तैसे यहसर्वभूत मैंपरमेश्वरविषेस्थितहैं ॥ ईहां भूतशब्दकरिकै उपाधितैंरहित त्वंपदार्थरूपजीवचेतनका ग्रहणकरणा ॥ सोजीवचेतन यद्यपि वास्तवतैं एकहींहै ॥ तथापि लोकदृष्टिकरिकै श्रीभगवान्नैं ताजीवचेतनकाबहुतपणा कथनकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे सर्वकार्य आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तथानाशतैंअनंतर तथाआपणीस्थितिकालविषे आपणेउपा

276

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दानकारणविषेहों अभेदरूपकरिकै स्थितहोवैहैं ॥ तैसे यहसर्वजीव अंतःकरणादिकउपाधिकी उत्पत्तितैंपूर्व तथाउपाधिकेनाशतैंअनंतर तथामध्यविषे तिसपरब्रह्मतैं भिन्ननहींहैं ॥ किंतु अभिन्नहींहैं ॥ जैसे घटाकाश घटरूपउपाधिकोउत्पत्तितैंपूर्व तथाघटरूपउपाधिकेनाशतैंअनंतर तथाताघटरूपउपाधिकेविद्यमानकालविषे महाकाशतैंभिन्ननहींहै॥किंतु सोघटाकाश तीनोंकालविषे महाकाशरूपहींहै॥ तैसे यहजीवभी तीनोंकालविषे परब्रह्मरूपहींहैं॥तहांश्रुति ॥ (अयमात्माब्रह्म अहंब्रह्मास्मि ॥) अर्थयह ॥ यहप्रत्यक्आत्मा ब्रह्मरूपहै ॥ और मैंब्रह्मरूपहूं इति ॥ ६ ॥ ❋ तहां पूर्वश्लोकविषे इसप्रपंचकीउत्पत्तिकालविषे तथास्थितिकालविषे ताप्रपंचकेसाथिअसंगआत्माका असंबंध कथनकऱ्या ॥ अब प्रलयकालविषेभीताप्रपंचकेसाथि असंगआत्माकेअसंबंधकूं श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

सर्वभूतानिकौंतेयप्रकृतिंयांतिमामिकां॥कल्पक्षयेपुनस्तानिकल्पादौविसृजाम्यहं ७॥

सर्वभूतानि । कौंतेय। प्रकृतिं । यांति।मामिकां । कल्पक्षये । पुनः । तानि।कल्पादौ।विसृजामि। अहं ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेकौंतेय प्रलयकालविषे यहसर्वभूत मैंपरमेश्वरकीशक्तिरूप जात्रिगुणात्मकप्रकृतिकूं प्राप्तहोवैहैं पुनः सृष्टिकालविषे मैंपरमेश्वर तिनभूतोंकूं उत्पन्नकरूंहूं ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकीशक्तिरूपकरिकैकल्पनाकरीहूई जात्रिगुणात्मकमायाहै ॥ जामाया (मायांतुप्रकृतिं विद्यात्) इसश्रुतिनैं सर्वजगत्का प्रकृतिरूपकरिकैकथनकरीहै ॥ ऐसीकारणरूपमायाप्रकृतिकूंहीं तेआकाशादिक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सर्वभूत प्रलयकालविषे प्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् तेआकाशादिकसर्वभूत ताप्रलयकालविषे आपणेकारणभूत माया नामाप्रकृतिविषेहींसूक्ष्मरूपकरिकै लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेअर्जुन जेआकाशादिकसर्वभूत प्रलयकालविषे ताप्रकृति विषे अविभागकूंप्राप्तहूएथे ॥ तिनआकाशादिकभूतोंकूंहीं मैंसर्वशक्तिसंपन्नसर्वज्ञपरमेश्वर सृष्टिकालविषे भिन्नभिन्न करिकैउत्पन्नकरूंहूं इति ॥ ७ ॥* ॥ तहां परमेश्वरकी यहआकाशादिकप्रपंचकीसृष्टि किसप्रयोजनवासतैहै ॥ तिसपरमेश्वरकेहीं भोगवासतैहै ॥ अथवा अन्यकिसीकेभोगवासतैहै ॥ तहां परमेश्वरकेभोगवासतैतौं यहसृष्टि संभवतीनहीं ॥ काहेतैं सर्वकासाक्षीरूप तथाचैतन्यमात्ररूप जोपरमेश्वरहै ॥ तापरमेश्वरविषे सुखदुःखकाभोक्तापणा संभवैनहीं ॥ जोंकदाचित् परमेश्वरविषेभी सुखदुःखकाभोक्तापणा अंगीकारकरीये ॥ तौं तिसपरमेश्वरविषेभी अस्मदादिकजीवोंकीन्यांई संसारीपणाहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ यातैं तापरमेश्वरविषे ईश्वरपणा नहींरहैंगा ॥ काहेतैं जिसविषे संसारीपणा रहेहै तिसविषे ईश्वरपणा रहैनहीं ॥ और जिसविषे ईश्वरपणा रहेहै तिसविषे संसारीपणा रहैनहीं ॥ यातैं परमेश्वरकेभोगवासतैतौं यहसृष्टि संभवतीनहीं और परमेश्वरतैंअन्यकिसीभोक्तावासतै यहसृष्टिहै ॥ यहदूसरापक्षभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं (नान्योतोऽस्तिद्रष्टा) इत्यादिकश्रुतियोंनैं तिसपरमेश्वरतैंभिन्न दूसरेचेतनका अभावहीं कथनकऱ्याहै ॥ और जोकोई यहकहै ॥ तिसपरमेश्वरतैं जीवचेतनभिन्नहै ॥ सोकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं (अनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्यनामरूपेव्याकरवाणि) इत्यादिकश्रुतियोंनैं तिसपरमेश्वरकीहीं सर्वत्र जीवरूपकरिकैस्थितिकथनकरीहै ॥ याकारणतैंहीं तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि इत्यादिकमहावाक्य इसजीवकूं ब्रह्मरूपकरिकैकथनकरेहैं ॥ यातैं

278

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिसपरमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोईचेतनहैनहीं जो इसजगत्काभोक्ताहोवै ॥ यद्यपि तिसचैतन्यस्वरूप परमेश्वरतैं जडपदा
र्थ भिन्नहैं ॥ तथापि तिनजडपदार्थोंविषे सुखदुःखकाभोक्तापणाहीं संभवतानहीं ॥ किंवा तेसर्वजडपदार्थ भोग्यरूपहीहैं ॥
तिनभोग्यपदार्थोंकूं जोभोक्तामानीये तौं भोक्ता भोग्य यहभेद सिद्धनहींहोवैंगा ॥ यातैं तिनजडपदार्थोंकेभोगवासतैभी
यहसृष्टि संभवतीनहीं ॥ किंवा जैसे यहसृष्टि किसीकेभोगवासतै नहींसंभवैहै ॥ तैसे यहसृष्टि किसीके मोक्षवासतैभी सं
भवतीनहीं ॥ काहेतैं जोकोईबंध वास्तवतैंहोवै तौं ताकेमोक्षवासतै यहसृष्टिसंभवै॥ सो वास्तवतैं कोईबंधनहींनहींहै ॥ किं
वा यहसृष्टि तामोक्षका उलटा विरोधीहींहै ॥ जो जिसकाविरोधीहोवैहै ॥ सो तिसकीप्राप्तिवासतैहोवैनहीं ॥ यातैं
किसीकेमोक्षवासतैभी यहसृष्टि संभवतीनहीं ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकी अनुपपत्तियां इससृष्टिविषे प्राप्त
होवैहैं ॥ तेअनुपपत्तियांहीं इससृष्टिविषे मायामयत्वकीसिद्धि करेहैं ॥ यातैं तेअनुपपत्तियां हमसिद्धांतीयोंकूं प्र
तिकूलनहींहै ॥ किंतु अनुकूलहींहै इसीकारणतैंहीं तेअनुपपत्तियां परिहारकरणेकूं योग्यनहींहै ॥ इसोसर्वअभि
प्रायकरिकै श्रीभगवान् इसप्रपंचविषे मायामयत्वहेतुतैं मिथ्यात्वसिद्धकरणेका आरंभकरेहै तीनश्लोकोंकरिकै ॥

प्रकृतिंस्वामवष्टभ्यविसृजामिपुनःपुनः ॥ भूतग्राममिमंकृत्स्नमवशंप्रकृतेर्वशात्॥८॥

प्रकृतिं । स्वां । अवष्टभ्य । विसृजामि । पुनः । पुनः । भूतग्रामं । इमं । कृत्स्नं । अवशं । प्रकृतेः । वशात् ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन मैंपरमेश्वर आपणी माया रूपप्रकृतिकूं आश्रयणकरिकै तिसमायाके प्रभावतैं उत्प
न्नहूए इस संपूर्ण आकाशादिकभूतोंकेसमुदायकूं पुनः पुनः उत्पन्नकरूंहूं ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥टीका॥हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषेकल्पित तथामैंपरमेश्वरकेअधीन ऐसीजा मायानामा अनिर्वचनीयप्रकृतिहै॥ तिसआपणीप्रकृतिकूंआश्रयणकरिकै अर्थात् ताप्रकृतिकूं आपणीसत्तास्फूर्त्तिकीप्राप्तिद्वाराद्दढकरिकै मैंमायावीपरमेश्वर प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैसिद्ध इसआकाशादिकभूतोंकेसमुदायरूपप्रपंचकूं जीवोंकेकर्मोंकेअनुसार विविधप्रकारतैं उत्पन्नकरूंहूं॥ अर्थात् जैसे स्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नप्रपंचकूं कल्पनामात्रकरिकै उत्पन्नकरेहै॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी इसआकाशादिकप्रपंचकूं कल्पनामात्रकरिकैउत्पन्नकरूंहूं॥ कैसाहैयहआकाशादिकभूतोंकासमुदाय॥ प्रकृतिकेवशतैंजायमानहै॥ अर्थात् मायारूपप्रकृतिकाजो अविद्यादिकपंचक्लेशोंकाकारणीभूत आवरणविक्षेपशक्तिरूपप्रभावहै तिसप्रभावतैं उत्पन्नहूआहै इति॥ और किसीटीकाविषेतौं (अवशंप्रकृतेर्वशात्) इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै॥ आपणेस्वभावकानाम प्रकृतिहै॥ तास्वभावरूपप्रकृतिकेवशतैं यहप्रपंच अवशहै॥ अर्थात् रागद्वेषादिकोंकेअधीनहै इति॥ और अन्य किसीटीकाविषे इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै॥ अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यहपंचक्लेश ईहां प्रकृतिशब्द करिकैग्रहणकरणे॥ ताअविद्यादिपंचक्लेशरूपप्रकृतिके वशात् कहिये स्वभावतैं यहभूतसमुदाय अवशहै अर्थात् अस्वतंत्रहै इति॥ ८॥ ❋ ॥ जिसकारणतैं इसजगत्की सृष्टिस्थितिआदिककर्म स्वप्नकीन्यांई मिथ्याभूतहींहैं॥ तिसकारणतैं तेसृष्टिआदिककर्म स्वप्नद्रष्टापुरुषकीन्यांई मैंपरमेश्वरकूं बंधायमानकरतेनहीं॥इसअर्थकूं अबश्रीभगवान् कथनकरेहै॥

॥७०॥

नचमांतानिकर्माणिनिबध्नंतिधनंजय॥ उदासीनवदासीनमसक्तंतेषुकर्मसु॥ ९॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नं । च । मां । तानि । कर्माणि । निबध्नंति । धनंजय । उदासीनवत् । आसीनं । असक्तं । तेषु । कर्मसु ॥ इतिपदच्छेदः

हेअर्जुन उदासीनपुरुषकीन्यांई स्थित तथा तिनें कर्मोविषे आसक्तितैंरहित
मैंपरमेश्वरकूं तें सृष्टिआदिकंकर्म नहीं बंधायमानकरते ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे मायावीपुरुष आपणीमायाकरिकै अनेकपदार्थोंकी सृष्टि स्थिति लयकूं करेहै ॥ परंतु ते
सृष्टिस्थितिलयरूपकर्म तिसमायावीपुरुषकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ और जैसे स्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषे अनेकपदा
र्थोंकी सृष्टि स्थिति लयकूं करेहै ॥ परंतु तेसृष्टिस्थितिलयरूपकर्म तिसस्वप्नद्रष्टापुरुषकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ तै
से मैंपरमेश्वरभी आपणीमायाशक्तिकेवशतैं इसआकाशादिकप्रपंचकी सृष्टि स्थिति लयकूं करूंहूं ॥ परंतु तेसृष्टिआ
दिककर्म मैंपरमेश्वरकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ अर्थात् तेसृष्टिआदिककर्म अनुग्रहकरिकै मैंपरमेश्वरकूं सुकृतकाभा
गीनहींकरेहैं तथा निग्रहकरिकै हमारेकूं दुष्कृतकाभागीनहींकरेहैं ॥ जिसकारणतैं तेसृष्टिआदिककर्म स्वप्नकीन्यांई
मिथ्याभूतहींहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेसृष्टिआदिककर्म आपकूं किसवासतै नहींबंधायमानकरते ॥ ऐसीअर्जुनकी
शंकाकेहूए श्रीभगवान् ताकेविषेहेतुकहेहै (उदासीनवदासीनइति) हेअर्जुन परस्पर विवादकरणेहारेदोपुरुषोंके
जयअजयरूपकर्मकेसंबंधतैंरहित तथादोनोंकीउपेक्षाकरणेहारा जोकोईउदासीनपुरुषहै ॥ सोउपेक्षकउदासीनपुरु
ष जैसे तिनविवादकरतापुरुषोंके जयअजयकृतहर्षविषादतैंरहितहूआ निर्विकाररूपतैंस्थितहोवैहै ॥ तैसे मैंअसंग
परमेश्वरभी सर्वदा निर्विकाररूपकरिकैस्थितहूं ॥ यद्यपि ईहां परमेश्वररूपदार्ष्टांतिकविषे उदासीनपुरुषरूपदृष्टां

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तकीन्यांई विवादकरणेहारेदोनोंका अभावहै ॥ तथापि तादृष्टांतविषे तथादार्ष्टांतिकविषे उपेक्षकपणा समानहींहै ॥ ताउपेक्षकपणेमात्रकूंलैके ईहां (उदासीनवत्) इसवचनकेअंतविषे वत् यहप्रत्यय कथनकरयाहै ॥ हेअर्जुन जिस कारणतैं मैंपरमेश्वर उदासीनपुरुषकीन्यांई हर्षविषादादिकविकारोंतैंरहितहूआस्थितहूं ॥ तिसकारणतैं मैंपरमेश्वर तिनसृष्टिआदिककर्मोंविषे असक्तहूं ॥ अर्थात् मैंइसकर्मकूंकरताहूं तथामैं इसकर्मकेफलकूंभोगौंगा याप्रकार के कर्तृत्वअभिमानरूप तथाफलकीअभिलाषारूप संगतैं रहितहूं ॥ याकारणतैंहीं मैंपरमेश्वरकूं तेसृष्टिआदिककर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ बोधनकरया ॥ जैसे कर्तृत्वअभिमानतैंरहित तथाफलकीइच्छातैंरहित मैंपरमेश्वरकूं तेसृष्टिआदिककर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ तैसे दूसराभीजोकोईअधिकारीपुरुष ताकर्तृत्वअभिमानतैं तथाफलकीइच्छातैंरहितहोइकै कर्मोंकूंकरेहै ॥ तिसपुरुषकूंभी तेलौकिकवैदिककर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ ताकर्तृत्वअभिमान तथाफलकीइच्छा दोनोंके विद्यमानहूएहीं यहमूढपुरुष कोशकारजंतुकीन्यांई तिनकर्मोंकरिकैबंधायमानहोवैहैं इति ॥ ईहां श्रीभगवान्नैं स्वउपदिष्टअर्थकेधारणकरणेविषे अर्जुनकेउत्साहकरणेवासतै (हेधनंजय) इससंबोधनकरिकै ताअर्जुनके महान्प्रभावकूं सूचनकऱ्याहैं ॥ अर्थात् युधिष्ठिरराजाके राजसूयनामायज्ञवासतै तूं सर्वराजावोंकूंजीतिकरिकै धनकूंलेआवताभयाहैं ॥ याकारणतैं तुमारा धनंजय यहनामहूआहै ॥ ऐसेमहान्प्रभाववाला तूं अर्जुनहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसलोकविषे कोईप्राणी सुखीहै ॥ कोईप्राणीदुःखीहै ॥ कोईधनीहै कोईदरिद्रीहै ॥ कोईबुद्धिमान्है कोई

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मूर्खहै ॥ इसप्रकारकीविषमसृष्टिकूंकरणेहारे आपईश्वरकूं विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकी प्राप्ति अवश्यकरि कैहोवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (नचमांतानिकर्माणि इति) हेअर्जुन तेविषमसृष्टिरूपकर्म मैंपरमेश्वरकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ तिसविषेहेतुकहेहै (उदासीनवदासीनंइति) हेअर्जुन जैसे मेघ किसीबीजोंवि षेरागकूं तथाकिसीबीजोंविषे द्वेषकूं नहींकरिकै उदासीनहूआ जलकीवृष्टिकरेहै ॥ आगेतैं तिनतिनबीजोंके अनु सार भिन्नभिन्नफल उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी पुण्यवान्पुरुषोंविषे रागकूंनहींकरताहूआ तथापापीपुरु षोंविषे द्वेषकूंनहींकरताहूआ इसजगत्कूं उत्पन्नकरताहूं ॥ आगेतैं तेप्राणी आपणेआपणेपुण्यपापकर्मके अनुसार तिसतिस सुखदुःखादिरूप भिन्नभिन्नफलकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मैंपरमेश्वरकूं विषमतादोषकीप्राप्ति तथानिर्दयतादो षकीप्राप्ति होवैनहीं इति ॥ ९ ॥※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वआपनैं (भूतग्रामंसृजामि) इसवचनकरिकै आ पणेकूं सर्वभूतोंका कर्त्तापणा कथनकऱ्या ॥ और (उदासीनवदासीनं) इसवचनकरिकै आपणेकूं उदासीनपणा कथनकऱ्या ॥ सोयहदोनों आपकेवचन परस्परविरुद्धअर्थके बोधकहोणेतैं असंगतहै ॥ काहेतैं जिसविषे कर्त्तापणा रहेहै ॥ तिसविषे उदासीनपणा रहैनहीं ॥ और जिसविषे उदासीनपणा रहेहै ॥ तिसविषे कर्त्तापणा रहैनहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् इसप्रपंचविषे पुनः मायामयत्वकूंहीं कथनकरेहै ॥

मयाध्यक्षेणप्रकृतिःसूयतेसचराचरं ॥ हेतुनानेनकौंतेयजगद्विपरिवर्त्तते ॥ १० ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मया। अध्यक्षेण। प्रकृतिः। सूयते। सचराचरं। हेतुना। अनेन। कौंतेय। जगत्। विपरिवर्त्तते ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेकौंतेय प्रकाशरूप मैंपरमेश्वरनैं प्रकाशितकरीहूई मायारूपप्रकृतिहीं ईसचरअचरसहितजगत्कूं उत्प
न्नकरेहै इसीप्रकाशकत्व निमित्तकरिकै यहजगत् विविधप्रकारतैंपरिवर्त्तमानहोताहै ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ हेअर्जुन केवलद्रष्टामात्रस्वरूप तथासर्वविकारोंतैंरहित तथाआपणीसमीपतामात्रकरिकैसर्वकानियंता
तथासर्वकाप्रकाशक ऐसाजोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरनैं प्रकाशितकरीहूई जामायारूपप्रकृतिहैं ॥ कैसीहै
साप्रकृति ॥ सत्व रज तम यहतीनगुणस्वरूपहैं ॥ तथा जाप्रकृति सतूरूपकरिकै तथाअसतूरूपकरिकै तथासतूअ
सतूउभयरूपकरिकै कथनकरीजातीनहीं ॥ ऐसीमायारूपप्रकृतिहीं इसस्थावरजंगमरूप सर्वजगत्कूं उत्पन्नकरेहै
॥ जैसे मायावीपुरुषनैं प्रवृत्तकरीहूईमाया कल्पित गजतुरगादिकपदार्थोंकूं उत्पन्नकरेहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरनैं प्रका
शितकरीहूई सामायाहीं इसकल्पितजगत्कूं उत्पन्नकरेहै ॥ मैंपरमेश्वरतौं तिसकार्यसहितमायाकूं केवल प्रकाश
मात्रहीं करताहूं ॥ ताकार्यसहितमायाके प्रकाशमात्रतैंभिन्न दूसरेकिसीव्यापारकूं मैंपरमेश्वर करतानहीं ॥ हेअर्जु
न तिसप्रकाशकत्वरूप निमित्तकरिकै यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत् विविधप्रकारतैं परिवर्त्तमानहोवैहै ॥ अर्थात्
यहजगत् जन्मतैंआदिलैके विनाशपर्यंत अनेकप्रकारकेविकारोंकूं निरंतर प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं (भूतग्रामंसृजामि)
अर्थ मैंपरमेश्वर इससर्वजगत्कूंउत्पन्नकरताहूं यहजोवचन हमनैं पूर्वकथनकऱ्याथा ॥ सो तिसजगत्काकारणरूप
मायाका प्रकाशकत्वमात्ररूपव्यापारकरिकै कथनकऱ्याथा ॥ और जैसे इसलोकविषे सूर्यादिकोंकेप्रकाशकरिकैहीं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सर्वकार्योंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ परंतु ताप्रकाशकत्वमात्रकरिकै तिनसूर्यादिकोंकूं कर्त्तापणा प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे ताकारणरूपमायाकेप्रकाशकत्वमात्रकरिकै मैंपरमेश्वरविषेभी सोकर्त्तापणा प्राप्तहोवैनहीं ॥ याअभिप्रायकरिकैहीं पूर्वहमनैं (उदासीनवदासीनं) यहवचन कथनकऱ्याथा ॥ यातैं तिनपूर्वउक्तदोनोंवचनोंका परस्पर विरोधहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अस्यद्वैतेंद्रजालस्य यदुपादानकारणं ॥ अज्ञानंतदुपाश्रित्य ब्रह्मकारणमुच्यते ॥) अर्थयह ॥ इसद्वैतप्रपंचरूपइंद्रजालका जोअज्ञानरूपउपादानकारणहै ॥ तिसअज्ञानकीप्रकाशकताकरिकैहीं ब्रह्म जगत्काकारणकह्याजावैहै ॥ वास्तवतैं सोब्रह्म जगत्काकारणहैनहीं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोकका यहअभिप्राय वर्णनकऱ्याहै ॥ जैसे चुंबकपाषाण आपणीसमीपतामात्रकरिकै लोहकूं प्रवृत्तकरताहूआभी वास्तवतैं उदासीनहीं रहेहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी आपणोसमीपतामात्रकरिकै तिसमायारूपप्रकृतिकूं जगत्कीउत्पत्तिकरणेविषे प्रवृत्तकरताहूआभी वास्तवतैं उदासीनहींरहूंहूं यातैं (भूतग्रामंसृजामि उदासीनवदासीनं) इनदोनोंवचनोंका परस्पर विराधहोवैनहीं इति ॥ १० ॥ ※ ॥ हेअर्जुन इसप्रकार नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभाव तथा सर्वप्राणीयोंकाआत्मारूप तथाआनंदघन तथादेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित ऐसेभीमैंपरमेश्वरकूं यह अविवेकीलोक मनुष्यमानिकै आदरकरतेनहीं उलटा निंदाकरेहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

अवजानंतिमांमूढामानुषींतनुमाश्रितं ॥ परंभावमजानंतोममभूतमहेश्वरं ॥ ११ ॥

अवजानंति । मां । मूढाः । मानुषीं । तनुं । आश्रितं । परं । भावं । अजानंतः । मम । भूतमहेश्वरं ॥ इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन अविवेकीजन मैंपरमेश्वरके सर्वभूतोंकामहान्ईश्वररूप सर्वतैंउत्कृष्ट पारमार्थिकतत्वकूं नजानतेहूए इसमनुष्य मूर्त्तिकूं धारणकरणेहारे मैंपरमेश्वरकूं अनादरकरेहैं ॥ ११ ॥ इतिपदार्थः ॥

286

॥ टीका ॥ हेअर्जुन विचारतैंरहित जेमूढपुरुषहैं ॥ तेमूढपुरुष मैंपरमेश्वरकोभी अवज्ञाकरेहैं ॥ अर्थात् तेमूढपुरुष मैंपरमेश्वरकूं यहकृष्णभगवान् साक्षात् ईश्वरहै याप्रकारतैं आदरकरतेनहीं ॥ उलटा हमारीनिंदाकरतेहैं ॥ अब तिनमूढपुरुषोंनैं करीहूईअवज्ञाविषे तिनमूढपुरुषोंकीभ्रांतिरूपहेतुकूं कथनकरेहैं (मानुषींतनुमाश्रितंइति) हेअर्जुन मनुष्यरूपकरिकैप्रतीतहोतीजोयहमूर्त्तिहै ॥ तिसमूर्त्तिकूं मैंपरमेश्वर आपणीइच्छाकरिकै भक्तजनोंकेअनुग्रहवासतै ग्रहणकरताभयाहूं ॥ अर्थात् मनुष्यरूपकरिकैप्रतीतहूएइसदेहकरिकै मैंपरमेश्वर व्यवहारकूंकरताहूं ॥ याकारण तैंहीं यहकृष्णभी हमारेसरीखा कोईमनुष्यहींहै याप्रकारकीभ्रांतिकरिकै आवृत्तहूआहैअंतःकरणजिनोंका ऐसेते मूढपुरुष मैंपरमेश्वरके परंभावकूं नहींजानतेहूए अर्थात् मैंपरमेश्वरके सर्वतैंउत्कृष्ट पारमार्थिकतत्त्वकूं नहींजानतेहूए जोपरमेश्वरका आदरनहींकरेहैं तथामैंपरमेश्वरकीनिंदाकरेहैं ॥ सो तिनमूढपुरुषोंविषे संभवताहीहै ॥ हेअर्जुन जिसहमारेपरमभावकूंनहींजानतेहूए तेमूढपुरुष हमारीअवज्ञाकरेहै ॥ सोहमारा परमभावकैसाहै ॥ सर्वभूतोंका महान्ईश्वरहै ॥ अर्थात् तिनसर्वभूतोंका नियंताहै इति ॥ ११ ॥※ ॥ हेअर्जुन इसप्रकार मैंपरमेश्वरकीअवज्ञाकरिकै उत्पन्नभयाजोमहान्पापहै ॥ तापापकरिकैप्रतिबद्धहूईहैबुद्धिजिनोंकी ऐसे तेमूढपुरुष निरंतर नरकविषेहीं निवासकरणेकूं योग्यहोवैहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मोघाशामोघकर्माणोमोघज्ञानाविचेतसः॥ राक्षसीमासुरींचैवप्रकृतिंमोहिनींश्रिताः॥

मोघाशाः। मोघकर्माणः। मोघज्ञानाः। विचेतसः। राक्षसीं। आसुरीं। च। एव। प्रकृतिं। मोहिनीं। श्रिताः॥इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन निष्फलहैआशाजिनोंकी तथानिष्फलहैकर्मजिनोंके तथानिष्फलहैज्ञानजिनोंका ऐसेविचार रहीनपुरुष राक्षसी तथा आसुरी तथामोहिनी प्रकृतिकूं हीं आश्रयणकरेहैं॥ १२ ॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अंतर्यामीईश्वरतैंविना केवलकर्महीं हमारेकूंफलकीप्राप्तिकरैंगे इसप्रकारकी निष्फलहींहै फल कीप्रार्थनारूपआशा जिनोंकी तिनोंकानाम मोघआशाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अंतर्यामीसर्वज्ञईश्वरतैंविना जडकर्मोंविषे स्वतंत्र फलदेणेकासामर्थ्यहैनहीं ॥ ऐसेअसमर्थकर्मोंतैंहीं फलकेप्राप्तिकोइच्छाकरणो निष्फलहींहै ॥ इसीकारणतैंहीं परमेश्वरतैंविमुखहोणेतैं मोघहैं क्या केवलपरिश्रममात्ररूपहै अग्निहोत्रादिककर्म जिनोंकेतिनोंकानाम मोघकर्मा है ॥ अर्थात् परमेश्वरतैंविमुखपुरुषोंके तेअग्निहोत्रादिककर्म केवलपरिश्रमकेहीं हेतुहैं ॥ दूसरेकिसीफलकाप्राप्ति करतेनहीं ॥ और ईश्वरका नहींप्रतिपादनकरणेहारे जेकुतर्कशास्त्रहैं ॥ तिनशास्त्रोंकरिकैउत्पन्नहोणेतैं निष्फलहैज्ञा नजिनोंका तिनोंकानाम मोघज्ञानाहै ॥ अर्थात् परमेश्वरकाप्रतिपादनहैजिनोंविषे ऐसेजेअध्यात्मशास्त्रहैं ॥ तिनशा स्त्रोंकेविचारतैं उत्पन्नभयाज्ञानहीं इसअधिकारीपुरुषकूं फलकीप्राप्तिकरेहै ॥ और जिनशास्त्रोंविषेपरमेश्वरका प्र तिपादननहींहै उलटापरमेश्वरकाखंडनहै ॥ ऐसेकुतर्कशास्त्रोंकेविचारतैंउत्पन्नहूआज्ञान इसपुरुषकूं किंचित्मात्रभो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

फलकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ यातैं सोज्ञान निष्फलहींहै ॥ अब इसपूर्वउक्तअर्थविषेहेतुकहेहैं (विचेतसःइति) तहां परमेश्वरकीअवज्ञाकरिकैउत्पन्नभयाजोमहान्पापहै तापापकरिकै प्रतिबद्धहूआहैविवेकविज्ञान जिनोंका तिनोंकानामविचेतस्है ॥ ऐसेविचेतस्होणेतैंहीं तेमूढपुरुष मोघआशा मोघकर्मा मोघज्ञाना होवैहैं ॥ किंवा तेमूढपुरुष मैंपरमेश्वरकीअवज्ञाकेवशतैं राक्षसीप्रकृतिकूं तथाआसुरीप्रकृतिकूं तथामोहिनीप्रकृतिकूंहीं आश्रयणकरेहैं ॥ तहां शास्त्रअविहितहिंसाका हेतुभूतजोद्वेषहै सोद्वेषहैप्रधानजिसविषे ऐसीजातामसीप्रकृतिहै ताकानाम राक्षसीप्रकृतिहै ॥ और शास्त्रअविहितविषयभोगोंका हेतुभूतजोरागहै सोरागहैप्रधानजिसविषे ऐसीजाराजसीप्रकृतिहै ताकानाम आसुरी प्रकृतिहै ॥ और सत्शास्त्रजन्यज्ञानतैंभ्रष्टकरणेहारो जाप्रकृतिहै ताकानाम मोहिनीप्रकृतिहै ॥ ईहां प्रकृतिनामस्वभावकाहै ॥ इसप्रकारकी राक्षसो आसुरी मोहिनी प्रकृतिकूंहीं तेमूढपुरुष आश्रयणकरेहैं ॥ इसीकारणतैंहीं तेमूढपुरुष नरककीप्राप्तिकेद्वारोंकाभागीहोणेतैं निरंतर नरकयातनाकूंहीं अनुभवकरेहै ॥ तेनरककेद्वार शास्त्रविषेयहकथनकऱ्येहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (त्रिविधंनरकस्येदंद्वारंनाशनमात्मनः ॥ कामःक्रोधस्तथालोभस्तस्मादेतत्त्रयंत्यजेत्) ॥ अर्थयह ॥ काम क्रोध लोभ यहतीनोंहीं इसपुरुषकूं नरककेप्राप्तिकाद्वारभूत होवैहैं ॥ यातैं यहपुरुष तिनतीनोंका परित्यागकरै इति ॥ १२ ॥

॥ तहांपूर्व यहवार्त्ता कथनकरी ॥ जेपुरुष परमेश्वरतैंविमुखहैं ॥ तिनपुरुषोंकी जा फलकोकामनाहै ॥ तथा ताफलकीकामनाकरिकैकऱ्याजो नित्यनैमित्तिककाम्यकर्मोकाअनुष्ठानहै ॥ तथा तिनकर्मोकेअनुष्ठानविषेउपयोगीजोशास्त्रजन्यज्ञानहै ॥ तेसर्व व्यर्थहींहोवैहैं ॥ यातैं तेपुरुष परलोककेफलतैं तथाताफलकेसाधनोंतैं शून्यहींहोवैहैं ॥

288

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

और तिनपुरुषोंकूं इसलोकका भी कोई फल प्राप्तहोतानहीं॥जिसकारणतैं तेपुरुष विवेकविज्ञानतैंशून्यहोणेतैं विचेतस्हीं हैं॥ यातैं तेपरमेश्वरतैंविमुख दीनपुरुष सर्वपुरुषार्थोंतैंभ्रष्टहोणेतैं सर्व प्राणीयोंकूं शोच्यकरणेयोग्यहैं॥ यहसर्वअर्थ पूर्व कथनकऱ्या॥ तहां सर्वपुरुषार्थोंकूं प्राप्तहोणेहारे तथानहींशोच्यकरणेयोग्य ऐसेकौंनपुरुषहैं॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाके हूए॥ एकपरमेश्वरकेशरणागतकूंप्राप्तहूएपुरुषहीं इसप्रकारकेहैं इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै॥

महात्मानस्तुमांपार्थदैवींप्रकृतिमाश्रिताः॥ भजंत्यनन्यमनसोज्ञात्वाभूतादिमव्ययं १३

महात्मानः। तु। मां। पार्थ। दैवीं। प्रकृतिं। आश्रिताः। भजंति। अनन्यमनसः। ज्ञात्वा। भूतादिं। अव्ययं॥ इतिप०॥

हेअर्जुन दैवी प्रकृतिकूं आश्रयगकरणेहारे तथामैंपरमेश्वरतैंअन्यविषेनहींहैमनजिनोंका ऐसेमहात्मापुरुष तौं मैंपरमेश्वरकूं सर्वभूतोंकाकारणरूप तथानाशतैंरहित जानिकै भजेहैं॥ १३॥ इतिपदार्थः॥

॥टीका॥ हेअर्जुन महानहै आत्मा क्या अंतःकरण जिनोंका तिनपुरुषोंकानाम महात्माहै॥ अर्थात् अनेकजन्मों विषेकऱ्येहूएपुण्यकर्मोंकरिकैसंस्कृत तथाक्षुद्रकामादिकविकारोंकरिकैनहींअभिभवकऱ्याहूआहैअंतःकरण जिनोंका तिनोंकानाम महात्माहै॥ जिसकारणतैं तेपुरुष महात्माहैं॥ तिसकारणतैंहीं (अभयंसत्वसंशुद्धिः) इत्यादिकवचनोंकरिकै आगेकथनकरणीजा दैवीनामा सात्विकीप्रकृतिहै॥ तादैवीप्रकृतिकूं आश्रयणकऱ्याहैजिनोंनैं॥ जिसकारणतैं तिनमहात्मापुरुषोंनैं दैवीप्रकृतिकूंआश्रयणकऱ्याहै॥ तिसकारणतैंहीं मैंपरमेश्वरतैंअन्यवस्तुविषेनहींहैमन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जिनोंका ॥ ऐसेमहात्मापुरुषतौं मैंपरमेश्वरकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं सर्वजगत्कारणरूपजानिकै तथाअविनाशीरूपजानिकै भजेहैं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरका सेवनकरेहैं ॥ ईहां (महात्मानस्तु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वकथनकन्येहूए मूढपुरुषोंतैं इनमहात्मापुरुषोंविषे महान्विलक्षणताकूं सूचनकरेहै इति ॥ १३ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेमहात्मापुरुष आपपरमेश्वरकूं किसप्रकारकरिकै भजेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताभजनकेप्रकारकूं दोश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै ॥

290

सततंकीर्त्तयंतोमांयतंतश्चदृढव्रताः॥ नमस्यंतश्चमांभक्त्यानित्ययुक्ताउपासते॥१४॥

सततं। कीर्त्तयंतः। मां। यतंतः। च। दृढव्रताः। नमस्यंतः। च। मां। भक्त्या। नित्ययुक्ताः। उपासते ॥ इतिपदच्छेदः॥ हेअर्जुन तेमहात्मापुरुष सर्वदा मैंपरब्रह्मकूं कीर्त्तनकरतेहूए तथा प्रयत्नकरतेहूए तथादृढव्रतवालेहूए तथा मैंपरमेश्वरकूं नमस्कारकरतेहूए तथामैंपरमेश्वरकी भक्तिकरिकै नित्ययुक्तहूए मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरेहैं ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥ ॥ टीका ॥ हेअर्जुन तेमहात्मापुरुष सर्वकालविषे मैंपरमात्मादेवकूंही कीर्त्तनकरेहैं ॥ अर्थात् सर्वउपनिषदोंकरिकै प्रतिपाद्य जो मैंनिर्गुणपरमात्मादेवहूं ॥ तिसमैंनिर्गुणस्वरूपकूं तेमहात्मापुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंकेविचारकरिकै कीर्त्तनकरेहैं ॥ और तागुरुकीसमीपतातैंभिन्नकालविषेतौं प्रणवादिकमंत्रोंकेजपकरिकै तथाउपनिषदोंकीआवृत्तिकरिकै कीर्त्तनकरेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ तेमहात्माजन मैंनिर्गुणब्रह्मकूं सर्वकालविषे वेदांत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शास्त्रकेअध्ययनरूपश्रवणव्यापारका विषयकरेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रवणरूपसाधनकानिरूपणकऱ्या ॥ अब मननरूपसाधनका निरूपणकरेहैं (यतंतः इति) हेअर्जुन पुनःतेमहात्मापुरुष गुरुकेसमीप अथवाअन्यत्र वेदांततैं अविरोधीतर्कोकाअनुसंधानकरिकै गुरुउपदिष्टमैंपरमेश्वरकेनिर्गुणस्वरूपकेनिश्चयकूं अप्रामाण्यशंकातैंरहितकणे वासतैं प्रयत्नकरेहैं ॥ अर्थात् श्रवणकरिकैनिश्चयकऱ्येहूएअर्थके बाधकरणेहारीशंकावोंकूं निवृत्तकरणेहारीतर्कोका अनुसंधानरूपमननपरायणहोवैहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकैमननका निरूपणकऱ्या ॥ अब ताश्रवणमननकेअधिकार वासतै शमदमादिकसाधनोंका निरूपणकरेहैं (दृढव्रताःइति) हेअर्जुन तेमहात्मापुरुष तिसश्रवणमननकेअधिका रकीप्राप्तिवासतै प्रथम दृढव्रतहोवैहैं ॥ तहां दृढहैं क्या प्रतिपक्षार्योंकरिकैचलायमानकरणेकूंअशक्यहैं अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह इत्यादिकव्रतजिनोंके तिनोंकानाम दृढव्रताहै ॥ अर्थात् तेमहात्मापुरुष शमदमादिकसा धनोंकरिकैसंपन्नहोवैहैं ॥ तहां अहिंसादिकव्रतोंविषे दृढरूपता पतंजलिभगवान्नैंभी योगसूत्रोंविषे कथनकराहै ॥ तहां सूत्रद्वयं ॥ (अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहायमाः ॥ जातिदेशकालसमयानवच्छिन्नाःसार्वभौमाःमहाव्रतं ॥) अ र्थयह ॥ अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यहपंच यमकहेजावैहैं इति ॥ तेअहिंसादिकपंचयम क्षिप्त मूढ विक्षिप्त इनतीनभूमिकावोंविषेभी संभावनाकऱ्येजावैहैं ॥ यातैं तेपंचयम सार्वभौमा कह्येजावैहैं ॥ ऐसेअहिंसादि कपंचयम जाति देश काल समय इनच्यारोंकरिकै अनवच्छिन्नहूए महाव्रत कहेजावैहैं ॥ ईहां जातिशब्दकरिकै ब्रा ह्मणत्वादिकजातिका ग्रहणकरणा ॥ और देशशब्दकरिके तीर्थादिकउत्तमदेशका ग्रहणकरणा ॥ और कालशब्द

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करिकै एकादशीअमावास्यादिकपवित्रदिनोंकाग्रहणकरणा ॥ और समयशब्दकरिकै प्रयोजनविशेषका ग्रहणकरणा ॥ तहां ब्राह्मणादिकउत्तमप्राणीयोंकूं मैं नहींहननकरौंगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै जो तिनब्राह्मणादिकोंका नहीं हननकरणाहै ॥ साअहिंसा जातिकरिकैअवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और तीर्थादिकउत्तमदेशविषे मैं किसीभीप्राणीकाह ननननहींकरौंगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै जो तिनतीर्थादिकोंविषे किसीभीप्राणीका नहींहननकरणाहै ॥ साअहिंसा देशकरिकैअवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और एकादशीआदिकपवित्रदिनोंविषे मैं किसीभीप्राणीका नहींहननकरौंगा या प्रकारकासंकल्पकरिकै जो तिनएकादशीआदिकोंविषे किसीभीप्राणीका नहींहननकरणाहै ॥ साअहिंसा कालक रिकैअवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और यज्ञयुद्धादिकप्रयोजनतैंविना मैं किसीभीप्राणीका नहींहननकरौंगा याप्रकारका संकल्पकरिकै जो तिनयज्ञयुद्धादिकप्रयोजनतैंविना किसीभीप्राणीका नहींहननकरणाहै ॥ साअहिंसा समयक रिकैअवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ इसप्रकार सत्यादिकोंविषेभी यथायोग्य जातिआदिकोंकरिकैअवच्छिन्नता जानिलेणी ॥ और किसीभीदेशविषे तथाकिसीभीकालविषे तथाकिसीभीप्रयोजनवासतै किसीभीजातिवालेजीवका मैं हनन नहींकरौंगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै जो सर्वप्रकारतैं किसीभीप्राणीमात्रका नहींहननकरणाहै ॥ साअहिंसा ति नजातिआदिकच्यारोंकरिकै अनवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ इसीप्रकार सत्यादिकयमोंविषेभी जातिआदिकोंकरिकैअ नवच्छिन्नता जानिलेणी ॥ इसप्रकार जातिआदिकोंकरिकैअनवच्छिन्नहूए तेअहिंसादिकयम महाव्रत कह्येजावैहैं इति ॥ इनदोनोंयोगसूत्रोंका विस्तारतैंअर्थतौं इसगीताकेचतुर्थअध्यायविषे (द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञाः) इसश्लोककेव्या

202

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूयानविषे कथनकरिआयेहैं ॥ इसप्रकारतैं दृढहैंअहिंसादिकव्रतजिनोंके तिनोंकानाम दृढव्रताहै इति ॥ और तेम हात्माजन मैंपरमेश्वरकूंहीं नमस्कारकरेहैं ॥ अर्थात् तिनमहात्माजनोंका इष्टदेवतारूपकरिकै तथागुरुरूपकरिकै स्थित जो सर्वशुभगुणोंकानिधानरूप मैंभगवान्वासुदेवहूं तिसमैंभगवान्कूंहीं तेमहात्माजन शरीरमनवाणी करिकै नमस्कारकरेहैं ॥ ईहां (नमस्यंतश्च) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ ताचकारकरिकै शास्त्रांतरविषे प्रसि द्धश्रवणादिकोंकाभी ग्रहणकरणा ॥ तहांश्लोक ॥ (श्रवणंकीर्त्तनंविष्णोःस्मरणंपादसेवनं ॥ अर्चनंवंदनंदास्यंसख्यमा त्मनिवेदनं ॥) अर्थयह ॥ सर्वत्रव्यापकविष्णुका श्रवणकरणा ॥ तथा कीर्तनकरणा ॥ तथा स्मरणकरणा ॥ तथा ताकेपादोंका सेवनकरणा ॥ तथा अर्चनकरणा ॥ तथा वंदनकरणा ॥ तथा दासभावकरणा ॥ तथा सखाभावकर णा ॥ तथा आपणेआत्माका समर्पणकरणा इति ॥ इसश्लोकविषे वंदनभीकथनकरयाहै ॥ सोईहींवंदन श्रीभगवान्नैं (नमस्यंतश्च) यावचनकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यातैं इसश्लोकविषे तावंदनकेसहवर्त्तणेहारे श्रवणादिकोंका तिसच कारकरिकै ग्रहणसंभवैहै ॥ यद्यपि पुष्पचंदनअक्षतादिकोंकरिकैअर्चन तथापादोंकासेवन साक्षात्ईश्वरका संभव तानहीं ॥ तथापि सोईश्वरहीं गुरुरूपहोइकै शिष्यकूं उपदेशकरेहै यहवार्त्ता शास्त्रविषे कथनकरीहै ॥ यातैं ता गुरुरूपईश्वरका अर्चन तथापादोंकासेवन संभवैहै ॥ अथवा (द्वेरूपेवासुदेवस्यचलंचाचलमेवच ॥ चलंसंन्यासिनो रूपमचलंप्रतिमादिकं ॥) अर्थयह ॥ सर्वत्रव्यापक भगवान्वासुदेवके दोरूपहैं ॥ एकतौं चलणेहारारूपहै ॥ दूसरा अ चलरूपहै ॥ तहां संन्यासीकास्वरूप चलरूपहै ॥ और प्रतिष्ठाकरीहूई पाषाणमय अथवाधातुमय प्रतिमाआदि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क अचलरूपहै इति ॥ इत्यादिकशास्त्रवचनोंविषे प्रतिमाभी विष्णुकारूपकह्याहै ॥ यातैं ताप्रतिमारूपविष्णुका अर्चन तथापादसेवन दोनोंसंभवैहैं ॥ इसीकारणतैंहीं शास्त्रविषे तिनदोनोंस्वरूपोंकूं नहींनमस्कारकरणेहारेपुरुष कूं नरककीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (देवताप्रतिमांदृष्ट्वा यतिंदृष्ट्वाचदंडिनं ॥ प्रणिपातमकुर्वाणोरौरवंनरकंव्रजेत् ॥) अर्थयह ॥ विष्णुशिवादिकदेवतावोंकी प्रतिमाकूंदेखिकै तथादंडयुक्तसंन्यासोकूं देखिकै जोपुरुष तिनोंकूं नमस्कारनहीं करेहै ॥ सोपुरुष रौरवनरककूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ ईहां (नमस्यंतश्चमां) इसवचनविषेजो मां यहपद दूसरीवार कथनकऱ्याहै ॥ सोसगुणरूपकेबोधनकरणेवासतैं कथनकऱ्याहै ॥ जोऐसानहींअंगीकारकरिये ॥ तौं (कीर्त्तयंतोमां) इसपूर्ववचनविषेस्थित मां शब्दकरिकैहीं अर्थकीसिद्धिहोइसकेहै ॥ पुनः मां यहशब्दकहणा व्यर्थहोवैंगा ॥ यातैं प्रथम मां यहशब्द निर्गुणस्वरूपकाबोधकहै ॥ और द्वितीय मां यहशब्द सगुणस्वरूपकाबोधकहै ॥ यहअर्थहीं अंगीकारकरणा उचितहै इति ॥ तथा तेमहात्माजन सर्वदा मैंपरमेश्वरविषयक परमप्रेमरूपभक्तिकरिकैयुक्तहोवैहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै सर्वसाधनोंकोपुष्कलता तथाप्रतिबंधककाअभाव दिखाया ॥ अर्थात् जेअधिकारीपुरुष सर्वदा परमेश्वरकीभक्तिकरिकैयुक्तहोवैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष ताभक्तिकेप्रभावतैं सर्वप्रतिबंधकोंतैं रहितहोइकै शीघ्रहीं आत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवे तथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनः ॥) अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषको परमात्मादेवविषे परमभक्तिहै ॥ तथा जैसे परमात्मादेवविषे परमभक्तिहै ॥ तैसेहीं ब्रह्मउपदेष्टागुरुविषे परमभक्तिहै ॥ तिस महात्माअधिकारी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुरुषकूंहीं यहवेदांतप्रतिपादितअर्थ बुद्धिविषे प्रकाशमानहोवैहैं इति ॥ यहवार्त्ता पतंजलिभगवान्नैंभी योगसूत्रोंवि
षेकथनकरीहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (ततःप्रत्यक्चेतनाधिगमोऽप्यंतरायाभावश्च ॥) अर्थयह ॥ तिसपरमेश्वरकीअनन्यभ
क्तिरूप प्रणिधानतैं इसअधिकारीपुरुषकूं प्रत्यक्चेतनका साक्षात्कारहोवैहै ॥ तथा सर्वविघ्नोंकाभी अभावहोवैहै इति ॥
इसप्रकार तेमहात्माजन शमदमादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहूए तथावेदांतशास्त्रकेश्रवणमननपरायणहूए तथापरम
गुरुरूपपरमेश्वरविषे परमप्रेमकरिकै तथानमस्कारादिकोंकरिकै सर्वविघ्नोंतैंरहितहूए मैंपरमेश्वरकूं उपासनाकरेहैं ॥
अर्थात् श्रवणमननकीपरिपाकतातैं उत्तरभावी जोअनात्माकारविजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित मैंपरमेश्वरके
आकार सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकरिकै निरंतर मैंपरमेश्वरकूंचिंतनकरेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्
नैं तत्त्वसाक्षात्कारकेसमीपहोणेतैं परमसाधनरूप निदिध्यासन दिखाया ॥ इसप्रकार श्रवणादिकसाधनोंकीपुष्कल
ताकेहूए इसअधिकारीपुरुषविषे वेदांतवाक्यकरिकैजन्य तथाअखंडवस्तुविषयक तथामैंब्रह्मरूपहूं ऐसासाक्षात्का
ररूप जोआत्मज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ सो सर्वसाधनोंकाफलभूत आत्मज्ञान संपूर्णशंकारूपीकलंकोंतैंरहितहूआ केव
ल आपणीउत्पत्तिमात्रकरिकैहीं संपूर्ण अज्ञानकूं तथाताअज्ञानकेकार्यरूपसर्वप्रपंचकूं नाशकरेहै ॥ जैसे दीपक आ
पणीउत्पत्तिमात्रकरिकैहीं अंधकारकूं नाशकरेहै ॥ ताअंधकारकेनाशकरणेविषे सोदीपक दूसरेकिसीसाधनकीअपे
क्षाकरतानहीं ॥ किंतु सोदीपक आपणीउत्पत्तिविषेहीं तेलवर्तीआदिकसाधनोंकीअपेक्षाकरेहै ॥ तैसे सोआत्मज्ञा
नभी ताकार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे दूसरेकिसीसाधनकी अपेक्षाकरतानहीं ॥किंतु सोआत्मज्ञान आप

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

णीउत्पत्तिविषेहीं तिनश्रवणादिकसाधनोंकीअपेक्षाकरेहैं ॥ यातैं सोआत्मज्ञान निरपेक्षहूआहीं साक्षात् मोक्षकाहे तुहै ॥ तामोक्षकीप्राप्तिकरणेविषे सोआत्मसाक्षात्कार भूमिकावोंकेजयक्रमकरिकैभ्रुवोंकेमध्यविषेप्राणोंकेप्रवेशकीभा अपेक्षाकरैनहीं ॥ तथा सुषुम्नानामा मूर्द्धन्यनाडीकरिकै प्राणोंकेउत्क्रमणकीभी अपेक्षाकरैनहीं ॥ तथा अर्चिरादि मार्गकरिकैब्रह्मलोकविषेगमनकरणेकीभी अपेक्षाकरैनहीं ॥ तथा ताब्रह्मलोककेभोगोंकेअंतकालपर्यंत विलंबकीभी अपेक्षाकरैनहीं ॥ यातैं श्रीभगवान्नैं (इदंतुतेगुह्यतमंप्रवक्ष्याम्यनसूयवेज्ञानं) इसवचनकरिकै जोपूर्व ज्ञानकेउपदे शकीप्रतिज्ञाकरीथी ॥ सोज्ञान इसश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं कथनकऱ्याहै ॥ और इसआत्मज्ञानकाजो अशुभसं सारतैंमुक्तिरूपफलहै ॥ सोफलतौं श्रीभगवान्नैं पूर्वहीं कथनकऱ्याथा ॥ यातैं ईहां पुनः सोफल कथनकऱ्यानहीं ॥ इसप्रकारकागंभीरअभिप्राय श्रीभगवान्का इसश्लोकविषेहै ॥ और इसश्लोकका ऊपरिलाअर्थतौं प्रगटहीहैं इ ति ॥ १४ ॥ * ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे कथनकऱ्येजे तत्त्वज्ञानकेसाधनरूप श्रवण मनन निदिध्यासनहैं ॥ ति नश्रवणादिकोंकेकरणेविषे जेपुरुष समर्थनहींहैं ॥ तेपुरुषभी उत्तम मध्यम मंद इसभेदकरिकै तीनप्रकारकेहींहोवै हैं ॥ तेसर्व आपणीआपणीबुद्धिकेअनुसार मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

296

ज्ञानयज्ञेनचाप्यन्येयजंतोमामुपासते॥एकत्वेनपृथक्त्वेनबहुधाविश्वतोमुखं॥ १५ ॥

ज्ञानयज्ञेन। चँ। अँपि। अन्ये। यजंतः। मां। उपासते। एकत्वेन। पृथक्त्वेन। बहुधा। विश्वतोमुखं॥इतिपदच्छेदः॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन अन्यकेईकउत्तमअधिकारीजनतौं ज्ञानरूपयज्ञकरिकै मेराँपूजनकरतेहूए केवल एकत्वरूपक रिकै मैंपरमेश्वरकूं हीं चिंतनकरेहैं तथाकेईकमध्यमअधिकारीजनतौं भेदरूपकरिकैहीं चिंतनकरेहैं तथा केईकमंदजनतौं बहुतप्रकारोंकरिकै मैंविश्वरूप परमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वश्लोकविषे कथनकऱ्येजेश्रवणादिकसाधनहैं ॥ तिनश्रवणादिकसाधनोंकेअनुष्ठानकरणेविषे असमर्थ जेकेईक अधिकारीजनहैं ॥ तेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकूंहीं ज्ञानरूपयज्ञकरिकै चिंतनकरेहैं ॥ तिनअधिकारीजनोंविषेभी केईकउत्तमअधिकारीजनतौं केवल एकलज्ञानयज्ञकरिकैहीं चिंतनकरेहैं ॥ ईहां श्रुतिविषेकथनकरीजा उपास्यउपासककाअभेदचिंतनरूप अहंग्रहउपासनाहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ तहांश्रुति ॥ (त्वंवाअहमस्मिभगवोदेवतेअहंवैत्वमसि ॥) अर्थयह ॥ हेभगवन् सगुणदेवता तथानिर्गुणदेवता जोतूंहैं सोमैंहूं ॥ और जोमैंहूं सोतूंहैं ॥ तुमारेहमारेविषे किंचित्मात्रभीभेदनहींहै इति ॥ याप्रकारकोअहंग्रहउपासनारूपज्ञानहीं परमेश्वरका यजनरूपहोणेतैं यज्ञरूपहै ॥ ईहां (ज्ञानयज्ञेनचाप्यन्ये) इसवचनविषेस्थितजो च अपि यहदोशब्दहैं ॥ तिनदोनोंशब्दोंविषे प्रथमचशब्दतौं एवकारकेअवधारणरूपअर्थकाबोधकहै ॥ ताचशब्दका मां इसशब्दकेसाथि अन्वयकरणा ॥ और दूसरा अपिशब्दतौं दूसरेसाधनोंकीनिवृत्तिका बोधकहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ केईकअधिकारीजनतौं दूसरेसाधनोंकीइच्छातैंरहितहूए उपास्यउपासककाअभेदाचिंतनरूप अहंग्रहउपासनारूपज्ञानयज्ञकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ इसप्रकार अहंग्रहउपासनारूपज्ञानयज्ञकरिकै मैंपरमेश्वरकूंचिंतनकरणेहारेपुरुष उत्तमकह्येजावैहैंइ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ति ॥ और दूसरेकेईक मध्यमअधिकारीजनतौं पृथक्त्वरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ अर्थात् (आदित्यो ब्रह्मेत्यादेशः मनोब्रह्म) इत्यादिकश्रुतियोंनैं कथनकरीजा उपास्यउपासककाभेदरूपप्रतीकउपासनाहै ॥ ताप्रतीक उपासनारूप ज्ञानयज्ञकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं इति ॥ और ताअहंग्रहउपासनाकेकरणेविषे तथाप्रतीक उपासनाकेकरणेविषे असमर्थ जेकेईक मंदपुरुषहैं ॥ तेमंदपुरुषतौं जिसीकिसीअन्यदेवताकीउपासनाकूंकरतेहूए तथाजिसीकिसीकर्मोंकूंकरतेहूए तिसतिसबहुतप्रकारोंकरिकैभी विश्वरूपमैंपरमेश्वरकूंहीं तिसतिसदेवताकीउपास नारूपज्ञानयज्ञकरिकै चिंतनकरेहैं ॥ तहां तिसतिसज्ञानयज्ञकरिकै उत्तरउत्तरपुरुषोंकूं क्रमकरिकै पूर्वपूर्वभूमिकाका लाभ अवश्यकरिकैहोवैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ योगशास्त्रवाले पातं जलतौं निर्विकल्पसमाधिरूप ज्ञानयज्ञकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ और औपनिषदपुरुषतौं मैंहींभगवा नूवासुदेवस्वरूपहूं याप्रकार अभेदरूपएकत्वकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ और विचारहीनप्राकृतजनतौं यहईश्वर हमारास्वामीहै मैंइसकादासहूं याप्रकार पृथक्त्वरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहै ॥ और दूसरेके ईकजनतौं बहुतप्रकारतैं विश्वतोमुख जैसे होवै तैसे हमारेकूंचिंतनकरेहैं अर्थात् जोकोईवस्तु देखणेविषेआवैहै सोवस्तु भगवत्काहींस्वरूपहै ॥ और जोजोशब्द श्रवणकरणेविषेआवैहै ॥ सोसोशब्द भगवत्काहींनामहै ॥ और जोकोईवस्तु किसीकूंदीयाजावैहै ॥ तथा जोकोईपदार्थ भोग्याजावैहै ॥ सोसर्व भगवत्विषेहीं अर्पणहोवैहै ॥ इसप्रकार सर्वद्वारोंकरिकै मैंपरमेश्वरकाहीं चिंतनकरेहै इति ॥ १५ ॥ ॐ ॥ शंका हेभगवन् जबी तेपुरुष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

बहुतप्रकारतैं उपासनाकरेहैं ॥ तबो तेसर्व मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं यहआपकावचन कैसे संगतहावैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् च्यारिश्लोकोंकरिकै आपणेकूं विश्वरूपता वर्णनकरेहै ॥

अहंक्रतुरहंयज्ञःस्वधाहमहमौषधं ॥ मंत्रोहमहमेवाज्यमहमाग्निरहंहुतं ॥ १६ ॥

अहं । क्रतुः । अहं । यज्ञः । स्वधा । अहं । अहं । औषधं । मंत्रः । अहं । अहं । एव । आज्यं । अहं । अग्निः । अहं । हुतं ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं क्रतुरूपहूं तथामैंहीं यज्ञरूपहूं तथामैंहीं स्वधारूपहूं तथामैंहीं औषधरूपहूं तथामैंहीं मंत्ररूपहूं तथामैंपरमेश्वर हीं आज्यरूपहूं तथामैंहीं अग्निरूपहूं तथामैंहीं हवनरूपहूं ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रौतकर्महैनामजिनोंका ऐसेजेअग्निष्टोमादिककर्महै तिनोंकानाम क्रतुहै ॥ सोक्रतुरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और स्मार्तकर्महैनामजिनोंका ऐसेजे वैश्वदेवादिककर्महैं जिनवैश्वदेवादिकोंकूं श्रुतिस्मृतियोंविषे महायज्ञरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तिन वैश्वदेवादिकस्मार्त्तकर्मोंकानाम यज्ञहै ॥ सोयज्ञरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और पितरोंकेतांई दीयाजोअन्नहै ताअन्नकानाम स्वधाहै ॥ सोस्वधारूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और वनस्पतिरूपओषधियोंतैं उत्पन्नभयाजोअन्नहै जिसअन्नकूं यहसर्वप्राणी भोजनकरतेहैं ॥ ताअन्नकानाम औषधहै ॥ अथवा रोगकी निवृत्तिका उपायरूपजोभेषजहै ताकानाम औषधहै ॥ सोऔषधरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और स्वाहा स्वधा यह शब्दहैअंतविषेजिनोंके ऐसेजो वेदकेवचनहैं ॥ जिसवचनोंकाउच्चारणकरिकै देवतावोंकेतांई तथापितरोंकेतांई हवि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ष् दीयाजावैहै ॥ तिनवेदवचनोंकानाम मंत्रहै ॥ जैसे इंद्रायस्वाहा पितृभ्यःस्वधा इत्यादिकमंत्रहैं सोमंत्ररूपभी मैंपरमेश्वहींहूं ॥ और तिनमंत्रोंकरिकै अग्निविषेपायाजोघृतहै ताघृतकानाम आज्यहै ॥ सोघृतरूपआज्य ईहां व्रीहियवादिकसर्वहविष्मात्रका उपलक्षणहै ॥ सोघृतादिहविष्रूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और ताघृतादिरूपहविष् केप्रक्षेपकाअधिकरणरूप जेआहवनीयआदिकअग्निहैं ॥ सोअग्निरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और ताअग्निविषे घृता दिरूपहविष्का प्रक्षेपरूपजोहवनहै ताकानाम हुतहै ॥ सोहवनरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ ईहां यद्यपि एकहींअहंश ब्दकेउच्चारणतैं उक्तअर्थकोसिद्धि होइसकेहै ॥ तथापि एकएक क्रतुयज्ञादिकशब्दकेसाथि जोअहंशब्दका उच्चारण कऱ्याहै ॥ सो तिनक्रतुयज्ञादिकोंविषे एकएककाज्ञानभी मैंपरमेश्वरकीहीं उपासनाहै इसअर्थके बोधनकरणेवासतै उच्चारणकऱ्याहै ॥ तहां इसश्लोकका यहसमुदायअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ जितनैंकी क्रियाहैं तथा ताक्रियाकीसिद्धिकरणेहा रे कारकहैं तथाताक्रियाकरिकैसाध्य फलहैं ॥ तेसर्व क्रियाकारकफल मैंपरमेश्वरकाहीं स्वरूपहैं ॥ मैंपरमेश्वरतैं अतिरिक्त कोईभीक्रियाकारकफलनहींहैं इति ॥ ईहां किसीटीकाविषेतौं क्रतुशब्दकरिकै देवताविषयकध्यानरूपसं कल्पका ग्रहणकऱ्याहै ॥ और यज्ञशब्दकरिकै श्रौतस्मार्त्तकर्मका ग्रहणकऱ्याहै इति ॥ १६ ॥ ※ ॥ किंच

पिताहमस्यजगतोमाताधातापितामहः ॥ वेद्यंपवित्रमोंकारऋक्सामयजुरेवच ॥ १७ ॥

पिता[3] । अहं[4] । अस्य[1] । जगतः[2] । माता[5]धाता[6] । पितामहः[8] । वेद्यं[9] । पवित्रं[10] । ओंकारः[11] । ऋक्[12] । साम[13] । यजुः[14] । एव[15] । च[16] ॥ इतिप०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन इस जगत्का पितारूप तथा मातारूप तथा धातारूप तथा पितामहरूप मैंपरमेश्वरहींहूं तथा वेद्यवस्तुरूप तथा पवित्रवस्तुरूप तथा ओंकाररूप तथा ऋग्वेदरूप सामवेदरूप यजुर्वेदरूप मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ १७ ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहसर्वप्राणीमात्ररूपजोजगत्है ॥ इसजगत्का उत्पन्नकरणहारा पितारूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ तथा इसजगत्कूंउत्पन्नकरणेहारी मातारूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ तथा इसजगत्काधातारूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं अर्थात् इसजगत्कापोषणकरणेहारा अथवा तिसतिसपुण्यपापरूपकर्मकेसुखदुःखरूपफलकेदेणेहाराभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और इनप्राणीयोंकेपिताकाभीजोपिताहोवै ताकानाम पितामहहै ॥ सोपितामहरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ ईहां किसीटीकाविषे जगत्शब्दकरिकै आकाशादिकसर्वकार्यप्रपंचका ग्रहणकरिकै मायाविशिष्टशबलब्रह्मकूं ताजगत्का पितारूपकह्याहै ॥ और अव्यक्तनामा अपराप्रकृतिकूं मातारूप कह्याहै ॥ और मायाउपहितअक्षरकूं पितामहरूप कह्याहै इति ॥ और इसअधिकारीजनोंकूं जानणेयोग्य जोपरब्रह्मवस्तुहै ताकानाम वेद्यहै ॥ सोवेद्यवस्तुरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ अथवा सर्वप्राणीमात्रकरिकै जानणेयोग्य जोशब्दस्पर्शरूपादिकवस्तुहैं तिनोंकानामवेद्यहै ॥ सोवेद्यवस्तुरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और यहअधिकारीजन जिसकरिकैशुद्धिकूंप्राप्तहोवै ताकानाम पवित्रहै ॥ ऐसे शुद्धिकरणेहारे गंगास्नान गायत्रीजप आदिकहैं ॥ सोपवित्ररूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और तिसजानणेयोग्यब्रह्मके ज्ञानका साधनरूपजो ओंकारहै ॥ सोओंकाररूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और अग्निहोत्रादिककर्मोंकीसिद्धिविषेउपयोगी तथातावेद्यब्रह्मविषेप्रमाणभूत जोऋग्वेदहै तथासामवेदहै तथायजुर्वेदहै ॥ सोऋगादिवेदरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ ईहां (यजुरेवच) यावचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ ताचकारकरिकै अथर्वणवेदकाभीग्रहणकरणा इति ॥ १७ ॥ *

गतिर्भर्त्ताप्रभुःसाक्षीनिवासःशरणंसुहृत्॥प्रभवःप्रलयःस्थानंनिधानंबीजमव्ययं १८।

302

गतिः। भर्त्ता। प्रभुः। साक्षी। निवासः। शरणं। सुहृत्। प्रभवः। प्रलयः। स्थानं। निधानं। बीजं। अव्ययं ॥इतिप०

हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं गतिरूपहूं तथाभर्त्तारूपहूं तथाप्रभुरूपहूं तथासाक्षीरूपहूं तथानिवासरूपहूं तथाशरणरूपहूं तथासुहृत्रूपहूं तथाप्रभवरूपहूं तथाप्रलयरूपहूं तथास्थानरूपहूं तथानिधानरूपहूं तथानाशतैंरहित बीजरूपहूं ॥१८

॥ टीका ॥ हेअर्जुन कर्मोंकरिकै जोफलप्राप्तहोवैहै ताफलकानाम गतिहै ॥ ऐसे स्वर्गादिकफलहैं ॥ सोगतिरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और सुखकेसाधनोंकीप्राप्तिकरिकै जो पोषणकरेहै ताकानाम भर्त्ताहै ॥ सोभर्त्तारूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और यहपुत्रादिकपदार्थ हमारेहींहैं याप्रकारतैं तिनपुत्रादिकपदार्थोंकूंस्वीकारकरणेहारा जोस्वामीहै ताकानाम प्रभुहै ॥ सोप्रभुरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और सर्वप्राणीयोंकेशुभअशुभकर्मोंकूं जोदेखणेहाराहै ताका नाम साक्षीहै ॥ जैसे सूर्यचंद्रमादिकहैं ॥ सोसाक्षीरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और निवासकरियेजिसविषे ताका नाम निवासहै॥अर्थात् भोगकेस्थानकानाम निवासहै॥ सोनिवासरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं॥ और विनाशकूंप्राप्तहोवैंदुःख जिसकेसमीप ताकानाम शरणहै ॥ अर्थात् शरणागतकूंप्राप्तहूएजनोंकेदुःखकानाशकरणेहारेकानाम शरणहै ॥ सोशर णरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं॥ और प्रतिउपकारकोनहींअपेक्षाकरिकै जोउपकारकरेहै ताकानाम सुहृत्है ॥ सोसुहृत्रूपभी

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और उत्पत्तिकानाम प्रभवहै ॥ और विनाशकानाम प्रलयहै ॥ औरस्थितिकानाम स्थानहै ॥ सो प्रभव प्रलय स्थानरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ अथवा जिसकरिकै यहकार्य उत्पन्नहोवैं ताकानाम प्रभवहै ॥ अर्थात् स्रष्टाकानाम प्रभवहै ॥ और तेकार्य लयभावकूंप्राप्तहोवैं जिसकारिकै ताकानाम प्रलयहै ॥ अर्थात् संहर्त्ताकानाम प्रलयहै ॥ और यहकार्य स्थितहोवैंजिसविषे ताकानाम स्थानहै ॥ अर्थात् आधारकानाम स्थानहै ॥ सो प्रभव प्रलय स्थानरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और तिसकालविषेभोगकीअयोग्यतातैं कालांतरविषेभोगणेयोग्यवस्तु स्थितकरी येजिसविषे ताकानाम निधानहै ॥ अर्थात् सूक्ष्मरूपसर्ववस्तुवोंकाअधिकरणजोप्रलयस्थानहै ताकानाम निधानहै ॥ अथवा शंखपद्मादिकनिधिकानाम निधानहै ॥ सोनिधानरूपभो मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और उत्पत्तिकाजोकारणहोवै ताःकानाम बोजहै ॥ जोबोज अव्ययहै ॥ अर्थात् जैसे व्रीहियवादिकबीज विनाशकूंप्राप्तहोवैंहैं तैसे जोबीज विनाशकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ ऐसा उत्पत्तिविनाशतैंरहित सर्वकाकारणरूपबीजभो मैंपरमेश्वरहींहूं इति ॥१८॥ * ॥ किंच

तपाम्यहमहंवर्षंनिगृह्णाम्युत्सृजामिच ॥ अमृतंचैवमृत्युश्चसदसच्चाहमर्जुन ॥ १९ ॥

तँपामि। अँहं। अँहं। वँर्षं। निगृँह्णामि। उत्सृँजामि। चँ। अँमृतं। चँ। एँव। मृँत्युः। चँ।सँत्।अँसत्। चँ।अँहं।अँर्जुन॥इतिप०॥
हेअर्जुनँ मैंपँरमेश्वर हीं तँापकूंकरूंहूं तथा मैंपँरमेश्वरहीं जँलरूपरसकूं आँकर्षणकरूंहूं तथाँ तारसकूं पुनःभूमिविषे परि त्यागकरूंहूं तथाँ मैंपँरमेश्वरहीं अमृँतरूपहूं तँथा मृँत्युरूपहूं तथा सत्रूँपहूं तँथा अँसत्रूपहूं ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वकाआत्मारूप मैंअंतर्यामीपरमेश्वरहीं सूर्यरूपहोइकै इसलोकविषे तापकूंकरूंहूं ॥ और ति
सतापकेवशतैं सोसूर्यरूपमैंपरमेश्वरहीं पूर्वकऱ्येहूएवृष्टिरूपरसकूं किसीकआपणीकिरणावोंकरिकै कार्त्तिकादिकअ
ष्टमासोंविषे इसपृथिवीतैं आकर्षणकरूंहूं ॥ तिसतैंअनंतर सोसूर्यरूपमैंपरमेश्वरहीं तिसआकर्षणकऱ्येहूएरसकूं
आषाढादिकच्यारिमासोंविषे किसीकआपणोकिरणावोंकरिकै इसपृथिवीविषे वृष्टिरूपकरिकैपरित्यागकरूंहूं ॥
और देवतावोंकेभक्षणकरणेयोग्यजोअन्नहै ॥ जिसअन्नकेभक्षणकरिकै तेदवता मरणकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ ताअन्नका
नाम अमृतहै ॥ अथवा सर्वप्राणीयोंकेजीवनकानाम अमृतहै ॥ सोअमृतरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और सर्वप्राणी
योंकूंजोनाशकरेहै ताकानाम मृत्युहै ॥ अथवा सर्वप्राणीयोंकाजोविनाशहै ताकानाम मृत्युहै ॥ सोमृत्युरूपभी मैंप
रमेश्वरहींहूं ॥ और जोवस्तु जिसआधारकेसंबंधवालाहूआ विद्यमानहोवैहै ॥ सोवस्तु तिसआधारविषे सत्कह्या
जावैहै ॥ और जोवस्तु जिसआधारकेसंबंधवालाहूआ नहींविद्यमानहोवैहै ॥ सोवस्तु तिसअधिकरणविषे असत्क
ह्याजावैहै ॥ जैसे रूप पृथिवीजलतेजरूपआधारकेसंबंधवालाहूआ विद्यमानहोवैहै ॥ यातैं सोरूप तापृथिवीजल
तेजरूपआधारविषे सत्कह्याजावैहै ॥ और सोईहींरूप वायुआकाशरूपआधारकेसंबंधवालाहूआविद्यमानहोवैनहीं ॥
यातैंसोरूप तावायुआकाशविषे असत्कह्याजावैहै ॥ ऐसेसत्असत्रूपता अन्यपदार्थोंविषेभी जानिलेणी ॥ सो
सत्रूप तथाअसत्रूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और किसीटीकाविषेतौं सत्असत् यादोनोंशब्दोंका यहअर्थकऱ्याहै ॥
शास्त्रविहितसाधुकर्मकानाम सत्है ॥ और शास्त्रनिषिद्धअसाधुकर्मकानाम असत्है इति ॥ और अन्यकिसीटीका

॥ ८२ ॥

304

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

विषेतौं सत् असत् यादोनोंशब्दोंका यहअर्थकऱ्याहै ॥ जोवस्तुइदंअस्ति इदंअस्ति इसप्रकारकेनामरूपकरिक कथनकऱ्याजावैहै ॥ सोवस्तु व्यक्तकह्याजावैहै ॥ ऐसाव्यक्तरूप जोनामरूपात्मक कार्यमात्रहै ॥ सोव्यक्तनामा कार्य सत्कह्याजावैहै ॥ और ताकार्यरूपव्यक्ततैंविलक्षण तथानामरूपकाकारणरूप जोअव्यक्तहै ॥ सोअव्यक्त अ सत्कह्याजावैहै ॥ अथवा स्थूलरूपदृश्यकानाम सत्है ॥ और सूक्ष्मरूपअदृश्यकानाम असत्है ॥ सोसत्रूप तथा असत्रूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ ईहां (सदसच्च) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोचकार ताव्यक्तअव्यक्तरूप सत्असत्दोनोंकेनिषेधकीयेहूए तानिषेधकाअवधिरूपकरिकैस्थित तथाकार्यकारणभावतैंरहित जोनिर्विशेष पर ब्रह्महै सोभीमैंहींहूं इसअर्थकेसूचनकरणेवासतैंहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ सर्वकाआत्मारूपमैंपरमेश्वरकूंजानिकै तेअधिकारीजन आपणेआपणेअधिकारकेअनुसार पूर्वउक्तबहुतप्रकारोंकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं इति ॥ ॥ १९ ॥ ❋ ॥ इसप्रकार अहंग्रहउपासनारूप एकभावकरिकै तथाप्रतीकउपासनारूप पृथक्भावकरिकै तथाअन्य बहुतप्रकारोंकरिकै मैंपरमेश्वरकूं निष्कामहोइकैचिंतनकरणेहारे जेपूर्वउक्त उत्तम मध्यम मंद यहतीनप्रकारकेअधि कारीजनहैं ॥ तेअधिकारीजनतौं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाआत्मज्ञानकीउत्पत्तिद्वारा क्रमकरिकै मुक्तिकूंहीं प्राप्त होवैहैं ॥ और जेपुरुष सकामहूए किसीभीप्रकारकरिकै मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरतेनहीं ॥ किंतु आपणीआपणीका मनाके विषयभूत जेस्वर्गादिकविषयसुखहैं ॥ तिनोंकीप्राप्तिवासतै काम्यकर्मोंकूंहीं करेहैं ॥ तेसकामपुरुष अंतःकरण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कीशुद्धिकरणेहारे निष्कामकर्मोंकेअभावकरिकै आत्मज्ञानकेश्रवणादिकसाधनोंकेअयोग्यहूए वारंवार जन्ममरण रूपसंसारकूंहीं अनुभवकरेहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकैनिरूपणकरेहै ॥

त्रैविद्यामांसोमपाःपूतपापायज्ञैरिष्ट्वास्वर्गतिंप्रार्थयंते ॥ तेपु
ण्यमासाद्यसुरेंद्रलोकमश्नंतिदिव्यान्दिविदेवभोगान् ॥ २० ॥

त्रैविद्याः । मां । सोमपाः । पूतपापाः । यज्ञैः । इष्ट्वा । स्वर्गतिं । प्रार्थयंते । ते । पुण्यं ।
आसाद्य । सुरेंद्रलोकं । अश्नंति । दिव्यान् । दिवि । देवभोगान् ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जेऋगादिकतीनवेदोकूंजानणेहारेपुरुष काम्ययज्ञोंकरिकै मैंपरमेश्वरकूं पूजनकरिकै सोमकूंपानकरतेहूए तथापापोंतैंरहितहूए स्वर्गकोप्राप्तिकूं चाहतेहैं तेसकामपुरुष पुण्यकेफलरूप तिसस्वर्गलोककूं प्राप्तहोइकै तिसस्वर्गलोकविषे दिव्य देवतावोंकेभोगोंकूं भोगेहैं॥२०॥इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यज्ञविषे होताकृतजोकर्महै तथाअध्वर्युकृतजोकर्महै तथाउद्गाताकृतजोकर्महै ताकर्मकेज्ञानकाहे तुभूतहैं ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद यहतीनविद्या जिनपुरुषोंकी तिनोंकानाम त्रैविद्यहै ॥ अथवा तिनऋगादिकती नविद्यावोंकूं जेभलीप्रकारतेजानतेहोवैं तिनोंकानाम त्रैविद्यहै ॥ तहां तिनतीनवेदोंउक्तकर्मकेकरावणेविषे तथाआ पकरणेविषे जोसामर्थ्यहै ॥ यहहीं तिनतीनवेदोंका भलीप्रकारजानणाहै ॥ ऐसे तीनवेदोंकूंजानणेहारे याज्ञिकपुरुष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अग्निष्टोमादिककाम्ययज्ञोंकरिकै इंद्र वसु रुद्र आदित्यरूप मैंपरमेश्वरकूंपूजनकरिकै ॥ अर्थात् यहपरमेश्वरहीं इंद्रादिरूपहै याप्रकारतैं इंद्रादिरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंनहींजानतेहूएभी तेसकामपुरुष वस्तुगतितैं तिनइंद्रादिक देवतावोंकेपूजनतैं मैंअंतर्यामीपरमेश्वरकूंहीं पूजनकरिकै जेपुरुष सोमपाहोवैंहैं ॥ ईहां सोमवल्लीकेरसकूंनिकासिकै तारसरूपसोमकूंहीं वैदिकअग्निविषेहवनकरिकै परिशेषतैंरह्योहूए सोमकूं जेपुरुष पानकरेहैं तिनोंकानाम सोमपाहै ॥ तिससोमकेपानकरिकैहीं पूतपापाहूए ॥ अर्थात् स्वर्गभोगोंकेप्रतिबंधकपापकर्मोंतैंरहितहूए ॥ जेसकामपुरुष केवल स्वर्गलोककेप्राप्तिकीहींइच्छाकरेहैं ॥ अंतःकरणकेशुद्धिकी तथाआत्मज्ञानकेप्राप्तिकी जेपुरुष इच्छाकरतेनहीं ॥ अर्थात् स्वर्गलोकविषे किंचित्मात्रभी भयहोतानहीं तथास्वर्गवासीदेवता अमृतभावकूं प्राप्तहोतेहैं याप्रकारकेअर्थवाद वचनोंकूंश्रवणकरिकै जेसकामपुरुष सोस्वर्गलोक हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारतैं केवलस्वर्गसुखकेप्राप्तिकीहींइच्छाकरेहैं॥ तेस्वर्गकीकामनावालेसकामपुरुष तिनअग्निष्टोमादिकपुण्यकर्मोंकेफलरूप देवराजइंद्रकेस्वर्गलोकरूपस्थानकूं प्राप्तहोइकै तिसस्वर्गलोकविषे दिव्यदेवभोगोंकूं भोगेहैं ॥ तहां जेभोग इनमनुष्योंकूं नहींप्राप्तहोवैंहैं तिनभोगोंकूं दिव्य भोग कहेहैं ॥ और जेभोग केवल देवतादेहकरिकैहीं भोगेजावैंहैं तिनभोगोंकानाम देवभोगहै ॥ अथवा स्वर्गविषे देवतावोंनैं प्राप्तकऱ्येजे भोगहैं तिनोंकानाम देवभोगहै ॥ ईहां भोगशब्दकरिकै विषयसुखकाग्रहणकरणा ॥ अथवा ताभोगशब्दकरिकै तासुखकेसाधनरूपविषयोंकाग्रहणकरणा ॥ तहां विषयसुखकानाम भोगहै इसपक्षविषेतौं (अश्नंति) इसपद का अनुभवंति यहअर्थकरणा ॥ और विषयोंकानाम भोगहै इसपक्षविषेतौं (अश्नंति) इसपदका भुंजते यहअर्थकरणा ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अर्थात् तेसकामपुरुष तास्वर्गलोकविषे विषयजन्यदिव्यसुखोंकूं अनुभवकरेहैं॥अथवा दिव्यविषयोंकूंभोगेहैं इति॥२०॥* ॥ शंका ॥ हेभगवन् तास्वर्गलोकविषे दिव्यभोगोंकेभोगणेतैं तिनसकामपुरुषोंकूं किसअनिष्टकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् तिनसकामपुरुषोंकूं महान्अनिष्टकीप्राप्तिकथनकरेहै ॥

308

तेतंभुक्त्वास्वर्गलोकंविशालंक्षीणेपुण्येमर्त्यलोकंविशंति ॥
एवंहित्रैधर्म्यमनुप्रपन्नागतागतंकामकामालभंते ॥ २१ ॥

तें १ । तं २ । भुक्त्वा ३ । स्वर्गलोकं ४ । विशालं ५ । क्षीणे ६ । पुण्ये ७ । मर्त्यलोकं ८ । विशंति ९ ।
एवं १० । हि ११ । त्रैधर्म्यं १२ । अनुप्रपन्नाः १३ । गतागतं १४ । कामकामाः १५ । लभंते १६ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन तेसकामपुरुष तिस विशाल स्वर्गलोककूं भोगिकै तांपुण्यके नाशहूए पुनः इसमनुष्यलोककूं प्राप्तहोवैहैं इसप्रकारतैं प्रसिद्ध वेदप्रतिपादितकाम्यकर्मकूं पुनःनिश्चयकरतेहूए तथादिव्यभोगोंकीकामनाकरतेहूए तेसकामपुरुष वारंवार गमनआगमनकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तेसकामपुरुष तिसकाम्यरूपपुण्यकर्मकरिकै प्राप्तहूए विस्तारवालेस्वर्गलोककूं भोगिकै अर्थात् आपणेआपणेपुण्यकर्मकीअधिकतातैं तिसस्वर्गलोककेअधिकसुखकूंअनुभवकरिकै तिसभोगकेजनक पुण्यकर्मोकेनाशहूएतैंअनंतर तिसदेवतादेहकेनाशहूए पुनः देहकेग्रहणवासतै इसमनुष्यलोककूं प्राप्तहोवैहैं॥ अर्थात् पुनःग

॥ ८४ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भवासतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरेहैं ॥ और जैसेपूर्वमनुष्यदेहविषे तिनकर्मीपुरुषोंनैं त्रैधर्म्यकूं निश्चयकऱ्याथा ॥ तैसे इसमनुष्यदेहविषेभी तिस त्रैधर्म्यकूंहीं निश्चयकरेहैं ॥ अर्थात् तिस त्रैधर्म्यकेअनुष्ठानवि षेहीं तत्परहोवैहैं ॥ तहां ऋग् यजुष् साम यातीनवेदोंकरिकैप्रतिपादित जो होताका तथाअध्वर्युका तथाउद्गाताका धर्मविशेषहै ॥ तिनतीनधर्मोंकेयोग्यजे ज्योतिष्टोमादिककार्म्यकर्महैं ॥ तिनकाम्यकर्मोंकानाम त्रैधर्म्यहै ॥ और (एवंत्रयीधर्ममनुप्रपन्नाः) इसप्रकारकाजो मूलश्लोकविषेपाठहोवै ॥ तौंभी इसपूर्वउक्तअर्थतैं विलक्षणअर्थ सिद्ध होवैनहीं ॥ किंतु सोपूर्वउक्तअर्थहींसिद्धहोवैहै ॥ तहां ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद यातीनवेदोंकानाम त्रयीहै ॥ तिस तीनवेदरूपत्रयीकरिकैप्रतिपादितजो ज्योतिष्टोमादिककाम्यधर्महै ताकानाम त्रयीधर्महै ॥ तहां होता अध्वर्यु उद्गा तायहतीनोंनाम यज्ञकरावणेहारेब्राह्मणोंकेहोवैहैं ॥ और अग्निष्टोम ज्योतिष्टोम यहयज्ञविशेषहोवैहैं ॥ और (अ नुप्रपन्नाः) इसवचनकेआदिविषेस्थितजो अनु यहशब्दहै ॥ सोअनुशब्द उत्तरउत्तरजन्मके कर्मविषयकनिश्चयवि षे पूर्वपूर्वजन्मके कर्मविषयकनिश्चयकीअपेक्षाकूं सूचनकरेहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ (त्रिकर्मकृत्तरतिजन्ममृ त्यू दक्षिणावंतोअमृतत्वंभजंते ॥) अर्थयह ॥ तीनवेदप्रतिपादितकर्मोंकूंकरणेहारेपुरुष जन्यमृत्युतैंरहितहोवैहैं ॥ और दक्षिणावालेपुरुष अमृतभावकूं प्राप्तहोवैहैं इति ॥ इत्यादिक स्तुति रूपअर्थवादोंकेकथनपूर्वक ऋगादिकवेदों नैं प्रतिपादनकऱ्ये जेज्योतिष्टोमादिककाम्यकर्महैं ॥ तेकाम्यकर्महीं भोगमोक्षकोप्राप्तिविषे परमकारणहैं मनका निग्रहरूपशम तथाइंद्रियोंकानिग्रहरूपदम तथासर्वकर्मोंकासंन्यास तथाआत्मज्ञान तथाईश्वर इनसर्वोंविषे कोई

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भी साधन तिसभोगमोक्षका कारणहैनहीं ॥ इसप्रकारके पूर्वपूर्वजन्मकेनिश्चयकूंलैके उत्तरउत्तरजन्मविषेभी तेसका मपुरुष तिसीप्रकारकेनिश्चयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इसीकारणतैंहीं तेसकामपुरुष पुनःभी तिनदिव्यभोगोंकीइच्छाकरतेहू ए गतागतकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तहां पुण्यकर्मकरिकै इसमनुष्यलोकतैं स्वर्गलोककूं जाणा ताकानाम गतहैं ॥ और तापुण्यकर्मकेक्षयहूए तास्वर्गलोकतैं पुनःइसमनुष्यलोकविषेआवणा ताकानाम आगतहै ॥ अर्थात् तेसकामपुरुष काम्यकर्मोंकूंकरिकै स्वर्गकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिनपुण्यकर्मोंकेक्षयहूएतैंअनंतर तास्वर्गलोकतैं मनुष्यलोकविषेआइकै ते सकामपुरुष पूर्वसंस्कारोंकेवशतैं पुनःकर्मोंकूंकरेहैं ॥ तिनकर्मोंकेभोगवासतैं पुनः स्वर्गकूंजावैहैं ॥ तहांतैं पुनःमनु ष्यलोककूं प्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार तिनसकामपुरुषोंकं गर्भवासतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेदुःखोंकाप्रवाह निरंतर बन्यारहैहै ॥ यहहीं तिनसकामपुरुषोंकूं महान्अनिष्टकीप्राप्तिहै इति ॥ साअनिष्टकीप्राप्ति मुंडकउपनिषदकीश्रु तिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (प्लवाह्येतेअदृढायज्ञरूपाअष्टादशोक्तमवरंयेषुकर्म ॥ एतच्छ्रेयोयेऽभिनंदंतिमूढाज रामृत्युंतेपुनरेवापियंति ॥) अर्थयह ॥ षोडशऋत्विज यजमान ताकीस्त्री यहअष्टादश धीवरहैं चलावणेहारेजिनोंके ऐसेजोकाम्यकर्मरूप अदृढप्लवहैं ॥ तेकाम्यकर्मरूपप्लव इसपुरुषकूं महान्संसारसमुद्रतैं पारकरतेनहीं ॥ ऐसेका म्यकर्मोंकूं आपणेश्रेयकासाधनमानिकै जेमूढपुरुष हर्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तेसकामपुरुष पुनःपुनःजरामरणकूं प्राप्त होवैहैं इति ॥ इसश्रुतिकाअर्थ आत्मपुराणकेषोडशेअध्यायविषे हम विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैं ॥ यातैं ईहांसं क्षेपतैंनिरूपणकऱ्याहै ॥ और यद्यपि बहुतमूलपुस्तकोंविषे (एवंत्रयीधर्ममनुप्रपन्नाः) याप्रकारकाहीं पाठहो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैहै ॥ तथा श्रीशंकरानंदस्वामीनैं श्रीनीलकंठपंडितनैंभी इसीप्रकारकेपाठकूंअंगीकारकरिकै व्याख्यानकऱ्याहै ॥ त
थापि गीताभाष्यकाव्याख्यानकरणेहारे श्रीस्वामीआनंदगिरिनैं तथाश्रीस्वामीमधुसूदननैं (एवंहित्रैधर्म्यमनुप्रप
न्नाः) याप्रकारकेपाठकूंअंगीकारकरिकैहीं व्याख्यानकऱ्याहै ॥ याकारणतैं इसग्रंथविषेभी (एवंहित्रैधर्म्यमनुप्रप
न्नाः) यहहींपाठराख्याहै इति ॥ २१ ॥ ※ ॥ तहां पूर्व दोश्लोकोंकरिकै सम्यक्ज्ञानतैंरहित सकामपुरुषों
कीगति कथनकरी ॥ अब सम्यक्ज्ञानवालेनिष्कामपुरुषोंकेगतिकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

अनन्याश्चिंतयंतोमांयेजनाःपर्युपासते ॥ तेषांनित्याभियुक्तानांयोगक्षेमंवहाम्यहं२२

अनन्याः । चिंतयंतः । मां । ये । जनाः । पर्युपासते । तेषां । नित्याभियुक्तानां । योगक्षेमं । वहामि । अहं ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जे अधिकारीजन अनन्यहोइकै चिंतनकरतेहूए मैंपरब्रह्मकूं साक्षात्कारकरेहैं
तिन नित्ययुक्तपुरुषोंके योगक्षेमकूं मैंपरमेश्वरहीं प्राप्तकरूंहूं ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अन्य कहीये भेददृष्टिकाविषय नहींविद्यमानहैजिनोंकूं तिनोंकानाम अनन्यहै ॥ अर्थात् जेपुरु
ष सर्वत्र अद्वितीयब्रह्मकूंहींदेखेहैं तथासर्वविषयभोगोंकोइच्छातैंरहितहैं ॥ तथा मैंहीं भगवान्वासुदेवसर्वात्मारूप
हूं हमारेतैंभिन्न किंचित्मात्रभीवस्तुनहींहै याप्रकारकानिश्चयकरिकै तिसोप्रत्यक्आत्माकूं सर्वदाचिंतनकरतेहूए
जेसाधनचतुष्टयसंपन्न विरक्तसंन्यासी मैंपरब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारकरेहैं ॥ तेतत्त्ववेत्तापुरुष

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मैंपरिपूर्णब्रह्मकेअभेदभावकरिकै कृतकृत्यहींहोवैहैं ॥ ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषोंकूं पुनःसंसारकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ ॥ हेभगवन् अद्वैतदर्शनविषेहैनिष्ठाजिनोंकी तथाअत्यंतनिष्कामताकरिकैयुक्त तथाआपणीइच्छापूर्वक नहींप्रयत्नक रतेहूए ऐसेजेतत्त्ववेत्तापुरुषहैं ॥ तिनतत्त्ववेत्तापुरुषोंका इसशरीरकेरक्षणवासतै योगक्षेम किसप्रकार सिद्धहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (तेषांनित्याभियुक्तानांइति) तहां निरंतर आदरपूर्वक परमेश्वरके ध्यानविषे जेतत्परहोवैं तिनोंकानाम नित्याभियुक्तहै ॥ जेध्याननिष्ठपुरुष आपणेदेहकीयात्रामात्रवासतैभी प्रयत्न करतेनहीं ॥ ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषोंके योगकूं तथाक्षेमकूं मैंपरमेश्वरहीं प्राप्तकरूंहूं ॥ तहां पूर्वअप्राप्त अन्नवस्त्रादिक पदार्थोंकीजाप्राप्तिहै ताकानाम योगहै ॥ और प्राप्तहूए तिनपदार्थोंकाजोपरिरक्षणहै ताकानाम क्षेमहै ॥ यद्यपि तेतत्त्ववेत्तापुरुष आपणेशरीरकीस्थितिवासतै तायोगक्षेमकोइच्छाकरतेनहीं ॥ तथापि मैंअंतर्यामीईश्वर आपहीं ति नोंकेयोगक्षेमकूंसिद्धकरूंहूं ॥ जैसे आपणोइच्छातैंरहितबालकके योगक्षेमकूं ताकेमातापिताहीं सिद्धकरेहैं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरहीं तिसतत्त्ववेत्तापुरुषके योगक्षेमकूं सिद्धकरूंहूं ॥ जिसकारणतैं (प्रियोहिज्ञानिनोऽत्यर्थमहंसचममप्रियः ॥ उदाराःसर्वएवैतेज्ञानीत्वात्मैवमेमतं) इत्यादिकवचनोंकरिकै मैंपरमेश्वर तिनज्ञानवान्पुरुषोंकूं आपणाआत्मारू पकरिकैकथनकरताभयाहूं ॥ तथाआपणाआत्मारूपहोणेतैंहीं सोज्ञानवान्पुरुषतौं मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहै ॥ और मैंपरमेश्वर तिसज्ञानवान्पुरुषकूं अत्यंतप्रियहूं ॥ ऐसे आत्मारूप तथाअत्यंतप्रिय ज्ञानवान्पुरुषोंके यो गक्षेमकूंसिद्धकरणा मैंपरमेश्वरकूं उचितहींहै ॥ यद्यपि सर्वप्राणीयोंकेयोगक्षेमकूं मैंपरमेश्वरहीं प्राप्तकरेहै ॥ केवल

312

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ज्ञानवान्पुरुषोंकेहीं योगक्षेमकूं प्राप्तकरतानहीं ॥ तथापि अन्यप्राणीयोंकेयोगक्षेमकूं जो परमेश्वरप्राप्तकरेहै ॥ सो तिनप्राणीयोंकेप्रयत्नकूं प्रथमउत्पन्नकरिकै तिसप्रयत्नद्वाराहीं तिनप्राणीयोंकूं तायोगक्षेमकीप्राप्तिकरेहै ॥ ता प्रयत्नतैंविना प्राप्तिकरैनहीं ॥ और ज्ञानवान्पुरुषोंकूंतौं तायोगक्षेमकीप्राप्तिवासतै प्रयत्नकूंनहींउत्पन्नकरिकैहीं तायोगक्षेमकीप्राप्तिकरेहै ॥ इतनीदोनोंविषेविशेषताहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ तायोगक्षेमका यहअर्थक ऱ्याहै ॥ पूर्वअप्राप्तयोगभूमिकाकीजाप्राप्तिहै ताकानाम योगहै ॥ और पूर्वप्राप्तयोगभूमिकाका जोरक्षणहै ताकाना म क्षेमहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (योगस्यक्षेमंयोगक्षेमं) याप्रकारकासमासकरिकै तायोगक्षेमका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ निरंतरब्रह्मनिष्ठाकानाम योगहै ॥ तिसब्रह्मनिष्ठारूपयोगकाजोक्षेमहै अर्थात् आध्यात्मिकआदिक उपद्रवोंकरिकै जोविच्छेदतैंरहितपणाहै ताकानामयोगक्षेमहै ॥ ऐसेयोगक्षेमकूं मैंपरमेश्वरहीं सर्वदा सिद्धकरूंहूं इति ॥ २२ ॥ ※ ॥ शंका॥ हेभगवन् आपपरमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोईवस्तुहैनहीं ॥ किंतु सर्वपदार्थ तुमारा हींस्वरूपहैं ॥ यातैं तेइंद्रादिकअन्यदेवताभी तुमाराहींस्वरूपहैं ॥ तुमारेतैं तेइंद्रादिकदेवता जुदानहींहै ॥ यातैं जैसे साक्षात् तुमारेभक्त तैंपरमेश्वरकूंहीं भजेहैं ॥ तैसेइंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेभक्तभी वस्तुगतितैं तैंपरमेश्वरकूंहीं भजेहैं ॥ इसरीतिसैं तुमारेभक्तोंविषे तथाअन्यदेवतावोंकेभक्तोंविषे किंचित्मात्रभी विशेषता सिद्धहोतीनहीं ॥ यातैं इंद्रादिकअ न्यदेवतावोंकेभक्ततौं पुनःपुनःगमनआगमनकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और मैंपरमेश्वरकूं अनन्यहोइकैचिंतनकरणेहारेज्ञानवान्भ क्ततौं कृतकृत्यहोवैहैं ॥ यहपूर्वउक्तआपकावचन कैसेसंगतहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

येऽप्यन्यदेवताभक्तायजंतेश्रद्धयान्विताः॥ तेपिमामेवकौंतेययजंत्यविधिपूर्वकं॥२३॥

314

ये[2] । अपि[4] । अन्यदेवताभक्ताः[3] । यजंते[1] । श्रद्धया[5] । अन्वि[6]ताः । ते[7] । अपि[8] । मां[11] । एव[12] । कौंतेय[1] । यजंति[13] । अविधिपूर्वकं[10] ॥ इतिपद०॥

हे[1] कौंतेय जे[2] अन्यदेवतावोंकेभक्त[3] भी श्रद्धाकरिकै युक्त[6] हूए पूजन[13] करेहैं तेभ[7]

क्त भी अज्ञानपूर्वक[10] मैंपरमेश्वरकूं[11] [12] हीं पूजन[13] करेहैं ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे मैंपरमेश्वरकेभक्त मैंपरमेश्वरकूंहीं पूजनकरेहैं ॥ तैसे जेइंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेभक्तभी आस्तिक्यबुद्धिरूपश्रद्धाकरिकैयुक्तहूए ज्योतिष्टोमादिकयज्ञोंकरिकै तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूं पूजनकरेहैं ॥तेअन्यदेवतावोंकेभक्त भी वस्तुगतितैं तिसतिसदेवतारूपकरिकैस्थितहूएमैंपरमेश्वरकूंहीं पूजनकरेहैं ॥परंतु तेअन्यदेवतावोंकेभक्त मैंपरमेश्वरकूं अविधिपूर्वकहीं पूजनकरेहैं ॥ ईहां अविधिनाम अज्ञानकाहै ताअज्ञानपूर्वकहीं मैंपरमेश्वरकूं पूजनकरेहैं ॥ अर्थात् यहपरमेश्वरहीं सर्वकाआत्मारूपहै याप्रकारतैं सर्वकाआत्मारूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंनजानिकै तथातिनइंद्रादिकदेवतावोंकूं मैंपरमेश्वरतैंभिन्नकल्पनाकरिकै तेअन्यदेवतावोंकेभक्त मैंपरमेश्वरकूंपूजनकरेहैं ॥ याकारणतैंहीं तेइंद्रादिकदेवतावोंकेभक्त पुनःपुनः जन्ममरणरूपसंसारकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (अविधिपूर्वकं) इसवचनकायह अर्थकऱ्याहै ॥ अभेदबुद्धिकानाम विधिहै ॥ ताअभेदबुद्धिरूपविधितैं तेपुरुष रहितहैं ॥ यातैं तेअन्यदेवतावोंकेभक्त वस्तुगतितैं मैंसर्वात्मारूपपरमेश्वरकूंपूजनकरतेहूएभी सोतिनोंकापूजन अविद्यापूर्वकहींहै ॥ अभेदबुद्धि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पूर्वक कऱ्याहूआ मैंपरमेश्वरकापूजनहीं विधिपूर्वकपूजनहोवैहै इति ॥ २३ ॥ ※ ॥ अब श्रीभगवान् तिनसकामपुरुषों केभजनविषे अविधिपूर्वकपणा स्पष्टकरताहूआ तिनसकामपुरुषोंकी तिसस्वर्गादिकफलतैंभीप्रच्युतिकूं कथनकरेहै ॥

अहंहिसर्वयज्ञानांभोक्ताचप्रभुरेवच ॥ नतुमामभिजानंतितत्त्वेनातश्च्यवंतिते ॥ २४ ॥

अहं । हि । सर्वयज्ञानां । भोक्ता । च । प्रभुः । एव । च । न । तु । मां । अभिजानंति । तत्त्वेन । अतः । च्यवंति । ते ॥ इतिप०

हेअर्जुन मैंपरमेश्वर हीं सर्वयज्ञोंका भोक्ताहूं तथा फलप्रदाताहूं यहवार्त्ता प्रसिद्धहै परंतु तेसकामपुरुष मैंपरमेश्वरकूं तिसरूपकरिकै नहीं जानतेहैं इसकारणतैंहीं तेसकामपुरुष पुनरावृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अधिकारीजनोंकेप्रति शास्त्रनैंविधानकऱ्ये जितनैंकीश्रौतयज्ञहैं तथास्मार्त्तयज्ञहैं ॥ तिनसर्वयज्ञों का मैंपरमेश्वरहीं तिसतिसइंद्रादिकदेवतारूपकरिकै भोक्ताहूं ॥ तथा मैंपरमेश्वरहीं आपणेअंतर्यामीरूपकरिकै अधियज्ञरूपहोणेतैं तिनयज्ञोंकेफलकाप्रदाताहूं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिस्मृतियोंविषे प्रसिद्धहींहै ॥ ऐसेमैंपरमेश्वरकूं तेअन्यदेवतावोंकेसकामभक्त तिसतत्त्वरूपकरिकैजानतेनहीं ॥ अर्थात् यहभगवान्वासुदेवहीं इंद्रादिकदेवतारूपकरिकै तौं तिनसर्वयज्ञोंका भोक्तारूपहै और आपणेअंतर्यामीस्वरूपकरिकैतौं तिनयज्ञोंकेफलकाप्रदाताहै ऐसेसर्वात्मारूप परमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोई आराधनकरणेयोग्यनहींहै ॥ इसप्रकारकेस्वरूपकरिकै तेसकामपुरुष मैंपरमेश्वरकूं जानतेनहीं ॥ इसप्रकारतैंहीं तेअन्यदेवतावोंकेसकामभक्त तिसतिसफलतैं प्रच्युतिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् मैंपरमे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

316

श्वरके तिसवास्तवस्वरूपकूंनहींजानतेहूए तेसकामपुरुष महान्आयासकरिकै तिनइंद्रादिकदेवतावोंकापूजनकरते हूएभी मैंपरमेश्वरविषे तिनकर्मोंकानहींअर्पणकरतेहूए तिनकाम्यकर्मोंकेप्रभावतैं पूर्वउक्तधूमादिकमार्गकरिकै तिसतिसदेवताकेलोकोंकूंप्राप्तहोइकै तिसलोककेभोगकेअंतविषे तहांतैं प्रच्युतहोवैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ तिसतिसलोकके भोगोंकेजनक जेपुण्यकर्महैं ॥ तिनकर्मोंका भोगकरिकैनाशहूएतैंअनंतर तेसकामकर्मीपुरुष तिसतिसदेवतादिहादिकोंतैंवियोगवालेहूए पुनः देहकेग्रहणकरणेवासतै इसमनुष्यलोककूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और जेअधिकारीजन तिनइंद्रादिकसर्वदेवतावोंविषे सर्वअंतर्यामीरूपभगवान्कूंहींदेखतेहूए तिनयज्ञादिककर्मोंकूंकरेहैं ॥ तथा तिनसर्वकर्मोंकूं अंतर्यामीपरमेश्वरविषेहीं अर्पणकरेहैं ॥ तेनिष्कामपुरुष तिसउपासनासहितकर्मकेप्रभावतैं पूर्वउक्तअर्चिरादिकमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूं प्राप्तहोइकै तहां आत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै ताब्रह्मलोककेभोगोंकेअंतविषे कैवल्यमोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकारतैं तिनसकामपुरुषोंकेफलविषे तथानिष्कामपुरुषोंकेफलविषे महान्भेदहै इति ॥ २४ ॥

* ॥ तहां तिनइंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेपूजनकरणेहारेपुरुषोंकूं अनावृत्तिरूपफलकेअभावहूएभी तिसतिसदेवताकेपूजनकेअनुसार तिसतिसक्षुद्रफलकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ इसअर्थकूंकथनकरताहूआ श्रीभगवान् साक्षात् परमेश्वरकेपूजनकरणेहारेभक्तजनोंकी तिनअन्यदेवतावोंकेभक्तोंतैं विलक्षणताकूं कथनकरेहै ॥

यांतिदेवव्रतादेवान्पितॄन्यांतिपितृव्रताः॥भूतानियांतिभूतेज्यायांतिमद्याजिनोपिमां ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यांति । देवव्रताः । देवान् । पितॄन् । यांति । पितृव्रताः । भूतानि । यांति । भूतेज्याः । यांति । मद्याजिनः । अपि । मां ॥ इतिप०

हेअर्जुन देवतावोंकेपूजक तिनदेवतावोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं तथापितरोंकेपूजक तिनपितरोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं तथाभूतों केपूजक तिनभूतोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं तथामैंपरमेश्वरकेपूजक मैंपरमेश्वरकूं हीं प्राप्तहोवैहैं ॥ २५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अंतःकरणरूपउपाधिके सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंकेभेदकरिकै ते अविधिपूर्वक भजनकरणेहारे पुरुषभी सात्विक राजस तामस इसभेदकरिकै तीनप्रकारकेहोवैहैं ॥ तहां इंद्रादिकदेवतावोंका बलिप्रदान प्र दक्षिणा नमस्कार इत्यादिकपूजनरूपहैव्रत जिनोंकूं तिनपुरुषोंकानाम देवव्रतहै ॥ ऐसे देवतावोंकूंपूजनकरणेहा रेपुरुष तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तेदेवतावोंकापूजनकरणेहारेपुरुष सात्विक कह्येजावैहैं ॥ और श्रा द्धादिककर्मोकरिकै अग्निष्वात्तादिकपितरोंका आराधनकरणेहारेजेपुरुषहैं तिनोंकानाम पितृव्रतहै ॥ ऐसे पितरों काआराधनकरणेहारेपुरुष तिनपितरोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तेपितरोंकाआराधनकरणेहारेपुरुष राजस कहेजावैहैं ॥ और यक्ष रक्षस् विनायक मातृगण इत्यादिकभूतोंका पूजनकरणेहारे जेपुरुषहैं तिनोंकानाम भूतेज्यहै ॥ ऐसे भूतोंकापूजनकरणेहारेपुरुष तिनभूतोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तेभूतोंकूंपूजनकरणेहारेपुरुष तामस कहेजावैहैं ॥ इतनैंक हणेकरिकै परमेश्वरतैंअन्यदूसरेदेवतावोंकेआराधनका तिसतिसदेवतारूपकीप्राप्तिरूप नाशवान्फल कथनकऱ्या ॥ अब परमेश्वरकेआराधनका परमेश्वररूपताकीप्राप्तिरूप अविनाशीफलकूं कथनकरेहैं ॥ (यांतिमद्याजिनोपि मां) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकेहींपुजनकरणेकाहैस्वभावजिनोंका तिनोंकानाम मद्याजीहै ॥ अर्थात् जेपुरुष इंद्रादिकस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वैंदेवतावोंविषे मैंपरमेश्वरकूंहीं व्यापकदेखतेहूए निरंतर मैंपरमेश्वरकहीं आराधनपरायणहोवैंहैं ॥ तेहमारेभक्ततौं मैंपरमेश्वरकूंहीं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैंहैं इति ॥ जो जिसकाआराधनकरैहै सो तिसभावकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ यह वार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरेहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तंयथायथोपासतेतदेवभवति ॥) अर्थयह ॥ जोपुरुष जिसजिस देव ताकीउपासनाकरैहै मरणतैंअनंतर सोपुरुष तिसतिसदेवताभावकूंहीं प्राप्तहोवैहै इति ॥ इसश्लोकविषे श्रीभगवान् कायहअभिप्रायहैं ॥ परमेश्वरकेआराधनकरणेविषे तथाइंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेआराधनकरणेविषे आयासकेस मानहूएभी यहजीव अविनाशीफलकी प्राप्तिकरणेहारेअंतर्यामीपरमेश्वरकूंनहींआराधनकरिकै अन्यइंद्रादिकदेवता वोंकाआराधनकरिकै नाशवान्फलकूंहीं प्राप्तहोवैंहैं ॥ यातैं इनअज्ञानीजीवोंके दुष्टअदृष्टकाप्रभाव कोईआश्चर्यरू पहै ॥ जिसदुष्टअदृष्टकेप्रभावतैं यहअज्ञानीजीव मुक्तिकरणेहारे परमेश्वरकेआराधनकापरित्यागकरिकै तुच्छफल कीप्राप्तिवासतै तिनइंद्रादिकदेवतावोंकाहीं आराधनकरेहैं इति ॥ २५ ॥ * ॥ यातैं परमेश्वरतैंअन्यदेवता वोंका परित्यागकरिकै इसअधिकारीजननैं केवल परमेश्वकाहीं आराधनकरणा ॥ जिसकारणतैं सोपरमेश्वरका आराधन इसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षरूपअविनाशीफलकीहीं प्राप्तिकरेहै ॥ तथा अन्यदेवतावोंकेआराधनकरणेवि षे इसपुरुषकूं द्रव्यकेखरचतैंआदिलैके जितनाकोआयासहोवैहै ॥ तितनाआयास परमेश्वरकेआराधनकरणेविषेहो तानहीं ॥ किंतु सोपरमेश्वरकाआराधन अत्यंत सुगमहै ॥ इसअर्थकूं ॥ अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

पत्रंपुष्पंफलंतोयंयोमेभक्त्याप्रयच्छति ॥ तदहंभक्त्युपहृतमश्नामिप्रयतात्मनः ॥२६॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पत्रं । पुष्पं । फलं । तोयं । यः । मे । भक्त्या । प्रयच्छति । तत् । अहं । भक्त्युपहृतं । अश्नामि । प्रयतात्मनः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जोकोईपुरुष मैंपरमेश्वरकेतांई भक्तिकरिकै पत्र वांपुष्प वांफल वांजल देताहै तिससुद्धबुद्धिवाले पुरुषके तिस भक्तिपूर्वकअर्पणकऱ्येहूए पत्रपुष्पादिककूं मैंपरमेश्वर अंगीकारकरूंहूं ॥ २६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पत्र पुष्प फल जल इसतैंआदिलैकैं जेकेईवस्तु विनाहींप्रयत्नतैंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिनअत्यंतसुलभवस्तुवोंविषे जिसीकिसीपत्रपुष्पादिकवस्तुकूं जोकोईमनुष्य अनंतमहान्विभूतिवालेमैंपरमेश्वरकेतांई भक्तिकरिकै देवैहै ॥ अर्थात् परमेश्वरतैंपरेदूसराकोईहैनहीं इसप्रकारकोबुद्धिपूर्वक जा निरतिशयप्रीतिहै ताप्रीतिकरिकै जोपुरुष भृत्यकीन्यांई मैंपरमेश्वरकेतांई तिसवस्तुकाअर्पणकरेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे महाराजाकेराज्यविषेस्थित जितनैंकीपदार्थहैं ॥ तेसर्वपदार्थ वस्तुगतितैं तामहाराजाकेहींहैं ॥ तिनमहाराजाकेपदार्थोंकूंहीं भृत्यलोक प्रीतिपूर्वक तिसमहाराजाकेतांई अर्पणकरेहैं ॥ ताकरिकै सोमहाराजा परितोषकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे इसजगत्विषे जितनैंकी पदार्थहैं ॥ तेसर्व पदार्थ मैंपरमेश्वरकेहींहैं ॥ ऐसाकोईपदार्थ इसजगत्विषेहैनहीं ॥ जोपदार्थ मैंपरमेश्वरका नहींहोवै ॥ ऐसे मैंपरमेश्वरकेपदार्थोंकूंहीं जेपुरुष प्रीतिपूर्वक मैंपरमेश्वरकेतांई अर्पणकरेहैं ॥ तिन प्रीतिपूर्वकअर्पणकऱ्येहूए शुद्धबुद्धिवालेपुरुषोंके पत्रपुष्पादिक अत्यंततुच्छपदार्थोंकूंभी मैंपरमेश्वर भोजनकरूंहूं ॥ अर्थात् जैसेकोईपुरुष अन्नकूंभोजनकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी तिनपत्रपुष्पादिकपदार्थोंकूं प्रीतिपूर्वकस्वीकारमात्र करिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवूंहूं ॥ यद्यपि (अश्नामि) इसपदका मुख्यअर्थ भोजनकर्तृत्वहींहै ॥ तथापि तामुख्यअर्थका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

320

परित्यागकरिकै तापदकीलक्षणावृत्तितैं जो प्रीतिपूर्वकस्वीकर्तृत्वरूपअर्थ अंगीकारकऱ्याहै ॥ सो प्रीतिकेअतिशय ताकीहेतुताकेबोधनकरणेवासतै अंगीकारकऱ्याहै ॥ अर्थात् तिन भक्तिपूर्वकअर्पणकऱ्येहूए पत्रपुष्पादिकपदार्थोंके स्वीकारमात्रतैंहीं मैंपरमेश्वर अत्यंतप्रसन्नहोवूंहूं ॥ और श्रुतिविषेभी देवतावोंविषे मनुष्योंकीन्यांई भोजनकर्तृत्वका निषेधहींकऱ्याहै ॥ याकारणतैंभी (अश्नामि) इसपदकी स्वीकाररूपअर्थविषे लक्षणाकरणी उचितहै ॥ तहांश्रुति ॥ (नहवैदेवाअश्नंतिनपिबंतिएतदेवामृतंदृष्ट्वातृप्यंति ॥) अर्थयह ॥ जैसे यहमनुष्य अन्नादिकपदार्थोंकूंभोजनकरेहैं तथाजलादिकोंकूंपानकरेहैं ॥ तैसे देवता तिनअन्नादिकोंकूंभोजनकरतेनहीं ॥ तथा जलादिकोंकूंभी पानकरतेनहीं ॥ किंतु तेदेवता केवल अमृतकेदर्शनमात्रकरिकैहीं तृप्तिकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् आप साक्षात्परमेश्वरहोइकै ऐसेपत्रपुष्पादिकतुच्छवस्तुवोंकूं किसवासतै स्वीकारकरतेहो ॥ महान्पुरुषोंकूंतौं महान्वस्तुकाहीं स्वीकारकरणाउचितहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ तिनतुच्छवस्तुवोंकेस्वीकारकरणेविषे हेतुकूंकथनकरेहैं (भक्त्युपहृतं इति) तेपत्रपुष्पादिकवस्तु यद्यपि तुच्छहैं ॥ तथापि तिनभक्तजनोंनैं तेपत्रपुष्पादिक अत्यंतप्रीतिरूपभक्तिकरिकै मैंपरमेश्वरकेतांई अर्पणकरेहैं ॥ याकारणतैं मैंपरमेश्वर तिनपत्रपुष्पादिकतुच्छपदार्थोंकूंभी महान्पदार्थरूपकरिकै स्वीकारकरूंहूं ॥ अर्थात् तिसतिसवस्तुकेस्वीकारकरणेविषे कोई तिसतिसवस्तुकीसौंदर्यता वामहानता निमित्तनहींहै ॥ किंतु अत्यंतप्रीतिपूर्वक समर्पणहीं तावस्तुकेस्वीकारकरणेविषे निमित्तहै इति (ईहां भक्त्याप्रयच्छति) इसवचनाविषे भक्तिकाकथनकरिकै (भक्त्युपहृतं) इसवचनविषे जो पुनःभगवान्नैं भक्तिका कथनकऱ्याहै ॥ सो ॥ ९० ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इसअर्थकेसूचनकरणेवासतैं कथनकऱ्याहै ॥ जोपुरुषब्राह्मणहै तथाबहुततपस्वीहै परंतु मैंपरमेश्वरकीभक्तिंतैंरहित है ॥ तिसभक्तिहीन तपस्वीब्राह्मणनैं कोईमहान्वस्तुदईहूईभी मैंपरमेश्वर तिसवस्तुकूं स्वीकारकरतानहीं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरकृत वस्तुकेस्वीकारकरणेविषे कोईब्राह्मणत्वादिक उत्तमजाति तथातपस्वीपणा निमित्तनहींहै ॥ किंतुदेणेहारेपुरुषकी केवल परमप्रीतिहीं तास्वीकारकरणेविषे निमित्तहै इति ॥ अथवा जैसेअत्यंतप्रीतिपूर्वक मातानैंदीयेहूएपदार्थोंकूं बालक भक्ष्याभक्ष्यविचारतैंरहितहोइकै भक्षणकरेहैं ॥ तैसे भक्तजनोंकोअत्यंतप्रीतिकरिकै प्रतिबद्धहूआहै भक्ष्याभक्ष्यवस्तुकाज्ञान जिसका ऐसाजोमैंपरमेश्वरहूं ॥ सोमैंपरमेश्वरभक्तिपूर्वक अर्पणकऱ्येहूए तिनभक्तजनोंकेपत्रपुष्पादिकवस्तुवोंकूं आपणेलीलाअवतारोंकरिकै साक्षात्हीं भक्षणकरूंहूं ॥ जैसे श्रीदामाब्राह्मणनैं अत्यंतप्रीतिपूर्वक दीयेहूएतंडुलोकूं मैंपरमेश्वर भक्षणकरताभयाहूं ॥ तथा शबरीनैं अत्यंतप्रीतिपूर्वक दीयेहूए बदरीफलोंकूं मैंपरमेश्वर भक्षणकरताभयाहूं ॥ यातैं केवल अनन्यभक्तिहीं मैंपरमेश्वरके परितोषका निमित्तहै ॥ दूसरेइंद्रादिकदेवतावोंकेपरितोषकरणेविषे जैसे बहुतद्रव्यकाखरच तथाशरीरकाआयास इत्यादिक निमित्तहोवैहैं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरकेपरितोषकरणेविषे तेनिमित्त अवश्यअपेक्षितनहींहैं ॥ किंतु केवल एकभक्तिहीं अपेक्षितहै ॥ यातैं यहअधिकारीजन तिनदूसरे देवतावोंकेपरित्यागकरिकै एक मैंपरमेश्वरकूंहीं आराधनकरैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (पत्रंपुष्पं) इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ (द्वेरूपेवासुदेवस्यचलंचाचलमेवच ॥ चलंसंन्यासिनोरूपमचलंप्रतिमादिकं ॥) अर्थयह ॥ परमेश्वरवासुदेवके चल अचल यहदोरूपहोवैहैं ॥ तहां संन्यसीतौं चलरूपहै ॥ और शालग्रामप्रतिमादिक अचलरूपहै इति ॥ इस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शास्त्रकेवचनविषे संन्यासी तथाशालग्रामप्रतिमादिक परमेश्वरकेरूप कथनकरेहैं ॥ और (अभ्यागतःस्वयंविष्णुः) अर्थ यह भोजनकेसमय गृहविषेप्राप्तहूआ अतिथि साक्षात् विष्णुरूपहोवैहै इति ॥ इसस्मृतिविषेभी अतिथिकूं विष्णु रूपकह्याहै ॥ यातैं जोअधिकारीपुरुष शालग्रामविषे अथवा प्रतिमाविषे भक्तिपूर्वक पत्रपुष्पादिक मैंपरमेश्वरकेतांई अर्पणकरेहै ॥ तिन भक्तिपूर्वक अर्पणकऱ्येहूए पत्रपुष्पादिकोंकूं मैंपरमेश्वरअंगीकारकरूंहूं इति ॥ अथवा भोजनकाल विषे गृहविषेप्राप्तभयाजोअतिथिहै ॥ तिस अन्नार्थीअतिथिकेतांई जोपुरुष जैसे शाकफलादिक आपभोजनकरेहै तैसी हीं शाकफलादिक भक्तिपूर्वकदेवैहै ॥ तिसपुरुषके भक्तिपूर्वकदीयेहूए तिनपत्रपुष्पादिकोंकूं मैंपरमेश्वर साक्षात् तिसअतिथिकेमुखकरिकै भोजनकरूंहूं इति ॥ २६ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसभजनकरिकै आप प्रसन्नहोवोहो ॥ सो आपकाभजन किसप्रकारकाहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् तिसभजनकेप्रकारकूं कथनकरेहै ॥

यत्करोषियदश्नासियज्जुहोषिददासियत्॥यत्तपस्यसिकौंतेयतत्कुरुष्वमदर्पणं॥ २७ ॥

यत्। करोषि। यत्। अश्नासि। यत्। जुहोषि। ददासि। यत्। यत्। तपस्यसि। कौंतेय। तत्। कुरुष्व। मदर्पणं॥ इतिपदच्छेदः॥

हेकौंतेय तूं जो करताहै तथाजो भोजनकरताहैं तथा जो होमकरताहैं तथा जो दान करताहैं तथा जो तपकरताहैं सोसर्व मैंपरमेश्वरकेअर्पण कर॥ २७॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शास्त्रकीआज्ञातैंविनाहीं केवलरागकरिकैंप्राप्त जिसगमनआगमनरूप लौकिककर्मकूं तूं करता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हैं ॥ तथा आपणीतृप्तिवासतै अथवा कर्मोंकीसिद्धिवासतै जिसअन्नकूं तूं भोजनकरताहैं ॥ तथा शास्त्रकेबलतैं जि
सनित्यअग्निहोत्रादिकहोमकूं तूं करताहैं ॥ ईहां (जुहोषि) यहहोमकावाचकपद श्रौतस्मार्त्तसर्वहोमका उपलक्ष
णहै ॥ अर्थात् श्रौतस्मार्त्तरूपजितनैंकीहोमोंकूं तूं करताहैं ॥ तथा अतिथिब्राह्मणादिकोंकेतांई जोतूं अन्नसुवर्णादिक
पदार्थ देताहैं ॥ तथा प्रतिवर्षविषे अज्ञातपापोंकी तथाप्रमादकृतपापोंकी निवृत्तिकरणेवासतै जोतूं चांद्रायणव्रता
दिकतपकूंकरताहै ॥ अथवा यथाइच्छापूर्वक प्रवृत्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै शरीरइंद्रियोंकेसंयमरूपतपकूं जोतूं कर
ताहैं ॥ यहतप सर्वनित्यनैमित्तिककर्मोंकाउपलक्षणहै ॥ तेसर्वकर्म तूं मैंपरमेश्वरविषेअर्पणकर ॥ अर्थात् जोतुमारेकूं
आपणेप्राणीस्वभावकेवशतैं शास्त्रतैंविनाभी अवश्यकरणेयोग्य गमनआगमनादिक लौकिककर्महैं तथा जोतुमारे
कूं शास्त्रकेबलतैं अवश्यकरणेयोग्य होमदानादिक वैदिककर्महैं ॥ जेलौकिकवैदिककर्म किसीअन्यहींनिमित्तकरिकै
कऱ्येहैं ॥ तेलौकिकवैदिकसर्वकर्म जैसे मैंपरमेश्वरविषेहीं अर्पितहोवैं तैसे तिनसर्वकर्मोंकूं तूंकर ॥ ईहां (कुरुष्व)
इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ बोधनकऱ्या ॥ इसप्रकार जोपुरुष मैंपरमेश्वरविषेहीं तिनसर्वकर्मोंका सम
र्पणकरेहै ॥ तासमर्पणका मोक्षरूपफल तिससमर्पकपुरुषकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ ताकरिकै मैंपरमेश्वरकूं किंचित्मात्र
भीफलहोतानहींइति ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ अवश्यकरणेयोग्यकर्मोंका जो परमगुरुरूपमैंपरमेश्वराविषे अर्पण
है ॥ सोअर्पणहीं मैंपरमेश्वरकाभजनहै ॥ तिसभजनवासतै दूसराकोईजुदाव्यापार करणेयोग्यनहींहै इति ॥ २७ ॥ ※ ॥
॥ अब इसपूर्वउक्तभजनकेफलकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ अधिकारीजनोंकूं तिसभजनविषे प्रवृत्तकरणेवासतै॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

शुभाशुभफलैरेवंमोक्ष्यसेकर्मबंधनैः॥ संन्यासयोगयुक्तात्माविमुक्तोमामुपैष्यसि २८॥

शुभाशुभफलैः। एवं। मोक्ष्यसे। कर्मबंधनैः। संन्यासयोगयुक्तात्मा। विमुक्तः। मां। उपैष्यसि ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन ऐसेभजनकेप्राप्तहूए तूंअर्जुन इष्टेअनिष्टफलवाले कर्मरूपबंधनोंनैं परित्यागकीयाजावैंगा तथा संन्यासयोगयुक्तात्माहूआतूं तिनकर्मबंधनोंतैं विमुक्तहूआ मैंपरब्रह्मकूं प्राप्तहोवैंगा ॥ २८॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसपूर्वउक्तप्रकारतैं विनाहींआयासतैंसिद्धजो सर्वकर्मोका मैंपरमेश्वरविषेअर्पणरूपभजनहै ॥ तिसहमारेभजनकेप्राप्तहूए ॥ इष्टरूप तथाअनिष्टरूप फलहैजिनोंका ऐसेजेबंधनरूप लौकिकवैदिककर्महैं ॥ तिनकमोंनैं तूंअर्जुन परित्यागकीयाजावैंगा ॥ अर्थात् तेसर्वकर्म मैंपरमेश्वरविषे अर्पितहोणेतैं तैंअर्जुनका तिनकर्मोंकेसाथि संबंधहींसंभवतानहीं ॥ यातैं तिनकर्मोंकरिकै तथातिनकर्मोंकेइष्टअनिष्टफलोंकरिकै तूं लिपायमानहोवैंगानहीं ॥ तिसतैंअनंतर संन्यासयोगयुक्तात्माहूआतूं ॥ ईहां सर्वकर्मोंका जोपरमेश्वरविषेअर्पणहै ताकानाम संन्यासहै ॥ सोसंन्यासहीं योगकीन्यांई चित्तकाशोधकहोणेतैं योगरूपहै ॥ ऐसे संन्यासयोगकरिकै युक्तहै क्या शोधितहै आत्मा क्या अंतःकरण जिसका ताकानाम संन्यासयोगयुक्तात्माहै ॥ अथवा तिससंन्यासयोगविषे युक्तहै क्या आसक्तहै आत्मा क्या मन जिसका ताकानाम संन्यासयोगयुक्तात्माहै ॥ अथवा फलसहितसर्वकर्मोंकेपरित्यागकानाम संन्यासयोगहै ॥ तासंन्यासयोगकरिकैयुक्तहैचित्तजिसका ताकानाम संन्यासयोगयुक्तात्माहै ॥ ऐसा संन्यासयोग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सर्वप्राणीयोंविषे मैंपरमेश्वर समानहींहूं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरका दोप्रकारकारूपहै ॥ एकतौं स्वाभाविकरूपहै ॥ और दूसरा औपाधिकरूपहै ॥ तहां सत्ता स्फुरण आनंद यहतीनोंतौं हमारा स्वाभाविकरूपहै ॥ और अंतर्यामीपणा औपाधिकरूपहै ॥ तास्वाभाविक सत्तारूपकरिकै तथास्फुरणरूपकरिकै तथाआनंदरूपकरिकैभी मैंपरमेश्वर तिन सर्वप्राणीयोंविषे समानहूं ॥ तथा औपाधिक अंतर्यामीरूपकरिकैभी मपरमेश्वर तिनसर्वप्राणीयोंविषे समानहूं इ ति ॥ याकारणतैंहीं कोईभीप्राणी मैंपरमेश्वरके द्वेषकाविषय नहींहै ॥ तथा कोईभीप्राणी मैंपरमेश्वरके प्रीतिकावि षय नहींहै ॥ अर्थात् मपरमेश्वरका किसीभीप्राणीविषे द्वेष तथाप्रीति नहींहै ॥ जैसे आकाशमंडलविषे व्यापक जो सूर्यकाप्रकाशहै ॥ तिसप्रकाशका किसीभीपदार्थविषे द्वेष तथाप्रीति नहींहोवैहै ॥ किंतु सोसूर्यकाप्रकाश सर्वत्र स मानहींहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् किसीभीप्राणीविषे जो तुमारा द्वेष तथाप्रीति नहींहोवै ॥ तौं तुमारेभक्तोंविषे त थाअभक्तोंविषे फलकीविषमता कैसेहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् ताफलकीविषमताविषे हेतुकहेहै (येभजंतिइति) हेअर्जुन जेपुरुष सर्वकर्मोंका मैंपरमेश्वरविषेअर्पणरूप भक्तिकरिकै मैंपरमेश्वरकूं सेवनकरेहैं ॥ ते भक्तजन श्रेष्ठहैं ॥ ईहां (येभजंतितु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द अभक्तोंकीअपेक्षाकरिकै भ क्तोंकीविशेषताकेबोधनकरणेवासतैंहै ॥ साविशेषता कौंनहै ॥ ऐसीजिज्ञासाकेहूए श्रीभगवान् ताविशेषताकूं कहेहै (मयितेतेषुचाप्यहंइति) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषेअर्पणकऱ्येहूएनिष्कामकर्मोंकरिकै जेपुरुष शुद्धअंतःकरणवालेहू एहैं ॥ तेपुरुषहीं मैंपरमेश्वरविषे वर्त्तेहैं ॥ अर्थात् निवृत्तहोइगयाहैरजतमरूपमलजिसका तथासत्वगुणकीअधिक

325

॥ ९३ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

युक्तात्माहूआ तथाजीवताहूआहीं तिनबंधनरूपकर्मोतैंविमुक्तहूआ तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरकूंहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ अर्थात् सम्यक्दर्शनकरिकै अज्ञानरूपआवरणकीनिवृत्तिकरिकै मैंपरब्रह्मकूंहीं अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारतैं तूं साक्षात्कारकरैगा ॥ तिसतैंअनंतर भोगकरिकै प्रारब्धकर्मकेनाशहूएतैं इसशरीरकेपातहूए तूं विदेहकैवल्यरूप मैंपरब्रह्मकूं प्राप्त होवैंगा ॥ और इसवर्त्तमानकालविषेभी मैंपरब्रह्मस्वरूपहूआतूं सर्वउपाधियोंकीनिवृत्तिकरिकै मायाकृतभेदव्यवहारकाविषय नहींहोवैंगा इति ॥ २८ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जबी तूं आपणेभक्तोंऊपरिहीं अनुग्रहकरताहैं ॥ अभक्तोंऊपरि अनुग्रहकरतानहीं ॥ तबी अस्मदादिकजीवोंकी न्यांई तूंभी रागद्वेषवालाहोणेतैं परमेश्वर कैसेहोवैंगा ॥ किंतु अस्मदादिकजीवोंकीन्यांई तूंभी कोईजीवविशेषहींहोवैंगा ॥ ऐसोअर्जुनकी शंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै ॥

समोहंसर्वभूतेषुनमेद्वेष्योस्तिनप्रियः॥ येभजंतितुमांभक्त्यामयितेतेषुचाप्यहं॥२९॥

समः।अहं।सर्वभूतेषु।न।मे।द्वेष्यः।अस्ति।न।प्रियः।ये।भजंति।तु।मां।भक्त्या।मयि।ते।तेषु।च।अपि।अहं॥इ०प०

हेअर्जुन मैंपरमेश्वर सर्वप्राणीयोंविषे समानहूं यातैं कोईभीप्राणी मैंपरमेश्वरके द्वेषकाविषय नहीं है तथा प्रीतिकाविषय नहींहै तौभी जेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं भक्तिकरिकै सेवनकरेहैं तेपुरुषहीं मैंपरमेश्वरविषे वर्त्तेहैं तथामैंपरमेश्वर भी तिनपुरुषोंविषेहीं वर्त्ताहूं ॥ २९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जितनैंकीप्राणी मैंपरमेश्वरकेभक्तहैं ॥ तथाजितनैंकीप्राणी मैंपरमेश्वरतैंविमुख अभक्तहैं ॥ तिन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मैंपरमेश्वरविषे किंचित्मात्रभी विषमतानहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसेरागद्वेषतैंरहितहूआभी अग्नि आपणेसमीपस्थितप्राणीयोंकेहीं शीतकूंनिवृत्तकरेहै ॥ दूरस्थितप्राणीयोंकेशीतकूं निवृत्तकरैनहीं ॥ तथा जैसे रागद्वेषतैंरहितहूआभी कल्पवृक्ष आपणेसमीपस्थितमनुष्योंकूंहीं मनवांच्छितपदार्थोंकीप्राप्तिकरेहै ॥ दूरस्थितमनुष्योंकूं मनवांच्छितपदार्थोंकीप्राप्तिकरै नहीं ॥ इतनैमात्रकरिकै ताअग्निविषे तथाकल्पवृक्षविषे विषमतादोषकीप्राप्तिहोवै नहीं ॥ तैसेरागद्वेषतैंरहितहूआभी मैंपरमेश्वर शरणागतकूंप्राप्तहूए भक्तजनोंकेहींबंधनकूं निवृत्तकरूंहूं ॥ अन्यप्राणीयोंकेबंधनकूंनिवृत्तकरतानहीं ॥ इतनैंमात्रकरिकै मैंपरमेश्वरविषेभी विषमतादोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ २९ ॥ * ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकीभक्तिकाहीं यहप्रभावहै ॥ जो सर्वत्रसमान मैंपरमेश्वरविषेभी विषमताकूं दिखाइदेवैहै ॥ तिसहमारीभक्तिकेप्रभावकूं तूं अब श्रवणकर ॥

327

अपिचेत्सुदुराचारोभजतेमामनन्यभाक्॥साधुरेवसमंतव्यःसम्यग्व्यवसितोहिसः३०

अपि। चेत्। सुदुराचारः। भजते। मां। अनन्यभाक्। साधुः। एव। सः। मंतव्यः। सम्यक्। व्यवसितः। हि। सः॥इप०॥

हेअर्जुन जोकोईपुरुष अत्यंतदुराचरणवालाहूआ भी जबी अनन्यचित्तहोइकै मैंपरमेश्वरकूं भजेहै तबी सोपुरुष साधु हीं मानणा जिसकारणतैं सोपुरुष साधु निश्चयवालाहै ॥ ३० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोकोईपुरुष अजामिलादिकोंकीन्यांई पूर्व अत्यंतदुराचरणवालाहूआभी जबी किसीपूर्वलेपुण्यकर्मकेउदयतैं अनन्यचित्तवालाहूआ मैंपरमेश्वरकूं सेवनकरेहै ॥ तबी सोपुरुष पूर्वअसाधुहूआभी तिसभजनका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ताकरिकै अत्यंतस्वच्छहूआ ऐसाजोअंतःकरणहै ॥ ऐसेअंतःकरणकी मैंपरमेश्वरकेआकारवृत्तिकूं उपनिषदरूपप्र
माणकरिकैउत्पन्नकरतेहूए तेभक्तजनहीं मैंपरमेश्वरविषेवर्त्तेहैं ॥ अभक्तजन इसप्रकारतैं मैंपरमेश्वरविषे वर्त्ततेनहीं ॥
और मैंपरमेश्वरभी तिनभक्तजनोंविषेहीं वर्त्ततांहूं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरभी तिनभक्तजनोंकेअत्यंतस्वच्छचित्तकीवृत्ति
विषे प्रतिबिंबितहूआ तिनभक्तोंविषेहीं वर्त्ततांहूं ॥ काहेतैं इसलोकविषे जोजोस्वच्छद्रव्यहै ॥ तास्वच्छद्रव्यका यह
हींस्वभावहोवैहै ॥ जो जिसपदार्थकेसाथि तास्वच्छद्रव्यकासंबंधहोवैहै ॥ तिसपदार्थकेआकारकूं सोस्वच्छद्रव्य आप
णेविषेग्रहणकरेहै ॥ और तास्वच्छद्रव्यकेसंबंधवाला जोजोपदार्थहोवैहै ॥ तिसपदार्थकाभी यहहींस्वभावहोवैहै ॥ जो
तिसस्वच्छद्रव्यविषे प्रतिबिंबभावकूंप्राप्तहोणा ॥ और इसलोकविषे जोजो अस्वच्छद्रव्यहोवैहै ॥ तिसअस्वच्छद्रव्य
काभी यहहींस्वभावहोवैहै ॥ जो आपणेसंबंधवालेपदार्थकेभीआकारकूं आपणेविषेनहींग्रहणकरणा ॥ और ताअस्व
च्छद्रव्यकेसंबंधवालेपदार्थकाभी यहहींस्वभावहोवैहै ॥ जो तिसअस्वच्छद्रव्यविषे प्रतिबिंबभावकूंनहींप्राप्तहोणा ॥
जैसे सर्वत्रसमानविद्यमानहूआभी सूर्यकाप्रकाश स्वच्छदर्पणादिकोंविषेहीं अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अस्वच्छघ
टादिकोंविषे अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ इतनैंमात्रकरिकै ताप्रकाशका तिनदर्पणादिकोंविषे कोईराग सिद्धहोवैन
हीं ॥ तथा तिनघटादिकोंविषे कोईद्वेष सिद्धहोवैनहीं ॥ तैसे सर्वत्रसमानहूआभी मैंपरमेश्वर भक्तजनोंकेअत्यंतस्व
च्छचित्तविषेहीं अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवूंहूं ॥ अभक्तजनोंकेअत्यंतअस्वच्छचित्तविषे अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवूंनहीं ॥इतनैंमात्र
करिकै मैंपरमेश्वरका तिनभक्तजनोंविषे कोईराग सिद्धहोवैनहीं ॥ तथा तिनअभक्तजनोंविषे कोईद्वेष सिद्धहोवैनहीं॥यातैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लविषे साधुहींमानणा ॥ जिसकारणतैं सोपुरुष तिसकालविषे साधुनिश्चयवालाहींहै ॥तहां दुराचारीपुरुषभी परमेश्वर केआराधनतैं साधुहींहोवैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अतिपापप्रसक्तोपिध्यायन्निमिषमच्युतं ॥ भूयस्तपस्वीभवतिपंक्तिपावनपावनः ॥ १ ॥ प्रायश्चितान्यशेषाणितपःकर्मात्मिकानिवै ॥ यानितेषामशेषाणांकृष्णानुस्मरणंपरं ॥ २ ॥) अर्थयह ॥ अत्यंतपापकर्मोविषेप्रसक्तपुरुषभी जबी अनन्यचित्तहोइकै एक निमेषमात्रकालपर्यंतभी परमेश्वरकाआराधनकरेहै ॥ तबी तिसपरमेश्वरकेआराधनकेप्रभावतैं सोपुरुष तिनसर्वपापोंतैंरहितहोइकै पुनःतपस्वीहोवैहै ॥ तथा सोपुरुष पंक्तिकूंपावनकरणेहारे सदाचारवालेपुरुषोंकूंभी आपणेदर्शनतैंपावनकरेहै इति ॥ किंवा पापकीनिवृत्तिकरणेवासतै धर्मशास्त्रनैं विधानकऱ्ये जितनैकी कृच्छ्र अतिकृच्छ्र महाकृच्छ्रचांद्रायण इत्यादिक तपरूपप्रायश्चित्तहैं ॥ तथा जितनैंकी वाजपेययज्ञ राजसूययज्ञ अश्वमेधयज्ञ इत्यादिक कर्मरूपप्रायश्चित्तहैं ॥ तिनसर्वप्रायश्चित्तोंतैं श्रीकृष्णभगवान्कास्मरण अधिकहै इति ॥ तात्पर्ययह ॥ तेकृच्छ्रादिकप्रायश्चित्त जिसजिसपापकीनिवृत्तिकरणेवासतै कऱ्येजावैहैं ॥ तिसतिसपापकीहीं निवृत्तिकरेहैं ॥ अन्यपापकीनिवृत्तिकरैनहीं ॥ और यहपरमेश्वरकास्मरणतौं शतकोटिकल्पोंकेपापोंकूंनाशकरेहै ॥ यहवार्त्ताभी शास्त्रविषे कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अहंब्रह्मेतिमांध्यायन्नेकाग्रमनसासकृत्॥सर्वंतरतिपाप्मानंकल्पकोटिशतैःकृतं ॥) अर्थयह॥जोपुरुष एकाग्रमनकरिकै एकवारभीमैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैं अभेदरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरेहै ॥ सोपुरुष शतकोटिकल्पोंकरिकैकऱ्येहूए सर्वपापोंकूं नाशकरेहै इति ॥ ॥ ३० ॥ ※ ॥ तहां अनन्यचित्तहोइकै जोपरमेश्वरकास्मरणहै ॥ सोस्मरणहीं मोक्षकासाधनहै ॥ याप्रकारके सम्यक्निश्च

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यतैं सोपुरुष पूर्वलीदुराचारताकूंपरित्यागकरिकैशीघ्रहीं धर्मात्माहोवैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

क्षिप्रंभवतिधर्मात्माशश्वच्छांतिंनिगच्छति॥कौंतेयप्रतिजानीहिनमेभक्तःप्रणश्यति॥

क्षिप्रं। भवति। धर्मात्मा। शश्वत्। शांतिं। निगच्छति। कौंतेय। प्रतिजानीहि। न। मे। भक्तः। प्रणश्यति॥इतिप०॥

हेअर्जुन सोपुरुष शीघ्रहीं धर्मात्मा होवैहै तथा नित्य शांतिकूं प्राप्तहोवैहै हेकौंतेय मैंपरमेश्वरका भक्त नहीं नाशहोवैहै ऐसी तूं प्रतिज्ञाकर ॥ ३१ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष पूर्व बहुतकालका अधर्मात्माहोवैहै ॥ सोपुरुषभी मैंपरमेश्वरकेभजनकेप्रभावतैं शीघ्रहीं धर्मात्माहोवैहै ॥ अर्थात् सोपुरुष तिसभजनकेप्रभावतैं पूर्वलेदुराचारपणेकूं शीघ्रहीं परित्यागकरिकै धर्मविषेप्रीतिवालाहोवैहै ॥ किंवा तिसहमारेभक्तकूं केवल इतनामात्रहींफलनहींहोवैहै ॥ किंतु इसतैंअधिकभीफलहोवैहै ॥ इस अर्थकूं अब श्रीभगवान् कहेहै (शश्वच्छांतिंनिगच्छतिइति) हेअर्जुन तिसहमारेभजनकेप्रभावतैं सोपुरुष नित्यशांतिकूंभी प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेभजनकरिकै शुद्धअंतःकरणवालाहूआ सोपुरुष तीव्रवैराग्यवान्होइकै सर्वविषयभोगोंकोइच्छातैंरहितहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् परमेश्वरकापूजनकरणेहाराभी कोईकभक्त पूर्वअभ्यासक्येहूएदुराचारकूं नहींत्यागकरताहूआ धर्मात्मानहींभीहोवैंगा ॥ यातैं सोभक्ततौं नाशकूंहींप्राप्तहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् तिनभक्तजनोंकेऊपरिकरुणाके परवशताकरिकै क्रोधवान्हूएकीन्यांई ताअर्जुनकेप्र

॥ ९५ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ति कहेहैं (कौंतेयइति) हेअर्जुन पूर्वदुराचारीहूआभी यहपुरुष मैंपरमेश्वरकेभजनकेप्रभावतैं तादुराचारकापरित्यागकरिकै शीघ्रहीं धर्मात्माहोवैहै ॥ तथा नित्यशांतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसवार्त्ताकूं तुमनैं कोईआश्चर्यरूपनहींमानणा ॥ किंतु यहहमारेभक्तिकाप्रभाव निश्चितहींहै ॥ यातैं हेअर्जुन इस हमारेभक्तिकेप्रभावविषे विवादकरणेहारेजेप्रतिवादीहैं ॥ तिनप्रतिवादीयोंकेसन्मुखस्थितहोइकै तथाऊचीभुजाकरिकै तिनप्रतिवादीयोंकीअवज्ञापूर्वक तथागर्वपूर्वक तूं याप्रकारकीप्रतिज्ञाकर ॥ जो मैंपरमेश्वरकाभक्त अत्यंतदुराचारीहूआभी तथाप्राणसंकटकूंप्राप्तहूआभी तथाअत्यंतमूढ तथाअशरणहूआभी नाशकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ अर्थात् दुर्गकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु सर्वप्रकारतैंसोहमाराभक्त कृतार्थहींहोवैहै ॥ हेअर्जुन इसहमारे भक्तिकेप्रभावविषे अजामिल प्रल्हाद ध्रुव गजेंद्र इसतैंआदिलैकेअनेकदृष्टांत प्रसिद्धहैं ॥ (तथानवासुदेवभक्तानामशुभंविद्यतेक्वचित् ॥) अर्थयह ॥ परमेश्वरकेभक्तोंकूं कदाचित्भी अशुभकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ इत्यादिक अनेक शास्त्रकेवचन प्रमाणरूपहैं इति ॥ ३१ ॥ ❋ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे आगंतुकदोषकरिकैदुष्टपुरुषोंका भगवद्भक्तिकेप्रभावतैं निस्तार कथनकऱ्या ॥ अब स्वाभाविकदोषकरिकैदुष्टपुरुषोंकाभी तिसभगवद्भक्तिकेप्रभावतैं निस्तार कथनकरेहैं ॥

मांहिपार्थव्यपाश्रित्ययेपिस्युःपापयोनयः।स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेपियांतिपरांगतिं॥

मां। हि। पार्थ। व्यपाश्रित्य। ये। अपि। स्युः।पापयोनयः।स्त्रियः।वैश्याः।तथा।शूद्राः।ते। अपि।यांति।परां।गतिं॥इतिप०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकूं आश्रयणकरिकै जेपुरुष पापयोनी भी हैं तथा स्त्रीयांहैं तथावैश्यहैं तथा शूद्रहैं तेसर्व भी परम गतिकूं प्राप्त होवैहैं यहवार्ता निश्चितहींहै ॥ ३२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकेशरणागतकूंप्राप्तहोइकै जेप्राणी पापयोनिभीहैं ॥ अर्थात् जातिदोषकरिकैदुष्ट जेचांडालादिकभीहैं अथवा जेप्राणी सर्पादिकतिर्यक्योनिवालेभीहैं ॥ तथा वेदकेअध्ययनादिकोंतैंरहितहोणेतैं अतिनिकृष्टजेस्त्रीयांहैं ॥ तथा कृषिवाणिज्यादिक लौकिकव्यापारोविषेतत्पर जेवैश्यहैं ॥ तथा शूद्रत्वजातितैंहीं वेदकेअध्ययनादिकोंकेअभावकरिकै परमगतिकेअयोग्य जेशूद्रहैं ॥ तेसर्वहीं मैंपरमेश्वरकीभक्तिकेप्रभावतैं शुद्धअंतःकरणवाले होइकै ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिद्वारा मोक्षरूपपरमगतिकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता तुमनैं निश्चितहींजानणी ॥ इसवार्त्ताविषे किंचित्मात्रभी तुमनैं संशयकरणानहीं ॥ ईहां (मांहि) यावचनविषेस्थितजो हि यहशब्दहै ॥ ताहिशब्दकरिकै इस अर्थविषे शास्त्रप्रमाणकीप्रसिद्धि बोधनकरीहै ॥ सोशास्त्रप्रमाण यहहै ॥ श्लोक ॥ (किरातहूणांध्रपुलिंदपुल्कसाआभीरकंकायवनाःखशादयः ॥ येऽन्येचपापायदुपाश्रयाश्रयाःशुद्ध्यंतितस्मैप्रभविष्णवेनमः ॥) अर्थयह ॥ किरात हूणा अंध्र पुलिंद पुल्कस आभीर कंक यवन खश इत्यादिक जेनीचजातिवालेप्राणीहैं ॥ तथा जेअन्यभी पापआचरणवालेहैं ॥ तेसर्वप्राणी जिसपरमेश्वरकेशरणागतकूंप्राप्तहोइकै शुद्धिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसपरमेश्वरकेतांई हमारा नमस्कारहै इति ॥ ईहां (तेऽपि) इसवचनविषेस्थितजो अपि यहशब्दहै ॥ ताअपिशब्दकरिकै (अपिचेत्सुदुराचारो) इसपूर्वश्लोकविषेकथनकऱ्येहूए दुराचारीपुरुषोंकाभी ग्रहणकरणा इति ॥ ३२ ॥ * ॥ तहां इसप्रका

332

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रके स्त्रीशूद्रादिकप्राणीभी जबी परमेश्वरकीभक्तितैं परमगतिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तबी ब्राह्मणादिक उत्तममनुष्य तिसभ
गवत्भक्तितैं परमगतिकूंप्राप्तहोवैहैं याकेविषे क्याआश्चर्यहै ॥ इसप्रकारके कैमुतिकन्यायकरिकै श्रीभगवान् ताभ
गवत्भक्तिकेप्रभावकूं वर्णनकरेहै ॥ तिनउत्तममनुष्योंकूं तिसभक्तिविषेप्रवृत्तकरणेवासतै

333

किंपुनर्ब्राह्मणाःपुण्याभक्ताराजर्षयस्तथा॥अनित्यमसुखंलोकमिमंप्राप्यभजस्वमां॥

किं। पुनः। ब्राह्मणाः। पुण्याः। भक्ताः। राजर्षयः। तथा। अनित्यं। असुखं। लोकं। इमं। प्राप्य। भजस्व। मां ॥ इतिपदच्छेदः॥
हेअर्जुन मेरेभक्त उत्तमजातिवाले ब्राह्मण तथा क्षत्रिय परमगतिकूंप्राप्तहोवैंहैं याकेविषे पुनः क्याकह
णाहै यातैंतूं इस अनित्य तथादुःखयुक्त मनुष्यदेहकूं प्राप्तहोइकै मैंपरमेश्वरकूं आराधनकर ॥ ३३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥टीका॥ हेअर्जुन जबीपूर्वउक्त स्त्रीशूद्रादिकप्राणीभी मैंपरमेश्वरकीभक्तिकरिकै ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिद्वारा मोक्षरूपपरमगति
कूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तबी श्रेष्ठआचारवाले तथाउत्तमजातिवाले जेब्राह्मणहैं तथासूक्ष्मवस्तुकेविवेककरणेहारेजेक्षत्रियहैं ॥ ते
ब्राह्मण तथाक्षत्रिय मैंपरमेश्वरकेभक्त तिसभक्तिकरिकै ब्रह्मज्ञानद्वारा मोक्षरूप परमगतिकूं प्राप्तहोवैहैं याकेविषे पुनः
क्याकहणाहै ॥ किंतु इसवार्त्ताविषे किसीकूंभी संशयनहींहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरकेभक्तिका महान्प्रभाव
है ॥ इसकारणतैं सर्वपुरुषार्थोंकेसिद्धकरणेकूंयोग्य तथाअत्यंतदुर्लभ इसअधिकारी मनुष्यदेहकूं प्राप्तहोइकै
तूं जितनैंकालपर्यंत यहमनुष्यदेह नाशकूंनहींप्राप्तभया तथारोगादिकोकरिकैग्रस्तनहींभया तितनैंकालपर्यंत अतिशीघ्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तातैं महान् प्रयत्नकरिकै मैंपरमेश्वरकेशरणागतकूंप्राप्तहोउ ॥ हेअर्जुन यहमुनष्यदेहकैसाहै अनित्यहै ॥ अथात् शीघ्र हीं नाशहोणेहाराहै ॥ पुनःकैसाहै यहदेह असुखहै ॥ अर्थात् गर्भवासतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदुःखोंकरिकैग्रस्तहै हेअर्जुनयहशरीर अनित्यहै तथाअसुखरूपहै ॥ यातैं तूं मैंपरमेश्वरकेभजनविषे विलंब मतकर ॥ तथा इसशरीरकेसुख वासतै उद्यमकूंमतकर ॥ हेअर्जुन जैसे पूर्वश्रेष्ठआचारवालेजनकादिकराजऋषि मैंपरमेश्वरकेभजनकरिकै आपणेजन्मकूं सफलकरतेभयेहैं तैसे तूंअर्जुनभी मैंपरमेश्वरकेभजनकरिकै आपणेजन्मकूं सफलकर॥ जोतूं इसअधिकारीमनुष्यशरीरकूं प्राप्तहोइकै मैंपरमेश्वरकोचिंतनपरायणनहींहोवैंगा ॥ तौं यहतुमारा अधिकारीमनुष्यशरीरहीं निष्फलहोवैंगा ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (इहचेदवेदीदथसत्यमस्ति नचेदवेदीन्महतीविनष्टिः ॥) अर्थयह ॥ इसभारत खंडविषे अधिकारीमनुष्यशरोरकूं प्राप्तहोइकै यहपुरुष जबी परमात्मादेवकूं साक्षात्कारकरेहै ॥ तबीइसपुरुषकूं मोक्षरूपसत्यफलकीहीं प्राप्तिहोवैहै॥ और यहपुरुष जबी इसअधिकारीमनुष्यशरोरकूंपाइकै तिसपरमात्मादेवकूं नहींसाक्षात्कारकरेहै ॥ तबीइसपुरुषकूं वारंवार जन्ममरणरूपसंसारकोहींप्राप्तिहोवेहै इति ॥ ३३ ॥ * ॥ अब पूर्वकथनक्येहूएभजनकेप्रकारकूंकथनकरताहूआ श्रीभगवान् इसनवमअध्यायकोसमाप्तिकरेहै ॥

मन्मनाभवमद्भक्तोमद्याजीमांनमस्कुरु॥मामेवैष्यसियुक्त्वैवमात्मानंमत्परायणः३४।

इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेराजविद्याराजगुह्ययोगोनामनवमोऽध्यायःस०

मन्मनाः। भव। मद्भक्तः। मद्याजी। मां। नमस्कुरु। मां। एव। एष्यसि। युक्त्वा। एवं। आत्मानं। मत्परायणः॥इतिपदच्छेदः

534

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन तूं मैंपरमेश्वरविषेमनवाला होउ मेराभक्त होउ तथा मेरेपूजनेंपरायण होउ
तथा मैंपरमेश्वरकूं नमस्कारकर इसप्रकारतैं मैंपरमेश्वरकेशरणहूआतूं आपणेअंतः
करणकूं मैंपरमेश्वरविषे जोडिकैंरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं प्राप्तहोवैंगा॥३४॥इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसपुरुषकामन केवल मैंपरमश्वरविषेहीं संलग्नहै अन्यपुत्रभार्यादिकोंविषे संलग्नहैनहीं तिस पुरुषकानाम मन्मनाहै ॥ ऐसा मन्मना तूंहोउ ॥ और जोपुरुष एकमैंपरमेश्वरकाहींभक्तहै धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तवासतैं अन्यराजादिकोंका भक्तहैनहीं तिसपुरुषकानामहै मद्भक्तहै ॥ ऐसा मद्भक्त तूंहोउ ॥ तात्पर्ययह ॥ इसलोकविषे जोराजादिकोंकाभृत्यहोवैहै ॥ सोभृत्य धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिवासतैं तिन राजादिकोंका भक्तहूआभी तिन राजादिकोंविषे तिसभृत्यकामन संलग्नहोवैनहीं ॥ किंतु ताभृत्यकामन आपणेस्त्रीपुत्रादिकोंविषेहीं संलग्नहोवैहै ॥ यातैं सोभृत्य तराजाका भक्तहूआभी तन्मना होवैनहीं ॥ और आपणेपुत्रस्त्रीआदिकोंविषे सोभृत्य तन्मना हूआ भी तिनस्त्रीपुत्रादिकाका भक्तहोवैनहीं ॥ तैसे तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरविषे भक्तिवालाहूआभी अन्यविषेमनवाला मत होउ ॥ तथा मैंपरमेश्वरविषे मनवालाहूआभी अन्यविषेभक्तिवाला मतहोउ ॥ किंतु तूंअर्जुनतौं मैंपरमेश्वरविषेहीं मनवाला तथाभक्तिवाला होउ इति ॥ तथा तूंअर्जुन मद्याजी होउ ॥ अर्थात् एकमैंपरमश्वरकेहीं पूजनपरायणहोउ ॥ तथाशरीर मन वाणी करिकै तूं मैंपरमेश्वरकूंहीं नमस्कारकर ॥ इसप्रकारतैं मत्परायणहूआतूं अर्थात् एकमैंपरमेश्वरके शरणागतकूंप्राप्तहूआतूं आपणेअंतःकरणकूं मैंपरमेश्वरकेचिंतनाविषेजोडिकै मैंपरमानंदघन स्वप्रकाश सर्वउपद्रवोंतैंरहित अ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भयब्रह्मकूंहीं घटाकाशमहाकाशकीन्यांई तथानदीसमुद्रकीन्यांई अभेदरूपकरिकै प्राप्तहोवैंगा ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे घट रूपउपाधिकेनिवृत्तहूए घटाकाश अभेदरूपकरिकै महाकाशभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा जैसे श्रीगंगायमुनादिकनदीयां आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकैसमुद्रविषे एकताभावकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे तूंअर्जुनभी मैंपरमेश्वरकीभक्तितैंउत्पन्नहू एब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै अविद्यादिकसर्वउपाधियोंतैंरहितहूआ अभेदरूपकरिकै मैंनिर्गुण ब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ तहां श्रुति ॥ (यथानद्यःस्पंदमानाः समुद्रेऽस्तंगच्छंतिनामरूपेविहाय॥तथाविद्वान्नामरूपाद्विमुक्तःपरात्परंपुरुषमुपैतिदिव्यं॥) अर्थयह ॥ जैसे श्रीगंगायमुनादिकनदीयां आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकै समुद्रविषेजाइकै एकताभावकूंप्राप्तहोवैहैं॥ तैसे यहविद्वान्पुरुषभी नामरूपतैंरहितहूआ सर्वतैंउत्कृष्ट स्वयंज्योति परमात्मापुरुषकूंहीं अभेदरूपकरिकै प्राप्तहोवैहै इति ॥ ईहां किसीटीकाविषेतौं (मामेवआत्मानंएष्यसि) इसप्रकारतैं पदोंकोयोजनाकरिकै (आत्मानं) इसपदकरिकै परमात्माकाहीं ग्रहणकऱ्याहै इति ॥ ३४ ॥ ❋ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां श्रीभगवद्गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां नवमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ९ ॥ श्रोगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ७५ ॥

इति नवमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ९ ॥

336

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥अथ श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायांदशमोध्यायः॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यानमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ दशमाऽध्या
यप्रारंभः ॥ तहां पूर्व सप्तम अष्टम नवम इनतीनअध्यायोंकरिकै तत्पदार्थरूपपरमेश्वरका सोपाधिकस्वरूप तथा
निरुपाधिकस्वरूप दिखाया ॥ तिसतत्पदार्थरूपपरमेश्वरकीजेविभूतियांहैं ॥ तेविभूतियां तिससोपाधिकस्वरूपकेतौं
ध्यानविषे उपायभूतहैं ॥ और तेविभूतियां तिसनिरुपाधिकस्वरूपकेतौं ज्ञानविषे उपायभूतहैं ॥ ऐसी परमेश्वरकीवि
भूतियांभी सप्तमअध्यायविषेतौं (रसोहमप्सुकौंतेय) इत्यादिकवचनें करिकै और नवमअध्यायविषेतौं (अहंक्रतुरहंय
ज्ञः) इत्यादिकवचनोंकरिकै संक्षेपतैं कथनकरीयां ॥ तिन संक्षेपतैंकथनकरोहूई विभूतियोंका विस्तार अब अवश्यकरिकै
कहणेयोग्यहै ॥ काहेतैं कितनैंकोबहिर्मुखलोकोंकूं सोपरमेश्वरकास्वरूप ध्यानकरणे वासतैभी अत्यंतदुर्विज्ञेयहै ॥ ऐसेस्व
रूपकाजो पुनःपुनःकथनहै सो तिसस्वरूपकेज्ञानवासतैहींहै ॥ याकारणतैं श्रीभगवान्नैं यह दशमअध्याय प्रारंभकरीता
है ॥ तहां प्रथम अर्जुनकेचित्तविषे उत्साहकरावणेवासतैं परमकृपालु श्रीभगवान् विनाहींपूछेतैं ताअर्जुनकेप्रति कहेहै ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ भूयएवमहाबाहोशृणुमेपरमंवचः॥
यत्तेहंप्रीयमाणायवक्ष्यामिहितकाम्यया ॥ १ ॥

भूयः । एव। महाबाहो।शृणु।मे । परमं । वचः।यत् । ते । अहं । प्रीयमाणाय।वक्ष्यामि ।हितंकाम्यया । इति पदच्छेदः ॥

हेअर्जुन पुनः भी मैंपरमेश्वरके उत्कृष्ट वचनकूं तूं श्रवणकर जोवचन मैंपरमेश्वर तुंमारे
हितकी कामनाकरिकै तैं प्रीतिवालेकेतांई कथनकरताहूं ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेमहान्बाहुवाला अर्जुन तूं पुनःभी मैंपरमेश्वरके अत्यंतउत्कृष्टवचनकूं श्रवणकर ॥ जोवचन मैंपरमआप्त
परमेश्वर तुमारेइष्टकेप्राप्तिकीइच्छाकरिकै तुमारेतांई कथनकरताहूं ॥ अब अर्जुनकेप्रति तिसवचनकेउपदेशकरणे
कीयोग्यताकेबोधनकरणेवासतै ताअर्जुनका विशेषणकहेहैं (प्रीयमाणायइति) हेअर्जुन जैसे अमृतकेपानतैं प्री
तिकाअनुभवकरीताहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरकेवचनरूपअमृतकेपानतैं तूं प्रीतिकूं अनुभवकरणेहाराहैं ॥ यातैं तुमारेतांई
पुनःभी मैं उपदेशकरताहूं ॥ ईहां (प्रीयमाणाय) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ इनोंकेवच
नोंकूं श्रवणकरिकै हमारेइष्टकीसिद्धि अवश्यकरिकैहोवैंगी याप्रकारकीदृढभावनाकरिकै जोपुरुष प्रीतिपूर्वक तिनव
चनोंकूं श्रवणकरेहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकेतांईहीं तत्त्ववेत्तापुरुषनैं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणा ॥ ताप्रीतितैंरहितपु
रुषकेप्रति ब्रह्मविद्याका उपदेशकरणानहीं इति ॥ और तिसवचनकाजो परमं यहविशेषणकथनकऱ्याहै ॥ तापर
मविशेषणकरिकै श्रीभगवान्नैं यह अर्थसूचनकऱ्याहै ॥ जिसकारणतैं यहहमारावचन अत्यंतउत्कृष्टहै ॥ तिसकार
णतैं इसहमारेवचनकेश्रवणतैं तुमारेकूं अवश्यकरिकै इष्टअर्थकीप्राप्ति होवैंगी इति ॥ १ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभ
गवन् ऐसेवचनतौं पूर्व बहुतवार आप हमारेप्रति कथनकरि आयेहो ॥ तिनवचनोंकूं पुनःअबा किसवासतै कथन
करतेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् दुर्विज्ञेयवस्तुका पुनःपुनःउपदेशकरणेतैंहीं बोधहोवैहै याप्रका
रकेअभिप्रायकरिकै आपणेस्वरूपकोदुर्विज्ञेयताकूं कथनकरेहै ॥ अथवा ॥ शंका ॥ हेभगवन् हमारेप्रति तैंपरमेश्वर
केस्वरूपकाउपदेशकरणेहारे इंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकऋषि बहुतहैं ॥ तिनोंकेवचनश्रवणतैंहीं हमारेकूं आपके

339

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्वरूपकाज्ञान होवैंगा ॥ इसविषे आपकेकहणेकाक्याप्रयोजनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ जिनइंद्रादिकोंकेवचन तैं तूं हमारेस्वरूपकाज्ञान चाहताहैं तिनइंद्रादिकोंकूंहीं हमारास्वरूप दुर्विज्ञेयहै इसअर्थकूं अबश्रीभगवान् कथनकरेहै

नमेविदुःसुरगणाःप्रभवंनमहर्षयः ॥ अहमादिर्हिदेवानांमहर्षीणांचसर्वशः ॥ २ ॥

नँ । मे । विदुः । सुरगणाः । प्रभवं । नँ । महर्षयः । अहं । आँदिः । हिं । देवानां । महर्षीणां । चं । सर्वशः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके प्रभावकूं इंद्रादिकदेवता नँहीं जानैंहैं तथाभृगुआदिकमहान्ऋषिभी नँहींजानैंहैं जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर तिनदेवतावोंका तथा तिनमहान्ऋषियोंका सर्वप्रकारतैं कारणहूं ॥ २ ॥ इतिप०

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकाजो प्रभवहै ॥ अर्थात् आकाशादिकसर्वप्रपंचके उत्पत्ति स्थिति संहार प्रवेश नियमन निग्रह अनुग्रह इत्यादिकोंकेकरणेकाजोसामर्थ्यरूप प्रभावहै ॥ अथवा अनेकविभूतियोंकरिकै आविर्भावरूपजोप्रभवहै ॥ तिसहमारे प्रभावकूं इंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकमहान्ऋषि सर्वज्ञहूएभी जानतेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेइंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकमहान्ऋषि तिसआपकेप्रभावकूं किसकारणतैं नहींजानतेहैं ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताकेनजानणेविषेहेतुकहेहै (अहमादिर्हिइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर तिनइंद्रादिकदेवतावोंका तथातिनभृगुआदिकमहान्ऋषियोंका सर्वप्रकारतैं कारणहूं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वर तिनइंद्रादिकदेवतावोंके तथाभृगुआदिकऋषियोंके उत्पादकपणेकरिकै तथाबुद्धिआदिकोंका प्रवर्त्तकपणेकरिकै कारणहूं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ अथवा मैंपरमेश्वर तिनोंका उपादानरूपकरिकै तथानिमित्तरूपकरिकै कारणहूं ॥ तिसकारणतैं तेइंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकऋषि मैंपरमेश्वरकेकार्यहोणेतैं कारणरूपमैंपरमेश्वरकेप्रभावकूं जानिसकतेनहीं ॥ जैसे पिताके प्रभावकूं पुत्र जानिसकतानहीं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरहीं आपणाप्रभाव तुमारेतांई कथनकरताहूं ॥ तहां परमेश्वरतैंहीं सर्वदेवतावोंकी तथासर्वऋषियोंकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ यहवार्त्ता ॥ (तस्माच्चदेवाबहुधासंप्रसूताः यस्मिन्युक्तामहर्षयोदेवताश्च ॥) इत्यादिकश्रुतियोंविषे प्रसिद्धहींहै इति ॥ २ ॥ ※ ॥ तहां सोपरमेश्वरकेप्रभावकाज्ञान महान्फलकाहेतुहै ॥ यातैं कोईकअधिकारीजनहीं तिसपरमेश्वरकेप्रभावकूं जानेहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ अथवा ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेइंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकऋषि जोकदाचित् आपपरमेश्वरकेप्रभावका उपदेशकरणेविषे समर्थनहींहैं ॥ तौं आपहीं हमारेप्रति ताआपणेप्रभावकाउपदेशकरौ ॥ परंतु तिसआपके प्रभावकेजानणेकरिकै हमारेकूं कौंनफलहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताज्ञानकाफल कथनकरेहै ॥

योमामजमनादिंचवेत्तिलोकमहेश्वरं ॥ असंमूढःसमर्त्येषुसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ३ ॥

यः१ । मां१ । अजं१ । अनादिं१ । च१ । वेत्ति१ । लोकमहेश्वरं१ । असंमूढः१ । सः१ । मर्त्येषु१ । सर्वपापैः१ । प्रमुच्यते१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन जन्मतैंरहित तथा कारणतैंरहित तथासर्वलोकोंकामहान्ईश्वर ऐसेमैंपरमेश्वरकूं जोपुरुष जाने है सोपुरुष सर्वमनुष्योंकेमध्यविषे संमोहतैंरहितहूआ सर्वपापोंनैं परित्यागकरीताहै ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं सर्वजगत्काकारणहूं ॥ यातैं नहींविद्यमानहै आदि क्या कारण जिसका ताका नाम अनादिहै ॥ ऐसाअनादिरूप मैंपरमेश्वरहूं ॥ और अनादिहोणेतैंहीं मैंपरमेश्वर अजहूं ॥ अर्थात् उत्पत्तिरूप जन्मतैंरहितहूं ॥ तथा सर्वलोकोंकामहेश्वरहूं ॥ ऐसे मैंपरमेश्वरकूं जोअधिकारापुरुष आपणेआत्मासैंअभिन्नरूपकरिकै साक्षात्कारकरेहै ॥ सोपुरुष सर्वमनुष्योंकेमध्यविषे असंमूढहूआ अर्थात् अज्ञानकीनिवृत्तिद्वारा आत्माअनात्माकेतादात्म्यअध्यासरूप संमोहतैंरहितहूआ सर्वपापोंतैंमुक्तहोवैहै ॥ अर्थात् बुद्धिपूर्वककऱ्येहूए तथाअबुद्धिपूर्वककऱ्येहूए भूत भविष्यत् वर्त्तमान सर्वपापोंतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष मुक्तहोवैहै ॥ ईहां (प्रमुच्यते) इसवचनविषेस्थितजो प्र यहशब्दहै ॥ ताप्रशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ यद्यपि अज्ञानीपुरुषभी तिनपापकर्मोंकेभोगकरिकै तथाप्रायश्चित्तकरिकै तिनपापकर्मोंतैंमुक्तहोवैहैं ॥ तथापि तेअज्ञानीपुरुष ताकरिकै तिनपापकर्मोंतैं अत्यंतमुक्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं सर्वपापकर्मोंकाकारणरूप जोअज्ञानहै ॥ तथा ताअज्ञानकृतजो देहादिकोंविषे अहंममअध्यासहै ॥ सोअज्ञान तथाअध्यास तिनअज्ञानापुरुषोंविषे विद्यमानहै ॥ तिसतैं पुनःपापोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और भोगकरिकैनिवृत्तहूएभी तेपापकर्म संस्काररूपतैं तिनअज्ञानापुरुषोंविषे बनैंरहेहैं ॥ याकारणतैंहीं तिनसंस्कारोंकेवशतैं तेअज्ञानापुरुष पुनः तिनपापकर्मोंविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और तत्त्ववेत्तापुरुषतौं आत्मसाक्षात्कारकरिकै अज्ञानरूपमूलकारणको तथातत्जन्यअहंमनअध्यासकी तथासंस्कारसहितसर्वपापकर्मोंकी निःशेषतैं निवृत्तिहोइजावैहै ॥ यातैं सोतत्त्ववेत्तापुरुषहीं तिनसर्वपापकर्मोंतैं अत्यंतमुक्तहोवैहै ॥ इसअर्थविषे ॥ (क्षीयंतेचास्यक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥ ज्ञानाऽग्निःसर्वकर्माणिभस्मसात्कुरुतेतथा) ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतिस्मृतिवचन प्रमाण रूपहैंइति ॥ ३ ॥ * ॥ तहांपूर्वश्लोकविषे (लोकमहेश्वरं) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आपणविषे सर्वलोकोंका महेश्वरपणा कथनकऱ्या ॥ अब तिसी सर्वलोकमहेश्वरपणेकूं विस्तारतैं प्रतिपादनकरेहैं ॥

बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहःक्षमासत्यंदमःशमः ॥ सुखंदुःखंभवोभावोभयंचाभयमेवच ॥ ४ ॥
अहिंसासमतातुष्टिस्तपोदानंयशोऽयशः॥भवंतिभावाभूतानांमत्तएवपृथग्विधाः ॥५॥

बुद्धिः । ज्ञानं । असंमोहः । क्षमा । सत्यं । दमः । शमः । सुखं । दुःखं । भवः । भावः । भयं । च । अभयं । एव । च । अहिंसा । समता । तुष्टिः । तपः । दानं । यशः । अयशः । भवंति । भावाः । भूतानां । मत्तः । एव । पृथग्विधाः ॥ इतिपद०

हेअर्जुन बुद्धि ज्ञान असंमोह क्षमा सत्य दम शम सुख दुःख भव भाव भय तथा अभय अहिंसा समता तुष्टि तप दान यश अयश यहलोकप्रसिद्ध नानाप्रकारके कार्यविशेष सर्वप्राणीयोंके मैंपरमेश्वरतैं हीं उत्पन्नहोवैहैं ॥४॥५॥ इतिप०

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वप्राणीयोंके यहबुद्धितैंआदिलैके अयशपर्यंत कार्यविशेष मैंपरमेश्वरतैंहीं उत्पन्नहोवैहैं अन्यकिसीतैंउत्पन्नहोनैवहीं ॥ अब तिनबुद्धिआदिकोंकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ तहां अंतःकरणविषे जोसूक्ष्मअर्थकेविवेककरणेकासामर्थ्यहै ताकानाम बुद्धिहै ॥ और आत्मा अनात्मारूप सर्वपदार्थोंकाजोअवबोधहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ और ज्ञातव्यतारूपकरिकै अथवा कर्त्तव्यतारूपकरिकै प्राप्तभयेजेपदार्थहैं तिनपदार्थोंविषे व्याकुलतातैंरहितहोइकै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जाविवेकपूर्वक प्रवृत्तिहै अर्थात् ताकेइष्टअनिष्टरूपफलकेविचारपूर्वक जाप्रवृत्तिहै ताकानाम असंमोहहै ॥ और क
ठोरवाणी करिकै अथवा दंडादिकोंकरिकै ताडनकऱ्येहूएपुरुषकेचित्तकाजोनिर्विकारपणाहै अर्थात् तिसताडनकरणे
हारेप्राणीकेअनिष्टकानहींचिंतनकरणाहै ताकानाम क्षमाहै ॥ अथवा आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक या
तीनप्रकारकेउपद्रवोंके सहनकरणेकाजोस्वभावहै ताकानाम क्षमाहै ॥ तहां ज्वरादिकरोग आध्यात्मिकउपद्रव कहे
जावैहैं ॥ और अतिशीत अतितप्त अतिवर्षा इत्यादिक आधिदैविकउपद्रव कहेजावैहैं ॥ और सर्प व्याघ्र शत्रुइ
त्यादिकआधिभौतिकउपद्रव कहेजावैहैं इति ॥ और प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै जोअर्थ जिसप्रकारतैं निश्चयकऱ्याहै
तिसअर्थकूं तिसीप्रकारतैं कथनकरणा याकानाम सत्यहै ॥ और श्रोत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकी जाशब्दादिकविषयोंतैं
निवृत्तिहै ताकानाम दमहै ॥ और अंतःकरणकी जातिनशब्दादिकविषयोंतौंनिवृत्तिहै ताकानाम शमहै ॥ और के
वलधर्महैअसाधारणकारणजिसका तथाअनुकूलतारूपकरिकैहीं सर्वप्राणीयोंकेज्ञानकाविषय ऐसाजोआनंदहै ता
कानाम सुखहै ॥ और केवलअधर्महैअसाधारणकारणजिसका तथाप्रतिकूलतारूपकरिकैहीं सर्वप्राणीयोंकेज्ञान
काविषय ऐसाजोपरितापहै ताकानाम दुःखहै ॥ और उत्पत्तिकानाम भवहै ॥ और सत्ताकानाम भावहै ॥ अथवा
(भवोभावो) इसवचनविषे भवःअभावः याप्रकारकापदच्छेदकरणा ॥ तहां असत्ताकानाम अभावहै ॥ और त्रास
कानाम भयहै ॥ त्रासतैंरहितहोणेकानाम अभयहै ॥ ईहां (भयंचाभयमेवच) इसवचनविषेस्थित प्रथमचका
रतौं पूर्वउक्तबुद्धिआदिकोंकेसमुच्चयकरावणेवासतैंहै ॥ और दूसराचकारतौं पूर्वनहींकथनकऱ्येहूए बुद्धिआदिकोंकेवि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रोधी अबुद्धि अज्ञान संमोह अक्षमा असत्य इत्यादिकोंकेसमुच्चयकरावणेवासतैहै ॥ और एव यहशब्द तिनबुद्धि आदिकेंविषे सर्वलोकप्रसिद्धताके बोधनकरणेवासतैहै ॥ अर्थात् यहबुद्धिआदिक सर्वलोकविषेप्रसिद्धहींहैं इति ॥ और स्थावरजंगमसर्वप्राणीयोंकीपीडातैंजानिवृत्तिहै ताकानाम अहिंसाहै ॥ अर्थात् शरीरमनवाणीकरिकै जोकिसी भीप्राणीमात्रकूं पोडाकोनहींप्राप्तिकरणो ताकानाम अहिंसाहै ॥ और इष्टवस्तुके तथाअनिष्टवस्तुके प्राप्तहूएभी जाचित्तको रागद्वेषादिकोंतैंरहितअवस्थाहै ताकानाम समताहै ॥ और प्रारब्धकर्मकेवशतैं यत्किंचित् भोग्यपदार्थों केप्राप्तहूए इतनैंपदार्थोंकरिकैहीं हमारेकूं तृप्तिहै याप्रकारकोजाअलंबुद्धिहै जिसकूं संतोषकहेहैं ताकानाम तुष्टिहै ॥ और शास्त्रउपदिष्टमार्गकरिकै जोशरीरइंद्रियोंकाशोषणहै अर्थात्कृच्छ्रचांद्रायणादिकव्रतोंकरिकै जोशरीरइंद्रियोंकेबलकोक्षीणताकरणीहै ताकानाम तपहै ॥ और उत्तमदेशकालविषे सत्पात्रविषे श्रद्धाकरिकै यथाशक्तिपरिमाण जो अन्नसुवर्णादिकपदार्थोंकासमर्पणहै ताकानाम दानहै ॥ और धर्मरूपनिमित्ततैं उत्पन्नभईजा लोकविषे प्रशंसादिरूपप्रसिद्धिहै ताकानाम यशहै ॥ और अधर्मरूपनिमित्ततैं उत्पन्नभईजा लोकविषेनिंदारूपप्रसिद्धिहै ताकानाम अयशहै ॥ यहबुद्धितैंआदिलैकेअयशपर्यंत जेकार्यविशेषहैं ॥ जेबुद्धिआदिककार्य धर्मअधर्मादिकसाधनोंकीविचित्रताकरिकै नानाप्रकारकेहैं ॥ ऐसेसर्वप्राणीयोंके बुद्धिआदिकपदार्थ आपणेआपणेकारणोंसहित मैंपरमेश्वरतैं हींउत्पन्नहोवैहैं ॥ अन्यकिसीतैं तेबुद्धिआदिक उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ ऐसेसर्वकेकारणरूप मैंपरमेश्वरविषे तिनसर्वलोकोंकामहेश्वरपणाहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ ४ ॥ ५ ॥* ॥ हेअर्जुन केवल बुद्धिआदिकोंकाकारणहो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

णेतैं मैंपरमेश्वरविषे सोसर्वलोकोंकामहेश्वरपणा नहींहैं ॥ किंतु भृगुआदिकमहान्ऋषियोंका तथास्वयंभुवादिकम
नुवोंका कारणहोणेतैंभी मैंपरमेश्वरविषे सोसर्वलोकोंकामहेश्वरपणाहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

महर्षयःसप्तपूर्वेचत्वारोमनवस्तथा ॥ मद्भावामानसाजातायेषांलोकइमाःप्रजाः ॥६॥

महर्षयः । सप्त । पूर्वे । चत्वारः । मनवः । तथा । मद्भावाः । मानसाः । जाताः । येषां । लोके । इमाः । प्रजाः ॥ इतिपदच्छेदः
हेअर्जुन सृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नहूए जेभृगुआदिकसप्त महाऋषिहैं तथा सावर्णीआदिकच्यारि मनु
हैं जेभृगुआदिक मैंपरमेश्वरकेचिंतनपरायणहैं तथा मनकेसंकल्पमात्रतैंउत्पन्नहूएहैं तथा जिनंभृगुआदि
कोंकी इसलोकविषे यह ब्राह्मणादिकप्रजाहै ॥ तेभृगुआदिकभी मैंपरमेश्वरतैंहीं उत्पन्नहूएहैं ॥ ६ ॥इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वसृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नहूए जेभृगुआदिकसप्त महाऋषिहैं ॥ कैसेहैंतेभृगुआदिकसप्त
ऋषि वेदोंकेपाठकूं तथावेदोंकेअर्थकूं भलीप्रकारतैंजानणेहारेहैं ॥ तथा सर्वज्ञहैं ॥ तथा वेदविद्याकेसंप्रदायकीप्रवृ
त्तिकरणेहारेहैं ॥ याकारणतैंहीं तिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंकूं शास्त्रविषे महाऋषिकहेहैं ॥ तहां तिनभृगुआदिकस
प्तऋषियोंकेनाम तथासृष्टिकेआदिकालविषे तिनोंकीउत्पत्ति पुराणोंविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (भृगुंमरीचि
मत्रिंचपुलस्त्यंपुलहंक्रतुं ॥ वसिष्ठंचमहातेजाःसोसृजन्मनसासुतान् ॥) अर्थयह ॥ भृगु मरीचि अत्रि पुलस्त्य पुलह
क्रतु वसिष्ठ इनसप्तऋषिरूपपुत्रोंकूं सोमहान्तेजवालाब्रह्मा सृष्टिकेआदिकालविषे आपणेमनकरिकैउत्पन्नकरता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भया इति ॥ तथा सृष्टिकेआदिकालविषेउत्पन्नहूएजे सावर्णीआदिकनामकरिकैप्रसिद्धच्यारिमनुहैं ॥ अथवा (मह
र्षयःसप्त) इसवचनकरिकैतौं भृगुआदिकसप्तमहाऋषियोंकाग्रहणकरणा ॥ और (पूर्वेचत्वारः) इसवचनकरिकै
तिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंतैंभीपूर्वउत्पन्नहूए सनकादिकच्यारिमहाऋषियोंकाग्रहणकरणा ॥ और (मनवस्तथा)
इसवचनकरिकै स्वायंभुवआदिकचतुर्दशमनुवोंकाग्रहणकरणा इति ॥ कैसेहैंतेभृगुआदिकसर्व मद्भावाहैं ॥ तहां मैंप
रमेश्वरविषेहै भाव क्या भावना जिनोंकी तिनोंकानाम मद्भावाहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकाचिंतनरूपभावनाकेवशतैं आ
विर्भूतहूआहै मैंपरमेश्वरकाज्ञान तथाऐश्वर्य तथानानाप्रकारकीशक्तियां जिनोंकूं ॥ पुनःकैसेहैंतेभृगुआदिक मानसाहैं ॥
अर्थात् ब्रह्माकेमनकेसंकल्पमात्रतैंहीं उत्पन्नहूएहैं ॥ अन्यमनुष्योंकीन्यांई योनितैंउत्पन्नहूएनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं विशु
द्धजन्मवालेहोणेतैं तेभृगुआदिक सर्वप्राणीयोंतैं श्रेष्ठहैं ॥ और शास्त्रविषे (योनिंविनानशरीरं) यहजोवचनकह्याहै ॥ सो
इसवचनविषे योनिशब्द स्त्रीकेयोनिकावाचकनहींहै ॥ किंतु सोयोनिशब्द कारणकावाचकहै ॥ अर्थात् कारणतैंविना श
रीर उत्पन्ननहींहोवैहै इति ॥ ऐसेभृगुआदिकसप्तमहाऋषि तथासनकादिकच्यारिमहाऋषि तथास्वायंभुवादिकचतुर्दश
मनु यहसर्व सृष्टिकेआदिकालविषे हिरण्यगर्भरूपमैंपरमेश्वरतैंहीं उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ जिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंकी त
थासनकादिकच्यारिमहाऋषियोंकी तथास्वायंभुवादिकचतुर्दशमनुवोंकी इसलोकविषे जन्मकरिकै तथाविद्याकरिकै
यहब्राह्मणादिकसर्वप्रजा संततिरूपहैइति ॥ ईहां किसीटोकाविषेतौं (लोकइमाः) इसवचनविषे लोकःयहप्रथमाविभ
क्तिअंतपद ग्रहणकरिकैयहअर्थकऱ्याहै ॥ जिनभृगुआदिकोंकोयहजरायुजादिकच्यारिप्रकारकीप्रजा तथाताप्रजाकेनिवा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सकाआधारभूतयहलोक दोनों संततिरूपहैं इति॥अथवा (येषां) यहषष्ठीविभक्ति येभ्यः इसपंचमीविभक्तिकेअर्थविषेहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै॥जिनभृगुआदिकोंतैं यहजरायुजादिकच्यारिप्रकारकीप्रजा तथायहलोक उत्पन्नहोताभयाहै ॥ ऐसेभृगुआदिकोंकाभोकारणरूप मैंपरमेश्वरविषे सर्वलोकोंकामहेश्वरपणाहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ ६ ॥* ॥ इसकारणतैं सोपाधिकपरमेश्वरके प्रभावकूंकथनकरिकै अब तिसप्रभावकेज्ञानकाफल कथनकरेहैं ॥

348

एतांविभूतिंयोगंचममयोवेत्तितत्त्वतः ॥ सोऽविकंपेनयोगेनयुज्यतेनात्रसंशयः ॥ ७ ॥

एतां । विभूतिं । योगं । चं । मम । यः । वेत्ति । तत्त्वतः । सः । अविकंपेन । योगेन । युज्यते । नं । अत्र । संशयः ॥ इतिप० ॥

हेअर्जुन जोपुरुष मैंपरमेश्वरके इसपूर्वउक्त विभूतिकूं तथा योगकूं यथावत् जानैहै सोपुरुष अचल योगकरिकै युक्तहोवैहै इसविषे कोईभीप्रतिबंधक नहींहै ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्व (बुद्धिर्ज्ञानं) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकैकथनकरीहूई जाबुद्धितैं आदिलैकैअयशपर्यंत मैंपरमेश्वरकीविभूतिहै ॥ तथा भृगुआदिकसप्तमहाऋषिरूप तथासनकादिकच्यारिमहाऋषिरूप तथास्वायंभुवादिकचतुर्दशमनुरूप जाहमारीविभूतिहै ॥ अर्थात् तिसतिस बुद्धिआदिरूपकरिकै तथातिसतिस महाऋषिआदिरूपकरिकै जामैंपरमेश्वरकीस्थितिहै ॥ ऐसी मैंपरमेश्वरकीविभूतिकूं जोअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं यथावत् जानेहै ॥ तथा जोअधिकारीपुरुष मैंपरमेश्वरकेयोगकूं यथावत् जानेहै ॥ ईहां तिसतिसअर्थकेउत्पन्नकरणेकासामर्थ्यरूप जोपर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मऐश्वर्यहै ताकानाम योगहै ॥ ऐसेपरमऐश्वर्यरूपयोगकूं जोपुरुष जानेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष चलायमानतातैं रहित योगकरिकै युक्तहोवैहै ॥ अर्थात् सोपुरुष तत्त्वज्ञानकीस्थिरतारूपसमाधिकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ हेअर्जुन इस हमारी विभूतिके तथायोगके जानणेहारेपुरुषकूं तासमाधिरूपयोगकीप्राप्तिविषे कोईभीसंशयनहींहै अर्थात् कोईभी प्रतिबंधकरणेहारानहींहै इति ॥ ७ ॥ ❋ ॥ तहां परमेश्वरके जिस विभूतियोगदोनोंकेज्ञानकरिकै इसअधिका रीपुरुषकूं अचलसमाधिरूपयोगकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसज्ञानकेस्वरूपकूं अब श्रीभगवान् च्यारिश्लोकोंकरिकै वर्णनकरेहै॥

अहंसर्वस्यप्रभवोमत्तःसर्वंप्रवर्त्तते ॥ इतिमत्वाभजंतेमांबुधाभावसमन्विताः ॥ ८ ॥

अहं । सर्वस्य । प्रभवः । मत्तः । सर्वं । प्रवर्त्तते । इति । मत्वा । भजंते । मां । बुधाः । भावसमन्विताः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं सर्वजगत्के उत्पत्तिकाकारणहूं तथा मैंपरमेश्वरतैंहीं सर्व प्रवृत्तहोवैहैं इसप्रकारतैं मानिकरिकै बुद्धिमान् जन प्रेमरूपभावकरिकैयुक्तहूए मैंपरमेश्वरकूं आराधनकरेहैं ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वासुदेवनामा मैंपरब्रह्महीं इससर्वजगत्के उत्पत्तिकाकारणहूं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरहीं इससर्वजग त्का उपादानकारणरूपहूं तथानिमित्तकारणरूपहूं ॥ तथा इसजगत्के स्थितिनाशादिकसर्वव्यवहारभी मैंपरमेश्वरतैंहीं प्रवर्तहोवैहै ॥ अर्थात् सर्वशक्तिसंपन्न तथासर्वज्ञ ऐसेमैंअंतर्यामीपरमेश्वरकरिकै प्रेरणाकऱ्याहूआ यह सूर्यचंद्रमादिकस र्वजगत् आपणीआपणीमर्यादाका नहींउल्लंघनकरिकै प्रवर्त्तहोवैहै ॥ अथवा प्रत्यक्साक्षीआत्मारूपमैंपरमेश्वरकीसत्तास्फू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्त्तिकूंपाइकै यहबुद्धिइंद्रियादिकसर्वप्रपंच नानाप्रकारकीचेष्टाकूंकरेहै ॥ इसप्रकारके मैंपरमेश्वरकेस्वरूपकूं जानिकरिकै विवेककरिकैजान्याहैतत्त्ववस्तुजिनोंनैं ऐसेबुद्धिमान्पुरुष परमार्थतत्त्वकाग्रहणरूपप्रेमरूपभावकरिकैयुक्तहूए मैंपरमेश्वरकूं भजेहैं ॥ अर्थात् नित्य निरंतर मैंपरमेश्वरकाहीं चिंतनकरेहैं इति॥ ८ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोआपका प्रेमपूर्वकभजन कैसाहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहूए ॥ श्रीभगवान् तिसप्रेमपूर्वकभजनकास्वरूप वर्णनकरेहै ॥

550

मच्चित्तामद्गतप्राणाबोधयंतःपरस्परं ॥ कथयंतश्चमांनित्यंतुष्यंतिचरमंतिच ॥ ९ ॥

मच्चित्ताः । मद्गतप्राणाः । बोधयंतः । परस्परं । कथयंतः । च । माँ । नित्यं । तुष्यंति । च । रमंति । च ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषेहैचित्तजिनोंका तथा मैंपरमेश्वरकूंप्राप्तहूएहैंप्राणजिनोंके तथा परस्पर मैंपरमेश्वरकाहीं बोधनकरतेहूए तथा नित्यहीं मैंपरमेश्वरकूं कथनकरतेहूए तेहमारेभक्त संतोषकूंप्राप्तहोवैहैं तथा सुखकूंअनुभवकरेहैं ॥९॥इतिप० ॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषेहींहैचित्तजिनोंका तिनोंकानाम मच्चित्ताहै ॥ अथवा मैंपरब्रह्महींहूंचित्तविषेजिनोंके तिनोंकानाम मच्चित्ताहै ॥ अर्थात् जेपुरुष चित्तकरिकै मैंपरमेश्वरकाहीं सर्वदा चिंतनकरेहैं ॥ और मैंपरमेश्वरकूंहींप्राप्तहूएहैं प्राण क्या चक्षुआदिकइंद्रिय जिनोंके तिनोंकानाम मद्गतप्राणाहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेभजनवासतैहींहै चक्षुआदिकइंद्रियोंकाव्यापार जिनोंका तिनोंकानाम मद्गतप्राणाहै ॥ अथवा बाह्यविषयोंतैंनिवृत्तकरिकै मैंपरमेश्वरविषेहीं लयकरेहैंचक्षुआदिकसर्वकरणजिनोंनैं तिनोंकानाम मद्गतप्राणाहै ॥ अथवा मैंपरमेश्वरकेभजनअर्थ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

है प्राण क्या जीवन जिनोंका अन्यकिसीप्रयोजनवासतै जिनोंकाजीवनहैनहीं तिनोंकानाम मद्गतप्राणाहै ॥ तथा जेपुरुष विद्वान्पुरुषोंकीसभाविषे श्रुतिवचनोंकरिकै तथाश्रुतिअनुकूलयुक्तियोंकरिकै अन्योन्य मैंपरमेश्वरकाहीं बोधनकरेहैं ॥ तथा जेपुरुष नित्यप्रति आपणेश्रद्धावान्शिष्योंकेतांई मैंपरमेश्वरकाहीं ज्ञेयरूपकरिकै तथाध्येयरूपक रिकै उपदेशकरेहैं ॥ इसप्रकार मैंपरमेश्वरविषेजोचित्तकाअर्पणहै तथाबाह्यनेत्रादिककारणोंकाअर्पणहै तथाआप णेजीवनकाअर्पणहै तथास्वसमानपुरुषोंका जोपरस्पर मैंपरमेश्वरकाबोधनहै तथाआपणेतैंन्यूनबुद्धिवालेशिष्योंके तांई जोमैंपरमेश्वरकाउपदेशकरणाहै यहहीं मैंपरमेश्वरकाभजनहै ॥ इसप्रकारके मैंपरमेश्वरकेभजनकरिकैहीं तेवि द्वान्पुरुष तोषकूंप्राप्तहूएहैं ॥ अर्थात् इस परमेश्वरकेभजनकीप्राप्तिकरिकैहीं हम कृतकृत्यहूएहैं इसभगवद्भजन तैंअन्य कोईभीपदार्थ हमारेइष्टकासाधन नहींहै इसप्रकारकेज्ञानरूपसंतोषकूं प्राप्तहूएहैं ॥ तथा तिससंतोषकरिकैहीं तेविद्वान्जन सर्वतैंउत्तमसुखकूं अनुभवकरेहैं ॥ संतोषकरिकैहींउत्तमसुखकीप्राप्ति होवैहै यहवार्त्ता पतंजलिभगवान्नैं भी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (संतोषादनुत्तमःसुखलाभःइति ॥)अर्थयह इसअधिकारीपुरुषकूं तिससंतोषतैंहीं स र्वतैंउत्तमसुखकीप्राप्तिहोवैहै इति ॥ यहवार्त्ता पुराणविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (यच्चकामसुखंलोकेयच्चदिव्यं महत्सुखं ॥ तृष्णाक्षयसुखस्यैते नार्हतः षोडशींकलां ॥) अर्थयह ॥ इसलोकविषे जितनाकी विषयजन्यसुखहै तथास्वर्गा दिकलोकोंविषे जितनाकी विषयजन्यमहान्दिव्यसुखहै ॥ तेसर्वसुख तृष्णाकीनिवृत्तिरूपसंतोषजन्यसुखके षोड शवेंभोगकेतुल्यभीनहींहोवैहै इति ॥ ९ ॥ ॥ हेअर्जुन जेअधिकारीजन इसपूर्वउक्तप्रकारतैं मैंपरमेश्वरका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भजनकरेहैं ॥ तिनअधिकारीजनोंकूं मैंपरमेश्वरभी तिसबुद्धियोगकीप्राप्तिकरिकै आपणेनिर्गुणस्वरूपकीहीं प्राप्ति करूंहूं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

तेषांसततयुक्तानांभजतांप्रीतिपूर्वकं ॥ ददामिबुद्धियोगंतंयेनमामुपयांतिते ॥ १० ॥

352

तेषां। सततयुक्तानां । भजतां। प्रीतिपूर्वकं । ददामि । बुद्धियोगं। तं। येन। मां । उपयांति। ते ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषेहैएकाग्रबुद्धिजिनोंकी तथा प्रीतिपूर्वकै मैंपरमेश्वरकाभजनकरणे हारे तिनभक्त जनोंके तिसपूर्वउक्त बुद्धियोगकूं मैंपरमेश्वर उत्पन्नकरूंहूं जिसबुद्धियोगक रिकै तेभक्तजन मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपकरिकै प्राप्तहोवैहैं ॥ १०॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्व (मच्चित्तामद्गतप्राणाः) इसश्लोककरिकै कथनकऱ्याजो मैंपरमेश्वरकेभजनकाप्रकारहै ॥ तिसप्रकारकरिकै जेपुरुष मैंपरमेश्वरकाभजनकरेहैं ॥ तथा सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरविषेहैएकाग्रबुद्धिजिनोंकी ॥ इसीकारणतैंहीं जेपुरुष लाभ पूजा ख्याति इत्यादिक लौकिकप्रयोजनोंकीनहीं इच्छाकरतेहूए अत्यंतप्रीतिपूर्वक एकमैंपरमेश्वरकाहीं भजनकरेहैं ॥ तिनभक्तजनोंके तिसपूर्वउक्तबुद्धियोगकूं मैंपरमेश्वरहीं उत्पन्नकरूंहूं ॥ अर्थात् (सोऽविकंपेनयोगेनयुज्यते) इसवचनकरिकै पूर्व कथनकऱ्याजो मैंपरमेश्वरकेवास्तवस्वरूपकूंविषयकरणेहारा सम्यक्दर्शनरूपबुद्धियोगहै ॥ तिसबुद्धियोगकूं मैंपरमेश्वरहीं उत्पन्नकरूंहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिसबुद्धियोगकरिकै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिनअधिकारीजनोंकूं कौंनफलप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताबुद्धियोगकाफल कथनक
रेहै (येनमामुपयांतितेइति) हेअर्जुन जिसबुद्धियोगकरिकै तेहमारेभक्तजन मैंपरमेश्वरकूंहीं आपणाआत्मारूपकरि
कै प्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् जैसे घटरूपउपाधिकेनिवृत्तहूए घटाकाश अभेदरूपकरिकै महाकाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा
जैसेश्रीगंगायमुनादिकनदीयां आपणेआपणेनामरूपकापरित्यागकरिकै समुद्रविषेअभेदभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे
तेहमारेभक्तजनभी हमारीभक्तिकरिकैउत्पन्नहूए तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै मैंपरमेश्वरकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥
अर्थात् मैंअद्वितीयनिर्गुणपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहींजानेहैं इति ॥ १० ॥ ❋ ॥ तहां आपणेभक्तजनों
केप्रति परमेश्वरनैं प्राप्तकऱ्याजो तत्त्वज्ञानरूपबुद्धियोगहै ॥ सोबुद्धियोग जिस अज्ञानकीनिवृत्तिरूपव्यापारबाला
हूआ आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिरूपफलकी प्राप्तिकरेहै ॥ तिसमध्यवर्त्तीव्यापारकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

तेषामेवानुकंपार्थमहमज्ञानजंतमः॥नाशयाम्यात्मभावस्थोज्ञानदीपेनभास्वता॥ ११

तेषां । एव । अनुकंपार्थं । अहं । अज्ञानजं । तमः । नाशयामि । आत्मभावस्थः । ज्ञानदीपेन । भास्वता ॥ इतिपद०
हेअर्जुन तिनभक्तजनोंके हीं अनुग्रहअर्थ तिनोंके आत्माकारवृत्तिविषेस्थितहूआ मैंपरब्रह्म चिदाभा
सयुक्त तिसवृत्तिज्ञानरूपदीपककरिकै तिनोंके अज्ञानजन्य आवरणरूपतमकूं नाशकरूंहूं ॥ ११ ॥ इतिप०
॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तरीतिसैं जेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकाभजनकरेहैं तिनभक्तजनोंकेहीं अनुकंपाअर्थ अर्था

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त् इनहमारेभक्तजनोंका किसीभीप्रकारकरिकै श्रेयहोवै याप्रकारकेअनुग्रहवासतै मैंस्वप्रकाश चैतन्य आनंदअद्वितीयरूप प्रत्यक्आत्मा तिनभक्तजनोंके आत्मभावविषेस्थितहूआ अर्थात् तिनभक्तजनोंकी महावाक्यतैंजन्य जा आत्माकार अंतःकरणकीवृत्तिहै तावृत्तिविषे विषयतारूपकरिकैस्थितहूआ तिसीहीं चिदाभासयुक्त अंतःकरणकी वृत्तिरूपज्ञानदीपककरिकै अज्ञानजन्यतमकूं नाशकरूंहूं ॥ अर्थात् अज्ञानहैउपादानकारणजिसका ऐसाजो मिथ्याज्ञानरूप आत्माविषयक आवरणरूपअंधकारहै तिसआवरणरूपतमकूं ताकेउपादानकारणरूपअज्ञानकानाशकरिकै नाशकरूंहूं ॥ काहेतैं लोकप्रसिद्ध सर्वभ्रमस्थलविषे तिसभ्रमकाउपादानकारणजोअज्ञानहै सोअज्ञान अधिष्ठानकेज्ञानकरिकैहीं निवृत्तहोवैहै ॥ अन्यकिसीउपायकरिकै सोअज्ञाननिवृत्तहोवैनहीं ॥ जैसे सर्परजतादिरूपभ्रमका उपादानकारणजोअज्ञानहै ॥ सोअज्ञान रज्जुशुक्तिआदिकअधिष्ठानकेज्ञानकरिकैहीं निवृत्तहोवैहै ॥ अन्य किसीउपायकरिकै ताअज्ञानकीनिवृत्ति होवैनहीं ॥ तथा सर्वस्थलविषे उपादानकारणकेनाशकरिकै उपादेयरूपकार्यकाभी अवश्यकरिकैनाशहोवैहै ॥ जैसे मृत्तिकातंतुआदिकउपादानकारणकेनाशकरिकै उपादेयरूपघटादिक कार्योंकाभी अवश्यकरिकैनाशहोवैहै ॥ तैसे आत्माकारअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानकरिकै अज्ञानरूपउपादानकारणकेनाशहूए तिसतमरूपउपादेयकानाशभी अवश्यकरिकैहोवैहै इति ॥ ईहां (ज्ञानदीपेन) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आत्मज्ञानविषे दीपककीसादृश्यतारूप रूपालंकार कथनकऱ्या ॥ तारूपालंकारकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ जैसे दीपककरिकै अंधकारकीनिवृत्तिकरणेविषे केवल तादीपककीउत्पत्तिमात्रहीं अपेक्षित

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

होवैहै ॥ तिसदीपककीउत्पत्तितैंभिन्न दूसरे किसीकर्मकी अथवा अभ्यासकी अपेक्षाहोवैनहीं ॥ और तादीपककरि कै अंधकारकीनिवृत्तिहूएतैंअनंतर पूर्वविद्यमानघटादिकवस्तुवोंकोहीं अभिव्यक्तिहोवैहै ॥ पूर्वनहींउत्पन्नहूईकिसी वस्तुकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे तिसआत्मज्ञानकीउत्पत्तिमात्रहीं अ पेक्षितहोवैहै ॥ तिसआत्मज्ञानकीउत्पत्तितैंभिन्न दूसरेकिसीकर्मकी अथवा अभ्यासकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ और ता आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तितैंअनंतर पूर्वविद्यमानहूएहीं ब्रह्मभावरूपमोक्षकीअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ कोईपूर्व नहींउत्पन्नहूएमोक्षको तिसआत्मज्ञानतैं उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ जिसउत्पत्तिकरिकै तिसमोक्षविषेभी स्वर्गादिकफलों कीन्यांई नाशवत्ता अथवा कर्मादिकोंकीअपेक्षा होवै इति ॥ और (भास्वता) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं यह अर्थ सूचनकऱ्या ॥ जैसे वायुतैंरहितदेशविषेस्थित प्रकाशमानदीपकविषे तीव्रपवनादिकप्रतिबंधकहोवैंनहीं ॥ तै से मैंपरमेश्वरकीभक्तिकरिकैप्राप्तहूए आत्मज्ञानविषे असंभावनादिकदोष प्रतिबंधकहोवैनहीं इति ॥ ११ ॥ ※ ॥

इसप्रकारतैं परमेश्वरके विभूतिकूं तथायोगकूं सामान्यतैं श्रवणकरिकै पुनःविशेषकरिकै ताविभूतियोगकेश्रवण करणेकी परमउत्कंठाकूंप्राप्तहूआ जोअर्जुन प्रथम श्रीभगवान्कीस्तुतिकूंकरेहै ॥

अर्जुनउवाच॥परंब्रह्मपरंधामपवित्रंपरमंभवान्।पुरुषंशाश्वतंदिव्यमादिदेवमजंविभुं॥
आहुस्त्वामृषयःसर्वेदेवर्षिर्नारदस्तथा।असितोदेवलोव्यासःस्वयंचैवब्रवीषिमे॥१३॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

परं। ब्रह्म। परं। धाम। पवित्रं। परमं। भवान्। पुरुषं। शाश्वतं। दिव्यं। आदिदेवं। अजं। विभुं। आहुः। त्वां। ऋषयः। सर्वे। देवर्षिः। नारदः। तथा। असितः। देवलः। व्यासः। स्वयं। च। एव। ब्रवीषि। मे ॥ इतिपदच्छेदः॥

हेभगवन् पर ब्रह्म तथा परम धाम तथापरम पवित्र आपहींहो जिसकारणतैं भृगुआदिकसर्व ऋषि तथा देवर्षि नारद तथाअसित तथादेवल तथाव्यास यहसर्व हमारेताईं तुमारेकूं पुरुष शाश्वत दिव्य आदिदेव अज विभु रूप कथनकरेहैं तथा साक्षात्आप हीं कथनकरतेहो ॥ १२ ॥ १३ ॥इतिपदार्थः

॥ टीका ॥ हेभगवन् आप परब्रह्मरूपहो ॥ अर्थात् तत्त्ववेत्तापुरुषोंकूंप्राप्तहोणेयोग्य जोसर्वउपाधियोंतैंरहित निर्विशेषब्रह्महै सोआपहींहो ॥ ईहां (परं) इसविशेषणकरिकै उपासनाकरणेयोग्य सोउपाधिकअपरब्रह्मकीव्यावृत्ति कथनकरीहै ॥ काहेतैं (तदेवब्रह्मत्वंविद्धिनेदंयदिदमुपासते) यहश्रुति उपासनाकरणेयोग्य सोउपाधिकअपरब्रह्मका निषेधकरिकै निर्विशेषचैतन्यकूंहीं ब्रह्मकहेहै ॥ पुनःकैसेहोआप परंधामहो ॥ अर्थात् स्थूलतैंआदिलैकेअव्याकृतपर्यंत सर्वप्रपंचकाआश्रयरूपहो ॥ अथवा परमप्रकाशरूपहो ॥ ईहांभी (परं) इसविशेषणकरिकै वृत्तिरूपअपरप्रकाशकीव्यावृत्ति कथनकरीहै ॥ काहेतैं (ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वंमनएव) यहश्रुति तिसवृत्तिरूपज्ञानकूं मनकाहींपरिणामविशेष कथनकरेहै ॥ पुनः कैसेहोआप परमपवित्रहो ॥ अर्थात् लोकशास्त्रविषेप्रसिद्ध जितनैंकीपावनकरणेहारे तीर्थादिकहैं ॥ तिनसर्वोंतैं आप परम उत्तम पावनकरणेहारेहो ॥ काहेतैं श्रद्धापूर्वककऱ्येहूए तेतीर्थादिक इसपुरुषके केवलपापकर्मकूंहीं नाशकरेहैं ॥ तिनपापकर्मोंकेकारणरूपअज्ञानकूं नाशकरतेनहीं ॥ और आपपरब्रह्मतौं इनअधि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कारीपुरुषोंकेवृत्तिविषेआरूढहोइकै अज्ञानरूपकारणसहित सर्वपापकर्मोकूंनाशकरोहो ॥ याकारणतैंहीं (पवित्राणां पवित्रंयोमंगलानांचमंगलं) इत्यादिकस्मृतिवचन आपकूं पवित्रकरणेहारेतीर्थादिकसर्वपवित्रोंकाभी पवित्रकरणेहारा कथनकरेहैं ॥ तथा सर्वमंगलोंकाभी मंगलरूप कथनकरेहैं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन ऐसाहमारास्वरूप तुमनैं केवल आपणोबुद्धिकरिकै निश्चयकऱ्याहै ॥ अथवा किसोप्रमाणतैं निश्चयकऱ्याहै ॥ ऐसोभगवान्कीशंकाकेहूए ॥ अर्जुन तिसउक्तस्वरूपविषे परमआप्तरूपऋषियोंके तथासाक्षात्श्रीभगवान्के वचनरूपप्रमाणकूंकथनकरेहै (पुरुषंशाश्वतं) इत्यादिकसार्द्धश्लोककरिकै ॥ हेभगवन् ज्ञाननिष्ठावाले जेभृगुवसिष्ठादिकसर्वऋषिहैं ॥ तथा देवऋषिजोनारदहै ॥ तथा असितऋषिजोहै ॥ तथा देवलऋषिजोहै ॥ तथा साक्षात्विष्णुकाअवतारूपजेव्यासमुनिहै ॥ यहसर्वऋषिभी हमारेतांई इसीप्रकारके तुमारेस्वरूपकूं कथनकरतेभयेहैं ॥ तेभृगुआदिकसर्वऋषि किसप्रकारकेहमारे स्वरूपकूं कथनकरतेभयेहैं ॥ ऐसोश्रीभगवान्कीशंकाकेहूए अर्जुनकहेहै (पुरुषंइति) हेभगवन् तेभृगुआदिकसर्वऋषिभी अनंतमहिमावाले आपपरमेश्वरकूं पुरुषकहेहैं ॥ अर्थात् (पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः) इसश्रुतिविषे पुरुषशब्दकरिकै कथनकऱ्याजो निर्विशेषपरब्रह्महै तिसपरब्रह्मरूप आपकूं कथनकरेहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं शाश्वत कहेहैं ॥ अर्थात् भूत भविष्यत् वर्त्तमान सर्वकालविषे एकरूप कहेहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं दिव्य कहेहैं ॥ तहां (परमेव्योमन्सर्वाभूतानि) इसश्रुतिविषे परमव्योमशब्दकरिकैकथनकऱ्याजो स्वस्वरूपहै तास्वस्वरूपकानाम दिवहै तादिवविषेजोविराजमानहोवै ताकानाम दिव्यहै ॥ ऐसेदिव्यरूप आपकूं कहेहैं ॥ अर्थात् सर्वप्रपंचतैंर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हितकहेहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं आदिदेव कहेहैं ॥ ईहां सर्वजगत्केकारणकानाम आदिहै और स्वप्रकाशकाना म देवहै ॥ जो आदिहोवै तथादेवहोवै ताकानाम आदिदेवहै ॥ अर्थात् तेऋषि आपकूं सर्वजगत्काकारणरूप त थास्वप्रकाशरूप कहेहैं ॥ ईहां कारणकीस्वप्रकाशताकहणेतैं नैयायिकोंनैंकल्पनाकऱ्येहूए परमाणुरूपकारणकी तथा सांख्यीयोंनैंकल्पनाकऱ्येहूए प्रधानरूपकारणकी व्यावृत्तिकरी ॥ तेप्रधानपरमाणु आदिकसर्व जडहोणेतैं परप्रका शहींहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं अज कहेहैं ॥ अर्थात् जन्मतैंरहित कहेहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं विभु कहेहैं ॥ अर्था त् सर्वत्रव्यापककहेहैं ॥ हेभगवन् केवल तेभृगुआदिकऋषिहीं हमारेतांई इसप्रकारकेतुमारेस्वरूपकूं नहींकथनकरे हैं ॥ किंतु जिसआपपरमेश्वरकेवेदरूपवचनोंकेअनुसारीहूएहीं तिनभृगुआदिकऋषियोंकेवचन प्रमाणरूपहोवैहै ॥ ऐसे साक्षात्आपभगवान्हीं हमारेतांई (भोक्तारंयज्ञतपसां सर्वभूतस्थितंयोमां) इत्यादिकवचनोंकरिकै इसीप्र कारकेआपकेस्वरूपकूंकथनकरतेभयेहो इति ॥ ईहां यद्यपि (आहुस्त्वामृषयःसर्वे) इसवचनविषेस्थितजो सर्व यह शब्दहै ॥ तासर्वशब्दकरिकैहीं तिननारदादिकसर्वऋषियोंकाग्रहणहोइसकेहै ॥ तथापि नारद असित देवल श्री व्यास इनच्यारोंकाजो अर्जुननैं नामलैके पृथक्ग्रहणकऱ्याहै ॥ सो साक्षात् परमेश्वरकेस्वरूपकेवक्तापणेकरि कै तिननारदादिकोंकीअत्यंत श्रेष्ठताकेबोधनकरणेवासतैंहै इति ॥ और (आहुस्त्वामृषयःसर्वे) इसवचनकरिकै जोअ र्जुननैं आपणेनिश्चयविषे ऋषियोंकेवचनोंकीसंमति कथनकरीहै ॥ ताकरिकैयहअर्थ सूचनकऱ्याहै ॥ इनअधिका रीपुरुषोंनैं शास्त्रद्वारा आपणीबुद्धिकरिकै निश्चयकऱ्याहूआभी आत्माकास्वरूप ताकेविषे पुनःसंशयकीअनुत्पत्ति

358

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वासतै ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषोंकोसंमति अवश्यकरिकै ग्रहणकरणी इति ॥ १२ ॥ १३ ॥※॥ तहां गुरुशास्त्रउपदिष्टअर्थविषे इसअधिकारीपुरुषनैंकदाचित्भी संशयनहींकरणा ॥ किंतु सो गुरुशास्त्रनैंउपदेशकऱ्याहूआ सर्व अर्थ सत्यहै याप्रकारकीसत्यत्वबुद्धिहींकरणो ॥ इसअर्थकूंसूचनकरताहूआ सोअर्जुन तिनवचनोंविषे आपणेसत्यत्वबुद्धिकूं कथनकरेहै

सर्वमेतदृतंमन्येयन्मांवदासिकेशव ॥ नहितेभगवन्व्यक्तिंविदुर्देवानदानवाः ॥ १४ ॥

सर्वं । एतत् । ऋतं । मन्ये । यत् । मां । वदसि । केशव । नं । हिं । ते । भगवन्व्यक्तिं । विदुः । देवाः । नं । दानवाः ॥इतिप०

हेकेशव मैंअर्जुनकेप्रति जोवचन आप कथनकरतेहो यह सर्ववचन मैं सत्य मानताहूं जिसंकारणतैं हेभगवन् तुमारे प्रभावकूं देवताभी नहीं जानतेहैं तथा दानवभी नहीं जानतेहैं ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेकेशव मैंअर्जुनकेप्रति जोपूर्वआपनैं आपकास्वरूप कथनकऱ्या ॥ तथा भृगुआदिकसर्वऋषियोंनैं जो आपकास्वरूप कथनकऱ्याहै ॥ तिनसर्ववचनोंकूं मैंअर्जुन सत्यहींमानताहूं ॥ हेभगवन् तुमारेवचनोंविषे हमारेकूं किंचित्मात्रभी अप्रमाणपणेकीशंकानहींहै ॥ इसहमारेहृदयकोवार्त्ताकूं सर्वज्ञहोणेतैं आप जानतेहींहो ॥ यहअर्थ अर्जुननै केशव इससंबोधनकरिकैसूचनकऱ्या ॥ तहां (केशौवातिअनुकंप्यतयाअवगच्छतीतिकेशवः) ॥ अर्थयह ॥ कनाम ब्रह्माकाहै और ईशनामरुद्रकाहै तिनदोनोंकूं अनुग्रहकरिकैजोप्राप्तहोवै ताकानाम केशवहै ॥ इसप्रकारकीव्युत्पत्तिकूंअंगोकारकरिकै सोकेशवशब्द निरतिशयऐश्वर्यकाहीं प्रतिपादकहै ॥ ऐसेकेशवनामवाले आपपरमेश्वर हमा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रेहृदयकेवृत्तांतकूंजानतेहींहो इति ॥ यातैं हेभगवन् जोपूर्व आपनैं (नमेविदुःसुरगणाःप्रभवंनमहर्षयः) इत्यादि कवचन कथनकऱ्येथे ॥ तेसर्व आपकेवचन यथार्थहींहै ॥ हेभगवन् अर्थात् हेसमग्रऐश्वर्यादिकषट्भगसंपन्न ॥ तुमारेप्रभावकूं बहुतबुद्धिमान् इंद्रादिकदेवताभी जानिसकतेनहीं ॥ तथा तुमारेप्रभावकूं मधुआदिकदानवभी जानिसकतेनहीं ॥ तथा तुमारेप्रभावकूं भृगुआदिकमहान्ऋषिभी जानिसकतेनहीं ॥ जबी तिस तुमारेप्रभावकूं सर्वज्ञ इंद्रादिकदेवता तथामधुआदिकदानव तथाभृगुआदिकमहान्ऋषिभी नहींजानिसकते ॥ तबी इदानींकालकेअल्पज्ञमनुष्य तिस आपकेप्रभावकूं नहींजानेहैं याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ १४ ॥ ※ ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं आपपरमेश्वर तिनदेवता ऋषिआदिकसर्वोंकाआदिकारणहो ॥ तथा तिनदेवतावोंकरिकैभी जानणेकूंअशक्यहो ॥ तिसकारणतैं तुमआपहीं आपकेप्रभावकूं यथावत्जानतेहो ॥ इसअर्थकूं अब अर्जुन कथनकरेहै ॥

स्वयमेवात्मनात्मानंवेत्थत्वंपुरुषोत्तम ॥ भूतभावनभूतेशदेवदेवजगत्पते ॥ १५ ॥

स्वयं । एव । आत्मना । आत्मानं । वेत्थ । त्वं । पुरुषोत्तम । भूतभावन । भूतेश । देवदेव । जगत्पते ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेपुरुषोत्तम हेभूतभावन हेभूतेश हेदेवदेव हेजगत्पति श्रीभगवान् अन्यकेउपदेशतैंविना
हीं तूं आपणेस्वरूपकरिकै आपणेआत्माकूं जानताहैं ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् अन्यकिसीकेउपदेशतैंविनाहीं तूं आपहीं आपणेस्वप्रकाशस्वरूपकरिकै आपणेनिरुपाधिकस्वरू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पकूं तथासोपाधिकस्वरूपकूं जानताहैं ॥ तहां आपणेनिरुपाधिकशुद्धस्वरूपकूंतौं प्रत्यक्रूपकरिकै तथाअविषयता रूपकरिकै जानताहै ॥ और आपणेसोपाधिकस्वरूपकूंतौं निरतिशयज्ञानऐश्वर्यादिकशक्तिमत्रूपकरिकै जानताहैं ॥ अन्यकोई देवता वाऋषि वादानव वामनुष्य तिसतुमारेस्वरूपकूं जानतानहीं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन अन्यदेवतादि कोंकरिकै जानणेकूं अशक्यस्वरूपकूं मैंपरमेश्वरभी कैसेजानूंगा ॥ ऐसोभगवान्कीशंकाकूं निवृत्तकरताहूआ अर्जुन अत्यंतप्रेमकीउत्कंठाकरिकै श्रीभगवान्के बहुतसंबोधनोकूं कथनकरेहै (हेपुरुषोत्तम) अर्थात् हेसर्वपुरुषोंविषे श्रेष्ठ ॥ तात्पर्ययह ॥ तुमारीअपेक्षाकरिकै दूसरेसर्वपुरुष अपकृष्टहींहैं ॥ यातैं तिनदूसरेपुरुषोंकूं जोअर्थ जानणेकूंअशक्यहै ॥ सोअर्थ सर्वतैंउत्तम तैंपरमेश्वरकूं जानणेकूंशक्यहींहै इति ॥ अब परमेश्वरविषेकथनकऱ्याजोपुरुषोत्तमपणाहै तिसपुरुषोत्तमपणेकूं पुनःच्यारिसंबोधनकरिकै प्रतिपादनकरेहैं (हेभूतभावनइति) तहां सर्वभूतोंकूंजो उत्पन्नकरेहै ताकानाम भूतभावनहै ॥ अर्थात् हेसर्वभूतोंकेपिता ॥ तहां इसलोकविषे कोईकपुरुष पिताहूआभी पुत्रादिकोंकानियंताहोतानहीं ॥ तैसे परमेश्वरभी तिनसर्वभूतोंकापिताहूआभी तिनसर्वभूतोंका नियंतानहींहोवैंगा ॥ किंतु तापरमेश्वरतैंभिन्नहींकोई तिनभूतोंकानियंताहोवैंगा ॥ ऐसीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै अर्जुन तापरमेश्वरका अन्यसंबोधन कहेहै (हेभूतेशइति) अर्थात् हेसर्वभूतोंकेनियंता ॥ तहां इसलोकविषे कोईकराजादिकपुरुष आपणोप्रजादिकोंकेनियंताहूएभी तिनप्रजादिकोंकरिकै आराधनकरणेयोग्यहोतेनहीं ॥ तैसे सोपरमेश्वरभी तिनसर्व भूतोंकानियंताहूआभी तिनसर्वभूतोंकरिकै आराधनकरणेयोग्य नहींहोवैंगा ॥ किंतु तापरमेश्वरतैंभिन्नहींकोई आराधनकरणेयोग्यहोवैंगा ॥ ऐसीशंका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

केनिवृत्तकरणेवासतै अर्जुन तापरमेश्वरका अन्यसंबोधन कथनकरेहै (हेदेवदेवइति) तहां सर्वप्राणीयोंकरिकैआराधन करणेयोग्य जेइंद्रादिकदेवताहैं तिनइंद्रादिकदेवतावोंकरिकैभी जोआराधनकऱ्याजावैहै ताकानाम देवदेवहै ॥ अर्थात् हे देवतावोतैं आदिलेकेसर्वप्राणीयोंकरिकैआराधनकरणेयोग्य ॥ तहां इसलोकविषे कोईकपुरुष आराधनकरणेयोग्यहूआ भी पालनकर्त्तारूपकरिकै पतिहोतानहीं ॥ तैसे सोपरमेश्वरभी आराधनकरणेयोग्यहूआभी पालनकर्त्तारूपकरिकै पति नहींहोवैंगा ॥ किंतु तिसपरमेश्वरतैंभिन्नहींकोई इसजगत्कापतिहोवैंगा ॥ ऐसीशंकाकेनिवृत्तकरणवासतै अर्जुन तिस परमेश्वरका अन्यसंबोधन कहेहै (हेजगत्पतेइति) अर्थात् अधिकारीजनोंकेप्रति हितकाउपदेशकरिकै शुभकर्मोविषे प्रवृत्तकरणेहारा तथाअहितकाउपेदशकरिकै अशुभकर्मोतैंनिवृत्तकरणेहारा ऐसाजोदेवहै तादेवकूं सृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नकरिकै आपहीं इससर्वजगत्कूंपालनकरतेहो ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ इसप्रकारकेसर्वविशेषणोंकरिकै विशिष्ट आप परमेश्वरहीं सर्वप्राणीयोंकेपिताहो ॥ तथासर्वप्राणीयोंकेगुरुहो तथासर्वप्राणीयोंकेराजाहो ॥ इसकारणतैंहीं आप सर्वप्रकारकरिकै सर्वप्राणीयोंकूंआराधनकरणेयोग्यहो ॥ ऐसेमहान् प्रभाववालेआपविषे पुरुषोत्तम पणाहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ १५ ॥ ※ ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं आपपरमेश्वरकोविभूतियोंकूं अन्यकोई भी देवता वाऋषि वादानव वामनुष्यजानिसकतानहीं ॥ और तेआपकीविभूतियां हमारेकूं अवश्यकरिकै जानीयांच हिये ॥ तिसकारणतैं तेआपकीविभूतियां आपहीं हमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरो इसप्रकारकोप्रार्थना अर्जुनकरेहै ॥

वक्तुमर्हस्यशेषेणदिव्याह्यात्मविभूतयः।याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वंव्याप्यतिष्ठसि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वक्तुं । अर्हसि । अशेषेण । दिव्याः । हि । आत्मविभूतयः । याभिः । विभूतिभिः । लोकान् । इमान् । त्वं । व्याप्य । तिष्ठसि ॥ इतिप० ॥

हेभगवन् जिन विभूतियोंकरिकै इन सर्वलोकोंकूं व्याप्यकरिकै तुम स्थितहो तेविभूतियां जिसकारणतैं दिव्यहैं तिसकारणतैं आपहीं तेसमग्र आपणीविभूतियां कहणेकूं योग्यहो ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् जिन आपणोविभूतियोंकरिकै आप इसमनुष्यलोकतैं आदिलैकेब्रह्मलोकपर्यंत सर्वलोकोंकूंव्याप्त करिकै स्थितहो ॥ तेआपकी असाधारणविभूतियां जिसकारणतैं दिव्यहैं ॥ अर्थात् अस्मदादिकअसर्वज्ञपुरुषोंनैं आपेहीं जानणेकूंअशक्यहैं ॥ तथा अवश्यकरिकै जानीयांचहीये ॥ तिसकारणतैं आपसर्वज्ञहीं तेआपणोसमग्रविभूतियां कहणेकूंयोग्यहो इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन लोकविषे प्रयोजनतैंविना किसोभीचेतन प्राणीको प्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ किंतु किसीप्रयोजनकाउद्देशकरिकैहीं सर्वप्राणीयोंकी प्रवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं तिनविभूतियोंकेजानणेकरिकै तुमारा जोप्रयोजन सिद्धहोताहोवै ॥ सोआपणाप्रयोजन तूंप्रथम हमारेप्रति कथनकर ॥ पश्चात् मैं तुमारेतांई तेआपणीविभूतियां कथनकरौंगा ॥ ऐसीश्रीभगवान्कोशंकाकेहूए ॥ अर्जुन दोश्लोकोंकरिकै ताआपणेप्रयोजनकूं कथनकरेहै ॥

कथंविद्यामहंयोगिंस्त्वांसदापरिचिंतयन् ॥ केषुकेषुचभावेषुचिंत्योसिभगवन्मया १७ ॥

कथं । विद्यां । अहं । योगिन् । त्वां । सदा । परिचिंतयन् । केषु । केषु । च । भावेषु । चिंत्यः । असि । भगवन् । मया ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेयोगिन् मैं स्थूलबुद्धिबालाअर्जुन सर्वदा तुमाराध्यानकरताहूआ तुमारेकूं किसप्रकारतैं जानउ हे भगवन् किन किन वस्तुवोंविषे मैंअर्जुननैं तूंपरमेश्वर चिंतनकरणेयोग्यहैं ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेयोगिन् ईहां निरतिशयऐश्वर्यादिकशक्तिकानाम योगहै॥सोयोग जिसविषेविद्यमानहोवै ताकानाम योगिन् है ॥ अर्थात् हेनिरतिशयऐश्वर्यादिकशक्तिवाला कृष्णभगवान् ॥ अत्यंतस्थूलबुद्धिवाला मैंअर्जुन सर्वकालविषे तुमाराध्यानकरताहूआ देवादिकोंकरिकैभी जानणेकूं अशक्य तैंपरमेश्वरकूं किसप्रकारतैं जानउ॥शंका ॥ हेअर्जुन हमारीविभूतियोंविषे मैंपरमेश्वरकूं ध्यानकरताहूआ तूं मैंपरमेश्वरकूं जानैंगा॥ यहहीं हमारेजानणेकाप्रकारहै॥ ऐसीश्रीभगवान्कीशंकाकेहूए ॥ जिनविभूतियोंविषेस्थितआपका ध्यानकरताहूआ मैं आपकूंजानूंगा ॥ तिनविभूतियोंकूंहीं मैं प्रथम जानतानहीं ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं अर्जुन कथनकरेहै (केषुकेषुचभावेषुइति) हेभगवन् तुमारोविभूतिरूप किनकिन चेतनअचेतनरूप वस्तुवोंविषेमैंअर्जुनकरिकै आप चिंतनकरणेयोग्यहो॥अर्थात् किनकिनविभूतियोंविषे मैंअर्जुन आपकाचिंतनकरूं इति ॥ १७ ॥ ॥ हेभगवन् जिनजिनविभूतियोंविषे आपचिंतनकरणेयोग्यहो ॥ तिनविभूतियोंकूं मैंअर्जुन जानतानहीं॥ इसकारणतैं आपहीं कृपाकरिकै तिनआपणेविभूतियोंकूं कथनकरो ॥ इसप्रकारकीप्रार्थना अर्जुन करेहै ॥

विस्तरेणात्मनोयोगंविभूतिंचजनार्दन॥भूयःकथयतृप्तिर्हिशृण्वतोनास्तिमेऽमृतं १८॥

विस्तरेण। आत्मनः। योगं। विभूतिं। च। जनार्दन। भूयः। कथय। तृप्तिः। हि। शृण्वतः। न। अस्ति। मे। अमृतं ॥ इ०प०

हेजनार्दन आप आपणे योगकूं तथा विभूतिकूं पुनः विस्तारकरिकै कथनकरो जिसकारणतैं तुमारे वचनरूप अमृतकूं श्रवणकरिकैपानकरतेहूए मैंअर्जुनकी तृप्ति नहीं होवैहै ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेजनार्दन सर्वज्ञपणा तथासर्वशक्तिसंपन्नपणा इत्यादिकऐश्वर्यतारूपजोयोगहै ॥ तथा अधिकारीजनोंके ध्यानकाआलंबनरूपजाविभूतिहै ॥ ऐसे आपणेयोगकूं तथाविभूतिकूं आप पुनः विस्तारकरिकै कथनकरौ ॥ यद्यपि तिसआपणेयोगकूं तथाविभूतिकूं आप पूर्व सप्तमअध्यायविषे तथानवमअध्यायविषे संक्षेपतैंकथनकरिआये हो ॥ तथापि अबी तिसयोगकूं तथाविभूतिकूं विस्तारकरिकैकथनकरो ॥ यहअर्थ अर्जुननैं (भूयः) इसशब्दकेकहणेकरिकैसूचनकऱ्या ॥ और (हेजनार्दन) इससंबोधनकेकहणेकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्केप्रति यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ सर्वजनोंनैं स्वर्गादिकसुखोंकीप्राप्तिवासतै तथामोक्षकीप्राप्तिवासतै जिसकेप्रति याचनाकरीतीहै ताकानाम जनार्दनहै ॥ ऐसेआपजनार्दनकेआगे यहहमारीयाचनाभी उचितहै इति ॥ शंका ॥ हेअर्जुन पूर्वकथनकऱ्येहूएअर्थके पुनः कथनकरणेकीयाचना तूं किसवासतैकरताहैं ॥ पूर्वकथनकऱ्येहूएअर्थकापुनःकथनकरणा पीस्येहूएअन्नकूंपुनः पीसणेकीन्यांई संभवतानहीं ॥ ऐसीश्रीभगवान्कीशंकाकेहूए ॥ अर्जुन तापुनःकथनकरणेकीयाचनाविषे कारणकूंकहेहै (तृप्तिर्हिशृण्वतोनास्तिमेऽमृतंइति) हेभगवन् जिसकारणतैं अमृतकीन्यांई पदपदविषेस्वादुस्वादु ऐसेजेआपकेवचनहैं ऐसेआपकेअमृतमयवचनोंकूं श्रवणइंद्रियरूपमुखकरिकै पानकरतेहूए मैंअर्जुनकी तृप्तिहोतीनहीं ॥ अर्थात् इनवचनोंकूंश्रवणकरिकै अबोमैं तृप्तहूआहूं याप्रकारकीअलंबुद्धिकरिकै तिनवचनोंकेश्रवणविषयकहमारीइच्छानिवृत्तहोतीनहीं ॥ तिसकारणतैं तिसआपणेयोगकूं तथाविभूतिकूं पुनःहमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरौ इति ॥ १८ ॥ ※ ॥ अब इसपूर्वउक्तअर्जुनकेप्रश्नकाउत्तर श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रीभगवानुवाच ॥ हंततेकथयिष्यामिदिव्याह्यात्मवि
भूतयः॥प्राधान्यतःकुरुश्रेष्ठनास्त्यंतोविस्तरस्यमे॥१९॥

हंत१ । ते२ । कथयिष्यामि३ । दिव्याः४ हि५ । आत्मविभूतयः६ । प्राधान्यतः७ । कुरुश्रेष्ठ८ । न९ । अस्ति१० । अंतः११ विस्तरस्य१२ । मे१३ ॥ इतिप०

हेकुरुवंशविषेश्रेष्ठअर्जुन मैं अबी तुमारेतांई प्रसिद्ध तथादिव्य आपणीविभूतियां प्रधानताकरिकै कथ
नकरताहूं जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरकीविभूतियोंके विस्तारका कोईपार नहीं है ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ ईहां (हंत) यहशब्द इदानींकालकावाचकहै ॥ अर्थात् अबीहीं तेविभूतियां मैं तुमारेतांई कहताहूं ॥
अथवा हंत यहशब्द अनुमतिकावाचकहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेआगे तुमनैं जिसअर्थकेजानणेकीप्रार्थनाकरीहै
॥ सोअर्थअवश्यकरिकै तुमारेतांई कथनकरूंगा ॥ तूं व्याकुलमतहोउ ॥ इसप्रकार अर्जुनकूं धैर्यदेकरिकै श्रीभगव
वान् तिसअर्थकेकथनकरणेका प्रारंभकरेहै ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरको जेअसाधारणविभूतियां दिव्यरूपकरिकै प्रसि
द्धहैं ॥ तेआपणीविभूतियां मैंपरमेश्वर तैंअर्जुनकेतांई प्रधानतःकरिकै कथनकरताहूं ॥ अर्थात् आपणीप्रधानप्रधा
नविभूतियोंकूं मैंकथनकरताहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन्जितनीकीआपकी प्रधानरूप तथाअप्रधानरूप विभूतियांहैं ॥
तेसर्वहींविभूतियां आप हमारेतांई कथनकरो ॥ केवल प्रधानप्रधानविभूतियोंकूं किसवासतैकथनकरतेहो ॥ ऐसी
अर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् तिनआपणेविभूतियोंकीअनंतताकूं कथनकरेहै (नास्त्यंतोविस्तरस्यमेइति) हेअर्जु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

न मैंपरमेश्वरकी जितनीको प्रधानरूप तथाअप्रधानरूप सर्वविभूतियांहैं ॥ तेसर्वविभूतियां कथनकरणेकूंअशक्य हैं ॥ जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरके तिनविभूतियोंकेविस्तारका कोईअंतरनहींहै ॥ अर्थात् तेसर्वविभूतियां इतनीहै याप्रकारकी इयत्तासंख्यातैंरहितहैं ॥ तिसकारणतैं प्रधानप्रधानभूत कोईकविभूतियांहीं मैं तुमारेतांई कथनकरताहूं इति ॥ १९ ॥ ❋ ॥ तहां तिनप्रधानप्रधानविभूतियोंविषेभी जोप्रथम मुख्यवस्तु चिंतनकरणेयोग्यहै ॥ तिसकूं तूं श्रवणकर

अहमात्मागुडाकेशसर्वभूताशयस्थितः॥ अहमादिश्चमध्यंचभूतानामंतएवच ॥ २० ॥

अहं । आत्मा । गुडाकेश । सर्वभूताशयस्थितः । अहं । आदिः । च । मध्यं । च । भूतानां । अंतः । एव । च ॥ इतिपदच्छेदः॥

हेगुडाकेशअर्जुन सर्वभूतोंकेहृदयदेशविषेस्थित चैतन्यआनंदघन मैंहींहूं तथा मैंपरमेश्वर
हीं सर्वभूतोंका उत्पत्तिहूं तथा स्थितिहूं तथा विनाशहूं ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेगुडाकेशअर्जुन सर्वप्राणीयोंकेहृदयदेशविषे अंतर्यामिरूपकरिकै तथाप्रत्यक्आत्मारूपकरिकै स्थितजोचैतन्यस्वरूप आनंदघन परमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मावासुदेव मैंहींहूं ॥ इसप्रकारतैं अभेदरूपकरिकै तुमनैं मैंपरमेश्वरका ध्यानकरणा ॥ ईहां (हेगुडाकेश) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ गुडाकानाम निद्राकाहै ॥ तानिद्राकूं जोआपणेवशकरेहै ताकानाम गुडाकेशहै ॥ ऐसा निद्रादिकविकारोंकूं आपणेवशकरणेहारा तूंअर्जुन अभेदरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकेध्यानकरणेविषेसमर्थहैं इति ॥ इतनैंकरिकै उत्तमअधिकारीपुरुषोंकेध्यानकाप्रकार कथनकऱ्या ॥ अब मध्यमअधिकारीपुरुषोंकेध्यानकाप्रकार निरूपणकरेहैं (अहमादिःइति) हेअर्जुन इसप्रकारतैं अभेदरूपकरिकै मैंपरमेश्वरके

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ध्यानकरणेविषे जोतूं समर्थनहींहोवैं ॥ तौं आगेकथनकरणेयोग्यध्यान तुमारेकूं करणेयोग्यहै ॥ तिनवक्ष्यमाणध्यानोंविषे भी प्रथम जोवस्तु ध्यानकरणेयोग्यहै तिसकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (अहमादिःइति) हेअर्जुन लोकविषे चेतनरूपकरि कैप्रसिद्ध जितनैंकीप्राणीहैं ॥ तिनसर्वप्राणीयोंका मैं परमेश्वरहीं उत्पत्तिहूं ॥ तथा मैंपरमेश्वरहीं तिनसर्वप्राणीयोंकी स्थितिहूं ॥ तथा मैंपरमेश्वरहीं तिनसर्वप्राणीयोंकाविनाशहूं ॥ अर्थात् तिनसर्वप्राणीयोंकी उत्पत्तिस्थितिनाशरूपकरिकै तथातिनसर्वप्राणीयोंका कारणरूपकरिकै मैंपरमेश्वरहीं तुमारेकूं ध्यानकरणेयोग्यहूं ॥ इतनैंकरिकै मध्यमअधिकारीपुरुषोंकेध्यानकाप्रकार कथनकऱ्या इति ॥ २० ॥ ※ ॥ हेअर्जुन इसप्रकारकेध्यानकरणेविषेभो जोतूं समर्थनहींहोवैं ॥ तौं आगेकथनकरणेयोग्य बाह्यध्यानहीं तुमारेकूं करणेयोग्यहै ॥ इसप्रकारकेअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् मंदअधिकारी पुरुषोंऊपरि अनुग्रहकरिकै तिनबाह्यध्यानोंकूं इसदशमअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत विस्तारतैं कथनकरेहै ॥

368

आदित्यानामहंविष्णुर्ज्योतिषांरविरंशुमान्।मरीचिर्मरुतामस्मिनक्षत्राणामहंशशी२१

आदित्यानां । अहं । विष्णुः । ज्योतिषां । रविः । अंशुमान् । मरीचिः । मरुतां । अस्मि । नक्षत्राणां । अहं । शशी ॥ इतिपद०

हेअर्जुन आदित्योंकेमध्यमै विष्णुनामाआदित्य मैंपरमेश्वर हूँ तथा प्रकाशकोंकेमध्यमै व्यापकप्रकाश वाला रवि मैंहूं तथा मरुद्गणोंकेमध्यमै मरीचिनामामरुत् मैंहूं तथा नक्षत्रोंकेमध्यमै चंद्रमा मैंहूं ॥इतिप०

॥ टीका ॥ हेअर्जुन द्वादशआदित्योंकेमध्यमै विष्णुनामाआदित्य मैंहूं ॥ अथवा विष्णुकहीये वामनअवतार मैंहूं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तथा अग्निर्तैंआदिलैके जितनैंकीप्रकाशकरणेहारेहैं तिनसर्वप्रकाशकोंकेमध्यविषे सर्वविश्वविषेव्यापकहैप्रकाशजि
सका ऐसाजोसूर्यहै सोमैंहूं ॥ तथा मरुत्नामा जेओगणपंचास देवताविशेषहैं तिनमरुतोंकेमध्यमै मरीचिनामा म
रुत् मैंहूं ॥ तथा अश्विनोतैंआदिलैकेजितनैंकी आकाशविषेस्थित तारागणरूपनक्षत्रहैं तिनसर्वनक्षत्रोंकेमध्य
विषे तिनसर्वनक्षत्रोंकाअधिपतिचंद्रमा मैंहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ तेद्वादशसूर्य तथाअग्निआदिसर्वज्योति तथा ओगणपं
चासमरुद्गण तथा अश्विनीआदिकसर्वनक्षत्र यहसर्वहीं यद्यपि सामान्यरूपतैं मैंपरमेश्वरकीहीं विभूतिहैं ॥ तथा
पि तिनोंकेमध्यविषे विष्णुनामाआदित्य तथारविनामाज्योति तथामरीचिनामामरुत् तथाचंद्रमानामानक्षत्र यह
सर्वप्रभावकीअधिकताकरिकै हमारो विशेषविभूतिहैं ॥ यातैं तिनद्वादशआदित्योंविषे विष्णुनामाआदित्य परमे
श्वरहींहै याप्रकार मैंपरमेश्वरकीबुद्धिकरिकै सोविष्णुनामाआदित्य इनअधिकारीपुरुषोंनैं ध्यानकरणेयोग्यहै ॥
इसप्रकारतैंहीं रवि मरीचि चंद्रमा यहतीनों मैंपरमेश्वररूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यहैं ॥ यहध्यानकीरीतिइसदशम
अध्यायकीसमाप्तिपर्यंत सर्वपर्यायोंविषे जानिलेणी इति ॥ ईहां यद्यपि वामन राम इत्यादिक साक्षात् परमेश्वर
केअवतारहींहैं ॥ तथा सर्वऐश्वर्यतावालेहैं ॥ आदित्यादिकोंकीन्यांई परमेश्वरकोविभूतिरूपनहींहैं ॥ तथापि जैसे
(वृष्णीनांवासुदेवोस्मि) इसवक्ष्यमाणवचनविषे श्रीभगवान्नैं तिसवासुदेवरूपतैं परमेश्वरकेध्यानकरावणेवासतै
आपणाभी तिनविभूतियोंविषेहीं पठनकऱ्याहैं ॥ तैसे वामनरामादिकोंकाभी तिसतिसरूपतैं परमेश्वरकेध्यानकरा
वणेवासतै श्रीभगवान्नैं आपणीविभूतियोंविषेहीं पठनकऱ्याहै इति ॥ २१ ॥ ※ ॥ किंच ॥

८९

369

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वेदानांसामवेदोस्मिदेवानामस्मिवासवः॥ इंद्रियाणांमनश्चास्मिभूतानामस्मिचेतना॥

वेदानां। सामवेदः। अस्मि। देवानां। अस्मि। वासवः। इंद्रियाणां। मनः। च। अस्मि। भूतानां। अस्मि। चेतना॥ इतिप०

हेअर्जुन वेदोंकेमध्यमै सामवेद मैंहूं तथा देवतावोंकेमध्यमैं इंद्र मैं हूं तथा इंद्रियों केमध्यमै मन मैंहूं तथा भूतोंकेमध्यमै चेतना मैंहूं॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ऋग् यजुष् साम अथर्वण इनच्यारिवेदोंकेमध्यविषे गायनकीमधुरताकरिकै अत्यंतरमणीक जोसामवेदहै सोसामवेद मैंहूं ॥ तथा अग्निवायुआदिसर्वदेवतावोंकेमध्यविषे तिनसर्वदेवतावोंकाअधिपतिजोइंद्रहै सोइंद्र मैंहूं ॥ तथा चक्षु श्रोत्र त्वक् रसन घ्राण वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु मन इनएकादशइंद्रियोंकेमध्यविषे सर्व इंद्रियोंकाप्रवर्त्तकजोमनहै ॥ सोमन मैंहूं ॥ तथा सर्वप्राणियोंकेसंबधी जितनैंकीपरिणामहैं तिनोंकानामभूतहै ॥ ऐसेपरिणामरूपभूतोंकेमध्यविषे चैतन्यकीअभिव्यक्तिकरणेहारीजाबुद्धिकीवृत्तिरूपचेतनाहै साचेतना मैंहूं इति॥२२॥ ※ किंच॥

रुद्राणांशंकरश्चास्मिवित्तेशोयक्षरक्षसां॥ वसूनांपावकश्चास्मिमेरुःशिखरिणामहं ॥

रुद्राणां। शंकरः। च। अस्मि। वित्तेशः। यक्षरक्षसां। वसूनां। पावकः। च। अस्मि। मेरुः। शिखरिणां। अहं॥ इतिपदच्छेदः

हेअर्जुन रुद्रोंकेमध्यमै शंकर मैंहूं तथा यक्षराक्षसोकेमध्यमै कुबेर मैंहूं तथा वसुवोंके मध्यमै अग्नि मैंहूं तथा रत्नोंवालेपर्वतोंकेमध्यमै सुमेरु मैंहूं ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन एकादशरुद्रोंकेमध्यविषे आपणेभक्तजनोंकेतांई निरतिशय मोक्षरूपआनंदकीप्राप्तिकरणेहारा जोशंकरनामा रुद्रहै सोशंकर मैंहूं ॥ तथा यक्षोंकेतथाराक्षसोंकेमध्यविषे संपूर्णधनकाअधिपतिजोकुबेरहै सोकुबेर मैंहूं ॥ तथा अष्टवसुवोंकेमध्याविषे अत्यंतश्रेष्ठजोअग्निहै सोअग्नि मैंहूं ॥ तथा नानाप्रकारके रत्नरूपशिखरोंवाले जितनैं कीपर्वतहैं तिनसर्वाशिखरीयोंकेमध्यविषे सुवर्णमयअत्यंतरमणीकजोसुमेरुहै सोसुमेरु मैंहूं इति ॥ २३ ॥ * किंच ॥

पुरोधसांचमुख्यंमांविद्धिपार्थबृहस्पतिं॥सेनानीनामहंस्कंदःसरसामस्मिसागरः॥२४॥

पुरोधसां । च । मुख्यं । मां । विद्धि । पार्थ । बृहस्पतिं । सेनानीनां । अहं । स्कंदः । सरसां । अस्मि । सागरः ॥ इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन सर्वपुरोहितोंकेमध्यमै तूं मैंपरमेश्वरकूं सर्वतैं श्रेष्ठ बृहस्पतिरूप जान तथा सेना पतियोंकेमध्यमैं स्कंद मैंहूं तथा जलाशयोंकेमध्यमैं सागर मैंहूं ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ सर्व राजावोंविषे त्रिलोकीकापति देवराजइंद्र श्रेष्ठहै ॥ ऐसैंदेवराजइंद्रकाभीपुरोहितजोबृहस्पतिहै सोबृहस्पति सर्वराजावोंकेपुरोहितोंतेश्रेंष्ठहै ॥ यातैं तिनसर्वपुरोहितोंकेमध्यविषे मैंपरमेश्वरकूं तूं बृहस्पतिरूप जान ॥ तथा सर्वसेना पतियोंकेमध्यविषे देवतावोंकीसेनापतिजो स्कंदहै सोस्कंद मैंहूं ॥ तथा देवतावोंनैं खोद्येहूए जितनैंकी जलकेरहणेकेस्था नहैं तिनजलाशयरूप सरोवरोंकेमध्यविषे सगरकेपुत्रोंनैं खोद्याहूआजोसागरहै सोसागर मैंहूं इति॥२४॥ * ॥ किंच ॥

महर्षीणांभृगुरहंगिरामस्म्येकमक्षरं॥यज्ञानांजपयज्ञोस्मिस्थावराणांहिमालयः॥२५॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

महर्षीणां । भृगुः अहं । गिरां । अस्मि । एकं । अक्षरं । यज्ञानां । जपयज्ञः । अस्मि । स्थावराणां । हिमालयः इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन महाऋषियोंकेमध्यमै भृगुनामाऋषि मैंहूं तथा सर्वगिरावोंकेमध्यमै ओंकाररूप एक अक्षर मैंहूं तथा सर्वयज्ञोंकेमध्यमै जपरूपयज्ञ मैंहूं तथा सर्वस्थावरोंकेमध्यमै हिमालयपर्वत मैंहूं ॥ २५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ब्रह्माकेपुत्ररूप जितनैंकीमहाऋषिहै ॥ तिनसर्वमहाऋषियोंकेमध्यविषे अत्यंततेजस्वीजोभृगुऋषिहै सोभृगुऋषि मैंहूं ॥ तथा अर्थकेवाचकपदरूप जितनीकीगिराहैं तिनसर्वगिरावोंकेमध्यविषे ब्रह्मकावाचक जोएक अक्षररूप ओंकारपदहै सोओंकार मैंहूं ॥ तथा अश्वमेध ज्योतिष्टोम इसतैंआदिलैके जितनैंवेदविषेयज्ञकथनकऱ्ये हैं ॥ तिनसर्वयज्ञोंकेमध्यविषे हिंसादिकसर्वदोषोंतैंरहितहोणेतैं अत्यंतशुद्धिकरणेहाराजोजपरूपयज्ञहै ॥ सोजपरूपयज्ञ मैंहूं ॥ तथा इसलोकविषे चलायमानतातैंरहित जितनैंकीस्थितिवाले स्थावरपदार्थहैं ॥ तिनसर्वस्थावरपदार्थोंकेमध्यविषे हिमालयपर्वत मैंहूं इति ॥ २५ ॥ * ॥ किंच ॥

अश्वत्थःसर्ववृक्षाणांदेवर्षीणांचनारदः॥गंधर्वाणांचित्ररथःसिद्धानांकपिलोमुनिः२६।

अश्वत्थः । सर्ववृक्षाणां । देवर्षीणां । च । नारदः । गंधर्वाणां । चित्ररथः । सिद्धानां । कपिलः । मुनिः । इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन सर्ववृक्षोंकेमध्यमै पिप्पलवृक्ष मैंहूं तथा सर्वदेवऋषियोंकेमध्यमै नारद मैंहूं तथा सर्वगंधर्वोंकेमध्यमै चित्ररथनामागंधर्व मैंहूं तथा सर्वसिद्धोंकेमध्यमै कपिल मुनि मैंहूं ॥ २६ ॥ इतिप० ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वनस्पतिरूप जितनैंकीवृक्षहैं तिनसर्ववृक्षोंकेमध्यविषे पिप्पलनामा वृक्षमैंहूं ॥ तथा जेदेवता हूएहीं वेदमंत्रोंकेदर्शनकरिकैऋषिभावकूंप्राप्तहूएहैं तिनोंकानाम देवऋषिहै ॥ ऐसेदेवऋषियोंकेमध्यविषे नारदना मादेवऋषि मैंहूं ॥ तथा गायनकरणेहारे जितनैंकी गंधर्वहैं तिनसर्वगंधर्वोंकेमध्यविषे चित्ररथनामा गंधर्व मैंहूं ॥ तथा जेपुरुष विनाहींप्रयत्नतैं जन्ममात्रकरिकैहीं धर्म ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्यता इत्यादिकगुणोंकूंप्राप्तहूएहोंवैं तथानिश्चयकऱ्या हैपरमार्थवस्तुजिनोंनैं तिनपुरुषोंकानामसिद्धहै ऐसेसिद्धोंकेमध्यविषे कपिलमुनिनामासिद्ध मैंहूं इति ॥ २६ ॥ ❋ किंच ॥

उच्चैःश्रवसमश्वानांविद्धिमाममृतोद्भवं ॥ऐरावतंगजेंद्राणांनराणांचनराधिपं ॥ २७ ॥

उच्चैःश्रवसं। अश्वानां। विद्धि । मां । अमृतोद्भवं। ऐरावतं । गजेंद्राणां। नराणां। च। नराधिपं ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन सर्वअश्वोंकेमध्यमै अमृतकेमथनकरणेकालविषेउद्भवहूआ उच्चैःश्रवसनामाअश्व मेरेकूं तूंजान तथासर्वगजोंकेमध्यमै ऐरावतनामागज मेरेकूंजान तथा सर्वनरोंकेमध्यमै राजारूप मेरेकूंजान॥२७॥इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वअश्वोंकेमध्यविषे अत्यंतश्रेष्ठ जोउच्चैःश्रवसनामाअश्वहै ॥ जोउच्चैःश्रवसनामाअश्व अमृतकीप्राप्तिवासतै देवतावोंनैं तथादैत्योंनैं मथनकीयेहूएसमुद्रतैं प्रगटहोताभयाहै ऐसाउच्चैःश्रवसनामाअश्व मेरेकूं तूंजान ॥ तथा सर्वगजोंकेमध्यविषे ऐरावतनामागज मेरेकूंतूंजान ॥ जोऐरावतनामागज अमृतकीप्राप्तिवासतै देव तादैत्योंनैं मथनकऱ्येहूएसमुद्रतैं प्रगटहोताभयाहै ॥ तथा सर्वनरोंकेमध्यविषे सर्वप्रजाकूं धर्मविषेप्रवृत्तकरणेहारा तथाअधर्मतैंनिवृत्तकरणेहारा जोराजाहै सोराजा मेरेकूंतूंजान इति ॥ २७ ॥ ❋ ॥ किंच ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

आयुधानामहंवज्रंधेनूनामस्मिकामधुक्॥प्रजनश्चास्मिकंदर्पःसर्पाणामस्मिवासुकिः॥

आयुधानां।अहं।वज्रं।धेनूनां।अस्मि।कामधुक्।प्रजनः।च।अस्मि।कंदर्पः।सर्पाणां।अस्मि।वासुकिः। इतिप०॥

हेअर्जुन सर्वआयुधोंकेमध्यमै वज्र मैं हूं तथा सर्वधेनुवोंकेमध्यमै कामधेनु मैंहूं तथा सर्वकामोंकेमध्य मै पुत्रकीउत्पत्तिअर्थ काम मैं हूं तथा सर्वसर्पोंकेमध्यमै वासुकिनामासर्प मैं हूं॥ २८॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ अस्त्ररूपजितनैंकीआयुधहैं तिनसर्वआयुधोंकेमध्यविषे दधीचिकेअस्थियोंतैउत्पन्नहूआजोवज्रहैं सोवज्र मैं हूं॥ तथा दुग्धकीप्राप्तिकरणेहारी जितनीकोधेनुहैं॥ तिनसर्वधेनुवोंकेमध्यविषे मनवांछितकामोंकीप्राप्तिकरणेहारो तथासमुद्रकेमथनतैंप्रगटहूई जावसिष्ठकोकामधेनुहै साकामधेनु मैंहूं॥ तथा मैथुनकीअभिलाषारूप सर्वकामोंकेमध्य विषे पुत्रकीउत्पत्तिवासतै जोकामरूपकंदर्पहै सोकामरूपकंदर्प मैंहूं॥ ईहां (प्रजनश्च) इसवचनविषेस्थितजोचका रहै॥ सोचकार पुत्रकीउत्पत्तितैंविना व्यर्थमैथुनकेहेतुरूपकामकीनिवृत्तिकूंबोधनकरेहै॥ तथा सर्वसर्पोंकेमध्यविष तिनसर्वसर्पोंकाराजाजोवासुकिहै सोवासुकि मैंहूं॥ ईहां सर्पजातितैं नागजाति भिन्नहोवैहै॥ तहां सर्पतौं विषवालेहोवै हैं॥ और नाग विषतैंरहितहोवैहैं॥ इतनादोनोंविषेभेदहोवैहै॥ यातैं (अनंतश्चास्मिनागानां)इसवक्ष्यमाणवचनविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति॥ २८॥ * ॥ किंच ॥

अनंतश्चास्मिनागानांवरुणोयादसामहं॥पितॄणामर्यमाचास्मियमःसंयमतामहं।२९॥

374

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनंतः। च। अस्मि। नागानां। वरुणः। यादसां। अहं। पितॄणां। अर्यमा। च। अस्मि। यमः। संयमतां। अहं॥इतिप०॥

हेअर्जुन नागोंकेमध्यमै अनंतनाग मैं हूं तथा जलचरोंकेमध्यमै वरुण मैंहूं तथा पितरों
केमध्यमै अर्यमा मैं हूं तथा नियमनकरणेहार्योंकेमध्यमै यम मैं हूं॥२९॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वनागोंकेमध्यविषे तिनसर्वनागोंकाराजारूप जोशेषनामा अनंतनागहै सोअनंतनाग मैंहूं ॥ तथा जलविषेविचरणेहारे सर्वजीवोंकेमध्यविषे तिनसर्वजलचारीजीवोंकाराजारूप जोवरुणहै सोवरुण मैंहूं ॥ तथा सर्वपितरोंकेमध्यविषे तिनसर्वपितरोंकाराजारूप जोअर्यमानामा पितरहै सोअर्यमा मैंहूं ॥ तथा धर्मअधर्मकेसुख दुःखरूपफलकोप्राप्तिकरिकै अनुग्रहनिग्रहरूप संयमकूंकरणेहारे जितनैंकी समर्थपुरुषहैं ॥ तिनसर्वनियमनकर्त्तावों केमध्यविषे यम मैंहूं इति ॥ २९ ॥ ※ ॥ किंच ॥

प्रल्हादश्चास्मिदैत्यानांकालःकलयतामहं॥ मृगाणांचमृगेंद्रोहंवैनतेयश्चपक्षिणां॥३०॥

प्रल्हादः। च। अस्मि। दैत्यानां। कालः। कलयतां। अहं। मृगाणां। च। मृगेंद्रः। अहं। वैनतेयः। च। पक्षिणां॥इतिप०

हेअर्जुन दैत्योंकेमध्यमै प्रल्हाद मैं हूं तथा संख्यागणनकरणेहार्योंकेमध्यमै काल मैंहूं तथा
मृगादिकपशुवोंकेमध्यमै सिंह मैंहूं तथा सर्वपक्षीयोंकेमध्यमै गरुड मैंहूं॥ ३० ॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन दितिकेवंशविषे उत्पन्नभयेजितनैंकोदैत्यहैं ॥ तिनसर्वदैत्योंकेमध्यविषे आपणेसात्विकस्वभावक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रिकै सर्वप्राणीयोंकूं अतिशयकरिकै आनंदकीप्राप्तिकरणेहारा जोप्रल्हादहै सोप्रल्हाद मैंहूं ॥ तथा जितनैंकीसंख्या केगणनकरणेहारेहैं तिनसर्वोंकेमध्यविषे काल मैंहूं ॥ तथा मृगतैंआदिलैकेजितनैंकोपशुहैं ॥ तिनमृगादिकसर्वपशुवोंकेमध्यविषे तिनसर्वपशुवोंकाराजाजोसिंहहै सोसिंह मैंहूं ॥ तथा सर्वपक्षीयोंकेमध्यविषे तिनसर्वपक्षीयोंकारा जारूप तथाविनताकापुत्र जोगरुडहै सोगरुड मैंहूं इति ॥ ३० ॥ ※ ॥ किंच ॥

376

पवनःपवतामस्मिरामःशस्त्रभृतामहं॥झषाणांमकरश्चास्मिस्रोतसामस्मिजाह्नवी॥३१॥

पवनः। पवतां। अस्मि। रामः। शस्त्रभृतां। झषाणां। मकरः। च। अस्मि। स्रोतसां। अस्मि। जाह्नवी॥इतिपद०॥

हेअर्जुन वेगवालयोंकेमध्यमै वायु मैंहूं तथा शस्त्रधारीयोंकेमध्यमै राम मैंहूं तथा मत्स्योंकेमध्यमै मकर मैंहूं तथा नदीयोंकेमध्यमैं श्रीगंगाजी मैंहूं ॥३१॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जितनैंकीपावनकरणेहारेपदार्थहैं अथवा जितनैंकीवेगवालेपदार्थहैं ॥ तिनसर्वोंकेमध्यविषे पवन मैंहूं ॥ तथा युद्धविषेअत्यंतकुशल जितनैंको शस्त्रोंकेधारणकरणेहारे योद्धाहैं ॥ तिनसर्वोंकेमध्यविषे सर्वराक्षसोंकेकुलकानाशकरणेहारा परमशूरवीर जोदशरथकापुत्र श्रीरामहै सोराम मैंहूं ॥ तथा सर्वमत्स्योंकेमध्यविषे मकर नामामत्स्य मैंहूं ॥ तथा वेगकरिकै चलायमानहैजलजिनोंविषे ऐसीजे यमुनागोदावरी आदिकसर्वनदीयांहैं ॥ तिनसर्वनदीयोंकेमध्यविषे तिनसर्वनदीयोंतैंअत्यंतश्रेष्ठश्रीगंगाजी मैंहूं इति ॥ ३१ ॥ ※ ॥ किंच ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सर्गाणामादिरंतश्चमध्यंचैवाहमर्जुन॥अध्यात्मविद्याविद्यानांवादःप्रवदतामहं ॥ ३२ ॥

सर्गाणां । आदिः । अंतः । च । मध्यं । च । एव । अहं । अर्जुन । अध्यात्मविद्या । विद्यानां । वादः । प्रवदतां । अहं ॥इतिपद०

हेअर्जुन अचेतनरूपकार्योंका उत्पत्ति तथा स्थिति तथा लय मैंपरमेश्वर हींहूं तथासर्वविद्यावोंकेमध्यमै अध्यात्मविद्या मैंहूं तथा विवादकर्त्तापुरुषोंकीकथावोंकेमध्यमै वादनामाकथा मैंहूं ॥ ३२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अचेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जितनैंकीउत्पत्तिमानकार्यहैं तिनसर्वकार्योंका उत्पत्ति तथास्थिति तथालय मैंपरमेश्वरहींहूं॥ यद्यपि (अहमादिश्चमध्यंचभूतानामंतएवच) इसवचनविषे पूर्वभी श्रीभगवान्नैं आपणेकूं सर्वभूतोंकी उत्पत्तिस्थितिलयरूप कथनकऱ्याथा ॥ तथापि पूर्वतौं चेतनरूपकरिकैप्रसिद्धभूतोंकीहीं उत्पत्तिस्थितिलयरूपता कथनकरीथी ॥ और अबीईहां अचेतनरूपकरिकैप्रसिद्धभूतोंकी उत्पत्तिस्थितिलयरूपता कथनकरीहै॥ यातैं ईहां पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ तथा सर्वविद्यावोंकेमध्यविषे मोक्षकेप्राप्तिकाहेतुरूप तथाजीवब्रह्मकेअभेदकाप्रतिपादक ऐसीजाउपनिषदरूप अध्यात्मविद्याहै ॥ साअध्यात्मविद्या मैंहूं ॥ तथा परस्परविवादकर्त्तापुरुषोंकीजा वाद जल्प वितंडा यहतीनप्रकारकीकथाहैं ॥ तिनकथावोंकेमध्यविषे वादनामाकथा मैंहूं ॥ ईहां यद्यपि (प्रवदतां) यहशब्द विवादकर्त्तापुरुषोंकाहीं वाचकहै ॥ तिनविवादकर्त्तापुरुषोंकीकथावोंकावाचकहैनहीं ॥ तथापि जैसे पूर्व (भूतानामस्मिचेतना) इसवचनविषे भूतानां इसशब्दकी तिनभूतसंबंधीपरिणामोंविषे लक्षणा अंगीका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रकरीथी ॥ तैसे ईहांभी प्रवदतां इसशब्दकी तिनविवादकर्त्तापुरुषसंबंधीकथावोंविषे लक्षणाअंगीकारकरणी उचित है ॥ तहां परस्पर रागद्वेषतैंरहित तथापरस्पर जयपराजयकोइच्छातैंरहित तथापरस्पर तत्त्वबोधनकरणेकीइच्छा वाले ऐसेजे एकगुरुकेपासिअध्ययनकरणेहारेदोशिष्यहैं अथवा गुरुशिष्यदोनोंहैं ॥ तिनदोनोंकी जा तत्त्वनिर्णय पर्यंत परस्पर प्रश्नउत्तररूपकथाहै ताकानाम वादकथाहै ॥ और वादकथाकाफलरूपजोतत्त्वनिर्णयहै ॥ तिसतत्त्व निर्णयका प्रतिवादियोंकेखंडनकरिकै संरक्षणकरणेवासतै परस्पर जीतणेकीइच्छावालेदोपुरुषोंकी जो जयपराज यमात्रपर्यंत परस्पर कथाहै ताकानाम जल्पकथाहै तथावितंडाकथाहै ॥ तहां छल जाति निग्रहस्थान इनतीनोंक रिकै परपक्षकूं दूषितकरणा इतनाअंशतौं जल्पकथाविषे तथावितंडाकथाविषे समानहींहोवैहै ॥ तथापि वितंडाक थाविषेतौं एकपुरुषनैं आपणेपक्षका केवलस्थापनहींकरीताहै ॥ परपक्षविषे दूषणदईतानहीं ॥ और अन्यपुरुष नैंतौं तिसपक्षविषे केवल दूषणहींदयीताहै ॥ आपणेमतकास्थापनकरोतानहीं ॥ और जल्पकथाविषेतौं विवादक र्त्तादोनोंपुरुषोंनैं आपणाआपणापक्ष स्थापनभीकरीताहै ॥ तथा दोनोंनैं परपक्षकूं दूषितभीकरीताहै ॥ इतना जल्प वितंडाका परस्परभेदहै ॥ तहां अन्यअर्थकेअभिप्रायकरिकै उच्चारणकऱ्येहूएवचनका अन्यअर्थकल्पनाकरिकै तिस वक्तापुरुषकूं जोदूषणदेणाहै ताकानाम छलहै ॥ और असत्उत्तरकानाम जातिहै ॥ और पराजयकेहेतुकानाम निग्र हस्थानहै ॥ छल जाति निग्रहस्थान इनतीनोंका विभाग तथाउदाहरण न्यायग्रंथोंविषेप्रसिद्धहैं इति ॥ ३२ ॥ ※ किंच॥

अक्षराणामकारोऽस्मिद्वंद्वःसामासिकस्यच॥अहमेवाक्षयःकालोधाताहंविश्वतोमुखः॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अक्षराणां । अकारः । अस्मि । द्वंद्वः । सामासिकस्य । च । अहं । एव । अक्षयः । कालः । धाता । अहं । विश्वतोमुखः ॥ इतिप०

हेअर्जुन अक्षरोंकेमध्यमै अकारअक्षर मैं हूं तथा समाससमूहकेमध्यमै द्वंद्वसमास मैंहूं तथा मैंपरमेश्वर हीं क्षयतैंरहित कालरूपहूं तथा सर्वफलप्रदातावोंकेमध्यमै सर्वकर्मोंकेफलकाप्रदाता अंतर्यामीईश्वर मैं हूं ॥ इतिप० ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्ववर्णरूपअक्षरोंकेमध्यविषे । (अकारोवैसर्ववाक्) इसश्रुतितैं सर्ववाक्रूपकरिकैकथनकऱ्याजोअकारअक्षरहै सोअकारअक्षर मैंहूं ॥ तथा सर्वसमासोंकाजोसमूहहै ताकानाम सामासिकहै ॥ ऐसे समाससमूहकेमध्यविषे उभयपदार्थप्रधानजो रामकृष्णौ यहद्वंद्वसमासहै सोद्वंद्वसमास मैंहूं ॥ तहां उपकुंभं इत्यादिकअव्ययीभावसमासतौं पूर्वपदार्थप्रधानहोवैहै ॥ और राजपुरुषःइत्यादिकतत्पुरुषसमासतौं उत्तरपदार्थप्रधानहोवैहै ॥ और चित्रगु इत्यादिकबहुव्रीहिसमासतौं अन्यपदार्थप्रधानहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं द्वंद्वसमासतैंभिन्न कोईभीसमास उभयपदार्थप्रधानहोवैनहीं ॥ यातैं तिनसर्वसमासोंतैं सोद्वंद्वसमास उत्कृष्टहै ॥ और क्षणघटिकादिकनाशवान्कालकाअभिमानीरूप तथातिससर्वकालकूंजानणेहारा जोपरमेश्वरनामा अक्षयकालहै ॥ जिसपरमेश्वररूपअक्षयकालकूं (कालकालोगुणीसर्वविद्यः) इत्यादिकश्रुतियां कालकाभीकालरूपकरिकैप्रतिपादनकरेहैं ॥ सोअक्षयकालरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ यद्यपि (कालःकलयतामहं) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं पूर्वहीं आपणेकूं कालरूपताकथनकरीथी ॥ तथापि पूर्व श्रीभगवान्नैं आपणेकूं नाशवान्कालरूपता कथनकरीथी ॥ और अबोईहां अक्षयकालरूपता कथनकरीहै ॥ यातैं इसवचनविषे पुनरुक्तिदोषकोप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और कऱ्येहूएकर्मकेफलकोप्राप्तिकरणेहारेजि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तनैंकीराजादिकहैं ॥ तिनसर्वफलप्रदातावोंकेमध्यविषे सर्वकर्मोंकेफलकाप्रदाताजोईश्वरहै सोअंतर्यामाईश्वर मैंहूं ॥ ईहां किसीटीकाविषेतौं (द्वंद्वःसामासिकस्यच) इसवचनका यहअर्थकथनकऱ्याहै ॥ वेदमंत्रोंकेअर्थका कथन करणेवासतै जो विद्वान्पुरुषोंका अथवा गुरुशिष्यका एकत्र अवस्थानहै ताकानाम समासहै ॥ तासमासविषे तिन सर्वोंनैं जितनाकीअर्थ निर्णयकऱ्याहै तासर्वअर्थकानाम सामासिकहै ॥ तिससर्वअर्थकेमध्यविषे द्वंद्व कहीये रहस्यअ र्थ मैंहूं॥तहां (द्वंद्वंरहस्य) इससूत्रविषे शाब्दिकपुरुषोंनैं द्वंद्वशब्दकूं रहस्यअर्थकावाचक कह्याहै इति ॥ ३३ ॥ किंच

मृत्युःसर्वहरश्चाहमुद्भवश्चभविष्यतां।कीर्तिःश्रीर्वाकनारीणांस्मृतिर्मेधाधृतिःक्षमा ३४

मृत्युः । सर्वहरः । च।अहं।उद्भवः।च।भविष्यतां।कीर्तिः।श्रीः।वाक्।च।नारीणां।स्मृतिः।मेधा॥धृतिः।क्षमा ॥ इतिपदच्छेदः हेअर्जुन तथा संहारकर्त्तावोंकेमध्यमै सर्वकासंहारकरणेहारा मृत्यु मैंहूं तथा भावीकल्याणोंकेमध्यमै उत्कर्षरूपउद्भव मैंहूं तथा सर्वनारीयोंकेमध्यमै कीर्ति श्री वाक् स्मृति मेधा धृति क्षमा यहधर्मकीसप्तपत्नियां मैंहूं ॥ ३४ ॥ इतिप ० ॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसलोकविषेजितनैंकीसंहारकरणेहारेहैं ॥ तिनसर्वोंकेमध्यविषे सर्वजगत्कासंहारकरणेहारा जो मृत्युहै सोमृत्यु मैंहूं ॥ तथा होणेहोरजितनैंकीकल्याणहैं ॥ तिनसर्वकल्याणोंकेमध्यविषे जो ऐश्वर्यकाउत्कर्षरूप उ द्भवहै सोउद्भव मैंहूं ॥ तथा सर्वनारीयोंकेमध्यविषे धर्मकीपत्नियांरूप जे कीर्ति श्री वाक् स्मृति मेधा धृति क्षमा य हसप्तनारीयांहैं तेंमैंहूं ॥ तहां इसपुरुषकाधर्मीपणाहैनिमित्तजिसविषे ऐसीजा प्रसिद्धपणेकरिकैं च्यारोंदिशावोंवि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

षेस्थितअनेकदेशोंमैंरहणेहारेलोकोंकेज्ञानकीविषयतारूप प्रख्यातिहै ताकानाम कीर्तिहै ॥ और धर्म अर्थ काम इ
नतीनोंकानाम श्रीहै ॥ अथवा शरीरकीशोभाकानाम श्रीहै ॥ अथवा उज्ज्वलकांतिकानाम श्रीहै ॥ और सर्वअर्थकूं
प्रकाशकरणेहारी जासंस्कृतवाणीरूप सरस्वतीहै ताकानाम वाक्‌है ॥ और पूर्वअनुभवकऱ्येहूएअर्थकी जाबहुतका
लकेपीछेभी स्मरणकरणेकीशक्तिहै ताकानाम स्मृतिहै ॥ और अनेकग्रंथोंकेअर्थधारणकरणेकीजाशक्तिहै ताकानाम
मेधाहै ॥ और अनेकप्रकारकीपीडाकेप्राप्तहूएभी शरीरइंद्रियरूपसंघातकेस्थिरताकरणेकीजाशक्तिहै ताकानामधृ
तिहै ॥ अथवा यथाइच्छापूर्वक प्रवृत्तिकरावणेहारेकारणकरिकै चपलताकेप्राप्तहूएभी तिसप्रवृत्तितैंनिवृत्तकरणेकी
जाशक्तिहै ताकानाम धृतिहै ॥ और हर्ष विषाद दोनोंविषे जाचित्तकीअविकारताहै ताकानाम क्षमाहै इति ॥ जिन
कीर्तिआदिकसप्तनारीयोंकेआभासमात्रकेसंबंधकरिकैभी यहजन सर्वलोकोंकरिकै आदरकरणेयोग्यहोवैहैं ॥ ऐसी
कीर्तिआदिकसप्त नारीयोंकूं सर्वनारीयोंतैंउत्तमपणा अतिप्रसिद्धहीहै ॥ इति ॥ ३४ ॥ ※ ॥ किंच ॥

बृहत्सामतथासाम्नांगायत्रीछंदसामहं ॥ मासानांमार्गशीर्षोहमृतूनांकुसुमाकरः ॥३५॥

बृहत्साम । तथा । साम्नां । गायत्री । छंदसां । अहं । मासानां । मार्गशीर्षः । अहं । ऋतूनां । कुसुमाकरः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन गीतिविशेषरूपसामोंकेमध्यमैं बृहत्साम मैंहूं तथा छंदोंकेमध्यमैं गायत्रीछंद मैंहूं तथा
माँसाकेमध्यमैं मार्गशीर्षमास मैंहूं तथा ऋतुवोंकेमध्यमैं वसंतऋतु मैंहूं ॥ ३५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ऋगादिकच्यारिवेदोंकेमध्यविषे सामवेद मैंहूं याप्रकारकेवचनकरिकै सामवेदकीउत्कृष्टता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पूर्वहमनैं कथनकरोथो ॥ तिससामवेदविषेभी यहअन्यविशेषताहै ॥ ऋचावोंकेअक्षरोंविषेआरूढ जे गीतिविशेषरूपसामहैं ॥ तिनसर्वसामोंकेमध्यविषे (त्वामिद्धिहवामहे) इसऋचाविषेस्थित गीतिविशेषरूप तथासर्वकाईश्वररूपकरिकैइंद्रकीस्तुतिरूपक जो बृहत्सामहै सोबृहत्साम मैंहूं ॥ और नियमपूर्वकहैंअक्षर तथापाद जिसके ताकानामछंद है ॥ ऐसेछंदभावकरिकैविशिष्टजेवेदकीऋचाहैं ॥ तिनसर्वछंदोंकेमध्यविषे द्विजपणेकासंपादक जा चतुर्विंशतिअक्षरों वाली गायत्रीहै जागायत्री(गायत्रीवाइदंसर्वंभूतं) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै प्रतिपादितहै ऐसागायत्रीनामाछंद मैंहूं॥तथा द्वादशमासोंकेमध्यविषे अत्यंतशीतआतपतैंरहितहोणेतैं सुखकाहेतु जोमार्गशीर्षमासहै सोमार्गशीर्षमास मैंहूं ॥ तथा षट्ऋतुवोंकेमध्यविषे सर्वसुगंधिवालेपुष्पोंकाआकारहोणेतैं अत्यंतरमणीक तथा (वसंतेब्राह्मणमुपनयीत वसंतेब्राह्मणोऽग्नीनादधीत वसंतेज्योतिषायजेत) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकैप्रसिद्ध जोवसंतऋतुहै सोवसंतऋतु मैंहूं इति॥३५॥* किंच

द्यूतंछलयतामस्मितेजस्तेजस्विनामहं॥जयोस्मिव्यवसायोस्मिसत्त्वंसत्त्ववतामहं ॥

द्यूतं। छलयतां। अस्मि। तेजः। तेजस्विनां। अहं। जयः। अस्मि। व्यवसायः। अस्मि। सत्त्वं। सत्त्ववतां। अहं ॥ इतिप०

हेअर्जुन छलकरणेहारेपुरुषोंका जूवारूपछल मैंहूं तथा तेजस्वीपुरुषोंका तेज मैंहूं तथाजयकरणेहारेपुरुषोंका जय मैंहूं तथाव्यवसायवालेपुरुषोंका व्यवसाय मैंहूं तथा सत्त्ववालेपुरुषोंका सत्व मैंहूं ॥॥ ३६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥टीका॥ हेअर्जुन परकावंचनंरूपछलकेकरणेहारेजेधूर्त्तपुरुषहैं॥तिनछलवालेपुरुषोंका जोजूवारूपछलहैं जोजूवारूपछल

382

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सर्वस्वहरणकरणेकाकारणहै सोजूवारूपलछ मैंहूं॥तथा अत्यंतउग्रप्रभाववालेजेतेजस्वीपुरुषहैं॥तिनतेजस्वीपुरुषोंका जो अप्रतिहतआज्ञारूपतेजहै सोतेज मैंहूं॥ तथा जयकरणेहारेपुरुषोंका जो पराजयहूएपुरुषोंकीअपेक्षाकरिकै उत्कृष्टतारूपज यहै सोजय मैंहूं॥तथा व्यवसायवालेपुरुषोंका जो नियमतैंफलकीप्राप्तिकरणेहारा उद्यमरूपव्यवसायहै सोव्यवसाय मैंहूं॥ तथा सात्विकपुरुषोंका जो धर्मज्ञानवैराग्यऐश्वर्यतारूपसत्वहै॥अर्थात् सत्वगुणकाकार्यहै सोसत्व मैंहूं इति॥३६॥ * किंच

वृष्णीनांवासुदेवोस्मिपांडवानांधनंजयः॥मुनीनामप्यहंव्यासःकवीनामुशनाकविः॥

वृष्णीनां। वासुदेवः। अस्मि। पांडवानां। धनंजयः। मुनीनां। अपि। अहं। व्यासः। कवीनां। उशनाकविः॥ इतिपद ०॥

हेअर्जुन यादवोंकेमध्यमै वसुदेवकापुत्रकृष्ण मैंहूं तथा पांडवोंकेमध्यमैं धनंजय मैंहूं तथा मुनियोंकेमध्यमै व्यासमुनि मैंहूं तथा कवियोंकेमध्यमै शुक्रकवि मैंहूं॥३०॥ इतिपदार्थः॥

॥ टाका ॥ हेअर्जुन सर्वयादवोंकेमध्यविषे वसुदेवकापुत्ररूपकरिकैप्रसिद्ध तथातुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकर णेहारा यहकृष्णमैंहूं॥ तथा सर्वपांडवोंकेमध्यविषे धनंजयनामाजोतूंअर्जुनहै सोमैंहूं ॥ तथा मननशीलमुनियोंकेमध्य विषे श्रीव्यासमुनि मैंहूं॥ तथा सूक्ष्मअर्थकेविवेककरणेहारेकवियोंकेमध्यविषे शुक्रनामाकवि मैंहूं इति ॥ ३७॥ किंच ॥

दंडोदमयतामस्मिनीतिरस्मिजिगीषतां॥मौनंचैवास्मिगुह्यानांज्ञानंज्ञानवतामहं ३८॥

दंडः। दमयतां। अस्मि। नीतिः। अस्मि। जिगीषतां। मौनं। च। एव। अस्मि। गुह्यानां। ज्ञानं। ज्ञानवतां। अहं॥ इतिप०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

384

हेअर्जुन शिक्षाकरणेहारेपुरुषोंका दंड मैंहूं तथा जीतणेकीइच्छावालेपुरुषोंका न्यायरूपनीति मैंहूं तथा गुह्यअर्थोंका मौन मैंहूं तथा ज्ञानवालेपुरुषोंका ज्ञान मैं हूं ॥ ३८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अशिक्षितदुष्टपुरुषोंकूं कुमार्गतैंनिवृत्तकरिकै सुमार्गविषे प्रवृत्तकरणेहारे जेराजादिकपुरुषहैं ॥ तिनराजादिकोंका जो दुष्टपुरुषोंकूं तिसकुमार्गतैंनिवृत्तकरणेकाहेतुरूपदंडहै सोदंड मैंहूं ॥ तथा जीतणेकीइच्छावा नूपुरुषोंका जो जयकेउपायकाप्रकाशक न्यायरूपनीतिहै सानीति मैंहूं ॥ तथा गुह्यअर्थोंकेगोपराखणेकाहेतुरूप जो वाक्इंद्रियकानिग्रहरूपमौनहै सोमौन मैंहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपुरुष वाक्इंद्रियकानिग्रहकरिकै तूष्णींस्थितहो वैहै ॥ तिसपुरुषकेअंतरकेअभिप्रायकूं कोईभीजानिसकतानहीं ॥ यातैं सोवाणीकानिग्रहरूपमौन अर्थकेगोपराख णेकाहेतुहै इति ॥ अथवा इसकायहअर्थकरणा ॥ गोप्यपदार्थोंकेमध्यविषे संन्याससहित श्रवणमननपूर्वक जो आ त्माकानिदिध्यासनरूपमौनहै सोमौन मैंहूं ॥ तथा ज्ञानवाले सर्वज्ञानीपुरुषोंका जो वेदतशास्त्रकेश्रवणमननिदि ध्यासनकरिकैजन्य तथासर्वअज्ञानकाविरोधी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका आत्मज्ञानहै सोआत्मज्ञानमैंहूं इति॥ ३८॥ *किंच

यच्चापिसर्वभूतानांबीजंतदहमर्जुन ॥ नतदस्तिविनायत्स्यान्मयाभूतंचराचरं ॥ ३९ ॥

यत्। च। अपि। सर्वभूतानां। बीजं। तत्। अहं। अर्जुन। न। तत्। अस्ति। विना॥ यत्। स्यात्। मया॥ भूतं। चराचरं॥ इतिप०

हेअर्जुन तथा जोचेतन इनसर्वभूतोंका कारणहै सोकारण भी मैंहींहूं मैंपरमेश्वरतैं विनां जो चेर अचररूप वस्तु होवै सोवस्तु नहीं है ॥ ३९ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे प्रसिद्धवृक्षोंकेप्ररोहकाकारण बीजहोवैहै ॥ तैसे इनसर्वभूतोंकेप्ररोहकाकारणरूप जोमाया उपहितचेतनरूप बीजहै सोबीजरूपकारणभी मैंहींहूं ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरतैंविना जोकोई चरअचररूपवस्तुविद्य मानहोवै सोऐसाकोईवस्तु हैनहीं॥किंतु तेसर्वभूत मैंबीजरूपपरमेश्वरकाकार्यहोणतैं मैंसत्तास्फुरणरूपपरमेश्वरकरिकैहीं व्याप्तहैं इति॥३९॥अब इसविभूतिप्रकरणकेअर्थका उपसंहारकरताहूआ श्रीभगवान्तिसविभूतिकूं संक्षेपतैं कथनकरेहै

नांतोस्तिममदिव्यानांविभूतीनांपरंतप ॥एषतूद्देशतःप्रोक्तोविभूतेर्विस्तरोमया॥ ४० ॥

नं। अंतः। अस्ति। मम। दिव्यानां। विभूतीनां। परंतप। एषः। तु। उद्देशतः। प्रोक्तः। विभूतेः। विस्तरः। मया ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके दिव्य विभूतियोंका कोईअंत नहीं है और यहजो हमनैं तुमारेप्रति विभूतिका विस्तार कथनकऱ्याहै सो एकदेशकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ ४० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेपरंतप अर्थात् हेकामक्रोधादिकशत्रुवोंकूंतापकरणहारा अर्जुन ॥ मैंपरमेश्वरका तिनदिव्यविभूतियोंका कोईअंत नहींहै ॥ अर्थात् तेसर्वविभूतियां इतनीयांहैं याप्रकारकासंख्या तिनविभूतियोंकोनहींहै ॥ यातैं सर्वज्ञपुरुषों नैंभी साहमारेविभूतियोंकासंख्या जानणेकूं वाकहणेकूं समर्थनहींहोईता ॥ शंका ॥ हेभगवन् जबा सर्वज्ञपुरुषभी तिनविभूतियोंकेकहणेकूंसमर्थनहींहै ॥ तबी (आदित्यानामहंविष्णुः) इत्यादिकवचनोंकरिकै ते आपणाविभूतियां आप कैसेकहतेभयेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (एषतुइति) हेअर्जुन यहजोहमनैं तुमारेप्रति आपणीविभूतिकाविस्तार कथनकऱ्याहै ॥ सोभी किसीएकदेशकरिकै कथनकऱ्याहै इति ॥ ४० ॥ ॥ किंच ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यद्यद्विभूतिमत्सत्वंश्रीमदूर्जितमेववा ॥ तत्तदेवावगच्छत्वंममतेजोंशसंभवं ॥ ४१ ॥

यंत्।यंत्।विभूतिमत्।सत्वं।श्रीमत्।ऊर्जितं।एव।वा॥तत्।तत्।एव।अवगच्छ।त्वं।मम।तेजोऽशसंभवं ॥ इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन जो जो प्राणी ऐश्वर्यवालाहै तथा लक्ष्मीवालाहै तथा बलवालाहै तिसं तिसं प्राणी कूं हीं तूं मैंपरमेश्वरके शक्तिकेअंशकरिकैउत्पन्नहूआ जान ॥ ४१ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसलोकविषे जोजोप्राणी ऐश्वर्यरूपविभूतिकरिकै युक्तहै ॥ तथा जोजोप्राणी श्रीमत्है ॥ अर्थात् लक्ष्मीकरिकै वासंपदाकरिकै वाशोभाकरिकै वाकांतिकरिकै युक्तहै ॥ तथा जोजोप्राणी अत्यंतबलादिकोंकरिकैयुक्त है ॥ तिसतिसप्राणीकूंहीं तूं मैंपरमेश्वरकीशक्तिकेअंशकरिकैउत्पन्नहूआ जान इति ॥ यहभगवान्कावचन पूर्वनहीं कथनकरीहूईविभूतियोंकेभीसंग्रहकरावणेवासतैंहै इति ॥ ४१ ॥ ॥ इसप्रकार एकदेशरूप अवयवकरिकै विभूतिकूंकथनकरिकै अब सकलतारूपकरिकै तिसविभूतिकूं कहेहैं ॥

अथवाबहुनैतेनकिंज्ञातेनतवार्जुन॥विष्टभ्याहमिदंकृत्स्नमेकांशेनस्थितोजगत् ॥ ४२॥

इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेविभूतियोगोनामदशमोऽध्यायः समाप्तः ॥१०॥

अथवा।बहुना।एतेन।किं।ज्ञातेन।तव।अर्जुन।विष्टभ्य।अहं।इदं।कृत्स्नं।एकांशेन।स्थितः।जगत्॥इतिप०॥

अथवा हेअर्जुन इस बहुत ज्ञातकरिकै तुमारा क्याप्रयोजन सिद्धहोवैंगा इस सर्व जगत्कूं मैंपरमेश्वर एकदेशकरिकै धारणकरिकै स्थितहूआहूं ॥४२॥ इतिपदार्थः॥

386

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ ईहां (अथवा) यहपद पूर्वउक्तविभूतिपक्षतैं भिन्नपक्षकावाचकहै ॥ सोपक्षांतर कहेहै ॥ हेअर्जुन (आदित्यानामहंविष्णुः) इत्यादिकवचनोंकरिकै मंदअधिकारीपुरुषोंकेध्यानवासतै कथनकरीजा हमनैं आपणीसावशेष विभूतिहै ॥ इसबहुतप्रकारकीसावशेषविभूतिकेज्ञानकरिकै तैंउत्तमअधिकारीकूं कौंनफलहैं ॥ किंतु कोईभीफल तेरे कूंनहीं ॥ जिसकारणतैं पूर्वउक्तयत्किंचित्विभूतिकेज्ञानहूएभी हमारीसर्वविभूतियोंकाज्ञान होतानहीं ॥ यातैं तैंउत्तम अधिकारीकूंतौं याप्रकारतैं हमाराध्यानकऱ्याचाहीये ॥ हेअर्जुन मैंपरमात्मादेव इससर्वजगत्कूं आपणेएकदेशमात्रकरिकै धारणकरिकै अथवा व्याप्तकरिकै स्थितहूं मैंपरमात्मादेवतैंभिन्न कोईवस्तुहैनहीं ॥ तहांश्रुति (॥ पादोऽस्यविश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतंदिवि)॥ अर्थयह ॥ इसपरमात्मादेवका यहसर्वविश्व एकपादहै ॥ और तीनपादतौं आपणेनिर्गुणस्वयंज्योतिस्वरूपविषेस्थितहैं इति ॥ यातैं हेअर्जुन द्वादशआदित्योंविषे विष्णुनामाआदित्यमैंहूं तथानक्षत्रोंकेमध्यविषेचंद्रमामैंहूं इत्यादिकपरिच्छिन्नदृष्टिकापरित्यागकरिकै तूं सर्वजगत्विषे मैंपरमात्मादेवकूंव्यापकदेख इति ॥ यद्यपि निरवयवनिराकारपरमात्माका अंश तथापाद संभवतानहीं ॥ तथापि जैसे निरवयवआकाशके घटमठादिकउपाधियोंकरिकै घटाकाश मठाकाश मेघाकाश इत्यादिकअंशोंकीकल्पनाहोवैहैं ॥ तैसे निरवयव निराकारपरमात्मादेवकेभी अविद्यादिकउपाधियोंकरिकै तेअंश तथापाद कल्पनाकरेजावेहैं ॥ वास्तवतैं तेअंश तथापादहैनहीं इति ॥ ४२ ॥ ❋ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां दशमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १० ॥

387

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायांदशमोऽध्यायः॥

388

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

389

अथ श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायामेकादशोध्यायः

प्रक
नायंहं
आत्माकूं
प्रथमपाद
कानिर्णयहै
जसविषे ऐ
करेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ द्वा-
कादशाध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वदशमअध्यायविषे श्रीभगवान् नानाप्रकारकीविभूतिकूंकथनकरिकै तांकेअंका
(विष्टभ्याहमिदंकृत्स्नमेकांशेनस्थितोजगत्) इसवचनकरिकै परमेश्वरके सर्वविश्वात्मकस्वरूपकूं कथनकार्थः ॥
तिसकूंश्रवणकरिकै परमउत्कंठाकूंप्राप्तहूआ सोअर्जुन परमेश्वरके तिस सर्वविश्वात्मकस्वरूपकेसाक्षयुक्त तथा
कीइच्छाकरताहूआ तथापूर्वउक्तअर्थकीप्रशंसाकरताहूआ याप्रकारकावचन कहताभया॥

अर्जुनउवाच ॥ मदनुग्रहायपरमंगुह्यमध्यात्मसंज्ञि
तं ॥ यत्त्वयोक्तंवचस्तेनमोहोयंविगतोमम ॥ १ ॥

मदनुग्रहाय। परमं। गुह्यं। अध्यात्मसंज्ञितं। यत्। त्वया। उक्तं। वचः। तेन। मोहः। अयं। विगतः। मम ॥ इतिपद० ॥
हेभगवन् हमारेअनुग्रहवासतै आपनैं जो परम गुह्य अध्यात्मनामवाला वचनं कथन
कऱ्याहै तिसवचनकरिकै मैंअर्जुनका यह मोह नष्टहोताभयाहै ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् यहहमारे भ्रातापुत्रादिकसर्वबांधव मरणकूंप्राप्तहोतेहैं और मैंअर्जुन इनोंकाहननकरताहूं
इसप्रकारकेशोकमोहरूपसागरविषे डूब्याहूआ जोमैंअर्जुनहूं ॥ तिसहमारेअनुग्रहवासतै अर्थात् तिसशोकमोहकी
निवृत्तिरूपउपकारवासतै परमकृपालुसर्वज्ञआपनैं (अशोच्यानन्वशोचस्त्वं) इसवचनतैंआदिलैके षष्ठेअध्याय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कोसमाप्तिपर्यंत त्वंपदार्थकानिरूपक जोवाक्य कथनकऱ्याहै ॥ कैसाहैसोवाक्य परमहै ॥ अर्थात् निरतिशयमोक्ष रूपपुरुषार्थविषे परिअवसानवालाहै ॥ अथवा परम कहिये शोघ्रहींशोकमोहकानिवर्त्तकहोणेतैं उत्कृष्टहै ॥ पुनःकैसाहैसोवचन गुह्यहै ॥ अर्थात् शास्त्रनिषिद्धकर्मविषेप्रवृत्त तथाश्रद्धातैंरहित तथाविषयोंविषेआसक्त ऐसेअनधिकारीपुरुषांकूं नहींदेणेयोग्यहै॥पुनःकैसाहैसोवचन अध्यात्मसंज्ञितहै ॥अर्थात् आत्माअनात्माकेविवेककूंविषयकरणेहाराहै॥ तहां आत्माअनात्माकेविवेककरणेवासतैंजोशास्त्रहै ताकानाम अध्यात्महै ॥सोअध्यात्महै संज्ञा क्या नाम जिसका ताकानाम अध्यात्मसंज्ञितहै॥ऐसेआपकेवचनकरिकै मैंअर्जुनका यह स्वअनुभवसिद्धमोह नष्टहोताभयाहै ॥ अर्थात् मैंअर्जुन इनभीष्मद्रोणादिकोंका हननकरताहूं तथामैंअर्जुननैं यहभीष्मद्रोणादिक हननकरीतेहैं इत्यादिक नानाप्रकार का विपर्ययरूपमोह हमारा तिसआपकेवचनकरिकैनष्टहोताभयाहै ॥ जिसकारणतैं तिसपूर्वउक्तवचनविषे (नायंहं तिनहन्यते नजायतेम्रियतेवाकदाचित् वेदाविनाशिनंनित्यं अच्छेद्योयमदाह्योयं)इत्यादिकवचनोंकरिकै इसआत्माकूं आपनैं सर्वविकारोंतैंरहित कथनकऱ्याहै॥ तिसकारणतैं सोहमारामोह अबी नष्टहोताभयाहै ॥तहां इसश्लोककेप्रथमपाद विषे जोएकअक्षरअधिकहैसोआर्षहै ॥ अर्थात् ऋषिप्रणीतहोणेतैं दुष्टनहींहै इति॥१॥ *॥ तहां जैसे त्वंपदार्थकानिर्णयहै प्रधानजिसविषे ऐसा षष्ठेअध्यायपर्यंत आपकावचन हमनैं श्रवणकऱ्याहै ॥ तैसे तत्पदार्थकानिर्णयहैप्रधानजिसविषे ऐसा सप्तमअध्यायतैंआदिलैके दशमअध्यायपर्यंत आपकावचनभी हमनैं श्रवणकऱ्याहै इसवार्त्ताकूं अर्जुन कथनकरेहै ॥

भवाप्ययौहिभूतानांश्रुतौविस्तरशोमया ॥त्वत्तःकमलपत्राक्षमाहात्म्यमपिचाव्ययं २

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भवाप्ययौ । हि । भूतानां । श्रुतौ । विस्तरशः । मया । त्वत्तः । कमलपत्राक्ष । माहात्म्यं । अपि । च । अव्ययं ॥ इतिप०
हेकमलपत्राक्ष इनभूतोंके उत्पत्तिप्रलयदोनों तैंभगवान्तैं हीं हमनैं विस्तारतैं श्रवणकऱ्येहैं तथाआपका
सोपाधिक माहात्म्य तैंथा निरुपाधिक अव्ययरूपमाहात्म्य भी हमनैं श्रवणकऱ्याहै ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ हेकमलपत्राक्ष श्रीभगवान् ॥ ईहां कमलकेपत्राकीन्यांई दीर्घ तथाविशाल तथाकिंचित्रक्ततायुक्त तथा
अत्यंतमनोरमहैं अक्षि क्या नेत्र जिसके ताकानाम कमलपत्राक्षहै ॥ इससंबोधनकरिकै अर्जुननैं भगवान्की जो
अत्यंतसौंदर्यता कथनकरीहै ॥ सो परमेश्वरविषयकप्रेमकीअतिशयतातैं कथनकरीहै ॥ अथवा (हेकमलपत्राक्ष)
इससंबोधनका यहअर्थकरणा ॥ (कंअलतिप्रकाशयतिइतिकमलंआत्मज्ञानं ॥) अर्थयह ॥ स्वस्वरूपानंदरूपजोब्रह्म
सुखहै ताकानाम कंहै ॥ तिसब्रह्मसुखकूं जोप्रकाशकरेहै ताकानाम कमलहै ॥ ऐसा महावाक्यजन्य आत्मज्ञानहै
॥ आत्मज्ञानकरिकैहीं ताब्रह्मसुखका प्रकाशहोवैहै ॥ तथा (पतनात्त्रायतेइतिपत्रं ॥) अर्थयह ॥ इनअधिकारीपुरुषों
कूं इसजन्ममरणकेप्रवाहरूपसंसारसमुद्रविषेपतनतैं जोरक्षणकरेहै ताकानाम पत्रहै ॥ ऐसापत्ररूपभी सोआत्म
ज्ञानहींहै ॥ अर्थात् कमलरूपहोवै तथासोईहींपत्ररूपहोवै ताकानाम कमलपत्रहै ॥ (कमलपत्रेणअक्ष्यतेप्राप्यतेइति
कमलपत्राक्षः) ॥ अर्थयह ॥ तिसकमलपत्रनामा आत्मज्ञानकरिकै जोप्राप्तहोवै ताकानाम कमलपत्राक्षहै ॥ अर्थात्
हेआत्मज्ञानकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य शुद्धपरब्रह्म ॥ तैंपरमेश्वरतैंहीं इनसर्वभूतोंकेउत्पत्तिप्रलय हमनैं (अहंकृत्स्नस्यज
गतःप्रभवःप्रलयस्तथा ॥ प्रकृतिंस्वामवष्टभ्य अहंसर्वस्यप्रभवः) इत्यादिकवचनोंकरिकै विस्तारतैं श्रवणकऱ्येहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कोई संक्षेपतैंएकहीवार श्रवणनहींकऱ्ये ॥ हेभगवन् आपपरमेश्वरतैं इनसर्वभूतोंकेउत्पत्तिप्रलयकूंहीं केवल हमनैं नहींश्रवणकऱ्या ॥ किंतु तुमारा माहात्म्यभी हमनैं बहुतवार श्रवणकऱ्याहै ॥ तहां महात्मारूपपरमेश्वरका जो निरतिशयऐश्वर्यरूपभावहै ताकानाम माहात्म्यहै ॥ सोमाहात्म्य यहहै ॥ इसलोकविषे जोकर्त्ताहोवैहै सोविकारीहीं होवैहै ॥ और यहपरमेश्वरतौं इसजगत्केउत्पत्तिआदिकौंकाकरताहूआभी अविकारीरूपहींहै ॥ और इसलोकविषे जोपुरुष दूसऱ्योंकूंप्रेरणाकरिकै शुभअशुभकर्मकरावैहै ॥ सोपुरुष विषमतादोषवालाहीं होवैहै ॥ और यहपरमेश्वरतौं जीवोंकूंप्रेरणाकरिकै शुभअशुभकर्मकरावताहूआभी विषमतादोषतैंरहितहै ॥ और इसलोकविषे जोपुरुष विचित्रफलकाप्रदाताहोवैहै ॥ सोपुरुष असंगउदासीनहोवैनहीं ॥ और यहपरमेश्वरतौं बंधमोक्षादिकविचित्रफलकाप्रदाताहूआभी असंगउदासीनहींहै ॥ इसतैंआदिलैकेदूसराभी सर्वात्मत्व आदिक सोपाधिकमाहात्म्य हमनैं बहुतवार श्रवणकऱ्याहै ॥ हेभगवन् आपपरमेश्वरका केवल यहसोपाधिकमाहात्म्यहीं हमनैं श्रवणनहींकऱ्या ॥ किंतुआपपरमेश्वरका निरुपाधिक अव्ययरूपमाहात्म्यभी हमनैं श्रवणकऱ्याहै ईहां व्ययनाम नाशकाहै तानाशतैंजोरहितहोवै ताकानाम अव्ययहै इति ॥ २ ॥ ॥

एवमेतद्यथात्थत्वमात्मानंपरमेश्वर ॥ द्रष्टुमिच्छामितेरूपमैश्वरंपुरुषोत्तम ॥ ३ ॥

एवं । एतत् । यथा । आत्थ । त्वं । आत्मानं । परमेश्वर । द्रष्टुं । इच्छामि । ते । रूपं । ऐश्वरं । पुरुषोत्तम ॥ इतिपदच्छेदः

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेपरमेश्वर जिसप्रकारतैं आपणेआत्माकूं तूं कथनकरताहैं सोआपकाकहणा यथार्थहींहै
तथापि हेपुरुषोत्तम तुमारा ऐश्वर रूपदेखणेकूं मैं इच्छाकरताहूं ॥ ३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेपरमेश्वर जिस सोपाधिक निरतिशयऐश्वर्यरूपकरिकै तथा जिस निरुपाधिक निरतिशयऐश्वर्यरूपकरिकै आप आपणेस्वरूपकूं कथनकरतेभयेहो ॥ सोआपकाकहणा यथार्थहींहै ॥ किसीकालविषेभी आपकाकहणा अयथार्थनहींहै ॥ अर्थात् तुमारेवचनविषे कहांभी हमारेकूं अविश्वासकीशंकानहींहै ॥ हेपुरुषोत्तम यद्यपि हमारा आपकेवचनोंविषे दृढविश्वासहै ॥ तथापि कृतार्थहोणेकीइच्छाकरिकै मैंअर्जुन तुमारे ऐश्वररूपकेदेखणेकीइच्छाकरताहूं ॥ अर्थात् ज्ञान ऐश्वर्य शक्ति बल वीर्य तेज इत्यादिकगुणोंकरिकैसंपन्न जोआपईश्वरका अद्भुतस्वरूपहै ताकानाम ऐश्वररूपहै तारूपकेदेखणेकीमैंइच्छाकरताहूं ॥ तहां सर्वपुरुषोंतैं सर्वज्ञतादिकगुणोंकरिकै जो उत्तमहोवै ताकानाम पुरुषोत्तमहै ॥ इसपुरुषोत्तमसंबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्के प्रति यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ हेभगवन्तुमारेवचनविषे हमारेकूं अविश्वासनहींहै ॥ तथा आपके तिसऐश्वररूपकेदेखणेकीइच्छाभी हमारेकूंबहुतहै ॥ इसहमारेहृदयकेवृत्तांतकूं आप सर्वज्ञहोणेतैं तथाअंतर्यामीहोणेतैं जानतेहींहो इति ॥ ३ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन तुमारेकरिकै देखणेकूंअशक्य जोहमारास्वरूपहै ॥ तिसस्वरूपकेदेखणेकीइच्छा तूं किसवासतैंकरताहैं ॥ जोवस्तुदेखणेकूंशक्यहोवैहै ॥ तिसवस्तुकेहीं देखणेकीइच्छाकरणी उचितहोवैहै ॥ ऐसो श्रीभगवान्कीशंकाकेहूए अर्जुन कहेहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मन्यसेयदितच्छक्यंमयाद्रष्टुमितिप्रभो ॥ योगेश्वरततोमेत्वंदर्शयात्मानमव्ययं ॥ ४ ॥

मन्यसे । यदि । तत् । शक्यं । मया । द्रष्टुं । इति । प्रभो । योगेश्वर । ततः । मे । त्वं । दर्शय । आत्मानं । अव्ययं ॥ इतिपदच्छेदः

हेप्रभो सोतुमारोऐश्वररूप मैंअर्जुननैं देखणेकूं शक्यहै इसप्रकार जबी आप मानतेहोवौ तबी हेयो गीयोंकेईश्वर हमारेतांई आप नाशतैंरहित तिसऐश्वररूपविशिष्ट आत्माकूं दिखावो ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ तहां सृष्टि स्थिति संहार प्रवेश प्रशासन इनपांचोंकेकरणेविषे जो समर्थहोवै ताकानाम प्रभुहै ॥ हेप्रभो अर्थात् हेसर्वकेस्वामिन् ॥ सोआपकाऐश्वररूप मैंअर्जुननैं देखणेकूं शक्यहै ॥ ऐसेजबीआप मानतेहोवौ ॥ अर्थात् ऐसेजबीआप जानतेहोवौ ॥ अथवा यहअर्जुन इसहमारेरूपदेखै ऐसीजबी आप इच्छाकरतेहोवौ ॥ तबीहेसर्वयोगियोंकेईश्वर तिसआपकीइच्छाकेवशतैं मैं अत्यंतजिज्ञासुअर्जुनकेतांई परमकारुणिकआप तिसऐश्वररूपविशिष्ट तथानाशतैंरहित आत्माकूं दिखावौ ॥ अर्थात् तिसआपकेस्वरूपकूं हमारेचक्षुवोंका विषयकरौ ॥ ईहां जेपुरुष अणिमादिकअष्टसिद्धियोंकरिकैयुक्तहैं तिनोंकानाम योगीहै॥तिनसर्वयोगियोंकाजोईश्वरहोवै ताकानाम योगेश्वरहै॥इसयोगेश्वरसंबोधनकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ भगवान्केप्रति सूचनकऱ्या ॥ अणिमादिकसिद्धयोंकरिकैयुक्तजेयोगीपुरुषहैं ॥ तेयोगीपुरुषभी आपणीइच्छाकेवशतैं अशक्यकार्यकूंभी सिद्धकरिसकेहै॥ और आपतौं तिनयोगीयोंकेभी ईश्वरहो॥अर्थात् आपपरमेश्वरकेध्यानकरिकैहीं तिन योगीपुरुषोंकूं ऐसा सामर्थ्य प्राप्तभयाहै ॥ यातैं आप जोकदाचित् तिसस्वरूपकेदिखावणेकीइच्छाकरौंगे ॥ तौं मैंअर्जुन

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तिसआपकेस्वरूपकूं अवश्यकरिकैदेखूंगा इति ॥ अथवा (हेयोगेश्वर) इससंबोधनका यहदूसराअर्थ करणा ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका जो जीवब्रह्मकेएकत्वकादर्शनरूपज्ञानयोगहै ताकानाम योगहै ॥ तायोगकाजोईश्वरहोवै ॥ अर्थात् अधिकारीजनोंकेप्रति ताज्ञानयोगकीप्राप्तिकरणेविषे जोसमर्थहोवै ताकानाम योगेश्वरहै इति॥ ४॥ * ॥इसप्रकार अत्यंतभक्तअर्जुनकरिकै प्रार्थनाकऱ्याहूआ श्रीभगवान् ताअर्जुनकेप्रति तिसस्वरूपकेदिखावणेकीइच्छाकरताहूआ कहेहै ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ पश्यमेपार्थरूपाणिशतशोऽथसहस्रशः॥नानाविधानिदिव्यानिनानावर्णाकृतीनिच ॥ ५ ॥

पश्यामे । पार्थ । रूपाणि।शतशः । अथासहस्रशः । नानाविधानि । दिव्यानि । नानावर्णाकृतीनि।च॥इतिपदच्छेदः

हेपार्थ नानाप्रकारकेवर्णतथाआकृतिहैंजिनोंके ऐसे नानाप्रकारके अद्भुत अनेक शत तथा अनेकसहस्र मैंपरमेश्वरके रूपोंकूं तूं देखं ॥ ५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ ईहां इसश्लोकतैं आदिलैकेअगलेच्यारिश्लोकोंविषे क्रमतैं (पश्य) इसशब्दकीआवृत्ति करिकै श्रीभगवान् तेआपणेदिव्यरूप मैं तुमारेकूंदिखावताहूं तूं सावधानहोउ इसप्रकार ताअर्जुनकूं अभिमुखकरताभयाहै ॥ और (शतशःअथसहस्रशः) इनसंख्यावाचकशब्दोंपदोंकरिकै श्रीभगवान्नैं तिनरूपोंविषे अपरिमितरूपता कथनकरीहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ हेअर्जुन विलक्षणविलक्षण नीलपीतादिकवर्ण हैंजिनोंके तथाविलक्षणविलक्षण

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अवयवोंकीरचनाविशेषर [illegible] नोंको ऐसेजे अनेकप्रकारके तथाअत्यंतअद्भुत तथाअपरिमितसंख्यावाले मैंपरमेश्वरकेरूपहैं तिनरूपोंकूं तूंदेख ॥ अर्थात् तिनरूपोंकेदेखणेकूं तूं योग्यहोउ इति ॥ ५ ॥ * ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति आपणे दिव्यरूपोंकेदिखावणेकीप्रतिज्ञा करी ॥ अब तिसप्रतिज्ञाकेपूर्ण करणेवासतै श्रीभगवान् तिसअर्जुनकेप्रति दोश्लोकोंकरिकै यत्किंचित्मात्र तेआपणेरूप कथनकरेहै ॥

पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौमरुतस्तथा॥ बहून्यदृष्टपूर्वाणिपश्याश्चर्याणिभारत॥६॥

पश्य । आदित्यान् । वसून् । रुद्रान् । अश्विनौ । मरुतः । तथा । बहूनि । अदृष्टपूर्वाणि । पश्य । आश्चर्याणि । भारत॥इतिप०

हेअर्जुन तूं आदित्योंकूं तथावसुवोंकूं तथारुद्रोंकूं तथाअश्विनीकुमारोंकूं तथामरु
तोंकूं देख तथा पूर्वनहींदेखेहूए बहुत अद्भुतरूपोंकूं देख ॥ ६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तूं द्वादशआदित्योंकूंदेख ॥ तथा अष्टवसुवोंकूंदेख ॥ तथा एकादशरुद्रोंकूंदेख तथा दोनोंअश्विनीकुमारोंकूंदेख ॥ तथा ओगणपंचास मरुतोंकूंदेख ॥ तथा इनोंतैंअन्य दूसरेभोदेवतावोंकूं तूं देख ॥ हेअर्जुन जेरूप तैंअर्जुननै तथा किसीअन्यप्राणीनैं इसमनुष्यलोकविषे कबीभी देखेनहींहैं ॥ ऐसेबहुतअद्भुतरूपोंकूं अबीतूंदेख इति ॥ तहां (बहूनि) यहवचन (शतशोथसहस्रशः) इसपूर्वउक्तवचनका व्याख्यानरूपहै ॥ और (आदित्यान्वसून् रुद्रानश्विनौमरुतस्तथा॥) यहवचन (नानाविधानि) इसपूर्वउक्तवचनका व्याख्यानरूपहै ॥ और (अदृष्टपूर्वाणि)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यहवचन (दिव्यानि) इसपूर्वउक्तवचनका व्याख्यानरूपहै ॥ और (आश्चर्याणि) यहवचन (नानावर्णाकृतीनि च) इसपूर्वउक्तवचनका व्याख्यानरूपहैं इति ॥ ६ ॥ * ॥ हेअर्जुन केवल इतनैंमात्ररूपोंकूंहीं तूं देखणेयोग्यनहींहैं ॥ किंतु यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगतहीं हमारेदेहविषेस्थितहूआतूंदेख ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

इहैकस्थंजगत्कृत्स्नंपश्याद्यसचराचरं॥ ममदेहेगुडाकेशयच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि॥ ७ ॥

इह। एकस्थं। जगत्। कृत्स्नं। पश्य। अद्य। सचराचरं। मम। देहे। गुडाकेश। यत्। च। अन्यत्। द्रष्टुं। इच्छसि॥इतिप०

हेअर्जुन हमारे इस देहविषे एकअवयवविषेस्थित जंगमस्थावरसहित समस्त जगत्कूं तूं आज देखं तथा जोकोई अन्यभीजयपराजयादिक देखणेकूं इच्छाकरताहैं सोभीदेख ॥ ७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेगुडाकेश अर्थात् हेनिद्राकूंजयकरणेहारा अर्जुन ॥ इसहमारेदेहविषे किसीएक नखकेअग्रमात्ररूपअवयवविषेस्थित इसस्थावरजंगमसहित समग्रजगत्कूं तूं अबी देख ॥ जोसर्वजगत् तिसतिसस्थानविषेभ्रमणकरिकै शतकोटीवर्षपर्यंतभी देखणेकूंअशक्यहै ॥ तिससर्वजगत्कूं तूं अबी एकत्रस्थितहूआहींदेख ॥ हेअर्जुन जोकोई अन्यभी जयपराजयादिकोंकेदेखणेकोइच्छाकरताहोवैं ॥ तिनजयपराजयादिकोंकूंभी तूं आपणेसंशयकीनिवृत्तिकरणे वासतै इसहमारेदेहविषेदेख इति ॥ ७ ॥ * ॥ तहां (मन्यसेयदितच्छक्यंमयाद्रष्टुमितिप्रभो) अर्थयह ॥ सोआप काऐश्वररूप मैंअर्जुननैं [illegible] इसप्रकार जोआप मानतेहोवै तौं सोरूप हमारेकूंदिखावो ॥ यहजोवचन पूर्व

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अर्जुननैं श्रीभगवान्केप्रति [illegible] ॥ तिसरूपकेदेखणेविषे श्रीभगवान् अब किंचित्विशेषता कथनकरेहै ॥

नतुमांशक्यसेद्रष्टुमनेनैवस्वचक्षुषा ॥ दिव्यंददामितेचक्षुःपश्यमेयोगमैश्वरं ॥ ८ ॥

नं । तु । मां । शक्यसे । द्रष्टुं । अनेन । एव । स्वचक्षुषा । दिव्यं । ददामि । ते । चक्षुः । पश्य । मे । योगं । ऐश्वरं ॥ इतिपदच्छे०

हेअर्जुन तूं पुनः इस आपणोचक्षुकरिकै दिव्यरूपमैंपरमेश्वरकूं कदाचित्भी देखणेकूं नहीं समर्थहैं इसकारणतैं मैंपरमेश्वर तुमारेतांई दिव्य चक्षु देताहूं तिसदिव्यचक्षुकरिकै मैंपरमेश्वरके ऐश्वररूप योगकूं तूंदेख ॥८॥इतिप०

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहस्वभावतैंसिद्ध जोतुमाराप्राकृतचक्षुहै ॥ इसप्राकृतचक्षुकरिकै दिव्यरूपवालेमैंपरमेश्वरके देखणेकूं तूं कदाचित्भी समर्थनहींहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तबी मैंअर्जुन तिसतुमारेस्वरूपकूं कैसेदेखसकउगा ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (दिव्यंइति) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके तिसदिव्यरूपकेदेखणेविषेसमर्थ ऐसी दिव्य कहीये अप्राकृतचक्षुकूं मैंपरमेश्वर तुमारेतांई देताहूं ॥ तिसदिव्यचक्षुकरिकै तूं अर्जुन मैंपरमेश्वरकेयोगकूं अर्थात् नबनतेहूएअर्थकेबनावनेकोसामर्थ्यतारूपयोगकूं देख ॥ कैसाहैसोयोग ऐश्वरहै ॥ अर्थात् मैंईश्वरकाहीं असाधारणधर्महै ॥ अन्यकिसीविषे सोयोग रहतानहीं ॥ ईहां किसोपुस्तकविषे (नतुमांशक्यसे) इसप्रकारकाभी पाठहोवैहै ॥ तापाठका यहअर्थकरणा ॥ तूं अर्जुन इसचक्षुकरिकै दिव्यरूपवालेमैंपरमेश्वरकेदेखणेकूं समर्थनहींहोवैंगा इति ॥ ८ ॥ ※ ॥ तहां श्रीभगवान् अर्जुनकेतांई सोआपणादिव्यरूप दिखावताभया ॥ तिसरू

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पकूंदेखिकै अत्यंतविस्मयकूंप्राप्तहूआ सोअर्जुन श्रीभगवान्केप्रति सोदेख्याहूआदिव्यरूप कथनकरताभया ॥ इसवृत्तांतकूं (एवमुक्त्वा) इत्यादिकषट्श्लोकोंकरिकै धृतराष्ट्रकेप्रति संजयकहेहै ॥

संजयउवाच ॥ एवमुक्त्वाततोराजन्महायोगेश्वरोहरिः ॥ दर्शयामासपार्थायपरमंरूपमैश्वरं ॥ ९ ॥

एवं । उक्त्वा । ततः । राजन् । महायोगेश्वरः । हरिः । दर्शयामास । पार्थाय । परमं । रूपं । ऐश्वरं ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेधृतराष्ट्र सोमहानयोगेश्वर कृष्णभगवान् इसप्रकारकावचन कहिकै तिसतैंअनंतर अर्जुनकेतांई आपणे दिव्य ऐश्वर रूपकूं दिखावताभया ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र सोमहायोगेश्वरहरि अर्थात् सर्वतैंउत्कृष्ट तथासर्वयोगीजनोंकाईश्वर तथाआपणेभक्तजनोंके सर्वक्लेशोंकूंहरणकरणेहारा कृष्णभगवान् ॥ इसप्राकृत चक्षुकरिकै तूं अर्जुन दिव्यरूपमैंपरमेश्वरकूं नहींदेखसकैंगा यातैं मैं तुमारेकूं दिव्यचक्षुदेताहूं याप्रकारकावचन तिसअर्जुनकेप्रति कहिकै ॥ तिसदिव्यचक्षुकेदेणेतैंअनंतर तिस अनन्यभक्त अर्जुनकेतांई देखणेविषेअशक्यभीआपणेदिव्यऐश्वररूपकूं दिखावताभया इति ॥ ९ ॥ * ॥ अब तिसदिव्यरूपकूं अनेकविशेषणोंकरिकैयुक्त कथनकरेहैं ॥

अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनं ॥ अनेकदिव्याभरणंदिव्यानेकोद्यतायुधं ॥ १० ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनेकवक्त्रनयनं । अद्भुतवान् नैं हमारे अनेकदिव्याभरणं । दिव्यानेकोद्यतायुधं ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेराजन् अनेकहैंमुखतथानेत्रजिसविषे तथा अनेकअद्भुतवस्तुवोंकाहैदर्शनजिसविषे तथा अनेकभूषणहैं जिसविषे तथा दिव्यअनेकउठाएहूएहैंआयुधजिसविषे ऐसेरूपकूं सोभगवान् दिखावताभया॥१०॥इतिप० ॥ टीका ॥ हेराजन् अनेकहैंमुख तथानेत्र जिसरूपविषे ॥ तथा विस्मयकीप्राप्तिकरणेहारे अनेकवस्तुवोंकाहैदर्शन जिसरूपविषे ॥ तथा अनेकदिव्यभूषणहैंजिसरूपविषे ॥ तथा उठाएहूएहैंचक्रगदाआदिकअनेकदिव्यआयुधजिसस्वरूपविषे ॥ ऐसेस्वरूपकूं सोकृष्णभगवान् तिसअर्जुनकेतांई दिखावताभया इति ॥ १० ॥ ※ ॥ किंच ॥

दिव्यमाल्यांबरधरंदिव्यगंधानुलेपनं॥सर्वाश्चर्यमयंदेवमनंतंविश्वतोमुखं ॥ ११ ॥

दिव्यमाल्यांबरधरं । दिव्यगंधानुलेपनं । सर्वाश्चर्यमयं । देवं । अनंतं । विश्वतोमुखं ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेराजन् दिव्यमालातथावस्त्रधारणकरेहैंजिसनैं तथा दिव्यगंधवालेवस्तुवोंकाहैलेपनजिसविषे तथासर्वआश्चर्यमय तथाप्रकाशरूप तथाअपरिच्छिन्न तथा सर्वओरतैंहैंमुखजिसविषे ऐसेरूपकूं दिखावताभया॥११॥इतिप०॥ ॥ टीका ॥ हेराजन् पुष्पमय तथारत्नमय ऐसीजेदिव्यमालाहैं ॥ तिनदिव्यमालावोंकूं धारणकऱ्याहैजिसनैं ॥ तथा पीतांबरादिकदिव्यवस्त्रोंकूं धारणकऱ्याहैजिसनैं ॥ तथा दिव्यगंधवालेकर्पूरचंदनादिकोंकाहैलेपनजिसविषे ॥ तथा सर्वाश्चर्यमयहै ॥ अर्थात् तेज बल वीर्य शक्ति रूप गुण अवयव अवस्थान इत्यादिकसर्वविशेषोंकरिकै अनेकअद्भुत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूपोंवालाहै ॥ पुनःकैसाहैसोरूप देवहै ॥ अर्थात् प्रकाशस्वरूपहै ॥ पुनःकैसाहैसोरूप अनंतहै ॥ अर्थात् देशकाल वस्तुपरिच्छेदतैंरहितहै ॥ पुनःकैसाहैसोरूप विश्वतोमुखहै ॥ अर्थात् सर्वओरतैंहैंमुखजिसविषे ॥ ऐसेआपणेस्वरूपकूं श्रीभगवान् ताअर्जुनकेप्रति दिखावताभया ॥ इसप्रकारतैं पूर्वअष्टमेश्लोकविषेस्थित (दर्शयामास) इसपदकेसाथि इनदोनोंश्लोकोंका अन्वयकरणा ॥ अथवा अर्जुनोददर्श इसपदकाअध्याहारकरिकै इनदोनोंश्लोकोंका अन्वयकरणा ॥ अर्थात् ऐसेस्वरूपकूं सोअर्जुन देखताभया इति ॥ ११ ॥* ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे तिसविश्वरूपका (देवं) यहविशेषण कथनकऱ्याथा ॥ अब तिसीविशेषणका इसश्लोकविषे विस्तारतैंवर्णनकरेहैं ॥

दिविसूर्यसहस्रस्यभवेद्युगपदुत्थिता॥यदिभाःसदृशीसास्याद्भासस्तस्यमहात्मनः १२

दिवि। सूर्यसहस्रस्य। भवेत्। युगपत्। उत्थिता। यदि। भाः। सदृशी। सा। स्यात्। भासः। तस्य। महात्मनः ॥इतिप०

हेराजन् आकाशविषे एकहींकालमैं जबो सहस्रसूर्यकी प्रभा उत्थितहूई होवै तबो सोप्रभा तिस विश्वरूपकी प्रभाके तुल्य होवै ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् आकाशविषे सहस्रसूर्यकी अर्थात् एकहींकालविषेउदयहूए अपरिमितसूर्योंकेसमूहकी एकहींकालविषे जोकदाचित् प्रभा उत्थितहूईहोवै॥ तौं साप्रभा तिसविश्वरूपकोप्रभाकेतुल्यहोवै ॥ अथवा नहींभीतुल्यहोवै॥ और मैंतौं यहमानताहूं ॥ तिनसूर्योंकीप्रभा [illegible] पकीप्रभा अत्यंतउत्कृष्टहै ॥ इसतैंपरेदूसरीकोईउपमाहैनहीं ॥ तहां एक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हींकालविषे अपरिमितसूर्योंका उत्थानहैं इसहेतुभवतानहीं ॥ यातैं यहउपमा अभूतउपमाहै ॥ ताअभूतउपमाकरिकै यह अर्थ सूचनकऱ्या ॥ सर्वप्रकारतैं तादिश्वरूपकेप्रभाकीउपमा संभवतीनहीं इति ॥ १२ ॥ ॥ तहांपूर्व (इहैकस्थंजगत्कृत्स्नंपश्याद्यसचराचरं) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति आपणे देहकेकिसीअवयवविषे सर्वजगत्केदेखणेकीआज्ञाकरीथी ॥ सोअर्जुन तिसअर्थकूंभी अनुभवकरताभया ॥ यहवार्त्ताभी संजय धृतराष्ट्रकेप्रति कथनकरेहै ॥

तत्रैकस्थंजगत्कृत्स्नंप्रविभक्तमनेकधा ॥ अपश्यद्देवदेवस्यशरीरेपांडवस्तदा ॥ १३ ॥

तत्र । एकस्थं । जगत् । कृत्स्नं । प्रविभक्तं । अनेकधा । अपश्यत् । देवदेवस्य । शरीरे । पांडवः । तदा ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेराजन् तिसकालविषे सोअर्जुन देवतावोंकरिकैपूज्यभगवान्के तिस विश्वरूपशरीरविषे किसीएकदेशविषेस्थित अनेकप्रकारकरिकै भिन्नभिन्न सर्व जगत्कूं देखताभया ॥ १३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् जिसकालविषे श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति आश्चर्यमय विश्वरूप दिखाया ॥ तिसकालविषे सोअर्जुन इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकरिकै पूज्यभगवान्के तिसविश्वरूपशरीरविषे किसीएकअवयवविषे सर्वजगत्कूं देखताभया ॥ कैसाहैसोजगत् ॥ देव पितर मनुष्य इत्यादिकअनेकप्रकारोंकरिकै भिन्नभिन्नहै इति ॥ १३ ॥ * ॥ हेधृतराष्ट्र इसप्रकार अद्भुतविश्वरूपकेदर्शनहूएभी सोअर्जुन भयकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ तथा तिसरूपकूंदेखिकै सोअर्जुन आपणेनेत्रोंकूंभी नहींमूदताभया ॥ तथा संभ्रमकेवशतैं साअर्जुन तिसकालविषे अवश्यकर्त्तव्यअर्थकूं विस्मरणभीनहींकरताभया ॥ तथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भयभातहोइकै सोअर्जुन तिसदेशतैं भागताभीनहींभया ॥ किंतु महान्चित्तक्षोभकेप्राप्तहूएभी अत्यंतधैर्यवालाहोणे तैं सो अर्जुन तिसकालविषे उचितव्यवहारकूंहीं करताभया ॥ यहसर्वअर्थ संजय धृतराष्ट्रकेप्रति कथनकरेहै ॥

ततःसविस्मयाविष्टोहृष्टरोमाधनंजयः ॥ प्रणम्यशिरसादेवंकृतांजलिरभाषत ॥ १४ ॥

तंतः । सँः । विस्मयाविष्टः । हृष्टरोमा । धनंजयः । प्रणम्य । शिरसा । देवं । कृतांजलिः । अभाषत ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेधृतराष्ट्र तिसतैं अनंतर विस्मयकरिकै व्याप्तहूआ तथापुलकितरोमांचवालाहूआ सो धनंजय तिसनारायणदेव कूं आपणेमस्तककरिकै नमस्कारकरिकै आपणेदोनोंहस्तजोडिकै यहवचनकहताभया ॥ १४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् युधिष्ठिरराजाकेराजसूययज्ञवासतै सर्वराजोंकूंजीतिकै सोअर्जुन धनकूंलेआवताभयाहै ॥ यातैं ताअर्जुनकूं धनंजयकहेहै ॥ तथा सोअर्जुन साक्षात् महादेवकेसाथिभी युद्धकरताभयाहै ॥ ऐसा अत्यंतप्रसिद्धपरा क्रमवाला तथाअग्निकीन्यांई अत्यंततेजस्वी तथाअत्यंतधैर्यवान् सोअर्जुन तिसविश्वरूपकेदर्शनतैंअनंतर विस्मय करिकैआविष्टहूआ ॥ अर्थात् तिसअद्भुतरूपकेदर्शनतैंउत्पन्नभयाजो चित्तकाकोईअलौकिकचमत्काररूपविस्मयहै तात्रिस्मयकरिकै व्याप्तहूआ ॥ इसीकारणतैंहीं हृष्टरोमाहूआ ॥ अर्थात् तात्रिस्मयकरिकै पुलकितहूएहैंसर्वशरीर केरोमांचजिसके ॥ ऐसासोअर्जुन तिसविश्वरूपकेधारणकरणेहारेनारायणदेवकूं भूमिविषेलगायेहूएआपणेमस्तक करिकै तथाआपणेदोनोंहस्तोंकूंजोडिकै इसवक्ष्यमाणवचनकूं कहताभया अत्यंतश्रद्धाभक्तिपूर्वक

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इति ॥ १४ ॥ ※ ॥ तहां श्रीभगवान्नैं हमारेप्रति जोविश्वरूप दिखायाहै ॥ सोविश्वरूप यद्यपि सर्वलोकोंकरिकै देखणेकूंअशक्यहै तथापि श्रीभगवान्नैं प्राप्तकऱ्येहूएदिव्यचक्षुकरिकै मैंअर्जुन तिसविश्वरूपकूं प्रत्यक्षदेखताहूं ॥ यातैं हमारेकोई अहोभाग्यहैं ॥ इसप्रकार आपणेअनुभवकूंप्रगटकरताहूआ सोअर्जुन श्रीभगवान्केप्रति कहेह ॥

अर्जुनउवाच ॥ पश्यामिदेवांस्तवदेवदेहेसर्वांस्तथाभूताविशेषसंघान् ॥
ब्रह्माणमीशंकमलासनस्थमृषींश्चसर्वानुरगांश्चदिव्यान् ॥ १५॥

पश्यामि । देवान् । तव । देव । देहे । सर्वान् । तथा । भूतविशेषसंघान् । ब्रह्माणं । ईशं । कमलासनस्थं । ऋषीन् । च । सर्वान् । उरगान् । च । दिव्यान् ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेदेव तुमारे इसविश्वरूपदेहविषे मैंअर्जुन सर्व देवतावोंकूं देखताहूं तथा स्थावरजंगमरूप भूतोंकेसमूहकूं देखताहूं तथा कमलरूपआसनविषेस्थित सर्वकेनियंता चतुर्मुखब्रह्माकूं देख ताहूं तथा सर्व ऋषियोंकूं देखताहूं तथा दिव्य सर्पोंकूं देखताहूं ॥ १५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेविश्वरूपकेधारणकरणेहारे नारायणदेव ॥ तुमारेइसविश्वरूपदेहविषे मैंअर्जुन वसु रुद्र आदित्य इत्यादिकसर्वदेवतावोंकूं देखताहूं ॥ अर्थात् इसदिव्यचक्षुजन्यज्ञानकाविषय करताहूं ॥ याप्रकारका (पश्यामि) इसशब्दकाअर्थ आगेभीसर्वपर्यायोंविषेजानिलेणा ॥ तथा इसतुमारेविश्वरूपदेहविषे मैंअर्जुन स्थावरजंगमरूपस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

र्वभूतोंकेसमूहकूंभी देखताहूं ॥ और सर्वभूतोंकानियंता जोचतुर्मुखब्रह्माहै ॥ जोब्रह्मा कमलरूपआसनविषेस्थितहै ॥ अर्थात् पृथिवीरूपकमलका कर्णिकारूपजोसुमेरुहै तासुमेरुरूपआसनविषेस्थितहै ॥ अथवा विष्णुभगवान्के नाभिकमलरूपआसनविषेस्थितहै ॥ ऐसेचतुर्मुखब्रह्माकूंभी मैंअर्जुन तुमारेइसविश्वरूपदेहविषेदेखताहूं ॥ तथा वसिष्ठतैंआदिलैके जेब्रह्माकेपुत्ररूप नारदसनकादिकऋषिहैं तिनसर्वऋषियोंकूंभी मैं तुमारेइसविश्वरूपदेहविषेदेखताहूं ॥ तथा इसलोकविषेअप्रसिद्ध जेवासुकीआदिकसर्पहैं तिनसर्पोंकूंभी मैं तुमारेइसविश्वरूपदेहविषेदेखताहूं इति ॥ १५ ॥ ※ ॥ तहां जिस भगवान्केविश्वरूपदेहविषे सोअर्जुन इनपूर्वउक्तसर्वपदार्थोंकूं देखताभयाहै ॥ तिसीविश्वरूपदेहकूं सोअर्जुन अब अनेकअद्भुतविशेषणोंकरिकै वर्णनकरेहै ॥

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रंपश्यामित्वांसर्वतोनंतरूपं ॥ नांतंन मध्यंनपुनस्तवादिंपश्यामिविश्वेश्वरविश्वरूप ॥ १६ ॥

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं । पश्यामि । त्वां । सर्वतः । अनंतरूपं । न । अंतं । न । मध्यं । न । पुनः । तव । आदिं । पश्यामि । विश्वेश्वर । विश्वरूप ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेसर्वविश्वकाईश्वर हेसर्वविश्वरूप अनेकहैंबाहूउदरमुखनेत्रजिसविषे तथासर्वत्र अनंतहैंरूपजिसके ऐसेतुमारेकं मैंअर्जुन देखताहूं पुनः तुमारे अंतकूंभी मैं नहीं देखताहूं तथामध्यकूंभी नहीं देखताहूं तथाआदिकूंभी नहींदेखताहूं ॥ इ०प०

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेसर्वविश्वकाईश्वर तथाहेसर्वविश्वरूप श्रीभगवान् ॥ अनेकहैंबाहुजिसविषे तथाअनेकहैंउदरजिसविषे तथाअनेकहैंमुखजिसविषे तथाअनेकहैंनेत्रजिसविषे ऐसेतुमारेविश्वरूपकूं मैंअर्जुन इसदिव्यचक्षुकरिकैंदेखताहूं ॥ तथा सर्वत्रअनंतहैंरूपजिसके ऐसेतुमारेकूं मैं देखताहूं ॥ तथा तुमारे अवसानरूपअंतकूंभी मैं देखतानहीं ॥ तथा तुमारे मध्यकूंभी मैं देखतानहीं ॥ तथा तुमारे आदिकूंभी मैं देखतानहीं ॥ काहेतैं जोपदार्थ देशकरिकै अथवा कालकरिकै परिच्छिन्नहोवैहै ॥ तिसपदार्थकाहीं आदि मध्य अंतहोवैहै ॥ और आपतौं सर्वदेशविषे तथासर्वकालविषे विद्यमानहो ॥ यातैं आपका सोआदिमध्यअंत संभवतानहीं ॥ ईहां (हेविश्वेश्वर हेविश्वरूप) यहजोदोसंबोधन भगवान्के अर्जुननैं कथनकरेहैं ॥ सो तिसकालविषे अतिसंभ्रमतैं कथनकरेहैं इति ॥ १६ ॥ ❋ ॥ अब अर्जुन तिसीविश्वरूपभगवान्कूं अन्यप्रकारतैं अनेकविशेषणोंकरिकैयुक्तकथनकरेहै ॥

किरीटिनंगदिनंचक्रिणंचतेजोराशिंसर्वतोदीप्तिमंतं॥पश्या
मित्वांदुर्निरीक्षंसमंतादीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयं ॥ १७ ॥

किरीटिनं । गदिनं । चक्रिणं । च । तेजोराशिं । सर्वतः । दीप्तिमंतं । पश्यामि ।
त्वां । दुर्निरीक्षं । समंतात् । दीप्तानलार्कद्युतिं । अप्रमेयं ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेभगवन् किरीटकूंधारणकरणेहारे तथागदाकूंधारणकरणेहारे तथाचक्रकूंधारणकरणेहारे तथा तेज

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कासमूहरूप तथांसर्वओरतैं प्रकाशमान तथादेखणेकूंअशक्य तथाप्रकाशमानअग्निसूर्यकेप्रभाकीन्यांई प्र
भावाले तथांअप्रमेय ऐसेतुमारेकूं मैंअर्जुन सर्वओरतैं देखताहूं ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् कैसाहैसोआपकाविश्वरूप ॥ मस्तकऊपरि मुकुटकूंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा हस्तोंविषे गदा
कूंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा चक्रकूंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा सर्वओरतैं प्रकाशमानहै ॥ तथा सर्वतेजकासमूहरू
पहै ॥ इसकारणतैहीं दुर्निरीक्षहै ॥ अर्थात् इसदिव्यचक्षुतैंविना देखणेकूंअशक्यहै ॥ ईहां (दुर्निरीक्ष्यं) इसप्रका
रकाजो मूलश्लोकविषेपाठहोवै ॥ तौं दुः यहशब्द निषेधकावाचकजानणा ॥ अर्थात् सोआपकास्वरूप नहींदे
ख्याजावैहै ॥ पुनःकैसाहैसोविश्वरूप ॥ अत्यंतदीप्तिमान्जोअग्निसूर्यहैं ॥ तिनअग्निसूर्यदोनोंकेप्रभाकीन्यांईहै प्र
भाजिसकी ॥ तथा अप्रमेयहै ॥ अर्थात् इसप्रकारका यहस्वरूपहै याप्रकारतैं निश्चयकरणेकूंअशक्यहै ॥ ऐसेस्व
रूपकूंधारणकरणेहारेतुमारेकूं सर्वओरतैं मैंअर्जुन इसदिव्यचक्षुकरिकैदेखताहूं ॥ यद्यपि (दुर्निरीक्ष्यं) इसवचनक
रिकै अर्जुननैं ताविश्वरूपकेदर्शनकानिषेध कथनकऱ्याथा ॥ और (पश्यामि) इसवचनकरिकै ताविश्वरूपकादर्श
न कथनकऱ्याहै ॥ यातैं पूर्वउत्तरवचनकाविरोध प्राप्तहोवैहै ॥ तथापि अधिकारीकेभेदतैं तेदोनोंवचन संभवैहैं ॥
तहां दिव्यचक्षुतैंरहितपुरुषकूंतौं सोविश्वरूपदेखणेकूंअशक्यहै ॥ और दिव्यचक्षुवालेपुरुषकूं सोविश्वरूप देखणे
कूंशक्यहै इति ॥ १७ ॥ * ॥ हेभगवन् बुद्धिमान्पुरुषोंकरिकैभी तर्कनाकरणेकूंअशक्य ऐसाजोतुमारा निरति
शयऐश्वर्यहै ॥ ताऐश्वर्यकेदर्शनतैंमैंअर्जुन आपपरमेश्वरकूंइसप्रकारका मानताहूं ॥ इसवार्ताकूं अर्जुन कथनकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्वमक्षरंपरमंवेदितव्यंत्वमस्यविश्वस्यपरंनिधानं ॥ त्वम
व्ययःशाश्वतधर्मगोप्तासनातनस्त्वंपुरुषोमतोमे ॥ १८ ॥

त्वं । अक्षरं । परमं । वेदितव्यं । त्वं । अस्य । विश्वस्य । परं । निधानं । त्वं ।
अव्ययः । शाश्वतधर्मगोप्ता । सनातनः । त्वं । पुरुषः । मतः । मे ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेभगवन् आपहीं परम अक्षरहो तथाआपहीं जानणेयोग्यहो तथाआपहीं इस जगत्का परम आश्रयहो तथाआपहीं अव्ययहो तथाअनादिधर्मकापालकहो तथाआपहीं सनातन परमात्मापुरुष हमारेकूं संमतहो ॥१८॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥हेभगवन् ।(एतद्वैतदक्षरंगार्गि।)इत्यादिकश्रुतिनैं अक्षररूपकरिकैप्रतिपादनकऱ्याहूआ तथा। (अव्यक्तात्पुरुषः परः।)इत्यादिकश्रुतिनैं सर्वतैंपररूपकरिकैप्रतिपादनकऱ्याहूआ जोनिर्गुणब्रह्महै॥सोनिर्गुणब्रह्मरूपभी आपहींहो ॥ जिसकारणतैं आप निर्गुणब्रह्मरूपहो ॥ इसकारणतैं आपहीं मुमुक्षुजनोंनैं वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंकरिकै जानणेयोग्यहो ॥ तथा आपहीं इससर्वजगत्का परमआश्रयहो ॥ अर्थात् इससर्वकल्पितप्रपंचका अधिष्ठानरूपहो ॥ इसीकारणतैं हीं आप अव्ययहो ॥ अर्थात् नित्यहो ॥ तथा नित्यवेदकरिकैप्रतिपादितहोणेतैं शाश्वतरूपजोवर्णआश्रमकाधर्महै तादधर्मकेभी आपहीं पालनकरणेहारेहो ॥ अथवा (शाश्वत धर्मगोप्ता) यहदोपदजानणे ॥ तहां शाश्वत यहपदतौं श्रीभगवान्का संबोधनहै ॥ अर्थात् हेशाश्वत हेनित्यरूप ॥ इसपक्षविषे (अव्ययः) इसपदकाविनाशतैंरहित यहअर्थकरणा ॥ इ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सोकारणतैंहीं जोसनातन परमात्मादेवरूपपुरुषहै ॥ सोपरमात्मापुरुषभीआपकूंहीं मैं मानताहूं इति ॥ १८ ॥ * ॥किंच॥

410

अनादिमध्यांतमनंतवीर्यमनंतबाहुंशशिसूर्यनेत्रं ॥ पश्या
मित्वांदीप्तहुताशवक्त्रंस्वतेजसाविश्वमिदंतपंतं ॥ १९ ॥

अनादिमध्यांतं । अनंतवीर्यं । अनंतबाहुं । शशिसूर्यनेत्रं । पश्यामि । त्वां
दीप्तहुताशवक्त्रं । स्वतेजसा । विश्वं । इदं । तपंतं ॥ इतिपदच्छेदः ।

हेभगवन् उत्पत्तिस्थितिनाशतैंरहित तथाअनंतहैप्रभावजिसका तथाअनंतहैंबाहुजिसकी तथा चंद्रमासूर्यहैंनेत्रजिसके तथाप्रज्वलितअग्निहैमुखोंविषेजिसके तथाआपणेतेजकरिकै इस सर्वविश्वकूं तपायमानकरणेहारा ऐसेआपकेस्वरूपकूं मैंअर्जुन देखताहूं ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् पुनःसोआपकाविश्वरूपकैसाहै ॥ उत्पत्तितैंभीरहितहै ॥ तथा स्थितितैंभीरहितहै ॥ तथा विनाशतैंभीरहितहै ॥ तथा अपरिमितहै वीर्य क्या प्रभाव जिसका ॥ तथा अनंतहैंबाहुजिसको ॥ ईहां (अनंतबाहुं) यहशब्द मुखादिकसर्वअवयवोंकीअनंतताका उपलक्षणहै ॥ तथा चंद्रमा सूर्य यहदोनोंहैंनेत्रजिसके ॥ तथा प्रज्वलितअग्निहैमुखजिसका ॥ अथवा प्रज्वलितअग्निहैमुखोंविषेजिसके ॥ तथा आपणेतेजकरिकै इससर्वजगत्कूं तपा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यमानकरणेहाराहै ॥ ऐसे तुमारेइसविश्वरूपकूं मैंअर्जुन इसदिव्यचक्षूकरिकैदेखताहूं इति ॥ १९ ॥ ❋ ॥ अब अर्जुन तिस भगवान्केविश्वरूपकी सर्वत्रव्यापकताकूं कथनकरेहै ॥

द्यावापृथिव्योरिदमंतरंहिव्याप्तंत्वयैकेनदिशश्चसर्वाः ॥
दृष्ट्वाद्भुतंरूपमुग्रंतवेदंलोकत्रयंप्रव्यथितंमहात्मन् ॥ २० ॥

द्यावापृथिव्योः । इदं । अंतरं । हि । व्याप्तं । त्वया । एकेन । दिशः । च । सर्वाः । दृष्ट्वा ।
अद्भुतं । रूपं । उग्रं । तव । इदं । लोकत्रयं । प्रव्यथितं । महात्मन् ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेमहात्मन् तैं एकनैं हीं स्वर्गपृथिवीके मध्यमें यहअंतरिक्ष व्याप्तकऱ्याहै तथा सर्व दिशा व्याप्तकरीहैं तुमारे इस अद्भुत उग्र रूपकूं देखिकै तीनलोक अत्यंतभययुक्तहूएहैं ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेमहात्मन् अर्थात् हेसाधुपुरुषोंकूं अभयकीप्राप्तिकरणेहारा विश्वरूपभगवान् ॥ स्वर्ग पृथिवी इनदोनों केमध्यविषेस्थित जोयहअंतरिक्षलोकहै ॥ सोअंतरिक्ष तैंएकपरमेश्वरनैंहीं व्याप्तकऱ्याहै ॥ तथा पूर्वपश्चिमादिक सर्वदिशाभी तैं विश्वरूपनैंहीं व्याप्तकऱ्याहैं ॥ ईहां अंतरिक्षका तथादिशावोंका ग्रहण स्थावरजंगमरूपसर्वविश्वका उपलक्षणहै ॥ अर्थात् यहस्थावरजंगमरूपसर्वविश्व तैंविश्वरूपपरमेश्वरनैंहीं व्याप्तकऱ्याहै ॥ और जोवस्तु जिसनैं

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

व्याप्तकरीताहै ॥ सोवस्तु तिसकास्वरूपहींहोवैहै ॥ जैसे मृत्तिकानैं व्याप्तकऱ्येहुए घटशरावादिककार्य मृत्तिकास्वरूपहींहोवैहैं ॥ तैसे तैंपरमेश्वरनैं व्याप्तकऱ्याहूआ यहसर्वविश्व तुमाराहींस्वरूपहै ॥ अर्थात् सर्वविश्वरूप तूंहींहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मैवेदंसर्वं ॥) अर्थयह ॥ यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपहींहैं इति ॥ हेभगवन् तुमारे इसविश्वरूपकूंदेखिकै तीनलोक भयकरिकै अत्यंतव्यथाकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ अब ताविश्वरूपकेदर्शनविषे भयकीहेतुतासिद्धकरणेवासतै ताविश्वरूपके हेतुगर्भितदोविशेषणोंकूं अर्जुन कथनकरेहै (अद्भुतं उग्रं इति) हेभगवन् कैसाहैसोतुमाराविश्वरूप अद्भुतहै ॥ अर्थात् आपणेदर्शनतैं अत्यंतविस्मयकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ पुनःकैसाहै सोरूप उग्रहै ॥ अर्थात् महानतेजस्वीहोणेतैं अत्यंतदुःखकरिकैजान्याजावैहै ॥ यातैं हेभगवन् अबी इसआपकेविश्वरूपकूं अंतरधानकरौ इति ॥ २० ॥ ❋ ॥ अब मैंपरमेश्वरहीं सर्वपृथिवीकेभारकासंहारकरणेहाराहूं याप्रकारतैं आपणेविषे सर्वपृथिवीकेभारकासंहारकरतापणेकूंप्रगटकरणेहारेभगवान्कूंदेखिकै सोअर्जुन कहेहै ॥

अमीहित्वासुरसंघाविशंतिकेचिद्भीताःप्रांजलयोगृणंति ॥ स्वस्ती
त्युक्त्वामहर्षिसिद्धसंघाःस्तुवंतित्वांस्तुतिभिःपुष्कलाभिः॥ २१ ॥

अमी । हि । त्वा । सुरसंघाः । विशंति । केचित् । भीताः । प्रांजलयः । गृणंति । स्वस्ति । इति ।
उक्त्वा । महर्षिसिद्धसंघाः । स्तुवंति । त्वां । स्तुतिभिः । पुष्कलाभिः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेभगवन् यह देवतावोंकेसमूह तुमारेप्रति हीं प्रवेशकरेहैं तथाकेईकपुरुष भयकूंप्राप्तहूए दोनोंहा
थोंकूंजोडिकै स्तुतिकरेहैं तथामहाऋषिसिद्धपुरुष इसजगत्कास्वास्तिहोवौ इसप्रकारकावचन
कहिकै तैंपरमेश्वर परिपूर्णअर्थकेबोधक वचनोंकरिकै स्तुतिकरेहैं ॥ २१ ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ भगवन् पृथिवीकेभारकेउत्तारणेवासतै मनुष्यरूपकरिकैअवतारकूंप्राप्तहूए तथादुष्टजनोंकेविनाशकरणेवास
तै युद्धकूंकरतेहूए जेयह वसु आदित्य इत्यादिकदेवतावोंकेसमूहहैं ॥ तेसर्वदेवगण तुमारेविषेहीं प्रवेशकरतेहूए हमारेकूं
देखणेमैआवैहैं ॥ ईहां (त्वा असुरसंघाः) याप्रकारका पदच्छेदकरिकै इसवचनका यहदूसराभीअर्थकरणा ॥ असुरोंका
अंशरूपहोणेतैं असुररूप जेयह दुर्योधनादिकहैं ॥ जेदुर्योधनादिरूपअसुरगण इसपृथिवीविषेभाररूपहै ॥ ऐसेदुर्योध
नादिकअसुरगण दुष्टअदृष्टोंकरिकैप्रेरणाकरेहूए आपणेमरणवासतै तुमारेविषे प्रवेशकरेहैं ॥ जैसे पतंग आपणेमरणवा
सतै अग्निविषे प्रवेशकरेहैं ॥ तथा दोनोंसैनावोंकेमध्यविषे केईकपुरुष भीतहूए अर्थात् भागणेविषेभीअसमर्थहूए आपणे
दोनोंहाथजोडिकै दूरतैंहीं तुमारीस्तुतिकरेहैं ॥ इसप्रकारतैं महान्युद्धकेप्राप्तहूए उत्पातादिकोंकेनिमित्तोंकूंदेखिकै इससर्व
विश्वका स्वस्तिहोवौ अर्थात् रक्षणहोवौ इसप्रकारकेवचनोंकूंकहिकै नारदादिकसर्वमहाऋषि तथाकपिलादिकसर्वसिद्ध
युद्धकेदेखणेवासतै तहांआयेहूए सर्वविश्वकेविनाशकेनिवृत्तकरणेवासतै परिपूर्णअर्थकेबोधक तथागुणोंकीउत्कृष्टताकूंप्र
तिपादनकरणेहारे ऐसेवचनोंकरिकै आपपरमेश्वरकीस्तुतिकूंकरेहैं इति ॥ २१ ॥ ※ ॥ किंच ॥

413

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रुद्रादित्यावसवोयेचसाध्याविश्वेऽश्विनौमरुतश्चोष्मपाश्च ॥ गं
धर्वयक्षासुरसिद्धसंघावीक्षंतेत्वांविस्मिताश्चैवसर्वे ॥ २२ ॥

रुद्रा॑दित्याः । व॑सवः । ये । च॑ । सा॑ध्याः । वि॒श्वे । अ॒श्विनौ॑ । म॑रुतः । च॑ । ऊ॒ष्म॑पाः ।
च॑ । ग॒न्ध॒र्व॒य॒क्षा॒सु॒र॒सि॒द्ध॒सं॒घाः । वी॒क्ष॑ते । त्वा॑ । वि॒स्मि॒ताः । च॑ । ए॒व । सर्वे॑ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेभगवन् जे रुद्रआदित्यहैं तथावसुहैं तथा साध्यहैं तथाविश्वदेवहैं तथाअश्विनीकुमारहैं तथा मरुत्हैं तथा ऊष्मपाहैं तथागंधर्वयक्षअसुरसिद्धोंकेसमूहहैं तेसर्व हीं तुमारेकूं देखतेहैं तथा विस्मयकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः ॥ ॥ टीका ॥ हेभगवन् रुद्रहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा आदित्यहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहैं ॥ तथा वसुहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा साध्यहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा विश्वहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा दोनोंअश्विनीकुमारजोहैं ॥ तथा मरुत्हैनामजिनोंका ऐसेजे ओगणपंचास देवताविशेषहैं ॥ तथा ऊष्मपाहै नामजिनोंका ऐसाजो पितरोंकासमूहहै ॥ जेपितर (ऊष्मभागाहिपितरः) इसश्रुतिविषे ऊष्मपानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ तथा गंधर्वोंकेजोसमूहहैं ॥ तथा यक्षोंकेजोसमूहहैं ॥ तथा असुरोंकेजोसमूहहैं ॥ तथा सिद्धोंकेजोसमूहहैं ॥ यहपूर्वउक्तसर्वहीं तैंविश्वरूपवालेपरमेश्वरकूं देखतेहैं ॥ तिसअद्भुतरूपकेदर्शनतैंअनंतर तेसर्वहीं विस्मयकूंप्राप्तहोवेहैं इति ॥ २२ ॥ * ॥ तहांपूर्व व!

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समेश्लोकविषे (लोकत्रयं प्रव्यथितंमहात्मन्) इसवचनकरिकै ताविश्वरूपकेदर्शनतैं तीनलोकोंकूं भयकीप्राप्ति कथनकरीथी ॥ अब तिसपूर्वउक्तअर्थका उपसंहारकरेहैं ॥

रूपंमहत्तेबहुवक्त्रनेत्रंमहाबाहोबहुबाहूरुपादं ॥ बहूदरं
बहुदंष्ट्राकरालंदृष्ट्वालोकाःप्रव्यथितास्तथाहं ॥ २३ ॥

रूपं । महत् । ते । बहुवक्त्रनेत्रं । महाबाहो । बहुबाहूरुपादं । बहूदरं । बहुदंष्ट्राकरालं । दृष्ट्वा । लोकाः । प्रव्यथिताः । तथा । अहं ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेमहाबाहुवालेभगवन् अत्यंतमहान् तथाबहुतहैंमुखनेत्रजिसविषे तथाबहुतहैंबाहुऊरुपाद जिसविषे तथाबहुतहैंउदरजिसविषे तथाबहुतदंष्ट्रावोंकरिकैअतिभयानक ऐसे तुमारे इसविश्वरूपकूं देखकै सर्वप्राणी तथा मैंअर्जुन व्यथाकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ २३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेमहान्भुजावालेविश्वरूपभगवान् ॥ तुमारे इसअद्भुतविश्वरूपकूंदेखिकै सर्वप्राणीभयकरिकै अतिव्यथाकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ तथा मैंअर्जुनभी तारूपकूंदेखिकै भयकरिकै अतिव्यथाकूंप्राप्तहोताभयाहूं ॥ कैसाहैसोतुमारा विश्वरूप महत्है ॥ अर्थात् अत्यंतमहत्परिमाणवालाहै ॥ पुनःकैसाहैसोतुमारारूप ॥ बहुतहैंमुखजिसविषे ॥ तथा बहुतहैंनेत्रजिसविषे ॥ तथाबहुतहैंभुजाजिसविषे ॥ तथा बहुतहैंऊरुजिसविषे ॥ तथा बहुतहैंपादजिसवि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

षे ॥ तथा बहुतहैंउदरजिसविषे ॥ तथा जोरूप बहुतदंष्ट्रावोंकरिकै अत्यंतभयानकहै ॥ ऐसे आपकेरूपकेदेखणेमा त्रतैंहीं हमारेसहित सर्वप्राणी भयकरिकैपीडितहोतेभयेहैं इति ॥ २३ ॥ ※ ॥ अब अर्जुन तापरमेश्वरके विश्वरूपविषे सोभयानकपणा स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहै ॥

416

नभःस्पृशंदीप्तमनेकवर्णंव्यात्ताननंदीप्तविशालनेत्रं ॥ दृष्ट्वाहि त्वांप्रव्यथितांतरात्माधृतिंनविंदामिशमंचविष्णो ॥ २४ ॥

नभःस्पृशं । दीप्तं । अनेकवर्णं । व्यात्ताननं । दीप्तविशालनेत्रं । दृष्ट्वा । हिं । त्वां । प्रव्यथितांतरात्मा । धृतिं । नं । विंदामि । शमं । चं । विष्णो ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेविष्णुभगवन् संपूर्णआकाशविषेव्यापक तथाअत्यंतप्रज्वलित तथाअनेकहैंवर्णजिसविषे तथाविस्फारितहैंमुखजिसविषे तथाप्रज्वलितविशालहैंनेत्राजिसविषे ऐसेतुमारेकूं देखकै हीं व्यथाकूंप्राप्तहूआ हैमनजिसका ऐसामैंअर्जुन धैर्यकूं तथा शमकूं नहीं प्राप्तहोताहूं ॥ २४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेविष्णु अर्थात् हेसर्वत्रव्यापकभगवन् ॥ मैंअर्जुन तुमारेकूंदेखिकै भयकरिकै केवल व्यथामात्रकूंहीं न हींप्राप्तभयाहूं ॥ किंतु भयकरिकैअत्यंतव्यथाकूंप्राप्तहूआहै अंतरात्मा क्या मन जिसका ऐसामैंअर्जुन तुमारेकूंदेखिकरिकैहीं धृतिकूंभी नहींप्राप्तहोताहूं ॥ अर्थात् देहइंद्रियादिकसंघातकेधारणकरणेकासामर्थ्यरूपधैर्यकूंभी न

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection, Digitized by S3 Foundation USA

हींप्राप्तहोताहूं ॥ तथा मनकीस्थिरतारूपशमकूंभी नहींप्राप्तहोताहूं ॥ कैसाहैसोआपकास्वरूप ॥ इससंपूर्णआकाशरूपअंतरिक्षलोकविषे व्याप्तहोइरह्याहै ॥ अथवा आकाशकीन्यांई सर्वपदार्थोंकूं स्पर्शकरिरह्याहै ॥ पुनःकैसाहैसोआपकास्वरूप दीप्तहै ॥ अर्थात् महान् अग्निकीन्यांई अत्यंतप्रज्वलितहै ॥ पुनः कैसाहैसोस्वरूप ॥ अनेकवर्णहै ॥ अर्थात् भयकोप्राप्तिकरणेहारेअनेकरूपोंकरिकैयुक्तहै ॥ पुनःकैसाहैसोस्वरूप ॥ विस्फारितहूएहैंमुखजिसविषे ॥ अर्थात् फाड्येहूएहैंमुखजिसनैं ॥ पुनःकैसाहैसोस्वरूप ॥ सूर्यमंडलकीन्यांई प्रज्वलित तथाविशाल हैंनेत्रजिसविषे ॥ ऐसेआपकेस्वरूपकूंदेखिकरिकैहीं भयकरिकै व्यथाकूंप्राप्तहूआहैमनजिसका ऐसामैंअर्जुन धृतिकूं तथाशमकूं प्राप्त होतानहीं ॥ ईहां (हेविष्णो) इससंबोधनकरिकै अर्जुननैं विश्वरूपभगवान्कीव्यापकता कथनकरी ॥ ताकरिकै यहअर्थबोधनकऱ्या ॥ जिसकारणतैं आपविश्वरूप सर्वत्रव्यापकहो ॥ तिसकारणतैं तुमारेकरिकैयुक्त भयानकदेशकूं परित्यागकरिकै मैंअर्जुन अन्यत्रजाणेविषेसमर्थनहींहूं ॥ यातैं यहभयानकविश्वरूप आपनैं अंतर्धानकऱ्याचहीये इति ॥ २४॥ ❋

अब इसपूर्वउक्तअर्थकूंहीं पुनःदूसरेप्रकारतैं कथनकरताहूआ अर्जुन श्रीभगवान्केप्रसन्नताकी प्रार्थना करेहै ॥

दंष्ट्राकरालानिचतेमुखानिदृष्ट्वैवकालानलसन्निभानि ॥
दिशोनजानेनलभेचशर्मप्रसीददेवेशजगन्निवास ॥ २५ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दंष्ट्रा[1]करालानि। च[2]। ते[4]। मुखानि। दृष्ट्वा[6]। एव[7]। काला[3]नलसन्निभानि। दिशः[8]।
न[9]। जाने[10]। न[13]। लभे[14]। च[11]। शर्म[12]। प्रसीद[17]। देवेश[15]। जगन्निवास[16]॥ इतिपदच्छेदः॥

हेभगवन् दंष्ट्रावोंकरिकैभयंकर तथा[2] प्रलय[3]अग्निकेतुल्य तुमारे[4] मुखोंकूं[5] देख[6]करिकै हीं[7] मैंअर्जुन दिशावोंकूंभी[8] नहीं[9] जानताहूं[10] तथा[11] सुखकूंभी[12] नहीं[13] प्राप्तहोताहूं[14] यातैं हेदेवेश[15] हेजगन्निवास[16] हमारे ऊपरि प्रसन्नहोवौ[17]॥ २५॥ इतिप०॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् दंष्ट्रावोंकरिकैअत्यंतविकरालहोणेतैं भयकीप्राप्तिकरणेहारे तथाप्रलयकालके अग्निकेतुल्य ऐसेजेआपकेमुखहैं तिन आपकेमुखोंविषे यद्यपि मैंअर्जुन प्राप्तहूआनहीं॥ तथापि तिनआपकेमुखोंकूं केवलदेखिकरिकैंहीं भयकेवशतैं मैंअर्जुन पूर्व अपर इत्यादिकभेदकरिकै दिशावोंकूंभी जानतानहीं ॥ इसीकारणतैंहीं मैंअर्जुन तुमारेदर्शनहूएभी सुखकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं हेदेवेश हेजगन्निवास आप हमारेऊपरि प्रसन्नहोवौ ॥ जिसकरिकै भयतैंरहितहोइकै मैंअर्जुन तुमारेदर्शनजन्यसुखकूं प्राप्तहोवउ॥ तहां अन्यकिसीकी नहींअपेक्षाकरिकै जोआपेहीं प्रकाशमानहोवै ताकानाम देवेशहै ॥ और आपणीसमीपतामात्रतैं जोसर्वकूं चेष्टाकरावै ताकानाम ईशहै ॥ जोदेवहोवै सोईहीं ईशहोवै ताकानाम देवेशहै ॥ अर्थात् स्वप्रकाशरूप सर्वकेप्रेरककानाम देवेशहै ॥ अथवा इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकाजोईशहोवै ताकानाम देवेशहै ॥ और इससर्वजगत्का जोनिवासहोवै अर्थात् अधिष्ठानहोवै ताकानाम जगन्निवासहै इति ॥ २५ ॥ ※ ॥ तहांपूर्व इसएकादशेअध्यायके सप्तमेश्लोकविषे (ममदेहेगुडाकेशयच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ सर्वदा हमारेजयकूं तथादुर्यो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

धनादिकोंकेपराजयकूं देखणाहीं तुमारेकूंइष्टहै ॥ तिसजयपराजयकूंभी तूं इसहमारेदेहविषेहींदेख इति ॥ अब तिसआपणेजयकूं तथादुर्योधनादिकोंकेपराजयकूंभी मैंदेखताहूं इसअर्थकूं अर्जुन पांचश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै ॥

अमीचत्वांधृतराष्ट्रस्यपुत्राःसर्वेसहैवावनिपालसंघैः ॥ भीष्मोद्रोणःसूतपुत्रस्तथासौ सहास्मदीयैरपियोधमुख्यैः ॥ २६ ॥ वक्त्राणितेत्वरमाणाविशंतिदंष्ट्राकरालानिभयानकानि ॥ केचिद्विलग्नादशनांतरेषुसंदृश्यंतेचूर्णितैरुत्तमांगैः ॥ २७ ॥

अमी । च । त्वां । धृतराष्ट्रस्य । पुत्राः । सर्वे । सह । एव । अवनिपालसंघैः । भीष्मः । द्रोणः । सूतपुत्रः । तथा ॥ असौ । सह । अस्मदीयैः । अपि । योधमुख्यैः ॥ वक्त्राणि । ते । त्वरमाणाः । विशंति दंष्ट्राकरालानि । भयानकानि । केचित् । विलग्नाः । दशनांतरेषु । संदृश्यंते । चूर्णितैः । उत्तमांगैः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेभगवन् पुनः यह धृतराष्ट्रके दुर्योधनादिकपुत्र सर्व राजावोंकेसमूह सहित हीं अत्यंतशीघ्रतावालेहूए तैं परमेश्वरविषे प्रवेशकरेहैं तथाभीष्म तथाद्रोण तथा यह कर्ण यहतीनों हमारेसंबंधीरूपभी मुख्ययोधावों सहित तुमारेविषेप्रवेशकरेहैं हेभगवन् दंष्ट्रावोंकरिकैविकराल तथा अतिभयानक ऐसे तुमारे मुखोंविषे यहदुर्योधनादिकसर्व शीघ्रहीं प्रवेशकरेहैं तहां केईकयोधा चूर्णहूए शिरोंकरिकैविशिष्टहूए दांतोंकीमध्यसंधियोंविषे लग्येहूए देखणेमैंआवेहैं ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ इतिपदार्थः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेभगवन् यह धृतराष्ट्रकेदुर्योधनादिकसर्वपुत्र शल्यराजातैंआदिलैके सर्वराजावोंसहितहीं अत्यंतशीघ्र तातैं तैंपरमेश्वरविषे प्रवेशकरतेहैं ॥ हेभगवन् केवल यहदुर्योधनादिकहीं तुमारेविषे प्रवेशनहींकरते ॥ किंतु सर्व लोकोंनैं अजेयतारूपकरिकैसंभावनाकऱ्याहूआ जोयह भीष्मपितामहहै तथाद्रोणाचार्यहै तथासर्वकालविषे हमा राद्वेषी जोयह सूत्रपुत्रकर्णहै ॥ यहतीनोंभी हमारेसंबंधीरूप धृष्टद्युम्नादिकमुख्ययोधावोंसहित तैंपरमेश्वरविषे प्र वेशकरेहैं ॥ अब तिसविश्वरूपभगवान्विषे तिनदुर्योधनादिकोंकेप्रवेशकाद्वार कथनकरेहैं (वक्त्राणिइति) हेभग वन् जेआपकेमुख दंष्ट्रावोंकरिकैअत्यंतविकरालहैं ॥ याकारणतैंहीं तेमुख अत्यंतभयानकहैं ॥ ऐसेआपकेमुखोंविषेहीं यहदुर्योधनादिकसर्व अत्यंतशीघ्रतातैं प्रवेशकरेहैं ॥ तिनप्रवेशकरणेहाऱ्योंविषेभी केईकयोधातौं चूर्णभावकूंप्राप्त हूएमस्तकोंकरिकैयुक्तहूए आपकेदांतोंकेमध्यसंधियोंविषे लग्येहूए हमनैं देखोतेहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इनदोनोंश्लोकोंकेपदोंको (अमीधृतराष्ट्रस्यपुत्राःत्वांविशंति भीष्मद्रोणादयःतेवक्त्राणिविशंति) याप्रकारतैंयोजना करिकै यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ धृतराष्ट्रके अत्यंतपापिष्ठ जेदुर्योधनादिकपुत्रहैं ॥ तेदुर्योधनादिकपापिष्ठतौं तीन लोकरूपशरीरवालेआपपरमेश्वरविषेहीं प्रवेशकरेहैं ॥ अर्थात् तेदुर्योधनादिकआपणेपापकर्मकेअनुसार तैंविश्वरूप भगवान्केपायुस्थानविषेस्थितनरकोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ और यहभीष्मद्रोणादिकतौं आपपरमेश्वरकेभक्तहैं ॥ यातैं यहभीष्मादिकतौं आपपरमेश्वरके जिनमुखोंतैं अग्नि ब्राह्मण देवता उत्पन्नहूएहैं ॥ तिनमुखोंविषेहीं प्रवेशकरेहैं ॥ ॥ इसप्रकार दुर्योधनादिकोंके तथाभीष्मादिकोंके गतिकीविलक्षणताकेबोधनकरणेवासतै इसप्रकारतैंपदोंकाअन्व

420

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यकरणा युक्तहै ॥ इति ॥ २६ ॥ २७ ॥* ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे दुर्योधनादिकसर्वराजावोंका भगवान्केमुखों विषेप्रवेश कथनकऱ्या ॥ सोप्रवेश दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकप्रवेशतौं अबुद्धिपूर्वक होवैहै ॥ दूसराप्रवेश बुद्धिपूर्वक होवैहै ॥ तहां नजानिकैजोप्रवेशहै ताकूं अबुद्धिपूर्वकप्रवेशकहेहैं ॥ और जानिकेजोप्रवेशहै ताकूं बुद्धिपूर्वकप्रवेशकहेहैं ॥ तहां भगवान्केमुखोंविषे तिनराजावोंके अबुद्धिपूर्वकप्रवेशविषे अर्जुन दृष्टांतकूंकथनकरेहै ॥

421

यथानदीनांबहवोंबुवेगाःसमुद्रमेवाभिमुखाद्रवंति ॥ तथा तवामीनरलोकवीराविशंतिवक्त्राण्यभितोज्वलंति ॥ २८ ॥

यथा । नदीनां । बहवः । अंबुवेगाः । समुद्रं । एव । अभिमुखाः । द्रवंति । तथा । तव । अमी । नरलोकवीराः । विशंति । वक्त्राणि । अभितः । ज्वलंति ॥ इतिप० ॥

हेभगवन् जैसे नदीयोंके बहुत जलोंकेवेग समुद्रकेअभिमुखहूए समुद्रकूं हीं प्रवेशकरेहैं तैसे यह मनुष्यलोककेवीर तुमारे सर्वओरतैं प्रकाशमान मुखोंकूंहीं प्रवेशकरेहैं ॥ २८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् जैसे अनेकमार्गोंविषेप्रवृत्तहूई जेश्रीगंगायमुनादिकनदीयांहै ॥ तिननदीयोंके जेबहुतजलों केवेगहैं अर्थात् तिनजलोंके जेवेगवालेप्रवाहहैं ॥ तेबहुतजलोंकेप्रवाह समुद्रकेअभिमुखहूए तिससमुद्रविषेहीं अबुद्धिपूर्वक प्रवेशकरेहैं ॥ तैसे इसमनुष्यलोकविषेशूरवीरजेदुर्योधनादिकराजेहैं ॥ तेयहदुर्योधनादिकराजे तैंपरमेश्वर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

के सर्वओरतैंप्रकाशमानमुखोंविषे अबुद्धिपूर्वक प्रवेशकरेहैं ॥ तहां कितनैंकीपुस्तकोंविषे (अभितोज्वलंति) इसव
चनकेस्थानविषे (अभिविज्वलंति) याप्रकारकाभी पाठहोवैहै ॥ इसप्रकारकेपाठहूएभी सोपूर्वउक्तअर्थहींजानणा
इति ॥ २८ ॥ * ॥ अबश्रीविश्वरूपभगवान्केमुखोंविषे तिनराजावोंके बुद्धिपूर्वकप्रवेशविषे अर्जुन दृष्टांतकूं कथनकरेहै

यथाप्रदीप्तंज्वलनंपतंगाविशंतिनाशायसमृद्धवेगाः ॥ तथै
वनाशायविशंतिलोकास्तवापिवक्त्राणिसमृद्धवेगाः॥२९॥

यथा । प्रदीप्तं । ज्वलनं । पतंगाः । विशंति । नाशाय । समृद्धवेगाः । तथा । एव ।
नाशाय । विशंति । लोकाः । तव । अपि । वक्त्राणि । समृद्धवेगाः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेभगवन् जैसे पतंग अत्यंतवेगवालेहूए आपणेनाशवासतै प्रज्वलित अग्निविषे प्रवेशकरेहैं तैसें हीं
यहदुर्योधनादिक भी अत्यंतवेगवालेहूए आपणेनाशवासतै तुमारे मुखोंविषे प्रवेशकरेहैं ॥ २९ ॥ इतिपदा० ॥
॥ टीका ॥ हेभगवन् जैसे पतंग अत्यंतवेगवालेहूए आपणेमरणवासतै प्रज्वलितअग्निविषे बुद्धिपूर्वक प्रवेशकरेहैं ॥
तैसे यहदुर्योधनादिकसर्वराजेभी अत्यंतवेगवालेहूए आपणेमरणवासतै तैंपरमेश्वरकेमुखोंविषे बुद्धिपूर्वक प्रवेशकरे
हैं इति २९ ॥ * ॥ तहांपूर्व युद्धकीकामनावालेराजावोंका भगवान्केमुखोंविषे प्रवेशकाप्रकार कथनकऱ्या ॥ अब
तिसप्रवेशकालविषे श्रीभगवान्केप्रवृत्तिकेप्रकारकूं तथाभगवान्केदीप्तिरूपप्रकाशोंकेप्रवृत्तिकेप्रकारकूं अर्जुन कहेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लेलिह्यसेग्रसमानःसमंताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः ॥
तेजोभिरापूर्यजगत्समग्रंभासस्तवोग्राःप्रतपंतिविष्णो॥३०॥

लेलिह्यसे । ग्रसमानः । समंतात् । लोकान् । समग्रान् । वदनैः । ज्वलद्भिः । तेजो
भिः । आपूर्य । जगत् । समग्रं । भासः । तव । उग्राः । प्रतपंति । विष्णो ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेविष्णुभगवान् संपूर्ण लोकोंकूं ग्रासकरताहूआतूं आपणे प्रज्वलित मुखोंकरिकै सर्व ओरतैं आस्वादनकरताहैं इस समग्र जगत्कूं आपणीदाप्तियोंकरिकै सर्व ओरतैंपूर्णकरिकै याकारणतैं तुमारी तेउग्र दीप्तियां संतापकूंउत्पन्नकरेहैं ॥ ॥ टीका ॥ हेविष्णु अर्थात् हेसर्वत्रव्यापकविश्वरूपभगवान् इसप्रकार अत्यंतवेगकरिकै तुमारेमुखविषेप्रवेशकरतेहूए जेदुर्योधनादिकसर्वराजेहैं ॥ तिनसर्वराजावोंकूं तूं ग्रासकरताहूआ अर्थात् तिनआपणेमुखोंद्वारा आपणेउदरविषेप्रवेशकरावताहूआ तिनआपणेप्रज्वलितमुखोंकरिकै सर्वओरतैंआस्वादनकरेहैं ॥ अर्थात् जैसे यहमनुष्य कोईस्वादुवस्तुकूंभक्षणकरिकै आपणीजिव्हाकरिकै तालुओष्ठादिकोंकूंचाटेहैं ॥ तैसे तूंपरमेश्वरभी तिनदुर्योधनादिकराजावोंकूंभक्षणकरिकै आपणीजिव्हाकरिकै तालुओष्ठादिकोंकूंचाटेहैं ॥ क्याकरिकै ॥ आपणेदीप्तिरूपतेजोंकरिकै इसपमग्र जगत्कूं सर्वओरतैं परिपूर्णकरिकै ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं तूं आपणादीप्तियोंकरिकै इससर्व जगत्कूं सर्वओरतैं परिपूर्णकरेहैं ॥ तिसकारण तैं तेतुमारी अत्यंततीव्र दाप्तियां प्रज्वलितअग्निकोन्यांई संतापकूंउत्पन्नकरेहैं इति ॥३०॥ ❋ ॥ इसप्रकार तिनभगवान्

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कीदीप्तियोंकरिकै व्याकुलहूआअर्जुन यहसाक्षात्परिपूर्णभगवान्है याप्रकारतैं भगवान्केस्वरूपकानहींस्मरणकरिकै भगवान्केप्रति कहेहै ॥

424

आख्याहिमेकोभवानुग्ररूपोनमोस्तुतेदेववरप्रसीद ॥ विज्ञातुमिच्छामिभवंतमाद्यंनहिप्रजानामितवप्रवृत्तिं॥३१॥

आख्याहि। मे। कः। भवान्। उग्ररूपः। नमः। अस्तु। ते। देववर। प्रसीद। विज्ञातुं। इच्छामि। भवंतं। आद्यं। न। हि। प्रजानामि। तव। प्रवृत्तिं ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेभगवन् ऐसेउग्ररूपवाले आप कौनहो यहवार्त्ता हमारेतांई कथनकरौ हेसर्वदेवतावोंविषेश्रेष्ठ तुमारेतांई हमारा नमस्कार होवेउ आप प्रसन्नहोवौ मैंअर्जुन सर्वकेकारणरूप तुमारेकूं जानणेकी इच्छाकरताहूं जिसकारणतैं तुमारी चेष्टाकूं मैं नहीं जानताहूं ॥ ३१ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ उग्रहै क्या अत्यंतक्रूरहै रूप क्या आकार जिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ अथवा प्रलयकालविषे सर्वजगत्कासंहारकरणेहाराजोरुद्रहै ताकानाम उग्रहै ॥ ताउग्रकेरूपकीन्यांईहै रूप क्या आकार जिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ अथवा उग्रहै क्या सर्वलोकोंकूभयकीप्राप्तिकरणेहाराहै रूपजिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ अथवा उग्रहै क्या क्रूरहै रूप क्या कर्म जिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ ऐसे उग्ररूपवाले आप कौनहो ॥ अर्थात् प्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लयकालकेरुद्रहो ॥ अथवा प्रलयकालकीअग्निहो ॥ अथवा महान्मृत्युहो ॥ अथवा कालांतकहो ॥ अथवा परमपुरुषहो ॥ अथवा इनसर्वोंतैंकोईअन्यहो ॥ जोअबी आपकास्वरूपहै ॥ सोस्वरूप मैंअर्जुनकेतांई आप कृपाकरिकै कथनकरौ ॥ याकारणतैंहीं मैंअर्जुनका आपसर्वजगत्केगुरुरूपपरमेश्वरकेतांई नमस्कारहोवै ॥ हेसर्वदेवतावोंविषेश्रेष्ठभगवान् आप हमारेऊपरि प्रसादकरौ ॥ अर्थात् क्रूरताकापरित्यागकरिकै प्रसन्नहोवौ हेभगवन् सर्वजगत्काकारणरूपजोआपहो ॥ तिसकारणरूपआपपरमेश्वरकूं मैंअर्जुन विशेषरूपतैं जानणेकीइच्छाकरताहूं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकास्वरूपतौं हमारीचेष्टाकेदर्शनतैंहीं जानणेकूंशक्यहै ॥ यातैं (कोभवान्) यहतुमाराप्रश्न संभवतानहीं ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहूए अर्जुन कहेहै (नहिप्रजानामिइति) हेभगवन् जिसकारणतैं मैंअर्जुन आप परमेश्वरकासखाहूआभी आपैंकोचेष्टारूपप्रवृत्तिकूंभी जानतानहीं ॥ इसकारणतैं आपहीं आपकास्वरूप हमारेप्रति कथनकरौ इति ॥ ३१ ॥ ※ ॥ इसप्रकार अर्जुनकरिकैप्रार्थनाकऱ्याहूआ श्रीभगवान् जोआपणास्वरूपहै तथाजिसकार्यकेकरणेवासतै आपणीप्रवृत्तिहै यहसर्ववार्त्ता तीनश्लोकोंकरिकै अर्जुनकेप्रति कथनकरे है ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ कालोस्मिलोकक्षयकृत्प्रवृद्धोलोकान्समाहर्तुमिहप्रवृत्तः ॥ ऋतेपित्वानभविष्यंतिसर्वेयेवस्थिताःप्रत्यनीकेषुयोधाः ॥ ३२ ॥

काॅलः । अॅस्मि । लोकक्षयॅकृत् । प्रॅवृद्धः । लोॅकान् । समाॅहर्त्तुं । इॅह । प्रॅवृत्तः । ऋॅते ।

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अपि । त्वा । न । भविष्यंति । सर्वे । ये । अवस्थिताः । प्रत्यनीकेषु । योधाः ॥ इति पदच्छेदः ॥
हेअर्जुन सर्वलोकोंकासंहारकर्त्ता तथा अत्यंतवृद्धिकूंप्राप्तहूआ कालरूपपरमेश्वर मैं हूं तथाइसकां
लविषेदुर्योधनादिकोंकूं भक्षणकरणेवासतै प्रवृत्तहूआहूं यातैं प्रतिपक्षीयोंकीसेनावोंविषे जे योधा
स्थितहैं तेसर्वयोधा तुमारेयुद्धरूपव्यापारतैं विना भा नहीं विद्यमानहोवैंगे ॥ ३२ ॥ इतिपदार्थः ॥
॥ टीका ॥ हेअर्जुन भूमिविषेभाररूपजप्राणीहैं ॥ तिनदुष्टप्राणीयोंकेनाशकरणेहारा अथवा प्रलयकालविषे सर्वप्रा
णीयोंकेनाशकरणेहारा तथामहान्वृद्धिकूंप्राप्तहूआ क्रियाशक्तिउपहितकालरूपपरमेश्वर मैं हूं ॥ इसप्रकार आपणे
स्वरूपकूंकथनकरिकै श्रीभगवान् आपणीप्रवृत्तिकूं कथनकरेहै (लोकान्इति) हेअर्जुन जिसकार्यकेकरणेवासतै मैं
भगवान् अबीप्रवृत्तहूआहूं ॥ तिसकूं तूं श्रवणकर ॥ भूमिविषेभाररूपजेदुर्योधनादिकहैं ॥ तिनदुर्योधनादिकलोकां
कूं भक्षणकरणेवासतै इसकालविषे मैं प्रवृत्तहूआहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् मैंअर्जुनकीप्रवृत्तितैंविना आप इनदुर्योध
नादिकोंकूं कैसे नाशकरौंगे ॥ ऐसोअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहैं ॥ (ऋतेपित्वाइति) हेअर्जुन तुमारेतैंविना
भी अर्थात् तुमारेयुद्धरूपव्यापारतैंविनाभी केवल मैंपरमेश्वरकेव्यापारमात्रकरिकैहीं यहभीष्मद्रोणकर्णादिकसर्व
योधा नाशकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ तथा इसदुर्योधनकोसेनाविषे इनभीष्मद्रोणादिकोंतैंभिन्न दूसरेभी जितनैंकीयोधास्थित
हैं ॥ तेसर्वहींयोधा मैंपरमेश्वरनैंहीं हननकरिराख्येहैं ॥ यातैं तिनोंकेहननकरणेविषे तैंअर्जुनके युद्धरूपव्यापारका
कोईअत्यंत जरूरनहींहै ॥तुमारेव्यापारतैंविनाहीं यहदुर्योधनादिकसर्व नाशहोतेहोवैंगे इति ॥ ३२ ॥ ॥ शंका

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ हेभगवन् हमारे युद्धरूपव्यापारतैंविनाहीं जोकदाचित् यहदुर्योधनादिक नाशहोतेहोवैं ॥ तौं आप वारंवार हमा
रेकूं युद्धकरणेविषे किसवासतै प्रवृत्तकरतेहो ॥ ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहैं ॥

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठयशोलभस्वजित्वाशत्रून्भुंक्ष्वराज्यंसमृद्धं ॥ म
यैवैतेनिहताःपूर्वमेवनिमित्तमात्रंभवसव्यसाचिन् ॥ ३३ ॥

तस्मात्। त्वं। उत्तिष्ठ। यशः। लभस्व। जित्वा। शत्रून्। भुंक्ष्व। राज्यं। समृद्धं। मया।
एव। एते। निहताः। पूर्वं। एव। निमित्तमात्रं। भव। सव्यसाचिन् ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेअर्जुन तिसकारणतैं तूं युद्धवासतैउद्यमवालाहोउ तथायशकूं प्राप्तहोउ तथाशत्रुवोंकूं
जितकै निष्कंटक राज्यकूं भोगं हेसव्यसाचिन् येहुतुमारेशत्रु तुमारेयुद्धतैंपूर्व हीं
मैंपरमेश्वरनैं हीं हननकरिछोडेहैं तूंकेवल निमित्तमात्र होउ ॥ ३३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं तुमारेयुद्धरूपव्यापारतैंविनाभी यहभीष्मद्रोणादिक अवश्यकरिकै नाशकूंप्राप्तहो
वैंगे ॥ तिसकारणतैं तूंअर्जुन अबी युद्धकरणेवासतै उद्यमवालाहोउ ॥ तायुद्धविषे इनभीष्मद्रोणादिकोंकूंहननक
रिकै तूं यशकूंप्राप्तहोउ ॥ अर्थात् जेभीष्मद्रोणादिक इंद्रादिकदेवतावोंकरिकैभी दुर्जयथे ॥ तेभीष्मद्रोणादिकअ
तिरथी इसअर्जुननैं शीघ्रहीं जयकरिलीये ॥ याप्रकारकेयशकूंहीं तूं प्राप्तहोउ ॥ जिसकारणतैं इसप्रकारकायश महा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नूपुण्यकर्मोंकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकारणतैं ऐसेयशकीप्राप्तिवासतैं तूं इसयुद्धविषेप्रवृत्तहोउ ॥ अर्थात् तुमारेकूं इसप्रकारकेमहान्यशकीप्राप्तिकरणेवासतैहीं मैंभगवान् तुमारेकूं इसयुद्धविषेप्रवृत्तकरताहूं ॥ कोई तुमारेयुद्धतैंविना यहभाष्मद्रोणादिक नहींनाशहोवैंगे इसवासतै मैं तुमारेकूं युद्धविषेप्रवृत्त करतानहीं ॥ हेअर्जुन इनशत्रुवोंकेमारणेकरिकै तुमारेकूं केवल यशकीहींप्राप्तिनहींहोवैंगी ॥ किंतु इनदुर्योधनादिकशत्रुवोंकूं विनाहींप्रयत्नतैं जयकरिकै सर्वऐश्वर्यसंपन्न निष्कंटकराज्यकूंभी तूं भोग ॥ शंका॥ हेभगवन् इनभीष्मद्रोणादिकअतिरथीयोधावोंकेविद्यमान हूए तिनदुर्योधनादिकशत्रुवोंकाजयकरणा अत्यंतदुर्लभहै ॥ ऐसाअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् कहेहै (मयैवैतेइति) हेअर्जुन तुमारेयुद्धरूपव्यापारतैंपूर्वहीं यहभीष्मद्रोणादिक कालरूपमैंपरमेश्वरनैंहीं आयुष्तैं रहितकरिराख्येहैं केवल तुमारेकूं लोकविषेयशकीप्राप्तिकरणेवासतै यहभीष्मद्रोणादिकसर्वयोधा हमनैं रथतैंनीचैगिडायेनहीं ॥ यातैं हेसव्यसाचिन् तूं केवल निमित्तमात्रहोउ ॥ अर्थात् यहभीष्मद्रोणादिकयोधा अर्जुननैंहीं जयकरेहैं याप्रकारके सर्वलोकोंकेवचनोंका आस्पदहोउ ॥ तहां वामहस्तकरिकैभी शरोंकेचलावणेकास्वभाव जिसकाहोवै ताकानाम सव्यसाचिन्है ॥ तात्पर्ययह ॥ ऐसेमहान्पराक्रमवाले तैंअर्जुनकूं इनभीष्मद्रोणादिकोंकाजयकरणा कोईअसंभावितनहींहै ॥ किंतु संभवताहींहै ॥ यातैं तुमारेयुद्धरूपव्यापारतैंअनंतर मैंपरमेश्वर इनभीष्मद्रोणादिकोंकूं रथतैंनीचेगेडौंगा ॥ तिसकूंदेखिकै सर्वलोक ऐसीकल्पनाकरैंगे ॥ इसअर्जुननैंहीं इनभीष्मद्रोणादिकोंकूं हननकऱ्याहै इति॥ ३३॥※ ॥ शंका॥ हेभगवन् इसदुर्योधनकोसेनाविषेस्थित जोद्रोणाचार्यहै ॥ सोद्रोणा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

चार्य कैसाहै ॥ सर्वब्राह्मणोंविषे उत्तमब्राह्मणहै ॥ तथा धनुर्वेदकाआचार्यहै ॥ तथा हमसबोंकागुरुहै ॥ तथा दिव्य अस्त्रकरिकैसंपन्नहै ॥ और इसदुर्योधनकीसेनाविषेस्थितजोभीष्मपितामहहै ॥ सोभीष्मपितामह कैसाहै ॥ आपणीइच्छातैंमरणेहाराहै ॥ तथा दिव्यअस्त्रकरिकैसंपन्नहै ॥ जिसभीष्मपितामहकूं परशुरामनैंभीपराजयकऱ्यानहीं ॥ और इसदुर्योधनकीसेनाविषेस्थितजो जयद्रथहै ॥ सोजयद्रथ कैसाहै ॥ जिसजयद्रथका वृद्धक्षत्रनामापिता जो योधा इसहमारेपुत्रकाशिर भूमिविषेगेडैंगा तिसयोधाकाभीशिर तिसीकालविषे भूमिविषेगिडैंगा याप्रकारकासं कल्पकरिकै तपकूंकरताभयाहै ॥ तथा जोजयद्रथ आपभी सर्वदा महादेवकेआराधनपरायणहै ॥ तथा दिव्यअस्त्रकरिकैसंपन्नहै ॥ ऐसा जयद्रथराजाभी जीतणेकूंअशक्यहै ॥ और इसदुर्योधनकीसेनाविषेस्थितजोकर्णहै ॥ सो कर्णकैसाहै ॥ साक्षात्सूर्यकेसमानहै ॥ तथा सूर्यभगवान्केआराधनकरिकै प्राप्तहूआहैदिव्यअस्त्रजिसकूं ॥ तथा इंद्रनैंदईहूई जाएकपुरुषकेनाशकरणेहारी तथाव्यर्थकरणेकूंअशक्य ऐसीशक्तिहै ताशक्तिकरिकैयुक्तहै ॥ इनोंतैंआदिलैके दूसरेभी कृपाचार्य अश्वत्थामा भूरिश्रवा इत्यादिकजेमहान्प्रभाववालेयोधाहैं ॥ तेसर्वयोधा सर्वप्रकारतैं दुर्जयहींहैं ॥ ऐसेभीष्मद्रोणादिकमहान्योधावोंकेविद्यमानहूए मैंअर्जुन इनदुर्योधनादिकशत्रुवोंकूंजीतिकै निष्कंटक राज्यकूं कैसेभोगौंगा ॥ तथा यशकूंकैसेप्राप्तहोवौंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् ताशंकाकेविषयभूतयोधावोंकूं स्वस्ववाचकनामैं करिकैकथनकरताहूआ कहेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

द्रोणंचभीष्मंचजयद्रथंचकर्णंतथान्यानपियोधवीरान् ॥ मया
हतांस्त्वंजहिमाव्यथिष्ठायुध्यस्वजेतासिरणेसपत्नान् ॥ ३४ ॥

द्रोणं । च । भीष्मं । च । जयद्रथं । च । कर्णं । तथा । अन्यान् । अपि । योधवीरान् ।
मया । हतान् । त्वं । जहि । मा । व्यथिष्ठाः । युध्यस्व । जेतासि । रणे । सपत्नान् ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन द्रोणाचार्यकूं तथा भीष्मपितामहकूं तथा जयद्रथकूं तथा कर्णकूं तथा इनोंतैंअन्य भी
योधावोंकूं जेयोधा मैंपरमेश्वरनैंहीं हननकरिराख्येहैं तिनसर्वयोधावोंकूं तूंअर्जुन हननकर तूं मत
व्यथाकूंप्राप्तहोउ तथायुद्धकूंकर इससंग्रामविषे शत्रुवोंकूं तूं अवश्य जीतैंगा ॥ ३४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन द्रोणाचार्य तथाभीष्मपितामह तथाजयद्रथ तथाकर्ण तथाइनोंतैंभिन्न दूसरेभी जितनैंकी महा
न्योधाहैं ॥ जेभीष्मादिकसर्वयोधा यहभीष्मादिक कैसेजयहोवैंगे याप्रकारकी तुमारीशंकाकेविषयभूतहैं ॥ तेभीष्म
द्रोणादिकसर्वयोधा कालरूपमैंपरमेश्वरनैं तुमारेयुद्धतैंपूर्वहीं हननकरिराख्येहैं ॥ ऐसेभीष्मद्रोणादिकयोधावोंकूं तूं
अर्जुन अबीहननकर ॥ पूर्वहननकीयेहूएयोधावोंकेहननकरणेविषे तुमारेकूं कौंनपरिश्रमहोवैंगा ॥ किंतु तिनोंकेह
ननकरणेविषे तुमारेकूं कोईभीपरिश्रमहोवैंगानहीं ॥ यातैं तूं व्यथाकूं मतप्राप्तहोउ ॥ अर्थात् यहभीष्मद्रोणादिक
महान्योधा कैसेहननकीयेजावैंगे इसप्रकारकी भयनिमित्तकपीडारूपव्यथाकं तूं मतप्राप्तहोउ ॥ हेअर्जुन तिसभय

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कूंपरित्यागकरिकै तूं युद्धकूंकर ॥ इसप्रकार भयकापरित्यागकरिकै जबी तूं युद्धकूंकरैंगा ॥ तबी इससंग्रामविषे थोडे हींकालमैं इनदुर्योधनादिकसर्वशत्रुवोंकूं जीतैंगा ॥ तात्पर्ययह ॥ इसदुर्योधनकीसेनाविषेस्थित जितनैंकीभीष्मादि कयोधाहैं ॥ तिनयोधावोंविषे किसीभीयोधातैं आपणेपराजयकीशंकाकूं तूं मतकर ॥ तथा किसीभीयोधाकेहननक रणेजन्य पापकीशंकाकूं तूं मतकर इति ॥ ३४ ॥ * ॥ तहां दुर्योधनकेजयहोणेकीआशाकेविषयभूतजे द्रोणा चार्य तथाभीष्मपितामह तथाजयद्रथ तथाकर्ण यहच्यारियोधाहैं ॥ तिनच्यारोंकेहननहूएतैं अनंतर निराश्रयहूएदु र्योधनकाभी हननहींहोवैंगा इसप्रकारकाविचारकरिकै यहधृतराष्ट्र आपणेजयकीआशाकापरित्यागकरिकै जबी इन पांडवोंकेसाथि मित्रभावकरिकै युद्धतैंनिवृत्तहोवैंगा तबीपांडवोंकी तथाकौरवोंकीदोनोंकोहीं शांतिहोवैंगी ॥ इस प्रकारकेअभिप्रायवालासंजय तिसतैंअनंतर क्यावृत्तांतहोताभया ऐसी ताधृतराष्ट्रकीजिज्ञासाकेहूए कहेहै ॥

संजयउवाच ॥ एतच्छ्रुत्वावचनंकेशवस्यकृतांजलिर्वेपमानःकिरी

टी ॥ नमस्कृत्वाभूयएवाहकृष्णंसगद्गदंभीतभीतःप्रणम्य ॥ ३५ ॥

एतत् । श्रुत्वा । वचनं । केशवस्य । कृतांजलिः । वेपमानः । किरीटी । नमस्कृत्वा । भूयः । एव । आह । कृष्णं । सगद्गदं । भीतभीतः । प्रणम्य । इतिपदच्छेदः ॥

हेधृतराष्ट्र श्रीभगवान्के इसपूर्वउक्त वचनकूं श्रवणकरिकै जोडेहैंदोनोहस्तजिसनैं तथा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कंपायमानहूआ तथाअत्यंतभययुक्तहूआ सोअर्जुन श्रीकृष्णभगवान्कूं नमस्कारक
रिकै तथाअत्यंतनम्रहोइकै सगद्गद जैसेहोवै तैसे पुनः भी कहताभया ॥ ३५ ॥ इतिप० ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र श्रीभगवान्के इसपूर्वउक्तवचनकूंश्रवणकरिकै सोकिरीटीअर्जुन अर्थात् इंद्रनैंदीयाहैकिरीटजि
सकूं ऐसापरमवीररूपकरिकैप्रसिद्धअर्जुन कंपायमानहूआ अर्थात् परमआश्चर्यकेदर्शनजन्यसंभ्रमकरिकै कंपाय
मानहूआसोअर्जुन श्रीकृष्णभगवान्कूं नमस्कारकरिकै सगद्गद जैसेहोवै तैसे पुनःभी कहताभया ॥ तहां भयकरि
कै अथवा हर्षकरिकै निकस्याहूआजोअश्रुजलहै ताअश्रुवोंकरिकैनेत्रोंकेपूर्णहूए तथाकफकरिकै अवरुद्धहूएकंठपणे
करिकै जेवाणीके मंदपणा तथासकंपपणा इत्यादिकविकारहैं ताकानाम सगद्गदहै ॥ ऐसे सगद्गदकरिकैयुक्त जै
सेहोवै तैसे सोअर्जुन भीतभीतहूआ अर्थात् अत्यंतभयकरिकैयुक्तहूआ पूर्व श्रीकृष्णभगवान्कूंनमस्कारकरिकै पु
नःभीप्रणामकरिकै अर्थात् अत्यंतनम्रहोइकै पुनःभी यहवक्ष्यमाणवचन कहताभया इति ॥ ईहां किसीटीकाविषे
(एवाह) इसवचनविषे (एव अह) याप्रकारकापदच्छेदकरिकै अह इसपदकूं प्रसिद्धिकावाचक अव्ययपदमान्याहै ॥ का
हेतैं आह इसप्रकारकापदच्छेदकरिकै आह इसपदकूं जोवचनरूपक्रियाकावाचकमानिये ॥ तौं पुनः अर्जुनउवाचय
हवक्ष्यमाणवचन पुनरुक्तहोवैंगा ॥ यातैं (प्रणम्यअर्जुनउवाच) याप्रकारतैंहीं पदोंकासंबंधकरणा (प्रणम्यआह) या
प्रकारतैंपदोंकासंबंधकरणानहीं इति ॥ ३५ ॥ * ॥ अबएकादशश्लोकोंकरिकै अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति सोवचनकहेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अर्जुनउवाच ॥ स्थानेहृषीकेशतवप्रकीर्त्याजगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते
च ॥ रक्षांसिभीतानिदिशोद्रवंतिसर्वेनमस्यंतिचासिद्धसंघाः॥३६॥

स्थाने । हृषीकेश । तव । प्रकीर्त्या । जगत् । प्रहृष्यति । अनुरज्यते । च । रक्षांसि ।
भीतानि । दिशः । द्रवंति । सर्वे । नमस्यंति । च । सिद्धसंघाः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेहृषीकेश तुमारी प्रकीर्त्तिकरिकै यहसर्वजगत् हर्षकूंप्राप्तहोवैहै तथा अनुरागकूंप्राप्तहोवैहै तथाराक्षस भयकूंप्राप्तहूए सर्वदिशावोंविषे भागेजावैहैं तथा सर्व सिद्धोंकेसमूह नमस्कारकरेहैं यहसर्ववार्त्ता युक्तहींहै ॥ ३६ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेहृषीकेश अर्थात् हेसर्वइंद्रियोंकेप्रवर्त्तक ॥ जिसकारणतैं तूंपरमेश्वर अत्यंतअद्भुतप्रभाववालाहैं ॥ तथा भक्तवत्सलहैं ॥ तिसकारणतैं तुमारोप्रकीर्तिकरिकै अर्थात् तुमारीनिरतिशयउत्कृष्टताकेकीर्त्तनकरिकै तथाश्रवण करिकै केवल मैंअर्जुनहीं अत्यंतहर्षकूंनहींप्राप्तहोता ॥ किंतु राक्षसोंकाविरोधी जितनाको चेतनमात्ररूपजगत्है ॥ सोसर्वजगत्भी तिसआपकोप्रकीर्त्तिकरिकै महान्हर्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ताभी युक्तहींहैं ॥ तथा तिसतुमारोप्रकीर्त्तिकरिकै यहसर्वजगत् तैंपरमेश्वराविषयक अनुरागकूं जोप्राप्तहोवैहै ॥ सोभी युक्तहींहै ॥ तथा तिसतुमारीप्रकीर्त्तिकरिकै सर्वराक्षस भयकूंप्राप्तहूए जो सर्वदिशावोंविषे भागेभागेजावैहैं ॥ सोभी युक्तहींहै ॥ तथा सर्व कपिलादिक सिद्धोंकेसमूह तैंपरमेश्वरकेतांई जोश्रद्धाभक्तिपूर्वक नमस्कारकरेहैं ॥ सोभी युक्तहींहै इति ॥ और किसीटीकावि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

षेतौं (स्थानेहृषीकेश) इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ हेहृषीकेश (कालोस्मिलोकक्षयकृत्प्रवृद्धोलोकान्स माहर्त्तुमिहप्रवृत्तः) अर्थयह ॥ भूमिविषेभाररूपजेदुष्टजनहैं तिनसर्वदुष्टलोकोंकेसंहारकरणेवासतै मैंकालरूपपरमे श्वर प्रवृत्तहूआहूं ॥ यहवचन आपनैं पूर्वकथनकऱ्याथा ॥ तिस आपके प्रकृष्टवचनरूप प्रकीर्त्तिकूंश्रवणकरिकै यह साधुलोकरूपजगत् जो परमसंतोषकूं प्राप्तहोवैहै ॥ सोभी युक्तहींहै ॥ अर्थात् साधुलोकोंकेरक्षणकरणेवासतै परमे श्वरनैं सर्वदुष्टजनोंकेसंहारकियेहूए तिनसाधुलोकोंकूं परमसंतोषकीप्राप्तिहोणी युक्तहींहै ॥ तथा तैंपरमेश्वरके तिस प्रकृष्टवचनकूंश्रवणकरिकै तेसाधुलोक तैंभक्तवत्सल तथासर्वभूतोंकेसुहृदरूप परमात्मादेवविषे जोअनुरागकूंकरेहैं ॥ सोभीयुक्तहींहै ॥ अर्थात् सर्वलोकोंकेउपद्रवकूंनिवृत्तकरणेवासतैउद्यमवाले तथापरमकृपालुरूप ऐसेतैंपरमेश्वर विषे तिनसाधुलोकोंका अनुरागहोणा युक्तहींहै ॥ तथा तैंपरमेश्वरके तिसप्रकृष्टवचनकेश्रवणकरिकै सर्वराक्षस भ यकूंप्राप्तहूए जो पूर्वादिकदिशावोंकेकोणोंविषे भागेभागे जावैहैं ॥ साभीयुक्तहींहै ॥ तथा तैंपरमेश्वरके तिसप्रकृ ष्टवचनकेश्रवणकरिकै सर्वलोकोंकेसुखकीइच्छाकरणेहारे सर्वसिद्धोंकेसमूह तैंपरमेश्वरकेतांई जोनमस्कारकरेहैं ॥ सोभी युक्तहींहैं ॥ ईहां सिद्ध यहशब्द देवजातिमात्रकाउपलक्षणहै ॥ अर्थात् देव ऋषि सिद्ध गंधर्व चारण इत्या दिकसर्वदेवत्वजातिवालेपुरुष हेस्वामिन् जोतुमनैं दुष्टजनोंकेसंहारकरणेकीप्रतिज्ञाकरीहै साप्रतिज्ञा अवश्यकरिकै पूर्णकरणी याप्रकारकीप्रार्थनापूर्वक तैंपरमेश्वरकेतांई जोंप्रमाणकरेहैं ॥ सोभी युक्तहींहैइति ॥ तहां (स्थानेहृषीकेश) यहश्लोक रक्षोघ्ननामामंत्ररूपकरिकै मंत्रशास्त्रविषेप्रसिद्धहै ॥ जिसमंत्रकेअनुष्ठानकरिकै दुष्टराक्षसोंकाहननहोवै ता

434

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मंत्रकानाम रक्षोघ्नमंत्रहै इति ॥ ३६ ॥ * ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे अर्जुननैं श्रीभगवान्विषे सर्वलोकोंके हर्षकीविषयता तथाअनुरागकीविषयता तथानमस्कार्यता कथनकरी ॥ अब तिसीअर्थकीसिद्धिकरणेविषे अर्जुन हेतुकहेहै ॥

कस्माच्चतेननमेरन्महात्मन्गरीयसेब्रह्मणोप्यादिकर्त्रे॥
अनंतदेवेशजगन्निवासत्वमक्षरंसदसत्तत्परंयत् ॥३७॥

कस्मात् । च । ते । न । नमेरन् । महात्मन् । गरीयसे । ब्रह्मणः । अपि । आदिकर्त्रे । अनंत । देवेश । जगन्निवास । त्वं । अक्षरं । सत् । असत् । तत्परं । यत् ॥ ३७ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेमहात्मन् हेअनंत हेदेवेश हेजगन्निवास ब्रह्माके भी गुरुरूप तथाजनकरूप ऐसेआपके तांई तेसर्वदेवता किसवासतै नहीं नमस्कारकरैंगे किंतुकरैंगेहीं हेभगवन् तूंहीं सत्रूपहैं तथाअसत्रूपहैं तथातिनदोनोंतैंपरे जो अक्षरब्रह्महै सोभीतूंहैं ॥ ३७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेमहात्मन् अर्थात् हेपरमउदारचित्तवाला ॥ तथा हेअनंत अर्थात् हेदेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित ॥ तथा हेदेवेश अर्थात् हेहिरण्यगर्भादिकसर्वदेवतावोंकेनियंता ॥ तथा हेजगन्निवास अर्थात् हेसर्वजगतकाआश्रयरूप ॥ तुमारेतांई तेसर्वसिद्धोंकेसमूह तथासर्वदेवता किसवासतै नहींनमस्कारकरैंगे ॥ किंतु आपकेतांई तिनसर्वोंकानमस्कारकरणा उचितहींहै ॥ कैसेहोआप ॥ सर्वजगत्कागुरुरूपजोब्रह्माहै तिसब्रह्माकेभी अत्यंतगुरुरूपहो ॥ तथा इ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ससर्वजगत्काजनकजोब्रह्माहै तिसब्रह्माकेभी जनकहो ॥ ऐसेआपकेतांई तिनसर्वसिद्धादिकोंकानमस्कार उचित हींहै ॥ ईहां (कस्माच्च) इसवचनकेअंतविषेस्थितजोचकारहै ॥ ताचकारकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ ब्रह्मादिकदेवतावोंकाभी नियंतापणा तथाउपदेष्टापणा तथाजनकपणा इत्यादिकहेतुवोंविषे एकएकभीहेतु आपपरमेश्वरविषे तिनसर्वसिद्धोंकीनमस्कार्यताका प्रयोजकहै ॥ जबी एकएकभीहेतु आपविषे तानमस्कार्यताका प्रयोजकहूआ ॥ तबी महात्मापणा तथाअनंतपणा तथाजगन्निवासपणा इत्यादिकअनेकशुभगुणोंकरिकैयुक्तहूआ सोहेतु आपविषे तानमस्कार्यताकाप्रयोजकहै याकेविषेक्याआश्चर्यहै इति ॥ पुनःकैसेहोआप सत्रूपहो तथाअसत्रूपहो ॥ तहां अस्ति इसप्रकारकीविधिमुखप्रतीतिकरिकै जोवस्तु प्रतीतहोवैहै तावस्तुकानाम सत्है ॥ और नास्ति इसप्रकारकीनिषेधमुखप्रतीतिकरिकै जोवस्तु प्रतीतहोवैहै तावस्तुकानाम असत्है ॥ अथवा व्यक्तकानाम सत्है ॥ और अव्यक्तकानाम असत्है ॥ सोसत्असत्रूपभी आपहींहो ॥ तथा तिससत्असत्तैंभीसूक्ष्म जोसर्वकामूलकारणरूप अक्षरब्रह्महै सोअक्षरब्रह्मभी आपहींहो ॥ तैंपरमेश्वरतैंभिन्न कोईभीवस्तुनहींहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सर्वंह्येतद्ब्रह्म)॥ अर्थयह ॥ यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपहींहै इति ॥ हेभगवन् इसपूर्वउक्तसर्वहेतुवोंकरिकै तेसिद्धादिकसर्वलोक तैंपरमेश्वरकेतांई नमस्कारकरैहैं तथाअत्यंतहर्षकूं तथाअनुरागकूं करैहै इसविषे कोईआश्चर्यनहींहैं इति ॥ ३७ ॥

॥ अब अत्यंतभक्तिकेवेगतैं सोअर्जुन पुनःभी श्रीकृष्णभगवान्कीस्तुति करेहै ॥

436

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्वमादिदेवःपुरुषःपुराणस्त्वमस्यविश्वस्यपरंनिधानं ॥ वे
त्तासिवेद्यंचपरंचधामत्वयाततंविश्वमनंतरूप ॥ ३८ ॥

त्वं । आदिदेवः । पुरुषः । पुराणः । त्वं । अस्य । विश्वस्य । परं । निधानं । वेत्ता । अ
सि । वेद्यं । च । परं । च । धाम । त्वया । ततं । विश्वं । अनंतरूप ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअनंतरूप तूंपरमेश्वरहीं आदिदेवहैं तथापुरुषहैं तथापुराणहैं तथातूंहीं इस विश्वका परम निधानहैं तथासर्वके जानणेहारा हैं तथा सर्वदृश्यरूपहैं तथा परम धामरूपहैं तथातुमनेंहीं यहसर्वविश्व व्याप्तकऱ्याहै॥३८॥इतिपदा० ॥

॥ टीका ॥ हेअनंतरूप अर्थात् हेदेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितस्वरूप ॥ इससर्वजगत्केउत्पत्तिकाहेतुहोणेतैं तुंमहीं आदिदेवहो ॥ तथा सर्वत्र अस्तिभातिप्रियरूपकरिकैपूर्णहोणेतैं तुंमहीं पुरुषहो ॥ अथवा सर्वशरीररूपपुरियोंविषे शयनकर्त्ताहोणेतैं तुंमहीं पुरुषहो ॥ तथा तुंमहीं पुराणहो ॥ अर्थात् अनादिहो ॥ अथवा इसशरीरकेनाशहूएभी आप नाशहोतेनहीं यातैं पुराणहो ॥ तथा तुंमहीं इससर्वविश्वका परमनिदानहो ॥ अर्थात् इससर्वविश्वकेलयका स्थानरूपहो ॥ ईहां (आदिदेवःपरंनिधानं) इनदोनोंपदोंकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्विषे सर्वजगत्के उत्पत्ति काहेतुपणा तथालयकास्थानपणा कथनकऱ्या ॥ ताकरिकैं परमेश्वरविषे सर्वजगत्का उपादानकारणपणा कथनक ऱ्या ॥ काहेतैं जिसतैं कार्य उत्पन्नहोवैहै तथा जिसविषे कार्य लयहोवैहैं ॥ सो उपादानकारणहींहोवैहै ॥ जैसे घट

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूपकार्य मृत्तिकातैंहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ तथामृत्तिकाविषेहीं लयहोवैहै ॥ यातैं सामृत्तिका ताघटका उपादानकारण हींहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं परमेश्वरविषे सर्वजगत्काउपादानकारणपणाकहिकै अब सर्वज्ञतारूपहेतुकरिकै सांख्य शास्त्रकल्पितजडप्रधानरूपकारणकोव्यावृत्तिकरताहूआ अर्जुन तिसपरमेश्वरविषे जगत्कानिमित्तकारणपणाभी कथनकरेहै (वेत्तासिइति) हेभगवन् सर्वज्ञहोणेतैं आपहीं इससर्वजगत्केजानणेहारेहो ॥ अर्थात् आपहींइससर्व जगत्का कर्त्तारूपनिमित्तकारणहो ॥ तहां इससर्वजगत्कूं जो परमेश्वरतैं भिन्नअंगीकारकरिये तौं द्वैतभावकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ ताद्वैतभावकोनिवृत्तिकरणेवासतै अर्जुन कहेहै (वेद्यंइति) हेभगवन् जितनाकीयहदृश्यप्रपंचहै सोभी तूंहींहैं ॥ अर्थात् ज्ञानस्वरूप तैंपरमेश्वरविषे इसजडरूपदृश्यप्रपंचका कोईभीवास्तवसंबंधहैनहीं ॥ यातैं यहसर्वदृश्य प्रपंच तैंपरमेश्वरविषे कल्पितहींहै ॥ और कल्पितवस्तु अधिष्ठानतैंपृथक्होवैनहीं ॥ जैसे कल्पितसर्पादिक रज्जुरूपअधिष्ठानतैं पृथक्होवैनहीं ॥ यातैं द्वैतभावकोप्राप्ति होवैनहीं इति ॥ इसोकारणतैंहीं आप परमधामहो ॥ अर्थात् सत्चित्आनंदघन तथाकार्यसहितअविद्यातैंरहित जोव्यापकविष्णुका परमपदहै सोपरमपदभी आपहींहो ॥ हेभगवन् स्वतःसत्तास्फूर्तितैंरहितजोयहसर्वविश्वहै ॥ सोयहसर्वविश्व स्थितिकालविषे मायिकसंबंधकरिकै तैंसत्ता स्फुरणरूपकारणनैंहीं व्याप्तकऱ्याहै ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठाननैं आपणेइदमूरूपकरिकै कल्पितसर्वदंडादिक व्याप्तकऱ्येहैं ॥ तैसे तैंपरमेश्वरनैंहीं आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै यहसर्वजगत्व्याप्तकऱ्याहै इति ॥ ३८ ॥

॥ अब अर्जुन श्रीभगवान्की सर्वदेवतारूपकरिकै स्तुतिकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वायुर्यमोग्निर्वरुणःशशांकःप्रजापतिस्त्वंप्रपितामहश्च ॥ नमो
नमस्तेस्तुसहस्रकृत्वःपुनश्चभूयोपिनमोनमस्ते ॥ ३९ ॥

वायुः । यमः । अग्निः । वरुणः । शशांकः । प्रजापतिः । त्वं । प्रपितामहः । च । नमः । नमः ।
ते । अस्तु । सहस्रकृत्वः । पुनः । च । भूयः । अपि । नमः । नमः । ते ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेभगवन् वायु यम अग्नि वरुण चंद्रमा प्रजापति तथा प्रपितामह इत्यादिकसर्वदेवतारूप तूंपरमेश्वरहींहै यातैं तैंपरमेश्वरकेतांई हमारा अनेकसहस्रवार नमस्कार नमस्कार होवउ तथा तुमारेतांई पुनः भी वारंवार नमस्कार नमस्कार होवउ ॥ ३९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् तूंपरमेश्वरहीं वायुरूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं यमरूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं अग्निरूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं वरुणरूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं चंद्रमारूपहैं ॥ ईहां (शशांकः) यहशब्द सूर्यादिकदेवतावों काभी उपलक्षकहै ॥ अर्थात् तूंपरमेश्वरहीं सूर्यादिकसर्वदेवतारूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं प्रजापतिरूपहैं ॥ ईहां (प्रजापतिः) इसशब्दकरिकै विराट्काग्रहणकरणा अथवा हिरण्यगर्भकाग्रहणकरणा अथवा दक्षादिकोंकाग्रहणकरणा ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं प्रपितामहरूपहैं ॥ अर्थात् तिसहिरण्यगर्भकाभी पितारूपजोकारणब्रह्महै सोभी तूंपरमेश्वरहींहैं ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं सर्वदेवतारूपहोणेतैं तूंपरमेश्वर सर्वप्राणीयोंकरिकै नमस्कारकरणेयो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ग्यहै ॥ तिसकारणतैं मैंअत्यंतअनाथअर्जुनकाभी तुमारेतांई अनेकसहस्रवार नमस्कारहोवउ नमस्कारहोवउ ॥ तथा पुनःभी आपकेतांई वारंवार नमस्कारहोवउ नमस्कारहोवउ ॥ ईहां पुनःपुनः नमस्कारोंकीआवृत्तिकरिकै अर्जुननैं भक्तिश्रद्धापूर्वक भगवत्केनमस्कारोंविषे अलंबुद्धिकाअभाव सूचनकऱ्या ॥ अर्थात् तैंपरमेश्वरकेतांई श्रद्धाभक्तिपूर्वक पुनः पुनः नमस्कारोंकेकरणेतैं मैंअर्जुनकीतृप्तिहोतीनहीं इति ॥ ३९ ॥ * किंच ॥

440

नमःपुरस्तादथपृष्ठतस्तेनमोस्तुतेसर्वतएवसर्व ॥ अनंत वीर्यामितविक्रमस्त्वंसर्वंसमाप्नोषितोसिसर्वः॥ ४० ॥

नमः । पुरस्तात् । अथ । पृष्ठतः । ते । नमः । अस्तु । ते । सर्वतः । एव । सर्व ।
अनंतवीर्यामितविक्रमः । त्वं । सर्वं । समाप्नोषि । ततः । असि । सर्वः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेसर्व तुमारेतांई अग्रभागविषे हमारा नमस्कार होवउ तथा पृष्ठविषेभी नमस्कार होवउतथा तुमारेतांई सर्वदिशावोंविषे हीं नमस्कारहोवउ तूंपरमेश्वर अनंतवीर्यअमितविक्रमवालाहैं तथातूं इसंसर्वजगत्कूं व्याप्तकरेहैं तिसकारणतैं तूंपरमेश्वर सर्व कह्याजावैहैं ॥ ४० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेसर्व अर्थात् हेसर्वात्मारूपभगवन् मैं अर्जुनका तैंपरमेश्वरकेतांई अग्रभागविषेभी नमस्कारहोवौ ॥ तथा मैंअर्जुनका तैंपरमेश्वरकेतांई पृष्ठभागविषेभी नमस्कारहोवौ ॥ तथा मैंअर्जुनका तैंपरमेश्वरकेतांई सर्वदिशावोंविषे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नमस्कारहोवौ ॥ ईहां यद्यपि सर्वात्मारूपव्यापकपरमेश्वरके अग्रभागपृष्ठभागादिक संभवतेनहीं ॥ परिच्छिन्नपदार्थकेहीं तेअग्रभागादिकहोवैहैं ॥ तथापि अर्जुननैं तिससर्वात्मारूपपरमेश्वरके तेअग्रभागादिककल्पनाकरिकै कथन करेहैं ॥ वास्तवतैं तासर्वात्मारूपपरमेश्वरके तेअग्रभागादिकहैंनहीं इति ॥ और किसोटीकाविषेतौं (पुरस्तात्) इसपदका कर्मोंकेआदिविषे यहअर्थ कऱ्याहै ॥ और (पृष्ठतः) इसपदका तिनकर्मोंकीसमाप्तिविषे यहअर्थकऱ्याहै ॥ और (सर्वतः) इसपदका तिनकर्मोंकेमध्यविषे यहअर्थकऱ्याहै ॥ अर्थात् कर्मोंकेआदिविषेभी तैं परमेश्वरके तांई हमारा नमस्कारहोवौ ॥ तथा तिनकर्मोंकीसमाप्तिविषेभी तैंपरमेश्वरकेतांई हमारा नमस्कारहोवौ ॥ तथा तिनकर्मोंकेमध्यविषेभी तैंपरमेश्वरकेतांई हमारा नमस्कारहोवौ ॥ इसव्याख्यानविषे तिससर्वात्मारूपपरमेश्वरके अग्रभागादिक कल्पनाकऱ्येजावैनहीं इति ॥ हेभगवन् आपकैसेहो ॥ अनंतवीर्यअमितविक्रमहो ॥ तहां अनंतहै वीर्यजिसका तथाअमितहैविक्रमजिसका ताकानाम अनंतवीर्यअमितविक्रमहै ॥ तहांशरीरकेबलकानाम वीर्यहै ॥ और शिक्षाशस्त्रोंके प्रयोगकोजाकुशलताहै ताकानाम विक्रमहै ॥ तहांएकवीर्यकरिकैहींअधिकता तथाएकविक्रमकरिकैहींअधिकता तौं भीमदुर्योधनादिकोंविषे तथाअन्यराजावोंविषेभी विद्यमानहै ॥ परंतु अनंतवीर्यकरिकैअधिकता तथा अमितविक्रमकरिकैअधिकता आपपरमेश्वरतैंविना दूसरेकिसीविषेहैनहीं ॥ किंतु एकआपविषेहींहै ॥ अथवा (अनंतवीर्य अमितविक्रमः) यहदोपदजानणे ॥ तहां अनंतवीर्य यहपदतौं हेअनंतरवीर्य याप्रकारतैं श्रीभगवान्का संबोधनहै इति ॥ तहां अर्जुननैं श्रीभगवान्का (हेसर्व) यहसंबोधन कथनकऱ्याथा ॥ तासर्वशब्दकेअर्थ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कूं अब अर्जुन कथनकरेहैं (सर्वसमाप्नोषिततोसिसर्वः इति) हेभगवन् जिसकारणतैं तूंपरमेश्वर इससर्वजगत्कूं आपणेसत्तास्फुरणरूपकरिकै व्याप्तकरिरह्याहैं ॥ तिसकारणतैं तूंपरमेश्वर सर्व इसनामकरिकै कह्याजावेहैं ॥ अर्थात् तैंपरमेश्वरतैंअतिरिक्त कोईभीवस्तुनहींहै इति ॥ ४० ॥* ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं मैंअर्जुन तैंपरमेश्वरकेमाहात्म्यकेअज्ञानतैं तुमारे अनेकअपराधोंकूं करताभयाहूं तिसकारणतैं परमकृपालुरूप तैंपरमेश्वरकूं दंडवत्प्रणामकरिकै मैंअर्जुन तिनआपणेअपराधोंकीक्षमा करताहूं ॥ इसअर्थकूं अब अर्जुन दोश्लोकोंकरिकै कहेहै ॥

442

सखेतिमत्वाप्रसभंयदुक्तंहेकृष्णहेयादवहेसखेति ॥ अजा
नतामहिमानंतवेदंमयाप्रमादात्प्रणयेनवापि ॥ ४१ ॥

सखा । इति । मत्वा । प्रसभं । यत् । उक्तं । हेकृष्ण । हेयादव । हेसखा । इति । अजा
नता । महिमानं । तव । इदं । मया । प्रमादात् । प्रणयेन । वा । अपि ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेभगवन् तुमारे इसविश्वरूपकूं तथाऐश्वर्यरूपकूं नजानणेहारे मैंअर्जुननैं यहकृष्णहमारासखाहै
इसप्रकार मानिकै चित्तकेविक्षेपतैं अथवा स्नेहकरिकै भो जे हेकृष्ण हेयादव हेसखा
इसप्रकारके अभिभवपूर्वकवचन कहेहैं ते सर्व आप क्षमाकरौ ॥ ४१ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् यहकृष्णभगवान् हमारा सखाहै अर्थात् समानवयवालाहै अथवा हमारेमामेकापुत्रहै ॥ इस

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

प्रकारका तुमारेकूंमानिकै हमनैं आपणेचित्तकेविक्षेपरूपप्रमादतैं अथवा स्नेहकरिकै आपकेप्रति जेप्रसभवचन कथनकऱ्येहैं ॥ अर्थात् आपणी उत्कृष्टताकाख्यापनरूपअभिभवकरिकै जेअनुचितवचन कथनकऱ्येहैं ॥ तेसर्वहमारे अपराध आप क्षमाकरौ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन ऐसेअनुचितवचन तुमनैं किसहेतुतैं कथनकरेहैं ॥ ऐसीभगवान्की शंकाकेहूए ॥ अर्जुन तिनअनुचितवचनोंकेकहणेविषे हेतुकूं कथनकरेहै (अजानतामहिमानंतवेदंइति) हेभगवन् जिसकारणतैं तुमारे इसविश्वरूपकूं तथातुमारेऐश्वर्यरूपमहिमाकूं मैंअर्जुन पूर्व जानतानहींथा ॥ इसकारणतैं मैंअर्जुन आपकेप्रति तेअनुचितवचन कहताभयाहूं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन तुमनैं हमारेकूं ऐसेकौंनअनुचितवचनकहेहैं ऐसीश्रीभगवान्कीशंकाकेहूए ॥ अर्जुन तिनअनुचितवचनोंकास्वरूप कथनकरेहै (हेकृष्णहेयादवहेसखाइति) हेभगवन् सर्वजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकरणेहारे तथाब्रह्मादिकसर्वदेवतावोंकेभीगुरुरूप ऐसेआपपरमेश्वरकूं मैं अर्जुन हेकृष्ण हेयादव हेसखा इसप्रकारकेसंबोधनोंकरिकै बुलावताभयाहूं इति ॥ तहां किसीमूलपुस्तकविषे (महिमानंतवेमं) याप्रकारकाभीपाठहोवैहै ॥ इसप्रकारकेपाठविषेतौं (महिमानं इमं) इनदोनोंपदोंका सामानाधिकरण्यहीं जानणा ॥ अर्थात् तुमारे इसविश्वस्वरूपमहिमाकूं मैं अर्जुन पूर्वजानतानहींथा इति ॥ ४१ ॥ ※ किंच ॥

यच्चावहासार्थमसत्कृतोसिविहारशय्यासनभोजनेषु॥एको
थवाप्यच्युततत्समक्षंतत्क्षामयेत्वामहमप्रमेयं ॥ ४२ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यत्[1] । च[2] । अवहासार्थं[3] । असत्कृतः[10] । असि[11] । विहारशय्यासनभोजनेषु[4] । एकः[5] । अथ[6]
वा । अपि[7] । अच्युत[1] । तत्समक्षं[8] । तत्[12] । क्षामये[16] । त्वां[14] । अहं[13] । अप्रमेयं[15] ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हे[1]अच्युत तथा[2] परिहासकेवासतै[3] विहारशय्याआसनभोजनविषे[4] एकलास्थितहूआ[5]
अथवा[6] कदाचित्[7] तिनसखावोंकेसन्मुखस्थितहूआ[8] तूंपरमेश्वर मैंअर्जुननैं जो[9] पराभव[10]
कऱ्या हैं[11] सोसर्वअपराध[12] मैंअर्जुन[13] तैं[14] अप्रमेयकेप्रति[15] क्षमाकरावताहूं[16] ॥४२॥ इतिप०॥

॥ टीका ॥ हेअच्युत अर्थात् हेसर्वदानिर्विकार ॥ क्रीडारूपजोविहारहै तिसविहारविषे ॥ तथा वस्त्रतूलिकादिकों करिकैरचीहूईजा शयनकरणेकास्थानरूप शय्याहै तिसशय्याविषे ॥ तथा सिंहासनादिरूप जोआसनहै ताआसनविषे ॥ तथा सजातीयबहुतपुरुषोंकीपंक्तिविषे अन्नकाभक्षणरूपजोभोजनहै ताभोजनविषे ॥ सर्वसखावोंकूंछोडिकैएकलेस्थितहूएआपका अथवा परिहासकरतेहूए तिनसखावोंकेसमीपस्थितहूए आपका मैंअर्जुननैं उपहासकेवासतै जोपराभवकऱ्याहै ॥ तेअनुचितवचनरूप सर्वअपराध अथवा असत्करणरूप सर्वअपराध मैंअर्जुन तुमारेतैं क्षमाकरावताहूं ॥ कैसेहोआप अप्रमेयहो ॥ अर्थात् अचिंत्यप्रभाववालेहो ॥ तात्पर्ययह ॥ अचिंत्यप्रभाववाला तथा सर्वविकारोंतैं रहित तथापरमकृपालुरूप ऐसेआपपरमेश्वरनैं तुमारेप्रभावकूंनजानणेहारेमैंअर्जुनके तेसर्वअपराध क्षमाकरणे इति ॥ ४२ ॥ ❋ ॥ अब अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति सापूर्वउक्त अचिंत्यप्रभावता स्पष्टकरिकैवर्णनकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पितासिलोकस्यचराचरस्यत्वमस्यपूज्यश्चगुरुर्गरीयान् ॥ नत्व
त्समोस्त्यभ्यधिकःकुतोन्योलोकत्रयेप्यप्रतिमप्रभाव ॥ ४३ ॥

पिता । असि । लोकस्य । चराचरस्य । त्वं । अस्य । पूज्यः । च । गुरुः । गरीयान् । न ।
त्वत्समः । अस्ति । अभ्यधिकः । कुतः । अन्यः । लोकत्रये । अपि । अप्रतिमप्रभाव ॥ इतिपद० ॥

हेउपमातैंरहितप्रभाववाला इस चराचररूप सर्वलोकका तूं पितारूपहैं तथा पूज्यहैं तथागुरुरूपहैं तथा गुरुतरहैं तीनलोकविषे तुमारेसमान भी कोईअन्य नहीं है तौंतुमारेतैं अधिक कहांतैंहोवै ॥ ४३॥ इतपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् इसस्थावरजंगमरूपसर्व जगत्मात्रका तूं पिताहैं अर्थात् जनकहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (यतोवाइमा निभूतानिजायंते ॥) अर्थयह ॥ जिसपरमात्मादेवतैं यहसर्वभूतप्राणी उत्पन्नहोवैहैं ॥ इत्यादिकश्रुतियां तैंपरमेश्वरकूं सर्वजगत्काजनककहेहैं ॥ तथा सर्वकाईश्वरहोणेतैं आपहीं पूज्यहो ॥ तथा आपहीं सर्वशास्त्रकेउपदेशकरणेहारे गुरुरूपहो ॥ इसी कारणतैंहीं सर्वप्रकारकरिकै आप गुरुतरहो ॥ अर्थात् सर्वतैंउत्कृष्टहो ॥ इसोकारणतैंहीं हेभगवन् तीनलोकोंविषे तैंपरमेश्वरकेसमानभी दूसराकोईहैनहीं ॥ तौं तिनतीनलोकोंविषे तैंपरमेश्वरतैं अधिक दूसरा कोई कहांतैंहोवैंगा ॥ किंतु कोईभीअधिकनहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ तैंपरमेश्वरकेसमान दूसराकोईहैनहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित् तैंपरमेश्वरकेसमान दूसराकोई अंगीकारकरिये ॥ तौं सोदूसराभी ईश्वरहींसिद्धहोवैंगा ॥ तहां एकईश्वरतौं इ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सजगत्केउत्पन्नकरणेकीइच्छाकरैंगा ॥ और दूसराईश्वर तिसीकालविषे इसजगत्केसंहारकरणेकीइच्छाकरैंगा ॥ यातैं कोईभीव्यवहार सिद्धनहींहोवैंगा ॥ किंतु सर्वव्यवहारोंकालोपहोवैंगा ॥ यातैं तैंपरमेश्वरकेसमान दूसराको ईहैनहीं ॥ जबी तीनलोकोंविषे तैंपरमेश्वरकेसमानभीकोईनहींभया ॥ तबी तुमारेतैंअधिक कौंनहोवैंगा ॥ किंतु सर्वप्रकारकरिकै तुमारेतैंअधिक कोईहैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (नतत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते) ॥ अर्थयह ॥ तिसपरमेश्वरकेसमानभी कोईदेखणेविषेआवतानहीं ॥ तथा तिसपरमेश्वरतैं अधिकभी कोईदेखणेविषेआवतानहीं इति ॥ तहां तैंपरमेश्वरकेसमानपुरुषकाहीं असंभवहै इसपूर्वउक्तअर्थविषे अर्जुन हेतुकहेहै (हेअप्रतिमप्रभावइति) ईहां सादृश्यकानाम प्रतिमाहै ॥ सासादृश्यरूपप्रतिमानहींहै विद्यमानजिसकूं ताकानाम अप्रतिमहै ॥ ऐसाअप्रतिमहैप्रभाव क्या सामर्थ्य जिसका ताकानाम अप्रतिमप्रभावहै इति ॥ ४३ ॥ ॥ जिसकारणतैं आप ऐसेहो ॥ तिसकारणतैं मैंअर्जुन आपणेअपराधोकूंक्षमाकरावणेवासतै आपकेआगेदंडवत्प्रणामकरिकै प्रार्थनाकरताहूं ॥ इसअर्थकूं अब अर्जुनकहेहै ॥

तस्मात्प्रणम्यप्रणिधायकायंप्रसादयेत्वामहमीशमीड्यं ॥
पितेवपुत्रस्यसखेवसख्युःप्रियःप्रियायार्हसिदेवसोढुं॥४४॥

तस्मात्[1] । प्रणम्य[2] । प्रणिधाय[3] । कायं[4] । प्रसादये[5] । त्वां[6] । अहं[7] । ईशं[8] । ईड्यं[9] । पिता[10] । इव[11] । पुत्रस्य[12] । सखा[13] । इव[14] । सख्युः[15] । प्रियः[16] । प्रियायाः[17] । अर्हसि[18] । देव[19] । सोढुं[20] ॥ ४४ ॥ इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेभगवन् तिसकारणतैं तैंपरमेश्वरकूं नमस्कारकरिकै तथाआपणेदेहकूं भूमिविषेदंडकीन्यांई धारणकरिकै मैंअर्जुन सर्वोंकरिकैंस्तुतिकरणेयोग्य तैं ईश्वरकूं प्रसन्नहोवोऐसीप्रार्थनाकरूंहूं इसकारणतैं हेदेव पुत्रकेअपराधकूं पिताकी न्यांई तथासखाकेअपराधकूं सखाकी न्यांई तथा प्रियाकेअपराधकूं पतिकीन्यांई हमारेअपराधकूं आप क्षमाकरणेकूं योग्यहो॥४४॥इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं तूंपरमेश्वर इससर्वलोकका पितारूपहैं ॥ तथा सर्वकागुरुरूपहैं ॥ तिसकारण तैं मैंअर्जुन तैंपरमेश्वरकूं नमस्कारकरिकै तथाआपणीकायाकूं अत्यंतनीचैधारणकरिकै अर्थात् दंडकीन्यांई भूमिविषेपत नहोइकै तैंपरमेश्वरकेप्रसन्नताकीप्रार्थना करताहूं॥ अर्थात् मैंअपराधीअर्जुन तिनआपणेअपराधोंकीक्षमाकरावणेवास तैं मैंअर्जुनऊपरि आप प्रसन्नहोवौ याप्रकारकीप्रार्थना आपकेआगेकरताहूं॥ कैसेहोआप ईशहो ॥ अर्थात् इससर्वजगत् केनियंताहो॥ पुनःकैसेहोआप ईड्यहो॥ अर्थात् ब्रह्मादिकदेवतावोंकरिकैभी स्तुतिकरणेयोग्यहो ॥ इसकारणतैं हेदेव अर्थात् हेस्वप्रकाशरूप ॥ जैसे पुत्रकेअपराधकूं पिता क्षमाकरेहै ॥ तथा जैसे सखाकेअपराधकूं सखा क्षमाकरेहै ॥ तथा जैसे पतिव्रतापियोकेअपराधकूं पति क्षमाकरेहै ॥ तैसे मैंअर्जुनकेअपराधकूंभी आपपरमेश्वर क्षमाकरणेकूंयो ग्यहो ॥जिसकारणतैं मैंअर्जुन केवल तुमारेहींशरणहूं ॥ अन्यकिसीकेशरणहूंनहीं ॥ तिसकारणतैं आप हमारेअपराधकूं क्षमाकरणेयोग्यहो इति ॥ ईहां (प्रियायार्हसि) इसवचनविषे वत् इसशब्दकालोप तथा विसर्गोंकेलोपहूएभीसंधि यहदोनों छांदसहैं इति ॥ ४४ ॥ ※ ॥ इसप्रकार अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति आपणेअपराधकेक्षमाकीप्रार्थना

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

करिकै पुनः श्रीभगवान्केप्रति तिसविश्वरूपकेउपसंहारपूर्वक पूर्वलेरूपकेदर्शनकीप्रार्थना दोश्लोकोंकरिकै करेहै ॥

448

अदृष्टपूर्वंहृषितोस्मिदृष्ट्वाभयेनचप्रव्यथितंमनोमे ॥ त
देवमेदर्शयदेवरूपंप्रसीददेवेशजगन्निवास ॥ ४५ ॥

अदृष्टपूर्वं । हृषितः । अस्मि । दृष्ट्वा । भयेन । च । प्रव्यथितं । मनः । मे । ततं् ।
एव । मे । दर्शय । देव । रूपं । प्रसीद । देवेश । जगन्निवास ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेभगवन् पूर्वकबीभीनहींदेख्येहूएइसविश्वरूपकूं देखेकै मैंअर्जुन हर्षवान् हूंआहूं तथा भयंकरिकै मेरा मन व्याकुल हूआहै यातैं मैंअर्जुनकेतांई सोपहला रूप हीं दिखावो हेदेव हेदेवेश हेजगन्निवास मेरेऊपरि प्रसादकूंकरौ॥४५॥ इ०प० ॥ टीका ॥ हेभगवन् मैंअर्जुननैं पूर्व कदाचित्भीनहींदेख्याहूआ ऐसाजो आपकायहविश्वरूपहै ॥ तिसआपकेविश्वरूपकूंदेखिकै मैंअर्जुन हर्षकूंप्राप्तहोताभयाहूं ॥ तथा तिसविकरालरूपकेदर्शनतैं उत्पन्नभयाजोभयहै ॥ तिसभयकरिकै हमारामन व्याकुलहोताभयाहै ॥ यातैं हेभगवन् मैंअर्जुनकेतांई सोप्राणोंतैंभीप्रिय आपणापूर्वलारूपहीं दिखावो ॥ हेदेव अर्थात् हेस्वप्रकाशरूप ॥ तथा हेदेवेश अर्थात् हेसर्वदेवतावोंकेनियंता ॥ तथा हेजगन्निवास अर्थात् हेसर्वजगत्काआधाररूप ॥ मैंअर्जुनऊपरि तिसपूर्वलेरूपकादर्शनरूपप्रसादकूंकरौ इति ॥ ४५ ॥ ※ ॥ अब जिसपूर्वलेरूपकेदर्शनकी अर्जुननैं प्रार्थनाकरीहै ॥ तिसरूपकूं सोअर्जुन विशेषणोंकरिकैकथनकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किरीटिनंगदिनंचक्रहस्तमिच्छामित्वांद्रष्टुमहंतथैव ॥ ते
नैवरूपेणचतुर्भुजेनसहस्रबाहोभवविश्वमूर्त्ते ॥ ४६ ॥

किरीटिनं । गदिनं । चक्रहस्तं । इच्छामि । त्वां । द्रष्टुं । अहं । तथा । एव । तेन ।
एव । रूपेण । चतुर्भुजेन । सहस्रबाहो । भव । विश्वमूर्ते ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेभगवन् मैंअर्जुन किरीटवाले तथागदावाले तथाचक्रहैहस्तविषेजिसकूं ऐसेतुमारेकूं पूर्वकीन्यांईहीं देखणेकूं इच्छं
ताहूं यातैं हेसहस्रबाहुवाला हेविश्वमूर्ति अबीआप तिसपूर्वले चतुर्भुज रूपकरिकै हीं प्रगटहोवौ ॥ ४६ ॥ इतिप० ॥
॥ टीका ॥ हेभगवन् किरीटकूंधारणकरणेहारे तथागदाकूंधारणकरणेहारे तथाचक्रहैहस्तविषेजिसके ऐसेआपप
रमेश्वरकूं मैंअर्जुन इसविश्वरूपतैंपूर्व जैसे देखताभयाहूं ॥ तिसीआपकेसुंदरस्वरूपकूं अबी मैं अर्जुन देखणेकीइ
च्छाकरताहूं ॥ यातैं हेसहस्रबाहो अर्थात् हेअनेकसहस्रभुजावोंवाला ॥ तथा हेविश्वमूर्त्ते अर्थात् हेसर्वविश्वरूपमूर्त्ति
कूंधारणकरणेहारा श्रीभगवान् ॥ अबीइसकालविषे इसआपकेविश्वरूपकाउपसंहारकरिकै तिसपूर्वलेचतुर्भुजस्वरूपक
रिकै प्रगटहोवौ ॥ इतनैंकहणेकरिकै यह अर्थसूचनकऱ्या ॥ अर्जुननैं सर्वकालविषे श्रीभगवान्का चतुर्भुजादिकस्वरूप
हीं देखीताहै इति ॥ ४६ ॥ ❋ ॥ इसप्रकारतैं अर्जुनकरिकैप्रार्थनाकऱ्याहूआ श्रीभगवान् तिसअर्जुनकूं भयकरिकै
पीडितहूआदेखिकै तिसविश्वरूपकाउपसंहारकरिकै उचितवचनोंकरिकै तिसअर्जुनकूं आश्वासनकरताहूआकहेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रीभगवानुवाच ॥ मयाप्रसन्नेनतवार्जुनेदंरूपंपरंदर्शितमात्मयो
गात् ॥ तेजोमयंविश्वमनंतमाद्यंयन्मेत्वदन्येननदृष्टपूर्वं ॥ ४७ ॥

मया । प्रसन्नेन । तव । अर्जुन । इदं । रूपं । परं । दर्शितं । आत्मयोगात् । तेजो
मयं । विश्वं । अनंतं । आद्यं । यत् । मे । त्वदन्येन । न । दृष्टपूर्वं ॥ इतिपदच्छेदः ॥
हेअर्जुन प्रसन्नतावाले मैंपरमेश्वरनैं आपणेसामर्थ्यतैं तुमारेतांई यहविश्वात्मक श्रेष्ठ रू
प दिखायाहै कैसाहैसोरूप तेजोमयहै तथासर्वविश्वरूपहै तथाअनंतहै तथाअनादिहै
जोरूप हमारा तुमारेतैंअन्यकिसीनैंभी नहीं पूर्वदेख्याहै ॥ ४७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तूं इसहमारेविश्वरूपकूंदेखिकै भयकूंमतप्राप्तहोउ ॥ कोई तुमारेकूंभयकीप्राप्तिकरणेवासतै मैंनैं
यहविश्वरूप दिखायानहीं ॥ किंतु प्रसन्नतावाले मैंपरमेश्वरनैं अर्थात् तैं अर्जुनविषयकअतिशयकृपावाले मैंपरमे
श्वरनैं तैंअर्जुनकेतांई यहआपणा विश्वरूपात्मकश्रेष्ठरूप आपणेसामर्थ्यतैं दिखायाहै ॥ सोकेवल तुमारेऊपरि कृ
पादृष्टिकरिकैहीं दिखायाहै ॥ तहां (परं) इसविशेषणकरिकै ताविश्वरूपविषे कथनकऱ्याजोश्रेष्ठत्वरूपपरत्वहै ॥
तिसीपरत्वकूंहीं अब स्पष्टकरिकैकथनकरेहैं (तेजोमयंइति) हेअर्जुन कैसाहैसोहमाराविश्वरूप तेजोमयहै ॥ अ
र्थात् कोटीसूर्यकेप्रकाशसमानहैप्रकाशजिसका ॥ पुनःकैसाहैसोरूप विश्वहै ॥ अर्थात् सर्वविश्वरूपहै ॥ पुनःकैसाहै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सोरूप आदिअंततैंरहितहै ॥ ऐसाआपणा विश्वात्मकरूप मैंपरमेश्वरनैं केवल तैंअत्यंतप्रियभक्तअर्जुनकेतांईहीं दिखायाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहविश्वात्मकरूप मैंपरमेश्वरनैं प्रसन्नहोइकै केवल तैंअर्जुनकेतांईहीं दिखायाहै ॥ यहआपकाकहणा संभवतानहीं ॥ काहेतैं धृतराष्ट्रकेगृहविषे भीष्मादिकोंकूंभी यहविश्वरूप आपनैं दिखायाथा ॥ तथा बाल्यअवस्थाविषे यशोदामाताकूंभी यहविश्वरूप आपनैं दिखायाथा ॥ तथा अक्रूरकूंभी यहविश्वरूप आपनैं दिखायाथा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ हेअर्जुन तिनभीष्मादिकोंकूं जोहमनैं विश्वरूपदिखायाथा ॥ सो इसविश्वरूपका एकअवांतररूपहींथा ॥ यातैं सोरूप सर्वतैंउत्तमनहींथा ॥ और यहजोविश्वात्मकरूप हमनैं तुमारेकूंदिखायाहै ॥ सो सर्वतैंश्रेष्ठहै ॥ दूसरेकिसीनैंभी पूर्व यहरूप देख्यानहीं ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (यन्मेइति) हेअर्जुन जोयह हमाराविश्वात्मकरूप तुमारेतैंअन्यकिसीनैंभी पूर्वदेख्यानहीं ॥ सोयहविश्वात्मक आपणास्वरूप मैंपरमेश्वरनैं कृपाकरिकै तैं अर्जुनकेतांई अबी दिखायाहै इति ॥ ४७ ॥ ❋ ॥ हेअर्जुन इसविश्वरूपकादर्शनरूप जो अत्यंतदुर्लभ हमाराप्रसादहै ॥ तिसहमारेप्रसादकूंप्राप्तहोइकै तूंअर्जुन अब कृतार्थहींहूआहैं ॥ इसअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् अब ताविश्वरूपकीदुर्लभताकूं कथनकरेहै ॥

नवेदयज्ञाध्ययनैर्नदानैर्नचक्रियाभिर्नतपोभिरुग्रैः ॥ एवं

रूपःशक्यअहंनृलोकेद्रष्टुंत्वदन्येनकुरुप्रवीर ॥ ४८ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नं । वेदयज्ञाध्ययनैः । नं । दानैः । नं । च । क्रियाभिः । नं । तपोभिः । उग्रैः । एवं ।
रूपः । शक्यः । अहं । नृलोके । द्रष्टुं । त्वदन्येन । कुरुप्रवीर ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेकुरुवंशविषेअतिशूरवीरअर्जुन इसमनुष्यलोकविषे इसप्रकारके विश्वरूपवाला मैंभगवान् तुमारेतैंअन्य पुरुषनैं वेदोंकेतथायज्ञोंकेअध्ययनकरिकै देखणेकूं नहीं शक्यहूं तथादानोंकरिकै नहीं देखणेकूं शक्यहूं तथा कर्मोंकरिकैभी नहीं देखणेकूंशक्यहूं तथाउग्र तपोंकरिकैभी नहीं देखणेकूंशक्यहूं ॥ ४८ ॥ इतिपदा० ॥ टीका ॥ हेअर्जुन ऋग् यजुष् साम अथर्वण इनच्यारिवेदोंका जो गुरुमुखतैंअक्षरोंकाग्रहणरूप अध्ययनहै ॥ तथा पूर्वमीमांसा कल्पसूत्र इत्यादिकोंकरिकै वेदबोधितकर्मरूपयज्ञोंका जो अर्थविचाररूपअध्ययनहै ॥ तिनवेदोंकेअध्ययनकरिकै तथायज्ञोंकेअध्ययनकरिकै ॥ तथातुलापुरुषदान कन्यादान गौसुवर्णअन्नदान इत्यादिकदानोंकरिकै ॥ तथा अग्निहोत्रादिक श्रौतस्मार्त्तकर्मोंकरिकै ॥ तथा कायइंद्रियोंकेशोषकहोणेतैं करणेविषे अत्यंतकठिन ऐसेजे कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपहैं ऐसेतपोंकरिकै ॥ इसमनुष्यलोकविषे इसप्रकारकेविश्वरूपवाला मैंपरमेश्वर तुमारेतैंअन्यपुरुषोंनैं देखणेकूं अशक्यहूं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेअनुग्रहतैंरहितपुरुष वेदोंकेअध्ययनकरिकै तथावेदप्रतिपादितकर्मोंकेयथार्थज्ञानकरिकै तथादानोंकरिकै तथाउग्रतपोंकरिकै मेरेइसविश्वरूपकूं देखिसकतेनहीं ॥ ऐसाअत्यंतदुर्लभ यहविश्वरूप हमनैं कृपाकरिकै तुमारेकूंदिखायाहै ॥ तिसरूपकेदर्शनतैं अबी तूं कृतार्थहूआहै इति ॥ तहां मूलश्लोकविषे (शक्यःअहं) इसवचनकेस्थानविषे यद्यपि (शक्योऽहं) इसप्रकारकावचनहीं करणेयोग्य

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

था ॥ तथापि (शक्यअहं) इसवचनविषेजो शक्य इसपदतैउत्तर विसर्गोंकालोपहै सोछांदसहै ॥ और यद्यपि ए
कनकारकेपठनतैंहीं अध्ययन दान क्रिया तप इनसर्वोंकानिषेध होइसकेहै ॥ तथापि अध्ययन दान क्रिया तप इ
नच्यारोंकेसाथि जोभिन्नभिन्न नकारकापठनकऱ्याहै ॥ सो तिसविश्वरूपकेदर्शनबिषे तिनअध्ययनादिकोंकेनिषेधकी
दृढतावासतै कथनकऱ्याहै ॥ और (नचक्रियाभिः) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोचकार ईहांनहींकह्योहूएदू
सरेसाधनोंकाभी समुच्चयकरणेवासतेहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेअनुग्रहतैंविना दूसरेकिसीभीसाधनकरिकै यहहमा
राविश्वरूप देख्या जातानहीं इति ॥ ४८ ॥ * ॥ हेअर्जुन तुमारेअनुग्रहवासतै मैंपरमेश्वरनैं प्रगटकऱ्याजोयह आप
णाविश्वरूपहै ॥ तिसहमारेविश्वरूपकरिकै जोकदाचित् तुमारेकूं उद्वेगप्राप्तहूएआहै ॥ तौं मैंपरमेश्वर इसआपणेविश्व
रूपका अबी उपसंहारकरताहूं ॥ तूं व्यथाकूं मतप्राप्तहोउ ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कथनकरेहै

मातेव्यथामाचविमूढभावोदृष्ट्वारूपंघोरमीदृङ्ममेदं ॥ व्य
पेतभीःप्रीतमनाःपुनस्त्वंतदेवमेरूपमिदंप्रपश्य ॥ ४९ ॥

मां[1]।ते[2]।व्यथा[3]।मा[4]।च[5]।विमूढभावाः[6]। दृष्ट्वा[7]।रूपं[8]।घोरं[9]।ईदृक्[10]। मम[11]। इदं[12]।व्यपेत
भीः[13]।प्रीतमनाः[14]। पुनः[15]। त्वं[16]।तत्[17]।एव[18]।मे[19]।रूपं[20]। इदं[21]।प्रपश्य ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके इसप्रकारके इस घोर रूपकूं देख कै तैंअर्जुनकूं व्यथा मतहोवौ तथा विमूढभावभी मतहोवौ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

किंतु भयतैंरहित प्रसन्नमनहूआ तूंअर्जुन पुनः मैंपरमेश्वरके तिसपूर्वले इसरूपकूं हौं देखें ॥ ४९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अनेकबाहुमुखादिकोंकरिकैयुक्तहोणेतैं अत्यंतभयानक जोयहहमाराविश्वरूपहै ॥ तिसहमारेविश्वरूपकूंदेखिकैस्थितहूआजोतूंअर्जुनहै ॥ तिसतुमारेकूं व्यथा मतप्राप्तहोवौ ॥ अर्थात् भयरूपनिमित्ततैंउत्पन्नभईजा पीडाहै सापीडा मतप्राप्तहोवौ ॥ तथा मेरेइसविश्वरूपकेदर्शनहूएभी जोतुमारेकूं विमूढभाव प्राप्तहूआहै ॥ अर्थात् व्याकुलचित्तपणा तथाअपरितोष प्राप्तभयाहै ॥ सोविमूढभावभी तुमारेकूं मतप्राप्तहोवौ ॥ किंतु भयतैंरहितहोइकै तथाप्रसन्नमनहोइकै तूंअर्जुन पुनःतिसीहमारे चतुर्भुजरूपकूंदेख ॥ अर्थात् इसविश्वरूपतैंपूर्व तूंअर्जुन जिसहमारे चतुर्भुजवासुदेवरूपकूं सर्वदा देखताथा ॥ तिसीहमारेचतुर्भुजरूपकूं तूंअबो भयतैंरहितहोइकै तथासंतोषयुक्तहोइकै देख ॥ ईहां भयतैंरहितपणा तथासंतोष यहदोनों श्रीभगवान्नैं (प्रपश्य) इसवचनविषेस्थित प्र इसशब्दकरिकैकथनकरेहैं इति ॥ ४९ ॥ ❋ ॥ अब संजय धृतराष्ट्रकेप्रति कथनकरेहै ॥

संजयउवाच॥इत्यर्जुनंवासुदेवस्तथोक्त्वास्वकंरूपंदर्शयामासभूयः॥
आश्वासयामासचभीतमेनंभूत्वापुनःसौम्यवपुर्महात्मा ॥ ५० ॥

इति। अर्जुनं। वासुदेवः। तथा। उक्त्वा। स्वकं। रूपं। दर्शयामास। भूयः। आश्वासयामास। च। भीतं। एनं। भूत्वा। पुनः। सौम्यवपुः। महात्मा॥ इतिपदच्छेदः॥

हेधृतराष्ट्र सोकृष्णभगवान् अर्जुनकेप्रति इसप्रकारकावचन कहिकै तिसीप्रकारका आपणा चतुर्भुजरूप पुनः दिखावता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

भया तँथा सोपँरमकृपालुभगवान् पुँनः तिससौम्यशरीरवाला होइकै भँययुक्त इँसअर्जुनकूं आँश्वासनकरताभया ॥ ५० ॥
॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र सोवासुदेवकृष्णभगवान् ताअर्जुनकेप्रति यहपूर्वउक्तवचनकहिकै ताविश्वरूपधारणतैंपूर्व जि
सप्रकारकेरूपवालाथा तिसीप्रकारकाआपणारूप ताअर्जुनकेप्रति पुनः दिखावताभया ॥ अर्थात् मस्तकऊपरि
किरीटकूंधारणकरणेहारा तथाकानोंविषे मकराकारकुंडलोंकूंधारणकरणेहारा तथाच्यारोंभुजावोंविषे शंख चक्र
गदा पद्म इनच्यारोंकूंधारणकरणेहारा तथा श्रीवत्स कौस्तुभ वनमाला पीतांबर इत्यादिकोंकरिकैशोभायमान इ
सप्रकारके आपणेपूर्वलेरूपकूं तिसअर्जुनकेप्रति पुनः दिखावताभया ॥ तथा सोमहात्माकृष्णभगवान् अर्थात् पर
मकारुणिक तथासर्वकाईश्वर तथासर्वज्ञ इत्यादिककल्याणोंकाआकाररूप श्रीकृष्णभगवान् पुनः सौम्यवपुहोइकै
अर्थात् परमअनुग्रहरूपशरीरवालाहोइकै पूर्वविश्वरूपकेदर्शनतैंभयकूंप्राप्तहूएअर्जुनकेप्रति धैर्ययुक्तवचनोंकरिकै
आश्वासनकरताभया इति ॥ ५० ॥ ※ ॥ तहां श्रीकृष्णभगवान्के तिसपूर्वले चतुर्भुजस्वरूपकेदर्शनतैंअनंतर
सोअर्जुन भयतैंरहितहोइकै श्रीकृष्णभगवान्केप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥

अर्जुनउवाच ॥ दृष्टेदंमानुषंरूपंतवसौम्यंजनार्दन ॥
इदानीमस्मिसंवृत्तःसचेताःप्रकृतिंगतः ॥ ५१ ॥

दृष्ट्वा । इदं । मानुषं । रूपं । तव । सौम्यं । जनार्दन । इदानीं । अस्मि । संवृत्तः । सचेताः । प्रकृतिं । गतः । इतिपदच्छेदः ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेजनार्दन तुमारे इस मानुषसौम्य रूपकूं देखकै अबी मैंअर्जुन अव्याकुलचित्त हूंवा हूंतथा स्वस्थताकूं प्राप्तहूआहूंइ०प० अ०११

॥ टीका ॥ हेजनार्दन तुमारे इससौम्यमानुषरूपकूंदेखिकै मैंअर्जुन अबी सचेता हूआहूं ॥ अर्थात् पूर्वविश्वरूपकेदर्शनज
न्यभयकरिकैकर्‌येहूएव्यामोहकेअभावकरिकै अबीमैं चित्तकीव्याकुलतातैंरहितहूआहूं ॥ तथा मैंअर्जुन अबीप्रकृतिकूंप्रा
प्तहूआहूं॥अर्थात् तिसभयजन्यव्यथातैंरहितहोणेतैं स्वस्थभावकूंप्राप्तहूआहूं इति॥५१॥ ॥तहां श्रीभगवान्‌नैं अर्जुनऊ
परि कर्‌याजो विश्वरूपकादर्शनरूप अनुग्रहहै॥ताअनुग्रहकीदुर्लभताकूं श्रीभगवान् अवर्‌यारिश्लोकोंकरिकैकथनकरेहै॥

श्रीभगवानुवाच॥ सुदुर्दर्शमिदंरूपंदृष्टवानसियन्मम ॥
देवाअप्यस्यरूपस्यनित्यंदर्शनकांक्षिणः ॥ ५२ ॥

सुदुर्दर्शं। इदं। रूपं। दृष्टवानसि। यत्। मम। देवाः। अपि। अस्य। रूपस्य। नित्यं। दर्शनकांक्षिणः॥ इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके जिस विश्वरूपकूं तूंअबी देखताभयाहैं यहहमाराविश्वरूप अत्यंतदेखणेकूंअ
शक्यहै जिसकारणतैं देवताभी नित्यहीं इस विश्वरूपके दर्शनकाइच्छाकरेहैं॥ ५२ ॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके जिसविश्वरूपकूं तूं अबी देखताभयाहै ॥ सोयहहमाराविश्वरूप अत्यंतदेखणेकूं
अशक्यहै ॥ जिसकारणतैं इंद्रादिकदेवताभी सर्वदा इसहमारे विश्वरूपकेदर्शनकाइच्छाहीं करतेरहतेहैं ॥ परंतु ॥१५८॥
जैसे तूं अर्जुन इसहमारेविश्वरूपकूं देखताभयाहैं ॥ तैसे तेइंद्रादिकदेवता पूर्वभी इसहमारेविश्वरूपकूं नहींदेखतेभ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

येहैं ॥ और आगेभीनहींदेखैंगे इति ॥ ५३ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेइंद्रादिकदेवता इसआपकेविश्वरूपकूं किस कारणतैं पूर्व नहींदेखतेभयेहैं तथाआगेनहींदेखैंगे ॥ ऐसोअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ मैंपरमेश्वरकीअनन्यभक्तितैंरहितहोणे तैं तेदेवता इसहमारेविश्वरूपकूं पूर्व नहींदेखतेभयेहैं तथाआगेनहींदेखैंगे ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै॥

नाहंवेदैर्नतपसानदानेननचेज्यया ॥ शक्यएवंविधोद्रष्टुंदृष्टवानसिमांयथा ॥ ५३ ॥

न[८]। अहं[५]। वेदैः[६]। न[११]। तपसा[१०]। न[१३]। दानेन[१२]। न[१६]। च[१४]। इज्यया[१५]। शक्यः[९]। एवंविधः[४]। द्रष्टुं[७]। दृष्टवानसि[३]। मां[२]। यथा[१] ॥ इतिपद० ॥

हेअर्जुन तूं जिसप्रकारतैं[१] मैंविश्वरूपकूं[२] देखताभयाहै[३] इसप्रकारकेविश्वरूपवाला[४] मैंपरमेश्वर[५] वेदों केअध्ययनकरिकैभी[६] देखणेकूं[७] नहीं[८] शक्यहूं[९] तथातपकरिकैभी[१०] देखणेकूं नहींशक्यहूं[११] तथादानक[१२] रिकैभी देखणेकूं नहींशक्यहूं[१३] तथा[१४] अग्निहोत्रादिककर्मकरिकैभी[१५] देखणेकूं नहींशक्यहूं[१६] ॥ ५३ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ मैंविश्वरूपपरमेश्वरकूं जिसप्रकारतैं तूं अर्जुन अबी देखताभयाहैं ॥ इसप्रकारकेविश्वरूपवाला मैंपरमेश्वर ऋगादिकच्यारिवेदोंकेअध्ययनकरिकैभी देखणेकूंशक्यनहींहूं ॥ तथा कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपकरिकैभी मैं देखणेकूंशक्यनहींहूं ॥ तथा तुलापुरुष कन्या गौ सुवर्ण अन्न इत्यादिकपदार्थोंकेदानकरिकैभी मैंदेखणेकूंशक्यनहींहूं ॥ तथा अग्निहोत्रादिकश्रौतस्मार्त्तकर्मोंकरिकैभी मैं देखणेकूंशक्यनहींहूं ॥ तहांपूर्व (नवेदयज्ञाध्ययनैः) इसश्लोकविषे जोअर्थ कथनकऱ्याथा ॥ सोईहींअर्थ (नाहंवेदैर्नतपसा) इसश्लोकविषे जोअबी पुनःकथनकऱ्याहै ॥ सो तिसविश्वरूपकेदर्शनकीअत्यंतदुर्लभताकेबोधनकरणेवासतै कथनकऱ्याहै ॥ यातैं इसश्लोकविषे पुनरुक्तिदोषकीप्रा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सिहोवैनहीं इति ॥ ५३ ॥ ※ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारकेविश्वरूपवालातूं जबी वेदोंकेअध्ययनकरिकै तथा तपकरिकै तथादानकरिकै तथाअग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकै देखणेकूं अशक्यहैं ॥ तबो दूसरेकिसउपायकरिकै तूं देखणेकूंशक्यहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताविश्वरूपकेदर्शनकाउपाय कथनकरेहै ॥

458

भक्त्यात्वनन्ययाशक्यअहमेवंविधोर्जुन ॥ ज्ञातुंद्रष्टुंचतत्त्वेनप्रवेष्टुंचपरंतप ॥ ५४ ॥

भक्त्या । तुं । अनन्यया । शक्यः । अहं । एवंविधः । अर्जुन । ज्ञातुं । द्रष्टुं । च । तत्त्वेन । प्रवेष्टुं । च । परंतप ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन हेपरंतप इसप्रकारकेविश्वरूपवाला मैंपरमेश्वर अनन्य भक्तिकरिकै हीं जानणेकूं शक्यहूं तथा वा स्तवस्वरूपकरिकै साक्षात्कारकरणेकूं शक्यहूं तथा अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोणेकूं शक्यहूं ॥ ५४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेपरंतप अर्थात् हेअज्ञानरूपशत्रुकूंनाशकरणेहारा अर्जुन ॥ इसप्रकारकेदिव्य विश्वरूपकूंधारणकरणे हारा मैंपरमेश्वर एकअनन्यभक्तिकरिकैहीं जानणेकूंशक्यहूं ॥ अर्थात् सर्वविषयवासनाकापरित्यागकरिकै एकमैंप रमेश्वरविषयक जानिरतिशयप्रीतिरूप अनन्यभक्तिहै ॥ ताअनन्यभक्तिकरिकैहीं यहअधिकारीजन शास्त्ररूपप्रमाण तैं मैंपरमेश्वरकूंजानिसकैहैं ॥ अन्यकिसीभीउपायकरिकै जानिसकतेनहीं ॥ हेअर्जुन तिसअनन्यभक्तिकरिकै शा स्त्रप्रमाणतैं मैंपरमेश्वर केवल जानणेकूंहीं शक्यनहींहूं ॥ किंतु तिसअनन्यभक्तिकरिकै मैंपरमेश्वर वेदांतवाक्योंके श्रवणमननिदिध्यासनकापरिपाकताकरिकै आपणेवास्तवस्वरूपतैं साक्षात्कारकरणेकूंभी शक्यहूं ॥ अर्थात् ता अनन्यभक्तिकरिकै यहअधिकारीपुरुष श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकै मैंपरमेश्वरकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैं साक्षा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्कारभीकरेहैं ॥ और तिससाक्षात्कारकीप्राप्तितैंअनंतर तिससाक्षात्कारकरिकै अविद्याकेनिवृत्तहूए मैंपरमेश्वर तिनतत्त्ववेत्ताभक्तजनोंकूं आपणेवास्तवस्वरूपतैं प्राप्तहोणेकूंभी शक्यहूं ॥ अर्थात् तिनतत्त्ववेत्ताभक्तजनोंकूं मैंपरमेश्वर आपणाआत्मारूपकरिकैप्राप्तहोवूंहूं ॥ ईहां (हेपरंतप) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकूं अज्ञानरूपशत्रुकोनिवृत्तिकरिकै आपणेअद्वितीयनिर्गुणस्वरूपविषे अभेदरूपकरिकै प्रवेशकोयोग्यता सूचनकरी ॥ और (शक्यः अहं) इसवचनकेस्थानविषे यद्यपि (शक्योऽहं) इसप्रकारकावचन चाहीताथा ॥ तथापि शक्य इसपदतैंउत्तर जो विसर्गोंकालोपकऱ्याहै सो पूर्वकीन्यांई छांदसहै इति ॥ ५४ ॥ * ॥ अब श्रीभगवान्नैं समग्रगीताशास्त्रका सारभूतअर्थ मुमुक्षुजनोंकेअनुष्ठानवासतै एकठाकरिकै कथनकरीताहै ॥

मत्कर्मकृन्मत्परमोमद्भक्तःसंगवर्जितः ॥ निर्वैरःसर्वभूतेषुयःसमामेतिपांडव ॥ ५५ ॥

इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेविश्वरूपदर्शनंनामएकादशोध्यायःसमाप्तः ११॥

मत्कर्मकृत् । मत्परमः । मद्भक्तः । संगवर्जितः । निर्वैरः । सर्वभूतेषु । यः । सः । मां । एति । पांडव ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेपांडव जोपुरुष मत्कर्मकृत्है तथामत्परमहै तथामेरा भक्तहै तथासंगतैंरहितहै तथासर्वभूतों विषे निर्वैरहै सोपुरुषहीं मैंपरमेश्वरकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ ५५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेपांडव अर्थात् हेपंडुराजाकेपुत्रअर्जुन जोअधिकारीपुरुष मत्कर्मकृत्है ॥ अर्थात् जोअधिकारीपुरुष मैंपरमेश्वरकीप्रसन्नतावासतैहीं वेदविहित अग्निहोत्रादिक श्रौतस्मार्तकर्मोंकूंकरेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् स्वर्गादिकफ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

लोंकीकामनावोंकेविद्यमानहूए इसअधिकारीपुरुषविषे सोमत्कर्मकृत्पणा कैसेसंभवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाके हूए श्रीभगवान्कहेहैं (मत्परमःइति) हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष मत्परमहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरहींहूं प्राप्तव्यरू पकरिकैनिश्चितजिसकूं दूसरेस्वर्गादिकफल जिसकूं प्राप्तव्यरूपकरिकैनिश्चितहैंनहीं तिसपुरुषकानाम मत्परमहै ॥ जिसकारणतैं सोअधिकारीपुरुष मत्कर्मकृत्है तथामत्परमहै ॥ तिसकारणतैंहीं सोअधिकारीपुरुष मद्भक्तहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेप्राप्तिकीआशाकरिकै जोअधिकारीपुरुष सर्वप्रकारोंकरिकै मैंपरमेश्वरकेभजनपरायणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् पुत्रादिकपदार्थोंविषेस्नेहकेविद्यमानहूए तिसअधिकारीपुरुषविषे सोतुमाराभक्तपणाभी कैसेसंभवैंगा ॥ ऐसोअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (संगवर्जितःइति) जोअधिकारीपुरुष संगतैंरहितहै ॥ अर्थात् पुत्र स्त्री धन गृह इसतैंआदिलैकेजितनैंकीबाह्यअनात्मपदार्थहैं तिनसर्वपदार्थोंकीइच्छातैंरहितहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् शत्रुवोंविषेद्वेषकेविद्यमानहूए तिसअधिकारीपुरुषविषे सोसंगततैंरहितपणाभी कैसेसंभवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंका केहूए श्रीभगवान्कहेहैं (निर्वैरःसर्वभूतेषुइति) हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष सर्वभूतोंविषेवैरतैंरहितहै ॥ अर्थात् जे प्राणी आपणाअपकारकरेहैं ॥ ऐसेअपकारीप्राणीयोंविषेभी जोपुरुष द्वेषतैंरहितहै ॥ हेअर्जुन इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष मत्कर्मकृत्है तथामत्परमहै तथामद्भक्तहै तथासंगतैंरहितहै तथासर्वभूतोंविषेनिर्वैरहै ॥ सोअधिकारा पुरुषहीं मैंपरमेश्वरकूं अभेदरूपकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ हेअर्जुन यहजो सर्वशास्त्रकासारभूतअर्थ हमनैं तुमारेप्रति उप देशकऱ्याहै ॥ सोयहअर्थहीं तुमारेकूं जानणेयोग्यहै ॥ इसअर्थकेजानणेतैंपरे दूसराकोई तुमारेकूंकर्त्तव्यनहींहै इति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ और किसीटीकाविषेतौं (मत्परमः) इसपदका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ मीयतेपदार्थोंऽनयाइतिमा ॥ अर्थयह जिसकरिकै पदार्थ निश्चयकऱ्याजावैहै ताकानाम माहै ॥ अर्थात् नेत्रादिकइंद्रियजन्यअंतःकरणकीवृत्तिकरिकैहीं सर्वपदार्थ निश्चयकऱ्येजावैहैं ॥ यातैं ताइंद्रियजन्यवृत्तिकानाम माहै ॥ तहां मत्पराहै कया सर्वत्रमैंपरमेश्वरकेस्वरूपग्रहणपराहै साइंद्रियजन्यवृत्तिरूप मा जिसपुरुषकी ताकानाम मत्परमहै इति ॥ तहां (मत्कर्मकृत् मत्परमः) इनदोनोंपदोंकरिकैतौं संपूर्णकर्मयोग तथासंपूर्णध्यानयोगकथनकऱ्या ॥ जोकर्मयोग तथाध्यानयोग त्वंपदार्थकाशोधकहै ॥ और (मद्भक्तः) इसपदकरिकैतौं समग्रउपासनाकांडकेअर्थकासंग्रहकऱ्या ॥ और (संगवर्जितः) इसपदकरिकैतौं सर्वसंगकापरित्यागकरिकै एकांतदेशविषेस्थितहोइकै यहअधिकारीपुरुष भगवत्ध्याननिष्ठहोवै यहअर्थकथनकऱ्या ॥ और (निर्वैरःसर्वभूतेषु) इसवचनकरिकैतौं यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ यहअधिकारीपुरुष इससर्वविश्वकूं भगवत्रूपकरिकैदेखै ॥ जोकदाचित् यहअधिकारीपुरुष इससर्वविश्वकूं भगवत्रूपकरिकैनहींदेखैंगा ॥ तौंभेदबुद्धिवाले इसअधिकारीपुरुषविषे सानिवैंरताहीं संभवैंगीनहीं ॥ इसप्रकारतैं यहश्लोक सर्वगीताशास्त्रकेसारभूतअर्थकूंकथनकरेहै ॥ और (हेपांडव) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनका विशुद्धवंशविषेजन्म कथनकरया ॥ ताकरिकै यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ तूं अर्जुन इससर्वशास्त्रकेसारभूतअर्थकूं जानणेविषेसमर्थहैं इति ॥ ५५ ॥ ❋ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येणस्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायांगीतागूढार्थदीपिकाख्यायांएकादशोऽध्यायःसमाप्तः॥११॥श्रीगुरुभ्योनमः॥श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः॥श्रीशंकाचार्येभ्योनमः॥

461

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

इतिश्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायामेकादशोऽध्यायः॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

463

॥ अथ श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायांद्वादशोऽध्यायः॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ द्वा
दशाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहांपूर्व एकादशेअध्यायकेअंतविषे (मत्कर्मकृन्मत्परमोमद्भक्तःसंगवर्जितः ॥ निर्वैरःसर्वभूतेषु
यःसमामेतिपांडव) इसश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं च्यारिवार मत् यहशब्द कथनकऱ्याहै ॥ तिस मत्शब्दकेअर्थवि
षे यहसंशयहोवैहै ॥ जो श्रीभगवान्नैं तामत्शब्दकरिकै निराकारवस्तुका कथनकऱ्याहै अथवा साकारवस्तुका क
थनकऱ्याहै इति ॥ तहां इसप्रकारकेसंशयकोउत्पत्तिविषे श्रीभगवान्के पूर्वउक्तवचनहींकारणहैं ॥ काहेतैं श्रीभगवा
न्नैं (मत्कर्मकृत्) इसश्लोकतैंपूर्व निराकारवस्तुकूं तथासाकारवस्तुकूं दोनोंकूं मत् इसशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥
तहां (बहूनांजन्मनामंतेज्ञानवान्मांप्रपद्यते ॥ वासुदेवःसर्वमितिसमहात्मासुदुर्लभः) इत्यादिकवचनोंकरिकैतौं श्रा
भगवान्नैं तामत्शब्दकरिकै निराकारवस्तुकाहीं कथनकऱ्याहै ॥ और विश्वरूपकेदर्शनतैंअनंतर (नाहंवेदैर्नतप
सानदानेननचेज्यया ॥ शक्यएवंविधोद्रष्टुंदृष्टवानसिमांयथा) इत्यादिकवचनोंकरिकैतौं श्रीभगवान्नैं तामत्शब्द
करिकै साकारवस्तुकाहीं कथनकऱ्याहै ॥ तहां श्रीभगवान्के तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंकीव्यवस्था अधिकारीपु
रुषकेभेदकरिकैहीं करणीहोवैंगी ॥ जोकदाचित् अधिकारीपुरुषकेभेदकरिकै तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंकीव्यव
स्थानहींकरीये ॥ तौं तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंका परस्पर विरोधप्राप्तहोवैंगा ॥ इसप्रकार अधिकारीपुरुषकेभेद
करिकै तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंकीव्यवस्थाकेप्राप्तहूए मैंमुमुक्षुअर्जुननैं क्यानिराकारवस्तु चिंतनकरणेयोग्यहै ॥
अथवा साकारवस्तु चिंतनकरणेयोग्यहै ॥ इसप्रकार आपणेअधिकारकेनिश्चयकरणेवासतै सगुणविद्या तथानिर्गु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

णविद्या इनदोनोंविद्यावोंके विशेषताजानणेकोइच्छाकरताहूआ अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरेहै ॥

अर्जुनउवाच ॥ एवंसततयुक्तायेभक्तास्त्वांपर्युपास ते ॥ येचाप्यक्षरमव्यक्तंतेषांकेयोगवित्तमाः ॥ १ ॥

एवं । सततयुक्ताः । ये । भक्ताः । त्वां । पर्युपासते । ये । च । अपि । अक्षरं । अव्यक्तं । तेषां । के । योग । वित्तमाः ॥ इतिपद० ॥

हेभगवन् इसप्रकार निरंतरयुक्तहूए तथाएकसाकारवस्तुकेशरणहूए जेअधिकारीपुरुष तैंसाकारपरमेश्वरकूं निरंतरचिंतनकरेहैं तथा जेविरक्तपुरुष अक्षर अव्यक्तरूप तैंनिर्गुणब्रह्मकूंहीं" निरंतर चिंतनकरेहैं तिनदोनोंकेमध्यविषे कौंनपुरुष अतिशयकरिकैयोगकेजानणेहारेहैं ॥ १ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् जेअधिकारीजन (मत्कर्मकृन्मत्परमः) इसपूर्वश्लोकउक्तप्रकारकरिकै सततयुक्तहैं ॥ अर्थात् जेपुरुष निरंतर भगवत्अर्पणकर्मादिकोंविषे सावधानताकरिकै प्रवृत्तहूएहैं ॥ तथा जेअधिकारीपुरुष भक्तहैं अर्थात् जेपुरुष एकसाकारवस्तुकेहीं शरणकूंप्राप्तहूएहैं ॥ इसप्रकारसततयुक्तहूए तथाभक्तहूए जेअधिकारीपुरुष इसप्रकारकेसाकाररूपवाले तैंपरमेश्वरकूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक निरंतरचिंतनकरेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै सगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेभक्तजनोंका कथनकऱ्या ॥ अब निर्गुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेभक्तजनोंका कथनकरेहैं (येचाप्यक्षरंइति) हेभगवन् जेअधिकारीपुरुष सर्वसंसारतैंविरक्तहूए तथासर्वकर्मोंकेत्यागवालेहूए अक्षररूप तथाअव्यक्तरूप तैंपर

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मेश्वरकूं निरंतर चिंतनकरेहैं ॥ तहां नक्षरति अश्नुतेवा इत्यक्षरं ॥ अर्थयह ॥ जोवस्तु कदाचित्भी नाशकूंनहींप्रा
तहोवै ताकानाम अक्षरहै अथवा जोवस्तु आपणेसत्तास्फुरणरूपकरिकै इससर्वजगतकूं व्याप्तकरेहै ताकानाम
अक्षरहै ॥ ऐसाअक्षररूप निर्गुणब्रह्महै ॥ इसीनिर्गुणब्रह्मरूपअक्षरकूं बृहदारण्यकउपनिषदविषे याज्ञवल्क्यमुनि
नैं गार्गीकेप्रति स्थूलसूक्ष्मादिकसर्वउपाधियोंतैंरहित कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एतद्वैतदक्षरंगार्गिब्राह्मणाअभिव
दंत्यस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घं ॥) अर्थयह ॥ हेगार्गी इसीनिर्गुणब्रह्मरूपअक्षरकूं ब्रह्मवेत्ताब्राह्मण स्थूलभावतैंरहित
कहेहैं तथाअणुभावतैंरहित कहेहैं तथाह्रस्वभावतैंरहित कहेहैं तथादीर्घभावतैंरहित कहेहैं इति ॥ जिसकारणतैं सो
निर्गुणब्रह्मरूपअक्षर सर्वउपाधियोंतैंरहितहै ॥ इसकारणतैंहीं सोनिर्गुणब्रह्मरूपअक्षर अव्यक्तहै ॥ अर्थात् नेत्रा
दिकसर्वकरणोंकाअविषयहै ॥ ऐसेअक्षररूप तथाअव्यक्तरूप तैंनिराकारनिर्गुणपरमेश्वरकूं जेअधिकारीपुरुष श्र
द्धाभक्तिपूर्वक निरंतर चिंतनकरेहैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेअधिकारीजनोंकेमध्यविषे कौंनअधिकारीजन योगवित्तमहैं
॥ अर्थात् कौंनअधिकारीजन अतिशयकरिकैयोगकेजानणेहारेहैं ॥ अथवा कौंनअधिकारीजन अतिशयकरिकै स
माधिरूपयोगकूं प्राप्तहूएहैं ॥ तहां समाधिरूपयोगकूं जेपुरुष जानेहैं अथवा प्राप्तहोवैहैं तिनोंकानाम योगवित्हैं
॥ तिनयोगवित्पुरुषोंकेमध्यविषे जेअत्यंतश्रेष्ठहोवैं तिनोंकानाम योगवित्तमहै ॥ अर्थात् इसप्रकारकेयोगवित्तौं
तेदोनोंप्रकारकेअधिकारीजनहैं ॥ तिनदोनोंप्रकारके अधिकारीजनोंकेमध्यविषे कौंनअधिकारीजन अत्यंतश्रेष्ठयो
गवित्हैं ॥ अर्थात् किनअधिकारीपुरुषोंकाज्ञान मैंअर्जुननैं अनुसरणकरणेयोग्यहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सगुणब्रह्मके

466

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

जानणेहारेपुरुषोंकाज्ञान हमारेकूं अनुसरणकरणेयोग्यहै ॥ अथवा निर्गुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंकाज्ञान हमारेकूं अनुसरणकरणेयोग्यहै इति ॥ १ ॥ ※ ॥ तहां सर्वज्ञ श्रीकृष्णभगवान् तिसअर्जुनका सगुणविद्याविषेहीं अधिकारकूंदेखताहूआ तिसअर्जुनकेप्रति सासगुणविद्याहीं विधानकरैंगा ॥ तथा यथाअधिकारकेअनुसार ताविद्याके न्यूनअधिकतायुक्तसाधनोंकाभी विधानकरैंगा ॥ इसकारणतैं प्रथम साकारब्रह्मविद्याविषे ताअर्जुनकीरुचिकरावणे वासतै तासाकारब्रह्मविद्याकीस्तुतिकरताहूआ साप्रथम साकारब्रह्मविद्याहींश्रेष्ठहै इसप्रकारकेउत्तरकूं कथनकरेहै ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ मय्यावेश्यमनोयेमांनित्ययुक्ताउपा
सते ॥ श्रद्धयापरयोपेतास्तेमेयुक्ततमामताः ॥ २ ॥

मयि । आवेश्य । मनः । ये । मां । नित्ययुक्ताः । उपासते । श्रद्धया ।
परया । उपेताः । ते । मे । युक्ततमाः । मताः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जेअधिकारीपुरुष आपणेमनकूं मैंसगुणब्रह्मविषे एकाग्रकरिकै नित्ययुक्तहूए तथासात्विक श्रद्धाकरिकै युक्तहूए मैंसाकारब्रह्मकूं चिंतनंकरेहैं तेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकूं युक्ततम अभिमतहैं ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥ ॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंभगवान्वासुदेवपरमेश्वरसगुणब्रह्मविषे आपणेमनकूं आवेशकरिकै अर्थात् अनन्यशरणता करिकै तथानिरतिशयप्रियताकरिकै आपणेमनकूं मैंसगुणब्रह्मविषे प्रवेशकरिकै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे हिंगुलकेरंग

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

केसाथिमिलिकै लाख तन्मयहोइजावैहै तैसे आपणेमनकूं मैंपरमेश्वरमयकरिकै ॥ जेअधिकारीपुरुष नित्ययुक्तहूए ॥ अर्थात् निरंतर मैंपरमेश्वरकेचिंतनविषयक उद्यमवालेहूए ॥ तथा जेअधिकारीपुरुष परश्रद्धाकरिकैयुक्तहुए ॥ अर्थात् आराधनकऱ्याहूआ यहसगुणपरमेश्वर अवश्यकरिकै हमारा निस्तारकरैंगा याप्रकारकी आस्तिक्यबुद्धि रूप सात्विकश्रद्धाकरिकैयुक्तहूए ॥ सर्वयोगेश्वरोंकाभोईश्वररूप तथासर्वज्ञ तथासमग्रकल्याणगुणोंकास्थानरूप ऐसेसाकारब्रह्मरूप मैंपरमेश्वरकूं सर्वदा चिंतनकरेहैं ॥ तेअधिकारीजनहीं मैंपरमेश्वरकूं युक्ततमरूपकरिकै अभिमतहैं ॥ अर्थात् तेअधिकारीपुरुष सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरविषे आसक्तचित्तवालेहोणेतैं सर्वविषयोंतैंविमुखहोइकै मैंपरमेश्वरकाचिंतनकरतेहूए संपूर्णदिनरात्रियोंकूंवितीतकरेहैं ॥ यातैं तेसगुणब्रह्मकोचिंतनकरणेहारेअधिकारीजनहीं मैंपरमेश्वरकूं युक्ततमरूपकरिकै अभिप्रेतहैं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वर तिनअधिकारीजनोंकूं सर्वयोगीजनोंतैंश्रेष्ठ मानताहूं इति ॥ २ ॥ * ॥ शंका ॥ हेभगवन् निर्गुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंकीअपेक्षाकरिकै तिनसगुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंविषे कौंनअतिशयताहै ॥ जिसअतिशताकरिकै तेसगुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषहीं आपकूं युक्ततमरूपकरिकैअभिमतहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासकेहूए ॥ श्रीभगवान् तिसअतिशयताकूं कथनकरताहूआ प्रथम तिसअतिशयताकेनिरूपक निर्गुणब्रह्मकेवेत्तावोंकीदोश्लोकोंकरिकै स्तुतिकूं कथनकरेहै ॥

468

येत्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तंपर्युपासते ॥ सर्वत्रगमचिंत्यंचकूटस्थमचलंध्रुवं ॥ ३ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

संनियम्येंद्रियग्रामंसर्वत्रसमबुद्धयः॥ तेप्राप्नुवंतिमामेवसर्वभूतहितेरताः॥ ४ ॥

ये[2]। तु[1]। अक्षरं[16]। अनिर्देश्यं[5]। अव्यक्तं[4]। पर्युपासते[6]। सर्वत्रगं[3]। अचिंत्यं[11]। च[12]। कूटस्थं[13]। अचलं[14]। ध्रुवं[15]॥ संनियम्य[8]। इंद्रियग्रामं[7]। सर्वत्र[9]। समबुद्धयः॥ ते[10]। प्राप्नुवंति[21]। मां[17]। एव[18]। सर्वभूतहितेरताः॥ इतिपदार्थः॥

हेअर्जुन पुनः जेअधिकारीजन इंद्रियोंकेसमूहकूं निरुद्वैकरिकै सर्वत्र समबुद्धिवालेहूए तथासर्वभूतोंकेहितविषे प्रीतिवालेहूए अनिर्देश्य अव्यक्त सर्वत्रव्यापक अचिंत्य तथा कूटस्थ अचल ध्रुव ऐसेनिर्गुणब्रह्मरूप अक्षरकूं निरंतरचिंतनकरेहैं तेअधिकारीपुरुषभी मैंनिर्गुणब्रह्मकूं हीं प्राप्तहोवैहैं ॥ ३ ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेअधिकारीजन अक्षररूप मैंनिर्गुणब्रह्मकूं निरंतर चिंतनकरेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषभीमैंअक्षररूपनिर्गुणब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ जोअक्षररूपनिर्गुणब्रह्म बृहदारण्यकउपनिषदविषे याज्ञवल्क्यमुनिनैं गार्गीके प्रति (एतद्वैतदक्षरंगार्गीब्राह्मणाअभिवदंत्यस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घं) इत्यादिकवचनोंकरिकैकथन कऱ्याहै ॥ ईहां (ये तु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वकथनकऱ्येहूए सगुणब्रह्मकेउपासकोंतैं इननिर्गुणब्रह्मके उपासकोंविषे विलक्षणताकेबोधनकरणेवासतैंहै ॥ अब तिसअक्षरविषे निर्गुणब्रह्मरूपताकेसिद्धकरणेवासतैं ताअक्षरके सप्तविशेषणोंकूं श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥ हेअर्जुन सोनिर्विशेषब्रह्मरूपअक्षर कैसाहै अनिर्देश्यहै ॥ अर्थात् सोअक्षरब्रह्म किसीशब्दकरिकैकथनकरणेकूंअशक्यहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोअक्षरब्रह्म शब्दकरिकै क्युंनहींकथ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नकऱ्याजावैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताअनिर्देश्यपणेविषे हेतुकेहैं (अव्यक्तंइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं सोअक्षर अव्यक्तहै ॥ अर्थात् शब्दकीप्रवृत्तिकेनिमित्तभूतजे जाति गुण क्रिया संबंध यहच्यारि धर्महैं तिनच्यारोंतैं सोअक्षररहितहै ॥ तिसकारणतैंसोअक्षरब्रह्म किसीभीशब्दकरिकैकथनकऱ्याजातानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ लोकविषे जिसजिसअर्थविषे जोजोशब्द प्रवृत्तहोवैहै ॥ सोसोशब्द तिसतिसअर्थविषे जातिकूं अथवा गुणकूं अथवा क्रियाकूं अथवा संबंधकूं द्वारभूतकरिकैहीं प्रवृत्तहोवैहै ॥ जैसे ब्राह्मण इत्यादिकशब्द ब्राह्मणत्वादिकजातिकूंलैकेहीं स्वस्वअर्थविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और शुक्ल नील इत्यादिकशब्द शुक्लनीलादिकगुणोंकूंलैकेहीं स्वस्वअर्थविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और पाचक पाठक इत्यादिकशब्दतौं पाकादिरूपक्रियाकूंलैकेहीं स्वस्वअर्थविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और पिता पुत्र इत्यादिकशब्दतौं जन्यजनकभावआदिकसंबंधकूंलैकेहीं स्वस्वअर्थविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ इसप्रकारतैं सर्वशब्द जातिगुणादिकनिमित्तकूंलैकेहीं आपणेआपणेअर्थविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और निर्विशेषअक्षरब्रह्मविषे तेजातिगुणादिकविशेषधर्महैंनहीं ॥ यातैं ताअक्षरब्रह्मविषे किसीभीशब्दकीप्रवृत्तिहोवैनहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोअक्षरब्रह्म तिनजातिगुणादिकधर्मोंतैंरहित किसहेतुतैंहै ॥ ऐसोअर्जुनकोशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् तिनजातिआदिकोंतैंरहितपणेविषे हेतुकेहैं (सर्वत्रगंइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं सोअक्षरब्रह्म सर्वत्रगहै ॥ अर्थात् सर्वत्रव्यापकहै तथासर्वकाकारणहै ॥ तिसकारणतैं सोअक्षरब्रह्म तिनजातिगुणादिकोंतैंरहितहै ॥ जोपदार्थ परिच्छिन्नहोवैहै तथाकार्यहोवैहै ॥ सोपदार्थहीं तिनजातिगुणादिकधर्मवालाहोवैहै ॥ यद्यपि नैयायिक आकाश काल

470

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

दिशा इनतीनोंविषे अकार्यपणा तथाव्यापकपणा अंगीकारकरिकैभी तिनतीनोंविषे जातिगुणादिक अंगीकारकरे हैं ॥ यातैं परिच्छिन्नकार्यविषेहीं तेजातिगुणादिकरहेहैं यहनियम संभवतानहीं ॥ तथापि वेदांतसिद्धांतविषे तिनआ काशादिकोंविषेभी कार्यपणा तथापरिच्छिन्नपणाहीं अंगीकारहै ॥ तहां(आत्मनआकाशःसंभूतः ॥)अर्थयह ॥ आत्मा तैं आकाश उत्पन्नहोताभया ॥ इत्यादिकश्रुतियोंनैं तिनआकाशादिकोंको आत्मातैंउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ (और यो वैभूमातत्सुखंनाल्पेसुखमस्ति ॥) इत्यादिकश्रुतियोंनैं व्यापकआत्मातैंभिन्न आकाशादिकसर्वप्रपंचकूं परिच्छिन्नकह्या है ॥ यातैं आकाशादिकोंविषे तानियमकाभंगहोवैनहीं इति ॥ और जिसकारणतैं सोअक्षरब्रह्म सर्वत्रव्यापकहै ॥ ति सकारणतैंसोअक्षरब्रह्म अचिंत्यहै ॥ अर्थात् सोअक्षरब्रह्म जैसे शब्दकेप्रवृत्तिकाविषयनहींहै तैसे मनकेप्रवृत्ति काभीविषयनहींहै ॥ शब्दकेप्रवृत्तिकीन्यांई मनकीप्रवृत्तिभी परिच्छिन्नवस्तुकूंहीं विषयकरेहै ॥ ताअक्षरब्रह्मविषे प रिच्छिन्नपणाहैनहीं ॥ यातैं ताअक्षरब्रह्मविषे मनकेप्रवृत्तिकीभीविषयता संभवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (यतोवाचोनिवर्त्तं तेअप्राप्यमनसासहइति ॥) अर्थयह ॥ मनसहितवाणी जिसअक्षरब्रह्मकूंनप्राप्तहोइकै जिसअक्षरब्रह्मतैं निवर्त्तहोइ जावैहैं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोअक्षरब्रह्म जोकदाचित् वाणीका तथामनका नहींविषयहोवै ॥ तौं श्रुतिवचन तथाव्याससूत्र ताब्रह्मविषे वाणीकोविषयता तथामनकोविषयता किसवासतै कथनकरतेहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तंत्वौपनि षदंपुरुषंपृच्छामिइति दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिःइति मनसैवानुद्रष्टव्यंइति॥) अर्थयह ॥ हेशाकल्यके वल उपनिषदप्रमाणकरिकैजानणेयोग्यजोपरब्रह्महै ॥ तिसपरब्रह्मकास्वरूप मैंयाज्ञवल्क्य तुमारेसैं पुछताहूं इति

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ और सूक्ष्मदर्शीविद्वान्पुरुषोंनैं विषयवासनातैंरहित एकाग्रसूक्ष्मबुद्धिकरिकैहीं यहआत्मादेव साक्षात्कारकरी ताहै इति ॥ और यह आत्मादेव केवलशुद्धमनकरिकैहीं देख्याजावैहै इति ॥ तहां व्याससूत्रं ॥ (शास्त्रयोनित्वात् ॥) अर्थयह ॥ उपनिषद्रूपशास्त्रहै योनि क्या प्रमाणजिसविषे ऐसापरब्रह्महै इति ॥ इत्यादिकश्रुतिसूत्रवचन तिसपरब्रह्मविषेभी उपनिषद्रूपवाणीकीविषयता तथाशुद्धमनकीविषयता कथनकरेहैं ॥ ब्रह्मकूंअविषयमानणेविषे तेसवैअसंगतहोवैंगे ॥ समाधान ॥ हेअर्जुन महावाक्यरूपशब्दप्रमाणतैं उत्पन्नभईजाबुद्धिकोअंत्यवृत्तिहै ॥ ताबुद्धिकी वृत्तिविषे अविद्याकल्पितसंबंधकरिकै परमानंदबोधरूपशुद्धवस्तुकेप्रतिबिंबितहूएहीं कल्पितरूप अविद्याकी तथा ताअविद्याकेकार्यकी निवृत्तिहोवैहै ॥ याकारणतैंहीं उपचारमात्रतैं तिसपरब्रह्मविषे वाणीकोविषयता तथाबुद्धिकी विषयता कथनकरीहै ॥ अर्थात् महावाक्यजन्य शुद्धबुद्धिकीवृत्ति चिदाभासकरिकैयुक्तहूई ब्रह्माश्रिततथाब्रह्मविषयक अविद्याकी निवृत्तिमात्रकरेहै ॥ जिसकूंशास्त्रविषे वृत्तिव्याप्तिकहेहैं ॥ तिसकूंअंगोकारकरिकैहीं श्रुतिसूत्रवचनोंनैं ताब्रह्मविषे वाणीकोविषयता तथामनकोविषयता कथनकरीहै ॥ जैसे देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे फलव्याप्तिरूपमुख्यविषयताहै ॥ तैसे ब्रह्मविषे कोईमुख्यविषयता कथनकरीनहीं इससर्वअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् तिसअक्षरब्रह्मविषे कल्पितअविद्याकेसंबंधका उपपादनकरणेवासतैकहेहै (कूटस्थंइति) तहां जोवस्तु वास्तवतैंमिथ्याभूतहूआभी सत्यरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै तावस्तुकूं लोकविषे कूट इसनामकरिकैकथनकरेहैं ॥ जैसे इसलोकविषे जोसाक्षीपुरुष वास्तवतैंमिथ्यावादीहूआभी सत्यवादीपुरुषकोन्यांई प्रतीतहोवैहै तासाक्षीकूं कूटसाक्षी कहेहैं ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तैसे मायाअविद्यारूपयहअज्ञानभी आपणेकार्यप्रपंचसहित वास्तवतैंमिथ्याभूतहूआभा विचारहीनपुरुषांकूं सत्य रूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं यहकार्यप्रपंचसहितअज्ञानभी कूटइसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ ताकार्यप्रपंचसहित अज्ञाननामकूटविषे जोवस्तु आध्यासिकसंबंधकरिकै अधिष्ठानरूपतैं स्थितहोवैहै तावस्तुकानाम कूटस्थहै ॥ अर्थात् कार्यप्रपंचसहितअज्ञानका अधिष्ठानरूपजोपरब्रह्महै ताकानाम कूटस्थहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै पूर्वउक्तसर्वअनुपपत्तियोंका परिहारकऱ्या ॥ इसकारणतैंहीं सर्वविकारोंकूं अविद्याकारिकैकल्पितहोणेतैं ताअविद्याकाअधिष्ठानरूपसाक्षीचैतन्य निर्विकारहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै (अचलंइति) तहां विकारकानाम चलनहै ॥ ताचलनरूपविकारतैंजोरहितहोवै ताकानाम अचलहै ॥ अचलहोणेतैंहीं सोअक्षरब्रह्म ध्रुवहै ॥ अर्थात् परिणामोभावतैंरहितनित्यहै ॥ इसप्रकारके अक्षरशुद्धब्रह्मरूप मैंपरमेश्वरकूं जेअधिकारीजन चिंतनकरेहैं ॥ अर्थात् ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकेश्रवणकरिकै प्रमाणगतअसंभावनाकीनिवृत्तिकरिकै तथामननकरिकै प्रमेयगतअसंभावनाकीनिवृत्तिकरिकै तिसतैंअनंतर विपरीतभावनाकीनिवृत्तिकरणेवासतै जेअधिकारीपुरुष ध्यानकूंकरेहैं ॥ अर्थात् अनात्माकारविजातीयवृत्तियोंका तिरस्कारकरिकै तैलधाराकीन्यांई विच्छेदतैंरहित सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहरूपनिदिध्यासनभूतध्यानकरिकै जेअधिकारीपुरुष मैंनिर्गुणब्रह्मकूंविषयकरेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् श्रोत्रादिकइंद्रियोंका आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंकेसाथि संबंधकेविद्यमानहूए सोविजातीयवृत्तियोंकातिरस्कार कैसेहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (सन्नियम्येंद्रियग्रामंइति) हेअर्जुन जेअधिकारीजन आपणेश्रो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्रादिकइंद्रियोंकेसमूहकूं आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंतैंनिवृत्तकरिकै मैंनिर्गुणब्रह्मकाध्यानकरेहैं ॥ इतनैं कहणेक
रिकै श्रीभगवान्नैं शमदमादिकषट्संपत्ति कथनकरी ॥ शंका ॥ हेभगवन् विषयभोगकीवासनाकेविद्यमानहूए
तिनशब्दादिकविषयोंतैं श्रोत्रादिकइंद्रियोंकीनिवृत्ति कैसेसंभवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै
(सर्वत्रसमबुद्धयः इति) हेअर्जुन सर्वविषयोंविषे समहै क्या तुल्यहै अर्थात् हर्षविषाददोनोंतैं तथारागद्वेषदोनोंतैं
रहितहैबुद्धिजिनोंकी तिनोंकानाम सर्वत्रसमबुद्धिहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सम्यक्ज्ञानकरिकै जिनपुरुषोंका हर्षविषाद
आदिकोंकाकारणरूपअज्ञान निवृत्तहोइगयाहै ॥ तथा विषयोंविषेदोषदर्शनकेअभ्यासकरिकै जिनपुरुषोंकीसर्वविष
यइच्छा निवृत्तहोइगईहै ॥ ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषोंकानाम सर्वत्रसमबुद्धिहै ॥ ऐसेसर्वत्रसमबुद्धिवालेहूए जेअधिकारीपु
रुष मैंनिर्गुणब्रह्मकाचिंतनकरेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं वशीकारनामावैराग्य कथनकऱ्या ॥ इसोकारणतैं
हीं सर्वत्रआत्मदृष्टिकरिकै हिंसाकेकारणरूपद्वेषतैंरहितहोणेतैं जेअधिकारीपुरुष सर्वभूतोंकेहितविषेप्रीतिवालेहैं ॥
अर्थात् (अभयंसर्वभूतेभ्योमत्तःस्वाहा) इसमंत्रकरिकै सर्वभूतप्राणीयोंकेतांई दईहूईहैअभयरूपदक्षिणाजिनोंनैं ऐसे
जेपरमहंससंन्यासीहैं ॥ तहां संन्यासीयोंनैं सर्वभूतप्राणीयोंकेतांई अभयदानदेणा यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनक
रीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अभयंसर्वभूतेभ्योदत्वासंन्यासमाचरेत्) ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष शरीरकरिकै तथामन
करिकै तथावाणीकरिकै सर्वस्थावरजंगमरूपप्राणीयोंकेतांई अभयदानदेकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै इति ॥
इसप्रकारकेसर्वसाधनोंकरिकैसंपन्नहूए तेसर्वतैंविरक्तअधिकारीजन आप ब्रह्मरूपहूएभी सर्वसाधनोंकाफलभूत

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तथासंशयतैंरहित ऐसेआत्मसाक्षात्कारकरिकै मैंअक्षरब्रह्मरूपकूंहींप्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् तेतत्त्ववेत्तापुरुष तिसतत्त्वसाक्षात्कारतैंपूर्वभी मैंनिर्गुणब्रह्मरूपहूएहीं तिसतत्त्वसाक्षात्कारकरिकै अविद्याकेनिवृत्तहूए मैंनिर्गुणब्रह्मरूपहूएहीं स्थितहोवैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मैवसन्ब्रह्माप्येति ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवति ॥) अर्थयह ॥ यहअधिकारीजन ब्रह्मरूपहूआहीं ब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैं आपणाआत्मारूपकरिकैब्रह्मकूंजानणेहारापुरुष ब्रह्मरूपहीं होवैहै इति ॥ तहां ज्ञानवान्पुरुष ब्रह्मरूपहींहै यहवार्त्ता (ज्ञानीत्वात्मैवमेमतं) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आपहीं इसगीताशास्त्रविषे कथनकरीहै इति ॥ ३ ॥ ४ ॥ ※ ॥ अब इननिर्गुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेअधिकारीजनोंतैं पूर्वकथनकऱ्येहूएसगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेअधिकारीजनोंकीअतिशयताकूंदिखावताहूआ श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कहेहै ॥

क्लेशोधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसां ॥ अव्यक्ताहिगतिर्दुःखंदेहवद्भिरवाप्यते ॥ ५ ॥

क्लेशः । अधिकतरः । तेषां । अव्यक्तासक्तचेतसां । अव्यक्ता । हि । गतिः । दुःखं । देहवद्भिः । अवाप्यते ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन निर्गुणब्रह्मविषेआसक्तहैचित्तजिनोंका तिनपुरुषोंकूं अतिअधिक क्लेशहोवै जिसका रणतैं देहाभिमानीपुरुषोंनैं सोनिर्गुण ब्रह्म बहुतदुःखकरिकै पाईताहै ॥ ५ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारे जेअधिकारीपुरुष पूर्वकथनकरेथे ॥ तिनअधिकारीजनोंकूंभी सर्वविषयोंतैंआपणेमनकूंनिवृत्तकरिकै सगुणब्रह्मविषे तामनकेजोडनेविषे तथा निरंतर परमेश्वरकीप्रसन्नताअर्थ नि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ष्कामकर्मपरायणहोणेविषे तथापरमसात्विकश्रद्धाकरिकैयुक्तहोणेविषे अधिकक्लेशतौं प्राप्तहोवैहै ॥ परंतु तिन सगु
णब्रह्मकेचिंतनकरणहारेपुरुषोंकूं अधिकतरक्लेश प्राप्तहोवैनहीं ॥ अर्थात् अत्यंत अधिकक्लेश प्राप्तहोवैनहीं ॥ और
निर्गुणब्रह्मकेचिंतनपरायणहैचित्तजिनोंका ऐसेजे पूर्वउक्तश्रवणादिकसाधनोंवाले अधिकारीजनहैं ॥ तिन निर्गुणब्र
ह्मकचिंतनपरायणअधिकारीजनोंकूंतौं अधिकतरक्लेश प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् अतिशयकरिकैअधिक आयासरूपक्लेश
प्राप्तहोवैहै ॥ अब इसपूर्वउक्तअर्थविषे श्रीभगवान् हेतुकहेहै (अव्यक्ताहिगतिर्दुःखंइति) जिसकारणतैं देहविषेअ
हंममअभिमानवालेपुरुषोंनैं साअव्यक्तरूपगति बहुतदुःखकरिकै पाईतीहै ॥ तहां मुमुक्षुजन तत्त्वज्ञानकरिकै प्राप्त
होवैं जिसकूं ऐसेजो गंतव्यफलरूपनिर्गुणब्रह्महै ताकानाम गतिहै ॥ तहांश्रुति ॥ (साकाष्ठासापरागतिः) अर्थय
ह ॥ सोनिर्गुणब्रह्महीं सर्वकाअवधिरूपहै तथापरागतिरूपहै इति ॥ सोनिर्गुणब्रह्म नेत्रादिकइंद्रियोंकाविषयहैनहीं ॥
यातैं तानिर्गुणब्रह्मरूपगतिकूं अव्यक्तकह्याहै ॥ अर्थात् देहाभिमानीपुरुषोंनै साअक्षरब्रह्मरूपगति बहुतदुःखकरिकै
हींपाईतीहै ॥ तहां प्रथमतौं विवेक वैराग्य शमदमादिषट्संपत्ति मुमुक्षुता इनचतुष्टयसाधनोंकरिकैसंपन्नहोणा ॥
तिसतैंअनंतर विधिपूर्वकसर्वकर्मोंकासंन्यासकरिकै श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेसमीपजाणा ॥ तिसतैंअनंतर तिसब्रह्म
वेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतवाक्योंकाश्रवणकरणा ॥ तिसतैंअनंतर तिसतिसवाक्यकेविचारकरिकै तिसतिसभ्रमकीनि
वृत्तिकरणी ॥ इत्यादिकसाधनोंकेकरणेविषे तिनदेहाभिमानीपुरुषोंकूं महान्प्रयासकोप्राप्ति प्रत्यक्षहींसिद्धहै ॥ इ
सीअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान्नैं (क्लेशोधिकतरस्तेषां) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ यद्यपि सगुणब्रह्मकेजानणेहारे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

पुरुषोंकूं तथानिर्गुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंकूं एकहींमोक्षरूपफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंतैं सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषविषे श्रेष्ठताकहणीसंभवतीनहीं ॥ तथापि एकहींफलकूं जेपुरुष दुष्करउपायकरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥ तिनपुरुषोंकीअपेक्षाकरिकै तिसीफलकूं जेपुरुष सुगमउपायकरिकैप्राप्तहोवैहैं तेपुरुष श्रेष्ठकह्येजावैहैं यहभगवान्काअभिप्रायहै ॥ यद्यपि पूर्वनवमअध्यायकेद्वितीयश्लोकविषे (सुसुखंकर्त्तुमव्ययं) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं अधिकारीपुरुषोंकूं सुखैनहीं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति कथनकरीथी ॥ और ईहां (अव्यक्ताहिगतिर्दुःखं) इसवचनकरिकै बहुतदुःखकरिकै तानिर्गुणब्रह्मकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ यातैं तिसपूर्वउत्तरवचनका परस्परविरोध प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि श्रीभगवान्का यहअभिप्रायहै ॥ विवेकादिकसर्वसाधनोंकरिकैसंपन्न जेनिष्कामअधिकारीजनहैं ॥ तिन अधिकारीजनोंकूंतौं सुखैनहीं निर्गुणब्रह्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जिनपुरुषोंका देहादिकोंविषेअहंममअभिमानहै ऐसे सकामपुरुषोंकूं बहुतदुःखकरिकैहीं सानिर्गुणब्रह्मकोप्राप्तिहोवैहै ॥ इसअभिप्रायकरिकैहीं श्रीभगवान्नैं ईहां (देहवद्भिः) इसवचनकरिकै देहाभिमानीपुरुषहीं कथनकरेहैं ॥ ऐसेदेहाभिमानीपुरुषोंकूं सगुणब्रह्मकाचिंतनहींसुगमहै ॥ यातैं पूर्वउत्तरवचनोंका विरोधहोवैनहीं इति ॥ ५ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं तथानिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं जोकदाचित् एकहींफलकीप्राप्तिहोतीहोवै ॥ तौं क्लेशकीअल्पताकरिकै सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषेतौं उत्कृष्टताहोवै ॥ और क्लेशकीअधिकताकरिकै निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे निकृष्टताहोवै ॥ परंतु तिनदोनोंकूं एकफलकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ किंतु तिनदोनोंकूं भिन्नभिन्नफलकीहींप्राप्तिहोवैहै ॥ तहां निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरु

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

षोंकूंतौं अविद्याकीतथाताकेकार्यप्रपंचकीनिवृत्तिपूर्वक निर्विशेषपरमानंदब्रह्मरूपताकीप्राप्तिरूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ और सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूंतौं अधिष्ठानरूपनिर्गुणब्रह्मका साक्षात्कारहैनहीं ॥ यातैं तिनोंकेअविद्याकीनिवृत्तिहो वैनहीं ॥ किंतु तेसगुणब्रह्मवेत्तापुरुष हिरण्यगर्भरूपकार्यब्रह्मकेलोकविषेजाइकै तहां ऐश्वर्यविशेषरूपफलकूंप्राप्तहो वैहैं ॥ यातैं तिन निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं मोक्षरूपअधिकफलकीप्राप्तिवासतै जोआयासकीअधिकताहै ॥ साआया सकीअधिकता तिननिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे न्यूनताकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ अल्पफलवासतै आयासकीअधिकता हीं न्यूनताकीप्राप्तिकरेहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै ॥ समाधान ॥ हेअर्जुन सगुणब्रह्मकीउपास नाकरिकै निवृत्तहोइगएहैंसर्वप्रतिबंधजिनोंके ऐसेजे सगुणब्रह्मकेउपासकहैं ॥ तिनउपासकपुरुषोंकूं ताब्रह्मलोक विषे केवल ऐश्वर्यविशेषकी प्राप्तिरूपफलहीं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तिनउपासकपुरुषोंकूं ताब्रह्मलोकविषे गुरुकेउ पदेशतैंविनाहीं तथाश्रवणमननिदिध्यासनादिकोंकीआवृत्तिरूपक्लेशतैंविनाहीं ईश्वरकीप्रसन्नताकरिकैसहकृत त था आपेहींस्फुरणहूए ऐसेवेदांतवाक्यकरिकै तत्त्वज्ञानकीभीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिसतत्त्वज्ञानकरिकै कार्यसहितअवि द्याकेनिवृत्तहूए तिसब्रह्मलोकविषेहींऐश्वर्यभोगकेअंतविषे तिनउपासकपुरुषोंकूं निर्गुणब्रह्मविद्याकाफलरूप पर मकैवल्यमुक्ति प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सएतस्माज्जीवघनात्परात्परंपुरी शयंपुरुषमीक्षते ॥) अर्थयह ॥ प्राप्तहूआहैहिरण्यगर्भकाऐश्वर्यजिसकूं ऐसासोउपासकपुरुष तिसब्रह्मलोककेऐश्वर्य भोगकेअंतविषे इनसर्वजीवोंकासमष्टिरूप तथाश्रेष्ठ ऐसेहिरण्यगर्भतैंभी पर कहीये विलक्षण तथाश्रेष्ठ तथाहृदय

478

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

रूपगुहाविषेस्थित तथासर्वत्रपरिपूर्ण ऐसाजो प्रत्यक्अभिन्नअद्वितीयपरमात्मादेवहै तिसपरमात्मादेवकूं साक्षात्कारकरेहै ॥ अर्थात् ताब्रह्मलोकविषे गुरुकेउपदेशतैंविना आपेहीं स्फुरणहूआजो वेदांतवाक्यरूपप्रमाणहै ताप्रमाणकरिकै सोउपासकपुरुष तापरब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरेहै ॥ तासाक्षात्कारकरिकैहीं सोउपासकपुरुष ताब्रह्मलोकविषे कैवल्यमुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इसप्रकार पूर्वउक्तक्लेशतैंविनाहीं सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं ईश्वरकेप्रसादतैं निर्गुणब्रह्मविद्याकामोक्षरूपफलप्राप्तहोवैहै ॥ इससर्वअर्थकूं श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकैकथनकरेहै ॥

येतुसर्वाणिकर्माणिमयिसंन्यस्यमत्पराः ॥ अनन्येनैवयोगेनमांध्यायंतउपासते ॥६॥
तेषामहंसमुद्धर्त्तामृत्युसंसारसागरात् ॥ भवामिनचिरात्पार्थमय्यावेशितचेतसां ॥७॥

ये[3] । तु[2] । सर्वाणि । कर्माणि । मयि । संन्यस्य । मत्पराः । अनन्येन । एव । योगेन । मां । ध्यायंतः । उपासते ।
तेषां । अहं । समुद्धर्त्ता । मृत्युसंसारसागरात् । भवामि । नचिरात् । पार्थ । मयि । आवेशितचेतसां ॥इ०प०
हेपार्थ पुनः जेपुरुष सर्व कर्मोकूं मैंसगुणब्रह्मविषे अर्पणकरिकै मेरेपरायणहूए तथा अनन्य समाधिरूपयोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं हीं चिंतनकरतेहूए मेरीउपासनाकरेहैं तिने मैंपरमेश्वरविषे आवेशितचित्तवालेपुरुषोंका मैंपरमेश्वर मृत्युयुक्तसंसारसमुद्रतैं शीघ्रहीं उद्धारकरणेहारा होवूंहूं॥६॥७॥इ०प०

॥ टीका ॥ ईहां (येतु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वउक्त अर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवास

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

तैहै ॥ हेअर्जुन जेअधिकारीजन मैंसगुणपरमेश्वरविषे नित्य नैमित्तिक स्वाभाविक इत्यादिकसर्वकर्मोंकूंअर्पणकरि कैं मत्परहूएहैं ॥ अर्थात् मैंभगवान्वासुदेवहींहूं पर क्या प्रकृष्टप्रीतिकाविषय जिनोंकूं तिनोंकानाम मत्परहै ॥ अथवा मैंपरमेश्वरहींहूं पर क्या सर्वकर्मोंकरिकैप्राप्य जिनोंकूं तिनोंकानाम मत्परहै ॥ अथवा मैंपरमेश्वरहींहूं पर क्या ध्यानकाविषय जिनोंकूं तिनोंकानाम मत्परहै ॥ अथवा मैंविश्वरूपपरमात्माहींहूं पर क्या आपणेतैंअन्य ज्ञातव्यद्रष्टव्यपदार्थ जिनोंकूं तिनोंकानाम मत्परहै ॥ अर्थात् आपणेतैंअन्यवस्तुविषे सर्वत्र मैंपरमेश्वरकूं देखणेहारेपुरुषोंकानाम मत्परहै ॥ ऐसेमत्परहूए जेअधिकारीपुरुष अनन्ययोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूंचिंतनकरेहैं तहां मैंभगवान्वासुदेवकूंत्यागकै नहींविद्यमानहैअन्यआलंबन जिसविषे ताकानाम अनन्यहै ॥ ऐसाअनन्यरूप जोसमाधिरूपयोगहै ॥ जिस अनन्यसमाधिरूपयोगकूं शास्त्रविषे एकांतभक्तियोग इसनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ ऐसेअनन्ययोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरतेहूए ॥ अर्थात् सर्वसौंदर्यकेसारकानिधानरूप तथाआनंदघनरूपविग्रहवाला तथादोभुजावोंकरिकै युक्त अथवा च्यारिभुजावोंकरिकैयुक्त तथासर्वजनोंकेमनकूंमोहनकरणेहारीमुरलीकूं अतिमनोहरसप्तस्वरोंकरिकै वजावणेहारा तथा शंख चक्र गदा पद्म इनच्यारोंकूं हस्तोंविषेधारणकरणेहारा ऐसाजो मैंभगवान्वासुदेवहूं ॥ तिस मैंभगवान्वासुदेवकूं चिंतनकरतेहूए ॥ अथवा नरसिंह राघव वामन इत्यादिरूप मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरतेहूए ॥ अथवा पूर्वदिखाएहूएविश्वरूप मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरतेहूए ॥ जेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकीउपासनाकरेहैं ॥ अर्थात् ऐसेमैंपरमेश्वरविषयक व्यवध्यानतैंरहित सजातीयचित्तवृत्तियोंकेप्रवाहकूं जेअधि

480

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कारीपुरुष करेहैं ॥ अथवा (उपासते) इसपदका यहदूसराअर्थकरणा ॥ जेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकेसमीपवर्त्तिपणेकरिकै स्थितहोवैंहैं ॥ ऐसेजे मैंपरमेश्वरविषेआवेशितचित्तवालेपुरुषहैं ॥ अर्थात् पूर्वउक्त मैंसगुणब्रह्मविषे आवेशितकऱ्याहै क्या एकाग्रताकरिकैप्रवेशितकऱ्याहै चित्तजिनौंनैं तिनोंकानाम मय्यावेशितचेतसूहै ॥ ऐसे सगुणब्रह्मकेचिंतनपरायणपुरुषोका मैंभगवान्वासुदेव मृत्युसंसारसागरतैं समुद्धर्त्ता होवूंहूं ॥ तहां मृत्युकरिकैयुक्त जो मिथ्याअज्ञान तथाताअज्ञानकाकार्यभूत यहसंसारहै ॥ सोमृत्युयुक्तसंसारहीं प्रसिद्धसागरकीन्यांई दुस्तरहोणेतैं सागररूपहै ॥ ऐसेमृत्युसंसारसागरतैं मैंपरमेश्वर तिनउपासकपुरुषोंका समुद्धर्त्ता होवूंहूं ॥ अर्थात् तिनउपासकपुरुषोंकूं मैंपरमेश्वर ज्ञानरूपआश्रयकी प्राप्तिकरिकै विनाहींआयासतैं तथाथोडेहींकालविषे सर्वप्रपंचकेबाधकाअवधिभूत शुद्धब्रह्मरूप ऊर्ध्वस्थानविषे धारणकरणेहारा होवूंहूं ॥ ईहां (हेपार्थ) यहजोअर्जुनकासंबोधन भगवान्नैं कह्याहै ॥ सो तूंअर्जुन हमारेपिताकेभगिनीकापुत्रहैं तथाहमाराअनन्यभक्तहै ॥ यातैं इसमृत्युयुक्तसंसारसागरतैं तैंअर्जुनकाभी मैंपरमेश्वर अवश्यकरिकैउद्धारकरूंगा तूं भयमतकर ॥ याप्रकारकेआश्वासनकरणेवासतै कथनकऱ्याहै इति ॥ ६ ॥ ७ ॥ ※ ॥

॥ तहां इतनैंग्रंथकरिकै सगुणब्रह्मकेउपासनाकोस्तुति कथनकरी ॥ अब तिस सगुणब्रह्मकोउपासनाका विधानकरेहैं ॥

मय्येवमनआधत्स्वमयिबुद्धिंनिवेशय ॥ निवसिष्यसिमय्येवअतऊर्ध्वंनसंशयः ॥८॥

मैंयि । एंव । मंनः । आंधत्स्व । मंयि । बुंद्धिं । निवेशँय । निंवैसिष्यसि । मैंयि । एंव । अंतः । ऊंर्ध्वं । नैं । संशैंयः ॥इतिप०॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन तूं आपणेमनकूं मैंसगुणब्रह्मविषे हीं स्थितकर तथाआपणेबुद्धिकूंभी मैंसगुणब्रह्म विषेहीं स्थितकर ताकरिकै इसदेहपाततैं अनंतर तूं मैंशुद्धब्रह्मविषे हीं अभेदरूपतैं निवासकरैंगा याकेविषे कोईसंशय तुमनैं नहींकरणा ॥ ८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तूं आपणे संकल्पविकल्परूपमनकूं मैंसगुणब्रह्मविषेहीं स्थितकर ॥ अर्थात् तामनकेसर्ववृत्तियोंकूं मैंसगुणपरमेश्वरविषयक कर ॥ मैंपरमेश्वरतैंभिन्न दूसरेशब्दादिकविषयोंकूं तामनकेवृत्तियोंकाविषय करनहीं ॥ तथा आपणी निश्चयरूपबुद्धिकूंभी मैंसगुणब्रह्मविषेहीं स्थितकर ॥ अर्थात् ताबुद्धिकीसर्ववृत्तियां मैंसगुणब्रह्मविषयकहींकर ॥ तात्पर्ययह ॥ दूसरेसर्वविषयोंकापरित्यागकरिकै तूं सर्वकालविषे मैंसगुणब्रह्मकूंहीं चिंतनकर ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारतैं आपसगुण ब्रह्मकेचिंतनकरणेतैं हमारेकं कौंनफल प्राप्तहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् ताचिंतनकरणेकाफल कथनकरेहै (निवसिष्यसिइति) हेअर्जुन इसप्रकारतैं जबीतूं निरंतर मैंसगुणब्रह्मकाचिंतनकरैंगा ॥ तबी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै तूं इसदेहकेपाततैंअनंतर मैंनिर्गणशुद्धब्रह्मविषेहीं अभेदरूपकरिकै निवासकरैंगा ॥ इसप्रकारके सगुणब्रह्मकीउपासनाकेमोक्षरूपफलविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ अर्थात् तासगुणब्रह्मकेउपासककूं तिसमोक्षरूपफलकीप्राप्तिविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी प्रतिबंधककीशंका नहींकरणी ॥ ईहां यद्यपि (एवअतऊर्ध्वं) इसवचनविषे (एवातऊर्ध्वं) इसप्रकारकीसंधिकरणीचहीतीथी ॥ तथापि श्रीभगवान्नैं जोईहां संधिनहींकरी ॥ सो श्लोककेपूर्णवासतैं नहींकरी इति ॥

॥१७१॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ ८ ॥ ❋ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे सगुणब्रह्मकेध्यानकाप्रकार कथनकऱ्या ॥ अब तिससगुणब्रह्मकेध्यानकर णेविषेभी अशक्त जेअधिकारीजनहैं ॥ तिनअधिकारीजनोंनैं ताअशक्तिकीतारतम्यताकरिकै प्रथमतौं प्रतिमादिक बाह्यवस्तुवोंविषे भगवान्केध्यानकाअभ्यासकरणा ॥ अर्थात् तिनप्रतिमादिकोंविषे भगवत्बुद्धिकरणो ॥ और ति नप्रतिमादिकोंकेध्यानकरणेविषेभी जेपुरुष अशक्तहैं ॥ तिनअधिकारीजनोंनैंतौं श्रवणकीर्त्तनादिरूप भागवतधर्मों का अनुष्ठानकरणा ॥ और तिनभागवतधर्मोंकेअनुष्ठानकरणेविषेभी जेपुरुष अशक्तहैं ॥ तिनअधिकारी जनोंनैंतौं सर्वकर्मोंकेफलकापरित्यागकरणा ॥ अर्थात् फलकीइच्छातैंरहितहोइकै कर्मोंकूंकरणा ॥ इसप्रकारके तीनसाधनोंकूं तीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

अथचित्तंसमाधातुंनशक्नोषिमयिस्थिरं॥अभ्यासयोगेनततोमामिच्छाप्तुंधनंजय९॥

अथ। चित्तं। समाधातुं। नं। शक्नोषि। मयि। स्थिरं। अभ्यासयोगेन। ततः। मां। इच्छ। आप्तुं। धनंजय ॥ इतिप० ॥

हेधनंजय जबीतूं मैंसगुणब्रह्मविषे आपणेचित्तकूं स्थिर स्थापनकरणेकूं नहीं समर्थहोवैं ते
बी अभ्यासयोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोणेअर्थ इच्छाकर ॥ ९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ ईहां श्लोककेआदिविषेस्थितजो अथ यहशब्दहै ॥ सोअथशब्द पूर्वउक्तपक्षकोअपेक्षाकरिकै दूसरेपक्ष केआरंभकाबोधकहै ॥ हेधनंजय जबीतूं मैंसगुणब्रह्म वषे जैसे चित्त स्थिरहोवै तैसे आपणेचित्तकूं स्थापनकरणेवि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

षे अशक्तहोवैं ॥ तबीतूं अभ्यासयोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोणेवासतै इच्छाकर ॥ अर्थात् प्रयत्नकर ॥ त हां सुवर्णादिकधातुमय अथवा पाषाणमय जेविष्णुशिवादिकोंकीप्रतिमाहैं ॥ तिन बाह्य प्रतिमादिकआलंबनविषे सर्वओरतैंनिवृत्तकऱ्येहूएचित्तका जोपुनःपुनःस्थापनहै ताकानाम अभ्यासहै तिसअभ्यासपूर्वक जो समाधिरूप योगहै ताकानाम अभ्यासयोगहै ॥ ऐसेअभ्यासयोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोणेवासतै तूंप्रयत्नकर ॥ ईहां श्रीभग वान्नैं (हेधनंजय) इससंबोधनकेकहणेकरिकै यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ युधिष्ठिरराजाके राजसूययज्ञवासतै बहुतशत्रु वोंकूंजीतकरिकै तूं धनकूंलेआवताभयाहैं ॥ यातैं तुमारा धनंजय यहनाम होताभयाहै ॥ ऐसा धनंजयनामवालातूं अर्जु न एकमनरूपशत्रुकूंजीतिकै तत्त्वज्ञानरूपधनकूं हरणकरैंगा यहवार्त्ता तुमारेविषे कोईआश्चर्यरूप नहींहै इति॥९॥ * ॥

अभ्यासेप्यसमर्थोसिमत्कर्मपरमोभव ॥ मदर्थमपिकर्माणिकुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि१०

अभ्यासे । अपि । असमर्थः । असि । मत्कर्मपरमः । भव । मदर्थं । अपि । कर्माणि । कुर्वन् । सिद्धिं । अवाप्स्यसि॥इतिप० ॥

हेअर्जुन पूर्वउक्तअभ्यासविषे भी जबीतूं असमर्थ होवैं तबीतूं भागवतकर्मपरायण होउ
मैंपरमेश्वरअर्थ कर्मोंकूं भी करताहूआ तूं ब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवैंगा ॥ १० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वश्लोकविषेकथनकऱ्याजोअभ्यासहै ॥ ताअभ्यासकेकरणेविषेभी जबीतूं असमर्थहोवैं ॥ तबी तूं मत्कर्मपरम होउ ॥ तहां मैंपरमेश्वरकीप्रसन्नताअर्थ जेकर्महैं तिनकर्मोंकानाम मत्कर्महै ॥ तेभगवत्कीप्रसन्नता

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

वासतैं भजनरूपकर्म शास्त्रविषे नवप्रकारकेकहेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (श्रवणंकीर्त्तनंविष्णोःस्मरणंपादसेवनं ॥ अर्चनंवंद नंदास्यंसख्यमात्मनिवेदनं ॥) अर्थयह ॥ सर्वत्रव्यापकविष्णुभगवानूके रामकृष्णादिकनामोंकूंश्रवणकरणा ॥ १ ॥ तथा ताविष्णुकेनामोंकूं आपणेमुखकरिकैकथनकरणा ॥ २ ॥ तथा आपणेमनकरिकै ताविष्णुका सर्वदा स्मरणकर णा ॥ ३ ॥ तथाताविष्णुकेपादोंकासेवनकरणा ॥ ४ ॥ तथा चंदन अक्षत पुष्प धूप दीप इत्यादिकपदार्थोंकरिकै ताविष्णुका अर्चनकरणा ॥ ५ ॥ तथा शरीर मन वाणीकरिकै ताविष्णुकेतांई नमस्काररूपवंदन करणा ॥ ६ ॥ तथा ताविष्णुका दासभावकरणा ॥ ७ ॥ तथा ताविष्णुका सखाभावकरणा ॥ ८ ॥ तथा ताविष्णुकेतांई आपणे शरीररूपआत्माका अर्पणकरणा ॥ ९ ॥ ईहां यद्यपि सर्वत्रव्यापकविष्णुके साक्षात् पादोंकासेवन तथाअर्चन संभ वतानहीं ॥ तथापि ॥ (द्वेरूपेवासुदेवस्यचलंचाचलमेवच ॥ चलंसंन्यासिनोरूपमचलंप्रतिमादिकं ॥) इसशास्त्रकेवचन विषे विष्णुकेदोरूपकथनकऱ्येहैं ॥ तहां संन्यासीतौं तिसविष्णुका चलरूपहै ॥ और सुवर्णादिकधातुमय तथापाषाण मय प्रतिमादिक ताविष्णुका अचलरूपहै ॥ तासंन्यासीके अथवा विष्णुकीप्रतिमाके पादोंकासेवन तथाअर्चन संभवै हैइति ॥ इसीश्रवणादिकनवप्रकारकेभजनकूं शास्त्रविषे भागवतधर्म कहेहैं ॥ ऐसे भागवतधर्मनामा मत्कर्मोंकेकरणेवि षे तूं तत्परहोउ ॥ इसप्रकार मैंपरमेश्वरकीप्रसन्नतावासतै तिनश्रवणकीर्त्तनादिक भागवतकर्मोंकूंभीकरताहूआ तूं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाआत्मज्ञानकीप्राप्तिद्वारा निर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपसिद्धिकूं प्राप्तहोवैंगाइति ॥ १० ॥ ※ ॥

अथैतदप्यशक्तोसिकर्त्तुंमद्योगमाश्रितः॥सर्वकर्मफलत्यागंततःकुरुयतात्मवान् ॥ ११ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अथ । एतत् । अपि । अशक्तः । असि । कर्त्तुं । मद्योगं । आश्रितः । सर्वकर्मफलत्यागं । ततः । कुरु । यतात्मवान् ॥ इतिपदच्छे० ॥

हेअर्जुन जबी तूं इसपूर्वउक्तभागवतकर्मके भी करणेकूं अशक्त होवै तबी मैंपरमेश्वरकेयोगकूं आं
श्रयणकरताहूआ तथायतात्मवान्हूआ तूं सर्वकर्मोंकेफलकेत्यागकूं कर ॥ ११ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन बाह्यविषयोंविषेप्रीतिमान् ऐसाजोचित्तहै ॥ ऐसेबहिर्मुखचित्तवालाहोणेतैं जबी तूं पूर्वश्लोक
उक्त श्रवणकीर्त्तनादिकभागवतधर्मोंकूंभी संपादनकरणेविषेअसमर्थहोवैं ॥ तबीतूं मद्योगकूंआश्रितहूआ अर्थात् ए
कमैंपरमेश्वरकेशरणताकूंआश्रयणकरताहूआ ॥ अथवा मैंपरमेश्वरविषे जोसर्वकर्मोंकाअर्पणहै ताकानाम मद्योगहै ऐसे
मद्योगकूंआश्रयणकरताहूआ ॥ तथा यतात्मवान्हूआ ॥ ईहां शब्दादिकसर्वविषयोंतैंनिवृत्तकरेहैंश्रोत्रादिकसर्वइंद्रिय
जिसनैं ताकानाम यतहै ॥ और विवेकीकानाम आत्मवान्है ॥ यतहोवै सोईहीं आत्मवान्होवै ताकानामयतात्मवान्है ॥ अ
र्थात् श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंकेनिरोधवाले विवेकीपुरुषकानाम यतात्मवान्है ॥ ऐसायतात्मवान्हूआ तूंअर्जुन उक्तपूर्व श्रौ
तस्मार्त्तरूपसर्वकर्मोंकेफलकेत्यागकूं कर अर्थात् तिनकर्मोंकेफलकीइच्छाका तूंपरित्यागकर इति ॥ ११ ॥* ॥ तहां
पूर्व सगुणब्रह्मकीउपासना अभ्यासयोग भागवतधर्म कर्मकेफलकात्याग यहच्यारिसाधन अधिकारीकेभेदतैं विधानक
रे ॥ तिनच्यारिसाधनोंकेमध्यविषे अंतमेंविधानक्याजो कर्मोंकेफलकात्यागरूपसाधनहै ॥ तिसत्यागरूपसाधनविषेहीं
पूर्वउक्तसाधनोंकेविधानका परिअवसानहै ॥ याकारणतैं श्रीभगवान् इस सर्वकर्मोंकेफलकात्यागरूपसाधनकीस्तुति
कथनकरेहै ॥ तिसकर्मोंकेफलत्यागरूपसाधनविषे अधिकारीजनोंकीप्रवृत्तिकरणेवासतै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

श्रेयोहिज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानंविशिष्यते।ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छांतिरनंतरं।

श्रेयः। हि।ज्ञानं।अभ्यासात्।ज्ञानात्। ध्यानं।विशिष्यते।ध्यानात्।कर्मफलत्यागः।त्यागात्।शांतिः।अनंतरं॥ इतिपदच्छेदः॥

हेअर्जुन अभ्यासतैं ज्ञान हीं श्रेष्ठहै ताज्ञानतैं ध्यान श्रेष्ठहै ताध्यानतैं कर्मोंकेफलका
त्याग श्रेष्ठहै जिसत्यागतैं अनंतर मोक्षरूपशांति होवैहै ॥ १२ ॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ज्ञानकीप्राप्तिवासतै कऱ्याजो श्रवणकाअभ्यासहै ॥ तिसअभ्यासतैं ज्ञानहीं श्रेष्ठहै ॥ अर्थात् श्रवणकरिकै तथामननकरिकै उत्पन्नभयाजो आत्मविषयक निश्चयरूपज्ञानहै ॥ जिसज्ञानकूंश्रवणज्ञान तथाम ननज्ञान कहेहैं ॥ तथा जोज्ञान प्रमाणगतअसंभावनाका तथाप्रमेयगतअसंभावनाका निवर्त्तकहै ॥ ऐसाज्ञान ति सअभ्यासतैं श्रेष्ठहै॥ और तिस श्रवणमननजन्यज्ञानतैं निदिध्यासनरूपध्यान अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं सोनिदिध्या सनरूपध्यान व्यवधानतैंरहितहूआहीं आत्मसाक्षात्कारकाहेतुहै ॥ और सोश्रवणज्ञान तथामननज्ञान तानिदि ध्यासनद्वारा आत्मसाक्षात्कारकाहेतुहै ॥ व्यवधानतैंरहितहूआ सोज्ञान आत्मसाक्षात्कारका हेतुहैनहीं ॥ यातैं तिस ज्ञानतैं निदिध्यासनरूपध्यानकीश्रेष्ठतायुक्तहै ॥ इसप्रकारतैं सोनिदिध्यासनरूपध्यान यद्यपि सर्वसाधनोंतैं श्रेष्ठ है ॥ तथापि अज्ञानीपुरुषनैं कऱ्याजो सर्वकर्मोंकेफलकात्यागहै सोकर्मोंकेफलकात्याग तिसअज्ञानीपुरुषकूं ताध्या नतैंभीश्रेष्ठहै ॥ इसअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् तिसकर्मफलकेत्यागकी स्तुतिकरेहै (ध्यानात्कर्मफलत्यागःइति)

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

हेअर्जुन अज्ञानीपुरुषनैं कऱ्याजो कर्मोंकेफलकात्यागहै ॥ सोकर्मोंकेफलकात्याग तिसअज्ञानीपुरुषकूं तिसनिदिध्या
सनरूपध्यानतैंभी श्रेष्ठहै ॥ काहेतैं निगृहीतचित्तवालेपुरुषनैं कऱ्याजो सर्वकर्मोंकेफलकात्यागहै ॥ तिसत्यागतैं इ
सअधिकारीपुरुषकूंअज्ञानसहितसर्वसंसारका उपशमरूपशांति व्यवधानतैंविनाहीं प्राप्तहोवैहै ॥ साशांति कालां
तरकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यदासर्वेप्रमुच्यंतेकामायेऽस्यहृदिस्थिताः ॥
अथमर्त्योऽमृतोभवत्यत्रब्रह्मसमश्नुते ॥) अर्थयह ॥ इसजीवकेहृदयविषेस्थित जेकामहैं तेसर्वकाम जिसकालविषेनि
वृत्तहोवैहैं ॥ तिसीकालविषेहीं यहजीव अमृतहोवैहै तथाइसीदेहविषे ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इत्यादिकश्रुति
वचनोंतैं सर्वकामोंकेत्यागविषे मोक्षकासाधनपणा जान्याजावैहै ॥ और इसगीताशास्त्रविषेभी स्थितप्रज्ञपुरुषके
लक्षणोंविषे (प्रजहातियदाकामान्सर्वान्पार्थमनोगतान्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आपहीं सर्वकामोंकेत्या
गविषे मोक्षकासाधनपणा कथनकऱ्याहै ॥ यद्यपि श्रुतिविषे तथास्थितप्रज्ञकेलक्षणोंविषे सर्वकामोंकेत्यागकूंहीं मो
क्षकासाधनपणा कथनकऱ्याहै ॥ कर्मोंकेफलकेत्यागकूं मोक्षकासाधनपणा कह्यानहीं ॥ तथापि तेकर्मकेफलभो का
मरूपहींहैं ॥ यातैं तिन कर्मोंकेफलोंकाजोत्यागहै ॥ सोत्यागभी कामकात्यागहींहै ॥ ताकामत्यागत्वरूप सामान्य
धर्मकूंलैके श्रीभगवान्नैं ताकर्मफलकेत्यागकी कामत्यागकेफलकरिकै स्तुतिकरीहै ॥ जैसे पूर्व अगस्त्यब्राह्मण समु
द्रकूंपानकरताभयाहै ॥ तथा परशुरामब्राह्मण इसपृथिवीकूं क्षत्रियराजावोंतैंरहितकरताभयाहै ॥ सोब्राह्मणपणा
इदानींकालकेब्राह्मणोंविषेभीहै ॥ यातैं ताब्रह्मणत्वसामान्यधर्मकूंलैके इदानींकालकेब्राह्मणभी अपरिमितपराक्र

488

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

मवत्ताकरिकै स्तुतिकऱ्येजावेहैं ॥ तैसे सोकर्मकेफलकात्यागभी कामत्यागकेफलकरिकै स्तुतिकऱ्याजावैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (श्रेयोहिज्ञानमभ्यासात्) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ निदिध्यासनरूपअभ्यासतैं श्रवणमननजन्यपरोक्षज्ञान श्रेष्ठहै ॥ और तिसपरोक्षज्ञानतैं विष्णुकेनामोंकाश्रवणकीर्त्तनरूपध्यान श्रेष्ठहै ॥ और तिसध्यानतैं कर्मोंकेफलकात्याग श्रेष्ठहै ॥ कैसाहैसोकर्मोंकेफलकात्याग ॥ जिसत्यागतैंउत्तर व्यवधानतैंविनाहीं चित्त शुद्धिआदिकोंकीउत्पत्तिद्वारा मोक्षरूपशांति प्राप्तहोवैहै ॥ ईहां यद्यपि निदिध्यासनरूपअभ्यासकीअपेक्षाकरिकै सोपरोक्षज्ञान बाह्यसाधनहै ॥ और तापरोक्षज्ञानकीअपेक्षाकरिकै सोश्रवणकीर्त्तनादिरूपध्यान बाह्यसाधनहै ॥ और ताध्यानकीअपेक्षाकरिकै सोकर्मोंकेफलकात्याग बाह्यसाधनहै ॥ यातैं अंतरसाधनकीअपेक्षाकरिकै बाह्यसाधनविषे श्रेष्ठताकहणी असंगतहै ॥ तथापि अंतरसाधनकीअपेक्षाकरिकै बाह्यसाधन करणेकूंसुगमहोवैहै ॥ और सोपानक्रमकरिकै बाह्यसाधनकीप्राप्तिपूर्वकहीं अंतरसाधनकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं श्रीभगवान्नैं तिनबाह्यसाधनोंविषे अधिकारीजनोंकीप्रवृत्तिकरावणेवासतैं पूर्वपूर्वसाधनकीअपेक्षाकरिकै तिसतिसबाह्यसाधनविषे श्रेष्ठताकथनकरीहै इति ॥ १२ ॥ ❋ ॥ तहांपूर्व मंदअधिकारीकेप्रति अतिदुष्करहोणेतैं निर्गुणअक्षरब्रह्मकेउपासनाकीनिंदाकरिकै अतिसुगम सगुणब्रह्मकीउपासना विधानकरी ॥ तासगुणब्रह्मकीउपासनाकेकरणेविषेभी जेपुरुष असमर्थहैं ॥ तिनपुरुषोंके अशक्तिकीतारतम्यताकेअनुसार दूसरेभी अभ्यासादिकतीनसाधन श्रीभगवान्नैं विधानकऱ्ये ॥ तासगुणब्रह्मकीउपासनाकेविधानकरणेविषे तथा अभ्यासादिकतीनसाधनोंकेकहणेविषे श्रीभगवान्का यह अभिप्रा

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

यहै ॥ यहअधिकारीजन किसीभीप्रकारकरिकै सर्वप्रतिबंधकोंतैंरहितहोइकै तथाउत्तमअधिकारीहोइकै सर्वसाधनों अ०१२
काफलरूप निर्गुणब्रह्मविद्याविषे प्रवेशकरे इति ॥ काहेतैं साधनोंकाजोविधानहोवैहै सो फलकीप्राप्तिवासतैहींहोवै
है ॥ फलतैंविना साधनोंकाविधान होवैनहीं ॥ यातैं ईहां श्रीभगवान्नैं जो सगुणब्रह्मकोउपासना तथा अभ्यासादि
कतीनसाधन विधानकरेहैं ॥ तेसर्वसाधन निर्गुणब्रह्मविद्यारूपफलकोप्राप्तिवासतैहीं विधानकरेहैं ॥ यहवार्त्ता अ 490
न्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (निर्विशेषंपरंब्रह्मसाक्षात्कर्त्तुमनोश्वराः ॥ येमंदास्तेनुकंप्यंतेसविशेष
निरूपणैः ॥ १ ॥ वशीकृतेमनस्येषांसगुणब्रह्मशीलनात् ॥ तदेवाविर्भवेत्साक्षादपेतोपाधिकल्पनं ॥ २ ॥) अर्थयह ॥
जेमंदअधिकारीजन निर्विशेषपरब्रह्मकेसाक्षात्कारकरणेकूं समर्थ नहींहोवैहैं ॥ तेमंदअधिकारीजन सगुणब्रह्मकेनि
रूपणकरिकै अनुग्रहकेविषयकरीतेहैं ॥ अर्थात् श्रुतिभगवतोनैं तथाब्रह्मवेत्तापुरुषोंनैं तिनमंदअधिकारीपुरुषोंके
ऊपरि अनुग्रहकरिकै सगुणब्रह्मकानिरूपणकरीताहै इति ॥ १ ॥ तिससगुणब्रह्मकेध्यानतैं जबो तिनमंदअधिकारी
पुरुषोंकामन वशहोवैहै ॥ तबो तिनअधिकारीजनोंकूं सर्वउपाधियोंकीकल्पनातैंरहित तिसनिर्गुणब्रह्मकासाक्षा
त्कारहोवैहै इति ॥ २ ॥ यहवार्त्ता पतंजलिभगवान्नैंभी योगसूत्रोंविषेकथनकरीहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (समाधिसिद्धिरी
श्वरप्रणिधानात् ॥ ततःप्रत्यक्चेतनाधिगमोप्यंतरायाभावश्च ॥) अर्थयह ॥ इसअधिकारीजनकूं ईश्वरकेचिंतनरूप
ईश्वरप्रणिधानतैं समाधिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसईश्वरकेप्रणिधानतैंहीं इसअधिकारीपुरुषकूं प्रत्यक्चेतनकासाक्षात्का ॥१७५॥
रहोवैहै ॥ तथा विघ्नरूपअंतरायोंकाअभावहोवैहै इति ॥ यातैं पूर्व (क्लेशोधिकतरस्तेषां) इत्यादिकवचनोंकरि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

कै जो निर्गुणब्रह्मकेउपासनाकी निंदाकरीथी ॥ सानिंदा सगुणब्रह्मकीउपासनाकेस्तुतिवासतै करीथी ॥ कोई निर्गुणब्रह्मकीउपासनाकेनिषेधकरणेवासतै सानिंदा नहींकरीथी ॥ जैसे उदितहोमकेविधानविषे जो अनुदितहोम कीनिंदाकरीहै ॥ सानिंदा तिसउदितहोमकीस्तुतिवासतैहीं करीहै ॥ कोई अनुदितमोहकेनिषेधकरणेवासतै सा निंदा नहींकरीहै ॥ तहां सूर्यकेउदयहूए जोहोम कऱ्याजावैहै ताकूं उदितहोमकहेहैं ॥ और सूर्यकेउदयहूएतैंप्रथम जोहोम कऱ्याजावैहै ताकूं अनुदितहोमकहेहैं ॥ तैसे सगुणउपासनाकेविधानविषे जोनिर्गुणउपासनाकीनिंदाकरी है ॥ सानिंदाभी तिससगुणउपासनाकी स्तुतिवासतैहै ॥ कोई निर्गुणउपासनाकेनिषेधवासतै सानिंदानहींहै ॥ काहेतैं शास्त्रकारोंनैं यहन्याय कह्याहै ॥ (नहिनिंदानिंद्यंनिंदितुंप्रवर्त्ततेऽपितुविधेयंस्तोतुं ॥) अर्थयह ॥ शास्त्रविषे जेनिंदावचनहोवैहैं ॥ तेनिंदावचन तिसनिंद्यवस्तुकेनिंदनकरणेवासतै प्रवृत्तनहींहोवैहैं ॥ किंतु प्रसंगविषेप्राप्त वि धेयअर्थकेस्तुतिकरणेवासतै तेनिंदावचन प्रवृत्तहोवैहैं इति ॥ यातैं निर्गुणअक्षरब्रह्मकेउपासकहीं वास्तवतैं योग वित्तमहैं ॥ ऐसेनिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषहीं श्रीभगवान्नैं (प्रियोहिज्ञानिनोत्यर्थमहंसचममप्रियः । उदाराःसर्वएवैते ज्ञानीत्वात्मैवमेमतं) इत्यादिकवचनोंकरिकै पुनः पुनः श्रेष्ठतारूपकरिकै कथनकरेहैं ॥ हेअर्जुन तुमनैंभी अधिकार कूंसंपादनकरिकै तिननिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकाहीं ज्ञान तथासर्वधर्म अनुसरणकरणेयोग्यहै ॥ इसप्रकारतैं अर्जुन केप्रति बोधकरणेकोइच्छाकरताहूआ तथाताअर्जुनकेपरमहितकीइच्छाकरताहूआ श्रीकृष्णभगवान् सप्तश्लोकोंक रिकै तिन अभेददर्शनवाले तथाकृतकृत्यभावकूंप्राप्तहूए निर्गुणब्रह्मकेउपासकोंकी स्तुतिकरेहै ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अद्वेष्टासर्वभूतानांमैत्रःकरुणएवच ॥ निर्ममोनिरहंकारःसमदुःखसुखःक्षमी ॥ १३ ॥

अद्वेष्टा । सर्वभूतानां । मैत्रः । करुणः । एव । च । निर्ममः । निरहंकारः । समदुःखसुखः । क्षमी ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन जोपुरुष सर्वभूतोंका अद्वेष्टाहै तथामैत्रीवाला हींहै तथा करुणावालाहै तथा निर्ममहै तथा निरहंकारहै तथासमहैंदुःखसुखजिसकूं तथाक्षमावालाहै ॥ १३ ॥ इतिप० ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सोनिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुष स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकैदेखेहै ॥ यातैं जोपदार्थ आपणेदुःखकाभीहेतुहै ॥ तिसपदार्थविषेभी तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकी प्रतिकूलबुद्धिहोवैनहीं ॥ और जिस वस्तुविषे यहवस्तु हमारेदुःखकासाधनहै याप्रकारकोप्रतिकूलबुद्धिहोवैहै ॥ तिसवस्तुविषेहीं द्वेषहोवैहै ॥ ताप्रति कूलबुद्धितैंविना द्वेषहोवैनहीं ॥ ताप्रतिकूलबुद्धिकेअभावहूए सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनसर्वभूतोंका द्वेषकरताहोवैनहीं ॥ किंतु सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनसर्वभूतोंविषे मैत्रीवालाहींहोवैहै ॥ अर्थात् तिनसर्वभूतोंविषे स्नेहवालाहींहोवैहै ॥ अब तामैत्रीभावविषे हेतुकहेहैं (करुणःइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष करुणावालाहै ॥ इसकारणतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनसर्वभूतोंविषे मैत्रीवालाहै ॥ तहां दुःखीप्राणीयोंविषे जोदयाकरणीहै ताकानाम करुणाहै ॥ ऐसीकरुणावालेपुरुषकानाम करुणहै ॥ अर्थात् सोतत्त्ववेत्तापुरुष सर्वभूतोंकेतांई अभयदानदेणेहारा परमहंससंन्यासीहै ॥ तथा सोतत्त्ववेत्तापुरुष निर्ममहै ॥ अर्थात् आपणेदेहविषेभी यहदेह हमाराहै याप्रकारकीममतावुद्धितैंरहितहै ॥ तथा सोपुरुष निरहंकारहै ॥ अर्थात् जैसे अज्ञानीपुरुष श्रेष्ठआचारकरिकै तथावेदविद्यादिकोंकरिकै

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अहंकारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिन श्रेष्ठआचार विद्यादिकोंकरिकै अहंकारकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ त
था द्वेष राग इनदोनोंतैंरहितहोणेतैं समहैं दुःखसुखदोनों जिसकूं ॥ इसीकारणतैंहीं सोतत्त्ववेत्तापुरुष क्षमावालाहै
॥ अर्थात् ताडनादिकोंकरिकैभी विक्रियाकूंप्राप्तहोतानहीं इति ॥ १३ ॥ ※ ॥ अब पूर्वश्लोकविषेकथन
कऱ्येहूए निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषके अन्यभीविशेषणोंकूं कथनकरेहैं ॥

संतुष्टःसततंयोगीयतात्मादृढनिश्चयः॥ मय्यर्पितमनोबुद्धिर्योमद्भक्तःसमेप्रियः॥१४॥

संतुष्टः । सततं । योगी । यतात्मा । दृढनिश्चयः । मयि । अर्पितमनोबुद्धिः । यः । मद्भक्तः । सः । मे । प्रियः । इतिपदच्छेदः॥
हेअर्जुन जोपुरुष सर्वदा संतुष्टहै तथासमाहितचित्तवालाहै तथावशकऱ्याहैसंघातजिसनैं तथादृढहै निश्चयजिसका
तथामैंपरमेश्वरविषे अर्पणकऱ्येहैंमनबुद्धिजिसनैं ऐसाजो मेराभक्तहै सोभक्त मैंपरमेश्वरकूं प्रियहै ॥१४॥ इतिपदा० ॥
॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष सर्वकालविषे संतुष्टहै ॥ अर्थात् शरीरकीस्थितिकेकारणरूप जेअन्नवस्त्रादिकपदार्थहैं
तिनअन्नादिकपदार्थोंकी प्राप्तिविषे अथवा अप्राप्तिविषे जोपुरुष संतोषवालाहै ॥ ईहां (सततं) इसपदका स
र्वविशेषणोंकेसाथि संबंधकरणा ॥ तथा जोपुरुष सर्वदा योगीहै ॥ अर्थात् सर्वकालविषे जोपुरुष समाहितचित्तवा
लाहै ॥ तथा जोपुरुष यतात्माहै ॥ अर्थात् आपणेवशकऱ्याहैशरीरइंद्रियादिरूपसंघात जिसनैं ॥ तथा जोपुरुष द
ढनिश्चयहै ॥ तहां दृढहै क्या कुतार्किकपुरुषोंनैं अभिभवकरणेकूंअशक्यहोणेतैंस्थिरहै निश्चय क्या अकर्त्ताअभो

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

क्तासच्चिदानंदअद्वितीयब्रह्ममैंहूं याप्रकारकाज्ञान जिसका ताकानाम दृढनिश्चयहै ॥ अर्थात् स्थिरप्रज्ञपुरुषकाना
म दृढनिश्चयहै ॥ तथा मैंनिर्गुणशुद्धब्रह्मविषे समर्पणकऱ्याहै संकल्पविकल्पात्मकमन तथा निश्चयात्मकबुद्धि जि
सनैं ॥ इसप्रकारका जोहमारा भक्तहै ॥ अर्थात् सर्वउपाधितैंरहित शुद्धअक्षरब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकै जा
नणेहारा जोतत्त्ववेत्तापुरुषहै ॥ सोब्रह्मवेत्तापुरुष मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहैं ॥ याप्रकारका
अर्थ अगलेश्लो कोंविषेभी जानलेणा इति ॥ १४ ॥ ❋ ॥ अब पुनःभी तिसतत्त्ववेत्तापुरुषके विशेषणोंकूं निरूपणकरेहैं ॥

यस्मान्नोद्विजतेलोकोलोकान्नोद्विजतेचयः॥हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तोयःसचमेप्रियः१५॥

यस्मात्।न।उद्विजते।लोकः।लोकात्।न।उद्विजते।च।यः।हर्षामर्षभयोद्वेगैः।मुक्तः।यः।सः।च।मे।प्रियः॥ इतिपद०

हेअर्जुन जिसपुरुषतैं यहलोक नहीं संतापकूंप्राप्तहोवैहै तथा जोपुरुष तिसलोकतैं नहीं संतापकूंप्राप्तहोवैहै तैंथा
जोपुरुष हर्षअमर्षभयउद्वेगइनच्यारोंनैं परित्यागकऱ्याहै सोतत्त्ववेत्तापुरुष मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहै ॥ इतिप०

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वप्राणीयोंकूंअभयकीप्राप्तिकरणेहारे जिसपरमहंससंन्यासीतैं कोईभीप्राणी संतापकूंप्राप्तहो
तानहीं ॥ अर्थात् जोतत्त्ववेत्तापुरुष किसीभीप्राणीकूं शरीरमनवाणीकरिकै पीडाकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ तथा विनाहीं
अपराधतैं संतापकीप्राप्तिकरणेहारे जे दुष्टप्राणीहैं ॥ ऐसेदुष्टप्राणीरूपलोकतैं जोपुरुष संतापकूंप्राप्तहोतानहीं ॥
जिसकारणतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष सर्वत्र अद्वैतआत्मदर्शीहै तथापरमकारुणिकहोणेतैंक्षमास्वभाववालाहै ॥ तथा जो
पुरुष हर्ष अमर्ष भय उद्वेग इनचारोंनैं परित्यागकऱ्याहै ॥ तहां इष्टवस्तुकेलाभहूए जो रोमांचअश्रुपातादिकों

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

काहेतुरूप तथाआनंदकाअभिव्यंजक चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानामहर्षहै ॥ और दूसरेकीउत्कृष्टताकाअसहनरूप जा चित्तकीवृत्तिविशेषहै ॥ ताकानाम अमर्षहै ॥ और व्याघ्र चौर शत्रु इत्यादिकअनिष्टवस्तुवोंकेदर्शनजन्य जा त्रासरूप चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम भयहै ॥ और जनोंतैंरहितएकांतस्थानविषे सर्वपरिग्रहतैंशून्य एकाकी स्थितहूआमैं कैसेजीवोंगा इसप्रकारकी व्याकुलतारूप जा चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम उद्वेगहै ॥ ऐसे हर्ष अमर्ष भय उद्वेग इनच्यारोंनैं जोपुरुष परित्यागकऱ्याहै ॥ अर्थात् सोब्रह्मवेत्तापुरुष अद्वैतदर्शीहोणेतैं तिनहर्षादिकोंकेयोग्यहैनहीं ॥ यातैं तिनहर्षादिकोंनैं आपेहीं सोतत्त्ववेत्तापुरुष परित्यागकरिदियाहै ॥ कोई सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनहर्षादिकोंकेत्यागवासतै आप व्यापारवालाहूआनहीं ॥ यहवार्ता स्मृतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (यथापर्वतमादीप्तंनाश्रयंतिमृगद्विजाः ॥ तद्वद्ब्रह्मविदोदोषानाश्रयंतेकदाचन ॥ १ ॥ मंत्रौषधबलैर्यद्वज्जीर्यतेभक्षितंविषं ॥ तद्वत्सर्वाणिकर्माणिजीर्यंतेज्ञानिनःक्षणात् ॥ २ ॥) अर्थयह ॥ जैसे अग्निकरिकैदग्धहूएपर्वतकूं मृगादिक पशु तथापक्षी आश्रयणकरतानहीं ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं रागद्वेषादिकदोष आश्रयणकरतानहीं ॥ १ ॥ और जैसे भक्षणकऱ्याहूआविष मंत्रऔषधिकेबलकरिकै जीर्णभावकूंप्राप्तहोइजावैहै ॥ तैसे ज्ञानवान्पुरुषके पुण्यपापरूपसर्वकर्म एकक्षणमात्रविषे नाशकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ २ ॥ इसप्रकारकेगुणोंवाला जो मैंपरमेश्वरकाभक्तहै ॥ सोब्रह्मवेत्ताभक्त मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै इति ॥ १५ ॥ ※ ॥ किंच ॥

अनपेक्षःशुचिर्दक्षउदासीनोगतव्यथः ॥ सर्वारंभपरित्यागीयोमद्भक्तःसमेप्रियः ॥ १६ ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

अनपेक्षः । शुचिः । दक्षः । उदासीनः । गतव्यथः । सर्वारंभपरित्यागी । यः । मद्भक्तः । सः । मे । प्रियः ॥ इतिपद०

हेअर्जुन जोपुरुष निरपेक्षहै तथाशुचिहै तथादक्षहै तथाउदासीनहै तथागतव्यथहै तथासर्वआरंभपरित्यागकऱ्येहैंजिसनैं ऐसाजो मेराभक्तहै सोभक्त मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहै ॥ १६ ॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष अनपेक्षहै ॥ अर्थात् विनाहींप्रयत्नतैं यदृच्छामात्रकरिकै प्राप्तहूएभी जेभोगकेसाधनहैं तिनसर्वभोगकेसाधनोंविषे जोपुरुष निस्पृहहै ॥ तथा जोपुरुष शुचिहै ॥ अर्थात् बाह्यअंतर दोप्रकारकेशौचकरिकैयुक्तहै ॥ तहां जलमृत्तिकादिकोंकरिकै शरीरकाप्रक्षालनकरणा याकानाम बाह्यशौचहै ॥ और मैत्रीकरुणादिकोंकरिकै अंतःकरणकूंरागद्वेषादिकोंतैंरहितकरणा याकानाम अंतरशौचहै ॥ तथा जोपुरुष दक्षहै ॥ अर्थात् अवश्यकरिकैजानणेयोग्य तथाअवश्यकरिकैकरणेयोग्य ऐसेअर्थोंकेप्राप्तहूए जोपुरुष तिसतिसअर्थके जानणेकूं तथा करणेकूंसमर्थहै ॥ तथा जोपुरुष उदासीनहै ॥ अर्थात् जोपुरुष किसीभीमित्रादिकोंकेपक्षकूंग्रहणकरतानहीं ॥ तथा जोपुरुष गतव्यथहै ॥ अर्थात् किसीदुष्टपुरुषोंनैं ताडनकीयेहूएभी नहींउत्पन्नहूईहैपीडारूपव्यथा जिसकूं ॥ तथा जोपुरुष सर्वारंभपरित्यागीहै ॥ तहां इसलोककेफलकीप्राप्तिकरणेहारे तथापरलोककेफलकीप्राप्तिकरणेहारे जितनैंकी लौकिकवैदिककर्महैं तिनकर्मोंकानाम सर्वारंभहै ॥ ऐसेसर्वारंभोंकूंपरित्यागकऱ्याहैंजिसनैं ऐसाजोपरमहंससंन्यासीहै ताकानाम सर्वारंभपरित्यागीहै ॥ इसप्रकारका जोमैंपरमेश्वरकाभक्तहै ॥ सोब्रह्मवेत्ताभक्त मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै इति ॥ १६ ॥ ※ ॥ किंच ॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

योनहृष्यतिनद्वेष्टिनशोचतिनकांक्षति ॥ शुभाशुभपरित्यागीभक्तिमान्यःसमेप्रियः १७

यः । न । हृष्यति । न । द्वेष्टि । न । शोचति । न । कांक्षति । शुभाशुभपरित्यागी । भक्तिमान् । यः । सः । मे । प्रियः ॥ इ० प० ॥

हेअर्जुन जोपुरुष नहीं हर्षकरेहै नहीं द्वेषकरेहै तथानहीं शोककरेहै तथानहीं इच्छाकरेहै तथा शुभ अशुभक मोंकापरित्यागकऱ्याहैजिसनैं ऐसाजो भक्तिमान्पुरुषहै सोपुरुष परमेश्वरकूं प्रियहै ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ तहां पूर्व त्रयोदशेश्लोकविषे (समदुःखसुखः) यहविशेषणकथनकऱ्याथा ॥ तिसविशेषणकाहीं अब विस्तारतैंवर्णनकरेहैं ॥ हेअर्जुन जोपुरुष प्रियवस्तुकेप्राप्तहूए हर्षकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तथा अप्रियवस्तुकेप्राप्तहूए जोपुरुष द्वेषकूंप्राप्तहोतानहीं तथा प्राप्तप्रियवस्तुकेवियोगहूए जोपुरुष शोककूंकरतानहीं ॥ तथा जोपुरुष इष्टवस्तुकेसंयोगकी तथा अनिष्टवस्तुकेवियोगकी इच्छाकरतानहीं ॥ अब (सर्वारंभपरित्यागी) इसपूर्वउक्तविशेषणकावर्णनकरेहैं (शुभाशुभपरित्यागीइति) हेअर्जुन सुखकोप्राप्तिकरणेहारे जेशुभकर्महैं ॥ तथादुःखकीप्राप्तिकरणेहारे जेअशुभकर्महैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेकर्मोंका परित्यागकऱ्याहैजिसनैं ॥ ऐसा मैंपरमेश्वरकीभक्तिवाला जोब्रह्मवेत्तापुरुषहै ॥ सोब्रह्मवेत्ताभक्त मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै इति ॥ १७ ॥ ※ ॥ किंच ॥

समःशत्रौचमित्रेचतथामानापमानयोः ॥ शीतोष्णसुखदुःखेषुसमःसंगविवर्जितः १८

समः । शत्रौ । च । मित्रे । च । तथा । मानापमानयोः । शीतोष्णसुखदुःखेषु । समः । संगविवर्जितः ॥ इतिपदच्छेदः ॥

हेअर्जुन पुनः जोपुरुष शत्रुविषे तथा मित्रविषे समानहै तथा मानअपमानदोनोंविषे

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

समानहै तथा शीतउष्णसुखदुःखइनसर्वोंविषे समानहै तथासंगतैंरहितहै॥१८॥इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसलोकविषे जोप्राणी किसीकाअपकारकरेहै ताकूं शत्रुकहेहैं ॥ और जोप्राणी किसीकाउपकारकरेहै ताकूं मित्रकहेहैं ॥ ऐसे अपकारकरणेहारेशत्रुविषे तथाउपकारकरणेहारेमित्रविषे जोपुरुष समहै ॥ अर्थात् आपणे पापपुण्यरूपप्रारब्धकर्मकेवशतैंहीं इसदेहका कोईप्राणी अपकारकर्त्ता शत्रुहोवैहै तथाकोईप्राणी उपकारकर्त्ता मित्रहोवैहै याप्रकारका मनविषेविचारकरिकै जोपुरुष तिसशत्रुविषे तथामित्रविषे समदृष्टिहींहोवैहै ॥ तथा जोपुरुष सुहृदपुरुषोंनैंकऱ्येहूए पूजनरूपमानविषे तथादुष्टपुरुषोंनैंकऱ्येहूए तिरस्काररूपअपमानविषे समहै ॥ अर्थात् तामान अपमानकृत हर्षविषादरूपविकारकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तथा प्रारब्धकर्मकेवशतैंप्राप्तहूए जे शीत उष्ण सुखदुःख इत्यादिकद्वंद्वधर्महैं ॥ तिनशीतउष्णादिकद्वंद्वधर्मोंविषेभी जोपुरुष समानहै ॥ तथा जोपुरुष संगतैंरहितहै ॥ अर्थात् इसलोकविषे चेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध तथाअचेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जितनैंकोपदार्थहैं तिन सर्वपदार्थोंके यहपदार्थ अत्यंतरमणीकहै याप्रकारकेशोभनअध्यासतैंरहितहैं इति ॥ १८ ॥* ॥ किंच ॥

तुल्यनिंदास्तुतिर्मौनीसंतुष्टोयेनकेनचित्।अनिकेतःस्थिरमतिर्भक्तिमान्मेप्रियोनरः१९

तुल्यनिंदास्तुतिः। मौनी। संतुष्टः। येन। केनचित्। अनिकेतः। स्थिरमतिः। भक्तिमान्। मे। प्रियः। नरः। इतिप० ॥

हेअर्जुन तुल्यहैनिंदास्तुतिजिसकूं तथाजोपुरुष मौनवालाहै तथा जिस किसअन्नवस्त्रादिकोंकरिकै संतुष्टहै तथागृहतैंरहितहै तथास्थिरहैमतिजिसकी ऐसा भक्तिमान् पुरुष मैंपरमेश्वरकूं प्रियहै ॥ इतिपदा०

॥१७९॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ टीका ॥ हेअर्जुन किसीकेदोषोंका कथनकरणा याकानाम निंदाहै ॥ और किसीकेगुणोंकाकथनकरणा याकाना
म स्तुतिहै ॥ ऐसी निंदा तथास्तुति दोनों तुल्यहैंजिसकूं ॥ अर्थात् जैसे अज्ञानीपुरुष आपणीस्तुतिकूंश्रवणकरि
कैसुखीहोवैहै तथाआपणीनिंदाकूंश्रवणकरिकैदुःखीहोवैहै ॥ तैसे जोपुरुष आपणीस्तुतिनिंदाकरिकै सुखदुःखकूंप्रा
प्तहोतानहीं ॥ तथा जोपुरुष मौनीहै ॥ अर्थात् जिसपुरुषनैं आपणेवाक्इंद्रियकानिरोधकऱ्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन्
आपणेशरीरयात्राकेनिर्वाहवासतै तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूंभी वाक्इंद्रियकाव्यापार अवश्यकरिकैअपेक्षितहोवैंगा ॥
ऐसीअर्जुनकोशंकाकेहूए श्रीभगवान्कहेहै (संतुष्टोयेनकेनचित्इति) हेअर्जुन आपणेप्रयत्नतैंविनाहीं बलवान्
प्रारब्धकर्मनैं प्राप्तकऱ्येजे शरीरकोस्थितिकेहेतुरूप अन्नवस्त्रादिकपदार्थहैं ॥ तिनजिसीकिसीप्रकारकेअन्नवस्त्रादि
कपदार्थोंकरिकैहीं जोपुरुष संतुष्टहै ॥ अर्थात् तिसतैंअधिकपदार्थोंकीइच्छातैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष अनिके
तहै ॥ अर्थात् नियमपूर्वक एकस्थानविषे निवासतैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष स्थिरमतिहै ॥ तहां स्थिरहै क्या
परमार्थसत्यवस्तुविषयकहै मति क्या बुद्धिकोवृत्ति जिसको ताकानाम स्थिरमतिहै ॥ इसप्रकारकाजोभक्ति
मान्पुरुषहै ॥ सोभक्तिमान्पुरुष मैंपरमेश्वरकूं अपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै ॥ तहां शास्त्रविषे निर्गुण
ब्रह्मकेभक्तिका यहलक्षणकथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (एकांतभक्तिर्गोविंदेयत्सर्वत्रतदीक्षणं ॥ अहैतुक्यव्यवहिता
याभक्तिःपुरुषोत्तमे ॥ लक्षणंभक्तियोगस्यनिर्गुणस्यह्युदाहृतं ॥) अर्थयह ॥ सर्वप्रपंचविषे अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै
जोपरमात्मादेवकादर्शनहै यहहीं तापरमात्मादेवविषे एकांतभक्तिहै ॥ अर्थात् अनन्यभक्तिहै ॥ और विपरीतभाव

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

नाकीनिवृत्तिआदिकप्रयोजनतैंरहित तथाविजातीयवृत्तिकेव्यवधानतैंरहित ऐसी जा ब्रह्मवेत्तापुरुषोंकी प्रत्यक्अभिन्नपरमात्मादेवविषे अखंडाकारवृत्तिरूपभक्तिहै ॥ यहहीं विद्वान्पुरुषोंनैं निर्गुणब्रह्मविषयकभक्तिकास्वरूप कथनकऱ्याहै इति ॥ इसप्रकारकीभक्तिवाला ब्रह्मवेत्तापुरुषहीं ईहां श्रीभगवान्नैं भक्तिमान् इसशब्दकरिकै तथा भक्त इसशब्दकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ और इहां श्रीभगवान्नैं जोपुनःपुनः भक्तिकाकथनकऱ्याहै ॥ सोपरमेश्वरकाअनन्यभक्तिहीं मोक्षकीप्राप्तिविषेपुष्कलकारणहै इसअर्थकेदृढकरावणेवासतै कथनकऱ्याहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनः ॥) अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमात्मादेवविषे अनन्यभक्तिहै ॥ तथा जैसे परमात्मादेवविषे अनन्यभक्तिहै तैसेहींब्रह्मवेत्तागुरुविषे अनन्यभक्तिहै ॥ तिस महात्मापुरुषकूंहीं यहवेदकरिकैप्रतिपादितअर्थ प्रकाशमानहोवैहैं इति ॥ १९ ॥ ❋ ॥ तहां (अद्वेष्टासर्वभूतानां) इत्यादिकश्लोकोंकरिकै निर्गुणअक्षरब्रह्मकेचिंतनकरणेहारे जीवन्मुक्तपरमहंससंन्यासीयोंके लक्षणरूप तथास्वभावतैंहींसिद्ध अद्वेष्टृत्वादिकधर्म कथनकऱ्ये ॥ यहवार्त्ता वार्त्तिकग्रंथविषे सुरेश्वराचार्यनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (उत्पन्नात्मावबोधस्यह्यद्वेष्टृत्वादयोगुणाः ॥ अयत्नतोभवंत्येवनतुसाधनरूपिणः ॥) अर्थयह ॥ जिसपुरुषकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाआत्मसाक्षात्कार उत्पन्नहूआहै ॥ तिसब्रह्मवेत्तापुरुषके तेभगवत्उक्त अद्वेष्टृत्वादिकगुण विनाहींप्रयत्नतैं स्वभावतैंहींसिद्धहोवैहैं ॥ जैसे मुमुक्षुजनविषे तेअद्वेष्टृत्वादिकगुण प्रयत्नकरिकैसाध्यहोवैहैं तथासाधनरूपहोवैहैं ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तापुरुषविषे तेअद्वेष्टृ

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

त्वादिकगुण प्रयत्नकरिकैसाध्यहोवैनहीं तथासाधनरूपभीहेवैनहीं इति ॥ यहहीं अद्वेष्टृत्वादिकधर्म पूर्वकथनकऱ्य
हूए स्थितप्रज्ञपुरुषके लक्षणरूपकरिकैकथनकऱ्येहैं तेहीं यहअद्वेष्टृत्वादिक प्रयत्नकरिकैसंपादनकऱ्येहूए मुमुक्षुज
नके मोक्षकासाधनरूपहोवैहैं ॥ इसअर्थकूं प्रतिपादनकरताहूआ श्रीभगवान् इसद्वादशेअध्यायकीसमाप्ति करेहै ॥

येतुधर्मामृतमिदंयथोक्तंपर्युपासते ॥ श्रद्दधानामत्परमाभक्तास्तेतीवमेप्रियाः ॥ २० ॥

इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेभक्तियोगोनामद्वादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १२ ॥

ये[2]। तु[1]। धर्मामृतं[4]। इदं[3]। यथा। उक्तं[5]। पर्युपासते[6]। श्रद्दधानाः[7]। मत्परमाः[8]। भक्ताः[11]। ते[10]। अतीव[13]। मे[12]। प्रियाः[14]॥ इतिप०

हेअर्जुन पुनः[1] जेमुमुक्षुजन श्रद्धावान्[7] हूए तथामैंपरमेश्वरपरायणहूए[8] इस पूर्व उक्त धर्मरूपअ
मृतकूं संपादनकरेहैं तेमुमुक्षु भक्तजनभी मैंपरमेश्वरकूं[12] अत्यंत प्रियहैं[14] ॥ २० ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वकथनकऱ्येहूएजीवन्मुक्तपुरुषोंतैंविलक्षण जे मोक्षकीइच्छावान्संन्यासी श्रद्धावान्हूए अर्था
त् यहअद्वेष्टृत्वादिकधर्महीं मुक्तिकेसाधनहैं याप्रकारकीविश्वासरूपश्रद्धाकरिकैयुक्तहूए ॥ तथा जेमुमुक्षुजन मत्पर
महूए अर्थात् मैंअक्षरनिर्गुणब्रह्महींहूं परम क्या प्राप्तहोणेयोग्यनिरतिशयगति जिनोंकूं ऐसेमत्परमहूए इस
पूर्वउक्त धर्मरूपअमृतकूं संपादनकरेहैं ॥ अर्थात् मोक्षरूपअमृतकेसाधनहोणेतैं अमृतरूप अथवा अमृतकीन्यां
इं आस्वादनकरणेयोग्यहोणेतैं अमृतरूप ऐसेजे (अद्वेष्टासर्वभूतानां) इत्यादिकवचनोंकरिकैकथनकऱ्येहूए अ
द्वेष्टृत्वादिकधर्महैं ॥ तिसधर्मरूपअमृतकूं जेमुमुक्षुजन प्रयत्नतैं संपादनकरेहैं ॥ तेभक्तजन अर्थात् मैंनिरुपाधिकब्र

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

ह्मकूंभजनकरणेहारेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहैं ॥ यहश्रीभगवान्कावचन (प्रियोहिज्ञानिनोत्यर्थमहंसचमम प्रियः) इसपूर्वउक्तवचनकरिकैसूचनकऱ्येहूएअर्थका उपसंहाररूपहै ॥ यातैं इसश्लोकका यहअर्थसिद्धभया ॥ जि सकारणतैं इस अद्वेष्टृत्वादिकधर्मरूपअमृतकूं श्रद्धाकरिकैसंपादनकरताहूआ यह अधिकारापुरुष परमेश्वरका अ त्यंतप्रियहोवैहै ॥ तिसकारणतैं ज्ञानवान्पुरुषके स्वभावसिद्धहोणेतैं लक्षणरूपहूएभी यह अद्वेष्टृत्वादिकधर्म तत्त्व केजानणेकीइच्छावान् तथाविष्णुकेपरमपदकेप्राप्तिकीइच्छावान् ऐसेमुमुक्षुजननैं आत्मज्ञानकाउपायरूपकरिकै अत्यंतप्रयत्नतैंसंपादनकरणे इति ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ पूर्वउक्त सोपाधिकसगुणब्रह्मकेध्यानकीपरिपक्कतातैं अनंतर निरुपाधिकनिर्गुणब्रह्मकाचिंतनकरणेहारा तथाअद्वेष्टृत्वादिकधर्मोकरिकैयुक्त तथानिरंतर श्रवणमननानि दिध्यासनकूंकरताहूआ ऐसाजो उत्तमअधिकारीपुरुषहै ॥ तिसउत्तमअधिकारीपुरुषकूं वेदांतवाक्योंकेअर्थका त त्त्वसाक्षात्कार अवश्यकरिकैहोवैहै तिसतत्त्वसाक्षात्कारतैं ताअधिकारीपुरुषकूं अवश्यकरिकै मुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं मुक्तिकाहेतुरूप जो वेदांतमहावाक्योंकाअर्थहै ॥ तिसअर्थकेअन्वययोग्यजो तत्पदार्थरूप परमेश्वरहै ॥ सो तत्पदार्थरूपपरमेश्वर इनअधिकारीजनोंनैं अवश्यकरिकै चिंतनकरणा ॥ यहअर्थ उपासनाकांडरूप इसमध्यकेष ट्ककरिकैसिद्धभया इति ॥ २० ॥ * ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपा दशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकारूयायां द्वादशोऽध्यायःस माप्तः ॥ १२ ॥ उपासनाकांडंद्वितीयंतत्पदार्थप्रतिपादनंसमाप्तम् ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकृष्णायनमः ॥ ॥छ॥

502

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

503

इदं श्रीस्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतया गूढार्थदीपिकानाम्न्या भाषाटीकया समेतायां श्रीमद्भगवद्गीतायां
द्वितीयषट्कं श्रीकृष्णदासाङ्गजाभ्यां गङ्गाविष्णु-खेमराजगुप्ताभ्यां मुम्बय्यां
स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" नाम्नि मुद्रणयन्त्रालयेऽङ्कितम्।
संवत् १९४७ शके १८१२ खि०सन् १८९१

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

S04

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीताभाषाटीकायांद्वितीयषट्कम् २॥

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA